ब्रुणात्रनाद्वाश्रीसम्

(প্রথম ভাগ)

পতিত জীযুক্ত চুৰ্গাচরণ সাংখ্য বেলাভ-তীৰ্ক কৰ্তৃক

অনৃথিত ও সম্পাধিত।



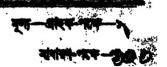
चवाविकावी, ध्वकानक ও महकादी मन्भावक

लागेम् नारदिशी,

२५/३ मर वर्षकाणिम् डीहे, कलिकाका ।

न्न ७७२२ नाम ।





विमेनियरचेत्र अस्मि स्टेशक नियमानगी

কি বিৰায়া শতিৰ ১, টাজা কৰা বিবেন, তা চাৰা সাধাৰণ আহক প্ৰেণ-কি বিৰায় প্ৰেক সম্পূৰ্ণ হালে, এ টাকা বিসাবে লোব বিব। পুত্তক কি বিৰায় পূৰ্বে বহি কেহ (বঙাকায়ে) এই পুত্তক গঙলা বহু কৰেন, কিন্তু বহুলে জনায় টাকা কেন্তুহ পাইবেন না।

विक्रिक्त क्षेत्रकान विविधि, नि. रकत्तर राम, कावा व्येरम, कौबारमत कवा ১८ विक्रम व्येरफ कि, नि वज्रक वाव वावेरन। क्षित्रमा शतिवर्कन व्येरम, नःवाव विक्रमन : क्ष्मूचा कि, नि रकतर चानिरम, क्या होका व्येरक चत्रक वाव यावेरन : किस ज्ञानवात नज्ञ ना भाषता भरीक भूकक भाषान वह वाकिरन।

ক। পুতক্তৰি ডিবাই আট শেকী আকারে মোটা কাগৰে হাণা ইইকৈছে। বাৰক্ষণের জন্ত প্রতোক কর্মা (৮ পূচা) বা আংশিক কর্মার ইন্যা কৈ ও ম্যাটের মূলা ্১৫ প্রসার মধ্যে হইবে। অন্তান্ত ক্রেডার জন্ত মুন্যা কিছু অধিক হইধে।

৪। প্রায় প্রতি যাসে ১০ কথা অথবা ছই মাসে ২০ কথা হিসাবে এক এক বন্ধ উপনিষ্ধ প্রকাশিত হইজেছে। প্রত্যেক ২ও বাহির হইণেই ক্রিকাভার ও ব্যাহণে উভর ছণেই প্রাহনগণের নিকট ভি, পি তে পুরুক প্রাঠাইভেছি। ভাকধরত গ্রাহনকে হিভে চইবে না।

ভোত্ৰ-রত্নহার।

ৰছ ভোজ-গ্ৰহ নহন কৰিয়া এবং পুৱাণ ও ভগ্নসূহ হইতে উভ্ত ক্রিয়া এই সুক্ষ প্রহণানি স্কলিত হয়গ্রহে।

्र देशांक अस्वत्र केमानना, कत्रत्र शाम, क्षनाय, मानन, वशासन, रिक्, मक्ति, इंक्नी, काणी, कात्रा, कमकावी, महत्रकी, भन्नी) स्थापि मदशस्त्र (काउ, द्वाम देखापि कारकः अकिक कानस्य मुख्छि, मृना नीठ कामा।

তত্ত্ব-জিজ্ঞাসা।

४क्कारन मूर्याभाषात्र ७म्, ७, वि, ७ल् छ्यी छ मूला ऽर्

স্থায় সৰ্ জন্ম কৃষ্ণৰ বাবু বঙ্গের শিকিত ব্যক্তিগণের নিকট পুণরিচিত। ডিনি ডিয় ডিয় পত্রিকার বে সবস্ত উপাধের এবন্ধ লিখিতেন, সেইগুলি একত্র ক্রিয়া এই এহ সম্পনিত ইইয়াছে। এবন্ধ ওলি প্রতি গতীর ও শিকাপ্রদ।

ক্রোমণ্যাখি বা বর্ণ-চিকিৎসা।

শ্রিবৃক্ত হরেন্দ্রকৃষ্ণ দত বি. এল্ **এণ্ড** মূল্য I• া

বস্তাবার ও বেশে ইবা একটা অমৃদ্য চিকিৎসা-শাল্প; কেবল যাত্র ৪'৫টি ইটিন শিশি, কাচ ও আলো আবন্তক। ইবা দরিত্রবিগের পরস বস্থু। উট্টোক সুবস্থু পরিবারের এই পুডক অভান্ত প্রয়োজনীয়।

लागिन् गारे(बड़ी-

পম্ভং সং বন্ধণে নম:। শুক্তা-মাজুকো দীক্স-

ब्रह्माब्रगाखाणिवयम्।

আনন্দগিরিক ড-টীকোপেড শাক্ষরভাষ্য-সমেতা। .*

ত্ৰথ স্পাক্তিপাটঃ—
ভন্, পূৰ্ণমদঃ পূৰ্ণমিদং পূৰ্ণাৎ পূৰ্ণমূদচ্যতে।
পূৰ্ণতা পূৰ্ণমাদায় পূৰ্ণমেৰাবশিষ্যতে॥
ভন্ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ॥

অথ ভাষ্যভূমিকা। ওঁ নৰো ব্ৰহাদিভ্যো ব্ৰহৰিভাস্ভাগ্ৰহণ্ডভো। বংশৰবিভাঃ, নথো গুৰুভাঃ।

--->0----

অথ আমন্দৰ্শিরিক্তভ-টীকা। বনবিদ্যানশাধিবং দুর্গতে সংসাধিবং । ববিদ্যান ড ভছানিতং বন্দে পুরবোদ্ধবন্ধ ১

ন্যন্ত্ৰান্তল্যক নৃথ্যাক চভানবে। গুলবে প্ৰপ্ৰেট্য-গ্ৰান্তল্যক । ২

১ প্ৰবিপাদ-পাদান্তল্যং কল্নিবৰ্ত্ব্ । সুৰেখনাতি নৃত্তল্পন্তল্যক ভাততে প্ৰান্তনিবল্প । সুৰেখনাতি নালিছা ক্লিন্ত প্ৰান্তনিবল্প । বুলেখনাতি নালিছা ক্লিন্ত প্ৰান্তনিবল্প । ক্লিন্তান্তল্যক কল্লিন্তল্যক কল্লিন্তল্যক

কর্মনার্ভার্ত্ত্ব্বে বংশবাস্থার প্রবাণয়তি—প্রংশাখানিক্ত্য হতি। বছণি ভ র পৌতি-বার্টান্ত্রে বভাতাঃ সম্প্রবায়কর্তারঃ প্রার্ভ, ভবাংশি ওক্সপিয়ক্তবেণ বভাগ প্রাথমানিতি ভাষাবিশ্ববিদ্ধি ভাবঃ। সম্প্রতি লগবন্তরন্ সমস্তবাতি—সম্ম্যা প্রক্রান্ত ইতি। বভাগি বার্ষাবিশ্ববিদ্ধি ভাবঃ। সম্প্রতি প্রথম প্রবাধেন সমস্তবাঃ, ভবাংশি শিব্যাণাং ওক্সবিদ্যান্ত্রিশ্বর্ত্তিয়েক্ত্রান্ত্র্যুর্ব্ব পুরুষ্ঠ ক্ষুব্রত্ত্ববিদ্ধান্ত বিভাগিক্তরিভি।

ভাষ্যভূমিকানুবাদ।

্ **শ্রন্থবিভাসভালারপ্রবর্ত্তক প্রভালি বংশখবিগণের উদ্দেশে নমভার এবং** [**শিক্ষালাভা] ওক্তগণের উদ্দেশে নম**ন্ধার (১)।

ভাষাভূমিকা।

"উবা বা অখন্ত" ইত্যেবসাভা বাজসনেরিত্রান্ধণোপনিবৎ। ততা ইয়মন্ত্রেছা
বৃত্তিরাক্তাতে সংসার-ব্যাবিবৃৎস্কৃত্য: সংসারহেত্-নিত্তিগাধন ত্রন্ধাইগ্রক্তরবিশ্বাত্তিপত্তে।

> "শোৰামানং তৃ ভচিত্তৰীৰয়াশিতকৰ্মতিঃ। বৈয়াগাং বশ্বনোকাগে) বানজ্ঞাত সুনিৰ্বলয়।" ইভি।

ক্ষা , বৰোজবিশিক্টাধিকানিজ্যো বৃষ্টেরারতঃ সত্তবতীতার্থঃ। তথাপি ;ববর-এরোজন-ক্ষমতাবাদ্ অভাবে কবং বৃত্তিরারতাতে, ততাং—ভাংলানিক্তে। প্রবাত্তা-

^{(&}gt;) ভাৎপর্বা - এবানে 'এক' পথে বেদ বা হিরণাপ্তিকে বৃথিতে হইবে , ভারণ, এক্ড বৃত্তে বেদই প্রথমে কমনিজা প্রভাগ করিয়াহেন, পরে হিরণাপ্ত ভাষার প্রচায় করিয়াহেন ব্যক্ত কুম্মান, উভয়কেই ক্মনিজাপ্রবর্তক বলা মাইতে পারে। এই উপনিবরে 'বংশ-ব্যক্তি বৃহত্ত করেকট করে আহে , ভাষাতে ক্রমনিজাপ্রচায়ক আচার্বাসন্থয় পারুক্তর্ব -

ज्याज्ञिको ।

क्षत्र्वा कर्त्वाविष्ठवर्षः नरनातः, एक ररष्ट्रः वाचाविष्ठा, कष्टिवृत्तः नाववर वचारेष्ठकविष्ठा, कक्षाः क्षत्विष्ठाः व्यक्तिवद्याताः व्यक्तिः, कवर्षः वृत्तिः व्यवकार रेकि रवाववाः अवकृत्यः कविक-निवधनावर्षे ववृत्तिः वाज्ञक व्यवधन्त्व, वचारेष्ठकाविष्ठा कृत्वातः, करेरकार विवदः ; नवर्षा क्षात्रकारकाः केमारवारमञ्जूः वाज्ञकविष्ठाः विवद-विवक्तियः; क्षात्रकार वाज्ञविष्ठि ।

ভাষ্যভূমিকাশ্বাদ।

বাজসনেরি-রাজণে (২) "উবা বা জবস্ত বেবাস্থ নিরঃ" ইত্যাদি উপনিবন্ধ্ন লগে আরম্ভ করিবাছে। বাধার। সংসাবের কেতৃভূত অবিভানিবৃত্তির অভিসাদী; তাহাদের জন্ত, সংসারের কারশীভূত অবিভানিবৃত্তির উপার র্জাইস্থাক্ষবিভালতের উদ্দেশ্যে অর্থাৎ প্রক ও সাল্ধা একই বস্তু, এইরপ ভশ্বভান সমুৎপাধনের জন্ত সেই উপনিবংশর এই জুলাবর্গিব বাবাধা-গ্রন্থ বিবৃত্তির ক্ইতেছে।

ভাষাভূমিকা।

সেয়ং ব্রথবিদ্যা উপনিবক্ষবাচ্যা, তৎপরাশাং শহেতোঃ সংসারসাজ্যান্
বসাদনাং । উপ-নি-পূর্বাস সংগ্রেছর্শ্বাং, তার্থ্যান্ প্রহোহ'প উপনিবর্চাতে ।
ক্রেয়ং বছণ্যারী অরণ্যে অনুচারানবাং আর্শ্যক্ষ্ ; রহবাং পরিবাশতো
রহস্যেরশ্বন্য তথাক কর্মকান্তেন সম্বোহতিনীয়তে ।

টীকা। এয়েজনাদিৰু এইডাসভা উভেদণি সর্বব্যাণারাণাং এরোজনার্বনাংউভ আগাজন। উকং হি—

"नर्करेण्ड हि नाइण कर्वरना राणि कण्डिर।

वानरश्राद्यायनः त्याकः छ।वर छर ८०न गृह्छ ।" रेखि ।

(>) ভাংগ্ৰায় --- ওক্ল বন্ধুৰ্বেধের অপর নাক 'বালনবের'। বালনবের নাব বে, কেন ধ্ৰীন, ভাষা উলোপনিবরের ভূমিকায় আমনা বলিয়া চিয়াছি। विष्णवार्थः, छवार वेकाश्वार विश्वित्तरः, छविछा नरवष्ट्रः नरनावर नाववणीकि वैनविववृद्धारक।
वेक्कर वि—'वननावनार्वक कावनावार' देखि । जक्षविद्धेष रक्षर वैनविवविवारक, कवः छवि
वेद्यं तृष्ट्याः छक्ष्यर श्रवृक्षरक ! व वन् अवक नवक वरवकार्यवर छावान् ! देखानकार छक्षप्रश्रीकिष्टि । श्रवक जक्षविद्याक्षरकथार वेनकावार कज वेनविवरनथिकार्थः।

ববোজবিদ্ধান্তন্ত্র এইজ কিবিভি ভববোড়ণাং সর্বোধা বিজ্ঞা দ অবভাগাণ্ডা অবণানিপুরানাবের আর্নাান্ত্রনানি-নির্মানীভাকরেজঃ ডক্কর, ইভি সুর্বান্তনান-নির্মানীভাকরেজঃ ডক্কর, ইভি সুর্বান্তনানি-নির্মানীভ বেহাজানার্যাণ্ড নামনির্বান্তনান্তনার ক্রেটারিভিঃ। অব আর্ণান্ত্রনানি-নির্মানীভ বেহাজানার্যাণ ক্রেটার বিজ্ঞান্তপানভাব ক্রেটার বিজ্ঞান্তপানভাব ক্রেটার বিজ্ঞানিতরেজার অভ সুর্বার অনিভ্রম্ আর্লভাবির ক্রেটার বিজ্ঞানিখার। অবলার ক্রেটার ক

ভাষাৰু ঘকামুৰাদ।

্ বাহারা এই ব্রথবিভার অস্থীননে তৎপর, তাহাবের সংসার : ক্ষমুত্যু ক্ষরাই) ও তৎকারনীকৃত অবিভার সম্পূর্কণে উজ্জেলনাবন করে বলিয়া সেই এই ব্রথবিভা উপনিষ্থ-শক্ষে অভিবিত ক্ষরা বাকে; কেন না, 'উপ' ও নি পূর্মক সৃষ্ (উপ+নি+সৃষ্) বাত্র ব্রক্ত অর্থ ই প্রসিষ্ধ, উল্লেখন গ্রেছর আন্তর্গুলা করে ব'লয়া এই গ্রহও 'উপনিষ্থ' নামে কবিত ক্টরা বাকে

ছরট অধ্যানে সম্পূর্ব সেই এই উপনিবদ্প্রছ অৱশাধ্যে পঠনীর বণিয়।
আর্থাক, আরু পরিবাবেও স্কাণেক। বৃহৎ বলিয়া—'রুংবারণাক'
প্রবাচ্য হয়। এবন কর্মকাতের সহিত ইবার কিব্লপ স্বস্থ, ভাষা বণিত
বইতেছে;—

काबाष्ट्र'प्रका।

नर्त्वारभावर रक्षः अछाकाक्ष्यानानाम् चनवनरण्डानिहेआछि निवरारशः नात-अकानमनतः, मसन्क्यानार निवर्तत अव कर्याकि निवरादशाविष्टेषारः।

वृद्धेविषयः ह वेद्धेविद्धेश्वाखिः निष्याद्यानाश्चामणः श्राण्यानाश्चाद्यव निष्यादः न मानवाद्यवा। त ह मन्निः कत्रावदः नवद्याश्चादिष विकादः मनाष्ट्रस्टोनिद्धेश्चाखिः निव्याद्यस्य छादः । च्छाव-वावि-वर्णनादः।

जाराज्यिक।।

ভাৰাভূমিকা।

जनार बनावर-नवसामावित्व बनावरवहेशिके शांत-निव्दारवानाम-वित्तर ह मात्ररे अवर्षण ;—

"(बद्दः এएछ विविधिक्या बस्या, च्योछाएक माद्रवर्षेष्ठि हेह्स्क" देखानक्यां "च्योछारवानकदवाः" देखावयादिः विवदयर्गमायः;

"वर्ग ह वर्षण ब्याना" रेष्ट्रानक्रवा-

"(वानिवर्ण व्यन्त्रस्य नवीवकात रहिन्छ।

श्वानुवरकर्म्यरविक ववाक्य ववाक्षठम् ॥" इति ह ; •

"বন্ধবায়তা" ইত্যাপক্ষয় "তং বিভাকপৰী সমমানতেতে" "প্ৰায়ে বৈ প্ৰোন কৰ্মণা ভৰতি, পাশঃ পাশৈৰ" ইভি চ ;

"अनिवार्शिय" रेष्ट्रानक्या "विकानयदः" रेटि ह राखिद्रकाषाचित्र ।

िका । अधिकारः नवसः अवहेरिकृत् यनिक्यवानकातानाः त्रव्याणिशानावत्रवाणायार परवानातार व्यक्तिमात्र गन्तार (ठवार कर्यकारका त्रव्य-विद्युष्टित्य केविक्य, देखि वयानः कर्यायानाः नायद्वि — अट्टाई **नी**कि । वकाकाकु-वातालाव रेजाववादिक-अवातावनकतार्यः अः वर्षः ववावय-विश्वावातः वर्तावित काक्षशास्त्रका द्वर:--वावासकावितकः वर देहि।वात्रावि, सम्मानववः , प्रवाह सम्मान आन्यपानित्नराव कुमार कामानार काक्टक्ष: देखि । चन वा त्यवदर त्यत्राक्ष्यक्य: मुक ecassalaicalait, molfetlauit, 'ausaucata' bie fe mie: i a s beifaballaufe-राह्यानात्रः, क्षेत्रक क्षत्रवात्रावावावावाव । 'नाक काकाकवर' देशाविकारकः । यह वाकानवाः, नर्वयकानकार, 'ब्रायन कावयकुकांक नर्वत्' देवि क्रायः। न ६ पदः, विक्या-क्रकारीा-कोकबार : 'विश्व: पश्च बाकानार' देशाविकात: । दशक्राणा त्वन्य-त्यकीक किरम्कनः बाजान्याकृत्वव नर्त्वाव्या कावाकावयाक्षकः अनकः, 'बारेबरवर नर्वव्' देखि खरकः। क्याह ग्रांकर वय अकावहरका द्वाका विविधाकांवर अवाविधि । अवना अकाकाविधा वनवन्द्रका त्यावता हेरे शास्त्राका नात्राचा अकावा क्रम का का वाचार कर का वाचार कर वाचार कर का वाचार का करेकर मकाकवार ; कत कर्यकावर कर्याष्ट्रकेनन्त्रपुष्ठ-बृद्धिक विवाद विवादिक साहार केप-कारकत् । 'विविधिविक परकान' देखि अरखः। स्वानकाकर कृ नाकारकर करवानकुकत् , पहन-पूक्रक वेपनिवश्यवादनाद ; 'मार्स (त्वा वदनववायमधि' देखि ४ अरखः। उर दुक्तः कर्यकाक-रः कारणावणाणि वारागारिकः परिकादित्रोत्रका-विक्रायनवास कारकाकवाराना ्वव पृष्ठेशकि - ज्ञास्त्र श्री सम्बानाशिकि । वशवर्षः - 'पृष्ठ दव कार, इत्वर या पृष्ठिकि वकावक: नाम: विवा मर्स्क्रवार मूक्यायाम् व्यवस्थित-स्वाविकारम व्यवस्थितम्बर्धार उत्राज्य हं त्यांक्यार करकावितः कानकाकाविकावितः प्रवक्तार क्षित् वादार वार्यरियमञ् चारपर करा करकार्यानिकः

্ৰিকা। নতু বেৰভ কাৰ্বাপরভয়া প্ৰামাণ্যাৎ কৰ্মকাঙৰৎ কাতাভয়ভাশি কাৰ্বাপরভয়া ৰাৰাণাৰেট্টব্যবিভি, নেভাবি-দুৰ্ফীবিষয় ইতি। ক্লিয়া-কারক-কলেভি-কর্তব্যভানাব্ चन्नचन्यान् कार्या ननीविक-धालाहानावकृत्व द्वारनिक्रकात अर्क्षणावितिह क्याविध-कार्याविकः चक्रवामक्कार छत्र नामनः चन्ननरकः। न हि (नाकरवर्धाः छडिक्टर ; অলৌকিকে ভশ্মিন অব্যংগঙিঞানলাও। দ চ অধ্যুৎপদ্মানি পদানি বোধকানি, অভিগ্রসলাও। न ह उक्तांनि कृता दुःश्यकाञ्चनक्षः: क्षित्र वक्षत्वन चान्नत्वन ह व्यानित्वः। क्षर-नाबारकणार्या विकानाविणनामाः बुर्लरकः कुक्त्रवारः छानि व अलोक्किम् अवकर প্ৰভাগ্ বন্ধ-নিলু টিভ-সাৰাক্তবিশেং কঞ্পরা বোধছভি। তল্মাত্ বলৈব বেদপ্রমাণকং, ৰ কাৰ্যাৰিভি॰ ভাৰ:। বিঞ্, ডিউচু বেলাভ এগাণাং, কৰ্মকাতেংপি বাতিভিভাষা-विवासो निष्डश्र्य बाबागावावक्रक्यः जनकार्य उरुवाबागारवात्रारः। व वि व्यविवान-दार-नपद्माप-नदानामंपनदा नाहरनोकिक-अविधिक्षकः । उत्पार कर्वकाल-आवानाविक्षका निरह्दर्य अविशास्कर-अविधिव आश्वांत वर्ताको ह छरशामानात बाह्यारमहत्वार कार्या বেৰপ্ৰামাণ্যানিয়মাৰ্ বেৰাভানামণি খাৰ্থে মানখং দিগাঙীভা। ৰ-ম চেডি। নমু रमश्चा-नवच्यापाळानः विनाणि विविवणाः अनुहोर्वक्रियात्र अवृत्तिः छातिछि, द्रविधाः —অভাতৰতি। বদা আলা দেহাতঃদৰ্ভী পাছাং নানাতরাচ্চ ন প্রবিভঃ, তদা ভোক রনবধ্যাৎ ন প্রেক্ষাপুর্বাকারী বাগাদি অফুডিটেং; লোকায়তক বাতিরিকালাভিত্য व्यवानरका व्यवानरहोतिहे-शास्त्र-हानोव्ह्या देशिकक्रियाम् वाध्यद्रस्वर्गनारः। वर्षा ৰ **অভিনিক্তাত্মভান**ং বিনা সাম্পন্নারিকে প্রস্তুতিরিভার্ব:।

नम् विषयः नायनविद्यायः द्यायप्रदेशः न अजितिकामाण्यिकारणे मानशः वाकारक्षयानकारः ইভাভ আহ-তস্মাদিতি। অভিনিকামধিমং বিনা পারলৌকিক-প্রবৃত্তামুপপভাগ कर्मकाक-आमानाश्वानाविकि वावः। विवीताः क्रकार्वाञ्चाम हेश्श्रार्वकविक्रक्षम वैकार्वः। म (क्रमार विविक्तित्व व्यवीतिक्ष्यम् विविद्याचाविकाः, क्रिक् क्रकाणि व्यवदर्गाक्यम्, ইভাহ-যেমুমিতি। বিশ্ববৰ্ণনাদ্ বাতিবিকাদাভিত্তিতি সংখ্যা ভৱৈৰ প্ৰকৃত্যোপ-বোদিৰেৰ উপক্ৰবোপদংবারাভনে বর্ণরতি—যথা চেতি। পুঞ্চবদেব সৰ্বভাতনার্থ: क्रमात:। क्षेत्रक्रायानमःहादेवसञ्जानाः क्रवत्रोमान् महित्रकात्राविद्य जारन्त्रानुका वृद्या-হ্ৰণাক-বাক্যভাগি ভত্ত ভাৎপৰ্বামাৰ—ভাষ্মিন্ডি। দ বি প্ৰদিছণ্ড্ৰভ বেংালে: ভাং-ৰ্যোতিই বিভি জ্যোতিৰ স্থিপভোশকৰ: ভবিবলো দেবাদিবাভিবিকালানৰ অধিকলোতি। का ब्राह्म विकास के पूर्विमार्थिक सम्मानात समूनक्षा:। न ह नवा कामस्वाप्तकाः क्रम्यक्रकोडि नाबीत्रक्याव्यनगरकानगरहारबादिन क्यास्त्रगरकिरमः । व ह क्रोज्य क्यो-कर्टा विश्वादिक अञ्चलकाय्या कृष्टः। ८७न मात्रा विश्वविद्या अञ्चलकायकी तिरक्षा बाचनान्नाविकार्यः। समाठनकबाद्यत् ॥ "त्वाव पा स्मनतिवावि" हेकानकद्या वाकि विकासाविय-विवयः। व वि श्रकारक दिशावि किकाश विकाश करिय हे नमश्वार पर अव विकानमध्य भूम्पः" देखि विकानमध-विद्यवनात् अधिविकामाणियः विभिन्न ; व दि द्यश्रदाः विकासमायम् विक, कथार कर्गान केनक्ररमानुसरमाकार गावितिकाषावितर नगरवीकाह--

ভাষাভূমিকা।

জ্ঞপায়িষ্যামি ইজ্যুপক্রমেডি। দ চ উদায়ভাদাং বাণ্যদান্ ব্যাহাণ্যদ্; ভংগ্রাহাণ্যভ উৎপত্তিভগতে হেছবিশেবাদ্ অভ্যুপেরছাদিভি ভাগঃ।

ভাষ্যভূমিকান্বাদ। .

শতীই বিষয়ের প্রাপ্তি ও শনিই বিষয়ের পরিহার করা (পরিডাপ করা)
বস্থাবাত্তেরই শতিত্তেত বৈদর্গিক ধর্ম ; অবচ কি উপারে বে, সেই ইউপ্রাপ্তি
ও শনিই-পরিহার করা বাইতে পারে, তাহা কেবল প্রত্যক্ষ ও শন্ত্রীনের
সাহাব্যেই শন্ধারণ করা বাইতে পারে ন'; এইজন্ত লোকপ্রসিদ্ধ সম্বত বেদশান্তই
সেই উপার প্রকাশনে শাগ্রহাবিত :

বিশেষ এই বে, যাহা দৃষ্ট বা ইহলোকিক ইউপ্রাপ্ত ও অনিষ্ট-পরিহার, তাহা সাধারণতঃ প্রতাদ ও অনুষান-প্রমাণ হারাই নির্মাণত হইছে পারে; এই কারণে তবিবরে আর বেদশান্ত অবেবণ করিবার প্রয়োজন হর না; [স্বতরাং অদৃষ্ট বা অলোকিক বিবরেই শান্ত-প্রমাণের প্রয়োজন হর]। কিছ হুলান্তরতাদী আত্মার অভিত্ববিবরে আন না ধাকিলে অর্থাৎ দেহাতিরিক্ত আত্মার হুলান্তর-সভা বিবরে দ্বিরবিধাস না থাকিলে কবনই জ্মান্তরীর ইউপ্রাপ্তি ও অনিষ্টপরিহারের তক্ত কাহারও ইচ্ছা হইতে পারে না; বেহেতু, 'বভাববাদী' লোক দেখিতে পাওয়া বার। অর্থাৎ এরপ এক শ্রেমীর লোক দেখিতে পাওয়া বার, বাহারা বলেন,—দেহের অতিরিক্ত ও হুলান্তরতাদী আত্মা বলিয়া কোন পদার্থ নাই; পরিব্যাদি ভূতবর্গেরই বভাব এই বে, পর-ম্পারের সহিত স্মিলিত হইয়া—দেহাকারে পরিবত হইয়া চৈতক্তমন্পর হইয়া থাকে (৩); স্বতরাং পারলোকিক শুভাগুভপ্রাপ্তির প্ররাস অনাবক্তক.ইত্যাদি।

বস্তুতঃ, এই কারণেই আয়ার ম্যান্তরান্তিত প্রতিপাদনে এবং ম্যান্তরীণ ইট-প্রাপ্তি ও অনিষ্টপরিধারের উপযুক্ত উপার প্রকাশনেই বেলাছিশান্তর প্রধানতঃ প্রবৃত্তি বা বন্ধ। কেন না, [কঠোপনিবদে] 'যকুবা যরিলে পর কেই কেই বলেন,

⁽০) তাংশ্বা—নাতিক-সম্প্রনাচকে 'খতাববাদী' বলা হইবা বাকে। উন্থোৱা বলেব—
কৃষ্ণান পুলাদেহের অতিবিক্ত অন্যত্তরগানী নিডাটেচ্ছস্তরপ আছা বলিয়া কোন একার্য নাই। তৈওপ্ত বেচেরই বর্ম ; বজাব চত্র চূর্য অভাবশীত হরিবা, বেবন একরা নিজিও হইলে তাহাতে অভিনব রক্তিনাকার উর্ত হয়, তেমনি পুবিবাদি অভ প্রার্থেরও পরস্পর বিলক্ষণ নংবাপে সমুখ্পর এই পুলাধেকেও এক অভিনব তৈত্তভাগর্মের আবির্ভাব হইবা বাকে; সুভরাং অস্ক্রবান তৈত্তভাগুলী বেছেরই বর্ম। বেচের সংক্রই ভারার উৎপত্তি, আবার কেল্ডেন সংক্রেই ভাষার বিনাশ হইরা বার; এবাবেই স্বর্গ-সরক-ভোগ; লোকান্তর বা ক্রান্তর ক্যানা, এবং দেহাভিবিক্ত নিতা আন্তার অলান্তরসাত—এ স্বতই বিশ্বা, ক্রিক্ত করা নার;

[আছা] থাকে, অর্থাৎ পরলোকগানী আছা আছে, আনার কেব কেব বলেন,—
না—এই আছা আর থাকে না, দেবের ধ্বংসেই আরার ধ্বংস হইরা বার, এইরপ
বে একটা সংশর আছে—' এইরপ বাকো। পক্রের পর 'নিক্টরই থাকে' অর্থাৎ
[করাত্তরভাগী আছা] নিক্টরই আছে বলিরা বৃথিতে হইবে' এই প্রকার অবধারণার্থক প্রতি ধেবিতে পাওরা বার; [তর্মাধ্য,] 'জীব মৃত্যুর পর বে প্রকার
হর' এইরপ উপক্রম করিরা 'কোন কোন ধেবী নিজ নিজ জান ও কর্বান্তনারে
শরীয়লাতের জন্ত বোনি (বন্ধবাদি জন্ম) প্রাপ্ত হর, আবার আন্ত দেবীরা হাণ্
(স্থানি-দেব) লাভ করে' এই কথা বলা হইরাছে; তাহার পর [রহ্যারণাকে]
'আরা স্বংল্যোতি: বা স্প্রকাশ প্রইরপ উপক্রম করিরা থাকে,' 'পূণ্যকর্ম্ব বারা পূণ্য (ম্বর্গাদি গামী) হন,আর পাপকর্ম বারা পাপ (মরকাদিগাদী) হর',
এই কথা বলা হইরাছে; পুনক্চ 'তোমাকে ব্রাইব' এইরপ উপক্রমের পর
[আলা] 'বিজ্ঞানমর' (অনুপ্রতৈতন্তম্বতাব) এইরপ বলা হইরাছে; [কনত:,
একজারা শাল্প] দেহাভিত্রিক্ত আ্যারে অতিত্ব ব্যব্যাপিত করিরাছেন।

ভাষ্যভূমিকা।

তৎপ্রতাক্ষবিষয়েষর, ইতি চেৎ; ন; বাদি-বিপ্রতিপত্তি-দর্শনাৎ। ন হি বেহান্তরসম্বন্ধিন আত্মনঃ প্রত্যক্ষেণ অভিত্যবিজ্ঞানে গোকায়তিকা বৌদ্ধান্ত নঃ প্রতিক্লাঃ স্থাঃ—নাস্ত্যাত্মেতি বদকঃ। ন হি বটাদৌ প্রত্যক্ষবিষয়ে কন্দিদ্ বিপ্রতিপদ্যতে—নাস্তি বট ইতি।

টীকা। বৰোজাননি নহংপ্ৰতানো মানং, তত্ৰ দেহাকানাকুন্ননাথ অভিনিজানাভিনত তেনৈৰ কুৰ্তুগপজে; নজো ন তত্ৰ প্ৰভিন্তানাভিতি পভতে—তেও প্ৰভ্যাক্তিতি প্ৰভাজত বিবঃ অবকাশঃ বিনিন্দ্ ইতাভিনিজানাভিন্ন উচাতে। বজুপি বাভিনিজানাভিন্ন ব্যক্তিয়েশ অহংগীবোচনা, তৰাহপি ন না বাভিনেক্নানাবো গোচনাভি; ব্জাগন-বিবেক্কুনানান্ অহংপ্ৰতানভালাং বাভিনেক্প্ৰতান্তান বিপশ্চিতাং বিপ্ৰভিশ্বভাল-প্ৰদানিভি পৰিহৰতি—ল আন্টোক্তি। বেৰপ্ৰভিক্লা বাদিনো নাভিকা নৈৰ বিবাদং ক্ৰীভানিত না স্থাতি বিত্ৰাভিন্ন বাভিনা বিবাদং ব্যক্তিয়াহ—ল স্থাতি। তেবু প্ৰাভিক্লানভানাৰ্থ বিশেষণং নেতাদি। ইভি বনভঃ সভো নোহপ্ৰাক্য প্ৰভিক্লান হি স্থাং, এবং বনন্ অভৈন অনভন্যৰ অধ্যক্ষিত্ৰাগনিভিদ্যাভাবে কুই:ভনাহ—ল স্থাতি।

ভাষ্যভূমিকান, থাদ।

ৰদি ৰল, সেই আত্মা ৰে দেবাতিরিক ইবা ত প্রতাক্ষমিন্তই বটে :[স্কুতরাং এ বিষয়ে বলিবার আর কি আছে ?] না,—ভাবা বলিতে পার না ; বেবেডু এ বিবরে বাদিগণের বড্ডেদ দেখিতে পাওয়া বার। প্রত্যক্ষ প্রবাণ বারাই বদি দেহান্তরপাবী আত্মার অভিদ্যালন ছির হইত, তাহা হইলে লোকায়ন্তিক (নাভিক) ও বৌদ্ধান কবনই 'আত্মা নাই' বলিয়া আনাবের প্রভিপক্ষ হইত না; কেন না, প্রত্যক্ষের বিবরীকৃত বটালি বন্ধর অভিশ্ববিদ্যে 'বট নাই' বলিয়া কেহই ড বিক্লছ যত প্রকাশ করে না।

ভাষাভূমিকা।

ছাবাদৌ পুরুষ।বিধর্শনাৎ নেতি চেং; ন; নিরূপিতে অভাবাৎ। ন হি প্রভাকেণ নিরূপিতে ছাবাদে বিপ্রতিপত্তিরতি। বৈনাশিস্থাত অব্যক্তি প্রভাবে আয়বানেহপি কেহাত্তরতাতিরিক্তাত নাভিববের প্রতিকানতে। তথাৎ প্রভাকবিষয়বৈদক্ষণাৎ প্রভাকাহ ন আয়াভিবসিদ্ধি:।

ট্রীকা। তন্ত ব্যতিচারং শহতে— আপুনদানিতি। শতাকে বর্ধিব ছার্মা পুরবো বেতি বিশ্রতিপ্রেরণলয়াং ন প্রতাকে বিশ্রতিপত্তাভাবো ব্যতিচাংলিতি শতার্থঃ। আদি-পদেন পাবাপারে) বজাবি-বিপ্রতিপত্তিঃ সংগৃহতে। কিং প্রত্যক্তরাত্তে বিশ্রতিপত্তিঃ কিং বা তেন বিবিক্তে প্রতিপরে । নান্তঃ, অলীকারাং। ন হৈবরান্ত্রনি প্রতাকে বিপ্রতিপত্তা অপি ন আস্বাবেরণা; তেনৈর তর্মিরাসেন তর্মির্থাং, ইতি বরানো বিতীরং দ্বরতি— মেত্যা-কিমা। প্রতাক্ষতো বিবিক্তেংর্থ বিপ্রতিপত্তাভাবং প্রপক্ষতি— ন স্থাতি। আছানঃ মুলনের-ব্যতিবিক্তবং ন প্রতাক্ষবিতি প্রতিপান্ত স্থানের-ব্যতিবিক্তবন্ধি ন আহংপ্রতার্থাছ-বিত্যার—হৈনাশিক্ষান্তিতি। তে ববর্ষতি বিরম্ অমুত্বতি; তবাপি কেলভ্রং মুলনের্যাতিবিক্তং স্বন্ধং, তার প্রধানভূতারা ব্রেরতিবিক্ত আছানো নাতিব্যবের পঞ্জা। তথ ন অরংগিল স্থানেরাতিরিকান্ত্রনিতিবিত্যর্থঃ। কিং চ, প্রতাক্ষত বিবরো ক্লপানিং, তথাহিতাং তবৈলক্ষণাং, তদান্ত্রনাতিরি, ''লপক্ষবন্ধান্ত্রপত্তিবিক্তারান্ত্রিক্ত প্রতাক্ষাৎ প্রসাধি তদাধারং বিনা প্রভাক্ষং ক্রবতে। অতো ন দেহান্ততিবিক্তারান্ত্রিক্ত প্রতাক্ষাৎ প্রসাধিতিয়ার—তিক্যান্তিতি।

ভাষাভূমিকানুবাদ।

বদি বল, [প্রত্যক্ষণিত] স্থাপু (—শাথাদিশ্ন্য বৃক্ষ) প্রভৃতিতেও বধন
মন্ত্রাদি-ত্রম দেখিতে পাওল বাহ, তথম এ কথা সক্ষত হটতে পারে
না। না,—বেহেতু সেধানেও স্থাপ্তের নিশ্চর নাই; কারণ, প্রত্যক্ষ বারা
স্থাপু নিশ্চিত হইলে, কথনই তাহাতে বস্থাদিত্রম উৎপন্ন হইতে পারে না।
বৈনাশিকেরা (বৌদ্ধান) কিন্তু 'অহং' প্রতীতিস্ত্তেও ক্ষেতিরিক্ত আত্মাহ
নাজির যা অভাবই স্বীকার করেন, (অভিদ্ব স্থাকার করেন না)। অভ্যন্তর
লৌকিক প্রত্যক্ষবিষয়ের স্থাক বৈলক্ষ্য থাকার প্রভাক প্রমাণ বারা আত্মার
অভিদ্ব বিশ্ব বা প্রমাণিত স্ক্রিডেচ সা।

ভাষ্যভূমিকা।

তথা অস্থানাবলি। প্রত্যা আন্নাতিবে নিকত বর্ণিতবাৎ নিকত চ প্রত্যক্ষিম্বাহ নেতি চেৎ; ন; ক্রান্তবস্বক্ষ্যা অপ্রবাহ। আগবেন ভূ আন্ধাতিবে অবগতে বেদপ্রবর্ণিত-নৌকিক-নিক্ষিণেবিকে, তবসুসারিবো নীবাংসকাভাকিকাক অবং-প্রত্যক্ষিকানি চ বৈদিকারের খ-সভি-প্রত-বানি—ইতি করবতো বৃহত্তি—প্রত্যক্ষ্য অনুষ্ঠেশ্বক আন্না ইতি।

সর্বাণি অভ্যাত্ম দেহারবস্থনীতোবং প্রভিপত্য দেহারবপতেই।নিইপ্রাত্তিপরিহারোপারবিশেবার্থিনঃ তবিশেবজ্ঞাপনার কর্মকান্তং স্বাবন্ধন্য । ন

স্থাত্মন ইটানিই- প্রাত্তি পরিহারেক্ষাকারপর্য আয়বিবর্মজ্ঞানং কর্তৃতোজ্জবর্ষণাভিষানকর্মণং তবিশরীতক্রভার্ম্বরপরিচানেন লপনীত্র । বাবং বি
তৎ ন অপনীরতে, ভাবনরং কর্মকন্তাপ্রেবাদি-বাভাবিকদোবপ্রবৃক্ষঃ শাত্তবিহিতপ্রতিবিদ্যাতিক্রবেশাপি প্রবর্তমানো মনোবাক্কাটেঃ ভৃটাভৃটানিইসাবনানি অধবসংক্রকানি কর্মাণি উপতিনোতি বাহলোন, বাভাবিককোবনীরভাব; ততঃ স্বাবরাত্তাগোগতিঃ ।

जिका । अकाकरका विविद्ध विश्वतिशत्तारात्राव : अकटक 5 क्षत्रविविधि वावर । अव रेखांकाः कविवाधिकाः, अनवार, ज्ञानवर , रेकाञ्चनानार विक्रिकाविन विविष्ठ ; व्यकार-फटशकि। न चात्राविष्यनिष्ठिः वैकित्रश्वार्थः 'ठवा'-पनः। चतः छातः-वेक्कावीनाः चाकरका चक्रमानिष्यः, भावकरका भवन्नवाध्ययः, बाधारक देशनीय्यव नाधामानवार । कृष्टिर-न्द्रचन ह बालप्रवात्त्रकृदन निक्रमाध्यकः यमनः व्यात्रक्षक निक्रपाद : बाद्यादको ह प्रशेषक माश्वरिकमारक्षि । यः व्यानिव व्यानिवि" हेड्याविक्र हा व्यानवावियानावाचाक विक्रक चावाकित्व अर्श्वकवार क्षत्र ह नार्वित्राहनकत्र अठाकानिनिवावित्रवार न ठक नरेक्क्वश्वात् हैकि नवात-अञ्चलित । बाह्यः वाकरतात निकायाविधास क्का निका न डेन्डविडि अविवर्शक —स्मिकि। (वांश्टिकन वांशिक:, न टक्क्नाविकान-वृक्षकः, यथा व्यक्तितावावाः। आनवावित्रावावाकावि च्हारुवावावायाः हरूनावि-क्रीयम् अवस्थिति मञ्चावसामाद्यत् सिटमानवामः। न हि निन्धावन्यत्व उद्गावकरतः। चांबाना. बनावरभवका बांगानावारक वात्रक्षार व्याविकारानाविकार - ज्ञाराने च्छरत्रकि । नमु वास्त्रिकाशाधिवन चार्गरेनकनवाः १६५ कवर छरमहाचम् बम्रुरबहर s বৈতি বাদিনো বংশ্বীতি, ভতার – আপাত্মন ত্রি:তি। "বেরা গ্রেডে বিচিকিৎনা" वैकााक्षत्रवर "त्का त्ववाकार" वैकामित्यत्वारेकच बानवाविक: त्नोकिरेकनिक-विरंगरेव: बाबाखिए जिल्ह बरवाकाश्वनिक्ति बक्नबरका वाविरवा देवविकरवर बरासकावर अधिमक्यामा देविकारकर ह निकानि गुक्कः त्वाब्द अकानिवि हानि कावि —हेकि क्यारका विश्व जान्तानः रवष्टि : रचण्य जाना रत्याककरणाकननविश्वा रेणार्यः।

টীকা। 'বভাভ' ইত্যাদিনা কাভয়োঃ সৰজ্ঞ এডিজান্ন ভাষর্বোন সিত্তে অর্থে বেলাছ-आवानाः 'नदस्थिति' देखानिना अनाम अनुना कर्वक्टि एक्ट्रूकः देवतानानिकाता कारनार-পভিবিভি ভবোঃ নখৰ: কৰমতি -- লক্ষ্ম প্ৰাপীতি । আগবাৎ নানভবাৰা বাভিবিভাৱা-चिव-मिक्रिया वित केरार्थः। प्रवादिशाध-वित्ववितः सम्बाधनावितः सम्बाधनावितः চেৎ,ভাই ভনোক কৰ্মভিবেৰ বিৰক্ষিত পুৰৰ্বনিছে: বেশুভায়ত-বৈএব্যাৎ দ সৰভোজি: দাৰকাশা, ইত্যাপত্যাহ --- ন জিভিঃ। স্বাস্থাজানং ব্যবর্থকারণম্, স্বর-ব্যতিরেক-শারণম্য দ্বিত্যাঞান-कार्यानिकक्त है। एक वक्ष्-राक्तक्तिकार्याकार्या वन्तिक्ष । व हि छ९ क्ष्मार्थारेक्ट्राव कर्पक्तिः नकावन्यवसूर, विद्यावाकासर । अचार अस्तावमार्गः कामनिकात द्वराकास्य मुख्यार डेल्मपथनिविविवार्थः। यनि वर्षविः प्रकानः न निर्वर्षः, या निर्वविदे : म्राकार छत्रिम् कर्षत्रवार (बाक: ऋर, हेगानकाार-धांचळीछि। प्रव.ब्ला-स्वर माका-(बाक्षरकू:, म कर्ब : ७२ कू धनासाः कर्षपदानि । म हि महान बस्ताद ब्रिट: , कविन् मकि नःगांतक पूर्वातकार। उत्थार कर्वकावक दिशानाता अत्यत्ना मुकाविकि कात:। 'बध्रन्' हेठि चर्का विश्विष्ठ । 'दान्रदाश्ति'-हेठाविन्यम विद्याचिकास्त्रिवरम्बद्धा तृक्षः । (वायानाः पाकानिकवः नाम्नानः तक्षवन् । 'वाति'-कावः त्रकावनार्यः । 'वृष्टेचम् व्यवस-वाहित्त कतिष्ठव् । 'बहुरेक्:' नाप्रवाजनवाहत् । अवत्रवान्ववाहृत्वा त्वकृषात् चाक्रान বিক্রেন্ডি। यर रेरवामार्थः কর্মকনং প্রশাসনৰ মধ্যকনবাদ—ভড় ইন্ডি। ইক্ত হি— "नात्रीवरेष: क्षरवारेवर्वाकि श्रावत्रकाः नदाः" देखि ।

ভাষাভূমিকান,বাদ।

প্রত্যক্ষের কার অনুষান ঘারাও আহ্বার অভিন্য অনুষ্থিত হইতে পারে না।
বিধি বদ, প্রতি নিজেই আহ্বার অভিন্যপাদক প্রবৃহধাদি ধর্ম প্রাক্তনি
করিয়াহেন, এবং ঐ সমন্ত নিজ বা অভিন্যপাদক বর্ম ববন প্রত্যক্ষরাত্ত, তবন
আহ্বাকে আর প্রত্যক্ষণির অবিবর বদা বাইতে পারে না। না,—
একধান্ত বলিতে পার না; কারণ, আহ্বার বে ক্যান্তরের সহিত সম্বদ্ধ
আহে, তাহং প্রত্যক্ষণা নহে। বন্তত্য, শার্থপ্রমাণ ও বেলাক্ত দৌ ক্য
কেতৃবিশেষ (অহং প্রতীতিক্রপ হেতৃ) ঘারা আহ্বার অভিন্য অবগত হইরা
তদল্পারী নীষাংসক্ষণ ও তার্কিক্সণ বেলাক্ত 'অহং'-প্রতীতিক্রণ হেতৃক্টেই
আপনাধ্যের উদ্ধাবিত হেতৃ বলিতা করনা কর্ম আহ্বাকে প্রত্যক্ষ ও
অনুমানগ্যা বলিরা নির্দেশ করিরা থাকেন (৪)।

(a) ডাংশর্থা—ডার্কিক্লিপের সক্ষান অধানা এইরপ —দীববেং ইচ্ছা, বেব, সুব, ছংব এড়ডি কডকঞ্জি অভান্তরত্ব ওব আছে: ওব বাজই রব্যানিত। স্করাং ও সবভ ওবেত্ব আরম্ভাবে বেব্যক্তিক আতাবই অভিব নিড হইডেছে। বছতঃ এক্সপ অনুসাদ বালাও

वृष्मात्रगुरकार्गानवर्



ভাষ্যভূমিকাসুবাদ।

শারাভির প্রাণিত হর না; কারণ, বনকে ইজানির শালার বালনেও ঐ সময় কথা উপপন্ন বইতে পারে। ভাহার পর, উাহারা বে এইরপ প্রনাণ প্রদর্শন করেন, ভাহারও বুল শার। কারণ, পূর্ব্বোক্ত শবেরং প্রেভে বিচিকিৎসা নসুবোল ইত্যানি ক্রতি ও ক্রভাকে "কো ছেবালাৎ কঃ প্রাণাৎ" শর্বাৎ 'কেই বা বাস ছাড়িত, কেই বা চেঃা করিত' ইত্যানি লোকপ্রসিদ্ধ খাস-প্রানানি নিজ বা হেতু হারা পারই শালার প্রিভির বে সমস্ত প্রবাণ প্রদর্শন করিয়াছেন, ভার্কিকরণ সেই সময় হেতুকেই আপনাদের বুদ্ধি খারা সমুদ্ধানিত হেতু বলিরা প্রকাশ করেন, এবং ভাহার সাহাব্যে লালাকে প্রভাক ও শ্রম্বানস্ব্য বলিয়া ঘোষণা করেন মাল বল্পতা, ঐ সময় প্রমাণ ধবন শালাবিচ্ছু তি নহে, তেখন পালার শভিষকে এক্সাল আগ্রমণ্যাই ব্লিভে হইবে।

(e) ভাংগণ্য--- অধর্মাণ্য পাশকর্মের কলে জীবের বেরূপ অধােগতি হইয়া থাকে, সঞ্ অভিতে ভাষ্যর একটা মোটামোটা হিসাব প্রকত হইয়াছে। তিসি বলিয়াছেন ;---

"नदीद्रदेश: कर्यद्राटेश्वांकि श्वदर्शः नदः।

वाहिटेक: निकटवानिकार मानटेमब्रुकाकिकान् ॥"

অৰ্থাৎ মাজুৰ পারীরিক ব্যাপার ধারা পাপ কর্ম করিলে, বুকলভাগি ছাবর-বেহ লাভ করে, বাক্যু ধারা পাপ করিলে পকিবোলি এহণ করে, আর বানগিক চিছা ধারা পাপ করিলে

ভাৰাভূমিকা।

টীকা। তৎ কিং পূণ্যাপচরাভাবাৎ অনয়কানং অর্গানিকানিতি, বেডাার—কান্টিনিডি। শারীন্ন গারত নগারতে কলিজান্ত ক্ত ইডি। 'আনি-নিজা বাজেনবিবঃ। ক্লাবিভাগং বক্তং কর্ম ভিনতি —ভালু জিনিএমিডি। এত বৃত্তিকলতং নির্মিত্তং কলং বিভলতে —ভাত্ত ভা কেবলাবিটানিকর্মেটি বেখা। 'কর্মণা শিত্তোকাং' ইতি হি বজাতি। তামিনু কাভিয়েতা আনিবলং। 'কিন্তাা বেবলোকাং' ইভি ক্রভিয়ু আনিভাছি—ভাইনেভি। দেবলোকো বত আনিং, বজালোকো বত জহা, ভতার্মত প্রান্তিতা নর্মার পরমায়-ভাবনাপুরংগরং নিভাং কর্মানুভিনু আন্তর্মান ভাইনাপুরংগরং বিভাং কর্মানুভিনু আন্তর্মান বিভাগে বিভাগে নির্মান্ত নির্মান্ত নির্মান্ত বেবলারী। ভারার্মণো কতরং বেরানিভি বিভাবে নির্মান্ত আন্তর্মান্ত নির্মান্ত নির্মান্ত আন্তর্মান্ত করং কর্মানিভি বিভাগে ক্রভিয়ান্ত আন্তর্মান্ত নির্মান্ত আন্তর্মান্ত আন্তর্মান্ত করা বেবলাকত, কামনাপুর্মণ ভূ শিত্তলোকত আশ্বিভার্মঃ।

'অবৃত্তং চ নিবৃত্তং চ বিবিংং কর্ম বৈদিকষ্। হহ বাংশুত্র বা কাষাং অবৃত্তং কর্ম কীর্তাতে । নিকাৰং গুনিপূর্বাং ভূ নিবৃত্তৰভিনীয়তে।'

ইত্যাদিনজ্ম্বভিং চ দৰ্বৈৰ উদাহনতি—স্মৃতিশ্রুন্তি। ধর্মাধর্মরা: একৈকভ কলন্ উল্লা নিজ্ঞানে: কলনাধ--জাম্ম্যে চেন্ডি। উজং হি —

'উভাত্যাং পুণ্যপাপাভ্যাং ৰাষ্ট্ৰাং নভভেহ্বশঃ' ইভি।
শত্তাশ—হীনগাঙিই আগু হয়। ঐঞ্প স্বাস্থৃতিত কর্মের ক্লা বে, কডবিনে উৎপন্ন হয়,
ভাহানত নির্দেশ ক্রিয়াছেন;—

°ব্ৰিভিৰ বৈশ্বিভিৰ্ম (বৈশ্বিভি: পৰৈশ্বিভিৰিটন:। অস্ত্যুৎকটো: পুণ্যপালৈশ্বিটেছৰ কলবন্ধুতে।"

কর্মকালীন বানসিক অভিনিবেশের ভারভাঞ্সারে কর্মকা ভিন বংসরে, ভিন নাসে, ভিন পক্ষে কিংবা ভিন দিনের নথাও একাশ পাইরা থাকে। কিছু ভারভার গরিমাণ অভ্যন্ত অধিক ক্ইলে ভৎক্ষণাৎও কল একাশ পাইতে পারে। বেষন—বহারাক্ষ নহব অগত্য কবিকে পদাধাত করার ভল্পুর্তিই সর্পবেহ প্রাপ্ত ক্ইরাছিলেন। কর্মকলগত এই প্রকার বৈভিন্তা পুরাণশান্তে বহুতর বর্ণিভ আহে।

उद्यानगाटकार्यानम् ।

টীকা। বিবিধনণ কৰ্মকা বৈধাবাৰ্থ সংখিণা উপসংহয়তি—এমমিডি। দা চ অবিক্যা কুম্বাং অনুৰ্বান্ধন, ই চাং—আক্তাবিক্তেতি। বিচিত্ৰ কৰ্মকাভ্যা ভড়া বৈধিয়াবাং—এপ্ৰাথক্যেডি। তি ধ্বাধৰ্মভাবেদ ভৱিষ্ঠাণসভাগৰ কুচন্ অবিক্যা, ইভাক আং—সাম্মেডি। তেনাং হক্ষাব্যা অবিক্যা, ভণাসৰ্থেতি বাবং। ধ্বাং। অবিক্যালক্ত বিবিভয়োশাল্যবভাগি উপৰোধ ইতি ভাবঃ।

ভাষাভূমিকাসুৰাদ।

ক্ষমত বং শাত্রান্থনীগনভাত সংস্থানত প্রবন্ধ মইরা থাকে। তথন মানসিক্
বাতিক ও কারিক চেটার লাগনার লভাইসি ছার লভ বহুগণরিমাণে ধর্মকর্মক সক্ষর করিয়া থাকে। সেই ধর্মকর্ম আবার ছুই প্রকার—(১) জানপূর্মক, ও
(২) কেবল (== জানরহিত)। তর্মধ্যে কেবল ধর্মকর্ম ছারা পিতৃলোভালি
লাভ হয়, আর জানপূর্মক ধর্মকর্মের কলে দেবলোক (== মর্গ) হইতে আরম্ভ
করিয়া ব্রহ্মলোক পর্যন্ত লাভ হয়। তছোধক প্রতি এই—'দেববাজী অর্থাং
বাঁহারা কেবল দেবতার আরাধনা করেন, তাহাদের অংশক। প্রায়হালী
(== আত্মলানসম্পন্ন লোক) প্রেট, ইত্যাদি। স্বতিও আছে—'বেলোক কর্ম
ছিবিধ' ইত্যাদি। ধর্ম ও অধন্ম অর্থাং পাণ ও পুরা সমান হইলে সক্ষাদেহ
প্রাপ্তি হয় (৬)। এইরণে স্বভাবনিদ্ধ অবিভালি-দোষসম্পন্ন ব্যক্তির ধর্মধর্ম
কর্মান্তর্ভানের কলে ব্রন্ধানি-ছাবংদ্ধ-প্রাপ্তি পর্যান্ধ প্রতি হয়; কিন্তু ঐ সমন্তই
সংসার-ক্ষণার অন্তর্গত এবং নাম-রূপ।প্রতি।

ভাষাভূমিকা।

करवन देवर नाककर नावा-नावनज्ञभर क्षत्रर खाल्यभावः व्याक्ष्यानीय। न अन नीवासुदावितम् व्यविधाककः नश्नात व्यावनि क्रित्रा-काजक-क्रमाधारद्वान-

(•) ভাংপর্যা—বেংলাক্ত কর্ম সাধারণতঃ ছই তাপে বিভক্ত,—(১) প্রয়ুত্ত কর্ম ও (২) নির্ভ্ত কর্ম। তর্মধ্য এটিক বা পারলোকিক কলোক্ষেপ্ত যে কর্ম অস্কৃতিত হয়, ভাহায় নাম 'প্রয়ুত্ত' যা 'কামা' কর্ম। নিভাবৈনিজিকানি কর্মও এই 'প্রয়ুত্ত' কর্মেনই অভনিবিট্ট ; আর কোন প্রকার কল উদ্দেশ না করিয়া কেবল জানের অক্ত যে কর্ম অস্কৃতিত হয়, ভাহায় নাম 'নিরুত্ত' বা 'নিভাম' কর্ম। প্রয়ুত্ত কর্মের কল বঙাই উৎক্তই হউক না কেন, কবনাই উহা নংলামের বাহিয়ে বাইতে পারে না, এবং ভাবী বিনাশের হত বইতেও পরিজ্ঞাণ পাইতে পারে না; এই অক্ত মূর্কু পূরুষ প্রয়ুত্ত কর্ম পরিভাগপূর্ণকি নিয়ুত্ত কর্মের আগ্রয় কইয়া বাহায়ের , এবং ভাহা ঘারাই ফ্রে ভিত্তভদ্ধি ও আনোংকর্ম লাভ করিয়া ব্রমান্মভাব সাঞ্চাৎ করিছে স্বর্ধ হন।



ভাষাভূমিকা।

লক্ষণ: অনাধিয়নতঃ অনুৰ্ব্য — ইভি একবাধ বিৱক্তন্য অবিকা-নির্বত্যে ভবিশরীত-ব্যবিকা- প্রতিশভার্বা উপনিবস্থ আৰক্তাতে।

ত্রীক্রা। নমু নংনাবদন্তে আবিক্তবন্ অবৃত্তং, প্রভাজানিপ্রতিশ্বনাৎ, শুব নাবল্লপাভাবেৰ ব্যাক্রিকত' টুভি ক্রডে) চ নাবলপান্তনো অবতঃ অভিবাজিনবলাবে। ন চ প্রাবাধিকল্প অবিক্যাক্তবন্; অত আবে—জ্তেসেক্সেমিজি। ক্রমণ্ড অন্তলাবার, ভন্ন অব্যক্তবার;
তলাব নারভবে অনভিন্যক্তবন্দতি। ক্রমণ্ডা চ অভিবাজনিব বৃত্তবানবলি অব্যক্তবিভ্নাক্তবেবেজি, ন তল্প অবিজ্ঞাক্তবে কবন্ অবাধিবন্ । অবিজ্ঞাক্তবাং সংসাংগতিন্ অস্ত্রভাবতে—জ্প
এম ইজি। নমু অবিজ্ঞাক্তবে কবন্ অবাধিবন্ । অবিজ্ঞাক্তবাং সংসাংগতিন্ অস্ত্রভাবতে—জ্প
এম ইজি। নমু অবিজ্ঞাক্তবে কবন্ অবাধিবন্ । অবিজ্ঞাক্তবাহ্ণপান্তিন । তবি ক্রমণ্ডিবন্তা। স্থাবিবাজি । তবি ক্রমণ্ডিবন্তা। নারভাবেশ নালাভ্যের নালা ভবিবাজি,ইলাপিক্যান্ত আন্টিন্মিজি। তৈবি ক্রমণ্ডিবন্তা করিভ্রন্য ইল্যান্তলিক্তা।
নারভাবেন ভলে। বিলক্ষরণ একরপ্রে বৃত্তঃ তল্প করিভ্রন্য, ইল্যান্তলিক্তা।
নারভাবেনি সংসারভ আগভাবেব বিন্তিং জানিতি তেব, ভ্রমণি ক্রমিজ্যান্তরের নালো
নাজি, ইল্যান্তল আগভাবেব বিন্তিং জানিতি তেব, ভ্রমণি ক্রমিজ্যান্তরের নালো
নাজি, ইল্যান্তল আগভাবেব ভর্ন উর্লেহ্ণ। বলাব কর্ম সংসারক্রমণ, ন নোজং
লন্মভি; ভ্রমণে স্বিধান-সংগার-বিবর্তবার্জনার্নির্ভন সাধনচভূইনস্পারন্থ অধিকারিবন্
বিষ্কৃত্ত বেলাভার্যঃ স্কর্বির, ইত্যাপন্তরেতি —ইত্যোভক্তমান্তিতি।

ভাষ্যভূমিকানুবাদ।

শেই এই নাম-রপাত্মক সাধ্য-সাধনরপ অর্থাং কার্য্য-কার্থ-প্রবাহরণে অভিযাক্ত পরিভূপ্তমান এই অগংই উৎপত্তির পূর্বে স্বয়াক্ত বা অনভিষ্যক্ত ছিল। বাল ও অভুরের কার্যাকারণ হার বেমন অনাদি অনন, তেমনি অবিভাষারা আয়াতে আবোপিত ক্রিয়া, কারক কেন্ত্রালি) ও কর্মকলাত্মক অনর্থমর এই সংসারও অনাদিকাল হইতে অনন্তকাল পর্যান্ত প্রবাহক্রমে বর্ত্তমান রহিয়াছে। বে লোক এই সংসার হইতে বিরক্ত বা বৈরাগ্যসম্পন্ন হইয়াছে, তাহার অবিভানির্ভির কল্প এবং অবিদ্যাবিরোধী ব্রন্ধবিভা লাভের উল্লেক্ত উপনিবৎ শাল্প আর্ক্র হইতেছে।

ভাষাভূমিকা।

শশু তু অথ্যেধ-কর্ম-সম্বাদ্ধনা বিজ্ঞানত প্রবোধনং—বেবাস্ অথ্যেধে বিশ্বান্ধ তৎক্ষপ্রাধ্যি, "বিশ্বন্ধ বা কর্মণা।" "তত্তি এতলোকবিধেব" ইতোবসাহিস্ততি ছাঃ ।

कर्षविवश्वपावव विकासाम्बर्क (६९ : म : "(वश्वपाववन वकाल, व के

ভাষ্যভূমিকা।

देवनस्वर (दक्षण देवि विकास्थातः। विष्णाश्रेकत्वर्ग व बाह्यानारः। कर्षास्य व ज्ञानारः। कर्षास्य व ज्ञानारः। विष्णानारः पद्यानारः पद्यानारः पद्यानारः पद्यानारः पद्यानारः पद्यानारः पद्यानारः व ज्ञानारः।

७७ ह हैर जन्नविष्यादास नाहानः नर्सकर्यनाः नःशाविष्याच श्रवन्ति-नार्यम्। छवा ह पर्नेद्रियाचि क्रमम् चननावाः मृञ्जाकावम्।

নীকা। বথোকজানার্থকেন উপনিবদারতে 'ব্রন্ধ বা ইন্দান্ত আসীং' ইন্নারন্ধবাং ভ্রমানার্বান্ত জানোপ্রেন্ধরণ : 'উবা বা অবস্ত' ইন্নার্থক ন নৃক্ত', সাক্ষান্ত অব ভ্রম্পুটেং, ইন্নান্ত জানার্বান্ত উপনিবদারতে অভাইং কর্ম্ন অভিবিৎসনামঃ প্রথমন্ অবমেধাপাসনক্ষনাহ—অক্ষা জিভি। রাজবক্ষরান্ত অবমেধাত গ্রমানিবিধানিশ আক্ষণানীনাং ভংকলাবিনান্ অন্নাবেন উপাসনাথ ভ্রমানিবিধি মহা জ্ঞানত ভ্রমানিবিধি নির্মানিবান্ত ক্রমানার্বান্ত বিশ্বনার্বান্ত বিশ্বনার্বান্ত বিশ্বনার্বান্ত ক্রমান্ত ভ্রমানিবান্ত ক্রমান্ত ভ্রমানিবান্ত ভ্রমানার্বান্ত ভ্রমানিবান্ত ভ্রমানান্ত ভ্রমানান্ত ভ্রমানান্ত ভ্রমানান্ত ভ্রমানিবান্ত ভ্রমানান্ত ভ্রমানিবান্ত ভ্রমানান্ত ভ্রমানিবান্ত ভ্রমানান্ত ভ্রমানিবান্ত ভ্রমানিবানিবান্ত ভ্রমানিবানিবানিবানিকানিবানিবানিকানিবানিকানিবানিকানিবানিকানিকানিবানিকানিকানিবানিকানিক

শ্বৰে বহুণাননং, তন্তাশি শ্বাধিনং তাছেনছেন ফলননাং ন পাতল্পে তদ্ বনুন্ন নকেনু প্ৰস্তাকনাতানানিতি প্ৰত্ৰ—ক্ৰমানিক্ৰয় ছামিতি। জ্ঞানজ ক্ৰম্বিং কুন্ধতি—নেন্দি। পূম্ম শ্বতা দৰ্শিতাং বিকল্পজ্ঞান ক্ৰমিত প্ৰস্তা প্ৰস্তানিত প্ৰাণ্ড নিকল্পজ্ঞান ক্ৰমিত প্ৰাণ্ড নিতাং বিকল্পজ্ঞান ক্ৰমিত ক্ৰমিত নিতান ক্ৰমিত ক্ৰমিত

তত পুণাঝেটাবংশি প্রকৃতে কিনারাতা, তলাই ত্রন্থ সৈতি। বলা ক্রত্থবানভ অধ্যেকত উপাতিনহিত্তাশি সংদারক্ষরং, তলা অলীরসান্ অনিহোলালীনাং স সারক্ষরং কিং রাচান্, ইতালিন্ কর্মরাপে) বছচেতে বিষ্ণুঃ সাধনচত্ট্রবিশিষ্টা জ্ঞাননপেক্ষান্ঃ তত্বপারে অবপালে) এব সর্বাক্সনাল্যক্ষিক কবং প্রবর্তেরন্ নইত্যাশার্থতা ক্রতিক্লপাসনাং বিজ্ঞানতে অভিন্থাতি। তেন "উবা বা অবক্র"ই ত্যাত্বাপনিব্যারক্ষে নৃত্তঃ, অত বিশিষ্টাবিকারি, স্বর্শক্ষাবিধার, ইতার্থ। ইপাসনক্ষত সংসারধ্যেত্রগ্রের ভূতঃ সিদ্ধুণু অত আহ—ত্রেঞ্

চেক্তি। অশ্নারা বি মুড়াঃ, "স বৈ নৈব রেবে, সং অবিতেৎশইতি ভবারভাাবিশ্রধণাৎ উপাতিমুক্তক্রতুক্তক প্রত বভনগাণাভিত্তাৎ বিশিটোংশি ক্রড়ং ব মুক্তরে পর্বাযোভীভার্বঃ।

ভাষ্যভূমিকানুবাদ।

এই অখনেধ কর্মসন্ধী বিজ্ঞানের (অর্থাৎ এই বৃহদারণ্যকোপনিবদের প্রথমে উপদিষ্ট অখনেধ বজ্ঞের রূপক-কল্পনার) উদ্দেশ্ত এই বে, অখনেধবজ্ঞে বাহাদের অধিকার নাই, সেই প্রান্ধণ প্রভৃতিও এবংবিধ বিজ্ঞান হইতেই প্রকৃত অখনেধবজ্ঞের বর্ণায়ণ কল লাভ করিতে পারিনে, (৭) এ কথা 'বিভা অথবা কর্ম বালা [বংগাক্ত কলপ্রান্তি হল্ন'] এবং 'সেই এই প্রাণবিজ্ঞান নিক্তরই লোক-প্রান্তির সাধন' ইত্যাদি প্রতি হইতে [জানা বাল]।

যদি বল, কর্মই উক্ত বিজ্ঞানেরও বিবর, (পর্যাৎ শার্ম্মের পর্যবেশবজেরই অলয়ণে ঐরপ উপাসনার বিধান করা হইরাছে;) দা,—তাহাও বলিতে পার না; কারণ, 'বে লোক অর্থমের বজ করে, অর্থনা বে লোক বর্ষোক্তপ্রভাবে ইয়া জানিতে পারে (= বিজ্ঞানসম্পন্ন হর)' এই স্মৃতিতে বজ্ঞ ও বজ্ঞ-বিজ্ঞানের বিক্রা প্রথক অন্থর্হের,) কবিত হইরাছে। বিশেষতঃ, উপাসনা-প্রকরণে পঠিত হওরার, এবং অর্থমেণাতিরিক্ত কর্ম্মেও এইপ্রকার বিজ্ঞানের উপদেশ পার্লার বুবা বাইতেছে বে, শুরু বিজ্ঞান হইতেও অর্থমেণ বজ্ঞের কল্পাত হইরা থাকে। অর্থমেণ কর্মাই সর্বাকর্ম্মণপ্রকঃ প্রের্ড; কারণ, ইহা ছারা সম্বর্ড ব্যক্তি সম্বত্ত হলা বার।

এই এল-বিভার প্রারম্ভে বে, তাহার উল্লেখ হইরাছে, ইহার প্রধান উদ্দেশ্ত হইতেছে—কর্মনাত্রেরই সংসার-বিষয়ত্ব (অর্থাৎ সাংসারিক কলসাধকত্ব) প্রদর্শন করা। আর ফলভোগের ইচ্ছার রুত কর্মের কল বে মৃত্যুপ্রাপ্তি, ভাষা পরেও প্রদর্শন করিবেন।

ভাষ্যভূমিকা।

ন নিত্যানাং সংসারবিষয়-ফলঅমিতি চেৎ; ন; সর্বাকশ্বকলোপসংহারব্রুড়ে:। সর্বাং হি পদ্মীসম্বর্ধং কর্ম্ম; "লায়া মে তাৎ, এভাষান্ বৈ
কামঃ" ইতি নিসর্গত এব সর্বাকশ্বণাং কাষ্যমং দর্শবিষা, পুত্র-কর্মাপরবিষয়ানাঞ্চ "অরং লোকঃ পিতৃলোকো দেবলোকঃ" ইতি কলং দর্শবিষা,

⁽¹⁾ ভাৎপৰ্ব্য—কৰ্মকাণ্ডোক অৰ্থেৰ্থজে দ্বাৰাইই অধিকান্ত; প্ৰভাং, ভ্ৰাছণাকি আভি ঐ বজেন্ত ক্লালাভে অধিকানী হয় না। নেই বছাই ক্ৰাভি কুপাপন্তৰণ হইনা স্তুপক-বজেন্ত উপবেশ বিভালেন। ভ্ৰাছণাকি ভাজি উক্লপ ভাৰনাত্ত ক্ৰোই—অধ্যেধক কলাভে সূত্ৰৰ্থ কন।

वुक्तात्रगादकारमिषम् ।

क्रांबाक्रीयकां।

खाञ्चाष्ट्रकण्डाक चारक केशमरविवाणि—"खबर वा देवर नाव अगर कर्षण देखि। मर्बाकर्तनार कनर वाक्रिक्ट मरमात बारविष्ठ।

তিকা। উত্তে নৰ্কতৰ্বণা বভদনতে নিডানৈবিছিকানাং ন তৎক্ৰছং, ভেগাং বিমূদ্যেশ কৰালভঃ বইগৰহন্তভাৱেন বৃত্তিক্ৰলভাভিতি প্ততে—ম নিড়ানা-মিডি। 'এডাবান্ বৈ কাৰ:'ইডি নৰ্ককৰ্পনাৰ্ অবিশেষের ক্ষমন্তভাৱনাং প্যাক্তে কাৰ্যা-ক্ষমন্ত ভিছুদ্যেশ্যনাং নিছলং "কৰ্পনা পিড়নোকঃ" ইডি বাকাড নিড্যানিকৰ্পকন্বিয়া লাং ন বোক্তন্তভাৱনা, ইডি পরিষ্টিতি। উত্তরের ক্টুছডি—অর্ক্সং শ্রীডি। পরীন্ততে মান্যায়—জ্যায়োডি। ভবাপি কবং কর্পণঃ সর্কত কাষোলায়ত্বং, ভত্তাহ—প্রজ্ঞানিক্রিক্রিয়া বিকাশ্যন্ত ক্ষমন্ত ক্ষমন্ত্রাত্বং, অভ আহ—প্রজ্ঞান্ত ক্ষমন্ত ক্ষমন্ত্রাত্বং ক্ষমিতি। অভাবায়ত অবসানে কর্মকন্ত হিন্তাগতিয়াতা ক্ষমিত্রাভাৱন ক্ষমন্ত্রাভাৱন ক্ষমন্ত্রালয় ক্ষমন্ত্রালয় বিশ্বন ক্ষমন্ত্রালয় ক্ষমন্ত্রালয় ক্ষমন্ত্রালয় বিশ্বন ক্ষমন্ত্রালয় ক্ষমন্ত্রালয় বিশ্বন ক্ষমন্ত্রালয় বিশ্বন ক্ষমন্ত্রালয় ক্ষমন্ত্রালয় বিশ্বন ক্ষমন্ত্রালয় ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্রালয় বিশ্বন ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্রালয় ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্য ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক্যমন্ত্র ক্ষমন্ত্র ক

ৰ্দি বল, না-নিত্যকর্মের কল সংসার্বিবয়ক নছে, (অর্থাৎ নিত্যকর্ম बाबा (व कन वह, छांदा नारगाँद्रक कनार्शका छेदक्टे।) ना.--छांदा व वनिएछ शाब मा : (कम मा, अहे अशारवबहे (चर्च नवछ कर्चकानव रवब्र छन-সংখার করা হইবাছে: তাহাতে দেখা বার, কর্মের সার্ম্বোচ্চ ফল চইতেছে---बिद्रगात्रकंष-शांखि भवाचः (गृहे विद्रगात्रकंश क मानाद्वत वाहित्व महत्व । विष्य क्ट:, कर्षवाखरे भूषो-त्रक ; कारण, 'बामार भूषो रहिक', 'बरे भूषाखरे चामार कायनात विषय थे है प्रान कांगा विवाह ममख कार्यात अवित अपनि कविया-(इन. अवः शक्, কর্ম ও অপরা বিভারও [=ব্রমবিভাতির বিভার] व्याबात वेदालाक, शिल्डालाक ७ प्रतालकाल कानत निर्देश कविताहन. (वर्षार शुख्यत कन इंदरनाक, कर्यात कन शिल्रानाक, बात बशता विधात क्न स्वर्माक थालि. बहेब्रान कनविष्ठांत श्रानीम कविशाहिन)। छाताव भव উপদ: हात्रकाल विनिधाहिन (व, 'शुन्यकाषाक এই अपर जिविध-नाम. রুপ (আকৃতি)ও কর্ম' ; এই কথা বলিয়া অগতের ত্রারাত্মকতা অর্থাৎ ত্রিবিধ আরম্ভপত্ত প্রদর্শন করিবেন (৮)। অভএব, নামত্রপাভিব্যক্ত এই স সার্ট (स. नमक कर्पात लाखवा कम, काहा (वन वृका गाहेरकहा।

(৮) ভাংশব্য-এবানে বন্ধ কৰ্মে বীবের ভোনাবাত্ত বৃদ্ধিত চইবে। নান, স্ত্রণ ও ক্রিয়া নইনাই অবতের অভিব। আগতিক নেই নান, স্তুপ ও কর্ম-ভিনই তীবগুণের

39

ভাষাভূমিকা।

ইগ্ৰেৰ আনং প্ৰাণ্ডংগডে: তৰ্ছি অব্যাক্তভানীং। তাৰৰ পূলঃ স্থাপ্ৰাণিকৰ্মণান্থ ব্যাক্তিয়তে ৰীজানিব মুক্তঃ। সোহয়ং ব্যাক্তাব্যাক্তভাপঃ
সংসায়ঃ অবিভাবিষয়ং। ক্ৰিয়াকায়ক-ক্লায়কতয়া আন্তঃপ্ৰেম্ অধ্যারোপিতঃ অবিভাবেৰ বৃষ্ঠান্ত-তথাসনাত্মক:। অতে৷ নিলকণঃ অনাম-জগকর্মাত্মক: অবয়ঃ নিভাগুছবৃত্যক্ষতাবোহণি ক্লিয়াকায়ক-কলভেলানিনিপর্যায়েণ অবভানতে। অতঃ অতাং ক্লিয়াকায়ক-কলভেল্যভাণাং 'এভাবং
ইক্ষ্' ইতি সাধ্য-সাধ্যম্মপান্থ বিষক্তত্ম কাৰাছিলোহ-কর্মবীজভূতাবিভানিক্তায়ে রক্ষানিব স্প্রিজ্ঞানাপন্যায় এক্ষাব্যায়ত্যতে।

টীকা। কর্মকং সংসারক্তেৎ, আকৃ ভয়স্থ্যিনাৎ ভবভাবাৎ বুজাবাং পুরর্মন্ধঃ তাৎ,
ইত্যাপভ্যাব—ইদ্যেত্রতি। 'ভবি' ভতাববছায়াবিভি বাবং। ভভ পুনর্ব্যাকরণে কারণবাব ভ্যাত্তরতি। বাাস্ক্রভাব্যাস্থ্যাস্থ্যান্ত প্রাবাদিকরেন সভ্যবাদিকর প্রাবাদিকরেন
কর্মন্তর্বান্ত। বাাস্ক্রভাব্যাস্থ্যাস্থ্যান্ত। স এব হি আছিবিবরো ন প্রামাদিকঃ
ভং ক্রোংভ সভ্যতা ইভার্ব: ক্রমক্রারিন মহার কুইছে প্রান্তিরিভ্যাবভ্যাব—ক্রিক্রেভি ।
সমারোপে ব্লকারণবাব—অবিদ্যুত্যান্তি। মার্লিন ম্বিভারোপিভং বৈত্রুইভাত্রশ্বে বাব
কর্মণা রূপে বুর্জং ভব মর্ব্রং চল ইত্যাদিবাক্যং প্রমাণ্ডতি—মূর্ক্ত্রান্ত । ক্রমন্ত্রান্তে।
ন উপপদ্যতে, ভভ নিভাওভব্তব্যক্তভাবত বৈত্রিনক্রপন্তাৎ, মসতি সাধুর্ভে ম্ব্রাসাসিত্রে;
মত মার—অন্ত ইন্তি। সংসারাবৈকক্ষণ্যবের প্রক্রিভি—অন্যান্ত্রান্ত । প্রাধি-প্রেম্ব
মরোপ্রতি—অব্রভান্ত ইন্তি। মার্লিলাসার্লিন ব্যাবিশেন করোবি ভূঞে চা ইভাত্তন্তর্ব ব্যাক্রিভি—অব্যাদ্যান্ত । প্রাবিশ্বাদিবৎ
ব্যাক্রিভি—অব্যান্তর্বান্ত ইন্তি। আর্বানির্বর্জক-ক্রম্বিভার্যার্বনে উপনিব্যান্তঃ স্বভাব্নি, ইভাণ্যসংব্রভি—অন্ত ইন্তি। এভাব্নিভি মন্ত্র্যান্তরাক্তি। ভল্পানাৎ ম্ব্রানির্ব্ত ব্রাহ্ত—ব্যক্তর্বান্তির বৃত্তীত্ত—
নাহ—ক্রম্বর্থানিক্রিন্তি।

ভাষ্যভূমিকাসুবাদ।

এই তিনটিই অর্থাৎ উক্ত নাম, রূপ ও কর্মাই উৎপত্তির পূর্বে অব্যায়ুত বা অন্তিব্যক্ত অবস্থার ছিল; বীল হইতে রুক বেরূপ বহির্মত হয়, তক্ত্রপ

ভোগা; এই অন্ত অরসংজ্ঞার পরিচিত। কর্মের চূড়াত কল সইতেছে—বিরণাগর্ডব আজি, দেই হিরণাগর্ডত ববন নাবরপকর্মান্তক সংসারের অভীত নহে, তবন অপরের আর কবা কি ? ভন্মধ্যে বিশেব এই বে, পুত্র বারা ইহলোকে এডিঙালি হর, জানরহিত কর্ম বারা শিত্তলোক লাভ হর, আর অপরা বিদ্যা বারা—বাহা বন্ধবিদ্যা নহে, দেই বিদ্যা বারা—বেবলোক লাভ হর, কিন্তু কোনবতেই সাকাৎ সবাধে বৃদ্ধিলাত হয় বা।

ভাষ্যভূমিকান,বাদ।

নেই তিমটিই আবার জীবগণের কর্ম বা অষ্ট বশতঃ মুলভাবে অভিব্যক্ত হইল। সেই এই সংসারের (জগতের) অবহা হইটি—ব্যাক্ত
(মুল) ও অবাক্তে (স্ম); এই উজয়বহার সংসারই অবিভার অধিকারে
বর্জমান; অবিভার্ক্ত্রই আত্মাতে ক্রিরা, কারক ও ফলরণে অধ্যারোপিত (আরোপিত), (৯) এবং মৃর্ত্ত (মুল—আক্তরসম্পর), অমুর্ত্ত (স্ম—
মুলাবরবর্হিত) ও ভবিবরক সংখারমর; পরব্রম ঠিক ইহার বিপরীত নামরূপ-কর্ম-কর্ম-কর্ম-কু অহিতীর এবং বভাবতঃই নিত্যত্তরমূক্তস্বরূপ; কিন্তু তথাপি
(১০) অবিভা-বিত্রবে ক্রিরা,কারক ও ফলাদি ভেদে বিভিন্নাকারে প্রতিভাসমান
হইরা থাকেন। এইজন্ত 'ইত্য এই পর্যন্তই', অর্থাৎ ক্রিরালি সম্ভই পরিচ্ছির
ও বিনাশাদি-ঘোর্মান্ত, এইরপ ভাবনাবশে বাহারা সাধ্য-সাধ্যাত্মক বা কার্যাকারণভাবাত্মক ক্রিয়া-কারক-ফ্নাদিভেদ স্বরূপ সংসার হইভে বিরন্তর
হইরাছেন, বৈরাগ্যসম্পর সেই সমন্ত প্রবেরই রক্ত্রতে সর্পত্রম নির্ন্তির জার,
কারাদি ঘোর ও কর্মের বীজত্বত অবিভানিব্রন্তির জন্ম এই প্রস্কবিভা (উপনির্বহ্) আরক হইভেছে।

^{(&}gt;) তাৎপর্য—'অধারোণ' কথাটি বেলান্তশান্তে বিশেষার্থে প'রভাষিত; 'অধান' ইবার নামান্তর। ইবার পরিচর এই প্রকার;—'বছন্তবান্তানোগাংলানাং' (বেলান্তনার), অর্থাৎ কোন একটি সতা পদার্থের উপর অপন কোন অসত্য পদার্থের আরোপ বা আজানমূলক করানা। বেনন—বানহারজগতে হচ্ছ একটি সভ্য পদার্থ; অজ্ঞানের হলে ভারাকে নর্পরণে বনে করা হয়। এই রক্ষাতে বে দর্পজ্ঞান, ইবাই অব্যারোপ: ফুভরাং, সূর্প এবানে অধ্যারোপিত। এই প্রকার ব্রহ্ম নিত্য বিশাপ ও মুক্তকান এবং অন্তিতীর, কিন্তু আজান ভারাতে প্রান্তিবর অনিত্য জগত-ভেদ অধ্যারোপিত করিভেছে। অরণ রাধিতে হইবে বে, অধ্যারোপ বতই বউক না কেন, সেই আরোপিতের দোবগুণে আরোপাধার সভ্য বছটি কথনও বিকৃত বা পরিবর্ত্তিত হয় না, প্রকৃত পক্ষে অবিকৃত নিজ অভাবেই থাকে। অভএব এই বিশাল অপ্তর্গক্ষের আরোপাও ব্যক্তর পিছুমাত্র ক্তিবৃদ্ধি হয় না।

⁽১০) ভাৎপর্যা—নিতা শর্ব কোন কালে বা কোন দেশে কোনও রূপে বাহার বিনাল বা পরিবর্তন না ঘটে। কিন্তু সাংবাবানীরা বলেন,—বিকার বা পরিবর্তন হইলেও বাহার শত্যত উচ্ছেদ না হর, ভাষাও নিতা। এই নিয়নাসুসারে ভাষারা চিরবিকারশীলা প্রকৃতিকেও নিতা বলেন; কারণ, প্রকৃতির বিকার হয় সভা, কিন্তু একেবারে প্রংস বা উজেদ হয় না; হভরাং ভাষাকের নতে নিভা পরার্থ হুই প্রকার;—(১) পরিপানী নিভা, (২) কৃইছ নিভা। ভাষাকের পুরুষ (আলা) ভিন্ন আর কিন্তুই কৃইছ নিভা নাই; আর বেলান্তরতে কৃটছ নিভা রক্ষতির আর কিন্তুবাত্র নিভা প্রার্থ নিভা কার্যাত্র নিভা প্রার্থ নাই; আপর সকলের নিভাভা আপেক্ষিক্ যাত্র।

ভাষ্যভূমিকা।

ভত্ত ভাৰং প্ৰবেধবিকানায় "উবা বা প্ৰয়" ইত্যাদি। ভত্ত প্ৰধিবয়বেৰ দৰ্শনমূহ্যতে, প্ৰাধান্তাৰত। প্ৰাধান্তক ভয়াবাভিভয়াং ক্ৰছোঃ প্ৰাকাপতাৰ্যাক।

্রীক্রা। এবৰ উপনিবদারতে স্থিতে প্রাথনিকরান্ত্রণয়োঃ অবান্তরতাৎপর্যাহ—ন্তব্র ভারতিতি। আত্মত পুনঃ অবান্তরতাৎপর্যাঃ দর্শরতি—তব্রেক্তি। নম্থ অববেশ্বত অচনাহলো কলাৎ অধান্যালনিবন্ধনের উপাননবৃত্যতে, তত্রাহ—প্রাথনিন্তানিতি। ভবেশ্ব কর্ণবিতি, তথাঃ—প্রাথনিন্তানিত তিতি। প্রভাপতিবেশ্বতাক্ষাক্ত অবস্থানান্তনিভ্যাহ—প্রাক্তাপত্যত্ত্বাক্তেতি।

ভাষ্য ভূমিকান,বাদ।

ষ্ণবেধ বজাবিধরে প্রথমত: বিজ্ঞান সমুৎপাদনার্থ প্রথমে "উব। ব। অখন্ত''
ইত্যাদি বাক্য মারত্র হইতেছে। তন্মধ্যেও আবার সর্বপ্রথমে অথবিবয়ক
কৃষ্টির (রূপক-বিজ্ঞানের বিষর) কবিত হইতেতে; কারণ, অথই অথনেধবজ্ঞের প্রধান অন্ধ। ঐ বজ্ঞাটি অথের নামে প্রিচিত, এবং প্রজ্ঞাপতি উহার
দেবতা; এই উভ্যুকারণে অথের প্রাধান্ত বুবিতে হইবে।

व्यथरमा ३ शांत्रः।

[ব্রাহ্মণক্রমেণ তু তৃতীয়োহধ্যায়ঃ।]

[উপনিবলারভ:।]

প্রথমং ব্রামাণম্।

ওঁ মৃ উদা বা অখন্ত মেধ্যক্ত শিরঃ, সূর্যাশ্চক্ষুর্বনাতঃ প্রাণে ব্যান্তময়ির্বৈশ্বনিরঃ সংবৎসর আত্মা অশ্বন্ত মেধ্যক্ত। দ্যোঃ পৃষ্ঠমন্তরীক্ষমুদরং পৃথিবী পাজক্তম্। দিশঃ পার্যে অবান্তরদিশঃ পর্শব ঋতবোৎঙ্গানি মাসাশ্চার্জমাসাশ্চ পর্বনাগ্যহোরাত্রাণি প্রতিষ্ঠা নক্ষত্রাণ্যন্থীনি নভো মাংসানি। উবদ্যং সিকতাঃ সিদ্ধবে। গুলা বক্ষ্ক ক্রোমানশ্চ পর্বতা ওম্বধ্যশ্চ বনম্পত্যশ্চ লোমানি উত্তন্ পূর্বার্কে। নিমোচন্ জন্মনার্কে। যদিজ্পত্ততে তদিলোততে ব্যবিধৃত্বতে তৎ স্তনম্ভি যশ্মেহতি তদ্বর্ষতি বাগেবাক্ত বাক্ ॥ ১ ॥

उनिवासत्र महनार्थ।

সচ্চিদানস্থ-সন্দোহ-সন্দীপিত-কলেবর্ম।
সানস্থ অপদানস্থ ৰূপে জীনস্থ-নস্থনম্।
অপন্য অফপাণাস্থ স্থা শহরভাবিতম্।
বৃহদারপ্রকে ব্যাথ্যা সরলাধ্যা বিভক্তে ।

স্কান্তাব্ধ — আনাভবিভাগমুখ-অমনরপ্রবাহ-প্রগার-সংসার-সাগর-নিম্পান্ জীবান্ অম্ঞানোপদেশেন সমুদ্ধিীর্ ক্রতিরারাজ্পকারার স্থবোধার চ প্রথমং কর্মালাপ্রমুগাগনং বন্ধু মুগক্রমতে। ভ্রাণি বজের্ অধ্যেশত শ্রেউবাৎ, তদকত চ অবত প্রকাণতিদৈবতবাৎ অধ্যিম্যুক্ষের বিজ্ঞানং প্রথমং প্রভোতি "উবা বৈ" ইত্যাদিভি:।

উবাঃ (वात्मा बृहुर्जः); देव नवः (वात्रगार्वकः—श्रावकानवात्तकः)। (वदाक (विवक्त वक्षीतक) व्यक्त नितः (वक्षकः) উवाः; (व्यक्तित

खेरवावृद्धिः कतनेता, त्यक्रेवनावाक्षिकार्यः)। हन्। त्र्वाः (विश्वानाविशार); लानः (नक्रमाञ्चकः) वाकः, (वाद्यम्भवाद लावम); वाकः (व्द-विवत्रः) देवयानवः व्यक्तिः, (वृश्काविद्यवकाकवार); व्यक्ति (विवेदः) मृत्यदम्बः (बाब्नावियामाञ्चकः कामः, व्यवस्थमयश्चिमावाद); पृष्ठेः छोः (हारनाकः, উर्देशनाशार); উष्टब्स् चढदोकः (चाकामम्, चवकामद्रशार); शाक्कः (शाक्षकः शाक्षावादकानः) शृथियो ; शार्थ क्रिनः, शर्मयः (-शार्था-श्रोति) चवास्त्रविष्यः ; चकानि : चवत्रवाः) चठवः (वनसाष्टाः, नावरनत्राकः খাং) ; পৰ্বাণি (অলসভার:) যাগাঃ চ অর্থবাসাঃ (পকাঃ) চ'; প্রতিষ্ঠাঃ (পাৰাঃ) অহোরাত্রাণি ; অহীনি নক্তরাণি ; বাংসানি নুভঃ (আকাশদাঃ (वचाः); धैवधाः (উपवच्यक्षेणीर्ववैः) निक्छाः (वानूकाः, विकैर्णानावाार); श्रमाः (नगरात्रः, यथा वहत्रहमनावर्षाः जन्ममनावाज्ञाक माखाः) निष्दः (নড়:); ৰন্ধুৎ চ ক্লোমানঃ (প্লীকা) চ পৰ্ব্বতাঃ ; লোবানি ওবৰয়ঃ চ বনস্পভয়ঃ চ; প্রার্জ: (দেহত প্রভাগ:) উত্তন্ (উলল্ফন্ ফর্যা:); ক্রনার্জ্ঞ: (উखत्रार्दः) निरत्राहन् (चखर शक्त् रहाः) ; वर विक्षाः (चरः शाकानि বিক্ষিপতি), তৎ বিছোভতে, (বিভূম্বণত বিছোতনসামাৎ) ; বং বিধৃছতে (গাত্রাণি কম্পছতি), তৎ স্তনছতি, (ষেণগৰ্জনগায়াৎ বিধ্নবস্ত), কং (यहाँछ (अर्थः मृत्यः छाष्याँछ), छर वर्षाछ (बनवर्षनगायार (यहनछ); अछ (चर्च) राक् (परः) अर शक् (नाव १४क् कन्ननिकार्यः)।

অত্যেদং বোধ্যং—বে ধলু শাস্ত্রোক্তাধবেধৰজাধিকারিণঃ, তেবাৰেব বজালে অংশ সংকারাধানক আবস্তকত্বাৎ অখালের উবঃপ্রভৃতিদৃষ্টয়ঃ কর্ত্তবায়ঃ, যে পুনরখানেরে অন্ধিকারিণঃ ব্রাহ্মণাদয়ঃ, তেবাস্ত উবঃপ্রভৃতিত্বের অখাল্যটয়ঃ ক্রনীয়তমা বিধীয়ক্তে; অভএব তে জ্ঞানব্দ্রা ইত্যভিধীয়ক্তে ॥ > ॥

মূলালুবাদে—অখনেধ-যজীয় অখের মন্তকাদি অকে উবাকাল প্রভৃতি দৃষ্টির বিধান হইতেছে,—যজীয় অখের মন্তক হইতেছে উবা অর্থাৎ প্রান্ধ মূহুর্ত্ত; চক্ষু হইতেছে সৃধ্য ; প্রাণ হইতেছে রায়ু ; বিবৃত্ত মূখ হইতেছে বৈখানরনামক অগ্নি ; দেহ হইতেছে সংবৎসর ; পৃষ্ঠ হইতেছে গ্রালোক ; উদর হইতেছে অন্তরিক্ষ: পাদাধিন্তান হইতেছে পৃথিবী ; পার্শবর হইতেছে দিক্সমূহ; পার্খান্থিসমূহ হইতেছে আবান্তর দিক্সমূহ (কোণসমূহ); অবর্যব সমূহ হইতেছে ছব্ন ঋতু ; অক্সন্থিসমূহ হইতেছে মাস ও অর্থনাস (এক এক পক); প্রতিষ্ঠা বা পদসমূহ হইতেছে দিনরাত্র; ক্ষত্মি সমূহ হইতেছে নক্ষত্রমণ্ডল; মাংস হইতেছে আকাশন্ত মেঘমালা; উদরম্ব অর্জনীর্প ভূক্তার হইতেছে বালুকারাশি; নাড়ীসমূহ হইতেছে নদীসংঘ; বক্ষথ ও প্রাহা হইতেছে পর্বভরাশি; লোমসমূহ হইতেছে ভূণ ও বক্ষরান্ধি; পূর্বার্ক হইতেছে উদীয়মান সূর্যা, আর পশাদ্ভাগ হইতেছে অন্তর্গামী সূর্য্য; অশ্ব যে জ্বন্তুন করে—শরীরবিক্ষেপ করে, তাহা হইতেছে মেঘের বিত্যুৎসঞ্চার; আর অশ্ব যে শরীর কম্পন করে, তাহা হইতেছে গর্জন করা, এবং অশ্ব যে মৃত্রভ্যাগ করে, তাহাই মেঘের বারিবর্ষণ; অশ্বের শক্ষা ১॥

স্থাক্তর ভাষ্য ভা্ ।—'উবা' ইতি। ব্রাক্ষা মৃহুর্ত উবাঃ; বৈ-শশঃ শারণার্থা, প্রসিদ্ধ কালং শারন্নতি। শিরঃ, প্রাধান্তাৎ; শিরশ্চ প্রধানং শরীরাবন্ননাম্। অবস্ত মেধান্ত মধার্তি যক্তির্বা উবাঃ শির ইতি সম্বর্ধঃ। কর্মান্ত পশোঃ সংক্রিবারাং কালানিদৃষ্টরঃ শির্মানিষ্ শিপাতে। প্রাক্ষাপতাত্তক প্রকাশতিদৃষ্টাব্যাব্যোপণাং। কাল লোক-দেবতাদ্বাধাাবোপণক প্রকাপতিদ্ধরণং পশোঃ। এবংরূপো হি প্রকাপতিঃ; বিফুদানিকরণমিৰ প্রতিষাদৌ।

- স্থ্যালচক্ষ্যু, শিরসোহনন্তরত্বাৎ স্থ্যাধিলৈবঙ্থাচে; বাতঃ প্রাণঃ, বার্থাভাব্যাৎ; ব্যারং নির্ভং মৃথম্ অন্নির্কোলরঃ; বৈখানর ই গারের্কিশেবণ্য; বৈখানরে নামানিঃ নির্ভয়ুখমিতার্থঃ, মুখতানিলৈবতত্বাৎ। সংবৎসর আত্মা; সংবৎসরে ভালশমাসন্তর্গোলশমাসো বা। আত্মা শরীরম্; কালাবন্ধনাঞ্চ সংবৎসরঃ শরীরঃ, শরীরঞ্জান্তা, "মধ্যং ভ্রেম্মানামান্ত্রা" ইতি শ্রেং। অবত্ত বেধ্যতেতি সর্ক্রাম্বলার্থং পুনর্কচনম্।

खोः गृष्ठेष्, উर्द्रभ-नावाजाः । यद्यविष्युष्वत्य्, य्वित्रध-नावाजाः । शृथियो भावज्यः । भावज्ञिष्ठि वर्गवाजः । भाषान्तशानिष्ठार्थः । शिष्य-क्राञ्चार्थि भार्ष्यः । भाषान्तशानिष्ठार्थः । शिष्य-क्राञ्चार्थि भार्षः, भार्ष्यः शिष्यः मर्व्यादेववारः व्यक्ति । भाषां । ।

বাছ্ৰাণি; প্ৰতিষ্ঠাঃ পাদাঃ, প্ৰতিভিঠতি এতৈরিভি; আহারাত্রৈঃ হি কালাব্যা প্রভিঠিতি, অবশ্ব পাইদঃ। নকলাণি অধীনি, ওক্লবসাবাভাৎ। নকঃ নকলাঃ বেবাঃ, অথবিক্ত উদর্ঘোকেঃ; বাংসানি, উবক-কৃষির-স্বেদন্দন্দনাবাভাৎ। উবধান্ উদর্ভন্ অজ্ঞীনিশনং সিকতাঃ, বিলিপ্টাব্যবহনসাবাভাৎ। সিক্ষা অক্ষনসাবাভাৎ নকঃ ওলাঃ নাডাঃ, বহুবচনাকে। বহুক্ত ক্লোবালক ক্ষরভাগতাৎ দক্ষিণোত্রে বাংসগতে ;ক্লোবান ইতি নিতাং বহুবচনত্ত্বক্ষিত্রে হারে; পর্মারা, বনস্পতরো বহুবাঃ, কাঠিভার্ছিত্রভাক্ত। ওবধরণ্ট ক্ষরাঃ ছাবরাঃ, বনস্পতরো বহুবাঃ, কোলানি কেশান্দ বথাসন্তবম্। উত্তন্ উদসক্ষ্ ভবতি, সবিভা আ নধ্যাক্ষাক্ত পূর্মার্জঃ নাতেরজনিত্যর্থঃ। নিল্লোচন্ ক্ষং বন্ আ নধ্যাক্ষাৎ আমনার্জাহণ পূর্মার্জঃ, পূর্মাপর্যসাধ্যাৎ। বদ্ বিভ্ততে গাল্রাণি বিনামন্তি বিক্ষিপতি, তৎ বিভোততে, বিভোতনং মুখ-ঘনবিদারণনাবাভাৎ। বৎ বিশ্বতে গাল্রাণি কম্পন্নতি, তৎ অনন্যতি, গর্জনশন্ধসাবাভাৎ। বং বেহতি মূলং করোত্যখঃ, তদ্ বর্ধতি, বর্ষণং তৎ সেচনসাবাভাৎ। বাংগৰ শন্ধ এবাত অবত বাক্, ইতি নাত্র কলনেত্যর্থঃ। ১ ॥

টীকা। প্রতীক্ষাদার ব্যাচটে—উমা ইত্যাদিনা। সারণার্থবের বিশাভক কুটরতি প্রাক্তিমানিত। পারীরে গৌকিকে চ ব্যবহারে প্রবিদ্ধা বাজাে বৃদ্ধার্থ, তঃ কালমিতি বাবং। উর্বাস বিরংশকপ্ররোগে দিনাবংবের তক্ত প্রাধান্ত হৈতুমাহ—প্রাধান্তাদিন্তি। তথাপি কথা তত্ত্ব চচ্চকপ্ররোগঃ, তত্ত্বাহ—প্রিরেশুরিলে। বুটঃ কর্ত্বনা, ইত্যাহ—অপ্রচ্যোতি। কালাদিনুষ্টরবাজের কিবিতি ক্ষিপাতে, অবালনুষ্টরের তের কিবে ন ভাৎ, ইত্যাপভ্যাহ—ক্রম্মাক্তব্যাতি। অক্তর্মকরিতি ক্ষেপে হেম্বরুরবাহ—প্রাক্তাপত্যাত্বাহ্রেতি। অবত্ত সেংজ্রাভি ক্ষেপ্ ত বেল্লে হেম্বরুরবাহ—প্রাক্তাপত্যাত্বাহ্রেতি। অবত্ত সেংজ্রাভি ক্ষেপ্ ত বেল্লাভিন্ত ত ত্রাহ—ক্রাক্তি। নমু কালাদিনুষ্টঃ অব্যবহ্রের্ আরোপাজে, ব তত্ত প্রকাণিত ভ্রাহত ত্রাহ—ক্রাক্তি। কালাভান্তা হি প্রভাগতিং। তথাচ বথা প্রতিমান্ত বিশ্বকরণ তত্ত্বীত । বালাভিন্তীঃ অব্যবহরের্ তত্ত, প্রভাগতিত্বকরণর্। অব্যবহারিকানী হি সতি অবে কর্মণো বার্থ্যবন্ধরার্থ কলাভিন্তীঃ ব্যাবহ্রের্ কুর্যাণ, তর্গনিকানী তু অব্যাভাবে ব্যানান্য অবং ক্রান্তা ব্যাবহরের ক্র্যাণ, প্রকাশতিত্ব সম্পাত্ত প্রবাণতিঃ অন্নাহিত্তীঃ ক্রাণানিনুষ্টকরণের প্রজাপতিত্ব সম্পাত্ত প্রবাণতিঃ অন্নাহিত্তী ক্রাণানিনুষ্টকরণের প্রজাপতিত্ব সম্পাত্ত প্রবাণতিঃ অন্নাহিত্তী ক্রাণানিনুষ্টকরণের প্রজাপতির সম্পাত্ত প্রবাণতিঃ অন্নাহিত্তী ক্রাণানিনুষ্টকরণের প্রজাপতির সম্পাত্ত প্রবাণতিঃ অন্নাহিত জানাহ ভত্তাবং প্রতিপঞ্জেত ইতি ভাবঃ।

চত্ৰি প্ৰাণ্টো হেত্ৰাহ—পিত্ৰজ ইতি। উৰ্নোহনভয়ৰং প্ৰো ষ্টং, চত্ৰি
চ বিবনো অনভয়ৰং বৃপ্ততে, ভগাং ভত্ৰ ভত্তৃত্বিভা ইভাৰ্য:। ভত্ৰৈৰ হেবভয়নাহ—
সূৰ্য্যেন্ডি। "ধাৰিভাশ্চত্ত্ব্ৰা অকিনী আৰিবং" ইভি ক্সভেঃ, চত্ৰি প্ৰোধ্ৰিভাৱী দেবভা, ভেৰ নাৰীপাাং ভত্ৰ ভত্তৃত্বিভাৰ্য:। অৰ্থাণে বায়ুৰ্টো চলব-

वृष्णात्रगादकाणानवम् ।

क्षि दिश्वे। अवक विश्वविष्क पूर्व करकू व्यविष्क्षेत्र, क्ष्वामि नर्गारतानामानः वार्यन्, विद्या क्ष्यामानिकात्कार्यः विष्यान्यन् स्कार-दिव्यानिका स्कारमानिकार्यः विष्यान्यः स्कारमानिकार्यः विष्यान्यः स्कारमानिकार्यः विष्यान्यः स्वाप्तिकाः वृत्यः कर्ष्यार-पूर्वः क्ष्यान्यः व्यवस्थान्यः व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक त्रवर्णविष्यः व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक। व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक। व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक। व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक व्यवस्थानिक।

কৈ হালোকণৃটো হেতুৰাহ—উক্তিতে, তি। উপরে অন্তরিকণৃটো বিবিভবাব—
রিহতে, কি। পালা অসারে যদিন্ ইতি বাংপজির আন্তিতা বিবক্তিবাব—
দৈতি। অবভ বি বুরে পালাসন্দ্রনারাজাৎ পৃথিবীদৃষ্টি ইতার্যা। পার্যরোগিক
বিক্তেনিত। বে প্রের্থান কিন্তুলিত। বে প্রের্থা, চতক্রত দিশা, ভত্ত করণ ওলাে
কর্পাং — বাজ্যাব এব বরাাঃ সম্বভাং, ইতি বভতে—পার্যরোগিকতি। বজ্বপি
না বাজ্যাং পার্যজাাঃ সম্বভাতে, ভবাপি অবজ প্রার্থ্যে প্রভার্থ্যে হ বজিবাে
ভক্ত্রতে হ প্রাতৃ-প্রতীতাাঃ দিলােঃ ভাজাঃ সম্বভ্ন-সম্বভাৎ ভত্ত ভন্দৃষ্টিঃ
ভতি পরিহ্রতি—সেত্যা দিনা। ভন্নপত্তে চ অবজ চরিক্তাং হেতৃকর্তবার্।
বিক্তাবিদ্যান আরােশে পার্যবিক্ত্রতা হেতৃকর্তবার্।
বিক্তাবিদ্যান আরােশে পার্যবিক্তিশ্বতা হেতৃঃ।

ाव: नरवरनक्क सकावि, क्कामीनि s caso सरहरा:, छत्राम् क्छुमृष्ट: सरकम् कर्त्वरा, -अञ्च ३ छि । अपि बानाबीनाः नःत्र्यत्रत्रिक्ष्य्, अपि o नहीत्रनिष्यः गर्सनात्, ड्यू बानाविन्दै:. देशार-अक्की छ । पूर्वनश्त्राखाः शाबावधारम् वार्था-। অন্নাভাং দৈবন। পজাভা পিতান। বস্তবটিকাভি: বাজুববিভি ভেলা। াশকর পাণবিষয়ত্ব: ব্যংপাদয়তি—প্রতিভিন্তিতি। পাদের আদোরাজ-মূর্বং বৃত্তিবৃশ্পাবছতি—তাহেশ্রাইক্ররিন্ডি। অভিবৃ বক্ষাবৃহটা বেভুবাব— হত্তে । বভঃশবেদ অন্তরিদং কিনিতি দ গৃঞ্জে ? মুব্যে সতি উপচারাবোগাং, বভা পুনরভিং পরিবর্ত্ত বৃ. ইভাবি—ভাক্তরিক্ষালোডি। উদবং দিকতি নেবাং, নি কুৰিয়ন্, অভ: নেককৰ্ণুখনাবাজাৎ বাংগেন্ বেৰণ্টনিত্যাৰ—উদেক্তে। খন্তবাৰিপাৰিবাৰ্ত্তিনি অৰ্থজীৰ্ণে নিক্তাদৃষ্টে হেতুবাগ— বিপ্লিটেডি । কিবিভি क्रम भारतिक म गृक्षात ! नितामकर्त कि मुनार्गाविक्रम: छा॰, छवार--वर-াকৈছি। চৰারো অববারণার্থ:। বড়াপি বচুকাা নিরাভাো অর্থান্তরম্পি দমইভি, ভথাপি সান্দ্ৰসাদৃস্তাৎ ভাফু এব সিম্বুদুষ্টরিতি ভাসানিত প্রকাশিতি ভাব:। बारमक्का: विषम् ? এक ख वहबहनार वहक शकी छ:. रेका मका मात्रा रेकियर : গভিষা:-ক্লোমান ইতি। ভয়ো: পর্বভদ্টো হেতুবরমার কাঠি ন্যাদি-दिन्ती । कृत्वकृतावन्तार अवविष्टिक्तिकृत वहकृतावानार वनक्षिष्ठके कथरकर्ववृ া, ইতাহ—অথাজ্ঞব্মিড়ি। পূৰ্মধনাৰাভাৎ ন্থাকাৎ আগবছাৰিতা গৃষ্ট: নাভে: উর্বভাবে কর্তব্যা, ইভ্যাহ—উদ্ভোগ্নস্ত্যাদিনা। অপরবসাদৃভাব অবক

নাতে: অণানার্থে বন্যাক্ষাৎ অমন্তমভান্যাৎ আমিজসূচ্চী কার্বা, ইত্যাব—ক্রিয়োচজিত্যাচিন্না। বিজ্বত ইত্যামে প্রভাগনে ন বিশক্তিঃ, বিজ্বার বুল বিশ্বনার কি, বিজ্ঞানত
পুনর্বেদ্য, অতো বিজ্ঞানন্তীঃ জ্বাবে কর্ত্যাই—ক্রুপ্রেডিঃ ভবারতি ইতি
ভানিতস্তাকে, তত্ত্বীঃ গালকম্পে কর্ত্যা, ইত্যাল হেত্যাই—পার্ক্তমেন্ডিঃ মূলকর্ত্বে
বর্ণপৃথ্টে ভারণনায়—ক্রেচিন্সেডিঃ অমত দ্বেবিভগলে নাতি আরোপ্যামিতি কতো ন
নাল্তাং বলবানিত্যাই—নাগ্রেডি । ১।

তাল্যাল্যাল্যলাদ্—'উবা' ইত্যাদি। ব্রামমূহর্তের নাম 'উবা' (১১)।
'বৈ' শক্ষণিরপার্থক; লোকপ্রসিদ্ধ কালের কথা শরণ করিয়া দিতেছে।
শরীরের বড্ডলি শবরব শাছে, তল্মধ্যে লিগ্রাই প্রধান; কালাবরবের মধ্যেও
উবাকালই প্রধান; এইরপ প্রাধান্তনাল্যানিবন্ধন উবাকের্থনিয়া বলা হইরাছে।
নাক্যবোজনা এইরপ,—উবাই বজীর পবিত্র শবের মন্তক। এবানে বুর্বিতে
হইবে বে. শব্দের্থয়েতের অল্পত্রপ শবের সংকার বা বিশোধন করা আবন্তক
হর; এই কারবে শবের মন্তকাদি শবরবসমূহে উবা প্রভৃতি কালগৃত্তীর
আবোপ করা হইতেছে, (কিন্তু কালপ্রভৃতিতে শ্রমালপ্রতী নহে)। কালরশী
প্রজাপতিত্ব কালাদি সমন্তিররপ; সেইজন্ত প্রতিষ্ঠা প্রভৃতিতে বেরপ বিকুষাদি
সম্পাদন করা হর, তত্রপ কাল, লোক ও শ্বেবতাব স্থাবোপণ বারা বজীর
পশুরও প্রামাপত্যর শর্বাৎ প্রজাপতিবৈত্তাব সম্পাদন করা হইরা থাকে।
[বুরিতে হইবে, এইরপ ভাবনা বারাই বজীর পশুর একপ্রকার সংকার সম্পান্ন
হর্মা থাকে] (১২)।

⁽১১) ভাৎপর্ব্য-শ্রেণানরের প্রথবর্তী ছইনও সবরের নাম 'রাক্ত বৃহূর্ত'। "রাজেন্চ পশ্চিমে বানে বৃহূর্ব্তো রাক্ত উচ্চত'' (আফিন্ড ভর্তুত পিডাবহর্তন)। এবানে 'পশ্চিমে বানে' ক্যার রাজির পের ছই দওই বৃবিতে হইবে; ব্যবপাঃর্কাত গ্রন্থে এইরূপই অর্থ লিখিত আছে। স্ভরাং 'অরুপোদর্কাল' আর 'রাক্তবৃহূর্ত' একই সবরের বিভিন্ন সংজ্ঞানাত্র বৃবিতে হইবে।

⁽১২) ভাংপ্রা—এখানে সংকার বর্ব—পোষন বা শভিবিশের আখান করা; আরভিক বে সমস্ত পদার্থ অহরহঃ আবাবের বৈদন্দিন বাবহার সম্পাদন করিতেছে, সেই সমস্ত প্রাথই আবার সংকার বা শভিবিশের লাভ করিলে অলোভিক কার্য সম্পাদনেও সর্ব ইতে পারে। প্রক্রিয়াবিশেবে বে, বছবিশেবের বিশেবশভির আবির্ভাব হয়, ভাবা আম্রা প্রভাক বারাও উপলব্ধি করিভে পারি। বেভস্-বীজ অরিভে কিন্দিৎ উত্তও করিয়া বপ্স ক্রিলে, ভাবা হুইভে ক্যনীর্ভের উৎপত্তি হুইয়া বাকে। আর পারের মুডাকুট

ত্বা ভাষার চত্যুঃ; চত্যুঃ সভাবতঃই মতকের সমিছিত এবং ত্বা ভাষার অধিষ্ঠাত্রী দেবভা; এইজন্ত চক্তে ত্বারূপে ভাষমা করিবে। প্রাণ সাধারণতঃ বার্থভাব, এই নিবিভ প্রাণকে বার্থরণ চিন্তা করিবে; কারণ, প্রাণ ও বারু, উভরই ভূলাখভাব। অগ্নি মুখের দেবভা, এই কারণে ভাষার বাাত অর্থাৎ বিরুত র্থই বৈখানর অগ্নি; 'বৈখানর' শক্ষটি অগ্নির বিশেষণ; স্ভরাং-অর্থ ইনতেছে বে, বৈখানর নামক অগ্নি ভাষার মুখ। পবিত্র অথের আত্মা হইতেছে সংবৎসর; সংবৎসর অর্থ—বালশ কি.বা [মলমাস ইইলে] করোবশ নামাত্মক কাল; আত্মা অর্থ—পরীর; সংবৎসর ইইতেছে নামান্ধি কালাবন্ধরে পরীর (সম্প্রিভূত দেহ), আর পরীরও তক্ত্রণ ইতান্ধি অবর্থসমূদের আত্মা (সম্প্রিভূত); শ্রুতি বলিরাছেন 'আত্মাই এই সমন্ত অপের 'মধা' অর্থাৎ সমন্তর্গর করা ইইরাছে।

ইহার পৃষ্ঠ হইতেছে ছালোক; কেন না, উর্জ্বরণ ধর্মটি উভারেরই স্বান। উপর হইতেছে শব্দুরীক্ষ; কারণ, ছিন্তুদ্ধ বা অবকাশ ধর্মটি উভারেরই স্বান; 'পাষত্র' শব্দের অক্ষর পরিবর্ত্তন করিয়া অর্থাৎ 'দ' স্বানে 'ক' ব্যাইয়া 'পাকত্র' করা হইরাছে; (প্রকৃত শক্ষ—পাদত্রঃ) পাদত্র অর্থ—পাদ-ভাসের স্থান; সেই পাছত্র হইতেছে পুথিবী। উভর পার্থের সহিত সর্ম্বাদিকের স্বান্ধ আছে; এইকজ ইহার পার্থার হহতেছে চতুর্দ্ধিক। ভাগ, পার্থ হইতেছে আরু হৃইটি; আরু দিক্ হইতেছে চারিটি; স্মৃতরাং সংখ্যার সাম্যা না থাকার পার্থারে চতুর্দ্ধিক করানা করা যুক্তিবিক্ষর হইতেছে? না,—এরপ আপত্তি হইতে পারে না; করেণ, অব্যের মূখ বখন চতুর্দ্ধিকেই পারিতে পারে; স্মৃতহাং ইভাতে কোনস্থা পার্যায়ের সহিত ক্রমে চতুর্দ্ধিকেরই সম্বন্ধ শটিতে পারে; স্মৃতহাং ইভাতে কোনস্থা পার্যা হইতে পারে না। অবান্ধর দিক্ স্ক্রা, অর্থাৎ আরেরী প্রকৃতি কোনসমূহ পার্ত তর্থাৎ পার্যাহিসমূহ; অল বা অব্যবসমূহ বতুস্ক্রেণ; কেন না, ক্রম্যানি ছয়টি অল বেমন শ্রীরের প্রধান অব্যব,ছয়টি বতুও তেমনি

ব্যক্তে টিশিরা বরিলে, হিনে জোক নিকটে আদিরাও অসন্পর্শ করিতে পারে না। কছাপী ডিম্ম এসব করিরা ভবিবরক ভাবনা বারা ডিম্মের পরিলোবণ করিরা বাকে, ভাগকে আর ডিম্মে ভাগ বিভে বর না। তেখনি বজনানও ক্রিয়া ও ভাবনা-বিশেষের সাহায়ে ক্রীয়া ঐবেয় এবনই একএকার শক্তি সমাবেশ করে, বাহার ক্লে ই ক্রয় ইহিক ও পায়-জ্যোক্তিক ক্লেবিশেব সমুব্পাধনে সমর্থ হয়।

गायरगाय खर्माम व्यवस्था मान ७ वर्षमान (अक अक नक) छात्रांत नर्व-অব্যবস্থি ; কারণ, হৈছিক পর্কের ভাগ বাস ও অর্থবাসই ওচুসমূহের সংবোদক সংঘ্রত্তপ। অহোরাত্র ভাষার প্রতিষ্ঠা : এখানে 'অহোরাত্রাণি' भारत बहरतम बाकाव श्राकाभका, देवर, देभाव ७ बक्रुश्रमक्की मुर्वश्रमका विवा-बाख अहन कर्तिए बहेर्र '>>) : शर्टिका वर्ष-- नम,--वाहा बादा बाहा वाहा অব বেৰন চারি পারে গাড়ায়, কাণাত্মাও তেমনি অংহারাত্রের উপর*নির্ভয় करिया चरशम करिएछह। चल्तियुर सक्तायकतः कार्य, केन्द्रर अक्रवर्य: ভাষার মাংসসমূহ নতঃ অবীৎ নতত বেঘমালা; পূর্বে অন্তরিক্ষকে উষর वनाव ध्वात 'मकः' शाम चाकानव (मन्यानाहे वृत्विष्ठ हहेरव: चनवन क्रवित (मठम करत विनाध (यदम्युक बारम्यानीय। छेववा वर्ष-छेवत्य वर्ष-कीर्य कुकुलवा, छाहा बालुकावानियद्वल ; कादन, छेछरवटहे मध्म छनि नदम्बद-विश्विष्ठे चर्वार विविश्वादि मः बुक्त । खन्न चर्वार नाकीमबुक्के मिन्न - ननीमुब्द : नशे बहेट बनकदन इत्र, नाछोनमूद बहेटाउ दुनकृदिदापि कदिछ इत्र: अहेब्रा नामुख बाकात्र अवः 'खन्-नामत्र शत वहवहन बाकात्र अवादन '৩ব' শব্দে নাড়ীসমূহই বুঝিতে হটবে: বকুৎ ও ক্লোবন্ অৰ্থাৎ জ্বদ্বের নিরে দক্ষিণ ও ৰামভাগে অব্ভিত চুইটি মাংস্থও হইতেছে পর্যতম্ম্রণ: কেন না, कार्डिक श्र खेत्रका केकदत्रदरे नयानश्य । 'क्रायन' (प्रीहा: बक्कि हरेलश्र निका-বছৰচনাত বলিরা ভাষার উত্তর বছৰচন হইয়াছে (ক্লামান:)। ভাষার লোম ও কেশরাশি বর্গাসম্ভব ওবনি ও বনম্পতিসমূহ; অর্থাৎ ক্ষুদ্র ও রহৎ স্থাবরসমূহ। উछन् चर्बार केमबाविव वशारू भर्वात कानवाशी स्वाहित चार्चव स्वाहित नाणित छेई नात : चांव निरवाहन वर्षाय मशास्त्र त्र चलुत्रवन नहींब कानवााणी पर्वारत्य छाशांत्र উत्तत्राई---नाछित्र निश्चनात ; दक्त ना, छेल्रावर्ड पूर्वार्डफ ७ नवार्डफ-नामा बहिबाटक । जब व विक्रुक्षन करव-नवीव विक्रम

"बारमम खानरहाबाजः रेगजः, बर्दन रेक्चछः।

रेक्टर मुमनरक्ष एक बाव:, करही कु एक) मुनाम ।"

কর্ষাৎ বজুবোর একবাসে পিতৃপণের এক বিবারাক্ত—'লৈক্র', বসুবোর একবংসরে বেবগণের এক বিবারাক্ত—'লৈব', কার বেবগণের ছুইছালার ছুগে রক্ষার এক বিবারাক্ত—'প্রাক্তাপত্য', এবং রক্ষার বিবারাক্তে বসুবাগণের ছুই 'কল্ল' হর। পুরাণণাত্রে ইহার বিশ্বত বিবরণ আছে, বিশেব কানিতে হুইকে, ভাহাতে অনুস্থাব করা আরক্তক।

^{· (&}gt;>) ভारन्यां-वाबान्छानि विवाहात-विकान वहेसन् :-

পূর্বক হাই ভোলে, তাহাই তাহার বিভাতন, অর্থাৎ অথের দেই বিজ্ঞাই বিছাতের স্থানপাতী; কারণ, বিছাৎও বেখনওল বিদারণপূর্বক প্রকাশিত হর, অথের বিজ্ঞাও মুখবাদানসাপেক। আর অথ যে শরীর কলান করে, ভাহাই বেখগর্জনস্থানীর; কারণ, উভর স্থলেই গর্জন-শব্দের সামৃত্র রহিয়াছে। আর অথ যে মুজভাগে করে, ভাহাই বাবিবর্গস্থানীয়। অথের শক্ষই শক্ষ; এথানে আর পৃথক্ শক্ষ কল্পনা নাই ॥ > ॥

শহর্ব। শবং পুরস্তামহিমায়জায়ত, তস্ত্র পুর্বে সমুদ্রে যোনী রাজিরেনং পশ্চামহিমায়জায়ত, তস্ত্রাপরে সমুদ্রে যোনিরেতৌ বা শবং মহিমানবিভিতঃ সম্বভ্রতঃ।

হয়ে ভূত্ব দেবানবহৎ বাজা গন্ধকানকাস্তরানখে। মনুষ্যান্, সমৃদ্ধ এবাস্থ বন্ধু: সমৃদ্ধে: যোনি: ॥ ২ ॥

ইতি প্রথমাণ্যায়স্তা এখনং এক্ষিণম্॥ ১॥ ১॥

স্কালাগ্রি ক্রাবদানস্থ প্রতঃ প্রতণ্ড মহিমাথে) সৌবর্ণ-রাজতে। প্রহৌ হবনাধারপাঞ্জবিশেষৌ : স্থাপ্যতে, তাৰ্বরং দর্শনমিদানীমূচ্যতে— 'প্রহঃ' ইত্যাদি।

त्वचार (जनामण जाता काणामानः, महिमा (जनायाः स्वर्यमाः श्रवः)
देव चवः (ननीकः) चवः पिवरमाणगंकः स्वाः व्यवाः व्यवः।
(तोवर्वावतः) शृर्त्व ममूद्ध शृर्वः ममृष्ठः (यानः (चामामनान्म पेर्श्वावाः) श्रवः ममृष्ठः (यानः (चामामनान्म पेर्श्वावाः) श्रवः।
वाः) । शृष्ठाः (शृष्ठाः प्राणामानः । महिमा (उनागः त्रव्यमः श्रवः) श्रवः।
(चवः श्रविः) ताः (ताल्वां गर्नकः ठतः) चवनागठः । उत्र (ताव्यश्वः)
चश्याः ममूद्धः (शृष्ठाः प्रवृष्ठः) (यानः चामामनक्षानः); श्रवः) (वर्षाद्यः)
वश्याः ममूद्धः (शृष्ठाः प्रवृष्ठः) (यानः चामामनक्षानः); श्रवः (विविद्देशांठगृष्ठाः) कृषाः चयवत्रः (च्याः) (प्रवाम् चवदः ; वानो (चाःणविर्वयः)
कृषाः भव्यत्वाम् [चवदः] । स्वशः (भवमामाः श्रवः मागदाः वाः)
श्रवः [कृषाः] यस्याम् [चवदः] । समूद्धः (भवमामाः श्रवः मागदाः वाः)
श्रवः चम्पाः (चवकः) वषः (वशाण् चित्रमः एक्याभ्यतः (चित्रदः), समूद्धः श्रवः (विविद्रः)।

অ্বান্ত্—এখন ষজ্ঞীয় অবের অগ্রেও পশ্চাতে দে দুইটা ত্বর্ণময় ও রজভগয় মহিমানামক গ্রাহ অর্থাৎ হোমাধার পাত্র স্থাপন করিতে হয়, ভাষধয়ে চিন্তার উপদেশ করা হইতেছে—

অশ্বের কাত্রে গে 'মহিমা' নামক সুবর্ণময় গ্রাহ স্থাপিত হয়, ভাহাই অহ: অর্থাৎ দিবসাধিপতি সূর্যা; পূর্বর সমুদ্র ভাহার উৎপত্তিস্থান; আর পরবর্ত্তী রক্তরময় গে গ্রাহ, ভাগাই রাত্রি, অর্থাৎ রাত্রির অর্থপতি চক্ত্র; পশ্চিম সমুদ্র ভাহার উৎপত্তিস্থান। এই চুইটি মহিমা জ্ব্যাবদানের পূর্বের ও পরে সংস্থাপিত হইয়া থাকে। হয় অর্থাৎ গমনশাল, অথবা লাভিবিশেষ। হয় হইয়া ক্লেএগাণকে বহন করিয়াছিলেন; বাহা (এক জ্বাভীয় অব্য) হইয়া গদ্ধর্বগণকে বহন করিয়াছিলেন, অার অব্য হইয়া মনুষাগণকে বহন করিয়াছিলেন। সমুদ্র ইহার (অব্যের) বন্ধু অর্থাৎ রক্ষাহেতু, এবং সমুদ্রই ইহার উৎপত্তিস্থান য় ২ ॥

हे ि अवस्थारिंग अवस जाजान वाशि ।)।) ।

পাক্ষরভাক্ষাম। মহর্ষ। ইতি, সৌবর্ণ-রাজতে মহিষাধ্যে এহৌ অবস্থাপ্রতঃ পৃষ্ঠতক স্থাপেতে, তবিবংসিকং দর্শনম্—

শহং সৌবর্ণে গ্রহং, দীপ্রিনানালার বৈ । শহরণং পুংজারাহিনাবলারতেতি কথম্প নগত প্রলাপতিছার; প্রজাপতির্থি আরিত্যালিলক্ষণেতির্গা লক্ষতে; পরাং লক্ষিত্ব প্রজাপতির্থি মহিনা প্রহঃ,
বুক্ষরক্ষবিভাততে বিজ্বালিতি বছর। ততা গ্রহত পূর্বে পূর্ণং, সমুদ্রে সমুদ্রঃ
বোনিং বিভক্তিবাত্যারেন; বোনিরিত্যাসাদনভানন্। তথা লাজিঃ রাজতো
গ্রহং, বর্ণসানালার প্রক্রতানালাভ্বিন। এনম্ পরাং পশ্চার পৃষ্ঠতো মহিমা
শব্দাহত; ততাপরে সমুদ্রে যোনিং। মহিনা মহন্তাঃ; পরাত হি
বিভ্তিরেনা, বর সৌবর্গো বাজতশ্য গ্রহাতুরতঃ ভাগোতে; তারেতে
বৈ মহিমানো মহিমানো গ্রহো প্রনাহতনাং প্রত্যুক্ত্য উজ্লেক্ষণাবের
সন্ত্রো। ইপমসাবর্গো মহন্ত্রক ইতি পুনক্ষরনাং প্রত্যুক্ত্য উজ্লেক্ষণাবের
সন্ত্রো। ইপমসাবর্গো মহন্ত্রক ইতি পুনক্ষরনাং প্রত্যুক্ত্য উজ্লেক্ষণাবের
সন্ত্রোলি প্রভাগ্রেব। হয়ে। হিনোতের্গতিকশ্বণঃ, বিশিষ্টগতিরিত্যবিঃ;
লাতিবিশ্বেবা বা; দেবানবহর দেবস্বস্থারর, প্রলাপতিরার; দেবানার
বা বোচ্যাক্রর।

নত্ব নিশৈষ বাহনত্ব । নৈব দোৱা; বাহনতং পাতাবিক্ষণত ।
বাভাবিক্তাৎ উদ্ভাগ পাতির্দিবাদিসভ্জে হবড়েতি আন্তরেবৈকা তথা
বাজ্যাদয়ে। জাতিবিশেষা: বাজী ভূড়া সহর্জান্ অবহৃদিত গুৰুলঃ । তথা অঞ্চা
ভূড়া অসুরান্, অংখা ভূষা মহুন্তান্। সমুত্র এবেতি পর্যান্তা; বহুর্জহনদ
ব্যাতেহ্যিতি। সমুত্রো বোনিঃ কার্ণমূহপ্রিং প্রাত্ত এবম্বের্গ
ভহবোনিঃ ভ্রুতিরিতি ভূষ্তে; "অজু বোনির্বা অখ্য" ইতি শ্রেং।
প্রসিদ্ধ এব বা সমুট্রো বোনিঃ । ২ ।

देखि दावमाशास्य दावम-दाक्रमणावाम । ১ । १ ।

টীকা। অবাবর্বেরু কালানিবৃটীর্কবার অল এঞাণতিরণা বিবঙ্গির কৃতিকাল্তর গুটাৰা ভাৰণৰ্বানাহ—অভ্যানিজ্যা দিনা । এণে ধ্ৰণীরজ্বা খারো গারবিশেরে পঞ্জঃ मुहेडरण्डि मास्त्रमार आगृद्धा हिड बावर । अभिका छावमकि बोधिः मोबर्त ह अस - *না অভি. অতঃ ভবিন্* অচনু প্ৰতিটি দৰ্শনং বিভগতে - আহানিক্তি। অবসংজ্ঞানাৎ পূৰ্মা (व) विवास्थाः खनः प्राणातः म तन् भन्नृत्देशणाच्याः, कवर (म) अवम् अवनावरणिकः পজাৰ্ অৰক্ষ ভত্ত হৰাচোদুভিধিতি শক্তে—আহানুস্থামতি। মাজং পকাদখোচসুৰ দঃ কিছ मक्तार्थः। उपाठ व्याप्त अकार्यात्र अवत्यार का तक्तिया श्रम् वर्षा व्यापा अवत् ५क्तारमण्य व्याप মধ্বাৰত টত্যবিষ্ণাৰিত পৰিবৰ্তি— মাধুলোডি তাৰেৰ কুটাতি প্ৰকাপতিরিডি काल-स्वाक-स्ववाहा अवार्ण हिन्दाहित। मुलवारताः ज कहत् हेग मुस्टेन अस्व कलास्य । छवा-5 আরম্ব আম্মরারাজ্যি শ্রুতির বিরুদ্ধে সংখ্যা। অফু-পর্কে। ন পশ্চারাতী ইত্যান দুটারমার - রাম্ম্যুত মিতি। বলা কুক্ত লক্ষিত্বত ভালালে বিভাবিজ্ঞান্ত ভ্ৰুতৰ কুক্ষমন্ত্ৰিজ্ঞান্ত ভ্ৰেতি অনুভাতে। क्रभार्खालि क्यूनरम् न नम्डापर्व हेडार्थः। यद्य ठ द्वारन श्रद्धः द्वानारह, फरन्स्तनमूख्युहे। বোষ্টিভাঙ্চ—ত্তের্তি । পুর্বিহমত সাদৃক্তম্। কথা সাজনী প্রথমার্থে গোলাতে, ছন্দ অধামুদারেণ বাতারনভবাদি লাং—িক্তক্তিশীত বধা দৌধর্ণে তাংচেচপৃত্তিদ্বপদিরণ, ছধা রাজতে এহে রাজিনৃষ্টঃ কর্তব্যা ইত্যান—তত্থেতি। অভি হি চন্দ্রাভপষরাজালে: শৌক্রাম্, অভি চ রাজ্যন্ত প্রকৃত্য তার বারিদর্শন্মিলার - অপেতি । রজতং ধ্বর্ণাক্ষয়ন্ত মহন্ত রাঝি: বতে। বা দাদৃগ্রাৎ তথ্য রাজিদৃষ্টিরিত্যাগ -ক্রেন্ডে। প্রজাগতিরূপং প্রকৃত্তরবং লক্ষ্ট্রের। তৎসংক্ষপনাৎ পকাদ্ অন্ত প্রবৃত্তিং দর্শবৃত্তি—এন্মিক্তি। তদাসাধনস্থানে भन्तियममुस्रपृष्टिविःवज्ञा केलान-लद्भार् । कथरवाली १८०) यनियात्मो ऐस्लो १ यहरदात्म-ভন্নাদিত্যাহ - মহিমেডি। অধাবনিবরং দর্শনমাদির প্রহ্বিবরং জনাদিশতে বাকাভেনঃ ভান্নেভাহ—অপ্তাদ্যাতি। কিনত নিনাৰণৰ ইডাপন্থা পুনক্কিনিডি ন্থা:—ভাবি-জ্যাদিনা। वि-नवाधकवनम्-धरविष्ठ।

বাকাশেবোংগ্যত্রাস্থভন্ন ভব গীত্যাহ — তথা চেতি । হন্ত শক্ষিণাভিপুনংসরং ভবর্থ-সাহ—হয় ইতি । বাল্যাদিশলালাং লাতিবিবিশেববাতিয়াত্ব লগ্রাদি ভবেব প্রাক্তিবিভি পকাপনার—জ্যান্তীতি। বেবানা বেবরপ্রাপ্তর করবন্ধ ইত্যান্ত্যাক—প্রজ্যান্ত পি ক্রন্তাক্তি। ববং বোল্নার চা করাব্বাব্যান্ত করিব্যান্ত বিশান্ত করিব্যান্ত করিব্যান করিব্যান্ত করিব্যান্ত করিব্যান্ত করিব্যান করিব্যান করিব্যান্ত করিব্যান করিব্যান করিব্যান করিব্যান করিব্যান করিব্যান করিব্যান করি

ভাস্থা-সুনাদ্ — স্বৰ্ষেণ্ড স্বের পথে ও পশ্চাতে চুইটী গ্রহ স্বৰ্ষিয়, স্বান্ত ব্যৱহাটী ব্যৱহায় ; এখন ভচ্চর বিষয়ৈ বিক্লানোপদেশ করা কইতেছে;—

পূর্বের সুবর্ণমন্ন গ্রহ ও দিবন, উভয়ট দীরিমান্ —উচ্ছন ; এইজন্ত অংশর অগ্ৰতী সুৰ্ব্যাৰ মহিমানামক গ্ৰহী হইতেছে আঃ: - দিনাধিপতি সুধাৰকণ। छान, जियम व्यापंत मध्यत्वी महिमाथा शह हहेन किवाल ? [केवव---] বেবেড় ঐ অম প্রমাণভিষ্ক : এবং বেডেডু আদিতারপা প্রজাপতিই এখানে 'শং:' শব্দে লক্ষিত হইগ্ৰাছেন; স্বতরাণ 'রুক্তে লক্ষ্য করিয়া বিছাৎ প্রকাশ পাইতেছে' কণার ভার এখানে অধকে লক্ষা করিয়া স্বর্ণমর মহিমানামক গ্রহ नमूरभन हरेप्राह्न, अरेक्सभ वर्ष कतिए हरेरा । हेरात शानि भूर्कानिकत त्रमृष्ट ; 'भूत्वं त्रमृष्टा' भवषात्र अवमाविङक्तित शान तथेभी विङक्ति इतेशाहः : वानि वर्ष- (व श्वान १३(७ छेश श्रहण कतिए इत, त्रहे श्रश्मान । त्रहेक्रण রজতম্ম এহটা [লোৎখাপুর্ণ] রাজিখরপ; কারণ, উভয়ের মধ্যে বর্ণস্ত সামা বহিয়াছে, এবং সুবৰ ও দিবস অপেকা হানবাংশেও উভয়ের সাদৃত রহিয়াছে। এই রফতমধ গ্রহটী অখের পশ্চাষ্ট্রী মহিমারপে প্রকটিত हहेशाइ। हेरात चाहतग्वानी পশ্চिमम्बूछ। महिमा चर्ष-मरुक; (कन ना, ইহাট হইতেছে অখের বিভৃতি বা মহিমা যে, ভাহার উভরদিকে (মগ্রে ও পশ্চাতে) স্বর্ণমর ও রজতমর চ্ইটা পাত্র স্থাপিত হয়। দেই এই চ্ইটা গ্রহ অখের অগ্রেও পশ্চাতে মহিমা প্রকটিত করিতেছে : অখের এবংবিধ মহিম -স্ততির অন্তই "অৰ্য্ অভিতঃ" ইত্যানি কথার পুনক্লের করা হইরাছে। সেই-রূপ "হলে। ভূষ।" ইত্যাদি বাক্যও তাহারই প্রশংসার্থ উপন্যন্ত হইয়াছে। 'হয়' শক্টী গথাৰ্ক 'হি'-ধাতু হইতে নিশার, [ইহার] অর্থ--বিলক্ষণ গতিসম্পার,

শধবা 'বর' এক প্রকার প্রাতিবিশেষ। 'বেবগণকে বহন করিরাছিলেন' শর্থ— বেবগণের দেবখনস্পাদন করিরাছিলেন; কারণ, প্রজাণতিবরূপ পথের পঞ্চে এরণ কার্য্যাথন করা সম্ভবপরই বটে; অথবা, 'বর' রূপে দেবগণের বাহন বইরাছিলেন।

ভাল কথা, বাহনত্ব ত নিন্দারই বিষয়,ইহা ততি হয় কিয়ণে ? না,—ইহাও ঘোষাবহ অর্থাৎ নিন্দার কথা হয় না ; কারণ, বাহনত্ব ধর্মনী অধের সভাবসিত্ব ; ভাহাতে বে উৎকর্ষলাভ, অথবা দেবতা প্রভৃতির সহিত সংগ্রহণত, ইহা
ত অবের প্রশংসার কথাই বটে। পরবর্তী বাজী প্রভৃতির লাভিবিশেব ; বাজী
হইয়া সন্ধ্রমণকে বহন করিয়াছিলেন ; সেইরূপ অর্থা (লাভিবিশেব) হইরা
অস্ত্রসণকে এবং অশ হইয়া মন্থ্যগণকে বহন করিয়াছিলেন। 'সমুদ্র এব'
এই সমুদ্র শন্দের অর্থ—পরমাত্মা ; বন্ধ অর্থ—বহুন,—বাহাতে জনসমূধ প্রতঃই
আবিহ্ন হয় ; সমুদ্রই ইহার উৎপত্তির কারণ। এইরূপে অবের ততি করা
হইতেহে বে, এই অবের উৎপত্তি ও আগ্রয় থান, উভন্নই পরম পবিত্র ; অথবা
'জলের সংখ্যই অবের উৎপত্তি', এই প্রতিপ্রসিদ্ধি অন্ত্রসারে প্রসিদ্ধ সমুদ্রকেই
অবের ব্যানি বলিরা ব্রিতেই হইবে ৮ ২ ।

ইতি প্রথমাধ্যারে প্রথম একেণের ভাষাকুরাদ। ১। ইতি প্রথমাধ্যারক্ত প্রথমং ব্রাহ্মণম্।

দ্বিতীয়ং ব্ৰাহ্মণম্।

নৈবেছ কিঞ্নাগ্র আসীৎ মৃত্যুনৈবেদমার্তমানীদশনায়য়া, অশনায়া হি মৃত্যুন্তনানাহকুরুতাক্সমী স্থামিতি।

সোহর্চনরৎ তস্মার্চত আপোহজারস্তার্কতে বৈ মে কনভূদিতি তদেবার্কস্থার্কত্বন্ কণ্ড হ বা অগ্রৈ ভবতি, য এবমেতদর্কস্থার্কত্বং বেদ ॥ ৩ ॥ ১ ॥

সর্কার্থ:-[चर्यमानीम् चर्यमभोगातकः পতিকৃচাতে-তবিভানার্থ তংখতাৰ্থক—] ট্ৰ (সংসাৱে) ুখ্যে (স্টো প্ৰাক্) কিকন (নাৰৱপাস্কং किकिम्पि) देनव चानौर ; [चिंति चू हेनर : छत्रर) खननाव्या (टाक्स्नका লকপেন) মৃত্যুনা আরতম্ (আহ্বাজিতম্ লাসীৎ; হি (হলাৎ) জলনারা (चनिजूष हेच्हा) [अव] मृजूाः, [चन्यानकातः विश्वाधवातः]। [मः मुद्याः] व्याययो (व्याययान्) छाम् । उत्तरम्) हेटि (अतम् व्यटि स्टा) छर (প্রসিদ্ধ) খন: (অন্তঃকরণম্) অকুক্রত (জ্ঞাৎসিত্তরা সভরাবিধর্মকন্ चवःकत्राः स्टेरान्); तः (तमनदः मृज्ञात्राः अवागितिः) चर्छन् (तमन कामण्डा আয়ানং প্ৰয়ন্) অচরৎ (ওদসুরূপষ্ আচচার)। অর্চডঃ (আয়ানং পুৰয়তঃ) তম্ভ (প্ৰভাপতেঃ) [স্কাশাৎ] ভাগঃ (জনানি) ভাগায়ত (উৎপन्ना वज़्तू:)। व्यक्टराज्य (वज्ञः) रेव कम् (क्रनः) वज्ञ हेणि [वर व्यक्ति (वर्षा (हजू:) ; [वर्कनार उरनाइः कः- यूनाहजूल्यः वनम् हेलि हि व्यक्त-ममञ्ज ब्रार्शिष्टः]। व्यदेव (छेशानकाम्र) कर (बनर पूर्वः व।) ह देव (অবধারণে) ভবতি; বঃ (জনঃ) অর্কন্ত (অবংযবারেঃ) এতৎ অৰ্কন্ম্ এবং (বধোক্তপ্ৰকারেণ) বেদ (জানাভি)। তক্তৈতৎ ফলনিভি বিজ্ঞা স্মতে ॥ ৩ ॥ ১ ॥

মূলানুলাদে—[অভ:পর অশ্বমেধ যজ্ঞীয় অগ্নির বিজ্ঞান ও স্তুতির নিমিত্ত ভাগার উৎপত্তি-প্রণালী বর্ণিত ইইভেছে,—] স্তুতির পূর্বে এ সংসারে কিছুই ছিল না; এই জ্বগৎ অশনায়:রূপ মৃত্যু দারা আচ্ছাদিত ছিল। অশনায়া অর্থাৎ ভোজনেচ্ছাই লোকপ্রসিদ্ধ মৃত্যু। সেই মৃত্যুরূপী প্রজ্ঞাপতি 'আমি আজুনী—অন্তঃকরণযুক্ত ব্দ্ধন' ইচ্ছা করিয়া প্রসিদ্ধ অস্তঃকরণ সৃষ্টি কবিলেন। তিনি অস্তঃকরণ-সম্পন্ন হইয়া আপনাকে অভিনিদ্দিত করত অবস্থান করিলেন। আত্মপূজাকারী সেই প্রজাপতি হইকে অপ্ (জল) প্রাণ্ডভূ ভ হইল। তিনি যে, 'আত্মপূজালীল আমার উদ্দেশে জল উৎপন্ন হইলা মনে করিয়াছিলেন, তাহাই অর্কের অর্কন্ব, অর্পাৎ অস্থ্যমেনীয় অন্যির 'কর্ক' সংজ্ঞার হেতু। ['হর্চচ' ধাড়ু, এবং কল ও স্থ্যবাচক 'ক' শব্দের যোগে 'অর্ক' শব্দ নিজ্পান হইয়াছে। এখনও, য় লোক অম্যামনীয় প্রয়ির ক্রেক্ত প্রকৃত্ব জানেন, হাহার সম্বন্ধেও নিশ্চয়ট 'ক' (জল বা মুখা) সমূৎপন্ন হয়। ৩ ॥ ১ ॥

न्ना द्वार क्रांका क्रिक्ष क्

কিং শৃক্ষেব বৃদ্ধ ? শৃক্ষমেব স্থাৎ; "নৈবেছ কিঞ্চন" ইতি এতে:, ন কাষ্যং কারণং বা আগাৎ উৎপত্তেক, উৎপত্ত হৈ ঘটঃ; অতঃ প্রাপ্তংপত্তেইছ নাজিষ্য নতু কারণজ্ঞ ন নাজিষ্য, মৃৎপিশ্রা বর্ণনাৎ; মং নোপলভাতে, উল্লেখনাতিত, অন্ধ কার্যুজ, ন তু কারণজ্ঞ, উপলভাষানাথাং। ন, প্রাশ্তংশতঃ স্ক্রিপ্রলম্ভাই অনুপ্রাক্তিদভাবে হেতুঃ, স্ক্স জগতঃ প্রাণ্ডংন কারণং কার্যুং বা উপলভাতে, ভন্মাই স্ক্রিয়াবাভাবোহন্ত।

ন; 'মৃত্যুনৈবেদমাবৃত্যাসীং' ইতি এং ছেঃ; ৰ'দ হি কিঞ্চিদপি নাসীৎ—বেন আবিরতে, যচ আবিরতে, তদা নাবকান্ 'মৃত্যুনৈবেদমাবৃত্যু'ইতি; ন হি ভবতি গগনকুসুমছরো বক্ষাপুত্র ইতি; ববীতি চ মৃত্যুনৈবেদমাবৃত্যাসীদিতি। তলাং বেনাবৃতং কারণেন, বচাবৃতং কার্যাং, প্রান্তংগতঃ তত্তঃ মাসীং, প্রুত্তে প্রান্তাং, অসুমের্ছাচে: অসুমীংতে চ প্রান্তংগতঃ কার্যাকারণরো-বৃত্তিম্পু: কার্যাসাহ সতো কার্যানস্ত কারণে স্ত্যুৎপত্তিদর্শনাৎ, অস্তি চাদর্শনাৎ, অগতোহপি প্রান্তংপত্তঃ কারণাত্তিমমুখীরতে, ঘটাাদ্বাবণাভ্রমণ

ষ্ট্রালিকারণস্থাপি অসম্বনেধ, অনুপমৃত্ত মৃৎপিণ্ডালিকং ঘটাত্তহংপতেরিতি (চৎ ; ন ; মুদাদেঃ কারণমাৎ। মুৎস্থবর্ণাদি।ই তঞ্জ কারণং ঘট-রুচকালেঃ, न निश्वाकाविराण्यः, छष्ठछार छावार । जन्नछानि निश्वाकाविराण्यः मृरण्यवनिष्यः कावन्यः विद्याद्यः विद्यादः व

পিণাদিবাতিরেকেশ মুদাদেঃ অসবাদ্ অযুক্তমিতি চেৎ,—পিণাদিপূর্ব্বকার্যোপমর্দে মুদাদিকারণং লোপমুন্ততে, ঘটাদিকার্যান্তরেহপাসুবর্ততে,
ইত্যেতদ্ অযুক্তম্, পিণ্ডঘটাদিবাতিরেকেশ মুদাদিকারণক্ত অনুপদন্তাদিতি চেৎ;
ন; মুদাদিকারণানাং ঘটান্থপেন্তা পিণ্ডাদিনিবৃত্তো অনুব্ব ভিদর্শনাং : সাদৃতাদ্
অবন্দর্শন্ম, ন কারণান্ত্রতেবিতি চেৎ; ন; পিণাদিগভানাং মুদান্তবন্ধনামের ঘটাদে প্রভাকতে অনুমানাভাসাং সাদৃতাদিকরনামুপপ্রেঃ।

ন চ প্রতাক্ষান্যনিরে বিকিন্ধবার্ণ ভচারিতা, প্রতাক্ষপ্রকিষাদ্যানক;
স্কানের অনাখাসপ্রসক্ষ,—বলি চ ক্ষণিকং স্কাং 'তদেবেদম্' ইতি
প্যামানং, তণ্বুদ্ধেরণি অন্ত-ভল্বুদ্ধাপেক্ষরে তক্ষা অপি অন্ত-ভল্বুদ্ধাপেক্ষম্,—
ইতানবস্থায়াং তৎসভূপমিদম্ ইতাক্ষা মণি বুদ্ধের্বাছাং স্কার অনাখাসতৈব। তদিদংবুদ্ধারণি কর্মভাবে সম্বান্ধপতিঃ।

সাদৃশ্রাং তৎসম্বদ্ধ ইতি চেৎ; ন; তদিদং বুজ্যোঃ ইতরেতরবিষয়াঘামুপপত্তেঃ।
অসতি চ ইতরেতরবিষয়দে সাদৃশ্রগ্রহণামুপপত্তিঃ। অনত্যের সাদৃশ্রে ভদ্বুকিবিতি চেং; ন; তদিদং বুজ্যোরপি সাদৃশ্রবৃদ্ধিবদ্ অস্থিবরতপ্রসঙ্গাং। অস্থিবরতমেব সক্ষর্তীনামস্ত ইতি চেং; ন; বুজি-বুজেরপি অস্থিবরতপ্রসঙ্গাং। তদপ্যস্ত ইতি চেং; ন; স্ক্রিক্রীনাং ম্বাছে অস্তাব্ত্তামুণপত্তেঃ। তদাদসদেতং—
সাদৃশ্রাৎ তদ্বুকিরিতি। অতঃ সিদ্ধং প্রাক্কার্যোৎপত্তেঃ কার্পস্তাবঃ;
কার্যান্ত চাভিব্যক্তিনিক্রে।

কাৰ্যাস্ত সম্ভাবঃ প্ৰাণ্ডৎপত্তে: 'সহঃ; কণ্ম ? অভিব্যক্তি-লিক্ষাৎ,
অভিব্যক্তিলিদম্প্ৰোভ ? অভিব্যক্তঃ সাক্ষাৎ বিজ্ঞানাল্যনম্প্ৰান্তিঃ। বৃদ্ধি
লোকে প্ৰাৰ্ভং ভম্মাদিনা ঘটাদি বস্তু, তদ্ আলোকাদিনা প্ৰাৰয়ণ-ভিন্নভাৱেণ বিজ্ঞানবিষয়খং প্ৰালুবং প্ৰাক্সম্ভাবং ন ব্যভিচন্তি; তথেদম্পি মগৎ প্রাপ্তংগদ্বেরিভাবগদ্বারঃ। ন হি মবিশ্বরানো ঘট উলিভেংগাদিকো উপসভাতে।

ন্ধু; তে অবিভয়ান্তাবাদ্ উপলভোতের ইতি চেৎ,—ন হিতিব ঘটাৰি
কার্য্য: কলাচিনপি অবিভয়ান্য, ইত্যাহিতে আদিছে। উপলভোতের, মৃৎপিতে
অসমিহিতে ভয়আভারেশে চাসতি বিভয়ান্তাদিতি চেৎ; ন; বিবিধ্যাদ্
আব্রপত। ঘটাহিকার্যাত হিবিধং হি আবরণং—মুদাহেরতিবাক্তত তবঃকুডাাদি, প্রাঙ্মুলোই ভবাক্তেমু দাহাবর্ষানাং পিঙাফিকার্যাভরেশেশ সংস্থা
নম্। তথাৎ প্রাপ্তথাক্তির্যানত্তির ঘটাফিকার্যাত অব্তহাৎ মন্থপলাকঃ।
নটোৎপল্লভাবাতাবশক-প্রভারতেদক প্রভিব্যক্তিরোভাব্যাহিবিদ্যাণেকঃ।

निश्वक्षानासः व्यवस्थितकार्यः 'व्यक्तिः (६६, — ५ मः कृषाः विष्कि प्रतिकार्यः विश्वकार्यः विश्वकार्यः प्रतिक्रिक्तिः प्रतिक्रित् । विश्वकार्यः विश्वकारः विश्वकार्यः विश्वकार्यः विश्वकार्यः विश्वकारः विश्वकार्यः विश्वकार्यः विश्वकार्यः विश्वकार्यः विश्वकार्यः विश्वकार्यः ।

আবরণাভাব এব বন্ধ: কওবা ইতি চেৎ - পিশু-কপালাবস্থয়ার্মিন্তবানমেব বটালিকার্যামান্তবান নোপল ভাত ইতি চেৎ; ঘটালিকার্যার্মিনা তলাবরণ-বিনাশ এব বন্ধ: কওবাঃ, ন ঘটাছানপেকা; ন চৈতদন্তি তমালমুক্তং বিজ্ঞানকৈ ব আবৃত্তবাদমুপল বিরতি চেৎ; ন; অনিরমান া—ন হি বিনাশমাত্র প্রয়াদেব ঘটাছাভিবাজিনিরতা; তম-আল্লান্তে ঘটালে) প্রদীপাহানপতা প্রথমানে । বাহিপি তমোনালারৈর ইতি চেৎ,—দীপাহানপতারপি যঃ প্রয়ম্ম, সোহপি তমজিরকরণার; তমিন্ নাই ঘটা অন্নমেবোপলভাতে; ন হি ঘটে কিঞ্চিলাধীরতইত চেৎ; ন; প্রকাশবতো ঘটজোপলভামানবান। বথা প্রকাশবিদারী ঘট উপলভাতে প্রদীপকরণে, ন তথা প্রাক্ প্রদীপকরণান। তম্বান ন তমজিরকারীন প্রদীপকরণান। তম্বান ন তমজিরকারীন প্রদীপকরণান। কচিলাবরণবিনাশেহিপ বন্ধ: স্থাৎ, বথা কুড়ালি-বিনাশে। ভাষান ন নিম্নাহিতি— অভিবাক্তারিনা আবরণবিনাশ এব বৃদ্ধ: কার্য ইডি।

নিয়মাৰ্থবৰ্চ্চ।— কারণে বর্তমানং কার্য্য কার্য্যন্তরাণামাবরণম্, ইত্য-বোচাম। তত্ত্ব যদি পূর্বাভিব্যক্তস্ত কার্য্যস্থা পিওস্ত বাবহিত্ত বা কপালস্ত বিনাশে এব বয়ঃ ক্রিয়েড, তদা বিদলচুর্বান্তপি কার্য্যং লাখেড; ভেনাপি আবৃতো বটো নোপনভাভ ইতি পুনঃ প্রবন্ধরাপেকৈর। তথার বটাভ-ভিব্যক্তার্বিনো নিয়ত এব ভারকব্যাপারোহর্ববান্। তথাৎ প্রাপ্তপ্রেরণি সবেব কার্যাব্।

শতীতানাগতপ্রতারতেদাক ।— 'শতীতো ঘট: শনাপতো ঘট:' ইত্যেতরোক্ত প্রতাররোঃ বর্ত্তবান্ঘটপ্রহারবং ন নির্মিণরত্বং বৃক্তম্ । জনাগতাবি-প্রবৃত্তেক ।— ন হি অন্তি অধিভয়া প্রবৃত্তিরোকে দৃষ্টা । যোগিনাং চ অতীতানাগত-ভানত সত্যবাং । অসংক্ষেত্ ভবিষ্যান্দটঃ, ঐশবং ওবিষ্যান্দটবিষয়ং প্রত্যক্ষানং বিধ্যা তাং । ন চ প্রত্যক্ষমুপ্তর্বাতে; ঘটসভাবে হি অসুধানম্ অব্যাচার ।

বিপ্রতিবেশান ।— ব'দ ঘটো ভবিষ্ঠীতি — কুণাণালিবু ব্যাপ্রিয়মাণেবু ঘটার্থং প্রমাণেন নিল্ডিফ্ ; যেনশ্চ কালেন ঘটত সম্বন্ধ:— ভবিষ্ঠীত্যানত, ভবিষ্কে কালে ঘটোহসন্নিতি বিপ্রতিবিশ্বস্থিতিই ; ভবিষ্কান্ ঘটোহস্ত্রিতি—ন ভবিষ্ঠীতার্থঃ, অরং ঘটো ন বর্ততে ইতি যবং।

অধ প্রাভংগতের্বটো স্বিত্যুচ্যেত, — ঘটার্থং প্রবৃদ্ধানালির ভত্র ধণা
ব্যাপাররপে বর্ত্তমানালাবংকুলালাদরঃ, তথা ঘটোন বর্ততে ইত্যুসজ্জ্বভার্থশ্বেৎ, ন বিক্ষাতে। কলাং ? বেন হি ভবিষাজ্রপেণ ঘটো বর্ত্তত ; ন হি
পি ওল্প বর্ত্তমানতা কপাণলা বা ঘটাল গুবতি, ন চ তর্যোর্কবিষ্যুত্তা ঘটালা ।
তলাং কুলালাদি-ব্যাপারবর্ত্তমানতারাং প্রাভংগতের্ঘটো হ্বালিতি ন বিক্র্যাতে ।
বিদ্যুত্ত যং লং ভবিষ্যুত্তা কার্যারপ্রম, তং প্রভিবিধ্যেত ; তংপ্রতিবেধে
বিব্যেবঃ ভাষ্য ন তু তল্ ভ্যান্ প্রতিবেধতি ; ন চ সর্ক্রেবাং কির্যাবতাম্
একৈর বর্ত্তমানতা ভবিষ্যারং বা।

শপি চ, চতুর্বিধানামভাবানাং ঘটন্ত ইতরেতরাভাবো ঘটাদকো দৃষ্ট:,—বধা ঘটাভাব: পটাদিরেব, ন ঘটস্বরূপষেব। ন চ ঘটাভাব: সন্ পটোইভাবান্দক:, কিং তর্বি ? ভাবরূপ এব। এবং ঘটন্ত প্রাক্-প্রধ্বংসাতাভাভাবানামপি ঘটাদ্রন্থ: স্থাৎ, ঘটেন ব্যপদিক্রমানম্বাৎ, ঘটসোভরেতরাভাববৎ; তথিব ভাবান্মকতা শভাবানাম্। এবঞ্চ সতি, 'ঘটসা প্রাস্কভাবঃ' ইতি —ন ঘটস্বরূপ-বেষ প্রাশ্তৎপত্তেন বিষ্টে।

অধ ঘটন্য প্রাণভাব ইতি—ঘটন্য বং শ্বরণং তদেবোচ্যেত; ঘটন্যেতি ব্যপদেশাস্পপতিঃ। অধ ক্লবিদা ব্যপদিশ্যেত, 'শিলাপুত্রকন্য শ্বীরষ্' ইতি বৰৎ; তথাপি ঘটন্য প্রাণভাব ইতি কল্লিতনৈ।বাতাবন্য ঘটেন ব্যপদেশে। ন ঘটন্ত্রণক্তৈব। অধার্থস্তরং ঘটাত্ব ঘটনাভাব ইতি উজ্লোভর্যেতৎ। কিকান্তং, প্ৰাপ্তংগকেঃ শশ্বিষাণ্ডদ্ অভাবসূত্ত সংগঠ সংকাৰণস্থাসম্বাদ্ধ পপজিঃ, বি-নিভ্ৰাং সম্বাদ্ধ অধুত্সিদানামদোষ্ট্তি .১৫ ন; ভাৰাভাৰয়েঃ অবুত্সিদ্বাহ্পপ্তেঃ। ভাৰভূত্যোহি মৃত্যুদ্ধত। অবুধ স্কৃত্য পাছে, ন তু ভাৰাভাৰয়েঃ অভাৰয়োকা; তথাৎ সাদ্ধ কাৰ্যং আধুৎপ্তেমিতি সিঃম্।

কিংলকণেন মৃত্যুন। আর্তম্, ইতাত আহ —অবনায়না, অবিপ্রমিকা অপনায়া, বৈব মৃত্যুন, সা হি মৃত্যোগ কণম; ওয়া লক্ষিতেন মৃত্যুনা অপনায়য়। কথমপনায়া মৃত্যুহিতি? উচাতে—অপনায়া হি মৃত্যু:। বি-শবেন প্রসিদ্ধ হৈত্যবজ্ঞেত্যুতি। যে। হি অপিত্যিক্ষতি, সোহপনানান্তর্মেশ হলি অকুন; তেনাসো অপনায়ৰী লক্ষাতে মৃত্যুঃ, ইতি অপনায় হি ইতাহ। বুঙ্গান্যনাহন্দায়া ধর্মা, ইতি স এব বুঙ্গাব্দাহ হিরণাগভো মৃত্যু রভ্চাতে; তেন মৃত্যু নেদং কার্যানার্ত্যাসীৎ; যথা পিশুবস্থা মৃদ্যু ব্রাদ্ধ আনুতা: স্থাবিতি, তবং।

তরনোহতুকত। তদিতি মনসো নিজেশ:। স প্রকৃতো মৃত্।কাক্যমাণ-কার্যা-সিক্করা তংকার্যালোচনকমং মন:শক্ষাচাং সকলাদিগক্ষণমপ্ত:করণম্ অকুকত কৃত্যান্। কেনাডিপ্রায়েশ মনোহকরোং সু ইতি উচাতে—আর্থা আর্বান্ ভাগতবের্ম্; অধ্যনেনাহনা মন্যা মন্থা ভামিতাতি প্রায়ঃ।

म अवार्णाणः विश्वित स्वारा भ्रावयः मन् व्यवस्थान पृत्र न् व्यापान स्वारा स्वार

কাৰ্য্যাৎ কাৰণভাগি প্ৰাণ্যমন্ত্ৰ প্ৰাণ্ডে নিভান্তৰতি—নেত্যাদিনা। "নৈব"-ইভানি-কভিন্নবাকনামন্ত্ৰপানিবিৰল্প ন প্ৰাণ্যমন্ত্ৰ কাৰ্য্যানাৰ লাভ্যানিবিৰল্প ন প্ৰাণ্যমন্ত্ৰ কাৰ্য্যানাৰ কাৰ্য্যানাৰ কাৰ্য্যানিকভিন্ন কৰি বাকাৰে কাৰ্যানাৰ কাৰ্যানাৰ কাৰ্যানাৰ কাৰ্যান্ত্ৰীতি চেতি। "বৃত্যান্ত্ৰীত ভানিবাকাৰ্য্যানাৰ কাৰ্যানিবাকাৰ কিন্তানাৰ কিন্তানাৰ কৰিবিলাৰ প্ৰাণ্যানাৰ প্ৰমাণান্ত প্ৰমাণানাৰ কৰিবিলাৰ প্ৰাণ্যমন্ত্ৰীত বাবং। প্ৰকাশ অনুনান্যমন্ত্ৰীত কৰিবলৈ প্ৰাণ্যমন্ত্ৰীত কাৰ্যানাৰ কৰিবলৈ কাৰ্যানাৰ প্ৰমান্যমন্ত্ৰীত কাৰ্যানাৰ কৰিবলৈ কাৰ্যানাৰ কৰিবলাৰ কৰিবলৈ কাৰ্যানাৰ কৰিবলৈ কৰিবলৈ

ন অনুপদ্ধ প্রাহ্রতাবাদিতি ভাবেন দৃষ্টারভ নাধাবৈকলাং চোববতি—প্রট্রান্দীতি।
ন ভাববনিছো বটঃ বকারপ্রপৃদ্ধ তি অনভোহকারকবাং, নিছত ভূ উন্নয়কবার অনংপূর্বক্ষনিতি কৃতঃ নাধাবিকলতা ইভাবি—ন্মেডি। কিং চ অবন্ধিয়বাবের নর্বত্র কারপং, ন
পিওাকারবিশেবং, অবনাননবগ্রান্তেতি কৃতঃ নাধাবৈকলানিভাবি—মুদ্দেনেরিভি।
ভবের ক্ষুট্রতি—মুৎ্মুন্তর্পান্দীভি। ভত্রেভি দৃষ্টারোভিঃ। কিং চাবরঘাভবেকাভাবি
ভারণমব্বেরস্থা ন চ পিওাভাবে বটো ন ভবতীভি বাভিরেকোহিছি। পিওাভাকেপি
শকলাদিভাহিশি বটাহারবোপলভাবিভাবি—ভান্যভাব ইভি। ভবের ক্ষুট্রভি—
অলভ্যান্দিভি। বন্ধতহিশি বাভিরেক্রাকিভাং ভূলাবিভাগভাবি—ভান্তলভীভি।
দুলান্তের ঘটানিকরণং তেৎ, কিনিভি পিভাবেশ নভোব ভভো বটাভুত্বপভিরিত্যাপভাবি—
ভারমিভি। রক্ষণি ববিভাবশাহপভিরিভি ভাবঃ। অবন্ধিরাং প্রোংপর্যকার্যাভিরেধানের কার্যান্তরঃ অনরভি চেৎ, কার্যাভাবান্ত্রের ব্যরণি নভেৎ,ভ্রোভ্রমণর্ব্যাৎপত্তিব্যোভ্রেরাবিভাগভাবি—মু চেভি। কার্যাভ্রেরণি অনুস্থানিভি।
ভারাভেত্বর্ত্রঃ। অব্যান্তর্যান্তর কারণ্ডে ক্লিভ্রান্ত—ভ্রম্যানিভি।

শ্বৰ স্বৰে বুছোঃ সাধৃতাৎ ওচবু'ছবিতি শ্বতে আফুন্যানিদিভি। গ্ৰেঃ বনাবেল্পৰান প্ৰাৰণাৰ্থক সাধাৰায় সান্তানিছিবিতি ব্ৰয়তি ন তাদিদেং বুজ্যোৱিতি। তথাপি কিমিতি সাম্ভানিছিবিতাশ্বাদ 'মালাত দৈভি।

নানুন্ধানিছিৰভাগেতা শহতে তালতেত্ত্ত্ত্তি। বন্ধ সভোবাৰ্থে ধীন্তানৈৰ নাধকাপেকা, নাক্সত্তেতি ভাবঃ। তন্ধ বাহাগেবানিলং প্ৰভাগে মা তাদিদেং ক্ৰোণ্ডি বিজ্ঞানবাল্পান অলাদেতি তথা সভানাল্পনং ক্ষণকৰিজ্ঞানমিভাজ্ঞাপি আনজ্ঞানিছিবছাৰ বিজ্ঞানবালাদিছিবিভাগে নােতি। পুলবাজ্ঞাও তাদেলীতি। নামা বীন্ধানিছবিভাগে বাহালিছবিভাগে নােতিত পুলবাজ্ঞাও তাদেলীতি। নামা বীন্ধানিছবিভাগে বাহালিছবিভাগে নামা বিভাগিছ

প্রভিজ্ঞাভাগং বিভন্নতে—কার্য্যান্তে। চেট্টাগ্রান্তিতি—কথমিতি। প্রতিবাদিনিক্সন্তেতি বৃৎপত্তা, কথমতিবান্তিনিক্স গানিতি কার্যাস্থে চেতুক্সচাতে ? সিঙ্কে হি সঙ্গে অভিব্যক্তিনিক্সনতেতি সিধাতি, ভ্রমাক্ত সম্বাদিঙি নি হাজ্যোভাশাসাধিতার্থ:। সংগ্রতিপন্নরা অভিনালা বিশ্রতিপরং সমং দাধাতে, তরাজোলাশ্রমম্বনিতি পরিংরতি—অভিনাতি। কবং তর্গীহাস্থানং প্রবোজবানিডাপেলা প্রথম বাজিনাহ—ফ্রীতি। বল্পতিবালানার তৎপ্রাপতিবাজেরতি, ববা তবোজহুর বটানীতার্থ:। সম্প্রভাত্নিলোভি —ত্তপ্রতি। বিষয়ং প্রাপতিবাজে: সম্ভিবাজিবিবর্মান্, বছাতিবালাতে তং প্রাক্সং, সংপ্রতিপ্রবৃদ্ধিতার্থ:। নত্ন ত্বোচ্নাহে মান্ত্রাহে মান্ত্রালাত তং প্রাক্সং, নাপ্রতিপ্রবৃদ্ধিতার্থ:। নত্ন ত্বোচ্নাহে মান্ত্রাহিত।

উट्टि चक्रवादन काक्षेत्र महारामाध्यममः विश्वक वावकवानमञ्ज-द्वाकामिनाः। छक्काक्रुवामिवरवरवा न.कर्वः। व्यविद्यानवाकावाधिकि स्थितः। व्यवस्यान वागरकाण-श्वामः विकृत्याति—म क्योंका वर्षमानवव डो डमामाम ५ पर्वाम महत्वद हिस्समहि-সামজাং সভাং ভবংগাৰ ছবেন লিডেগ্ৰু ইপলভোত, ন চৈননুপলভাতে, ভবালমুক্ত काराक्ष प्रथा मध्य व ठार्थः। पृथ्मिषु ११ वर्षा विद्याप्तिकारास्त्रहानाकमार्थम्। अपन्नि eco महोति (खन:। अ छार्बादछशंतद्वभादः काग्रक मरमानव्यामानः, मर्छार्थन वहारमः व्यक्तिकारभाविकारभाविकान्याक्षित्र । व्यक्तिकार्थिक विकासिकार्थिक विकासिकार्थिक विकासिकार्थिक विकासिकार्थिक विक बाक्तिमावकर, न ş সভপ্তবন্দ্রপ্রীনেন্দ্রেভি ইভাভ্রেভার্-ক্রি**ব্রা**ফিডি। উৎপন্নস্ত কুড়াাড়াবৰণমগৃংপন্নস্ত বৈশিষ্ট্ৰ কাৰণামিতি বৈশিধাৰেৰ প্ৰতিজ্ঞাপূৰ্বকং সাধয়তি—ছাট্যদৌতি। গলেশকভাষানকারণাবয়বানা কালাকুরাকারেব ছিভিওলা (नमः कारायुगनकार्णः, छात्राच्या (binheis केटायस्वर्गात्रकार्वकानकः कादशक्त कार्यास्वरक्राण्य বিভক্ত কাম্যানর ক্ষমি ভি - ছাইবাম্ : 'বাবাইজ কার্যাজ আবরকরালি**ভৌ নিভ্**নহমাহ--ক্তমাণ্ডিত। প্ৰাক্তানাপ্তিৰে সিঙে সলা ভত্পৰতি প্ৰসন্থবাধকং নিৱাকৃতা, নটো ৰটো নাপাভাগি প্ৰয়োপ প্ৰভায়তে ল'কুবপ তং বাধকান্তঃবালকাহ —নুষ্টেভি। কপালাবিনা ocarsica बहेबावबादः विश्वास्त्रवादन अञ्चलकातूरणद्भवादशादा शेणाविका ख्यानिवारम्माणिवारको भाववावशदः **लि**डामिना डिट**ाखार महाववावहादः। छ**रनवः काश्यक्त भग भरदः भि अत्याप्रश्र हाइएक निष्धि दे हा वर्ष है।

পিডাদি ন ঘটান্তাবরণাং, তেন সমানদেশ রাধ্য বনু মদ্য আবরণাং ন তথ তের সমানদেশং, বধা কুডাদিতি —শকতে —পিঙেডি । গাঁতবেকাত্যানং বিবৃণেতি —জম ইজাদিনো। অসুমানকলং নিগন্যতি —জন্মাদিতি । কিবিনং সমানদেশতম ইজাদিনো। অসুমানকলং নিগন্যতি —জন্মাদিতি । কিবিনং সমানদেশতম । কিবেশ কারণমাতি বিক্রাণ্ডাং বিক্রমণে তুমানি — শেক্তাদিনো। কীরেশ সংকীর্ণভোষকাদেগারিয়নানস্যতি বাবং। বিভায়মুখাপারত —প্রটোদ্ধিতা । বন্যোলং কার্যাং, ও প্রস্কৃষাঝান তেবামবহানাও তুরং তেবামনাবরণয়ি ভার্যঃ। ঘটাবন্ধমুম্মারাবৃত্তিকশালাণেঃ ঘটানাবরণয়িট্নেবোত সিদ্ধান্যতা, কব্যজ্যটাবন্ধমুম্বুভিকশালাণেঃ অসাবরণয়ন্দ্রতি ক্রাণান্তি ক্রমান্তি । ক্রম্পিতি ক্রমাতি — ন বিজ্ঞাননামিতি ।

বিশ্ববানকৈব আধৃতথাৎ অসুপ্ৰবিশ্বেৎ, আৰমণ্ডিমন্তারে বন্ধ: ভাৎ, ন বটাদেরুৎপছৌ, অভোহ্যুক্তববিলোধঃ সংকাৰ্যবাদিনঃ ভাষিতি প্ৰতে—আ্যান্তর্গুড়ি। ভবেৰ প্ৰপক্ষতি— পিতেতি। বন্ধ আনুভং বন্ধ বাজাতে, ভন্ন আবন্ধণতক এব বন্ধঃ, ইণ্ডি বাধোভাবালাস্থতন বিবোধোইটি চুবনতি—ম অমিয়ামানে ডি। অনিনয় নাবাতি—ম হীজি। ভনন আনুতে বটাবো বাবোংগড়ো ব্যোহাটিভান চোনহাতি—মোইপীড়ি। অমুভববিধোধনা নাবভাজনেব বানজি— মীপামিডি। বীপভনজিনছতি চেং, হবং মুজোপলজিনভ আব-ক্তিনালিডি। তন হেডুবাহ—ম হীজি। অমুভববমুক্তা পনিবনতি—মেড্যামিমা। কিনিবানীবাবন্ধভাকে প্রবন্ধো বেভোৰ নিয়বোহত, বেভাহ—ক্রমিটিদিডি। অনুভবমুক্তা বিবাহানীয়াবন্ধভাকে প্রবন্ধো বেভোৰ নিয়বোহত, বেভাহ—ক্রমিটিদিডি।

কিকাভিব্যক্ষক্ষণাপারে সভি নিরবেন ঘটো বাজাও, ভবভাবে নেভারম্বাড়ি মেকাবধারিত্যে ঘটার্য: কুলালাবিয়াপার:, ভভার্ববন্ধার্যভিব্যকার্য এব প্রবন্ধে। বক্তবা:, আবরণভব্যআবিক ইভাছ—মিয়ুমেডি। উক্তং আবর্যক্ষেত্রের বিব্যুগাতি—ক্রাক্রেন ইজ্যাদিনা ।
লাব ভিত্তার্বে বত্তে বড়ে। ঘটাপুশলবিঃ, অভত্তর্গলকার্যক্ষের নিয়তঃ সন্ বন্ধঃ সকলঃ ভাবিতি
কলিতবাহ—ক্তত্মাণনি জি: প্রক্রমাভিব্যক্তিলিক ক্ষমুখানং নির্ভারম্বালানের ম্বান্তব্যুক্তি।

কাৰ্যান্ত সাৰে মুক্তাৰভ্ৰমাহ --অভীতেভি । বিমন্তং সম্ববধ প্ৰমাণৰাৎ সম্প্ৰিকাৰণ-ভাৰ্থ:। তদেবাজ্যানং বিশ্বভাতি—অভীত ইভি । ক্ষাইৰোপণভাৰ্থমাং—অমাণ্ডিভিভি । ক্ষাণামিনি মটে তম্ববিদ্ধেন লোকে প্ৰবৃত্তি । ক্ষাণামিনি মটে তম্ববিদ্ধেন লোকে প্ৰবৃত্তি । ক্ষাণামিনি মটে তম্ববিদ্ধান লোকে প্ৰবৃত্তি । ক্ষাণামিনি মটিং তজ্ঞাসমিনিইং, তজ্ঞাসমিনিইং, তজ্ঞাসমিনিকানভাৰ । ক্ষানামিনিকানভাৰ লোক সদা সম্বানিকাতে । ক্ষাণ্ডি । ক্ষাণ্ডি । ক্ষাণ্ডি । ক্ষাণ্ডি । ক্ষাণ্ডি । ক্ষাণ্ডি । প্ৰস্তুত্তি । ক্ষাণ্ডি । ক্ষাণ্ডি ক্ষাণ্ডি নিকানাৰ ক্ষাণ্ডি । ক্ষাণ্ডি ভাৰাণ ক্ষাণ্ডি । ক্ষাণ্ডি ক্ষাণ্ডি নিকানাৰ ক্ষাণ্ডি ক্ষাণ্ডি নিকান ক্ষাণ্ডিভি । ক্ষাণ্ডিভি নিকান নিকান ক্ষাণ্ডিভি নিকান ক্যাণ্ডিভি নিকান ক্ষাণ্ডিভি নিকান ক্ষাণ্ডি

ষ্টা প্রাপ্তমান বিষয় বিষয়

বিতীয়সুখাগয়তি—অংশক্তি। প্রাণ্ডংগছেবটার্থং কুলালান্ত্র প্রবৃদ্ধের নাহনয়িত।
নাজ্যার্থং বয়বের বিবেচয়তি—স্তব্রেক্ত্যান্ত্রিনা। তল নিভাগী ক্রতে—স্ব বিক্রন্ধ্যক্ত
ইক্তি। কবং পুনঃ সংখার্থনানিসভাগন্ত্রবিক্লহিত্যাহ—ক্রম্মান্তিক্তি। প্রাণ্ডংগছেত

বারেজিয়ণাং সন্থং বইজ নিবাধরিবিজং, তক্তেরবানশি জ্ঞা স্বাচন্ত্রবিজ্ঞানার্বাং নিবেধবন্ধস্ততে নাবরার্কিমতিপত্তিরিজাতিপ্রেডা আব —ক্ষেম্ ক্রীক্তি। নণু বন্ধত দর্জত
বৃল্ধান্তরাধিশেবাং শিওাবের্কিগ্রাব্রা বইজা ভাব, ভজা চাল্ডাভা ভবিষাতা চালিওকণালয়েঃ ভাবিজি সাভর্বাধানজ্যাহ—ম ক্রীক্তি। ব্যবহারবর্ণারাং ববাপ্রতিভাসনবির্বাল্যান্ত্রবর্ণারিজ্ঞার্থা। আব্যক্তারাণ বইসাার্বিজ্ঞানার্ব্যক্তপ্রকৃতিবর্ণারিজ—
বিরোধাভাবমুশপারিজমুশনংহরতি—ক্তন্মান্তিতি। উল্বেখ ব্যভিন্নেক্ষারা বিরুণান্তি—
ব্যদ্ধীক্ত্যান্তিমা। ববা কার্কাণি ব্যাপ্রিয়ের তবা বটোংসারিতি ভলা ভবিষাত্মানিরূপং
ভংকালে নিবিবাতে তের্ক্রবিধরা ব্যাব্যক্ত স্থাব্য নি হত কলা ক্রিল্ কালে ভবিষাত্মানিরূপং
সক্তা নিবিবাতে, অর্থিকিরাসার্বাংসার নিবেবাং, তংল বিরোধানকাশেভিত্তীতার্বঃ। ন তি
শিওসোভাবিলা সাঞ্জাস্থাবিককাপ্রবিদানীং সর্কভ্রনিভাত্তরা ক্রুইবিজ—ম স্তেতিঃ
ভবিষ্যক্রিভিত্ত তেতি শেখঃ।

কাৰ্যানা মাওৎপত্তেৰ লৈচ্ছে ধ্ৰম বাভাবে কেম্বরমার—অলি চেক্তিঃ ভবেবাদ্ব ৰাৰতন্ত্ৰা স্টান্তিত দুটাক্ত দাধৰতি -চাতুৰিধানগমিতি। ব**টা** নিৰ্দানৰে। বটাছোৱা-ভাষদা बहेत्वज्ञात ভाषाल चालालालालाको ने नाता चमवर इहानका छ - मुक्ट होछि। न (वोक्तिकवन्नव:, किंद्र पटिं न कर्राठ पठे हैं कि आठोडिक:, ख्रेशंठ पठे खाने वहे।बिद्युद्वि न्द्रीद्वत्वत्वाकृत्ववाक्षकोद्वाकाकाकान्य वहेनकक्तिविद्वार्थः । वहालाव: नहावितिकायुक्तः, विध्यवनास्य बडेकानि नवेश्यवस्ति अन्त्रशासिक क्रियावः, वृहेन्द्रियः क्राडीकृडवार। प्रवेशिकारक महीविवाकादर्शम व चालक्षायकारव्यविद्रावार। बालि छन्द्राकाताः निर्देश्य प्रतिकार्यः, मध्मर्गाकावाद्यक्तीवानाकाः। व ह म वहेटेक्कव वर्षः चन्नगर वा, वरहा वरहा व चवडोडि धडी हालावावि हास्टियडाह-म घडियक्ताल-মেবেভি। বদি প্রভীতিবালিতা ঘটারে প্রতাদিরিবাতে, ভবা প্রাদে-ভাৰভাভাৰত্বিধানাত্ব্যাঘাত ইত্যাপ্তাাহ—ন চেডি "ব্ৰপ্পৱৰ্ণাভা: সর্বং महम्मासकन्" हेिछ हि वृक्ष':। क्या क श्रोटिकः स्थलाखना श्रान्यः वर्षे कारास्त्राकावार छव-ভাৰতং চে চাৰাচভিত্রি চার্থ:। নিতে প্রতী চাতুনারিশি দৃষ্টাতে বিবঞ্চি বস্থান বাহ --এবমিতি। किং চ. ভেৰাৰভাৰানাং বটাভিন্নতাং পটবদেৰ সৰ্বেইবাৰিভাকুৰাৰা-ন্তরবাহ—ত্তথেতি। অনুবানদলং নগরতি—এবং চেতি। ভেবাং বটাদলং क्षत्र व्यवस्थानसम्बद्धाः न्यांच्यः व शाद्धाकि । नद्ध व द्वारकाराकारात्र कारा-ভাৰলোমিখ: সঞ্চতিরভার্থ:।

নতু প্রসিভাংভাবে। ভাববং অপকোংপকোত্রিভি চেং, স ভাই বটন্ত করপ্রবান্তরং বৈতি বিকরান্তবন্ত গ্রহতি—আপ্রেড্যাদিনা। প্রাস্থাবানেবট্ডংপি স্বভং কর্মিয়া বইপ্রেড্যান্তিতি প্রতে—আপ্রেডি। স্বভন্ত করিবে স্বভিনেং-পাভাবভ তথাবং ভানিতি গ্রহতি ভ্রপাপীতি। বত্র স্বভং কর্মিয়া বাপবেশ্বত ব বাতবো ভেনে, বধা রাহ্শিরসোং, তথাত্রাপি করিতে স্বত্বে ভেন্ত তথাবান্বান্তবন্ত স্বাভিনে ব ভাতাবন্তবা সাপেকভানতো ব্টভবেভার্থঃ। ক্রাভ্রন

নথ্যক — অথেতি। নথুনাকলং বছরিবটা কারণাপ্তলা প্রবাধনকে স্বাধিক-বেকদিনাং—উপ্তেলিক স্বাধিক। নাম কার্যারাধে ধোলাররমাং কিং গ্রেডি। বিক্রেপ্তর্মাতি। নাম কার্যারাধে ধোলাররমাং কিং গ্রেডি। বিক্রেপ্তর্মাতি। বিক্রেপ্তরাম্বিকার বিক্রেপ্তরাম কার্যার্যারের প্রাক্তির বিক্রেপ্তরামিকার কার্যার্যার বিশেষার প্রক্রিকার কার্যার্যার বিশেষার প্রক্রিকার কার্যার্যার বিশেষার কার্যার্যার কার্যার ক

देवदररकाळ नर्वक था७२९८४ अनवनश पृक्तात आधिवाकावाश्यादन विश्वता। **নতাতি বৃঠ্যাশকাৰ্থাভাৰে এচ্ছাংন ভেনাবরণং অগতঃ সভবতীভাঞ্জিশভি**⊸বিচং अम्म्बर्गरम्कि । अनिकशकताबङ्गत् अशकाख्यात्रात् अमकोकृङमकरहाक्कावदातिः বিভং বারাক্রণং সাভাসং মৃত্যুবিভ্যভাতে ৷ নশকৈ সর্বাং কার্যান্ অবাঞ্চরকারণাত্তপত্ত নইভি, ইভাকিপ্ৰেডাংহ --অক্ত আ'ক্ষেক্তি। কথা ববোক্তো মৃত্যুগ্ৰনাৱহা লকাতে ? ন ভি বুৰকারণত অপনারাধিষ্ট্র, অপনারাপিশালে আনজে: ১ বিচে:ইতি পথতে অভয়েতি। मुनकाबनटेक्कव एखवर अध्यक्ष मध्यरकदेवाम् ज्ञाद्य गाँउ वाकारनदवानमञ्ज्ञिक्ष निवन्ति। উচ্যক্ত ইক্তি: অধিধ্যৰে এক ছ'ড--থো ছবিতি ৷ ভৰাপি অংশ্বং মৃত্যু विका कवर विक्रमान्दरामाधानमञ्ज्ञास व्यक्तांजान के छि। डेक्ट १०५१ क्र **प्रतिक्रमार-- ≷िछ अन् शिक्तिः नेथ न इतन प्रतन**ाइराङ, मृत्रकावद्यादेन । क्रमावक्ष्यादः ख्यकवर वारकालकारवाललां हव । याक----(क्टरमार्के अप विवसानार्क अकृत्व कवा অইরি নপুংস্কল্লাংগভারাত—ভাদিভি মন্ত্র ক্রিড বাকাবিব্যুবা কর্বছতি ল প্রকৃত হাতি। ভূওপ্রতিবেশের পৌতকর বনসং পরবালোও মধা পৃথাতি--কেনেতি। অপকারতানাং ভূতানাং ভিরবংগভলেচভূতানাং আপো লভারতভাব-ভেছো মনোবাজিয়বিকছে'র মবানো ভাতে –উচ্চান্ত ইন্ডি। স্বাপ্তবহনা স্বাভাবিক-দ্বাং ন ভয়াশংশনীয়নিভ্যাশকা বাক্যাৰ্থনাঃ—আছ'মতি।

ষনদো ব্যক্তভোগবোগনাহ—দ্ন প্র ক্রাপান্তিরিন্ত। নমু তৈরিরীয়কাণার্ আকাশাদিক্রক্রান্তে, তং কর্থানগামাণে স্টের্করাক, ত্রাহ –আপ্রেন্তি। সপ্রমা হিরণাপ্রতিক্রিক্র কর্মান্তির বাবং। নবাকাশাল্পা তৈরিরারে স্টেরির ব্যাল্পির্টার ক্রিক্রের্টার ক্রের্টার ক্রির্টার ক্রের্টার ক্রির্টার ক্রের্টার ক্রের্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রের্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রের্টার ক্রির্টার ক্রিক্রার ক্রির্টার ক্রের্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রির্টার ক্রে

কোরয়'ত—আচ্চানাদিন্তি। ক্লবৰাক বৰোজনাবৰভোচনেকশাভিয়ত্ত বিবক্তিভা ইভাহ য এখনিতিঃ ● 1 > 8

ভাষ্যান্ত্রাদ্য-শতংশর শব্দেববজোপবাসী শরির উৎপত্তিপ্রধানী কবিত হটতেছে। তবিষয়ক উপাসনাবিজ্ঞানোপদেশই ক্রতির
শতিপ্রেড; শতরাং, শরির উৎপত্তি-বর্ণনা কেবল তাহার ছতির শত্ত,
শর্বাং ওপপ্রকাশনার্থ মাত্র বৃথিতে হটবে। "নৈবেহ কিঞ্নাপ্র শারীং",
ট্রার শর্ধ—এই সংসারষ্ঠ্রণে শত্তংকরণ প্রভৃতি কৃষ্টির পূর্বে—নাম ও
শাক্তি-সম্পার কিছুমাত্রও ছিল না।

[সংকারণবাবের বিপক্ষে বৌদ্ধের আপত্তি ও তাহার বঙ্ক।---]

্পুরবারী বলিতেছেন—] ভাল, তবে কি পুরুই ছিল ? ইা, পুরুই বউক;
"নৈবেহ কিঞ্ন" প্রতি অনুসারে জানা যার বে, কার্য্য বা কারণ—কিছুই ছিল
না; বিশেষতঃ, উৎপত্তিও পুরুষাদের পক্ষে জনর একটা বেড়ু; কেন না, দই ত
(ঘটালি পথার্থ ত) উৎপর হইরা থাকে; একর উৎপত্তির পূর্বে তাহার কার্য্যপদার্থের) অন্তিম্ব থাকে না। [তাকিক মতে] আপত্তি হইতে পারে বে,
ঘটোৎপত্তির পূর্বে বধন পিতাকার সৃত্তিকা দৃই হয়, তবন মৃত্তিকা প্রত্বে বধন পিতাকার সৃত্তিকা দুই হয়, তবন মৃত্তিকা প্রত্বে কার্য্য-বন্ধর ত আর অন্তিমাতার হইতেছে না (১৪); বাছা প্রত্যালাহি জ্ঞানের
বিষয় হয় না, তাহার্ত্ত অন্তিম্ব না থাকেতে পারে; অতএব কার্য্যের হয়ং
অন্তিমাতার হয় হউক, কিন্তু ত হার কারণ বধন পূর্বেও উপক্তির বিষয়ীভূত
হয়, তথন তাহার অন্তিম্ব বিস্থু হইবে কেন গুইতাদি। কিন্তু, না—এ কথাও
হয়, তথন তাহার অন্তিম্ব বিস্থু হইবে কেন গুইতাদি। কিন্তু, না—এ কথাও
হয়, তথন তাহার অন্তিম্ব বিস্থু হইবে কেন গুইতাদি। কিন্তু, না—এ কথাও
হয়ত পারে না; কেন না, উৎপত্তির পূর্বেত কোন বন্ধরই উপলব্ধি বা
প্রত্যাক হয় না। অন্তপ্রতির বা অপ্রত্যাকই যদি অন্তিমাতাবের কারণ হয়,
তাহা হইলে অগত্বংপত্তির পূর্বেক কার্য্য বা কারণ — কাহার্য্যে উপলব্ধি থাকে না;
স্ক্রাং কার্য্য কারণ—সমন্তের্যই অভাব সিত্ত হইতে পারে। [ইহাই পূর্তুবালা কর্ত্তক তাকিক্মতের প্রতন।]

[এতত্তরে সিভাস্তবাদী বলেন---] না,--এরপও সিভার হইতে

⁽১৪) উৎপত্তির পূর্ব্ধেও বাধারা অন্ত প্রার্থের অন্তির অফীকার করে, তাহারা সংকার্য্যবাদী। আচার্য্য শক্তর সংকারণবাদী, কিন্তু তিনি কার্যাকারণের অন্তেদ খাঁকার করেন
বাদিয়া ভিনি ও কণিল—উভয়েই সংকার্যাবাদী; নৈয়ায়িক ও বৈশেষিক অ-সংকার্যাদী।
ভীহারা উৎপত্তির পূর্বো কার্যাের অভিত্ব খাঁকার করেন না। এখানে "কিং শৃশুবেব
বন্ধুব ং" এই আপ্তিটী শৃশুবাদীর; তাহার পর, শৃশুবাদীর উপরে আরোণিত "বন্ধু কারণত
ন নাভিত্বং" ইভ্যাদি আপ্তিটী নৈরায়িকের বুকিতে হইবে।

পারে না; কারণ, "মৃত্যুনৈবেণন্ন আরতন্ত আসীৎ" ('ইণা মৃত্যু কর্ত্বক আরত ছিল') এইরপ প্রতি রহিরাছে। বলি কিছুই না গাকিত, তাবা ংইলে প্রতি কথমই 'বাবা বারা আরত হয়', এবং 'বাবা আরত হয়', এবং 'বাবা আরত হয়', এই আরত ও আবরণ-চেত্র উরেণ করিতেন না; কারণ অতার অলং বল্লাপুত্র কথনও অলীক আকাশ-কুসুষে পোতিত হং না। অণচ প্রতি লাইকেরেই বলিতেনে বে, 'ইবা পূর্বে মৃত্যুকর্ত্বকই সমারত ছিল' । অত বে প্রাণ শারাণা অপ্রসাবে বুঝা বাইতেছে বে, বাবা বারা অর্থাং বে কারণ বারা মারত, এবং বাগা, অর্থাং বে কার্য আরত, তত্ত্তরই উৎপত্তির পূর্বেও বর্ত্তমান ছিল। এ বিষয়ে অন্থ্যানও অণর প্রমাণ ; কেন না, উৎপত্তির পূর্বেও বর্ত্তমান বিভাগন আত্ত্তেরেরই অভিয়ে অন্থ্যান করা বাইতে পারে। বেহেছু, কারণ বিভাগন বাকিলেই কার্য্যের উৎপত্তি হুই হয়, এবং কারণের অভাবে কার্যাংপতি কোরণের ভূই হয় না। ইবা বারা উৎপত্তির পূর্বের এই কপত্তেরও কারণের অভিয় অন্থান করা বাইতে পারে। হুটার বেনন—বটারি কারণের অভিয় (১৫)।

বৃদ্ধি বল, কারণস্বস্ত্রপ সুৎপিওালিকে বিস্তিত না করিরা বধন স্ক্রীয়ে কার্য উৎপন্ন হয় না, তথন স্টানির কারণ সুৎপিওালিও অসৎ— স্বান্তিস্থান। না,—বেংহতু সুভিকা প্রভৃতিই স্টানি কার্যের প্রকৃত কারণ,

ব্যাল প্রত্যাল প্রত্যালী বৌত বলিয়াছিলেন --উৎপত্তির পূর্বে বেষদ কার্যা বা অপ্ত বজ্ঞর প্রতার বাকে, তেননি ভৎকারশেরও প্রভাব বাকে; স্কুডরাং 'সর্ব্বান্তবাদ'ই সন্তা। অনুষ্ঠের নৈয়ান্তিক বলিভেন্তেন,--না, সর্বান্তবাচ বাকে পাছে না; কেন না, সর্বান্তবি আর্থানেপ্রিয় পূর্বে ভৎকারণের অবিভ দেবিতে পাওয়া বার। বেষন বট একটি ভার্ব্যারা পূর্বে ভৎকারণ মুদ্রিকার অবিভ বেছাক বেরিতে পাওয়া বার। স্কুরাং, এই জসং-কার্যা উৎপার হইবার পূর্বেও ভৎকারণ (জারমতে পরমাণু) নিক্তরই ছিল; স্কুরাং 'সর্বান্তবাদ' অনিত। ব্রুবানী পূনক্ত বলিভেন্তেন যে মুদ্রিকা অনুভির বে, পিওালির প্রবানের বিশেষ আক্রার, ভারাই বটানি কার্যাের অনুভ কারণ; বেছেতু সেই নেই পিভানি আক্রারের ব্যালের ক্রেণ্ড কারণ, তারাহের বিভানি কার্যাের উৎপত্তি হর না। স্কুরাং ক্রারণের সন্তান্ত প্রান্তবাদ করিবের না। ক্রম্বান্তবাদি আকারবিশের কারণ নহে। বাহার সন্তাবে বে কার্যাের প্রকৃত কারণ, ভারাবের পিতানি আকারবিশের কারণ নহে। বাহার সন্তাবে বে কার্যাের সন্তাব, ভারাাই সেই কারণ। প্রভানের বিভানি কার্যা বিধানার বাকে, ভারা ভারার কারণ নহে; পিতানি আকারের জ্বান্তবাদি কার্যা বিধানার বাকে, স্কুরাং বৃত্তিকার নিভানি অব্যা কথনই বট-কার্যাের উপাদান-কারণ হইতে পারে না।

মজিকাপিওাদি নতে; সেই বেতুই ঐ প্রকার আপত্তি করিতে পার না। नहासकाल मुखिका ७ युवर्ग श्रम्भित को छ वर्गहात श्रम्भित कावन, किस লিভাকার আকৃতিবিশেষ কারণ নবে; কেন না, পিণাদি আকারের অভাবেদ चा ७ क्रकानि कार्यात मन्छान वक्ष वारक, 'किन मुख्यकानित वहारत नारक मः : भिश्वाकात मा नाकित्व । (क्यव मृत्विका । अवनीति कात्रन-प्रवा बहेर्छ हे ए**ট e क्र**5कालि कार्गात उर्शिव पृष्टे बहेबा बाला। चल ध्वै पृक्तिका প্রভৃতিব পিঙাদি আকারণিবের কথনট ঘট ও ক্লচকাদি কার্বোর কারণ वहेट्ठ भारत ना। भन्नावरत, मुक्तिका । अनुवर्गान खरवात खन्दात कचिन কালেও ঘট ও কুচকালি কার্যোর উৎপত্তি দেখিতে পাওয়া বাছ না : অভএব मुखिका ७ मूर्रनीषिटे शक्रुटनाक कार्त्र-ख्या, किन्न निश्चारि चाक्रांवरिष्ट कावन नरवः। (बरवज् कावनवाज हे कार्यग्राथनामस्तव नवस्त्र नुर्वेठन बोब कार्रात ठिरवाधान (चवाक्रकाव-धावन) कवित्रा चवरनरव चलव रकान्छ कार्या मम्र्राप्त कवित्रा पारक: कार्य, अकहे मगर्व वहकारी मम्र्राप्त करा अक कांतरात च डावितक्रकः दिराववडः, भूर्स्वारभन्न कार्रवात विद्धावान इटलहे বে, কারণেরও তিরোধান বা বিনাশ হইরা বার, তাহাও কথনই বুক্তিসিছ কথা নহে। অতএব পিশুদিরপ কারণাবস্থার মুপগ্রে য কার্ব্যোৎপতি হইতে দেখা यात्र टारा, উৎপত্তির পূর্বকালে কাবণের অসম্ভাবের হেতু হটতে পারে না।

যদি বল, "পিণ্ডাদি আকারবিশেষ পরিত্যাপ করিলে বধন মৃতিকা প্রস্থাত করিণ-দ্রবের অন্তিইই পাকে না, এখন কেবলই মৃত্তিকা প্রস্তৃতির উপাদানকারণত্ব বৃদ্ধিনাপ্তত হলতে পারে না, অর্থাৎ বদি বল, পূর্বতন পিণ্ডাদি আকারের বিনাশেও তৎকারণ মৃত্তিকা প্রস্তৃতির বিনাশ হল্প না, পরস্কৃতির বিনাশ হল্প না, পরস্কৃতির বিনাশ হল্প না, পরস্কৃতির হিলাশ হল্প না, পরস্কৃতির হইয়া থাকে—একথা বৃদ্ধিনার হৃতিকাত পারে না; কারণ, পিণ্ড বা ঘটা ল কার্যাবন্ধার অতিরিক্ত ওপু মৃত্তিকা তকোণাও দেখিতে পার্ডাণ যাল্প না; অতএব মৃত্তিকা-প্রস্তৃতি-কারণাস্থ্যক্তির কথা সম্পূর্ণ আবৌক্তিক।" তাহা হইলে বালব, "না,—তাহাও হইতে পারে না; থেকেতু, মৃত্তিকা প্রস্তৃতি কারণের পিণ্ডাদি অবহা নিরন্ত হইলেও ঘটাদি কার্য্যের উৎপত্তিতে তাহাদের অনুস্তৃতি দেখিতে পার্ডাণ বহিলাছে, সেই কলই ঐক্লপ কারণাস্থ্যক্তি হল্প বালিয়া বোধ হয়, বল্পতা কোণাও কারণাস্থ্যক্তি হল্প না। "তাহা হটলে বলিয়; "না, এ কথাও সক্ত নহে; কারণ, স্কটাদিকার্য্যে স্থম পিণ্ডালি

ক্ষিপত মৃত্তিকা প্রকৃতির ক্ষর্বসমূহেরই প্রত্যক্ষতঃ উপ্লতি চইয়া থাকে, তথ্য ক্ষমানাভাস বা অসতঃ অহমানের সাধায়ো সামূহ দ কর্মা করা ক্ষমই সম্ভেষ্টতে পারে না। [অতএব উক্ত শুক্তবাদী বৌদ্ধত ঠিক নরে।]

[मिनिक विकान नावी (वीर्षात वर्ष वर्षन-]

वित्यबंधः, जञ्चमानवाजरे वयन প্রত্যক্ষ্পক, তখন কাবণের একছ-विकारक विकास करियान (अमानुमान क्यम शास व्हेरक भारत मा ; कांद्रम, छाहा हहेरन कान विवर्धहे लाटक विधान वा विवर्ध पाकिएछ भारत मा।-विक 'हेबा (नहे वत्त' बहेब्रम बाडी जिन्ना नम्छ वचारे क्रिक रह, वर्षाः (व कर्ष উ८भन्न इत्, छाहात भन्नकरणहे व्यावात विमहे बहेबा बाब, क्वन भूकं वजब गाँउ गानु बाकाब, 'हेहा (महे वख' हेठाकित व्यक्तवृद्धि इटेब्रा पाटक बाज, वच्छः भवन्द्रे वच्छी भूनवृद्धे वच बरेट मणूर्य पठडा, श्रूठताः पर्नाव कार्या मृद्धिकावि वृद्धे बरेटमध वृत्थित হইবে বে, পূর্বদৃষ্ট মৃত্তিকা প্রভৃতির অভ্রত্তাত সংস্কার বশত:ই এইএপ मुक्तिकाबित अञ्चल्कि-वृश्वि वरेत्रः वात्रः, तथाः कावनव्रत्य कर्षत्र भृश्वकाव महिल छेहात (कामक्रम मुक्क माहे, हेटार्शि ;" छारा एहे ता वीमरल दहरन (स, "हैबा त्मरे मुखिका, धरे वृद्धी यह शाविमक मुखिका-वृद्धित कम बन्न, ভাষা হইলে সেই প্ৰাৰ্থমক মৃতিকাবৃদ্ধিীকেও তৎপুকাবলী মৃতিকা-বৃদ্ধির क्म विनाट कहेर्र, व्यावाद (भ वृद्धिक ७ ७:शृक्ष छन मृश्किः-वृद्धित क्म বলিয়া খাকার ক'রতে ১টবে; এটরণে বুদ্ধগারার কোণাও বিলাম না ছওয়ার 'অনবন্ধা' দেবে উপ'স্ত কটতে পারে; স্কুতরাং 'ইচা ভারার সমুশ' এই বৃদ্ধিনীরও সভাতা সিদ্ধ চটতে পারে না ৷ অভ্যান কোন বিষয়েই लाहकत विश्व विश्वाम वा महाहा- शहीहित विश्वाद भारत मा। विस्थितः, श्चित्रकत अक्तम कठा ना पार्करण, 'टर' ও 'हेमम्' तृष्टित मचत्र छेन्नम इहेए भारत ना (३६)।

⁽১৬) তাংপর্ব্য — এছলে পৃত্যবাদীর পুনন্দ আপতি এইল বে, মৃত্তিকা প্রচ্চি বে সমন্ত বন্ধকে উপাদান বলা বহু, অব্যে সে সমূহতের প্রংশ বহু, পরে বটালি কার্ব্যের উৎপতি হয়, — অব্যে বীজন্টি বিনট্ট হয় — পাচিয়া যাহ,পরে অক্স্রের উৎপতি বহু; মৃত্রাং,কারণ-বন্ধর আংসই কার্ব্যেৎ-পতির হেতু, কারণ-বন্ধ নহে। এই জগৎও তন্ত্রপ কোনত্রপ সংগ্রার্থ কটতে উৎপত্র হয় নাই। কিন্তু এই পক্ষ খওনের প্র,ক্ষণিকবাদী বৌদ্ধ বলিলেন—জগতের সমন্ত পদার্থ ই ক্ষণিক — প্রাক্তিকণে উৎপত্র হয়, আবার প্রক্ষণেই বিসট্ট ইইয়া বাছ। তবে বে, পূর্বান্তুট বন্ধকে

[नावाबनकारन (बोक्यक बक्त ।]

बिक तम, "कर्तात चारार 'ठः' ७ 'डेक्' वृद्धित मश्य चनुभाव कडेरम् ७ 'ठर्' ও 'ইলং' বুদ্ধিবয়ের সালুপ্তবশতঃ ৪ফ সম্বন্ধ উপপন্ন হটতে পারে", ভালা হটলে विनव, ''मा, जाशांख हरेल भारत म!; कारण, 'छर' छ 'डेम्' वृद्धित भवन्नान বিষয়তা অসুপপন্ন হউবে। আর উক্ত বৃদ্ধিরঃ পরস্পার বিষয়ীভূত না হটলে উक्ত वृद्धिवरत्रव, नामुक्त-शहनक अञ्चलनत्र वहेरव। विव [वास्त्रविद्या विद-बराजत अञ्चनत्र कवित्रा] वन, "अनर-नामृत्यहे जन्तृषि हहेवा बारक, (अबीर गांकु जी नित्क चनर व्हेरनक 'फर' विनया (व कान वय, छांदा चनर नरह ;)" ''না,—ভাহাও বলা চলে না ; কেন না, সাদৃত্তবৃদ্ধির বিষয় (সাদৃত্ত বেষন অস্ৎ, (छयनि 'छर' १ 'डेमम्' दृष्दित् विवत्र अन् करेट 'शादा। িবিজ্ঞানবাদীর সভাবলখনে] সমস্ত বুক্তিটে বিষয়গুলিকে অসং বলিয়া স্বীকার করিতে ইচ্ছা কর, তাহাও পার ন।; কারণ, তাহা হইলে বৃদ্ধিবয়ক বে ৰুদ্ধি, অৰ্থাং যে বৃদ্ধির সাগাযো সামুগুবিষয়ক বুদির সভাতা উপলব্ধি করিতেছ, সেই বৃদ্ধিরও অস্তাতা অনিবাগ্য চলয়। পড়ে। আর যদি [শুরুবাদীর মতারু-সারে] বল—ভাৰাই হউক। ডাগে গুটলে বলিব, ন'—ভাগাৰ হইভে পাৰে না ; कातन, नमल वृद्धि मिना इहेल, चनठाठा-वृद्धि नठा इहेल भारत ना। অভএব, সাদৃশ্বৰশত: যে, ভদ্বৃদ্ধি হটয়া থাকে বলা হট্য়াছে, সে কৰা সকত হর নাই। সত্তএব কার্ব্যোৎপ'ত্তর পূর্বেও কারণের সম্ভাব সিদ্ধ হইল; এবং चिंधवास्त्रिके यथन का:बाद १ चन्न भनार्थद । এकमाज निम वा भद्रिहादक, তখন উৎপত্তির পুলে কার্যোর সম্ভাবত প্রমাণিত হইল।

পরে দর্শন করিলেও, 'ইহা সেই বছা বলিরা যনে হব ভাষার কারণ—পূর্বান্ধ বছর সহিত্র
পরসূত্র বছর সাধৃক্ত-সবজ। বেনন, প্রথম বার বে উবধ দেবন করা হর, বিতীর বার
ভক্ষাতীর উবধ দেবিরা 'ইহা সেই উবধ' বলিরা বনে হয়, 'ইহা সেই বছা' ইত্যাধি
উল্লেখন ঠিক তেবনি উক্ত সাদৃক্তব্লক; স্ত্রাং বৃত্তিকা প্রকৃতি কোন কারণই ঘটাধি
কার্যো অন্তর্ব হয় না; কারেও সংকার্যবালন সিদ্ধ হর না। ভত্তরে আচার্যা বলিভেছেন
বে, পূর্বোক্ত অভেদ-প্রতীতিকে সাম্কুর্লক বলিরা কেবল অন্তর্যানের সংহাবো ক্ষণিকবাদ্
ছাপ্র করিতে পারা যার না। কারণ, অন্তর্যান অপেকান্ত প্রভাগ প্রবাদ বলবান্; বিশেষতঃ,
ক্ষণিকবাদে আজান্ত বধন ক্ষণিক, তথন 'ইহা সেই বছা' বলিয়া প্রবৃত্তি যথর সহিত পরস্থাই
বজর সাম্কুর (ভ্রমনা) করিবে কে গুলাবন, পূর্বাক্রী আলা ও দৃত্তী বছর সংক্র সংক্রই
বিনাই হউরা পিরাছে; অন্তর্যার এই ক্ষণিকবাদ বিচারস্ক্রাহে।

[नश्कावीयात्र श्वामत ।]

এইরপে উৎপত্তির পূর্ব্বে জন্ত-পদার্থের অভিন্য সিদ্ধ হইল। [দি বল—] কি প্রকারে ? [তবে জন,—] বেহেতু, কার্যা মাত্রেই অভিবাজিলিকক ; অর্থাৎ সেই অভিবাজিই এই কার্য্যের লিক (অভিন্য-আপক), [সেই হেতু ইবা সিদ্ধ হইল।] অভিবাজি অর্থ—সাক্ষাৎ সম্বন্ধে বুদ্ধির বিষয় হওয়া, অর্থাৎ প্রথাক্ষতঃ জানের বিষয় হওয়া ; কেন না, জগতে ঘটাদি বে কোনও বল্প, অন্ধকারাদি বারা আরত অবস্থার অভাত বাকে, আবার আলোক প্রভৃতি হারা সেই অন্ধকারাবরণ অপনয়ন করিলে জানের বিষয়ীভূত হয়, কিন্তু কথনও আপনার প্রথাকা (অন্ধকারাবস্থায় সত্তা) তাগি করে না। উৎপত্তির পূর্বেষ্ঠ এই অগ্ন-সম্বন্ধেও আমবা সেইরপ অর্থাই বুকি কেন না, বে ঘটের বাত্তবিক্য সন্থা নাই, প্রবিদ্ধের তাহা কথনই প্রত্যাক্ষ হয় না।

यांच वन, "मा,--- अ कथां अ व'नाट भार मा । कार्यन, एटामार (भरकारा-वाशी देवशांखिक व्यापार्वित) पाउ वचन एकान धनार्धितर का दश्यान्छ। वा व्यक्ताव नाई, छबन निष्ठब्रहे छाहा अछाक हहे:छ ात्त, खरार योग रम त्य त्य, त्यापत (मुद्रकार्यायाची देवलां सक व्यापादन । मट्ड पठान एकान कक नेनार्यक यवन खिक्यान (खन्र) नहि, उपन, दि न्यह मुर्लिक नाम'व्छ त्र'व्हाहि जवर कान প্রতিবন্ধক অন্ধকারাদি কিছুই নাই,সেই সময় থাদিকোদার অবগুই ঘটাদি ওপ্ত-भणार्थत छेभलां क दहेर्ड भारत ? कात्रम, यह उत्तम । विश्वमान " ाहा वहरू ब्लिट, "ना, (म क्वां व वना हिल ना , क्नि ना, आरवरात शहन चाहि : व्यर्ग पर्वाप क्य-प्रमार्थ माख्यक व्यापन क्रे श्राकात ।-- अक श्राकात অভিব্যক্ত বা ঘটানিকার্যাভাবাপর মৃত্তিকা প্রভৃতির সংখে অভকার ও श्राठीय श्रष्ट्रां अन्त श्रकात-कागाकारत चांच्याक दहेवात भूर्स, মুক্তিকা প্রভৃতির অবরবসমূহের পিণ্ডালি কার্যান্তররূপে অবস্থিতি। काइत्वरे छे०लखित शृद्धं घटे। वि कार्या, यद्धः विश्वमान धाकित्व । शिक्षाव चाकाद्व चाव्र क्षाकां के अर्जा के अर्जा के विषय क्य ना कर्य (य, 'नहे', 'छे ९ भन्न', 'ভাব' ও 'অভাব' প্রকৃতি শব্দ ও তদমুষ্যায়া প্রতীতিভেদ ব্রয়া গাকে, তাহার कायन-वाविजाय । किर्त्वाजात्वत्र देशीयमा। व्यवीद वाविजात्वत्र भत्, 'উৎপন্ন'ও ভাৰ' প্রভৃতি বিভ্নমানতাবোধক শব্দের ব্যবহার ও ভদসুরূপ প্রক্রীতি বয়, আবার সেই অবস্থারই যধন তিরোভাব ব্যুত্থন 'নট্ট' ও 'অভাব' अञ्चाक मस्यत् वावहात अवः क्षत्रुवाधी अञोक हत्र, अहे माज विस्मयः"

বদি বল, "অপরাপর আবরণের সঙ্গে পিও ওকপালাদি আবরণের বৈদক্ষণ্য থাকায় উজ্ঞানিকাটী সঙ্গত নহে, অর্থাৎ লোক প্রসিদ্ধ অন্ধলার ও প্রাচীরাদ্ধি আবরণ এবং আবরণীর ঘটাদি পদার্থকৈ বিভিন্নহানবর্ত্তী দেবিতে পাওরা যার, কিছ কপাল (ঘটের অংশ) ও পিঙাদি আবরণকে ত কথনও ঘট ছাড়িরা অক্সঞ্জ থাকিতে দেখা যার না; অভ্যাব পিও ও কণালাদি অবহার ঘট বিশ্বমানই গাকে, কেবল আবৃত্ত থাকায় তাহার উপলব্ধ হয় না,—একথা বলা বৃজ্ঞিযুক্ত হইতে পারে না; কারণ, প্রসিদ্ধ আবরণ অন্ধলারাদির সহিত ইহার ধর্মণত বৈলক্ষণ্য রহিরাছে।" "না, এ কথাও বলা বার না; কেন না, তুর্মান্তিত কল, তুর্ম হারা আবৃত্ত হয়, অবচ সেই আবরক হয় ও আবৃত্ত কল, উহরকেই এক—অভিন্ন ভানবর্তী দেখিতে পাওরা যার।" যদি বল, "কপাল ও মৃতিকাচ্ব প্রভৃতি ঘটাবয়বসমূহ যথন ঘটেরই অক্স্তৃতি,অর্থাৎ ঘট হইতে প্রক্ষণার্থিক নহে, তথন কপাল ও চ্পাদি অংশগুলিও ঘটাবয়ক হইতে পারে না।"
"না, তাহাও নহে। কারণ, বিভক্ত অর্থাৎ মৃত্তিক। হইতে পুরস্ক্রপালাদি অংশগুলি বধন স্বতম্ব জন্ত-প্রথাৎ বিলিয়াই বীকৃত হইয়াছে, তথন উরাদের আবরকরে কোনই বাধা হইতে পারে না।"

যদি বল, "তাহা চইলে কেবল আবরণভাবেই যত্ত করা কর্দ্রবা; অর্থাৎ চুর্ণ কপালানি অবস্থারও ঘটেব অন্তির বাকে কেবল আবরণবর্শতঃ তাহার উপলব্ধি হয় না, অভএব ঘটারা পুরুষের কেবল আবরণভাবেই অর্থাৎ কেবল চুর্ণ কপালানি অবস্থাবিনালেই বত্ত করা আবন্তক হয়, ঘটোৎপাদনের অন্ত আর প্রয়াল করা উচিত নহে; অবচ এক্লপ কোবাও দেখা যায় না; অভএব কার্যালপার্থ বিজ্ঞমানই পাকে, কেবল আরত থাকায় ভাহার উপলব্ধি হয় না, এ কথা বৃক্তিন্যুক্ত নহে।" "না—ইহাও বলিতে পার না; যেহেতু এবিষয়ে কোন নিরম নাই, — কেবল আবরণ বিনাণেই যে, সকল স্থলে ঘটানিকার্যাের অভিবাক্তি হইরা থাকে, এক্লপ কোনও নিয়ম নাই। ঘটানি পদার্থ বর্ধন অক্ষকারান্ধি-সমান্তত থাকে, তথন (ঘটানির অভিবাক্তির কন্ত) প্রদাপাদি প্রজ্ঞালনে লোকের চেটা দেখিতে পাওয়া যায়; [কিন্ত অন্ধকারাান্ধ নাশে কাহারও বন্ধ দেখিতে পাওয়া যায় না।"] যদি বল, "সেই প্রয়ন্থেরও অন্ধকার নিবারণের অন্তই হয়; সেই অন্ধকার বিনম্ভ হইলে ঘট আপনা হইতেই প্রকাশ পাইরা থাকে; কিন্তু [অন্ধকার-নিন্তুত্তি হারা] ঘটে কোনও গুণবিশেষ সমুৎপান্ধিত হয় না।"

শা, এ কথাও বলিতে পার না; কারণ, উপলব্ধিলালে প্রকাশনিশিষ্ট গঠেরই উপলব্ধি ইরা থাকে। প্রদীপ প্রজালিত করিলে পর, গটকে খেরপ প্রদাশ-বান্ দেখিতে পাওয়া বার, তৎপুর্বে কিন্তু কথনই সেরপ দেখিতে পাওয়া বার না। অতএব কেবল বে,অন্ধনার অপনরনের ওগ্রী প্রদাশ প্রজালিত করা হয় । তাহা নহে; তবে কি দু না,—খটের সপ্রকাশক সম্পাধনের জন্ম , কেন না, তৎকালীন ঘট সপ্রকাশ রূপেই উপলব্ধিগাচর হয়য় বালে ক্রিয়া থাকে ক্রাণ্ডার প্রতিবন্ধক প্রাচীরাশি বিনাশে যক্র করা হয়। এইরপে উভয়প্রকারই যথন বাবহার দেখিত পাওয়া বায়, তথন কার্যাভিনাক্ষের নিম্মত লাককে যে, কবল আবরণ্ডলেই প্রয়ন্ধ কারতে হইবে, এরপ নিয়ম হইবে পাবে না।"

"অপিং, কার্যাভিবাজের অন্তর্গ (১৪) বইলেই কার্যা অভিবাদ্ধ বর্ব, ৫৪।ব আভাবে বর না,—এই যে নিংম বাংবারয়া, তাহার সাথকতা সম্পাদনও এপক্ষে অপর বেড়া" আমরা পূর্কেই বলিয়াছি যে, যে কার্যাবয়াটী কার্বে বিগুমান থাকে, তাহাই তাৎকালিক অপবাপর কার্যাৎপত্তির বাধা জন্মায়; এখন যদি ঘটাভিবাজির অন্ত প্রাভিবাজ মুৎপিও বা কপালের (অর্থাৎ ঘটের অংশবরের) বিনালেই যর করা আবন্তক হর, তাহা হটলে বোলা ও মৃত্তিনাচূর্ণাছিও কার্যায়পে জারতে পারে; সেই চুর্ণ প্রস্তৃতি কার্যা ঘারাও ঘট আবৃত্ত থাকার তথনও ঘটোৎপত্তি হইতে পারে না; স্কুতরাং, পুনশ্চ ঘটোৎপত্তির নিমিন্ত চেইার আবন্তক হইরা পড়ে আগএব বলিতে হইবে যে, ঘটাছি কার্যায় অভিবাজি-সম্পাদন করাই যাহাব উদ্দেশ্তা, তাহার পক্ষে নিক্ষেই নিয়ন্ত বা অব্যাতিচারী কারক-ব্যাপারের সার্থিক হা রক্ষা হয়; [অভিবাজির অনুকৃষ ব্যাপারই সার্থক বাপার, আব্রব্দল ভাহার প্রাণ্ডিক ফল মার ৷] অভএব ইৎপণ্ডির পুর্বেও কার্যা বা ওল বন্ধ নিশ্চম্বর্ত সং অর্থাৎ বিশ্বমান, ভাহা কথনই অসৎ নহে।

ষভাত ও অনাগত। ভাষরুং), ইত্যাদি প্রতীতিভেদও সংকার্যাবাদের সভ্যতাসাধক অপর হেতু। বর্ত্রমান ঘটবিষয়ের ঘটাকার জ্ঞান বেধন বিষয়ধীন হর না, ভেগনি 'শতাত (বিনষ্ট , ঘট, ও অনাগত (ভবিশ্বং) ঘট' ইত্যাকার জ্ঞান ও নির্কিষয়ক হর না, অর্থাং জ্ঞানের বিষয়ীভূত ঘট নাং, অর্থচ ঘটজান হইভেছে, এরূপ হইভে পারে না। ভবিশ্বং বিষয়াভিলাবে লোক-প্রস্থৃতিও আর একটি কারণ; কেন না, বাচা অসং—অভিশ্বনীন, ভাষুণ বিষয় লাভের অন্ত লোকপ্রবৃত্তি কোথাও দেখা যায় না। বিশেষতঃ, ত্রিকালজ্ঞ যোগীদিগের অতাত ও অনাগত বিষয়ে সমুখণর জ্ঞান ত কথনও মিণ্যা নাছে: স্তরাং, যোগিজানের সভাতা হইতেও সংকার্যাদ সিদ্ধ হইতেছে। আরও এক করা, ভবিহাং ঘট বিষয়ে ঈররের যে জান, সে জান প্রত্যক্ষায়ক হইলেও মিথ্যা হর্মা যাইতে পারে। আর ঈররের প্রত্যক্ষকে উপচারিকও বলিতে পারা যায় না, অর্থাং প্রকৃতপক্ষে ভবিহাং বিষয়ে ঈররেরও প্রত্যক্ষ জ্ঞান হর না, কেবল তাগার জ্ঞানগোরর জ্ঞাপনার্থ ই ইরপ বলা হইয়া ও কে বাত্র, এরপ বলাও সক্ষত হয় না; থেতেত্ব, আমরঃ উৎপত্তির পূর্বেও ঘটানি-সন্তাবে অনুনান প্রমাণ প্রদর্শন করিয়া'ছ।

বিশেষতঃ, বিপ্রতিষিদ্ধ অর্থাৎ বৃক্তিবিক্তন বলিয়াও অসংকার্যায় উপেক্ষণীয়। কৃত্যকার প্রভৃতি কর্ত্বর্গ, মটোৎপাদনের অন্ত চেটা করিবার সময়, যদি প্রমাণ বারা অবধারিত হয় বে অবক্রই ঘট উৎপন্ন হইবে, তাহা হইলেই তবিষয়ে প্রবৃত্ত হয়; অতএব 'ভবিয়তি' (হইবে) বলিয়া, ভবিন্তৎ-কালের সহিত বে মটের সম্বন্ধ উল্লেখ করা হইতেছে, ঠিক সেই ভবিন্তং-কালেই যে, সেই ঘটকেই অসৎ —অবিশ্বমান বল', ইহা ত অত্যন্ত বিক্রন্ধ কথা হয়। [তোমার মতে] 'ভাবীঘটটা অসৎ,' এ কথার মথা চইতেছে—'ঘট হইবে না।' বস্ততঃ, বর্তমান সমধ্যে এই ঘটটা বিশ্বমান নাই বলাও যেরণ, ইহাও ঠিক তত্রণ (১)।

আর বদি উৎপত্তির প্রস্থথে ঘটকে অসৎ বলিতে ইছে। কর, অর্থাৎ কুমুকার প্রস্তৃতি ঘটের জন্ম প্রবৃত্ত হইলে পর, সেধানে কুমুকার প্রস্তৃতি ষেত্রপ স্ব্যাপাররণে বর্ত্তথান থাকে, ঠিক সেইরণে অন্ত-বন্ধ বর্ত্তথান না বাকাই ধরি তোমার 'অস্থ'শব্দের অর্থ হয়, ভাহা হইলে ত আমাদের মতের সহিত কিছুমাএই বিরোধ হইতেছে না। কারণ ?—বেহেতু খার 'ভ'বয়ন্তা' রূপে তথনও ঘট বর্ত্তথানই থাকে; কারণ, পিশু ও কপালের (ঘটাবর্বের) যে বর্ত্তথানতা.

⁽১) ভাৎপথ্য—পূর্কেই বলা হইরাছে বে, বাহা অসং—বজ্ঞাপুত্রের ভাল্ন অভিজ-বিহান, কমিনু কালেও কোন রক্ষেত্র ভালার উৎপত্তি হয় নাও হইতে পারে না। ভাবী ঘটও বলি অভিজ্ঞবিহানই হয়, ভালা হইলে, ভালাকেও আর 'ভবিষ্যতি' (সভাবান্ হইলে) বলিয়া নির্ফেশ করা বাইতে পারে না। অভঞ্জ বর্ডবাবে উপস্থিত ঘটকে 'ন বর্ততে' (নাই) বলাও বেষন, 'ভাষী—অসং ঘট উৎপন্ন হইবে' বলাও টিক ভেষনি প্রবাধবিক্রছ কথা হয়; স্কুভরাং অসংকার্যবাদ্ধী অবোজিক—উপোক্ষার বোরা।

ভাষা কথনই ঘটের বর্ত্তমানতা হইতে পারে না, এবং তত্ত্যের বে ভবিস্থানা, হাষাও ঘটের ভবিস্থানা হইতে পারে না। স্তরাং, কুল্পনার প্রভৃতির ব্যাপার বা চেষ্টা বর্ত্তমান সংস্কৃত্ত যে, 'উৎপঞ্জির পূর্ব্বে ঘট অসং' বলা হর, ভাষা ত কোন মতেই বিরুদ্ধ হটতেছে না। ঘটের ভবিশ্বভার বাগা কার্য্য বা কল (বর্ত্তমানতা-লাভ), ভাষার বলি নিবেণ করা হয়, ভাষা হইলেই বিরোধ উপস্থিত হইতে পারে; কিছু কেইই ত ভাষার ভাষী সন্তাবের প্রভিবেধ করিতেছে না: আর ক্রিয়াবান্ বা উৎপাদনাদি ব্যাপান বিশিষ্ট নিবিল বল্পর বর্ত্তমানতা বা ভবিশ্বতা যে, একই হইবে, ভাষাও নহে; ব্রুত্তরাং বিভিন্নপ্রকার অভিন্য বীকারেও সংকার্যাবাদার অভিন্য] চতুর্বির অভাবের মধ্যে, (১) ঘটের যে ইতরেতরাভাব বা ভেল, ভাষা ঘট হইতে পূর্বক্ দ্বা পিরাছে; বেমন—'ঘটাভাব বা ঘটের অন্ত' বলিলে, পটাদি বল্পই বুঝায়, কিল্প নিশ্বই ভাষা ঘটস্কলে নহে; অধিকঞ্জ বি পট বল্পটী ঘটালাবন্ত্রন হয়

⁽১) जारमधा -- समरकाणारामी निरादितकत मांड सकान क्लार्सिश, अवर स्रवाधि अञ्चलित ল্লার অভ্যাবন প্রার্থরোশীর মধ্যে পরিস্থিত। প্রথমতঃ, উরোরা অভাবকে ভুট ভাগে বিভক্ করিয়াছেন - '১) ইভারেভরাভাব, ও (০) সাম্প্রভাব : ইভারেভর্ভাব, অস্ত্রোপ্রভাব ও ভেদ, এই ভিনই একার্থবৈধক পর্যায় শল । পতেক অভাবের লক্ষণ্য বঢ় জটিল। এইএক मानाम्बन्धादव क्रिक्त डेशांस्थः चक्रप्रेश तृष्टे वात (5)हे कृतिव मध्य । हेड (ब्रह्माणाव - এक ৰুম্ম স্তিষ্ট ৰে অন্ত বন্ধৰ ডেন – ট্ৰা ক চকটা পাৰ্থকোৱট মত : কিন্তু ভাট বলিয়া পাৰ্থকা e (क्रम शक महि) द्वमम -- परेपमक: -- परे: , व्यर्थ पर रहेएल परे वव्यति विज्ञ । विवास परे इक्रेट्ड श्टेंब एक बाब दुवार्ट्डाइ । वना व्यावक्रक (म. १वारन छावाकात्र महिन्। महेबारकम त्य, देनश्वित्कता गाउँद तकमाक गाउँमतम व तराहे त्यम मीकाद कविया थात्कम, কিছ প্রকৃতপুক্ষে উচ্চারঃ অভাবকে কোনও বস্তুর পরপ বলিয়া প্রকার করেন না : शब्द शहेबिट पर्वेशिव परावित्र विवास विवास विवास । त्या शास के के , वर्षात द्या कथा प्रवादनाहा হলে করি। বিতীয় সংবর্গাভাবটি তিল প্রকার; ন/১) প্রাণভাব, (২) প্রাণ ও (২) অভান্তা-ভাব। ভদ্মব্যে উৎপত্তির পূর্মকানীন বে, বস্তর অভাব, ভাবা প্রাপ্তাব, বেবন---ब्राहीश्वित वृद्ध ग्रहित महाव। छेश्वत वस्तत विनात (व, महाव, छावा श्राःताहाव ; (देवन बहेनात्नेत्र १४४%) चकार। चात देवकानिक (१, चकान, काता चकानाकार: বেষৰ-'এগাৰে ঘট নাই' বলিলে ঘটের বে, অভাব বুৱা বাল, ভাতাই অভায়াভাব: কিন্তু বে বসুর কলিন্ কালেও অভিয় নাই, তাহার অভাবও বীকার কর। হব না। বেবন---'ৰ্জ্যাপুত্ৰে অভাৰ, আকাশ-ভূসুৰের অভাৰ' ইভাগি।

विनन्ना (व, ज्ञांवाक्षक ज्ञवीर विकृष्ट नर्दर, छादा नर्दर; छर कि १ मा, छादा छात्रप्रक्र वर्षः। चर्छन्न अहे हे छर इछ इछ इच्छ वर्षः, ध्वान्त अवर ज्ञांवाहात्व (छन्न वर्षे हे हे छ चछ वर्ष्व हे हे दि । वर्षेन वर्षे छिन्न वर्षे हे हे दि । चान्न वर्षे हे हे दि । चान्न अहे निम्न ज्ञांव अहे निम्न ज्ञांव वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे । चान्न छन्न हे छर इप्ता छात्र वर्षे निम्न वर्षे छात्र इप्ता । वर्षे हे छर इप्ता छात्र वर्षे । चान्न अन्न वर्षे वर्षे

শকারের, বটের বাহা প্রকৃত ক্ষরণ, তাহাকেই যদি ঘটের প্রাপ্তাব বদ, তাহা হটলে আর 'ঘটের' বলা সকত হর না; [কারণ, তখন ত ঘটের অভিছেই নাট; ক্মৃতরাং তাহার সহিত সক্ষ-নির্দেশ হইতে পারে না]। আর বদি বল, 'লিলাপ্ত্রের শরীর' [লিলাপ্ত্র অর্থ—নোড়া,] ইত্যাদি ছলে বেরপ অতেদেও তেদ কল্পনা করিলা ব্যবহার করা হইলা থাকে, তদ্রপ 'ঘটের প্রাপ্তাব'-ছলেও ভেদ কল্পনা করিলা ঐরপ ব্যবহার করা হর; তাহা হইলেও বুঝিতে হইবে যে, কল্পত, (ক্মৃতরাং অবস্ত) অতাবেরই 'ঘট' শক্ষ ঘারা নির্দেশ করা হইতেছে মার, কিছু ঘটের অ্যুপ-স্তাকেই নির্দেশ করা হইতেছে না। আর যদি বল, ঘটের অভাব ঘট হইতে সম্পূর্ণ পৃথক্ পদার্থ, তাহা হইলে বলির,—এ কথারও উত্তর প্রকৃত্ব প্রকৃত হটলাছে (১)।

আরও এক কথা, উৎপত্তির পূর্বে জন্তপদার্থনাত্রই বধন শণ-শৃলের ভার আভাবায়ক—অসং, এবং সম্বন্ধ এই বধন উভয়নিট বা উভয়াপেক্ষিত, তথন ভাবী ঘটে সন্তাসম্বন্ধই (উৎপত্তিই) উপপন্ন হর না। কেন না, তৎকালে বধন ঘটের অভিষ্ঠ নাই, তথন সন্তার সহিত সম্বন্ধ হইবে কাহার ? আর বনি বল বে, অর্তসিদ্ধ পদার্থের (অর্থাং যে সমন্ত পদার্থ সংযোগকত নহে, পরস্ক সমবারসম্বন্ধত, সে সমন্ত পদার্থের) সম্বন্ধ ইহা দোবাবহ হয় না; ভাহা হইলে বলিব; ন; ভাহাও হইতে পারে না; কারণ, সং ও অসতের অযুত্তসদ্বন্ধই হইতে

^{(&}gt;) ভাংপথ্য—অসংকাধাবাৰে ঘটের প্রাপ্তাবকে ঘট ভইতে পৃথক পদার্থ বলিলেও ভাগা অসং—অবস্ত হইল না, প্রস্ত প্রকাষান্তবে কারণকরপে সভ্য বলিরাই বীকার করিতে ইইল। স্ভরাং এ সভেও কলভ: সংকার্যাবাই সিম্ভ ইইভেছে।

4

পাত্রে না (২)। বৃত্তসিকতা বা অবৃত্তসিকতা কুইটি ভারপদার্থেরই ক্ইভে পারে, কিন্তু তাব ও অভাবের, অথবা কুইটা অভাবের হয় না। অভ এব প্রবাণিত ক্টডেক্তে বে, উৎপত্তির পূর্বেও জন্য গদার্থ সং— বিভয়ামই বাজে।

এই লগৎ কিন্তুপ মৃত্যুকৰ্ত্বক লায়ত ছিল ? এই লাকাজ্যার [ক্রতি বিলিতে-ছেন—"অপনাররা"। অপনারা অর্থ—অপনের (ভোজনের) ইন্ধা, তাহাই মৃত্যুর লকণ বা বন্ধা। তাহুপ নকণা বিত মৃত্যুর লী অপনারাহারা [আরুত ছিল]। তাল, অপনারাই মৃত্যু। ক প্রকারে ? তছ্তরে [ক্রতি] বলিতেছেন—অপনারাই প্রসা। ক্রতির "হি" পদ্ধী অপনারার মৃত্যুরণে প্রসিদ্ধি আপন করিতেছে। কেন না, বে বাজ্তি ভোজন করিতে ইন্ধা করে—ক্র্যার্ড হর,সে তাহার পরেই অপর প্রাণিস্থাকে" বধ করিয়া থাকে : সেইন্সেই মৃত্যুর লক্ষণ—অপনারা ; এই অভিপ্রারই "নদ্ধারা হি" এই ক্রতি প্রকাশ করিতেছেন। বুদ্ধান্তার (বুদ্ধি-বর্ণণে প্রভিবিত্ত চিলায়ার) ধর্ম অপনারা ; এই আরণে বুদ্ধি-স্বান্তিত প্রতিবিত্তি চৈতক্তররপ হিরণাগর্ভকে এখানে মৃত্যু বদা হইতেছে। সেই ছিরণাগর্ভকারী মৃত্যু হারা এই কাব্য-জগৎ স্যার্ত ছিল; পিন্তাব্যু সৃদ্ধিকা হারা বেরণ তৎকার্য্য ঘট স্যার্ত থাকে, ঠিক সেইরপ।

"তৎ ধনঃ অকুক্ত"—'তৎ'-পদে মনের নির্দেশ হইছাছে, 'তৎ'-পদ্টি মনের বিশেষণ। সেই মৃহা হিরলাগড়) গলামাণ কার্যা স্টের আভগাবে দেই কার্যাপর্যালোচন-সমর্থ মনের অর্থাং স্কল্লবিকলাদিলকণা, যত মনঃশলবাচ্য আশুঃকরণের স্টে করিয়াভিলেন। কি অভিপ্রায়ে মনের স্টে করিয়াছিলেন, তাহা বলিতেছেন —আঃম আয়ুবী—আয়ুবান্ হইণ, অর্থাং আ।ম এই আয়ুবান্ মুম্বাচ্য মনঃ ছারা মনবী হইণ, এই অভিপ্রায়ে [স্টে করিয়াছিলেন]।

⁽২) তাংশ্বা—'বৃত্যিত্ব' ও 'অবৃত্যিত্ব' কথার অব এইরপ—বে সমন্ত পদার্থ প্রক্ষার স্বত্ত হইবার পূর্বেও দিও বা বর্ত্তবাল থাকে, সে সমন্ত পদার্থকে বলে 'বৃত্যিত্ব,' আর বে সমন্ত পদার্থ স্বত্ত-বিশেষ লাভের পূর্বের অগিত থাকে—বিভ্যমান থাকে বা, সে সমন্ত পদার্থকে বলে 'অবৃত্যিত্ব' : বৃত্যিত্বের স্বত্ত—সংবাগ, আর অবৃত্যিত্বের স্বত্ত—সমবার ! উদাহরণ—বেবন একটী রালি; 'রালি' বলিলেই কতকভলি বস্তুর এক এ সংবাগ মাত্র বুরার, কিন্তু সেই বন্তপুলি ই সংবাগের পূর্বেও দিও ছিল; অত এব ই রালিটা বৃত্যিত্ব হরণ । আর ছুইটা কপালের (বটাংলের) সমবারে বে বট উৎপন্ন হয়, তাকা অমৃত্যিত্ব; কারণ, এইরপ সমবার-স্বত্তের পূর্বের ব্যক্তর অভিত্তই ছিল না; সমবার-স্বত্তর প্রিত্যালিত বৃত্তির অভিত্তই ছিল না; সমবার-স্বত্তর প্রিত্তালিত বৃত্তির বিভ্যালিত।

मिरे दोबांगिक विश्वनाभर्क पक्षिकाक मामद नावादा नुमन्द (पक्षकदन-विभिष्ठे : रहेबा मर्छना करूछ, मर्थार 'मावि कुछार्व रहेबाहि बनिवा माननाटकहे পূলা করত ভত্পর্ক ব্যবহার করিয়াছিলেন। প্রলাপতি আলুপুলা করিতেছেন, এখন স্থরে তাঁহা হইতে পুৰাও খবকুত রসায়ক বল প্রায়্ত্ত रहेग। चना अंडिएड नक्ष्मृत्वारनवित क्या वर्षिड याकान, अवर मृहिन अवानीत्छ विकत्न वा अकात्रत्वरवाच नक्षत्र ना वाकात, अवादन विनर्छ वरेरव (व, **चा**का चाकान, वाबू, एडका,—बहे कृष्ठवारवत छे०नकि, छाहाब भव बरनव উৎপত্তি श्रेष्ठ'रह (>)। (सरहरू मुहाद्वणी क्षेत्रांभिक सरन कतिश्राहित्तन (व. शृक्ष) कतिएठ कतिएठ व्यावात . डेस्प्रत 'क'-क्न बहेबार्छ, (महे (बछूडे चरकद-चन्रत्यवस्थानरवानी चवित 'वर्कच' चर्वाद অৰ্ক সংখ্যার হেতু। অধিব 'অৰ্ক' নামের বৃহপত্তি বা ৰোগাৰ্থ এইরণ— (बरहरू बर्फन)- यूबकत भूमा ७ बरनत मंदर मचद बाहर, (मरे रहरूरे बहित खनाकृषाया नाम वहेटठर्छ—'वर्क' (२'। द लाक व्यव वर्षाक धकाव वर्कप अन्तर हर, (नहे अर्कद्विष् लाक्ति केस्प्रित निकारे 'क' नम्मा रह । अवास 'क' व्यर्थ-पूर्व वा कन केन्द्रहे वृद्धा बाहेटन शारव ; कादन, 'क' नाबक्रि উ अदब्र इ कुना। 'श' ७ 'रेब' भम कृहेग्रेय चर्च चवरावन--- निक्त कवा 10031

আপে বা অক্সেদ্ যদংপাত শর আদাতং, তং দমহন্ত । দা পৃথিব্যভবং তথামপ্রান্যং, তথ্য প্রান্তথ্য তেজারদো নিরবর্ত্ত গ্রিঃ ॥ ৪ ॥ ২ ॥

স্কলাথ: — শাণ: (প্রোক্তানি পর্কনাপত্তানি প্রদানি) বৈ অর্ক: (পর্কনংক্তকালিহেতুদাং পর্ক:; তৎ (তত্তা) বং (বং প্রণাং পরঃ (হবিবহু বঙভাব:) বাবাং, তৎ (সঃ পরঃ) সমহন্তত (তেকঃসম্বদ্ধাং কঠিনতাং প্রাণ), সা (তংকঠিনতাপরং পরঃ) পূর্বেণ ক্ষতবং। তত্তাম্ (পূর্বিণাম্ উৎপাদিভারাম্,

⁽১) তাংপ্যা—তৈত্তিরীর উপনিবদে "তথাবা এতথাবারৰ আকাশ: সমূত:, আকাশাছ বায়ু:, বারোরগ্নি:, অগ্নেরান:, অস্তা: পৃথিবী" এই ফ্রান্ডিবাক্যে আকাশাদি পঞ্জেরই উৎপত্তির কথা আছে; প্রতরা: এখানে এখনেই ভলস্কটর কথা থাকিলেও ইবার পূর্বে আকাশ, বারু ও তেবের উৎপত্তির কথা থারিয়া লইতে হইবে।

⁽২) ভাৎপ্য-'অর্ক' শ্বের ব্যুৎপত্তি এইরূপ-সর্ক্রধার 'অর্' আর জনবাচক 'ক' এই উত্তের সন্মিলনে 'অর্+'জ'-'অর্ক' শব্দ নিশার হুইল।

পৃথিবী স্ট্যানভাং) অপ্রাধাৎ (প্রবর্জঃ অভবং) [সং প্রজাপভিবিভি শেষঃ]। প্রাধানত ভগুত (তাপবৃক্তত উন্নবৃক্তত) তত্ত (প্রজাপতেঃ) ভেলোরসঃ (রসঃ—সাধঃ, সারভূতং তেল এব) অধিঃ (প্রজাণান্তর্গতেঃ বিরাট্ পুরুষঃ, "স বৈ শ্রীরী প্রথবঃ স বৈ পুরুষ উচ্যাভে" ইতি প্রত্যবরাং) নির্বর্গত (জাতঃ)।

শুলালুবাদে। অর্চনার অঙ্গত যে জল স্থা হইল, ভাহাই আর্ক, [কারণ, উহাই অর্কসংজ্ঞক অগ্নিব হেছু স্বরূপ]। ভাহাতে বে, জলীয় লর অর্থাৎ দধির স্থায় ঘনীভাগ ছিল, ভাহাই পৃথিবীরূপে পরিণত হইল। সংহতভাব বা কঠিনতা প্রাপ্ত হইল: ভাহাই পৃথিবীরূপে পরিণত হইল। পৃথিবী-স্প্তিতে প্রজাপতির পরিশ্রম গোধ হইল, পরিশ্রমের ফলে প্রজাপতির শরীরে সন্তাপ বা উন্ধ উপস্থিত হইড়াছিল; সেই সন্তথ্য শরীর হইতে তেজের সারভূত অগ্নি প্রাকৃত হইল। ভাষাকার এই অগ্নিকে প্রথমশরীরধারী ব্রহ্মাণ্ডান্তর্গত বিরাট্ পুরুষ বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন] ॥ ৪ ॥ ২ ॥

শক্তির ভাশ্বি । আপে: বা একঃ। কং পুনর সৌলকঃ ? ইভি; উচাতে—আপো বা বা অর্চনাসভূতাং তা এবাকঃ, অধ্যরক্সা হেতুরাৎ, অসু চারিঃ প্রতিষ্ঠিত ইবং; ন পুনং শালাদেবাক প্রাং, তাসামপ্রকরণাৎ অধ্যক্ত প্রকরণম্। বক্ষাতি চ "লরম্বিরকঃ" ইতি। তৎ তত্র মং অপাং শর ইব শরো লয় ইব মন্তব্যু আসাৎ, তৎ সমহক্তত সজ্যাতমাপদ্মত তেজসা বালামঃপচানানম্; লিলবাতারেন বা, বোহপাং শরঃ, স সমহক্ততি। সা পৃথিবাতবৎ, স সজ্যাতো বেলং পৃথিবা,সা অভবৎ। তাভাঃ এতঃ অনুমতিনির্ভিমিতার্থঃ। তভাং পৃথিয়ামুংপালিভারাং স মৃত্যুঃ প্রলাপতিঃ অলামাৎ প্রমর্ক্ষা বতুব। সর্ক্ষো হি লোকঃ কার্যাং ক্ষা প্রামাতি; প্রলাপতেক তল্মহৎ কার্যাম্, বৎ পৃথিবীসর্বাঃ। কিং তস্য প্রারস্থা ইতি; উচ্যতে—তস্য প্রারস্থ তর্ম্ব বিম্বা তেলোরসঃ, তেল এব রসঃ, তেলোরসঃ, রসঃ—সারো, নিববর্ত্ত প্রলাপতিশরীরাৎ নিজ্ঞান্ত ইত্যর্থঃ। কোহসো নিজ্ঞান্তঃ গুলারঃ গোহং স্যাত্র্যিরাট্ প্রলাপতিঃ প্রথমলঃ কার্যাকরণ্যতবাত্রান্ ভাতঃ; "স বৈ শরারী প্রথমঃ" ইভি সর্বাৎ ॥ ৪ ॥ ২ ॥

টীকা। অপানর্বস্তরপারারেরর্বনিতি শহতে—ক: পুসরিন্তি। প্রকরণ-বামিতা তাসামর্বনৌপ্রায়িকণ্, ইত্যুত্তরণার-উচ্যুক্ত ইক্তি। তাতু অভাইনপ্রয়য়তং সংবৃদ্ধতি শ্রুতিবস্থানৰ উপলানে হেম্ভরণাধ-ক্রাপ্যু চেডি। মুগাবর্ক্যনগাং বারয়ভি—ন প্রাক্তি। বসু 'ক্রভিনিজবাকা-একরণহানস্বাবানাং স্বরারে পারগের্বনার্ববি প্রকর্থাং' ইভিজায়াৎ প্রকরণাং 'লাণো বা লকঃ' ইভি বাকাং বর্গবিজ্ঞান্ত বাকাসহঞ্জং প্রকরণবের কেবলবায়াই ব্রব্ধিজ্ঞাপরবারাই—অক্ষ্যান্তি স্তেতি। ভূতাভ্রমহিভাবপাস্ কারণভূতাস্থ পূর্ববীহারা পার্বিবাহরিঃ প্রভিতি ইত্যুক্তর্, ইবারীং পূর্বিসর্গতে ভাজাে। বর্গরতি—তাদিত্যাদিনা । অপাস্থ ভূতাভ্রমহিভাসংগ্রাস্থ সভীবিভি সপ্তরার্থঃ। শর ইব শর ইত্যুক্তরের ব্যাচটে—দেশ্র ইত্রেক্তি। সংবাজে সহকারিকারণবাহ—তেজ্যুক্তি। বজনিতি পরে বপুংসকরের ক্রতে, কবং ভরোঃ শর-শব্দের কারণভোজ্যুক্তরাতিন। পূর্বাক্তের্বাহ্রমহাতিনরতি—লোক্তরাত্রাহ্রম্বাভিন প্রকর্তারার্থা বা-শব্দঃ। বাত্যরেনার্যাহরেরাভিনরতি—যোক্তরাভিন হিলাপ্রপতিবিদ্যাহ—তাজ্যুক্তরার্মিত। ত্রম্বাক্তরাভ্রম্বাভিন ক্রিভিন বান্তরাই ক্রিভিন ক্রিভিন ক্রিভিন ক্রিভিন ক্রিভিন কর্তাত্রিকারিকে বান্তরাই—ক্রিভিন বান্তরাই—জাকিবার্থিং শ্রুরভি—লোকপ্রত্রাভিন ভিন্ত ক্রেল্ডানিনা। আরিন্রার্থিং শ্রুরভি—লোকপ্রত্রাভিন ভাল প্রব্রাহিকে বান্তরাই—লাক্তিন বান্তরাই—জাকিবার্থিং শ্রুরভি—লোকপ্রত্রাভিন ভাল প্রবর্ধারীরের বান্তরাই—লাক্তিভালিনা হাতিন। ইবারীর বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিতার ক্রিভালিন বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই—জাকিতার ক্রিভালিকারিকার বান্তরাই—জাকিতার ক্রিভালিকারিকার বান্তরাই—জাকিতার ক্রিভালিকারিকার বান্তরাই—জাকিবারিকার বান্তরাই করিকার বান্তরাই ক্রিকার বান্তরাই ক্রিকার বান্তরাই করিকার বান্তরাই ক্রিকার বান্তরাই ক্রিকার বান্তরাই করিকার বান্তরাই ক্রিকার বান

ভাষ্যানুবাদ।—"बानः दे वर्षः" हेगावि। এই वर्ष नवार्षी (क १ वन। इरे(ठ:इ—चन् (चन), वादा चर्छनात चनत्रात थाइक् छ इरेत्राहिन, তাহাই এখানে অগ্নিরণ অর্কের হেতু বলিয়া, এবং অলের বধ্যে অগ্নির অবস্থান इत्र बनिश्रं ७ वर्ष-भएवाठा ; किन्त नाकार नवर्षा वन वर्ष-भएवाठा नरह । (कन मा, हेरा करमत अकतन वा अखाव नरह, व्यक्तिक व्यक्तिक अकतन; [चूछदाः, अधान चश्राकदिन कन चर्कद्राण गृशेष्ठ व्हेट्छ भारत ना।] æ'छ निर्व• वनिरवन—'uই बविरे बर्क' देखि। छाराछ रव बनीव बरवद স্তায় শর, অর্থাৎ দণির মতের মত খনীভূত ভাব ছিল. ত'হাই ভিতরে ও वाहित्त (जनःमारवाम वनठः भक्ता धार्व वहेबा [त्वत्र ने छेखाभक्त भारकव क्ल अबन्छ मृद्धिका अकृष्टिक रेडेकामित्राम भविष्य कवा हरेडा बारक, क्रिक (महेक्रम भाक मांछ कविता] मारपाछक्रम खाद्य इहेम, चर्थार कक्रिम इहेम। [अवाद्म 'मव' नव्यति पूरानवः, ভारात विरायन 'वर' भवति क्रोवनिव वंग्का व्यक् bo इद्र ; এইवन्न वनिट्ठाइन—] चर्षवा, निक्यदिवर्धन कवित्रा चर्षार क्रीव-निक 'यर' नक्तीरक पू:निक कतिता ('यर'रक 'यः' कतिता) वर्ष कतिए हहेरव, चर्वार [(नहे करन | दि चर्वार करनद मद-चनीकार, ठाहाहे मरवाक श्रीक्ष बरेबाहिन; अवः छादाई পृथियो बरेबाहिन-त्महे मध्याकरे-अहे त्व पृथियौ षुढे बरेएक्ट, त्मरे शृषियोद्धत्म शविषक बरेबाह्म । चक्रियात्र धरे त्य, त्मरे

খনীকৃত খন হইতে 'খাও' (ব্রখাও) উংপন্ন ছইন (১)। পুলিবী উংপন্ন ছইনে পান, সেই মৃত্যন্ত্রপী প্রজাপতি পরিপ্রান্ত হইনাছিলেন। সমত লোকই কার্যা খাবারুক হব, প্রজাপতিরও ইবা আতি মহথ কার্যা, বে হেতু, ইবা পুলিবী স্থাই করা; [স্ক্তরাং, তাহারও পরিপ্রম হওণা সন্তব।] প্রজাপতির সেই পরি-শ্রেরের কন কি হইন, তাহা বনিতেছেন—প্রজাপতি প্রান্ত—তাপস্কুক্ত আহি ক্রান্ত হইলে পর, তাহার শরীর ছইতে তেলোরস আর্থাথ ডেজঃরপ রস, রস আর্থনার (প্রের্ছ অংশ), আর্থাথ সার্ভ্রত তেলেই নির্মান্ত হইন। এই মিল্রান্ত সার পরার্থনী কে ? না, । মান্ত্র; আর্থাথ আতের অভান্তবন্থ বিরাট্ সংজ্ঞক প্রসমন্ত ক্রেরেকাসম্পন্ন প্রজাপতি করিলেন; কাবন, স্বৃত্তিত আহে,—'তিনিই প্রশম্ব শরীরী—ব্যেকেরা দিসম্পন্ন পুরুব' ইত্যান্তি ॥ ৪ ৪ ২ ৪

স ত্রেধাস্থানং ব্যকুকভাদিভাং তৃতীয়ং বায়ু তৃতীয়ং ন এব প্রাণজ্ঞো বিহিতঃ, তম্ম প্রাচী দিক্ শিরোহ্নো চা.না চেন্মো। অথাতা প্রতীচী দিক্ পুচ্ছমদো চানো চ দক্থো, দক্ষিণা চোদীচা চ পার্ষে, ভৌঃ পৃষ্ঠমন্তরিকমুদর্মিয়মুরঃ; স এয়েংপদু প্রতিষ্ঠিতে৷ যত্র ক চৈতি, তদেব প্রতিষ্ঠিত্যেবং বিদ্যান্য ৫॥ ৩॥

সকলার্থ:—স: (প্রথমণ: প্রথমি) আন্থান: তেখা (তি-প্রকারেণ)—আদিতা: (স্থা:) সূতীর: (অগ্রিবায় পেকর। তেখাবা: প্রবং)

⁽১) তাৎপর্যা—অতিতে সাধারণভাবে জলীব ঘনীতাবের সংঘাতঞাপ্তির করা থাকিলেও ভাষাকার স্থাতিশান্তের সহিত সামগ্রক রকার জন্ত সেই 'সংঘাত' পজের 'অঙ্ডে' অর্থ প্রহণ করিলেন। মনুসংহিতার আঙে—"অপ এব সম্প্রানেট ভাসু বীজবপাস্তর্ম । ভালতমন্তর্মান্তর সংগ্রেম সংশ্রেম অত্যু ভালি । অর্থং প্রজাপতি প্রথমে তাল স্তি করিয়া তাহংতে স্তির মন্ত্রুল কর্মবীজ স্বিবেশিও ভারেণ, ভাষার পর সেই জনের বাবে একটা ল্যোতির্মর হিরম্মর অও সম্পুর্ল হয়, ভাষার মধ্য হইতে স্প্রত্যোকশিতামহ ব্রক্ষা আবিস্তৃতি হন। স্প্রপ্রথম বেহাক্রিয়াদি অবর্থসম্পুর প্রায় উল্লেখ্য ইয়াছিল, তৎপূর্বেম আর কালার উল্লেশ পুল পরীর ছিল না; এই জন্ত পূর্মত বিশেষ করিয়া বলিরাছেল বে, 'স বৈ শ্রীরী প্রথম স বৈ পুরুষ উল্লেভ । আদিকর্তা স্মৃত্যানার ক্রোমে স্বর্গতে কর্ম প্রথম পরীরী পুরুষ, এবং তিনিই স্বর্গত্তের আবিস্কৃতি করা স্বর্গতের করে স্বর্গতের করে স্বর্গতের করে স্বর্গতের করে স্বর্গতের করে প্রথম স্বর্গতিশ্রক প্রথম স্বিমার করে ভাষাকার ক্রিয় প্রথম বিশ্বার করে ভাষাকার ক্রিয় প্রথম বিশ্বার করে ভাষাকার ক্রিয় প্রথম বর্গতিশ্রক প্রথম স্বিরার করে ভাষাকার ক্রিয় পরিষ্ঠা করে প্রথম ব্যারী বিরাটপুরুষ প্রবণ্ধ করিয়াছেল।

তিখা বাহুং তৃতীয়ং (শ্বয়াধিত্যাপেশরা এয়াণাং প্রণং) বাহুকত (ব্যেব শাখানং শায় প্র্যা-বাহুরপেণ বিত্তকং কতবানিতার্থঃ) (শার বাব্যাধিত্যাপেশরা লারবিণ তৃতীরং এইবাস্।] সং (প্রেক্তিঃ) এবং প্রাণঃ (প্রজাপতিঃ) রেবা (শ্বয়াধিত্যাব্যেপণ বিহিতঃ (বিভক্তঃ বৃদ্ধ)। [ইলানীমেতবিষ্ধে কর্পন্মুচ্যতে—] ভক্ত (প্রথম্বাক্ত মরেঃ) প্রাচী (প্র্মা) বিক্ বিরঃ (বন্ধকং, প্রের্ছাৎ); প্রেণাট (প্রামারিক, শাসে চি (লারেরী বিক্ চ) করেছা (বাহু)। লব লক্ত (শ্রের) প্রতীচী প্রক্রিমা) বিক্ পুক্রব; লগে চি (বারবা) বিক্) লগে চি নেরবাতী বিক্) সক্রো। (সক্রিমা—পৃত্রেণাগাহিত্যম্); লফিবা চ উরীচী চি (বিক্) পারের্ছ; ভৌঃ (হালোকঃ) পৃত্রব; লারাঃ লার্ল ইলং (প্রথমা) উরঃ (বন্ধঃ)। সং এবং (প্রথমান্তর সং লারাঃ) লার্ল (জারের্ল্ প্রতিষ্ঠিতঃ (লার্লিছঃ)। এবং (ব্রোক্তম্ম লারের্ল্ প্রতিষ্ঠিহং) বিলান্ (লানন্ লনঃ) ব্র ক চি (বিল্র্লিক) করিংকিৎ লানে) এতি (পঞ্জতি), তৎ (ভালন্ এব লানে) প্রতিষ্ঠিতি (প্রতিষ্ঠাং—ইতিং লভতে ইত্যর্বঃ)। অব্যরেশেপ্রোসিমাং জ্ব্যাপাং প্রির্জান্তাক্রবিদ্ধিরং ক্রাণাহ্বর্ণন্ম, ন ভুত্র ক্রতেলাংপ্রারিতি সর্বরান্।

ভাগে—আদিতা, [অগ্নি] ও বায়ুরূপে বিভক্ত করিলেন। সেই প্রাণসংজ্ঞক প্রজাপতি এইরূপে ত্রিবিধ ভাবাপর হইলেন। পূর্বদিক্ তাঁহার মস্তক; এবং ঈশান কোণ ও অগ্নি কোণ তাঁহার বাছম্ম; পশ্চিম দিক্ তাঁহার পূচ্ছ; এবং বায়ু কোণ ও নৈক্ষতি কোণ তাঁহার উরুষ্ম; দক্ষিণ ও উত্তর-দিক্ তাঁহার তুই পার্ম্ম; ত্রালোক তাঁহার পৃষ্ঠ; অন্তরিক্ষ (আকাশা) তাঁহার উদর, এবং এই পৃথিবা তাঁহার বক্ষঃ। সেই এই অগ্নি, অলের মধ্যে প্রজিভ বা অবস্থিত; যে ব্যক্তি অগ্নির এই ভলে অবাস্থিতি ভানেন, তিনি বে কোন স্থানে গ্রমন করেন, সেখানেই প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়া থাকেন মধ্যেপ্রা

স্বাক্তর-ভাক্তাক্ । স চ লাভ: প্রচাণতিঃ বেধা বিপ্রকারমান্ত্রন্থ কর্মনান্ত্রাক্ত বাভলবিভ্যেতং। কবং বেধেত্যার—
লালে ১০ঃ তৃতীরম্ লারবাব পেকরা ব্যাণাং প্রণম্, লকুরুভেত্যকুবর্ততে।
তথা লার্যাদিত্যাপেকরা বায়ং তৃতীরম্। তথা বাষ্যাদিত্যাপেকরা শরিং তৃতীর
নিতি ক্রইবাম্; সামর্থসা তৃত্যাধাৎ ব্যাণাং সংখ্যাপ্রণ্ডে। স এব প্রাণঃ সর্কভ্তা-

नांनाकाणि विधिनां विकास्त्रकारण विद्यानकः (वर्षेत्रव मृक्ष्या । विधिकः विकास विकास विधिनः ।

ভদ দ্য প্ৰথমৰসাধেঃ অধ্যেপেৰাগিকসাৰ্কস্য বিৱাৰশিক্তাশ্বকস্য অধ্যেস্থ বৰ্ণনম্বচাতে; স্বৰ্ণা হি পূৰ্ব্বোক্তোংপৰিম্নস্য অভাৰ্থেভাবোচাৰ —ইবং ৰনৌ ভ্ৰম্বাজ্ঞানিত ভালা প্ৰাচী বিক্ শিৱং বিশিষ্ট্ৰসামাভাং। অসৌ চাসৌ ভ ইশাভাগেৰা) কৰোঁ বাহু , ইয়াতেগতিকপ্ৰণঃ।

वर्ष वनारिशः, क्षणेति विक् भृष्टः वन्ता जानः क्षाच्यम क्षणान्त्र नव्याः। क्रांने तिर्मात वाद्या-देनवं (छ) नक्षणे नक्षिमे, पृष्ठं क्षण्याः। क्षण्याः क्षणेति विक्रितं क्षण्याः। विक्रितं क्षणेति क्षणे

টীকা। বিরাজ্যে ধানার্থনক্ষেণ্ডেন্মান্ত দেন্তি। কোচন্ত তেথাভারত করেছি বীজারানান ক্রম্মেক্তে। কবনেকত তিথাবনতথা কথনেকরিত্যান ক্রথমিতি। মূলা বটলরাবাজনেকরপুমন্ত বিরাজো বঙরপুর্যং সাধরতি—আহত্ত ত্যানিকা। কথবরিং তৃতীয়নিতাকতং করাজে, ভলান- লামর্থ্যক্তি। বাবাহিতারোরিবারেরণি সংবাহেরণিতরবিশিতরাং অনিং তৃতীয়নকুকত ইত্যুপ্সংখ্যারতে, স তেথা আন্থানবিতি চোপক্রমাদিতার্থ:। নম্ম কিনয়ং তেথাভাবো বিরাট্যরণোপ্রদেন ক্রিরতে, ন হি স ভলিন্ সভ্যোর মুক্তো বিরোধানিত্যান— আ এফা তিত। বাবা ভর্বহাম্প্রদেনে স্ক্রারণাৎ পটো কারতে, ভবা সংক্রায়ং ভূতানাং প্রাণ্ডরা সাধারণোচ্পারং থেনের স্বভ্যান্থ্যতিন মূত্ররণেশ তেথাবিভাগত কর্তা। ব কৈন্ত ব্যৱস্থানিরোধ্য, মারাবিব্যুপ্তেরিভার্থ:।

ভক্ত প্রাচীত্যাবেতাৎপর্বাবাং—তল্পেতি। উক্তানি বিশেষণানি প্রকরণাবিজ্ঞেদার্থ-মন্ত্রন্তে। অন্নিবিষয় ধর্মনিবানীমূচাতে চেং, রৈবেকেচ্যানি পূর্ব্বোক্তমনর্থকবিত্যাপত্যাহ — কর্ম্বে বিশ্বিক বিভিন্ন বিভাগে কর্মনিতি। কর্মান্ত বিভাগের সংবর্তবাহাৎ চিড্যান্তি-শির্দ্বা প্রাচীন্ত্রীয় কর্মবাতানিক তল্পেতি। আবোপে নাদৃত্যবাহ—বি, শক্তীক্তর্তি। শির্দ্বা অন্তর্ভাবিষয় তত্ত্বাজ্যোবৈশাতানিদৃষ্টিনাহ—আঁলো চেতি। কর্মনীর্মাণনা বাহ্বাচীত্যাপত্য তত্ত্বপত্তিবাহ—ক্রেমতেনিতি। প্রার্থবোদানার্মাণনা বাহ্বাচীত্যাপত্য

ছৎপুঞ্ছাদিবু বভীচ্যাদিবৃষ্টিরধানাভি—অ্থেক্ট্যাদিনা। চিভাভাগে: বির্দি বাংলা:

প্রাচানি বৃষ্টিকরণানভর্বিভার্বঃ। গর্থ-পথং পৃথিবিটারভাবিদরবিবরন্। উভরপ্রেন প্রাচী-প্রতিটারদ গৃহতে। উনদি পৃথিবীকৃষ্টিনার—ইয়ামিডিঃ। উপাভর্বির্তৃত্বসূত্রভি—প্র্ প্রাচীতরং পূর্বিশিষ্টি—অধিনিন্তিঃ। প্রভাৱনারিভারে। তত উপাসনার্থনেবাপ্ত্র প্রভিষ্টিভার প্রশ্বনিতি—অধিনিন্তিঃ। ক্রেনার্থার প্রভাৱনার পাং সর্বানার কারণকার প্রশ্বনাকার কার্যার প্রভিষ্টিরং সভবতীভার প্রভাৱন সংবাবরতি প্রশ্বমিতিঃ। ববৈতের লোকের সর্বাং কার্যার প্রভিষ্টিরং, ভরেতি বাবং। লোকপ্রের স্থানার ভূতানার সরিবেশবিশের গৃহতে। পশ্র ভূতাভরস্বিভান্ত কারণভূতাভিতি বাবং। ক্রম্ভাবির বাবং বাচারে—মন্ত্রেভিঃ। ক্রেণাভিক্সন্ কর্ম পূন্র ভূরে ব্যানার ইভ্যাবিনা বভ্যতে। ক্রিবেশবানে ক্রমভার্তিনবর্যত্ত ভাল— প্রশ্বভিত্ত বাবত।

ভাজ্যান্দ্রভাদে। –সেই প্রথম [বিরাট্রপ] প্রকাণতি আপনাকে—
বার বেছেলিয়-স্বাইনেই ত্রেণা করিয়াছিলেন, অর্থাৎ তিন প্রকারে বিভক্ত
করিয়াছিলেন। কি প্রকাব ত্রেণা, তাহাই বলিতেছেন—ভূতীর আবিতা,
অর্থাৎ অগ্নি ও বাবু অপেকা তিনের পূরণ। এথানেও 'অকুক্রত' ক্রিয়ার
অকুবর্তান হইতেছে। সেইরপ, অগ্নি ও আদিতা অপেকার ভূতীর বারু;
এইরপ বারু ও আদিতা অপেকা ভূতীর অগ্নির স্টেও বুবিতে হইবে; কেন
না, ত্রিস্থাপা পূরণে ইহারও ভূলা সামর্থা রহিয়াছে। সেই এই প্রাণ
সর্মভূতের আস্বরপ হইয়াও নিজ 'মৃত্যু'রপ আস্বার কর্তৃতে আবার বিশেষতাবে অগ্নি, বারু ও আদিতারূপে ত্রিধা বিহিত হইলেন, অর্থাৎ বীর অবও
বিরাট্ প্রপ্রণী বিদ্লিত না করিয়াই তিন তাপে বিভক্ত হইলেন।

সেই বে, এই অধনেধ বজোপবোগী বিরাট্রপী অর্কনাবক প্রভাপতি অগ্নি, উহার সম্বন্ধেও, পূর্ব্বোক্ত জানাত্মক অথের ভার, দর্শন বা উপাসনা ক্ষিত হইতেছে; —পূর্বেই বলা হইরাছে বে, পূর্ব্বোক্ত সমস্ত উৎপত্তির ক্ষাই ইহার অগ্নিগত বিশুদ্ধি বাপনের জন্ত । পূর্বে লিক্ ভাহার মন্তক; কারণ, উভরেবই শ্রেইড ধর্ম সমান। 'এই—এই' দিক্, অর্থাৎ ইশান ও অগ্নি কোণ ইহার তুইটী ঈর্ম্ব, অর্থাৎ বাহ্বর। ইম্বাণ্ডটী পতার্থক কর্মাত্ হইতে নিশার হইরাছে।

ভাষার পর, শশ্চিম দিক্ হইভেছে এই অরির পুদ্ধ অর্থাৎ পশ্চান্তাগ; কেল না, পূর্বাভিমুখে ছিত ব্যক্তির পশ্চান্তাপের সহিতই পশ্চিম দিকের সম্পন্ধ হইরা থাকে। আর 'এই—এই' দিক্ অর্থাৎ বায়ু ও নৈর্বান্ত কোণ ইছার সক্থিয়ের (পূর্চের পার্থবর্তী অছিমর); কারণ, পূর্চকোণের সহিত ইহার সামৃত্ত রহিরাছে। ছাকিণ ও উত্তর দিক্ ইহার পার্যায়; কারণ, উত্তর বিক্ষে সহিত ইহার সম্বন্ধত সাম্য আছে। হালোক ইহার পৃষ্ঠ; ধর'বস আকাশ? ইহার উদর; এথানেও পৃক্ষোক্ত অখদৃষ্টির ক্লার সাদৃশ্র দু ধতে ২০বে। এই অর্থাৎ পৃথিবী ইহার বক্ষঃস্বল; কারণ, ইহারও অবোলাসমান বালা প্রাহিয়'ছে।

সেই এই অন্ধি—সর্কলোকাত্মক প্রঞ্জাপ তরূপ ক্ষি ক্ষের নাম অবারত;
কারণ, অন্ধ ক্ষতিতে আছে — এই প্রকারে এই সমত ক্ষাৎ ক্ষের মধ্যে
প্রতিষ্ঠিত আছে'। বে লোক এই অগ্নির যথোক্ত প্রকার ক্ষ্যাপতি উত্থ কানেন,
ভিনি বে কোনও ছানে গ্রম করেন, তিনি সেধানেই প্রাণিত করেন।
ইয়া হইছেছে উপাসনার ওপকন (আক্র্যক্ষিক ফ্ল মান্ত , [ইহার প্রকৃত্ত
ক্ষ্য হইতেছে চিডওবি]। ১০০৪

সোহকামরত বিতীয়ো ম শাস্থা জায়েতেতি; স মনগা বাচং মিপুনত সমভবৎ, অশনায়া মৃত্যুক্তদ্যদ্রেত আগীৎ, স সংবৎসরোহভবৎ। ন হ পুরা ততঃ সংবৎদর আস, তমেতাবন্তঃ
কালমবিতঃ। যাবান সংবৎদরস্তমেতাবতঃ কালস্য পরস্তাদস্কৃত। তং জাতমভিবাদেদাৎ, স ভাগকরোৎ, নৈব বাগভবং। ৬॥৪॥

ज्यान विशेष्ट । ज्या । विशेष क्रियम त्रशे मृतः । चनामग्रं । ज्या । विशेष विशेष विशेष । विषेष । विशेष । विष । विष

বাাগানং কৃতবান্); সং ' শাতঃ) ভাণ্ (ইতি জবাজং শকং) জকরোৎ (কৃতবান্), সা এব (তংগৰ) বাক্ (শক্ষা জভৰং [ততঃ পূর্বাং শ্রো নাসী গৈতি তাবঃ] ঃ

ভালান্দ্রবাদে। জলাদি-প্রফী সেই ক্ষনায়া-লক্ষণাবিত মৃত্যু ইচ্ছা করিলেন—আমার বিতীর একটি আত্মা (শরীর) উৎপন্ন হউক; (অনন্তর) তিনি মনের সহিত বাক্যের সংযোজনা করিলেন, (জর্মাৎ মনে মনে বেদচিন্তা করিলেন;) ভাহার মধ্যে যে বীজ নিহিত ছিল, (জর্মাৎ তাদৃশ বেদ-চিন্তার ফলে, প্রথমপুরুষ প্রভাপতি ব্রভার্য্যোপবাসী প্রান্তন যে জ্ঞান-কর্ম্মসংস্কার-শীত দর্শন করিলেন,) ভাহাই সংবংসর হইল: ভৎপূর্বেল সংবৎসর বলিয়া কাল বিভাগ ছিল না। জগতে বাহা সংবংসর বলিয়া প্রসিদ্ধ, [ভিনি] প্রজাপতিকে অন্তের অভ্যন্তরে ভতকাল ধারণ করিয়াছিলেন। এই প্রিমাণ কালের (সংবংস্বরে) পরে ভাহাকে স্থান্তি করিলেন; অর্থাৎ এক বংসরান্তে সেই অর্ডটা বিদীর্ণ করিলেন: এবং] জন্মিলে পর ভাহাকে ভক্ষণ করিবার নিমিত্র মুখব্যাদান করিলেন। সেই নবজাও পুরুষ ভাগ শৈল করিলেন হাহাই জগতে প্রথম 'শব্দ' হইল ভোৱা

শাহ্র-ভাজ্য হা শেষ্টাব্র-বেছিনে মৃত্যু; সং অপ্-আদিক্রেণ আয়না আয়ান্যওস্যান্তঃ কার্যা-করণস্ত্রাতবন্ধং বিরাজনবিধ্ অস্কত,
ক্রেণ চাল্লান্যকৃত্রতেত্যক্র স্বাকিং ব্যাপারঃ সন্ অস্কতেতি, উচ্যতে—
স্মৃত্যুঃ অকামরত কামিতশান্। কিন্তু বিতীরো যে বন আয়া শরীরন্,
বনাহং শরীরী স্যাম্, স্বলায়ত উৎপল্পত, ইভি এববেতত্ অকানরত;
স্বাকং কাম্যিত্রা, মনসা প্রেয়ংপরেন, বাচং ক্রেনীক্রণাং, বিশ্বনং
ফল্ডাব্যু, সমন্তবং সন্তবনং কুল্লান্, মনসা ক্রীলালোচিতবান্; ক্রেনীবিভিত্র স্থিক্রমং মনসা অধালোচ্যুদিত্যবঃ কেছিসৌ ও অপনাররা লকিতো মৃত্যুঃ;
অপনারা মৃত্যুরি হ্যক্তম্; তমের প্রামৃশতি অক্তর প্রস্থাে বা ভূলিতি।

তদ্ ষদ্রেত আসাৎ,—তৎ তত্ত মধুনে বৎ রেত আসাং—প্রথবশবীরিণঃ প্রজাপতেকৎপত্তী কারণং রেতো বীবং জ্ঞান-কর্মরূপং
বেখ্যালোচনারাং বং দৃষ্টবানাসীং জ্মান্তরকৃতম্। তত্তাবভাবিতোহশঃ স্ট্রা
তেম রেভসা বীবেনালা অধ্প্রবিত্ত সভরপেশ পতীভ্তঃ সঃ সংবৎসরোহত্তবং,

गरवर मह-काननिर्वाण गरवर महः क्षेत्रा भित्र छवर । म ह भूता भूर्वर, छण्डः छवार गरवर महत्व काननिर्वाण्डः व्यवागर्ण्डः, गरवर महः काना माम, म कान म वज् व ह । छर गरवर महकानिर्वाण हेन् वहर्गर्जर व्यवागिष्ठम्, वार्तामह व्यक्तिः कानाः, क्षेत्राव्यक् कावर गरवर महत्व विज्ञाः कानाः, व्यवाव व्यव्यक्ति व्यव्यक्ति विज्ञाः कानाः विव्यक्ति व्यव्यक्ति व्यव्यक्ति विव्यक्ति व्यव्यक्ति विव्यक्ति व्यव्यक्ति विव्यक्ति विव्यक्ति व्यव्यक्ति विव्यक्ति व्यव्यक्ति विव्यक्ति व्यव्यक्ति विव्यक्ति विव्यक्त

টীকা। উত্তর্গ্রহণু অবভাগা তত পুর্মপ্রব্দের সধন্ধং বজুং বৃদ্ধং শীর্ডছি—
ক্যোহিকামহতেত্যাদিনা। অবাজনাগানসভানে কর্ত্তান্থপানিতি বজা
পুত্তি—জা কেংব্যাপার ইতি। কাননাগির পনগাননগাগানন্ উত্তরবাকাগানীতেন
কর্মানি—উচ্যক্ত ইতি। কাননাকাগাং মন:সংবোগনুগঞ্জান—জা এনামিতি।
কোংল ননসা সহ বাচে৷ ধর্মভানা: উত্তাহ—মন্ত্রেতি। বাক্যাব্যের ক্ষুট্রাভক্রমানিক্তিমাতি। বেংগাঞ্পরিক্রমানোচনং প্রজাগতেনইলং অববং, সংলারগ্র
অনাবিভানিতি বজুন অন্থ-পর্য: 'সোহকান্তর' ইত্যাহো সর্কনারঃ অবাবহিত্তবিরাভ্বিবর্ত্তান্তি। কিনিতি তহি পুনরাজিরিত্যাপ্রয়াঃ—ত্রমব্রতি। অপ্তরাল্ভরপ্রতে
বিরাভ্যানীতি বাবং।

ব্য প্রভাগতের জাবং কর্ম বা সভবতি, ভ্রাবিকারানিত্যাপতা আসীবিভাভার্থবাং—
ক্রমান্তরেজি। বাকালাপেকিডং প্রবিদ্ধা বাকারিবলার বাবিবলাভার্থবাং—
ক্রমান্তরেজি। বাকালাপেকিডং প্রবিদ্ধা বাকারিবলার বাবিবলাভার্থবাং—
ক্রমান্তরেজি। বাকালাপেকিডং প্রবিদ্ধা বাকালিবলার বাবিবলাভি—ত্যক্রাত্রেক্তরালিকা। বহু সংবংসরভ প্রবেদ্ধা বিভাগ প্রবিদ্ধানিক ভ্রাবিলাভার বাকার্পারতে — ন হ প্রেজি। তব বালেই—পুক্রমিজি। বাকাপ্তরাধিভাদ্ধান্তর ভ্রাবিলাভা, সংবংসরবাবহারত, আবিভাগ পূর্বং ভর্বাবহারো নাসীবেবভার্থ:।
ক্রিক্তং কালবভরণের বর্লাভ্রেশিকার বর্লাভ্রেশিকারালাভার্তরালিকা। ব্যাবিলাভার্তরালিকা। ক্রের্থবের পর্ততরা বিভাগরত বিলালাভার্তরালালাক্রত—আবানিত্যাদিকা। ক্রের্থবের পর্ততরা বিভাগরত বিলাল: ক্ষিঃ ভ্রাবিল—ত্যমেজি। বিলাভ্রেণ্ডির্পার্থবিকারে বর্লাভি—ত্যমান্তরাদিকি। বিলাভা ভ্রাবিলাহিশিক্তরালিক্রিভালিক্রিভি—আশ্রমান্তরাদিকি। বিলাভা ভ্রাবিলাহিশিকারিভালিক্রিভি। ইরিরং বেবভাগে চ ব্যাবর্জানিক্রিভাল কর্মান্তরাভ্রাবিক্রিভি। ইরিরং বেবভাগে চ ব্যাবর্জানিক্রিভালিক্রিভি। ভাল চাল বিলাভা

ভাল্যান্যুবাদে।—ভিনি কাৰনা (ইছা) করিয়াছিলেন; ভিনি পর্বাৎ

যিনি পূর্বোজ দৃত্য। তিনি নিজেই নিজাক ললাবিজনে জভাভাতরে নেহেজিরাখিবিনিট বিরাট্যকেক অধির স্থানী করিরাছিলেন; এবং আপনাকে তিন
ভাবে বিভক্ত করিরাছিলেন, এ কথা পূর্বেই বলা হইরাছে। তিনি বে কি
প্রকার টেরার স্থানী করিরাছিলেন, এবন ভাহাই কবিজ হইজেছে—নেই মুক্ত্র
কামনা করিরাছিলেন অর্থাৎ ইক্তা করিরাছিলেন। কি (ইক্তা করিরাছিলেন)
লামার বিতীর একটি আত্মা—শরীর হউক; আনি বাহা বাহা পারা পরীরবান্ ইইজে
পারি, পেরপ একটি পার্মা—শরীর ইউক; এইরপ কামনা করিরাছিলেন।
তিনি এইরপ কামনা করিরা পূর্বোৎপর বনের সহিত বাক্যের—বৈদ্ধু, ক্র্যু,
নাম ও অর্থাবিকরপ বারীর বিধুন—বক্ষতার বিহের্গেল স্টিক্রম ননে বনে
আলোচনা করিরাছিলেন (১)। ইনি কে ? [উত্তর-] ইনি—অননায়া-লক্ষিত
(তোজনেক্যবিনিট) মৃত্যু; বে অননারা, মৃত্যু সক্ষপ ইহা পূর্বেই বলা
হইরাছে। এখানে অব্যবহিত পূর্বোক্ত বিরাটের কামনাকর্ত্ব আলভিত হইতে
পারিত, তরিবৃত্তির অন্ত, পুনন্ত "অননারা মৃত্যুঃ" কথার প্রথবোক্ত মৃত্যুর
সম্ভ গ্রহণ করা হইরাছে।

ভাষতে বে রেডঃ ছিল, অর্থাৎ সেই বিপুনবংগ্য বে রেডঃ (বীজ)
নিহিত ছিল; অভিপ্রায় এই বে. বেদ পর্য্যালোচনার কলে প্রধানশরীরী প্রজাণতির পরীর-সর্ৎপাদনের নিবিত্তীকৃত, জন্মান্তরকৃত ভানকর্মসংখ্যাররূপ বে বীজ দর্শন করিয়াছিলেন, তিনি ভত্তাবভাবিত হইয়া অর্থাৎ
সেই সংখ্যারে অক্স্রাণিত হইয়া জল কৃতি করিয়া, সেই রেভোরপ বীজ
ঘারা জলাভাত্তরে প্রবেশপূর্কক ভিত্তরেশে গর্ভরূপী হইয়া ভিনিই সংবংস্থ
ইইয়াছিলেন, অর্থাৎ সংবংসরাত্মক কালের প্রবর্ত্তক প্রজাপতি হইয়াছিলেন।

^{(&}gt;) छा९गर्गा—रिण्णाञ्चास्त्रात এই गृहिवाबाह जवाबि; काव नवह हरेछ कि व्यक्तात त्य जांव हरेगात, छाश वाववत् का जांवा । वावव चीव दृष्टिक्यणात गृहेव वित्य वच्चे जवाब हरेगात, छाश वाववत् जांवा व्यक्ति व्यक

নাবে কোন নদাত নেই প্রজাণতির প্রার্ভাবের পূর্বে—িন্দরই সংবৎসর নাবে কোন নদর প্রসিদ্ধ ছিল না। মৃত্যু নেই সংবৎসর-নির্দাতা অভাজ্যরম্ব কালাপতিকে, বে পরিমাণ কাল অগতে সংবৎসর নামে প্রসিদ্ধ, নেই প্রসিদ্ধ সংবৎসর পর্যন্ত ধারণ বা পোবণ করিরাছিলেন। আহা, লোকপ্রসিদ্ধ বে এই সংবৎসর কাল, ভাষার পরে কি করিরাছিলেন।—এই সংবৎসর পরিষিত কালের পরেই সংবৎসর পূর্ব হইবা মাত্রই ভাষাকে ক্ষি ক্রিলেন, অর্থাৎ নেই ডিঘটী ভালিরা কেলিলেন। সেই আদিল্যীরা অন্তি, কুমার বা শিশুরূপে সমৃৎপর হইলে পর, ভোজনেজ্বক বা ক্র্যার্ড মৃত্যু ভাষাকে ভঙ্গণ করিবার নিষিত্ত মুধ-বিলারণ (মৃথ-বালান) করিলেন; তথন সেই নংকাত শিশু ভীত হইরা সভারণিদ্ধ অবিদ্যাস্থিদ্ধ বশত: ভ ন্' ইত্যাকার ভ'ত-ক্ষক শব্দ করিরাছিলেন; ভাষাই বাক্ হইল-—ব্যবহারোপ্রাণী শব্দরপে প্রিণ্ড হইল। ৬ র র

স ঐকত যদি বা ইনমভিন্ত্তে, কনীয়েছিলং করিষা ইতি,স তথা বাচা তেনাত্মনেদ্ধ দৰ্শবিদ্যকত যদিদং কিণ—ঋচো যজুধবি সামানি ছল্লাখনি যজ্ঞান্ প্রজা: পশুন্। স যদ্যদেবাস্ফত তক্তদন্ত্মপ্রিয়ত, সর্বাং বা অভীতি তদ্দিতেরদিভিত্বখ স্থাইত-ভক্তান্তা ভবতি সর্বামস্থানং ভবতি, য এবনেতদ্দিতেরদিভিত্বং বেদ ॥৭॥৫॥

স্ত্রতাহাঃ—সঃ (মৃত্য়ঃ) ইক্ত (চিন্তরামাস); [কিং ?]
বিদি (সন্তাবনারাং) বৈ [কদাচিৎ] [ক্ষুবাবশাৎ অহং] ইমং (কুমাংং)
অভিষ্প্তে (মারহিয়ে, : [অরাভাবাৎ কদাচিৎ অন্ত মৃত্যুবাপ সন্তবেদিতাতিপ্রায়ঃ]; [তহি এতক্ত তক্ষণে কতে,) অরং (মম ভক্ষাং) কনীরঃ
(অত্যরাং) করিয়ে, [অতঃ প্রভূতারস্থে) বিভয়ে ইতি ভাবঃ] ইতি।
সঃ (এবং কৃতনিশ্চরঃ মৃত্যুঃ) তয়া (পূর্ব্বোক্তমা বেদরপরা) বাচা, তেন
(পূর্ব্বোক্তেন) আত্মনা (মনসা ৪) [মনংক্ষিতমর্বং বাচা সমুচার্যা] ইদং
স্বর্ম্ম অস্ত্রত—বং ইদং কিঞ্চ—বচঃ (ব্যোধান্), বজুংব (ব্যুক্রেদান্),
সামানি (সামবেদান্), ছব্বাংসি (গারত্র্যাদীনি সপ্ত), ব্ঞান্ (বাগান্),
প্রস্থাঃ (মন্ত্রান্), পশুন্ (গ্রামান্ আরণ্যান্ত অন্তন্ত ইতি সম্বন্ধঃ)।

স: (मृद्याः) বং বং এব (वस) অপ্তৰত (गृष्टेशाव्), তং তং (वस) [এব]
অত্ ং (তৰিত্ং) অঞ্জিত (ননঃ ক্তবাব্) ; [আয়বাহলাং বৃদ্ধী ভবাবীং
তত্তকণে প্ৰবৃদ্ধা বৃদ্ধা ইতাতিপ্ৰায়ঃ]। বং [সঃ] সর্বাং (গৃষ্টং বন্ধ) বৈ
অতি (তক্ষতি) ইতি, তং (তবেৰ) অভিতেঃ (অভিতিনারো মৃত্যোঃ)
অভিতিম্ব (অভিতিনারো হতোঃ) এতং (উত্তং) অভিতিম্ব এবং (বংগাজেন
মণেণ) বেদ (কানাতি), সঃ (ভাতাপি) এতস্য সর্বাত্ত (অগতঃ)
অভা (তোকা) তবতি, সর্বাং [বল্প বাত্ত । ভাতঃ) অয়ং (তক্সং অবীনং)
ভবতি, ইত্যবাঃ ।

কাল্যুকাদে। দেই মৃত্যুরূপী প্রজাপতি চিন্তা করিলেন—
আমি যদি ক্ষ্ধাবশতঃ কখনও এই শিশুকে ভক্ষণ করিয়া কেলি, তাহা
হইলে আমার খাতা বস্তু অভি অল্প করিয়া কেলিব, অর্থাৎ ইহাকে ভক্ষণ
করিলেও আমার দীর্ঘকাল চলিবে না। তিনি এইরূপ চিন্তার পর, সেই
পূর্বেবাক্ত বাকা ও মনের সহযোগে এই সমস্ত স্থিতি করিলেন—এই
যে-কিছু বস্তু—আযেদ, যজুর্বেবদ, সামবেদ, গায়ত্রী প্রস্তৃতি ছলাং সমস্ত
যজ্ঞ, সমস্ত প্রজা (মনুতাদি) ও সমস্ত পশু। তিনি বাহা বাহা স্থিতি
করিলেন, তৎসমস্তই ভক্ষণ করিছে মনঃস্থ করিলেন, অর্থাৎ স্টে সমস্তই
তাহার ভক্ষা হইল। যেহেতু তিনি সমস্ত বস্তু অদন করেন (ভক্ষণ
করেন), সেই হেণুই তাহার 'অদিতি' নাম প্রসিদ্ধ। যে লোক
অদিতির এই অদিতিহ যথোক্ত প্রকারে অবগত হন, তিনিও সমস্ত বস্তুর
ভোক্তা হন—সমস্ত বস্তুই তাঁহার অন্ধ বা ভোগ্যরূপে উপস্থিত হয় ১৭০৫।

न्ना उद्धान जाका । न वेक्छ नाः वदः छोषः इष्प्रदर क्यांतरः वृहे। यृष्टाः वेक्छ केक्छितान्, जननाधावानिनि न्यि क्यांकिरेव हेवः क्यांत्रम् जिल्यारेखः, जिल्ल्यारेखः, जिल्ल्यारेखः, जिल्ल्यारेखः, व्यांकिष्टः विद्यां विद्यं विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यं विद्यां विद्यं विद्यां विद्यां

वैत्र-वर्ताः श्वावतः वक्षत्रकः वक्षत्रकः,--वित्रः किक १६किएकत् । किः कर १ कार्यः कार्योः शावानि, श्वारित ह तव वावज्ञात्रोते---(काश्यवादिक्षीकः श्रूष्ठात् विविधाननात् वावज्ञादिक्ष्याविभिद्रोत्। वक्षाःक करमावात्, अकाः कर्याकः शक्षकः आवानावनात् कर्यमानक्ष्णम् ।

বছ অব্যা বিশ্বীকৃতহাস্ত্রতেত্যক্তব্, গণাবানি ইং কথবস্ত্রতেতি ? নৈব বোমঃ বনস্ত অথকোহর: বিশ্বীতাবস্ত্রবাা; বাক্ত গণাবীনাং বিভগানা-নাবেক কর্মক্-বিনিয়োগভাবেন ব্যক্তীভাবঃ সর্গ ইতি।

টীকা। ইগানীনুগা দিপন্তিন্দ্র পাঙনিকাং কলোভি—জ ইন্ত্যাদিনা।
ইক্ষণপ্রভিন্তক সক্ষান্ধ পর্ণ হতি—আশনামানানানীডি । আভিপুনের্বা মন্তাতিনালি । শুলি প্রতিন্তিনালি পর্যান্ধ প্রতিনালি পর্যান্ধ করা প্রতিনালি পর্যান্ধ করাণ করা প্রতিনালি পর্যান্ধ করাণ করা প্রতিনালি পর্যান্ধ করা করালি করালি পর্যান্ধ করালি পর্যান্ধ করালি পর্যান্ধ করালি পর্যান্ধ করালি প্রতিনালি ভালান্ধ করালি প্রতিনালি করালি পরান্ধ করালি করাল

म मनमा बाहर विश्वार मयक्वविकृष्णकार आत्रव जवा: मिक्कार, व क्षण: रहिः

নিটোত শক্তে – স্মিতি। ব্যক্তাবভাবের পরিবরতি — সেন্ট্রাটিরের। ইতি বিবুরীভাবনগুরোকপশতিনিতি শেষঃ। অনুসর্গত অন্নর্গতেতি ব্যস্তব্।

ইবাৰীমূণাভত ধৰাণতেওঁ বাৰবং বিশিশতি—ল প্ৰাক্তাপতিকিন্ত্যালিকা।
কবং মুড্যাববিভিনাৰবং বিভবহুতাতে, জনাহ—কথা চেন্তি। লবিভেঃ সর্বাধিবা
বৰতা ব্যেপ সর্বাধিবা মুড্যাববিভিনাৰবং প্ৰিভবিভি ভাব:: মুড্যাববিভিন্ত বিজ্ঞানবতঃ অবাধাৰকল্যাহ—লক্ষে ল্যাভিন্ত। সর্বাধ্যক্তিত হুড়ো বিশিষ্তে, জনাহ
—আন্যাহপ্রি । সর্বাধ্যবিশ্বাধারাতাবে সর্বান্তক্ষণভাশতাম্বাবিভার্ব:। বিরোধ-বেন সাধ্যতি – ম হ্রীভি । কলভোশাসনাধীনধাং প্রজাশতির্ অনিভিনাবানমূ আম্বন্তন্ত্র বাজন্ত্র্যায়ার ভূষা ভংগত্ত প্রমাণ্ডঃ সর্বভালসাালা ভাবিভার্ব:। অন্তন্ত্র্যাহ্র বর্ষা স্থা,
ন কলাচিং ভ্রক্তাভ, ভ্রতীতি বক্তু সমন্তর্যাভায়াহণ্ড—লক্ষ্ত্রিভিঃ অভ এবেত্রুত্তং
ব্যক্তীক্তব্যাতি—লক্ষ্যাভ্যাতি—লক্ষ্যাত্রিভিঃ বিভিন্ত বিভিন্ত ব্যক্তিত ।

ভাষ্যানুবাদে। "গ একত" ইতাদি। তিনি (মৃত্যুদ্ধ প্रकार्गाठ) (नहे नवकाठ निकार बहेबाल छोठ ७ छात नम कतिएएए वर्गन कविषा किया कविरामन-विषय चामि क्रुवार्ख विमया अपन अहे विशःक दिश्मा क्ति, वर्षाः छक्न क्रिया (कृति, [ठाहा हहेति] वानि वानात वय वित वस করিরা কেলিব, অর্থাৎ এই একটা মাত্র শিশু ভক্ষণে আবার আরু কভছিন हिन्दि-- अहेक्स विद्युजन। कृष्टिक्षा कालाव क्ष्मप सहेट्ड निवृक्ष स्ट्रेट्सन । अवादन ''অভিমংসো" এই অভিপূৰ্বক 'মন্' ৰাতুর অর্থ—হিংসা বৃরিতে হইবে। উদ্দেশ্ত बहे रा, शोर्चकाम कक्षरवत बन्न चामारक अहूद शतिबार चन्न मक्त्र कतिएक बहेरन । अब अरब हहेरन ना : बीब छक्त रवनन मुलालान परहे, रलबनि देशांक करून कवित्मक आयात्र आह्न कमित्रा बाहेरत । तिनि धारे केरकाळ भावाह्तात मात्नाक्छ। हिचा कवित्रा शूर्सकविड त्रहे (वन्त्रण बादकात সহিত পূর্বোক্ত আত্মার-মনের সহযোগে পুনঃপুনঃ আলোচনা করিয়া এই शांवत-भवभागक ममछ वज रहें कतिराग--- अहे शहा कि हु वृहे हत । रमहें नम् वस कि कि १ ना, सक् न्र, वक्शनमृह, नायन्रूह, अवर नामजो अक्छि नथ इन्द्रः वर्षार शाहबो, উक्षिक्, कप्तर्हेल, वृहको, ल कि, बिहेल ६ क्षको প্রভৃতি ছন্দোবিশিষ্ট ভোত্র, শ্রাদি কর্মাক্সরুপ তিন প্রকার মন্ত্র, সমুসাধ্য वक्षप्रमूह, बळाविकाती अनग्रह এवर कर्त्याणस्त्री आया ७ अत्रवाहत পশ্বৰু [শৃষ্টি করিবেন]।

শাপতি হইতেছে বে,—প্রথমে বলা হইরাছে নিধুনীভূত জরীবিভার লাহাব্যে স্টি করিলেন; এখানে খাবার ধপুবেদাদির স্টি করিলেন কি

নেই প্রথাপতি বর্ধন বৃত্তিতে পারিলেন বে, প্রচুর পরিবাণে আবার অল্ল অন্থিছে; ভাষার পর হইতেই, ক্রিরা ও ক্রিরাগণন প্রভৃতি বাহা বাহা—বাহা কিছু স্টি করিবাছিলেন, তৎসবস্থ ভক্ষণ করিতে (সংহার করিতে) ধারণ করিলেন আর্থাৎ বনোনিবেশ করিলেন। বৈছেতু প্রজাপতি সেই সমন্তই অফন—ভক্ষণ করেন, সেই হেডুই 'অলিভি'র অর্থাৎ অলিভিনামক মৃত্যুর অলিভিন্ন প্রাক্তির বিলাহে। এতসম্প্রপ মন্ত্রও আহে—'অলিভিই ছ্যালোক, অলিভিন্ন প্রাক্তিক (আকাশ), অলিভিই বাভা এবং প্রসিদ্ধ পিতা' ইত্যালি। তিনি সর্মান্ধভারবার অল্লবন্ধ এই সমন্ত অগতের অন্তা (ভোজা) হন, কিছ সাকাৎ সম্বন্ধে নাহে; কারণ, তাহা না হইলে সর্মান্ভেক্ম কথা সম্বত হইতে পারে না; কেন না, অগতে কোথাও একজনকে সর্ম বন্ধর ভোজা দেখিতে পাওরা বার না; অভএব নিক্তরই তাহার সর্মান্ধভারত সিদ্ধ হইভেছে। সমন্ত বন্ধই হার আন্থানীর হইরা থাকে; বেছেতু ভোক্তম্বরণ তিনি সর্মান্মক, সেই ছেডুই ভাহার সম্বন্ধে সর্ম্ম বন্ধর অন্ধলাত উপপন্ন হইভেছে। যে লোক এইরপ এই অভিভিন্ন অর্থাৎ মৃত্যুসংক্রক প্রজাপতির সর্মান্নভক্ষণনিবিভ অন্ধিভিন্ন ব্যান্ধর্মণে অব্যত্ত হন, তাহারও উল্লিভিত ক্ষলাত হর ॥ ৭ ৪ ৫ ॥

সোহকাময়ত ভ্রদা যজেন ভ্রো যজেয়েতি। সোহশ্রামাৎ, দ তপোহতপ্যত, তহ্ম প্রান্তহ্ম তপ্তস্ম যশে। বীর্যান্দকামৎ। প্রাণা বৈ যশে। বীর্যাং; তৎ প্রাণের্হকান্তের্ শরীরও শ্রিছ্-মধ্রিয়ত, তহ্ম শরীর এব মন স্বাদীৎ মদাং॥

স্বালাই। -- নঃ (প্রকাপতি:) আকাবরত (কাবনাং রতবান্)—
ভূরণা (বহুতা) বজেন ভূরঃ (পুনরপি, [পৃর্ককরবং আলিন্ করেছপি ইডার্ব:]
বজের (সকরং কুর্ণাষ্) ইতি! নঃ (প্রকাপতিঃ) গ্রন্নামং (প্রান্তঃ আভংং);
>ঃ (প্রকাপতিঃ) তপঃ অভপ্যত (জানরপাং তপতাং রভবান্); প্রান্তঃ

ख्तक [ह] च्छ (श्रमांगरकः) मनः नीवार (भूसंबर) केमकामर (निर्म हम् चक्र)। [चल वर्णानीवारकाः चक्रणवाद —] श्रानाः देव (श्रमित्को) वनः नीवादः [वर्णानीवाक्र एव्य] श्राराष्ट्र केरकारकर् (मनोवार निर्मक्ष्म् मरम्) चर पत्नीवार चित्रक्र (चक्रकार महन्) चित्रक (मृक्वर चक्रवर); मनः [भूमः] च्छ (श्रवांगरकः) पत्नीरा अव चानीर । म निर्मक्ष्म् देखार्वः) ।

সূলান্ত্রাদে। তিনি (প্রজাপতি) কামনা করিলেন—আমি
পুনরপি অর্থাৎ পূর্বে করের স্থার এই করেও মহাযজ্ঞের অন্তর্গান করিব।
তিনি [যজ্ঞান্তর্গান করিয়া] পরিপ্রাস্ত হইলেন। তথন তিনি তপস্থা
আরম্ভ করিলেন; প্রাস্ত ও তৃপংপ্রবৃত্ত প্রজাপতির যশংপ্রকাশক
বীর্য্য প্রান্তর্ভূত হইল। প্রাণসমূহই যশংপ্রকাশক বীর্য্য (শরীর-ছিতির
হেতৃত্ত); সেই প্রাণসমূহ দেহ হইতে বহির্গত হইবার উপক্রেম
করিলে পর, সেই শরীর ক্ষীত (পৃতিভাবপ্রাপ্ত) হইবার মত
হইল, কিন্তু তাঁহার মন: তথনও শরীরের মধ্যেই বর্ত্তমান রহিল চেন্ডা
স্পাক্ষরেন ভাক্যাক্ষ্য। সোহকাশনতেতি স্বাধ্যেয়ানির্বাচনার্থ-

শীক্ষর-ভাশ্য ম। বেহিনামনতোত প্ৰথমধ্যেনিৰ্কালবিষ্যাহ। ত্রসা মহতা বজেন ভূর: প্নরণি হজেরেতি; অস্থাত্রকরণাপেকরা
ভূর:শব্য। স প্রজাপতির্কাল্যরে প্রধাবনোব্রত; স তভাবভাবিত এব
কয়ালে ব্যাবগ্রত: সঃ প্রধাবনোব্রত: সন্
প্রায়ত—ভূরসা বজেন ভূরে। ব্রেরেতি।

এবং বহুৎ কার্বাং কামরিকা লোকবদুলানাৎ; সতপোহতপাত। তত্ত প্রাক্ত তপ্ততেতি পূর্বাবৎ; বনোবীর্যান্ উন্কাননিতি—বর্ষের পদার্থনাহঃ প্রাণাঃ চক্ষুরাদরঃ, বৈ হলঃ, বলোহেতুবাৎ; তেরু হি সংস্থ গাতির্ভবতি, তথা বীর্যাং বলমনিন্ শরীরে। ন হাৎকারপ্রাণো বশবী বলবান্ বা তবতি। তথাৎ প্রাণা এব বলো বীর্যাং চামিন্ শরীরে। তদেবং প্রাণেশকাং বলো বীর্যান্ধকান্ত উৎকারবং। তদেবং বলোবীর্যান্ততেরু প্রাণেরু উৎকারেরু শরীরান্ধিকারেরু তৎ শরীরং প্রধাপতেঃ বন্নিত্ব উক্ষ্নভাবং সরম্ পরিষ্ক, শরেধাংচাতবং। ততা প্রভাপতেঃ শরীরান্ধির্গততাণি তথিরের শরীরে বন আসীৎ; বথা কতাচিৎ প্রিয়ে বিষয়ে পূরং গততাণি বনো তবতি, তবং ॥৮ ৪০৪

্টীকা। উণাভিবিৰে) সকলে সভি স্থাবিৰেৰ ৰাজ্যভোটিভা কিৰ্ভৰত্তৰেৰ ইভাশভা প্ৰভীক্ষাদায় ভাংগৰ্থানাং—পোশ্কামন্ত্ৰেভ্যাদিনা। ভবেৰ

শক্ষরত অববেধক্ষিত্যভয়য়ং বাকাবিধ্যা বিশিক্ততে। ভূরোধভিণাকভাগব্যেরত ছুৰুৰ্। ইতিশ্ৰো অভানরভেতাবেদ সংব্যাতে। কবং পুদরেদ ব্ভাদানত প্রজাপতে-भू क:-नरनाकि:। न वि न नृर्ववरायययक्तिकेर कर्षानिकावपार अवाव-जरुधार-স্করেতি। ভবেৰ শাইছভি—ল প্রজাপতিরিতি। ধ্বাহাতে ধ্বনি ব্রহান: व्यवस्थक क्लार्क्र । वर्गा विश्वां पर्छ। जुला परवाहणाह । छवा वर्षाक्रमाहृतः শ্ৰানাৰপ্ৰতৰত আহ-জ ভদ্ধাবেভি। अवाण्डियन(यथवाममानिनिहो 7 खान-विकासन क्यारिश निवृश्वा कृत्या परश्रहाता, कृत्यारक्षारे हित्यान नायक-क्लांबब्रहाः बचवानएखरताः एकाकावाविकार्यः। अवान्वित्रीयतः, व ७७ इःवाचक-करपूर्वात्वक् पुरक्कानका अञ्चित्रनार कर्मनविश्वेद्यकार-स्मार्श्वेद्यद्यक्ति। ক্ৰবেভাৰত। বিৰক্ষিত। ছতিঃ নিছেতাপ্লাহ - এব'মডি : অবকাটামাঃ---ল তপ ইতি। वृद्दाशेनाः वनात व्वत्राव - यत्नारसञ्जानिछ। সাবরতি—তেনু ছীতি। প্রাণা এবেডি তথাপদার্থ:। সংস্থ হি তেনু শরীরে বলং ভৰতীতি পূৰ্ববৰেৰ বেতুৰৱে:। উক্তমৰ বাভিবেৰবারা কোরবতি—স্ স্থীতি। প্ৰজ্ञানাং ৰণজ্বং বীৰ্ষান্ধ চোপদক্ষেত্ৰ্য বাৰ্যাৰ্ধ্য দিশমহন্তি- তেমে আমিতি। তৎ প্ৰাণেশ-ইভাষি বাচ্টে--তদেব্যিত্য'দ্মা। বহারারণতক প্রমাণ্ডের্ভবনানসাহ —**उरवा** डिग ४॥ ०।:

ভাষ্যানুবাদে — লখ ও জ্বান্ধের বর্রণানর্রণার্থ এই করা বলিতেছেন বে, তিনি (প্রজাপতি) কামনা করিলেন,—পুনর্গি মহাবজ্ঞের জ্বন্ধান করিব; এবানে এই 'ভূরঃ' শব্দে প্রজাপতির জ্বান্তর সহল স্বতিত হইছাতে, অর্থাৎ পূর্বজ্বন অপেকা করেরা 'ভূরঃ' শব্দের প্রব্যাত হইছাছে। অভিপ্রায় এই যে, সেই প্রজাপতি পূর্বজ্বান্ত (পূর্বজ্বান্ত) অবমেধ বজ্ঞ করিয়াছিলেন; তিনি সেই ভাবে তাবিত হইয়াই—পূর্ব জ্বান্তর সেই সংখ্যার স্ইরাই করের প্রব্যার প্রান্ত হইয়াছিলেন। তিনি সেই অধ্যমেধ বজ্ঞের ক্রিয়া বা অমুষ্ঠান-প্রতি, এবং তাহার কারক (কর্তাপ্রস্তি) ও ক্লবিবরক সংখ্যারসহকারে প্রান্ত্রত হইয়া কামনা করিয়াছিলেন বে,—আনি পুনশ্চ রুহৎ বজ্রের অস্থ্রান করিব।

তিনি এই প্রকার বহৎ কার্য্যের কাষন। করিয়া সাধারণ লোকের স্থার পরিপ্রাপ্ত হইলেন; তিনি তপজা করিতে লাগিলেন। সেই প্রাপ্ত ও তপজাযুক্ত প্রকাপতির পূর্ববিৎ বশঃ বীর্য্য প্রায়ন্ত্ ত হইল। প্রতি নিজেই বশঃ ও বীর্য্য কথার অর্থ বলিতেছেন, প্রাণ ও চক্ষঃ প্রকৃতি ইলিরসমূহ বংশালাঙের হেতু বলিয়া বশঃ-পদবাচ্য; কেন না, সেই ইলিরপণ বিভ্যান থাকিলেই লোকের প্রতিষ্ঠা হইরা থাকে; সেইরপ প্রাণই বার্য; অর্থাৎ এই শরীরে বলম্বরণ;

কেল লা, বাহার প্রাণ বহিনতি হইরা বার, লে কবনও বববী বা বলবাৰ্
হইতে পারে না; অতএব প্রাণসমূহই এই শরীরে বনঃ ও বলবার । উক্তপ্রকার প্রাণারণ বলো বার্বা এই শরীর চইতে বহির্গত চইবার মত হইল,
তখন প্রকাণতির সেই শরীর ক্টাততাব প্রাপ্ত হইবার উপক্রম করিল, অর্থাৎ
অবেধা বা অপবিজ্ঞের ভার হইল। সেই প্রকাণতির মনটা কিন্তু শরীর হইতে
বহির্গত হইরাও সেই শরীরেই ব্রহ্ম। বেমন কোন ব্যক্তির অতিপ্রিম্ন বিষয়
মূরপত হইবাও তাহার মন সেই বিষয়েই নিবিষ্ট থাকে, ইহাও তারণ ৪৮৪৬।

গোহকাময়ত নেধ্যং ম ইদ্ধে স্থানাস্থ্যানেন স্থামিতি।
ততোহখঃ সমভবদ্ যদখং, তথেষ্যমন্ত্রিতি তদেবাখনেধস্থাখমেধ্যম্। এম হ বা অথ্যেধং বেদ য এন্যেবং বেদ।

তমনবরুকোবাংশ্যত। তথ সংবংদরশ্য পরস্তাদান্ধন-আলভত। পশূন্ দেবতা ভাঃ প্রত্যোহং। তত্মাৎ সর্বদেবতাং প্রোক্ষিতং প্রাজাপত্যনালভন্তে।

এষ হ বা অশ্বনেধা য এষ তপতি, তক্ত সংবৎসর আত্মাহয়মগ্রিরকস্তক্তেনে লোক। অংশ্লানঃ, তাবেতাবর্কাশমেধে। সো
পুনরেকৈব দেবত। ভবতি মৃত্যুরেবাপ পুনর্মৃত্যুং জয়তি,
নৈনং মৃত্যুরাপ্রোতি মৃত্যুরক্তাত্মা ভবতি এতাসাং দেবতানামেকে।
ভবতি ॥ ১॥ ৭॥

ইতি প্ৰথমাধ্যায়স্ত ৰিতীয়ং ব্ৰাহ্মণম্ ॥ ১ ॥ ২ ॥

ज्यहालार्थः।—तः (প্रकार्शिः) चकायग्रठ,—(व (यम) हेनः (यग्नोतः) (वधाः (विवाद वज्ञार्थः) छाद, वत्तम (यग्नोतः) चायार्थे (यग्नोत्रवान् ह) छाम् (छत्वाम्), हेलि [कृषा छव श्रीव्रदणे]; यद (यथाद छिरदांशार) [यग्नोत्रविषः] चयः (चयाद - क्षीष्ठमञ्जवर), छछः (छवाद (हर्स्छाः) चयः (चयारक्षकः) त्रव्यवद, [ववाक्त छदश्रदणार] छर (छर्सव पत्नोतः प्रवः) (वयाम् चक्रूर हेलि, छन् वव (छवारक्षकः) चयाव्यवमा (चयाय्यवमा (चयाय्यवमा वक्र्यः) स्वयव्यवमा (चयाय्यवमा वक्र्यः) स्वयं (वयाय्यवमा वक्रयः) स्वयं (वयाय्यवमा वक्रयः) स्वयं (वयाय्यवमा वक्रयः) स्वयं (वयाय्यवस्व

विवेद ११ (वर्षस्वरनायत्रहण्डर) त्वर (कार्नाक्ष), [कः १---];रः (क्वर) कृष्य (यर्षाक्ष अन्तर्व) अन्तर (वर्षस्वर) त्वर (कार्नाक्ष)। [अका-अक्टिइंच नाकावर्षः नव अस्तिक्ष व्यक्तिक व्यक्ति होत्र होत्र कारः]

[स्थानिक: पापानराव नकार्तन कार्तिवा] क्य (नक्ष्य) जनवस्था (पण प्रवर्तिवय कार्य प्रकृष) अव प्रवृष्ठ (प्रविवय)। नरवरम्बण नक्ष्य (नरवरम्बण क्ष्य (नरवरम्बण क्ष्य (नरवरम्बण क्ष्य (नरवरम्बण) क्ष्य (नरवरम्बण) क्ष्य (नरवरम्बण) क्ष्य (क्ष्य कार्य) क्ष्य कार्य (क्ष्य कार्य) क्ष्य कार्य (क्ष्य कार्य) क्ष्य (क्ष्य कार्य) व्याक्ष कार्य (क्ष्य कार्य) व्याक्ष कार्य (क्ष्य कार्य) व्याक्ष कार्य (क्ष्य कार्य) (व्याक्ष कार्य) व्याक्ष कार्य (क्ष्य कार्य) (व्याक्ष कार्य) व्याक्ष कार्य (क्ष्य कार्य) (व्याक्ष कार्य) (व्याक्य) (व्याक्ष कार्य) (व्याक्य) (व्याक्ष कार्य) (व्याक्ष क

[कारतो क्षांत्रकः ? हेणाह—] त्यः ह देव अवस्यकः, यः जवः (आविष्ठाः छण्ठि (सन्द श्रकानविष्ठ)। नरवरनतः (माकश्रिकः वरनतः) छण्ठ (अवस्यवक्षिणः) आवाः (नतोत्रः, छित्रवर्षाणः)। अवस् (भाविषः) अविः अर्कः (छरनावनक्ष्ठः); हेद्य (माकाः (वर्षाण्यः) छण्ण आवानः (नतोत्रा-वव्याः)। (छ) ज्ञाः (वर्षाण्यः) कर्षाव्यादः) एक आवानः (नतोत्रा-वव्याः)। (छ) ज्ञाः (वर्षाण्यः) कर्षाव्यादः) व्या ज्ञाः (व्या छव्छः, अव-द्यक्षण नाव्याः); ना छ भूनः (वाकामणादः) व्या ज्ञाः (व्या छव्छः; क्षाः ना (व्यवः) हेणाह—] मृद्यः (मृत्यात्रकः श्रकाणिः) ज्ञाः व्यावः (व्यावः)। [हेणानोः विश्वाकनवृद्यः —] [ज्ञाः व्यावः (व्याः मृतः मृष्यः व्यावः व्यादः (व्याः मृतः मृष्यः व्यावः व्यावः (व्याः मृतः मृष्यः व्यावः व्याव

অনুলালুবাদে।—দেই প্রঞ্জাপতি তখন কামনা করিলেন—আমার এই শরীর মেধ্য (পবিত্র) হউক; আমি এই শরীর ঘারা শরীরবান্ হইব; [এইরূপ চিন্তা করিয়া তমধ্যে প্রবেশ করিলেন]। যেহেতু, [এই শরীর প্রাণাভাবে] অম্ব (= ফাড) হইয়াছিল, [এবং প্রজাপতির প্রবেশে] আবার তাহা মেধ্য (পবিত্র) হইল, সেই হেতুই [উহা 'অম্ম' ও 'মেধ' শক্ষবোগে ক্ষমেধ নামে অভিহিত হইল; ইহাই] অম্মেধের প্রথমেধন। যিনি প্রথমেধনে বংগাক্তথাকারে জানেন, ভিনিই প্রকৃতপক্ষে প্রথমেধ-রহস্ত জানেন, (প্রপরে জানে না)।

প্রজাপতি সেই অথকে আবদ্ধ না করিরাই চিন্তা করিরাছিলেন।
তিনি সংবংসরান্তে সেই অথকে আপনার উদ্দেশে (প্রজাপতির উদ্দেশে) হিংসা করিরাছিলেন, এবং অপরাপর পশুকে অপরাপর দেবতার উদ্দেশে উৎসর্গ করিয়াছিলেন; এই জন্মই বাজ্ঞিকগণ সর্ব্ধ-দেবতাত্মক প্রোক্ষিত (মন্ত্রপূড) পশুকে প্রাজ্ঞাপত্যরূপে উৎসর্গ করিয়া থাকেন।

এখন এই অশ্বনেধের দৈয়তরূপ কথিত হইতেছে—এই বিনি
আদিতারূপে তাপ দিতেছেন, তিনিই সেই অশ্বনেধ; সংবংসরকাল
তাহার আস্মা বা শরীরাবরব; আর এই পৃথিবীগত অগ্নি হইতেছে
অর্ক; স্বর্গাদি লোকত্রয় হইতেছে তাহার আস্মা বা অবরব। সেই এই
অর্ক ও অশ্বনেধ নামত: ভিন্ন হইলেও বস্তুত: ভাহারা একই দেবতা—
মৃত্যুত্বরূপ। অশ্বনেধ-রহস্তবিৎ ব্যক্তি পুনমৃত্যুক্তে জয় করেন, মৃত্যু
ইহাকে প্রাপ্ত হয় না; মৃত্যু ইহার আয়্মস্বরূপ হইয়া থাকে, এবং এই
সমস্ত দেবতার এক—সমন্তিভূত মৃত্যুত্বরূপ হন; [ইহাই অশ্নেধ-বিজ্ঞানের ফল] ॥৯॥৭ঃ

हेडि अवमाधारित विजोत बाक्यानत वाथा। । ১ ॥ २ ॥

भाक्यक्त ज्ञास्त्र भ्राप्त । न ज्ञास्त नतीत नजनाः नम् किन्
प्रकाशिक, উচ্যতে—সেইকামরত। कर्न् १ त्वराः त्यार्थः विकार त्य वन
हेनः नतीतः छार ; किन्, पापतो पापतार्ग्य पत्त नतीत्वन नतीत्वन छातिछ
— अवित्यन। वचार अस्त्रीतः विद्यानार नजनावीदाः नर वन्य प्रचार,
छक्षः ज्ञान्त्रः नवज्यर ; ज्ञान्यनाव। अन्नानिज्ञित्वन नामाविज्ञ स्वरू,
प्रचाक्र नृत्वरश्चत्यार नजन्यानीदीप्रान्यवाः नर त्यवावस्र, ज्ञान्य प्रचारव्य प्रवादवाः क्राप्तवः क्राप्तवः प्रवादवन्त्रः व्यवस्त्रवादः क्राप्तवः क्राप्तवः व्यवस्त्रवादः क्राप्तवः व्यवस्वयः व्यवस्त्रवादः । क्रियानावनक्राप्तवा विकारः ; न ह अन्नानिज्ञत्विज्ञ द्वारः ।

 কুণ্ডয়া স্বক্ষোণাস্মং বিধান্তব্যবিভ্যারভাতে। পূর্বতি জিয়াপ্য বিধারক্তা-কুরুত্বাৎ, জিয়াপ্যাণেক্তাচ্চ প্রকর্মস্ত, অয়মর্থেছিবপন্যতে।

्राचन व देव चर्षायवर क्रकूर दवर—यः कन्तिर, अनवप्रयु चश्चित्रभवर्कः ४ गरवाक्रम्, . अपर प्रकारायम नवारमम अवर्गावारमम विरामपायम विभिद्रेर (यह, न अर्पा-श्चरमधः (तथ, माणः ; खन्यारययः (विष्ठता देखार्थः। कथम् । खन्न गर्फातवाः (यर छारकर्मनवार,-- छत ध्रजाणिट: "कृश्मा र(सन कृशा र(कश") छि कार्यात्रचा चाचानरवर भक्त (वधार कन्नविषा, छर भक्ष्य चनवक्रदेश व छेश्महेर भक्षय-(बाधवक्रदेवर मूक्कवाक्षरम्, व्यवक्रक व्यक्तिक्षरः । एर मरवरम्बम्। भूवमा भवकार উৰ্দ্ আন্ধনে আন্নাৰ্থ্য আনহত—প্ৰভাণতিখেবতাক্ষেন ইভোতং, আনহত चानकः क्रवान्, र्नन् च्यान् आयानावनारः एवरण्याः वनारेवरणः अरणोः ৰং প্ৰভিপৰিত্বান্। ৰ্লাচেবং প্ৰশাণতিব্যৱত, ত্ৰাব্যেৰ্ অভোচ্পুত্তেন विविना चाचानः भक्ष्यतः त्यवार कहाविषा, 'मर्मापवालाहर श्रीकाषाना:; **जानगर्मा परः मध्यका अव माम्; जन ३**७८३ भगत्वा आमादिना वर्षा-देवराज्य चडारा । (वराजांका चानजारक मध्यम्बक्ष्णांका अव' केलि विचार । चछ अरवणानीः नर्वरण्यकाः (आक्रिक्टः धाकालकः मानकस्य मास्त्रका अवस्। धन र ना अचरमरना न धन छपछि, मरचनः पछनाधनकः अन्त्रः, न अर नाकार कनकृत्वा निविश्वत्व-'अर ह ना वर्षामध्यः' (कारानी ! व এব সবিতা তপতি অপদবভাগরতি ডেজ্গা; ত্যাস্য ক্রতুফ্লায়নঃ সংবৎসরঃ कामनिश्यक काच्या महीद्रम्, छद्रिक्षश्चाद मःवरमद्रमा। एरेमाव व्यवस्थानः विताशाचा क कमना क्रांच्यकराम क्षेत्र निर्देश । वार निर्देश विताश्री का সাধনভূতঃ; তথ্য চার্কথ্য ক্রতৌ চিত্যথা ইমে লোকার্মনাছণি আর্থান: मन्नोत्रावत्रवाः। छवाठ वाावाछः—"छमा शाठी विक्" देळाविना। एठो अधा-विकारिक वर्षावित्वविक वर्षावित्व क्यानिक क्यानिक क्यानिक व्यक्ति विकार विक স সাক্ষাৎ ক্রত্ত্বপ: ক্রিয়াস্থক: ; ক্রতোরপ্রিসাধাদাৎ তজ্ঞপেণৈর নির্দেশ:। क्ष्माश्राक्षाक कनमा क्रमुद्धारित निर्देश-"बाविरकार्यावयः" हेलि ।

তৌ সাধ্য-সাধনো ক্রত্-ক্ষত্তাবগ্নাদিতে। —স। উ, প্নতৃয়:, এতৈৰ দেবতা ভবতি। কা সা ? মৃত্যুরেব ; পূর্বমণি একৈবাসীৎ, ক্রিয়া-সাধন কল-তেলার বিভন্তা ; ভবাচোক্তম্—"স তেথাআনং ব্যক্তকত" ইতি। সা পুনরণি ক্রিয়ানির্কৃত্যুত্তরকাশম্ একৈব দেবতা ভবতি —মৃত্যুরেব ক্ষরণা। বা পুনরেবম্ এনমখনেধং মৃত্যুবেকাং দেব াং বেল- অহমেব মৃত্যুরিক অখনেধ

वका (वक्का वज्रभाषाधि-माधनमाधा—रेकि: माश्यवहर्ति, भूतवृ क्रार भूत-पंतर्गत्, मक्ष्य पृत्रपंतर्गात म बात्रक देवार्थः। जनकाशिन मृक्तिकार भूतताध्य वाष्, रेक्काणकार—देनसर मृक्त्याध्याकि। कचाष् १ वृक्षाः जदेनात्ररविवश्याधा कविकः, विक, वृक्तित्व कनवनः मन् वक्षामार स्वरकानात्वरका कविकः, करेनाकर कनव्य ॥ २ ॥ १ ॥

रेठि व्यवनाशास्त्र। विठीशः अध्यक्षणासम् ॥ > । २॥

ীকা। স্বাস্থানাভাষালাকে স্ভাপি ব পুরন্ধনিব্ এবেলো বৃচ্চী, পরিচার-পবিএইবেলিবং, ইতি শকতে—ল ভালিম্মিন্তি। অভানবলাং পরিচার্চপরিপ্রেরিলি সন্তবভীতাহি—উচ্চান্ত ইডি। বীতবেকত কামনা অগুড়েভি পর্কতে—কথ্যমিতি। নামর্ব্যাতিপরাং অপরীর্ম্যাণি প্রজাপতেন্ত্রপানিবিভিন্তি বহানো ক্রভে—মেধ্যমিতি। কামনাক্রমাং—ইডি প্রাব্যেক্তে। তথাপি কথা প্রকৃতবিক্রতিসিভিনিভাগি ভাবে—ইফি প্রাব্যেক্তে। তথাপি কথা প্রকৃতবিক্রতিসিভিনিভাগি ভাবে—ইফান্টিভা বছলো বলাহিতি ব্যাখাতঃ। দেহভাবতেংশি করা প্রকৃপতিভাবতাহি—ইফান্টিভা বছলো বলাহিতি ব্যাখাতঃ। দেহভাবতেংশি করা প্রকৃপতিভাবতাহ্ব করাইতি ভাবং। তথাপি কর্মধ্যেবনারবির্ক্রচনিভাগিভাহ—ইফান্টেভা ক্রভেগান্তরভাবতাহিতি ভাবং। তথাপি কর্মধ্যেবনারবির্ক্রচনিভাগিভাই—ইফান্টেভা প্রকৃপতিভাবতাহিতি ভাবং। তথাপি কর্মধ্যেবনারবির্ক্রচনিভাগিভাইৎ, পুরন্তব্যাক্রমান্তর্ভিত বেশাহেনিভ্রুৎ, অতঃ সোচ্ববেশং তঞালাল্যাৎ প্রজাপতিরিল ভবেতার্যং। নতু প্রজাপতিত্বেলারবেশ্য ভতিবেশিবেশ্যিনী, মধ্যেক্রপণত্রের প্রস্তিভাব ক্রভুপাননাভাবাহং অভ আহ—ক্রিক্রমিতি।

নপু ক্ষণত ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ব্যাহিন ক্ষণ্ড ক্ষেত্ৰত ব্যাহন ক্ষণ্ড বহু পাছেক প্ৰাণে ক্ষণ্ড ক্ষেত্ৰত বিশ্ব ক্ষণ্ড ক্ষণ্ট ক্ষণ্ড ক্মণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ট ক্ষণ্ড ক্মণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ্ড ক্ষণ

এবং শব্দাৎ প্রসিদ্ধার্থদ্য ভাতি, সূতো বিবিষ্টিভাব—ক্রপ্রমিড়ি। "এব হ বা অব্যেবং বেদ" ইড্যাংদ্য বিবন্ধিভভ বিধেত্ বিকাং করোডি—ভ্রেড্রাট্য দেনা। উপাতিবিধি-প্রভাব: সপ্তমার্থ:। কথং জু পশুবিষয়ং দর্শনং, ভর্মপারতি—ভ্রেড়ি। এবসনন্তরনাত্যে পর্যন্ত সভীতি বাবং। অব বিবন্ধিভবিধিসভিষ্ণাতি—অস্ত্রাচ্চেড়ি। প্রজাগতিবিধং ক্ৰাবছাৱাৰ অবভতেভ্যত্ৰ কিং প্ৰবাণৰ ং ইত্যাপভ্য সম্প্ৰতি তৎকাৰ্যভূতাত্ব প্ৰভাৱ তৰাবিবচেটাবৃট্টবিভ্যাহ—অক্ত একোক্তি। প্ৰোক্ষিতং মন্ত্ৰণঃভূতং পণ্ডবিতি বাবং।

ন্ধাৰিত্যক্ত ক্ৰতুক্পৰেন ক্ৰতুৰে তদ্ধেতাৰংগ্ৰেণাঝ্যাৰোগাৎ ন্যুক্তনগ্ৰোদিভাষন্, ইত্যা-দ্বাগি—তালিতি। ক্ৰতুক্তনাথ তদাঝা সৰিতে! ডেছেতুক্তভোলিগৈ, তেই উক্তিপাশ্ বৃথিপানিতোপাসনাদিব্যাপারেই দক্তে একৈব প্রাণাঝা দেবতেতি ভয়েবৈক্যাক্তিরিভার্য:। একৈবেকুক্তে প্রকৃত্যোরগ্রাদিতাবো: নক্তরপার্থেন্ন ক্ষতে ক্রা দেভি । কথা ধ্যোবে-ক্ষ্মণ্ একছে বা কবা বিষ্মৃণ্ ভঞ্জান প্রতিমানিত। উক্তেপে বাক্যোপক্রমন্ত-ক্লান্তি—তথা ডেভি ৷ পুনরিভাগেরখা নিগমন্তি—লা পান্তিতি। নম্ ক্লক্তবার্ম্যক্রমা প্রাণারনা ক্ষ্যাদিতাবোক্ষেত্রা বদত। প্রকাশ্ব । বশ্বতমিতি, ক্লোক্তন্থ প্রিক্তি। এক্ষ্মভিন্নবন্ত্র । ৭ ।

हेडि अवस्थाराष्ट्र विहोतः वाक्षणम् : > : - ।

ভাষ্যান্ত্রাদে। প্রদাণতি সেই শরীরেই নিবিইচিত হইয়া কি করিয়াহিলেন, ভারা বলা হইডেছে—তিনি কামনা করিয়াছিলেন। কি প্রকার ? না, আমার এই শরীরটি নেবা —মেধার বোগা, অর্থাৎ বজোপবোগী হউক; অপিচ, আমি এই শরীর বারা আয়বা আয়বান্ অর্থাৎ সম্বীর হইব; এইরপ চিন্তা করিয়া তিনি তয়বো প্রবেশ করিলেন। বেহেতু তাহার বিয়োগে বশোবার্থাবিহীন হইয়া সেই শরীরটি স্মাত হইয়াছিল (শেল্বং-পৃতিভাবাপরের মত হইয়াছিল), সেই হেতু ঐ শরীর 'অব' (অব

নাবে অভিহিত) হইল; সেই কারণে স্বরং প্রকাশভিও আর নাবে অভিহিত হইলেন; ইবা বার। অস্বেরও প্রশংসা করা হইল। পুনক্ত বেকেড়্ বলোবীর্বোর অভাবে অবেধা বা অপ্রিত্ত হইরাছিল, সেই শরীরই আবার প্রজাশভির প্রবেশের ফলে বেধা (প্রিত্ত) হইরাছিল, সেই হেতুই অববেধের, অর্থাৎ অস্ববেধনামক ক্রতুর অস্ববেধন — অস্ববেধ-সংজ্ঞা লাভ হইরাছে। ক্রিয়া, ক্রিয়াসাধন ও কণ, সমন্তই ক্রতুর স্ক্রপ; অর্থাচ সেই ক্রতুরিও আবার প্রজাশভিস্করণ, এই বলিরা বঞ্জর প্রশংসা করা হইতেছে।

"উষ। বা অখন্ত বেদান্ত" এই স্থান বঞ্চনিৰ্কাহক অখনক প্ৰজ্ঞাপতিস্বন্ধপ বলা ক্ট্য়াছে। সেই বেৰা অখে এবং প্ৰজাপতিস্বন্ধপ ৰপোক্ত অজিতে বজ্ঞ-কল-ন্ধপে উপাসনা-বিধানের নিমিত্ত এই প্ৰকরণ আরক্ত ক্টেট্ছে। কেন না, অতীত প্ৰতিতে উপাসনা-বিধানক কোন ক্ৰিয়াপদ নাই, অথচ এই প্ৰকরণটি ক্ৰিয়াপদ সাপেক; কাপেই এখানে ইত্ৰপই বাকোর তাৎপৰ্ব্য প্ৰতীত ক্টতেছে।

हेनिहे यथार्थ अन्याम कार्तन, वि^{र्}न यासास्त्रश्चकारत अहे छक অবপত আছেন: একগার অর্থ এচ বে, বে কোন লোক এই অর্থবেথকে बनः चशिवनी चर्करक बहेशकाद्य चर्बार भारत मशक्तिवार र विरामन क्षामनी करा हहेरव. त्यहे विस्तवन-विश्वहेक्काल व्यवस्त हन, त्यहे विषान् शुक्रवहे शक्रुछल्क अवस्यव वक्क-द्रवृत्त अस्तिन, अन्दत्त सार्म माः अछवत ब्र(ब्राक्टश्रेकार्त्त व्यवस्थितत्वमा काना कार्यक्रमा कि श्रकार्त्त कानिए इहेर्द १ वर्ड व्याकाकाय क्षत्रवटः व्यवस्थितक छेशामनाहे वनिष्ठाइन.-প্রজাপতি প্রথমতঃ 'আমি প্রভূত পরিমাণে বল করিব' এইরূপ কামনা করিয়া, আপনাকেই বজ্ঞীয় পবিত্র পশুরূপে কল্পনা করিয়া, সেই পত্তক অবকৃত্ব না কবিড়াই -- উংস্পীকৃত সেই পত্তক না বাৰিচাই: অর্থাৎ প্রগ্রহণুক্ত (লাগাম রহিত) রাধিয়াই চিতা করিয়াছিলেন। সম্পূর্ণ এक बदम्दात्र भन्न तमहे भक्तक चालनात छत्काल, चर्बाद क्षवालिक-देवराज्य-রূপে আলম্ভন (বধ) করিয়াছিলেন। গ্রামা ও অরণ্ডলাভ অভাভ পওকে নিদিট্ট দেবতাগণের উদ্দেশে প্রেরণ করিরাছিলেন। বেহেতু বরং প্রকাপতি ঐক্লপ চিত্তা করিয়াছিলেন, সেই হেতুই অন্ত গোকও এইপ্রকার বংগাঞ্চ প্রণালীতে আপনাকে যেখা অখ-শতরূপে কল্পনা করিয়া 'আহি প্রোক্ষাধাণ (সংখ্যরসম্পন্ন) স্প্রবৈধতক ; আমি আমাকে আলম্ভন করিলে আমু-रेम्यलक हे बहेब, अवर आया ७ चादना चनदानत्र नक्तनरक चार्याहरू चनवन-

শাস শভাভ নিৰ্দিষ্ট দেবতার উদেশে খালন্তন করিব', এইরণ চিন্তা করিবে। এইবছাই বাজিকগণ এবনও প্রোক্তিত (উৎস্থাইত) পশুকে প্রভাপতির উদ্বেশে নিহত করিবা থাকেন।

এই বিনি তাণ দিতেছেন, ইনিই সেই অথবেণ; অথ পণ্ড বাবা যে বজ্ঞ সম্পাদন করিতে হর, "এব হ বা অথবেবং" কথার সেই বজ্ঞই সাকাং কল-বন্ধপে নির্দিষ্ট বইতেছে। ইনি কে । না, এই দে প্রধানের দীর তেজঃ-প্রভাবে অগৎ উদ্ধানিত করিতেছেন। সংবৎসরাত্মক কালই বজ্ঞকলন্ধণী সেই স্বর্যের আত্মা—শহীর; কেন না, স্ব্যা বারাই সংবৎসর সম্পাধিত হইবা বাকে; এই পৃথিবীগত অগ্নই সেই বজ্ঞরূপী সবিভার অর্ক ম্বাৎ অর্ক্য-সাধন; আর বর্গান্ধ লোকত্মই বজ্ঞে আহরনীয় সেই অগ্নির আত্মা—শন্ধীরাবর্ব, 'প্র্কবিক্ ভাহার নিরুইভাান্ধি বাকোও একথাই বণিত হইবাছে। সেই অগ্নিও আন্ধিও, এই উভয়ই প্র্কোক্ত বিশেষণে বিশেষত বজ্ঞ ও তৎফল্যরূপ অর্ক ও অব্বেধ। অর্কনামক বে পার্থিব অগ্নি, ভাহাই সাকাৎ সম্বেছ ক্রিয়াত্মক বজ্ঞবন্ধপ; বজ্ঞ সংধারণতঃ অগ্নিসাধা, এই কারণে এখানে বজ্ঞপেই ভাহার নির্দেশ করা হইরাছে; এবং কলও বজ্ঞসাধা; এই কারণে বজ্ঞকণ আনিতাকেও এখানে আহমেন্ধপে নির্দেশ করা হইরাছে (১)।

সাধ্য ও সাধন বরপ বেং ক্রিয়া ও তৎকলায়ক সেই অগ্নি ও আদিতা, উভাই আবার একই দেবতা হন। সেই দেবতাটী কে ? মৃত্যুট সেই দেবতা : পূর্বেও ইংবার একই ছিলেন, কেবল ক্রিনা, ক্রিয়াগাধন ও তাহার কলতেদ সম্পাদনের নিবিত্ত বিভক্ত বা পুথক হটগাছেন বাত্র; 'ভিনি আপনাকে নির্বালয়ে বিভক্ত করিলেন' এই শ্রুতিও ঠিক ঐরপই বলিরাছেন। তিনি ক্রেয়া সম্পাদনের পর পুনরণি সেই একট দেবতা হন—ক্রিয়াক্ষণায়ক মৃত্যুই (প্রশাভিত্তরপট) হন। বে ব্যক্তি এই অধ্যেধকে সৃত্যুরণী একই দেবতা বলিরা কানেন—আমিই বদায়ক অথ ও অভিরণ সাধন, সাধ্য ও অথ্যেধ্যারণ এক দেবতা, এইরপ অবগত হন; তিনি পুনর্মৃত্যু অর্থাৎ পুনর্মার মরণকে

⁽১) তাৎপর্ব্য — সত্তি বারা স্বাবেধ বক্স সম্পাদিত হর এইকস্ত স্থাবিকে 'ক্সাবেধ' বলা হইরাছে, আর আদিতাই স্থাবেধ বক্সের কল, অর্থাং পূর্কানকলে আদিতাপদ লাভ করিরাছে। এই কারণে স্থাবেধর কলকর্মণ আদিতাকেও এবালে 'অথবেধ' বাবে স্থাতিনিত করা হইরাছে। প্রথম্বছলে ক্সিয়ানাগনে ক্সিয়াপ্রের আবোপ ৷ আর বিভীরহলে ক্সিয়াকলে ক্সিয়ার আবোপ করা হইরাছে, এবং পরিশেবে ভত্তু-জ্বাকেই আবার প্রাণর্জ্বণে এক স্থাভির ক্ষেত্তার্য্যণে নির্দেশ করা হইরাছে।

জন্ম করেন; অভিপ্রায় এই বে, তিনি একবার সৃত্যুর পর আবার সৃত্যুতাপের অন্ত আর জন্ম পরিপ্রহ করেন ন।। সৃত্যু একবার বিজিত হইপেও পুনর্মার তাহাকে প্রাপ্ত হইতে পারে, এই আনভান্ন বলিতেছেন বে, সৃত্যু ইহাকে আর অধিকার করিতে পারে না। কারণ ? সৃত্যুই এবংবিধ জ্ঞানসন্দর প্রথম আর্মন্নপ হইরা থাকে; [হতরাং তাহার আর মৃত্যু সভাবনা থাকে না]। অপিচ, সৃত্যুই বক্ষকনম্মন্তে উক্ত দেবতাগণের বব্যে অক্তম দেবতা হইরা থাকেন। ইহাই অধ্যেধ্যক্ত-বিভাসন্দর পূরুবের প্রাপ্তব্য ক্র ১ শ ৭ ৪

हें जिन्दार। १६ विकोद बाक्त्य कांबासूनाय । १ । २ ।

তৃতীয়ং ব্ৰাহ্মাপম্। [উদ্যাধ-ৰাদ্যধ্য]

শাক্সর-ভাক্সম । "বরা হ" ইত্যাদাস্য কঃ স্বন্ধঃ ? কণাপাং আন-স্হিতানাং পরা পতিহন্তা মৃত্যান্ত্রতারঃ, অখনেধ-পত্যক্ত্যা অবেদানীং মৃত্যান্ত্রতাব-সাধন স্তরোঃ কর্ম-জানরোঃ বতত উদ্ভবঃ, তংগ্রকাশনার্বমূলীধ বাহ্যবার্ত্যতেঃ

নমু মৃতি । অক্সর জ্ঞান-কর্মণোঃ কণমু কৃষ্। উদ্যীধজ্ঞান-কর্মণোদ্ধ মৃত্যু আভাবাতি কৃষণং কলং কল্পতি। অত্যে ভিন্নাবৰর ছাং কলসা ম পূর্মকর্ম-জ্ঞানোস্কর-প্রকাশনার্থন, ইতি চেৎ; নায়ং লোহঃ; অগ্নানিভ্যান্মভাবভাত্মলীধ-কলসা প্রব্রোপোভাবে কণমুক্তম্—"এতাসাং দেবতানামেকে। ভবতি" ইতি। নমু 'মৃত্যু মৃতি ভোৱাং' ইত্যাদি বিক্রম্ম; ন, আভাবিক পাণ্যাস্থ্যিবহু আম্পান্য।

কোহসৌ বাভাবিক: পাণ্যাসঙ্গো: ? কুতো বা তসোদ্ধবা: ? কেন বা তসাতিক্রবণম্, কবং বা ?—ইভোতসার্থিয় প্রকাশনায় আব্যায়িকা-রভাতে। করম্ ?—

ট্রিক্রা। রাশ্বণান্তরন্ধতাংগ হক্ত পূর্ব্বেণ সংকাশতীতেন নোহজান্যান্ধিপতি—ভ্রমান্তেলান্তে। বিবৃদ্ধির স্বাধ্বন বক্তঃ বৃদ্ধির নির্কাতি—ক্রমান্যান্তি। সাকার্চা সাবাল পভিত্তি প্রতেক্রলা পরাপতিরু ক্রির্ভাগিকান্তি—ক্রমান্যান্তি। সাকার্চা সাবালে কর্মান্যান্তি ক্রমান্তির ক্রমান্তির ক্রমান্তির বালি কর্মান্তির বালি কর্মান্তির বালি কর্মান্তির ক্রমান্তির ক্রমান্তির বালি কর্মান্তির বালি কর্মান্তির বালি কর্মান্তির বালি কর্মান্তির বালি বালি ক্রমান্তির ক্রমান্তির ক্রমান্তির বালি বালি ক্রমান্তির ক্রমান্তির

জানকৰ্বনোক্তাৰকথা বজুং ৰাখণৰায় চাতাৰ্ বাবাাহিক। তু কিবৰ্বা, ইভাাৰতা ভজাতাৎ-

প্রানাহ—কোঁইলাবিভি। ক্য ব্যোজে বাহ্নাগ্যাহিক্ষোর্থ: শ্রের ভাভূ-বিভ্যাকাল্যাং নিকিপ্যাক্ষাণি ব্যাক্ষোভি—ক্রথমিত্যাদিনা।

ভাষ্যানুবানে। বক্ষামাণ "বরা হ" ইত্যাদি প্রতির সহিত পূর্বোজ্ঞ প্রতির সম্বর্ক কি "— পর্বাং কোন্ প্রস্থাদে "বরা হ" ইত্যাদি বাক্ষার আরম্ভ হবল, [তাহা কবিত হইতেছে—] (২)। প্রমাধ্যের ফল কবনের বারা আমসহ অফ্টিত কর্পের চর্ম ফল যে মৃত্যু-সক্রপতা-প্রাপ্তি তাহা কবিত হটরাছে। প্রতাপর এখন বাহা হটতে মৃত্যুসক্রপতা-প্রাপ্তির সাধনভূত কর্প ও জানের উৎপত্তি চইরাছে, তাহা প্রকাশ করিবার অন্ত এই "উল্থাব রাজ্য" ('বরাহ' ইত্যাদি প্রক্রণ) আংক হইতেছে—

ভাল, ইঃপুর্বেজ্ঞান ও কর্মের ফল বলা হইরাছে—মৃত্যুবর পতাপ্রাপ্তি,
আর উললাধ-প্রকরণে জ্ঞান ও কর্মের ফল বলা হইবে—মৃত্যুতার অভিক্রম
কবা; অতএব ফলের বিষয় বিভিন্নপ্রকার হওয়ার প্রপ্রকরণীর জ্ঞানকর্মের উৎপত্তি-প্রকাশনার্থ এই প্রকরণের জ্ঞারস্ত কি করিয়। হইছে পারে
লু—ইহা যাল বল, [তত্ত্তরে বলা যাইতেছে বে, ; না—ইহা দোম নহে;
কেন না, উল্লাথের যাহা ফল—আগ্র ও আদিত্যম্মরপতা লাভ, পূর্বেও
"এতাসাং দেবতানাম্ এ:কা ভবতি" এই সমন্ত দেবতার মহো এক জন হয়)
-- এই বাক্যে সেই কলই উক্ত হইয়াছে; [মৃতরাং উভয় প্রবর্গে ফলতেম
মৃত্যু অভিক্রম করা' ফলোয়ের ভ
বিক্রম হইতেছে ? না, তাহাও নহে; কারণ, এই 'মৃত্যু অভিক্রম নহে)।
মৃত্যু বিক্রম হইতেছে ? না, তাহাও নহে; কারণ, এই 'মৃত্যু অভিক্রম নহে)।

এই শাতাবিক পাণাদজিরণ মৃত্যটা কি ? কোধা হইতেই বা তাহার উত্তব হয় ? এবং কি উপায়ে ও কি প্রকারেই বা তাহার অভিক্রম করা বাইতে পারে ? কেনই বা এই সমন্ত বিষয় প্রকাশনার্থ আধ্যায়িকা আরম হইতেছে। [সেই আধ্যায়িকাট] কি প্রকার ? [তাহা বলা হইতেছে—

⁽২) ভাংপর্য-শান্তের উপদেশ এই বে, "নাসভঙং বাক্যং অযুঞ্জীত," অর্থাৎ অনজভ বা সংঘত্তীন বাক্য প্রয়োগ করিবে না; কাজেই এক প্রকরণের পর অভ প্রকরণ আরম্ভ করিতে ছইলেই পূর্বপ্রকরণের সত্তে ভাষার কির্পুণ স্বস্থা, ভাষা নির্কেশ করিতে হয়। ভাই ভাষাকার এবানে হিতীয় ব্রান্ধণের স্বিত ভ্রীয় ব্রান্ধণের একটা স্বস্থা বা উপবোধিতা প্রদর্শন করিতেছেন। নঠেৎ সংঘণ্ড বাক্য প্রিভরণের নিক্ট বাজুলোজির ভার উপেকশীর হইতে পারে।

বরা হ প্রাঞ্জাপত্যা দেবাশ্চাহরাশ্চ, ততঃ কানীরগা এব বেবা জ্যায়গা অহরা:, ত এয়ু লোকেয়ম্পর্কস্ত, তে হ দেবা উচ্-ইস্তাহ্মরান্ যত উদগীবেনাত্যয়ামেতি ॥ ১০ ॥ ১॥

স্কালাহাঃ।—প্রাজাপত্যাঃ (পূর্বোক্তক্ত প্রজাপতেঃ অপত্যানি) ব (প্রসিদ্ধে) দ্বাঃ (দিপ্রকারাঃ)—দেবাঃ চ অসুরাঃ চ; [আন দেবাসুর-শবাভাগে প্রজাপতেঃ বাক্প্রকৃত্যঃ প্রাণা উচারে]। ততঃ (তরোম বো) কানীরসাঃ (কনীরাংশ এব কানীনসাঃ কনিষ্ঠা ইতার্থঃ) এব দেবাঃ (ব্যোতমানাঃ সাক্তিকৃত্যঃ), ল্যানসাঃ (ল্যারাংশ এব ল্যারসাঃ (ল্যান্ঠা মহন্তরা ইতার্থঃ) চ অসুরাঃ (অস্ত্র প্রাণের রমমাণাঃ রাজসাক্তর এব) [বভূরুঃ]। তে (বেবাঃ অসুরাঃ (অস্ত্রাণের রমমাণাঃ রাজসাক্তর এব) [বভূরুঃ]। তে (বেবাঃ অসুরাঃ কৃত্যন্তঃ)। তে বেবাঃ হ (ঐতিকে) উচুঃ (উক্তনন্তঃ)—হন্ত (হর্বে) বজে (ল্যোভিটোমানো) উল্লাধেন (উল্লাধকর্মণা) অসুরাম্ অভ্যানঃ (অভিক্রেমারঃ, তান্ অভিভূর সং দেবভাবং সত্যমহি) ইতি ৪ ১০ ৪ ১ ৪

মূলানুবাদে।— প্রজাপতির সম্ভান চুই শ্রেণীতে বিভক্ত—(১) দেবতা ও (২) অহুর। তন্মধ্যে কনিষ্ঠ সম্ভানগণই চইল দেবতা, আর জ্যেষ্ঠ সম্ভানগণ হইল অহুর; তাঁহারা এই ভোগরাজ্যে পরস্পর স্পর্ক। করিয়াছিলেন। সেই দেবতাগণ পরস্পরকে বলিয়াছিলেন,—ভাল, আমরা জ্যোভিক্টোম নামক যজে উদ্গাধানুষ্ঠান ঘারা অহুরগণকে পরাজিত করিব, অর্থাৎ ভাহাদিগকে পরাস্ত করিয়া নিজেদের স্বাভাবিক দেবভাব লাভ করিব ॥ ১০॥ ১॥

শাক্ষয়-ভাল্য দা। বয় বিপ্রকারাঃ ; 'হ' ইতি পূর্বর্বাবদ্যাতকো
নিগাতঃ ; বর্ত্তবানপ্রকাপতেঃ পূর্বজন্মন বৃদ্ধ রুত্তব্য, তদর দ্যোতরতি
হ-শব্দেন। প্রাকাশতাঃ প্রজাপতের তদমাবহুদ্য অপত্যানি—প্রাকাশতাঃ।
কে তে ! দেবাকাশ্রাক্ত,—তদ্যৈর প্রকাশতেঃ প্রাণা বাগাদরঃ। কবং প্রভেষাং
দেবাপ্রবহু ! উচ্যতে—শাক্ষনিতঞান কর্মকাবিতা ভোতনাদ্ দেবা ভবস্থি;
ত এব বাভাবিক-প্রভাক্ষান্ত্রনিক্ষনিত-দৃষ্টপ্রয়োজন-কর্মজানভাবিতা অস্বরাঃ,
বেবের অস্ত্র রুবশাৎ ; প্রেভ্যো বা দেবেভ্যোহ্রভাং। ব্যাচ্চ দৃষ্টপ্রয়োজনকর্মভাবিতা অস্বরাঃ, তত্তবাং কানীর্বাঃ, কনীরাংস এব কানীর্বাঃ

पार्थिति इक्षिः; क्रमीशारतिश्वा अन स्वताः; क्षांत्रमा क्ष्याः क्षांत्राः पाकारिकी वि कर्ष-कान-श्रवृद्धिर्वस्थतः व्यागानार नाश्चविक्राशः कर्ष-कान-व्यवृद्धः, वृद्धेश्चरताक्ष्मारः, प्रकृति क्ष्योत्रकान्यः, प्रकृतिक्ष्यः व्यागान्यः, नाश्चविक्षः श्रव्यागान्यः, नाश्चविक्षः स्वागान्यः, नाश्चविक्षः स्वागान्यः, नाश्चविक्षः श्रव्यागान्यः, नाश्चविक्षः, व्यागान्यः, व्यागान्यः, नाश्चविक्षः, व्यागान्यः, नाश्चविक्षः, व्यागान्यः, नाश्चविक्षः, व्यागान्यः, व्यागान्य

্ এবং কনীম্বাদ্ভিত্যমানা বহুবৈদেশা বাহলাাবসুৱাশাং কিং
কৃতবন্তঃ ? ই'ত উচ্যতে—তে বেবা অংটবের ভিত্যমানা হ কিন উচুকজনতঃ ।
কণ্ম ? বর ইদানামন্তিন্ বজে জ্যোতিটোৰে উদ্যাধন উদ্যাধকর্মপার্থক
কর্ত্বরূপার্র্রেশন অভ্যাম অভিসন্ধানঃ; অহ্বানভিত্য বং দেবভাবং
শাল্পকাশিতং প্রতিপভাষতে —ইভ্যক্তবভাহতোভ্যা । উদ্যাধকর্ম-পর্যাবকর্ত্বরূপার্র্রণক জান-কর্মতঃ।মৃ; কর্ম বভাষাশ্য মন্ত্র্যাশাশ্য —বিধিৎসামানং "ত্রেতানি কর্পেং" ইভি: জানত্ত ইদ্যেব নির্পামাশ্য । ৩।

नस् देवनणादाद-क्रणिविध्यः वर्षनायः १ न काननिक्रणगणवस् । नः
"व अवर (वक्र"देखि वहनार । डेक्नीवश्रकार भूताकक्षश्रवगाह्ननीयविधिणविखि

हरः, न, व्याकव्यार ; डेक्नीवश्रका विदिश्वार ; विषाधकवनपाहात्र ;
व्याधावाद्यक्षण हानिण्यार अवर्धिर श्रवाकापार,विक्रानण ह निण्यक्षवगार;
"अटेक्ल्याकिक्रिक्व" देखि ह श्रव्यः ; श्रीपण वाभाषीनाक वदाविद्यहमार ;
न व्याधावाद्याक्षणाद्यः श्रीपण व्याधावाद्यक्षणाव्यक्षण्यक्षणाव्यक्षणाव्यक्षणाव्यक्षणाव्यक्षणाव्यक्यक्षणाव्यक्षणाव्यक्षणाव्यक्षणाव्यक्षण्यक्यक्य

चर्च मात्र शान्तानामम्, म चू विच्हाात्रिवनस्टिष् । मह चार, अट-

षांचै । स्वारं, छेनाक्य क्रवार्थाननरकः। म ; स्विनहीकार्यश्रिताकः स्वारं स्वारं

নাবাদৌ বৃদ্ধান্ত কিন্তু বিশ্বীতাং গ্রাহরং শারং দৃত্ত ভ্রাত্ বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধান্ত বিশ্বীতাং গ্রাহরং শারং দৃত্ত ভ্রাত্ বৃদ্ধান্ত ব্যাত্ত প্রতিপ্তেঃ প্রের:—ইতার্কনিতি চেং; ন; প্রতিবান্ত্তে ক্রের্তি প্রের:—ইতার্কনিতি চেং; ন; প্রতিবান্ত্তে ক্রের্তিপত্তেঃ। নামালাব্রক্ষণি ব্রুক্তিং বিপ্রীতাং গ্রাহরতি শারের্— ব্যাণ্যাবিব পুরুষ্টিন্—ইতি,নৈতং সংধ্বোচঃ। কলাং ? ভেলেন হি ব্রুণো নামালিবল্ধ-প্রতিপত্ত নামাণে বিশারং ব্রুক্তি:—প্রতিবাদ্ধান্ত বিশ্বীত্র। আলক্ষমান্ত ব্যাত্রালাবিব বিশ্বীত্র, মাত্রালিবলেব, ন তু নামান্তে ব্রের্তি। ব্যা ক্রাণাব্যিক্তি, ন ভ্রাণ্ডিতি—পুরুষ এবারামাত প্রাত্রপত্ত বিশ্বীত্র, মাতু তথা নামাংগ্রহ্ণি ব্যান্ত ব্যাত্রাহাত । ৬।

বৃদ্ধিরের কেংলা, নাজি ব্রন্ধতি চেং; —এতেন প্রতিষা-ব্রাদ্ধাদিৰু বিক্ষালি-দেংপি ক্রানিগুটীনাং ওলাতা। ন; ক্যাদির্ প্রিব্যাদিল্টিদর্শনাং; বিজ্ঞান-প্রিব্যাদিবস্তৃতীনাধের ক্যাদিবিবরে ক্রেপদর্শনাং। ভশাং ভংসামালাং নামাদির ব্রন্ধাদিল্টীনাং বিজ্ঞানব্র্যাদিবিবর্থনিছিঃ। এতেন প্রভিষা ব্রাদ্ধাদির বিক্ষাদিলেন-পিত্রাদির্হীনাক সভার্ভবিবর্থনিছিঃ। মুখ্যাপেক্ষাক্ত সৌর্ভস্পাদ্যাদির্ চ অগ্লিছাংদর্শিকাং মুখ্যাক্যাদিরভাবরং নামাদির ব্রহ্ত সৌর্ভাং মুখ্যাক্ষাদের স্ব্রহ্ত বিশ্বাদ্ধাদির স্ব্রহ্ত বেশিকাং মুখ্যাক্ষাদির স্ব্রহ্ত বেশিকাং স্ব্রহ্ত বেশিকাং স্ব্রহ্ত বেশিকাং স্ব্রহ্ত বেশিকাং স্ব্রহ্ত বিশ্বাদির স্বাদ্ধাদির স্ব্রহ্ত বিশ্বাদির স্বিদ্ধাদির স্বাদ্ধাদির স্বাদ্ধাদির স্বিদ্ধাদির স্বাদ্ধাদির স্বাদ্ধাদির স্বিদ্ধাদির স্বাদ্ধাদির স্বিদ্ধাদির স্বাদ্ধাদির স্ব

জিরাবৈশ্চাবিশেষাদ্ বিভাগানায়। বথা চ দর্শপৌর্ণনাসাদিজিরা ইংক্ষণা বিশিটোতকর্তব্যভাকা এবংজ্যপ্রস্কালা চ ইত্যেতদলৌকিকং বন্ধ প্রভা-লাভবিবরং তথাত্তক বেহবাটকারের ভাগাতে; তথা প্রসাদ্ধের-

त्व १७।वि १७ वसुनाविवर्षक्यन नाताक शेका छ --रेटका नवा विविधिविकि द्वह-बारेकारवर कानारक,-- इंशरनीकिक्यार ख्वाकुछरवर ख्विकुवईठीकि। व इ क्रियार्टिकार्ट । या गानार मुद्दारनायकरच वित्वत्याक्षि । य हाविन्द्रिका विभवाका वा भववाकाविककविवता वृद्धिक्रभवरक । ৮।

मप्टर्डताणानावनुक्रिविक तिर : क्रिनादेवीदेवाद्वारमा जावना मप्टर्डहा कानारकश्लोकिकानि : न उना नदबारबनदानिकारमध्यरकेतर किकिन्छ : चठः किशर्रेयः नावर्षाविष्ठानुक्रविष्ठि (६६ : न : क्रानना छवाक्रवाविषयक्रार । म हि समूर्वक्ष खार्यक कारमाशक समूर्वक्षकार क्याक्य ; किः कृदि ? अमान-ममविभवनार । म व छविनताता बु:बतम्रहंत्रचितत्रवार छवार्ववन् ; किर छहि १ (वक्षवाकार्यान्य । (वक्षवाकार्यिक वक्षवक्षवास महि, वक्षवंत्रविविद्वेर (६६, अमृष्ठि छ ; ता (१ए अमृष्ठेश्च विष्ठे , नामृष्ठि हि । अनम्रहेश्य बाका अवायबाक्रमणांविति हि (हर-न वक्राव्यक्रिमांठ भवानार मध्विक्रम-नष्ठाठ ; समूर्डिश्ट कु निक कामर्र्यान नमानि न्रार्क्ताव : काम्मर्राक्रीमर्क्त वाकार अवावः ভव'छ-इनवातिवः कर्खग्रविति, न ह रेपवातिवन्, रेखावच्चकाशायाः नवनजानायनि वाकाष्ट्रकं - "कुर्वार क्रियुक कर्ष्याः करवर अधिक नक्षम्" वेट्यावशायोनायककरम्बा : चकः नवशाख्यवा-शैमान चनाकाश्यमानपन् :)।

नवार्वत्व ह श्रवानावयं नवत्रवय्, चाठाक्त्रत्वरुषि हिद: म: 'चि (मक्क्बर्गिक केरिशालक:' वेटका बना धनवार्ड हारू 'न वाका वर्णनार ! म ह 'त्यक-र्सर्वकृष्टेरबार्यकः' देखावनानिवानान्यवर्ग (नर्सारन) सञ्चार्वत्रप्रवृद्धिकरणकरकः। তবা অতি-পদস্থিতানাং প্রথাত্ত্বরালিপ্রতিপাদক বাকাপদানাং বিশেষণ-वित्यवाकात्वन मरविष्ठः (कम वाद्यारः। त्यसीविकानवर शहबाच-कात्व बारबाबनाकावावयक्कविकि (5९: न: "तम्बिकाद्याकि भद्रम्।" "फिकाफ क्षत्रवादिः" हेि क्लजनगर, मानात-वीशाविधाविद्यानात्रकिवर्गमाकः। चन्डरनव्याक एक कानज, क्लाबिर कनअर्टदर्गायपाइननिर्धः। ১०।

श्रक्तिविद्यामिदेकमन्यद्यक (वमाध्यव विद्याद्यक ; न ठान्न्रक्षेत्रः मः। न ठ व्यक्तिवर्दात् अञ्चलकात्र चकत्रनात्रकात्रदेशवृत्ति । चक्तवाणा-कामनिष्टेकर हि ग्रह्मार्वतः श्राक्तिविश्वितार छार । प्रवार्वत्र अधिरवरमानमस्त्रवन्त चक्काश्राका वा अक्षानिक चनवाकिनवातारो देवर ककाव, चरवा -कोसुम् १ कोशान एकम्पान्यकाकोकाम्बाद्धाः स्वापन्यकाम्बाद्धाः कोशान কারাবিব পেরজানং ওবিবর-বাধান্তা-বিজ্ঞানেন। তারিব্ বা বতে বাঙাবিক-বিশ্বীতভানে অনর্থকরী তত্তকবভোকনপ্রয়ন্তিন ভবতি। বিশরীতজ্ঞান-বিশ্বীয়াঃ প্রবৃত্তেনির্ভিরেব, ন প্রর্থয়ঃ কার্য্যক্তাবে। তারং প্রতিবেধ-বিশ্বীয়াং বৃত্ত-বাধান্তাজ্ঞাননিউতেব, ন প্রব-ব্যাপারনিউতা-প্রভাহপাতি। তথেহাপি পরবান্তাবি-বাধান্তাজ্ঞানবিধীনাং ভারন্তাজ্ঞপর্যবানতৈব স্যাৎ। তথা তবিজ্ঞানসংস্কৃতস্য ভার্পরীতার্বজ্ঞাননিবিদ্যানাং প্রবৃত্তীনাম্, অনুর্থাব্যেন জ্ঞার্যান্তাক, পরবান্তাবি-বাধান্তা-জানস্কৃত্যা বাভাবিকে ভারাব্যবিজ্ঞানে বাধিতে, অভাবং স্থাৎ। ১১।

নস্থ কল্পানিকশ্বাদেঃ প্ৰথিত ব্যৱধাণায়াকান প্ৰত্যা পাভাবিকে ভ্ৰমণান্ধনিবিশহীভক্ষানে নিৰান্ততে, ত্ৰমণান্ধনৰ প্ৰয়ন্তাভাৱৰ অন্তি-বেধবিবয়েশ শান্তবিহিত প্ৰয়ন্তভাৱে৷ ন মুক্ত হাত ১৮৫; ন; বিপত্তীভক্ষান-বিশ্বনান্ত বিশ্বনিবাদান ভূমান কল্পান্ধক হাত, তথা শান্তবিহিত প্ৰত্যানান্ত ভালানান কল্পান্ধক হথা, তথা শান্তবিহিত প্ৰত্যানান্ত ভালানান্ত প্ৰয়ন্ত শান্তবিহ্ন কল্পান্ত প্ৰয়ন্ত শান্তবিহ্ন কল্পান্ত কল্পান্ত

নমু তত্ত মুক্তঃ, নিত্যানার কেবলগায়নিংমকরাং অন্থার্থরাভাবাচ অভাবে।
ন মুক্তঃ ? হাত েওং; ন; আবভারগাবেরাদিদোববতো বিহিত্যান। ববা
অর্গকাধার গোববতো দর্শপৌর্থমাসাদান কাম্যান কথালৈ বিহিত্যান, তথা
স্থানর্থ-বাজাবেজাদদোববতঃ কজানতেট্টানই-প্রাপ্ত-পারহার-রাসবেরাদিবোরবতক তথ্যেরিতাবিশেব-প্ররুক্তঃ ইট্টানই-প্রাপ্ত-পরিহারাধিনো
নিত্যান কথালে বিশারক্তে, ন কেবলং শালানামন্তান্তের। ন চ আরহোত্ত-দর্শপৌর্নাস-চাতুখাত্ত-পশুরহ-সোমানাং কথালে বতঃ কাম্যানিত্যভাবেকোছাত্তকর্ত্ত্যভাবি-প্রাপ্ত পশুরহারার্থনঃ তথবাত্তের নিত্যানি—ইতি মুক্তমু; তং প্রতি
বিহিত্তরাং। ন পরমান্ত-বার্থান্তা বিজ্ঞানবতঃ শ্রোপার্যাত্বেকেশ কর্মান্ত্র-বিশ্বতরাং। ন পরমান্ত্র-বার্থান্তা বিজ্ঞান্তান্ত্র-বিশ্বতর্যকর বিশ্বতর্তা। ন চ ভপমান্ত্র-ক্রেরাকারকাদিবিজ্ঞানত কথা গর্ভিক্রপান্তরে, বিশেইক্রিরাসাবনাদিজ্ঞানপূর্ককরাং ক্রিবিশ্বত্যা ন চ
বেশকালাভ্যবিজ্ঞান্ত্রান্ত্রন্তর সভার্থাহিশঃ কর্মাব্যবেহাছি। ভোজনাদিপ্রস্তার্থার্থন্তর ভাছিতি চেং; ন; অবিভালিক্রেরামানিন্তর্যাৎ ভোজনাদিপ্রস্তার্থার্থন্তর ভাছিতি চেং; ন; অবিভালিক্রেরামানিন্ত্রাৎ ভোজনাদিপ্রস্তার্থার্থন্তর প্রাদিতি চেং; ন; অবিভালিক্রেরামানিন্ত্রাৎ ভোজনাদিপ্রস্তার্থার্থন্তর প্রাদিতি চেং। ন; অবিভালিকের্যার্থানিবিভিন্তাৎ ভোজনাদিপ্রস্তার্থার বিরুদ্ধ স্থান্তর প্রাদিশিক্রাণ্ড বির্থিয়াং ক্রেরামানিন্তর বির্থিয়াং বির্থিয়াং ক্রেরামানিক্রিয়াং ভোজনাদিপ্রস্তার্বার্যান্তর বিরুদ্ধ স্থানিক্রিয়ার বিরুদ্ধ স্থান্তর বিরুদ্ধ বির্ধিয়ার বিরুদ্ধ স্থানিক্রিয়ার বিরুদ্ধ স্থানিক্রিয়ার বিরুদ্ধ সামানিক্রিয়ার বিরুদ্ধ স্থানিক্রিয়ার বিরুদ্ধ সামানিক্রিয়ার বিরুদ্ধ সামানিক্রিয়ার বিরুদ্ধ সামানিক্রিয়ার বিরুদ্ধ সামানিক্রাণ্ড বিরুদ্ধ সামানিক্র স্থানিক্র সামানিক্র স্থানিক্র সামানিক্র স্থানিক্র স্থ

প্রবৃত্তে: আৰক্তকভাত্বপত্তে: ন তৃ, তথাছনিয়তং কলা চিৎ ক্লিয়তে, কলাচিয় ক্লিয়তে চেডি, নিভাং কর্মোপপছতে। কেবশ্বোবনিক্তিয়াৎ তৃ ভোজনাদি-কর্মণোছনিয়তকং তাৎ, শোৰোভবাভিভবলোঃ অনিয়তকাৎ কাষানাদিব কাবোষু। ১০।

পাল্লনিবিশ্ব-কালাভণেক্ষাক্ত নিত্যানাখনিরগুয়াস্থপন্তিঃ, যোগনিবিত্তবে সভাগি ববা কাষ্যালিংকাল্লভ শাল্লবিহিত্তবাং সাধংপ্রাভঃকালাভণেক্ষায়, এবন্ ভ্রোজনাবিপ্রহ্রে ।নঃখবং ভালিভ চেং; ন; নিয়বভ আক্রয়াঘাং ক্রিয়ালাক ক্রাবোক্ষরাং নামৌ জ্ঞানভ অপবাদকরঃ"। ভলাং প্রয়াঘাংবারাখ্য-জ্ঞানবিবেরণি ভারপানীত-সুনবৈভালিজ্ঞান-নিবক্তব্যাং সাধ-ব্যাং স্থাক্ষরভাতবেশাবর্ষার্থং স্পাভতে, কল্পপ্রবৃত্তাভাবভ ভূলারাং, ববা প্রাভবেশ্বিবরে। ভলাং প্রভবেশ্বাধ্বক্ত বন্ধপ্রভিপাশনং ভংশরম্বক।সম্বং শাল্লভ ॥ ১০ ॥ ১

উভরেবাং বেবাসুরাণাং বিবঃ সক্রবং নর্পরাঠ—তে দেবান্টেন্ডি। করং
ব্রহালীবাং স্থাবরারাবাং তেনিস্থানাবাং স্পর্ছার বর্ত্তালিকা ভেবাং পারীরেভরকারকর্মাবান্থাং ভয়োক্ত বেবাস্থরকরাবীবরাং ১৯ চ স্পর্ছাপুরকরাং পরস্থার লোকাবাং
ভারাবিভরাব গ্রাভরেতা বিশেষ আন্তর্ভাবিক্তাত। কা পুররেবাং স্পর্ছা নাবেত্যাপ্রভাব—দেবানাং চেতি। ৬ বেব স্করাং বির্ণোতি ক্রাটেন্ডির্টান্ট্রান্ত্রা
বাবস্থারস্থার ব্যবহার বেবর্ত্তা চ্যাব্রহর্ত্তা কর্মাবাহ—এব্যিভি। ২ ।

নাকাজাপুৰ্বক্ষনৰ গৰাকাৰ। ব্যাক্ৰোভ—ক্ত এব্যিক্ত্যাদিনা। বাংগৰ্ উল্লীবো নাম কৰাকভুত: প্ৰাথতংকত; আগত পঞ্চপাঞ্জননেৰ কবং নিছভীভাগিত্যাহ —উন্নলীক্ষেড়ি। কিং তথ কৰা কিং বা জানং, তথাৰ—ক্ষুক্তি। "ভবেতালনতো মা সন্বৰ্গত্ত-ভ্যাধীৰ বন্ধুৰি জ্পোন্তি বি,বংজনান্তি বোজনা। ও। শ্রিয়া হ'-ইডাাধি ব জাননিস্তপ্পদাং অপ্নিধিনে ব্যৱধার্থনতাব, তব সুজোবল জাননা বিশ্বস্থাবদ্ধিতা ক্ষিত্রপালিক বিশ্বতি নাজিতি। আভিনুখান আনোকতি বেৰভাৰননৈতা-ভাজোহে ক্ষেত্রভাৱিবি বিশ্বতি ক্ষিতি বিশ্বতি ক্ষিত্রভাৱিক ক্ষিত্

ক্ষণবিধিন্দ্রভূত্নীক্ষণবিধিন্দর । ভালত নাজাভূত্তন্ ইরানীং ক্ষণবিধিন্দ্রভূত্বি নালি তেনালে নাগরতি এক্ষানিত । আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই ক্ষেত্রি । আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই কালে আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই কালে আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই কালে আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই কালে আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই আগবিজ্ঞান্ত আত্যাই আগবিজ্ঞান্ত আগবিজ্ঞান আগবিজ্ঞান

উক্তভাৱেৰ আণোণাভিৰুপেণ্ড আণ্দেৰতাং গুড়ানিক্পৰতাৰাক্ষণতি—ক্তন্তা আছি।
বৰা আণ্ডোণাভিঃ শাজ্যুইবানিষ্টা, ৬বা অন্ত কুণ্দম্ম ক্ষতাবেধবাঃ, উপাভাৰুপাতে
চ কুণৰতি আৰে আনানিক্ষাব্যেবিবিশ্যান্তি নিছাতী ক্ৰছে—মুক্তিতি। আণ্ড উপাক্তছে বিক্ৰচানিক্সবাদম্য প্ৰভাৰ্থনেনাংবাদসম্ভনাথ ন মুখোজা দেবতা সানিতি পূৰ্বাবাছাং —ম অনুষ্টিইতি। বিক্ৰচানিক্সবাদম্যাৰ্থনাম্বেংশি নাজ্যাৰ্থবাদ্যানিতি পৰিংলতি—মুক্তি। বিক্ৰচানিক্সবিশিষ্ট্যান্ত্রিক ক্ষমান্তি ক্ষতা, ন সা ক্রান্য বিব্যাৰ্থনে মুক্তা, সম্যন্ত্রানানেৰ পূন্ধবিক্তি বেলাব্যান্ত ভিত্তি মুবাব্রিক ইতার্থঃ। লোকসুইছেং বাচাই — ক্যোক্টিডি। ইংবৃতি বেলাব্যান্ত ভিত্তিভাতিঃ।

नम् विक्यापिकनवृत्तेर व्यवकार वर्षक वाकानि केनामनविवार्यकार न बार्ट सामानार

शिविष्ण क्यांव-म (५छि। यण्यांविष्ण वाणांवार वावाण्यांविष्ण वाणांवार वावाण्यांविष्ण वाणांवार वावाण्यांविष्ण वाणांवार वावाणांविष्ण वार्षा वार्षा वावाणांविष्ण वार्षा व

পায়দা ধনগাৰ্থবিষ্টিনিতি পভাং নিয়াচট্টে নল চেক্তি। অপৌরুবেয়নীয়ানভাবিভ-সর্বাবোষনা অপেষপুরুষার্থবৈড়োঃ পায়না অন্থার্থক্যেট্ট্রন্থভাবিত্যর্থট্ট। পায়না ব্যা-ভূতার্থকা নিগ্রহতি — তম্ম্যান্তি । উপাসনার্থক জানার্থক চেতি পের্থটো বা

শাস্থাৎ বৰাৰ্থনিতিশন্তে: নেবঃ নাভিনিতান বাভিচাতা চোৰবভি—নামান্তানিতি।
তবেৰ পুটাতি প্লাটুমিতি। পানধাৰি নাল্পীনতিনিতৰ, বুছিবাৎ বিখ্যা বীঃ, সা চ
বাবরারো বতনিভ্যাবিকতায় কলবতী, ততঃ শাস্থাৎ বৰার্থনভিপ্তেরের কলনিভার্তনিভার্থ।
ভেলান্তব্যুক্তনিভার্থা
বিশায়তে। বৰা বিলোর্ভেরে প্রতিনায়াং গৃজ্বাবে তন বিভূগৃত্তীঃ ক্রিয়তে, তরেরং বিখ্যালানিভিত। বাল্পালাভার্তি নাল্পালাভারিভিত। প্রপূর্ণকাং বেজুং
বাাচ্টে—ক্রন্ত্যানিতি। প্রতিনায়াং বিভূগৃত্তীং প্রভ্যান্থনগ্রেবে ন বিভূগবান্থাং, নানাবেল
নাল্ডারালাভার ক্রভানিভি বৈবন্যবাপ্রভান — আন্তর্মনত্ত্রেনেতি। উক্তর্বং বৈবর্জানৃষ্টাভেন
পাইবভি—মুশ্রেভিত্তি। গ্রা

কর্মনান্দ্রের একবিবেবং একট্রন্ প্রভাবতিষ্ঠতে—প্রক্রেতি। কেবলা ভব্বত্তিবেব নারি চোড়তে চোলনাবলাক্ত কলং নেওভতি এক ভু নাজি, বানাভাবাবিতার্থঃ। অব বর্বা বেবানাং প্রতিবাবের উপাক্তনানান্দ্রকর সবং বর্বা চ বর্বাজ্ঞানাং পিতৃ বাং রাজ্ঞানিক্তের তর্পানানান্দ্র করে করে একবেবিধি নানাবাবুশাক্তবিং অক্তর সবং ভালাভাতি ভাবং। সভাজানাবিলক্তাং এক নাজি ই চায়ুক্তর্ 'সংবেব সোনোলর্য্ ইভাগি প্রতেরিতাহে— সোজি। কিক, রক্ষান্ত্রীয় সভার্যান্ত্রীয় প্রতিবাহিত্যাহ নিজ্ঞানিতির । ভংগর পর্যার্থী, লাল্লীর্যান্ত্রীয় প্রতিবাহ নাম ইভি বৃত্তবিভিত্তাহ — প্রতানিত্রিভিত্ত । ভংগর পর্যার্থীতিন নিজ্যান্ত্রীয় ভালাভিত্ত । ভংগর পর্যার্থীতিন নিজ্যান্ত্রীয় ভালাভিত্ত । বিজ্ঞানিতির । বিজ্ঞানিতির ভিত্তত্বর্যাতির । বিজ্ঞানিত বিশ্বতার বিশ্বতার বিশ্বতার । বিশ্বতার বিশ্বতার বিশ্বতার । বিশ্বতার বিশ্বতার বিশ্বতার । বিশ্বতার বাবের প্রবাহিত্ত আর্থানাল্যান্তর বাবিভাত্ত । বিশ্বতার বাবের প্রবাহিত্ত আর্থানাল্যান্তর বাবিভাত্ত । বিশ্বতার বাবের প্রবাহিত্ত আরাণান্তর বাবিভাত্ত । বিশ্বতার বাবের প্রবাহিত্ত আরাণান্তর বাবিভাত্ত । বিশ্বতার বাবের প্রবাহিত্ত আরাণান্তর বাবিভাত্ত । বিশ্বতার বাবের প্রবাহিত্তর বাবিভাত্ত । বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার প্রবাহিত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার প্রবাহিত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার বাবিভাত্তর । বিশ্বতার বাবিভাত্তর । বিশ্বতার প্রবাহিত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার প্রবাহিত্তর বাবিভাত্তর প্রকালিক বিশ্বতার । বিশ্বতার প্রবাহিত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার প্রবাহিত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর । বিশ্বতার প্রবাহিত্তর বাবিভাত্তর বাবিভাত্তর

বৈৰব্যাৎ পৰিনিষ্টৰৰ্ পৰিষ্টৰ ইভ্যাপজ্যাকং বিশ্বগোভি—অথা চেডি। বিশিষ্ট্ৰং বন্ধগোপকান্তিক কলোপকান্তিক চ; পৰ্ধবোক্ত প্ৰকাৰং পৰাস্ত্ৰই প্ৰেৰ্ইভানিষ্ট্ৰ; পলোকিকজং সাধ্যভি—প্ৰভাৱকান্দীভি। কি বেগভানাৰপ্ৰায়াগাং বৃভাত্ত্বকান্দীভি। কি বেগভানাৰপ্ৰায়াগাং বৃভাত্ত্বকান্দীভি। কি বেগভানাৰপ্ৰায়াগাং বৃভাত্ত্বকান্দীভি। কি বেগভানাৰপ্ৰায়াগাং বৃভাত্ত্বকান্দীভি। কি বিভান কলাক্ত্ৰিক চিত্তিভি। ক্তিৰিয়াপ্ৰায়াগাংকভাৰ্থ:। ১।

ক্রাবৈর্কাটকাঃ বিদ্বাধানাং বাকাানাং দাধর্যমুক্তনাঞ্চণাঞ্জ—অমুহেন্ট্রোভি।
নাধর্যালাবুদ্ধবেব বাবজি—তেন্নাট্রাইরিভি। বাংকাাববুদ্ধবিধাব্য বিধানারে বিধানারে বিধানারে বিধানারে বিধানারে বিধানারে বিধানারে বিধানার বিধানার

কৃতত্ত্বি কাৰ্য্যাকাৰ্যবিশ্বে । ইভাগৰকাণ্ড — লৈচেন্ত । বৈদিকভাৰ্থত অবাধন ভৰাৰ্থতে দিছে স্বীকিতসাধনত্বিশিষ্ট : ১৯ বছ ওল: কত্ত্বামিত বিধা অস্তিহাত । ১৯৯২ আনিষ্ট্ৰ-সাধনত্বিশিষ্ট: ওলা ন কাল্যমিত বিধা নাস্থতিসাও । অতো মানাং ভদ্যাস্থ্যানানস্থানিক্তৃ কাৰ্যাকাৰ্যবিশ্বে ইভাগ্য । ৬বাশি অভ্যানে বাকাৰ্যবিশ্ব বা । নাভ ইভাগ্য আনান্ত্ৰ তিয়াক্ত ইভিড । তভ্ত অকাৰ্যাহেল বাকাৰ্যবিশ্ব কিং ন সাাাদভাশক্যাহ — ন ইণিতি । উভয়নাস্ভীতি জ্যোল । না

ৰিতীয় দুৰয়তি -প্ৰদ্ৰাপ্ত ভেডি । বন্ধণ লাখাৰ্থৰে ৪৭-- ই চাচাতে । কাথান্দ্ৰ আৰ্থে বাক্য প্ৰমাণ্য দুৱাজেন সাধ্যতি নেক্ত নাদিন্ধা । গুৰুক্ত লাহি ভাষিক্ৰপণ বৰ্চতুইনং, তাৰিলিটো মেকুনতাত্যাদি প্ৰয়োগে মেৰ্লাদে অকাৰ্যেই লি সম্যপূদীদৰ্শন ত্ৰহ্মিৰাক্যাদিল কাৰ্যান্দ্ৰ বৈজ্ঞ সম্যপ্ত আৰ্থি সম্যপূদীদৰ্শন ব্ৰহ্মিৰাক্যাদিল কাৰ্যান্দ্ৰ বৈজ্ঞ সম্যাদিনাৰ কাৰ্যান্দ্ৰ কাৰ্যান্দ্ৰ

বিষ্ঠকাং সিভার্থজনের। সন্ত বৰ ইতাক্ষানাভব্বাদেঃ সিভার্থসাগৃত্য বানভ্য, ইভি
শহতে—মের্নাদীতি। ক্তিবিয়োগন অস্বানং ধুনীতে—নেত্যাদিনা। বিষণ্ডভববিষোধাচ নৈশ্যতাই সংজ্ঞানেতি। শলকতেরপর্বাদ্যেন অমানরাং অস্বানাবাধকতা,
ইত্যাশভাই—অন্ন্যাতি। পর্বনীরাধিকরপ্রাদেন জুল্লাং কলকতেরপ্রাদ্যাদিভাই। প্রজ্ঞান্ত ত্বাশভাবাধ তথ্য সক্রতেরপ্রাদ্যাদিভিভিভিভ অস্তবা শারীরকানারতঃ
স্যাদিভাই: ১১।

ক্ষত্যস্থতবাত্যাং বাক্যোৰজ্ঞানদা ক্লবৰত্ত্তৈ কাৰ্যাম্পুটে অৰ্থে ওপ্ৰন্যাহে-শানতা ইত্যুক্তা, সম্মতি শান্ত কাৰ্যাপনকানিক্তা হেবল্ডনাং--প্ৰক্ৰিকিট্ডাড়ি।

শ্রতিবেশজানবভাগে করন্ত্রভাল কিলান্তর্নাল তরিসুন্তেনিয়োগাধীনছাৎ ভরিষ্ঠানের বাক্যবেষ্ট্রনালিত চেৎ, ন, গতাহ ্নুনান্ত্রিক্তি। বিহালিপ্রবাণ্টভক্ত প্রোর্জানের করন্তর বন্ধবিধান্তর জরপানাদি, ভবিরহালো আহাজাে চ শ্রাপ্তে বহুরবজ্ঞানং ক্ষেত্রং বন্ধবিধান্তর জরপানাদি, ভবিরহালো আহাজাে চ শ্রাপ্তে বহুরবজ্ঞানং ক্ষেত্রাহার্যামিতি। ভর্মবাল প্রভাগাবিধান বিধিজকার্যাহারিভি চেৎ; ন;ইত্যান—ভব্মিজি। ভর্মভাগা প্রভাগাবে ন বিধিজকার্যবিদ্যালি নিমির্ভাভাবেনৈর নিজেরিভার্থ। দ্বালিক্তালা প্রভাগাবেনান বিধিজকার্যবিদ্যালিক ক্ষেত্রা ন কেবলং ভর্মভানিবিভাগাবিদ্যালিক। নাই তিক্ষান—ভত্মেজি: ন কেবলং ভর্মভানিবিভাগাবিদ্যালাং নিজ্বল্পযাবদানতা, কিছু সর্মাকর্যানিবর্ত্তর ন কেবলং ভর্মভানিবিভাগাবিদ্যালাং নিজ্বল্পযাবদানতা, কিছু সর্মাকর্যবিদ্যালার জানিতি চলাং বিভাগাবিদ্যালার কর্মভানিক ক্ষান্ত্রালিজানক ভরিমিত্রানাম্ জনবার্যক্রে জারমান্যালিভি হেছা। কর্মা প্রস্তানাম্বালার ক্ষান্ত্রালিজানক ভর্মিত্রালাম্বালিক নির্বালিক ক্ষান্ত্রালিক বিন্ধক্রিভাগাবিদ্যালার নির্বালিক ক্ষান্ত্রালিক বিন্ধকর বানজোপানিবিভিত সমুলাবর্ষণ । ২০।

দৃষ্ট জগাই 'জিক বে'ই ইন্ধন নামাণ কৰে নিজি । তক্ত নিবিছব লেনবাৰ্থমেৰ বছজ-বাধান্ত তক্ত নিবছব লেনবাৰ্থমেৰ বছজ-বাধান্ত তক্ত নিবছব লেনবাৰ কৰে কৰে ১২ সংখ্যা বছা না সম্পাণ কৰ্তা। শাল্লা ক্লানিব স্কলানে বাধিতে তৎকাৰ্যা নাম্বাভাবে। 'নাম জাভাবে নিমিছিক লাল বাছারে স্কলান কৰা বিজ্ঞান বিজ্ঞান কৰিছে নিবছা ক্লানিব নিবছা নিবছা নিবছা ক্লানিব নিবছা নিবছা নিবছা ক্লানিব নিবছা নিব

কাষ্যানারজানহেতুবানববিধালাং বিহ্বব্যে প্রস্থাজাবে। যুক্তং, নিজানাং তু শার্মার গ্রন্থাত্ব নথারাজানকৃত্বং প্রভাবাহাদানবব্দংনিয়াক্ত নানবক্ষকতত্ত্ব প্রস্থা-ভাবে। বুক্তো ন অবভীতি শক্তে—ন্তির্যাক্তি। নিজ্ঞানাং শার্মারক্তাত্ত্বান্দ্রস্থানি বিভি পরিবছতি—নেজ্ঞানিক্ষা: ভবেৰ প্রপ্রকাতি—ম্প্রেক্তি। অবিভাগিভাগিল দক্ষম অবিভাগিক্ষেত্রস্থাকিঃ। তৈরবিভাগিভিজানিতেইপ্রাধ্যে ভাবুগনিইপান্তো চ ক্রমেশ রাগ্যেথবকঃ পুরুষক্ত ইটুপ্রান্তিখনিটপ্রিছারং চ বাস্তরকালানের থাববেধালানিটা মে কুয়াকনিটাং যা ভূষিতি অবিশেষণামনাতিকেরিভাবিশেশগুরুত্বিসুক্তন্য নিজ্যানি বিবীয়ক্ত্বে। বর্গতারঃ পঞ্চতার ইতি বিশেষধিনঃ কাব্যানি। ভূলাং ভূউকরেবাং কেবলগালানিবিত্তবিভাবঃ।

কিক, কাথানাং হুটকং ক্রবতা নিতানারণি তরিট্র্ংশন্তিবিবারগঞ্জাগাধিকাইবিবিক্রমে বিশেষকাথনিকাল—ন ক্রেন্ডি। কর্বং তিনি কাথানিতাবিকাপ্রভাব ক্রম্প্রক্রমেন্ডি। বর্গকার প্রকাশয় ইতিনিশোধিশ্য কাথাবিধিনিটা যে স্থাকিটা বা
ক্রমিন বিশেষকাথটোরিতারিশেনিত প্রপ্রতি বিভাবিধিভিত্নকামভার্থা। নব্ধিভাবিক্রমেন্ডানি কর্মানীতার্ক্য, পর্যাভ্রভানন্ত্রেন্ডি।
ইত্যাপভ্য ক্রডেরনিক্রমিবন্ডার হৈন্দিকাল—ন প্রেমান্ড্রিড।

'रवात्रास्त्रका एटेमाव सबः क अनव्हारक'

ইতি শ্বতেজনিপরিপাকে কারণং কর্থোপ্তর এব এটারতে, ন তথা কর্মবিবিরিতাই:।
ন কেবলং বিহিতং নোপ্লভাতে, ন সম্বর্ধত চেতাাহ—ক্রামনিমিত্তেন্তি। বদা নানি
ঘং নংবারী, কিন্তু লগুর্বভালীতি ক্রভা জাপাতে, তদা দেবতারা: সম্প্রদান্তং
কর্মঘং রীজানেরিতোতং সর্মানুপায়নিতং ভবতি। তৎক্ষমক্রানিজান্বতঃ সম্বর্ধত
কর্মবিবিরিভার্থ:।

উপবৃদিত্যপি বাসনাবশন্তম্ভবিষাতি, ততক বিছুবোংশি কর্মবিষিং ভাবিত্যালভ্যায়—
ম চ্চেত্রি। বাসনাবশাদ্র গুল্পালাবাং আছাদ্বংগা পুনংপুনর্মাধাচ্চ বিছুবো ন কর্মপ্রম্বিভার্ম্য: কিঞানবচ্ছিয়ং অসামিতি আছালভারত গোদিসংগেক্ষং কর্ম নির্বকাশবিভাগে—ম ছীতে। বিছুবো ভিজানোলি ও কর্মানবহাং ভানিতি লক্তে - ভোজনাদ্বীতি। অপবোজ্ঞানবতে বা প্রোজ্ঞানবতো বা ভোজনাদি মরুবিঃ। নাড়ঃ।
অবভাগেরাথ ৬৭প্রতীতের্মাধি গালুবুনি নাড়াং অলিকোনাদেরবাবিভানিনানিবিভা
ভথাছাল্পপত্তিভাতিপ্রভাগে—মেতি। ন বিভীয়ং। প্রোজ্ঞানিনং শালানগেকভূবপিশাসাদিবোবকুতম্বাৎ তথপ্রং বিষ্টবংগিভাগে —ভাক্সিন্তান্টিতি। জলিবোজালি
ভবা ভাগিতি চেং: ন, ইতাল—ন ভিন্তি। ভোজনাদি মরুভেরাবভাকস্বান্থপত্তিবিরুবোভি—ক্তেব্রুকাতি। ২০।

ৰ তু ভাৰত্যাদি প্ৰশক্ষতি—শাল্পনিনিক্তিতি। তবি শাল্পৰিবিত্তকাল ভাগেজভাব নিত্যানাৰদোৰপ্ৰভ্ৰম্ব ভবেদিয়াশ্ৰণাত-দেশকোতি। এবং দোৰকুত্বেংশি
নিত্যানাং শাল্পাণেক্ষাৰ কালাল্পণেক্ষমবিক্সম্বিত্যাত-প্ৰবাহতি। ভোকনাণেক্ষেধিভভজ্জিলি—

'काळुर्जनीर ठटाए ककार बडीमास ठळू वन्'

ইভারিনিরম্বর বিদ্বোহরিকোর নিনিরমে গুলি ভানিতি পরতে—তদ্পেরা ক্ষাদীতি। বিদ্বানা নাভি ভোজনাদিনিরমঃ অভিক্রান্তবিবিধার। ন চ এভারতা ব্রেইটেরীপভিঃ, অবস্থাবীনা অবিবেক্তত। হি সা। ন চ ডে) বিদ্বো বিজেতে। অভোহবিভাবস্থায়ামণি चमको यरबहेरको विकायनाचार कृष्टः नारः। नरकाशनामाकार्यरः। याविकाकृत्यकः। व्यविद्यारम्बनाकान्यरः न वाविकाकृत्यकः। व्यविद्यारम्बनाकान्यरः न वाविकाकृत्यकः। व्यविद्यारम्बनाकान्यरः न वाविकाकृत्यकः। व्यविद्यारम्बन्धरः । व्यविद्यारम्बन्धरः । व्यविद्यारम्बन्धरः । व्यविद्यारम्बन्धरः । व्यविद्यारम्बन्धरः । व्यविद्यारम्बन्धरः व्यविद्यारम्बन्धरः । व्यविद्यारम्बन्धरः व्यविद्यारम्बन्धरः । व्यविद्यारम्बन्धरः ।

কর্মপুরাণানিবভাহবিদ্যানাবিদ্যালালার আনিবালার আনিবালার কর্মালার তথা কোনালার কর্মালার বিশ্বনার কর্মালার বালার বিশ্বনার কর্মালার বিশ্বনার কর্মালার বিশ্বনার বালার বালার বিশ্বনার বালার বালা

ভাল্যান্ত্রাদ্। 'বর' মর্ব ছই প্রকার। হ' শম প্রবিভালত্তক 'নিপাত' পদ; বর্ত্তমান করীয় প্রশাপতর প্রবিদ্যে বাহা ঘটিয়াছিল, 'হ' শম্মে ভাষাই প্রকাশ কার্য়া দিতেছে। প্রালাপত্য নর্ব-প্রগাপতির স্বানস্ব; মর্থাৎ প্রজাপতির ক্ষেত্র কালীন সমুৎপর স্বান এ। ভাষারা কে ? ব্যবহা ও মুর্বপণ, মর্থাৎ সেই প্রজাপতিরই বাক্প্রভ্যত প্রাণসমূহ। ভাষাম্বের দেবস্বও মুর্বপ, মর্থাৎ সেই প্রজাপতিরই বাক্প্রভ্যত প্রাণসমূহ। ভাষাম্বের দেবস্বও মুর্বপ হইল কি প্রকারে ? ভাষা বলা হইতেছে—শাল্পোপনিই জ্ঞানও কর্মায় ইনি-লব্ধ সংজ্ঞারসম্পন্ন হওয়ার প্রকাশবাহন্য নিবন্ধন দেবতা-পদ্বাচ্য হয়, ভাষা রাই আবার লোকাস্ক প্রভাশ ও মুম্বানের সাহায়ে ঐছিক প্রয়োজনবাত্র সাধ্ব জ্ঞান ও কন্মায়ুইনি-জনিত সংজ্ঞারাবাশ্যই ইয়া কেবল নিজ নিজ প্রাণ্ডারিত রভ থাকে বাল্যা, মধ্বা সুর—দেবতা ইইতে ভিন্ন বাল্যা অসুর-পদ্বাচ্য হয় (৩)। বেহেত্ অসুরগণ স্বভাবতাই ঐছিকপ্রয়োজনসাধ্যক কন্ধ ও

(•) ভাৎপথ্য--এথানে বৃদ্ধিত হইবে বে, নাখিক ও এাজনিক বৃদ্ধিবিশিষ্ট বাক্ অভূতি ইঞ্জিই এনে বেবভা'ও 'অস্থুন' নাবে পভিত্তি হইবানে। ইঞ্জিনবেশ নাথিক আনে অনুরজ্ঞানেই বেজুই দেবপণ কানীয়ন; কানীয়ন অর্থ-কানান্ (কবিষ্ঠ)
অর্থাৎ অন্ধান্ত, 'কনীয়ন্' শব্দের উত্তর স্বার্থে অণ্ প্রভারে বৃদ্ধি করিয়া
'কানীয়ন' পদ নিশায় করা হইরাছে। আর অনুরদন আরদ অর্থাৎ কবিক;
বাক্ প্রজৃতি ইন্দ্রিদ্ধানের শাস্ত্রোগদিই কর্মা ও জান-প্রবৃত্তি অপেদা, সাভাবিক
অন্ধর্যসন্দক ঐতিক কর্মা ও জানান্ত্রানেই সম্বিক প্রবৃত্তি হইরা বাকে;
এই অন্ধ অন্থরের সংখ্যা প্রবিক। শাস্ত্রোগদিই জ্ঞান ও কন্মান্ত্রান স্বভারতই
বহু আরাস-সাধ্য; স্বেরাং ভাষ্বত্রে প্রবৃত্তি অর; কাবেট দেবভান্তরে সংখ্যায় জন্মতা ঘটিরাছে। ১।

व्यवार्गाञ्च नदीदाष्ट्रञ (नहे (१५७: ७ चनुद्रम्य ७३ (नाइन्द्र নিষিত্ত শার্মা করিয়া'ছল, অর্থাং অপুরুগণ বভাব'স্থ অপুরাগসূলক কর্ম ७ व्यान-माधा विषय एकारभन्न कक, व्यान : एवनन नाट्याभरमनक कम ७ काम-माना विवयं भारेताव निष्यं भवत्मव त्यक्षा कविशावित्वन । अवादन त्यक्षा व्यर्थ - रहत्त्वा ६ अञ्चलप्रतित मार्भाषक द्वार्थावर्त्यक उद्धव ७ व्यक्ति, व्यर्थाव क्थन अा(प्र म्हा महिला पर क्या व कार्ना का व कर्रा (नामात) खक न भारेत्र। बारकः वयन जे अकार द्वां के अप्तर्कृत रहे, खबन (महे अप-সমূহেরই প্রতাক ও অমুমানগর ঐত্বক প্রোজনপাধক জ্ঞান ও ক্র ভাবনাম্মক আমুরা রুখি পরা জত হট্যা থাকে; তাগাট হটতেচে দেবগণের अन्तर, आव अञ्चलपाद परावत्र। कथन । विभन्ने ठकाम देवनी दृष्टि অভিত্ত হয়, আর আসুরা রবির প্রাত্তাব হয়; ভাষাই ১৯রগণের কর, चार (मरशानव পराक्य . अडे श्रकात वर्ग (मरशानव चत्र रह ; छर्ग धर्म প্রবৃত্তি বহুলপ্রিমাণে বৃদ্ধি পায়, এবং ভাহার ফলে প্রজাপ্তিম লাভ পরীত छे:करशांश रुप, वावात व्यवशांत व्यवशांत वाहना वाह, छारांत फरन श्वादत्रक्ष शांत्रि भर्याच व्यट्यार्था कर हो। यादक ; व्याद व्यव केल्ट्राव म्यूला व्यक्ति. ङ्कन मञ्चाष्ट्रशांख इहेश पाटक । २ ।

ও রাজনিক বৃত্তিসমূদের মধ্যে বিরোধ চিরকালই আছে: চিরকালট একে অপরকে অভিভূত করিয়া নিজের প্রাধান্ত লাভ করিতে চেটা করে। এই সাধিক বৃত্তিসমূহ (বেবভাগৰ)
চাহে—পাল্লের উপ্রেপাস্থারে তরজানের অসুকীনৰ ও সংকর্ষের অসুকান করি জে, আর
রাধ্যবৃত্তিসমূহ (অসুরগৰ) চাহে—বোকসিদ্ধ প্রতাক্ষ ও অসুমানের সাধারো পরিজ্ঞাত
নিক্তিক ক্রপাজান ও তংগাধনের অসুকান করিতে। প্রজাগতির ক্লার প্রতাক জীবের—
বিশেষতা মন্থ্যের ক্রণের এই বেবাল্লর-সংগ্রাম অভর্ক চলিভেক্তে। মনে হয়, ক্রাভির এই
বেরাল্লর-স্ক্রোনের হারা অবলবনেই পুরাব পাল্লে বেবাল্লর-সংগ্রামের স্করি ব্রীল্ডো

আৰিক্য নিৰ্দ্ধন অন্তৰ্গণ কৰ্ত্বৰ অন্তৰ্গক ক্ষেত্ৰণ এইবাৰ ক্ষিত্ৰ কৰিব লাখন ক্ষিত্ৰ ক

छान कथा. 'वश र" रेठाानि वाक है। ठ क्यान विवनत, व्यवीद डेनाननाइ विश्वासक मार्ट, भारत हेवा वहेटलाइ स्वयंत्राहित हे भारत्व समाविश्वह सम - धर्ववाय बाज - উৎकर्ववायक धानामाज), ि क्रुक्तार ध्वात्म ब्यान-निक्र-প্ৰের কথা বলিতেছেন কি প্রকারে? । না,--এ আপতি সমত চইতে পারে ना ; कावन, ''यः अवर त्वम" विमाश अभारत छेनामनावरे विमान कवा स्वेद्यारक । [बाक्का,हेश व'म बर्गार्शवत श्रमस्मानक वर्षनाम ना इहाना इकेन,[क्क] छेन्त्रोब-প্রকরণে "উম্পারৎ" এইরণ অতীত ষ্টনার উল্লেখ থাকার ইছা উল্লাখ ক্লিয়ার िशाहक क्केक ? ना, ठालाख क्केट आदि ना : कावन, अववक:, हैश डेम्बीय-किशाव अकर्य महा: विरोध :: चम्रक के क्षेका (७३) छेरती (वह विश्रास बांब्हारक ; [अकरे क्रियात इरेबात दिवंद वरेटल भारत ना ।] छठीवल:, अही विकाद है (डेशाममाद है) शक वन । विकास वह एए. बचारन दर, डेम्बारवद से होकि escore, wier Benid-famige fautum, Gen faegt meng fautum are i ठड्रचंछः, अवात्न चलाद्याद-चरभद्र निका विवि वा चवना-कर्त्तवाडा नाहे, भवन देल्याय-।वाधानमाना वांकित भट्नरे अव्याद्या ; [विकारमंत्र भूट्स छ जाबात विशास कता मन्नव हत ना] : भकावात. विकासनत् निकाजात्वादक चछ्रम । ब बक्षि बाद्याद्यः भक्ष्यकः, विकालिक म्याद्यं 'करेडकासाकfores' swife weet on diesics; also; alle e ainlies nece of ७ वक इत छत्त्रव विद्यारकः । यादाव विवास दत्र. छादावरे धानरता कता चावनाक दम्, किंस खाव । बांब जेनायरे ना बरेफ,जारा बरेश्य खारवह विर्णंद (ानणागचा , सबन, अवर कादावर अकन्द्रण निक्कित धन्नाकित मक्कि क्षमः আর বাক্প্রভৃতির নিকা ধারা ব্ধাপ্তাশের প্রদাসা জাপন প্রভিত্ত অভিপ্রেষ্ট বইলেও উপপন্ন বইতে পারে না, এবং 'মৃত্যু অভিন্তের করিরা দীর্তি পাঙ করে' ইতাদি কল-কর্বনত সকত বইতে পারে না। কেন না,বাক্ প্রভৃতির বে, বর্মাদিতাব প্রতি, তাবা ত প্রাণ-বর্দ্ধ প্রান্তিরট কল ভিন্ন আর কিছুই নবে, বিশ্বচ বিজ্ঞানের বিধি না ধাকিলে প্রাণ্যরূপ শা প্রাণ্ডিও বইতে পারে না।] ৪

चाका, आर्वत डेमामना वि:इड इह इडेक : किंद्र आर्वत विक्'द अकृष्ठि अनगण्ड क कथने व वहेर शाद मा। (कन, अक् कटक दवन केट्राव ब्रिकारक, एवन निक्त इहे हहेरठ भारत ; ना वहेरठ भारत ना : कातन, शालक छेलाज निन्छ दहेरनहे, छाहात धनः मार्वत केवल सालव है। बन चावचक बहेरल भारतः ना.--लाहा वहेरल भारत नाः कातन, लाक-ৰাবহায়ের ভাগ ফিভিডেও বিশার্থ বভাগজান হইতেই প্রকৃত প্রেরঃ-लांड फेननब बहेश बारक. स्मंबर्फ नाख्या यात्र: बनाफ व व कि यवार्व वस अध्व करत, त्मह वाकिहे चालमात चलाहै विवय छाछ अध, किःवा व्यानिकेशांश क्रेटि निवृत्त क्षा, क्रिक आह विवृत्त क्षान क्ष्म क्षमहे এরপ হর নাঃ] টিক সেহরপ, এছলেও শ্রুতিবাকোরও বর্ধার্থ ধর্ব উপদ্ধি করিলেই তাহা হইতে প্রকৃত প্রের:প্রাপ্তি সঙ্গত হয়, কিছু ভাগার বিশ্বীঃ হইলে হয় না। আর উপাসনাবিধায়ক প্রতিবাক্য হইতে বে, ■ान नमूर्णक ब्हेबा वात्क, छविष्योङ्ड भवाद्यंत अभुष्ठांडा विष्यत (व. कान अवाद अवाद चार्क, जारां नरह। विश्वता जापून आरमद काबाब निका वा चनठाठां खना वाहेट्डर्ट मा; वहा, छाहा हहेट्ड ৰ্বন প্ৰের:সিধি .দ্বা যার, তখন ভাহার সভ্যতাই আমরা বৃধিয়া বাকি; कात्रव, विभवात्र कान वा लाखिवृद्धिः चनर्य-कृत्वशास्त्रिके (प्रवा बान्न,-सन्छ (व व्हक्ति विभद्रोठ वा सन्धा विवन्न श्रह्म करत्-(वयन मञ्चारक शानुकाल, किश्वा मक्काक विवाहाल मान कात, त्र वाक्कित समय-आधिरे (मना बाव। विरमवंटा, अने वहेर्ड श्रीतकांठ जाना, मैचत क क्विका अकृष्ठि यात्र वनकाई दहेरत, काहा हहेरत, निक्तत्रहे विवत्रीकार्य-खाश्य याज ७ (मायवादहारवत्र काप्र (करम वानर्वधाशिवः नायन हरेत्रा क्षेष्ठात्रः, अवेठ (कहरे उ छाहा हेम्हा करत ना। अछ अव बुविए हहेरव (व, শাস্ত্র বে, উপাসনার্থ লায়া, ঈবর ও বেবচাপ্রভূতির প্রতিপাদন क्तिरहरू, त्म मनुष्यदे महा (कानहीरे विशा वा चार्तानिक वरद्)। ब

[কর্মবাবাংগকের আপত্তি—(১)] বহি বল, অত্তন্ত নাম প্রভৃতিতে এনপুটির বিধান দেবিতে পাওগ বার; ক্তগ্রা, তোষার কবা বৃক্তিযুক্ত নতে, वर्षाय यांच वन, नःव अकृतित (व, व्यवचात हेश छ म्मडेट बुव्हिछ नावा ৰাৰ, লগচ ছাপুপ্ৰভৃতিতে বপুৰাৰুভির লাগ দেই অত্তৰ নাৰাছিতেও পাছকে তৰিশৰীত (অণতা) ব্ৰহ্মৃষ্টির বিধান করিতে দেবিতে গাঞা বাছ; অভন্তৰ नाज रहेरा वर्षार्व विवरत्र कारमहे (व,:अव: अश्वि रहेडा बारक-वना रहेडारह, छार। यूक्तिमक रह ना। ना-वनक रह ना; अङ्बिट व्यवन (क्ष्म को कि इहेन। बादक, (क्ष्मीन व्याप्त क्रिका प्रमान वर्षशाहः नात नाव त्यः भवश्व नाव अक्किए वस्तृष्टेत केनरमन मिरहरहम, তাৰাকে বে, খাপু এক্ডিতে পুরুষ্টুর সায় অসতা বলিয়াছ ; তাহাও ভাল বল मारे। कातन १ पाचाता नाम अक्टरक अब वहेरछ भूषक् वक्ष विना व्यवस्ट चाह्म, जाशास्त्र मराबरे नाम अक्ठिए अक्ट्रिय विधान कहा स्ट्रेस्ट्-चर्थार প্রতিষা প্রভৃতিতে যেরণ ব্রব্দুটর বিধান করা হট্রা **বাকে,** ইরাভ ভত্ৰপই বটে। স্বার নাম প্রস্তৃতিতে বে ব্রম্বন্ধী, তাহাও ট্রক প্রতিষা প্রস্তৃতি चानपत्न अवस्थित सात्र चानचन ब्रालंडे ् विवास विवस्त्र (१) वहेश पाटक ; श्रक्ष किन्न नाम श्रक्ति उत्तपद्रम नरह । मृत्र (मानामिनिशीन বুক্কে) স্থাপু বলিছা বুবিতে না পারিলে, ভারাতে বেরপ ভবিপরীত खबाबाक बश्वाकारत मिन्धा-वृद्धि छे०भन्न इत् भाव श्रक्तिरत उच्चत्र किन्न छद्रभ विभागेत आन वा बादि वृद्ध नहरू, ्छारा आनयनविषदक वर्षार्य वृष्टि वर्षे । (२)। ७

^{(&}gt;) ভাবপর্যা-নীনাংসকের অভিনার এই বে, বাগানি ক্রিয়া প্রতিপাদন করাই বেছের একবাত্র উদ্দেশ্য । বেবানে ক্রিয়াবিধি নাই—কেবনই বছাবিশেবের সক্রপ-কবন বাত্র আছে, সেবানে বেধবাক্যের প্রামাণ্য নাই। স্কত্যাং কেবনই ত্রক্ষ-প্রতিপাদক শ্বতাং জানবনতং ত্রক্ষ ইংগ্রাফ বাক্যের প্রতার প্রকাশ বেধবাক্য থায়া ত্রক্ষের অভিন্য নিম্মান্য না; অভ্যান ত্রক্ষ করের প্রতার প্রামান্য করের বিদ্যান্য না; অভ্যান ত্রক্ষ করের করের প্রামান্য বিদ্যান্য বিদ্যান্য নার্যান্য বিদ্যান্য বিদ্যান বিদ্যান্য বি

⁽২) ভাবপর্য -জানমানেরই একটি বিষয় থাকে, কল্মিনুকালেও নির্মিণ্ডক জ্ঞান হইছে পারে না; অবচ নিও'ব ন্তম কবনই নাধায়ৰ জ্ঞানের বিষয়ীভূত হইছে পাবেন না; এই ক্ষম্য নাম্যানিক প্রথমতঃ কোন একটা স্থান বিষয় অবলম্য ক্ষিণার প্রয়োজন বয়, নাম

বৃদ্ধি বল, কবিত ছলে কেবল ব্রন্থাইরই বিধান করা হইরাছে মাত্র, বৃদ্ধান্ত, বৃদ্ধান্ত পদার্থ নাই। হলা ছারা প্রতিষা ও ব্রাহ্মণ প্রক্ষান্ত উপর বে বিকৃত্ব, দেবজ ও পিতৃত্ব ছুটি, তালারও তুলাতা প্রদ্ধিত হইল। মা. এ কবাও বলিতে পার মা; কারণ, অক্ (মন্ত্র) প্রস্কৃতিতে পৃথিবালি ছুটির বিধান দেবিতে পাওরা যার, সেবানে অক্প্রস্কৃতি বিষয় বিভযান। পৃথিবী প্রস্কৃতি সতা বন্ধাই ছুটি আরোল বিধান দেবিতে পাওরা যার (কিন্তু অসম পদার্থের নহে)। অভ্যাব তালার স্বিত্ত সামা থাকার নাম প্রস্কৃতিতে ব্রন্থাইর বিষয়াত্ত ব্রন্থাইতিও ব্রন্থাইত ব্রন্থাইতিও ব্রন্থাইতিত ব্রন্থাইতি বিষয়াত্ত বন্ধার বিষয়াত্ত বন্ধার ও ব্রান্ধণপ্রস্কৃতিতে বিকৃ, দেবতা ও পিতৃত্বান্ধি ছুটির বিষয়াত্ত বন্ধানিক স্থালেকিত অর্থাই স্থান্ধান স্থা আরর প্রার্থাই প্রস্কৃতি ব্রন্থাইর ব্রাহার স্থানে কিন্তু করি ব্রাহার বিষয়াত্ত বলে আরোপিত বিষয়াত্ত বন্ধান নাম প্রস্কৃতিতে বন্ধান করার বিদ্ধান হুখা আরর করার বিদ্ধান হুখা বা সত্য ব্রন্ধের স্থাবা বিদ্ধান হুইতেতে । ৭

श्रष्टुक्ति विवश्कतिहै दक्षिक्षेत्र ८०३ विवश्च या चानचन। चवास्ताद्ध श्रवानटः श्रेञ्चण च्यादनश्च विवश्दकृष्टे चालचन विजञ्जा निर्मण कता क्षेत्रा वर्षकः।

⁽১) ভাংশগ্য কর্ম মান্যদেক আপান্ত করিমানিকে বে, নাম অন্ত অবন্ধ পদার্থ বে, ব্রজ্যুক্তির বিধান আছে, ব্যুবতে ইইবে, সেপানে ব্রজ্ঞ বলিলা কোনও পদার্থ নাই; কেবল ও আপত্য ব্রজ্ঞবেশ নানানিকট চিন্তা করিবার বিধান করা চল্যাছে। ভতুম্বরে ভাষাকার বলিতেহেন বে, না, এ কথা ঠক এইতেছে না; করিব, খান ব্রজ্ঞ বলিয়া কোনও সভ্য বন্ধ না থাকিত, প্রাণ করিব। কেনেও সভ্যবন্ধ ইইতে আরক্ষ না থাকিলে, কর্মাই ইন্দ্রমূতে সর্পত্তি ইইতে পারিক্ত না; সর্প বলিয়া একটা সভ্য বন্ধ না থাকিলে, ক্রমই ক্রম্পতে সর্পত্তি ইইতে পারিক্ত না; বিশেষতঃ উপনিখনের মধ্যেও অক্সাই গোবিতে পাওয়া বার বে, ভক্ অন্তত্তি বেলভাগ্যকে পৃথিবী অন্ততিক্রপে তিথা করিবার উপনেশ রহিয়াছে; সেবানে ত পৃথিবা।ছি বন্ধ-ভলি অসত্য নংগ্ পরন্ধ সভাই বটে; ওলফুলারে প্রতিষ্ঠা অন্তত্তিক বে, বিভূম্বাদি বৃত্তির উপনেশ, বৃত্তিকে ইবনে, সের বিস্থু অন্ততিক সভা পদার্থ, কোন কল্পনাম করেব।

⁽৪) ভাংগ্রা—উপনিবদের ববো 'প্রকারি-বিদ্যা নামক একটা প্রকরণ আছে। লেবানে ছালোক, পর্কার, পূনিবা, পুরুষ ও রা, এই পাঁচটি প্রার্থকে অনিওপে চিন্তা করি বার উপনেশ আছে। বুরিতে ২০বে, সেবানে বেবন, অগতে অন্নি' বলিয়া একটা প্রার্থ লোকপ্রস্থিত আছে বনিয়াই অন্নি ছানোও প্রকৃতিতে অনিচিন্তার উপনেশ ব্রয়াছে, আলি ব্যক্তিয়া কোন প্রার্থ না বাক্তিনে কবনই প্রয়ণ চিন্তার অবসর ব্রক্ত বা, তেশ্বি



चानित, बानावि कियात छात्र विकाविवासक कैनामानक পাৰ্বতা না বাকার ব্ৰহ্মসভাব নিত্র হইতেতে। বেষদ বিশিষ্ট কলের ভক্ত विधिष्टे कर्जवाश्यमानी ७ विश्वय क्य-नवकारत विविष्ठ वर्ध-शोर्यमानि যাগজিয়ার অলাভত কলাদি সংঘট অলোকিক অর্থাং লৌকিক প্রত্য-कावि अवार्शन वर्गातन, वर्ग अक्वांक राम्याकारे रा मनुस्तन विवय ज्ञानम कृतिश वारक, (उपनि वृत्यावि वर्षविदीन ७ अननाशविदर्वतिक नद-ৰাখা, কৰৱ ৬ বেৰডা প্ৰভৃতি পৰাৰ্থও প্ৰভাকাৰির অপোচর : [কুভরাং কর্ম-ৰীবাংস্কের অভিযত কর্মকাদির সহিত্য এ সমজ্যেও কিছুৰাত বৈৰক্ষা मारे : बरेक्डरे के नवच विषय (क्यन (ब्यमाका बरेटिस विकास बरेश वारक: चछवर चरनोकिकप रमठः चर्वार श्रेष्ठामनि चन्न कानिक श्रीवानिक देनात मा बाकात के नवल बहार्यक कित्रवार वर्षाय वर्षाय करात करात জাপন করিয়াছে, তাহা ঠিক দেইরুণই-সতা হইবার বোগা। খার জালোৎ-शाहरनत शास कितारवारक बारकात महिल जान धकानक बारकात रह. किह्नात्म देवना चाहि, छाहा नात, चर्वा छ छत्र वाका हहे छहे वर्षावर অৰ্থপ্ৰতীতি সমানভাবেই ব্ট্যা থাকে; কিছ প্ৰমান্তা বিবন্ধে কথনও আছ বা সংশবিত জান সমুংপন্ন হয় না; বিভএৰ ক্রিয়াবোধক বাক্যের ভার त्रवादक बाकाल अवाव अवर खाहाड वर्ष विकार महा। है।

[বীবাংসকের পুনঃ শক্ষা —] ব'ল বল, একবোৰক বাক্যে অফ্টানবোগ্য কোন প্রকার কর্ম না বাকার উক্ত সিভান্ত বুক্তিসকত নহে,—অর্থাৎ বলি বল, ক্রিয়াবোৰক বাক্যসমূহ বেল্প অলোকিক হইলেও অংশগ্রহসভান্ত ভাৰনার (সর্বাধি কলোৎপাদক ব্যাপার বিশেষের) অফুঠেরতা জাপন করিবা বাকে,(৫)পরসাম্মাও ইবরানি বিবরক জানে ত সেরপ কোনও অফুঠানের বিবর

এথানেও এক বলিরা কোনও নতা প্রার্থ বা থাকিলে, বাব প্রভৃতি প্রার্থে কর্মই একচুট্টর বিধান ও প্ররোধ সভবপর ২ইও না। এইজাতীর বহুতর উনাহরণ বর্ণনে প্রবাধিত
ইইতেহে বে, আরোধ্যান্তই ভল্পাভূত সভাবভ্যাপেক; এবং আরোপ চইতেই সভাবভর
অভিশ্ অভূবের হয়।

^(॰) ভাংগর্য —'ভাবনা' অর্থ —"এবিভূউবনাতৃক্লো ব্যাপার:" অর্থাং ভারী কর্মারি বা ভক্ষণক অনুহোৎপত্তির অনুকৃত কর্তার বে ব্যাপার অর্থাৎ প্রবৃদ্ধ, ভারার নাম 'ভাবনা'। ভাবনা ছইপ্রকার ;—(১) পানী ও আর্থা। ভরবো "বর্মকানো বজ্জে" (বর্মাভিনাবী ব্যক্তি বাগ ভরিবে), এইটা পানী ভাবনার উলাক্ষণ। এই ভাবনার অংশক্তিত অংশ ভিরমী—'বিং

नारे. अर्थे अर्थे किशास्त्राय के नार्थे अर्थे किशास्त्र के नार्थे के नार्थे किशास्त्र के नार्थे वना रहेबारह, त्र कथा वृज्जिकुक रहेरजरह मा। मा, ब कथां वनिरंख शाह मा ; (क्य नां, कारतव विवद व्हेरणह्य 'छवाकुछ' व। निष्क वस : विक्रवार, काराव व्यायांगंध पांछाविक वा पछानिक]; कातन, चान्नवस्त्रमंबिक प्रमुखंद्र कारमात्र (व. क्यूर्कत्रक-निवहनदे नकाका वा धानाना वत, जावा मरद ; नवह व्यंत्रानक विवादे दत्र। जात तारे कावनाविदत्रक वृष्टिक (व,विवादत जन्मार्कत्रका-निवचनरे नठाणांनाच कवित्रा शास्त्र, जाशंख मरह; जात कि ? मा, रवहवाका-ৰ্দিত বলিয়াই সিভাডালাভ করিয়া থাকে। বেদবাক্যাবপত বিবয়ের সভাতা व्यवाजिक बहेरन भन्न, तारे विवन्नी विष व्यक्तीनरवाना बन्न, काला बहेरनहे লোকে ভাষার অন্তর্ভান করে; আর বলি অন্তর্ভানবোগ্য না হয়, ভাষা বইলে ভাষার অনুষ্ঠান করে না এই মাত্র বিশেষী। আগতি হইতে পারে বে অনুঠের ना स्टेरन, राज्यारकात ज श्रीमांग स्टेर्फ शाद माहे : रकम मा. श्रीकशाब विवति अक्षांनद्यांना ना बहेत्न, छक्ष्यक भएनवृहत्व अकावन महत्वि (निजनन--वाकाणाव धातन) नक्षण व्हेटण भारत ना, भत्रण चक्रुकानद्वांत्रा बहेरनहे छत्रिक भननभूरदत्र निधनन नस्दर्भत हरेएछ भारत । छत्रासा 'अहे कार्रा अहे वास्क्रिय अहेब्राल कर्खवां, अहे क्षकाय अपूर्वात्नालाएक वाकाहे थवान बहेबा बारक ; किस 'कुर्वााद, क्रियार, करवार, करवर, जाद' बहे नीठिम अक्टीश ना शांकित. (क्यन वस्त्राज्यावार्यापक 'अहे वस्त्र अहे खकाव' এবংবিং শত শত পদও কৰমই বাকাৰ লাভ করিতে পারে না (৬) ; অভএব **गत्रनाचा ७ वेच**त्ररवावक शक्तम्रहत्त्व अमानकृष्ठ वाकाच हरेएछ शास्त्र मा। »।

কেন, ও কৰবুঁ। 'বজেড' বলিলেই জানিতে ইচ্ছা চয়—কিনের ক্সন্থাগ করিবে ? কিনের বারা বার্গ করিবে ? এবং কিপ্রকারে বাগ করিবে । এই জাকাঞা পুরংগর জন্ত কর্মভাতে বানের কল, নাখন ও ইভিকর্জবাঞা (বে প্রণালীতে বাগ সম্পাদন করিতে হয়, সেই প্রণালী) কর্মব্যরূপে নিরুপিত হইরাহে, কিন্তু প্রান্ধাতে দেৱপ ক্যোন্ধ ব্যবস্থা মুষ্ট হয় না।

(०) ठारगरी—"रूर्गार क्रिस्तठ कर्डगाः उत्तर छाविछि गक्षम्। अधर छार मर्स-त्यसम् निक्कर विविज्ञकनम् ॥ अर्थार 'क्षित्र' ७ 'श्रेट्र' देखावि त्य गीवित्र क्रिमाणम् विविध दरेन, नम्छ त्यस् अर्थे गीवित क्षित्रभागिरे विविध स्वाधिवाती सक्षनः प्रकृतः 'क्ष्मक्षक्ष अर्थेक्षण' ('अर्थे रक्ष अर्थेक्षण' देखावि सक्ष-प्रमुगम्बाधरगायक भवकास क्ष्मक्ष क्ष्मक्ष विविध दरेख वास्त्रम् वाक्ष क्षित्रम् वाक्षक्ष व्यवस्थान प्रमुगम् वाक्ष क्षित्रम् वाम्यम् वाक्ष क्ष्मक्ष व्यवस्थान व

वहि यन, जब वहि निकार नेका नेबार वरेएक, कावा वरेएन वरकरे किनि चल क्षत्रात्वत्र विषय रहेर्छन : छाश वयन वन ना. छयन निष्कारे छिनि चनर : मा--जाबाक बनिएज शाह मा ; कावन, 'ठावि व्यकाव वर्ग विनिष्ठे ऋरवक्रमारव এডটা পর্মত আছে' ইত্যাদি অভূচানবিহীন বিবরেও বাক্যের প্ররোগ বেবিডে शाक्षा यात्र । 'मृत्यक्र गर्काकी क्षृतिय वर्गविनिक्षे' अहे बाधीत्र वाकास्वरत्यत्र गत्, (बक्रश्रक्षणित नवस्य काशासा स्कान श्रकात अवस्तित्व-वृद्धि विशवित दत्र मा। এই প্রকার, 'অভি'পদ-সম্বিত (সন্তাবোধক পদযুক্ত) পর্মাত্মা ও ঈবর-প্রতি-পাদক বাক্যাৰ্গত পদসমূহেরও বিশেষণ-বিশেষ্টাবে সমিলিত ছইতে কে वांवा विरव ? विव वन, त्वक अकृष्ठित कारन त्वक्रण नश्रावनका चाहि. **পর্যাত্মানে ত পেরণ কোনও আরোজন নাই !-- সূতরাং, ঐরণ বাক্য-**সম্প্ৰটা বৃত্তিমুক্ত হইতেছে না। না,—বে কথাও বলিতে পার না; সারণ, ছিল হয়' এইরপ ক্লক্ষতি, এবং সংগারের বীজকৃত অবিভাগি গোবের নির্বিত वृष्टे दश्र। विरायपटा, खन्नकान वथन चन्न कादात्रक चन्न नर्द,--प्रथमान, छपन বলীয় কুতুর সম্বন্ধে কলপ্রতির ভায় ব্রন্ধভানের কলপ্রতিকেও পর্ববাদ কর্মনা क्या महावश्य स्थ ना (१)। > ।

খারও, নিবিদ্ধ কর্মে বে, খানিই ক্ললাভ হয়, ইহাও ত ক্ষেপ বেদ হইতেই লানিতে পারা বায়; কিন্তু সেই খানিই কল ত অনুষ্ঠের ক্রিয়া নহে; খার নিবিদ্ধ বিষয়ের অনুষ্ঠানে প্রায়ুত্ত বাজিকে সেই ক্রিয়ান্ত্র্চান হইতে ক্ষেপ বিরত করা ভিন্ন খার বে কোন প্রকার অনুষ্ঠের খাছে, ভাহাও নহে। নিবিদ্ধ ব্রদ-হত্যাদ কার্য্যের অকর্ত্তব্যতা ভাগন করাই নিবেশ্ববিদিস্থয়ের

⁽१) তাংশব্য—ভূত্ব এক প্রকার বজার হবি: এবাবের পাত্র, তাব্য পত্র বারাও নির্বিত বইতে পাত্রে, অন্ত বন্ধ থারাও ংইতে পাত্রে। সেইজন্ত ক্ষতি বনিরাহেন "বন্ধ পর্বরাই অনুষ্ঠবৃত্তি, ন স পাপ্রেকং পৃলোভি" অর্থাৎ বারার কুত্র পাত্রেরী প্রান্থানি পত্রবার্যা বিবিত বর, সে ব্যক্তি কবনও ছংবরার্থা করণ করে বা। এবাবে কুত্র হইতেত্বে প্রধারকৃত বজ্ঞের অব্যানর উপকার সাধনই ভারার মুখ্য কল; পুভরাং অক্সা করক্ষতিরীকে প্রশংসাপর অব বাগ বনিতে হয়। অর্থ বাগ ভিন প্রকার:—(২) ওপবার (২) অসুবার ও 'পুভার্থ বার । প্রত্যাধারির বিক্রম্ব কর্মা ভবরার'। বেরন, 'আরিভ্যো মুন্যং'। প্রবাণাভয়-নিত বিবরের উত্তি-'অমুবার', বেরন, 'ব্যরি ইন্তর ভেরমন্য'। এই উত্তর প্রকার-ভিত্র অর্থাব্যের বার পুভার্থ বারণ', বেরন, 'ইজ্যো বুজার বক্ষর্যবক্ষ্যং'। কিন্ত ক্ষত্রভাবে বে, ক্ষুপ্রান্তিরূপ ক্রম্পতির বহিনাতে,ভালা ভ ভারারও অঞ্চ সংগ্রেইছেয়াং ভারা অর্থ বার্য করেয় প্রিবর্ণিভ কর্মতে পারে বা।

मूख डेरथक। (व शाकि निरवदिविश्क अधिक, सूर्वात नवरवक छावात निकडे समक्ष या পणिकांत अकृष्टि जकना २७ देशकित बहेरन गर, 'हेश बार, हेश चका' अवरविव काम नवूरना वहेताछ ताहे मितव कात्मव पुणियान चांचा राविक रदेश वार, (यसम--- मुनककार (खनकहिक बान) (नरकान केनहिक वरेत्व कविरहक क्षेत्रक स्नाम बाहा काहा बाहिक हरेशा बाह्य, देशक कर्या। উপছিত সেই খাতাৰিক প্ৰমন্তান বাধাপ্ৰাপ্ত বইলে প্ৰ,ভবিবৰে আৰু অনৰ্থকৰ कामन अवस्थित दव मा, (भागना वदेस्कर कांश निवृत्त वरेंद्रा वांव)। ज नवच परम 'दनवन विभवीक स्थानवृत्तक व्यवस्थित निवृत्ति व्हेशः बारक, किस चहित्रचित्र वक्र चांव (कृत्म श्रामात वक्र वा (क्रेश कविरक वह ना। चक्रवन वक्षत्र वायाचा कालम कवा वर्षाय मिनिय करकेत वामहेकातिक। कालम कवाहे নিৰেধবিবিসমূহের মুবা উদ্বেপ্ত, কিছ ভাষাতে লোককে কোম প্রকাষ अक्षांत्म धारविष्ठ कांत्रवात नावगवत माहे। हिंक निरवर्शवायमृद्यत छात्र अवारम् ७ श्रवाका अकृष्टित वावार्वा-विकामांवर्धक वाकाममृत्यक श्रवाण-वांबाखा कालम कवाहे अकमात मुना छेरकत । (शहेब्रल, बहे नमण वांकार्ब পর্বালোচনার কলে বাধার জান সংস্বারসম্পন্ন হইয়াছে, অধাৎ ঐ ভাবে ভাৰিত ব্ৰীণাছ, ত্ৰিপরাত আনপ্রণোপ্ত প্রবৃত্তিশ্যুবের আনত্ত-কারেতা विकाल बाकाइ, अवर श्रवशाबाद वावाया कान चतुन शर्द छाएल व्यवहाद খাভাবিক এবৃত্তি বাণিত হট্যা বায়, তখন আপনা হট্তেট পূৰ্বোক व्यव्यक्तिमृत्वत्र क्लाव क्षित्रा थाटक । >> ।

ভাল কৰা, কল্পপ্রভাত নিবিদ্ধ দ্রব্য ভক্ষের অনিটকারিতা পর্ব হওয়ার বভাবলৈ ভতক্ষীগ্ৰা-আতে তিবোহিত হচ্চা বার; সুভরাং পনিই-কর কল্ঞাাদ ভক্ষে বেরপ অপ্রবৃতি হওয়া যুক্তবুক্ত হয়, কিন্তু প্রদ্ধানে দুচ সংস্থার অন্মিলেও লোকের বে, শান্তবিহিত বাগালি কার্ব্যে প্রভাতর প্রভাব बहेर्द, हेबा छ युक्तियुक्त बहेर्छ शास्त्र मा : कात्रन, देवब बानावि किया श्रीन छ निरंबर्शविवत विवत नरह । ना, ज चार्शाक्षक मुक्क दत्र मा ; कांत्रण, विरात्तीक कानवृत्रक (व. वेडानिडेशाव, शाहा देवस्करचंत्र शाक्षक ग्रमान । पाकियाह बरे (व, क्लक्षांव कल्पल क्षत्रीक दवल्ल खांबकानव्यत्वाविक विनेता कर्म वा चनिष्ठेकत, नाविर्विष्ण वात्रचिनम्दित्व (नहेंद्रन चक्रामम्नक ७ चनर्यकत्व দ্যান। অভএব পরসাক্ষরিবরে যাবার ব্যার্থ আন সমুৎপর হইরাছে, ভাৰায় পদে, শাল্লবিবিভ বাগাৰি কাৰ্যভালত লাভিভানবুলকৰ ও ইটানিট-

नायमाध्य पूजा मध्याह, गव्याप-काम पावा विद्या काम केवृतिक व्येपात ग्रहे देवववर्ष अतुष्ठि ना रक्षाक वृक्तिवारे यह । २२ ।

बाबा, कावा वार्वार कार्या अवृति वा रखा वृक्तिवर हरेए बार मछा, क्वि निका क्वनपूर रवन दक्तमहे नाजविद्धि अवर देहेनिहेनावक्क मार, ज्यम जिवस अवित अवाय रक्षा ज वृक्तिमण व वेराज शास मा । मा, चारा मरह; कांत्रन, बाराबा चळान ७ चळानवृत्तक वात्रस्वाहि स्वायनुकाह. ভাবাদের সক্ষেই নিত্যকর্ষ বিধিত চইয়াছে, (কিন্তু রাগ্যেবাদি ধোবরবিভেন্ত नवर्ष नरर)। [वृतिरठ २हेरत्] (वयन वर्तकायनाविद्यम स्वायनम्मः मुकायद वक 'ঘৰ্শপৌৰ্শবাশা'ৰি কাষা কৰ্মগৰ্হ বিভিত হইবাছে, তেখনি বে লোক স্থাবিধ चमर्र्यत नोक्कुछ चनिकावि-(वाद्य केनूबिछ अरः चनिकाश्राट्य हेडेश्राखि क चनिटे-पतिशास्त्रत बृतीकृठ तागरवर्शात स्वावनन्त्रत वर्ते, छ।बात अञ्चलिकक পূর্মাবৎ অবিভাষোৰ সামাবিট থাকায়, বুলিতে হইবে বে, ভাষুণ বোৰদাশার लारकत अबहे निकाकत्रमध्य विदेश सहेता बारक, किन्न (कवन नारबत चारमपरे छेरात अक्याज क्षरवाक्य नरह । चत्रिश्वात्र, वर्नालीर्गात्र, वाकुवीक, পশুৰুছ ও সোম্বাপের কান্যত্ব। নিভাত আংশ বছপত: বে, কোনপ্রকার वित्य चारक, छादा मरह । कादव, चक्रुक्रीमकर्खात वनि चनीविकरण कावना बारक, छावा वहेरकहे त्वहे त्वावनत्व कावाच वहेवा बारक, चाव कर्चा विव **पविद्यापि (पारमण्येद अवः (पार निवदन प्रधार्यमः प्रधार्यापि व्याप विदेशास्त्र** ७ मनिदेशदिवाद मांजनावी वन. जावा १हेरन निजाकर्षक जावाद काबाकन गायक बत्र : कांत्रव. छावात बज्र हे छैवा विक्रित बहेबाह्य : किन्न व वाक्यित भन्नमाञ्चनिवात ववार्व कान छिपि । दहेन्नाह, छादाव भाक निवास केमान निर्देश ভিন্ন কোৰাও :কানত্ৰপ কৰ্মের বিধান ছেবিতে পাওয়া বাব না।কেন না,কর্মের নিষিত্তীভূত বে, বেবতাৰি সন্ধবিধ সাধ্য, সে সমূহবের অস্ত্যতা প্রতিপাহন पूर्वकरे जाजाजान विद्य रहेशा शास्त्र ; पूछतार शहात क्रिया ७ काक्रमांक विराग्य काम विमर्पिछ (विश्वादित निन्धिष्ठ) शहेत्रार्क, छाशांत शत्क कर्य-व्यक्तिक क्षमक केरणह यह मा : कारन किया क करमानमानि निवद वित्व कान वाकिताहे (नाटकत क्रिश्चकीटन क्रवीख बहेता बाटक, (मटाव क्थनहे हत ना)। कारन त्व वाकि वर्ष ७ कानावि श्रीताक्ष वारठ ७ सुनवाविविक परिचीत तथकाम नाच कविशास. छात्रात गरक कथावर्षात्मक व्यवनार व क्षापात ? विव वन, अक्षविष् वाक्षित क्षाप्त (वनन क्षत्रक स्टेश पारक,

स्थिति क्यांश्रांति अविक स्टेस्ट शाद ; मा—छारा विवास अविक मा ।
काव (मारक दा, काकमानि कार्या अविक रव, विवास कार्या अविक स्वास कार्या अविक स्वास कार्या अविक स्वास कार्या अविक स्वास कार्या कार्य कार्य

বিশেষতঃ, শান্ত্রাক্ত বেশকালাদি নিষিত্রগাণেক বলিয়াও নিতাকর্থের অনিরভদ্ধ বা কালাচিৎকতঃ ব্রুতে পারে না; কামা 'লগিহোত্রা' বজ্ বেষন শান্ত্রনির্দেশান্ত্রসারে সারং ও প্রাতঃকাল সাণেক, অর্থাৎ সারং ও প্রাতঃকালেই উবার অন্তর্ভান করিতে বর, বে কোন স্বরে মহে, ঠিক তেমনি অবিভালোবর্গক নিতাকর্মগর্হও কালবিশেবগাণেক। তাল কথা, জানীদিপের ভোজনাদি প্রবাভবিষয়ে বেরপ নিরম আছে, অগ্নিহোত্রাদি ক্লিয়াও ঠিক সেই-রপ জানীদিপের অবস্তকর্ম্বর হউক; না, তাহা হইতে পারে না; নিরম ত আর কোন ক্লিয়া নহে, এবং ক্লিয়ার প্রয়োজকত নহে; প্রতরাং তালুল নিরম-কল্লাও জানের প্রতিবছক বইতে পারে না। অতএব পর্যান্ত্রবিষয়ে ম্বার্থ জানের বিধিও ববন তালপরীত স্থান্ত ও বৈতভাবের নির্ভি সাধন করে; ভবন জানবিধিরও সর্মাকর্মনির্দ্ধে প্রতিবেধ-বিধারকতা উপপন্ন হইতেছে; কারণ, কর্মগ্রন্থান্তর অভাব বা।নর্ভিসাধনরূপ প্রয়োজনটী নিবেধবিধিও জানবিধিক-

⁽৮) ভাৎপর্য-নিভ্যকর্ষের নক্ষণ এইরপ-"বদকরণে প্রভাবায়, তৎ নিভ্যন্" পর্বাৎ বে কার্য্য না করিলে পাপ হর, ভাষার নাম 'নিভ্যকর্ম'। স্থভাং নিভ্যকর্মান্থলৈ কারারও থাজন্তা নাই; কর্ছার ইন্দ্রা পাত্রক আরু নাই পাত্রক, নিভ্যকর্ম করিতেই হইবে। ভোলনাথি ভারতিনি কেবলই নেহালিতে আত্মাভিনানরপ অবিভালনিত; স্থভাং নেই অবিভালন মোবটি ববন বাহার বেরপ প্রবল্ধ হয়, তথনই ভাষার নেই প্রবৃত্তিরও প্রাবল্য বৃত্তির বিহক, আবার নেই বোব দিবিল হইরা গেলে পর সক্ষে বান্ধে ভোলনেজ্যত হাইভ বৃত্তির আরু বান্ধের প্রভাবন নিভাকর্ষের সহিত পার্বতা নাই।

केवार शाम हे पूर्वा । मध्यम निरम्बिषित कार कामनारमञ्ज रक्षम सक्रमानः ৰাজ প্ৰতিপাৰৰ ও ভবিষয়েই ভাৎপৰ্য্যৰতা নিম্ন হইন । ১০ । ১ ।

তে হ বাচৰ চুকুং ন উদগারেতি, তথেতি, তেভ্যো বাঞ্চদগারৎ। যো বাচি ভোগন্তং দেবেভ্য আগারৎ, বৎ কল্যাণং বদতি ভদান্ধনে তে বিহুরনেন বৈ ন উল্গান্তা২ত্যেক্তীতি ভষভিক্রতা পাপানাহবিধান্ স যা: স পাপাা যদেবেদমপ্রতিরূপং বদতি স এব 거 에에게 # >> # < #

সন্ধলার্থ:। তে (পূর্বোজা:)[দেবাঃ বাণাদয়:] र (ঐভিয়ে) बाह्य (वानि क्रियम्) केहा (केक्यका)—[(६ वाक्,] पर नः (व्यवहाय्) উर्गात (উन्तीयनामः कृत्र) देखि । वाक् (वानिज्ञित (एवछा) छवा (छवास) ইভি [প্ৰতিক্ৰতা] তেডাঃ (প্ৰাণৱপ্ৰেবতাত্যঃ) উদ্পাৰ্থ (উন্নীৰ্গান্থ इन्डबंडो); वाहि यः (जानः (वाह् निविद्यः व जैनकातः), एर ((जानर) (शरवंडा: (गर्सक्रियांडा:) जानावर; वर [नून:] कनावर (लाख्यर) वहाँख (वर्गान् फेक्काबर्शक वाक्), ७८ (कन्नागवक्तर) चाचरम (चटेच) [चानाबर]। (७ (चन्द्रा:--वाकनवृक्तः) [वाहः छवाविवर चनकनातः डेननछा] विदृः (विकारतकः), [१९--) चरनन हिएताला वात्राक्षना हेन्त्रीवकला) देव नः (খখান্) [খাভাবিক: জান: তর্ম চ খাভিত্য] খডোবাছি (খভিক্রমি-ৰাভি পরাভবিবাভি) ইতি (এবং নিশ্চিতা) তং (বাক্সভপৰ্ উল্লাভাৱৰ) অভিফ্তা (সৰ্বটোভাবেন আক্ৰয়) পাপ্ৰনা (প্ৰকাৰেন ভোগাণজি-(बार्यन) व्यविवास् (नश्रवाकत्रावादः), वः नः (क्षणानर्तः नृसंकत्रमि कावः वर अव देवर (बक्कवरताहतः वया जार छया) व्यक्तिकर (व्यक्तिकर व्यक्तिवृद्धवि) वष्टि (नर्सी बनः), नः [बनष्ट्रद्भग्यहमव् अव] नः (बानव-क्रम्हरः) गाग्या (गानक्रमिकार्यः) ।

মুলানুবাদে। সেই দেবভাগণ বাগিল্লিয়কে বলিয়াছিলেন— ভূমি আমাদের জন্ম 'উল্গীথ' গান কর; বাগিক্সির 'তথাস্ত্র' বলিরা ভাহাদের অক্ত উদসীধ গান করিলেন ; কিন্তু বাক্যণস্ক বে সাধারণ ভোগ, ভাষাই দেবভাগণের উদ্দেশ্যে গান করিলেন, আর বাহা কল্যাপময় অভি রমণীর বাক্যোক্তারণ, ভাহা আপনার নিষিত্ত গান করিলেন; এইরূপ বে, বেৰভাগণ এই উদসাভা থানা (উদসীখগানকারী বাগ্দেৰতা থানা)
শ্বীনালিগকে অভিন্তম করিবে, অর্থাৎ পরাজিত করিবে। এইরূপ বনে
করিয়া তাঁহারা বাগ্-দেবভাকে আক্রমণ করিয়া পাপ থারা বিদ্ধ করিলেন।
নেই বে, প্রজাপভির পূর্বকেমজাভ আসন্তি বা পঞ্চপাত, ভাহাই ভাহা ;
ভাহার পরিচর দিভেছেন—) এই বে, লোকে অমুচিত প্রথাৎ শান্তনিবিদ্ধ
কথা বলিয়া থাকে, ভাহাই সেই পাপ, অর্থাৎ পাপের কল ঃ ১১ ॥ ২ ॥

শক্তির ভাষ্য ন। তে দেবা হ এবং বিনিশ্চিতা বাচং বাপতিবানিনাং বেবতাব্উচু: উক্তবহা;—জং নঃ অপভাষ্ উল্পান্ন উল্পান্তং কর্ম কুরুষ,—বাস্থেবতানির্কর্তাবৌদ্পান্তং কর্ম দৃইবন্ধঃ তামের চ দেবতাং অপ্রয়াতিবেয়াব্—"অসতো বা সন্প্রয়" ইতি । ১।

শত্র চোপাস্নারাঃ কর্মণত কর্জ্যেন বাগান্ত এন বিষক্ষারে। কর্মাৎ প্রমাধ পরবার্থতভংকর্জ্য তবিষয় এব চ সর্ক্ষে: জান-কর্মসংব্যবহার:। বজ্যান্তি শ্বায়তীৰ লেনায়তীন ইত্যান্তক্ত হাতানং বিভর্তঃ বর্চে। ইহাপি চ শ্বায়তীৰ লেনায়তীন ইত্যান্তক্ত হাতানং বিভর্তঃ বর্চে। ইহাপি চ শ্বায়তীৰ লেনায়তীন শ্বায়তীন শ্বায়তীন কল্লাভ্য্—"জ্বাং বা ইবং নাম ক্লপং কর্ম" ইত্যবিজ্ঞাবিষয়ন্। শ্বায়তাৎ তু মৎ পরং পরমান্তাধাং বিজ্ঞাবিষয়ন্ শ্বামান্তক শ্বায়কং "নেতি নেতি" ইতি ইত্রপ্রত্যাধাানেন উপ্সংহরিষ্য ত প্রক্। মন্ত বাগান্তি-স্মান্তারোপাধি-পরিক্লিভঃ সংসার্যান্ত্রা, ভঞ্ বাগান্তি-স্মাহার-পক্ষণাতিনবের দ্বির্যাতি—"এতেভ্যো ভৃত্তভাঃ সমূখায় ভাত্তবাত্রবিক্তাতি" ইতি। তথাপ্ বৃক্তা বাগানীনামের জ্ঞান-কর্মকর্জ্যক্ত্র-প্রাপ্তিবিক্তা। ২।

তথেতি তথা খিতি দেবৈক্ল কাৰ্তেতাঃ অধিতাঃ অধান্ন উদ্পানং উদ্পানং কৃতবতী। কং পুনরসৌ দেবেতাঃ অধান্ন উদ্গানকর্মণা বাচা নির্মন্তিতঃ কার্যা-বিশেষ ইতি ? উচাতে,—বেঃ বাচি নিবিত্ত তারাং বাগাদিসমুদারত ব উপ-কারো নিশালতে বদনাদিব্যাপারেশ, স এব। সর্মেবাং হুসৌ বাধদনাতি-নির্ম্বাণা কেন্দ্র। তং ভোগং সা ত্রিবু প্রমানের কৃষা, অধশিষ্টেষ্ ন্যম্ব ডোত্রের বাচনিক্যাবিজ্ঞাং কর্ম —বং কল্যাণং শোভম বছতি বণান্তি-নির্মন্তিরতি, তত্ আন্মনে বহুবের। তত্তি অসাধারণং বান্দেবতারাঃ কর্ম্ব, বং স্বাগ্র্থনামুক্তারণক্; অভভবের বিশেষ্তে—'বং কল্যাণং বছতি' ইতি। বং তু ব্যাক্ষাব্যাং, সর্মস্বাতোশকারাক্ষাং তত্ব ধ্যাক্ষাব্যান্তে । ৩।

व्ययत्रांश्यातः।--एडीशः वाचनम्।

ভত্ত ক্ল্যাপ্ৰকৰাজ্যকভাগৰাৰ্থই কেবভাৱা রজুং প্রতিশভা তে বিবৃদ্ধ-পুরাঃ। কবন ? অনেন উদ্পাত্তা, নঃ অভান্, খাতাবিকং জানং কর চাজি-ভূর অভীতা, শাস্ত্রকনিত-কর্ম-জানরপেণ জ্যোতিবা উন্ধাত্তাজ্বনা অভ্যোত্তি অভিপথিবাত্তি—ইত্যোবং বিজার, তম্ উদ্পাতারন্ অভিক্রতা অভিপরা, খেন আসম্বাক্ষণেন পাণ্যনা অনিধান তাড়িতবতঃ সংযোজিতবত্ত ইতার্থঃ।

স্বাং স্পাপ্যা—প্রভাপতেঃ পূর্বভিনাবন্ধত বাচি ভিতাং, স্থান প্রত্যক্ষাক্রিয়তে—কোহসৌ ? বংলবেন্ধ্র অগতিরপ্র অনভ্রপং শারপ্রতিবিদ্ধং বছতি,
বেন প্রবৃক্ষঃ অসত্য-বীতংসান্তালি অনিচ্ছরপি বছতি; অনেন কার্য্যে
অপ্রতিরপবদনেন অভগনার্থনঃ প্রভাপতেঃ কার্যাভূতাকু প্রভাপ বাচি বর্ততে;
স্থান অপ্রতিরপবদনেনাভূমিতঃ; স্প্রভাপতের্বাচি পতঃ পাপ্রা; কারপাভূবিশ্বি হি কার্য্যানিতি । ১১ । ২ ।

নীকা। জাননিত পৰীকানাগনিতোতং প্ৰস্কাগতং বিচানং পৰিসনাপ্য 'তে হ বাচৰ্' ইত্যাদি বাচাই—তে দেবা ইতি। অচেতনাং৷ বাচো নিবোজাৰং শংহছতি—আপ-জিমানিম মিভি। নিবোজাণাং দেবানানিভগ্ৰাহৰাৰ—আপাদেবতোজ্ঞ। নম্ব উদ্পানং কৰ্ম জপ্ৰস্থাকালা বেবতা নিৰ্মাইখিনাতি, ন চু বাপেবতেভি, ভ্ৰাহ— ভামেনেজি "প্ৰদেশ্যে বা দ্বাবয়" ইতি জপ্নস্থাভিবেহাং দুইবল্প ইতে প্ৰেৰ্থ সম্বন্ধঃ।

বাগান্তাপ্রবং কর্ত্তালি নর্পত্ত লব্বাগন্ত প্রাকৃত্তি ভাগান্তি। কর্ত্তালি নর্পত্তি। আর্থান্তি কর্ত্তালি লব্ডান্তানে হল্ত বাবান্তাপ্রবংশকৃতি লি ক্রেড্রালি তি । পরত বাবান্তাপ্রবংশকৃতি লি বিবাহিত্যলি কর্ত্তালি, করাপ্রবেশ ব্যাং প্রজীত ৷ কর্ত্তালি কর্ত্তালি কর্ত্তালি লি ক্রিড্রাইল কর্ত্তালি লি ক্রিড্রাইল ক্রিড্রাইলিক লি ক্রিড্রাইল ক্রিড্রাইলিক লি ক্রিড্রাইলিক লি ক্রিড্রাইল ক্রিড্রাইলিক লি ক্রিড্রাইলিক লি লিট্রাইলিক লি লিট্রাইলিক লি লিট্রাইলিক ক্রিড্রাইলিক লিট্রাইলিক লিট্রাইলিক লিট্রাইলিক লিট্রাইলিক লিট্রাইলিক লিট্রাইলিক লিট্রাইলিক লিট্রাইলিক লিট্রাইলিক ক্রিট্রাইলিক লিট্রাইলিক লি

ভাৰণগ্ৰন্থবাদভোক্। নিৰ্কলা বান্দেৰতলঃ বৰ কতং, তছ্পভততি ভত্থেজ্যা দিনা। উদ্যাত্য লগমন্ত্ৰকাঞ্জঃ ১ আল্বোংলাকুড়া বাঞ্চাবে অনুছা তেং ভলা কভিছুপকালে বেশানাৰ্কনানেক নিৰ্বভনীয়া, স চ নাডীভি শক্তে—কাঃ প্ৰান্তি। বৰণাবিনাপাৰে নভি স্থ স্থাবিশেষঃ সভাভিভ নিপান্ততে, স এব ভাৰ্যাবিশেষঃ ইঙাছে—উচ্যুক্ত ইন্ডি। বো নাজীভি এজীকনানার ব্যাখ্যানতে কথা পুনৰ্বাচে৷ বচনা চক্ত্ৰে। ধর্ণনি গ্রাধিনা নিপানা কথা স্বৰ্গনি এগাণানা বিশানা কথা স্বৰ্গনি এগাণানা বিশানা কথা স্বৰ্গনি আনি কৰিছে কাৰ্যান্ত ভাল — ক্ষেত্ৰামিতি৷ কিছ, দেবাৰ্ব্দনান্তায় বাজা বিশান্ত কৰিছে কাৰ্যানি কৰিছে কাৰ্যানাৰ কৰিছে কাৰ্যানাৰ কৰিছে কৰিছে কৰিছে কৰিছে কৰিছে বিশান্ত ভালিক কৰিছে কৰি

ৰান্দেৰভাৱাৰ অসুৱাৰামৰকাশং দৰ্মতি--জ্ু 🚫 🐯 । খণৰে প্রাথে চোলামে সভীতি वायकः। कन्यानवस्त्रकञ्चनः वर्षेत्वः स्थलकः यः व्यव्यम् व्यानत्वतः जित्यनः, नः धवायनस्या বেৰভারা:, ভবৰসরং প্রাণ্ডের: । অবসর্যের ব্যক্তর্যেতি –ব্রহ্ম মিন্ডি । **অমানতী**ভোটি **সম্বন্ধ: । কোচনো অসু**বাভায়ন্তা বাচটো—ভাগ দৰ্শ- ভাগ্নিন্তি । তব্দেশায**্শন**দাতি । **শালেন্ডি। অন্তরান**ভিতুর কেনারনা দেবাং প্রচান্তরীত বরক্ষায়ানাচ—ক্ষেণ্ডিয়েন্ডি। बाबागरहर्क्ता हिना किया बहरेहरिडि कुछ्डान्वमधाह, एवाक-ब्ल् या अ পাঁতে। প্ৰতিবিশ্বনন্ত্ৰৰ পাণ্ডম গড়কৰনৃষ্টত ক্ষাভিৱিক্তৰাসী কাৰাৰ, ইত্যানভাছ — (शहराखि । अनुकार महानदीर शीवर्गनानि, बोक्टरम् । अधानका (अधानिवर्गनम्, अनुख्य আৰ্থাৰ্ট্ৰচনৰ্। আদি-শ্ৰুণং শ্ৰুণে গুজাত কিম্ত্ৰ প্ৰাণ্ডেৰ্কাচি শুপ্মস্ভে মানমুক্ত ভৰতীভাশেষ্য দ এব দ পাশ মেতি বাকরোতি আনোভোক। আন্ধাপভাকে **অভানু মতিপরেন অ**বভাৰণনাদিন লিজেন ভ্রাতি গাপ্নার্মারতে। বিষতং পাপাম-পুৰ্বাকং প্ৰতিকুলৰীবিষয়ত্ব'ৰ ছুখৰৰ ; যা স পাপ্তা প্ৰভাৱচোচ্ছ মিতা, স বৰ প্ৰভাপতি ৰাচি পাপ্রানং পরয়ভি । বিষতং কারণপুর্বকং কার্যাভালটেবং । ন । প্রভাগতং ছুরিভং बाबागुडाः छविमा (इदयदाध्यव छार, काश्याक्षविधाविधार कार्याछ। म ह छरकाद्वर्याः श्र প্রস্থিত প্রস্থাং 'অপ্পেরিছব্' ই'ত ক্রতেঃ । ন চ 'ন চ বৈ দেবা- পাপং সঞ্জি' ইভি क्षांकर्न शृद्धाः नि पापादभवना कनावहरा कर्णापादः पि यक्षमानावहरा ७ इति। विकास है। व्याक्तमन्त्राच्याः मध्यपद्रः भाग्याननम् छ टरेत्रार काराव्यमूत्रास्त्रः । উक्तवाच्याः पू कार्याद्यः नान्यानवन्त्र करेनाव कावनवद्यविकि विकासः ॥ ১১ । २ ॥

ভাষ্যাকুবাদে। সেই দেবতাগণ এইরপ নিশ্বর করিরা—বাক্কে
আর্থিং বাপিলিরাতিমানা দেবতাকে বলিশাভিলেন তুমি আমাদের জল্ল উল্লাভার কর্ম—উল্পীবগান কর; অর্থাং বাপ দেবতার সম্পাননীয় উল্পাত্ত কর্ম এবং "অস্তো বা সং গমর" (আয়াকে অসং হইতে স্তে লইয়া বাও) এই স্পাস্থ্যের প্রতিপাত্ত দেবভাষ্টেও দর্শন করিরাভিলেন। ১।

এবানে বৃথিতে হইবে, বাগাৰি খেবতাৰণকেই উপাসনা ও কৰাছ্টানের কর্তারণে প্রতিপাদন করা শ্রতির মতিপ্রেত। কি মৃত ? বেছেছু, বে কোন-क्षकात जान ७ कर्य व्यत्रिक चार्छ, व्यक्ठनरक काशनाई ताई नवर्छत कर्ता । विवन्न (चालन), चर्वार बाक् टाक्छि हेल्लियन मांशाया अवर बाक् टाक्छि है लिए एट है के ममल वावहात मन्मत हहेग्रा बादक। अहेब कहे महत्र बर्डा बाह्य 'बाबा (यन शान करत, (यन म्लमन कर्त्त)' हेलाबि वारका बाबात बक्कुंच विकुछ्छात्व वर्षना कदिरवन । चात्र अवात्न छ चगारत्र व व्यवार छेननः सान-शृश्य "खब्र: वा देश: नाम ब्रश: कर्य" देलाशि वात्का अवास अव्हिंड दरेटड चावन्त कतिहा किहा, कावक ७ कन अक्ष्य नयक विवाद विवाद वा चळान-मूनक विनशा वर्षण कः दर्यन । जोत्र विनि वयाकृत, श्रक्तांत्रव जाता अवर नाय, त्रुल ७ कर्षात महित चमचक, विनिर्श विषात—खात्नत विषय, अवर 'स्मिक নেতি' ব্লিয়া অপর সর্বাদার্থবিলক্ষারপে তাহারই পৃথক উপসংহার করি-(वन। चात्र । वान् श्रकृष्ठि উপाधिममेडे।वान्डे मःमात्री चाचा-चौद, ভাৰাকেও আবার ''এতেডা: ভূতেডা: সমুখায় ভাজেব অহাবিনছভি" हेड्यानि वादका वाक्षा इंडि स्वरंगाट्ड अञ्चलायो विवश धार्यन করিবেন। অভএব বাক্প্রভৃতির স্বন্ধেই ভান ও কথাপুর্ভানের ক্লপ্রাপ্তি প্রতিপাদন করা সম্ভবপর ও সম্বত বয়। ২।

'ভবা' ইতি, অর্থ—তথার (সেইরপই হউক); বাপ্দেবত। অপরাপর দেবতাকর্ত্বক অসুক্রন্ধ হইয়া প্রার্থী সেই দেবতাগণের নিষিত্ত উদ্পান করিরাছিলেন (অর্থাৎ উদ্যাব গান করিয়াছিলেন)। বাপ্দেবতা উদ্পানকর্ম লারা দেবতাগণের অন্ত ক্রেকার কার্য্য সম্পাদন করিয়াছিলেন ? বলা বইতেন্থে;— বাক্যে—বাগিজ্ঞিয়ের সাহায়ো, অর্থাৎ শন্দোচ্চারণাদি জিয়া লারা বাক্ প্রস্তৃতি ইজ্রিয় সমুদরের বে, উপকার সম্পাদিত হয়, ভাহাই ভাহার সেই কার্য্য। বাক্যোচ্চারণকানত বে, এইরূপ কল, ভাহা সকলেরই সাধারণ ভোলা। সেই বাগ্দেবতা ভিনতীমাত্র 'প্রমান' ভোত্রে উক্তপ্রকার ভোলা বা উপকার সম্পাদন করেয়া, অর্থাই নয়্তী ভোত্রে—যাহার পাঠকাত কল বাদ্দিলত হয়। পাঠকই লাভ করেন), সেই নয়্তী ভোত্রে বাগ্দেবতা হে কল্যাণ অর্থাৎ স্ক্রির ব্রোচ্চারণ করিয়া বাকেন, সেই স্ক্রের বর্ণাচ্চারণ আপ্নামই উদ্বেশ্তে সম্পর বর্ণাচ্চারণ করিয়া বাকেন, সেই স্ক্রের বর্ণাচ্চারণ আপ্নামারই উদ্বেশ্তে সম্পর বর্ণাচ্চারণ করিয়া বাকেন, সেই স্ক্রের বর্ণাচ্চারণ করিয়া

(>) जार्यम्—(बार्विटहेश्य वादय वाययो द्वास्त्रवादय च्यावा वाद्य व्यवस्त

্ভাহাই যাগ্ৰেষভার অনভদাধারণ কার্য; এই মন্তই 'বং কলাবিং বছতি'
কথার ভাহার বিশেষ ভাষে নির্দেশ করিলেন। কিছু কেহসজাতের
উপকারদাধক বে, নাক্যোচ্চারণ মাত্র কার্যা, বলমান ভাহার কলভাগী হয়;
[আর বধাবধরণে বাক্যোচ্চারণের কলভাগী হয় নিজে—বাক্।]। ০।

নেই অন্তরণৰ বাগ্ৰেবভাব এইজপ কলাণ্যর বাক্যোচারণাল্পক আর্থপরভাল্প ছিত্র প্রপ্ত হইং। বৃধিরাছিলেন ৷ কি প্রকার বৃধিরাছিলেন !—না,
ক্রেপ্রথ এই উদ্পাতা বাবা আমাদের আহাবিক বা উচ্চ্ছ্ আল জান ও কর্মার্শ পরাজিত করিয়া, শাল্রোপদেশনর কর্ম ও জানরপ উদ্যাতান্মক জোভিঃপ্রভাবে (দিবা জানেব সাহাব্যে) আমাদিগকে অভিক্রম করিবে; ইবা অবসত হইয়া সেই উদ্যাতাকে অক্রমণ করিষা, ভাষাকে শীয় ভোগা স্বিজ্ঞান পাপ বাবা বিদ্ধ করিয়াছিলেন, অধাৎ ঐ পাপে সংযোজিত করিয়াছিলেন। ৪।

সেই বে, সেই পাপ, অর্থাৎ পূর্ব্বছয়ে প্রজাপতির বালিঞ্জিরে বে পাপ প্রক্রিক্ত হইরাছল, ভাহাই এখানে প্রভাক্তবং প্রদর্শিত হইডেছে। সেই পাপচী কি । না, তাহা এই বে,লাকে অপ্রাতরপ—অন্ত5ত, অর্থাৎ শাস্ত্রনিষ্কি বাকা উচ্চারণ করিয়া থাকে : বাহার করু লোকে অন্তচ্চাপূর্বক্ত অসতা, ত্বণিত ও বিশ্বা কথা প্রভৃতিও বলিয়া থাকে ৷ সেই অন্তচ্চত বাকা-বাহহারজনিত পাপ অভাপি প্রভাপতির স্বই প্রাণিগণের বাগিঞ্জিরে বর্ত্তবান রহিয়াছে ৷ ব্রহ্মপ নিষ্কি ভাষণ হইতেই অন্ত্রিভ হয় বে. প্রভাপতির বাগিজিরেও এই পাপ সন্নিবিষ্ট ভিল : কেন না, কার্যানাত্রই কারণাভ্রমপ হইয়া বাকে । ১১ । ১ ।:

^{&#}x27;প্ৰকান' নামক ভোত্তেত্বের গানে যে ফল কয়, যক্ষান ভাচার কলে অধিকারী ংশ্ব; আর অবলিট বে, নইটা ভোত্ত গান করিতে কর, ক্ষিক্ ভাচার ফলভাণী ভর। ভোত্তগাঠ বাগি ক্রিরেই নিজ্ম কর্যো; অবচ বাগ্রেবতা সর্কেক্তিরের অভিনিধিরূপে সেই ভোত্ত পাঠকারো নিয়োঞ্জিত ইইয়া যজনানদিপের কলজনক ভোত্তিকাল সাধারণভাবে পাঠ করিলেন, আর মন্ত্রং অভিক্রেপে বে সমস্ত ভোত্তের কল পাইবেন, সেই সমস্ত ভোত্তেওলি আভি উত্তমন্ত্রণ ববামন বিভাগে অসুনারে সান ক্রিলেন। এই আব্দারকারণ অপুনারে অস্ত্রমূরণ ক্রিয়েলন। এই আব্দারকারণ অপুনারে অসুনার ভাহাকে আক্রমন ক্রিয়েল স্বালিকার ক্রিয়েল স্ক্রমন বিভাগে অক্রমন ক্রিয়েল বালিকার স্বালিকার প্রক্রমন বিভাগি স্বালিকার স্বালিকার প্রক্রমন বিভাগি স্ক্রমন বিভাগিক স্ক্রমন বিভাগিকার বি

অধ হ প্রাণমূচ্বং ন উদ্গারেতি, তথেতি—তেতাঃ প্রাণ উদগারং। যঃ প্রাণে ভোগতং দেবেতা আগারং যং কল্যাণং জিন্ত্রতি তদাত্মনে। তে বিহুরনেন বৈ ন উদ্গাত্রাহত্যেস্থীতি তমভিক্রতা পাপানাহবিধান্স যঃ স পাপান যদেবেদমপ্রভিক্রপং জিন্ত্রতি স এব স পাপান ॥ ১২॥ ৩॥

ত্যক্ত লাহা:— লগ (বাচ: লভিত্যানন্তরম্) হ (ঐতিন্তে) প্রাণম্ (মাণং)
উচ্:— দং ন: (লম্মভাম্ - উদ্পান্ন (উদ্পানং কুক) ইতি : [এবমুক্ত:]
প্রাণ: তথা (তথান্ত ইতি কিছা, তেতাঃ (দেবেতাঃ) উদ্পান্ন , উদ্পীৰপানং
কৃতবান্)। প্রাণে বঃ ভোগঃ 'সর্কে প্রমাণাং সাধারণঃ উপকারঃ), তং (ভোগং)
দেবেভাঃ লাগারৎ (গীতবান্ , মং [পুন:] ক্ল্যাণাং (শোভনং) কিছি,
তং লাম্মনে , লামার্থং পাথ্যেব) [লাগাহে]। তে (লম্মাঃ) বিছ্ঃ
(বিদিতবন্তঃ),—লনেন আলরপেণ) উদ্পাত্রা (উদ্পানকারিণা , বৈ (লবধার: প) নঃ লম্মান্) লতান্ত ভি (লাভক্তিম্বিত ক্লিম্বিতা) বিহঃ
ব্যাণম্ লাভক্তা (লাক্রমা) পাপ্রনা , লাস্ভিলক্তান পাণেন) লবিধান্
(সংবালিতবন্তঃ)। বঃ সঃ, সঃ পাপ্রা; [কোহসৌ ?] বং এব ইবং
লপ্রতিক্রপং (নিন্দিতং) ভিছতি [দ্রাণঃ]. সঃ এব পাপ্রা ইতার্থঃ ১২১১০।

মূলানুবাদে। অভঃপর ত্রাণেন্দ্রিয়কে বলিলেন, —ভূমি আমাদের
জন্ম উল্পান কর (উল্পাথ কর্ম কর)। 'ভথান্ত' বালয়। ত্রাণেন্দ্রিয়
উহিলের জন্ম উল্পান করিলেন। ত্রাণেন্দ্রিয়ের যাহা সাধারণ ব্যাপার,
ভাহাই অপর সকলের জন্ম গান করিলেন; কিন্তু ত্রাণেন্দ্রিয় যে,
উত্তম আত্রাণ করে, ভাহা নিজের জন্ম গান করিলেন। [এই ক্রটিভে]
অসুরগণ বুঝিতে পারিল যে, দেবভারা এই উল্পাভা দ্বারা আমাদিপকে
পরাভূত করিবে; ইহা জানিয়া ভাহার। ত্রাণেন্দ্রিয়কে আক্রমণ করিয়া
ভাহাকে পাপবিদ্ধ করিল। সেই ত্রাণেন্দ্রিয় যে, অপ্রিয় গাদ্ধ আত্রাণ করে,
ইহাই হইল সেই পাণ্যা (পাপ ফল) ॥ ১২ ॥ ৩॥

অথ হ চক্ষুরচ্ত্ত্বং ন উদ্গায়েতি,তথেতি—তেভ্যশ্চক্ষদগায়ৎ। যশ্চকুষি ভোগস্তং দেবেভা আগায়ৎ যৎ কল্যাণং পশ্চতি তদান্ধনে। ভে বিহুরনেন বৈ ন উদ্গাত্রাহত্যেস্থাতি তমভিক্রতা পাপুনা-হবিখান স বঃ স পাপুনা যদেবেদমপ্রতিরূপং পশ্চতি স এব স পাপুনা । ১৩ । ৪ ।

ज्यक्तानां व्यापान वर्षे (विश्वाण क्ष्यं क्षेत्र क्ष्यं क्ष्यं

অ্লান্দ্রাদ্য।—ভাগর পর দেবগণ চক্ষুকে বলিলেন—ভূমি আমাদের হন্ত উদ্যাধ গান কর; চক্ষু: 'ভথাস্ত' বলিয়া দেবগণের উদ্দেশে গান করিলেন: কিন্তু চক্ষুর যাহা সাধারণ ভোগ, ভাহাই দেবগণের উদ্দেশে গান করিলেন, আর যাহা কলাাণ্ময় দর্শন, ভাহা আপনার জন্ম গান করিলেন। অহ্রগণ বুঝিতে পারিল যে, দেবভারা এই উদ্যাভা ধারা আমাদিগকে প্রাভিত করিবে; এইজগ্য ভাহারা যাহ্যা ভাহাকে (চক্ষুদেবভাকে) পাপ্রিদ্ধ কারল। চক্ষু যে, নিকৃষ্ট রূপ দর্শন করে, ভাহাই সেই পাপ ॥ ১০॥ ৪॥

শব্দ শেরেম্চ্যাং ন উদ্গায়েতি, তথেতি—তেভাঃ শোরেম্দগায়ং। যা শোরে ভোগন্তং দেবেভা শাগায়ং যং কল্যাণত শুণোতি ভদাত্মনে। তে বিহুরনেন বৈ ন উদ্গারাছ-ভোষান্তীতি ভনভিক্তভা পাপুনাহবিধান্ স যা স পাপুনা যদেবে-দমপ্রতিরূপত শুণোতি, স এব স পাপুনা ১৪॥ ৫॥

স্বাক্তাথ:—লগ (লনগরং) হ (ঐতিক্তে) শ্রোত্রম্ উচ্যু—লং নঃ (জন্মভান্) উদ্পার ইতি ; শ্রোত্রং 'তথা' ইতি [রুখা] ভেডাঃ (দেবেভাঃ) উদ্পারৎ ; কিন্তু বাং শ্রোত্রে ভোগঃ, তং দেবেভাঃ লাগারৎ ; বং [পুনঃ] क्नानिः मृत्निकि, कर (क्नानिक्षस्तः) वास्तः [वानावर]। क्क (वय्वाः) विदः—[त्वराः] व्यापन (त्वाक्षस्तः) केनाका देन नः (व्याप्तः) व्यक्षक्रक्षि हेकि, क्ष्म् (केनाकादम्) व्यक्षिक्षक्ष नान्या व्यक्षिम् । नः वः, नः नाम्याः [कः १] हेन्। (त्वाक्षः) वर अन व्यक्षित्रनः नृत्निकि, नः (व्यक्षित्रनः व्यन्त्) अन नान्या ३२०।८।

্রেলান্ত্রাদে। অভঃপর দেবগণ প্রবণিজ্ঞিয়কে বলিলেন—
তুমি লামাদের জন্ম উপসান কর। প্রবণিজ্ঞিয় 'ভণান্ত' বলিরা তাঁহাদের লন্ম গান করিলেন; কিন্তু প্রবণিজ্ঞিয়ের যাহা সাধারণ ভোগা, ভাহাই
দেবগণের উদ্দেশে গান করিলেন, লার যাহা কল্যাপমর প্রবণ, ভাহা
নিজের জন্ম গান করিলেন। অন্তরগণ বুকিতে পারিল বে, দেবভারা
এই প্রোত্ররূপ উপসাভার সাহায়ে আনাদিগকে অভিক্রম করিবে। ইহা
বুঝিরা ভাহারা সহর যাইরা সেই প্রবণিজ্ঞিয়কে পাপে বিশ্ব করিল।
প্রবণিজ্ঞিয় যে, অপ্রিয় বিষর প্রবণ করিয়ে থাকে। ইহাই সেই পাপ বা
পাপের ফল য় ১৪ য় ৫ য়

অথ হ মন উচ্স্বং ন উদ্গায়েতি, তথেতি—তেভাো মন উদগায়ং যো মনদি ভোগন্তং দেবেভা আগায়দ্ যং কল্যাপ্ত দক্ষর্য়তি ভদাত্মনে। তে বিহুরনেন বৈ ন উদ্গাত্রাহত্যেস্থীতি ভমভিক্রতা পাপানাহবিধান্ দ যং দ পাপা যদেবেদমপ্রতিরূপত দক্ষর্যুতি দ এব দ পাপা। এবমু খল্লেতা দেবতাঃ পাপাভিক্র-পাস্ত্রেরেবমেনাঃ পাপানাহবিধান্॥ ১৫॥ ৬॥

স্থানোথ:—অৰ (অনৱরং) হ ঐতিছে) মনঃ (অন্তরণৰ্) উচ্ঃ—বং
নঃ (অন্ত্রন্ম্) উদ্পার ইতি; মনঃ তথা ইতি [রুষা বৈভাঃ (বেৰভাঃ)
উদ্পারৎ; মনিস যঃ ভোগঃ (সাধারণঃ বাাপারঃ), তং বেবেভাঃ আপারৎ;
বং [পুনঃ] কল্যাণং সম্বর্জি (চিন্তর্জি), তং বেন্যাণচিন্তনং) আন্তরে
[আপারং]। তে (অনুরাঃ) বিদ্যু (বিল্লাতবন্তঃ) বং [বেবাঃ] অনেন উত্পানা বৈ নঃ (অন্যান্) অভ্যেন্তি ইতি, [এবং নিন্তিল্য] অভিক্রতা তং
(বনোরপন্ উদ্পানারন্) পাপ্রনা অবিধান্; সঃ বঃ, সঃ পাপ্রা; [কঃ ?]

रेवर (पनः) वर अव च्याण्यानः नवस्त्राणः, नः अव नः नान्या। अवर (पात्राण्यर) छ (अव) अणाः (चक्का चान चनाणाः) (एवणाः वयू नान्याणः छनाच्यम् (नान्य-नवस्र श्वाश्ववः), अवः (वानाविद्यवः) अनाः (चनाणाः (वयणाः) नान्यना चविशम् [चन्द्रा रेणि (नवः] ॥>८॥॥।

শ্লানুবাদে।—ভাষার পর দেবগণ মনকে বলিলেন—ভূমি আমাদের জন্ম উদ্গান কর। মন 'ভগান্ত' বলিয়া তাঁছাদের জন্ম গান করিলেন; কিন্তু মনের যাথা সংধারণ কার্যা—চিন্তামাত্র, ভাষাই দেবগণের নিমিন্ত, আর যাথা কল্যাণময় শুভ সকল্প, ভাষা আপনার নিমিন্ত গান করিলেন। এই অপরাধে অস্তুর্গণ বুঝিতে পারিল যে, দেবভারা এই মনোরূপ উদ্গাভা দ্বারা আমানিগকে পরাভূত কবিবে: ভাই ভাষারা ক্রন্ত উপস্থিত হট্যা মনকে পাপে বিদ্ধ করিল। মন যে, অশুভ সকল্প (চিন্তা) করিয়া থাকে, ভাষাই সেই পাপ: মন সেই পাপে সংযুক্ত হইয়াছিল। উক্ত নাক্ প্রভৃতির লায় ত্বক প্রভৃতি ইন্দ্রিয়া-দেবভারাও এইরূপে পাপাসক্ত হইয়াছিলেন, এবং অস্ত্রগণ তাঁচাদিগকে পাপবিদ্ধ করিয়াছিল । ১৫ ॥ ৬ ॥

স্পাক্ষর-ভাষ্য ন। তবৈ বাণাদিদেবত। উদ্ধিণনিপর্কণাৎ
লপমন্ত্র প্রকাশ উপাশ্যাকৈতি ক্রমেণ পর্বান্ধতন্তন। দেবানাকৈতং নিক্তিন
নাসীং—বাগাদিদেবতাঃ ক্রমেণ পরীক্ষামাণাঃ কলাাণ্যবন্ধবিশেষাক্ষ্যান
সক্ষেত্রেঃ আত্মরশাপুসংসর্গাদ্ উদ্ধিণনির্বান্ধনাসমর্থাঃ : অতঃ অনভিবেরাঃ,
শ্বসতো মা সদ্পমন ইত্যরপাক্ষাক; অক্তম্বাং ইত্রাব্যাপক্ষাচ্চেতি।
এবমুখনু, অস্ক্রা অপি এতাঃ দাগাদিদেবতাঃ, কলাাণাকলাণকার্যাদর্শনাং,
এবং বাগাদিবদেব, এনাঃ পাপ্মনা অবিধান্ পাপ্মনা বিভবত ইতি বছক্ষ্য,
তৎ পাপ্রতিক্রপাক্ষন্ পাপ্রতিঃ সংসর্গি ক্তবত্ত ইত্যেতং ইচং-১৫॥০-৬॥

টীকা। বাব্দেৰতারা লগবন্ত্রথকান্তবন্ধানাদ্ধং চ নেভি নির্দ্ধারা, অবশিই পর্বারচজুইরন্য ভাৎপর্ব্যবাব—তে থৈত্বেতি। গরীকাকননির্ণরবাদ – দেনোনাং চেতি। অস্থপাততে
বেশ্বন্ধবাব—ইতেরেতি। ইতরং কার্বাকার্ব্যবাতঃ, তান্তিরবাপকতাং পরিচ্ছিরত্ব,
অন্তভান্থপান্যকং অপবস্থাপ্রকাশকার্বং তেতার্বং। উত্তৈরিপ্রিক্তরং অস্থতেপ্রিরাস্থ্যপদক্ষীরানীতি
বিবন্ধিবোপনংহরতি—এব্রমিতি। বাগানিবং ত্বানিরু কর্মকাভাবাং ব পাপ্রবেবাহেতাভান্ত্যাহ—কল্যানেতি। পাপ্রভিক্পাত্তবন্ পাপ্রনা অবিধারিভানরোরতি

थपरमारशातः—ए**डी**बर बाम्मनम् ।



পৌনক্ষাৰ্ ইত্যাপতা ব্যাব্যানব্যাব্যেরভাষাৎ নৈববিভ্যাহ—ইডি ব্যুক্ত-মিডি ৪ ১২—১৫ ৪ ৩—০ ৪

ভাল্যান্ত্রাদে। বাক্পত্তির ভার মাণাদি দেবতাও উদ্দীবের
সম্পাদক; স্তরাং তাঁহংবাও উপাত্ত এবং ["অসতো বা স্থ্যবয়" এই]
অপবত্তেও প্রকাশনবোগা; এই বন্ত দেবতাগণ ক্রমে তাঁহাদিগকেও
পরীকা করিরাছিলেন। তাহার ফলে, দেবতাগণের এইরপই নিক্র
বা হির্মিছার হইরাছিল বে, বেছেতু ক্রমিক পরীক্ষার কলে ববন
দেবা গেল বে, বাক্ প্রভৃতি ইন্দ্রির-দেবতাগণ বিশেষ বিশেষ কল্যাণকর
বিবরে বার্থপরতারণ আসন্তি-দোবে আক্রম পাণে সংস্কৃত্তি, সেই বেতৃই তাহাগা
উদ্বীধ ক্রিয়া সম্পাদনে অক্ষম; কাংকট "অসতো বা সন্থ গ্রহ" এই ব্যাহর
প্রতিপান্ত নহে, এবং উপাত্তও নহে; বিশেষতঃ, তাহারা পাপসংসর্গবশতঃ
অভ্যন্ত বটে এবং অপরাশর মণেকা শ্রেষ্ঠ করে।

অনুক্ত এই দক্ প্রস্তৃতি দেবতাও পূর্মোক্ত বাক্ প্রস্তৃতি দেবতারই ঠিক অনুদ্ধণ; কারণ, তাহাদের মধ্যেও ওতাওত কার্যা দৃষ্ট হয়। পূর্বে বে পাপের কণা বলা হইয়াছে, এই দেবতাগণও সেই পাপে সংস্ট হইয়াছিলেন, এবং [অনুনগণ কর্ম্ব] পাপবিদ্ধ হইয়াছিলেন ৪ ১২ —১৫ ৪ ৩—৬ ৪

স্পাক্ষর-ভাক্সাম। বাগাদিদেবতা উপাসীনা মণি মৃত্যু তিপ্র-নাগাশরণা: সম্ভোদেবা: জ্বো-

্টীকা। স্মতি মুখাপ্ৰাণত বন্ধপ্ৰান্তৰস্পাস্যাক চ বকুমুভৱৰাকামুপাৰার ব্যাক-ব্যোতি –ব্যাকান্টোডি । জ্বেৰ উপাসীন। ইভি সৰ্থঃ।

ভাজ্যানুবাদে। দেবগণ ক্রমে বাক্ প্রভৃতি দেবতার উপাসন। করিয়াও মৃত্যুতর অতিক্রম করিতে অসমর্থ হইরা, [মুখাপ্রাণের উপাসনার প্রবৃত্ত হইলেন]—

অধ হেমনা । স্থাং প্রাণমুচ্জং ন উদ্গায়েতি, তথেতি—তেভ্য এব প্রাণ উদগায়ং । তে বিহুরনেন বৈ ন উদ্গাত্রাহতে। স্থানীতি তদভি-জ্বভ্য পাপানাংবিব্যংসন্ স যথাংশানমুদ্ধা লোকে। বিধবস্থসেতৈবস্থ হৈব বিধ্বস্থসনানা বিষ্কো বিনেশুক্ততে। দেবা অভ্যবন্ পরাংস্থরাঃ, ভবত্যাত্মনা পরাহস্থ ধিষন্ আতৃব্যো ভবতি য এবং বেদ ॥১৬॥৭॥ ें ज्यानाव्य है। पर (ज्या ने ने हिंद का ने

মুলান্দ্রাদ্য। অভংপর দেবভাগণ মুখবর্ষী মুখ্য প্রাণকে বিলিলেন—তুমি আমাদের জন্য উদগান কর। মুখ্য প্রাণ 'ভথান্ত' বলিয়া দেবভাগণের উদ্দেশ্যে উদগান করিলেন। এবারও অম্বরগণ কানিতে পারিল বে, দেবভারা এই প্রাণক্ষণ উদগাভার সাহায্যে আমাদিগকে অভিক্রম করিবে। এইক্রপ মনে করিয়া ভাহারা প্রনিলম্বে যাইয়া ভাহাকে স্বীর পাপে কলুমিত করিতে ইচ্ছা করিল; কিন্তু লোফ্ট (ঢিল) বেমন পারাণখণ্ডে পভিত্ত হইয়া আপনিই চুর্গ হইয়া যায়, ঠিক ভেমনি সেই অম্বরগণও মুখ্য প্রাণকে আক্রমণ করিতে যাইয়া নিজেরাই বিধ্বস্থ ও চতুদ্দিকে বিক্রিপ্ত হইয়া বিনষ্ট হইল; ভাহা হইতেই দেবভারা দেবজাব প্রাপ্ত হইলেন, আর অম্বরগণ পরাভূত হইলেন। অপর কোন লোকও বদি এই তন্ত অবগত হন, ভাহা হইলে, তিনিও নিজে প্রভাপতি-স্বরূপ হন, এবং তাঁহার শত্রুপ্ত বিনষ্ট হইয়া যায় ॥ ১৬ ॥ ৭ ॥

ন্ধাক্তর-ভাষ্যম। সধ সমন্তরম্, হ ইনষ্—ইতাভিনরপ্রদর্শনন্; আসভন্ আছে ভননাসভং মুধার্মিনছং প্রাণমূচ্য— বং ন উদ্গান্থতি। তথেতি এবং শরণমূপসতেভাঃ স এব প্রাণো মুধ্য উদ্পান্থ ইত্যাদি পূর্মবং। পাপাুনা- অবিবাৎ সৰ্ বেবনং কর্মিউবভঃ, তে চ মোবাসংসর্বিদ সৃত্য মুবাং আন্ধং বেন আসকলোবের বাগানির সক্রেনরাঃ তহত্যাসাহয়তা, সংরিবানারাঃ বিনেতঃ বিনটা বিধ্বতাঃ। কর্মিব ? ইতি হুটাত উচ্চতে — ন বর্বা, স হুটাতো বর্বা—লোকে জ্বানং পাবাগর্ করা প্রথা প্রাণ্ড লোটঃ পাংতলিতঃ পাবাগচূর্বনার জ্বানি নিকিপ্তঃ বরং বিধ্বংস্ত বিস্তংস্ত বিচ্পীত্বেৎ; এবং বৈর—বর্বারং হুটাতঃ; এবনের বিধ্বংস্মানা বিশেবের ধ্বংস্মানাঃ, বিষকঃ নানাগচয়ঃ, বিনেতঃ বিনটাঃ, বতঃ; ততঃ তত্মাল্র রবিনাশাং ক্রেমপ্রতিবভূত্তেচাঃ আতাবিকাসক-অনিত্রপাপ্রতা বিবোগাং, অসংস্থার্থি-মুবাপ্রাধ্যাত্মকং বক্ষাবাগর। পূর্বারি অন্তাঃ, অভবন্; কিনতবন্? বং ক্রেভারণবন্ধ্যাত্মাত্মকং বক্ষাবাগর। পূর্বারি অন্তানাভাল্পন এব সতঃ আভাবিকেন পাপানা তিরম্বতবিজ্ঞানাঃ পিওবাত্রাতিবানা আসন্। তে তৎপাপাবিরোগার্থ উক্রিভা পিওবাত্রাভিয়ানং, শাল্পবর্ণিত-বাগান্যাভাল্পাতিবানা বক্র্রিভার্থঃ। কিক, তে প্রতিপঞ্জ্ত। অন্ত্রাঃ পরা—অভবন্ধিতাক্রতে; পরাক্তা বিনটা ইতার্থঃ।

বধা পুরাকরেন বর্ণিতঃ পূর্ববন্ধনানেইতিক্রান্তকালিকঃ এতাবেব খাব্যাহিকারপাং প্রতিং ছুইু।, তেনৈব ক্রমেণ বাগাদিদেবতাঃ পরীষ্যা, ভাশ্চাপোষ্থ
খাসদ-পাণ্যাম্পাদ-দোববন্ধন, অলোবাম্পদং মৃথাং প্রাণম্ আর্রনোপান্ধরা,
বাগাদ্যাধ্যান্তিক-পিশুমাত্র-পরিচ্ছিরান্তাভিনানং হিছা, বৈরাজ-পিশুভিনানং
বাগাদ্যগ্রাভাত্মবিবরং বর্তমানপ্রকাপতিছং শার্প্রকাশিতং প্রভিপ্রঃ;
তবৈবারং বল্লানা তেনৈব বিহিনা ভবতি প্রজাপতিবরণেশ আত্মনা; পরা
চাষ্ঠ প্রভাপতিব-প্রভিপক্ষত্তঃ পাণ্যা বিবন্ রাভ্ব্যো ভবভি;—বভাহবেটাপি ভবতি কন্চিৎ রাভ্ব্যো ভরভাদিভ্লাঃ; বন্ধ ইন্দ্রিরবিবরাসক্ষনিতঃ
পাণ্যা রাভ্ব্যা বেটা চ, পার্বাধিকান্ধর্মণ-ভিরন্ধরণহেভ্রাৎ; স চ
পরাভবতি বিশীর্ব্যতে লোটবৎ, প্রাণপরিষ্কাৎ।

करेक्ट कनम् हेन्यार—र जनः त्वनः त्वान्यास्य व्यक्तिनगरः, नृस्तरकमानविष्ठार्थः ॥ २७ ॥ १॥

্টীক্ষা। বাগাদিষু নৈরাস্তানতর্বানু অবশ্বার্থ:। বিবক্তির্য-জাপকোংসাবারণো দেহ-ভদবরব-ব্যাপারোহভিনবঃ। দোবাসংস্থিপং গোবেশ সংগ্রইং কর্তু বিজ্ঞা ভূতো আভা ? ইত্যাপত্যাত্—ভ্রেন্থতি। ভবত্যাসাত্ত্বভ্যা ভক্ত পাশ্বসংস্থাত্তবাক অভ্যাসবশাবিতি বাবং। উক্তর্যবং বৃষ্টাভেদ স্পট্রয়তি—ক্ষঞ্জমিক্ত্যাদিন্দ্রা। অব্যন্তাশের আসক্ষদিতপাশ্ব- বিবাৰে বেডুমাহ—আলংকাপ্ৰেডি। বলামাণ মোধান্তবৰণ ইন্তানিবেভি পেনঃ। বাণাদীনাং ছিভানাং নইনেং চ ক্জেংগ্লাধিরপত্তন্, ইন্তানভান্ত—পূর্ব্বামপ্রীন্ডি। ন ওবি
ভেলাং পরিজ্ঞেনভিনানঃ ভানিন্তানভান্ত—আন্ডাব্বিকেমেন্ডি। পরিজ্ঞেনভিনানাৎ
ন্যান্তানাভিনানভ বলবনং প্রচন্তি—পাত্রেডি। ন কেবলনভোকানাবেব আন্তর্নান্
ন্যান্তানাভিনানভ বলবনং প্রচন্তি—পাত্রেডি। ন কেবলনভোকানাবেব আন্তর্নান্
ন্যংস্ক্রিপ্রাণাশ্রহাত্বিনাশঃ, কিন্তু ডং তুলাঞানীয়ানামণি, ইন্তাবিশ্লেন্ডান্তি

বাগাদীনাৰ্ স্থ্যানিভাবাপন্তিবচনেন ভৎসংহতত বঙ্বানত দেবভাঞানিঃ আনুষ্ণাপ্যআনেক কলমিত্বান্তং তত্ত্ব পূৰ্ববৈদ্যাহৰজ্ঞানত অভিসংগালিয়াং বংগাভগনবছেঃপি, ন
ইয়ানীন্তবিভাগনা ভবতীভ্যানিজভিমবভান্ততি—আংথাতি। পূৰ্ববিদ্যালয় দেবভি স্বদঃ।
পূৰ্ববিদ্যালয় বালা ভবিত্যান্ত বৰ্তবানপ্ৰভাগতিনং প্ৰভিপন্নো বংগতি স্বদঃ।
পূৰ্ববিদ্যালয় বিভাগ বালা অভিনান্তকালিক ইভি। পূৰাক্তাবেৰ দৰ্শনতি—প্ৰভামিতি।
ভেনেতি জন্তাভেনেভাতেং। তেনৈৰ বিশিনা জ্যাভপ্ৰকালিভেন ক্ৰমেৰ মূল্যা প্ৰাণম্ আন্তবেশাশন্ত্যতি শেষঃ। সপল্লো আহ্বাঃ ভক্ত ব্ৰন্ধিতি কুভো নিলেবণন্ । কৰ্বসিদ্ধালয়েক, ইত্যাপ্ৰভাহ—অভ ইণ্ডি। ভক্ত বেলিভিয় বেবভান্ত পালনাংশিকেলাত।
অপনিভিন্নবেশ্যবিদ্যাল প্ৰমাধিকমান্ত্ৰপ্ৰপং বিশ্বভিতং, তং ভিন্তবেশকালগাং উক্তপাপনুনো বিশেষণ্যবিদ্যিত প্ৰঃ।

'বলারেরেছিটাকপাল' ইতিবং য এবং বেদেতি আসিভার্বোপ্রভেচ্পি 'বধিপ্রং বাকার্, অভন্তৈবং বিভাগিতি বিবশিত্যিতা'ভল্পেডাছ -- অত্যাস্ক্রাছ্ডি ১১১১ ৭ ৪

ভাষ্যান্দ্রনাদে। 'অব' অবঁ — অতঃপর; 'হ' শক্ষ ঐতিহ্ন-ছোত্তক; সাক্ষাৎ-নির্দেশ-ছচনার্ব 'ইনম্' ('ইবাকে') শক্ষের প্রয়োগ হইরাছে। 'আসক্ত' অর্থ—আছে বিশ্বমান — আসমা, অর্থাৎ মুধ্বিবরে বর্ত্তমান প্রাণ্ডে বলিনে—ছুনি আমাদের কক্ত উদ্গান কর। সেই এই মুধ্য প্রাণ্ড বাদ্য দেবতাগণের নিমিত্ত 'তথাত্ত' বলিয়া উদ্গান করিলেন, ইত্যাদির বাাখ্যা পূর্ব্তহ। সেই অন্তর্গণ (প্রাণকে) পাপবিদ্ধ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেন, —অর্থাৎ অন্তর্গণ বাক্প্রস্তৃতি ই'ল্লেমে কৃতকার্যা হর্মা সেই অত্যাসদোবে দোবসংস্পর্শবিহান মুগ্যপ্রাণকে স্বায় আগভিদোবে লিপ্ত করিবার ইচ্ছায় [তাহার সহিত] সংস্টে হইবামাত্র বিনষ্ট—বিশেবরূপে হ্লমেপ্রাপ্ত হইরাছিল; কাহার ক্রায় ? এই প্রয়োত্তরে দুইাত্ত বলিতছেন; সেই দুইাত্তী এই প্রকার,—অগতে পাষাণকে চুর্গ করিবার অন্ত নিজিপ্ত লোই অর্থাৎ ধূলিপিশু বেমন সেই অন্যে—পাষাণে লাগিয়া নিজেই বিশ্বস্কত হইরা বায়, ঠিক সেই প্রকার; অর্থাৎ কবিত দুইাত্তী বে প্রকার, ইহাও ঠিক সেই প্রকারই, বিধ্বংস্কান—বিশেবরূপে ধ্বংস্প্রাপ্ত এবং বিহত্ত আর্থাৎ নানাদ্যকে বিশ্বপ্ত হইরা বিনষ্ট হইরাছিল। সেই বেছ্—অন্থ্য

পক্ষের বিনাশহেত্ব, অর্থাৎ দেবভাবপ্রান্তির প্রতিবন্ধকরণ বভাবসিত বিষয়াসক্তিলোকনিত পাপের নির্ভি হওরার ও পরসংসর্গরহিত মুখ্যপ্রাণের আগ্রহগ্রহণ করার বাক্ প্রভৃতি কেবসণ স্বাভাবিক অবস্থা প্রাপ্ত ইরাছিলেন;
কিন্তুপ অবস্থাপ্র ইরাছিলেন? না, পরে বাহার কথা বলা হইবে, সেই
অগ্নালি কেবভাব প্রাপ্ত ইরাছিলেন। অভিপ্রার এই বে, প্র্রেও ভাঁহার।
অগ্নালিস্করণই ছিলেন, ভথাপি স্বাভাবিক বিষয়াসক্তিলাকে তাঁহান্তের সেই
বিশেষ জান (দিব্য জান) আর্ভ থাকার কেবল কেবপিঙেই আশ্বর্ছ
স্থাপন করিরাছিলেন; শেষে সেই আসক্রপ পাপ অপনীত হইলে পর,
ক্রেরান্ত্রপত আস্মাভিমান পরিত্যাসপূর্কক শাস্ত্রোপ্রদাস্থলরে স্বীর অন্নালি
ক্রেরাভিযান ধারণ করিরাছিলেন। অধিকন্ত, তাঁহানের প্রভিপক অস্বরপত্ত
প্রাভৃত—বিনষ্ট চইরাছিল।

তথানে প্রেতি খাবারিকার বেষন পুরাকর—ঐতিহাসিকরপে পুর্বকালীন বলমান প্রভাপতি । বর্ণিত হইলেন, খর্বাৎ পূর্বকরীর বলমান বেমন ব্ধোক্তক্রমে বাগাদি দেবতাকে পরীকা করিরা—বিবরাস্থিকরপ পাপসদদোৰ বলতঃ তাঁহাদিগকে পরিত্যাপপুর্বক নির্দোধ মুধ্য পাণকে আত্মস্বরেপ গ্রহণ করিরাছিলেন, এবং দৈহিক বাক্প্রভৃতিতে কেবল দেহমাত্রস্বরূপ পরিছিল্লার্ত্র্বি পরিত্যাপ করিরা বিরাইপুরুষরূপে ভাবনা করত শালোপদিই এই বর্তমান প্রভাপতিপদ লাভ করিয়াছিলেন; তেমনি বর্তমানকালীন বলমানও পূর্বোক্ত প্রতিক্রমে কার্য্য করিরা প্রভাপতিস্বরূপ হইতে পারেন; এবং ভাহার প্রভাপতিস্বলাভের প্রভিত্রক খনিইকারী শক্ত—পাপও পরাভ্রত হইরা বার (১০)। দশর্থ-পুরু ভরতের প্রার বিবেববিহান হইরাও ল্রাত্ব্য (খন্ম-শক্ত) হইতে পারে;

⁽১০) তাংশব্য--- 'অভ্যা' শর্ব -- শক্র ছই শ্রেণীতে বিভক্ত-- (১) সহল ও (২) কৃত্রিয়। জন্মাণীৰ বাহানের সলে ধন-সম্বন্ধ, ভাষারা শ্রীউভাজন হইলেও 'সহজ-শক্র'বরের পরিপণিত। বেমন জ্যোঠনাত ভাই, গুড়তাত ভাই শ্রন্থতি। আগন্ধক কারণবশতঃ বাহানের সহিত শক্রেডা হয়, ভাষারা 'কৃত্রিম-শক্র'-মবো পরিপণিত। ইয়ার উবাহরণ জনাবক্তক। শক্রে জার বিত্রও সহজ ও কৃত্রিমন্দের হই শ্রকার;—নাজুলভাই শ্রন্থতি বাহানের সজে ক্যাবীন বছুতা, ভাষারা আনিই কহিলেও 'সহজ্যাবিত' শ্রেণীর সম্বর্গত। আর বাহারা ক্যোব্য শক্রেডার উপকার করিয়া বছু হয়, ভাষারা 'কৃত্রিন বিত্র'। এই জন্ত শ্রুডি ক্ষেত্র 'অভ্যা' শক্ষ বিবা নিশ্বিভ হইতে পারের লাই, 'বিবন্' নব্যেন্ত প্রয়োগ ক্ষিয়াহেন।

ি এইবান্ত অভিন্তে 'বাভ্বাে'র বিশেষণারণে 'বিষন্' শব্দ দিতে হইরাছে,]
কিন্তু ইজিরের বিষয়াসজিক্ষনিত বে পাপ, তাহা শক্তও বটে, এবং বেষকারীও
বটে; কারণ, উবাই প্রকৃত আয়ন্তরপের আবরণ সম্পাদন করিয়। বাকে।
সেই শক্তও প্রাণের স্পর্শনাক্ষে সাধারণ লোকের ভার পরাভূত—বিশীর্ণ
হইরা বার। বে কলের কথা বলা হইল, ইহা কাহার কল? তত্ত্তরে
বলিতেছেন—বে ব্যক্তি পূর্বকরীর বলসানের ভার ইই করে প্রাণকে আন্দর্শনাক্ষ করিতে পারে, তাহার এইরপ কল হব। ১৬॥ ৭।

স্পাক্ষর-ভাক্স ন। ফলমুণসংহত্য অধুনা আবাারিকারণ্যেৰ আবিতাহ—কথাক্ত হেতোঃ বাগাধীন মুক্তা মুখ্য এব প্রাণ আত্মদেশ আব্রতিব্য, ইতি; তর্পপত্তি-নিরূপণ্য । ব্যাদরং বাগাদীনাং পিঙাদীনাক সাধারণ আ্মা—ইত্যেতম্ অর্থ আবাাদিকরা দর্শগ্র্যার ক্রতি:—

টীকা। কলবংগ্রধানোপান্তেজজনং তে হোচুরিভাাছাভরবাক্যং ওপোপান্তিপরবৃ, ইভ্যাহ—ক্রজামিতি। কলবত্ত: প্রধানবিধিমুক্তা সম্প্রভাগ্যাহিকানোঝান ওপবিনিষ্টং আপোপাননমাই অনভ্যক্তিরিভার্থ:। প্রভাতরহের চ উত্তরগ্রহারিভি—ক্রজ্যা-ক্রেডি। বিভ্রমণ উজ্জাৎ কেল্ডবং বিজ্ঞানামিতি ভ্যোতরিত্ব চ-প্রাঃ। করপানাং ভাগানা ভলবরবানাং চ প্রাণো ব্যালালা ব্যাপকঃ তথাং স এবাপ্রহিত্বাঃ, ইত্যাপভিনিত্র-পণার্থং ভনা ব্যাপকর্বিভাতন্ত্র ব্যাবাহিকরা দর্শয়ন্ত্রী প্রতির্ভ্রেশ্তরহাহেছি বোজনা। ভজ্জাক্রমান্ত্রি

ভাল্যান্ত্রাদে। বাক্ প্রভৃতি ইলিয়বর্গকে পরিত্যাপ করিয়া
মুখ্য প্রাণকেই আত্মারণে আত্রর করিতে কইবে কেন, তাহার কারণ
নিরপণের অন্ত, শ্রুতি বিভাগদের উপসংহার করিয়া, প্রশ্চ আব্যারিকা
অবস্থনেই বলিতেছেন;—বেহেড্ এক মাত্র মুখ্য প্রাণই বাক্ ও জেহপিও
প্রভৃতির পক্ষে সাধারণ (ব্যক্তিগত পক্ষপাতনোববিহীন) [এই হেড্ই
ভাহাকে আত্মারণে গ্রহণ করিতে হইবে]। শ্রুতি আব্যারিকাছলে এই
বিষয়ী প্রমর্শন করিতেছেন —

তে হোচু: ক সু সোহভূদ খে। ন ইপ্রমাক্তেত্যয়মান্তেহ্স্ত-রিতি সোহ্যান্ত আঙ্গিরসোহঙ্গানাও হি রগ: ॥ ১৭ ॥ ৮ ॥

अनुस्तार्थः। (छ (क्षणां विश्वानाः) र (वेविष्ण) छेरूः (छेरूपणः)— यः सः (ज्ञान्) देवन् (रावाकक्षणात्) ज्ञाक् (त्राक्षण्यान्— रत्यजारः त्रविष्यान्), तः क (ज्ञा) श (विष्णः) ज्ञाप् (ज्ञापे) १ টতি। [উত্তরন্—] শরন্ (শবর্ণকারী প্রাণঃ) লাস্তে শতঃ (র্ণব্ধো—
র্ণপল্লের) [শভ্ধ ।, ইতি (শবাধ হেডোঃ) সঃ (প্রাণঃ) শরাসাঃ (শরধ
আঙ্গে—ইতি 'লরাস্যঃ', অথবা অনারাগনতাদাধ অধাস্যঃ); [তথা] আদিরসঃ ; [কুতঃ আদিরসঃ ? ইত্যাব—] হি (বতঃ) অলানাধ (দেহাবরবানাধ)
রসঃ (সারঃ—আরত্তঃ এবঃ, তথাধ আদিরস্ইতি ভাবঃ) ঃ ১৭ ৪ ৮ ৪

অ্লান্যুকাদে। সেই প্রজাপতির ইন্দ্রিরসমূহ পরস্পর বলিরা-ছিল—বিনি আমাদিগকে এইরূপে জয় করিলেন, অর্থাৎ আমাদিগকে দেবভাব লাভ করাইলেন, তিনি কোধার ছিলেন ? [অনুসন্ধানের পর বুঝিলেন যে,] সেই মুখ্য প্রাণ অফুসমধ্যে (মুখবিবরে) ছিলেন। এই জয়ই তিনি 'অয়াস্থা, এবং সমস্ত অঙ্কের রস বা সারভূত বলিরা 'আজিরস'-পদবাচা ॥ ১৭॥ ৮॥

স্পাক্ষয় ভাষ্য ম। তে প্রজাপতিপ্রাণাঃ বৃধ্যের প্রাণের পরিপ্রাণিতদেবদরণাঃ হ উচ্চঃ উক্তবত্তঃ কলাবছাঃ। কিবিত্যার—ক স্থ ইতি বিতর্কে; ক স্থ কলিন্ স্ সোহভূৎ; কঃ ? বঃ নোহলান্ ইপ্রেব্যু,
অসক্ত সন্ধিতবান্ দেবতাববাদ্ধানোপগমিতবান্। স্বরন্ধি হি লোকে কেনচিছ্পক্ষতা উপকারিণন্; লোকবাদেব স্বরন্ধা বিচারহমণাঃ কার্যাকর্বস্ক্রাভে
আন্তান্তোপাল্যবন্ধঃ; কথ্য ? অনুমান্তে অন্তরিতি—আন্তে মুধ্য ব আকালঃ
তিনিন্ অন্তঃ অন্তঃ প্রত্যাকে। বর্তত ইতি। সর্কো হি লোকো বিচার্যা
অধ্যবস্তি; তথা দেবাঃ।

ষশাদরমন্তরাকাশে বাপাদ্যাপ্তত্বেন বিশেষমনাপ্রিত্য বর্ত্তহান উপলব্ধের দেবৈঃ, তত্মাৎ—দ প্রাণঃ পরাক্তঃ বিশেষানাপ্রয়ক্ত পদক সন্তিত্বান্ বাগান্দীন্। অতএবাদিরসঃ আরা কার্য্যকরণানান্। কর্যাদিরসঃ প্রসিদ্ধ ক্তেত্বলানাং কার্য্যকরণসঞ্চলানাং রসঃ সার আল্লেত্যর্যঃ। কর্মং পুনরকরস্বম্ । তদপারে লোবপ্রাপ্তেরিতি বক্ষ্যাবঃ। বস্থাক্ত অরম্ভরস্থাৎ বিশেষানাপ্রিত্যাক্ত কার্যকরণানাং সাধারণ আন্ধা বিশুদ্ধত, তত্মাৎ বাগাদীনপাত প্রাণ এব আন্ধান্ধন আপ্রস্থিতর ইতি বাক্যার্থঃ। আন্ধা হি আন্ধান্ধনাং লাক্ষ্যকরণানাং এবঃ প্রাণ্ডঃ বিশ্বান্ধে চানিষ্টপ্রাপ্তির্বানাৎ ॥ ১৭ ৪ ৮ ॥

টীকা। প্ৰাণমান্তবাদি ব্যক্তীকৰ মাধ্যাহিকাঞ্জতিং বিভৰতে—তে প্ৰজ্ঞা-প্ৰভীতি। বাগান্তবেং প্ৰাণমানিতা ক্যাবহাত্তি ভিনিভ প্ৰাণং স্বৰ্ছ প্ৰাণক্ষকাৎ ইভাশভাহ-স্মান্ত হীতি। বিচাহদনদুশলন্ধি দৰমভি-ব্যোক্ষত্ৰলিতি ভাষেবোশনন্ধিনা দাবদাবারে বিবুণোভি-ক্ষথ্ৰমিতি। দুইাভং স্পট্টডি নাক্ষেণি হীতি। তথা বেবা বিচাৰ্য আপস্থালন্তৰা দাব্য নিৰ্ধানিতৰত ই চাহ-ত্যপ্ৰতি।

কিবনত্তা কথা নিজনিত শিক্ষাত্ত - অন্যানিক্তি। উপলভিনিতে হবৰ্ধ পৃ'ক্তং নমুজিলোভি
—বিশেশেক্তি। সর্বানের বাগানীন অবিলেবেশায়ানিভাবেন আশং দ'লভবান্। দ
ভাষণ্ডক নাধান্তা: কাবাং নিজনিতি। অভা মুক্তিটোলি অনুবাজ্যন্তালালে বর্তনার নিজ
ইতার্বং। অন্যান্তবনালিকার প্রধান্তালিকার দর্শনিত অত প্রকৃতি। সর্বানাধানিভাবেবেতি বাবং। তথাপি কুভোচভালিকস্বং নাধান্তেলি নভনি ওদফুপলবেরিভাগেলা
শরিষ্যাভি-ক্রথমিত্যানিকা। অন্যে চন্তবনাভো: সাত্তবন্ধতি ন' মাণ্ড ভবাদবিভি শবিষা সমাধ্যে - ক্রঞাং পুক্রিভ্যানিকা। ক্রাচ্চ ডেভোরিভাগি-চোড্ডশরিষ্যান্ত্রশ্বনিক্রিভি অন্যান্তেভি। বাক্যার্বং প্রপ্রভাত আন্তর্গ ক্রীভি। ১৯৮৪

ভাষ্যান্ত্রাদে : বুধাপ্রাণ বাহাদের দেবত ব প্রকটিত করিচাছে,
প্রজাপতির সেই প্রাণসমূহ সফলতালাভ করিচা বলিচাছিল । কি [বলিচাছিল]?

'লু' শষ্টী বিভর্কার্থে প্রযুক্ত হইরাছে । তিনি কোধার ছিলেন ? তিনি কে ?

না, বিনি আমাছিগকে এই প্রকার আয়াবরণে দেবতাব প্রাপ্ত করাইরাছেন.

[তিনি কোধার ভিলেন ?] জগতে কাহারও নিকট উপকার লাভ করিছা
কৃতজ্ঞ বাজিরা সেই উপকারীকে শ্রন করিয়া থাকে; কৃতজ্ঞ বাজির
ভার [প্রজাপতির ইন্দ্রিরগণও] শ্রন করত এর্থাৎ অন্তসন্ধান করিতে করিতে
কেছেন্তিরসম্প্রস্কিপ আপনার মধ্যেই ঠাহাকে কেলিতে পাইরাছিলেন;
কি প্রকার ? "অরম্ আন্তে শ্রন ইতি"—আস্যা অর্থাৎ মুণের মধ্যে বে,
আকাশ (কাক—মুখনিবর) আছে, তাহার মধ্যে এই (প্রাণ) প্রতাকই
রহিরাছেন, অর্থাৎ মুন্ধের মধ্যেই ইতাকে দেশিতে পাওরা মাইতেছে।
জগতে সম্ভ লোকই বিচার করিয়া নিশ্চর করিচা থাকে, ক্ষেপণও

দেবপণ বেকেতু ইহাকে মুখ-বিষররপ আকাশ মধ্যে দেখিতে পাইরা
ব্রিয়াছিলেন যে, এই মুখ্যপ্রাণ বাগাদিরপ কোন বিশেষ প্রকার অবস্থা
অবলখন না করিয়া—সাধাবণভাবে বর্তমনে রহিয়াছে, সেই হেতুই উক্ত
প্রাণ 'অয়ান্য'-পদবাচ্য; এবং বেকেতু অপত কোনরপ বিশেষৰ অবলখন
না করিয়াই বাক্ প্রভৃতিকে দেবতাবাপর করিয়াছেন; এই হেতুই
'আজিরস'-পদবাচা। তাল, মুখ্য প্রাণ 'আজিরস'ইল কি প্রকারে ? বেতেতু
মুখ্য প্রাণই দেহেক্তিরস্মটিভূত অলসমূহের বস—সারকৃত আখা; ইহা ত

धापत्रवियोग्निः कृष्टिकः व्यक्तिन्।

লোকপ্রনিষ্ট আছে। আন্ধান প্রাণই বা আবিষ্কন হয় কি প্রকারে ই ভিন্তর—) বেহেছু প্রাণের অভাবে সম্ভ অব ওক বইরা বার, এ কবা পরে আম্বরা বলিব। বেহেছু- এই মুখ্য প্রাণই অভ্যন্ত ও নির্মিণেবভংহছু কেহেক্সিন্সমন্তির আত্মন্তন এবং বিশুক্ত অর্থাৎ ভোগাসদ-বোবছহিত, এই কারণেট বাক্ প্রভৃতিকে পরিত্যাপ করিরা মুখ্যপ্রাণক্ষেই আপ্রয় করা উচ্চিত, ইনাই উক্ত বাত্যের ভাৎপর্য। বেহেছু বিপর্যায়রহিত বর্ধার্থ জানেই প্রেয়-প্রাণ্ডি বইরা বাকে, আর বিপরীত জানে অনিষ্টপ্রাণ্ডি কেবিতে পাওয়া বার, নেই বেছু আত্মাকে—আত্মন্ত্রপ প্রাণকে আত্মন্ত করিতে বলা বইরাছে ইয়ান্ড।

দা বা এবা দেবতা দূর্নাম, দূরত্যক্তা মৃত্যুদ্রিত হ বা জন্মান্ মৃত্যুচ্বভি, য এবং বেদ ॥ ১৮ ॥ ৯ ॥

স্বাক্তাথ:। সা (পূৰ্বোজ্ঞা) এবা (প্ৰাণাণ্যা) দেবতা বৈ বৃর্
নাম (গুনারা প্রসিদ্ধা); হি (বস্তাৎ) মৃত্যু: (স্থানসন্দৰ্শঃ পাপ্যা, মরণং
বা) অস্তা: (প্রাণমেন্ডারা:) দ্বা (দ্বে) [বর্ততে]; [জন্মাৎ] বঃ
(অক্তোহিশি বঃ কন্চিৎ) এবং (প্রাণস্ত দুন্যিক্ষং) বেছ (বিজ্ঞানাতি), [মৃত্য়ঃ]
তস্তাৎ (বিভ্যঃ) [অপি] দ্বাং (দ্বা) ভবতি, হ বৈ (অবধারণে) !

ম্লানুবাদে। পূর্বোক্ত এই প্রাণ-দেবত। 'দূর্' নামে প্রসিদ্ধ কেন না, বেহেতু মৃত্যু কর্মাৎ ভোগাসক্তিরূপ পাপ ইহা হইতে দূরে থাকে। যে লোক এই প্রাণদেবতার 'দূর্' নাম জানে, মৃত্যু ভাষার নিকট হইডেও দূরে থাকে ॥ ১৮ ॥ ৯ ॥

न्नाट्यक्ता व्याच्या । जायहर—श्रापण विश्वविद्याति । तम् विश्वविद्यात् । जायहर—श्रापण विश्वविद्याति । व्यापण विश्वविद्या । व्यापण व्याप

ৰশাৎ সা ধূনাৰ ধূরিভোবং ব্যাভা; নাৰপৰ: ব্যাপনপৰ্বায়ঃ; ভশাৎ প্ৰসিদাহতা বিভজি:, ধূৰ্নামভাৎ। মৃতঃ পুনধূৰ বিভস্ ? ইভ্যাহ—ধ্বং ধূরে, হি বৰাৎ, সভাঃ আণ্টেৰভাৱাং, মৃত্যুৱাগৰণকৰঃ পাপ্ৰা; সনংক্ৰেবৰ্ণিছাৎ আৰম্ভ সৰীপছভাপি ছুৱতা মৃত্যোঃ; ভৰাদ্ চুৱিত্যেবং খ্যাতিঃ; এবং প্ৰাৰপ্ত বিভবিদ্যাপিতা (ক)। বিহুবং ক্ষমুচাতে—ছুৱং হ ব। অবংৎ মৃত্যুৰ্ভৰতি— স্বাবেবংবিছঃ, ব এবং বেছ, তৰাং; এবমিতি প্ৰস্নুভং বিশু'ভ এবোপেতং প্ৰাৰম্পান্ত ইভাৰ্বঃ। উপাসনং নাম উপাতাৰ্থবাহে বথা দেবভাছিম্বৰুপং প্ৰভাগ ভাগাতে, তথা ননলোপপৰা আসনং চিত্তনং লৌকিকপ্ৰভাৱাব্যুবধানেন, বাবং হ'ছেবভাছিম্বৰূপান্ত্ৰিবানাভিয়ান্তিবিভি, লৌকিকান্ত্ৰাভিমানবং; "হেবো ভূষা দেবানপোভি" "কিক্ষেণ্ডভোছখাং প্ৰাচাাং বিশ্বসিশ ইভ্যেন্থমাহি-প্ৰভিভাঃ ৪ ১৮ ৪ ১ ৪

টীকা। থাবত ওছবাৎ ব্যাপক্ষাক্ত উপাত্তবৃত্তং, তত গুৰুছং বাগানিববনিত্ব, ইত্যাপ্ততে—জ্যান্যভ্যমিতি। প্ৰাৰাজিশ স্বাব্যত্ত—মন্তিভ্যাদিন্য। প্ৰেৰ স্পৃত্তি ক্ষেত্ৰিত । প্ৰাৰাজিশ স্বাব্যত্ত—মন্তিভ্যাদিন্য। প্ৰেৰ স্পৃত্তি ক্ষেত্ৰিত । প্ৰাৰ্থিত অভ্যাপ্ত আৰু আপো ক্ষিত্ৰিত আৰু ক্ষিত্ৰিত প্ৰাৰ্থিত প্ৰাৰ্থিত অভ্যাপ্ত আৰু ক্ষিত্ৰিত । ব্যাপ্ত প্ৰাৰ্থিত প্ৰাৰ্থিত প্ৰাৰ্থিত ভ্যাপ্ত ত ক্ষিত্ৰিত । ক্ষিত্ৰিত প্ৰােশ্বাপ্ত ক্ষিত্ৰিত গ্ৰাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাপ্ত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত । ক্ষিত্ৰ প্ৰাণ্ড ক্ষিত্ৰিত গ্ৰাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰ ভাষ্ট্ৰ ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰিত ক্ষিত্ৰিত ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰ ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ভ্যাহ্ম ক্ষিত্ৰ ক্মিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্মিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্যাহ্ম ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্মিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্মিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্যাহ্ম ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্মিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্মিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ম

ব্যানোপাভেছিবিবং কলং—শাপ্তানির্দ্দেবতাভাবন্ত, তন্ত্র পাপ্তানেরের প্রবানক্ষতান্ত্র ব্যবনাৎ কুর্তাবিশিষ্টপ্রাণোপাভিন্নি বিবজিংগতি বাক্যার্থনিত - অন্যাদিনিত । ন চাবং প্রাণ্ডবেভারা ধূর্ন বিষং নিজ্ঞাং, তন্ত্র ভজ্জকপ্রনিজ্ঞেবর্দনাৎ, নাশি বৌদিকং প্রাণ্ড প্রভাগ, কুরুত্ব প্রান্তিত । প্রিংগ্রতিত আহ্রেন্তি । ক্ষণ পাপ্রবালিং বর্জনার্লি ভতা প্রছনিত্যাপ্রালত ভালংক্রেন্তি । উপাতে সলা ভাররভীতি বাবং । ব্রক্ষানাদির প্রাণভস্কানাৎ ক্লানিভিন্নতে কিং সলা ওভাগনবা । উভাগলভা ভারনাপ্রাণোসনপ্রার্থনাক্রেন্তি । ওজ্ঞ বর্গালাং ভারনাপ্রাণ্ডালাননাক্রাভিন্তি । ওজ্ঞ বর্গালাং দর্শন্তিত আহাদিতি । ব্রক্ষানাভিন্নতিব দেবগাঙ্গনিতি বভাগীবিভ এব অভিনানাভিন্যাভিন্ন, তত্তির দেবপাভাগুর্দ্ধি ভভাবে কলভীভান্ত প্রধানাহ—দেক্তরা ভূক্তেভি । কা লেবভা রূপং ভবেভি—ভিংবেভাগুনীতি, ভভাবো ভালিভার্থঃ ১০৪ ১ ৪

ভাস্থানুবাদ। বনে হইতে পাবে,—প্রাণের বে, বিওঞি বলা হইরাছে, তাহা অসিছ, অর্থাৎ কোন প্রমাণ বারা সমর্থিত হয়

⁽ क) शांतिहत्तव व्यापण विश्ववि च्यापिका' हेकि कविव पार्वः ।

না; কেন না, বাক্ প্রকৃতির বেরণ কলাব-কবনাছিবিবরে আনজি আছে, প্রাণের সেরণ কোনও আনজি নাই; হতরাং এ কবার নীমাংসা ত পূর্বেই করা হইরাছে; তিবে আবার পথা বর কেন? ইা, একবা সত্য বটে, কিছ আলিরস্থানিবছন প্রাণকে বাক্প্রভূতির আল্বন্ধন বলার, 'পরস্থানিত কম্পুটি' প্রারাহ্মসারে (১১) বাসাছির সহিত সম্বন্ধ বাকার, প্রাণেও বাণাছিরভ অভাত সংক্রানিও হইতে পারে; এইবছ বলিতেছেন বে, না—প্রাণ বিভত্ত বটে; কারণ? বেবেতু এই দেবত। (প্রাণ) 'ঘূর্' নামে প্রসিদ্ধ। গামাণে নিন্দিপ্ত লোটের ছার অব্যর্গ। যে প্রাণকে আহ্বন্ধ করিয়াও বিভাত হইরাছিল, এবানে 'সা' পাদে গেট প্রাণকে বুরাইতেছে; ইবা সেই বেবভাই বটে,—বর্তবান ব্যানানের পরীরগঙ 'বে দেবতা, দেবপ্রকৃত্ত 'ক্রন্থ আজে অন্তঃ" বলিয়া নির্দারিত হইরাছেন। উপাসনা-ক্রিয়ার কর্মরূপে (উপাত্ত-রূপে) প্রাণ বথন উপাসনারই অক্সন্ধণ, তথন দেবভাবত্রপ্র বটে।

বেছেতু সেই দেবতা (প্রাণ) 'দূর্' নাবে প্রসিদ্ধ; এবানে নামশন্দী প্রসিদ্ধি-ছোতক; সেই হেতুই ইহার বিশুদ্ধতাও প্রসিদ্ধ; 'দূর্' এই
নামহ বিশুদ্ধির কারণ। কেন বে, গ্রহার 'দূর্' নাম হইল, তাহা বলিতেছেল
—বেহেতু মুগ্রা নর্বাৎ বিষয়সগলপ পাণ এই প্রাণ্যেরতা হইছে দূরে
নামহ বিশুদ্ধির কারণ। বিষয়সগলপ পাণ এই প্রাণ্যেরতা হইছে দূরে
নামহিত; নাসজিল্প দোর না থাকায় মুগ্র তাহার সামহিত হইলেও ব্যক্তঃ
দূরে লাছে; এইলাই তাহার 'দূর্' নাম প্রসিদ্ধি ঘটিয়াছে। এইল্লপে প্রাণের
বিশুদ্ধি বিজ্ঞাপিত হইল এবন বিদ্যার কন কবিত হইছেছ—ইলা হইছে
নাম্যাণ এইতর ভানেন, তাহার নিকট হইছে মুগ্রা দূরে থাকে,
বিনি এইতর ভানেন, তাহার নিকট হইছেও মুগ্রা দূরে থাকে]। 'এবং'
শন্ম হইতে বুলিতে হইবে বে, বে লোক বিশুদ্ধি-ভবসম্পন্ন প্রাণ্যের উপাসনা
করেন,—উপাসনা শন্দের মন্ত এই বে, প্রস্তিতে উপাসনা বিদির স্বর্থবাহরাহের
(প্রসংসাবাহের) দেবতাপ্রভাতির বেরপ প্রস্তা বণ্ডি নাম্য ভালিন। তিহা
করা। বলা লাবন্তক বে, উক্ত চিন্তার বব্যে কাগতিক স্বন্ত কোনও চিন্তা
উপায়ত হইবে না; বতকণ লোকসিদ্ধ সভিযানের ভার সেই উপাস্ত

^{(&}gt;>) ভাংগধ্য—'ন্ৰসৃষ্ট—ভংসৃষ্টি' ভার এইরূপ ;—নং (মৃতকেং) বভাৰভঃই অস্ত, ন্ৰস্তাই ব্যক্তিও অস্ত ও, আবার ভাহার স্তৃত্ত বজত অস্তৃত্ত হইরা বাবে। এবানেও ভ্রম্মই বৃথিতে হইবে।

रिन्छोषि चंडरन छाराव जाचाकिनान जकिनाक मा ११, (उठकान खेडन पान कविरक रहेरत); रकम मा, अंकि वनिवारकम—'रक्षका रहेश रक्षकांत्र केशानमा कविरय', 'कृषि अहे भूजीविरक रकान रक्षकांत्र वर्षमान जांद ।' हेशावि । ১৮ । ১ ।

ক্ৰাক্সন্থাভাৰ । "সা বা এবা বেবতা… বৃষ্ট হ বা অখাসূত্য
ডবিতি" ইড়াজৰ। কৰা প্নৱেবংবিৰো বৃষ্ট সৃত্যুৰ্তবতীতি । উচাতে—

এক্ৰেৰ্ব্ৰোৰাৰ; ইজিয়-বিষয়সংস্গাসকলো বি পাপু যা প্ৰাণাম্বাতিষানিলে।

ৰি বিশ্বাতে, বাগাছিবিশেষাত্মাভিষানহৈত্ম গোভাবিকাজানহেত্মাজ।

শাস্ত্ৰভিষ্ট প্ৰাণাম্বাভিষান; তুমাদেবংবিদ্ধা পাপ্যা বৃষ্ট ভবতীতি

ৰুজ্য, বিয়োধাৰ। তাদেভৰ প্ৰদৰ্শিত—

ন্তিকো। কভিকান্তর্বভাষা বৃদ্ধং কর্তিকাত - আ বা ইন্ডি। নিজান্থলামং পাশছানিওঁনাং, পাশক্ষক্তে:। ন চেমবুণাননং নিজাং নৈমিজিকং বা কেবভান্তকানিবো
বিধানাং ভংকবং পাশ্ব এবংবিবো বৃত্তে ভবলীজাকিপতি—ক্রঞাং পুনারিডি। বিরোধিনিমিপাতে প্রজ্ঞাংন্যাক্তকং ব্যান: ন্যাগতে—উন্তত্ত ইন্ডি। উক্তবেব বানজি -ইলিয়েডিঃ। ইলিয়াগাং বিষয়ের সংসর্গে বােছভিনিবেশজেন ক্রিডঃ পাশ্রা পরিজ্যোতিনান: অপরিজ্ঞিতে প্রাণারনি আলাভিনানবজে। বিক্রখাতে, পরিজ্ঞোপরিজেন্তানিবােরক প্রস্করানিভার্ব:। বিরোধ্য সাব্রতি—ব্যাপান্ত্রীতি। পাশ্ননো বাগাদিবিশের
বজ্যান্ত্রনি বিশিষ্টে অভিযানকেভূত্বাং আবিকৈবিকাপরিজিয়াভিমানে ধ্যানে। বুজাতে। বৃক্ততে
হি চ্ঞানভার্তাবলবিনো জনত প্রাভ্রিবিশ্বভাষাপত্তে। অপের্থনিব্রিতঃ।

"बक्तानि नदः शाना नकार वाकि नविबन्धाव्"

ইতি ভারানিতার্থ:। বরৈস্থিকাজানজন্তং তদাসন্তকপ্রমাণজ্ঞানেন নিবর্ততে, বর্ণা রক্ষ্মপানিজ্ঞানং নৈস্থিকাজানজন্ত পাপুনা, তেন প্রামাণিকপ্রাণনিজনেন ওল্পতি-রিতাহ—আক্ষাবিক্রেও। নর্বভিষানয়োনিরোধানিশেবাং বাধ্যবাধকত্ব কর্মারাধার হরোরপি নিবাে বাধ্য ভাৎ, তত্ত্বাহ — শাজাস্ক্রনিত্তো হ্রীতি। উক্তরের পাপঞ্জংসন্তপ্র

denois quality

वावाजियात अपर प्रजावनित्र प्रकार का विनदीच पूर्विदे जेवन ताराध्यक्षक कावन ; व्याव आर्थ (व वावाजियात रह, काराव कावन स्टेन-नाजीय काराव ; काराव वाकाविरकत त्रविक पावक व्यावचार विरवाद वाकाव आनाविरकत त्रिके व्हेटक स्टूट व्यवस्था कवा नार्थ्य तरक पृक्तिक स्टूटक स्टूटक व्यवस्था कवा नार्थ्य तरक पृक्तिक स्टूटक व्यवस्था व्यवस्था विरवाद विरवाद (विक्रय नार्थ्य अक्ष्यात व्यवस्था व्यवस्था विरवाद व्यवस्था विवयस्था अक्ष्यात व्यवस्था क्ष्या व्यवस्था व्यवस्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यव

স। বা এষা দেবতৈতানাং দেবতানাং পাপ্মানং মৃত্যুমপহত্য যত্রানাং দিশামস্তস্তদ্ গময়াঞ্চকার, তদাসাং পাপ্মনো বিক্তদ্ধাৎ, তত্মার জনমিয়ালান্তনিয়ালেৎ পাপ্মানং মৃত্যুমধ্বায়ানীতি ॥.৯॥১০॥

সন্ধানাথ:। সা বৈ এবা (প্রাণাখ্যা) বেবতা, এতাসাং (বাগানীনাং) পাণামাং (পাণলকণং) সূত্যব্ লগহতা (বিজ্ঞি), বত্র (বিনিষ্ প্রবেশে) আসাং (প্রাণামাং) বিশাব্ লবঃ (অবসানং, বতঃ পরং বিশ্ববাহারো নাবি প্রাকৃতজ্ঞানসন্দান—কৈনাধাবিতং ছানং বা), তৎ (তত্র) পাব্যাক্ষার (সূত্যুং প্রিতবান্)। তৎ (তত্র) আসাং (বেবতানাং) পাণামাং (পাণামি) বিভ্রম্বাৎ (বিবিধাকারেণ ছাপিতবতী); তথাং (হেতোঃ) জনং (অব্যাক্ষাং) ন ইয়াৎ (তেন গছ ন সংসর্গং কুর্যাৎ), তথা আবং (বিগ্রম্বাহার আব্রাক্ষার কিল) ন ইয়াৎ (ন পাছেং); ['নেং' ইতি ভর্ম্যুচকর্ আব্যাব্যু;] ভৎসংসর্বে ক্তে ছি [আবং) পাণামানং সূত্যুব্ অববায়ানি (অস্থ্যুব্রুব্রু, পাণী ভবেরুব্) [এবং ভীত্যা ন আব্রুং অন্যুব, তৎছানং বা ইয়াবিত্যর্বং) ।। ১৯।। ১০।।

মূলান্দ্রাদে । সেই প্রাণদেবতা উক্ত বাক্-প্রভৃতির পাপর্রপ মৃত্যুকে ভাহাদের নিকট হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া—বেখানে এই পূর্বাদি দিকের অন্ত বা শেষ হইয়াছে, অর্থাৎ যেখানে শান্ত্রোপদিক্ট জ্ঞানশৃষ্ণ লোকের অবস্থান, সেই স্থানে প্রেরণ করিয়াছিলেন; সেখানেই বাগাদির পাপ-সমূহকে নানাবিধ আকারে স্থাপন করিয়াছিলেন; সেইক্ষে ঐ প্রেদেশস্থ লোকের সহিত সংসর্গ করিবে না, এবং সেই প্রান্তভূমিভেও বাইবে না। 'নেৎ' কথাটা ভীতিসূচক; [ঐরপ করিলেই] জারি পাপরূপ মৃত্যুর করণগত হইব, (এই ভরে আর অন্তাজনের ও ঐ স্থানের সংস্থাব করিবে না) ৪ ১৯ ৪ ১০ ৪ XII.

विशेष क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स विशेष । या त्या (व्यावक्र क्रिक्स विशेष विशेष क्रिक्स विशेष क्रिक्स विशेष क्रिक्स विशेष क्रिक्स क्रिक्स विशेष क्रिक्स क

নশ্ব নাথ বিশাসন্তঃ, কথসন্তঃ প্ৰতিবানিতি ৷ উচাতে—প্ৰেতিবিঞান-বজনাব্যনিষ্টিকায়তভাৎ বিশাস্, তাৰ্থ্যোৰ্থনায়ুগ্ৰিত এব খেলে৷ বিশাসন্তঃ, বেশাব্যেহ্রণ্যামাত বৃধৎ, ইতাদোবঃ

তৎ তঞা গৰারত্বা আসাং দেবতানাং, পাপান ইতি বিতারাবহবচনৰ্;
বিজ্ঞাবাং বিবিধাং জগ্তাবেনাগ্রাৎ হাপিতবতা প্রাণ্ডেবতা; প্রাণাত্মানশ্রেত্বভাজনেথিতে সামব্যাৎ; হলিমসংস্গলে। হি সং, ইতি প্রাণাত্রস্কৃতাবসময়তে। তথাৎ ভ্রত্তাং জনং নেয়াৎ ন সংজ্ঞাব-স্কাবণদর্শনাগিতেন
সংস্থাতে; ভ্রত্বংসলে পাপানা সংস্থাং কৃতঃ স্থাৎ: পাপানারের হি সং;
ভজ্জননিবাসং চাত্তং বিস্তুল্পরাচাং নেয়াৎ—জনশৃত্সমাপ, জনমাপি ভজ্জেনবিষ্ক্ত ইত্যক্তম্ ইত্যাতপ্রাস্থা। নেগিতি পরিভয়ার্থে নিপাতঃ। হবং
জনসংস্থাপি পাপান্য মৃত্যুন্ অববাস্থানীতি—অল্প + অব + জয়ানীতি জন্মপ্রেত্বন
বিভি এবং তাতো ন জনসভং চেমাদিতি পূর্বেণ সম্বন্ধ ৪ ১১ ৪ ১০ ৪

্টীকা। মৃত্যুদশনত ব্যাসাং বিশাৰতঃ ভল্সমাঞ্কারেতি সম্বর্ধ। কবং পাপ্রা মৃত্যুক্তাতে, ভ্যাক্—ভ্যাক্তাবিক্তেতি। অপক্তোভ্যাত পুন্ধবন্ধয়:। আগদেবতা চেৎ পাপ্রানং হতি, সধৈব কিং ন ভ্যাদিত্যাশভ্যাহ—প্রাপাত্ত্যাত। ভবতু আগো বাগাদীনাং পাপ্রবাহুগছতা, বিহুৰপ্ত কিমান্নভবিত্যাশভ্যাহ—বিশ্বোধান্তেত্যাত।

অবস্থাকাশবেশবাথ দিশাবঞ্জাবাধ্ ব্যাদাবিত্যান্ত্ৰমুক্তামিতি শ্বডে—সাম্প্ৰতি। শাষ্ট্ৰীয়-জানবৰ্ত্বমন্ত্ৰ তো কৰে। মধ্যদেশঃ, প্ৰনিজ্ঞাপি তদধিউভবেন মধ্যদেশবাথ ভ্যাপ্ৰজ্ঞাধিটিতদেশত পাপীয়ন্ত্ৰশীকায়াৎ, অভতং কৰং ভদধিটিতঃ ৮ দেশমৰ্বাধঃ কৃষা ভেনৈৰ নিমিতেন
দিশাং ক্ষিত্ৰান্ত্ৰাভাবাৎ পূৰ্বোক্তক্ষনাভিত্তিক্তন্ত তথিটিভদেশত চ অভবাক্তেশ্বধাক্ষোব্ৰতা বেশো নিশাম্ভ ইত্যুক্তে ব কাচিনস্থপভিত্তি পরিংমতি—উচ্যুক্ত ইতি।

ভিষিত্তভাষ্টের ইতাধিকারাণঃ ক্লিন্তে, ডবাই ইতি আমর্থ্যাদিতি। দেশবারে পাণ্,রাবস্থানাস্থপডেরিভার্ব:। তারেবাস্থপডিং নার্মান্ত—ইজিরেন্তি। ভবস্থ



ভাল্যা-সুলাদে। 'দা বৈ এবা ছেবতা' এ কৰাৰ আৰ্ব প্ৰেই উচ্চ হইয়াছে। [সেট প্ৰাণ ছেবতা] এই বাগাদি ছেবতাগণেও পাপদ্ধশ্ন মৃত্যুকে, —যাভাবিক অভানবশত: বে, শক্ষণনিধি বিবরের সহিত ইপ্রিয়-প্রভাষীন আসকি, সাধারণতঃ সেট আসক্তিঅনিত পাণের কলেই সম্বভ লোক মৃত্যুদ্ধে পতিত হটঃ। থাকে; এটকর সেই পাপই মৃত্যুদ্ধ হেত্ বাল্যা মৃত্যু নাবে অভিহিত হটয়াছে; সেই পাপদ্ধপী মৃত্যুক্ত প্রোণা-আভিষানরপ ছেবতাগণের নিকট চইতে বিভিন্ন করিয়া (পৃথক্ করিয়া), প্রাণে ছে শাল্যাভিমান ছাপন, ভালাকেই এবানে অপহত্য' বলা ইইয়াছে। ভাল কথা, এবংবিধ আনসন্দার ব্যক্তির বভার্যবিক্তম বলিয়াই ত পাপ্রপ মৃত্যুদ্বসামী হটয়া থাকে, ভবে আর মৃত্যুকে বিভিন্ন করিয়া বিশেষ কল কি হইল গুডুছেরে বলিতেছেন – এই পূর্বাধি ছিক্সমৃছের বেধানে অভ—অবসাম (শেষ) ইইয়াছে, সেধানে মৃত্যুকে প্রেরণ করিয়াছিলেন।

ভাল, দিক্সমূতের ত কোবাও বত নাই, তবে দিগতে থেরণ করিলেন কিন্তপে? ইন বলা চইডেছে—বেলোপদিট জানসম্পন্ন বিষক্ষনের বাসকৃষির সীমা ক্টরাই দিগ বিভাগ করিত হট্যাছে, অর্থাং বাঁহারা শ্রৌভজান লাভ করিয়াছেন, সাধারণ লোক, ভাঁহারাই দিকের বাবহার করিল থাকেন; ভালম কনের আবাস-কালেশই এখানে দিপরশ্ব বাচা, খেষন দেশত বলিলে 'জরণা' বুঝার, ইলাও তক্রণ; কালেই এখানে কোনও দোৰ হইতেছে না।

'পাপান:' পদে বিতীয়ার বচ্বচন হটবাছে; উহা কর্মপদ। সেই প্রাণ-দেবতা উক্ত দেবতাগণের সেট পাণরাশিকে সেধানে প্রেরণ করিয়া নানা-প্রকার হীনাবভার ছাপন করিয়াছিলেন। পাণবাত্রট বিবরেজিরসম্বভ্জাত, এবং প্রাণিপণে আপ্রিত; স্তরাং বুকা বাইতেছে বে, বাহারা প্রাণামবৃতি-বিহীম মন্ত্রাত বোক, ভারাদের উপরই [ঐ পাণরাশি ছাপন করিয়াছিলেন]।

भूरतामग्रदगणनिवर् । ^{**}

विश्व तिहें नीनपूक चढ़ाव त्यारण्य विश्व प्रयम कवित्य मां, व्याप्त महावन कवित्य मां, व्याप्त महावन कवित्य मां विश्व महिल कवित्य मां विश्व मां कवित्य मां विश्व मां कवित्य मां विश्व त्या कवित्य मां विश्व व्याप्त त्या कवित्य मां विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त वित्य मां विश्व व्याप्त वित्य मां विश्व व्याप्त विष्त विश्व व्याप्त विश्व विश्व व्याप्त विश्व विष्ठ विश्व विश

সা বা এষা দেবতৈতাসাং দেবতানাং পাপ্মানং মৃত্যু-মপ্ততাাথৈনা মৃত্যুমত্যবহৎ ॥ ২০ ॥ ১১ ॥

সন্ধানার্থ: । দা (পূর্কোন্তা' এবা দেবতা (প্রাণঃ) এতাদাং বাগাদীনাং) দেবতানাং পাপ্যানং মৃত্যুম্ অপহতা, অব (অনভরং ' এনাঃ (বাগাদাঃ বেৰভাঃ) মৃত্যুম্ (পাপ্যানম্) অতীতা (অতিক্রমা) অবহৎ (বং বং দেবতাবং প্রাণিতবতীতার্থঃ) ॥ ২০ ॥ ১১ ॥

শ্লান্তাদে। সেই এই প্রাণদেবতা এই বাগাদি দেবতার পাপরূপ মৃত্যু অপনীত করিয়া, অনস্তর, মৃত্যুর্গিছরূপে তাহাদিগকে বহন করিয়াছিলেন, অর্থাৎ ভাহাদিগকে নিজ নিজ দেবতাবে উপনীত করিয়াছিলেন ॥ ২০॥ ১১॥

স্পাক্তর ভাষ্টা ন। সাবা এবা বেবতা—তবেতং প্রাণাপ্তানকর্মকাং বাগাদীনাবলালাল্যসূচাতে। অধৈনা সূত্যসভাববং- বলাং
আব্যাত্ত্বিপরিভেক্তর: পাপা মূত্য: প্রাণাত্ত্বিজ্ঞানেনাপরতঃ, তলাং স প্রাণোহপরতা পাপানো মৃত্যোঃ; তলাং স এব প্রাণঃ, এনা বাগাদিকেবতাঃ প্রকৃতং পাপানং মৃত্যুসভীতঃ অবহং প্রাণরং সং সমপ্রিভিল্লবলাদিকেবতান্ত্ররূপন্ ৪২০ ৪ ১১ ৪

্রীকা। বিবিশ্রণাভিদনং পাশহানিবে বিচাহাক। তর পাশহানির্পনিবভা আন্তিকঃ নাবারণো নিবেবো দর্শিতঃ। সম্ভতি বেবভাভাবং বকু মুভরবাকানিতি প্রভীকো- नान्तानस्य वस्य वस्यकि। वस्यकि। वस्यकि। वस्यकि। वस्यकि। वस्यकि।

खान्यान्यान् । 'ना वा जवा रवका' रेगारि अक्टि केविब वावाविकान क कर्यकातन कम—वागादि रेक्टियन बन्नाकावका कविब वरेट्ट । 'वर्ष जना नृहान बकानर' कवान वर्ष जरे द,—दर्द रेटिक न्यकित कानी नृहान गांग जावाब-विकान वांग निवादिक रहेनादि, तने दर्द जावरवका नृहान गांग जावाब-विकान वांग निवादिक रहेनादि, तने दर्द जावरवका नृहान गांग वर्ष । जनर तने दर्द केक शांवरवका वान् श्रक्षि द्वकारक नृहान गांग रहेट विनिर्म क विन्ना वर्ष किन्नादिन, वर्षाय कानीकारक निवादिक वांगावरवका वांक कन्नाहेनादिन ॥ २०॥ >>॥

স বৈ বাচমেব প্রথমামত্যবহৎ, সা যদা মৃত্যুমত্ত্র-মুচাত, সোহগ্নিরভবৎ; সোহরমগ্রিঃ পরেণ মৃত্যুমতিক্রান্তো দ্যাপ্যতে॥ ২১॥ ১২॥

স্কান্য হি:। সং (প্রাণঃ) প্রথবাষ্ (উননীধন প্রিণ প্রথবন্ধনি প্রথবন্ধনি (প্রকার প্রথবন্ধর) প্রথবন্ধর (পাণানকর্মণ কর্মণান্ধর প্রথবন্ধর (পাণানকর্মণ কর্মণান্ধর কর্মণান্ধর (বাক্) বরা (বিলিন্ কালে) বৃত্যুদ্ প্রভাৱত (বৃত্যুণানাথ বিবোচিতা প্রভবং), [তহা] সং (প্রান্ধর) পরিঃ প্রভবং। সং (প্রকৃতঃ) পরন্ পরিঃ বৃত্যুদ্ প্রতিকারঃ সন্ পরের (বৃত্যোর্থকারাথ পরতঃ) হাণাতে (হারিবান্ ভবতি); [বৃত্যুদ্মভিক্রবন্ধর প্রাক্ বাচঃ নৈবং হারিবানী হিতি ভাবঃ] । ২১ । ১২ ।

মুলানুবাদে। সেই প্রাণ [উদসীথক্রিয়ার] প্রধান সাধন বাগ্দেবতাকেই প্রথমে মৃত্যুবিহীন করিয়া দেবছ-প্রাপ্ত করিয়াছিলেন; সেই বাগ্দেবতা যে সময় মৃত্যুপাল অভিক্রম করিল, অর্থাৎ পাপসম্বদ্ধ-বিরহিত হইল,সেই সময়েই সে অগ্নিম্বরূপ হইল; সেই অগ্নিরূপেই মৃত্যুর অধিকার অভিক্রম করিয়া দীপ্তি পাইতে লাগিল। [ব্বিভে হইবে বে, ভৎপূর্বেব ভাহার ঐরূপ দীপ্তি ছিল না।] ॥২১॥১২॥

न्नाक्कक्ककाकाका । न देव वाहरवय अववायकाववर । न-आवः वाहरवय अववार अवायाविरणाण्य-केन्नीयकचित रेणवक्यवारणका नायक- जनकः आवाकः काः,—काः क्षवान् मकावरम् वस्तः क्रवान्। काः शृत-कृष्यकीरकाशितः किः सभन् । देखि केशरक—मा वाक् वशं वित् कारम वीभागः वृक्षावकार्गक—मकोकार्गक्र—स्वीतका वश्यवः, का मः मधिन-कवः,—मा वाक् शृत्ववग्रविरवः मको वृक्षविरवारम् गृतिरवाकवः। कवावाः व विरवः वृक्षविरवारम—स्वाद्यकारकारकारितः शरान वृक्षाः—शरकाः वृरकाः। कोशरकः। काक् वाकाः वृक्ष्यक्रियकः मधान्यवाश्याना स्वामीयः वोशि-वामानीयः। वेशसीः कृष्णाः शरान कोशरक वृक्ष्यविरवाशयः। ३०१००।

তীকা। নাৰাভোক্ষৰ্বং বিশেবেৰ প্ৰণক্ষতি—ল বৈ বাচ্চমিন্তানিদা।
কৰা বাচঃ প্ৰাথনানে ভয়াহ—উদ্কীহেথাতি। বাচো বৃদ্ধাৰভিক্ৰাভায়। কণং প্ৰৱপূৰ্ত্যক্ষণ প্ৰবৰ্ণতি—ক্ষয়া ইতি। প্ৰবেশনিভাগিনাং বৃনীতে—লা বাগিছি। পূৰ্ববিদ্ বাচঃ প্ৰতিবেশনান্নালভাং ভ্ৰম্ভিছিবিভ্যাপভায়—এক্তাবাদিন্তি। উকং বিশেষং বিশ্বয়তি—প্ৰাণিন্তি। ২২ ৫ ২২ ৪

ভৌত্দ্বান্ত্রাদে। "ন বৈ বাচ্যের প্রধান্ত্রান্ত্রাদি। নেই প্রাণ, প্রধান প্রধান বান্ত্রতাকে বহন করিছাছিলেন। উন্ধান-পাঠকার্য্যে অন্তান্ত-ইন্তিরাপেলা সাধকতমন্ত (প্রধান-সাধকতা) তারারই আছে; এইজন্ধ এবানে বাকের প্রধার [বুরিতে হইবে]। মৃত্যু অভিক্রম করিয়াবে, বাগ্রেরতাকে বহন করা হইরাছে, তারার প্রকৃত স্বরূপ করিয়া বৃত্ত হইল,—নিভেই বিন্যোচিত হইল, তবন সে প্রসিঠ অলিব প্রাপ্ত হইল,—নিভেই বিন্যোচিত হইল, তবন সে প্রসিঠ অলিব প্রাপ্ত হইল। সেই বাক পূর্বেও অলিবরূপই ছিল, আবার মৃত্যুবিরোগের পরে প্রত্তি করিছা প্রত্তি করিছা প্রত্তির হইল। এইয়াল বিশেব বে, মৃত্যুবিরোগের পর [মৃত্যু] অভিক্রান্ত সেই অলিই মৃত্যুর পরে, অর্থাৎ মৃত্যুর অধিকার অভিক্রম করিয়া দীপ্তি পাইতে লাগিল; কিন্তু মৃত্যুপাশচ্ছেদ্দের পূর্বে মৃত্যুর অধিকারছ্ব করেবে বাক্সরূপে অবন্থিত বাকার বর্ত্ত্রানের জার দীপ্তিবান্ ছিল না; কিন্তু এবন সেই মৃত্যু-বিব্রহিত হওরায় মৃত্যুর বাহিরে, অর্থাৎ নিশাপ অবন্ধরণে দীপ্তি গাইতে লাগিল ৪২১৪২৪

ৰণ প্রাণমত্যবহৎ, স যদা মৃত্যমতামুচ্যত, স বায়ুরভবৎ ; সোহয়ং বায়ু: পরেণ মৃত্যমতিক্রান্তঃ পরতে ॥ ২২ ॥ ১৩ ॥

ज्ञास्त्रार्थाः चर (चनउत्तर) [मः व्यानः] व्यानम् (बारनिकःम्) चन्नास्तरः ; मः (चर् बानः) यहा मृज्यम् चन्नामृहान्, [चना] मः (बानर) वाह्य व्यवेद (मानाधिकनिहित्स्यर हिंगी, व्यविदेववव्यानम् वेदेस्द) हैं। ना व्यवर (क्षत्रकः) वाह्य कृष्णम् व्यविकासः नम् नदस्य (मृत्याः नम्याद) नवत्य (नविक्याः क्षत्रकः)। [नाना धान्यक्षत्रियः क्षत्रेगाः] १२२ ६ २० ॥

অ্লান্স্বাদে। বভংগর প্রাণ ত্রাণেজির-ছেবভাবে পাশ-বিনিশ্বিক করিরা বংন করিয়ছিলেন; ত্রাণেজির-দেবভা বে সময় মৃত্যু-পাশ হইতে বিনিশ্বিক হইল, তথন সে বার্শ্বরূপ হইল; সেই এই বার্ বঙীত হইরা—মৃত্যুর অধিকারের বাহিরে থাকিরা পবিক্রভাবে প্রবহ্মাণ হইতে লাগিল ৪ ২২ ৪ ১৩ ৪

न्या अक्षा आवा । ७४१ व्यापः प्रापर--वार्यण्यः । मृ प्रवरक मृष्टाः परवर्गाण्यकावः । मर्वतम् कार्यम् । २२ । २० ।

विका। । २२ । २०।

ভাস্যাসুবাদে। দেই প্রকার, প্রাণ রাণকে [বহন করিরা-ছিলেন]; তাহাই বার্ চইগ হইগছিল; দেই বার্ই মৃত্যু অভিক্রম করত প্রবাহিত হইতেছে। আর সমগ্রই পূর্মের মড ৪২২ ৪১০।

শধ চকুরতাবহৎ, তদ্যদা মৃত্যুমত্যানুচাত, স আদিত্যোহ্ভবৎ নোহ্দাবাদিত্যঃ পরেশ মৃত্যুমতিক্রান্তস্তপতি ॥ ২৩ ॥ ১৪ ॥

সন্ধানাথ। বৰ (ব্যাপনং) [সং প্রাণ:] চকু: ব্যাবহৎ; বং (চকু:) বদা মৃত্যুৰ্ ব্যামৃচ্যুত, [তদা] (সংপ্রসিদ্ধঃ) ব্যাবিত্যঃ ব্যাহ্য ক্ষেত্র ব্যাহিত্যঃ মৃত্যুৰ্ ব্যাহ্য সৰ্ পরেশ তপতি (ব্যাহ্য সম্ভূপতি) [ব্যাহ্য স্কাহ্য ব্যাহ্য ক্ষিত্র] ১২০১১৪ ট

অ,লানুবাদে। অতঃপর প্রাণ চক্কে পাণবিনিশু কেডাবে বহন করিয়াছিলেন; চক্ষু: যখন মৃত্যু অভিক্রম করিয়াছিল, তখনই সে আদিভাস্বরূপ হইয়াছিল; সেই এই আদিভা মৃত্যু অভিক্রেম করিয়া মৃত্যুর বাহিরে থাকিয়া ভাপ দিভেছেন ॥ ২৩ ॥ ১৪ ॥

भ्याक्तक्कक्कक्काक्ष्यक्रम् । ७४१ हक्क्क्किएणार्डन्स, म जू उपछि ।२०१८।। जिका । । २०॥ २०॥

ভাস্থাস্থাদে। সেই প্রকার চতু: বাবিতা বইন; তিনিই এবন তাপ বিতেহেন। [ইহার ব্যাব্যাও বাবশ স্কৃতির অনুস্থপ] । ২০ । ১৪ । বিশ্ব ভোজনভাবহৎ, ভদ্বদা মৃত্যুনভাষ্চ্যভ, তা দিশোৎ-ভব্দু; ভা ইনা দিশঃ পরেণ মৃত্যুনভিক্রান্তাঃ ॥ ২৪ ॥ ১৫ ॥

ज्ञाकार्थः। जर्गाः वानः] (वावम् ज्ञानस्यः छर (वावर) नवा मृद्यम् ज्ञाम्हाणः, [छरा] [छर] छाः (वानिषाः) विनः (विन् रवनणः) ज्ञान्यः छाः देनाः विनः मृङ्गर ज्ञान्याः नरमः [विकाः]। [अन्नर नर्सरं नुर्सनर] १२८३/८३

ক্লান্দ্রাদে। অনস্তর প্রাণ গ্রোত্রদেবভাকে মৃত্যু অভিক্রম-পূর্বক বহন করিয়াছিলেন; সেই গ্রোত্র বধন মৃত্যুপাশবিমৃক্ত ৪ইল, তথনই প্রসিদ্ধ দিগ্দেবভাস্থার হইল; সেই এই দিগ্দেবভাসমূহ মৃত্যুর অধিকার অভিক্রেম করিয়া অবস্থান করিছে লাগিল॥২৪॥১৫॥

স্পাক্সকাভাক্যাক্। তথা খোলং বিশেষ্ডবন্; বিশঃ প্রাচ্যাধি-বিভাগেনাবিভিডাঃ ৪২৪ ঃ ১৫ ঃ

िका। ॥ २८ । ५०॥

ভাষ্যাসুবাদে।—দেইরপ শ্রেরও বিভ্ন_বর চইল; দিশং—খর্থ-পুর্বাধি বিভাগক্ষরে খবছিত বিভ্নন্ত।।১৪।১৫।।

অথ মনোহত।বহৎ, তদ্যদ। মৃত্যুমত্যমূচ্যত.স চন্দ্রমা অভবৎ; সোহসো চন্দ্রঃ পরেণ মৃত্যুমতিক্রান্তে। ভাত্যেবত হ ব। এনমেষ। দেবতা মৃত্যুমতিবহতি, য এবং বেদ॥ ২৫॥ ১৬॥

স্কুলার্থ: অব [স: প্রাণ:] যন: (অবকরণন্) অতাবহৎ; তৎ বলা মৃত্যুন্ অত্যুক্তাত, তথ (নন:) [তলা] চক্রবা: (চন্তঃ) কডবং। সঃ অসৌ চল্ল: মৃত্যুন্ অভিলোভ: সন্ পরেণ ভাতি (প্রকাশতে)। এবা (প্রাণন্ধণা) কেবতা এবং (ব্যোক্তদেবতাইব) এনং বিবাংস:) মৃত্যুন্ অভি (অতীত্য) বহুতি (কেবনং প্রন্তি)। [কন্?] বং এবং (ব্যোক্তং ক্রেডতার্থা) বহুতি (বিধানাতি); [বিভারাঃ ক্রম্বেতদিতি ভাব:]॥ ২৫॥ ১৬॥

মুলান্দ্রাদে।—অনস্তর মনকে পাপবিমৃক্ত করিয়া দেবত লাভ করাইলেন; মনঃ যে সময় মৃত্যু অভিক্রেম করিল, সেই সময়ই সে চন্দ্র হইল; সেই এই চন্দ্র মৃত্যু অভিক্রেম করিয়া মৃত্যুর অধিকারের বাহিরে बोक्षि भारत्यक्त । जनवर्ष त्य गाकि और श्राना कर भारतकात्र है। और श्रानात्रका कारात्मक मृत्यूत जनक महिना त्यस्य माक्र

স্পাক্ষাক্ষাক্। সমস্ত্রাঃ—ভাতি। ববা পূর্ক-বল্লবানং বাগাল্যাদিভাবেন মৃত্যুসভাগরৎ, এব্রেমং বর্তবাস্থলনান্যপি, হ বৈ এবা প্রাণ্যেবভা মৃত্যু অভিবহতি বাগাল্যাদিভাবেন। এবং বো বাগাদিশকক-বিশিষ্টং প্রাণং বেদ "তং ববা মধোণাসতে, তবেৰ ভবতি"ইতি প্রতঃ ৪২৫৪১৯৪

টীক্ষা। বানাৰীনাৰয়ানিবেৰভাষপ্ৰাৰ্থ্যে উপাসকভ কিবায়াজং। ন হি ভাবে ভভ ক্ষাবিত্যাপভাহ—আপ্ৰেছি। বেৰ লাভ প্ৰভিতৰভাব পাপ্ৰন: সন্ধাৰপোহোজ-বন্ধ না বানাৰীনামুপাসকোপাধিভূতানাম্ প্ৰয়ানিবেৰভাৱৈত্যৰ সোচপি সহা প্ৰাপনাজ্যেৰ বাছন্ ভাৰনাৰসাহৈয়াঞ্ছ পাৰ্ছ পূৰ্বাপনামনহাল্পেতি ভাব:। ক্ভেমং ক্ষাবিভ্যাকাজ্যান্ত্ৰান্ত বাৰ্থিক প্ৰশাসকল বাৰ্থিক বাৰ্থক বাৰ্থক

ভাস্থাস্বাদে। বনং চক্রম্ব লাভ করিছা প্রকাশ পাইতেছে।
পূর্ককরে বাগকর্তা, বাক্ প্রভৃতিকে বেরপ বৃত্যু অভিক্রম করিরা আরি
প্রভৃতি দেবতান প্রাপ্ত করাইরাছিলেন, বর্তমান করেও, বে ব্যক্তি প্রস্থা
বল্প করেম—বাক্ প্রভৃতি পক্ষেতিরবিশিষ্ট প্রাণ্ডেবতাকে আনেন,
প্রাণ্ডেবতা তাঁহাকেও মৃত্যু অভিক্রম করিরা বাক্ প্রভৃতির আরাছিভাব
সম্পালন করতং বহন করেন; কারণ, প্রতি ব্লিতেছেন—ভাঁহাকে বে
বে তাবে উপাসনা করে, সেই সেই তাবই প্রাপ্ত হর্ন ইতি॥২৫॥১৬॥

মধান্মনেহরাদ্যমাগায়দ্, যদ্ধি কিঞান্মস্থতেহনেনৈব তদশ্ভত-ইহ প্রতিতিষ্ঠতি॥ ২৬॥ ১৭॥

স্মান্তনার্থ:। সব (সন্তবং) বাবং) সাম্বান (সাম্বার্থ) স্থান্তং সাগায়ৎ (স্বান্ধ্ সীতবান্ধ্ ; [বতং প্রাণিতিঃ]বংকিক (বংকিকং) সমন্ব (স্থান্ধ্) স্বান্ধ্ তেকার্থ) স্বান্ধ্ (স্থান্ধ্), স্বান্ধ (স্থান্ধ্) করে (স্থান্ধ) প্রবাধিক), স্বান্ধ্ (স্থান্ধ) করে বার্ধান্ধ কর্মান্ধ কর্মান্ধ করা প্রাণ্ধ) করে বার্ধান্ধ করা বার্ধান্ধ করা

অ্লাব্রাদে। অতঃপর প্রাণ আপনার অবন্ধিতির অন্ত বথাবথক্রপে অল্লান্ডগান করিরাছিলেন; কেন না,প্রাণিগণ বাহা কিছু ভক্ষণ করে,
ভাহাও 'অনে'র (প্রাণের) সাহায্যেই ভক্ষণ করে; অধিকন্ত অল্লপুরু এই দেহনধ্যেও প্রাণ অবন্থিতি করে। প্রাণ কেবল আত্মরক্ষার্থই গান করিয়াছিলেন, কোন প্রকার ভোগাসস্কিবশে করেন নাই; স্কুরাং বাগাদির স্তার আস্কি-দোবোদ্ভুত পাশেও লিগু হন নাই ॥ ২৬ ॥ ১৭ ॥

স্পাক্ষর-ভাষ্য ম। অথাখনে। বথা বাগাছিতরাখার্থবাগানং
কৃত্ব, তথা মুখ্যোহিশি প্রাণঃ সর্কপ্রাণসাধারণং প্রাঞ্গাভাষনবাগানং
কৃষা ত্তিবু প্রবানের, এই অন্তরং শিষ্টেরু ন্যস্থ ভোত্তেরু আত্মনে আত্মার্থি,
আত্মান্তব্ — অরক তথান্তক মন্নান্তব্, লাগাখং। কঠা কামসংখাগো বাচনিক
ইত্যক্তব্।

কথং প্নভদরাকঃ প্রাণেনায়ার্থনাগীত্মিতি প্রাতে। ইতি, আর হেতুনাহ—বং কিঞ্জে -- নামাকার্যার-প্রাম্পার্থঃ; হাতি হেতে); ব্যার্রোকে
প্রাণিতির্থ কিঞ্চির্য অভতে ভক্ষাতে, তদনেনৈর প্রাণেনৈর; আন ইতি
প্রাণাভাষা প্রসিদ্ধাঃ আনংশবং সারঃ শক্টবাচী; ব্যক্তঃ প্রার্থঃ স্প্রাণপ্রারঃ; প্রাণেনৈর ভদ্যত ইতার্থঃ।

কিঞ্চ, ন কেবলং প্রাণেনাছত এবারাছম্; তামিন্ শরীরাকারপরি-শতেহরাছে ইই প্রতিতিষ্ঠতি প্রাণ: তমাং প্রাণেনাম্মনঃ প্রতিষ্ঠার্থমানীত-ম্মান্তম্। বছাপি প্রাণেনারাদনং, তদপি প্রাণন্ত প্রতিষ্ঠার্থমেব, ইতি ন স্থায়িছিব কল্যাণাসম্ভণাপ্যসম্ভবঃ প্রাণেহতি ॥ ২৬ ॥ ১৭ ॥

টীকা। উপাতত প্রাণত কার্যকরণসকাতত বিধারকরং নাম গুণাতরং বক্ত মুক্তরবাকাং, ভগালার ব্যাকরোভি—অংথস্ত্যাদিনা। কব্রুগাতুর্বিকীতত কল-স্বস্থতবাহ—কর্প্তেরিস্তি।

অন্নাননাত্তিত্ব প্রপূর্ণকং বাক্যশেষসূত্ত্বতি—কথমিক্যাদিনা।
ভবেষ হেছুবাহ—অন্যাদিকি। প্রাণেনর ভবভত ইভি সবখঃ। ব্যাবিভাভ
ভবাদিভাগিভাবোণাবর:। প্রভিবাভোরনপদক্তের প্রাণপর্যার্থরি কবং শকটে
ভক্তব্যোগভ্রাহ—অন্যাশক্ত ইতি।

ইভন্দ প্রাণভ বার্ণনরাগানং বৃক্ষবিত্যাহ—ক্রিপ্রঞ্চিত । প্রাণেন বাগানিবৎ আন্তর্ননরাগীতং চেৎ, ভবি ওভাগি পাপ্যুবেশ্ব ভানিভাগভান—আদক্ষীক্তি । ইবারে নেরাভারণন্তিবিদ্ধ প্রাণভিতি, ভবস্থনানিশক বাগানয় হিভিভান্তঃ, পতঃ বিভার্থং প্রাণভারতি ন পাপ্যুবেশভবিন্নভীতার্থঃ ৪২৬ ৪ ১১ ৪

काक्यशंक्युत्वास् । "वर वावत" देणावि । वाक्यक्षि देश्वित्रवं रवस्य वायवात्र वर्ष भाग निवस्थित, प्रा वायक त्रदेश किन्छे भ्यवात्र रणात्व मर्त्वशिवनांशात्र साकायण क्यमिष्ठ छेण्डूक भाग कवित्री, व्यवक्ष व्यविदे नशी रणात्व वाययार्थं वक्ष व्यवक्ष भाग कवित्रहित्य ; 'व्यवक्ष' वर्ष—वारा व्यव, व्यवक कव्यर्थामा । कारमर्त्याम वर्षार शरक वायर्गिण क्याबि (व, क्षाविदे ददेश यात्म, देश शक्तिक वा भावश्राव ; [क्ष्य्वार व्याप्त वे श्रकार क्यबावि वानिष्ठ दत्र माहे] (>) ।

ভাল, প্রাণ বে, সেই সন্ধান্ত কলকনক সান আপনার অন্ত করিরাছিলেন, ভালা জানা বার কি প্রকারে? তবিবরে বেতু প্রদর্শন করিতেছেন—'বং কিঞ' ইতি। 'বং কিঞ' কথার এখানে সাধারণতঃ অন্তব্যান্তই বুলাইতেছে। 'বি' শক্টি হেম্বর্ধ প্রবৃত্ত হটরাছে। বেবেতু অগতে প্রাণিগণ বাহা কিছু অন্ত ভঙ্গণ করিয়া থাকে, ভাষাক এই 'অনে'র সাধারোই করিয়া থাকে, আর্থাং প্রাণিগণ 'অন'নাষক এই প্রাণের সাহারোই অন্ত ভঙ্গণ করিয়া থাকে। প্রাণের 'অন' নামটি লোকপ্রসিদ্ধ। ['অন' লম্বের ভার 'অনস্' শক্ষক 'বন্ধ' ধাতু হটতে নিশান্ত হইরাছে, বিশেষ এই বে,] স্কারাভ 'অনস্' শক্ষের অর্থ—শক্ট (গাড়ী), আর অকারাত্ত 'অন' শক্ষের অর্থ—প্রসিদ্ধ প্রাণাণ শক্ষেরই স্বানার্থক প্রাার শক্ষ।

অণি চ, কেবল জীবপণই বে, অন্তভ্রণে প্রাণের সাহাব্য পাইয়া থাকে, ভাহা নহে, পরস্ক সেই মুখ্য প্রাণ নিজেও শরীরাকারে পরিণত সেই ভূকারেই অবস্থান করিয়া থাকে; অতএব প্রাণ বে, আগনায় অবস্থিতির জক্তই

^{(&}gt;) ভাংপর্যা—ফ্রতিতে আছে, "বং কিক বজে আপাসতে, বজবানারৈর ভলাপ্যতে" ইভাবি। অর্থাৎ বজে কভিত্বৰ বাবা কিছু কল কাৰনা করিয়া থাকেন, বজবানের উজেন্ডেই ভার্যা করিয়া থাকেন। কিছু বজবানের আপংসিত হইলেও "কলং চ কর্ত্বাবি ভাং" এই নিয়বালুসারে সাক্ষাকের্যা কভিত্বপরের পাশংসিত কললাভ হইয়া থাকে; পরে বজবান পজিপারেপ বুলা থাবা অভিক্রপরের নিকট হইতে সেই কল ক্রম্ন করিয়া লন; ভাষার পর বজবান সেই বজীর কলের অভিকারী বা ভোজা হন। এই অভিকারেই উভ্ ভ ক্রভিত্তে "বজবানারৈর ভ্যাপাসতে" বলা চইয়াছে। এবন এবানে পভা হইল বে, উত্থাতা আব বে অরাভ কলাও পান করিয়াছিলেন, ভাষা ভ বিক্রাভ হইয়া বজবানেরই ইইবে, ভবে আর 'আপ আলাবে' গান করিয়াছিলেন' কথাট সরক্ত হয় কি প্রকারে প্রতিশ্ব প্রাণ্য নিয়ানার্যাণ্ড বিভাগি গ্রহণ করিং প্রত্থা ইভানি বাক্ষারণা করিছেছেন।

আয়াত পাৰ করিয়াছিলেন, ভাষা বেশ বুধা বাইভেছে আর প্রাণ-কর্তৃক বে, আয় তক্ষণ, ভাষাও কেবল ভাষায় অবহিতি লাভের নিবিভই, (কোন প্রকার ভোগার্থ নছে); স্করাং কল্যাবাসজিনিষত্তন বাক্ প্রভৃতির ব্যৱপ পাপ ক্ষরাছিল, প্রাণের সক্ষে সেরপ পাঁপোৎপত্তির সম্ভাবনা নাই । ২৬ । ১৭ ।

তে দেবা অক্রবন্নেতাবরা ইদ্থে সর্ববং যদনং তদাল্পন আগাদীরসু নোহস্মিন্ন আভজ্বস্থেতি; তে বৈ মাভিদংবিশ-তেতি; তথেতি তথ সমস্কং পরিণ্যবিশস্ত।

তশাদ্ যদনেনামমতি তেনৈতান্ত্প্যস্থেত্বত হ ব। এনত বা অভিসংবিশন্তি, ভর্ত। বানাত প্রেষ্ঠ: পুর এত। ভবত্যমাদোহধিপতির্য এবং বেদ; য উ হৈববিদত স্বেষ্ প্রতি
প্রতির্ভ্রতি, ন হৈবালং ভার্যোভ্যো ভবত্যথ য এবৈতমকুভবতি যে। বৈ তমকু ভার্যান্ বৃভ্রতি, স হৈবালং ভার্যেভ্যো
ভবতি ॥ ২৭ ॥ ১৮ ॥

স্কলাথ:। তে (বাগাদর:) দেবা: অক্রবন্ (উক্তবন্ধ:)
[মুবাং প্রাণ:]—ইদং সর্কং এতাবং বৈ এব), (এতাবদেব, নাতোহবিক্
মন্তীত্যর্ব: '; [কিং তং? ইত্যাহ—লোকে প্রাণ-রিত্যর্বণ] বং অরং
অন্তত্তে (ভজ্যতে ', তং অরং আত্মনে (আত্মার্বং) আগানীঃ (পূর্কং
সীত্রবান্ অসি), অন্থ (পল্চাং) ন: (আত্মাকং গীত্রবান্ অসি, অথবা তং সর্কং
আত্মনে সীত্রবান্ অসি), বরঞ্চ অরং বিনা স্বাত্ণ ন শরুমঃ, তত্মাং] অরু
(পল্চাং) অত্মনু ভেব আত্মার্বে অরে) ন: (অত্মানু) আ ওলব (আতালর্বর
—আর্লাসিনঃ কুরু) ইতি । [এবং প্রার্বিত: প্রাণ আহ —] তে (প্রকৃত্যাঃ
মুবং) বৈ বা (বাং প্রাণ্ডং) অভিসংবিশত (বর্ষি সর্ক্তঃ প্রবিশত) ইতি;
[এবমুক্তাঃ বাগাদর:] তথা (তথাত্ব) ইতি [উল্ডাব্যা] তং (প্রাণং)
পরিস্বত্তাং (পরিতঃ স্বত্তাং) প্রবিশ্ব (নিশ্বরে প্রবিশ্বা ব্যুবঃ)। তত্মাং
(সর্কোল্রিয়াণাং প্রাণে অন্তর্নিবেশাং হেত্যেঃ), অনেন (প্রাণেন) বং আরং
অন্তি (ভক্ষতি) [লোকঃ], ভেন (অন্তন্তম্বন) এতাঃ (বাগাভাঃ
ব্যেক্তাঃ) তৃপাত্রি (ভৃত্বিং সভত্তে)। বঃ (অভ্যেহণি বঃ কল্ডিং) এবং
(বাগাদীনাবাশ্রমুক্তং প্রাণং) বেল (বিজ্যান্তি), এনং (বিত্যাংস্কৃ)

[পশি] খাঃ (ভাডরঃ) এবং (বাগাবিবং) পভিনংবিবতি (পাঞ্চয়েন্ত), বানাং (আতীবাং) তর্তা (তরণকর্তা—শোবকঃ) তরতি ; তবা প্রারঃ (পরতোভা—শুরঃ (পরে) এতা (গরা—পঞ্জবর্তা) তরতি ; তবা প্রারঃ (পরতোভা—শীঞ্জারি:) প্রথিপতিঃ (শাস্তিহা চ) তরতি ।

কিক, বেৰু (ভাতিৰু ববে।) বঃ (বঃ কলিব) এবংবিদং প্ৰতি প্ৰক্ৰিঃ
(প্ৰতিক্লঃ) বুত্বতি (ভবিত্ৰিছাতি—প্ৰতিশাহাঁ ভবতি), (সঃ প্ৰতিশাহাঁ)
ন ব এব (নৈব) ভাবোঁভাঃ (বঙ্গ ভববীরেভাঃ চ) জলং (পাৰবার সমর্থঃ)
ভবতি। জবং পকান্তরে) বঃ এব এভং (প্রাণবিদং প্রতি) অছু (অছুপজ্ঞা)
ভবতি, বঃ এব চ তব্ জন্ম ভার্যান্ (তদস্পভান্ ভবনীরান্) বৃত্বতি
(ভর্তুং পোবরিত্ব ইছেতি), সঃ এব হ (নিশ্চয়ে) ভাবোঁভাঃ (বঙ্গ ভবনীয়েভাঃ)
জনং (পোবনে প্রাণ্ডঃ) ভবতি ৪ ২৭ ৪ ১৮ ৪

মূলানুবাদে। সেই বাৰ্প্ৰভৃতি দেবভাগণ [প্ৰাণকে] বলিন, এ সমস্তই সন্য .--- গাহা অর, ভাহা তুমি আপনার জন্ত গান করিরাই; ি আমরাও ড অর বাডীড অবস্থান করিতে সমর্থ হইডেছি না ; খাড এব] ইহার পর আমাদিগকেও ঐ অলের অধিকারী কর। [প্রাণ বলিল--] ভোমরা সর্বভোভাবে আমার মধ্যে প্রবেশ কর, অর্থাৎ আমার আত্রায় গ্রহণ কর। ভাহারা 'ভথান্ত' বলিয়া সর্বভোভাবে প্রাণের মধ্যে প্রবিষ্ট হইল ; সেই হেডু লোকে প্রাণ ধারা যে অন্ন ভক্ষণ করে, ভাহাতেই এই বাগাদি ইন্সিয়গণও তৃত্তি লাভ করিয়া থাকে। বে ব্যক্তি ৰাগাদির আশ্রমভূত এই প্রাণতত্ত্ব অবগত হন, জ্ঞাতিগণ ও তাঁহার আশ্রম প্রহণ করে; ভিনিও জ্ঞাভিগণের ভরণ-পোষণ করেন, শ্রেষ্ঠ এবং অগ্রণী হন, অন্নভোক্তা (দীপ্তাগ্নি) এবং অধিপতি বা পরিপালক হন। অধিকঞ্জ জ্ঞাভিগণের মধ্যে যে ব্যক্তি ইহার প্রতি প্রতিকৃল হইতে ইচ্ছা করে, त्र वास्ति निक्तव है निक्त खब्नीवगण्ड शावन कविए अवर्ष स्त्र ना ; পক্ষান্তরে বে ব্যক্তি ইহার অনুগত থাকে, এবং ভরণীয় অঞ্চলগণের ভরণ-পোষণ করিতে ইচ্ছা করে, নিশ্চয়ই সেই ব্যক্তি ভরণীয় অঞ্চনগণকে खबन क्रिट्ड नमर्थ इस ॥ २१ । ১৮ ॥

भ्याकास कान्याच्या । ८३ (वर्गाः। मदन्यात्रनम्कम्—'कार्यरेनर

व्यक्तिक देखि, बात्रारीमायांन व्यक्तिविद्यांनवादप्तियां देखि । व्यव्यक्तियां व्यक्तियां विषयां व्यक्तियां विष्तियां व्यक्तियां विष्तियां विष्तियां विष्तियां विष्तियां विष्तियां विष्तियां विष्तियां

তে বাগাহরো দেবাঃ পৰিবরভোতনাৎ হেবাং, অক্রবন্ উক্তবভঃ নুধাং প্রাণন্
'ইবন্ এতাবং' নাতোহধিকবভি; বা ইতি সংবার্থঃ; ইবং ওৎ সর্ববেতাব-বেব; কিন্ ? ববরং প্রাণছিতিকরমভাতে লোকে, তৎ সর্ববার্থনে সাহার্থন্
লাগাসীঃ লাগীতবানসি, আগানেনান্তসাৎ কতনিভার্থঃ; বরক সময়বারেণ
হাতৃং নোৎসহারহে; সভঃ সকু পশ্চাৎ মেহস্বান্ সন্মিন্ সন্মে ভাষার্থে
তবারে স্বাভন্তব আভানরত্ব; নিচোহপ্রবর্ণঃ ছান্দসন্; স্বাংশ্চারভাগিনঃ কুরু'। ২।

ইতর আহ—'তে বৃহং বছলাধিনং বৈ, বা যায় অভিসংবিশত সমন্ততো বাষ্
আতিমুখোন নিবিশত' ইতি, এবমুক্তবতি প্রাণে তথেতি এবমিতি তং প্রাণং
পরিসমন্তং পরিসমন্তাৎ ন অবিশন্ত নিশ্চয়েনাবিশন্ত, তং প্রাণং পারবেষ্টা
নিবিট্টবন্তঃ ইত্যর্থঃ। তথা নিবিট্টানাং প্রাণামুক্তয়া ভেবাং প্রাণেটনৰ অভ্যানং
প্রাণহিতিকরং সং অলং তৃত্তিকবং তব'ত; ন আত্রোগাল্লসম্বন্ধে। বাগাদীনাষ্।
তত্মান্ বৃক্তমেবাবধারণম্—"অনেটনৰ তদভতে" ইতি। তদেব চাহ—তত্মাৎ,
—বত্মাৎ প্রাণাল্লহতদ্বৈৰ প্রাণামুক্তয়াভিস্লিবিটা বাগাদিদেবতাঃ, তত্মান্ বদলম্
অনেন প্রাণেনাত্তি লোকঃ, তেনাল্লন এতা বাগাভাঃ তুপান্তি। ৩।

বাপাভাল্রয় প্রাণং বো বেছ—বাগাদয়ন্চ পঞ্চ প্রাণালয় ইতি, তম্বি

এবৰ্, এবং হ বৈ, আ ভাতয়ঃ অভিসংবিশন্তি বাগাদয় ইব প্রাণম্; জাতানাম্

আল্রমীরো ভবতীতাতি প্রারঃ। অভিসন্ধিবিষ্টানাং চ খানাং, প্রাণবদেব বাগাদীনাৰ্, খালেন ভর্তী ভবতি; তথা লেডঃ; পুরোহগ্রত এতা গলা ভবতি,
বাগাদীনামিব প্রাণঃ; তথা জন্নাদোহনাময়াবীতার্থঃ। অনিপভির্থিছার চ
পালরিতা খতয়ঃ পতিঃ, প্রাণবদেব বাগাদীনাম্। ম এবং প্রাণং বেদ, ওপ্ত
এতৎ মুণোক্তং ক্লং ভবতি। ৪।

কিঞ্, ৰ উ হ এবংবিদং প্রাণবিদং প্রতি বেষু জাতীনাং মধ্যে প্রতিঃ
প্রতিকৃষঃ বৃত্বতি প্রতিশার্কী গুবিভূমিছ্তি, সোহস্মা ইব প্রাণপ্রতিশার্কিনা
ন বৈবাদং ন পর্ব্যাপ্তঃ, ভার্ব্যোগ্য জননীয়েভ্যো ভবিভূমিভ্যবঃ। অব পুনর্য
এব জাতীনাং মধ্যে এতব্ এবংবিদং বাগাদঃ ইব প্রাণন্ অন্তপ্রতা ভবতি বো
বা এতব্ এবংবিদশ্ ক্ষেবাছবর্ত্যমের আগ্রীয়ান্ ভার্যান বৃত্বতি ভর্মিছ্তি,

व्यक्तिकार्थाः पूर्वाशः वाकार्।

ববৈৰ বাগাৰয়ঃ প্ৰাণাহয়তা। আন্তৰ্কৰ আগন্; স হৈব আন পৰ্যান্ত। ভাৰোতো। ভৰকীয়েতা।: ভৰ্তুং, নেভয়ং বভয়ং। প্ৰবেশ্বং প্ৰাণ্ডৰ-বিজ্ঞানকগ্ৰহুক্ । ২৭ । ১৮ ।

টীকা। তর্বা থেকঃ পুরো পরেনাবিকপরিধানার্থং বাক্যান্তরবাবকে—কে দেখা ইন্ডি। তত বিশক্তিবর্থং বকু বাধাবাকিপতি—ন্দ্রিন্তি। অনুকরে বেকুবাহ—বালাদিশীনামিডি। অবধারণাপুণপতিং ব্যর্ভি—নৈত্র দেখাত্র ইন্ডি। বর্ধা থাপভাগিত লগতে—ক্ষপ্রমিতি। বাক্যেন পরিবর্জি—প্রক্রমর্থমিতি। আব বিশেষকি লগতে—ক্ষপ্রমিতি। বাক্যেন পরিবর্জি—প্রক্রমর্থমিতি। আব বিশেষকি দেখা।)।

ভেষাং বেৰছং নাৰয়নি—অবিশ্ৰয়েন্তি। তন্ত্ৰ প্ৰনিছিং প্ৰযাণিজুং বৈশক্ষ ইন্তাং—আ ইতি আনুপাৰ্থ ইতি। তৎপ্ৰনিছতাৰ্যভেতি শেবঃ। বাজাৰ্থ-বাহ—ইদেং তদিতি। এতাবহুৰে ব্যাচটে—তথ্ ক্ষৰ্কমিতি। কিবিছং প্ৰাণাৰ্থ-বন্ধানাৰং নাম, তথাক —আপামেনেতি। পা পুনৱেচাৰতা ভৰতাং ক্ষতিং, ভনাক্ষ আৰু চেতি। পন্তৰভবেৰ বনাপি ছাতুৰপক্ষেত্ৰৰণ ভবাইতবিতি তেৎ, ভনাক্ষ ইতি। পাতৰখেতি প্ৰৱমাৰে কৰ্মপ্ৰধা বাহিয়াছতে ভনাক্ষ —িচি ইতি। ভবৈৰাহ্বাহিছ্, প্ৰভাক্ষণি ভন্ন প্ৰবেশনান্তং ছিচাৰ্থনপ্ৰিতিৰিত বাজাৰ্থনাত্ৰ—অন্যাংক্ষতি। ২০

বৈশবদা বছার্থে প্রযুক্তঃ। প্রাণং পরিবেটা ভান্ত্রছা বাগালীবারয়ার্থিনাকবহানং চেং, তেবামণি প্রাণ্ডর অরপ্রবন্ধ: ভানিত্যাপিভায়ে—ত্তপ্রতি। ভান্তপ্রাণ্ড
অরপ্রান্থ বাগানিভিভান্তপ্রকরিতার্থ:। বাগানীবামরক্রেপেকারভ প্রাণ্ডারহে বিজে
ক্রিড্রান্ত—ত্ত্রমান্তিত। তেবামরন্থভাপকারভ প্রাণ্ডারক্রে বাকাপেবং সংবাদরতি
—ত্তেদেহত্রতিত। বিভাননং দর্শরন্ধ গুণজাভমুপনিশ্রতি—ত্যাদ্যীতি। ০।

বেদনমেৰ বাচাই—বাপশ্দিয়শেষ্ঠতি। স্চ প্ৰাণেইছৰশ্বীতি বেৰেতি চকারার্থ:।
অনানহাৰী বাণিকহিতো দীপ্তাহিতি বাবং। ৪।

সম্প্রতি প্রাণবিদ্ধাং ভোতৃঃ তবিদ্ধাবন্বিবেশি বোৰবার—ক্রিক্টেডি। ইবানীং প্রাণবিদ্ধা প্রভাগন্ত লাভঃ দর্শন্তি—অপ্রেড্যান্দিনা। তে বেবা অকবরি-ভ্যানে) গুণবিধিশ্বিবিভিনে ব বিশিইবিধিগুণক্ষটেডবাত প্রবিধিশ্বিভিনে ব

ভाञ्यांन्य्वाप्तः "एठ प्रवाः" वेजावि । छान, वाक् अकृष्ठि हैित्तित्रत्र व्यवस्था स्वाप्त छान । द्वाप्त व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था । व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था । व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था । व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था । व्यवस्था । व्यवस्था व्यवस्था । व्यवस्था व्यवस्था । व्यवस्था व्यवस्था । व्यवस्था

শপরে (প্রাণ) বলিলেন, সেই তোষরা বলি শরার্থী হইরা থাক, তাহা হাইলে শাষাতে প্রবেশ কর, শর্থাং সর্কাতোভাবে শাষার মধ্যে প্রবিষ্ট হও। প্রাণ এ কথা বলিলে শর 'তাহাই হউক—এইরপই করি,' এই বলিরা তাহারা দ্বিরনিক্তরে সেই প্রাণের মধ্যে সর্কাতোভাবে নিবিষ্ট হইলেন, শর্থাং সেই প্রাণকে বেইন করিরা তাহাতে সরিবিষ্ট রহিলেন। তাহারা সেইরপ সরিবিষ্ট হইলে পর, প্রাণ-ভক্ষিত বে শরে প্রাণের ছিতি সাধন হয়, সেই শরই প্রাণের শাস্তাক্রের তর্মধা প্রবিষ্ট ইল্লিয়গণেয়ও ভৃপ্তিসাধন করিতে লাগিল, কিছু স্বতন্ত্রভাবে বাগাদি ইল্লেরের শরস্বন্ধ নাই। শত এব "শনেনৈর ভল্পতে" এইরপ শবধারণ করা বৃক্তিসম্মন্তই হইলাছে। বেহেতু বাগাদি দেবতাপণ প্রাণের শর্মবৃত্তিক্রমে প্রাণের মধ্যে সমাক্রমণে সরিবিষ্ট ও প্রাণা-শ্রিত; সেই হেতুই সাধারণ লোকে 'শর' ধারা শর্মাং প্রাণের সাধারণ ভৃত্তি লাভ করিরা থাকে, সেই প্রাণভক্ষিত শর ধারা এই বাগাদি ইল্লিয়গণ ভৃত্তি লাভ করিরা থাকে; বাকু প্রভৃতিকে শার বভ্রতাবে শ্রন্তকণ ঘারা ভৃত্তি-লাভ করিয়ে থাকে সা (১)। ৩।

(>) ভাংপর্যা—কুবা ও তৃকা, এই মুইটা আপের বর্ম ; এই এডাই ওক্তর পরিবাবে ববন আবের ক্রিয়া বৃদ্ধি পার, তবন কুবা তৃকাও বৃদ্ধি পার। গৌড়াচার্ব্যের কারিকার আছে —"অয়ন্ত আব্দ্রকৈত্ব বুভেরেষ ন নংশারঃ। বুকুজা চ পিশানা চ আবেধর্ম ইভি আভঃ।" ইভি। त गणि, गंगाँव विकास वावस्य वानस्य वानस्य विकास विवास वाद्यक्षी गाँठी देखित वाद्य वाद्यक वाद्य वाद्यक वाद्य

অপিচ,—বগণের অর্থাৎ আভিগণের বংগা বে ব্যক্তি একংবিধ আনীর প্রতি প্রতিকৃত্য হইতে ইচ্ছা করে -প্রতিপঞ্চরণে স্পর্কা করিতে অভিলাবী হয়, নিশ্চর সে ব্যক্তিও প্রাণস্পর্কা অনুরগণের ভার নিজের পোবার্যর্গ পোবণ করিতে অসমর্থ হয়। পঞ্চাররে, প্রাণের প্রতি বাক্প্রভৃতির ভার আভিগণের মধ্যেও যে ব্যক্তি উক্ত আনার অনুগত থাকে, এবং বাক্ প্রভৃতি বেরুপ প্রাণের আনুগত্য প্রহণপূর্কক আন্মণোবণে অভিলাবী হইয়াছিল, টিক সেইরুপ বে ব্যক্তি সর্কার্য উক্ত আনীর ইচ্ছান্থবর্তা থাকিয়া আনীমপ্রণকে পোবণ করিতে ইচ্ছা করে, সেই ব্যক্তিই তর্মীর স্বপণের ভরণ পোবণ করিতে সমর্থ হয়; কিন্তু অপর বে লোক স্বতম্ভ হইয়া থাকে, ইহার আনুগত্য বীকার করে না, সে লোক কথনই পোবণে সমর্থ হয় না। এ সম্বন্ধই প্রাণগুণ-বিজ্ঞানের কল কবিতে হইল ॥ ২৭ ॥ ১৮ ॥

স্পাক্ষরভাক্ষাক্ষ্য কর্মানাবাদ্ধপ্রতিগাবনার প্রাণক্তাধিরস্বমুগরুত্ব—"নোহবাক্ত আদিরস" ইতি; অন্নাছেনোঃ অরং আদিরসঃ
ইত্যাদিরসাধে হেতুর্নোক্তঃ, তভেতুসিভার্থনারতাতে। তভেতুসিভারতং হি
কার্যকরণাদ্ধাং প্রাণক্ত, অনস্তর্ক বাগাদীনাং প্রাণাধীনতোক্তা; না চ
কর্মপাদ্দীরা, ইত্যাহ।

্টীকা। উভাগ্রহত গ্রহিতের সংবং বড়ং ব্যাহিত বছরবাত—কার্য্যক্ষরণা-নামিতি। অনভাগ্রহত নিয়তি—অন্যানিতি। তিনিভানিকববাবকে। বেকু: 360

বাৰ্নীক্ষম আহ—ভহজানিতি। সম্ভাগ্যৰহিত সৰজং ধৰ্ণাতি—অমৃস্ক্রমং ভেডি। একাছাত্তমং বৃত্তবাৰ্ষিতি প্রহিত্য চৰজা।

ভাস্মান্ত্রাদে। ইতঃপূর্বে "সোহবাসা আধিরসঃ" প্রতিতে প্রাণকে কেবেলিরাবি-সংঘাতের আত্মা বলির। প্রতিপাদন করিবার উদ্দেশ্তে ভাষার আধিরস্থ উল্লেখ করা হইরাছে, কিন্তু কি কারণে বে, ভাষার আধিরস্থ হইন, ভাষার কোন কারণ বলা হর নাই; অবচ ঐরণ হেতুর নির্দেশ বাতীত প্রাণের কেবেলিরাধি স্বর্লভাই নিত্ত হুতিতে পারে না; এই এছ সেই হেতুর প্রতিপাদনার্থ প্রবর্ত্তী প্রতি আরম্ভ হইতেছে। অবাবহিত পূর্বেই বাহ্ প্রত্তি ইন্দ্রিরকে প্রাণের স্থবীন বলা হটরাছে; সেই প্রাণাধীনতা বে, কি প্রকারে স্থবীন করা বাইতে পারে, ভাষা বলিতেছেন—

সোহ্যাক্ত আঙ্গিরগোহঙ্গানাত হি রসঃ; প্রাণে বা অঙ্গানাত রসঃ, প্রাণে হি বা অঙ্গানাত রসস্তম্মাদ্ যশ্মাৎ কম্মান্চাঙ্গাৎ প্রাণ উৎক্রামতি, তদেব তচ্ছুয়াত্যেষ হি বা অঙ্গানাত রসঃ॥:৮॥ ১৯॥

স্কালা অন্তি। অব প্রাণস্ত প্রাঞ্জানিরসতে হেত্রুপদ্যস্তি — "দোহ-বাস্তঃ" ইত্যাদি: "দঃ অবাস আদিরসং, অলানাংহি রসং, প্রাণো বা ক্ষানাং রসং" ইত্যেবৰস্ববইবক্ষতিবাকাং ব্যাব্যাখ্যাত্যের অরণার্থমিহ পুনক্রপস্তস্থা প্রাণঃ (প্রাক্তম্য) বৈ (অব্যাহণে) হি (প্রসিধ্যে) অলানাং (দেহে-

প্রাণ: (প্রাণ্ডক:) বৈ (অবধারণে) হি (প্রাস্থান) অসানাং (দেহেক্রিরাদীনাং) বসং (সার: আত্মারন প্রসিদ্ধ ইত্যুক্ত:); তত্মাৎ (বেতোঃ)
ব্যাৎ কত্মাৎ চ (বতঃ কুতল্চিদ্ধি) অসাৎ (শরীরাব্যুবাৎ) প্রাণঃ উৎক্রামতি
(অপসর্ভি), তবেব (তবৈব) তৎ (প্রাণবিবৃক্তম্ অসং) গুবাতি (গুদ্ধঃ
ভবভি); [কুতঃ এবস্থ] হি (বত্মাৎ) এবঃ (মুখাঃ প্রাণঃ) বৈ
অসানাং বসং (সার ইভার্ব:) ॥ ১৮॥ ১৯॥

অ্লাব্রাদে। ইতঃপূর্নে কেন দে, প্রাণকে 'আজিরস' বলা হইয়াছে, ভাহার হেডু নির্দেশার্থ প্রথমে অইমপ্রণভির বাক্যাংশ উদ্ধৃত করা হইয়াছে। ঐ সংশের ব্যাখ্যা সেখানেই ক্রন্টব্য। মুখ্য প্রাণই অক্লসমূহের—দেহেজিয়াদির রস বা সারস্বরূপ আত্মা বলিয়া প্রানিষ ; এই কারণেই যে কোনও দেহাবর্ষ হইতে প্রাণ সরিয়া বার, সেখানেই লেই অল শুক্ত বইশ্বা বার ; কেন না, মুখ্য প্রাণ বইভেছে আলসমূহের রস অর্থাৎ সারস্বরূপ আত্মা ; [অভএব ভাহার অভাবে অলের শুক্তা এবং প্রোণের 'আজিরস' নাম প্রসিদ্ধি স্কভই বটে]।। ২৮ ৪১৯৪

শাক্ষিক্তা ভাষ্য । "নোহৰাত আদিৱসং" ইত্যাদি বৰোপততথেবোপাদীয়তে উত্তরাধিৰ। "প্রাণো বা অভানাং রসং" ইত্যেবৰতং বাক্যং
বধাবাব্যাতার্থবেৰ পুনঃ আরম্ভি। কথাৰ —প্রাণো বা অভানাং রস ইভি।
প্রাণে। হি; হি-শবং প্রসিছোঁ, অভানাং রসং; প্রসিদ্ধেতং প্রাণক্তারস্বান্ত্র,
ন বাগাদীনাম্; তামাদ্ বৃক্তং 'প্রাণো বা' ইতি আরপন্। কথং পুনঃ
প্রসিদ্ধেন্ ? ইত্যত আহ—তথ্যাক্তর উপনংহারার্থ উপরিজেন সম্বয়তে।
বাষ্যাদ্ বতোহবর্ষাৎ, কথাং অফুকবিশেবাং,—বাহাং কথাদ্ বৃত্তঃ কৃতিভি
ত অগাং পরীবাবর্ষাদ্বিশেবিতাং, প্রাণ উৎক্রারতি অপস্পতি, তর্ষের
তব্যৈর, তদকং ওল্পতি নারসং তর্ষতি শোবমুশৈতি। তথ্যাক্ষের হি বা অভানাং
বস ইত্যাপসংহারঃ। অতঃ কার্যাক্রণানামান্তা প্রাণ ইত্যেতং সিদ্ধন্।
আয়োপায়ে হি শোবো সরগং তাং; তথাং তেন জীবতি প্রাণিনঃ সর্কো।
তথ্যাদপান্ত বাগাদীন্ প্রাণ এবোপান্ত ইতি সমুদারার্থঃ ৪২৮ ৪ ১১ ৪

টীকা। ভাই বং উপপাদনীয়া, ভছ্চাতাা নিমিত্যুক্ত প্ৰজনিবভাগভাহ—
উদ্তরার্থামিতি। প্রতিজ্ঞান্ত্রাহো বজানাহেতোজপানাসীভার্থা। ববোগভাবের ইভানি
প্রপাদনির —প্রাপ্তে। বা ইতি । উভার্থ নির্বাহত্বা পৃদ্ধতি কথামিতি । ভর প্রনিষ্কির
হিত্যুং কুর্মন্ পরিংবতি —প্রাপ্তে। স্থাটিত । প্রনিষ্কির প্রকার —প্রাপ্তিত ।
তানহরবাতিরেকাভাগে সাধরতি —অত আহেতি । পদার্থ কুলা নালার্থ নাই—প্রত্যাহ কিছেন বাভিরেকেবামুক্তরহার সমুক্তেত্বা চলহা। ভলাহ-প্রকার
উপরিভাবের সম্বন্ধকা কুট্রতি—ভল্মান্তিত । প্রবহ্বাভিরেকাভানাব্যুরহার
প্রাপ্ত সিবে ক্রিভাই—অত ইতি । উভভারাৎ প্রকার নিষ্কেশি ক্রমান্তর্যাহ নিধানিভাগ্রা আহ —আহ্রাতি । পর প্রাণ্ড সাধানা আহা, ভবাপি কিছেব উপাভহবিভাগ্রাই—ভল্মান্ত্রিতি । ভব্রু প্রাণাধীবার স্কার্ড জীবনা, ভবাপি কর্মান্তর্তী ভলাহবিভাগ্রাই—ভল্মান্ত্রিতি । ২০ ৪ ১০ ৪

ভাস্থ্যান্দ্রবাদে। ইবার পরে এবোদন পাছে, বৃবিরা এবানে পূর্বের (পটন প্রতির) নির্দেশাস্থগারেই "নোহবাত আদিরনঃ" ইত্যাদি পাশ এবণ কয়া বইভেবে। "প্রাণো বা অভানাং রনঃ" এই পর্বায় বাকাটা

अयोरम देशात भूर्व अवनिष्ठ गावादि चवन कविवा विरक्षः। छाया कि बाकाय ? मा, 'ब्यारना या प्रकासार द्वारा' (ब्यानीहे प्रक् नवृत्वत्र नावकृष) देखि। मूचा थानरे चक्तम्रदर (रेजिय थक्कित) तन। 'शारना वि' वहें दि-पणी व्यतिषि (रायक ; क्छताः पर्य दहेखाइ (व, वहे ब्रात्य पण-प्रमुप्त क्षानिष्ठ, क्षि बाक्क्षकृष्टि हेल्लियात्र नरह ; चल्डबर क्षार्गप्त 'चलप्रमुप्त' चत्रभ कतिता (१७३। वृक्तिवृक्तवे वरेता(६। अत्रभ अतिविधे ता वरेन रून, ভাষা रनिर्छर्डम,--এছाम्मद्र 'छत्वार' मच्छी अखाविछ विराहत উপनश्हातार्व बायुक्त बरेंबारक, अवः शतवर्की बारकात त्रविक देशत त्रवत । 'बचार' वर्ष वाश बहेरछ—त्व बरवर बहेरछ; क्यार वर्य-त्नहे वरवारव नवत्व কিছুবাত বিশেষ-নির্দেশ না থাকা, অর্থাৎ 'অযুক অর' ইভাবিরূপ त्कामध वित्मय ना वाका; (व कामध चन बहेटक नावादन कः चत्रीवायत्रव बहेट खान छेरकमन करत-मतिहा बाह, त्रवारमहे त्रहे चक्रि ७६-নীরস হইরা পড়ে। অতএব ইহাই (ম্বা প্রাবই) অলসবৃহের রস, এই **पान्ठ्रेक् डेक बार्कात डेनमाशायत्राना । अहे क तानहे मुनाळान (पार-**ব্রিরাদির আত্মা বলিয়া প্রসিদ্ধ; কেন না, আত্মার অংগবে শোবের— मनर्गत महाबना इतः; तारे (रक्ते वृक्तित्व सरे(व (व,] প্রাণিপণ দেই व्याप्तर नाहारगुरे कीवन बावन कविवा बाटक। बारकाव बुनाव वह रव, অভএৰ বাক্ প্ৰকৃতিকে ভ্যাপ করিয়া একবাত্ত প্ৰাণেরই উপাসনা করা क्षेत्र । यह । उठ ॥

শাক্তর ভাশাম্। এব উ। ন কেবলং কার্যা-করণরোরেবায়া প্রাণো রূপ-কর্মকুরুরো: ; কিং তহি ? কপ্রজ্:সায়া: নাষ্চ্তানামাছেতি স্কাল্যকতয়৷ প্রাণং শ্ববন্ বহাকরোতি উপাক্সভায়—

টীকা। বৃৎশাভ্যাধিবৰ্ষকং আবোণাসনং বজুং নাক্যান্তরন্ধভারন্ত এই ইডি।
ডক্ত বিধান্তরে ভাৎপর্বাহান—স ক্রেইস্মিডি। কার্যাং পুনশারী বং প্রভাকতে। রূপারাণং
রূপান্তকং, করণং চ আনফ্রিরালভিন্তকর্মভূতং, তরোরালা আব উভূজা নান্তাশেরণি
ভবেতি বজুং কভিকাচভূট্রনিভার্য:। কিনিভি আবক্ত আন্তব্যেক সর্বান্তবোভ্যা
ভতিরিভ্যাশভার্—উপাজ্যক্রাহ্যান্ত।

ক্তাব্দানুবাদে। [নাম-রণায়ক লগতে] প্রাণ বে, কেবল রণ-পরিণতিভূত বেব ও ইলিয়গণেওই আয়া, তাহা নবে, পরস্ত নামভূত (প্রায়ক) বকু, বহুঃ ও সামবেক্যেও [আয়া], এই বলিয়া "এব উ" ইভাবি ক্ষতি কাৰের উপাতভা জাগনের বত স্বাধ্যকভাবে প্রাণের ছতি কয়ত উৎকর্ম থ্যাপন করিছেছেন,—

এষ **ও এব বৃহস্পতির্বাগ্**ৰৈ বৃহতী তক্ত। এব পতিস্তক্ষাত্র বৃহস্পতিঃ । ২৯ । ২০ ।।

সম্ভাৱনাথ:। এবং (বংৰাজঃ প্ৰাণ:) উ এব 'বুৰুলাডি?। [প্ৰাণস্থ কৰং বুৰুলাডিবৰ্ ? ইতাহে] বাক্, বৈ (প্ৰানিষ্ঠে) বুৰুতী নাম হল:); এবং (প্ৰাণ:) তত্তাং (ছন্মোৱপায়া বাচঃ প্ৰানেষ্ঠিনেছাং) পভি: (পালকং নিৰ্বৰ্তকঃ); তত্মং (বেতোঃ) উ (প্ৰানিষ্ঠিনিষ্ঠিনিষ্টি) বুৰুলাতিঃ (বুৰুৎ+পভি:='বুৰুলাভিঃ' ইতি নাম নিৰ্ম্বৰ্চনম্)॥ ২১॥ ২০॥

মূলা-সুব্রাদে। এই প্রাণই আবার বৃহস্পতি নামে প্রসিদ্ধ, কেন না, বাক্ হইতেছে 'বৃহতী' অর্থাৎ বট্ ত্রিংশৎ-জক্ষরাত্মক 'বৃহতী' হন্দঃ, প্রাণ ভাষার উচ্চারণ সম্পাদন করে বলিয়া পতি অর্থাৎ পালক বা নির্ম্বাহক; এইঞ্চা প্রাণ বৃহস্পতিনামে প্রসিদ্ধ ॥ ২৯ ॥ ২০ ॥

্রীক্রা। উ-দৰোহপার্থে বৃহন্দভিপদার্থনি সম্বাতে। 'বৃহন্দভির্থেনামং পুরোহিত আগাং'—ইভি প্রভেদ্ধেপ্রাহিতে। বৃহন্দভিক্রচাতে, তৎ কবং প্রাণ্ড বৃহন্দভিম্বিভি পরতে—ক্রপ্রান্তি। দেবপুরোহিতং বাাবর্ডনিভূম্বর্যাবভাবেনার্যার —উচ্যুক্ত ইন্ডি। প্রনিম্বর্যান কর্বানান্তান্ত — ব্রহ্জীন্তিক্রন্দ ইন্ডি।
সপ্ত হি গাল্ল্যানীনি প্রধাননি জ্ব্বাংনি, ভেবাং ব্যাবং জ্বো বৃহতীভূচাতে।
সা চ বৃহতী বৃট্নিংশক্ষণা প্রনিষ্টেডার্যার। তব্দু স্বর্গেচা বৃহতী, ত্বাপি

प्याप्त वर्षी देखार, ब्यार-व्यमुद्रेश, क्रकि। शक्षिणरका वायाप ना गडिक्टबन्डपूर्विः गारेनः यहे बिश्यनकाताः वृत्कावक्वकावास्त्र-नानकृष्टे रकावत्रहे न्-वृत्ररकार-नरकाता वरावरकातावकावाविकार-का छिडि। ভোজনৈদ্যবুপৰীৰ্য কৰিছবাহ—অক্ত ইন্ডি। তবজু বানাছিক। বুংলী ভৰাহশি **ৰুব্ৰুপ্তিৰ্বিভাগিৰাাং—ন্তুহ্জাব্যুক্তি।** व्यक्तित्व पुरकाः करकार कत्र नवीतापुरावक्कारः तकर्ति, क्यार वानक पुरम्पविष् সিম্বৰুপতিৰবিভাৰ্য। প্ৰাণৱণে ভব। বৃংতীভাত প্ৰবাণবাঃ —প্ৰাণেশ্ব হন্তীতি। ভবাংশি আগভ বিৰক্ষিত্ৰয়াত্ত্বং কৰা নিভাঠীত্যাপভাষে—প্ৰাণ ইন্তি। ভভ कवाबाद व्यवस्थार -योगोन्द्राक्तिकः कामाः क्याबादशेन कवः बात्रवर्कायः, ৰহি ঘটা বুগৰা প্টেংবৰ্ডবভীতি পভাতে--ত্ৰং কথামিতি। আগত বাঙ্বিপাদক্বা-**बब्**बाबादुवार कातः। वार्षः प्रकाश्वर्काः वेशाव-प्रार्टकगाणिमा। वाषक खक्रिकंडिकरकरित किरादाहारक्ष्याय:. न वि वहेख क्राटमः वर्षाय हेला-कार्य-কৌষ্ঠ্যেন্ডি। ভোটনিটেনাহিনা থেবিভন্তবৃগ্ডে। বার্রছ গৈক্ষন কঠাবিভিন্নভিন্ত ৰানো বৰ্ণভৱা ব্যক্তাতে, ওহাত্মিকা চ বাড় নিবীতা কেবভাবিকরণ কর্চ বাগাত্মিকাঞা, जर्दूकः ककाः बार्गश्वक् कविवार्थः। क्याववः बागक व्यकादावःदन मानवि---পালনাকৈতি। সৰাপ্ৰদান্ত সতি স্থাপকৰং ভাষাব্যবাধনিভাভিগ্ৰেভ্যোপসংগ্ৰভি--তত্মাদিতি। २३ । १०।

ভাল্যান্ত্রাদ্য। প্রভাবিত এই 'লালিরস' প্রাণই লাবার বৃহলাতি; প্রাণ বে, বৃহলাতি কেন, তাহা বলা হইতেছে— বাক্ই বৃহতী, অর্থ বৃহতীংশং-লকরায়ক 'বৃহতী' ছব্দঃ; 'বাক্ই লস্থই প্ এই প্রতি চইতে তানা বার বে, অসুই প্ হন্দও বাক্ষরপ; বাক্ষরণ অসুই প্ হন্দও আবার বৃহতী ছব্দেরই লম্ভভুক্ত; অতএব 'বাক্ বৈ বৃহতী' এইরপ প্রসিদ্ধং কর্পন সম্পতই হইরাছে; 'প্রাণকেই বৃহতী এবং প্রাণকেই ক্ষক্ বলিয়া লানিবে' এই অপর প্রতিতে 'বৃহতীকে' প্রাণররো অতি করার বিবা বাইতেছে বে.] সম্ভ বক্ মন্তই বৃহতীর অন্তর্ভুত আবার বক্ মাত্রই বাগাআক; এই কারণেও প্রাণের ব্যা সম্ভ থকের অন্তর্ভাব হইরা থাকে। উক্ত প্রাণ নেই বাগাল্যক বৃহতীর পতি; কারণ কোর্চাপ্রিত অগ্নির দারা প্রেরিড বা চালিত হইরা প্রাণই বক্রের (বাক্যের) অতিব্যক্তি ঘটার; স্ক্তরাং প্রাণই বাক্রের নির্বাহক বা অতিব্যক্ত ; এই কারণে প্রথম বাক্যের প্রতিপালক বলিয়া প্রাণই বাক্যের পতি। প্রাণহীনের শক্ষোচ্চারণ সামর্থ্য থাকে না; এই অন্ত বৃষ্থিতে হইবে বে, প্রাণ দারাই বাক্ রন্দিত হইয়া থাকে। সেই বেন্তুই প্রাণ বৃহল্যতি অর্থিৎ বন্ধস্বহের স্ক্রপ্রের স্ক্রিছ পালক—আন্মা র ২০ ৪ ২০ ৪

टापरमञ्जाका-कृताहर बाक्यन्।

এব উ এব অন্ধাশতির্বাহৈ এন্ধ, ততা এব পতিন্তত্মাত্র এন্ধাশশতিঃ ॥ ৩০ ॥ ২১ ॥

স্কলাথ:—বৰ্ষাধনি প্ৰাণসাৱস্থাহ—'এৰ উ' ইডাাবিদা। এয় (ব্যোক্তঃ প্ৰাণঃ) উ এণ (নিক্তঃ) ব্ৰণস্তিঃ। [মৃতঃ ? ইডাাহ —] বাক্ বৈ (প্ৰসিছোঁ) ব্ৰদ্ধ, এবং (প্ৰাণঃ) ততাঃ (ব্ৰদ্ধপায়াঃ বাচঃ) পতিঃ (বাচঃ নিৰ্ভিক্তাৎ পালকঃ); তত্মাৎ (হেতোঃ) উ [এবং প্ৰাণঃ] ব্ৰহ্ণস্তিঃ (ব্ৰহণস্তিহেন প্ৰসিদ্ধ ইডাৰ্বঃ । ০০ ৪ ২১ ৪

শ্বান্দ। এইরপ যজুর্দ্রেরও প্রাণই সারভূঁত, ভাহা প্রদর্শন করিতেছেন—যথোক্ত লক্ষণান্থিত প্রাণই 'ব্রহ্মণস্পতি'; কারণ বাক্ই ব্রহ্মরূপে প্রসিদ্ধ; ইনি ভাহার পতি কর্ষাৎ নির্বাহক ও রক্ষক; অভএব ব্রাহ্মণস্পতি নামে প্রসিদ্ধ।। ৩০ ॥ ২১ ।

স্পাহ্যক্ত ভাত্যাত্। তথা বছুবাস্। কথম্ এব উ এব ব্ৰহণপ্ৰিঃ ? বাথৈ ব্ৰহ্ম বৃহুং, তচ্চ বাধিশেৰ এব । ততা বাচো বহুবো ব্ৰহণ, এব পতিঃ; তথাত্বন্ধ্যাতঃ পূৰ্বাব্।

কথা প্নৱেত্ত্বগ্ৰাতে—বৃহতী-ক্ৰমণোঃ ধগ্ৰস্টুৰ, ন পুনরভাবিষ্ণ ইতি, উচাতে—বাচোচতে সামানানাবিকরণানিধিবাং "বাবৈ সামানাবিকরণানিধিবাং "বাবৈ সামানাবিকরণানিধিবাং "বাবৈ সামানাবিকরণানিধিবাং "বাবৈ বৃহতী বাবৈ বৃহতী বাবৈ ক্ষা ইতি চ বাক্-স্বানাবিকরণরার্থ বৃষ্টুং বৃষ্টম্। পরিশেষজ্ঞ—সারাভিহিতে বস্যজ্বী এব পরিশিট্টে। বাবিশেষভাজ—বাহিশেবা হি বগ্রজ্বী; তত্বাং তরোর্মাচা স্বানাবিকরণতা মৃ্জা।
ভাবিশেবপ্রসভাজ—'সাম' 'উল্পাখঃ' ইতি চ ল্পাইং বিশেষভিবানম্ব; তথা
বৃহতী ক্রমন্ধ্রেরিশি বিশেষভিবানম্বং বৃক্তম্; অভ্যা অনিজ্যারিভবিশেবরোঃ
ভানবিক্যাপত্তেল্ড, বিশেষভিধান্ত বাঞ্জাক্তে চোত্রক্ত পৌনক্ক্যাং;
বাস্যজ্গোবোল্যাবিশ্বানাক্ষ প্রতিষ্বেৰ্থ ক্রমন্ত্রনিং ৪০০ ৪২০ ৪

্টীক্রা। বন্ধবাবেত্তি পূর্বেণ সংখ্যা। নিরতগাদাকরাপানুচাং আগছে কৃতজ্ববিপঞ্জানাং বন্ধবাং ভর্তাভি পভিষা পরিবর্গতি—কঞ্চান্তি। ভর্গাপি কথং আপো
বন্ধবাবেত্তাগভ্যাহ—আইল অক্টেডি। নির্বাহ্নতি। নির্বাহ্নতি। বালাভিত্তং চালাপিচুলাবিত্তাহ—পূর্ব্বব্যাদ্যতি। ক্লিবালিত্য প্রভে—ক্ষশ্মং পুনুর্ব্বিতি। বালাশেববিরোধান্তাল ন্ত্রিং সভবতীতি পরিবর্গতি—উচ্চাত হাজ্য। বাবৈ নাবেত্যতে বাদ্য
নাবনাবানাবিভর্গের নির্বেশাবেদাবিভাবেহার্ ইতি বোলনা। তথাপি ক্রম্বুর্ভাইং বা নুহতীক্রমণোরিতি, তলাহ—তঞ্জা চ্চেতি। পরিবের্গের ধর্ণতি—

জান্ত্ৰীতি। ইড ত বাক্ষবানাধিকতবাৰ বভীৱজনোঃ গণ্যস্থা বেইবানিভাব—আজি-শোলাইতেটতি। তথৈৰ বেৰজনাৰ—আজিশোলাতি। প্ৰণাধনৰ বাভিনেতমূৰেণ বিৰুপোতি—জাঠুমতি। বিভীৱজনারোহবনারণার্থা, কিঞ্, বাবৈ বৃহতী, বাবৈ বজেতি বাজাভাগে বৃহতীকজনোর্বাগায়খ নিছঃ, ন ৪ তথোর্বাগান্তম, বাভাবন্তেশি বাবৈ বাণিতি গৌনজভাগনলাৎ,ভযাং বৃহতীকজনোরেইবার্ণ্যস্থাই,বিভাব—আজিতাতে চেতি। তথৈৰ স্থানাজিভা গেলাকাৰ্য —আজিতাত । তথা ২১।

ভাৰ্যানুবাদে। বছুর সংখেও সেইরপ। কি প্রকাবেণ এই প্রাণই বছণশাতি; বাক্ বছরণে প্রসিদ্ধা; বছুই বছুঃ গেই বছুঃ ভ শব্দবিশেষ ভিন্ন আর কিছুই নহে; এই প্রাণ সেই বাকের অর্থাৎ বছুঃ সরপ বছেরপতি; সেই কারণে 'ব্রহ্মণশাতি' (ব্রহ্মণঃ + পভিঃ = ব্রহ্মণশাতিঃ)। ইয়ার অর্থ পূর্ব্যবং।

ভাল, ইহা কিরপে জানা বাইতেছে বে, 'বৃহতা' লবঁ—বক্, লার ব্রহ্ম
লব্য-বক্, লক্ত লব্ ই বা হর না কেন ? ইয়া, বলা বাইতেছে বাক্যাশেরে
বাকোর সহিত সাবের লভেদবোধক 'বাক্ই সামবরণ' এইরপ সাবানাবিকরণ্য বা লভেদ নির্দেশ হইতেই [ঐরপ লব্ধ জানা বাইতেছে ;; বাকের
বেরপ সাববরূপতা সিছ হইরাছে, তক্রপ 'বাক্ই রহতা' ও 'বাক্ই বহুঃ' এই
বাক্-স্বানাধিকরণ বৃহতী ও ব্রহ্মের বধাক্রমে অক্ ও ব্রহ্মেরপ্র হওয়াই
বৃক্তিসিছ 'পরিশেব'ও (১) ইহার লপর হেতু,—কেন না, ল্লাই কথার
সাবে উল্লেখ হইরাছে, একবাত্র বক্ ও বক্ই লবলিই রহিরাছে; লত্তএব
এখন [রহতী ও ব্রহ্মান্তে, একবাত্র বক্ ও বক্ই লবলিই রহিরাছে; লত্তএব
এখন [রহতী ও ব্রহ্মান্তে, ব্রহ্মান্তের বক্ ও বক্ই লবলিই রহিরাছে; লত্তএব
এখন [রহতী ও ব্রহ্মান্তের বিশেষভ এ পল্পে লগর হেতু—অক্ ও বক্
ভিতরই লকবিশেষ; স্তর্জাং বাক্যের সহিত ঐ উভরের সাধানাধিকরণ্য
বা লতেদ নির্দেশ বৃক্তিসিছ হইতেছে, প্রবিশেষ-প্রসন্ত লার একটি
বিক্—'সান' ও 'উল্সীণ' এই উভরই বেন্ন বাক্যের বিল্লাই বিশেষ্তিধান,
লব্ধি নিঃসংশ্ররণে প্রশ্বিশেষ্ক্র সাধবেদ্বর্থে প্রযুক্ত হইরাছে,

^{(&}gt;) छाष्पर्या-नाशात्रपक्षः अक वागरण कक्, यक्षः ७ माम अहे त्रव त्रवाहर छे ह्वाद क्षेत्र। इस्वित्यत्य व्यक्षेत्र मामरक वाक्ष्यत्य प्रशाह हिल्ला क्ष्या व्यक्ष व्यक्ष क्ष्या व्यक्ष व्यक्य

ভেষনি 'দুবতী' এবং 'প্রশ্ব'বক্ষেত্রও বিশেষার্থে (বক্ ও বক্ষ্য আর্থে) প্রায়েশ বঙারা উচিত, [কেবলই বাক্যরূপ আর্থ প্রয়োগ হওরা উচিত হয় না]; নচেং ঐ উভয় শক্ষের বলি অর্থবিশেষ অববায়িত না হয়, ভাষা চইলে ঐরপ শক্ষপ্রয়োগ নির্থক হইরা পড়ে। আর বিশেষার্থক শক্ষের উরোধ সম্বেও বলি তথু বাক্যই উহাস্থের আর্থ হয়, ভাষা হইলে ভ পুনকৃত্তি লোবেরও সভাবনা হইরা পড়ে। বিশেষতঃ প্রভিত্তে কক্ বক্ষ্য সাম ও উদ্বীধ শক্ষের নির্দেশেও ঐরপ ক্ষম স্বেধিতে পাওরা বার। [অভএব বাক্যপ্রের শক্ষ্য রাষ্থ্য উল্লেখ বাক্য, তৎপূর্ক্যতা 'রুহতী' ও 'প্রশ্ব' শক্ষের কক্ ও বক্ষ্য আর্থ প্রহণ করাই মৃক্তিসক্ত হইতেছে] ৪০০ ৪২১ ৪

এষ উ এব দাম, বাথৈ দামৈষ দা চামশ্চেতি তৎ দামঃ দামত্বমৃ।

যবেব সমঃ প্লুষিণা সমো নশকেন সমো নাগেন সম এভি-ব্রিভিল্লে টিকঃ সমোহনেন সর্বেণ, তম্মাবেব সানাহশ্লুতে সালঃ সাযুজ্যত সালোক্যং (ক), য এবমেতৎ সান বেদ।।৩১।২২।।

স্বাহ্বলাথ :। তথা সারাষণি, ইত্যাহ—"এৰ উ° ইত্যাদি। এবং (ব্যান্ত: প্রাণ:) এব সাম (সাম্বেদ্য:); বাক্ বৈ (প্রসিদ্ধে)) সা (ব্রীলিদ্ধুলার্যার্যান্ত: সা-শক্ষঃ), তথা এবং (প্রাণ:) করং (স্ক্পুংলিদ্-বন্ধু-বেধুক: ক্ষম শক্ষঃ); [মুলাং] সা চ ক্ষমত ইতি—{ বাক্প্রাণায়ক্ষম্ }, তং (ভলাং) সায়: (গীতিরূপক্ত) সামন্তং [প্রসিদ্ধিতি শেবঃ]। [ব্ছা, ভগাচ] সা চ ক্ষমত—ইতি, তং (ভলেব বাক্প্রাণ্যরূপন্তং) সায়ঃ সাম্বাং (সামনাম-নির্কাচনে হেতুরিভার্বঃ)।

বং (বলাং) উ এব (নিভরে) (এবং প্রাণঃ) গ্র্বিণা (পুডিকরা)
সবঃ (ভ্লাঃ), বশংকন সবঃ, নাগেন (হভিশ্বীরেণ) সবঃ, [কিং বছনা]
এডিঃ (প্রসিবৈঃ) ত্রিভিঃ লোকৈঃ (ত্রিলোকাত্মকেন প্রজাপতি-শরীরেণ চ)
সবঃ, অনেন (অভ্জুর্যানেন ক্সক্রণেণ চ) সবঃ; ভলাং (সর্বান্যাং
হেতোঃ) এব উ সাব প্রাণঃ সাব-শব্ম বাচাঃ), [বহুর্ত্তাত্মভানেংহের্ সভোচব্যাপকতরা অবস্থানাং প্রাণক্ত সর্বস্থানাং, সর্বসান্যাক্ত সাব্দারাি থেরতং
প্রাণভেতি ভাবঃ]। বঃ (উপাস্কঃ) এডং সাম এবং (হ্রোক্ত প্রকারং)
বেল (বিভানাতি), [সোহণি] সারঃ (প্রাণাভিব্যক্ত) সাব্দারং

(मेबाबरकरिक्काविकासः) मारमाकार (मेबाबरमाककार ४) व्यवे रक (मारक्षाकोकार्यः) ३ ७० १ २२ ॥

্ন ম্লান্ত্রাদে। উক্ত প্রাণ হইতেছে সাম; ভারণ, বাক্ই 'সা', অর্থাৎ ব্রীলিক সমস্ত শব্দের স্থানবর্ত্তী, আর এট প্রাণ হইতেছে আম', অর্থাৎ পুংলবোধক সমস্ত শব্দের স্থানপাণী। বেহেড়ু 'সা' হইতেছে—বাক্, আর 'অম' হইতেছে—প্রাণ, সেই হেড়ুই ['সা' ও 'অম' শ্ব্দের যোগে] গীতিরূপ পদসমুদায়াত্মক সামের সামত্ব প্রসিদ্ধ হইগাছে।

বিশেষতঃ, যেহেতু এই প্রাণ. পুত্তিকাশরীরের সমান. মশকশরীরের সমান, হল্তিশরীরের সমান. অধিক কি. এই ত্রিলোকাত্মক প্রজ্ঞাপতি-শরীরের সমান, এবং দৃশ্যমান জগতেরই সমান, সেই হেতুই ইহা সাম-পদবাচ্য। যে বাজি উক্তপ্রকার সামের সামন অবগত হন. তিনিও সামের প্রাণেব সমান স্বভাগ লাভ করেন, এবং সমান লোকে অবস্থিতি করেন ৪৩১ ৪২২ ৪

ক্ষাক্সক্রভাক্ষাভা্। এব উ এব সাম। কথবিতাহ---নাধৈ সা, বং কিঞ্চং শ্রীশক্ষাভিবেরং সা বাক্; সপ্রত্তীশক্ষাভিবেরবন্ধনিবরে। হি সর্বনামসা-শক্ষা। তথা শব্য এব প্রাণ্য, সর্ব্যপ্রশ্বাভিবেরবন্ধনিবরে। হি সর্বনামমা-শক্ষা। তথা শব্য এব প্রাণ্য, সর্ব্যপ্রশ্বাভিবেরবন্ধনিবরে। হি সর্বানামানীতি, বাচ" ইতি প্রভান্তরাং। বাক্-প্রাণাভিধানভূতে) সামশক্ষা। তথা প্রাণমিন্মন্ত্য-বরাদিসমূদার্থাত্তং সীতিঃ সামশক্ষাভিধারতে; শতো ন প্রাণবান্যভিরেকেন সাম-নামান্তি কিঞ্চিৎ, বরবর্ধাবেশ্চ প্রাণনির্বর্জানা প্রাণভর্মান্ত। এব উ এব প্রাণ্য সাম। বন্ধাং সাম সাবেতি বাক্প্রাণাম্মকর্ম্বনা চ শব্যভিত, তথ ভন্মাৎ সারো সীতিরপত্ত বরাদিসমূদারত সামস্বন্ধ ভৎ প্রস্তিও ভূবি।

यठ छ अव नमस्ताः गर्वाप वकारापन श्रकारापन, ज्याचा नार्यजासन नम्मः। वान्यः नम्यमान्तिवित्त-श्रकाद्यास्त्रितिर्द्धननामर्थानजाः। (कम भूनः श्रकाराप श्राप्ति ज्ञापिति, छेठार्छ—नमः श्रूपिना भूषिकामरोरान, नमः वमस्त्रम सम्मन्तेरातन, नमः मार्यम स्विमरोरान, नम अधिविध्ति रिनः देखलाकामरोरान श्राप्तिन श्राप्तिन सम्बद्धारान देवनानर्द्धन। भूषि-

>e#

गवि-मंत्रीराष्ट्र श्वाचाविषय कार त्याम विश्वचाल, हेल मक्कर खानक, व नृतः मंत्रीवयाखनिवारगरेनयः। चत्र्वचार मर्वचचालः। मठ वर्षे श्वाचावादि- खरीनयर मरकारिकानिका मंत्रीराष्ट्र कार्याखाः मनक्ष्यः। "ठ अरक मर्व अव मयाः, मर्वार्यकाः" हेलि अरकः। मर्वानकक क्ष्य मत्रीराष्ट्र मंत्रीवनिवार्यकारका व विश्वचारकः। अवः मनकार मात्राधाः खानः राष्ट्र अविश्वकानिक- वव्यक् करेक्कर कार— चत्र रव वार्याकि, मात्रः खानक मात्रुकाः मत्र्यकार मत्रामरगरिकाः व अवरावक वर्षाकः। वार्यकः वः, मारमाकाः मत्रामरगरिकाः व अवरावक वर्षाकः। मत्र व्यविश्वकारकः व अवरावक वर्षाकः। मत्र वर्षाकः मत्र खानः रवन च खानावार्यकः व अवरावक वर्षाकः। मत्र वर्षाकः मत्र खानः रवन च खानावार्यकः व अवरावक वर्षाकः। मत्र वर्षाकः मत्र खानः रवन च खानावार्यकः मत्र वर्षाकः। मत्र वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः मत्र खानः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः वर्षाकः मत्र खानः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः वर्षाकः। मत्र खानः वर्षाकः। च खानः च खानः च खानः च खानः च खानः च खानः च खानः। च खानः च खानः च खानः च खानः च खानः। च खानः च खानः च खानः च खानः च खानः। च खानः च खानः। च खानः च खानः। च खानः च खानः

্ৰীকা। বৰ বৃষ্টুং প্ৰাণত প্ৰতিপাত ভাতৰ সাৰভং সাবছি—প্ৰশ্ৰ ইন্ত্যাদিনা। ওবেব পাইছভি —জুক্মে ডি: নাশবে। হি সর্কানার, ভবাচ বা প্রীনিকা নর্কাঃ শক্তেনাভি-(१वर रक्ष राशिकार्थः। वदः धान वेक्। कव् শৃশাদৰভি— অক্ত পূংশক্ষেত্ৰ । পৃথবিকেন नर्सन नरक्ताकरवहर वच बान केवार्यः। वस स्ववाद्यार ध्यानरावि—व्यादम्बिः। আচাৰ্যান্ত পিৰাং এতি এতবাকাৰ্। পৌলানি পুংলো বাচকানি। তথাপি কল সাম্পদ্-ৰাচাৰবিভাগৰা। কৰিভবাৰ-বালিভি। বাৰণকৰ: থাণঃ একবঙলনিকেলানিভার্ব:। বসু দীভিবু দাবাবোভি ভারাবিশিটা ভারিবনীভিঃ দাবেলুাচাভে उरकृत्ता राक्षणमध्यमध्य बार्क मानवरक बार-उर्द्यक्ति। बारमा मानदक महीकि वावर। अनीरक बह्रवारका नावनकता दुरेकविद्वेषार्गक आवाविदाक्तिकन नाव हेका-व्यक्तिपरित वस्ताकाक्तिस्यः। रा । भनकर्म শ্বদাৰ-ভারেতি। गामन्यः, एरमध्यानिकास त्योत्। स्कानिययनिकार्यः। উत्कश्र्यं वर माहः भावधानिक नाकार शासन्ति-याच्या। मार्छ । देवर मारवतः मारविक वदावाह्यस्क, छवाकृशानाचकद्वदवाशास्त्र. त्रा हावत्त्वांस वृत्वत्त्वचंत्रादवर, स्त्राद श्राहकता त्राह्या वर मावचर, ७९ बुवामाधनिर्वाक्षाचाराणीनरथन मनरवाज्वावशस्त्र व्यभिक्षविकि स्वाधना । अकाबाबद्दन आनमा मानवम्नाममार्थम्नमावि । यामिकाराममा । अकाबाबब-বাপৰোহ্য ব প্ৰয়তে ইভ্যাপভাহ-বাপঞ্চ ইন্ডি। এরপূর্বকং একটছভি-ক্রেম্ড্রাদিনা। মছ বাবসা ভভজ্ঞীরপরিবাবতে পরি-क्षित्रचात्राम्बाम्नन्विष्यः क्ष्यम्। विकृत्वन् नवीत्वन् नवविष्णानकाशिः-शृक्तिकाः मोछि। नवनवना वशक्कवार्यवः निः न नाविकानवार-म श्रूमक्रिक्तिः वार्थिवि-दक्त ब्रार्थनावृत्तं नर्मभ्यत् । बहे वाहीर्या वाहे महुक्ति आमार्य । विकासि, তবা আবোহলি দশকাহিলরীয়ের সভাচমিভাহিবেহের বিকাশং চ আপভভাষিতি সমভা-শবিভিন্নিভ্যাশভাহে — ন চেক্তি। প্রাণনা नर्सम्बद्धः नवस्कृष्टिविरद्योपनानगार — ज्ञा निष्ठर्ताष्ठि। वश्चारित् (वाषवव्यतीरात् नर्संस विषया सावना ३७६-नदीवनविवानावा बुरक्रमांकः नक्तक, नक्तक्षेत्राय नक्तक्य क्या कृतकृषाक्षयरक्षकः

केन्यवारिकार्यः। क्याकविषयकार्धाः नाकरवाधि—क्षविद्यक्तिः। क्याविकराः राष्ट्रवार -क्ष्मुंब्यरम्बद्धिः। दशकाः साकरवाधि—क्यां क्षारभक्तिः। देशः ॥ क्याः वशःवदीनः क्षारमाज्यकः मण्डवपरमञ्जाः ०० ॥ २३ ॥

ভाञ्चाञ्चाम् ।—हेशहे (व, नावद्याप क्षत्रिक (चन, छाहा विवाक-्वम्,--वाक् वरेख्य 'मा', खोनिव-मत्वत अखिनावा वादा किहू, **७**९मध्यहे 'मा'---वाक् ; कावन, नवछ श्रोणिक नरक रव वर्ष बुकाव, रन नवछरे नर्गमांव 'না' দক্ষের (স্ত্রীনিজ তৎ-দক্ষেরও) বিষয় বা প্রতিপার্য বর। সেইরপ, এই क्षांव बहेरकरक 'चर्च'-मृत्रक शूर्शनक परम बादा बुवाब, त्म मृत्युवरे 'धर्म'-परमद विवदः (कन ना, जनद अधिक जारह-- कृषि किवान जानाव मृश्वरविषक मायमयुर आब हरेबा बाक ? उड्डरड विनाय-'शानडरम'; चात किंडरम चाबाद श्रीवरवादक माथ मनूह [नाक कदिशा वाक] ? छड्डरत दनिरव-'बाहा' चर्बाद बाकाइरल : अहे नाम' मक्कि बाक् छ आर्पत बाहक । (नहस्रल क्षात्वर माबार्य यांवा किছ मिलाह रहेहा था.क. माह-मचडिक क्वन तहे प्रकाशिक मम्बद्धिम नैष्ठि मार्टेड स्थादक। चाठाव, माय-मधार्विष्ठ প্রাণ ও বাজ্যের অভিবিক্ত অপর কোনও প্রতম্ম বস্তু নহে; কেন না পর ७ च एव क्षकृष्ठि नवस्त्रहे शांव वाहा नन्नावनीत्र अवर शांत्वत्रहे चर्वावीत : चछ्यत. १वे लान शायब्रह्मणः (वाद्यु 'ता' ७ 'चम' धवे शमदावत नदादारम 'नाव' (ना + कव - नाव) शव निष्यंत बहेशारक, तारे त्व हरे कशास प्रशास সম্ভ্ৰম্ভত গীতিভ্ৰপ সামের সাম্ব (সাম নাম) প্ৰসিদ্ধ ব্টয়াছে।

অথবা বেছেতু এই প্রাণ বক্ষাবাণ বিশেষ বিশেষ সমস্ত বন্ধর সমান, সেই হেছুই সাম, এইরূপ বাভাষোজনা ভরিছে হইবে। ফ্রিভিডে বাংশক না থাকিলেও) প্রাণ বে, কেন সাম শব্দ থাচা হইন, ভাষার বিভিন্নপ্রকার কারণ প্রদর্শন হইতেই বাংশক প্রাপ্ত হওরা বার। কোন কোন বিশিষ্ট প্রাণের সহিত তুলাভা, ভাষা বলিছেছেন—ভিক্ত প্রাণ] প্লুবির অর্থাৎ প্রকাশ শারীরের সমান, প্রভিক্তা অর্থ — উট), সম্পক্তর—সম্পক্তরীরের সমান, নালের—ছন্তি-শতীরের সমান, এই জিলোক্ষের অর্থাৎ জৈলোক্যমনীরাম্বক প্রভাগভিত্র সমান, এবং হিরণা-পর্তসম্ভা এই ক্ষমত্ত্রের সমান। 'প্রোম্থ বর্ম বেরূপ নিবিল গোলগীরে সমাপ্ত অর্থাৎ পরিব্যাপ্ত থাকে, ভক্ষপ প্রাণেও ক্ষমন্তরার প্রকাশ প্রভাগ প্রভাগ প্রভিক্ত প্রাণের স্ক্রমন্ত্র

এव छ वा छेकीथः, श्रार्था वा छेर, श्रार्थन होतर मर्स्यूड-सम्, वार्यव गीर्थाक गीथा ट्रांड म छेकांचः ॥ ७२ ॥ २७ ॥

(>) छ। १ पर्या — गर्सनावानियकन आगर कंगाय ने सा वरेशार । अपन नः पष्ट वरेरकर
र. आत्म अहे गांवाहे। कि अहा हि — मार्ताक स्वयन ययन स्वयन पार्ट्स स्था परिक, क्या
काक्श पृष्टे विकास नाम करण, आगर कि कि रिक मिहेश पृष्टे हिंदा स्वर्ध है है है। मार्ट्स स्वर्ध है। मार्ट्स स्वर्ध मार्थ कि अहे
बाकाश व्यवा व्यक्त स्वर्ध है। कि विवाद मार्ट्स स्वर्ध निर्द्ध है। मार्ट्स स्वर्ध है। स्वर्ध मार्थ स्वर्ध है। स्वर्ध निवाद स्वर्ध है। स्

ज्यकार्वाद्यः। जयः (ज्ञानः) के देव (जव) छत्त्रीयः (जावारमः एकि-विद्यनः), [ज्ञानकोषपर जन्मायविद्याद—] ज्ञानः देव केद, [क्ववृ ?] वि (वंचाद) देवर नर्वरः [जनद] ज्ञाराम केवचर (विद्यव्य) ; [जना] वाकृ जव विवा (ज्ञीक्षणा, मचाञ्चक्षाद ज्ञीरकः) ; केद ह, ज्ञीना ह देखि—(विश्विष्ठा) नाः जेवनीयः [केहारक] ॥ ७६ ॥ २०॥

সূলানুবাদে। উক্ত প্রাণই উদ্গীণ; [এখানে উদ্গীণ কর্ব সামাবরব উক্তিবিশেব, কিন্তু উচ্চৈ:ম্বরে গান নহে]। প্রাণই হইডেছে— উহ; কেন না, প্রাণ খারাই এই সমস্ত জগৎ উক্তর অর্থাৎ বিশ্বত রহিরাছে; আর বাক্ হইডেছে—গীখা—গীভিম্বরূপ; অভ এব 'উৎ' ও 'গীখা' পদ খরের বোগে 'উদ্গীখ' পদ নিম্পন্ন হইয়াছে, এবং উক্ত প্রাণও 'উদ্গীখ' সংক্ষা লাভ করিয়াছে ॥ ৩২ । ২৩ ॥

न्यां व्यक्त क्रांत्र्या का । अव के वा केलीवः। केलीदिश नाव नावां वाद्या किलियां का त्यां नावां क्रियां क्रिया

্রীক্রা। প্রভাগবিশ্ববং উল্লীবশ্বভাগি ছাক্রিশেবে প্রচুগাং উল্লীবেনাভায়াবেতার
চ উল্লান্তে কর্মী প্রসূত্রণ কর্ম্লীথ: প্রাণ: ? ইঙ্যাল্ডাাহ—উল্লীইথা নাহ্মিন্তি।
নক্শমভেক্তঃ নবছ:। সাবশ্বিভত প্রাণত প্রসূত্রণাহিতি হেমুগাহ—জামাধিক্রান্ত্রাক্রিন্তি। ন ভাবং উল্লীবশ্বভ প্রাণে ক্রিঃ: তত তমিনু মুত্রপ্রয়োগাগর্শনাং, নাপি
ক্রোন্তেম্বরের্ডেম্বরৈন্তি প্রতে—ক্রপ্রমিন্তি। বোগসুভিনুপেতা পরিষ্কৃতি—
ক্রোপ ইক্তি। উক্রশে বাভার্যত বাচনো নিগাত্রামিতাগাল্ডাাই—উল্লেক্তি।
ভবাগি কর্ম প্রাণো বা উলিভালং, ভ্রাহ—প্রাহ্মিন্তি। গার্কি ক্রমুগার্ডেরেভিনিত। উল্লীবভ্রের প্রাহ—ক্রান্ত্রিক্রিন্তি। অবালালার সাব্যত্তি—ক্রিন্তি। অবালালার সাব্যত্তি—ক্রিন্তি। অবাশি কর্ম প্রাণ্ডিন্ত্রিক্তি।
স্বির্ধন্থ ইত্যাল্ডা বাঙ্গপর্থনত ভক্ত ভবাধ্য ক্রমুভি—উল্লেড্কি। ০বাণি কর্ম ৪বান্তেন্ত্রিক্তি
স্বির্ধন্থ ইত্যাল্ডা বাঙ্গপর্থনত ভক্ত ভবাধ্য ক্রমুভি—উল্লেড্কি। ০বাণি কর্ম ৪বান্তেন্ত্র

ভাজ্যাকু আদে। "এব উ বা উত্পীবা" ইভাবি। 'উত্পীব' বাব নাবের ব্যবহাত ভাজিবিশেব (বাংশবিশেব); কিছ উন্নান—উজৈয়েরে নান করা নহে। উন্নাবই প্রাণ কি প্রকারে ? [তছ্তরে বনিভেছেন—] প্রাণ হইভেছে উৎ; বেবেত্ এই সমন্ত করৎ প্রাণ হারা উভ্জ—উর্চ্ছে বিশ্বর রহিয়াছে; [মচেং সম্বত্ত করং প্রিয়া বাইভ]; এই 'উৎ' দক্ষী উত্ততনার্থ-প্রেভক এবং প্রাণের উল্লিক্ত ওপ-সভাব-প্রকাশক; সেই হেতুই উন্নাধ হইভেছে — প্রাণবরূপ; লার বাক্ হইভেছে— নীবা; কারণ, সাম্ভক্তি 'উন্নাব'ত প্রধান করা নিজরই উল্লাব্যক্তরে । [নীবার প্রকৃতিভূত] বৈ' বাতুর ব্যবহা করা ব্যবহার ভাজির ব্যবহার করা নাইতে পারে না; অভ্যাব বাক্তে 'নীবা' বাক্তরেরণ; কেন না, উন্নাবনাক ভক্তিরীর নায় অভ্যাব বাক্তে 'নীবা' বাক্র ব্যবহার করা বাক্তিক হইভেছে। উৎ—হইভেছে প্রাণ, আর 'নীবা' হইহেছে—প্রাণাবীন বাক্; এইকল সেই উত্রই এক 'উন্নাব' প্রে অভিছ্ত হইভা বাকে—'নঃ উন্নাবঃ' ইতি র ৪২ ৪ ২০ ৪

শাক্ষরভাষ্যম। ইকার্বচার্চার বাবারিকা বারচাতে— ভাষ্যাসুবাদে। ইক বিবর্তীর বৃঢ়তা সম্পাধনার্ব প্রক বাবারিকা বারহ ইইডেইে—

তদ্ধালি ত্রশানতলৈচ:কভানেরে। র জানং ভক্ষর বাচারং ভাষ্ট রাজা মৃদ্ধানং বিপাভয়ভাদ্ যদিভোহ্যাক্ত আঙ্গিরণোহ্যে-নোদগায়দিভি। বাচা চ ছেব স প্রাণেন চোদগায়দিভি ॥ ৩৩॥২৪॥ সম্মানাপ্রি। তং (ভত্ত উচ্চে পর্বে) ব (ঐভিন্নে) পুণি (পাখা-

রিকাপি) ' প্ররতে ইতি শেষঃ ।--

তৈ কিভাবেরঃ (চিকিভানত অণতাং— চৈকিভানঃ, তত অণতাং বুবা— চৈকিভাবেরঃ) এখনতঃ (ভরানতঃ কবিঃ) রাধানং (বজে দোনং) ভক্তবন্ উবাচ ; [কিবু १] আরং (বরা অকাবাণঃ চনসন্থঃ) রাধা (দোনং) ভাত (ওত— নম) বুর্ছানং (শিংঃ) বিপাতরভাৎ (বিস্পত্তিং পাভরভূ), বং (ববি) আরাত আকিরসঃ (উদ্যাভা, স হি পূর্ববিশাং বজে প্রাণবাচকেন অরাতা-দিরস-শব্দেন অভিনীরতে), ইতঃ (অসাৎ বাক্সহিভাৎ প্রাণাৎ) অভেন (বেবভাতরের) উদ্যাহৎ (উদ্বাদং ক্রম্বান্ত্র ভাৎ) ইভি । [অভঃ অনু- बोडरण, वर] मः (छेर्थाणा) वाहा (खानावीर्यम वार्णाम ह आर्थम ह (छेण्यमप्राम) वि अव (विष्युष) छेरथावर (देश्यामर इ उवाम् देखि), विष्युष्य स्टू संस्कृतकार वक्यांत्रिक कावर] ॥ ७०॥ २०॥

শন্তাকু আদে। কৰিও বিষয়ে এই মণ এইটা আখায়িকাও শোলা বায়;—চিকিন্তাননামক কৰিয় পোলা অভ্যবস্তনামক কৰি বজে লোলভক্ষণ করিতে করিতে বলিয়াছিলেন—এই রাজা (সোম) নিশ্চরই ভাষার ক্ষাঁথ ভক্ষণকারী আমার শিবংপান্ত করুক, যদি অয়ান্ত আজিবল ক্ষাঁথ উদ্যাতা যদি পূর্বেবান্ত বাক্সভবিত প্রাণ ভিন্ন অপব কোনও ক্ষেত্রভাবিশেষে উদ্যান করিয়া থাকেন। এখন প্রুতি বলিভেনে—[ইং। ক্ষাত্র কুরা। বাইতেছে যে,] সেই উদ্যাতা নিশ্চরই বাক্ ও প্রাণ্ডেবতা যোগেই উদ্যান করিয়াছিলেন। ৩৩। ২৪।

न्नाटक्षक् ज्ञान्य । स्थानि । स्थानि अस्य अस्य स्थानि । स्थानि अस्य स्थानि स्थ

कशः भूमरतृष्ठवः विश्वचाणिविणि केलीए सम् व म वेटणव्याः व्यक्षणः व्यापः व्यक्षणः व्यक्षणः व्यक्षणः व्यक्षणः मूर्ववीनाः नृत्व क्षणाणः न्यः व्यक्षणः मूर्ववीनाः नृत्व क्षणाणः न्यः व्यक्षणः वृत्ववीनाः नृत्व क्षणाणः कृष्णाणः वृत्ववानाः व

্রীকা। ভয়ারী গ্রাদিবাকার প্রকৃ গাল্পবোগবাপকাাঃ—উল্ফোর্ম্প উল্লাখ-বেবভা প্রাপ:, ব বাগাদিরিক্সকার্থ:। 'জীবভি ভূ বংগে মুবা' (পা॰ প্৽ ১১১১৬০) ইতি পানাথ পিরুদেশ বংগে জীবভি পৌত্রপঞ্চের্থনপতাং, তথ ব্যসংক্রেকবিভি কটবার। क्षित्रागरिक्षाक्ष्यकात्रः १९वर्षि — एक्ष्याक्षिक्षिः। कृष्यकात्रक व्यवस्थिति विवदः काक्ष्याद्यन्तः 'कृष्याकाक्ष्यान्यक्षप्रकात्' (गा॰ १० ११)।००) देकि प्रवत्यतः देकार्षः। वृद्धशाक्ष-व्यागकः वर्षत्रकि—व्यवस्थिकः।

ভাষ্যা-মুলাদে। 'তভাপি' ইন্যাধি সেই এই খন্যৰ্তি পূৰ্বোঞ্চিবরে একটা আবারিকাও শোনা বার.—এক্ষয়নামক কৈকিতানের, অর্থাৎ চিকিতানের পূল্য—কৈকিতান, তাহার ব্যা পূল্য — কৈকিতানের রাজাকে আবাৎ মুল্লীর সোনরস ভক্ষণ করিতে করিতে বলিরাভিলেন। কি [বলিরাভিলেন] ? —এই বে চমসন্থ থালা (সোম),—বাহা আবি ভক্ষণ করিতেভি; তাহা, তাহার অর্থাৎ বিশ্যাগার্য আনার ন্র্যা—মুক্ত নিপাণ্ডিত কর্কক; অর্থাৎ প্রায়গার অ্যান ক্রিলা লাখার বিশ্যাগার্য হইরা থাকি। এথানে 'বিপাতরভাৎ' পম্বীতে আনংসা অর্থে লোট্ ্ 'তু' প্রতার) হইরাছে; শেষে সেই 'জু' ছানে 'ভাতঙ্ব' (ভাৎ) আবেশ হইরাছে। (বিশ্বাভর্কাৎ)।

ভাল, এখানে বিধাবাৰিভার সভাবনা ভিল কিলে ? ইা, বলা হইভেছে,—
দঃগ্রত-পূর্বভন অংগণের বজে উল্যাভাই ব্যাপাণবাচক 'অরাস্ত আজিরস'
দক্ষে অভিবিত হইরা থাকেন, সেই অরাস্ত উল্যাভা বলি বাক্ ও প্রণাভিরিজ
অগর কোমও বেবভারণে উল্যান করিরা থাকেন, ভাগা হইলে নিকরই
আমি অনুভবালী হইরাছি; ['ব'ল আমি অনুভবালী হইগা থাকি, ভারা
হইলে] বঞ্জবেওলা নেই বিপরীতব্ভিস্পার আখার বজক নিপাভিজ
কল্পন, এইল্লপ লপথ করিয়াছিলেন। শ্রুভি ইবা বারা বিজ্ঞান বিবরে মৃদ্
প্রভাবের আবর্তকভা প্রধর্শনক রিভেছেন। আধ্যারিকা বারা এই বিবর্তী

स्वतातिक करिया अधि अवन निर्मय क्यांत्र कारांत्र क्रेन्स्साय क्रिएएएन — त्वरे प्रशक्त पाकित्रम—देशांका (व. आवक्त वाका क्रेनिरम्बरे पायक्क आरम्य गांदारम क्रेनान करियादिरमन, अरे निकासरे देशांकाय देक मनव यांत्रा प्रवासिक स्टेम वृक्टिक स्टेर्स 1 00 8 ६ 8 8

তক্ষ হৈতক্ষ সামো যা বাং বেদ, ভণতি হাক্স থম্, ওক্স বৈ বার এব বাম্, ভক্মাদার্থিক্সাং করিম্বন্ বাচি বরমিচেছত, তথা বাচ। বরসম্পান্যাথিক্সাং ক্র্যাৎ, ভক্মাদ্ যজ্ঞে বরবস্তাং দিদৃক্ষ ও এব, বাধা যক্ত বাং ভব্তি; ভব্তি হাক্স বাম্, য এবমেত্র সাল্লা বাং বেদ । ৩৪ । ২৫ ।

অবিলাহা:। ব: (বনঃ) তত্ত (প্রকৃতত্ত) এতত্ত (প্রতাদবং প্রতিপন্নত) সারঃ (সাম-শব্দবাচাত প্রাণত) বং (ধনং গ্রহতং) বের (বিজ্ঞানতি); ব্যত্ত (বিজ্ঞানতি) বং (বনং গ্রহতং) বের (বিজ্ঞানতি); ব্যত্ত (বিজ্ঞানতি) বং (বনং) তিবলি]; তথ্যথে (বেলোঃ) আছিলাং (বিজ্ঞানতি লিকানাং) করিবান্ন উল্পাতা বাচি (বাভাবিবরে) বংগ্ ইন্ফেত (ইন্ফেথ, সারঃ ধননতাং সম্পানরিত্ব উল্পাতা আত্মাঃ বাহা আহিলাং সাধরেছিতি তাবঃ । তরা বরসম্পন্ন । ক্রবর্থ বিজ্ঞাতা আত্মাঃ বাহা আছিলাং (উল্পানং) ক্র্যাথে [উল্পাতা]; [ব্যাথ বজ্ঞেরত উল্পাতা বাহা আছিলাং (উল্পানং) ক্র্যাথে [উল্পাতা]; [ব্যাথ বজ্ঞেরত উল্পাতি) [ব্যাথিকাং (ব্যাথিকাং) বজ্ঞাথে এব বজ্ঞেরবর্থ বিভূক্তরে (ব্রেট্রাক্রিভি) [ক্রনাঃ]; অবো (আপি) বতা ক্রমত) বং (বনং) তবতি, [তমপি বরা বিভূক্তরে, তর্ঘাত্রের্থ:]। (ইয়ানাঃ বিজ্ঞান্তলমূণসংগ্রাজে—] ব্যত্ত (ব্যাত্রের্থ) হ বং (বনর্ষণ) তবতি; বং সারঃ এতথ বন্ধ এবং (ব্যোজেন প্রকারেণ) বের (বেরি), [ততৈতথ ক্রমিতি তাবঃ] । ০০ ৪ ২০ ৪

অর্কান্সুতাদে। যিনি পূর্বোক্ত এই প্রাণণাচক সামের স্ব অর্থাৎ ধনস্বরূপ রহস্ত জানেন, নিশ্চরই তাঁগারও ধনশান্ত ছইয়া থাকে। স্বরুট হইভেছে গেট সামের স্ব—ধন; যিনি আর্থিক্য—ক্ষিক্-কার্যা —উন্সান করিবেন, তিনি অন্পাই বাক্যে স্ক্র্যর সম্পাদনে বত্নপর হইবেন—স্ক্র্যরসম্পন্ন সেই বাক্য দারা আর্থিক্য কর্ম্ম করিবেন; এই জন্তই স্থীগণ বজ্ঞে স্ক্র্যরসম্পন্ন উন্সাভাকে দেখিতে ইচ্ছা করেন;

' विकारकात-पूर्वास् वाचन्।

—জগতে বাহার ধন আছে, [ভাষাকৈ বেরূপ দেখিতে ইচ্ছা করে, তজ্ঞপ)। বে লোক সামের অধোক্তপ্রকার এই স্বরবিজ্ঞান জাবেন, উহায় ঐ প্রকাহ ক্লুলাভ হইয়া থাকে ॥ ৩৪ ॥ ২৫ ॥

শাক্ত আ ভালাক। তত হৈতত। ততেতি প্রকং প্রাণ্যতিস্থাতি। হ এততেতি স্থাং বাণহিশতাতিনংলে। সায়ঃ সামপ্যাল্যত প্রাণ্ড, য়ঃ খং ধনং বেল; তত হ কিং তাৎণ ভবতি হাত বস্থ। কলেন
এলোভা অভিষ্থীকতা ভলবৰে আহ—তত বৈ সায়ঃ আর এব অমু। আর
ইতি কঠপতং বাধুর্যাল; তবেবাত বং বিভ্বপন্ত তেন ভিত্তিক্তিবং সভাতে
উন্সানন্। ব্যাধ্যেশ, তলাঘাজিলাং বহিত্-কর্ম উন্সানং করিতন্ত্র বাভি বিবরে,
বাচি বাগালিতং অরমিক্তেই ক্তেং; সায়ো ধনবভাং সংহেশ ভিনীর্
কর্মাভা। ইম্ম প্রাস্থিকঃ বিধায়তে; সায়ঃ সৌহর্ষোণ সমস্থতায়ে
কর্মবান্ত্রি। ইবেলং সংস্কৃতরা বাচা অরসম্পর্যা আর্থিলং ক্র্যাং।
ভলাং বলাং সায়ঃ অভ্তঃ অরঃ, তেন আন ভ্বিতং সায়; আতা বজে
অরবত্ত্ উন্সাতারং বিভ্কত্ত এব এই বিজ্বতি এব—ধনিন্যিব পোক্তিলং।
প্রভাত প্রশ্বিকান্যকল্যভ্রেশনংহারঃ ক্রিরভে,—ভবতি - হাত অমু, ব
এব্যেতং সায়ঃ আং বেক্তের ৩০ ইংবরঃ

টীক্রা। উল্পাধনেবভা প্রাণ এবেভি নিধাৰা বসুবৰ্ণপ্রভিণ্ডপ্রিবানার্থ উভ্য-ভিভ্যান্তব্যভারতি ভল্পেন্ড ভালিক্রা। কিনিভারে ক্ষরভারতি ভল্পেন্ড ভালিক্রা। কিনিভারে ক্ষরভারতি ভল্পেন্ড ভালিক্রা ক্ষরভারত্যান্তব্যক্ত কর্মিন্ত লাল্বার কর্মান্তব্যক্ত ভালিক্ত কর্মান্তব্যক্ত কর্মান্তব্যক্ত ভালিক্ত কর্মান্তব্যক্ত কর্মান্তব্যক্ত কর্মান্তব্যক্ত ভল্পিক কর্মান্তব্যক্ত কর্মান্তব্যক্ত ভল্পিক ক্ষরভারত্য কর্মান্তব্যক্ত ভল্পিক ক্ষরভারত্য কর্মান্তব্যক্ত ব্যক্ত ব্যক্ত

Bigurgaire : "es tess" feife delle diete मेरिक 'कक् भारत मध्यः 'अखना' नाष्ट्र पूर्वा आन्तरम आंक्रामनः निर्देश क्वा स्टेबार्ट । 'नावश' वर्ष-नाव-नव-वाहा खार्न्द्र । (व राक्ति [नृर्द्धाक की मानम्बनाठा बारनेत । य वर्षाय थम बारनम ; छातात कि वत्र १ [উত্তর—] নিশ্চরই তাহার ব (বন) হয়। এইল্লপ কল কৰ্মন বাল্ল। লোককে প্ৰলোভিত ও অভিমুখী হুত কৰিছা (তল্লবু কৰিছা) ভাগাৰ উলেভে যদিতে-हिन-वहरे वरेंकिह भूरमांक गारवह च (वव) ; जवारव 'वह' वर्ष क्षेत्रक माधुर्वा, (बाबार क्रम (लाकरक 'क्र्कर्व' बना इत्र); टाहाहे [अववत्र] नारमञ्जूषाः (महे सूचरत्र कृषिक शहरमहे केष्नामरक अवदाविनिष्ठे प्रमित्र) यस्य दशा (तरहरू पट्टे मारवत मन्नष्; त्मरे (दक् चाविका-बिष्टिक कार्या-- डेन्नान कविवात भूटर्स, डेन्नाला विष वसनन्नद्वस वाक्ष माब्राक बनी कविष्क हेव्या करवन, खाश हहेरन, बाका विवास सर्वाय बाकाव्य भूभव मन्नाप्तन वष्ट कविद्यन : अहे (प. भूभ'वद विधान, हेबा आंर्यक्रवात्र ; (कम नां, केंद्र यह पांका परि नायरक प्रकारणह कहिएख रहे, छ हा (क्रवन हेक्साबार्ख रह ना ; भड़क छाः। इ कह रहशारम ७ टेहनभानामि कार्याह অনুষ্ঠান করিতে বয়। [উদ্যাতা] এইরণ সুশক্ষ্য প্রস্পায় বাক্য বারা चार्षिका (जेननाम) किटरनन । त्यारे रहकू - (परस्कृ चत्रहे सहेरकाह आरमञ् च-य-चन्नन, अवर छोशं पातारे नान (पाछिठ एतः; तनरे (रक्ट्रे बरक्ष यमात कांत्र पश्चमन्त्रत (पून्ते) छेन्नाठारकरे भाषात्रन (नारक रहिनरठ रेव्हा करत् । बन्ना हैश अधिक वार्ष, यात्रात वन वारक, (नहे धनी वा कारक महान द्विष्ट हेका करता अवस्य है त्य अविकाशनत कन निक्रिनेठ इहेबाद. अवारम त्नरे कनशाखितरे উপनःशांत कता वर्गेष्ठाइ मात- 'वर्गिठ इ चना चर'-- जैशावक धननात स्व, विनि नात्यत के कथाकात 'व' (चत्रनाव) को(मन । ८८ । २८ ।

ভক্ত হৈতক্ত সামে। যা ওবৰ্গং বেদ, ভবতি হাক্ত হা-বৰ্ণম্, তক্ত বৈ শ্বর এব হা-বৰ্ণম্, ভবতি হাক্ত হা-বৰ্ণম্, য এবমেতৎ সাম্লা শ্ব-বৰ্ণং বেদ । ৩৫ । ২৬ ।

व्यक्तव्यार्थः। व्यवाकारिन नात्रा करना विशेष्टः — ठरनाशांत्रिया। यः (वयः) क्या (पूर्व्याक्या) अवना (व्यानाविश्यत्रमा) मान्नः व व्यन्वर्गः (वर्रतिकंतर) द्वेष, चना (विष्ट्रसः) र (चनि) प्रवर्ष (स्तिक्यर) चन्छ। छना (नातः) देव (अनित्तो) यस्तव प्रवर्षः [चनिक्यान-चनम्भारहोत्रद्धः —] यः नातः अड० प्रवर्षः अवः (यत्याकः अकारतः) त्वरः, चना (विष्ट्रसः) र प्रवर्षः कव्छ रेष्ठार्थः ॥ ०० ॥ २० ॥

সুলান্দ্রাদে। এখানে সাধের আরও একটা গুণের বিধান করা হইতেছে—্বে গোক সেই এই সামের ক্বর্ণ (বর্ণগত উৎকর্ম—শ্বরিশেব) জানেন, তাঁহারও বর্ণোৎকর্ম লাভ হর; শ্বরই তাহার স্থ-বর্ণ। পুনশ্চ বিজ্ঞানকল বলিতেছেন—্বে লোক সামের এই বধ্যেক্তপ্রকার স্থনর্প শ্বন্যত হন, তাঁহারও বর্ণোৎকর্ম লাভ হইয়া থাকে। ৩৫। ২৬।

न्नाक्का क्रान्ता । वर्षाका थनः न्वर्ववशनकरनः विशेष्टि । वनाविन तोवर्वास्य । अकावान् विरावः – पूर्वः कर्ष्ठनवनावृद्यः दृ दृष्ठः नाक्षिकः स्वर्ववस्यवान् । उत्र देशक नाद्या यः स्वर्वः स्वर्वः क्रविक हात्रः स्वर्वन् स्वर्वः स्वर्वास्य स्वर्वः स्वर्विकानः क्ष्यः क्ष्यः । उत्र देव यद्य अव स्वर्वदः । व्यक्ति हात्रः स्वर्वम्, व अवस्थितः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः । उत्र प्रवर्वः स्वर्वः । व्यक्तिः स्वर्वः स्वर्वः । व्यक्तिः ।

টীক্ষা। নাবে। ওণাভ্যববভারতি—অংথতি। তহি পুনস্ভি: তাৎ, ওল্লাহ—
এক্তাব্যানিতি। নাক্ষণিক:—কঠোহনং বর্ণো গল্ডোহরবিভিন্নকণজানপুর্বক: সুষ্ঠ
বর্ণোজানণ: বইনৰ নাবশ্বিত প্রণভূতত ধনবিতি বাবং। নাক্ষণিকনৌকর্ত্যকন-প্রাথবিজ্ঞাননতো ববোককনলাতে হেলুবান—ক্ষ্বপশিক্ষেত্তি। বাক্যার্থনান—ক্ষোক্ষিক্ষমেবেন্ডি। কনেন প্রনোভা অভিনুধীঞ্চা, কিং তং স্থানিতি ওল্লববে এতে—
ত্যক্তিতি। ওপবিজ্ঞানকনমুশনংগ্রতি—ক্তব্যক্তিতি। নায়ভক্ষকনাচাত প্রাণ্ড
বন্ধপ্রতিতি বাবং।। ৩৫।। ২০।।

ভাজ্যান্দ্রাদে: সতঃপর সাবের স্বর্ণনালিক আর একটা ৩৭ বিহিত হইতেছে। এই স্বর্ণত স্বরণত উৎকর্ষ ভিন্ন আর কিছুই নহে; এইবাত্র বিশেষ বে, পূর্ব্বোক্ত গুণটা ০৯গত বাধুর্যা, আর এই গুণটা হইতেছে লাক্ষিক 'ইবা ক্তা' 'ইবা কঠা' ইত্যাদ লক্ষ্যান্ত্রাই উত্তৰ শংলাভারণ সাত্র; ইহাই এবানে 'প্রব্' শংলর পর্ব'। বে ব্যক্তি সেই এই সাবের স্বর্ণ ভানেন, তাঁগারও স্বর্ণ (বর্ণোভারণে পটুতা ক্ষর। কাক্ষনপ্রান্তি) হইরা বাকে। কারণ, স্বর্ণ শক্টা ব্যেন স্বর্ণোধক, ভেষনি কাক্ষ্যেরও বাচক; স্ক্রের লোকপ্রান্তি স্বর্ণলাভই ব্যোক্ত গুণবিভানের ক্ষন। স্বর্থ ভাষার (সাবের)

प्रदेश विनि मारवृत्र वाषाक प्रवर्गक कारमन, क्षेत्रांत्रक प्रवर्गनाक व्यवस्था वाषा प्रदेश वारक। देशा प्रवर्गनाक

ভশু হৈতকা সামে। য়: প্রতিষ্ঠাং বেদ, প্রতি ছ ডিঠতি; ভক্ত বৈ বাগেব প্রতিষ্ঠা বাচি ছি খবেষ এতং প্রাণ: প্রতিষ্ঠিতে। গীয়তেইন ইত্যু হৈক মান্ত: ॥ ৩৬ । ২৭।।

সন্ধানা । বাং (জনঃ \ তত্ত (পুর্বোজনা) এতত্ত নারঃ (প্রাণত) প্রতিষ্ঠাং (আগ্রহানং) বেদ, [দঃ বিদান] হ (কিল) প্রতিষ্ঠিতি (প্রতিষ্ঠাং লভতে); [কানে প্রতিষ্ঠাং ইতাহে—] বাক্ এব তত্ত (সামাজিবেছত) প্রতিষ্ঠা (প্রতিষ্ঠাত অত্যান্ ইতি প্রতিষ্ঠা— বাগ্রহঃ) ৷ [কুড়াং] হি (বত্তাং) এবং প্রাণঃ বাচি বন্ (নিশ্চরে প্রতিষ্ঠিতঃ (নন্) এতং (গানং) কিছে ; একে হং অত্যে পুনঃ \ ব্যে [প্রতিষ্ঠিতো গীলতে] ইতি উ (বিত্তাক) আহে (ক্রেচি) ৪ ৩৬ ৪২৭ ৪

ম্লানুবাদে যে বাক্তি এই সাম-নামক প্রাণের প্রতিষ্ঠা (আশ্রেম্থান) জানেন তিনি নিশ্চরই প্রতিষ্ঠারান্ হন; বাক্ই এই-তেছে ইহার প্রতিষ্ঠা; কাবণ, এই সামাধা প্রাণ বাকে। প্রতিষ্ঠিত হইরাই গীতির আহাবে গীত হইরা থাকে: অপর কেচ কেচ কেচ আছে প্রতিষ্ঠিত হইরা গীত হইরা থাকে] ॥ ৩৬ ॥ ২৭ ॥

স্পাক্তর ভাকাম। তথা প্রতিষ্ঠান্ধং বিধিৎসন্নাহ—তত্ত হৈতত সারে। ব: প্রতিষ্ঠাং বেদ; প্রতিতিষ্ঠতাতামিতি প্রতিষ্ঠা—বাক্; তাং প্রতিষ্ঠাং সারো ভবং বে৷ বেদ, স প্রতিতিষ্ঠতি হ। "তং যথা মধোপাসতে" ইতি ক্রতে: তদ্ভবং মৃক্তব্

পূৰ্ববং ফলেন প্ৰতিলোভিতাৰ 'কা প্ৰতিষ্ঠা' ইতি গুলাৰৰে আহ—তন্ত বৈ সালো বাদেব। বাং তি জিলাৰ্গ:দানাং ছামানামাখা।; নৈব প্ৰতিষ্ঠা। ভৱাহ—বাতি হি জিলাৰ্গালিব হি বসাং প্ৰাভাৱতঃ সন্ এব প্ৰাণ এতদ্ গানং সীহতে—সীভিভাবমাণভতে, ভসাং সাত্তঃ প্ৰতিষ্ঠাতি বৃত্তৰ। আনি প্ৰভিত্তঃ সীয়ত ইত্যুহ একে আন্তে আহং; ইহ প্ৰতিভিত্তাতি বৃত্তৰ। অনিশিভয়াদ্ একাৰণকত বিভাৱেৰ প্ৰতিষ্ঠান্তৰিজ্ঞানং কুৰ্যাৎ—বাগ্ৰা প্ৰতিষ্ঠা, আৱং বেভি ৪ ৩২৪ ২৭ ৪ টীকা। উণাভত অভিচাৰণবেংশি কৰবুণাদকত তব্ওণবং,তন্তাহ—ক্তং ক্ষেপ্ৰতি।
আনিশনাৰ উন্ন-শিলঃ-কঠ-গৰ্ভাঠ-নাদিকা ভাসুনি সৃহত্ব। কিবিভাঠোঁ স্থানানি বাস্ক্ইন্মান্তে, ভনাচ-- নাচি হীন্তি। পভাৰত্যাত—আল ইন্তি। অলপন্তৰ
তংগনিশাৰে বেবে। গৃহত্ব। একীয়পকে বৃভিনাহ—ইচ্ছেডি। কৰা ভবি প্ৰতিঠাভণত প্ৰাণত নিজানং কঠনামত আহ—আনিনিক্ত স্ক্ৰান্তি । ২০। ২০।

ভাস্মান্ত্রাকে: দেইকণ সামাধা প্রাণের প্রতিষ্ঠানামক অপর একটা ওপ বিধানের অন্ত বলিতেছেন:—বে লোক সেই এই সামের প্রতিষ্ঠা আমেন ইত্যাদি। প্রাণ বাহার উপরে প্রতিষ্ঠা (ডিচি) লাভ করে, তাহার নাম—প্রতিষ্ঠা, প্রতিষ্ঠা অর্থ —বাক্; অর্থাৎ বে লোক সামের সেই প্রতিষ্ঠা ওপ ভানেন, তিনি নিজেও প্রতিষ্ঠা লাভ করেন 'ঠাবাকে বে বে ভাবে উপাসনা করে, [উপাসক সেই সেই ভাবই প্রাপ্ত হয়'], এইছপ অপর প্রতি অনুসারে উপাসকের ঐরপ ওপনাত বৃক্তিসকতই বটে।

প্রের স্থার এবানেও গুণপ্রবংশ প্রশোভিত (উৎস্ক) এবং 'প্রতিষ্ঠা' তর আনিতে ইচ্ছুক ব্যক্তিকে উদ্বেশ্ব করিয়া বলিতেছেন—বাক্ই উচ্চ সাবের প্রতিষ্ঠা; বাক্ শবটী বর্ণোচ্চারণ-রান 'কহনামূলাদির নাব : তাবাই প্রতিষ্ঠান্তরণ । বেবেতু উক্ত প্রাণ কিহনামূল প্রত্তি শক্ষাচারণ-স্থানে আপ্রিচ বাকিয়াই গানরপে গীত হর, অর্থাৎ গীতিভাব প্রাপ্ত হর, সেই কেছুই বুলিতে হইবে বে, বাক্ই সাবের প্রতিষ্ঠা-স্থান অপর কেছ কেছ বলেন বে, অরে (অয়বর গৈছে) প্রতিষ্ঠিত হইরাই গীতিভাব প্রাপ্ত হইরা বাকে; এই ফারণে অরে প্রতিষ্ঠিত হওচাই বুক্তিসকত : [বাহা হউক,] এই অপর পক্ষও বধন অনিক্ষনীর, মর্থাৎ কোনপ্রকার প্রমাণবিক্ষম নর, তথন বিকর্মনপ্র প্রতিষ্ঠাওবের উপাসনা করিবে,—হর অর্থেই প্রতিষ্ঠা গুণকুত্রণে চিন্তা স্থিবে, না হর বাক্কেই প্রতিষ্ঠা-গুণবিশিষ্টরণে চিন্তা করিবে ৪০৬া২৭৪

অথাতঃ প্রমানানামেরাস্যারোহঃ, স বৈ ধ্রু প্রস্তোতা সাম প্রস্তোতি, স্যত্র প্রস্তুগাৎ তদেতানি জ্বপেৎ।

"অগতে। মা দদগময়, তমদে। মা জ্যোতির্গময়,

মৃত্যোশামৃতং গময়েতি।

দ বৰাহাদতো মা দলাময়েতি, মৃত্যুৰ্কা অসৎ, সৰমৃতং মৃত্যোশ্মাহমুতং গময়ামৃতং মা কুৰ্কিডোবৈতলাই; তমদো মা শ্বোভির্মনেতি, মুসুর্টের্ব ভ্রেনা প্রোভিরম্ভং মুভ্যোশ্মাহ্মতং গমরোভ, গমরাম্ভং মা কুর্বিভোবৈতদাহ; মুভ্যোশ্মাহ্মতং গমরোভ, লাজ ভিরোহিত মিবান্তি। অধ বানীতরাণি স্থোত্রাণি, তেবাস্থানেই মাজনাগারেৎ, তত্মাত্ন তেরু বরং রুগত বং কামং কাময়েত
ভূপ সংগ্র এবস্থিত্দগা শক্ষানে বা যজমানায় বা যং কামং কাময়তে
ভূমাগায়তি, তকৈতলোকজিদেব ন হৈবালোক তায়া আশান্তি,
য এবনেতৎ সাম বেদঃ ৩২॥২৮॥

ইতি প্রথমাধ্যায়ন্ত তৃতীয়ং ব্রাহ্মণম্॥ ১॥ ৩॥

मृष्ट्राः (वर्षणरक्ष्कृत्व वाकावित्क कान-कर्षकै), देव , अव) क्षत्र , (क्षत्रवक्षक-कार ; क्षा क्षत्रव्य (वर्षणिवाद्यक वाद्योद कान-कर्षकि 5) तर, (तहाव्यक्ष्क्षर); [क्ष्कक] मा (बार) मृत्काः (वाकाविककाम-कर्षक्षके) क्षत्रव्य (वाकावे ,—मा (बार) क्षत्रव्य कृष्ट हैं दिव्यव्य (वाकावे) क्षत्रव्य (वाकावे) मृष्ट्राः देव (अव) क्षत्रः (क्षत्रव्य ,) क्षत्रव्य (क्षत्रव्य क्षत्रव्य) , (क्षत्रव्य) मृष्ट्राः (क्षत्रव्य) क्षत्रव्य (क्षत्रव्य) मृष्ट्राः (क्षत्रव्य) मृष्ट्राः (क्षत्रव्यक्ष) मृष्ट्राः (क्षत्रव्यक्यक्ष) मृष्ट्राः (क्षत्रव्यक्ष) मृष्ट्राः (क्षत्रव्यक्ष) मृष् मक्तर कानः) नमत् (वानतं),—मान् चतुरुर कृत्र देखान अस्य (वाक्तरः) चार । मृत्याः (केस्र नक्तार) मां (मार) चतुरुर (चमत्रन्थारः) नमत् (वानतं)—देखाव (क्रिकांटर्यन (चन्नहार्यम्—नानात्याताः) [किक्-मृति] माहि, [चत्या देसस्य नानावास्य] ।

শব (বনবানোনানানার্য) বানি ইতরাণি (শবনিষ্টানি) ভোঞাণি
[সভি], তেরু অল্লাড: (ভোঞা) বান্ধনে (শান্ধন উপকারার্য) আলারেৎ
(প্রাণবিষ্ উপলাতা প্রাণবদেব উদ্পানং কার্যাৎ): [বন্ধাৎ বেতাঃ] সঃ এবঃ
এবংবিষ্ উপলাতা আন্ধনে বা (আন্ধার্থ বা) বনবানার বা বং কানং কার্যুত
(বং কলং সাধান্ত্যু ইচ্ছতি), তং কার্যু আলার্যতি (স্বাকু গান্নতি), তন্ধাৎ
(বেতাঃ) তেরু (বনবানসম্বভিত্ন ভোত্রেরু) | প্রবুলামানেরু] উ [বলবানঃ]
বং কানং (কলং) কার্যুত (শতিল্যতি), তং বরং রুণীত (প্রার্থিরৎ)।
বং (বং কলি ৎ) এতং সার্য প্রাণং) এবং (বাবান্তেন প্রকারেণ) বেদ
(বিজানাতি), [তত্তৈতং কল্মুচাতে—] তৎ (বাবান্তন) এতৎ প্রাণান্ধনিং) বং লোকভিৎ (প্রাণান্ধলোকসাধনং) এব (নিশ্বরে), নৈব
ব আলোক্যতালাঃ (লোকপ্রাপ্তাভাবক্ত) আশা (আল্বা) অতি; (সর্ম্বাণি
লোকপ্রাপ্তিসাধন্যেইবতৎ প্রাণান্ধবিজ্ঞানবিত্যার্থঃ) ৪ ৬৭ ৪ ২৮ ৪

আ,লাকুবাদে। সম্প্রতি"অথাতঃ" ইত্যাদি শ্রুতিতে প্রাণবিজ্ঞান-সম্পন্ন ব্যক্তির অপক্রিয়া বিহিত হইতেছে—

অতঃপর প্রমানসংজ্ঞক তিন্টা মন্ত্রের অভ্যারোছ (দেবৰ প্রাপক
কপকর্মা) কবিত গইতেছে। সেই প্রস্তোভা (প্রস্তারনামক অংশবিশেষের পাঠক) সাম প্রস্তুত করিয়া থাকেন অর্থাৎ প্রস্তার নামক
সামাংশ পাঠ করিয়া থাকেন; তিনি যখন প্রস্তোব পাঠ করিবেন, তখন
এই [ভিন্টা মন্ত্র] কপ করিবেন,—'অসতঃ মা সং গময়', 'ভ্রমসঃ মা
ক্যোভিঃ গময়', 'মৃত্যোঃ মা অমৃতং গময়' ইভি। প্রশুভি নিজেই
এই মন্ত্রার্থ বিলয়া দিতেছেন—] 'অসতো মা সং গময়' এই মন্ত্রটা বাছা
বিলয়াছেন, ভাছাতে এইরূপ অর্থ প্রকাশ করিয়াছেন—অসং অর্থ—
মৃত্যু; আর 'সং ' অর্থ—অমৃত; স্থিতরাং, ইহার অর্থ হইভেছে
বে,] আমাকে মৃত্যু হইতে অমৃতে লইয়া বাও, অর্থাৎ আমাকে অমৃত

(অবর) কর। 'ভনলো বা জ্যোতিঃ গনন্ধ' এই মান্তে এইরূপ অর্থ প্রকাশ করিয়াছেন—'ভনঃ' অর্থ—অজ্ঞানাত্মক মৃত্যু, আর 'জ্যোতিঃ' অর্থ—প্রকাশাত্মক জ্ঞান; [মৃত্যাং অর্থ হইতেছে বে, ; আমাকে অজ্ঞানাত্মক মৃত্যু হইতে জ্যোতিরূপ অমৃতে লইয়া বাও, অর্থাৎ আমাকে অমৃত কর। আর, 'মৃত্যোঃ মা অমৃতং গময়' এই মান্তে বাহা বলা হটয়াছে, ভাহার কোন অংশ্ট ভিরোহিত—অস্পান্ত নাই, [মৃত্যাং, ইহার অর্থ প্রকাশ করা শ্রুতির আবশ্যক হল্ন নাই; ইহার অর্থ হইতেছে—মৃত্যু হইতে সামাকে অমৃতে লইয়া বাও।

অভংশর আর বে (ছয়টী) স্নোত্র অবশিক্ট রহিল, তলুধো অয়াদা (অয়ভোগ বাহার ফল, সেই) স্থাত্র প্রাণের প্রায় প্রস্থোভাও) আপনার ভক্ত গান করিবেন। বেভেডু, এবংবিধ জ্ঞানসম্পন্ন উল্গাভা আপনার ভক্ত কিংবা ষভমানের জক্ত যে ফল বামনা করেন, ভাহাই গান করেন, অর্থাৎ গানের ছারা সেই সেই ফল সম্পাদন করেন, সেই হেতুই অবশিক্ট স্থোত্র পাঠের সময় হজমান যে কোনও ফল কামনা বরেন, ভাষিষয়েই বর প্রার্থনা করিবেন। যে বাজি এই সামসংজ্ঞাক প্রাণকে বথোক্ত প্রকারে অবগাভ হন, ভিনি নিশ্চাই এই প্রাণান্ম-লোক (প্রাণান্মভাব) ভব কবেন, কখনই ভাহার অলোকা হার অর্থাৎ প্রাণান্মভাবপ্রান্থির অভাবাশের থাকে না: (ভিনি নিজেই যথন প্রাণ-স্বরূপ ইইয়া যান, ভখন ভাহার ভ আর ক্ষপ্রান্থির সম্ভাব- ইউভেই পারে না । ৩৭ ৪২৮ ৪

[ইতি প্রথমাধায়ে তৃতীয় ব্রাক্ষণ ব্যাখ্যা ॥১॥ গা

স্থাক্তর ভাষ্য ম। এবং প্রাণ্বিজ্ঞানবড়ো জপকর্ম বিবিৎসতে।
বিজ্ঞানবড়ো জপকর্পাধিকার:, তবিজ্ঞানমূজ্য। অধানত্তম্য, বস্মাজেবং
বিছ্যা প্রস্থামানং ক্ষেতাবার অভ্যাবোহকগং জপকর্ম, অভঃ ওস্থাৎ তু তবিবীরতে ইব। ভক্ত চ উদ্দীগ্দম্বন্ধ দর্মত্ত প্রাথো প্রমানানামিতি বচনাৎ,
প্রমানেষ্ ত্রিম্পি কর্মতাগ্রাং প্রাথারাং পুন: কালসভাচং করোভি--দ বৈ বন্ধভোতা সাম প্রভৌতি। স প্রভোতা, যত্র যদিন্ কালে সাম
প্রস্থাৎ প্রারভেত, তামিন্ কালে এভানি অপেৎ। অস্ত চ জপকর্মণ

जावा। 'जजारहादः' देखि। जाजित्र्याम जारहादि जरमम वनकर्तन। अव विश् रमयकायाचामम्—देकाजारस्यः। अकामोकि यहरहमः औति मजूषि। विजोहानिर्द्यमम् दायरगारमहत्त्वाक यथागठिक अव यदः आराज्याः, म याहः। याजवामर जनकर्ताः >

তথা, "তমনো বা জ্যোতির্গন্ধ"ইতে। সৃত্যুকৈ তথা, সকং বি জ্ঞানৰ্
আবরণায়কভাব তথা, তদেব চ বরণতেত্যাব সৃত্যা। জ্যোতিঃ অনৃতং
প্রোক্তাবপটাতং দৈবং প্রপন্। প্রকাশায়কভাবং জ্যোতিঃ, তদেবানৃতব্
অবিনাশার্কভাব; ওসাব তমনে: মা জ্যোতির্গন্তি। পুরু বব মৃত্যোগ্রাহর্তং
প্রয়েত্যাদি; অমৃতং মা কৃংলভোবৈতদাহ—দৈবং প্রাঞ্গিতাং ক্লতাবমাপাদর্ভ্যাহা। ৩

পূর্বো মগ্রেহ্সাধনকভাবাৎ সাধনভাবৰাপাধরেতি; বিতীয়ন্ত সাধৰ-ভাবাদণি অঞানরপাৎ পাধাভাবমাপাদরোত। মৃত্যোক্ষাহ্মতং সময়েতি পূক্ষোরের মন্ত্রায়ে সমুজিভোহর্বা ভূতীয়েন মল্লেণাচাতে, ইাত প্রাস্কার্থ-তৈব। নাত্র ভূতীয়ে মল্লে ভিরোহিত্য অন্তর্গির অর্থরপং পূর্কায়োরিব মন্ত্রারাত, ব্যাক্রত এবার্থা। ৪

ৰাজমানমুলানং কৃষ্ণ প্ৰথানেবু তিবু অধ অনস্তৱং ৰানীভৱাৰি লিষ্টা নি ভোত্ৰানি, ভেষায়নে অগ্নাভমাপাথেৎ—প্ৰাণবিত্বলাভ। প্ৰাণ্ড্ডঃ প্ৰাণবিত্বলাভ। প্ৰাণ্ড্ডঃ প্ৰাণবিত্ব। বৃদ্ধাং সূত্ৰ উপলাতা এবং প্ৰাণং ৰংগান্তং বৈত্তি, আঃ প্ৰাণবিত্বভাত কামং সাধায়ত্ব সম্বন্ধঃ ভেষাস্বস্থানতেবু ভোত্ৰেবু প্ৰভাষানেৰু ব্যঃবৃদ্ধীত; বং কামং কামপ্ৰত, ভং কঃমং ব্যঃবৃদ্ধীত প্ৰাৰ্থিছে। বৃদ্ধাং সূত্ৰ বিবাহ কামপ্ৰতি প্ৰাণ্ডিল আগ্ৰানে বা বৃদ্ধানায় বা বং কামং কামপ্ৰতে ইক্ছেল্প্ৰাতা, ভ্যাপায়তি আগানেন সাধ্যতি। ৫

करेखार ? व धररवर नाम शागर वर्षाकर निर्वादिण-विवासर रवष —

'व्यवस्थि त्यान विवासितवानरेका न्येतः भाषाचिः व्यवस्थि विकाः, नामाणि

गक्कर र बलाञ्चत्रवान् व्यक्षामा व्यवस्थ गाणा विकर्षत्रवाद । विकाः, नामाणि

व्यक्षत्र भाषा विवासित्र व्यक्षत्र । असं वृद्धत् र मनाञ्चता । व्यक्षत्र । व्यक

ইতি প্ৰবৰ্ণগাৰে তৃতীব্ৰাশ্ব-ভাৰাম্ । ১। ৩॥

টীকা। অবাতঃ প্ৰধানানান্ ইথাবিবাকাব্যভারত —এব্যিতি। তথাবংবং ব্যাহটে—অন্ত্রান্ত্রত ইতি। অভংশবংবিবাক-অন্যান্ত্রতি। ইংবিত থাববিছুতিং। করা তহি অপকর্ম কর্ত্তবং, চত্রার—উল্লেডি ট উল্পাবেনাচারার, বা ম উল্পান্তেতি ভ অভরণাহ্ন্দীবেন সম্বভাব অপভ সর্ব্যাহ্রাহ্যার গোলে প্রার্থা প্রধানানার নামেরে বছনাব কালনিংবলিভিনিভার্থং। দ বৈ ববিভ্যাবিবাকাভাবের্থানে—প্রমান্ত্রাহ্যাকর ক্রাহ্যাক্রাহ্যাক্রাহ্যাকর ক্রাহ্যাক্রাহ্যাক্রাহ্যাকর ক্রাহ্যাহ্যাক্রাহ্যাক্রাহ্যাক্রাহ্যাহ্যাহ

উলৈঃ গানা, উপাংও বৰ্ষা' ইডি। অকৃতে তু বিভীয়ানিৰ্দেশাক্ষণকৰ্মান্তং এজানতে, মান্তৰ পৰো ম এডিভাঠীভাবঃ। কেন ভবি পৰেণ এজানো মন্তাগানিতি কেং, ওলাক্তল আক্ষানেতি। ভবতু শাভণবেন খবেণ ন্যাপা: এলোগভবাপি ভিনাতিকাং, কিং বা যাক্ষানা অপভাবতি বীভায়ানাহ—যাক্ষমান্যাতিত। >

ব্যাচিখানিভবভূষাং শ্বশ্নণ বৰ্ণন্নভি—প্ৰক্ৰানীভি। ব্যাংশবেৰ প্ৰাৰ্থে বাক্যাৰ্থভংকনং চেটি অনুসূচকে। ২

লৌকিকং ভবো বাংগর্বনতি—জর্জ্বং হ্রীন্টে। পূর্ব্ধোরূপণেন ব্যাবাচিং ভবো পৃষ্ঠে। বৈপদ্ধীয়ো বেলুবার—প্রক্রাপাত্মকেজালিতি। জানং ভেন নাবানিভি বাবং। পলাবোভিননাঞ্জানিভিননং। উভয়বাকাভাং বাকার্যবিংকনং চেভি বহং ক্রেণোল্লভে, ইভাকি—পূর্ব্ধান্তিভিত্তি। ক্রমনাক্যান্যর পূর্বানাবিশের বর্ণক্রভি—জ্যুক্তমিন্তি। ১

প্রথম্বিতীয়মপ্ররোম্বর্তভোশভীতে: পুনজকিমাশভা অবাস্থয়েকবাং—পূর্ব্বো শ্রন্ত ইন্তি। তথাপি ভৃতীয়ে মন্ত্রে পুনজকিলমম্বা, ইত্যাশভাহে—পূর্ব্বায়েন্তি।

বৃত্তবন্তোভননা কাৰন হাৰ্য ব্যাকটে—আক্ষমান্ত্ৰিক্তি। বৰা প্ৰাণন্তিব প্ৰনাৰেৰু নাবান্তবনানান কৰা নিষ্টেই ভোজেৰু বাৰ্থনানানকতনাং, কৰেল্যান—প্ৰাণন্তিক্তি। ভিনিন্তি। ভিনিন্তি। তালানিক্তি। কৰিল্যানিক্তি। কৰিল্যানানিক্তি। কৰিল্যানানিক্তানিক্তি। কৰিল্যানানিক্তানিক্তি। কৰিল্যানিক্তা

বৃত্তং কার্বনতি—এবং তাবাদেতি। তর কর্মবৃত্তিতে জানে বেবলার্ডে প্রদান সভবো না'ও বিবং সংক্রতার্জনিকর্মবার বার্তাবিকর্মনার বার্তাবিকর বিবাহ করার করার বিবাহ নির্বাহ বার্তাবিকর বার্তাবিকর বিবাহ বার্তাবিকর বার্তাবি

কর্মনৃতি চাহ্পাসনার কেবলাতে প্রাণারকার কলনুকার তার সৃষ্টিভাহ্পাতৃর্ভানত বা কলা কেবলাতোপাসনার ভাষারভারতারত বা কভাগিতি বিজ্ঞাসবারঃ শবকে—ক্ষেত্রভারত। জানকর্মণারভারত সমভাবাহ্ভগোরপি বচনার কলাবিত্তি। আর্থাভারতিবাহর ভূ কেবলজানত লোকজন্যকৃত্বিভাতিপ্রভাতিপ্রভাতি একবেত প্রকৃতিবাহি কর্মানিকার পূর্বোকর সর্বাধিকার বাগাবিতা। বিশেষ কর্মানিকার প্রাণারভারতার বাগাবিতা। বিশেষ কর্মানিকার প্রকৃতি ইন্দ্রিকারতার বাগাবিতা বিশেষ কর্মানিকার প্রকৃতি ক্রিকার্মানিকার বাগাবিতা বিশেষ কর্মানিকার প্রকৃতি ক্রিকার্মানিকার বাগাবিতার বা

वृद्धावगादकाशावव्य ।

व्यक्ति गांगारो पांगार-वाद्याकि। श्रेणांदर वर्गाः वान्य प्रत्यन्त्रवाद - व्यक्ति । मांगादर वर्गाः वान्य पांगादर प्रति । वान्य पांगादर प्रति वान्य पांगादर प्रति वान्य पांगादर प्रति । विश्व पांगादर प्रति वान्य पांगादर प्रति वान्य पांगादर प्रति । वाद्य प्रति वान्य व

हैकि अथवाशासना कुक्रीतर आधानम् १० । ।।।

कान्यान्यान् । वह अपन श्राक अनाइ आप-विकानम्मा शक्तिय वक वनवर्ष विवासित देखा अविश्वति । वृष्टिवहक विकासनामी ব্যক্তির অপক্রিয়ার অধিকার, তাহা পৃথেষ্ট কবিত হইয়াছে: বেছেচু বিষৎ-पुरुषाश्क्रीक धरे वनक्रियात कम स्टेट्टर्ड-(एवक रव व्यक्तारवाद वर्षार रचकान शांखि; तारे रक्षु कछानत, अनात्म छाशाहे निविष्ठ वहेरछह । डेक्नोच-व्यक्तप्र विक्छ केल्मीरवर नर्सक्र मरभार नष्ट्रायमा क्रिन : क्रेक्क विरम्य कविता 'नवयानान'य्' दना व्हेताहः, ভाषात भत्, 'नवयान' नाम ('नवनामामाम्'; बहर्रिम बाकात कि है 'नवनाम' क्वाद्वत क्र क्राक्कात अनक्ति हिन : बहे कड़ "म देव दन् अरहाछ। माम ११(१)छि" वनिवा भूनफ छाहात कान-महर्कात करिएठाक्षन,—(महे अरखाठा । शखावनामक मामारण लाठेनही -विचित्र विद्यात) कि « १ महे भवपके अहे एक कि यह सन करियान । अहे सन-क्षित्रात (बर्म्य मात्र - 'ब आरढाः'; [हेबात शोनिकार्य अहेत्रम-) खान्यिर अरे क्लिक्स बाता त्ववलात बारताइन करतन विनया हैदाय नाव 'এতানি' এই বছবচন থাকাম বছুর মন্ত্র তিন্টি বুলিতে हरेरव : 'अछामि' गरन विठांत्रा निकास वाकात अवः खालाजारमञ्ज बरना भक्रिक प्रकात वर्षाक्षक यदाकृषात्वते हेशांत श्राहाण कतिएक व्हेट्व, किन्न मह-ভাগোভ प्राञ्चनारव প্রারণ করিতে इहेर ना (• `। এই स्निक्शिष्ठि वक्षवारमञ्ज कर्खना (व वरकत नरह)। >

(•) ভাৎপৰ্ব্য বেদের সাধারণতঃ চুইটি ভাগ—বন্ধ ও ত্রান্ধণ। আগতাৰ বলিয়াছেন
—"বন্ধ-আন্ধণনাৰে বনানবেরব্", অর্থাং বন্ধ ও ত্রান্ধণভাগ, উভরের সন্মিনিভ সার 'বেগ'।
বন্ধভাবের সূচ ভাৎপর্ব্য প্রকাশ করে বলিয়া 'ত্রান্ধণ' নাম প্রথম চুইয়াছে। বন্ধভাগে
ক্রান্ধনার ক্রিয়াবিধি ও ভূপবাের ক্রান্ধার্ভা আতে, আর ত্রান্ধণভাগে প্রধানতঃ ভাল ও
উভিহালাধি বিষয় সন্নিবেশিভ আছে। আলোচা বুহলারণ্ডোপনিবস্কৃতিও বন্ধুর্বোলে

क्षपंत्रांस्थानाः--पृथीताः सामान्यः।



(गर्द सक् किन्छ अहै—"जगण्ड या गृद ग्रवत," "ज्युनः या त्याणिः
ग्रवत," "गृरणाः ता प्रवृष्ट- ग्रवत," हैणि। यहक्तिक पर्व जिर्धारिक
(जग्रहे) चारक; अहे जण, अहे वहज्ञाद त्व पर्व अिन्गांविक हरेगारक, आपन
(अहे अण्डि) नित्यहै त्रहे ग्रवहत पर्व अणाम कित्रा शिराण्ड्य । त्रहे पर्व किग्रवात, जाश विनाण्डक,—'प्रगृकः या ग्रद ग्रवत हैणि, मृण्डे प्रग्रद; अवात
'मृण्डा' गर्द्य पाणांविक ज्ञान क कर्य प्रक्रिक्ट हहेगारक, प्रणाण प्रवश्य त्वतः
गावा विना हैका प्रग्रद; चात्र गर हहेत्यक प्रमृत्व; गार्खाणिक ज्ञान
कर्य मृत्रु- ज्य निवादत्य त्रक् विनय्ना, ज्ञाना गर- ग्रवातः। प्रकल्व [हेशाय
पर्व हहेत्यक (त.) प्रग्रद हहेत्व—प्रग्रद कर्य क्र ज्ञान हहेत्व प्राचात्म गरक
—पाद्याच्याते क्य क्र ज्ञात गहेशा वाक, प्रवीद (प्रवण्डा नार्वत क्र मान्यक् प्राचान गान करातः। वारकात ज्ञारमार्थ विनाल्यक —प्राचान करातः।

সেইলপ, 'ভৰসং বা ক্যোভিঃ পৰস' এই ব্যেরও অর্থ বলিডেছেন—'ভষঃ' অর্থ—সৃত্যু; কেন না, অঞানবাত্রেই বোধশক্তির আবরক, আবরক বলিয়াই ভবঃ-শলবাত্য; ভাষাই আবার বৃত্যুর হেতৃত্ব বলিয়া বৃত্যুযরপ; আর 'জ্যোভিঃ' অর্থ—অসুং, এর্থাৎ ভমের বিপরীভ বৈব ত্রপ;
ভান ব্ভাবভঃই প্রকাশান্তক, এই কারণে ভ্যোভিঃ-শনবাত্য; ভাষাই আবার

কাণ্যাবীর গভগবরাক্ষণের অন্তর্গত : ইচা চাডা মাধ্যনিধী শাবাতেও অনুত্রণ উপনিবস্থাতে । উভবের মধ্যে বিষয়গড় অনেক সাহ্য থাকিলেও পাঠগত কিকিৎ বৈষয় আছে। বন্ধুর্বোবে হলোচ্ছ্রালী পালনিভাস কিংবা অক্ষর-সংখ্যা নির্কিট্ট নাই : মুডরাং সন্দেহ হইতে পারে বে, এবানে বন্ধু কল্পট ! কেই সন্দেহ ভঙ্গনার্থ ভাষাকার সনিবাছের—'জীপি বঞ্গুরি' বন্ধুর্বল্প এবানে তিনটি : কনও নতে বেলিও নতে । পুনক্ষ আগবা হইন বে, এই ভিন্নটিই বন্ধু মন্ত্র, তবন বৈধাবিক-এইে বন্ধুন্মপান্ত বে নম্ভ বন্ধুন্মিলা কবিত আছে, বেষন —'উট্টে' বচা ক্রিয়তে, উট্টেং নারা, উপাংও বন্ধুন্য' অর্থাৎ ওক্ ও নাম্বন্ধ উট্টেংখনে পাঠ কবিবে, আর উপাংও খনে বন্ধুন্মিল পাঠ কবিবে । উপাংও অর্থ—বৃত্ব অন, বাং। কেবল পাঠকের নাত্র করিব্দিন্ত হয়, ইভ্যাহি ; এবানে সে নম্ভ বন্ধ প্রহণ করিতে হইবে কি না, এই আগবা নিমুন্তির অন্ত ভাষাকার বলিলেন—এবানে নত্রোক্ত অন্ত বন্ধুন্ম করিতে হইবে নাত্র । বিশেষতঃ 'উট্টেং বচা' ইন্যাহি ক্রেন্তি অন্ত্রনার বার, বেধানে অন্তর্গক অভিনেত আন্তর্গক বানে, বেধানে অন্তর্গক অভিনেত আন্তর্গক বানে, বেধানে অন্তর্গক অভিনেত বান্ধে, বিশ্বনিক বান্ধে, বিশ্বনিক বান্ধে, বিশ্বনিক বান্ধে, বিশ্বনিক বান্ধের স্বান্ধির অভিনেত বান্ধে, বিশ্বনিক বান্ধে, বিশ্বনিক অভিনেত স্বান্ধির স্বান্ধ্যর স্বান্ধির স্বান্ধির স্বান্ধির স্বান্ধ্য স্বান

व्यक्तिनायक रनिवा वयुक्त (नहे क्या वहेरकवाबादक (कार्किक बहेरा राज । 'दरकाः या पत्रकः वयद्व' देखादित पर्यक शुर्वनर, पर्यार पात्रारम पत्रक क्य,--विश बीचांगंडा (श्रवांगंडियद्वर) कन चांत्रारक नाठ कहात. वेवांडे के बाब वर्गा ववेबारक । ०

वेशात गरशा अवस्थाक वशकित वर्ष इदेरकरक कहे यू माध्य-हीम वर्षण बरेरक चांबारक मावबावका आंद्र कहात. चात्र विकोश महित च॰ वहेटल्ड धरे (य. चळानाचर नावनावड़ा स्टेट्ड चाराट क्री इंड नावावड़ा बाद क्तां। क्षरांक बहरतह वाश वर्ष, 'मृत्शाः वा व्यवः शवर' वह कुशेत्र ৰত্ৰে আবাৰ ভাৰাই সৰ্জিত বা সম্বিদিঃভাবে অভিহিত হইৱাছে; পুভৱাং देशाह वर्ष अनिष्ठ हे न्माईहे) व्याद्य । शृत्सीक महब्दाहर कार এहे छछीत्र यस क्षिणां कि इयात जिल्लांकर वर्षार मुकादिक माहे, बवाक्षक वर्ष है हेबाब वर्ष ; कारक के क्वांत कावा। करिका (मध्या आवश्रक मरन कटबन मारे]। ह

चकः नन, बार्यवर [चक्कव] शानाचकावानक हेन्नाका कि शार्वक कांत्र भववानकार वक्षवानम्बद्धी উल्लाम मन्नावन कविवाद भव कविन्द्रे द्य मन्द्र (शक्त चारह, छाहार्छ काननार कर चहार नाम करिएका। (बारकु तमें अहे केननांछ। बारबाक क्षांत्र शावकत बारमम, तमहे (बक् त्यार्वाद छात्र में माने काम (कन ' नाथन कतिर्क नमर्थ इस : माक्र अप (व नवड़ (नहें नवड़ (डाखनार्ठ चावड़ वह, (नहें नवड़ वक्वान वह मार्थमा कवित्व।--(म त्व कन कामना करत, (महं कन विव्यवहें वह शार्वना कतिरा 'ठवार' वक वाकात छात्रात वाळा 'बवार अवस्वित देखांछा' . अहेडल भव (बाक्स) कविएक वहेरवः (बाह्य अवर्शवम् छेन्त्राका मिरकत बंबरे रहेक, चार रक्ष्यात्मत कहते रहेक. (व क्रम काश्मा कर्तम-देखा करवन. छाडाहे जानाम करवन--वर्गाविध नाम चाता नल्यामम करवम, ('८म्डे (रक्' यक्ष्याम यत्र क्षार्यमा कतिरत]। ब

बरेक्करण क काम क कर्यात बाता व्यागायकाववाशित कवा वना वहेन : এ বিব্য়ে কোন প্রকার আপভার সভাবনা নাই : অভএব এবন আপভার বিব্যু व्हेरलाह त् जन्नारंत्र कर्यत्र जनात्त्र जनार जनाव वहेरलक आनावकार व्याखि वह कि ना ? तिरे चानवा चनमहमार्थ रनिष्ठद्वम-- "छर् र वछात्राक-किर्दर" वेकि,(नरे अरे आनामान्यन ना आनविकान नकानि-क्यंतिमुक हरेराक

নিশ্বর লোকবিৎ—অবত ই লভীই লোকপ্রান্তির সাধক হয়; নিশ্বরই অলোক্যাতার অন্ত—অভীইলোকপ্রান্তির অবোদ্যাতার পক্ষে কবনও ও আনা - প্রার্থনা নাই। গাবছ লোক কবনই অরণাছ লোকের ভার প্রার্থনা করিতে পারে না বে, আমি কবে প্রায় প্রথা হইব ; কেন না, অসমিহিত বা অপ্রাপ্ত আমাধান বছ বিষয়েই আদংসা (প্রাপ্তির ইছা) হইরা বাকে, কিছ নিতা প্রোপ্ত বীর আছাতে ত আর সেরপ আবংস্য হইতে পারে না। অতথ্যব আহি কবনও প্রাণান্থতার না পাইতে পারি এরপ সভাবনা ভাষার হইতে পারে না। ৬

উक्त कमश्राधि काशांत रह ? ना. *(व वाक्ति वावाक विद्याविक* এট সামনাব**ু প্রাণকে জানে,—আমি বইতেছি—ই** জিববিররে আর্লজ-রপ আত্মর পাপ বারা অধর্ণীয় - বিশুভ; এবং বাক প্রভৃতি পাঁচটি विकाश मानाव मालाव गाकिनावे मन्नामामकानाम अवर मालाविक বা অপরিভঙ্কানভাত ইলির্প্রাত্ বিবরে আস্ক্রিকনিত আলুরপাণ-বিৰুক্ত ব্যু, অধিকত্ব সর্বাভূতে বছাপ্রিত অগ্নাভের ভোগ্য বন্ধয় উপভোকেত সমর্থ হয়; আভিরস্থ-নিবতন আলিই সর্বাভূতের আত্মাত্তরণ,—বস্থু, वकः, नाम - डेक्नीबायक वारकावश्च चाविहे चाचा: कावन. के नवकरे चानाव मरीन अवः चानाव नावा निर्मारिक स्व: नैकिकानशाक्ष गानवक्षण चानाव वास वन - चनवाव वहेटटटक चन्नतार्थन, क्रम्टणकाक चचन्छत्र चर्नार महिन्दे उपन क्रेट्ट्राइ तोवर्गा—वर्ग-त्मोंबेन, छात्रां चढ-त्रोक्श हे वर्षे ; श्रीष शवशाय बाबाद अविशे वा बाधद्रशाय व्हेरकरू-वर्ध-छात् अष्ट्रि दान ; बेद्रवंश्वनन्त्र चावि चत्र्य-निर्दे चाक्र्छिविदीव, এবং সর্ববাণী:বলিয়া, পৃত্তিকাশনীরেও সম্পূর্ণভ্রপে অবস্থিত আছি ; বতকাল আপনাতে প্ৰাৰায়ভাৰ ৰভিবাক্ত না হয়, ভভকান ৰে আৰে—উপা-नमा करत : [छाहात अहेब्रभ कन गांछ वत्र] 8 09 8 २৮ 8

रेजि श्रवबाशास छुठोत्र बायरनत चाराष्ट्रवार । > । ७ ।

उष्ट्रदेश खानानम्।

শাংসিবেদম গ্র লাদীং পুরুষবিধঃ; দোহ্যুবীক্ষা নাল্ডদান্ত্র-নোহ পশ্রং; দোহহমস্মাত্যগ্রে ব্যাহরং, ততোহহংনামাভবং, ভস্মাদপোত্রহামজিতোহহময়মিত্যেবাঞা উজ্জাধান্তরাম প্রজ্ঞাতে— বদস্য ভবতি, স বং পৃংক্ষাহ্যাং সর্কান্তাং সর্কান্ পাপুন উষং, ভস্মাং পুরুষঃ, ভবতি হ বৈ স তং বোহস্মাং পৃর্কো বৃষ্ণ্যতি, য এবং বেদ । ০৮ । ১।

ज्ञाकाय:--मध्य (नवीदावरवादनाय: काक्) हेवः (मञ्जूष्यांतर चेत्रोदकारुः) पूक्रपांत्रशः (पूक्रपाकातः रखनशावितन्त्रशः विवाहेयव्रानः) वाचा (वकार्याक:- व्यवस्त्रीयो) अव ् वेकत्यायरकारक) चामीर, (मान्नर महोदा-खर्गब्हाचे:) । मः (अध्यक्षः अभागितः) चष्ट्रोकः (मर्गम चारमातः,चायुनः वक्षभर विक्रिक्त) , आसमर) ,वजार) सकर । गृदगकुछर वस्तवदर) म सभक्तर (म बृहेबाम्, चाचानस्य (क वनः बृहेदाम् 🗀 मः 🛮 व्यक्षां निष्ठः) चात्रः (श्रवसः) 'बर्ब् बर्बि' (नर्बाचा बर्व व) हें छ नाहतः " केशनाम्) ; छछः (बर्रः-न(बाळाउनारक्य) 'बरः'नामा । बरम् राठ नाम यत्र, मः ठवाकुठः) बण्यरः, ভন্তাং (হেডা: এতই অশি (ইবানীমাণ) আমন্ত্ৰিত: (কন্তৰ্ণ ইতি পৃষ্ট: সৰ্ **चारत 'बहब् बहब्' हे** छि ४ दें के छुन्। (कर्षाप्रका), चर्च ' बनक्रतः) चन्नर नाव ব্ৰভে (কৰয়তি),—ৰং (নাৰ) অন্ত া আৰহিতক ৷ তৰতি । কুত্ৰবেতৰ্ व्यक्ति—वक्रवरु-वक्रु-अवृति)। वर (वजार) मः (अवानिष्ठः) नूनीः (खबरबार नवः नव्) नकाव् नानामः खेवर , शाक्रम-कामकर्षमः काव्यवानम वद्याम्), छत्यार भूक्यः (भूक्त् खेवर देखि वृारभवा। 'भूक्र्य'भववाताः चल्यर) । [इंशामी: विकासमञ्जूठारक---] व अवर (वरवाक श्रकात्रव्) त्वव (विकासीक), मः [चिन],—वः (चनः) चनार (विद्वः) पूर्वः (अववः चअनगः) बृङ्विछ (जविजूबिक्छि), छर (कम') र देव (बिक्टरब्र) अविछ (बर्बाछ), [अङक्रव्यम-कांग्री चन्नत्वर विवचलेलि कांवः । ०৮ । > ।

মূলান্দ্রাদে। এই শরীরসমূহ অগ্রে (বধন অন্ত কোনও শরীর প্রায়ক্ত হয় নাই, ভখন) পুরুষাকৃতিবিশিক্ত (হস্তপদাদিষ্ক্ত)

1

আত্মা—বিরাট প্রজাগতিই একসাত্র ছিলেন; তিনি বিশেষ আলোচনা করিষার পর—জাঁহার অভিরিক্ত আর কিছু দেখিতে পাইলেন না। তিনিই অগ্রে 'অহম্ অন্মি' অর্থাৎ আমি হইডেছি সকলের আত্মা. এইরাপ উল্জিকরিরাছিলেন; সেই হেতুই তিনি 'অহম্' নামে পরিচিত্ত হইলেন। সেই কারপেই, এখনও 'তুমি কে ?' জিজ্ঞালা করিলে, জিজ্ঞালিত ব্যক্তি প্রথমে 'এই আমি' বলে; পরে, ভাহার বাহা নাম, সেই নাম প্রকাশ করিয়া থাকে। বেহেতু তিনি এই সমস্তের পূর্বের সমস্ত পাপ দল্প করিয়াছিলেন, সেই হেতুই 'পুরুষ'-পদবাচা হইরাছেন। অপরও বে লোক এইপ্রকার জ্ঞান লাভ করেন, তিনিও, বে ব্যক্তি জনপেক্ষা বড় হইডেই বিছার কল । ৪ ০৮ ৪ ১ ৪

লপা ক্রেক্স ভাল্য ক্র্যান্ত । লাকৈবেদবপ্র লাগীং। জান-কর্মতাং সমৃত্তিত তাতাং প্রদাণতিক প্রাধিনা। গাতা; কেবল প্রাণবর্ণনেন চ—"তকৈ জাল-ক্রিল্ডান্ত ক্রিক্টানিনা। প্রকাশতে ক্রেক্ত ক্রিল্ডিনাং ক্রেক্টানিনা। প্রকাশতে ক্রেক্টানিক ক্রেক্টানিক

আবৈদ্য, আন্তেতি প্রকাপতিঃ প্রথবেছিতকঃ শ্রীর্ণতিবীরতে। বৈছিকআন-কর্মকন্ত্তঃ দ এব,—কিবৃ । ইবং শ্রীর্তেক্লাতং তেন প্রভাপতিশরীরেণ অবিভক্তন্ আইম্বাদীৎ, অগ্রে প্রাক্র্নীয়ান্তরোংপ্রেঃ। দ চ
পুরুষবিবঃ পুরুষপ্রকারঃ শিবঃপাব্যাবিদক্ষণে। বিশ্বাট্ট্য, দ এব প্রথমঃ সন্ত্তঃ
অস্থবীক্য অবালোচনঃ কথা—'কোহ্বং কিংলকণো বাদি' ইভি, নার্বক্তর্যু,
আন্ত্রান প্রোক্তি করি কর্মক্রপাৎ, নাপপ্রথ ন কর্মণি। কেবল্য
আন্তর্যাক্রপাত্র স্থানির্বাদ্যবিদ্যান্তর্যাক্রিক্রান্তর্যাক্রপাত্র গ্রোহ্বং প্রকাপ্রিচ্ছা, নর্মান্ত্রান্ত্রিক্রান্তর্যান্তর ত্রাৎ, বতঃ পূর্বাপ্রিচ্ছান্তর্যান্তর ত্রাহ্বিক্রান্ত্রান্তর ত্রাৎ, বতঃ পূর্বা-

कातन्त्रवात्राचानात्वन 'नरन्' देवाकावार वर्ता, क्यार वरणाता वकनर, क्रिक्षणिनस्—वर्गिक अधि अविधिवनिकत्वन नाम वकावि; क्यार,—नवार कावत वकाणाको जनर इवन्, क्यार करकार्गक्रिक् वानिम् जविं जविंद्रिण काल वानिकः—'क्यन्'देवाकः नम् 'व्यवद्रम्' रेक्कावार अक्ष्ण काश्माका क्रिशासम वाचावविंद्राक्तः नम् 'व्यवद्रम्' रेक्कावार अक्षण काश्माका क्रिशासम वाचावविंद्राक्तः नम् विवाद विवाद क्याकि व्यवद्राक्तः विद्यान विवादिक व्यवद्रक्तः विवाद विवादिक व्यवद्रक्ति विवादिक्ति व्यवद्रक्ति व्यवद्रक्ति व्यवद्रक्ति व्यवद्रक्ति व्यवद्रक्ति व्यवद्रक्ति विवादिक विवादिक विवादिक विवादिक व्यवद्रक्ति व्यवद्रक्ति व्यवद्रक्ति विवादिक विवा

ন চ প্রজাপতিঃভিজ্যত্তমনি স্বাক্তর্থ-আনতাবনাত্তালৈঃ সাধকাবহালান, বং বলাং কর্মজনভাবনাত্তালৈঃ প্রভাপতিক প্রতিপিংশনাং
পূর্বঃ প্রথম সন্, করাং প্রজাপতিক প্রতিপিংশুনমূলালাং সর্করাং, আছে
বিবং করেং; কিন্ পুলাসভাজানসক্ষণান্ সর্কান্ পাপানঃ প্রভাপতিকপ্রতিবন্ধভাগ্রক্তান্ । ০

ৰশাবেৰৰ, ডকাং প্রব:—প্রধানখিতি প্রব: । বধারং প্রলাপতিরোধিত।
প্রতিব্ভকান্ পাপান: সর্বান্, স প্রব: প্রধাপতিরভবং ; এবসভোহাপ আনকর্মভান্যাস্থানবাহিনা, কেবলং আনবলাবা ওবতি ভলীকরোতি হ বৈ সঃ
ভল্; কর্ পু বোহশাবিহ্বঃ পূর্ব: প্রবম: প্রভাপতি: বুভূবতি ভবিভূমিছতি,
ভারতাবাঃ। তং ক্রিতি—ব এবং বেষেতি; সাম্বান্তাননাপ্রক্রান্।

বস্থ অনুৰ্বায় প্ৰাঞ্চাপত্য প্ৰতিপিৎসা. এবংবিদা চেৎ বন্ধতে চু নৈৰ লোক; আনভাবনোৎকৰ্বাভাবাৎ প্ৰথম প্ৰভাপতি হপ্পতি প্ৰভাগত কাৰ্যান লাক্ষা উৎকৃষ্টসাধনঃ প্ৰথম প্ৰজাপতি হং প্ৰাপ্ত স্বাধনন কাৰ্যান কাৰ্যান্ত কাৰ্যান কাৰ্যান কাৰ্যান কাৰ্যান কৰিছে। বৰা লোকে আন্দিস্তাং বা প্ৰথমবাজিনুপদৰ্শত, ভেনেভাৱে কৰা ইৰ অপ্ৰভাগবৰ্ধা ভবন্ধি, ভবং চি ১ ৪

নিকা। রাজ্যাবর্ষবর্ষার্য পূর্বেশ সম্বর্ধ কর্ত্ব করং করিছি—আই আইঅন্ত্যাদিলা। কেবলপ্রাণ্ডশনের ৪ প্রজাপতিধ প্রাণ্ডির গাবাতে ভি সম্বর্ধ: ইনানীর্
আরেভ্যানেতভেন্ ইভাভ: প্রাক্তনগ্রহায় আপাতভভাংপর্বাবাহ—প্রজ্যাপন্তেরিন্তি।
আধিপনের নর্বাজ্যানি সূকতে। কর্নোৎকর্বোপর্বনং কুরোপনুত্যতে, ভ্রাহ—ক্রেন্স চেন্তি। কর্মভাগনের পূর্বপ্রবেহিশি সংস্থীতঃ। ক্যাভিপরো ব্যেভিদ্যাপ্রেন্স ভাবা আক্রিক্যাপাতার। অভে। আনকর্মকর্ম্বত্ব স্থাবিভূভিক্যানার আনকর্মপাত্র
ব্যবহার ক্রিভাহ—আমর্থ্যানিতি। আপাতিকং ভাংপ্রান্ত্র্য প্রব্যাহশ্রহার ব্যবহার ক্রিক্তার্যার
বিশ্ববিদ্ধান ক্রিভাহ—আমর্থ্যানিতি। আপাতিকং ভাংপ্রান্ত্রণ প্রবাহার ক্রিক্তার ক্রিভাহ বিশ্ববিদ্ধান ক্রিক্তার ক্রিক্তার ক্রিভাহ ক্রিভাহ ক্রিক্তার ক্র

चानाछिकवशानाठिकः ६ छादनश्रवृत् अञीकवावात्रकानि वाक्रवाठि-छत्राद्वादिकारक शक्रकः বচৰতি – অওক আবৈতি ৷ क्ता अक्षत्रवाशाह-देविम्हकाके। न अर वानीविक नवक: - विकारवातार्थान अवागिक्तिय नम्बेटनर: अववाहेग्रावना किवेकीकि विद्यानिष्ठिः, हेडा। वाह -८ फरम रेड । बाहनरकन प्रशामि अहमहरून किविटि विहाह-रेडान्डा नाकारमधाविद्याह-व्य (छाँछ। विश्वाक्षाच के कर वार कार का अध्यक्ति । चन्न चन्न विश्वासी (व) विश्वासी । বাকাবালার অঞ্চরাধি বাচেরে –কাজ ক্রেরায়ান্ড । বর্ণনশকা চাবাদের বছরাং একাপভিত্র पृहेरानिकार्यमान (कवन: वे छ। ताश्वीकारि साध्दे-उद्यक्ति। यथा वर्तामा धकाणिकश्विति पूर्विचित्र क्वानि स्वोटिन विकासन महत्रका विश्वाचा, करवशयोवित क्नारकः त्नारकः अवाणिकश्चीिक व्यवस् साञ्चक्तावि: वाक्या । साव्यक्तवाह-55 के कि शिव अवाग्रह वह विकास नामा के नामा के नामा के नामा कि नामा के कि नामा कि नामा के कि नामा कि न हेगान्द्रशानामनार्वविद्यार्-छट्नाछ। बाबाद्विक्य शक्ष्य पूक्तवार्विक दश्यर नारवित परका वकाति, बाढः अविनिक्तवरेवठज्ञावाना बाानाविरहाकविकावः। अका-गढ तरश्यावत्व त्याकश्रामितः अवागत्रिकृत्वतः शकाविकार-उच्छात्रिकि । २

উপাসনার্থং প্রজাপতেরহংনাবোক। পুরুষনায়নিকচনং করোভি—জ চেড্যানিকা। পূর্কমিন করানি নাধকাবহারাং কর্বাভত্তানৈরহন্ত্বিকা প্রজাপতিবং প্রথা পূর্কের বা নাধকাবহারাং কর্বাভত্তানৈর নকং প্রভিবভাগ ব্যাগ্রহণ, ভ্যাং ন প্রজাপতিঃ পূরুষ ইতি বোজনা। উভাষে ক্টাভি—প্রথম জ্য়িভি। নর্বালয়নং প্রজাপতিব প্রতি শিংসুসমুগারাৎ প্রথম নর্বাহিতি সম্বত্তা, আভাজাপুর্কতং হাত্তং দর্শিভি—ক্ষমিড্যান্ত্রা। ৩

ভাল্যান্ বাদে "লাবৈ ইন্বয়ে লাগীং" ইডাদি সমুচ্চিত
লবং সহাস্থাতি জান ও কর্ম বারা বে. প্রথাপতিম্ব সাত হয়, এ করা ইভাপুর্বেই
বর্ণিত বইরাছে; লার ওক প্রাণ-দর্শনেও বে. এপদ লাত হর, তাহাও "তকৈতল্লোকলিং এব" ইডাদি বাকো বর্ণিত হইরাছে। লতংপর জান ও কর্মের
কলম্বন্ধপ প্রভাপতির বে, জগং-স্থাই ছিচ্চি ও সংহারকার্যাে পাত্রাাদি
বিভূতি বা বহিষা, তত্পবর্ণন হায়্ম জান ও কর্মের উৎকর্ম বর্ণনা করা লাবক্রম, সেই উদ্বেক্তি এই চতুর্ব লবাাহ লাবন হইতেছে। ইবা বারা কর্মক্যাণ্ডোক্ত জানসহক্ত কর্মেরও রতি সাধিত হইল; কিছা ইহার
লভিপ্রেত প্রয়োজন হই তেছে এই বে, কর্মকান্তে বত কিছু জান-কর্মা বিহিত
লাছে, সংসারই সে সমুদ্বের মুগা কল; কারণ, ঐ সমন্ত কলে ওর ও উর্বোল
লির উল্লেখ লাছে, লধিকত্ব তৎসমন্তই কর্মি। করণভাবাপর (সেংহিন্দ্রাম্মক আবং মুল, বাক্ত ও লনিভাতাদোবপ্রত্ব; কেবল বল্যাবাণ ব্রন্ধবিদ্যাত বি

⁽১) ভাংশবা—এই চতুর্থ রাজণ কেন আহন হইতেতে, এবং পূকা রাজণের নহিন্ত ইহার স্বজ্ঞই বা কি প্রকার, ভাষাকার ভাষা বলিয়া দিভেচেন। এই চতুর্থ রাজণ আরম্ভ করিবার উল্লেপ্ত ছুইটি—গ্রথম প্রবােলন প্রালাশভা-শ্বনাভরণ উৎকৃত্ত কল-প্রান্ত প্রবাহন প্রবাহন বালাশভা-শ্বনাভরণ উৎকৃত্ত কল-প্রান্ত প্রবাহন প্রবাহন করেন করা করাই করােথকর কইতে পালে না : কাজেই কলােথকর্য বর্ণনা বারাই তংগাধনীভূত জানসক্ষত কর্মেরও ছভি সম্পার কইল। বিভীপ্ত প্রবাহন ক্ষামাণ বছবিদ্যার ছভি করা; কেন্সার, বেবা বাইতেছে ব্যু, পূর্বোভ জানকর্মের সংকাংকৃত্ত কর্ম কইতেছে—প্রাজাণভা অধিকার

তেবনি নানারক্য সাধ্য-সাধনভাবপূর্ণ (কার্যা-কারণান্তক) এই সংসারে বাহার বিভ্রুমা বা বৈরাণা হর না, ভাহার কথনই আরভাবে অধিকার ও প্রবৃত্তি অন্ধিতে পারে না; [পরবর্তী ব্রন্ধবিভার যোকরপ কন হর্ণন করিলে সহকেই পূর্বোক্ত কলে লোকের বৈরাণা করিতে পারে]; অভএব জানবিপ্রিত কর্মকলের বে, উৎকর্ম বর্ণন, ভাহা পরবর্তী ব্রন্ধবিভার প্রবংসার্থিও বটে। 'মৃষ্কু ব্যক্তির ইহাই এক্যান্ত প্রাণা', 'সেই এই আন্ধর্মনী পূর্বে অপেকাণ্ড প্রির' ইভাহি ক্ষান্ততেও এই অভিপ্রায়ই প্রকৃতিত করা হুইবে। >

क्ठिय 'मारेश्वर' এই माधा मर्थ-धनागठि, विनि मे कोठ काठ र्थंपमचतीती विनदा चिटिक इत। (वर्शाक चान कवीकुड़ार-उ कनवहुन अक्षात ठिनिहे,-कि १ ना, त्यहे श्रवाशिवत मंबोदवत महित **चविकक वर्षा**र ত্যাত্মৰ এই বিভিন্নতাতীয় শ্রারুম্মুছ অপরাপর শ্রীরোৎপত্তির পূর্বে ভৎ-यद्भगरे (अवागिकियत १३) किंगा (तरे बाबांक अवागिक) बांबाद পুরুষবিধ-পুরুষাকৃতি অর্থাৎ হস্ত মঞ্চলালি সম্পন্ন বিবাটগুরুপ । সর্জাত্তে সমুৎপত্ন সেট প্ৰজাপতিই অনুবাক্ষণ করিয়া আমি কে, এবং আমার লক্ষণ--विध्ययपूर्व वा कि'. हेबा चारमाहना कविया-शायमही क्ष अवर व्यवस्थिताचक चानना रहेरछ भुरत्रहरू चन्द्र कानल रच वर्तन कविरानन ना (राचित्र भावेत्वन न!), भर्व न्यां स्वत्व (कर्व चाननाटक वर्तन करित्वन । त्वरे রূপ, পূর্বজন্মোৎপর প্রোতবিজ্ঞান সংখ্যারসম্পন্ন তিনি প্রথমে 'আমি হইতেছি— ति श्रे श्रेषाणि, चानि इरेएडि—नक्लात श्राचा' बरेबन ठेकि क्रिवाहिलन; প্रकाशिक (वर्षक पूर्वकर्षकारु मश्चात्राधूमाद्व अवस्वरे जानवारक 'बहब्' वित्रा फेल्लब कविदाहित्तन, तारे दिल्हे लिनि 'बर' नात्त श्विहिल स्टेब्नन। 'অহং' নামই বে. তাহার জতিপ্রধর্ণিত উপনিবদ্—৩হ নাম, তাহা পরে বলা बहरव । त्मह रहकू,—रबरहकू मर्सकावन अवानिष्ठरक अहेब्रन बहेन। बहेबाहिन, (मृडं (०७, এवन। --वर्धभान म्यात्र প्रकार्भाषत कार्वाकृष्ठ (প्रकार्भक्त)

লাত: তাহাও ধনৰ পুলতা ও অনিভাতাবিবাধপ্ৰত সংসাহেরই অভতু তি, অবচ বকামাণ বন্ধবিভাগ কল হইভেছে সংসাহের অভাত নিভা নিয়ভিশর আনন্দরল বোদ; তবন সংগতাই লোকের পূর্বোক্ত ভান কর্মে বৈরামা অভিতে পারে, এবং ব্রন্থবিলায়ও প্রস্থৃতি হইতে পারে, এইতভুই ভাষাকার বলিভেছেন—'উভরার্বং চ'। উভত্তের মধ্যে শেবোক্ত উদ্দেশ্তীই ক্রভির অভিবেজ।

প্রাণিগণের বধ্যে কেছ আবস্থিত হইলে 'তুমি কে' এইরণে জিলাগিত হইলে. প্রথমেই 'এই আমি' ('অরম্ অহম্') বলিয়া অর্থাৎ আপনাকে কারণভূত প্রকাপতিরণে পরিচিত করিয়া, তাহার পর বিশেষ নামজিজালু ব্যক্তিকে আপনার কেছপিঙের পরিচায়ক 'দেবদত্ত' বা 'বল্লফত্ত' প্রভৃতি নাম বলিয়া বাকে,—বে নাম তাহার পিতামাতা দেহপিঙের পরিচয়ার্থ রক্ষা করিয়াছেন, সেই নাম বলিয়া বাকেন। ২

বেকেতু সেই প্রজাপতি, বাহার। কর্ম ও জ্ঞানতাবনা বাবা প্রজাপতিবানত করিতে ইছ্রেক, তাহাদের প্রধান সমুৎপন্ন চইরা, পূর্বজ্ঞার সাধকাবহার বর্ধাবধ-রূপে অস্কৃতিত কর্ম ও জ্ঞানভাবনা প্রভাবে, প্রজাপতি পদাতিশাবী অপর সকলের অপ্রেট দক্ষ করিরাছিলেন, কি দক্ষ করিয়াছিলেন গুলা, প্রজাপতিব-লাভের প্রতিকৃত্ত আস্তিত ও অ্জ্ঞানাম্বক পাপসমূহ [দক্ষ করিয়াছিলেন]।

বেবেতু এই প্রকার অবস্থা। সেইবেতুই তি'ন পুরুষ—অর্থাৎ 'পূর্বেষ্ ঔবং' এই কারণে ('পূর্বেণ শক্ষের পূ—পু, আর 'উব' ধাতুর বোগে নিশার) পুরুষ-পদবাচ্য হইলেন এই প্রভাগতি বেরণ প্রতিবন্ধক পাণরালি দক্ষ করিয়া পুরুষ—প্রজাগতি হইরাছেন। এইরপ গল্পেও জানসভক্ত কন্মান্থটানরপ প্রয়ি আরা, অথবা কেবলই জ্ঞান বারা হাহাকে ভন্মীভূত করেন; কাহাকে ? না, বে বাজি এবংবিধ জ্ঞানীর অপ্রে প্রজাগতি হইতে ইচ্ছা করেন, তাহাকে [ভন্ম করেন]। ভন্মীকরণের কর্তার নির্দেশ করিতেছেন—বিনি এইরপ জ্ঞানলাভ করেন, অর্থাৎ জ্ঞানাগুলীলনভাত উৎকর্ষসম্পার, [তিনি]। ৩

এখন শহা হইতেছে বে, প্রজাপতি-পদেছ ব্যক্তিকে বদি জানী পুরুষ
দক্ষই করিয়া কেলে, তাতা হইলে প্রকাপতিত লাভের অভিলাষ ত কেবল
আনর্বেরই কারণ হইল ? না,—ইহা দোবাবহ নহে; এই দাহ অর্থ আর
কিছুই নহে, কেবল বাহাদের জান ভাগনা সমুংকর্ম লাভ করে নাং,
ভাহাদের প্রজাপতিত্বপ্রাপ্তি না হওয়াই ঐ দাহ শব্দের অর্থ। উত্তমসাধনসম্পন্ন ব্যক্তিই প্রবাধে প্রজাপতি পদ অধিকার করিয়া থাকে; কাজেই
ন্যুনসাধনসম্পন্ন ব্যক্তি সেই গদ লাভ করিতে পারে না, এইজন্তই
উভয়সাধন ব্যক্তি হীনসাধন ব্যক্তিকে বেন দক্ষ করে বলা হইয়া থাকে;
কিছু সত্য সভাই বে, উৎক্রই-সাধনসম্পন্ন ব্যক্তি হীনসাধন ব্যক্তিকে
দক্ষই করিয়া কেলে, ভাহা নহে। বেমন নির্দিষ্ট সীমান্তে গমনেছ
ব্যক্তিপণের ব্যরে, বে ব্যক্তি প্রধ্যে সীমান্তশ্বানে উপস্থিত হইতে পারে,

তাহা দারা বেদন লপর গত্বর্গ স্কুত্নামর্থ্য দ্বপ্রার কর হইরা থাকে, ইয়াও তেমনি ১)॥৩৮॥১॥

স্পাক্ষরভাক্ষাকা। বলিবং তৃই,বিতং কর্মাওবিহিত-ভাষকর্ম কলং প্রাকাপত্যক্ষণ্য, নৈৰ তৎ সংসাহবিষয়স্তাক্রাবং, ইতীয়স্বর্ধং প্রাক্রিয়ায়াহ—

্টীকা--জানকৰ্মকা নেজৈং প্ৰস্থক্টৰামূজিং, ভন্তস্ভাচাৰাৎ ভত্তে-সন্যপ্ৰীনিভৱে প্ৰস্থিতনিখিক। ইণ্ডাপ্ডা নোহৰিভেনিচাড ভাংপ্ৰামাঃ—যদ্দিদ্মিভিঃ ভূই বিভং ভোত্ৰভিপ্ৰেচমিভি বাবং— *

ভাল্সান্ত্রাদে। এগনে কণ্টকাণ্ডোক্ত জানত কর্ণের ক্ষণ্ডরপ, বে প্রাঞ্চাপত। পদের প্রশংসা করা প্রতির অভিপ্রেড. সেই প্রাঞ্চাপতা পদুও সংসারের অধিকার অভিক্রম করিতে পারে নাই, অর্থাৎ গ্রহাও সংসারেরই অন্তর্গত, ইহা প্রদর্শনের জন্ত বলিতেছেন—

সোহবিত্ত, তন্মাদেকাকী বিভেতি, ন হায়**মীকাঞ্চকে**—
যশাদস্থলান্তি কন্মান, বিভেমীতি, তত এবাস্থ ভয়ং বীয়ায়,কন্মান্তাভেষাৎ নিতীয়াৰৈ ভয়ং ভবতি॥ ১৯॥ ২॥

সরলাথ:। প্রাভাগতাফণডাপি সংসারাত্র্বতক্ষ প্রজন্মিত্রাহ—
"সেহবিভেং" ইত্যাদি।

সঃ (কর্মজানকসভূতঃ প্রকাপ:তঃ) অবিভেৎ (অবদাদিবৎ তীতঃ অতবৎ); তরাৎ (একাকিন: প্রকাপতেঃ ভরোদসমাদেব হেতোঃ) [ইলানী-মপি] একাকী অসহায়ঃ জনঃ বিভেতি। সঃ অরং ্ তীতঃ প্রকাপতিঃ) হ (ঐতিহে উকাং চক্রে (আলোচিতবান্—) বং (বরাৎ) ব্যক্তৎ

⁽১) তাংগর্ব্য—'আজি' অর্থ—বিদিন্ন সীনা 'আজিস্তাং' অর্থ—বাহারা নেই সীনাত ছানকে সজা করিয়া গনন করে। এখনও এইরপ ব্যবহার বেখিতে পাওরা বার বেং কোন একটি ছান সজা করিয়া বলা হর বেং অনুক্রান হইতে বাহির হইয়া বেং লোক সর্ব্যাপ্ত আমুক ছানে বাইতে পারিবে, সে বাজি পুরুতার লাভ করিবে। নে ব্যক্তি প্রথমে নিদিন্ত ছানে উপছিত হয়, সেই বাজিই নিদিন্ত পুরুতার লাভে সবর্থ হয়, অধিকত তাহা আয়া অপয় গভারা পরাভূত হয়, হীনশক্তি বলিয়া বিবেচিত হয়, এবং অপবানেও বঙ্গনার হয়। এবানেও, বে বাজিয় সাধন-সম্পত্ উৎয়ই, তিনি প্রাজাপভাপদ লাভ করেন, হীনসাধন বাজিয়া ভ্রমণিক পোকারল সক্ষয়ার হয়।

(ব্য়াভিত্তিক ব্যৱহার) নাভি (ন বিভাতে), [ডখা: বেডােঃ] প্র (বিভাকে) কথাব (কারণাব) বিভাবে (কীতাে ভবাবি । ইভি । ভড়া (ভয়াব আলােচনাব) এব ডফ ভরং বীরার (বিগতবভূব) । (অবিভাব্দকর হি ভরং আনােহারে ন সভ্যতীতাার—] ভখাব (হেডােঃ) অভেযাব [ন কথাফনীভিভাবঃ]; হি (বভঃ) বিভারাব (খবাভিরিজনক্ষরাব) বৈ (এব) ভরং ভবভি (উৎপদ্যতে), [সর্বাভাবাণয়সা তসা ভু ভরং ন সভবতীতি ভবিং ৪ ০১ ৪ ২ ৪

সুলান্দ্রাদে। প্রাঞ্চাপতা পদটিও বে. সংসারেরই মন্তর্গত, তান প্রদর্শনার্থ বলিতেছেন—সেই প্রথমোৎপর প্রঞ্জাপত উতি হইয়াছিলে ; সুইফল্পই লোক একাকী থাকিলে ভয় পায়। তিনি (প্রঞাপতি) আলোচনা করিলেন—বখন আমা হইতে আর পৃথক বস্তু কিছু নাত, তখন কেনইবা আমি ভীত হইতেছি। ভালার পরেই ঠাগার ভয় বিদ্বিত হইবা প্রকৃতপন্দে, কেনই বা তিনি ভীত হইবেন হ—কারণ, খিতীয় হইতেই ও ভয় হইয়া খাকে; ভিলার ও বহায় কোন বস্তু নাই), সুভরাং ভয়েরও সন্তাননা নাই)। ৩৯ ॥ ঃ ॥

ক্রান্তর্ক ভাষ্ণাত্রন । ক্রেছিল্ডেং। সং প্রভাগতিং, ধার্থং প্রবিধী পুরুষ্ণিলে বাবিশতং, পেছিল্ডেং তাত্রান্ অবল্ধি ব্যেবজাত। বল্ধান্তং পুরুষ্ণিলং শরীর-করণবান্ আয়নাশনিবর বিপরীত-লন্ধনবাং অবিভেং তত্মাং তংসাবাল্ডাং অক্সন্তেশি একাকী বিভেতি। কিন্ধু, অল্যান্ত্রান্ত ভাষ্ণু-বিপরীতদর্শনাপনোদকারণং বণাপ্তান্ত্রাদর্শনন্ । কেন্তুং বাজাবাতির কেন্দ্র ইন্সান্তর আয়াবাতির কেন্দ্র ব্যান্তর প্রান্তর আয়াবাতির কেন্দ্র ব্যান্তর প্রান্তর কর্মান্তর কর্মানান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মানান্তর কর কর কর্মানান্তর করের কর কর্মানান্

वर्गात्म चन्नवर्गात्म, चन् पृक्षम्: क्यार १ विक्रीतार वचनतारेव कार कर्मक, कर अक्षर्मातम विजीववर्गमनमनीकम्, देखि मोडि सकः। >

तिय (यातः। छैर इहेरवज्डवचार (जाकवरः वदः पूनाकर्त्वाडरेन विहिद्धः कार्याक इटेनः नरपूर्क कर्यान निष्ठ श्रका-त्यवाच्छिरेननावकः वृहेत्, छवः श्रकानर्थकं कार्येन विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति श्रक्ति विद्याप्ति विद्यापति विद्याप

"জানৰপ্ৰতিখা বস্ত বৈধাপাক প্ৰকাশতে:।

ঐপৰ্যকৈব ধাৰত সংসিদ্ধা চতুইয়ৰ্।" ইতি।
সংসিদ্ধা ভয়ালুপপান্তিভিতি চেৎ—ন হি আছিত্যেন সহ তথ উদ্বৈতি। ন;
অঞ্চালুপবিটাৰ্থভাৎ সংসিদ্ধানায়া ত

 विकित्यान्य देखि अर्थः । इति "बाहारीयान् गृहरमा त्यम", "अहारीहृत्यक अवन्य, "कहित अनिभारणन", "बाहारीयार द्वारा , "आहरमा इतिया अहिता अने काम माना विकित्य अहा अहिता अहिता

तिका। याः विविध्वार्थीभदार्थः (व्यू:-व्यकाक् विक्वि (नवः व्यावकत्रकर द्विदताकाश्वकत्व्ववृद्दृहेवनि नरमात्राक्षक् कदवव, व देकवमाविकि वक्रवृक्षवः वाका विकार्यः व्ययमकाको, उकाशीन धार श्रीत्वाकोछि व्यावशान विवश्विकशान-वकार बाक्षान्तिको हशाकिकाक 'कः वाधानिकालका कार्यावाकक कार्यात्राक्षक कार्या बमान्दर्भ करकृत्यक्रीयकातः---धान्यानुः प्र के । करमामान्नात्वकाविकाविद्यानिकाविक वावर । अवानातः अनावाक् तत्व त्ववववार-कारकाकः। ववानवाविकी वस् वानाति मुर्ग-मुक्काविज्ञवस्तिकस्तिकस्तिकृत्वतः विश्वतः अवस्तानः मृत्यास्तः, स्वा असामितिक्षि **खद्रक करकरठान्ड** विश्वदीकविद्या स्वीतातकः क्रम धानः विष्ठार्थः सन्त्रातिकवानिकार्यः भृद्यार्देश्मेन्द्रवन अवनुकान: विनश्यकि काथ घेडातिस्मा । क्षित्रवात क्षाविकारिन) न्द्रित्याम् । स्कारमानत्रिकः अत्राक्टेऽउक्तम् वर्षवत्रोवक्षेत्रत्यन् कावा नरस्कः क्रोतिः अवा-প্রির্কিশ্বিভূবেষ্, ইব্রে: ভরজনস্বরাধ—ত 🗷 🗟 😙 । কলারীজ্যানের রহল পুর্বের भारतकारिकानका निवृत्ता Ceवकाराय न कवांवकाक्षण वर्गमार्थवावकाक देनन'न शाह ৰঙণণৰে হৈত্যা।—যদ্যা:দভি। करमका मिमा वचन्त्राद किविटि छत्तर व चवजी आनवाह-दिक्कोद्यः (छक्तिः ववत्रवाहित्यकान्तार देवतक अविकासकाग्यामिकदार्थि कृतवह्यदेवत्वर्गार कर्यादाः म करतीलामधार --ল জীতি। ভৰজাৰে সৃতি অঞ্চানাৰোগাং ভছৰং বৈতং তক্ষ্মিং চাবুপ্ৰিভাঙো Centrale क्यानुलगृति कार्य. : बहेद 5 काटन क्यानिय विकास वक्षर अस्वाधकार कर कृष्टि । विश्वतिकामन्द्रियेय श्रमान्द्रिक्षेत्रम्थीतः, व बहेष ०वर्नद्रिव, वे'लाइर्विश्न ব্ৰহত্ত্বাতীত্যাদি প্ৰাং ব্যাখ্যাত্বিত্যাশ্ভা ৰছীভূৰ্মন্তাৰ—মতেত্তি । ভবেৰ প্ৰৱংহাৰ वर्षेत्रहि -कन्मा मिठा मिमा । >

প্রথমব্যাব্যাসামূদারের ভোক্তব্যাপরতি তাত্রেন্তি। প্রভাগতের স্বাইক্রাজানার ক্রীভিন্নতিক্রতা, ন চ ১৩ ডব্লানং বৃক্ত, বেছভাবানিত্যাহ—ক্রুড্র ইন্ডি। ব্যার ব্যাক্রের্বার্টা, ওপ্নানের ওলাগি জানিত্যাপল্যান ক্রো ব্যাক্রির্বারারারারারার্টারার, নাগি সন্ত্যাপল্ড প্রথমিবির্বার্টার, নাগি প্রাইল্বর্গাসক্রার, মতো-স্বাস্থ্য প্রসিদ্ধরণানিবিল্পানের ব্যাক্রির্বার্টার প্রত্যাপ্রতি প্রত্তে—আন্তর্গান্তি। অভিন্যাপ্রাইনির্বার্টার প্রথমিতি প্রত্তে—আন্তর্গানির স্বার্থিত। অভিন্যাপ্রাইনির্বার্টার প্রথমিত স্বার্থিত। অভিন্যাল্যার্টার প্রথমিত স্বার্থিত স্বান্থ্য স্বার্থিত স্বার্থিত স্বার্থিত স্বার্থিত স্বার্থিত স্বার্থিত স্বার্থিত স্বান্ধির স্বার্থিত স্বার্থিত স্বান্ধির স্বার্থিত স্বার্থিত স্বান্ধ্য স্বান্ধ

জানোৎপদ্ধেরাচাধ্যানালপেদ্ধে এডাবি-বিধানানর্থকাথে প্রেক্কভিস্থভিকিরোরঃ
ন্যাধিতি প্রত্তে —প্রেক্কেন্ড। আধিপথেন প্রাধিন্তঃ, প্রথাবিদ্ ভেষাং ক্রেক্তিভিতে তেও. ন, ইভাগি —প্রক্তাপিক্তেরিক্রিক্তিভিত । চোকিতং বিভোগং নিরাক্রোভি—স্প্রেক্তিয়া নিরিভাষাং বিকল্পঃ নমুক্তরো ৩৭০ব নভপ্রবিভাবেন প্রকারের ভার্যোৎপভ্যে বিশেষক্রবাধ ন প্রভাবিদ্যান্ত্রগার্থ। সংগ্রহ্বাভারং

विद्वारि-कारक , शीकि। वर्षि नर्बर विवसीर वर्श साहर नवार. क्षेत्वक्षित्वर देवविक्रिक क्षत्रकातावावावावा वर्गहावी साव-उप्त्यत्थि । क्य विक्य-बुगारवि-क्याबीक्रांक्तिमा । नव्करः वर्गकि -काम्प्रांकः विकेश । विविधानाः मनुक्रिकामाः 5 निविकामाः ७१२१७१२१ शहरः ८७१· ४५१७ -फ्ट्यकि। चारमाकविर्त्यमा क्रव्यक्त, बहुमक्रमक्ष्यक्तः, मक्ष्यक्रकः क्रकारक्त्विकः, निर्वनकावि विविद्यानश्क्तारि ह अक्षप्रवृतिकि एकरः। पृष्टेखर अविनाम मार्डेविकवार छवाक्रकाणि अकाणिक्रकाक वावरणवादक्रवास्त्रीयमावयवाद –এবামতি। केरबांकृतकार वित्र वसनि वसनि वसनाकारिकालाव्यक्तिका (नर:। वृक्षक मा *बाह्यकाही कविविद्याशस्त्र । ७८९/६वववार्डि*टक्काथायास्त्राव्यम् । (४७८७कृशक्^रवर् कामनिविधानाः मबुक्ताः वर्षति—कान्तिनिकानिकाने। अकावाः निवक्रवायक्षकः আবোহরনতে বিবিশ্ববৃত্তি বাবং। এব প্রবিশাভাবিবাভিরেকের ন প্রকাশতেরপি कातः महर्गाः, मायबाकारायक कार-ज्यास्त्री कि । व्यतिनाकारमः कारमाण्य-अधिरक्षकविष्कृष्णार अवागायक वृद्धिक्रवावशेषमाध्याववार खनिभावादिका विका चुक्रवाकारावय केमाबी: अध्यक्तीकार्य: : कि स्वनाविवाहिरवरकनानि একাণ্ডেক্স নিং ভাবিত্যাপভাবে—ব্রেদেশতেডি ৷ ন তৈবিনা জান: কছচিবলি ভাব, अञ्चानरख्य सन्तावशीरअवनवनार देशबीयपुष्प्रदर्गनार प्रदूरनविदिष्टि (नव: । ७६ अञ्चिक्तिकवित अतिवक्तिवर्ककरणन अकान्यवास्त्रवेतः, अतिवृत्तिवन्यव आरमार्राणाः कृतनाविकानकाव-अर्थामीजि। बाह्यनामाविकः मन्त्रवादाः मर्वे वर गर्नाः, ভংকার্যাং চ রাবালি, তেন জাবোৎপদ্ধে প্রতিব্যক্ত পূর্বোক্ষেত্র ভারেত্র করে সভি श्रमान्द्रविषदानुत्रकार भृत्वताकाण नद्यार्वकारमारन्द्रको द्वननण विविश्वचार, उक्ष আধুনিকত্রভাষাভিত্রেকের জানোধ্যেত্বি ন ভ্রিবিবৈছব্যি। অসাকং ভ্রম্পানের क्षप्रभृत्याव किलाकार मही किलामर महामित्र वातमा विकार्यः। अधिकादिकात्मम सामद्रकृत् विकास्तानि दक्षावत्राम् मन्त्रकार न स्नितिपृषि-বিলোগেছির, ইত্যাপদংহতি — ক্রম্মাণিদক্তি। ০৯ ।। ২ s

ভাজ্যান্ত্রাদে। "গেছবিভেং" ইত্যাদি। দেই প্রজাপতি—
বিনি প্রথম শরীরী পুরুষাকার বলিরা বণিত হইয়াছেন; তিনি ভীত
ইয়াছিলেন,—বলা হউল বে, তিনিও জামাদেরই মত ভর পাইয়াছিলেন।
বেহেতু পুরুষবিধ—ছেছেজিয়বিলিট্ট প্রজাপতি আপনার বিনাশাদি বিষয়ক
বিপরীত দর্শনে অর্থাৎ তাদৃশ আবিজ্ঞানবশতঃ ভীত হইয়াছিলেন, সেই
হেতু, অভাপি ওৎস্বানজাতীর (কেহেজিয়সম্পন্ন) ব্যক্তি একাকী বাকিতে
ভর পার। অপিত, আমানের ভার তাহার পক্তের ব্যাম আত্মানই
ভয়োৎপাদক আবিজ্ঞানের নিমুক্তিসাধন। সেই এই প্রজাপতি জালোহয়া ক্রিয়াছিলেন; কি প্রকার পি তাহা বলিতেছেন—বেহেতু আহা হইডে

पक्ष वर्गर वामात विशिक्त अधिक्योक्त वन कामा क्या मारे. আবার বিনাপকর ভারণ বস্তব অভাবে আবি কেন ভব পাইভেডি গ त्मे काश्तर-वर्षायकार्य चायम्बन केननवित करमहे खनानकित तमे कर मन्त्रवेद्धान जनमक स्टेशाहिमः अवानकित ए. त्रहे कर छात्रा (क्यमरे प्रधानम्बन : मुख्याः पाष्यवर्णन देवहित होता छात्रा क्यमरे वाकिएक नारत मा: काहे वित्तम-'क्यार हि चरक्षर' १-कि काश्य किथि की व वहेर्यन । अधिकाश अहे रहे, नहवार्यकरक सिक्कान वहेल, कथमरे छ छात्रत मधवमा बादक मा ; (बाहकू विकोड वस हैहेटवरे ७॥ वहेश बारक, वया विजीत बत्रवावतं व्यविष्ठः नवृत्विष्ठ ; मुख्यार वनत कान अकान विकोद नवार्य आन्तावाहर ना बहेदा करनहे करहादनायक वय मा : (कम मा, (जोठ वर्ष्ट चार्क रव 'रव लाक निवयत अक्क वर्णन करव. छाहात (नाकहे वा कि. बात (बाहरे वा कि ?' हैंछ। बठ बव ठिनि (व. अक्ष-वर्णस्यत वरण अव निवादन क्रिवाझित्मम, छावा बुक्तिवृक्तिके वर्षे । काशन कि ? (शरक्षु क्लिन बहेराठे - मनत यह वहेराठहे कर बहेरा बारक; कक्षान्त्व वान तारे विकासीय समागित वहेबाहिन : कार्याहे जाताह चाव ७१४व नवाबना किन ना। >

কেই কেই এইলে আপত্তি উত্থাপন করিয়া বলেন—প্রকাপতির একস্থদর্শন করিল কোণা হইতে ? কে-ই বা গ্রাহাকে সেই উপবেশ দিয়াছিল ?
বলি বিনা উপদেশেই হইলা থাকে, তবে, আনাবেরও তাহা হইতে পারে;
আর বলি বল, অলাবেরসঞ্চিত সংছারই ঐ একস্বদর্শনের মূল কারণ, তাহা
হইলেও এক হদর্শনের কোন প্রভাগনে থাকিতেছে না; প্রকাপতির প্রাক্তন
করের একহদর্শন বিভযান থাকিয়াও বেরপ [সেই অলে] বছ-কারণ
অবিভার অপনরনে স্বর্থ হল নাই, তক্রপ সকলের পক্ষেই একস্বদর্শন
কর্মক হইলা পড়িতে পারে। প্রকাপতির বে, প্রকাশে বছন-হেড্ অবিভা
অপনীত হর নাই, তাহা তাহার এ কল্পে ভল্ন প্রশান করা বাইতে
পারে। বলি বল সর্কাশেনে, বে একস্বদর্শন হল, তাহাই অবিভা-নিবারক হল;
না,—তাহার বলিতে পার না; কারণ, প্রকাশের ভার এ ক্ষেত ভূলাবিছার
সভাবনা রহিলাতে; অভবর এই একস্বর্গন অন্তর্গই ইইতেছে। ২

না,—অনর্থক হইডেছে না; কারণ, লোকপ্রাধির ভার, এথানেও বেজুটির উৎকর্ম থাকা আবন্ধক হয়। বেষন পুণাকর্মসমূত বিভত কেন্দে জিয়াদিবিশিষ্ট জয়লাত হইলেই প্রাক্তন জানসংখ্যারকাত বিনল প্রতিল্ডির আবির্ভাব দৃষ্ট হয়, তেমনি প্রজাপতিরও ধর্ম, জান, বৈরাপা ও এখার্য্য প্রজৃতির প্রতিকৃত্যত্বত পাণের বিনাশ হলৈই বিভঃ উৎকট কম লাভ হয়, এবং সেই ক্ষমে, খগত বিভাবিতা বিনাশ উপরেশ্যেও একওবর্শন লাভ করা আবৌজ্ঞিক হলৈত পারে না। প্রতিপান্তও বলিজেনে বে, 'প্রজাপতির অপ্রতিহত জান, বৈরাগা, ঐশ্বর্যা ও ধর্ম, এই চারিটিই সর্বনিধ্না বাজাবিক' ইভি। ভাল, প্রজাপতির জানচমূহীর বলি মভাবিদ্রত কর, জাহা হইলে ভ কথনাই তীবার ভয় হইতে পায়ে না,—অপ্রভাশ আবিত্যের না: কারণ, উক্ত বাক্যোপদির 'সহাসহভাব' কথার অর্থ —অভের উপরেশ ব্যতিরেশে করা; অভিপ্রার এই বে, প্রভাপতির বে, অপ্রতিহত জান, বৈরাগা, ধর্ম ও ঐশ্বর্যা, ভাচা কারণেও উপনেশ হইতে পদ্ধ হয় নাই, পরর বীর শক্তিবলেই করা হইলাছে; এইজকট উরা 'সহাস্থিধ' বিলয়া অভিবিত্য বইবা বাক্যে। ত

काम, बांच महत्र कर मू 'बना উপছেপেই श्राक्षाणिय स्थान मांक बहेशा दिन, जादा हडेरन उ लहा छारभना ना उक्तिका व वानिभाक श्रक्षकि काममारक्षक व्यक्तिक (क्ष्रक शंभव व्यक्तिक करेवा लाइन १ व्यक्तिक व कार क्यासरम्भिक वर्ष स्टेल्डे वृषि काम ना छ वह, जाहा व्हेरन छ अवनिम्, ভংগন্ধ (প্ৰভাৰে নিষ্ঠাধান) ও সংখ্তেনিয় থাকি আন লাভ কৰে', 'তাৰা তুমি क्कर विकड खिल्लाल बादा चनत्रत वन' हेटावि अलिबलिविविक कामार >-अनिव अरस्कृष बहेत्त भारत, अवीर कावनका धनिविक बाहक बहेश बाह ? ना, -- चर्टकुष द्व ना ; कावन, निविध्नन्द्व नवुक्तत्र । अकळ वह निविद्वत উপ্তিতি:, বিকল্প : পুৰপ্ৰাৰে এক একটি নিমিত্ৰে উপস্থিতি) এবং व्यविकारीय अनवक ७ व्यवनवर्गात व वार्गावद मनावान स्कृष्ठ भारत । क्षारक रव मध्य कार्या-नवार्व निविक्ववित्तव स्टेटक मबूदनव स्व, कारारवत त्नहे निविक्षण्य चारमकथकात कल्या। कता रहेता पारक। त्नहेल्य निविक-সমূহের আবার সমূচ্য এবং বিকল্প হইতে দেখা বার। সেই বিকলিত বা नवृक्तिक निवितनपृत्वत बर्गाक जानात जनमक केरकर्ग क जनकर्राञ्चनारत वह व्यक्ति बहेना बारकः पृहास वह (व, नाशानकः हक्षः क बार्गाकवक्ति वहविव নিবিজের সাধারো বেত-শীতাদিরপ বিষয়ে জান সমুংপর হইরা বাকে ; সুংরাং

हाकून कानही निविधिक : किंद्र तिहै अकहे अनकाम-कादी मुलावत्त. (पविट्र माध्या बाय, याखिक नृमान अकृष्टित मध्य अक्कार्यत महावाक चारमाक्तितरमक अपू हक्तारायायहै निविधकावन बहेबा बारक: (वानिनानत नास यमहे बन्धात्मक बक्यात निविध वहेवा वारक : किंद আবাবের পব্দে আবার সেই রপ-আবেই চন্দ্রান্থাপ ও আলোক---मारमारका मारा पाना एकंडियानि निवित पारमारका महिल महिला या अकतिक बहेश निविश्वत खाल्य बनावेश बादक: व्यक्तिक त्नहें विश्वत वित्य बारमारकक्ष क्याक केरक्वानक्वाक्षमारक [कार्याारमावरम] বৰ্ত্তকাৰ প্ৰতেপ সংঘটিত হট্যা বাকে। এই প্ৰকাৰ আবৈক্ষতাৰ স্বত্তেও ्वाचात बन्नावक्क क्येडे विश्वित इहेबा बाटक, त्याव अवायित इहेबाहिक; क्षापाल वा क्वन सम्मारे मिविस हहेवा थाक : कावन क्रकि विकास्त--'ठनक बाता तबरक विद्यबद्धान व्यवहर हक'; काबाक व्यवहर केनहरू व्यक्तिगाराम गुक्रवहे छाश्रदक कार्त,' 'जहाराम बाक्ति कान माठ करहन,' 'कहर निक्षे अनिगार । अन्ति । बादा (महे । स व्यवह दक्' 'वाडावी हडें (ठ मक 'ब्छारे वीर्वावठी दश,' 'बाखादक जन्म कविदन, धर्मन कविदन, धर्मन श्राठाक कविरवं हेजावि निजयांच बहेरत बामा बाह रव, नाविद्याद ल्ला लक्षिक कामनार्ध्व अकाय वा क्वाहिहाडो निवित कार्य ; रक्न मा, ल्ला शक्षि वाश कानश्राध्यक व्यवहारि द्वावक्रीन विवृद्धि व्हेश शह ; (वशासनाद्भाव (व. अवन, मनन ও निवंबशामन, त्म मबूबरवर्क बूबा विवन वर्गाताल-मानार विकास अववस । विवयत: आनवाणिवस्य नानावि श्रीय कृषि वृष्य ७ यम वहेर्छ विष्टृतिक वहेरण गत, चलावकः मछात्राही बृधिय भाष्य अक्षप्रभीन मन्नायन कहा छ बछावनिक्ष वार्त ; बछअव, अद्या প্ৰভৃতি আনহেতুভাৰর কবিন্ কালেও আনহেতুবের ব্যাঘাত হইতে भारत ना (>) । ०> । २ ।

⁽১) তাৎপর্ব্য-ভাষোত "নিষ্টিভবিকর-সর্জয়-শ্ববৰশুবৰভোষাপণ্ডে:" কথার শক্ষিমাধ এই বে, -কার্য বাজেরই কৃতক্তলৈ নিষ্টিভ থাকে; কিন্ত ভালেহে সেই নিষিত্ত-শুনির অবক্ষমকার বৈচিত্রা বেবা বার; কোন ভালে সম্বত্ত নিষিত্তশুনিরই আবক্তক হয়, কোন ভালে বা তথ্যকটির যাত্র অপেকা হয়; আবার একের স্বত্তে বে বে নিষ্টিভ আবক্তক হয়, অপ্রেয় স্বত্তে বে স্ব্রায়ের অপেকা হয় হা। ভালার উপ্র আবার নিষ্টিভ নিষ্টিভনিয় এবং কার্যজেক্তরের শুন্তত্ত উৎকর্ষাপ্তর্বক কার্যার বৈচিত্রা ঘটাইর।

স বৈ নৈব রেমে, তত্মাদেকাকী ন রমতে, স বিভারিষচহং।
স হৈতাবানাস—যথা স্ত্রীপুমাখসোঁ সম্পরিষতে।; স ইমমেবা
আনং বেধাপাতরং ততঃ পতিশ্চ পত্নী চাতবতাং, তত্মাদিদমর্জরগলমিব ব ইতি হ ত্মাহ যাজ্ঞবন্ধ্যান্ত্রমাদর্মাকাশঃ স্ত্রিরা
পূর্ব্যত এব, তাথ সম্ভবং ততেঃ মন্ত্র্যা। অঞ্জারন্ধ ॥ ৪০॥ ০॥

अस्तार्थाः [श्रमानाष्टः नःनातावनेष्ठप्रावद नवर्वविष्ठः नुनवाद--] "म देव" देखावि । मः (अवस्थारमाः ध्रमान्छाः) देव ' बचार अकाकी স্ন] ম এব (নিশ্চরে) রেখে (রভিং ন অসুভূতবান্), ভস্মাৎ (ক্ভোঃ) [देशानीयिण धनः] अवाको (विकायतिकः नम्) न त्रवट (त्रविम् न अपू-क्विति)। तः (अन्य व्यवस्थित्कः अवानिकः । विक्रोतः , वाश्वमः न्यातः कुछर अनार किकिर : केक्टर (किनविकतान)। तः ह । तरावहक्षार ! এতাবান (এতংপরিমাণ:) चान (बकुर),—यश नव्यदिषको ं পরক্ষরা-निविद्यो) बी-प्रवारतो (बी ह प्रवान ह, क्यो-बीप्रवारतो, छवा बाबानस्वर ভ্রীপরিষ্ট্রশিষ বেনে ইত্যর্বঃ) : স: (এবংভাবাপর: প্রজাপতিঃ) ইমষ্ আত্মানষ্ (चार्रास्य े जन (चनः (विश्वकारतन-जोशुरहरमन ज्ञालहर (निकस्य चकरबार), छटः ((वशकदनार अठि: 5 भन्ना 5 चठवछार (भछि-भरक्रा) লাতে 🗽 ভত্মাৎ—(ৰত্মাৎ প্ৰকাপতে: পরীরার্ছ এব পরা অন্তৎ,তত্মাৎ (হড়োঃ) हेक्ट (नवीवर) या: (चाखन:) चक्रवनगर (चक्र ठ छर वृत्रगर विष्गर प्रगार्क-बिक्ति बादर) हेन,--हेकि बाक्तरहाः ं उन्नामा बन्तिः आह य। जन्तार ((इस्फो:) चाकान: (चाकान-१६ नुक्रश्रोद्धाः चत्रः : शुरस्वः) दिशे (चर्षान ভুডরা) পুৰ্বাতে (পূৰ্ব: ভৰতি) এব / নিভাৱে 🔎 ভাং (পরীরার্ভভুতাং শত-

বাকে; বেখানে উংকৃত্ব-ন্সার একটনার নিনিত বারা কার্যা সম্পার এইতে পারে, সেথানেই অপেকান্তত হানাওপাল্পর একাধিক নিনিত্তর প্রয়োজন কইল পড়ে; ইডাাদি বহু কারবে মুখা যার বে. কার্যাবিশেবের জন্ত নিনিত্ত নিনিত্তকানিক হৈ, সর্বান্ত স্থানতাবে প্রয়োজন হয়, ভাষা নতে, পরস্ক বেবানে বস্টু কু বরকার, দেবানে ভঙ্টু কুমান্তই প্রথণ করিতে হয়। কিন্তু ডা' বলিয়া নিন্দিই নিনিত্তকার নিনিত্তক নাই কইছে পারে না। আলোচা ব্যাক্ত প্রসাদিতির প্রক্ষেত্রতানিক প্রত্যানিক বিশ্বতিক পার্যাক্ত কা থাকিলেও, অভ্যের প্রক্ষেত্র আর্থক কা ব্যাক্তক লা ব্যাক্ত কা ব্যাক্ত না বা



মুণাবাাং মিনং) সম্ভবং (বিশুনীভাবেন উপসতঃ) [বহুসংক্তকঃ প্রবাদভিঃ]; ভভঃ (ভশাং উপসমনাং) বহুবাাঃ (মানবাঃ) অভায়স্ত (উৎপদ্ধাঃ) ঃ ১০ ৪০ঃ

মুলান্দ্রাদে। সেই প্রজাপতি একাকী তৃথিলাত করিতে পারিলেন না; সেইজন্ত এখনও লোকে একাকী থাকিয়া সন্তুট হয় না; তিনি আপনার থিতীর (বা) কামনা করিলেন; ভাষার পর তিনি এইরূপ ভাষাপদ্ধ হইরাছিলেন—পরস্পর আলঙ্গিত ব্রী-পুরুষ বেরূপ হয়। তিনি এই বীয় দেহকেই চুই ভাগে বিভক্ত করিয়াছিলেন; তাহার জলে পতি ও পত্নী এই চুইটি রূপ হইরাছিল। এইজন্তুই বাজ্ঞবন্ধা কৰি পিত্নীবিতি । এই নিজ দেহকে মর্ভবুগলের স্বায়—মর্ভাংশনৃত্ত লক্ত্যীতের মত বলিয়াছিলেন; সেই কারণে আকাশ, কর্ষাৎ শৃত্যপ্রায় এই দেহ নিশ্চরই বী ঘারা পূর্ণতা লাভ করিয়া থাকে। সেই প্রজাপতি—বিনি মন্দ্র নামে পরিচিত, তিনি সেই শরীয়াজভূতা ব্রীতে—বাঁহার নাম শতরূপা, সেই পত্নীতে মিপুনীভাবে উপগত হইয়াছিলেন; ভাষা হইতে মন্দ্রাগ্রপ উৎপন্ন হইল ॥ ৪০। ৩।

পাক্তরভাষ্যাত্য । ইতক সংসাধবিষয় এব প্রধাপতিবৃষ্, ষচঃ সঃ প্রধাপতিবৃষ্, মচঃ সঃ প্রধাপতিবৃষ্, মচঃ সঃ প্রধাপতিবৃষ্, মান্তবং—আর চ্যাবিষ্টেই ভূমিতার্বঃ, আম্বাদ্ধিবব্যাব্যাক্তর হিছে । ইলিনা মানি ভ্রমানে ক্ষাক্তর হিছে । ব্যক্তর বিশ্বাধিক হার্মিক ইইবিয়োপাং মান্তবিহি । ব্যক্তর বিশ্বাধিক হার্মিক হার্মিক ইইবিয়োপাং মান্তাক্তর হিছে বিশ্বাধিক হার্মিক হার্মিক

নঃ তেন সভোজ্যাৎ এতাবান্ এতংপরিষাণ আস বজুব হ। কিলারিযাণঃ ? ইতাহ—বর্বা লোকে ব্লী প্রাংগে মরতাপনোছার সম্পরিষ্ঠে
বংপরিষাণে স্থান্তান্, তথা তংপরিষাণো বভূবেতার্থঃ। স তথা তংপরিষাণয়ের
ইম্যান্তানং বেলা বিপ্রকারবপাতরং পাতিতবান্ । 'ইম্যেবং' ইতাববারবং মূলকারপানিরাজাে বিশেষপার্বন্ । ন ক্ষারত সংকাপ্যক্ষেন ক্ষিতাবাপত্তিবং বিরাট্
সার্কোপ্রক্ষের এতাবানাস; বিং তবি ? আন্ধ্রনা বাব্রিত্তিত্ব বিরাষ্ণঃ সভাসম্বন্ধাৎ আন্ধ্রাতিরিক্তং স্ত্রী-পূংসপরিষক্ষপরিষাধ্য পরীয়াক্তরং বভূব। স এব

ह विश्वाह ख्याकृष्यः—'म देश्वादानान' देखि मानानाविकत्तवाद। ख्याबादिक माण्याद ख्याद च्यादा माण्याद ख्याद च्यादा माण्याद ख्याद च्यादा माण्याद ख्याद च्याद ख्याद च्याद ख्याद माण्याद ख्याद च्याद ख्याद माण्याद ख्याद च्याद ख्याद माण्याद ख्याद च्याद ख्याद च्याद ख्याद च्याद च्याद च्याद ख्याद च्याद च्य

जनवार च छेक्षनाम् किन वाक्यकाः—वक्षक नरकः वक्षाः —वक्षवदः, कणा-भक्तार वाक्षवरद्धाः देववर्गाविविवार्षः ; जक्षताः वा क्षभक्षाः वच्यावशः भक्षवर्षः वाक्षानः ज्ञार्षन्त्रः, भूमक्षवरमार कचार भूर्वारक ग्रार्थन, भूमः मन्त्र्रीकशः । तम विक्षमार्षः । कार म अव्यागिकश्वायाः मक्षक्षभाषाम् व्याग्यताः इत्कितः भक्षोर्षम कक्षित्राः मक्षवर देवस्मम्भगवनाम् ; वक्षक्षयार कष्णभवनार मञ्जवा। वक्षाश्वरक्षाः । ३० ॥ ७॥

তেন ভাবেনেভি বাবং। কৰমভিনানবাত্তেণ বংৰাজপনিবাণৰং, চত্ৰাচ জাত্যেতি।
নিপাতোহৰারণে: ভটজৰ প্নরম্বাগোচৰবার্থ:। পান্নাগবেৰ মানুপ্রিকং বিরুপোভি
—ক্রিমিস্তাপিনেনা। সম্রাচি বীপুংসবাজংগভিষাচ জাত্তেহাতি। নমু বেৰাভাবো
বিরাজে বা সংসক্ষরীপুংসাবচন্ত পিওজ বং গু নাজ্যা, সপকেন বিরাজ্ঞাগেবোগাং, ভজ
কর্মিকং বিভাবে জু আন্তালান্তপভিজ্ঞাচ—ইম্মিডি। তথা চ সপজেন ভর্তজা
বিরাজ্ঞাগ্যমিক্রিনিভার্বা:। ভবেৰ ক্ষুর্জি স্বাস্ত্রাদিনেনা। কজ ভহি বিধাকরণম্ গ্
ইভ্যাপভ্যাহ—ক্রিং স্তর্কীতি। ভজ বিধাকরণকর্মেতি পেবা:। কথা ভবি ভাষাবালকা
সভাবভীভ্যাপভ্যাহ—জা এন স্তেতি। ভবাতুণ: স্বেক্রালাপুংপাস্পানিবাণেচ্ছ্রিতি
বাবং। ন কেবলং বক্সং পভ্রমপভাসবাহেবৰ ক্র্যালিকা নির্মাজনা, কিন্তু লোকপ্রমিত্র। উক্তের্যালিকার ভারমিক্রের ভারাবেভত্ কর্মাং, সর্ম্মাজ সভবাবিত্রাক্র স্ক্রালিকারে। বিক্রিক্রের জালাক্র্যবন্ধ্র্কিভি—ক্রম্যালিভি। আলাক্র্যবন্ধ্র্কিভিন সেক্রিলার অভ্যবন্ধনার বাচাটে—ক্রের্জিভারিনিকার। বুলদ্বনিকার্যার বিক্রার্যার

बब्बिनिरक्रर्द बाबानिकमार्विवार - अवधिकि । दशामान्य मन्द्रि अरका कायः

नकरा वनस्य होति, यदेवन द्रम्बदनार-बन्दाहित्वः। वेदरनार वानस्ताहार जाजानः मुजराधः प्राचेन्टका क्यायमण्ट्रता वर्षटक, क्यार व्यवस्थम बाब्द्यार्थन नुन-विवास कामा प्रशास, क्यां विस्तारकीश्तरपूर्वः नव्युविकश्यान प्तः नव्यूतः विवास, क्यांतिक (बाबना । नृज्ञेशनि चार्णावक्रद्यात्राज्ञावस्यत नश्तर्राश्कृत, चनाविकार नश्ताक्रकांक नृश्वीकृत नुक्रशार्कक्षणकार्वक ह विष: नवकार बक्रुवाविनक्षेत्रिकाव-क्राधि-जतिविमा ॥ ६० ॥ ०॥

ভাষ্যানুবাদে। এই কারণেও প্রাধাণভাগরট সংগারাবর্গত ; (बाहरू त्रहे अवाशित निकार क्रिक-शिक वक्त कर करिएक शाहित्वत ना : कि बाबाएको यक बर्जाबनलाइ स्टेबाइलन ; त्रहे एक्ट्रे अवन्त अना-कि अवशाह (काम वाक्रिके वृद्धि अञ्चल करत ना। वृद्धि अर्थ-अछोटे-रचंद्र श्राधिकम क्रीका वा चारवाव । (व लाक चकोडे वच नावेल श्रवानी. তাৰার পক্ষে অভিনবিত বস্তর বিচ্ছেব ব্টানে বনে বে, আকুলতা-অরতি ৰওয়া, ভাষা যুক্তিযুক্তই ৰটে। তিনি (প্ৰকাণতি) নেই অৰতি অপ-मार्गित वह यह एमिनावनकम बनव किह बबीर दोनवार्व देखा वृद्धिन-ছিলেন, -তিনি স্তা-বন্ধ পাইতে অভিলাব করিরাছিলেন। তিনি এইছপ স্ত্ৰীলাতের ইচ্ছা কবিলে পর, স্ত্ৰীসংবুক্তের ভার উাহার মানসিক ভার উপস্থিত हरेबाहिन, चेंश्रेर चार्यमार्क (वन द्वान्श्वक विन्दा वस्त कविवाहिस्त्त । ि'न সভাসভল : এই • + (सरे देव्हात करन अछावान् — এवश्विव दहेवादितन। कि शकात बहेबाहितान, भाश बनिएएएम-बन्दर हो ७ पुक्र विक्रम सिवासकाव क्रमानावास्त्र क्रम भवन्नात् विविक्त इहेवा एव भविषात वर्षे. क्रिक (महेद्रम - (महे महिमानहे बहेशां हरमन । छिनि खेळम जावनायुनारक जानमात अहे (क्ट्रकहे हुहे जात्म विकक्त कदिशाहितन। "हेनरवन स्वरः" (अहे (प्रकृत के अहेबन वित्यव कतिया निर्दित्य चित्रता अहे (व. बुलक वन बहेरक विवाहेरमध्यत देवलकना अवर्णन कवा, चर्चार कृद रवक्रम আপনার স্বরুণটি সম্পূর্বরূপে বিয়মিত বা বিষ্কৃত করিবা পদ্ধাৎ স্ববিভাবে পরিণত বর, কিন্তু বিরাট্পুরুষ সেত্রপ আপনার পরপটি সম্পূর্ণরূপে বিষক্তিত कामा केक्क शतिवानिविधि दम मारे : शतक छात्रात यह ग श्रास (दक्षण दिन, त्मरेक्षमरे श्रीहर्ण ; जाननाव जारनाच मण्डाबान छोवा वरेटक चळ्डा, मवानिकिक जीपुक्रमाकात अक्षि वृतिरङ अधिवाक श्रेताविरमतः क्षि राहे विद्याष्ट्रेतरणत (कामक पविवर्तन वृत्र माहे। "नव अकावान्" अहे नावामाविकत्रना वरेटक पर्वीर 'ना' नररप्त नरिक 'अकाराम्' नरपतः बरनक मरकर निर्देश रहेरकर बहेम्बन वर्षदे वरशक्तिक स्टेरकर्स (>)।

त्नरेक्षांन प्ररेशात भावन कवारकरे--- (पर विकास कहारकरे निक क शक्ती स्वैदाहिन : देवारे वरेन वाववावनिष 'क्ष्मिकि' (शक्ति क शक्ती) नामन निर्माहन या बुध्यशिक्ष्यमानी । (ब्राह्य करें (ब. द्वीशृति, वेश चाचावरे चर्चाध्य, द्वयन पुरमणात्व धवक्रियातः : (महे (६७ भागनातः वाविष्कः) नहीं विकित्यने चर्चार चर्क चर्क दुर्शन चर्चदुर्शन,-स्वत-भविद्यत्वत भूत्य त्वम चर्चाःत्म पश्चिके-बारक । वात प'तश्ररत पूर्ण कावात पर्दश्यम (पर्दारम), छात्रा निर्देशम,-निर्देश, वर्षार वामनावरे वर्षकृतमः विराम । वासवहा ववि अक्षा विवाहित्तनः, वाक्षवदः। परवतः वर्ष अहेवन-वद् वर्ष-वद्याः, बर्कात वद-वक्षवद ; छादाव भूख-वाक्षवदा [छाद्र छ च अछाद्र,] 'देववदाचि' वैदांत मारावद : अवता, रक्षरय अर्थ । जना, जीशांत गूळ -- राक्षरका · (प्रत्र् वर्षारमञ्जन करे गुक्रवावर व्याकान वर्तार जोजन वर्षारनमूक, तारे ११जुरे मराबाबरमक भन्न विवासिक व्यक्तारम (ययम पूर्वता खाल वय, (अविव विवादिक भरत शुक्ररवर हे मृक्टवर व चमवाई—बोटवर वाता भूगील मात्र करत । त्न दे खेबान्छ, -वादाव बलद नाम वक्, कि न बाननात न्वोद्दान नर्वक्रिक (मडे क्लबनामाडी कविशास मक्क श्री-मुक्कात खेननस वहेशकितम। त्रहे केनश्रवामत काम ब्रह्मांत्रन क्यानांक कविशाक - केरलह बहेबादि sees of

সো হেরমীক্ষাঞ্চকে কথং সু মান্ত্রন এব জনয়িত্বা সম্ভবতি, হস্ত ভিরোহ্ দানীতি, দা গৌর ভবদৃষভ ইতরস্তাত দনেবা ভবৎ ভতে। গাবো-হলায়ন্ত্র, বড়বেভরা ভবদশ্বর্ষ ইতরো গর্দ্দ ভীতরা গর্দ্দভ ইতরস্তাত দমেবা ভবং তত এক শক্ষজায়তা হক্তেরা ভবদস্ত ইতরোহ বিরিভরা

⁽১) ভাংপ্রা—শ্রুভিতে 'সং এতাবান্ খাস' 'তিনি এই পরিমাণ কইরাভিলেন' বলা কইরাছে। ইকা কইতেই বুরা ব'গতেতে বে, তিনি ু 'সং ', বী-পুংভাব প্রকাশিত কইবার পূর্বে বেরূপ হিলেন, টিক সেইরূপ গালিরাই 'এভাবান্' (এই পরিমাণ) কইরাভিলেন; প্রভাৱে, সৃভিকা বেরূপ ঘটাভাবে পরিগর গর, ছঙ্ক বেরূপ হবি আভাবে বিকৃত কর, ভিনিত বহি টিক ভত্রপেই আগনার পূর্বেতন ব্যৱপতি বিভাগ করিবা, ব্রী পূং-পরিঘভারতে প্রকৃতিত কইতেন, ভাষা কইলে 'তিনি এই পরিমাণ কইরাভিলেন' না বিশ্বা 'ঠাছার এইরূপ পরিমাণ কইরাভিলেন' বাবাই সঞ্চত কইত, কিন্তু সামানাধিকরণা যা অভেয়নির্কেণ কর্মই সঞ্চত কইত না।



বেষ ইভরভাতস্থেৰাভৰৎ ভভোহজাৰয়ে।হজারভৈৰনেৰ ৰদিকং কিঞ্চ বিধুন্না পিশীলিকাভ্যন্তৎ সর্বনস্থলত ॥ ৪১ ॥ ৪ ॥

व्यक्तावारः। मा (मृत्रीका) हेतर (मवत्रमा), के र (निवर्त) क्रेकारहाक (मर्मान चारनाहमार क्रवरही).-- म (विकार्क) या /यार) चाचना वर बर्मात्रका (केरनाक) करार मक्षतिक (केनमक्षित्र) एक (त्याप) खिरबादगानि चढिला खरवत्रम्) वेडि , [अवर मिन्डिस) ना त्योः (वाक्या) मध्यर ; [क्रम्या: खर (ठाँडेश्र र्वाक्या] वेकाः (मक्रः चलि वे क्रम्यः (वृष का न्यू ' छार (त्याक्रमा: मछक्रमात्वय । मयछ बद (छेन्त्र हवास् ; छछः (छत्रार छेननबनार नावः चनावतः । छेरनबाः ; चनवतः ३७४। ं मंठक्रमा वह्नवा अपी) अठवर, ३७०: (बङ्ग्फ) अपनुषः (अपन्यानः) : हेटडा मंडक्षमा गर्फडो, १ठडा बद्धा गर्फडा [मन्] छाव् (नड-ब्रभाम । এव সমভবং উপপত:); छछ: এक्पकः (व्यविक स्पृत्य-वर्षाप्रवार-गर्पव्याम्) वर्षाप्रव ; देवदा वका वर्ष्यर, देवदा वका (वका: [चक्रवर] देखता व्यविः (प्रवा), देखतुरु (प्रवः चक्रवर ; अवरह्मनः प्रमुह) छात् अव नवकवर, छछ: (छत्रार नश्नशर अव्यावह: (व्यान्ड व्यवह: বেংক অভারত ; আ শিশীলিকাতা: (শিশীলিকাৰ্ আরভা) বং কিঞ विष्मः : श्री-पूरणावाष्मकः वषः , ७६ नसम् धवस्य । पूर्ववस्य । चम्चक : উৎপাদ্যামাস) [यस्तीय अकार्लाल्ड] a) s s s

আমাকে আপনা হইতেই উৎপন্ন করিয়া আমাতেই আবার উপগত হইলেন কি প্রকারে পুরা করিয়া আমাতেই আবার উপগত হইলেন কি প্রকারে পুরা হটক, আমি ডিরোহিড হই—রূপান্তরে আবৃত হই; এইরূপ চিন্তা করিয়া গিন গো হইলেন, ডক্র্পনে মনুও ব্যক্তরূপী হইয়া ভাষতে উপগত হইলেন; সেই সংসর্গের ফলে গো-আভির উৎপত্তি হইল; শভরূপা আবার অশ্বরূপা হইলেন, মনু তথন বলবান অশ্বরূপ ধারণ করিলেন; শভরূপা গর্দান্তী হইলেন, মনুও গর্দান্ত হইলেন; এইরূপে ভিনি সেই শভরূপাতে রুমণ করিলেন; ভাষতে এক্ষক (বাহাদের পান্তে একটিমাত্র পুরু থাকে, সেই অশ্ব, অশ্বরূপ অভ (হাগ)

হইলেন; শভরাণা আবার মেবরূপ ধারণ করিলেন, মৃত্যুও মেবলারি গ্রহণপূর্বক ভাহাতে উপগত হইলেন; ভাহার ক্ষণে চাগ ও মেবলাডি কম্ম লাভ করিল। এইরূপেই শিশীলিক। হইতে আরম্ভ করিয়া যে কিছু ব্যাপুংভাবাপর প্রাণী আছে, সে সমুদয় প্রাণী সৃষ্টি কবিলেন। ৪১ ॥ ৪॥

শাহ্রের ভাষ্যক। সা শতরণা উ হ ইরং - সেরং ছবিতৃণমনে বার্তং প্রতিবেধবল্পরতী কলাককে.—'কবং লু ইববক্তান্,বং বং বান্ পাত্মন এব বনরিছা উৎপাছ সন্তবতি উপপঞ্চিত : বরাপারং নির্দিণ, অবং ব্রেরানীং তিরোহসানি—ভাতান্তবেশ তিরুলা তবানি'ইতোবনীকিছা অসৌ সৌর তবং । উৎপাছ-প্রাণিকশ্বতিশোহরণনারাঃ পুনঃ পুনঃ দৈব র'তঃ শতরপারাঃ বনোশ্চান্তবং। ততক ব্যক্ত ইতরঃ তাং সমেবাক্রিলভালি পূক্ষবং। ততো গাবোহলারত। তথা বড়বা ইতরাতবং, অধ্যয় ইতরঃ। তথা পর্কতী তরা, পর্কত ইতরঃ। ততা বড়বাব্রেরাদীনাং স্ক্রাথ তত একশকং একপুরক্রাত্তরপর্কিছাধার অরমজারত। তথা অব্যেতবাতবং, বংশ্বাপ ইতরঃ। তথা অবিবিভরা, মের ইতরঃ। তাং সমেবাতবং। তাং তামিতি বীলা; তামকাং ভারবিক্তি সম্ভবন্থেতার্থঃ। তত্ত অকাক্ত শব্দক্ত অলাব্রেরান্তার এব্যেব ব্যক্তি ক্রেরান্তর্বান বিভরঃ। তত্ত অকাক্ত শ্বন্তক্ত অলাব্রেরান্তর এব্যেব ব্যক্তির সম্ভবন্থেরেতার্থঃ। তত্ত অকাক্ত শ্বন্তক্ত অলাব্রেরান্তর প্রেরান্তর বিভরঃ। তাং সম্বেরান্তর সম্ভবন্থেরেতার্থঃ। তত্ত অকাক্ত শ্বন্তক্ত অলাব্রেরান্তর। এব্যেব ব্যক্তির সহ অনেনৈর প্রায়েন তৎ সর্ক্রম্বন্ধত ৪গং স্ইবান্ত্র ৪১ ৪ ৪

টীকা। দার্ছং প্রতিবেধনিতি 'ন সংগাত্তাং সমানপ্রবর্গাং ভার্বাং বিকেড ইভানিকমিতি থাবং। প্রকৃতাং চীলং বং ছিত্রগননং, মাতৃত্তভাপকাং প্রকাং পিতৃত্তভাসপ্রমামিতি পুতেরিতি নমান—কথমিতি। ভরোজাভাত্তরগননং কথমিত্যাপ্রভান ন্যমুক্ত
নিতি। প্রস্তুরগারিতাবে তু ন কারণমহাত্যাপ্রভান-উৎপ্রস্তুর্ভি। ভত্তভা
পোলাবানস্বর্গনিতি বাবং। গরাং ক্রমার্থ- নিবংসভ্রনং ভতঃপ্রভাগে। ভত্র ভেরার্থপ্রেটা সভাবিতি বাবং। বাকার্যর বীপা বিবক্ষিভেত্যান—ক্রমিতি। ভাষেণাভিনম্ভবনাত্ত্যাক্রমানিতি। ভাং রক্ত্রাং ভাং গঠনীং চেতাপি এইবার্। ভত্তা মিথংসভ্রনাত্ত্যাভাবিতি বাবং। বিশেষাপানামন্ত্রাং প্রভানস্প্রেলাসভ্রণ ন্যানঃ সংক্রিপ্রাপ্রসভ্রনাত্ত্যাক্রমানিতি। ভাং রক্ত্রাং ভাং গঠনীং চেতাপি এইবার্। ভত্তা মিথংসভ্রনাত্ত্যাক্রমানিতি। ভাং রক্ত্রাং ভাং গঠনীং চেতাপি এইবার্। ভত্তা মিথংসভ্রনাত্ত্যাক্রমানিতি। ভবিত্তভাত—ইদ্রং মিপুনামিতি। প্রকর্পরায়েরা ভারার । হার্যাং গ্রাহ্ বিশ্বস্থামিতি। প্রকর্পরায়েরা

ভাস্যান্ত্রাদে। দেই পূর্বোজ এই শতরণ। বছর চ্টিভূগবনে প্রিশামোজ বোব শরণপূর্বক চিত্তা করিছে লাগিলেন—ভাগ, এরণ অঞার্য

কিয়াল সম্বেশৰ হব ৫ বে. আয়াকে আপনা হইতেই উৎপাৰৰ কৰিয়া কলা-খানীয় সেট আয়াকেট সজোপ কবিভেডেন। যদিও ইনি (মছ) ছবানত मिन क रहेम, छवानि चाबि छिटा दिए वहे-विश्वाणी व नदी स अदन करिया चानमारक चायक कवि । पंजबना अहेबन विरयहमः कविश शाबना स्हेरनम । विश्वित क्षांबित कर्वाक्रमारत केरनाविक पठवनात क छहरनावक पछत पत वादरवाद (मः अकडे काटबड केंद्र बहेटक मानिम। चक्रमा त्याद्रम बावन कविट्रा भर बच्च व बब्ध (द्वर) इतेवा ठीहारू (बज्जनारत) केननक क्ट्रेशनन, देखानिय बााबा। भुक्षेत्र । (महे मुखारमक करन 'मिकाफ क्याना छ करिक : वष्टक्रमा वस्ता ((पाठको) प्रहेतन, चार वस् अक्षे चर्च बहेर्लम: (महेन्रम भटन्नमा हहेर्लम मर्फ्डी, भारत यह बहेर्लम मर्फ्ड। क्षत्रात्। बड्या व व्यवस्य १ फ छन्न नशस्त्र कतः धकन्य, व्यवस् धकन्त्रविनिक्षे चय, चयक स् व मर्थक, अहे किमहि कारिय क्या बहेन । अहेब्रम चाराव पठवना वहेराम चका, चार मन वहेरान कात: (महेक्य नक्क्या वहेराने जी-त्वर, चार यम बहेतान (यर: यम छाशास्त्रक छेननर बहेतान:---वर्गात 'छाय' भाषत बोजा ' विक्रांक) बिकार केंद्र : [मुखदार वर्ष बहेरहरू—] ताहे ताहे चवाटा. अवः तारे ११वे (वन्त्रमाता श्राह्माकटारे केमना वरेशक्रिताना নেই সম্বের কলে ছাল ও বেবছাতির কল হটল। কলতে পিশীলিক। रहेट जावन कांद्रश का कि विश्व-जी-मूक्कावामत आने जाह. खरमम्बर्ग फेक्स अनामो अक्षमात्व केरलावन कवितम () ' 1 85 8 8 1

সেহিবেদহং বাব স্প্তিরুম্মাহত হীদ্ধ সর্ব্বমুস্কীতি, ততঃ স্প্তিরভবৎ, স্ক্রাধ হাস্তৈতক্ষাং ভবতি য এবং বেদ ॥ ৪২ ॥ ৫॥

(১) ভাংগণ্য—আছিপুতৰ প্ৰজাণতি আগবাৰ বানন নজন প্ৰভাবে আগবাৰ বেছ কইতেই একট প্ৰী ও পুতৰবৃতিতে বিভক্ত কইলেন; সেই প্ৰী ও পুতৰবৃতি ছুইট জাং। কইলে বছৰঃ পুৰক্ না কইলেও, ভাষা বাপাই পুৰগ্ভাবে স্প্ৰীকাণ্য নম্পাকৰ কৰিছে লাগিলেন; ক্লমে বছৰা, গো প্ৰভৃতি আণিনিবৰ স্প্ৰী কৰিলেন এবং উভ্জোভন নেই স্প্ৰীত বিভাগেই এই বিশাল আণিতখন পৰিপূৰ্ণ কইল। পুতৰতীয় নাম ক্ৰম বস্তু, আৰ বীতিত্ব নাম ক্ৰম প্ৰজন্ম।

বীবারা বনেন, এই আণিকাতের শাস্তি এক নবরে হয় নাই, অকৃতির পরিণান-বৈচিত্রের অথবা করনের ভূরোকর্নকান্ত অভিজ্ঞভাত করে এই অবং বিভূতি লাভ ভরিয়াতে, ভাষাবের বৃত্তি ইবার সম্পূর্ণ বিশ্ববীত ও বৃত্তিবিকত।

ं क्षाक्राक्षां । मा (बाबानिका) [देवर बनद करें] जरवद (भवक्क); वर, भरर (अवान्धि: वाव (अव पृष्टेः (एवारक देखि क्कि-क्कैर वस) अन्ति (क्वावि); वि (वसार) देशः (वृक्षवांवर) नर्वर चक्क (क्षेत्राम् व क्) हेडि: छड: (रक्षार अवानिष्टरम क्षेत्राचम चाचानः निविद्यन, छन्तार । सृष्टेः (सृष्टिनाया) चक्रवर [अवानिकः]; कः अकः (मृष्टिककः) (वह ावकामाकि), [तः] अप (अवागरकः) अक्कार स्ट्रेगर कर्नाक (अक्चिक-स्ट्रिश कर्नाक रेकार्य: - ॥ ॥ » ॥ ६ ॥

मुक्तांन्युत्वाप्तः त्नडे खबागडि এই बगर गृष्टि कविद्रा मत्न मत्न চিন্তা করিলেন—বেহেডু আমিই এই সমস্ত কগৎ সৃষ্টি করিয়াছি, সেই (इफ बामिइ एहि, वर्षार बामाद एके नमय नार्ष है मर्यक्रम ; डीहाइ সেই চিন্তার কলেই সৃষ্টি নাম হটল। যে লোক প্রভাপতির এবংবিধ স্ত্তিত্ব অবগত হন, তিনিও প্রজাপতির স্ফ অগতে প্রভুব লাভ 4 9 4 58 4 5535

न्याक्षिक्काकाका । त वानागंतः तर्वविष्ट । वर्षः । क्षम् १ चदर वान चदरवर मृष्टि:--एकाउ केठि मृदेर कन्नकृतात मृष्टिर्वित,--क्यम जुहेर क्यर वम्राव्यक्षार व्यवस्थाति, स भारता वार्तिकारत ; कृष्ठ ४७९ १ जहर हि क्यार हेवर नर्बर कनक्मक रुहेवानचि.छत्राविठावीः वचार रुहिनास्व चाचान(बनाकाबाद क्षानांक:, कठलचार मृष्टिव्कवर मृष्टिनाबाकवर । मुद्रााः ৰণতি ৰ অত প্ৰকাশতে: এততাৰ এতাত্বন ৰণতি স প্ৰবাশতিবং প্ৰটা ভৰতি, সায়নোহনভুত্ত লগতঃ। ক: १ ব এবং প্রকাপত্তিবং ববোক্তং সামানোহ-নপ্তস্কুতং লগৎ 'নাব্যাত্মাবিভূতানিছৈবং লগদংমত্মি'ইতি বেদ ৷ ৪২ ৷ ৫ ৷

িকা। বছাপ মধানিক্টারেবোভা, ভবাপি দর্জা প্রস্তাইভবৈতি নিভবংকুভাত-स अञ्चालकितिक्ति। परमंदिर अप्रमुखनः रिनवर्शक-कथिकितां । एपर न्द्रेत्रवीकाव्यादीत्क, क्वृद्धिवादा: अक्वात्यात्रविकानकाविक्यात्रकाळ देखीछ। प्रवर्ष-बुक् । वाकार्थवार-यन्त्रद्यक्ति । क्षम्बनाइनि अञ्चनववाञ्चका परस्य क्ष्मीकि नववः। ७व दश्कृतार - मान्द्रकामचामिन्छ। अवकानार्वतार-सिक्छ। वन्द्रवर-वारिकाल्याक्ति नवारात-कुछ रेखााहिसा। व रि न्हें सहै वर्गावस, वरेख त्कम (कम बाहानिवर अवद्यावादिकार्यः । कथः एक्टेबिकार्यः वास्तरे—सम्बाहित्कि । किम्प्न् यहे दक्त विकृषिक्रमनिरहेकामकाार - ऋक्षेत्राधिक । अनीव करवीवि नववः । नाकार्य-बार-असामांख्यमितं ॥ १२॥ १॥

অবেত্যভানন্থ স মুখাচ্চ যোনেইস্তাভ্যাঞ্চাগ্রিনস্ক্রত, তম্মাদেতত্বভগনলোমকমন্তরতে। অলোমকা হি যোনিরস্তরতঃ। তদ্যদিদমান্তরমুং ধন্ধামুং ধন্ধেত্যেকৈকং দেবমেতক্তিৰ সাবিস্প্তিরেষ উ ভেব সর্বেধ দেবাঃ।

অব যৎকিঞ্চেদমার্ক্রং তক্তেতসোহস্কত, তত্ন সোমঃ, এতাবদা ইদত সর্বমন্নকৈবানাদশ্চ—সোম এবানমায়রনাদঃ, সৈবা ব্রহ্মণোহ তস্তিঃ। যচ্ছেদ্রসো দেবানস্কতাপ যশার্ক্যঃ সমস্বতানস্কত তন্মাদতিস্তিরতিস্ক্রাত হাস্তৈতভাং ভবতি য এবং বেদ ॥ ৪৩॥ ৬॥

স্কুলোথ:। অব (ত্রী পুক্ষত্টেরন্ত্রং) সং প্রকাপতিঃ) অভ্যন্ত্রং স্থান্ত্রং); [ভাষের প্রপঞ্জন্ম আহ—। ইভি (এবংপ্রকারের) ব্যাব বোনেঃ ব্যাভাগি চ (বানিভাগি) (ব্যাভাগি স্থানাথ আদ্ধানা ব্যাবাশি (বোনেরি ভার্মা) আরম্ অভ্যন্ত (স্ট্রাম্); ভাষাং (বহন-আমিরোনিভাগি (বাভাগি) এতং উত্তরং (হভৌ সুবং চ) অভ্যন্তর (অভ্যন্তরা ।

पर्यारंग्न) परमायकर (शायवर्षिकर) । वि (क्यांवि) (व्यांवि) वि (क्यांवि) । कर (क्यांवि) व्यांवि) व्यांवि । कर (क्यांवि) व्यांवि । व्यांवा । व्यांवा

ভিজ্ঞা পরিক্রজঃ, ইবানীং ভোগানয়নঃহ—] পর । পরিস্টানয়রং)
ইবং (অক্সুরনানন্) বং কিক ্রংকিকিং) পার্রং ্ররায়্রকং বন্ধ : গার
ইতি বাবং ; তথ্য পর্নং ' রেচসঃ ' প্রজাপত্যে স্বভীবাং বীজাং) অস্তর্জ্ঞ ;
তৎ (প্রজাপতিনঃ স্টাং ত্রায়্রকং বন্ধ) উ নিশ্চরে) গোরঃ ; অন্ধনীয়ঃ
লোমঃ)। ইবং সর্নং (কর্মং) এতাবং বৈ (এতংপতিনানন্ — পরং চ এব,
পারাণঃ চ এব (ভোক্ত-ভোগান্যকবেন); [তঞ্জ] সোরঃ এব পারং (তক্ষীরং),
পারিঃ এব চ পারাণঃ (প্রজাভাজা)। সা এবঃ (বন্ধারাণা ' রন্ধনঃ (প্রজাপত্যে)
পাতিস্টাঃ (আম্বনাহিশি পর্বিজঃ), বং প্রের্মঃ প্রবাজতবান্) দেবান্
পাস্কত (স্টবান্); (কুত এতং গ ইতাহে—) বং ' প্রজাপত্য পরং]
মর্ন্মঃ (মংলবর্ষা সন্) অস্তান্ (মংলপ্রান্— সমরান্) অস্তর্জ্ঞ (বেলান্তরেকারং
পাতিস্টিভবং) বেবং সঃ প্রজাপত্যেঃ ভিচাতে)। বা এবং (ব্রোক্তপ্রকারং
পাতিস্টিভবং) বেবং সঃ প্রজাপত্যে । অতিস্টাং ভরতি
(প্রভবতীত্যর্বঃ) ৪০০ ৮ ৪

শ্লাকুবাদে। অভংগর প্রচাণতি মন্ত্রনিয়া করিয়াছিলেন;
[সেই মন্ত্রন ঘারা] হস্ত ও মুখরেপ উৎপত্তিয়ান হটতে ছোকুয়রপ অগ্নি স্থি করিলেন; এই কারণেই এই উভয় য়ান (মুখ ও হস্ত) অভ্যন্তরভাগে লোমবিহীন; উৎপত্তি-মান গ্রীচিক্তও অভ্যন্তরে লোমবিহীন; উৎপত্তি-মান গ্রীচিক্তও অভ্যন্তরে লোমবিহীনই। অভ্যন্তর বাজিকের। যে, বলিয়া থাকেন, 'অমুক্তের বাগ কর, অমুক্তের বাগ কর', ভাহাতে ভাহার। ঐ সমস্ত দেবভাকে বিভিন্ন বলিয়াই মনে করেন; [কিন্তু ভাহা ভাহাদের শ্রম;] কারণ, ঐ সমস্ত দেবভা এই প্রজাপত্তিরই স্থিটি, এবং ইনিই সে সমস্ত দেবভাবরূপ।

चकः शत्र, वांदा किंदु चार्ड चर्चार सरमत्र रख, जारा किनि त्रकः

ইতৈতে সেনি : এই প্রস্ত শৃষ্টিই একছ্ডরাপ্ত -আর ও আন্তর্নন (ভোক্ত-ভোগ্যাপ্তক); ভরবো সোনট জন, আর অগ্নিই জনাব অর্থন আনতান্তা। তিনি বে, নিজের অপেকাও উৎকৃষ্টকর বেবলাপারে শৃষ্টি করিয়াছেন, ইহাই জন্মের (প্রজাপতির) অভিশৃষ্টি অর্থাৎ উৎকৃষ্ট গেছেডু, তিনি নিজে বরণশীন (মর্তা) ইয়াও জন্মত অর্থাৎ বরণ-বিহান দেবভাগণকে শৃষ্টি করিয়াছেন; সেই হেতৃই ইহা অভিশৃষ্টি। বে লোক প্রজাপতির এই শৃষ্টিভঙ্ক বধোক্তপ্রকারে আনেন, তিনি নিজেও প্রজাপতির অভিশৃষ্টিতে প্রভুক্ত লাভ করেন । ৪০ । ৬ ।

न्नां क्ष्य क्रांच्याकः। वरः न श्रवानिकंतिवरः विष्नावरः रहे।

श्रवानिवर्गनिवर्गार्णवर्गः निरुष्टाको—वन-देठि नव्यवर्गिनवर्गार्थन्

—वरमम श्रवादिन प्राय हरको श्रविना वाध्यप्र वाध्यप्राम व्यवस्त्रवर्गार्थः।

त प्रार व्याधार परिषाः प्राक्षः श्रारम्भावाकः वाधिवृत्याम व्याप्य श्रवादनः।

त प्रार व्याधार परिषाः प्राक्षः श्रारम्भावाकः वाधिवर्णाः विष्णः व्याध्य व्याप्य व्य

जना वनावान शाः बाइजार वर्गाणकाविकः कवित्रकाछि-नित्रकातः कवित्रकः। जनारेवकः कवः बाइबीवारकि व्यक्ति प्रको वावनकः। जना केल केश (६६), जनावान वर्गाविनकः वित्रः। विश्व विद्याप्ति वर्गाविनकः विद्याः नित्रकातः विव्यः। जनार विद्याप्ति वर्गाविनकः वर्गाविनकः वृत्रः । जना भूवनः भृष्ठोरेवकः वृत्रः । वर्गाविनकः वृत्रः । वर्गाविनकः वृत्रः । वर्गाविकः वर्णाविद्याप्ति वर्णाविकः। वर्गाविद्याप्ति वर्णाविकः। वर्

गरेगरः अक्ष्रवादर्व नाग्वित्व वर्षकाविक्षाद्वन वर्षन्वकावद्यनित्या-

इक्लानगढकांगनिकः

निवास । प्रश्निका महत्त्वर (क)। यर यस वर्ष सकत्रत (करनवासिका वात्रकारक विकार यह व्यादः—'व्यूविश यक, व्यूविस यक दिवारि—वात्रवासकवादि-विश्ववार विश्ववर व्यावादिकाकिसीयः। यर म उदा विकार ; व्यादकटेनार साकात्रकार मा विकार है व्यादकटेनार साकात्रकार मा

चल विश्वचित्रकात - भर्त धर दिश्वनाभक देखारकः मानादीकाभरतः। भर्त धर क् महर्त्वार---"देखार विलय देखान्यविष्यादः" देखि अरकः - "८व वर्षेत्रत देखा धर ध्यामानिकारस्य मार्का (एवाः" देखि ह अरकः ; चुरक्क---

"अष्ठरबरक वरवादिर प्रष्ट्राटक वाधानिक्" हैकि ।

"বেহিনাৰভীক্ৰিৰোহঞাৰঃ ক্সোহৰাজঃ স্নাডনঃ।

नर्सक्षमाश्रीहरू: न এर पश्रम्पाकी ।" देखि है।

সংসাব্যের বা আং,—''সন্ধান্ পাপান ঔবং" ইতি জতে: ; ন অসংসারিবঃ পাপারাব্যসাকাহতি ; ভরারতি-সংবোদজনগাচ্চ ; ''অব ব্যব্যঃ সংস্কৃতান-স্ফেড ইতি চ, ''বিশ্ববাপ্তং পক্তত আর্থানন্" ইতি চ ব্যবর্গাৎ ; প্রতেশ্চ কর্মবিশাক্সজন্মান্ত্রান্

"अण विष्णुका श्रदा महामनाक्रामन है।

केवनाः नाषिकी (मणाः निजनाकृत्रनी विनशः । केलि । व

व्यविषयः विक्रवाबीक्षणणाद्यः श्रीमान्।वाषाण वृद्धि (६६ ; म ; क्यामान-वाणगास्त्रविद्याबाद क्षेणाविश्वित्वमणकार विरामनक्षमाकत्रमूलणवारण ;

"बानोबा एवः उवछि नद्यास। वाछि नर्वछः :

क्यः महावतः (वयः महाता काठ्यईि ॥"

ইতোৰণাথিকতিতাঃ। উপাৰিবৰ ৎ সংসাৱিষ্য, ন প্রবার্থতঃ; বডোহ-সংসার্থের। এবংশকদং নামায়ক ছির্ণাগর্জসা। তথা দর্মতীবানাষ্, "তথ্বসি" ইতি ক্রতঃ। হিরণাগর্জভূপাধিভয়াতিদয়াপেকরা প্রারশঃ পর এবেডি ফ্রতিশ্বভিবালাঃ প্রস্থতাঃ; সংসারিষ্ট্র ক্রিণের দর্শরিছ। জীবানাং তু উপাধিশভাক্তিবাহল্যাৎ সংসারিষ্ট্রের প্রারশেহ্তিলপাতে। ব্যায়ুভমুৎমোল্ডিলাপেকরা তু সর্জঃ প্রদেশভিবাহতে ক্রতিশ্বভিবাইনঃ। ৫

ভাকিকৈত্ব পরিতাক্তাসমবলৈঃ 'অভি নাতি, করা অকর্ডা'ইভাত্তি বিশ্বতং বহু ভর্করভিয়াকুনীরভঃ শাস্ত্রার্থঃ; ভেনার্থনিক্তরো হুর্ম্মভঃ। বে ভূ কেবল-

⁽ क)--विद्यापणाद्यवाणविष्याद्विष्यादेवेद, विश्व व्यवकादा देखि वृद्धि वृद्धि वृद्धि वृद्धि वृद्धि वृद्धि वृद्धि

भाषासभाषिकः भाषपर्गाः, त्यवार क्षणाञ्चितः देव विक्रिकः भाषात्वी त्यवकाविविवतः। ६

ভত্ত প্রভাগতেরেক্সা বেবসালোভ-সকলো ভেলো বিবজিত ইভি—
ভত্তাবিকভোহতা, আভঃ নোম ইণানীবৃচাতে। অব বংকিকেম লোভে আর্র্রর
প্রবায়কম্ তে প্রভস আবানো নীকাম্মকত; "রেভস আগা"ইভি প্রভঃ।
রবায়কক নোমঃ; ভসাং বহার্ত্রং প্রভাগতিনা হেভসঃ মুইন, ভরু নোম এব।
এভাববৈ এভাববের, মাভোহনিক্স, ইয়ং সর্বায়: কিং ভং । অর্ত্রেক্রবিরভে
লামভাগাণারকম্ ; অরায়কান্তিঃ, উভ্যাং ক্রম্বান্ত। ভত্তিরক্রবিরভে
—সোম এবারম্, বরভতে ভবেন নোম ইভার্বঃ; ম এবাছা স এবাছিঃ;
মর্থবলান্তি মননারবম্। অরম্বন্তির ক্রিং মুর্যানঃ নোমপ্রস্কার ; সোবোহলি ইভামানেংছরিরের, অভ্যাং। এবম্বানায়েকং জনং আত্মতেন পর্বন্ত্র
ম ক্রেন্ডিলোরের লিগাতে; প্রভাগতিক্ত ভবভি। সৈয়া ব্রহ্বং প্রভাগতের
অভিস্কিরান্ত্রনাহ্পাতিশ্র।। ৭

কা সা ? ইতাহ - বং প্রেরস: প্রবসাতবাহাল্বর: স্কাশাস্থ ব্যাহস্থক বেবান্, তথাদেবস্থীরতিস্টি:। কবং পুরবাহনেছিলেরা স্টি: ? ইতাভ আব — অব বস্থ বস্থাং বর্তাঃ সন্ বর্ণবর্তাঃ সন, অসুচান্ অবংবধর্তিবা বেবান্, কর্মজানবহিনা স্থানাজ্বর: পাপান ওবিছা অস্থক; তথাবিহন্ অভিস্টেকংক্টজানক ক্লমিভার্তাঃ। তথাবেভাষ্তিস্টেং প্রজাপ্তেরাজ্ব-ভূতাং বো বেদ, স্প্রভাষ্তিস্টাং প্রজাপ্তিহিদ্ ভব্তি প্রজাপ্তিবন্ধের প্রতাং বাবিহ্ ৪০০ ৬ ৪

িকা। নমু নর্মা স্টেকনা, উকং চ ধার্যাণভের্মিকৃতিনভার্ত্তনকাং, কিবাপিবাতে, ব্যবস্থার বাকাবিভাগান প্রথমিতি। আবাবভারতিতি স্বতঃ। অভিনয়ন্তর্পনিবার প্রথমিত। আবাবভারতিতি স্বতঃ। অভিনয়ন্তর্পনিবার প্রথমিতা ক্রিকিল ব্যবসাধ—অন্যানিকি। প্রভাগানিকা। ইতরার্থনে চ বোরিপ্রধানে বিভিন্নার—অন্তি স্থাতি। প্রভাগতের্থার ইবারিঃ স্টোর্থনিক করা প্রথমিতা ক্রিকিলার স্থাতিত প্রথমিতা ক্রিকিলার স্থাতিত ক্রিকিলার ক্রিকিলার

'অধিবন্ধত' ইভোতচুণ্দকণাৰ্থবিভাতিতেতা স্টান্তবধাৰ – ভ্ৰম্ৰাক্টঃ বন্ধতিবিপ্তঃ। আবিশ্যেৰ বন্ধণাধিপূৰ্তিত। কলিবং ভাতমত ইভাতৃৰ্ততে। উভাৰ্থ কাণেৰ বাচাতি—ভ্ৰম্নান্তিভিঃ 'ইলো বাৰতঃ' ইভাতা ক্ৰতিবন্ধ্যাধিবী চ প্ৰভিত্তৰকা। বিশং ভাতমুভতি পূৰ্ববংঃ ইবাংভাতৃত্বতা ক্ৰতেত বন্ধান্তৰ্ভেত ভ ক্ৰম্বাৰ্থতঃ 'नास्त्रिक्तां अवश्वक' रेकाका क्षिक्काविक । पृथ्विक्वविद्याः पश्चिमक पका-वास्त्राह्मित्रां अवश्वक । के प्रकारकाश्वर है वर मध्ये द्वार रेक्काविक क्षिक्ति । के क्ष्या । कि क्ष्या । क्ष्य । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्य । क्ष्या । क्ष्य । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्या । क्ष्य । क

ভব্ৰবিদ্যাদিবাভাভ ভাৎপৰ্যাদাৰ—অনুপ্ৰান্তি। প্ৰটা প্ৰজানভিবেৰ শইং সৰ্বাং ভাৰ্যাদিতি প্ৰভাগৰে পূৰ্বোভগ্ৰহাতেৰ ব্যবহিতে সভাগৰতা ভবৈৰ অভিবিশ্বভাগ ভব্ৰবিদ্যাভিবিশ্বভাগৰত বিশাবং বছৰবিভাৰ্যঃ। মভাগৰে বিশিক্ষেপি কৰা প্ৰভাগৰি ভটো ভবভীজাশভাব — অনুস্কৃতি। এতৈ জঃ বেৰবিভাভ ভাংপৰামায় সাম্মেতি। ভাঠকং ভালাপভবিভিবং নামতেগাৎ কৃষুৰু ভত্তমেৰভাবভিবেলাগ বই-পভটাবিশং অৰ্থক্তিবাহেমাজ প্ৰভাগত বেৰানাং ভিন্নভাৎ কৰিবাহেমাৰভাৰিত। প্ৰাৰ্থ-প্ৰভাগিক প্ৰবিভাগে ভত্তিমান মানুহাতি। এত প্ৰতা কৰিবাহেমালভাবিভাগি, ভগ্তভাগ-ভালতৈৰ প্ৰভাগিতিবিভাগিক।বিভাগি—ক্তন্তেভিত। এত প্ৰবা ক্ষাৰভাবে কৰিবেলা বেৰভাগ্ৰহেমাৰ প্ৰভাগিক প্ৰতাভিবিদ্যাশিক।বিভাগিক ক্ষাৰভাগিক প্ৰতাভিবিদ্যাশিক।বিভাগিক বিবিদ্যা বিশিক্তি—প্ৰতাভ ইতি বিশ্বভিবা বিশিক্তি—প্ৰতাভ ইতি । এত প্ৰতাভাগিক হিছি । এত প্ৰতাভাগিক হিছি । এত প্ৰতাভাগিক স্কুলিক ইতি বিশ্বভিবা বিশিক্তি—প্ৰতাভ ইতি বিশ্বভিবা বিশিক্তি—প্ৰতাভ ইতি । এত

व्यक्तिकारका त्याः मर्द्य अवानकिरहत्वकृष्टः, मध्यकि ७०ववनविविवाकित्वा छत्र विश्वविश्वविश् वर्षक्षि-जाटक छ । किश्नानकेक नक्ष्यात्व, क्रिकेटक करत मध्यादिकः বিবেছবিভি বিভাগঃ। ভর পূর্বপদা সুয়াতি- পার এব ভিডি। বছ একভাবেদা-क्षक्षर व्यक्तीलवनवादक, व कृ नश्याक्षका अवानदक्षितकातका आवनवाकावृत्ताहरू---প্ৰাইতি। রখ-রখাণ্ডী প্র-বিবাধে। এবনখা প্রমাথবিবরা। প্রতক পর এব ছিলাবৰ্ড ইতি সম্বয়। ভাষেৰ বাক্যান্তবং শঠতি—যোধজানিতি। কর্থেলিয়া-विवत्रवर्गीक्षित्रवर् । अशाक्षर आध्यक्षित्रीनिवत्रवर्। एक दवसूत्राव-अष्ट्रकार्थ-वारङ ইভি। व ह ভভাগৰং, প্রবাস্তানিভাবাভাবনাভিত্তন নগা ন্রাধিভাগি ভাগান্তন ইভি। ইঞ্ছ ব্ৰচ্চ লাগৰং সৰ্বেবাৰাম্ববাৰি লাক-আনুক্ৰিড । 'পদ্য: দৰণাবিৰ চন্দ্ৰাল-আন্তিক্ষা ইতি। বেছিলো প্রবালা ধ্রোজবিশেষণা, স এর খনা বিরাভাত্তনা ভৃত্তবালিভাত্ত-জ প্ৰবৈতি। ব্যৱাধাণ্ডিযু পাৰ সৰ্বনেবভাগ্ৰণ্ডিত । প্ৰভ ভংগভীভেড পাছ विकृत्वन् ; देवानीः पूर्वन् काख्यवार--काः काट्याट्यान्ति । नर्वनान्यवाद्यन् क्यर बचान्तकः नश्नाविष्य, कवार - म शोकि : वष्टकद्वान्तरनाविष्य अनुकानि मुर्स-शारणावश्वाचीकाताः त्वरः मरमातिरच निष्ठविका।नचारि-क्कट्याकि । **चरवरक**ि ॥ न (क्वमः वर्षापक्षरण्डाव मामाविषा, विश्व वयक्षरण्डाव---ক্রিনাপর্কমিতি। ববোজহেতুনাং সংসাবোর জাগতি অভিজ্ঞাহবয়। কর্মণন वर्गवादिकारः बरक्काकाशः पुरक्षक छर्पमकुष्ठक व्यवानरकः नश्माविक्रवरव्यात---न्युट्क्यर्क्कि । विवाद उत्तक्कारक । विवयरका प्रवासकः । वर्षक्षकिवावित्री दशका वकः। वरान् अकृत्ववात्वा विकास तक्षत्। व्यवकार अकृतिविक तक्षतः। ।

पर वर्षि विविधानास्त्रात् अनापानः श्रमानिक्यसमानिकः हे, रेकालकात् – व्यक्तिकः क्रिवित्तां अविशासक्रीयस्थवार्वः । अस्यकाः स्थानित्रं क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां कृष्ण वर्गायार विकायस्वाषि--- (ज्ञानां जिल्ला) । यस्त्राविष्ठः, वर्गाया । जस्त्राविष्ठः, विकि प्रस्तवासम्बद्धाः विविधक्येजीनायविद्यायायं आयापानिविद्यायाः। प्रस्तवा मध्याविद विरवादर विभववि-किशाबीकि। वेगाविकी भवक विरववकारमधान वाराभाव-ज्याचीम देखि। पांतरक कृष्टेराश्याचा काना वैका र्शनकार्यकार कृष्यांवरका वृत्त अवन्ति ; त्या परम प्रशासित्तात्री यनामा प्रक्रियाचा मुर्वस वाजीय कार्क, कर्ना वानरवर्षीचार्यः। विवाद्यन दर्शविनिकारवन वाकार्वरकत व्यवहारवर इ मुक्रवाचानर न কশিকণি নিক্ষেত্বং পলোটাভাগে—ক্ষক্তবিভিত। আধিপথেৰ ধানভীবেভানিকভারা नुषर्ध । देशानुकम्मकीमार कारमश्रामार--जेलाबीकि । किर करि माहवार्षिकः ? क्वार--चाछ केन्द्रि । पृत्यन नवकः। विश्वनागर्कक बाधनवबात्तवः । अनः विक्रणिकपूर्णभः-ষর্যাত এরমিডি। তভাগার্যাধিবং ন বডে। রঙ্কা, ভিত্ত সংসারিব্যাহণ পাভাবিত-विकालका नृहेक्कि नावाविकनकावाय--क्याद्धाः नर्सभीवावायकका नावावा हाकि शुरमन मथकः। (क्याः परता वयाच वयानताक-छत्वचिक्तिः कवाच कितानरक বিশ্বো: বেনানে অস্ববাধিভিক্তণাভতে ভত্তাব—হিন্তালাভিভিভি। বস্থ অভিস্থতি-वारायु विष्य एक मरमाविषयनि अवर्गारक, मकार, कर कू कविक्वविकाकिस्यकार-क्यूका-तिष्यः । कार्षः । वनशानि पुरायकिकानिकान-जीवानाः विकि। स्वर णरि 'उपनि' '८ण अका ठानि या: विद्धि' देशाविकविश्वविद्यारा: मारक्टल, स्वाह-वादिएकाउँ। १

খনতে ওছনিশ্চরনৃত্বা পরবতে ভরভাববাহ—ত্যাক্তিকৈন্ত্রিত। নবেদ্বীক-বাংক্রিপ সর্বাবশৃত্বপূর্ণ পরবত ভরভাববাহ—ত্যাক্তিত। ব্যাহিন হৈ জ্বিতি । ব্যাহিন হৈ জ্বিতি । ব্যাহিন হৈ জ্বিতি । ব্যাহিন হৈ জ্বিত । ব্যাহিন ক্ষাহাল্য বিভাবশাং বাংনবাবহাল্য প্রাহিন ক্ষাহাল্য বিভাবশাং বাংনবাবহাল্যকরিতি পাতে ন ভাচন হোহকরেতি ভাষঃ। ০

নৰ্ববেশ্যাৰকত প্ৰধাণতে: পভোহন:নাবিদ্য কৰ্মনা বৈপ্নীতামিতি ছিতে বহি অংশতাব্যান্ত প্ৰথম তাংশবান্ত —ক্ত্ৰেতি। বিশ্বত ইচ্যুন্ত প্ৰথম প্ৰিনিন্ধ —ক্ত্ৰোন্ধান্ত । অভ্যানিৰ্বান্ত প্ৰথম প্ৰিনিন্ধ —ক্ত্ৰান্ধান্ত । অভ্যানিৰ্বান্ত প্ৰথম প্ৰিনিন্ধ —ক্ত্ৰান্ধান্ত । অভ্যানিৰ্বান্ত প্ৰথম পৰি বান্ত বাহি —ক্ত্ৰেক্তি । অভ্যানিৰ্বান্ত ক্ৰেণ্ড । বাহান্ত ক্ৰেণ্ড ক্ৰিন্ত ক্ৰেণ্ড ক্ৰিন্ত ক্ৰেণ্ড ক্ৰিন্ত নাম । নামত ক্ৰিনান্ত ক্ৰিন্ত ক্ৰিনান্ত ক্

'বাহিদ্রা' ইত্যানিককেরয়াগরেছকারবাং, কংকর অংগউক্তেরিকরবর্তীভালবর্তে কর্মানিক। কর্মানিক। কর্মানিক। কর্মানিক। কের্মানিক। কের্মানিক। কের্মানিক। কের্মানিক। কের্মানিক। কর্মানিক। ক

ভाष्णाम् वाम् ।—धवार्गाः अवेदार वो गृह्यावर को वनर सृष्टि कविशा आध्यमिक वर्षद निष्यो (नामनक्य (वयश प्रमुक महि कविर्य हेक्क् बहेबा श्रवाम-अध्य 'बव' ७ 'केलि' मण इतेष्ठि अल्बिक वा अञ्चलका क्षकानक-- এडे श्रकारक मृत्य वश्यक वर्णन कविशा व्यक्तिक्रम कविशाखिरमम, चछोडेनिच्ड चक्रुमझ्ल यहन । पर्वन कविश्राहित्यन छिमि इहे हाए মুৰ্থভা মন্ত্ৰ কৰিবা, সেই মূৰ ৬ বজন্মণ বোনি (উৎপৰিস্থান) ব্টটে बाचनकाचित्र अञ्चलारक अधिरारतत स्त्री कतिशाहिरतनः (शरहरू पूर क इस्वत, डेकारे शारकात्री व्यक्ति छैश्यक्तियाम, त्यते (वक्ते वहे डेका शाम অলোমক অৰ্থাৎ লোমবজ্ঞিত; তবে কি সম্বন্ধ অংশই [গোমপুর] ৫ না. — ভাগ মরে, অভবে অর্থাৎ কেবল অভাভবভাগে ' লোমপুর]; প্রাস্থ জন-तिख्रिश्व निरं 48 केणप्रवास्त्र नाष्ट्रक बार्ड ; नहे नाष्ट्रकी कि : मा, द्वन्त्रभावतः कमामाञ्चन व्यक्तकारम (माममूक वहेत्र। वारक ; (हेवाहे केवाहत बर्दा नावा वा नवानश्रव) बाबनवारिक खवानकित पूर वहेरिक वय शाबन कविशाहक; अहे काबान केठबडे अक काबारनार नह वाला, (कार्ड खाला বেষ্দ কৰিছের প্রতি অপুরের প্রকাশ করে, তেখনি অধিও রাজ্পের প্রতি बाबुद्धर क्रमान महिता बारकम । अहे काहरनहें स्रोफ ७ चुकिनार्थ अनिह चारह (व, जायननन चांतरेयवक्य ७ पूनवीर्वा, चनाँद वांवर जायरनन

व्यवस्थारमात्रः-म्पूर्वः वाक्यन्।

पहलारक रस्तक जरूर कारारक गीरी वा पक्रिक सूचकरा वारक (>)) >

নিয়া (প্রিচান) ইপ্রস্তুতি বেবভার বিশ্ব করিবাভি এবং ভারাবের নিয়া (প্রিচানক) ইপ্রস্তুতি বেবভার বিশ্ব করিবাভিনেন); এই বভাই করিবাভিনেন) এই বভার ও ভারার নিয়া প্রান্ত ও অভিনে ভারার নিয়া প্রান্ত ও অভিনে ভারার নিয়া প্রান্ত ও অভিনে ভারার নিয়া প্রান্ত ও আছার নিয়া বালে । এই কারবেই কৈওলভি ক্ষিক্ষে অংশর ও বহু প্রভৃতি বেবভা বারা পরিচালিত বনিয়া প্রান্ত । এইরপ পৃথিবীবৈবভক প্রা ও পরিচর্ব্যাকর পুরুলাভিকে পর হারতে করিবাভিনেন ; কারণ, প্রতি-স্থতিতে প্রস্তুতি প্রস্তুতি করিবের ; কারণ, প্রতি-স্থতিতে প্রস্তুতি প্রস্তুত্ত বিশ্ব আছে । বনিও এবানে করিবাভি বেবভা-স্থানির করা উক্ত হর নাই, পরে বলা কইবে; ভর্মাণ এবানে স্থানির প্রস্তুত্ত করিব করা বিভাগের করিবের করা করিব করা বিশ্ব করা বিভাগের করিবের করা আছি করিব করা বিভাগের করিবের করা করিবের করিব প্রতিশারর করিব করিব করিব লাভার; বেবগর্গও ত প্রজ্ঞাণতিকর্ত্তিই করি; প্রত্রাং ভারারাও প্রস্তুত্ত ভারের করিবের ভ্রতিত ভ্রতিত ভার নরের (২)। ২

अरेक्षणरे यथन अकरवार्व व्यवशांत्रक दरेन, कथन वृत्तिष्ट दरेश्य (व. रेहार

(১) ভাংপণা—রাধণের শক্তি বে, যুববংগা অভিক্তিত, এ বিষয়ের অসিভিত্তক একটি উদাহরণ এই:—বংগমূদি বাল্যাকের কপোণন-সরিবানে বখন লক্ষণতনত চল্লাকেন্তুর সহিত রামচন্দ্রের পুত্র লবের বাদ-বিভর্ক হয়, সে সবর চল্লাকেন্তু রামচন্দ্রের বিজয়-ক্ষান্তিরপে মহাবীর পরভাগানের পরামার বোধণা ভবিদে পর, ভত্ততের লব বিজ্ঞান্তানে বলিরাছিলেন-

"নিভং কেতত্ বাতি বীৰ্বাং বিধানাং বাজ্যোবীৰ্বং বছ কং কৰিয়াগাৰ্। পাছৰাবী ৰাজগো ভাষণহাঃ, তথিব বাতে কা বভিতত হাজঃ চ"

(२) अध्यर्गा--परे-यहे। कृषकात क कररहे परे क्यारे अक व्यक्ति नगर्न गर्द ; क्षकार अवस्थि वानि क्रेस्ट नार्द्ध रद, यहे। अवार्गिक क कररहे रायका अक क्रेस्ट क्रिस्ट ? क्षकार बना गरिएक गार्द्ध रद, अवस्थ खड़े! नार्य रक्षक विशेष कात्रयाख गृहिएक क्रेस्ट मा, नश्क विशि तिर्ध विशेषक वरहे अवस्थ केनायोग गरिए प्रकार क्रेस्ट इरेस्ट (रायम मूका (याक्ष्म)) परहे रक्षात विशेष क केनायोग --केक्स कात्राचम, अवार्गिक रक्षमि प्रकार गरिय के केनायोग क्षत कात्रयाचन, अवार्गिक रक्षत वार्य मिनेक के केनायोग क्षत कार्याचम, अवार्गिक रक्षत वार्य क्षत व्यक्ति वार्य क्षत वार्य क्षत

कविवाद वाताक विकृत यक श्राकांत कविद्या वारकन-कारश्रिक लांक्या बलम,-क्रियामकं भवमामा वा भवजमरे वर्षे : मभव मध्यवाप ब्रामम,--काका नार्व, विवृत्ताम इं क मरमाठी । कर्च क्ला काका काव-ध्याप्ति व व व-र्जिछ) , किस महस्रकि ६३८७ वाना यात :व. किमि मध्यमयद्भव वरहे ; कावन, बाह बाहक-- 'कहे श्रवानांकाक हेता. एवं, यक्न ७ वहि वानवा निर्देश कविवा बारकन,' अवर चन्न क्षांतित चारक - 'हांनते जवा, हेनिहे देख: वेनिहे अवागति अवर हेनिहे नर्वाप्तवृत्तास्त् देति। प्रतिष्ठि चाहि -'अहे चाहि प्रकृशक (अवाशिक्ति) (कर त्यर पांच वानम, पान पानाव मन वानम मिर्दिन करवमें. बबर 'बड़े बिनि चलेक्षित्र, वृष्टित चनवा, एच, बवाक्षत्रणी विवसन ও नर्ब-कुछन्त, किनिहे खबरन चत्रर প्राइकुंठ इहेत्राहित्नन' हेछि। अथवा, किनि मरनावी-कोब्दल्वेकक इंड्रेट भारतन ; (कन नः, क्रांठ वनिरश्हम, 'किन मर्काविक शाश क्षत्र कृतिकाक्षित्वन : किन्छ मानाती ना वहेत्व छ छावान शाक क्यमहे भाग माह कता महत्रमद बहेटि भारत मा : वित्यका छत्र ७ व्यति-मक्क छोडाव मरमाविष्यत चनद कादन, अवर ध्वाठानत छिनि मिरक वर्ता अवेशां (व चवत महि कविशाकित्वम', 'बावमाम विवर्गानर्काक पर्यन का देखादि बाह्य छीहाद मरमादिव अणि बहिबाद कर्चकम-मानक क्षणि वहेर्क्क हेवा जामा बोहेरकरक्-'अबा (विश्रोहे), विषक्षहे नव (मक् ব্ৰছতি), ধৰ্ম (ব্ৰ), মহাৰ (ব্যক্তৰ-প্ৰাৎ ভয়পাধিক প্ৰান্ধা) ও অবাক্ত (একতি), এ সময়কে সাধিক কৰেছ উৎসুট কৰ বলিয়া আনিগৰ नाना करवन' देखि। ।

द्विपार्थातः रहुक् बोकान्। ३३३

minuel deb fette antfet femalf-nebu ven nurne en al. क्षत्र ८काम पारकावरे बांचाना रहेरक मारह मा : करम अवानकिव मरमाविक या जन्नशातिक किन्नरे निष दरेरकंटर ना ; ना, अ क्यां वरेटक नाटर मा : कावन, जक्ककाव कवना बाबा केक विरवादनव नविवाद वहेरक नारव, नवीर केनाविविद्यालय मण्डनिरहम अञ्चल कहाना कहा बाहेल्ड लाइ, [बाहाल्ड সংস্থাৱিত ও অসংসাৱিত কল্পনার ব্যাতাত না বটে । 'বিনি একল অব্ভিত बहेबा पूर्व नवन करवन, भंदान वाकिदां नर्वात नवन करवन, वर्गावर वर्षाय यश्युक्त ७ वहविष्क त्मरे (श्वरम (श्वरवश्वरम) व्यावि किन्न व्याव तम कानिएक गारत है दे काकि क्षेत्र करेंद्र काना बात त्व. केशांत मरनातिक वर्षी वेशाविक, शाववार्षिक नरह ; श्रक्रुष्टशस्य किन्न कारशावीरे वर्षे । बहेळाकां व छेनाविनक्षतिन्छन विदनानार्छद बक्ष ७ मानाच. प्रवेहे नक्ष्य वयः 'ভৰি তংগলপ' ইথাৰি ক্ৰডি বইতে কানা বাহ বে, অভাত কাৰের সকৰেও क्षेत्रमहे बावता। विश्वनागर्छत छैनावि यहारे विश्वतः वहे वक अधि ध वृक्तिनावन्त्र केश्रिक व्यविकारमञ्चल ग्रह्मचंद्रवार निर्देश कवित्रा बारकन, चिक चन्न हारनरे ठाराव मध्यादिक श्रवर्णन कविवादका। नकावात, को बनावत केमावि कावावहर क्विविद्या ; वह का कविकाश्यम्या ठीबारबत मामातिष्ठे मिर्द्यन कतिबारहम ; मर्त्सामाविनिम् क प्रधानाक नका करिया जानाव नवस क्षति । पालिनात जोराव नवरवर्गकावश निर्दर क्रिशास्त्र । e

কিন্ত বাঁহারা তাঁকিক — লাগব-প্রবাশের বনবন্তার উপে লা করেন, তাঁহারা গাঁহা, নাই, কর্তা ও অকঠা ইত্যাধি বহুবিব বিক্রম তর্ক করিয়া লাহার্ব আকৃন (বিক্রত বা অনিন্চিত্রপ । করিয়া থাকেন; তাহার করে শাস্তের প্রকৃত অর্থ নির্বর করা অসন্তব হইয়া পড়ে। পজাবরে, বাহারা একবারে শাস্তাহ্বায়া পর্কহান, ওাহারের নিক্ট কেবতাদি অপরোক্ষবিবর-প্রতিপাদক শাস্তার্থ (শাস্ত্রসিদ্ধার) প্রভাক্ষর স্থিনিন্ড কইয়া থাকে। ৬

এবানে আহিছেব একই প্রবাণতির—অভা (ভোজা) ও অহনীয়ন্ত্রণ রপ-ভেছ বর্থনা করাই প্রভিত্ব অভিপ্রেড; ভন্ধংখা—প্রথমে ভোজা আহর কথা উজ হইরাছে, এবন অহনীর নোমের কথা বলা হউভেছে। অগতে বাহা কিছু আর্থ্র—প্রথমর বড়, ভাষা রেড হইডে—আত্মীর বাজ হইডে প্রটি করিলেন; ভারণ ক্ষতি বলিভেছেন—'রেড হইডে জন (ক্যীর প্রথা) [প্রাছুড়

इरेब्राट्स]' ; त्नामक अनायक ; चाठजन श्रमानित चीव .वंठ वहे:ठ. ११ चाप्त वश्वत शृष्टि कतिवाहित्तम, छावा त्मावने वटि। अभात वाश निव्न चाद्य, करमक्क क्रकाररहे-कहे भर्ताकहे, देशाव अधिक काव किछू नाहे। हेवा कि १-मा वा बहेर्ल्स-लाय, जनायक्वनिवद्य पृथिनावक; छक छ क्षा विशा विश्व वहेर्छाइ—व्याप वर्षाद क्षाकाः विवास वहेश्वनहे व्यवधान व्हेटल्ट (व, त्यांवह व्यव, वर्षार वादा व्यवन कता वाह, कारावे चत्र ; अवर विनि कथनक्छा, किनिवे व्याप ; [विविध अवारम व्यवधानगण्डक (काम मक मारे गडा, छवानि] वर्ष-मक्ष्टित व्यष्ट्रशास व्यवदावन वृद्धिक इटेटन। मुमद विद्यास व्यक्तिक प्रवान (व्याहिकारन व्यक्ति) इहेरन त्यायश्चामीत व्यक्षेत्र व्यवस्था प्रतिपतिष्ठ दश्च. अवस् शायक व्यावात मनविर्वाद देकावान (काठनीव) बहेबा व्यावादायोव व्यर्थार (कास्त्र) वहेद्र) पाटक; काइन, जबन जीहात (कास्त्रवहे पाटक, (टकानाम बारकना , नयारवामासक अर्थ नगर्ग एवं टनाक नाम्यकटन वर्गम करत, त्म त्माक (काम श्रकात त्मारा-पूरा वः नान वातः नित्र वयः मा. व्यक्तिक आवानतानक नाटक नवर्ष दवः केदा क्षेत्रकाक प्रकान कर चित्रक्के-क्षांनिक चाननां हेशा क्रम चरित्र । १

দেই পৃষ্টি কি । এজহুত্বে বলিতেছেন—বেবেতু তিন প্রেরান্—
আপনার অপেজাও উৎকর্ষসম্পন্ন এই বেবগণকে সৃষ্টি করিয়াছেন, দেই
ক্ষেত্ই দেবস্টি তাহার অভিকৃতি। তাল, সৃতি আবার আপনা হটতেও
অভিসর হার কি প্রকারে ৷ তহুত্বে বলিতেছেন—বেবেতু তিনি নিজে সর্ত্তা
অর্থাৎ মন্ত্রশীল হইয়াও অমৃত—মন্তর্গতিত দেবগণকে জান ও কর্মন্ত্রণ বহি
ভারা আপনার সর্ক্ষরিধ পাপরাশি মন্ত করিয়া সৃতি করিয়াছেন, সেই বেতুই
ইবা অতিস্তি অর্থাৎ উৎকৃত্ত কর্মের কল সম্ভূপ এই অতিস্তি কানেন

⁽১) তাংপরা—ইণা চইতে বুখা সাইতেকে বে. জন্মকালে খনং প্রজাপতিও পাণ্নহিও ছিলেন না, এবং মুসুন্ন অধিকার কটঙেও বিদ্ধুক্ত 'ছলেন না : কিছ তিনি জ্ঞান ও
ক্রান্ত্রীয়ের সাধাবো খান সমস্ত পাপ বিনই করিলা নিশাপ অবস্থান বেবসপ্তে পূট ক্রান্ত বেবসপ্ আক্র পাপ্বিন্ত : কাজেই প্রজাপতি অপেকাও ভাষার কার্যান্ত উৎকর্ষ অধিক ক্টতেহে : এই লগু বেবস্টকে অভিস্কু বলা ক্ট্রাছে :

--- শহুধান করেন, তিনিও প্রকাপতির ভার এই শতিক্ষিতে প্রভূ হন --অর্থাৎ প্রকাপতিরই মত কৃষ্টিকর্তা বন ৪ ১০ ৪ ৬ ৪

जाः छाज्य-छाज्याचा । "बर्द्यः वर्षशाहवरागीर ।" गर्सर देविकर गावमर काम-कर्मनकनः कर्जाकरम्बद्यावरानकर स्थानिकरमानगासर गावम् अवायरम्,—वर्द्यक् गाव्यकर वर्गरम्गातः। वर्द्यक्ष्य गावमान्य-नव्य गाव्यक वर्गर्व। वाक्यमार साम् वीवायमा सा, कार विविधिकिः व्यवादिकार्याम् विवधिक व

विका। पूर्वावश्वप्रवाः नवकः वकः शहीकवागः वकः कोईविक-छ्राक्कानः हिरुक्तां। ७७ वाल्डवार्यः देवनि क विद्याक्तत् । । नाधनविद्यादक वृक्तिनावनः भूवः क्वांडि, व्यक्तिः बर्काड---'फ्रांट्स्स्टिंड । अन्वत्रक प्राक्कारनम्बन्धः न नारमः स्वकोषि हारः । बृष्टिनायनः খান-বল্বতথ্য ওল্লানৰ্, ইবং ভূ কাৰকগাৰানগোচিশ ব তথ্যেত্ৰিভাৰ-ক্তৰ্যাদীতি। কিং চেনং অজ্ঞাপতিস্থালনানৰ, 'বৃত্যবভাষা ভৰতি' ইতি আনতে:। ৰ চ ভবেৰ কৈবল্যা, ভৱারভাবিত্রবর্ণাৎ, অভোচলি নেবং বৃজ্যবহিত্যাহ—প্রান্সাপতিজ্ঞেতি। কিঞ্চ विकासिका पुक्तिः, हेवर कू नावायमबट्टाः'न न बु'क्टरकूरिकारि—साधाविकि। विक. वृक्तिकी।कृष्ठावर्षाक्षत्रम्थायम्, "कविनिकार" वेकालिक्याकः । वेषाः कृ मायस्रापः नाक्रिकन সম্ভাব্যক্ত কতি কাৰবভাৱনৰ म्हार्था न अध्यक्तिमार-अञ्चानहास्य है। व्यादनवाकारि आक्रमण एएकविकाएक्कामण कार्यरावार-उह्नान्छ। जानकर्य-करनाकार्यक्षावयः न नार्यः। नीकारक जाकाज्ञात्र अधारिका, क्रका निर्देशे विशेषस्यत्, न जाका-निविष्णकेषि नवव:। वक्कारन पूर्वातिकारक वाहार, किविष्ठि अवात्रविरक्षाहरक ? ठ्यार-क्षर्रम्मान्त्र । डेवर्डरा हेलि छत्नुननिक्रणपत्रर्परनिक ल्परः। **यस गूक्रवार्यस्य**र নানভ ভছভারোহণি কোণবুলাতে, ভতাব--ভালুজরণে ছীভি । বস্থ নংগারভ বৃন্ধের नावि, क्वारनामार ; अनानास्त्रत् ना उन्नानर, नामाठर बन्ध ; वैज्ञानका अभिकृतिकार पदि-वर्गक-छक्षा (छाछ । छद् बूरवृद्दे कावनर कान्यारणका नश्ववाक्रिकः ब्नवस्क्रकृष्ट्रिता श्विना वर्षा वदः, वृतारम्बद्धाश्वाशः नावा देखाराकृतायः। अवव् 'छे देववयःनायव्' देखावि-त्रीका व्यापि (बक्रवाहः। व्यक्ति वि नश्यादक प्रावृ 'विवयन्ताः कविवाकि' रेकि व्यक्तिः; कका-काष्ठर'बरेकदविक क्षांचन्नीकथनिकविक चारः।

ज्या ज्ञाञ्च- ज्ञाञ्चान्त्। "उर् र हेरः एरि पराइण्ड् पानीर" हेणारि। (सरहाक कान-क्वायुक वर्ज नायन (हेनार) पारह, एर स्वेरणाय—विश्वनार्थक श्रावि । अक्रवनाय विष तम मन्वरवि तम के विश्वनाय श्रावि । अक्रवनाय विष तम मन्व केनाय मान्य-तमीव प्रकृति । अर्थ "अवायर अर्थ अर्थ नर्थाक रे राते—वाया अर्थ मान्य-तमीव प्रकृति । अर्थ "अवायर अर्थ अर्थ नर्थाक रे राते—वाया अर्थ मान्य-वाणि वाया प्रकृति वाया प्रकृति वाया प्रकृति वाया प्रकृति व्या प्रकृति व्या प्रकृति । अर्थ मान्य प्रवि वाया प्रकृति व्या प्रवि वाया प्रव वाया व्या के प्रव मान्य वाया वाया । अर्थ मान्य प्रवा के मान्य प्रकृति । अर्थ मान्य प्रवा के मान्य क

তদ্বেদং তহঁ বাক্ত্যাদীৎ, তন্নামরূপাভ্যামের ব্যাক্রিয়তাদৌনামায়মিদওরপ ইতি, তদিদমপ্যেতর্হি ন মরূপাভ্যামের ব্যাক্রিরতেৎদৌনামায়মিদওরপ ইতি, দ এই ইং প্রবিষ্ট আ নথাগ্রেভ্যেঃ। ইথা কুরঃ কুরধানেহবহিতঃ ক্যাদ্ বিশ্বস্থরে। বা বিশ্বস্থরকুলায়ে, তং ন পশ্যস্তি। অরুৎস্নো হি দং, প্রাণন্নের প্রাণো নাম ভবতি, বদন্ বাক্ পশ্বত্দকুঃ শৃথুঞ্জোত্রং মন্থানে। মনস্বান্তস্তোনি কর্মনামান্তের। দ যোহত একৈকমুপাস্তে ন দ বেদারুৎস্নো ক্যোনামান্তের। দ যোহত একৈকমুপাস্তে ন দ বেদারুৎস্নো ক্যোন্যত একৈকেন ভবতি, আল্পেভ্যেবোপাদীতাত্র হেতে দর্মবিঞ্বং ভবস্থি। তদেতৎ পদনীয়মস্ত দর্মবিঞ্চ, যদয়মাত্মানেন

^{(&}gt;) ভাংপ্যা—উভ্
ৃল: লবঃশান:' ইত্যাদি বাকো স্থাপঞ্জেল সংসারের শ্বরণ বর্ণনা করা ধইলাছে। স সার খবন বুক ঘইল, তবন ইবার বুল, লাবা ও প্রাধি বাকাও আবস্তক। এই সংসারবৃত্তের খুলাই উল্লে (উপরে) আছে, অর্থাৎ সংর্লাপরি বর্ত্তবান প্রথেষত ইবার বুল, আর অংথাবার্ত্তা বেবাস্থর মন্ত্রনাধি তাহার পাধা-প্রবৃত্তা ইবা করাও বাকিবে কি মা. বির নাই; এই কারবে 'অথব'; কিন্তু, তথাপি ইবা সনাভন— অনাদি কাল ভইতে প্রক্ষণান একপ্রকার নিভারেই মত।

(एड६ मर्काः (यकः। यथा ए देव भारतनामूबिरमारकवर कीर्डिट स्नोकः विमारक व अवर (यह ॥ ८८ ॥ १ ॥

अञ्चलाधाः । ७९ (पर्यकामः रीवारशः) देशः । श्रकामः नायक्रगाहि-गाकर बनर) वर्षि (कश-केरनक: आर्) नगाकक: (नाय-बनाकाय चमिवाक्रम्) चानीर ए । छर (बीबब्रागर्ग विकास क्षर) नाव-ब्रगांकार--चहर (नवार्यः) चरनीमाया (चरवा माय चछ —चरनीमाना, हाचरनारुहर बरवाना). देशश्चभः (क्रेनः (चल्नीकानि स्थान चल-देनश्चभः) हेकि (এवः) नाव्यिक . चत्राय व शाद अय्—वावशतरवात्रार वक्तव) । [चड्यव] अकर्ष (देशाबीर) चनि 'बारोनाव।, रेक्पब्रमक बहर्' रेकि मावब्रमानाव् अव वाक्रिक्ट (वाक्रक्ट करठोठार्वः) हेठि । यथा कृतः कृत्रभारत (कृत्रस्मात्म), व्यवता वदा विषयः ' व्यविः) विषयः इत्रादः । कार्वादा । व्यविषयः (व्यविविदेः) छाद (करवर), छवा नः (कन्नरकार्य ठमा अनिष्कः) अवः (नदस्यकः) है। (नाय-ब्रगासमा बाइरछ क्वांछ : या नशास्त्र छाः (नशास्त्र मधाः) अविदेश (स्रार्थनः क्रकराम)। [क्यांनि चळा:] कर ् नर्साक्षणाव्यांन नदावचहर) न नक्रक (नवरवर्षत्रपम न बानबी ठार्वः) ; हि , बचारः नः र बा नवात श्रविदेः बाबा) भक्रदशः ' উপাবিপরিচ্ছির চরা উপনভাষানহাৎ খপুর্ব:) ; [ভবাবি---] मः (প্ৰবিষ্ট আছা) প্ৰাণন (প্ৰাণনাখি-ব্যাণাঞ কুৰ্মন্) এৰ প্ৰাণঃ নাৰ (अगिरको : कवांक ; रागन (बहन-वार्गाना दर कूर्वन्) बाक्, श्वान् हक्का, श्वान् (आंतर, नवान: । नवज्ञ-विक्क्षनक्तर व्यानातः कूर्वम्) वमः व्यक्ति ; क्यांन अर्टाम (य(बाकानि क्षाबाबीम) चन्न (चाक्नः) कर्य-नावानि अव (एवर-श्रीबंद्रे चाचा अव ७३९कवांबृजावतः श्रानानि-नाविः ग्रामिन श्राहेद्राह ইভি ভাবঃ]।

শতঃ (শবাং বেতাঃ) যা সাং (या क कि १) একৈকং (প্রাণ ইতি বা, বাগিতি বা—ইত্যেবং) উপাতে, সাং (উপাসকঃ) ন বেছ (নৈব আয়ানং বেতি); হি (যতঃ) এবং (আয়া) একৈকেন (প্রাণাতেকৈকবিশেবনের বিশিষ্টঃ সন্) অকুৎমাং (অসমভাঃ) ভবতি ; অতঃ 'আয়া' ইত্যেব (বিশেবণতেশান্ন পরিভাজা কেবলন্ন আয়াম্মানের) উপাসীত ; হি (বত্যাং) অত্ত (আয়ানি) এতে (প্রাণাভয়ঃ) সার্মে একং ভবতি (এক-কপ্তান্—অভিয়ভাং প্রতিগভতে)। তং এতং অত্ত সর্মান্ত (কীবনিক্তেত্য)

नवसीर्वर (श्रानार); [कर छद १] यर (वा) कवः काका टेडि । वि (वर्षार) करमम (काक्सा कारकम) अखर मर्कर (कवर) तक (कामांकि है कार्यः); क्या स देव (श्रानिरको) भरमम (ठवरनम भवतिरक्षम ना) कव्यविरक्षर (मर्वेर भवाविकर मरक्डि) ; छवा, यर अवर (वर्षाकः छवर) (तक, [मा] कीर्विर ((काक्श्वार्टकोर) (भावर (यनक्ड) विकरक (मक्टि) वेशार्थः १ १० १ १

मूलान्याल। तारे धरे मुणमान वर्गर वरकात वर्गर ग श्रुति व्यशाक्ष नाम ७ क्रशाकात व्यन्ति क्रमा क्रमा, वर्षार विष्ठात वर्द्धमान हिला (महे छश्र नाम ६ तुनाकात्त्र व्यक्तिशास वहेत,- '(मामस বজ্ঞাত্ত প্রভাৱ নাম ও প্রভুপীভালি কপ্রিশিষ্ট চইয়া প্রকাশ পাইল: अके कमू हे वर्त्याम मार्टर छ । तहन्य तिहन्य मात्र छ तिहन्य तिहन्य ताथ सहियाह कहे सन्द (कार्रा हक रहा) असितास वहेरा बादक । कृत रामन ক্ষরাখারে নিজ্জি খাকে, অথবা বিশ্বপ্রত (অগ্নি) খেরূপ ওদার্ভায় কান্টাদির मधा निवित्र चाद्यः एक्तम (महे छन्।द्रम भर्गमवन এहे अजिनास कार के नेपाल करें है नर्गतारग्रत अनु श्रीविष्ठ करें त्वन । कि स किन करें-क्रांभ खरिके धर्कितन बख्यकान्य है जांशांक त्रिधांक भाग ना : किन ना, डांशता शंशतक पर्यन करता । (महे कामा इटेएड्ड-- कक्ट्य वर्षार প্রকৃত পূর্ণ আত্মার ঔপাধিক অংশবিশেষ মাত্র (ব্যমন) প্রাণনাদি ব্যাপার নিস্পাদন করেন বলিয়া প্রাণ নামে প্রসিদ্ধ চন, সেইরূপ, বাগিন্দ্রির ব্যাপার করতঃ শ্রোক্ত, এবং মনন বং চিস্তা করতঃ মনংশব্দ-বাচা হন: প্রকৃতপক্ষে কিন্ত এ সমস্তই ভাহার কর্মানুষায়ী নাম মাত্র। অভ এব বে লোক ভাহাকে উল্কে প্রকার এক একটিমাত্র গুণ-যোগে উপা-সনা করেন, প্রকৃতপক্ষে ভিনি ভাঁহাকে স্নানেন না; কারণ,এক একটিমাত্র গুণ্বিশিষ্ট আত্মা ভ কথনই সম্পূৰ্ণ হটতে পাৱে না : অভএব 'আত্মা' विवाहे डीहात डेभामना कतिरव : हे हार हे (धरे व्याचार हरे) हेल्ह लेलाधिक स्थानभूक धारी जात आला कहेगा शास्त्र। धारे एवं, भविभूवी बाजा. है हारे मर्वकोटवत এकगाज भवनीय वा गखरा खुल ; कातन, এত-विकारिके नर्व वस्त्र नाम कता वात्र। त्नांक (वमन शरमत्र नाक्रात्र) গস্তুৰা স্থান লাভ করে, ভেমনি বিনি বধাবর্ণিত প্রভারে আন্ধ-ভন্ধ অবগত হুন, তিনিও কীর্ত্তি ও প্রাশংসা প্রাপ্ত বুইরা থাকেন ৪ ৪৪ চ ৭ ৪

उत्पर्वस्थः कश्वनाङ्गाङ्गाः नद नायद्वनाशास्य-नात्रः द्वःनदेश ।

बाक्षित्रचः बाक्षित्रख्यं कर्षकर्ष्यद्वाशाद चर वदस्यादेश गाक्षित्रच-वि+

का-कित्रच-दिन्नदेश न यद्वनिव्यवस्थायः वरकोण्यदान्यक
नायवामाक्षित्रहः - कर्ष्-नावनाङ्गा-निविच्यः । कर्णानाद्यकि नर्वनात्राः
विस्त्राक्षित्रहान नाययाद्यः वानाम्बर्गः । क्ष्यवस्था यक्ष्यक देखि वा नाया
क्षित्रक्षाः कर्णानामा कश्यः । छवः देव्यक्षि क्ष्यक्ष्यक्षेत्रक्षाः । देव्यवाक्ष्यः वस्त्र, क्ष्यः ।

क्ष्यविव्यवस्थाः वस्त्रक्षः वस्त्रविद्यक्षः ।

क्ष्यविव्यवस्थाः वस्त्रविद्यक्षः ।

क्षित्रविव्यवस्थाः ।

क्ष्यविव्यवस्थाः ।

क्ष्यविव्यवस्थाः ।

क्ष्यविव्यवस्थाः ।

क्ष्यविव्यवस्थाः ।

क्ष्यविव्यवस्थाः ।

क्षयविव्यवस्थाः ।

क्षयविव्यवस्यवस्थाः ।

क्षयविव्यवस्थाः ।

क्षयवि

নশ্ব, অব্যাক্তং ব্যমের ব্যাক্তিয়তে জুকুন্ন; কর্থনিয়ানীসূচাতে লগন এব তু আছা অব্যাক্তং ব্যাকুর্মান্তর প্রবিষ্ট ইতি । নৈর যোবঃ; গরভাষ্যনোহ্যান্ত কতজগরাত্মধন বিশ্বক্ষিত্যার। আজিপ্রনিয়ত্ব-কর্কুক্রিরানিবিতং হি জগন-ব্যাক্তর ব্যাক্তিয়ত ইভাবোচান; ইবং-লখনানানিকরণাক্ত অব্যাক্তর-শক্ষা। ব্যেবং অগ্য নিয়ন্ত্রাভ্যেককার্কনিবিত্তাহিবিশেববস্থ ব্যাক্তব্যু स्वीद्शिकाकोकव्यवित्ववरस्य क्यांकृक्यः, गांकृक्यांकृक्यांक्क वित्वः।
कृष्टेक शास्त्र विवकाकः व्यवस्थानः—'वाय व्यांकृकः, व्याः पृष्ठः' हेकि,
क्यांकृष्ट व्याय्यस्य विवानयाविवकाताः 'वायः पृष्ठः' हेकि व्यवस्थाः।
क्यकिः, क्यांकिः विवानिक्यविवकाताः 'वाय व्यांकृषः' हेकि व्याकृष्टः
क्यविक्यांत्रायि वाय-व्यवस्थाः। क्यकि—'वायक्य य व्यवस्थिः' हेकि व्याः,
क्यविक्यांत्रायि व्यावक्यः गांकृष्यः व्याकृष्टः (क्ष्यांक्ष्यः विवान्यः हेकि व्याः,
क्यांकृष्टिः वायः व्याकृष्टः व्याकृष्टः (क्ष्यांक्ष्यः व्याक्ष्यः व्याक्षयः विवक्षयः विवक्षयः व्याक्षयः विवक्षयः वि

स्थ भरत्न वाक्ति वाक्तर मुसंका शासर मुसंबा कन् ; म क्वित्र व्यविद्दे भित्रकारः । क्षान्तर मुसंबा क्षा । भाषान-मुनंबित्र व्यविद्दे भाषाकः । स्थान्तर वाव्यविद्दे भाषाकः । स्थान्तर वाव्यविद्दे भाषाकः । स्थान्तर व्यविद्दे । स्यविद्दे । स्थान्तर व्यविद्दे । स्यविद्दे । स्थान्तर व्यविद्दे । स्यविद्दे । स्यविद्दे । स्थान्तर व्यविद्दे । स्यविद्दे । स्यविद्दे । स्थान्तर व

निवस्त वन, व्यवनञ्चनाविक (६६ ; न ; "(१९४१) स्न्यंः पूक्यः" "निवसः विक्षित्र" रेक्षाविकिक्षः । नव्यन्तिपक्ष-वन्नविध्यन-व्यक्षित्रकाकः । व्यक्षित्रकार्यस्तिकिक्षः । नव्यक्षः विवक्षः । व्यक्षः वन्नविध्यक्षः । व्यव्यक्षः । व्यव्यक्षः । व्यव्यक्षः । व्यक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः । व्यव्यक्षः । विक्षः विक्षः । व्यव्यक्षः । विक्षः विवक्षः व्यव्यः । विक्षः । विक्षः विवक्षः व्यवः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः विक्षः । विक्षः विक्षः । वि

विशादिर्शकता पांचा आनवाक" "नवीर्ति अनानि विक्रिका वीर्ता नामानि क्याकिरकत् वर्गात्व", "चर क्यात केल त् क्यातो पर जीर्ता वर्णाति क्याकिरकत् वर्णात्व", "चर क्यात केल त् क्यातो पर जीर्ता वर्णात वर्णाति "नृत्रकराक विभाग" "तार अन्य" देकि व व्यवनीर न नवावक्रण धरवनः। व्यविदेशाविकरकत्रकर्णार नवादनक्यविक्रि (हर : न : "वर्णा वर्णा वर्णा निविदेश" "वर्णा स्वरं वर्णाति वर्णात्व वर्णा वर्णात्व वर्णात्व वर्णा वर्णात्व वर्णात्व

"ৰাজনত কাৰার" ইত্যান্তাৰ্থকাজ তের্যুক্তমিতি চেং; ন; "ব্য বা অভাবিৰ ভাং" ইত্যাবিভাবিৰয়ান্ত্ৰাৰ্থভালুগপৰাং, "তং কেন কং প্ৰেছ্ং" "নেহ্ নানাত্তি কিঞ্ন" 'তথ কে। বোহং কং পোক এক্ত্ৰহুপপ্ততঃ' ইত্যান্থিনা বিভাবিৰয়ে ডংগ্ৰভাবেগাচ্চ নান্তথক্ষ্ম। ৮

ভাকিস্মরবিরোধানর্কবিভি চেৎ; ন; বুক্যাপাশ্বেনা ক্র্যেবাছ-পপজে: ন হি ক্র্যেন প্রভাকবিবরেণাশ্বনো বিশেষজ্ব, প্রভাকবিষ্কর্যার । আকাশক শক্তবন্ধন্দাশ্বনো ধ্রুবিছবিভি চেৎ; ন; এক প্রভারবিষ্কর্যারপ-পজে:। ন হি প্রপ্রারকেশ প্রভাকবিশ্বেশ প্রভাবেন নিভাক্ষেরকা শ্বেমা বিষয়ীকর্মন্ত্রপভতে; তক্ত চ বিষয়াকর্যে আশ্বন একজাধ্বয়তাব-প্রস্থাঃ এককৈন বিষয়াব্যবিদ্ধ শীপ্রবিভি চেৎ; ন; বুস্প্সভ্যাৎ, আশ্বভংশাক্সপ্রেক্ত। ১

এতেন বিজ্ঞানত প্রাক্তন্য প্রত্যুক্তন্য প্রত্যুক্তন্য বিষয়বার হংগালনাত বিশ্ববিদ্যালয় বিশ্ববিদ্

340

পরস্তাহাবিবেহকত চ হংবিনোহভাবে হংবোপদখনার শাস্তাক্তানর্বকা-বিতি চেৎ: ন; অবিভাগারোপিডহংবিহন্তবংগোহার্বরং—আয়নি প্রকৃত-স্থ্যাহপুরবন্তবাগোহবৎ; কল্পিডহংবাায়াভূগেগ্যাচ্চ ১১১।

कन्यवाहि-अठिविषवण्ड अविविषवण् वादिष्ठ कार्व। अनेनकाप्रम्। आंध्र निष्ठ निष्ठ वादि अकि वादि । अविदे वेद निष्ठ निष्ठ निष्ठ निष्ठ । अविदे वेद निष्ठ । अविदे । अवि

"ততো নাং তথতো জাখা বিশং তদনভর্য ।" "ভঙাগ্রাং স্ক্রিভানাং গ্রাপাতে ভ্যুতং ততঃ ॥"

ইভাবিশ্বভিভাত। ভেৰদৰ্শনাপৰাধাক স্থ্যাধিব।ক্যানাৰাশৈক্ষণৰ্শনাৰ্থ-প্ৰছোপপভিঃ ভশ্বাৎ কাৰ্বাহস্তোপপভাষ্যৰে প্ৰবেশ ইভাপচৰাতে। ১২

আ নবাবেতাঃ—নবাবেবগাহবাখনলৈততত্ত্বপ্ৰতাতে। তাত্ৰ কৰ্ষিৰ প্ৰবিষ্টা, ইত্যাহ—ধ্বা লোকে, জুৱবানে—স্থায়ে বীয়তেংখিয়িতি জুৱবানং,

व्यवस्थानः क्यूवरं बायनम्।

ख्यिन् नानिरकानकवानारन स्राह्मकारका वर्षाननकारक-स्वविका श्राह्मकार स्वाह्मका श्राह्मकार स्वाह्मकार स्वाह्मकार

मक् विशास शिवास । विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व

ज्या वननिकाः कृष्य— वक्कों ज वाक्, श्राम् क्कः, राहे हे जि क्कः छहे।, शृथ्य— शृथ्यः अविद्या अवद्या अवद्य

তাতেতাৰি প্ৰাণাণীৰি অস্তান্ধনং কৰ্মনাথাৰি—কৰ্মজানি নাথানি কৰ্মনাথাতেৰ, ন তু বস্তবাত্ৰবিষয়ণি; অত্যে ন কৃৎখাত্মবস্থতাতকানি—এবং বি নাথাত্ম প্ৰাণাণিকিংহা তত্ত্বাক্ষাক্ষিত-প্ৰাণাধিনাৰ-মুণাজাং ব্যক্তিয়ন্বাব্যবিষ্টান্ত প্ৰাণাণিকিয়ান্ত্ৰাণ্ডাই

बहैक्कर—आंदर हक्ष्मिक वा विनिष्टेष् व्यक्षणमः स्वाधिक विश्वाधिक म्यादि स्वाधिक वे विविद्या विश्वाधिक में स्वाधिक वे विश्वाधिक में स्वाधिक वे विश्वाधिक में स्वाधिक में स्वाधि

কৰং পুনঃ পত্তন্ বেছ ? ইত্যাহ—আছোতোৰ, আছা—ইভি প্ৰাণাদীনি বিশেষণানি ৰাজ্যকানি,তানি বস্তু, সং—আপুৰন্ তা'ন আছে চুচাতে । সভা কংশবিশেৰাপসংঘাই সন্ কংলো তা । ব্যৱসাত্ৰপে হৈ প্ৰাণাছাপাৰি-বিশেষক্রিচালনিতানি বিশেষণানি ব্যাগ্রোতি। ত্রাচ বকাতি 'খাংতাৰ কেনায়তীব" ইভি। ত্রাচায়েতোবোণাসীত। এবং কংলো হুসে খেন ব্যৱসাপে গুৰুষাণো তবতি। কলাং কংলা ইত্যাপভাছে—অত্যাপন্ আহানি হি মলাং নিক্সাবিকে তলস্ব্যপ্রতিবিশ্বতেল ইবাদিতো, প্রাণাছাপাধিকতা বিশেষাঃ প্রাণাধিকপ্রকানায়াতিবেশ্বতেল (হুতে একস্বভিন্নতাং ভবন্ধি প্রতিপ্রতাঃ সং

"আত্তেবোণানীত' ইতি নাপ্কনিধি: পক্ষে প্রাপ্তথাং। "ৰং নাকাদ-পথোকাত্ত্তত্ত্বত । "কতম আংছতি,—বোহয়' বিজ্ঞানময়:" ইতোৰমাভাত্মপ্রিত-পালনপরাতিঃ প্রতিতি । ছবিবরং বিজ্ঞানমুংপালিতম্ ; ত্ত্রায়ত্ত্রপবিজ্ঞা নেনৈৰ ভবিবলাব্যাতিমানবৃত্তিঃ কারকাদি ক্রিয়াক্রণাধ্যারোপণায়িকা অবিভা নিবর্তিতা ; তত্তাং নিবর্তিলায়ং কারাজিলোবাল্লপথেরনায়তিরালুপপ্তিঃ ; পারিশেভালাস্কতিতৈব । তত্থাং তত্ত্পাসনম্পিন্ পক্ষে ন বিধাতবান্, প্রাপ্তথাং । ১৮

जिड्ड ठावर—गाकिकार्याभागतशाविभिन्छ। (वर्णः वर्ण्यविष्यः चार, जारमानानवदार्यः १८६ नकाशाविष्यः । "म न (वन्न" केचि विकासः श्रास्त्र । "पाना (व्याप्ताः । विकासः विकासः । "पाना (व्याप्ताः । विकासः । विकासः । "पाना (व्याप्ताः । व्याप्ताः । व्यापताः । व्यापताः

বানসক্রিরাঘাত বিজ্ঞানত,—ববা "বতৈ বেবতারৈ হবিপূর্বাতং তাৎ,
তাং মনসা ব্যারেল্ ববট্ল ভিত্রন্ত ইত্যাতা মানসী ক্রিয়া বিবীরতে, তবা "বাবেতোবোপাসীত" "মন্তবা। নিজিবালিতবাঃ" ইত্যাতা ক্রিয়েব বিবীরতে জানাবিজ্ঞা। তবাবোচাম—বেবেপোসনপদরোরে দার্বদ্বিতি। তাবনাংশক্রেন্তাপপত্তেক,—তবা বি 'ম্বেড' ইত্যতাং তাবনারাং, কিমুণ কেনণ কর্বণু
ইতি তাব্যাতাকাজ্ঞাপনম্বাবশন্ধন ভ্রম্ববশন্তে, তবা "উপাসীত" ইত্যতামপি তাবনারাং বিবীয়মানারাম্, কিমুপাসীত গুলেনাপানত গুল্বমুপাসীত গুলিভারাকাজ্ঞানাক্রিন্ত বিবাহনান্ত্রাণ ইত্যাবিশারেশের স্মর্থাতে ক্রম্বাপ্রমান্ত্রিক্রালাল্যক্রিন্ত্রাণ্ড হিত্যালিশারেশের স্মর্থাতে ক্রম্বাপ্রমান্ত্রিকর্বাতাসংখ্রা ইত্যাবিশারেশের স্মর্থাতে ক্রম্বা
ক্রম্বাণ্ড হত্যাবিশারেশের স্মর্থাতে ক্রম্বা

ৰণা চ কৃৎস্ত দৰ্শপূৰ্ণধানাদি প্ৰকংশত দৰ্শপূৰ্ণধানা দিবিধুছেৰছেনোণ-বোপঃ, এবনৌপনিবৰাজ্যোপাননপ্ৰকর্পত আছোপাননবিধুছেৰছেনৈবোপ-বোপঃ; "নেতি নেতি" "অস্থুপন্" "একমেবাছিতীয়ন্" "অপনাগভাতঃ" ইতোৰ্যাদিবাকানিষ্ উপাতা হ্বরপ্রিশেবস্থপ্রেনাপ্রোপঃ। ক্লক— বোজেহ্বিভানিম্বার্কা। ২১

শণরে বর্ণয়রি—উপাসনেনায়বিবরং বিশিষ্টং বিজ্ঞানাত্তরং ভাবরেৎ; তেনায়া ভারতে, অবিশ্ব নিবর্ত্তকক তদেব, নায়বিবরং বেলবাকাজনিতং বিজ্ঞানবিতি। এতবিরংব বচনাজিশি—"বিজ্ঞার প্রজ্ঞাং কুর্নীত" "প্রট্ডবাঃ শ্রেতবাঃ বিজ্ঞানবিতাঃ "লোহবেটবাঃ স বিজ্ঞানিতবাঃ" ইত্যালীনি।২২

ন. অর্থান্তরাভাষাং। ন চ "আয়েত্যেবোপানীত" ইত্যপুর্কবিরিঃ;
কলাং? আয়য়য়পকখনানায় প্রতিবেধবাক্যঞ্জনিত বিজ্ঞানব্যতিরেকেণাগাঁভরত কর্ত্রগত সানসত বাক্তর বা অভাষাং। তত্র হি বিধেঃ সাকলান্, বত্র
বিধিবাকাশ্রধণমাত্রজনিত-বিজ্ঞানবাভিয়েকেণ পুরুষপ্রস্থিতির্বিরাভে—বর্ধা, 'বর্শপূর্ববাসাভায়: বর্গকারো যভেত" ইভ্যেম্বালে। ন হি বর্শপূর্ববাসবিধিরাক্যঅনিভবিজ্ঞানবের দর্শপূর্ববাসাল্টানন্। তজ্ঞাধিকারাভপেজাজ্জাবি; ন জু
"নেভি নেভি" ইত্যাভায়প্রভিপারক-বাকাজনিত্রিজ্ঞানব্যতিরেকেণ বর্শপূর্ণমাসাধিবং পুরুষবাপারঃ সভবতি। সর্ববাসায়োপন্যতেজ্বাং ভ্যাকাক্রিভবিজ্ঞানত। ন ছি উল্লোন্বিজ্ঞানং প্রস্তুভিজ্ঞনকন্ত্র অর্জ্ঞানায়বিজ্ঞান-

क्रणं स्वादका नामिक् ।

निवर्षकथाळ "अक्टबराविकोदन्" "कप्रयानि" ইट्यावशाविताकागान्। म प्र कवित्रको अव्यक्तिमभक्तक, विर्यागार। २०

আয়বস্ত্রপাদাবানসায়েবায়বিজ্ঞানে বিবিষয়বেণ ন প্রবর্ততে, ইতি চেৎ;
ন; আয়বাহিবাকাপ্রবংশনায়বিজ্ঞানক অনিতথাৎ—কিং কোঃ কৃতক্ত করপন্।
ভল্পবেছিপ ন প্রবর্তত ইতি চেৎ; ন; অনবছাপ্রস্থাৎ,—বথা আয়বাহি
বাক্যার্থপ্রবংশ বিধিন্তরেশ ন প্রবর্ততে, তথা বিধিবাক্যার্থপ্রবংশছপি বিধিসন্তরেশ ন প্রবর্ত্ততে, ইতি বিধায়বাপেকা; তথা তদর্পপ্রবংশছপীতানবহা
প্রস্থাতে। ২৫

ৰাক্ত নিভাছজ্ঞানস্থতিসমতে: প্ৰবণৰিজ্ঞানসাত্ৰাম্পতি বছা বিশ্বনি হৈছে। ন ; অৰ্থপ্ৰাপ্ত হৈছে বছা হৈছিল। মুক্ত বিশ্বনি হৈছিল। কৰিছে বিশ্বাজ্ঞান নিৰ্বন্ধছে বিশ্বাজ্ঞাননিবৃত্তি চ তৎপ্ৰত্বাঃ স্কৃত্ত্বো ন তৰ্বি স্বাভাবিকে। ইনায়বন্ধজ্ঞেন বিশ্বাজ্ঞাননিবৃত্তি চ তৎপ্ৰত্বাঃ স্কৃত্ত্বো ন তৰ্বি স্বাভাবিকে। ইনায়বন্ধজ্ঞেন বিশ্বাজ্ঞানিবন্ধলোৰবন্ধাং, আয়বন্ধনত ত্ৰিলক্ষণ হাং। তল্মাজনায়-বিজ্ঞানস্থিতি হৈছিল। বিশ্বনি হিছিল কৰিছিল। বিশ্বনি হিছিল কৰিছিল। বিশ্বনি হিছিল তৎপ্ৰতে:—বিশ্বীভ্জান প্ৰত্বে। হি শোকমোহালিলোমঃ ত্ৰাছ জ্ঞান প্ৰত্বে। হি শোকমোহালিলোমঃ ; ত্ৰা চ তিন্তা কো মোহঃ "বিশ্বান্ন বিভেতি কুজ্জন" "অভয়ং বৈ জনক প্ৰাথ্ডেন্তি" "ভিজতে ক্ষম্প্ৰছিঃ" ইত্যালিক্ষত্বঃ । ২৬

निर्दावस्ति सर्वासत्ति (हर-स्वाणि सार हिस्स्विनिर्दावस्त विद्याना-स्वित्वास्त्रिकानावर्षस्थार स्वास्ति ह स्वतास्त्रावन श्वासिरम्बिरिट (हर ; न ; स्वाक्तावनस्वनावननारः म दि त्वास्ति व्यासिका-वास्त्रर नवनपूर्व्यावनावनस्वारम्बर्गाः स्वास्ति विद्याप्ति स्वत्यः । ''व्यक्तिशास्त्रास्त्र नव्य । ''व्यक्तिशास्त्रास्त्र नव्य । ''

ध्ययारयात्राः क्यूपरं वायनम् ।

वर्ष्यत्र कर्षकः।" "बाहार्यानाम् भूकरमः राष्", "कण कारस्य हित्रम्" "बक्तरः वि देव व्यव कर्षकः, य अवर राष्ट्र" देखावयाचिक्रकियाक्काः। व्यवक्रमध्यक्षकः निर्धापण,—म काष्यविक्राम-करपृष्ठिमकामवाक्षिः हरूपः विक्रमितिहास्य माध्यमिक्षिः। व्यक्षाप्रभावस्य । म कृ व्यविक्रामवाक्षिः हरूपः माध्यम् माध्यम् । २०

আকাজাভাৰাক্ত ভাৰনাভাৰঃ। বহুকাং "ব্ৰেড" ইতোৰমানৌ, কিং গু কেন গু কৰ্ম ইতি ভাৰনাকাজায়াং কল্যাখনেতিকৰ্ত্ৰয়ভাজিয়াকাজ্যাণ-নয়নং বৰা, ভৰ্মিলাগান্ধবিজ্ঞানবিধাৰপুগণাৰাভ ইভি; ভ্ৰমং; "এক-বেৰাধিতীয়ন্" "ভ্ৰম্পি" "নেভি নেভি" "আনভ্যনবাহন্" "আহমান্ধা ত্ৰম" ইভ্যাধিবাঞাৰ্ধবিজ্ঞানসমভাল্যেৰ স্বৰ্ধাকাজ্যানিনিমুক্তঃ। ম চ বাক্যাৰ্ধ-বিজ্ঞানে বিধিপ্ৰস্কাং প্ৰবৰ্ততে। বিধান্তৰপ্ৰস্ক্তেই চানবছালোৰবেৰাচাৰ। ন চ "এক্ষেবাধিতীয়ং ত্ৰম" ইভ্যাদিবাকোৰ্ বিধিয়বস্বাভে, আন্তৰ্কপাৰা-ব্যানেইন্যাৰ্গিভ্ৰাথ। ২৮

वज्ञवन्त्रवावावानवाज्ञवावश्रावावाविक छ्राट-न्यवाणि छ्राट् ववा "त्राव्यवाचेट वर्गतावोट, उर्क्षण कृत्रव्य" हेर्छाववायो वज्ञवन्त्रवावावान-वाज्ञावश्रावावाय, अववाज्ञाव्यवाकामावन्त्रिक छ्राट, म ; विष्यवाट। म वाक्राण वज्ञवावामः कित्रावावामः वा श्रावावामाश्रावाया काव्यव् ; विज्ञवि ? निन्तिष्ठक्रवविज्ञात्मार्थाक्षव्य । छर्वज्ञाणि, छ्र्र श्रावर वाक्रव्, वज्ञ माणि, छष्टश्रवाव्य । ३०

কিঞ্, ভোঃ পৃদ্ধানতাব্—আশ্বরপাধাধানপরের বাক্যের কলবল্লিতং চ বিজ্ঞানর্থপথতে, ন বা ? উৎপথতে চেৎ, কথনপ্রাবাধাবিতি। কিংবা ন পপ্রসি অবিভাগোক্ষোহক্যাহিদংসারবীল্লেখনির্ভিং বিজ্ঞানক্ষর ? ন প্রােশি বা কিং—"তত্র কো বােহঃ কঃ লােক এক্ষরপ্রভাগ" "ব্যাবিদ্যালি নাথাবিৎ, সােহং ভগবঃ লােচাবি, ভং বা ভগবান লােকত পারং ভারস্থাই তােষ্যাহ্যপনিব্যালালান, এবং বিভক্তে কিং "নােহরােহাইং" ইঞার্বির্নিভিত্তং কলবক্ত বিজ্ঞানত্ব কিবিত্যপ্রাবাধাং তাৎ ? ভল্পাবাণাে চ দর্শপ্রাবাদিবাক্যের কো বিপ্রভাগ । ৩০

नम् पर्नपूर्वमानाभिशकात्माः पूक्तश्रविविकात्मारभाषकवार श्रामानान्, जावविकानगटकाव् छत्राकोकिः, नकादनववः, देवव रशसः, श्रामाना- कांत्रतागनरक्कः। त्यायानाकात्रकः स्थाकः स्थाकः व्यवस्थाः विष्णाः व्यवस्थाः विष्णाः विष्णा

सम् कार्याणामनायम्, वृद्धि-वन्नव्यक्षाप्तारः वृद्धः 'श्चित्रविक्षाच्यः हुगानीक' हेकारको स्विद्धाविक्षणी व्यवाणाच्यः, किर १६ १ श्चित्रविक्षणीयः व्यवाणाच्यः, किर १६ १ श्चित्रविक्षणीयः व्यवाणाच्यः, किर १६ १ श्चित्रविक्षणीयः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः, हि व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्याच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाचः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाचः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाणाच्यः व्यवाण्यः व्यवाण्यः व्यवाण्यः व्यवाणाचः व्यवाण्यः व्यवाण्यः व्यवाण्यः व्यवाण्यः व्यवाणाचः व्यवाणाचः व्यवाणाचः व्यवाण्यः व्यवाण्यः व्यवः व्यवाणाचः व्यवाण

व्यविक्षेत्र वर्गनव्यविष्यवावस्थाणविष्यविष्ठ (६६—१७ माधनः व्यव्य छकः, ७ देणव वर्गनः वाद्यारः, "छः न भगांख" देखि व्यक्रणाणविष्यः। ज्यावाध-व्यव्यव्यविष्ठ (६६; म; मक्त्रप्रवाधायः); वर्गनव्यविष्यव्यविष्ठ (६६; म; मक्त्रप्रवाधायः); व्यव्यविष्यविष्ठ विष्यविष्ठः। विष्यविष्ठः। विष्यविष्ठः। विष्यविष्ठः। विष्यविष्ठः। व्यव्यविष्ठः। विष्ठः। व्यव्यविष्ठः। विष्ठः। विष

वश्यन्तरकिन्तः धरतानः, भाष्यप-धकारतातायकष्ण नत्तर्वः कार्यात्रवश्यकानमार्थम् । कवा "वाषामग्नामीक"रेकायवरकारः। कवामर्थः-श्यम् नष-धकार्यक्रमारके काकाष् । ककानितेष् "तिक त्यक्ति" "विकाका-त्यस्य (कव विकानीतार" "विकाकर विकाक्" "वरका साका निवर्वरक वश्राना मनमा नव"रेकारिकाककाः। वक् "वाषामस्यव (वाक्यूनामीक"रेकि, कर् वनारवानामनश्चमक्तिवृद्धिनवषाः वाकारकत्। ००

स्तिक छित्रावाकावा काकर्याक्तावा ह । एक क्यांकार्यातात्रम् अव वह साहीहरू — "सार्वाकारक रित । साहित स्ति । वह स्ति । वह साहित स्ति । वह साहित साहित स्ति स्ति । वह साहित साहि

কৰং পূন্বেংথ পৰ্নীয়বিতি ? উঠাত্তে—বৰা হ বৈ লোকে, প্ৰেন—গৰাহি-পুঞাছিতে। বেশঃ পদ্যিত্যুত্যতে, তেন প্ৰেন, নইং বিবিৎসিতং প্তং প্ৰেনাধিবায়াণেছিছনিক্ষত প্ৰতে, এবহায়নি প্ৰে স্ক্ৰুণ্পতত ইতাৰ্থ। নমু আয়নি বিভাতে স্ক্ৰুত্ত আহত ইতি আনে প্ৰকৃতে, কৰং গাড়োহ-প্ৰুত্ত উঠাতে ? ই'ত ; ন ; আন-লাক্ষােরেক;ৰ্বত্ত বিষ্ক্তিত্যাথ। আয়ুনো ফ্লাডোইআন্মেন, তথাক্ আন্মেৰ্যায়নে। লাভঃ, ন আনায়লাভবহুপ্ৰাত্ত-প্ৰাত্তিক্ষণ আয়ুলাভঃ, কৰু-কৰ্বাংগাভিদাতাবাথ। ব্য বি আয়ুনোইনায়া প্ৰবিদ্যা ভৰতি, ভ্যান্থা পদ্মা, পদ্মান্থানিক। নায়াবিশেবস্থ্যাহা ক্ষ্ৰাঃ। স্তু অপ্লাপ্তাৰ্থিক ক্ষাণ্ডিলভাঃ, বিধ্যাজ্যান্ত্ৰনিভ্যান্ত্ৰভব্তাথ, ব্যে প্ৰাত্তিলভব্থ। ব্যয় ভ্ৰিপথীত আয়া। ০৭

শাষ্যাবের নোৎপাদ্যাধিকিয়াব্যবহিত:। নিভালক্ষরপথেছণি সভি শবিভাষাতাং বাবধানন; ববা সূত্যাবাদ্যা লগি ভক্তিকায়া বিপর্বায়ের রক্ষভাভাসাদ্যা অগ্রহরং বেশরীভজানব্যবধানবাত্রন্, ভবা প্রহর্ব জান-মাত্রবেষ, বিপরীভজানব্যবধানাপোহার্বদ্যক্ষাভা ভ্রপোহনবাত্রবের লাভ:, वाकः कवातिव्यनशास्त्रः। ख्यावाञ्चनारः कामान्यीववनायमकान्यकार यक्तायः। ख्याञ्चित्रययः काम-मृबद्धादकार्यः विवयञ्चाद-कामः व्यक्का व्यक्तिविधिः, विकासमाध्यादः। अन

खन-विकासकाविषयुगारः । वश-जहसामा मामसगास् शरवाना शाकिः सकः चारमणाविमामसगाणारः, खानाविमाविष्टः । शाकः खारमान्---रेरश्चरः (वा ८२४ ; म कोविर शाकिः झाकः । भणाकविरेदेः महः विकास ककरतः। यहा, वःशाकः वश्च (व ८४४, यूम्कृतायः विकास कोविष्टियेका-कामः, कदकार (जाकणविकार युक्तिमारशाकोश्च पुश्चरव करवः १०० । १

জীকা। সন্তাতি প্ৰতীক্ষাৰণৰ প্ৰানি বাণচ্টে—গ্ৰহজান্তান্ত্ৰা অগতাভাতিবাৰেন ভণিতি সৰ্বাৰণ বীজাবন্ধ অগতিবাহিও প্ৰেণ্ডানিবি সময়।
কৰা কৰাতে বীজাবন্ধৰ বিভাগৰা ভণ্ডাত ভাৰ্যাণ প্ৰবিভিন্তি। কৰা তথা পৰোভক্তা কৰাতে বীজাবন্ধৰ বিভাগৰা ভণ্ডাত ভাৰ্যাণ প্ৰবিভিন্ত কৰা তথা পৰোভক্তা কৰাতে বিভাগৰাক কৰাতে বিভাগৰাক বিভাগৰ

"नागरता विद्याद कार्या नाकार्या विद्याद गतः।"

ইতি পৃত্তিহতুপত। খবসাতি ভাবা।)

ভংগভার খুলকারণসূত্র ভরাষরপা লানিকাদিনা তৎকার্যকৃষ, ইলানীং এবেশ-বাকাল্য-শ্বাপেকিভগর্বান—আন্থা ইন্তি। কাওবলয়নো বেদভারতো বভ প্রভ প্রভিপ্তার্থে বিজ্ঞারতে, কর্মকাবং হি স্বার্থান্ত্রানানিভিচিত্রভাষ্ট্রারা ভর্জানোপ-ব্যের্থান্তে, জানকাবং তু সাকাবের ভ্রোপ্রুম্বাতে 'সর্ব্ধে বেলা বৎপ্রমানস্থি'ইভি চ

क्षत्र । म गरबार्य व्यक्ति विश्वविष्ठि व्यायमा । मर्बाणावाक व्यक्ति म्यवन-बुक्षा ए अ विद्रापनवायावार्यवाय-याज्याज्ञिष्ठि । वयानक व्यूक्तियाजीवायककवन्त वाश्यक्ति-ज्ञानिकारमञ्जू वया विवास्थानस्य नाविवायमास्यानस्यूवानिविधाः नवार-व्याकाविरकाकि। विवा नावकावयविकाश वावक्षक-काकि। व हि बहुनावामवनकावरच मञ्चनित, नरवानावामधनकाकि कारा। व्यवस्थ मर्वात सम्बद्ध नुर्वत्यक्षेताः। बाचनि पर्वशानणानिकाकृत्रवाकृता नवदाः निराधः नवाविकाः, मुख्यकाबामकावनकाकरकरमि विविद्यानावावरकार मारवावावयानकाकरवव कावनर ভভেগবিরাকরণার্বং কর্ববর্তি—যঃ ক্রারান্মিতি। ক্রতিস্থারবারের পরত ভংগারবত্বং अनिक्षविकि कार:। नावस्त्रनाचकक देवश्कारिकारिकवानद्ववक्षानिकानुद्वाककः निवाकी-ভাব-নাদপ্তাকে ইভি। বাবভুরারন: বভাবত: করবে বুটারবাদ-লালিলা-मिकि। शाकिश्वात्तावावात्ताः व्राप्ताः वृह्याव्याः - प्रमाधित्वाकः। वदा क्यांवि वालांवा कतावार्य. क्यांकाउउद्यांवा कवर बन्धांवा कक कामवादाः क्रांक काराः। विकालक्षरियक्तराति रक्षः व पट्टाञ्कानविश्वेका, दक्ष्यक्र उदमावक्षारः বাকো।বৰু'বৰুৱা।এছা তু ভবেতি মধানো কতে মন্তেভি । বাকানো হ বৈ নাম नामक्रणरशामित्रं (७४), (७ वम्बर) उत्तक है 'ठ क्रविमाबिकान-छान्छ। मिछि। नामसभावकरेवडामरम्भनिवारवय निका १ वयवस्य छोर्च क्रमध्वावीववार, क्रवाविका व्यावाक्रिक-ভাতিপ্রেতা ভংগপদ্ধ বিবেশতি লুক্তেভিত ভল্পাদের ছংগান্তুরপাদশ্লেবিছবার---মুক্তেন্তি। বৈভাগৰাবা: ওভাগিসভাবেচ্পি বভাবত্বাবাং বৈব্যবিতি চেয়েড্যাঞ্---অক্তান উক্তি। প্ৰাাক্তৰাকোক্ৰজাতং প্ৰনানাৰ প্ৰায়ণতি –জ ইভি। ভবেৰ कावायः सठाकः विविक्ति अस हेकि। बादा वि वट्टा विहान्द्रशायिक्यान्ति पारिकारहेकातायवारम नामरवाकीक ७०१कंग्यानिकायकः निर्माणका - जाना १८७ क्षत्रावात्रमा नाकृत्य कर्निट्टर्कनाकानः क्षत्रोकि यथा निनित्रहे— আভ্যাতি। वानवनायांवर-नवार्वः ववशंव क्षामानिक । ठरेका श्वानिवयसा नाववीछ वराता विनिवत्र-कद्माछ । उषारेबरण परवहनावानाविकत्वाविवरण (क्षूबार-প্রবিষ্ট ইন্ডি।

প্রবাধা প্রটা পরে প্রবিটো ক্ষরী লাগিট্রাক্তি নার্নাক্তি। পূর্বাপ্রবিবাধি স্বাধ্যে—নেজ্যাক্তিয়া। বাজিনতেতি কর্মকে গ্রহালক্ষরকর্ম বিভাগেলান —জ্যাক্তিত জাজি ব্রাক্তিয়া বুলাভে বংসা ক্ষরেবিভিন্ন কর্মকি ক্ষরি ব্যক্তিয়া বাজিক বিশ্ববিভিন্ন কর্মকি কর্মকি কর্মান কর্মকি ক্রিক্তি কর্মনা ক্ষরি বিশ্ববিভিন্ন কর্মনা ক্ষরি বিশ্ববিভ্না কর্মনা ক্ষরি বিশ্ববিভিন্ন কর্মনা ক্ষরি বিশ্ববিভিন্ন কর্মনা ক্ষরি বিশ্ববিভাগিক ক্ষরি বিশ্ববিভ্যালিক ক্

কথ্যুক্তসানামাধিকরণামান্তাম্বর্ধ করতো নির্বাধিবৃত্তকং, ভত্তাং—হত্তেইন্তি।
নির্বাধীত্যানিশবেদ কর্ত্তরণানিধাংশর। নিরিভাগীত্যাধিশবেনোশানামূচ্যতে। বিষতং
নির্বাধিনাশেকং ভার্যভাগ সম্প্রতিশ্রধিত।বি:। কত্তি আগবড়ে সম্প্রতিভবে ও জগতি
বিশেষভাগ — অগ্রান্তান্তি। কবং পুনর্যাকৃত্তশবেদ কর্মানিনা শব্যা সৃত্তে, একত

বৰভাবেকাৰ্যবাৰণৰ ব্ৰাহ—দুক্তিশুক্তি। উভাবেৰ কুটানি—ক্ৰদান্তিদিকি। উভাবিৰক্ষা আনন্দ ল্লোবত নাই ভিকনাই—ক্ৰেদ্যিকি। ইংৰডাবাছিতবাংলাভিঃ। নিবানবাত্ৰবিৰক্ষা আনন্দ ল্লোবত বাই ভিকনাই—ক্ত্ৰেশ্ৰিড। নিবানিক্ৰবিৰক্ষা ক্ৰোৱোগভাপি নাই ভিকং ক্ৰাকি - ক্ৰথা মহানিক্তি।

অবাকৃত্বাকো পরত অকৃত্বাক্ত প্রবেশবাক্তা সন্থান প্রার্থিত পূষ্টে কার্থের প্রার্থিত পূষ্টে কার্থের প্রার্থিত প্রতি কার্থের কার্থিত ত অকারাক্তর্থেকিশক্তি—মৃত্যিতি। কর্মিকিলি কার্থিত করিব করেব্যালি করিব ক্রিলাভি কর্মিকিলা ক্রিকা ক্রিকার ক্রিলাভি করেব বিশ্ববাভি কর্মিকিলা ক্রিকা ক্রিকার ক্রেকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকার ক্

ৰস্থ ভক্ষণ বিবিত্ত বেকাৰ ভাগেংভজাপ গৰেণো মৃষ্ঠতে, ভবা পৰেৰ ফ্টে
অবভাক্ত প্ৰবেশে ভবিষাতি, নিভাগে—খাথান্তি। পাৰাৰসৰ্পাহনৰ কাৰাষ্ট্ৰতৰ প্ৰজ জীবাৰো পাৰণাৰে ভংগটে আনি প্ৰবেশ্যক প্ৰতি নাভিবেকা কৰিছি—মাজিনিত। অন্ত ভবি প্ৰজ ৰাজ্যবাধিবং প্ৰাৰংগনভাগেনাবছানাম্বৰসংখালায় প্ৰবেশ্য নেভাগে— মুক্তিতি। নিৰ্বেশ্যে পতিনি প্ৰক্ৰিয়া, ডজ ছানাজ্যেৰ বিশ্বেশ্য প্ৰাণা ছানাজ্যেৰ স্বল সংখ্যাৰসকলো বা প্ৰবেশ্য, স্ব সাৰহৰে পতিজ্ঞিল চ নাজ্যৱালে) মৃত্যু গোলসমূলে। স্ব ভব-জীতি হোজনা। বিশ্বজাতি পাঠে ভূক্টেৰ যোজনা। ব

অবেশক্ষণা নিষ্ণব্ধবানিছিং শগতে জান্তমুখ্য ইতি। মনেশক্ষণ্ডেরপ্তবোপপন্তেকাঁজাবান্থাইবনিতি পরিণ্যতি -(মৃত্যা দিমা। অবৃষ্ঠাথ নির্ব্ধণ্ডর প্রিক্তবান্ধান পূক্ষণ প্রকারতে প্রবিদ্ধান প্রকারতে প্রকারতে প্রকারত কর্মণ প্রকারত প্রক

প্ৰসাহিত্যে বীজন্ত প্ৰবেশ্বৰ কাষ্যে প্ৰজ অবেশ: জানিতি শ্ভিষা ব্যৱতি—
ক্ষুত্ৰ ইন্ত্যান্ত্ৰা। বিনাশানীভাগিশকেনানাম্বানীগৰ্মানি পৃষ্তে। প্ৰকাশকৈ
নাশকা নিয়াচটে—ম ক্ৰেন্তি। জনাধীনাং ধৰ্মাণাং ধৰ্মিণা ভিন্নমান্ত্ৰানভ্যানভ্যানভাগিঃ।
বীজনত্ত্বান্ত্ৰ ব্যৱহান্ত্ৰ পাৰান্ত্ৰপ্ৰিয়াবানাবেগতে চাপ্ৰকৃতিঃ। প্ৰজ সৰ্ব্যক্তানঅবেশাসভবে প্ৰবেশজ্জোলখনং বাভাগিভাগেভা পূৰ্বপ্ৰস্থানংহয়তি—আন্ত প্ৰেন্তি।
ক্ৰম্ভো হি পাঃ প্ৰটেভি বেলাভ্যন্তালা, প্ৰটেগ্ৰ ভ প্ৰবেটা, প্ৰম্ভি বাাক্ষ্যানীভি প্ৰবেশনাাক্ষ্যান্ত্ৰকৰ্ত্বজ্জতেঃ, ভনাৰ প্ৰসাহভ্ত প্ৰবেশো ন স্ক্ৰিয়ানিভি নিভাছ্যতি—

(मञ्जामिमा। परेवर देविवासकिः मरगवनि—छ्रथिछ। बेप्रदासकिनित्र गरगक्ष्यपंत्रावनमधीकार-ज अख्रास्यिछ। बैनाशक्ष्याश्चरपाअस्कृतकि— ज्ञानीष्टि। गाणाक्षर्याशकि—खर क्यां स देखि। ज्ञान गाणात्रकास्कराः वर्गकि—भूस देखि। वेदासकक्षीनाः वर्षपायार-म शस्त्रिष्टि।

পরত বাবেশে প্রবিষ্টানাং বিধেঃ ভেগান্তরভিত্তত তভাশি নানান্ত্রনভিত্তি শকতে--প্রেক্টিশ্যমিতি। ব শরতাবেকরবেকরকৈরিবোগানিভি পরিবর্তি--স্ক্রোদিনা। প্রচাহ বিচচারেতি বাবং। ৬

नृश्य बाराद मानायमनमः अहााबााः सारायमः छाराहि - ब्राह्म दे छ। टिकार मरनाविद्यक्ति प्रवक्त कि वाहातः, त्वाक उत्तरमञ्ज्ञाद्वातिक । अकावहेरणम प्रवहित —্নেন্ডি। অমুভবৰমূপতা বছৰে *-আলি*ছেডি। বাদংবাহিছবিতি বেবং। সূচাতিবভি-क्षक्षवाक-(मुक्कि। बानर्य। कि नवकामानाविष्य बानर परवागरक, म जासम्बद्धि। न पार्थ वाना, न ह रेबनबोडाः, आइएवन यनवदावित नवटक-अक्राक्कांग्रीकिः। न्हिए नृस्त्रा क्षेत्र वानक्षातिक कर्तक निकाकी वाकिन्दिका - (मुन्ना बीकि Beifene: wart, weimeren mintel fetetfenunnmentegteifeferent ammi-(पताकामकारकनावकमामाधिकावमक म विरक्षारवाधकीकार्य: कि. बाठाकावीबायनाव-विवत्रकाशाक्ष विवत्रक विवादिवत्रका वामरशान्तिका विरवारवादिकाकित्रशाक्ष লোংবাকাছবিবরতে জভীক্তাব্রতি । দুর্টৌরিভিঃ প্রাচ্যিভাগিকভিভাগত ভরি »। পঠি'eড।প্ৰা পূৰ্ব্বোক্তবেৰ আহম্ভি-ক্ৰি: ভ্ৰম্ভীভি। বুভাবিভপাৰি:, ভঞ্জান্ত व्यक्तिमात्र उन्यक्तियक्षरियद्यस्य जुनाश्यक्तात्रात् विकासीयिक दशक्ताः चाचरना इ:विकास्थात (क्षस्थान-अर्थाप्र । अतः (ग्रहाद्विति गृहस्य स्था सामास्थान-वर्ष-।वृत्र्क्वविनिद्देश्वय अञ्चलविवत्यात्र (क्यनकायत्त्र) द्वावाविवात्याद्वारश्चीकारः । क्रि. क्षुमार्थिवान्यक्रकः अक्रमा क्रेक्ट अक्रमाच्छर वर्गरची क्रविताचनः नरमाहितर वाबक्रकोशाः-मनुमाहारुष्टि । विक, नामरबाहु : वर निवान करवाविक विवासकाविकान दिन उ९मठीर**७७६वंद**निकदाशास्त्रि नश्नाधिकः मामानिकविकारि (एर्ट्रेकि । १

ক্রতিবশাদারনঃ সংসাধিবং শততে — আ গ্রাম্মিতি। সুবং তাবদারাজন শাদ্রনণ্ড কাষান্ত স্থানালনালনালনিক তেওত কাবিনাত হৈ হংগ্রণ তথা, ইত্যান্তসংসাধিবন্ত-বিভাগ:। আবিশ্বকাংসাবিদ্ধান্ত বাংলাবিদ্ধান্ত হিংগ্রাম্থ কাবিলাক বাংলাবিদ্ধান্ত কাবিলাক বাংলাবিদ্ধান্ত কাবিলাক বাংলাক বাংলাবিদ্ধান্ত কাবিলাক বাংলাবিদ্ধান্ত কাবিলাক কাবিলাক বাংলাবিদ্ধান্ত কাবিদ্ধান্ত কাবিদ্ধান্ত কাবিলাক কাবিলাক বাংলাবিদ্ধান্ত কাবিদ্ধান্ত কাবিদ্ধান্ত কাবিলাক কাবিলাক

ত্ৰণায়প্ৰামাণ্যায়াৰ: সংসাধিছবিতি প্ৰতে—ক্তাক্তিকেক্টি। বৃদ্যাধিচভূষ্ণওণ-বানাৰেতি অভিক্ৰমন্ত্ৰেম বিহেংগাভভাসংসাধিমমূল্য, ভ্ৰকাবিদ্ধছো হি সিভাভো ভবতি ইভাবং। সৰ্বাভকাবিয়োধী বা নিভাভঃ ? কভিগৰ ওকাবিয়োধী বা ? নাভঃ, ভাকিকাবিনিভাভ-

নপু বিজ্ঞানবাদিনো বৃপ্পাদকত বিজ্ঞানত সাকলোন পাল্যানকরমূপন্তি, তথা ওদাত নাঙণি তাথ, ভজান প্রস্তৃত্যাতি ক্রকাল্যানক তু ওবিনাণি, ছাবালি করিদালিতং ওপার্থ প্রশাসক। সংসাবিষ্য সাক্ষণানক তু ওবিনাণি, ছাবালি করিদালিতং ওপার্থ প্রপামিকিল্যাল্যার নিজে প রবেবালারনত্বাল্যাল্যান্যানিক। প্রভাগিকিল্যাল্যার নিজে প রবেবালারনত্বাল্যালয় সাভাগ বৃদ্ধিত্বাং পারিবেবালারিও বিভাগি সাভাগাল্যাকরশনিক। ছাবালী শ্র প্রমাণাভাবাং কর্মা সাক্ষা স্বান্ধিত্বাল্যালয় ছাবালায় ভ্রমানিক। কর্মা সাক্ষা স্বান্ধিত্বালয় ভারার্থিক। ব্যান্ধিতি ক্রমানিক। ক্রমানিক। ব্যান্ধিতি ক্রমানিক। ব্যান্ধিতি ওপার্যানিক। ক্রমানিক। ক্রমানিক। ব্যান্ধিতি ওপার্যানিক। ক্রমানিক। ব্যান্ধিতি।

আকাশে ব্যক্তিরমাণবাহি—ম চেডিঃ। আকাশত নিতারং তেও 'আর্ম আকাশং সভ্তঃ' ইন্যাধিকতিবিয়েবঃ ভাষিতি গুরুত্বর্বাববাধিভিনিভাকর। প্রবাণাহি বাভিচার্যাশভাকি—প চামা হৈছে। স ভাবণবাং সভি আগুকেতঃসভে মানাভাবাৰ; বিশ্চাকাশেণভর্তবন্তি, কাশত শুর্মে নিবেষা ভভিনে" ইন্তাভিন্তেঃ ক্রপভিনান, বনোগ্যার্থয়ং ক্রভিত্রসিভ্যন্তা স কর্তিয়ভিচার ইতি ভাবঃ। ক্রভিন্ বিভিন্নবাশে তিমেবেদ্যিতি বৃত্তির বিষ্পুত্তে, তথাপি নিভামিতি ভাবেন পরিবাধবাদী প্রতে—ব্রিক্রিয়ামান্যিছে। ১৭প্রভাব্যভাবেন্যালিক প্রভাবিত পরি-ক্রবাভাবরবাভ্রবাহা বাচাং, তবেন ক্রানিত্যয়ন্ত্রভাবিন্য প্রামাণিকত্ব প্রভ্রমাণিতি পরি-কর্মি ম দুক্রস্থ্যেছিঃ।

আছনং সন্ধিছা দাবছবছং বাছ, ভবাপি নানিত্যহনিতি স্যাঘাষী প্রতে—আব্দ্রাহ্র-ক্রেইন্সীক্তি। যথ সাবছবং ওগবছবদাবোগভূওং, ববা পটাছি, ভবা সতি সংযোগনা বিভাগাবদানভাগবছববিভাগে স্কানাপোহবহুয়াবীতি চ্বছতি—ম লগবছাক্তেভিও ঘব সাবছবং ওগবছবদাযোগপূর্ককমিতি ন ব্যাক্তি: সাবছবেছব বছাচিত্যবছবদাযোগ-পূর্কক্ষে প্রবাধানাগিতি প্রতে—ক্র্ডাদিক্তিও বিষ্ট্রবছবদাযোগপূর্ককং সাবছবছাং পটবাধিত্যস্থানেন পরিকর্গত—নানুহ্মহাক্রাদিক্তি। আহনো বন্ধ-সংযোগভঙ্গালিক্তপত্ত দাবছবরস্কিন্দোনিভাগাধিক্রসক্ষা প্রতিপান্ধ প্রভূতস্থাদিক্তি।

প্রসা প্রবেশে প্রাপ্তা: কোবপরপারাং প্রাঞ্ডা ৩৭এবেশ্যস্তাং নিরুপর্যতি—জ্যুক্তি।
ববা হলে প্রাংগে প্রতিবিধন্তবা প্রবেশে দৃষ্ঠাতে তথারনাহিপি স্বট্টে কার্যা কার্যানিতঃ
প্রবেশ ইতার্থ: অনবজ্জিরায়রভিদ্যানোর্যায়গরে সন্তিবিধায়াপ্রবেশঃ
সম্ববহীত্যাপদ্যা বস্তুর্যাক্ষর্যায় করিউস্থিক্যায়ায়ায় প্রতিবিধাস্য সাম্বর্তি—
আশ্রেয়ান্তি। ওদেব প্রশক্ষতি —প্রাক্তাৎস্ট্রেরিন্ড্যান্ট্রনার।

বাহিত্রেন্তং রবেশং প্রন্তিপায় গরেই: পরাণ্টে —ম জি'ত। কুওল্ডিনিশো বেশাংকালাজাপ্রসংশন দিশ্বরে বেশার্থরে কালার্থর চ রাবিকাশ ইভি যাবং। বং কু
পরসাধ্যান্য প্রবেট্ বর্ষিত, ভত্রাহ —ম চ্চেতি। অবেদং প্রবেশাধি বর্তনা বিভয়ান্যম্ব,
কিনিগ্রাবিদ্ধা করাতে, ১তাহ উপস্ক্রীন্ত। আম্বজানার্থ্যেন প্রবেশাধীনাং করেতবাস্তবাক্যানাং স্বার্থে প্রার্থনার্নিভাগঃ। কলবংসরিবাবকনং ভবক্ষিতি ভাষমান্তিভাক-

त्वं अन्ववि—উপাসংক্ষারিজ্যাদিন। ७७:नरम। ७७एमाममामा। ७४-गायकानम्गरः । एगावायः मायवि—आश्राटक द्वीकि । १वेगविशमानदिवम-क्षानायेतः ररपवत्तार—एक्ट्रहिक्तः भविषः अत्यनः विश्वनाविधम्नमः । उन्यामिकि । ३२

का पुमन्नक वारत्यक वर्गादक्शायकाव - जा मन्त्रार्शका द्वाक । मध्यकि मधीमान्यक किविकि अरवन्यकार्यक वर्गाद्वकानकाक्-मूलाट्याकि। पृष्टेशका वाकालम्बंक्यूबानहरि-ভट्ठिके। এবেশাবারে (ধর্মি: দল্যার্থ:। এবমোধার वनवाचीरकानावान्-यर्थाञ्छ। उपाध्यदे लाक ३:७ ७३ গ্রেছ कृतक कथा: निवतक जाम—पाद्धःस উপানভাত ओछ। विवतवनववार्शियस्वतः बूर्यावर्शक-ादेखरकाछ । ७७ ७१०१४: वशक्रमान्याक्रमाया কাষ্টালাবংগ্ৰহৰহিতকে বুজিলাঃ —ড্তেডি । দৃষ্টালগতে বিবাধিতবাৰমনুষ্ঠ লাষ্ট্ৰাজি-क्याव-व्यद्भक्ता लेखा । व्यावायः वाध्यय प्रदेशाय्यात वर्षे वृक्षिः, वादम वृज्ञायाव वृश्विद्वदश्वात्रवात्रवात्रवात्-कृत् श्रीका अवश्ववः मध्यार्थः। म स्वतमः विद्यप-मृद्धित करणान्त्वा, किंद्र मायाक्ष्युविद्यान्य प्रकाशनी: व्यवशास्त्र देमरवकाणि प्रदेशाः वार्थः। राकाश्वरवरहार्श्वकूर छृदिकावात छच्यात्रीहरः । ववाक्ष्यते वृश्विरावनः नदोदद वृत्तदक, उत्तर्वदेखन कम्लकायमानस्या धानद्देशमाना व्यासना वाक्रवद-ৰপতঃ সভাপালায়ানং পুথত্ত হৈ ব প্ৰত'ত বাকা, চ্যাণটে ভ্ৰমা গ্ৰান্ম 🤊। विनिहेर नुष्ठावादित क्वनवावावर व नुक्की क वारवा ठाकूववविद्यवावका गाःस्ट्रे-सालक्ष्य के छ। ३३

উক্তনিবেশবাক্তপত্তি—মাস্ত্রতি : প্রতিবেশ্য প্রাণির দর্শরণ্ পরিবর্গতি— মেত্যাসেম্। তর্গেরপালাং স এব ইঙ্যালিবাক্যানাং জানার্থরে মানবাহ রুপেমিতি ।

বিলিক্ট্য দশ্যেহলৈ পূণ্ডাদৰ্শনে বে গুজিবনন্তবাকাবিভানি—তথ্যেন্ড। থানক্ষাৰাক্যাৰে হিছে সভীতি ব্যবং। ভন্তান্তক্ষলনৈত্যি পূৰ্ণভাননিবিভ পেষঃ। বিলিক্ট্যাণি
পূৰ্বনান্ত্যান্তবা প্ৰাণনান্তিক গ্ৰাংঘাৰণ্যিতি প্ৰতে—ক্ষুক্ত ইভি। প্ৰাণনানিবিদ্যান্তবি প্ৰাণানিভিঃ
কৰ্তা প্ৰাণানিভিঃ সংক্ষন্তাৎ পূৰ্ণো ন ভ্ৰতীভাতবোধৈক্তব্যান উচ্যুক্ত ইভি।
নান্তবি প্ৰাণন্ত্যান্ত্ৰপূৰ্ণপান্ততি—প্ৰাণনান্তিক্যান্তক্ষ্মানিভি। ভৎকত্বানান্ত্ৰা প্ৰাণনান্তিক্যান্তক্ষ্মানিভি। ভৎকত্বানান্ত্ৰা প্ৰাণনান্তিক্যান্ত্ৰান্ত ব্যব্দান্তিভি ব্যবিদ্যান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যবিদ্যান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যবিদ্যান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যবিদ্যান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্যব্দান্তিভি ব্য

ষাণাবদ্বারাং সময়করণোপনংকারেংশি আগত ব্যাণাবদর্শনংআবাজাবদ্বাৎ প্রাণ্রিস্ত্যাধিবাকারাকৌ বাব্যার কিরাণকিবেন আগনাদ্ভাগাতো ববরিভ্যেতংপূর্ককর্ত্তরবাক্যানি ব্যাচটে ত্রেপ্রস্ত্যাদিনা। আগনবদনাভ্যানভূককর্তেরিরব্যাণারমূপনক্ষা
বাক্যান্ত্রতাৎপর্বাবাদ-প্রশিক্ষের্বাভি । আগনাদ্ভাগাবিদারেশাস্থানিত্রের । বৃষ্টক্রিভ্যানসূক্ষানেনিরব্যাণারোপনকরণং ক্রাংনভরবাক্যাহাভাগের্বাবাদ-প্রশান্ত্রিভা

চকুরাত্বাগাধিবারা আর্মনীতি পূর্ববং। উজ্যুবীরিয়ব্যাপাথা আরম্ভাং ভর্যাপারমূপক্ষায়েবা প্রেট্ ব্যাধিপরিজ্ঞেরে ব নিয়াভি, সব্যং বিবেশকক্ষাবাথাবিজ্ঞানভায়ে—
মাহার্মেনেন্ডা ক্রিয়ার প্রকাশক্ষাক্ষাবাধানভায়েবা কর্মানেরেরেরির অপারেরিশ কর্মানেরে সংক্ষার্থ প্রকাশক্ষার্থার কর্মানেরেরেরির অপারেরিশ কর্মানারের কর্মানারির কর্মানারের কর্মানারের কর্মানারের কর্মানারের কর্মা

আন্তাদিশবেশ্যা বিশেষমান তালী ত। কুংগাদ্ববন্ধবন্ধাননাৰ ন ভবনী ভোতদেশ কুটানি—এবং জীতি: প্ৰাণাদীনাং কৰ্মনাম্য নভীতি বাৰং অব-ল্যান্ডামানোচশি ন কুংগ্ৰে দুৱা ভাষিতি শেষঃ।

অনুবন্ধনি গোৰাণি বন্ধান – আ য ইতি। আছোপানি চুৱাছবৰি নামছ-ৰবক নিতি পছিছা পৰিবৰতি কচন্দ্ৰা দেকো চলাছি নিষ্টাছবলী ৰ বছাছৱ-দলীতি পোৰঃ। উপাছিক নিৰ্পাশ ইতি জানাভি ন স্বাহালপানন বিভাল্ছাং। ভবা চ জানঃ জানাতীভি বাহতি বিগাপ্তান যাত্ৰ দৈকি। এবং বেশেভাহনে — বিশিশ্যক — প্ৰস্থামী ভাইদিকা। ১৯

আকালাপুর্বক: বিদ্যাপত্রথবভাষের'র —ক্রথামিতি। ভত্র বাথেরং পদবাবন্তে—
আশি দ্রাভীতি। ভবাচাই প্রশাসাসীতি। ভ'দবৃদ্ধে পূর্বোজনোবরাহিতাঃ
বর্ণাতি লাভিট্রতি ভর্তবিশেষণবান্তিবাহেশেতি বাবং। কবং ভর্তবিশেষণাদিরাই
ভেন ভেনারানা তিইন্ কৃৎকঃ ।বং, ত'ব -এক্সমান্তেতি। বংলাংসা প্রাণনাদিসকতে
সভবতি কিনিভাগাধিসকতেনেভাগিতাই—ক্তথা ভেতি। আছনি সর্বোপসংহারবিত
বৃধ্বে পূর্বোজনোভাবান্তং পঞ্জনোবার্তবিভাগিসকার ভিত্তমান্তেতি। বংলাজান্তোপাসনে
পূর্বোজনোভাতেন প্রাভক্তবের হেছুং প্রায়েতি—প্রামৃতি। ভ্রার্থ ক্যোর্ভিভব্যান্তিতা বাত্ত বন্ধান্তাহিনাভাগিতাবের প্রভাগ্ ভূতেবেতি বাবং। আভাজাপূর্বজন্তর্ভালাভাযবভাগ ব্যাকরোতি—ক্রম্যান্তিভাগিসনা। ভ্রাক্সবেভিনালানব্যবোপানীভেতি প্রায়া অভৈব ভ্রোত্তে বিভাগি বিশ্বা।

विष्ठारकः विविश्वन्तः विश्वा विश्विष्ठवार्थः यात्राश्चान्यविषयः विषयः विष्ठाः - व्याद्यक्तारकारकारकारकः विश्वावाद्याः विश्वविषयः वर्षकारमाधिः विश्वविषयः वर्षकारमाधिः विश्वविषयः वर्षकारमाधिः विश्वविषयः वर्षकारमाधिः विश्वविषयः वर्षकारमाधिः विश्वविषयः वर्षकारमाधिः वर्षकार्यः विश्वविषयः वर्षकार्यः विश्वविषयः वर्षकार्यः विश्वविषयः वर्षकार्यः वर्षकारः वर्षकार्यः वर्षकार्यः वर्षकार्यः वर्षकारः वरतः वरवरः वरवरः वर्षकारः वर्षकारः वर्षकारः वरवरः वर्षकारः वर्षकार

स्वभूक्षविवाधी नवाछ—'क्रेष्ठं कु क्राब्य के । महस्याः वकावाक। विवध स्वनाती सिवाबि नावक्ष्यानशर्काविवा वृद्धार्थः । ववकावाधाय क्ष्यव्यान्तिविवाक्ष्याः । विविद्धेक्षायिकाश्वरः नावक्ष्यानः नक्ष्याः मिक्ष्यिः क्ष्यव्यान्तिविवाक्ष्याः । विविद्धेक्षायिकाश्वरः नावक्ष्यानः नक्ष्याः मिक्ष्यिः क्ष्यव्यान्तिविवाक्ष्याः न्याः क्ष्यः । विविद्धेक्षः म ववत्र नावकानः विविद्धाः । विविद्धेक्षः म ववत्र विविद्धाः । विविद्धेक्षः म विविद्धाः । विविद्धः म विविद्धः । विविद्धः विविद्धः । विविद्धः विविद्धः । विविद्धः विविद्धः । विविद्धः । विविद्धः विविद्धः । विविद्धः विविद्धः । विविद्धः । विविद्धः । विविद्धः विविद्धः । विविद्धः । विविद्धः विविद्धः । विव

সংশ্ৰভাৰত্তিক পাৰিবেশ্বৰণৰ আন্তানুজ্যান্ত । বংশৰ পৃষ্টাংখন স্পাইণ্ডি---মহেথান্তি । ব্যৱস্থানি জন্ম বিশ্বভাৱ, কৰা জ্ঞানাভিক্ষেভি বিবেশ্যতে, ভঞান--ভত্তমান্ত

इंडन्डारवानामान (विवश्यो काक - क्रिक्ट्रास्ट्रि) विशेषमान प्रविद्या । कावनामान विशेषमान प्रविद्या । कावनामान विशेषमान प्रविद्या । व्यवस्थित । कावनामान विशेषमान प्रविद्या । व्यवस्थित । कावनामान विशेषमान प्रविद्या । व्यवस्थित । व्यवस्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्यस्थित । व्यव

বিশিন্দানাং বেৰাজানাং কাৰ্যপথৰেইপি তজীনানাং ছেবাং বস্তুপত্তভালভাছ—
যথা ভোড়ি। বিশ্বাবেশবেদ ডজেলবেনেতি বাবং। সম্ভুলানিবাভানিবাহানিতেইছেনিবেধেনাবলং বস্তু সমর্পথতাং ক্রম্পাবিধিবিশেবছনিত্তাপভাছ—থ্যস্ত্রান্ত্রনা।
'এম বেল এজৈব ভবডি' 'ভরতি লোকমান্ত্রিং ইত্যাশীনাং কলার্পকছেনোপান্তিবিশ্বাপবেশ্যবিভিয়েতা।
হত্তকাং ভোড়ি। বোজো একগ্রাবিঃ ২১

আলোপাননং বিধেয়নিতি পক্ষা পকার্থনান—অপের ইন্ডি। তভাস্থপারাপ্র মান্থাং ভেনেডি নাক্ষ জানভাসংস্থাপরে ভার্থবৈয়ন্তাভার্বিভি-প্রের কেন্দ্র-কলোভি। আনার্থাং বেলাস্থের বিধেয়াক্তাত্র মান্যান প্রস্তুন্দ্রিভাস্ত ।>>

পক্ষৰে মাধ্যে মনৰপক্ষ মাহান—নাথী প্ৰক্ৰান্তপ্ৰান্তি। তথ্ৰ নঞ্চনেৰ বহুং বাচেটে নাডেটা পালজানবতো নিবছাভাবায় বিধিঃ নছবভি, ক্ষিত্ৰভাৱনিবছি নিবছোঁ কয় গলাৰখনতৈ চাবঃ এক্ত্ৰান্ত কৰ্মান্তি-জ্বাত্ৰিক। কয় গলাৰখনতে চাবঃ এক্ত্ৰান্ত কৰ্মান্তি-জ্বাত্ৰিক। কাৰোপ্ৰান্ত কৰ্মান্তি-জ্বাত্ৰিক। আছোপ্ৰেলে নানাক্ৰিবেৰবছা বাক্ষোৰ্জানাতিবেকেন্ত্ৰি মাৰং। কৰিবাধেনাভাবেলে বাক্ষাক্ৰিকানশ্ৰৰ বিবেহৰ জানিভানিকায়ে তেও্ৰাত্ৰিন

ন্তু প্রেণ্ড বাংকাবজানাভিরেকে পুরুষপ্রবিধিবিভাগেন্দ্র হাতি ক্রমন্ত্রী নাম্বর্গনিক বাংকাবজানাক নাম্বর্গনিক বাংকাবজানাক বাংকাবজানাক কর্মনিক বাংকাবজানাক করে করে বাংকাবজানাক করে বা

বিত্তীয়োপাণে সাধনখালিং প্রভাচে -আন্তেচ্চা আবাইছানা আবাইছানা ক্রিকার্ড বিজ্ঞানার ক্রিকার্ড বিজ্ঞানার ক্রিকার্ড বিজ্ঞানার ক্রিকার্ড বিজ্ঞানার ক্রিকার্ড বিজ্ঞানার বিজ

প্রোক্ষ্যাবয়তি — আশিয়া কার্রাপে তি । ক্র করি বিশি: ?— শার্কানে বা বাকারবংশ বা ভর্মকানশ্বিদ্ধানে বা ভিত্তবিধিবাহে বা । বাছ ইডাংই— নাম্প্রান্তান্তি। বিভীয়া প্রজ্ঞানশ্বিদ্ধানি কর্মেশ্বিদ্ধানিত । প্রির্বাহিনা জ্ঞান ভ্রমান্ত্রের বিশিষ্টি । প্রির্বাহিনা জ্ঞান ভ্রমান্ত্রের বিশ্বিদ্ধানি ভ্রমান ভ্রমান্ত্রের বিশ্বাহিনা ভ্রমান ভ্র

क्षीवयानकरक- आकार्कामार्क्का । उद्या मा विस्तंत्रकि त्याः । वद्या विस्तवकः

নুবছডি—স্মেতি। অর্থনাত্তিং বিশ্বগোভি—ম্টান্তেন্তি। অনামন্তিংগজনানিবৃত্তে। তথকার্যস্থান্ত্র পাল্ড কর্মান্ত্র প্রাথনাত্ত্ব প্রথম প্রাটি বিশ্বস্থান্ত ক্রিক্তি ক্রেক্তি ক্রিক্তি ক্রিক্তি ক্রিক্তি ক্রিক্তি ক্রিক্তি ক্রিক্তি ক্রিক্তি ক্রিক্তি ক্রিক্ত

শর্থনাতাঃ বিবেশখালাবনুপদাংকরিত ভেজ্ঞারান্তি। প্রধানপ্রভিবেজ্ঞানাভাবাবি ভজ্জার্থ: শর্পতিনিংককরদান্তপ্রবেশাকাত বাবং। বৃষ্টকর্নযাভান্তপ্রতিন বিবেধে ভাকি – শোক্তিভিড় বিধ্যাজ্ঞানবের দা নিবর্ত্তাত, ন শোকালী চাপেলার - বিসেরী ভোজ্জ। আছম্বতেঃ বোকাশ্রনিবর্ত্তকরে মানমার ভ্রুঞ্জা ভোজ। ২০

চতুৰ্বস্থাপনতি নানহৈত্ৰাধ্যন্ত আটি । বাৰ বাংকাগৰজানাদেনবিবেছলং, তৰি চিন্তনুত্তিবিবাহয় বৃত্তিনাধনত্বন বিধীনতাং, তজ্যেজ্ঞানাদেনবি প্ৰবাহিত। তেছিনেব বিবুণোভি—আহাপৌতি অবাধনগান্ত বিবেছতেতি শেলং। ভল্ল মৃক্লিকেপ্টেল বিবেছতে বোগলান্তং সংবাহয়কি ভালাজ্যহন্ত্তি । "অব বোগান্তুলাসনৰ্" ইনি কিংগ্রেন্ত্রনাত্ত্বা সুমান্তি প্রভিত্তত ভ লক্ষ্মুক্ত বোগান্তিসমৃত্তি নিরোধ ইতি। তালালোবাহাণ ভালান অল্পপ্রভিত্ত বৈবলায়ান্তি "তলা দট্টা অলপেন্ত্রনাত্তী তলালোবাহাণ ভালান অলপ্রভিত্ত বিবেছবিশ্বভার্ত (বোগান্ত্রাপিন ক্ষম্বতীৰ আনি আনি বোগানালোক ক্ষ্মিকেন্ত্রেকেন্ত্রা বিবেছবিশ্বভার্ত (বোগানালোক) বিভাবতি আনি বিবেছবিশ্বভার্ত (বোগানালোক) বিভাবতি ক্ষ্মিকেন্ত্রি ।

চিত্তবৃত্তিনিরোধক মৃক্তিকেতুরে পান বিবেছর, বিবিং বিবা তংগিছেরি চ্যাক-জ্যান্-জ্যান্ত ন ভাবলেবাকবাক্তিরোধে বিবেছর, র্মজ্ঞাণি তংগভ্তবাধিবিবৈর্থাৎ, নাণি স্ক্রিনা তিরিয়েরো বিবেছে, জানাদের তংগিছেবিধানের নালিভার্থঃ। "নাজঃ পদ্ধা বিভাতে" জ্ঞানাদের ভূ কৈবলান্" ইতাহিশাল্লম্প্রনার্শে হাবাধি ভাজত ভ্রতিক্তিবিলার প্রায়ের প্রায়ের ক্তিক্তিক্তিনিরার প্রায়ের বিবেশাল্লমণি ক্রতিশ্বতিবিলারে ন প্রমাণ্য, "এভেন বোগা প্রভাজত: ইতি ভারাদিতি ভারঃ। ১৭

বেষান্তের বিবের ভাবোজ্যা বিবিনিরতঃ, সংগ্রন্থা-বঞ্চরতী ভাবনা ওেষণ্টাত্যক্ষং দুনহতি—আক্রান্থেক্তি তি বিবিষ্ণরেশ বাজ্যার্থজ্ঞানে প্রবৃদ্ধান্তে। আগমারইত্তেন নিরাচ্টে—ভর্নেজ্যানিতি বিবিষ্ণরেশ বাজ্যার্থজ্ঞানে প্রবৃদ্ধান্তে। অব কর্মকানে প্রবৃদ্ধান্তি ক্রিষ্ণরেশ ক্রান্থ
স্ক্রাকাজ্ঞানিবর্ত্তনিভ্যানিবিধ্যর্গজ্ঞানে বিধালয়: নাপেজ্তে, তথা জ্ঞানকাতেছিণ ভাষিভার্মঃ ভ্রাণি 'বেদঃ কংগ্রেছবিশ্বভাঃ" ইতি বিধালয় শ্রুজনের বাজ্যার্থজ্ঞানবিভ্যাক্ত্যান ক্রান্তর্জ্ঞান কর্মান্তর্জ্ঞান বিধালয় প্রবৃদ্ধানে বিধালয় শ্রুজনের বাজ্যার্থজ্ঞানবিভ্যাক্ত কর্মান্তর্জ্ঞান বিধিপেষ্বর্জ্ঞান বিধালয়ানিভ্যাক্ত ন বিধিপেষ্বর্জ্ঞান বিভালিভ্যাক্ত —নির্মান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত স্ক্রান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত কর্মান্তর্জ্ঞান বিধিপেষ্বর্জ্ঞান বিভালিভ্যাক্ত —নির্মান্তর্জিভ্যাক্ত স্ক্রান্তর্জ্ঞান বিধিপেষ্বর্জ্ঞান বিভালিভ্যাক্ত —নির্মান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত স্ক্রান্তর্জ্ঞান বিধিপেষ্বর্জ্ঞান বিভালিভ্যাক্ত —নির্মান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত স্ক্রান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত —নির্মান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত স্ক্রান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত স্ক্রান্তর্জনিক্ত স্ক্রান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত স্ক্রান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্তর্জ্ঞানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যাক্ত স্বল্যানিভ্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ্যানিভ্যাক্ত স্ক্রান্ত্র্যানিভ

বেলান্তা: বার্বে ব নানং, নিজার্থনাকারাং। "নোহরোদীং" ইন্ডানিনং ইন্ডাঞ্নানাজেনাং বিবিশেষক আনাণার্থনেইবানিতি শক্তে—অক্সক্রাক্রাপ্তি। তলেনাঞ্নানং অপকর্যত —অঞানীতি। বিবেক্তব্যুংশীতি বাবং। কলবান্তিকজানাক্রমতব্যুণাধিনিতি ন্যানঃ

4

নবাগতে—ম বিশেষাাস্তি। নকর্ণং স্পাইরভি—ম বাক্ষ্যভেত্তি। বিশেষং বাচটে—/ক্ষং ভাষ্টীভে। তত বাবাণ্যবোজকরবন্ধবৃতিয়েলায়াং বর্ণছভি— ভারত্যেভি।১৯

লালাথ জানং বিধেনি'ত প্রতিজিপা প্রেলিপনান্তরমুগর্যতি যান্ত ক্রেমিন্ত। উপাসনাবন্দিন্তাংশ্রেপাননেন ওৎসালাংকার ভারবেদিতোবর্বন্ধিনার্থ। জলুপন্দিনারেন পরিচরতি—জন্ত্যমিতি। ববোকের বাকোবাবোপাসনং ভংলাকাৎকার্কিন্ত বিধারতে চেৎ, প্রকৃতিংশি বাকো ভংগভারাপুর্বাবিধিরিতি প্রকৃষ্ণে ভব্লাভ, ইভ্যাপভারে—ক্রেভিত। কর্মা ভবি বিধানীকারবাচোবৃত্তিবিত্যাপভারি—প্রেক্ষিতি। বর্মা পক্ষেপ্রভারমান্ত বিধানীকারবাচোবৃত্তিবিত্যাপভারি—প্রেক্ষিতি। বর্মা পক্ষেপ্রভারমান্ত বিধানীকৃতিং, তথা জ্বোপাসনভাগি পক্ষেপ্রভারত ভব্লের কর্মবাবাবোধ্যালান্দ্রিতি হো নির্ম্ভন্ত প্রকৃষ্ণবাভারত ব প্রকৃষ্ণবাহারতি বিবাবাবাহারীভার্যঃ।

শাক্ষকী: প্রাধিনুকাবাকিশতি—ক্ষপ্রমিতি। কা পুৰবন্ধাক্ষণপতিবিভাগকাবি— মানুক্তাতি। আননি বাংকাথে বিজ্ঞানে সভাগান্তপতিবিভূমি বিব্যাক্ষাবাদীলাক-পনীভবাভেদভাবে কলাভাব ইভিভাবেন ভাগানসভবংগান্তপতিসভিত্তিব পূবং নবা ভাব, প্রকালভাবিদ্যান্তি বিভাজিনোক্ষান্তালোলাক্ষত পতে প্রাভিত্তিবাদীলাক্তি নিভালাভিত্তিসভাকিক্সাক্ষাতি—নাচুল্লিভঃ তি বিশ্ববিশিক্ষাক্ষ্যুক্তভাগকভাব— । আছবি বিদ্যাপ্রোদনংবিকেন্ডাবে সংগং বিশ্ববাং বা বছণি বোণণন্ততে, ভবাদি ভবোভনিক্রভবনিভয়ন্তিববহিবেঃ সাৰকাশ্য বিভাগনেবাল পানীক্ষাভিঃ অবার্থককভাগি কর্মাঃ স্বাস্থ্যকানির্ভে ব বিছ্বো বাগালীনাং প্রবৃত্তিক আই—ক্ষাভিন্তি। বধা যুক্তভেনুগালাগানেরপ্রভিন্তাই লাবং গং প্রবৃত্তিবক্ষাহানিনা, কথা প্রস্তুত্তকভাগিনা, কথা প্রস্তুত্তকভাগিনা, কথা প্রস্তুত্তকভাগিনা, কথা প্রস্তুত্তকভাগিনা, কথা প্রস্তুত্তত্তি। বাব্রেগাল আন্ত্রেশালাক্ষাল্য ওলো ব্যবহার বাব্রেগালিকাশ্য বাব্রেগালিকাশ্য ক্ষাভিন্তার বাব্রেগালিকাশ্য ক্ষাভিন্তার বাব্রেগালিকাশ্য ক্ষাভিন্তার বাব্রেগালিকাশ্য বিশ্ববাহিন্তার ক্ষাভ্রেগালিকাশ্য বিশ্ববাহিন্তার ক্ষাভ্রেগালিকাশ্য বিশ্ববাহিন্তার ক্ষাভ্রেগালিকাশ্য বাব্রেগালিকাশ্য বাব্রেগালিকাশ্য বাব্রেগালিকাশ্য ক্ষাভ্রেণালিকাশ্য বিশ্ববাহিন্তার ক্ষাভ্রেগালিকাশ্য বাব্রিভ্রার ক্ষাভ্রেগালিকাশ্য বিশ্ববাহিন্তার ক্ষাভ্রেগালিকাশ্য বিশ্ববাহিন্তার ক্ষাভ্রেগালিকাশ্য বাব্রিভ্রার বাহ্যিকাশ্য বাহ্যকাশ্য বাহ্যিকাশ্য বাহ্যিকাশ্য বাহ্যিকাশ্য বাহ্যকাশ্য বাহ্য

ন্তথাপি নিয়নবিধানীকারত কিনাহাতং । ভগা - ভ্ৰুন্থাণ দক্তি। কানক পঞ্চ নাতাই:
ভক্তবাৰ্থ: আনিপানং রাধ্যন্ত স্থানিকার নিয়নবিধার্থ
বন্দনবেরতি - ভ্ৰুন্থান্ত : আনিপানে প্রকৃত্যাপি বাকাং সংস্কৃত্য। ভক্তবার্থানের
লাইকতি - ভারতাত্ত্যালিভ । ৩০

শক্ষানানের পূর্যনিক্তিক গণাবুক্তির বা গিবেরেভিবারেগরাঃ করে
নিক্তের্য বাদবিভূতির ইনানীনিতি শক্ষায়ক ভোডার্থাপরাঠ তানার ও তি। আর নকার্থনিতি নক্ষারোধারারনার্তি শক্ষায়ক ভোডার্থাপরাঠ তানার ও তি। আর নকার্থনিতি নক্ষারোধারারনার্তি পাছরেশারিকি এরাণার্থণ করারারনার্থানি নারেনিভানিক ভালার্থানিক শর্মারার্থানিক শিবারে ক্ষার্থানিক শর্মার ভালার্থানিক শ্রের্থানিক ভালার্থানিক শ্রের্থানিক ভালার্থানিক ভা

উপক্রবোপসংহারাত্যামূপাক্তবাদ্ধনো ধর্ণিতবিদানীমিতি-শব্দধরোপাদনারোপাসন্ধিদ্ধি-ভূকিং প্রত্যাহ—অন্তিতি। প্রয়োগশব্দাহ্পরিষ্টাৎ সপলো এইবাঃ। ইতিশবত বংগাভার্থ-দ্বাভাবে বোদনাহ—অন্যুক্তপতি। ন চাদ্ধন স্বাভয়োগান্তপার্কধিতি-ললোহর্থবান্, পূৰ্মাপথৰাকাৰিয়োবাধিকি বাইবান্। ছিভিশ্বৰজ্ঞেৰ বাজাঞ্জানে বোৰবাহ—ভ্ৰুপ্ৰক্তি। ভঞ্জ প্ৰথাজ্যবিষয়খনিইবেবেকি কেন্তবাহ—ভ্ৰুক্তেভি। আছোপাজ্যবাজানৈককণ্যাৰ-নামোপাননবেকবিম্বাজন, ভজুবয়কি—অন্তিভি। ক

সংগোগৰাভাৰালায়ত্ত্বনা প্ৰনায়গানিভিবিত প্ৰতে—ক্ৰপ্ৰাইট্ট। অনভানাপে ক্ষডাগানাগান্ত্ৰকালায়ত্ত্বনা প্ৰনায়গান্ত্ৰকালায়ত্বনা প্ৰনায়গান্ত্ৰিকালি—উচ্চান্ত ইতি। বিবিংসিতং লভ্নিইব্। অবেবণোপায়ত্বং দৰ্শনিত্বং প্ৰেনিত পুনকৃতি: অবেবনভাৱ বৈছেতি ক্ষান্ত্ৰাপ্ৰাক্ষ্যান্ত্ৰিতি নাত্ৰ্কু। ক্ষিত্ৰিত নিক্তে) পুনক্ষানাৰ্থেব বিদিনোপনংহাবাধগান্ত্ৰাগান্ত ক্ষেত্ৰপ্ৰসামান্ত্ৰাপনংহাবাধগান্ত্ৰাগান্ত্ৰ বিভাগান্ত্ৰাভিত ক্ষেত্ৰপ্ৰসামান্ত্ৰাপনংহাবাধগান্ত প্ৰভাগান্ত্ৰ নিক্তেলিভানিত ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰাভিত ক্ষান্ত্ৰ ক্ষান্

ানলা চশলারের বিভেগত হি ক্ষেত্র চাপেডাছ—যত্র ছৌতি অনার্থনি লব লব লব নারে।
আঁছি কোনোল ভাগে কিয়ালেলাং কলভেগনি ছিলিতার্থঃ নার্যালালা আনারিছেতে,
লাভয়ালনার্যালভাগি চাপেডা আনংগ্রুমানানীন মুণাবিভিত্তাছ আ চেতি। অপার্যান্তঃ
নাজাকরাতি—উৎপাস্থেত ডি । ভবাবধানবের নার্যাভি -ক্যান্তেকাত । কিকানার্যালাভাগিতিয়া কালিত কালিত কালিত লাভাগিত লাভাগিত

বৈপদ্মভাবের ক্ষোঞ্চি -আ প্রাক্রাট্রেউ। আর্থন তির নিভানভ্রাথ ব ভ্রালভ্রন বৃদ্ধি স্যাধিত্যাপভ্যাহ—নিত্ত্যাউ। আর্থনাভোহজান, লাভ্য জানবিভ্যেত্নসূত্রীর বল্পটরভি-অন্থেত্যালিকা। ওজিকানা বরণে সৃহ্যাপারা অপীতি বোজনা। আর্লাভাহিবিভানিবৃদ্ধিথেবভারোকং বকানাণ চ প্রবং বর্ণভি—ক্রম্মালিতি। আবিরোধর্শনংবর্গভ—ক্রম্মালিক্যালিকা। ভ্যোধেভার্বহেশি ক্রম্পুবিবেশিতি বণো প্রমূলতে, ভ্রাহ—ক্রিক্র্যুক্তরিতি। প্র

व्यक्तिवस्थानमानाविद्यानन्त् । केवित्रकावित्रकावित्रकार्यः साक्रशक्ति-क्षट्रशक्ताः। हिन्ताः। हेवि-पंकाह्यविद्यान् वरवज्ञान वरवः। काववित्रकात्रः विश्वकाः। कावित्रावीकृत्र-क्ष्मगाविक्यविक्याविकि बहेराव् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ভাষ্যাসুবাদ। 'তাৰেষ্' ইভাছি। উৎ॰ ভির পূর্বে এই লগং बोबावशाय-कार्यबद्धान व्यवस्थावशाय विश्वयान दिन ; अहे वश्रहे-एदकारन भारताक विन बनिवारे व्याकाकवारक मर्सनाय 'ए९' मान काबाद दिलाप करा इटेल्ड । चताकृष्ठ चवद्याः चवित्र छविद्यद कवद छवने छ चार्मन महिक मश्यहे बाकाइ (काशांव भरताकवाःकवान वृक्तिवृक्तां वहेताक)। विषय्क्री बांगांट बानागार स्वयंत्रक स्टेस्ट गार्ड, त्यहे बन्न क्रेंडिश्रवायक (পুরার্ডবোধক) 'হ' শব্দের প্ররোপ করা হর্রাছে: কেন না, 'बूबिक्क नारम अकमन बाचा हिलन' এই कवा बनित्न व्ययन खेठिशांत्रक ব্লপে স্থাজট বৃকি:ত পার৷ হাছ, তেষান 'তৎকালে এইপ্রকাব ছিন' बिल्ल, सम्राटन बोकारकाणि गरनाक वा क्षणाक्त वर्गाहत हरेलल हारा चनात्रारमहे मण्डमय कविएठ भादा बाहा। 'हेल्य्' मस्मक ब्रावास श्रकात স্থা-সাধনাত্মক (কার্য-কারণভাবাপর : অভিব্যক্ত নাথ-রপায়ক অগতের निर्दिष कता व्हेबार्छ । अवारत सम्राज्य भरताकावद्यारनावक 'छर' भव छ क्षकाकारका (वारक (क्रुनावकारवाधक) 'हेकः' नाकत नामानाविकदना वा व्यक्ति विक्ति बाकाव न्यं द्वा वारेट्ड (व, अरे भारतक क अठाका सक सन्ध कन्छः अक्टे वस्त, जित्र नत्र ;--याना भवास्नावनात्र हिन, छात्राहे अबन बाक्ताबहात्र केलिहक रहेबारक, अवः पादा अह बाक्ताबहात्र वर्धवान चार्ड, छाहारे भूर्स चवाकावहात वर्डमान दिन, । केठावत मामा यदमान পাৰ্বকা কিছুমাত্ৰ নাই 👉 ইবা ছাড়া, অসতের উৎপত্ত বর না, আর সৎ — वर्कवान कार्या वखदक विनाम रह ना, अरेक्षण निष्ठाखरे व्यवधाः वछ रहेग । ১

এবংবিধ কপৎ অব্যক্তাবহার থাকিল [স্ক্টির প্রারম্ভে] নাব-রূপাকারেই
—নাম ও বিশেষ বিশেষ আফতিং ব্যাক্ত বইল (অভিব্যক্ত বইল)।
এবানে 'ব্যাক্তিরত' ক্রিরাপ্টীর কর্ম-কর্ত্বাচেঃ প্রয়োগ (*) থাকার বুরিতে

⁽ ০) ভাংপৰ্যা—সাধারণতঃ কাষ্য্যাত্রেরই বকর কর্তা ও কর্ম থাকে , কঠা উপযুক্ত সাধ্যের সাহাব্যে ক্রিয়া বিশাল্য করেয়া থাকে , কিন্ত বেধানে কার্যায়ীকে অনারাস্পাধ্য বুরাইবার ক্স কর্মকেই কর্তার হানবর্তী করিয়া কর্মারণে ব্যবহার করা হয়, ভাহাকে

ষ্টবে বে, দেই লগৎ নিজেই—আপনিই স্থানীতাৰ প্ৰাপ্ত ঘটনাছিল,—আৰ্থ্য নাম ও প্ৰপ-বিশেষে প্ৰতীত ঘটনাও উপযুক্ত অবস্থান স্পষ্টকৰে ব্যক্তীকৃত ঘটনাছিল। বিনা কেছুতে বৰ্ষন কাৰ্যা ঘটতে পাৱে না; তথম [উল্লেখ না থাকিলেও] কাৰ্যা নিয়ামক (মথাক) কৰ্তা, ক্ষুণনাগালালি আৰক্তীপ্ত কাৰ্যা-সমূহেন্ত সন্তাৰ বৰিবা লউতে চইবে। [এখন অভিবাক্তিম স্থান বলিতেছেন, —] 'অসৌ-নামা' 'টবংরপঃ' অৰ্থাৎ কেবছত বা মঞ্জয় প্ৰকৃতি বালার নাম এবং এই মুখ্যমান শুদ্ধ কুষ্ণালি বৰ্ণ বালার কপ, তামুশ নাম-প্রপাণার। এখানে সাধারণভাবে 'অসৌ এই স্ক্রিনাম শুল থাকার নামমান্তেরই প্রথম করিতে চইবে, আর 'টবং-ত্রপঃ' স্থানও 'উল্লেখ থাকার, ক্যুতে বত বক্ষম রূপ আছে, তংগস্থাই বু'বতে ঘটনে। সেই এই আলোচা অব্যাক্ত বন্ধনিট বর্ষ্ণাম সময়েও বিধানক স্থাই গালেও) নাম-প্রপাণার। ব্যাকৃত ঘটনা থাকে —ইহা 'অমুক-নামক' ও 'ম্যুক আক্তিবিনিট্র'। ২

যে তল্পতিপাদনের কর দ্বত লবা লবারের লারল, বাতাবসিদ্ধ লাবলা বালার উপর কর্জাদি বর্জ লাবেলিত হটরাছে, বিনি স্বল্প ভগতের কারণ, বাছ সাগল হটতে বেরপ ভগার মলবরণ কেন সম্কাত হয়, তেলান বা-রূপত্ত নাম ও রূপ বাঁচা হটতে প্রকাশ পাইরা বাকে, এবং বান বারপতা উক্তান যাও রূপ হটতে সম্পূর্ণ বাতর প্রার্থ—নিভাগ্রন্থ-বুজ্নুক্রবাভাব, সেট তিনিট লাক্ষ্ত নাম ও রূপ প্রকৃতি করিয়া কর্ম-ক্লাল্রর এবং ক্ল্যা-পিপাসাদি-সম্পন্ন প্রস্থানি তুল পর্যান্ত হটার লভান্তরে প্রার্থ ইইলেন। ৩

প্ৰশ্ন ধইতেছে বে, ভাল, পূৰ্ব্বে বলা ধইয়াছে —'অব্যাক্ত জনৎ আপনা হইতেই ব্যাকৃত বা অভিবাক্ত ধইয়াছে; এখন আৰার এ কৰা বলা ধইতেছে কি প্ৰাকাৰে যে, প্ৰয়ায়াই অব্যাকৃত জনংকে ব্যাকৃত কৰিবা ভ্ৰাৰো

কৰ্ম কৰুবাচ্য হাংগে বলে; বল কৰা, যে প্ৰবোগে কৰ্জাৰ স্পষ্ট প্ৰজীতি বাকে না, কৰ্মেন্তই কৰ্জ্ব বনে চং, তাৰাই কৰ্মকৰ্জ-প্ৰযোগ। বেমন 'ছিন্তুতে বৃক্ষঃ প্ৰবেষ' আৰ্থ বৃক্ষণী আগনিই যেন কাটা হইডেচে; কিন্তু প্ৰকৃতপক্ষে কৰা ও সাধনাদি না থাকিক্ষে কোবাও কোন ক্ৰিয়াট ইতে পাৰে না; অগতের অভিযান্তিতেও ভাষার যাতিক্ষম হয় নাই; এই অক্সই ভাষাকার 'সাধ্যবিধি নিয়ন্ত্ব' ইভ্যানি কথা বালতে বাধ্য ইইয়াছেন। প্রবেষ্ণর আবিশ্বের প্রাক্ষম ক্রিয়াছেন। অসংস্কৃতি সম্পন্ন ক্রিয়াছেনে; এই অভিগ্রান্ত আগন্তবন্ধ করা কর্মক্ষাক্ষম কর্মকর্মীয়ালে প্রয়োগ করা ইইয়াছে।

बार्य कविराम ? मा- कथा (शायांवर स्टेरफरक मा: कार्य, त्मवारम नवनामारकरे मनाकृत सन्दर्शन शिवनामम कहा अधित मनिरश्ति : अहेक्करे जिल्ला वर्ग वर्गा वर्गाह । जायतात भूत्वरे वनित्रा वानिगाहि (व, चवाकित सन्द (व चक्क वाकित क्षेत्राक, लावातिक कन्तिव निवस, नही, ক্রিয়ানাধন প্রকৃতি আবল্লকীয় নম্বন্ধ কার্ণেরই সমাব খাঁকার করিছে बहेटन. (महहर कार्राहे कविएल शहर मा)। वित्नवतः 'हेबर' नामत निवन्त 'অবাক্তি' শব্দের সামানাধিকবণাও (অক্টেম নির্কেশও) এ সিদান্তের সমর্থন कदिएएक, चर्राय अहे प्रक्रमाम (वाक्स) चन्राए (वह्नन मिहता निविधानक) প্রভৃতি বছবিধ বিশিষ্ট কারকালির সম্বন্ধ দৃষ্ট বয়, তত্ত্বপ সেই অগাক্তি सनर-जनायन व नमस मित्रिशांवित महाव अवन्तरे बोकाव करिएठ स्टेर्व : कैण्डाब बाबा क्रियां विश्वत (व. क्रिकि व्यक्ति । वाका). चांब व्यवहाँ व्यवाहरू (व्यवाहरू का जात पर राह्मात है कांग्रनादर अवन क्खंदीय किंद्रान्यदर श्राहार चन्नक्ष (प्र'न्यत नावत वार, वर्ग-'शाय चानिहार्ड' 'श्रीयत्र लाक चानिहार्ड '. अवर 'श्रीय नृत्र स्टेशर्ड' आस्म लाक्क बार माडे , इंजापि प्रत शाय-पर्य क्यम क्यम कर्म वर्गित माज व्यर्थित विवकार वर्षार शास (नाट्कत वंत्र मार्टे, क्रेडिय वर्ष श्रिक्शियत्व षाणिक्षादि 'श्राब: भृत:' अठेक्क्स भव्य-वायहात बहेग्रा बात्क, कश्रमा वः श्राब-वांत्री (लाक्टक लका कदिहा 'शाम: चानए:' এडेब्रन नंब-श्राह्मा करा बडेब्र থাকে, কৰমৰ বা প্ৰামবাদী লোক ও ভালাদের বদতি,এভত ভর অর্থকেট লক্ষা कविद्वा 'आर्थ' भएकत भरवान बहेता बारक : बर्था,-- 'वाबर ह म खरियानर' चर्बार 'क क्षारव क्षरवच करिएन ना' : जिबादम शारम वान क आमरानी करमह দংদৰ্গ, উভয়ট নিখিত চটবাছে]; তেমনি এখানেও ব্যাকৃত ও অব্যাকৃত क्ष्माट्य चारुविवकात्र चारायद्वाल, चार (स्वविवकात्र चर्मारायद्वालक नायबाद बहेता बाटक : '(तह बहे बनर फेरलखि-विमाननेन', कहेताका बावाद (करनहे क्रमरुव (क्रुडारवर) मिर्फन बहेश थारक। (महेक्स, 'बाबा महान ७ जब (बनाउ दिछ ',' जून ७ मार, जन्छ मार 'वडे जाना वन्नि डेबा मरह देश नरह' देखानि इत्त अधु चार्यावरे वस्त्राशासन हरेशा नारक। ह

, এবন লাপত্তি হইতেছে বে, প্রমায়া কর্ত্ত ব্যাক্ত (ব্যক্তীভাবাপন্ত) এই লগং যবন ভাষা ঘারা সর্বাধা সর্বভোভাবে ব্যাপ্তট বহিয়াছে, ভবন ভাষাকেই লাবার ইয়ার মধ্যে প্রবিষ্ট বলিয়া কর্মনা করা ষ্টাইতে পারে কি

श्रकारम १ (कम मा, क्यांविष्ठे मार्ग्य (कामल विकास वर्षा श्रह्म किर्म भारतः , रायम स्मारक श्रीय शक्ति द्वारम श्रीयः वारकः , किन्न चाकान छ क्वमंत्र (कावाल शायन कविटि गादि मा; कावन, छाहा मर्सक मर्सक शिवताश्वरे चारकः। वृत्ति तम्, भाषान्यमान् नृत्तीचित्र स्वार चन्न कानस्थलक जीवात अरवम हरेटक भारत । वर्थार याच वन (व, भश्याचा चीत्र वााभक्तरण खार्य करवन भारे ; करत कि १ न , छाशात मधानत बाक्सिके बाह्र (कामक व्यकारत व्यक्षिष्ट रहेश शास्त्र ; धरे अन्न डीहारक 'व्यविष्टे' ब्रिजा আবোপ করা চটয়া থাকে মাত্র; পাষাধের ভিতরে বেখন পাষাধের সঙ্গে माण्डे मार्गित व्यक्तिका व्यवस्था भावितकालत माना व्यवस्था माना व्यवस्था উৎপন্ন হয়, টহাও ডজ্ৰপ । না, তাৰাও ব'লতে পার না; কারণ, প্রতি बांगरहरून-'छाव। सृष्ठि कवित्रः उत्तर्या खार्यन कविरागने, हेवा बहेरछ बाना ৰাহতেছে বে, যিনি সৃষ্টি করিয়াছেন, বাঃ তেনিই আবিকৃতভাবে অর্থাৎ चन्न कानल वकाबर धर्व मा करिशाह बन्द सृष्टि करिया, नर्ड ठाहार मर्या व्यातम कविद्याहरून विश्वन '(ठाकन कविद्या भवन कविट्यह' विभाग পুৰ্কালবভা ভোজনক্রিয়া ও পরবভা গমন-ক্রিয়ার মধ্যে পরস্পর পার্বক্য প্রতীত হইলেও কঠার পার্বকা-প্রতীতি হর না, (পরস্ক একই কর্তার প্রতীতি হয় , এখানেও ঠিক তজ্ঞপ ব্যবস্থা হইতে পারে ; কিছ প্রাবই বছর অবস্থা-खादारमधि चौकां कविद्रम हेर' कथनहे मुक्छ स्ट्रेटि भारत ना । आह নিরবয়ব ও অপবিভিন্ন কোন পদার্বের ব, এক স্থান পরিত্যাপপূর্বক অভ ছানের সহিত সংযোগাত্মক প্রবেশ, ভাষাত কোবাও দেবা বাছ নাঃ ্বিতএর নির্বয়বের প্রবেশের কথা কোন মতেই উপপর হইডে शारत मा] I e

বলি বল, প্রতিতে বধন প্রবেশের কথা আছে, তখন ভিনি সাবরবই বটে; না,—তাহাও বলিতে পার না; কারণ, 'পুরুষ দিব্য ও অবৃষ্ঠ (নিরব-রব),' 'নিজ্রির ও নিরণ' ইত্যাদি প্রতি হইতে এবং স্ক্রবিধ বর্ণ-প্রতি-বেধক প্রতি হইতেও [তাহার নিরবরবর প্রমাণিত হর]। যদি বল, স্থ্যাদির প্রতিবিশ্বের বেরপ কলাছিতে প্রবেশ সৃষ্ট হয়,ইহারও তত্রপ প্রবেশ কর্মনা করা বাইতে পারে; না, তাহাও হইতে পারে না; কারণ, কোন বন্ধর সহিতই ভাহার বিপ্রকর্ম বা বাষধান উপপন্ন হয় না, [অখচ ব্যবধান না থাকিলেও একের মধ্যে অপরের প্রবেশ সন্তব্যর হইতে পারে না]। [হান-

बाबबाब मा बाक्रिलक हिरवात बरवा (बद्धन करनत अरवम इब्र अरबवक रमझन अरवण स्ट्रेंटि शादक मा छावा इहेटि शाद मा ; कावन, अब उ অবের ভার কোবাও আত্রিত নহে; ৩৭-পছার্ব নিডাই পরাধীন (এবোর व्यवीम) ७ जनाजिठ: युख्शार जाताव माथा जाताव आवन-वावशाय উপপন্ন হর, কিন্তু খতন্ত্র অর্থাৎ অ-পরাধীন ত্রাছের গ্রাছে ত পেরুপ अदिन क्यमरे मक्छ रहेर्छ भारत मा। भार करनर महा वीच अर्वस्त कार (व, आरबन विन्दि : छाराध नरह : कावन, छारा हरेल, करनत कार खास्त्रक नावद्वरू, द्वाह, प्रान, উर्पाख ल विना-।ति वार्षाव नशावन। वहेप्रा गासुः अकृष्ठभाष्म छ ले मथस्य शास्त्र मां इत लाखन का वन्त्रात्य सम्ब নাই কারণ তাহা হইলে তিনি 'কলবাতি ও মরণহান' ইড্যা'ল জঠি ও বৃক্তির সহিত বিরোধ উপঞ্চিত হয় (১)। আর বৃদি বৃদ অঞ कानल পরিভিন্ন সাসারা छोवह हेशात अलाइरव प्राप्त करियाक, (ব্রন্ধ নৰে); না, ভাষাও বালতে পার ন ; কারণ, 'লেং এই দেবতা (शरमायाः) केक्न कारतमा अहे वहें(८ आवश्च कांवराः) माम ७ क्रम वाक्च कांद्रव' करे नदील अविष्ठ अविष्ठ (महे नदायबाददरे मुश्रिमाचा व्यावन छ অভিব্যক্তি কার্ব্যে কর্ম্ম উল্লেখত মাছে। সেহত্রপ তিনি অসৎ সৃষ্টি कवित्रा अञ्चादा आतम कदितन। 'जिल्ल करे भीमा तिमान कवित्रा, देश बाबाई श्राश व्हेब्राहितान', 'ब्रियशाय अक्ष मयख क्रम चाकः । निकाल कर्विष्ठा उत्तर भूषक भूषक नामकटन कर्विष्ठा, (महे भूड मात्मत **উল্লেখ** করত: অবস্থান করেন', 'ভূমি কুমার, অথব। কুমারী, कृषि कीर्य (तुक्) बहेद्र: मल बादा अवन कांद्रशा लाका, 'शावाम विश्वन স্টি করিলেন,' 'তিনি বিভিন্ন বস্ততে বিবেশ করিয়া ভিন্ন ভিন্ন আকারে

⁽১) তাৎপণ্য—বজের ইছি-ক্ষয়ান ধর্ম বী কার কবিলে যে, প্রতি-বিরোধ উপন্থিত হয়, জারা "অলঃ অলঃ:" ইত্যানি প্রতিতে প্রকাশিত হইয়াছে। যুক্তি-বিরোধ এইরপ —বজ বনি বর্মী হয়, আর কর, বুছি প্রভৃতি বনি জারার ধর্ম হয়, ভাগে হইলে জিঞাসা এই বে, ঐ বর্মপুলি বজ্ম হইতে অভ্যন্ত জিল, কি অভিন্ন । ভিন্ন হইলে জ অইবতম্ব বাকে না, আর অভিন্ন হইলেও উহালের উচ্ছেদের সহে বজেরই উজ্জেদ স্বাধিত হয়, কাজেই ঐ আভীয় বর্মপুলিতে ভিন্ন বা অভিন্ন বলিয়া নিরূপণ করা বান্ধ না; অভ্যন্ন বজ্ঞনবজে ইন্ধেপ করীকার করা বৃদ্ধি-বিরুদ্ধ হয়; অভ্যন্ন বজের বৃদ্ধি ক্ষানি বর্মী-স্বন্ধ, এবং ভারিবজন সাব্যাবন্ধ করানা করা সম্বাধ হউলে পারে না।

প্রকাশ পাইলেন]' এই সমভ শ্রুতিবাকা হইতে আনা বার বে, পর্যাত্মা ভিন্ন অপর কাহারে। প্রথম বহু নাই। আগভি হইতে পারে বে,প্রবিষ্টানের বর্বের অবন পরন্দার পর্যক্ষার বা প্রভেক বহিরাছে, তবন প্রবিষ্টানের বার্বির বহু বহুরা পড়ে ? তত্ত্বরে বলি বে, না, তাহা হর না; কারণ, 'একই দেবতা (পর্যাত্মা) বহুরাপে প্রবিষ্ট ইইয়াছেন' 'তিনি এক ইইয়াও বহু প্রকারে বিচরণ করিতেছেন', 'তুমি বহুতে প্রবেশ করিয়াও একই আছা 'একট, দেব (পর্যাত্মা) সর্বাহ্যাত্ম প্রাত্ম আছের আছেন, এবং তিনি সর্বাহাণী ও সর্বাহ্যাত্ম অন্যবাহাণ ইত্যাহি প্রতিতে [হাহার একট্ট ব্যবহৃত্য হুইয়াছে]। ৬

भाषा, शर्त डेलनश रह, कि ना रह, तम क्या बाकूक; अविदेशांबरे वनन भरताती, अवर भवमाञ्चाल वचन दण्डे मथक मरताती सहेट विश्व नार, छवन পরমান্ত্রারও নিশ্চরই সংসাধিত হইতে পারে ? এ কথা বলি বল, छड्डाद नि (व, ना-ठावा वर्टेट शाद ना; कावन, अविष्ठ जीवारक অশ্নারাতি ভোজনেক্ষঃ প্রভৃতি) ধরপুর বলা হইছাছে : বলি বল বে, ভাবের বধন পুথ-ছঃগাঁদ সম্বন্ধ প্রতাক হইতেছে, তখন জি'ন অপনারাদির चलील इहेटल भारतम ना; मा,---(म कवाल विभएल भार मा; कावन, জাততে মাছে গতনি , থাতা। লোক-জাবে (সংসারভাবে) নিও বন না'; 'তিনি এ সম্বের অতীত'। বলি বল, প্রতাক্ষাদি প্রমাণ-বিশ্বত বলিয়া क्षांट्य कथा युक्तिमझ्ड नहरू ना, त्म कथां वंशा हरण ना ; कांब्य, बाह्यात बाह्यतास्म-क्का वित्तव वित्तव हेनावित विकास श्रामान-अवात्त्व विवय क्या, [किस चाया हह ना]; (कन ना, 'कृष्ठ'त खडेाटक (सारनंब প্রকাশককে) দর্শন করিতে পার না' । 'পরে বৈত্তেরি, বিজ্ঞাতাকে আবার কিলের বারা আনিবে গ', 'ডিনি অন্তের অবিজ্ঞাত, অবচ বহং বিজ্ঞাতা' हेजाबि क्रांक इरेटक काना बांत (य. शंकाकांवि क्रांतित विवन क्रांचा नटर. তবে ৰি ? না, বৃদ্ধি প্ৰকৃতি উলাবিতে প্ৰতিফ্লিত বে আত্মভিবিদ, তাৰাই 'আমি পুৰী, আমি ছঃৰী' ইত্যাধি প্ৰত্যক্ষানের বিষয় বা বিজেয়, (কিছ चाशा छावास विवस नाव); कातन, 'चत्रम् चव्य' (हेवा चावि) वेछापि शृश्य विवासत (अप्रर-मध्याठा (अप्र मशार्यंत) मुक्छ विवतीत (विकाल) चाचात्र) मानानिकत्रमा ना चालक नानशत्र (प्रविष्ठ भावता नातः; विर्मनकः 'हेबा कि बाद अहै। नाहें' रेकावि अक्टिक विकोश बाबाद निरम्ध ৰ'ৰ বল, তৰ্কণাছীয় নিৰাজেও সহিত বিয়োধ হয় ব'লয়', ইবা যুক্তি-যুক্ত নহৈ; না, তংহাও বল' বাহ না; কাবৰ, যুক্তি বাবাও আবাহ সুৰ-মুখোলি সময় উপপন্ন বইতে পাৱে না। কেন না, প্ৰতাকের অপনা

[া] ১) ভাংশ্বা সংখ্যবত জনে হয় বিষয়ী, আর জের বন্ধ তর বিষয় বেলাল্লমতে আনেই আরা; স্তরং আলাতেই বিষয়ী বলা যায়। আরম্ অবস্থারনে, আরা গংগর অর্থ—প্রান্তাল্যাল্য আনাল্যবন্ধ; সভরং ভাগ) আলোগাংগ্রুত বৃষ্ঠি প্রস্তৃতি জিল্ল আর কিছুই হইতে পারে না; আর 'অহং প্রের অর্থ আরা; জান ও জের এবং আরা ও আনাল্য অভাবত্তই তিল্ল, কিন্তু ভ্রমণি ব্যবহারকেরে বিষয় (আনাল্য) 'আরং' প্রান্তির সহিত বিষয়ীর (আলাল্য) আতেল আবোপ করা হইবা বাকে। ইবা হর্তের বেশ বৃদ্ধা যায় বে, নেট্রিক প্রত্যাল্যি প্রমাণের বিষয় অহু আলাল্য নেই বৃদ্ধিরূপ উপাধিতে প্রতিবিশ্বিত বে আল্ল-হৈত্তক্ত, ভালাই উলার বিষয়; কালেই 'আলি ওবী ছংবী' ইড্যানি অল্পত্র হারা বিশ্বত্ব আলা্র প্র-ছংবানি সম্বন্ধ করানা করা বাইতে পারে না।

^{(&}gt;) তাৎপ্ৰ্য--সাধাৰণত: 'আমাৰ কাতে ছ্:গ, পায়ে ছ:খ, কিংবা মন্তব্দে ছ:খ, আব্যা পূব' ইড্যালিক্সপে ফেচাবয়ৰ হস্তপদাদিতেই সূব-ছ:খের প্রতীতি চইয়া থাকে; হস্তপাদি বৈ আমার বন্ধ--বিষয়, দে বিষয়ে কাকারো সম্পেহ নাই; স্থতরাং উক্ত প্রকার প্রতীতি হইত্তেও জানা বায় বে, প্রথ-ছ:খাদি ধর্মগুলি আরার নং ; পরস্ক আনারা ফেচাফিরই বটে, আয়াতে ভাহার আরোপ হর বার ।

আখা কৰমই প্ৰভাকের বিষয়ীভূত ছংগ খারা বিবেশিত (ছংবের বিশেষ্ট) वहेरण भारत मा; कावन, चाया करमण मोकिक अखात्कव विवय महरू। যদি বল, আড়াশ অপ্রতাক বটলেও বেষন প্রতাক-প্রায় শক ভারার ৩৭ ব। ধর্ম হয়, তেখনি পরতাক আয়াও প্রতাক হৃংবের সহিত স্থত वहेरन, नाना कि? मा. छाना नना बाद मा; कादन, खादा वहेरमध এক বৃদ্ধির বিষয় বইতে পাবে না; কেন না, প্রভাকের বিষয় (প্রভাক-বোগা) বে, পুৰবাহক জান, [ভোষার বভে] নিভাপুষের আদ্ধা ভ কৰমট তাৰায় বিষয়ীভূত হইতে পাৱে মা। বিশেষতঃ वयन अक देव हुई नह, छथन तिहै बालांध जे ब्रात्मत विवहीकुछ हह, छारा बहेल (तारे चाहात विवादानीत निहिष्ट विहान) विश्वीतरे (विषय-अकाणक-विषयशाहर १ वर्षे । व्याप हरेशा शास । व्याप पश्चि वन, मौन रवमन निर्धाह निर्देश विवयं ६ विवयो (अकान ७ अका-শক) হয়, তেমনি আয়াও নিজেই নিজের বিষয় ও বিষয়ী (জয় ও काठा े वहेरव ; ना, छावा वर्तनाठ भाव ना, कादन, अकहे मनाव काहारवा रिवय-दिव्यविकाय करेरा भारत मा ; दिल्बाकः च्यादा ववस सिव्यक्ष सिव्यवक्ष), তথন অংশতেদেও বে, এল্লপ বিষয়-বিষয়িতাৰ কল্পনা, ভাষাও সঞ্চ ES 41 (4 :1 5

(ক) তাংশ্যা—ভাকিক বৰ বলিং। বাংকন বে, আবাতে চতুন্দৰ প্ৰকাৱ কৰ আছে—
"বুড়ালিবটুকং সংবাদিশককং ভাবকং এবং ধর্মধর্মে কৰা একে আছকঃ স্থানতুন্দৰ ঃ"
অনাৎ বুলি জাক) শ্বন ছাবন ইচ্ছা, বেল বড় (চেটা), এক বানি সংবাদ, মনং পরিবাদ,
পুথকুত্ব, সংবাদে, বিভাগ, 'ভাবনা' নামক সংখ্যার, বাবার সাধাবো আতে বিষয় পুনং আছিল
পথে উলিত হয়) ধরা ও অবর্ধ এই চতুর্কবিট কর আছার বভানিছ বর্তা। এবন আছাতে
যাল স্বন্ধ্যাবের অবিদ্যালয় বাবান ভাবা হইলে উচ্চ ভাকিক নিছারা বিকৃত্ব ইইলা
প্রেদ্যালয় অভ্যান ক্রান্থানি ধর্মসভাব বীকার করাই উচিত। তছ্নারে ভাষাকার
বলিতেত্বন —

মুক্তি ছারাও বধন আয়ার মূব ছ:গালাব প্রমাণ করা বাইতে পারে, তবন জীহাতে সুধ-ছ:গ সম্বন্ধ করনট গীকার করা ঘাইতে পারে না। একট মুক্তি এট বে, সূব ছাব প্রভাকের বিষয়, আয়া কিন্তু সাধারণ প্রভাক্তের অবিষয়, মুভরাং প্রভাক্ত ও অপ্রভাক্তের মধ্যে কথনও ধর্ম-ধর্মিভাব হউতে পারে না। বিশেষত: আয়া জানস্করণ: মুভরাং ভাষা বিষয়ী, আর আয়ওণ মূব-ছাব হইল ভাষার বিষয়; গীপ বেদন কথকিৎ নিজেই নিজকে প্রকাশিত করে বলিয়া বিষয়ও বটে, এবং বিষয়ীও বটে; আয়ায় পক্ষে কিন্তু সেরূপ বাবছা হইতে

केगरद रव नवस वृक्ति-श्रवान श्रवनित वहेन, छोदा वांदा [स्वोदयरस] विकारमञ्ज द्व, आइ-आइककाव, जाबाक विकार होता, अवर आकारका विवशीकृष्ठ बृश्य यात्र यक्ष्मारमत विवशेकुठ याद्यात (४, ७०-७विटाव-कश्चमा, छारा७ मित्रक बहैन ; कावन, इश्व-भवार्थ मिठाई श्रकाटकत विवह, व्यक्तिक देशहिक अभावित महिल अकाविकतान अकहे (कार्व) श्रेत्री व कहेवा वाटक ; [जुत्रताः স্থপাধি বেৰন আন্ধাৰ ৩৭ নহে, তেখনি ছঃখও আন্ধার ৩৭ কটচে পারে না]। আর আত্মতে হংব বলি মনঃসংযোগলনৈতও বহ, তারা বইলেও चाचार्छ नावश्य. विकादिय ७ चनिठायापि स्थाप वानिश १८६ : कार्य. क्मिबीख अयम कामल खन (पश्चित्त भालवा बाद मा, बादा फेरभद्र वा रिनहे ब्हेरांत नम्ह चनम्म नारहर एराटक किहूमार्थ विकृत करत मा: आह बारोब खरबब माहे, त्रारे निवरवृत भए। वे(कश्च कांबाव्य विकृत क्वेट्स, खबबा কোন নিতা পদাৰ্থকেও অনিতা ওপবিশিষ্ট চইতে ছেগা বাছ নাঃ वित्वकः बाहाता बान्यवाणी चर्वाः व्यवामकः नाष्ट्रशाबावाबादावनशी. छाइद्रिक्ष काकान्यक्त मिठा रिनशः चौकाव करवन मा : अवह अ विशर्द ठडित बात छेनजुरू प्रदेशित (मन) बाह मा बाह मंत्र नम, विकृत वहेरान बचन छ९-व्यं ठारबर निवृत्ति वस ना, चरार 'एका तमहे वसहे बर्हा' अहेद्रल कान ৰিভ্ৰমানত থাকে, তখন উহা ৰিকাঠী বইলেও নিতাই গটে: না, ভাছাও विकास भाव मा: कार्य, सारवात जुलाखत मा महेकिया क्यम (कामक विकात बहेटल भारत मा ; अर्थार अक्रम काषाल विकाद (एवः बाह मा, काहा ছারা বিষ্ণুত প্রবোর রূপান্তর ঘটে না, পরন্ত উহাই বিকারের শুভাব বা শুরুপ। चात अ कथां विकास भारत ना त्व. क्षेक न कम मावहब, चवानि छेवा मिछा ; छोडा बरेटन व्यवस्थान्य भवाना मार्थान व्यवस्थान मार्थान कार्त्त, छवनमिन्छरहे (महे भवछ चवहत्वर भूनवेशत विश्वति चवश्रावी [अवस्य-विकाश है छ मायस्य भनार्थित भ्रारम वः विमान , कारकहे मावस्य পদার্থের ধ্বংসও অবস্তভাবী]। ধরি বল, বন্ধপ্রভৃতি কোন কোন সাবন্ধব वहरू वर्गन व्यवदान-मश्रवाण पृष्टे वह ना. छर्गन मः राश्य नृसंक्ष निष्टमि है क

পারে না ; কারণ, দীপ সাংশ বা সাবরণ পরার্থ ; ভারার পকে একাংশে প্রকাশকণ আর অপুরাংশে প্রকাশক হইতে পারে, কিন্তু আরা বধন নিরংশ পরার্থ, ভবন ভারার পকে একই সময় ক্রিয়প বিষয়-বিষয়িভাব হইতে পারে না । ইভাগি। অবাভিচারী (সার্কজিক) নবে; না, সে কর্বাও সম্বত হর না; কারণ, বস্তাবিও বে. অবঃবসংযোগ হইতেই উৎপন্ন, ভবিবন্ধে অভ্যান করা বাইতে পারে; অভএব আয়াতে কবনই হংবাধি অনিতাওণের সম্ভাব উপপন্ন হইতে পারে না (>)। >•

এখন আপতি হটতে পাৰে যে প্রযায়াও যদি দুংবী (ছংবাপ্রছ) না হইলেন, এবং তড়িঃ অপর কারাকেও যবন ছংবী বলিছা কল্পনা করা বাইতে পাতে না তবন সেই দুংবশান্তির অভ শাল্লারভের ত কিছুবাত প্রয়োজন দেবা বাইতেছে না; না, এলপ আপত্তিও হইতে পাতে না; কারণ, অবিভাগশতঃ আন্থাতে দুংবিদ্রম অধ্যারোপিত হইলাছে, ত্রির্ভিত শাল্লারভের উদ্দেশ্তঃ যেখন ["হশ্বস্থয়াস্থলিত অভানব্দতঃ আ্লাতে কল্পিত শশ্বহ সংখ্যার অপূরণ-প্রমনির্ভিত অভ উপ্রেশের

^{(&}gt;) जारपर्वा -- अ शांत (व मवस स्टान सवस्तातना स्टा व्हेशास, कावाह आस्ताक्रीहे क्षप्रेम देनर मुद्दम् कार्ट्स कारमाञ्जात विषय, कि.स. त्मञ्जन क्षत्रम क्ष्माय है। खाँचे कृष्टे अक्री विवाह कि.कि. चारताहरूवे चाकान व्यवस्य करिएक हि-- अध्य कवा वहेत, चायता चाहारक (व श्व छात्र अञ्चल कविता नाकि, काका आखात्र पाछात्रिक वर्ष अरहः शबद्ध विवय-अपद्ध बानव न'व्ह बाबाव नारवान व्हेट्ड नवूरनात: क्रुडार, छेश बनिछा। अ क्वाब डेब्डाव खाबाकार ग्रामित---बाफ्टा, बाखाउ सूब-इ:बावि गाँव वन:मरवातककरे वह, खाहा वरेस्मक बाबाब के नमक अनत्क डेरम'त-विनामकैन बनित्क :हैरव। व्यवित्क गांक्या बाब, कर क्षत्रक मार्वप्रक क्षिप्र निवर्ष्य रक्षाल बारक मा. अरर बाकाव महत्र रह ना। क्षत्रक दिवा प्रकार नव-७१'रानहे बाकानरक विश्वदेश रासन : किन्न डेनिनर बक्षि बादानिक नाट्य स्वत न्कृष्ठक्ष छेरना (क्य) नवार्य बनिशास्त्र ; उपन नाम्रमायानाष्ट्रनार वाकान्यक करा-अर्थुनिवनवर अनात्रात वृत्रक त्रका हता ना । यह दर याचाड व्य-प्रूप योकात कवितारे नारव्यक्त चीकाव कविट्ड इव ; व्यक्तिक, नारवय ख्राया प्रकृष कान कर केरलव वव. व्यवता छाहा हरेट व्यक्षरिक हत, उपनरे ठाहात किছू ना किहू विकास वैश्वत कतिया वाटक। व्यञ्जन बाबात एन-पूर्व बीकात कतिरव विकातिक बीकात कतिरक स्त : विकातिक ची शत के ब्रिश्न है छोड़ाव चानिकावक चीकाव कविएक रहा। विकासचीन नायबर वस्त्रमान्तरे कत्रकानि व्यवस्थार मर्याप्य मुक्षमा वहेदा वारक ; ठावा वहेदनहे 'मरावामाक विद्यापाचाः' व्यर्गाद मारवारमञ्ज दनव कम कहे एकाक-विरवान ; व्यवस्य-विरवान है माववय नवार्यक्र वारम । वज्र अकृति (व मयक मावप्रव वक्करक बालाडकृत्रिक विका विजया व्यवस्थमारवायकाक यह अवेत्रम बरन वतः वक्षकः नावत्रवक् निवकतः रम नवक वक्षरकक मरवानक वनिता क्ष्मवान कता परिस्क गारः ; स्कताः वे मयक रक्षक देशक विक्रक पृदेशक दरेरक गारव मा ।

আৰম্ভক হয়, • তেখনি এধানেও আত্মতে বীয়ন্ত করিত হ্যবস্থত। নিহুছির কচও নারার্ডের এরোকন আছে। >>

करमत्र बरवा एवं।क्ति अणिविक (बढन वृद्धे वहेत्रा वाटक, कळन शाक्तक वन्षाक ब्रांशक (व, वासाव शकिविषय ज्नेनिव वा शक्कि, कारावे चांचांच कारवन । वनक्रमस्ति गृर्क्त चा धाव डेमनांच किन मा, भन्धार चून क:बी एडे बहेरन गव, वृष्टिः कछात्रत छावात छेननकि बहेग; अहे कात्रावहे क्याचित्र मध्या एर्वाचि-अ'छविष्यत स्वात्र कार्याच्छन कन्द्रस्त्रीत পর, ভিনি ভরবো প্রবিষ্টবৎ অভুকৃত হন ব্লিয়া ল'ভতে নির্ভেশ विवादक, -'जिलि देवाच मध्या अविहे वहेलाम', 'ठाठा (अन्य : लृष्टि कविवा चारावरे मर्पा टिनि व्यारम कविरममं, ''छोन दहे गोवा विद्योर्ग कवित्रा हैवा चांडावे बाद वहेरनन','रनहे : ववछा (गत्रसंबत्त) चारनात्रमा क'त्ररागन,---कान, व्यापि अहे कीशकाल अहे किम (परकाद (क्वा:, क्रम क लविनीद) **च्याबर**त क्रारवनमूर्वक [नाव '8 क्रम विश्वाद करिव]' डेळा' ह । ं शरवन महत्त्व (बद्धम वर्ष रता वरेन, (मद्भम ना वहेल,) मर्कवाली । निवयवय बाखाव विक. एम ७ कारनंत नारवान-विद्यानायक श्रादन कवमक छन्नत वहरू भारत मा। चात शहरुभाक भवमाशाय चरितक ,व तक बहेः चारहम. ভাষাও নবে: कातन, क्षति व'नएठाक्त--'हेबात च'छित्क बात (क्ष खड़ी माहै', 'हेबाद चित्रक चाद (क्व (आठा माहे' हेठाहि: अ कथा আৰবা পূৰ্বেই বলিবাছি। বিশেষতঃ অগতের সৃষ্টি, বিভি. লগু এবং সৃষ্ট ভগতে

^(*) ভাৎপর্যা—লপজন লোক বাড়ী চইতে বাহিং চইয়া বাইতে বাইতে পথে একটি জুল নবী পাইল: নবাঁচী সম্ভাগের নাগায়ে পাই চইলে পর, ভালানের ননে সন্দেহ উপস্থিত হইল বে, আনলা টিক বল জনই পার চইতে পারিয়াডি ৷ কিংবা কেন্দ্র নবীতে ভূবিয়া বিল্লান্তে ৷ তবনই পণনা আনত চইল ৷ সকলেট অভুত পভিত ৷ প্রভাবেনই গণিবার সমর আপনাকে বাল বিলা বণিতে আনত করিল; প্রভাগে নর জনের বেলী লোক আন কিছুতেই হইল না, তথন তাহারা বিল্ল করিল বে, আনামের লগন লোকটি নিজ্জাই জলে ভূবিয়া বলিয়াছে ৷ সকলেট ললন বাজির লোকে ইনিয়া আছল ৷ অপর একজন অভিজ্ঞ বাজি ভালানের মুরবছা বর্ণনে কাত্র হইয়া বলিলেন বে, ভোনলা পুনর্বার পণনা করিলা লেব, বলন নাই ৷ তথন ভালানের একজন লোক পুর্বাৎ পণনা করিতে করিছে বেট নম্ব পর্বান্ত পণনা করিল, তথনই সেই অভিজ্ঞ বাজি বলিলেন বে, 'রলনজ্বানি' অর্থাৎ জুনিই নেই মুলন : ভবন ভালাবের নুল্য সংবানে অপুরণ্ডর বিশ্বিত ভ্টল ৷

ব্ৰজ্যে প্ৰবেশবাৰত বে সমত প্ৰতিৰাত্য আছে, নে সমতের প্ৰবাম উত্তেপ্ত লইতের—ব্ৰজ্ঞকৈ উপলজি-পোচর কয়ান; ভারণ, প্ৰতিতে ব্ৰজ্ঞোপলজিই পুরুষার্থ (পুরুষের মুখা প্রয়োগন) বলিয়া প্রত হয়,—'আছাকেই কানিবে', , 'নেই ব্রজ্ঞোপলজির কনে সর্বায়ক হইরাছিলেন', 'ব্রহ্মবিং পরমান্তাকে প্রার্থ কন,' 'নেই বে কেই প্রয়ান্তাকে অবগত হন, তিনি ব্রহ্মই ইয়া যান', 'আচার্যাবান্ন পুরুষ (ক্রিজ্ঞান্থ বাজি) তীহাকে কানেন,' 'তীহার (ক্রম্বন্তির পর্যান্ত বিল্লাণ ইত্যানি; এবং 'তাহার পর আমাতে ব্রায়বন্ত্রপে অবগত হট্যা পল্ডাং আমাতে ব্রজ্ঞে) প্রবেশ লাভ করেন,' 'তাহাই (জ্ঞানই) সর্বাবিজ্ঞার প্রেট, এবং ভালা হইতের প্রক্রেশাত হইয়া থাকে', ইত্যানি স্থাতনাত্র হুক্তিলাত হইয়া থাকে', ইত্যানি স্থাতনাত্র বিল্লাক ক্রমেন পুরুষার্থ বা তৎসাবন বিজ্ঞান বিল্লাক ক্রমেন সমুংপালনেই তাৎপর্বা, হাছা ভেত্তর্বনির নিশা হইতেও প্রতিপন্ত হয়। অতএব, স্বস্তুই জগতে তীহার উপল্লিই 'হাহার প্রবেশ' বলিয়া ক্রিত হইয়া থাকে। ১২

'আ নবারেডা:'—নবের অপ্রভাগ পর্যন্ত আন্ত-চৈতত অপুরুত হইরা বাকে। আন্তাইবা সেবানে কি প্রকারে প্রবিষ্ট হইল, তাহা বলিতেছেন—অগতে ক্ষর বেষন ক্ষরবানে - ক্ষর বাহাতে রাধা হয়, তাহার নাম ক্ষরবান—নাপিতের বয়াবার; ক্ষর বেষন সেই ক্ষরবানের মধ্যে নিবেশিত থাকে, অথবা বিশ্বতর—আরি, অগৎকে পোবণ করে বলিরা অগ্নির নাম বিশ্বতর; ক্ষরার অর্থ—নীয় বাসন্থান); অর্থাৎ অয়ি বেয়প বিশ্বতর-কুলারে—কার্ঠ প্রভূতির অভ্যন্তরে প্রবিষ্ট থাকে; কারণ, কার্ঠবর্ণ করিলেট তম্মবা হইতে অয়ি প্রভাগ পাইয়া থাকে; ক্ষর বেষন ক্ষরবানের একাংশে অবস্থান করে, এবং অয়ি বেষন সর্মানোর কার্ঠকে ব্যাপিরা তম্বারে বিহিত থাকে, তেমনি আয়াও এট বেষকে সামাত্র-বিশেষভাবে অর্থাৎ আংশিকভাবে ও সর্মানোভাবে ব্যাপিরা তমাধ্যে অবস্থান করে; কিছু সেই দেহমধ্যে খাস—প্রাণ্ডাণার ও স্থানাত্র ক্ষিয়া সহযোগেট আয়ার উপলব্ধি হইয়া থাকে; এই অন্তই সেই বেষমধ্যে প্রবিষ্ট প্রাণ্ডানিট সেই অংলাকে ধর্মন করিতে পার না।১৩

छान, ब्रवाहम वयम वर्णरमंत्र रकाम खनकरे मारे, छवम 'छावारक वर्षम करत्र मा' क्षरे क्यांके छ ख्याख्यांकराव हरेन, चर्चार वाला महावमा द्विन मा, छावात्रहे मिरवर कता हरेन । मा, देश शावावर दह मा ; रक्षम मा, ভাই-প্রভাত-প্রতিপাদক বাকাওলির প্রধান প্রতিপাদ্য বিষয় চইতেছে—
আইন্দের্থনান সমুখ্যালন করা; হতরাং আত্মহর্পন এবানে অপ্রাসন্ধিক নহে;
কুই কুই ব্যান্তে আছে—'তিনি প্রত্যাক বছতে পঠিত হটায় তর্ত্তপে
প্রকাশ পাইয়াছিলেন; লোকের বুরিগনা হইবার অন্তই ইচার সেট রুপটি
অতিন্যক্ত কটাছেলেন; লোকের বুরিগনা হইবার অন্তই ইচার সেট রুপটি
অতিন্যক্ত কটাছে। কেন বে, প্রাণনাদি ক্রিয়াবাদই আত্মারিদিই
বেই আহা অন্তর্ম—সম্ভ নর, [সেই হেতুই অস্থাক্রুছির বিষয় কট্রা
থাকে]; প্রাণনাদিবিদ্যিই আহা বে, অসম্পূর্ব কেন, তাহাও বলিভেছেন—
আহা কেবল প্রাণন অর্থান বাহা বে, অসম্পূর্ব কেন, তাহাও বলিভেছেন—
আহা কেবল প্রাণন অর্থান বাহা হাবে বে.] তর্ম প্রাণনাবে করে।
বলিয়াই অর্থান আহা প্রবিতে চইবে বে.] তর্ম প্রাণনাবে করি।
বলিয়াই অর্থান আহা প্রাণন করে বলিয়াই প্রাণনাবে অভিহিত হয়, কিছ্ক
আন্ত ক্রিয়ার কর্জ্যনিবন্ধন নহে; বেষন, বে বাজ্যি হেলন করে, তাহাকে
'লাবক' ছেলক ই বলে, আর বে লোক পাক করে, তাহাকে 'পাচক'
বলে; ইহাও তজপ অতএব অপ্রাণর 'ক্রেয়ার কর্জ্রণে আহ্মার
অন্তর্ভাত হয় না ব'ল্যাই উত্রপ আহ্যা অন্তর্গর বা অসম্পূর্ণ ১১

সেইরপ বদন-ক্রিয়া করে বলিয়া— যাকোচ্চাবেশ করে বলিয়া বাক্; দর্শন করে বলিয়া চক্সং, চক্ষং অর্থ দর্শনকার'—রেঙ্কী; 'শৃথন্' -রাবল করে বলিয়া জ্যোলন্ এব প্রাণঃ,' আর 'বদন্ ব'ক্" এট চ্ট কথায় আয়াচে ক্রিয়ালক্রিয় অভিবাক্তি জ্ঞাপিত চ্টল। আর "পশুন্ চক্ষং," ও "শৃথন্ প্রোরং' এই চ্টটি কথায় জানশক্রিয় আবিটাব প্রদর্শন করা চ্টল; কেন না, নাম ও রূপ, এই চ্টটিই জ্ঞানশক্রিয় বিষয় বা রাহণীয়। রাবণেক্রিয় ও চক্ ইইভেচে—বিজ্ঞানোৎপালনের উপার, আর বিজ্ঞান ক্টভেছে নাম ও রূপের সাধন অর্থাৎ প্রোর্ত্ত ও চক্ষুরিন্দ্রেরে সাহারে। প্রথমে অন্তত্তবাহাক জ্ঞান ক্রেয়, ভাষার পর সেই বিজ্ঞানই আবার নাম ও রূপ, এই চ্টটি বিষয় প্রথম করে। অপতে নাম ও রূপ ভিন্ন আর কিছু জ্ঞাভ্যা পদার্থ নাই; সেই চ্টটি বিষয় অন্তত্ত্ব করিতে হইলে চক্ষ্যং ও কর্ণ ভিন্ন আর কোমও সাধন বা উপায় নাই; কাজেই চক্ষ্যং ও কর্ণকে নাম-রূপবোধের সাধন বলা হইভেচ্ছে। ভাষার পর, ক্রিয়াল্লন্তই নাম-রূপের সাহার্যে নিল্যান্নিত হন্ত, এবং প্রাণই ক্রেয়ার আগ্রার আ

महात्क बहेब्रम निश्म : क्यम अगम्मनार्य वर्षार क्रेशहर्ययद्वाम वानिव्यात्व केलाव कहा बहेबाहरू माळ। हेबारे व बाइक्तबहि वा सहिनवहि, छाहा 'खबर वा देवर मात्र कर्नार कर्ना' अहे अखिराक्ष विमानमा । अहेब्रन 'मबामा'---मनम करत-- छानमम हिन्दा करत बनिदा 'मनः' मारम खाँछिक्छ स्त्रः बाहा वारो मनम करा दर्, अवेद्वन वर्षायनारा नर्कावम काननामम व्यक्तकारक 'मनः' वना इहेद्रा थारक ; किंतु शूक्क्य श्रिक्ष वार्ष 'मनः' नव्यवाडा नरह, পর্ম তিনি নিজে খনন-কার্ব্যর কর্তা ব'লয়া 'মন:' শব্দ অভিবিত হইয়া पारकता : e

[अहे (य ममच नाम डिलिंग्ड इहेन,] श्रानामि (महे ममच नामहे अहे चाशांत कर्ष-नाव, चर्वार निन्धवर कर्षायुवाडो नाव, किंब कानहीरे श्रवत ওছ খায়বছর বোধক নছে: আত্মা বধ্যক্তপ্রকার প্রাণনামি ক্রিছা ও ক্রিগালনিত প্রাণাধি নাম এবং ভন্তরণ রূপে অভিবাক্ত হটলেও-ছচিত बहेरान के नमस्य नाम बादा शक्त बाह्यवस्य वर्षावय प्रक्रमि श्राम नाम ना। चल्डबर, (व लाक উक शानना'व किशानबहिद्धाल अहन मां करिक्का ८क ७ के हिएक- ७४ कान वा इक् इंग्लाम जान वि!नहेरक 'हेराहे जाना' विनश यत्न भत्न छिलान्ना कत्त्र - हिन्दा कत्त्र, किन्न नम्न किन्नानिन्दित्र। षणुम्ह'न करत ना ; बढाठः (म (मांक उद्यक्त कान ना। कात्र ? (बरहरू वेदल এक अकृष्टि मात अनवूक चाच चक्रम चर्वार डेक श्रामनाचि क्षिमानमा हे हहेट भुवनहरू-अक अक्षिमात वित्नवर्व वित्नविष्ठ चारा পূर्व चाञ्चा नःह: कादन, चनव क्रिवाममूल्याव 'ठवा ना नाकाव हेहा बाबात मूल्य प्रक्रम : हेटि भारत ना। विश्व छात्र अहे (व. हेमानक (व भर्यास अवेक्कण - 'प्रतीनकर्षा, अवनक्षा । अ न्यानकर्षा' वेष्णापि अकाव चलावनिक वृद्धि वा क्रिवाविनिष्टेक्स्प विद्या करवन, लिनि त्म पर्वाच क्रिक वर्षार्वहरू मञ्जूर्व चाचारक कानिएड भारदन नाः ১७

छान, किञ्चल वर्नम कवितन चाचारक वर्षार्थेक्टल चानिएछ शास्त्र ? **छड्डात व्याटिश्चन—'बाधा'-ऋत्म (वाानकद्वतम प्रमेन क्रिट्स्ड्** कानिए शास । इंडाशुर्स वाहात मचरक आनावि त मचक वित्यवन ৰা কৰ্মনাথ উক্ত হইছাছে, তিনিই সেই সম্ভ বিশেষণের ব্যাপক बानशा बबारम 'बाबा' नारम अविदिध दहेरछरहम (১)। तारे बाबा

^{(&}gt; । कारनदा--'बाबा' नक्षे 'बक' वाकू क्टेक 'क्व' बकाव कविवा निमात स्टेबारक ।

ন্দত্ত বিশেষবাদী বলিয়া কৃৎয়—পূর্ব। কেম না, ডিনি বাহ বভাববাদেই আবাদি বিশেষ বিশেষ উপাধিত্ব জিলাকনিত সমস্ত বিশেষৰ বা বিশেষ বিশেষ উপাধিত্ব জিলাকনিত সমস্ত বিশেষৰ বা পূর্ব]। ইতঃপত্ত, 'বেন খানট করেন, বেন স্পাধ্দেন করেন', ইত্যাত্বি বাকোও এই কথাই বলা ইইবে। অতএব, তাঁহাকে আন্ধান্ত প্রকা উপাসনা করিলেই ববার্বপ্রশে সম্পূর্ব আন্ধান্তে প্রকা করিবে; ঐল্লপ উপাসনা করিলেই ববার্বপ্রশে সম্পূর্ব আন্ধান্তে প্রকা করিবে। মান্তার ব্যাব্দিরে করিবেট আন্ধান পূর্বভাব গ্রহণ করা বাকে। আনকা ইইতে পারে বে, ঐল্লপ চিন্তা করিবেট আন্ধান পূর্বভাব গ্রহণ করা ব্যাব্দির করিবেট করিবেট করিবেট করিবেট শালার পূর্বভাব গ্রহণ করা ব্যাব্দির করিবেট করিব

িলাকে বৰন আপন ইচ্ছাতেও 'আয়াত্রপে' আয়ার উপাসনা করিতে পারে,তবন থায়োপাসনাতে) পাঞ্চিত পাসির সম্ভাবনা থাকার 'আয়া ইত্যেব উপাসীত' এই বাক্যাক্ত উপাসনাবিধিটি 'অপূর্ব বিব' নকে, অর্থাথ পোকের সম্পূর্ণ অবিজ্ঞাত বিবরের উপদেশক বিধি নহে। 'বাহা সাঞ্চাং প্রত্যাহ্নবন্ধপ' 'কোনটি আহা গুলা, এই বাহা বিজ্ঞানম্য' আয়াপ্রতিপাদক এই সম্ভা প্রতিতেই আয়াবিষয়ে বিজ্ঞানেশিয়েল ব্যবহাতে; স্তরাং আয়ার প্রকৃত অন্তর্প 'বজ্ঞাত কইলে, সেই বিজ্ঞান ব্যবহাট ত অনায়াভিষান এবং কারক ও ক্রিনাক্তাবোপায়ক অবিদ্যা অপনাত হইলা বার; অবিজ্ঞানির্ভি হইলে আয়াতে আর কার্যান্ধ দেবেরও উৎপত্তি সন্থাবনা থাকেনা; স্কুতরাং কার্যান্ধ গোব নিরুত্ব হইলা পেনে অনায়াবিষয়ক চিন্তাও আর

'শত্' বাতুর অর্থ-সভত গরন বা সর্বাবাণিত। সূতরাং 'আরা' পলের বৌধিক অর্থ কাডেছে—বিনি সঞ্চত বা সর্বাবাণী, তিনিই আয়া। এইরূপ বোগার্থনে সঞ্চা করিয়াই ভাষাকার বলিয়াছেন বে, 'প্রাব', 'বাক্' ও 'ল্লোডা প্রভৃতি এক একট কর্মানারে আরার বে সম্ভ আংশিক ভাব প্রকৃতি হয়, এক আয়ারণে সেই সম্ভ উপাবিক বিশেষ বিশেষ অবহাওলি আয়াত ফ্রাড্টাকৃত হয়। এই জন্ত এক একটি বিশেষ ভাষ ধরিয়া উপাসনা করিলে ক্রিক আয়ার সম্পূর্ণভাব প্রধণ করা হয় না; পরস্ত 'আয়া' বলিয়া উপাসনা করিলেই এ সম্ভ ভাষাকাল প্রকৃতি প্রকৃত ভাষাকাল প্রকৃতি প্রকৃতি প্রকৃতি প্রকৃত ভাষাকাল প্রকৃতি প্রক

चानिएक नारत ना ; कारबरे चनिक चाचनिवत किकारे नाक्त वात । चक्रबन, अरे वर्ष्ठ चारवानानतात वक्र चात विवित्त वावक देश्रेक नारत ना ; कावन, केवा अवानावत वातारे जास दक्ता निवादक ; (ब्रूचक चलाक्ष विवत कित, आस्त्रविवद कथमरे चैन्स्विवि वरेटक नारत ना] (२)। 5%

् अपूर्वविविधारो भूनक वानकः कवित्रा विविद्यह्न - वाह्या-भागनात शांख भाक्तिक ना निहा, व कवा नाविश वातः, वहि क्रिक्क क्रमूत्र-विधिष्ट वहेट न नारत ; कातन, स्थान क छेनामना यसन अक्षे वस, छवन छेहां निकारे बाधार ; वित्यकः "न म (वय" (त्म त्याक कारन नः , अहे कवा बनाइ नव चर्नार '(बम्दन'त अन्य वस्त "बाहा हेटडाव डेनानोड" (चाहा विनारे छेणानमा कतिरव) वना रहेबाहि, छवन (वन बूबा बाहेरछहि रव, '(नमन' ७ ' উপাদন।' नामत भर्त- अकः ठाहात भन्न, 'हेहा हात्र। (चायविकास गांता) अरे नवच चन्न बाना गांत, 'श्रायादकरे वानिवाहित्सन' ইত। দি প্ৰতি হইতেও বিজ্ঞান ও উপাদনার একছই প্ৰতিপন্ন হইতেছে। वर्षाक विकास वर्षन चन्न क्लामल श्रवाद शाय महत छवन छविष्ठ चन-अहे वि'व बहेरल शारत । बात [विचि वालील] ८करमहे बक्कत चक्रम वर्षना कतिरम, छविषात्र कवनहे मारकत धात्रति कामारक भारत ना : कठ वर हेश 'अनुस-विवि'हे वर्षे । वि: नवतः कद्विविव अनुक्षम विनद्वात हिहाक चनुर्वाः वि' वानाठ वहेरव]; (यमन 'वर्षक' (यक कविरव , 'कृहवार' ((बाय कविरव) हे छ। वि कर्य-। ववायक वाका बहेर ह चार्या नाममः-विवायक "থায়েতোৰ উপাদীত" "ৰামা বা দৰে এটবাং" ইতাাদি বিৰিশুনির ত किह्मात्रत शहन वृत्रः वाहेरहाइ मा ; [चठ এव हेवा चपुर्सविविहे वाहे]। >> विश्वयक्तः विकान नवार्व हि मानन किवायक्षण वानवार अवारन अपूर्वविश्वर बोकाब कविटा बहेरत । (वयन, (व त्वताव छे:प्राप्त विवा यकोव जना)

⁽২) ভাবশ্রা—বাহা বারা লোককে কার্যবিশেবে এব ব্রঁক বা নিবর্তিক করা হয়, ভাহার নাব 'বিধি' ইহাই বিধির সাবাজ লক্ষণ। বিধি এখনতঃ চারি একার—(১) পূর্ব্ধবিধি, (২) নির্ম্ববিধি (৬) পরিসংখ্যাবিধি ও (৪) এলোপবিধি। ভরবো, অভ্নতোর আভাবের বাহা আনিভে পারা বাহ না, এরপ কোনও নৃত্তর বিবহে যে বিধি ভাগার নাব 'অপূর্ব্ধবিধি', ইহার সাবাজর উবপভিবিধি। আর বেরপে কার্য লোকের আন্যাধি, এবং ইক্সা হইলে ভরিভেও পারে, ইক্সা না করিলে নতে করিতে পারে, সেরপ বিশ্ববিধাক অবভাকভিবাভাজাপ্য বিধির নাম নির্ম্ব বিধি।—পরিসংখ্যা ও এলোপবিধি।

अंवर्ग कविष्क वत्र, ववहेकात कविवात भृत्याहे ('वविः क्यार्गत वर्षाहे) **फारार्टन मरन मरन किथा क**विरव' केळालि माननी कियाब (७५ किथाबक क्रितांत्र) विधान बहेता थारक, राज्यनि 'बाह्य-हेराज्य केनानील" "यश्वरवा निविधानिकवाः" इत्त्र आनायक क्रियारे निविक वहेत्वह ; बाद '(यक्न' ७ 'डेशानना' मरमत (य. अकहे चर्य, छोडा चायता शुर्त्तहे श्रीतिशयन करियाहि । वित्यवतः चनुकंबिदित चन्नवह्नन (६, 'कावना' मायक चार्वह्रम, काहान अवादन केनला बहेरकरह: (१४, 'श्रव क' (४अ क्रिक्ट), यह कावमा क्राम (क्रावमा वर्ष करनारमधित वक्षुकृत वामात्रवित्तव) (वयन माधम ७ करावि-विवास · चाकाच्यात निवातक-'कि: १ (कन १ ७ कथम १' वर्षाय कि कम कि छेलाह्य अवर कि श्रकादत छेरशायन कविदव ! अहे हिनहि चरत्वत श्रकीति बहेबा बाटक, क्रिक ट्रवर्शन "डेलामाठ" अहे विबोधमान 'छावना'एठल, काशव क्षेत्राममः कदिरव ? किरमद बादा कतिरव ? अतः कि श्रकारत করিবে ? এইরপ আকাজ্ঞা উপদ্বিত বইখা থাকে; সেই আকাজ্ঞা चनमाद्रमय मिन्नहर, 'खक्षह्या, अम सम. देलव' । । जिल्हिमा अकृति हे जिन कर्खबाछः नमविष्ठ' ७ 'छाःवि इतेशः मानव वायः आखात छेनानना कवित्य' ইজ্যাদি শাস্ত্র বাক্টো বিধির অপেক্ষিত সেই অংশ রয় প্রদর্শি । ইত্তে । ২০

ইহার উদাহবদ রূপে বলং হাইতে পারে যে,] দর্শ পূর্ণমাস' যাগের সমস্তইং প্রকরণই বেষন দর্শ পূর্ণমাস প্রভৃতি হাগের বিধিকে উদ্ধেশ করিয়া প্রকৃত্য হইরাছে, টিক তেমনি উপনিবদের আব্যোপাসনা-প্রকাশক সমস্ত প্রকরণটাই আয়োপাসনাব বিধিকে উদ্ধেশ করিয়া প্রসূক্ত কইরাডে আর "নেতি নেতি" (ইহা নহে, ইহা নহে), 'ছুল নতে' 'নেলচম্বই এক ও অবিভীয়' এবং 'তিনি অশনারাদির অতীত' এই বাদ্যগুলিরও কেবল উপাশ্ত আয়ার শক্ষপ প্রস্থান করাই প্রধান উদ্ধেশ্ত; ইহার ফল অবিভানির্ভি অথবা মৃত্যিকাত। ২০

আপর সকলে বলিবা পাকেন বে, ['আয়েতোবোপাসীত' এই বাকোর আর্থ-] উপাসনা বাবা আয়বিবর স্বতন্ত এক প্রকার জ্ঞান সমূহপাদন করিবে; সেই জ্ঞান বারাই আয়াকে জানা বার, এবং ভালুশ জ্ঞানই আয়বিবরত জ্ঞান বা প্রান্তি বিলুরিত করিয়া থাকে; কিন্তু কেবসই বেগণাকালক আয়বিবরত জ্ঞান অবিজ্ঞ। নিবরেশে কিংবা আয়ার স্ক্রপ-প্রকাশনে কথনই সমর্থ হয় না। এ বিবরে বেগবাকান্ত আছে—'বিশেবরূপে কানিয়া শেবে প্রজ্ঞা (প্রভেট্ট)

ভাষ) পাত করিবে', আত্মাকে প্রবণ করিবে, ক্ষম কবিবে, এবং নিবিধ্যাস্থ (ধ্যান বিশেষ) করিবে, অবশেষে ধর্ণন করিবে', 'আত্মার অনুস্থান করিবে, এবং সেট আত্মাকে জানিতে হটবে' ইত্যাদি। ২>

পর পর ছইট বত উর্নেধ করিয়া, সিভারবাদী এবন প্রথম মন্তটি বওন করিতেছেন (১)—) না,— বতর কোনও প্রয়োজন ন: বাজার প্রবাজি পঞ্চী সমত বইতেছে না। 'বায়েতোবোপাসাত' এটি বে অপূর্ববিধি', ভাষা কথনই নর। কারব ? বেছেডু, আয়ার বরণ প্রকাশক ও অনাম্ম প্রতিবেধক বাকা বইতে বাহা অবগত বওয়া বার, এবানে তহাতিরিক্ত এবন কোনও বিষয় পাওয়া বাইতেছে না, বাহা মানস কিংবা বাহুরপে অকুটানবোগ্য বইতে পারে সেবানের বিবির সার্বকতা হয়,বেধানে বিবিরাকা প্রবাদের পর, লামজান ছাড়া পুরুবের অকুটানবোগ্য আরও কিছু প্রতীতিগ্রা হয়; বেষন —'বার্নাভিগানী পুরুব 'নলি' ও 'পূর্বনাস' নামক ছইটি বাগ করিবে', ইত্যাহি ছলে বেনা সেবানে 'দলি' ও 'পূর্বনাস' বাগের বিধায়ক বাকা প্রবাদে, বেজান উৎপর হয়, ওয়ু নেই জামান্তট দর্শ-পূর্বনাস বাগের অম্প্রটান

⁽১০ তাংপ্র: "আছেতোৰ উপাসীত" ৰাকাট লট্যা প্রব্যান্ত ইন্ট পক সাঁড়াইল—
এক পক্ষ বলিতেছেন - এটা অপ্র্রেবিদি, আছোপাসনাই তাহার বিষেত্র সূতরাং আছার
উপাসনার লোককে প্রবৃত্ত করাই এই বাকোর উদ্দেশ্য। অপর পক্ষ বলিতেছেন ছে, না,
"আছোরোবাপাসীত" বাকে: আছোপাসনার বিধান করা হয় নাই, পরস্ত বাকাজনিত জানের
অতিরিক্ত একটি প্রস্তু জ্ঞানের বিধান করা হইয়াছে। অপর অভিনার এই ছে, সাক্ষাং ক্রতিবাকা হইতে যে জানের উৎপত্তি হয়, তাহা পরোক্ষ পাপ জান, ভাহা হারা কাহারো প্রস্তুত্তি
বা নিসুদ্ধি হয় না, বেং আছারও পর্যপ্রশাসকার হয় না; পরস্তু সেই সমন্ত বাকাজন্ত জান
হইতে যে প্রস্তু একপ্রকার জান উবপত্র হয়, ভাহাই আছা-সাক্ষাৎকণরের কারণ হয়, এবং
সেই জানলাভের অন্তর্জ বানে অপ্র্রেবিধির আরক্তক ইইতেছে। এ পক্ষেত্র অনুস্তুত্তে
প্রমান এই ছে, "বিজ্ঞায় প্রজ্ঞার কুন্দীত" প্রভৃতি ক্রতিবাকো 'বিজ্ঞায়' পক্ষে স্ক্রানের
কথা বলিয়া পুনক্ত 'প্রভাহ' কবার প্রস্তুত্ত জানলাভের উপাবেশ করা হইয়াছে।

⁽২) তাংপ্র। -বিবিবাক্টোর বিশেষক এই বে, বিবিবাকা আনপ্রের পর প্রপ্রাম্থের নিম্মান্ত্রনায়ে এবলে আোডার প্রবাহ একট শাক জান (বাকার্য জান) উৎপ র হয়, ভালার পর নের বিবিধাকারী বে কার্যোর উপধেশ বিভেচ্ছে নেই বিবচে নিজের অধিকার আছে কি না, ইত্যাদি বিবচে বিভার উপস্থিত হয়: যদি বৃত্তিত পারে বে, অধিকার আছে, ভবে বিবিভ কার্যোর অষ্টানে এবৃত্ত হয় আর অধিকার না বাকিলে, ভবকুটানে এবৃত্ত হয় না। অভনব বিবিধাকা স্থলে কেবল বাকার্যে জানেই শেষ হয় না, ভবকুরণ ক্রিয়াক্টানক আোডার

নহে, অর্থাৎ কেবল ঐ বিধিবাকা জানিলেই বে, দর্শপূর্ণবাস-বাপের কলনাত হর, তাহা নহে, পরস্ক তাহা অন্তর্ভান-সাপেক; সেই অনুষ্ঠানও আবার শ্রোতার অধিকারাছি-সাপেক: আআর বন্ধপ-প্রতিপাদক "নেতি নেতি" ইত্যাদি বাকা প্রবণে, যে জান সমুৎপর হইরা থাকে, সেই আম তির সেধানে 'দর্শপূর্ণবাসানি' বাপের কার আর কিছুই কর্ত্তরা আছে বনিরা প্রতীতি হর না; কেন না, আছার বর্ষণ-প্রকাশক বাকালর আনের ইহাই ব্যহাব বে, সে পুরুষকে সর্ক্ষবিধ কর্ত্তবাধিকার হইতে মির্ব্ধ করে। আর বিধি-নিবেবরহিত (উলাসীন) বাকা হইতে কথনই পোকের প্রবৃত্তি বা চেই। জন্মিতে পারে না বিশেষতঃ অবন্ধতাৰও খনাত্ম বৃত্তি বিদ্বিত করাই 'তিং অবনি' ''এক্ষের অহিতীর্ম্'' প্রভৃত্তি বাকাঞ্চলির একথারে উল্লেখ; আরত তালুল জ্জান বং রাজ্ঞান অপনীত হইলে পর, কথনই লাকের চেই। জন্মিতে পারে না; কারণ, উহারা পরন্ধার-বিক্লম্ব ব্যহাবাপন্ন; কালেই অবিছ্যানির্ভিন্ন পর আর লোকের চেটা আলিতে পারে না]। ২০

ৰদি বল, কেবল বাকাভনিত আনেই অন্ত্ৰহ্ণাবন্ত অনায়বৃদ্ধি কৰ্মই অপনীত হইতে পারে না [তছভরে বলি বে.] না. সে কথাও বলা চলে না; কারণ,
'ভং বল্ অসি' তুমি তংবরপ '. ''নেতি নেতি'' (ইহা নংল—ইহা নহে),
''আইয়ৰ ইছন্'' (এ সমন্তই আত্মসক্রপ), "একমেন অন্বিতীরম্" নিশ্চরই এক
ও অন্বিতীর), "প্রক্রৈব ইছলমুতং পুরস্তাং" অথ্যে এই অসং অমৃত প্রস্তাহশ ভিল), ''নান্তলতোহ ভ লাই'' এতলতিরিক্ত আরে কেব ল্লানাই), ''তলেব
ক্রম বং বিদ্ধি'' ভূনি ভালাকেই প্রস্কাবনিয়ে আনিবে', ইত্যাদি ক্রতিবাকাই সে
কথা বলিরা সিতেছেন। বলিবল, এ সমন্ত বাকাট ''লাইবাং'' এই লৃষ্টিবিনির বিনর সমর্পক, অর্থাং লর্শনের কর্মপনার্থ নির্দেশক; [তল্ভবে বলি বে,]
না, তালাও বলিতে পার না; কারণ, পূর্বেই বলিয়াহি বে, 'লাইবা' বাংলা
বিধিক্তমার স্বত্ন কোনও প্রয়োজন নাট; কেন না, আয়ার স্ক্রপজ্ঞাপক
'তং অম্বি' প্রস্তি বাকা কইতে ধনন বংকাপ্রগণের সঙ্গে সঙ্গেই আয়ুবিধনে
সাক্ষাংকার সম্পন্ন হইরা বার, তথন 'লাইবা' বিনি অন্নপারে ভ আরু !কছুই

আৰক্তক চইরা থাকে। বিদ্ন বেথাৰে দেৱল কোনত কঠবোৰ উপদেশ নাই, কেবল যাজাৰি আনেই বাজ্যের পরিস্থাতি বয়, সেধানে বিধিপ্রতার (লিড্) থাকিলেও বিধি করণা করা বাইতে পারে না। কর্ম ও পূর্বনান অকৃতি যাসের বিধিধাকা কেবিলেই এ বিশ্বটী আরক কুলাই চইতে পারে। चम्रार्डम चर्नान्डे बारक मा ; अहे উत्तर शृर्वाहे श्रम्ब सहैशास ; [मूठतार अथात चात्र चर्निक कथा क्या चर्मावनाक] ३२४

ষ্টি ৰল, বিধি বাতীত ওছ আছার প্রক্ষাত্র বর্ণনা করিলে তরিবরে ক্ষমই লোকের প্রস্তুতি হইতে পারে না; [অতএব বিধির আবশ্রক বইতেছে]; না, এ কথাও বলা বার না; কারণ, আগার প্রস্তুপ-প্রকাশক বাক্য-প্রবণেই ব্যম আছার সক্ষমে বধার্থ জান সমূৎপন্ন হইতে পারে, তথম বল ছেখি, কৃত বিষয়ের পুনর্জার করণ (অল্পন্তান) হইতে পারে কি প্রকারে গুলি বল, ওর্ আছার প্রস্তুপ-প্রকাশক বাক্য প্রবণ করিলেও তরিবরে লোকের প্রস্তুত্তি পারে না: [প্রতরাং লোকপ্রস্তুত্ত কল বিধির আবশ্রক; না, তারাও বলিতে পার না: কারণ, তারা কইলে প্রন্তুত্ত বেশরে লোকের প্রস্তুত্তি পারে না, তেমনি স্বতর বিধি না বাজিলে বিধিবাক্য প্রবণ্ডে লোকের প্রস্তুত্তি হইতে পারে না, তেমনি স্বতর বিধি না বাজিলে বিধিবাক্য প্রবণ্ডে লোকের প্রস্তুত্তি হইতে পারে না; কাজেই তাহার ক্ষম্ভও আবার পুরক্ বিধির আবশ্রক ; এইরপ আবার দেই বিধিবাক্যার্থ প্রবণ্ডে বিধিকল্পনার আবশ্রক হয়], এইরপে ক্ষমবাহালেৰ উপন্থিত হইতে পারে ৷ ২৫

বলি বল, বাক্যার্থ-তাবনা-জনিত বে স্থাতধারা অর্থাৎ উপাসনায়ক জান, তাহা বাক্যপ্রবণভাত জান হইতে স্বতন্ত্র পদার্থ; স্থিতরাং তজ্জপ্ত বিধির আবস্তক আছে]; না. - তাহা হইলেও বিধির আবস্তক হয় না; করিপ, আছার পর্মপ-প্রতিপাদক বাক্যপ্রবণে বেই মৃহুর্ত্তে আছা-বিবর জান সমুৎপন্ন হয়, ঠিক সেই মৃহুর্তেই উক্ত জানটি আছবিবরক অজ্ঞান বিনষ্ট করিয়াই সমুৎপন্ন হয়; প্রতরাং আছবিবরক মিধ্যাজ্ঞান বিনষ্ট হইরা সেলে পর. বিভিন্নাকার আনায়বন্তবিবরে জীবের স্থভাবদিও যে আজানমূলক স্মরণায়ক জ্ঞান, তাহারও আর উৎপত্তি সন্তব হয় না। অনর্থভ্জানও ঐরপ স্থত-সমুৎপত্তির প্রতিবন্ধক; কেন না, আছাত্তর বৃথিতে পারিলেই অনায়বন্তমাত্রই অনর্থ জীবের অপ্রার্থনীয়—ছংগকর) বলিয়া বোধ হইতে থাকে; কারণ, আনায় বন্ধনাত্রই আনিত্য, অভাচ ও ছংবাদি বন্ধতর লোবের আকর; পক্ষাপ্তত্ত আনায়বন্ধতাল আর স্থতিপথে উদিত হইতে পারে না; স্থভাবে জবন তাহার পক্ষে ক্রেন্স আরাই আন্যান্ত আরা স্থতিপথে উদিত হইতে পারে না; স্থভাবে জবন তাহার পক্ষে ক্রেন্স আরাই আন্যান্ত আরার আন্তর্ভাব আরার উদয়ই আতাবিক; ভজ্জভ আর বিধিক মন্যান্ত আন্তর্ভাব ক্রেন্স না। বিশেষতার লোক-বোহাার লোক-নিচর স্বভই

আছিলানপ্রত্ত; আর আয় বিবরক স্থৃতিধারা চইডেছে সেই লোক, বোধ, তর, শ্রম ও চ্যথাধি সমস্ত খোষের নিবর্ত্তক। দেখ, প্রতিও সেকধা বলি-ডেছেন—'আয়র্জন হটলে পর, তাধার আর পোকই বা কি গ' আয়ক্ত পুরুষ কোলা হইতেও ভীত হন না,' 'হে অনক, তুমি অভর (ব্রহ্ম) লাভ করিয়াছ', 'জ্লংহর প্রস্থি—কামরাগাধি দোব নই বইয়া বার' ইত্যাকি। ২৬

चान, खादा बहे:मध, निरवाध छ हेश बहेटड चाहित्यके वरहे,-चर्बाद तिरखत द्वार्खानरदाव यथन :वक्वाकाणनिक चाया विकास कहेरक शुवक शवार्य, बन्दर व्यवज्ञानक नारक्षक क्षम देशक कर्त्वराज्ञ विकारिक व्याद्ध, जनम देशक জন্ত বিধির আংক্তক হয় ৫ না, এ কথাও সমত হয় না; কারণ, চিন্তর্ভি-निर्दार्थत (याक-माध्नक कामा बार ना: (कम मा. (वशक्षवादा अक्षमात क्रशाब-कान छित्र कार विष्ट (य. शहमशुक्रवार्य- :यादक शावन कार्छ छात्रा काना बाद ना : . कन ना, 'काशांक है ऋगाउ बहेशांक लग, छाबां छ है नवीं छ.' ভাব প্রাপ্ত চটয়াছিলেন' 'এছবিং পুরুষ এছকে গাপ্ত হন' 'সেট বে কেব পর खबाक बारमन, कि म ९ खबाड़े हम', 'डेलबुक बार्शिशन शुक्रवह बारमन 'ভাৰার দেট পরিমাণ্ট বিলম্' 'বিনি এট তর জানেন, তিনিও অভয় ব্যালমুপ ब्स' हें छाति भठ भठ अठि ब्हेट ब क्या बाना याहेट हा । हिन्दुनि निर्तार्यद অনক্ষণ্যনত্ত ইহার অলব হেডু.—অামুজান ও ডবিষয়ক স্বাভবারা (চিন্তা-बाबाह) बाखील, किंबबु बिनिद्धां एवं एक क्षेत्र कामन देशाह कारह, लाहा न महर : (शदह छेवांडे किस्तुस्ति-निर्दार्थंद अक्षांत छेशात्र) । व्याद किस्तुसि-बिरबार्भत (य. ब्याक्नायनका वना बहेबार्फ. जाराव (करन बड्डाभनव वा चौकाव कविश मध्य बहेबाह्य व छ ; अङ्ग्लाक किंद्र अक्यांव अभवान ৰাতীত আর কিছট যোক-সাধন আছে বলিয়া জানা বার না : ২৭

বিশেষত: আকাক্ষ: না থাকাতেও এখানে 'ভাবনা' বা বিধিকরানা সকত হইতে পারে না: পূর্বে বে, বলা হটরাছে,—"বতেত" ইত্যাদি ক্রিয়া'বধি-ছলে বেরপ 'কি, কিনের যারা! এবং কি প্রকারে ৷ এই ভিনটী বিষয় ভানিতে ইক্ষা হর বলিয়া, কল, ফল-সাধন যাহা যারা কল লাভ হর ৷ ও ভাষার অফ্রানপ্রণালীর নির্দেশ যারা সেই আকাক্ষার অপনরন করা হইয়া থাকে, ভেষনি এথানে এই আফ্রবিষয়ক যিঞ্জানবিধিতেও ঐ সম্ভ নিয়মই উপলগ্ন হইতে পারে; না,—সে কথাও সকত হয় না; কেন না, 'ভিনি

নিভাই এক অবিতীয়' 'ত্ৰি তৎসত্তপ' 'ইবা নয়—ইবা নয়' ভিনি বাহাভাত্তবৰ্জিত' 'এই আয়া এল' ইভালি বাভাববৈধিবের স্বকালেই স্ক্ৰিব্ৰে একাজ্য: নিবৃত্ত বাইয়া বার। আর এ কথাও বলিতে পারা বার না বে, বিধি বারা প্রেরিত (নিয়োজিত) চইয়াই লোকে বাভাবিপ্রবণে প্রবৃত্ত চইয়া বাকে; কারণ, ভাষা হইলে বিধির অভও আরার অপর বিধির আবর্ত্তক চইয়া পড়ে; ক্রতরাং এইউপে অনবস্থা-দোষ উপন্থিত হয়; এ কথা আবরা প্রেই বনিয়াছি। আর "একস্ এব অবিতীয়ন্" প্রতৃতি বাকোরে, কোন প্রকার বিধি পাওয়া বাইতেছে, ভাষাও নয়; কারণ, ঐ স্বস্থ বাজা কেবল আয়ুবস্থর অন্ধ্রশন্ত নির্দেশ করিয়াই ভার হইয়াছে। ২৮

ভাল, ঐ সমন্ত বাকা ব'দ কেবলই বছর অরপমান্ত-প্রকাশক হর, তাহা হটলে ত ঐ সমন্ত বাকোর প্রামণাই চইতে পারে না, আর ব'ল এরপেও প্রমাণ হয়, হারা হটলে, ''দিনি রোমন করিবাছিলেন; তিনি, বে রোমন ক'বছাছিলেন, তাহার ক্ষেত্র ক্ষম্ম অর্থাৎ ক্ষম্মণজ্ঞার কবেণ ইতামি ছলে ক্ষেত্র তথ্ বন্ধ-অরপমারকথন হেতু বাকোর অপ্রামাণ্য হইরাছে, তেম্বনি আস্মন্ত্রপ্রকাশক বাকাগুলিরও অপ্রামাণ্য হইতে পারে ? এ কবা বিদ্ বল, তত্ত্তরে আম্রা বলি বে, ন',—অপ্রামাণ্য হইতে পারে না; কারণ, উভারে মধ্যে বৈলক্ষণা আছে: অভিপ্রায় এই যে, বস্তর অন্তর্পক্ষন কিবো ক্ষেত্রান্ত ক্ষমন ক্ষমই বাকোর প্রামাণ্য বা অপ্রামাণ্যের কারণ হয় না; তবে কি ? না, নিল্ডিভক্ষক বিজ্ঞানেৎপাদক্ষই প্রামাণ্যের কারণ;]; যে বাকা ভালুল জ্ঞান জ্ঞান, তাহা প্রমাণ, আর যে বাকা ভাহা জ্ঞান না, ভাহাই অপ্রমাণ। ২১

অপিচ, বহাপর, তোরাকে বিজ্ঞাসা কবিতেছি বে. বে সরস্থ বাক্যে আত্মার বন্ধপ ববিত আছে, সেই সরস্থ বাকো নিশ্চরায়ক সকল জান সমুৎ-পদ্ধ হয় কাৰা হইলে অপ্রামাণ্য কইবে কেন ? আর ঐ সমস্থ বাকাজাত বিজ্ঞান কইতে বে. সংসারের বীজত্ত লোক, যোক ও তর প্রভৃতি লোকনিবৃত্তিমণ কল সমুৎপন্ন কইয়া থাকে, ভাষা কি দেখিতেছ না ? এবং 'তখন আইয়েক্যমণীর শোকই বা কি, আর যোকই বা কি ?' 'বে ভগবন্, আনি কেবল মন্নতবই আনি, কিন্তু আত্মভন্দ আনি না, সেই আত্মভানবিধীন আনি হংগ ভোগ করিতেছি ; সেই লামাকে আপনি পোক্ষের পরপারে উত্তীণ করুন' এই আভীয় লভ লভ প্রভিয়াক্যও

कि छिनिएक मा? [अवन किकाना कति —] "त्राव्दत्ताहोव" हेडानि वादका अवश्विष मकत विकास चारक कि? विकास वारक, छर्त चार्यामा विकास के काळीड वारकात च्यामांना हहेरानं, रव वाका मकत ७ चनक्षिप विकास ममूर्यामन करिएक, रन वारकात च्यामांना हहेरा रकत ? बात विकास मकत ७ चनक्षिप क्यामांना है, छाड़ा वहेरानं व्यामांना है, छाड़ा वहेरानं वर्षानं व

ৰদি বল, দর্শ-পূর্বাসাদি বিধারক বাকাগুলি লোকের ক্রিরাপ্রবৃত্তিখনক আন অমার, এইজ্ঞ প্রমাণ, কিন্তু আর্থিজ্ঞাননিরপক বাক্যে লোকের প্রবৃত্তিখনক কোন জানের উপদেশ নাই, এই কারণে অপ্রমাণ, ইা, এ কথা সভা বটে; কিন্তু তথ পি উজ্ঞ লোষ এখানে হইতেছে না; কারণ, এখানে প্রামাণাের কারণ বিভয়ান রহিরছে: প্রামাণাের কারণক, পূর্বে বাহা নির্দেশ করা হইরছে, ভারাই, তর্গভিত্তিক আর কিছু নরে, [স্মৃত্রাংব্যন নিন্দিত জ্ঞান ক্রাইতেছে, এবং ভারার ফলও ব্যন ব্যহ্মান রহিরছে, তথ্য ভারার ফলও ব্যন ব্যহ্মান রহিরছে, তথ্য আর্থান প্রায়লাের কারণি থে, স্কাবিধ প্রয়ুভির বীজ্ঞ্ভ অবিজ্ঞানিরভিক্ষম জ্ঞান সমুংপাদন করে, ইরা ত সে সম্ভ বাক্যের অলভার্থরে প্রত্তাং কথনই অপ্রামাণাের কারণ ছইতে পারে না। ৩০

্ এবন বিতীর বালার মত বন্ধন ক'রতেছেন—] আরও বে বলা ব্টরাছে
—"বিজ্ঞার প্রজাং কুবীত" বত্যাদি বাকে;র শন্ধার্থজান ছাড়৷ উপাসনা প্রতিপালনও আর একটি আর্ব; সে কথা সত্য , কিন্তু তাহা ব্ইলেও [বাদীর
আভিপ্রতে] অপ্রবিধি উহার আর্থ নতে; পরন্ত পক্ষে প্রাপ্ত বলির৷ বরং
নিয়বার্থ ই বইতে পারে, অর্থাৎ "আ্লেত্যের উপাসীত" বাক্যে উৎপতিবিধ
না হইরা বরং নিরম্ববিধিই ক'রিত ব্ইতে পারে। ভাল, উপাসনার পান্ধিক
প্রাপ্তি সম্ভব হয় কিপ্রকারে? বেহেতু, পূর্বেই বলা ব্রহাছে বে, আ্লাব্রিষরক বিজ্ঞানপ্রবাহ 'পারিশেল্প' নিয়মান্থপারে নিত্য-প্রাপ্তই বটে (১)
ইা, ব্যক্তি এইরপ্রই বটে, তথাপি, বে প্রাক্তন ক্ষেত্রণ বর্ত্তবান শ্রীর
সমুহ্পন্ত ব্রহাছে, তাহার কল স্থান্থনিত, আর্থাৎ বে দেশে, বে স্বরে, বে

⁽১) তাংপঠ্য-পারিশেষ্য কর্ব বৃত্তাল বিবরের প্রাণি সভাবনা থাকে, ভরবো ক্ষমর সমস্তভালর প্রাণ্ডি নিবিদ্ধ ইইরা পেলে, কলে কলে বেটা ক্ষবালাই (ক্ষমিষ্টি) থাকে, তৎস্থত্তেই বে, বিশ্বিনিবেবাদি পর্যবসিত ব্রভা: এছনেও ক্ষমাধ্যবিষয়ক জ্ঞানের প্রাণ্ডি সভাবনা থাকিলেও

পরিষাণে ধর্ণার ব্যবহা আছে, কিছুতেই তাহার অন্তথা বন্ধ না; অতএব, কিন্তু বাণ প্রস্কৃতির পতির ভার কণপ্রধানে প্রবৃত্ত সেই প্রায়ক্ত কর্মের বলবত্তা-নিষ্ক্রন সাধারণতঃ তবত্তরপই লোকের বাচিক, কাম্মিক ও মানসিক প্রবৃত্তি বা চেটা ধর্মা থাকে, সেইজক তব্ত্তানবিবরে প্রবৃত্তি না হটতেও পারে, কাজেই আনপ্রবৃত্তির দৌর্মলাকে পাক্ষিক প্রক্ষে প্রাপ্ত বলা বান্ধ: এই কারণেই সন্নাপ ও বৈরাণান্ধি সাধনসম্পদ্ অবস্থান হারা আক্ষরিবর্ধক বিজ্ঞান প্রবৃত্তিক করিবে কর্মান করিতে ধর্মার, কিন্তু নুতন করিবা আর উইপাদন করিতে ধ্রীবে না; কারণ, উহা ত প্রকারার্মের প্রাপ্তই আছে; প্রাপ্ত বিবরে বে, অপুর্ক্ষরিধি চইতে পারে না, সে ক্যা আমরা প্রকৃতি ব প্রান্তি অভরব [বুলিতে ধ্রীবে বে,] প্রকারার্মের ক্যা আমরা প্রকৃতি বিজ্ঞানপ্রবৃত্তি বিজ্ঞান না হন্ধ, তালুল নিম্নক করাই শ্রিক্ষার প্রজ্ঞান কুর্মাত" ইত্যাদি বাক্ষের প্রকৃত্ত অর্থ : কারণ, তত্তির অঞ্চ ক্যান্ধও অর্থ এখানে সন্তব্যর হন্ধ না। ০২

ভাল, ["বাষেতাবোপাস) হ". এই ক্লতিতে বে উপাসনার কথা আছে,]
ইচা ত অনায়বন্ধর উপাসনা; কারণ, 'ইডি' শব্দের প্রয়োগ রহিরাছে;
বেষন 'প্রিয় - এট বলিয়াই উপাসনা করিবে' ইত্যাদি স্থলে প্রিহাদি ওপই
উপাস্ত নহে, তবে কি ? না, প্রিয়াদ-ওপবিশিষ্ট প্রাণপ্রভৃতিই সেখানে
উপাক্ত; তেমনি এখানেও আয়-শব্দের বা 'ইডি' শব্দের প্রয়োগ থাকার বুরা
যাইতেছে বে, আয়-ওপাবিশিষ্ট অপর কোনেও অনাম্ববন্ধর উপাসনা করিতে
হরবে। 'বলেষতা বে সমন্ত বাকো সত্য সভাই আঘোপাসনার কথা আছে,
সে সমন্ত বাকোর সহিত এই বাকোর বৈলক্ষণাও রহিয়াছে; ইহা পরেও
বলিবেন বে, 'আয়রণ লোকেরই উপাসনা করিবে' ইতি; সেখানে আয়াশব্দের পর বিতারা বিভাজের নির্দেশ থাকার আহোপসনাতেই ক্লতির
ভাৎপথা; কিন্ত এই "আরেতি— এব— উপাসীত" ক্লতিতে বিতীয়া
বিভাজের উল্লেখ নাই, এখচ আয়া শব্দের পরেই 'ইডি' শব্দের প্রয়োগ
রহিয়াছে; অতএ। বুরা যাইতেছে বে, এখানে আয়া উপাক্ত নহে, পরস্ক
ভাবা হইতে সভন্ত আয়াগুণই উপাক্ত। না,—এ আপত্তি সম্বত হইতে পারে

छोड़ा वयन आस्तारमध्य । पृक्तिनात्य विद्यारी, अपन छोड़ा अद्यव्याना स्ट्रेड नाद ना, --विविश्व : व्यक्तार त्करन आस्तान्य अवनिष्ठे पर्रक्षिक, कर्राव्ये क्राहारक विकासास यहा सहरड नारम ।

না; কারণ, বাক্যের শেষাংশে আল্লারই উপাক্তঃ প্রচাতি হটতেছে; এই বাক্যেরই শেষতাগে আল্লাই উপাসনীয়ন্তপে নিদিষ্ট হটগাছে; বণা—'এই বে, আল্লা, ইনিই সকল উপাসকের প্রনীয় (প্রাপ্তরা)', 'এই বে, আল্লা, ইনিই স্কাপ্তেরীয়' 'আল্লাকের উপান্তি করিগ্রান্ত্রেন' ইতি : ৩০

यक्षि वन, प्रशास्त्र विदे आधार प्रतन यथन श्रीष्ठिय व। निविध व्हेशाह, ख्यन खाहाद छ बाद खेलाक्षव वहेटक लाट्य में: बबाद "et म लक्षव" (जाहादक प्रजीत करवस ना े वेजारिक वारका ['छर'नरक] बाखाब - निर्देश कदिशा (महे अविहे चात्रांत प्रजीन द्यांगा । निरंपन कवा इहेरछ ह , चछ अव কিছতেই আন্তার উপাক্তর সিত্ত হইতে পারে না: না, সে কথাও ব'লতে পার मा: कार्य, "टर न शक्कि" अन्तित (व. प्रमातित 'नाव-, फाहा चाचार केलाजक निवादरवर कक नरह, भट्ड जाहात बिन्धात वह रह केंद्राभ ৰাহার। আন্তার উপাসনা করে, তাহার। সম্পূর্ণ আন্তার উপাসনা করে ন। : अहेबबहे लाएम अक्रथ्यलात प्रमानिक शन्तिक करा वहेबाहा : अवः अहेबबहे आनम श्रक्ति क्रिया पाता चाधारक वित्त वह करा हहेबाह्य: चार नहा সভাই ৰদি আংবাপাসনা প্ৰতিং অনভিপ্ৰেত ১ইত, তাহা হইলে 'অভএব अक अकृष्ठि वि मंदनविनिष्ठे काया काक्ष्य व अनुने हे हार्रावद्धाल खानावि এক একটি মাত্ৰ ক্ৰিয়াবিশিষ্ট অভাৱে অকংল বালয় নিৰ্দেশ कृतिबाब (कानहे बावक करेंड ना ; बदर डेश मुख्य निवर्षक करेंग्रा पछिड : चाउ क्ष बेहा है निन्छि कडेट डाइ (व. अक अक्षि काश्यः अर्थ भ्रमण विस्मारन বিশেষিত সামাই কুংল অৰ্থাং পূৰ্বি চাব; অত এব সেই কুংল আয়া অবশুই बीद्व डेशानमोत् । ०१

আরেও বে, বলা হইরাছে, এই আয়-প্রের পর যে, একটি 'ইডি' শ্রের প্রয়েপ করা হইরাছে, তাহার একমার উদ্দেশ—হণার্থ আয়তহ কংনই আয়-শন্ধ আয়-প্রতীতির বিশর হর না, তাহ আপন করা, তাহা ন হইলে, স্রুতি কেবল "আয়ানম্পানাত" অর্থাৎ আয়ার উপাসনা কারবে, ৩৫ এই কথামারেই বলিতেন; তাহাতেই কলে ফলে আয়ার শন্ধ ও প্রতারপ্রাথ দিছ হইতে পারিত, [ইতি-শন্ধ প্রয়োগের কিছুই আবগুরু হইত না]। আহচ "মেতি নেতি" বিজ্ঞাতাকে আবার কিসের হারা আমিবে' ক্লেছ মিজে অবিজ্ঞাত, অবচ বিজ্ঞাতা, 'বাকা বাহাকে না পাইবা সন্মের সহিত ক্ষিরেছা আইসে' ইত্যাদি স্রুতি হতৈ জানা যার যে, এরপ শিষ্ঠাত ক্ষমই স্নুতির অভিপ্রেত নহে। আর বে, "আয়ানবেৰ উপাদীত" এই ইতি-ল্ম-রহিত আলোপাদনার বিধান; বুকিতে হইবে, অনাজোপাদনার পোকের আদজ্জিনিবারণ করাই ভাষার মুখা উদ্দেশ্ত; সূত্রাং ইহা কবনই উপাদনা-বিধারক অতম বাক্য নতে. [ইহা সেই পূর্কবিক্যেরই অসুকৃত ভাবের প্রকাশক্ষাত্র]। ৩৫

আছা, আছাও বেরপ ববিজাত, অনায়াও টিক সেইরপই অবিজাত;
স্তরাং উভরই গুলা; কাকেই আহা ও অনাহা উভরই জাতবা বিবর; এবত
অবস্থার "বাহা ইতেবে উপাসতি" প্রতি অসুসারে কেবল আরোপাসনাতেই
বন্ধ করিতে হউবে, অনাজ্যোপাসনাতে নহে, ইহার কারণ কি ? তত্ত্বরে বলা
হউতেচে -সেই এই প্রভাবিত আহাই পদনীর অর্থাৎ উপাসকের গার্থবা;
ত'ত্তর আর কিছুই প্রাপ্তবা নহে - প্রতির 'অস্ত সর্মান্ত' শক্তে বে বন্ধী বিভক্তি
ব্যবিহাতে, তাহার অর্থ হউতেছে—নির্দারণ, অর্থাৎ সমন্ত অসভের বাবা।
"বং বরষ্ আহা" অর্থ—বাহা এই আহতেয়। তাল, তাহা হউলে আর
কিছুই কি জাতবা নর ? না, সে ক্থা নণ; তবে কি না, অপর সমন্ত বন্ধ
আতবা হউলেও সে সমুলারের অন্ত আর বভর জানের আবন্ধক হন্ধ না, এই
আহ্ববিজ্ঞানেই সে সমন্ত বিজ্ঞাত হইহা হার, ইহার কারণ এই বে,
আহাকে বিশেবতাবে জানিতে পাণরলে, তাহা ঘারাই, এগু বে সমন্ত অনাত্রবন্ধ
আছে, ংব্যবন্ধই বিশেবরূপে বিজ্ঞাত হইয়া হার। তাল, এক বন্ধ জানিলে
তাহা ঘারা ত অপর বন্ধ কথনও জানা হার না ? হাঁ, চুকুতি প্রভৃতি মৃষ্টাত
ঘারা আম্বা এ আপভির পরিহার করিব। ৩৬

আছে: বিজ্ঞাস। কবি, ইবাই কীবের একষাত্র প্রাপ্তবা ব্য কি প্রকারে ?

ই), বলা বাইতেছে—জগতে বেষন নই ্বারাণ) পশুকে অনুসন্ধান করিতে বাইবা ভাবার পদ ধারা—পূব'চক বাবা ভাবাকে লাভ করিয়া থাকে, ভেষনি আআকে লাভ করিবেই ভড়াবা অপর সমন্ত বন্ধ লাভ করা হইবা থাকে। এথানে প্রতির 'পদ' পদে গো প্রভৃতি পশুর পুর-চিক্তিভ স্থানকে লক্ষ্য করা হইবাছে। ভাল কথা, এথানে আস্থা-বজ্ঞানে অপর সমন্ত বিষয়েব বিজ্ঞান হই ভেছে আলোচা বিষয়, ভাবার মথ্যে অপ্রাসাদক লাভের কথা বলা হইভেছে কেন ? মা, এ আপত্তিও হইতে পারে না; কারণ, এথানে জ্ঞান ও লাভ, এই উজ্ঞানই একার্ডির প্রতির অভ্যেত্তর বিক্র না,আন্তার জ্ঞাভ অব - বজ্ঞান করার কিছুই নহে; প্রভর্গাং বুবিভে হইবে, আস্থাতে ভানাই আ্যার

লাভ ; কিন্তু অনাথা-বন্ধর লাভ বেরণ অপ্রাণ্ডের প্রাণ্ডি, আথা-লাভ কবনই সেতৃপ হইছে পারে না ; কারণ, এবানে ত আর লবা (লাভক্রা) ও লববোর (প্রাণ্য বন্ধর কিছুমার ভেল নাই ।

বেখানে আছিছির বস্তু গন্ধবা হয়, সেবানেই আছা হয় একা, আর অনাছ-বস্তু হয় লকবা। সেই অগ্নান্ত বস্তুতি আবার উৎপত্তি প্রস্তৃতি কৈয়া বার। বাবহিত থাকে; অর্থাৎ বিশেষ বিশেষ কারতের , ক্রিয়া-সাধনের সাধার্য্য ক্রিয়াবিশেষ উৎপাদন করিছা তাহার পর সেই একবা বস্তুটি লাভ করিতে হয়; অধিকন্ত সেই অগ্নান্তির প্রাণ্ডার প্রাণ্ডার পাভ, তাধান্ত ব্যাকালীন পুরানি লাভের ভার বিশ্বাজ্ঞান-গ্রন্থত বলিয়া আনতা, এই আলা কিন্তু ভারার সম্পূর্ণ বিশ্বীত। ৩৭

্রেশন জনায়-পদার্থ হটতে আন্তার বৈপরীতা বিষয়ে যুক্তপ্রমাণ প্রমাণন করিতেছেন—) আন্তা বালাই, আন্তা উৎপাদ্যাদ করণ দারা বাবছিত নয় (১); কেন না, আন্তা নিতাই প্র আছে, কেবল অবিদ্যামান ভাষার বাবধান; অর্থাৎ কেবল অবিদ্যাদ্যারেই নিতালক আন্তাকেও জলক বলিয়া মনে হয় মাত্র; যেমন ভাক্ত কিছুক) দেখেলেও প্রমান বলতঃ সেই শুক্তিই রজ্জপত্রপে প্রকাশ পার বলিয়া যথার ওক্তির প্রতী হয়র না; অবিদ্যা বা প্রমালনই সেধানে ওক্তিকে আর্হ করিয়া রাখে; সেইরপ ভক্তির প্রথম আর্থা করিছে তাজানই সেধানে ওক্তিকে আর্হ করিয়া রাখে; সেইরপ ভক্তির প্রথম আর্থা করিছে তাজান বিশ্বর জানার অপানের অপনানকরাই প্রকাশ জানের একমাত্র উদ্দেশ্য; এই প্রকার এপানের অজ্ঞান দারা বাবধানই আ্রারে অলাভ; স্তর্গা জ্ঞান দাবা সেই স্ক্রানাপ্রার্থই আন্তার লাভ, অক্তপ্রকার লাভা ক্ষমও উপপন্ন হয় না। এই কারণেই আন্রান্ধ পরি আ্রালাভ বিব্রে জানাভিবিক্ত সাধনের আন্তর্গা প্রতিপালন করিব। অত্যর্থ নিঃপ্রভাবে জানাও লাভাক্তর সাধনের আন্তর্গার প্রতিপালন করিব। অত্যর্থ নিঃপ্রভাবে জানাও লাভাক্তর সাধনের আন্তর্গার প্রতিপালন করিব। অত্যর্থ নিঃপ্রভাবের জানাও লাভাক্তর সাধনের আন্তর্গার প্রতিপালন করিব।

⁽১) সংগারণতঃ ভিয়ার কর্ম চারি জেপীতে বিভক্ত; মধা,— ১) উৎপাঞ্জ (২) বিকার্য, (০) আপা ও (৪) সংস্কার্য। তর্মব্যে আ বছুবান বছর উৎপায়ন করিনে কর 'উৎপাছা'; বেনন বটা বিজ্ঞান বস্তর অক্তবা (নিকার) করিলে কর 'বিকার্য'; বেনন স্থাব নিজ্ঞাত স্কুলন। অধ্যার বছকে পাইলে ভাষা বহু 'প্রাণা', বেনন প্রাথাণি। আর কোনও বিস্থান বছর খোনপ্রান বা ওপাধান করিলে ভাষা বহু সংভাবা, বেনন ব্যবি বারা কর্পানে পরিভাহ করা, কিয় নিভা নিবিকার আপ্রার পাক্ষে উচ্চ ক্র্নিবের একটি বর্মন স্ক্রবাদ করা।

अकार्यम् विनास्य माहेशः आत्मनः त्रकटान नाक्तात्रकः 'अस्त्रित्यः' क्रिशास ध्यात्रात्र कवित्रास्ति ; कालन, 'विस्' वासूत्र अर्थ है नाक ०৮

এবন উক্ত ওণ্ডিবার এইছপ কল কবিত হইতেছে বে, এই আয়া বেষন নাম ও ছপের মধ্যে প্রিট্ট হর্যা 'আছা' প্রাকৃতি নাম ও জুণাত্মসারে প্রসিদ্ধি পাত করিয়াকে, এবং প্রাণাদির সম্প্রীত বে মহিষাও প্রাপ্ত হট্যাছে; ঠিক তেমনি বে গোক মধ্যেক্ত আয়ুত্ত আনেন, তিনিও গোকপ্রতিষ্ঠা এবং আটাইবস্তর সহিত সম্ভ লাভ করেন, অববা বে গোক মধ্যেক্ত আয়ুত্ত আনেন, তিনি মূমুকুগণের অভ্যন্ত আয়ুক্তকার কার্তি-স্বর্গাচা বে, একম্ব জান, তাহারই ক্লম্বরূপ প্রোকশ্যবাচা মৃক্তি লাভ করেন; ইবাই উক্ত উপাসনার মুখা কল (১ । ৪৪ গুণ্ডা

তদেতৎ প্রেয়: পুক্রাৎ প্রেয়ে। বিভাৎ প্রেয়ে। সর্বাদস্তরতরং যদয়নাজ্ব।

দ যোহন্যনাত্মনঃ প্রিয়ং ক্রবণং জ্রয়াৎ প্রিয়ত রোৎস্ত-তীতীখরো হ তথৈব স্থাদান্মানমেব প্রিয়মুপাদীত, দ য আত্মান-মেব প্রিয়মুপান্তে, ন হাম্য প্রিয়ং প্রমায়কং ভবতি ॥ ৪৫ ॥ ৮ ॥

স্ত্রলাথঃ। [স্ত্রতি নায়ন এব উপাস্থর্পগাদরিত্যাহ—
"তংগভং" ইত্যাদে।] তং (প্রেভিং) এভং (এদ্দ বছা) প্রাং প্রেঃ
প্রাণেকরাপি অভিপরেন প্রিঃং), বিভাং বনররাক্ষঃ) প্রেঃং, অঙ্গাং
('প্রাণেকরাপি অভিগ্রে প্রাণিভোহণি সাহিত্তিরং) আছা (আছ্তত্ত্ব্যুণ
সংবং (আছ্লাং), করঃং বর্ষাং সন্) আছানং অভং (প্রাণিকং) প্রিঃং
ক্রবাণং ব্রয়াং (কর্মাং ব্যবাং সন্) আছানং অভং (প্রাণিকং) প্রিঃং
ক্রবাণং ব্রয়াং (ক্রমাং ক্রমাং ব্যবাং সন্) আছানং অভং (অভাজিভং নিয়েরাং
প্রাণিভ—বিদ্লাতি) ইভি হ (প্রাণিকং) ভাগ এব ভাং (ভাগ ব্রিয়ান্রাণে ভবেদেব ইভাবাং ব্যাস্থানং এব ব্রিয়ং উপাস্তিভ

[্]ব) প্রথমে কাজি ও লোকপথের যে, প্রতিটা ও ইট-সংযোগ পর্ব করা হইরাছে, তাবা বিজ্ঞানের কর বইলেও মুর্জুর পকে কবনই আর্থনীয় নবে, মুর্জুর একমাত্র আর্থনীয় বইতেছে—মুক্তি ও মুক্তিনাধন,একয়-জান : ভাই ভাষাকার বিভাগ বালয়া বিভাগ বাল্যায় মুর্জুর প্রভিয়ন প্রয়োজনের বিশ্বেক করিবাছেন।

[नाज्य]; मा या 'या कन्तिय) चाचामम् अय शिवम् केशास्त्र, चन्छ (केशामकन्छ) व्याप्तर म स (देनव) व्याप्त्रकर महन्त्रेणर) कवित्र [यक्षणि चाचावयः मत्रनाईर विश्वयश्चितर वा किकिय माजि, क्षणीण चन्न्यावयात्रविषय कृष्टेविकि कार्यः] ॥ ४८ ॥ ৮॥

মুলান্দ্রাদে: [জন্ম বস্তু তাা' করিয়া জান্বারই উপাসনা করিছে হইবে কেন. তাহার হারণ-প্রদর্শনার্থ গলিভেছেন—] সর্বাদেশ। অন্তর্যুক্তর অর্থাৎ সন্নিহিত যে এই আত্মতন্ত, ইহা পুদ্র অশেক্ষাও অধিক প্রিয়ু, বিত্ত অপেক্ষাও অধিক প্রিয়ু; এমন কি, অন্য সমপ্ত হইতেই অধিক প্রিয়ু: আত্মতন্ত লোক সদ্বর অর্থাৎ অলৌকিক শক্তিবিশেষ লাভ করিছা খাকেন; তিনি, যে লোক আত্মাভিন্ন পদার্থকে অধিকতর প্রিয় বলে. তাহাকে যদি 'ভোমার অভ্মিত প্রিয় বস্তু বিনষ্ট হইবে' বলেন গ্রহা কইলে ঠিক সেইরূপেই হইবে' বলেন গ্রহা কইলে ঠিক সেইরূপেই হরবে; অত্মতন আত্মাকেই প্রিয়ুকুত্বিতে উপাসনা করিবে: সেই যে লোক আত্মাকে প্রিয়ু বলিয়া উপাসনা করেন, গ্রহার প্রিয়ু বস্তু (আত্মা) কখনই বিনাশ-প্রাপ্ত হয় না মুন্তর চে চ

শাহরক ভাষাম। কৃত্যাতের্যের কেরম্ অনাল্ডান্তং ? ইত্যাত ভাষ্টের আর্তরং প্রের প্রিরং পুরুষ্টের করিব করিব প্রেরণ প্রিরং প্রস্থান তথ্যাদ্ধি প্রির্ভরম্ব হির্বাহের প্রিরং দর্শন্ত তথা বিশ্বাং তর্বা-রন্ধানেঃ; তথা মক্তরাং মন্বাহেরেক প্রিরুষ্টের প্রাস্থান্ত করা স্থানি লিভার্যঃ। তথ করালায়তের্যের প্রিরুত্রং ন প্রাণাদি ?—গাত; উচাতে—অন্তর্বস্থ —বাহাং পুরুষ্টি বিভারেঃ, প্রাণাশিওসমূলালে হি শ্রুরোইভার্যরং স্থিত্তিই আর্মাঃ; ত্রাল্পাক্রাং অন্তর্তর্ম, মন্রমান্তা মন্তেলায়ত্বম্ বো হি লোকে নির্ভিশ্বপ্রিরঃ স স্কৃত্রন্তে মন্ত্রাতে মন্ত্রান্তর্য আর্মান্তা স্ক্রিবাতাপ্রান্তম্পাক্তপ্রির্ণাতে ব্রস্ক্রিয়া।

कचार पूनः चाद्यानाद्यविष्ठःतात्रक्षण्यां ध्रहात्म हेण्यां ध्रदानामान शास्त्रो चाच्यां व्याप्तां व्यापतां व

शानगरतावर आणाणि विस्तकाणीण । न क्यारवर तवीणि । वयायेवतः नवर्षः नवर्षः नवीरिता अवर वक्षः ह वयार ; ज्यार छरेवन जार—वर्षः साक्षर—'शानगरदावर आणाणि' व्याकृत्वाणे हि नः, ज्यार न क्यार्षः व्यकृत्व । क्यार्थं क्याय्यं क्याय्यं क्यार्थं क्याय्यं क्याय्यं

দীকা। আৰু পণনাৰৰে প্ৰেণাজাত বসৰবে বেতুককা, অনুনা ভবৈৰ বেবছৰছেনাৱৰৰাকামৰ চাবছতি—কুত্পেচ্চি। অন্তৰনাছে ত বাবং বিৰক্ত পুত্ৰে প্ৰীভাৱনাৰ
কথমান্তলাথ পিয়ত বৰ্ষা হয়। প্ৰভাৱনাৰ দেই ক্ষিত্ৰ নি প্ৰান্তৰনাৰ চাৰত বিৰুদ্ধ কৰিছে ক

আধুনো নির্ভি-ছবোনাপান্ত বুকিং পৃথ্ঠিত—ক্রম্যা নিষ্টি: আছুনির্ভোগালানমনুসভানন্, গভরভানাথানিরত হান্যনভূমভানন্। বিশ্বাহোগনাথনি পূলানাবভিনিবেনেনাথপ্রিভাননুসভালানি বিভাগ:। বুকিলেশ গর্ণীয় কুন্তরণ কাষ্যভারতি —উচ্চান্ত ই ক্ট।
ব: কল্কিলাপ্রান্তরালালী স্বভাগত । বুকিলেশ ক্রান্তরাগতি স্বভাঃ। বজনা প্রশ্নত প্রক্রিভালি নির্ভালি নির্ভালি নির্ভালি নির্ভালি নির্ভালি নির্ভালি নির্ভালি নির্ভালি ক্র্যান্তরালি ক্রান্তরালি নির্ভালি ক্রান্তরালি ক্রান্তরালি ক্রান্তরালি নির্ভালি স্বাধিনাপ্রাণ্ডল পরিবংকি লগ্ধ ক্রম্যান্তরালি ক্রান্তরালি স্বাধিনার প্রভালি লগ্ধ কর্মান্তরালি ক্রান্তরালি নির্ভালি নির্ভালি লগ্ধ ক্রম্যান্তরালি নির্ভালি ক্রম্যান্তরালি নির্ভালিক ক্রম্যান্তরালিক ক্রম্যান্তরা

क्षेणिक्षवन् करकाः ववश्वि—ज्ञ स क्षेत्रिः व्यक्षशास्त्राहरण शःनकः। विद्याश्वयम्, क्ष्णामि स्मोनिक्ष्यवद्यानः स्वयाधिकानिकः विद्याश्वर्याक्ष्याव विद्याण्याक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याण्याक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याणाक्याणाक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याणाक्षयः विद्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याणाक्याण

ভাষ্যানুবাদে बना मब 'बबः डेलका कावम कि कावतः ्व, (क्वन बाब-स्वतंहे '५७' क्विट १हेटन, अहात (ह्टू 'नर्फन क्रिक्टिक्न--(तेरे अरे आधिकत पूत वर्णकाल । भवः वर्षाद न्यांतक विष ; #পতে সাধারণ :: পুতাই স্থাপে⇔) প্রিয় হ্রসা থাকে, •দপেকাও প্রির্ভর बनाव चार् करवद मसाधिक 'श्रयं ११६मा करिए १६६म । (महे संकात, विक-कृत्व-द्वापि व्यापकात कर्न वादत (य मध्य नष्ठ व 'र॰ विष व'न्। প্রসিদ্ধ আছে, সে সমস্ত অপেকাও আনক প্রিয় 🕛 লাল করা, সেজ भाष्यकत्रहे ना मकारणकः भाष करेला व्यव (कना भाग श्रामान तक्षरेता विश्व व्य নাকেন ? হাঁ, ৰলিতে ৯ - সাধারণতঃ পুল ও বিভ পভৃতি বাজ পলাৰ্থ व्यानका शान्यक्रिके व्यवत - व्यवास्त वर्षाः चादात सूर्य प्रमान (महे व्यवत व) मित्रिक नेमार्ग चार्मका । इंदा चन्न वर्षा चन्न चार्च नेपाल ।
 व) मित्रिक नेमार्ग चार्मका । इंदा चन्न वर्षा चन्न चार्च नेपाल । अहे (मृष्टे चादा, चर्बार (मृष्टे चाद्यक्त । कमएठ यात्रा मुर्सार्यक: चांधक त्र প্ৰিয়, সক্ষতেষুধী চেষ্টায় ভাৰাকেই লাভ কৰিতে হ'় এঃ আগ্ন ও লোক-व्यभिष्ठ ममच विश्वतेष चार्यका विश्वतेष ; चार्यक चना शिव्यशिव सन्। यह कता चारक बहेरन, ठाहा छात्र करिया कहे चाधना(५५ चनाई विश्व (ठडें। कदा छेठिछ

এবানে আলকা হইতেছে বে, গান্তা ৰ অনাত্তা উত্যত প্ৰিয় , তন্মধ্য একটি প্ৰিয় পতিয়াগ কৰিছা অপন প্ৰিয় গল্পী প্ৰহণ কৰিতে হচৰে; এমত অবস্থায়, কি কাৰণে আল্লাভ্ৰপ প্ৰিয় বস্তুটি প্ৰহণ কৰিছা, অপন—অনাত্তা ৰজটিই বা পান্ত ভ্ৰাগ কৰিতে হইবে কেন! ইহার বৈপরীতাই বা গ্য না কেন! ইহার উত্তরে বলা বাইতেছে—বে ব্যক্তি অপন —পুত্র পত্তি অপন কোনও অনাত্মপনাৰ্থকে আল্লা অপেকাও স্থাবিক প্ৰিয় বলিয়া উল্লেখ কৰে,তাহাকে বলি সেই বে কোনও

বলেন—বি ? না, প্রিচ বন্ধ অর্থাৎ ভোষার অভিযত পুরাধিরণ প্রিয় বন্ধ কর क्रेंट्रि-मावदन- वार-निर्वाय व्याख क्टेट्र, मर्बार विमहे क्रेट्र : काम क्रिन अञ्चल कथा बिलारकः (कम १ किंग्रड-- , (श्रष्टकु, छिमि मेचर व्यर्थार **क्रे**डल कथा বলিতে সম্পূৰ্ণ সমৰ্থ ; সেই ভেতুই তামা সেইজপট ছটবে, অৰ্থাং তিনি (र कान निर्दार्थक कथा विषय्यास्त्रम, शिका ठिक (महेस्रमहे स्वेर्द) কেন্দা, তিনি চইতেছেন ব্ৰাথবাদী (সভাবাদা ; সেই জভট তিনি ब्रेक्क विकास अपने (कह (कह वामन 'क्रेचर्र' चक्छ क्रिअस्टादायक ; वृष्टि व्यक्ति वादक, व्यवीर जैकल व्यव वृष्टि व्यव्यक्तिक मा हडू, छाहा हडेरण जैकल चर्च इटें। जारत । चलका चलह किन रख नहिटान करिया क्यांक शिश्व काकाबुई छेलामन। क'टरव । (महे द्व लाक धकवात शिव वश्व कादाबई উপাসনা করে,— भाषा अक्याख क्रिय, एखिल किहुते 'खा बारे, এইख्रन বুঝিতে পাবে, অর্থাৎ লোকপ্রাস্থ প্রিয়বস্তাকেও অপ্রিয় বলিহার অব্বার্থ কাৰ্যা [আয়ার] উপাসনা (চিন্ত / করে; ানকরই তাতুৰ বিজ্ঞানসম্পন্ন বাক্তির शिष्ठ वश्र यत्रगोन हत्र मा चरीर 'वमहे हर मा। अ क्यांने मिलाकुबाद याज व्यक्षार चल:इ यहा प्रतिश्व थात्क, 'लाबाउडे डिझब बाज, [किंड हेश) शहर বৈছা-কল নহে]। কেন না, আহাদশীর সময়ে তারল প্রিঃ বা অপ্রিয় আর াওছুই সম্ভৰপর হয় না। অধৰা আছাত্ৰপ প্ৰিয়'চকাত প্ৰশংসাৰ্থত এই কথা হটতে পাঙে; অথবা [প্রবাহুক শব্দে] ডাচ্ছীল্য-প্রভারের প্রবেশি ধাকার একপও বলা বাইতে পাবে বে. বাহার ববার্থ আছজানবিহীন মন্দান্তদ্বী, ज्ञाहारमञ् मुष्ट । अद्वानिकार कन-अकाननार्थ ह जे अकाद करणाह्नप क्या ब्हेब्राइड ॥ ८० । ५ ॥

তদাত্থৰ ক্ষবিভয়: দৰ্বাং ভবিষ্যস্তো মনুষ্যা মন্তব্যে। কিমু তদ্বক্ষাবেদ্ যন্মান্তৎ দৰ্বামভবদিতি ॥ ৪৬ ॥ ১ ॥

স্ক্রনাথ: [বছজিলাগব:] তৎ (বজাবাণা তছা ' আহা কথাবি)

—[কিষ্ণ] বছলাঃ বধ্বপ্ৰিয়া (বরা বছবিদারা) পর্বাং তবিছলঃ বরা
বছবিদারা বরু স্বান্ধিয়ার প্রিলায় ইতি) বছরে; [অব্র অবিবেশের
প্রব্রমণি শারাং প্রাণানাতঃ বছলানেং। ধকরোতি, ভেবাবের ভ্রম।
নিংশ্রেয়াস্থান্যনাধনেহবিকারাং, ইতি বছরান্] । [অব্র পূজান: —] তৎ

जय कियू (किः रख) व्यवर (काठरर), रखार (विकासर) छर (जय) नवीर (नवीय कर) व्यवर १ हेडि ॥ ३७॥ > ॥

সুলালুবাদে।—ত্রক্ষিজ্ঞানুগণ বলিয়া থাকেন—মনুষাগণ বে অক্ষবিছা ধার সর্বাস্থাক হইব বলিয়া মনে করে; [ক্লিক্লাস। করি.] সেই অক্ষই বা কি বিষয় জানিয়াছিলেন ? যাহার প্রভাবে তিনি সর্বাস্থানার লাভ করিয়াছেন । ৪৬ ৪ ৯ ৪

শক্তির ভাষ্য হা প্রতা রম্বর্জা—"মার্মেরেরেরাণাপাত"
ইতি, বনর্বাপনিবং কুংলাপি; তত্তিতক্ত স্বেক্ত ব্যাচিথাপ্থে প্রয়োজনাতিবিংসরা উপোজিবাংপতি—ভাষ্ঠি বন্ধানাগনন্তবংকাইবজাতাং বস্ত্র—
মার্য:—ব্রাহ্মণা: ব্রহ্ম বিবর্ধিবর প্রশ্নতাম্বর্ধিব লক্ষ্য ক্র-মন্ত্রভাগাস্ত্রোদ্ন
কাপার্বিরাহ্বিপ্রবৃত্ত গুরুষাসাত্ত ভরীর্মু'বতার্বিরা বর্ধাধ্যসাধ্ন-তংক্ললক্ষ্য সাধ্যসাধ্যমক্রপথে নিক্ষাঃ তিনিক্ষ্য-নিভাগনইভিলয়্লের্য প্রতিন্
বিংস্বঃ; কিম্বাচিও গ্রাহ—ঘত্ত্রসাব্তরা; ব্রহ্ম পর্মান্ত্রা তথ্য বেভতে,
সা ব্রহ্মবিত্যা, তরা ব্রহ্মবিত্যায়, সক্ষা নির্বলেষ্য ভবিত্যায় ভবাত্যাম ইত্যাব্য
রহ্মবার্য বং মন্তরে; মন্ত্রগ্রহণ বংশ্বত্তে বিক্রান্ত্রাপনার্থি; মন্ত্রা এব
রি বিশেবত্যাহভাগনিক্রের্স-সাধ্যমহবিক্তঃ ইত্যাভিপ্রায়ঃ; যবা ক্র্যাব্যয়ের্
ক্রপ্রান্তিং ক্র্যা ক্র্যান্তো মন্ত্রের তথা ব্রন্ধবিত্যায়াঃ সন্ধান্তাব-ক্লপ্রান্তিং
ক্রাম্বের স্থক্তে, বেলপ্রশান্যভাত্তির্বাব্রেরাং

তত্ত্ব বিশ্বতিষ্ঠিং বস্তু লক্ষাতে; অতঃ পূজাম:—ক্ষু তল্প্ৰদ্ধ,—বস্তু বিজ্ঞানাৎ সৰ্বাং তৰিয়াকে। মনুষ্ঠা ৰক্তাপ্তে তৎ কিমবেৎ, যাথাছিজানাৎ তৎ প্ৰদ্ধ সৰ্বামতবং? তাৰ চ স্বামিতি প্ৰচাতে, তল্পদি জৰিজায় কিছিৎ স্বামতবং, তথাকোমপান্ত, কিং অন্ধৰিজ্ঞা লগতে প্ৰভাৱ স্বামতবং, বিজ্ঞান-সাধাৰ্থ কৰ্মকলেন তুলামেৰেজানিতাৰপ্ৰস্কঃ স্বাহাৰত অন্ধৰ্যাফলত; লনবন্ধালোৰত—তদ্পাক্তিজায় স্বামতবং, ততঃ পূৰ্বামণাক্তবিজ্ঞায়েতি। ন ভাৰত্বিজ্ঞায় স্বামতবং, শাখাৰ্থ-বৈশ্বপালোৰাথ। ক্লানিতাৰলোৰ্ভিছি ? নৈকোছিল ঘোৰং, প্ৰবিশ্বোপপ্তাঃ ৪৬ ৪ ৯ ৪

টীকা । কথাছবিজ্ঞাধেণভেন এছেন সম্বন্ধ বকুং বুৱং কীৰ্ম্বত স্পূত্ৰিত্তে । ভজাং অমাণনায়—অসংশ্ৰেতি । তুলি গুজুবাধানেনের সর্বোপনিষয়বসিভেগ্নয়বিভয়াদি বুৰে- ज्ञानकाह - उट्टक्ट के विकाय वः वाकाक्ष्मिको क्रिक्ट श्विकविकारियोक्क बद्धा-स्रवास्त्रिवामात्वारमान्वाकः विकोर्वास्त्रः । अस्तिमास्त्रवरं पूर्णं मानुस् शावःवीमावीसरवान-वर्गमण खनावार "किवार वाक्रविमधार्गाव्याच्याका अक्रमाण" हैकि छावाविकार्य: । ववत्रव्यावध-(क्रााविवाकाश्यकाकः (क्राक्कः क्रम्ब्यव्यावाह्यः, अकृत्वववानक्षराविकाह—छन्निक्कीकि। वाधनवायण (शक्षण १४: नावर्तकि - क्षाट्यार्टि । देश्यका वद्यावन्याका नावर्त कर करमन निर्मननाः विकासक--- क्रार्टन्यारिक । सम्ब व समा व मना व वाना व रक्षात अराख अवारत क्रम्यननवृत्रकाः अवार्यन कृषाः वतातानाक्ष्यकः पृथ्वः, अरत्याक्षयकः विकालारः मःनाबारमा मर्गामर्थो. १व झवस्त्रः स्थलनावनविक्ति वावरः **स्थीतः स्थ मर**नावनव्यक हीका नका बारबावाना , त्ववाः विविधवाताः नामनार्थः त्वरबावीरम मानारत देवतानाः वन्त्रति श्रष्टम्याञ्च । विदर्भवक विवद्यन्यः नावत्रति—क्रक्तिकक्तुरुभांकः वेद्यनायाः वरकाश बाांतरे कि प्रकारिता। "बन नहा वश उरकावनित्रात" हैकि काका-वानिकार - अध्यादशक्ति । बसुवा वस्त्राद्धतः उत्त विक्रकः वस्त काकेकि स्वरः । बसुवा-গ্ৰহণত পূতাবাৰ—গ্ৰহাটে , বস্তু ধেৰাৰীনামণি বিস্তাবিকারে বেবচাবিকার-कार्य बकार्ट, ठर कृत्। बनुवानार्ययाविकाहकान्यविकाह बाव -श्रम्बद्धा ट्रेडि। विरुव्यक्तः नकारिनवारम्याने बाव्यः हवानि किविष्ठि तह कानामृत्तिः निक्ववृत्तवद्यौ कानशास-शाक्षांक । केवरत क्याबारनांचिक वावर :

উত্তরণাকারণাগত্তে -জ্প্রেক্তি। বসুবারণাং বতং ভক্ষবার্থন বস্তবাবের জাবাৎ কলমুচাটের আকেপথতির চোল্লল প্ররু ে বিরোধন্তভিভালো কেতৃত্বিভাতরপর্বার্থর। उद्यक्त प्रदेशकृत्रम्पविध्यक्तः (वर्षेत्र कृद्धः अवति क्षाव्यकः स्थाव-श्रद्धारितः। শ্ৰপ্ৰান্তৰ: কংগ্ৰান্ত—কুত্ৰ কি'মন্তি : বন্ধ স্বান্তানৰজ্ঞানীৰভিন্নিকং বেতি প্ৰস্তুত্ৰ প্ৰসন্ধ भनेवां - धन्यापिता । असेव वांविवक्विवाद स्थान व्यक्तिक, उर कि: विहाद-পেতালক্ষাৰ ত্ৰহা চেতি। "नवाং ৰবিদং ৰখ" ইভ্যানে এখন: দৰ্বাভয়খনশাদতি-विक्रविवद्याकावामाञ्चानस्वताद्विमिक लक्क नावकान्द्रकार्वः। किश्वक्क अवार्ववद्यका-(क्नाचेवार कामानोकि। तम le कि'कामाना नर्मरकतर साथा वा वात्या सम-বিদ্যানৰ্থক্যাবিত্যকু। বিভাগবস্থাপতি—অনুথাতি। স্বন্ধান্তকা আৰা একৰ: নৰ্বা-पर्विविधि विकासारका मानावनः वृद्यनाव - विकारमान्ति । विकार साराज्यवाद-अमक्टल के। बहिरवराक्षणः पविश्व !-- म काक्षणिक । वक्षारेष्य वस्तरः गर्भ-कार:, अञ्चलात्म्य कानामिक नामार्थ देवसमाद । व कामनात्म्यम क्रमहत्त्व कहार:. नावानवं कारः। व्यानाववधनः नर्वकाननावः व्यावस् व्यावसायकः। व्यावस्य-क्राह्मिकः। पठिश्वितिक्षार वक विकास्त्रकारामयकार पशिक्षत्रवहाति, विवृद्ध्योगानिकर मुक्तवादक नागाचर : न कामवत्रा, टक्कशबद्यावकी काहार, नाणि किशाविद्यात्म विवृद्यवस्थात् वाकीशवृद्धि-कृत्वो कृत्रगाविक गृहिश्त्रोड---रेस्ट्कार्शीर्ड। यस्त्र विद्यारेश्वर्गवित गृहक्र विठार-प्रदर्शक । यहान बदानशिकार विद्यानिहर, द्वान द्वारिकादरकारीकान-अग्रापं दिर्वयक स्थानाह्मगरकन करेवत्रवीविकार्यः । ०० । ० र

ा खाळाज्यूकारह । त्य वर्षका अधिनाश्तत वस नवस देनिवर-मारवस मारक, "मारक्रिया देनानीठ" रेजावि वार्का त्यदे वर्षकारे एकाकारत (नश्करन) देखांच्य वरेतारक माळ ; अवन क्रांच त्यरे नश्करा क्यादित नााचा कविर्क्त देखा वर्षका आवश्य आतावन निर्क्रमानत्य देशाएकार्क (नवस) () । अवर्तन कविर्क्त देखा कविर्क्रहम्म

अछित 'छर' नाम चवाव'इछ भवतात्वा बावाब मुख्या कवा बहेरव, मह वक्ष वृक्तिक स्ट्रेस : वीहाता आध्य ... खन्न वक्ष वानित्व केन्द्र म अवः वन्न, कता क बर्बन-ध्रवाहक्रम इटक अवनक्रमित इश्वभद्य करन म'रुपूर्न चमार मरमाद-नामर भारतम (कमायक्रम क्रम माक क्रिया (महे भरमार-भागत व्हेट क्रियोन वरेटक व्यक्तिकारी, महान्माध्याद्यक । कार्या-काव्यक्षादानम् १ प्रवासकारायम छ ভাষার কল बहेटि विश्वक जनः ভাষণকণ--- निना निवालन (जाशाना: चिनाची, डीशाहा वहें कथा वालश बादकन, कि बानहा बादकन, छादा विनाष्ट्रहम--(र उक्ष'वष्टा वावः--- उक्ष वर्ष - भट्टवाचा, (व विष्टाव भावादा ठीशांक काना वाथ, ठाशांव नाम अधानका, (भर दक्ष विधा वादा भवत करीर (बक्रम बहेरन बार क्रिक्ट बर्गन्ड बार्क ना, क्रिक (महत्रूप महाश्राक्षणाव व्यास बहेर रामप्रः अनुवानन प्रत्न कर्ताः , ्यम्न कथा वहर्त्त कथामनशासि শ্ব ৰাল্যা মনে করে, তেম্প বছবিত। হটতেও স্বায়ভাব প্রাথিত্রপ क्नरक अवज्ञकारी वांनदाके महम कविशालाक ; कावन, राय-धामारनाव महाव केण्डलके मयान, व्यर्गार कपारुश-मध्यात (१४६ श्रयाय, अवर १४:१४छ। इ क्न मचर्ड (वनहें श्रमान : पुछदार छेन्द्र क्रड এक स्रमान-नमा बानश खेळात्राहरू जुना विचान बस्हा के'ठल। मनुर्याद्य वित्यकारि विविधार व्यापासन वक, जवास (करण मनुष्कृत केत्रव कर्। इहेशाह : विश्वाप

⁽১, ভাংগ্রা—কোন একটি কবা বলিতে বছলেই ভালার সভিত পুরুক্ধার স্থত্ত থাকা আবশ্যক; নতেং অস্থত্ত বাক্য প্রলাগোজির ভাল উপেক্ষ্মীল হয়। গ্রেল স্থত্ত হুই ভাগে বিভক্ত; তথাব্যে একটর বাব 'উপোহ্যাত; অর্থাং অভাবিত বিশ্বের সমর্থনাস্থ্য চন্তা ''চিন্তাং অক্তর্নভূগান্ত 'উপোহ্যাতং বিজ্পুর্বাঃ '' অর্থাং প্রভাবিত বিষয়সিত্তির অস্থ্যুক্ত চিন্তাকে পতিভ্রম 'উপোহ্যাত' বলেন। ইভঃপুর্বে আজোপানবার বে সংক্ষেপে উপরেশ করা ক্ষমতে, এখন সেই ক্রার্ট্ অন্থ্যুকে—কোন অপরাপর সম্বত্ত পরিভ্যাস করিয়া একমাত্র আজার উপাসনা কারতে ক্ষরে, ভালার কারণনির্দেশার্থ এই ক্রম অভিন্ত অবভারণ। করা ক্ষমতে চ

वह त, पत्रीपि पञ्चापत्र वनः वृक्तिक्षण मिः। व्यवनिष्ठित केणावनानत्व वक्षक्र-भागवहे निर्मयकारण पश्चिमात्र, [पश्चित मिक्षण पश्चित वाहे]।

এ বিষয়ে কিকিৎ বিশ্বস্তাৰ দক্ষিত হুইতেছে; এইবস্থ পাৰৱা জিলাসা कृष्टिक्ति (व. वाशव विकारन वश्वक्रमन नर्माण्यक वरेन नमित्रा वरन कृष्टिया थाएक, त्रहे उच निर्व कि विवद कानिहाहित्वन,--वाहा कानिहा जिनि र्ग्याचक इरेडा(इम ? अणि दरेए जामा बाद रव, उच नर्मयह : जिम विव चन्य (कामछ वच्च मा कामिशाई मुर्जाच्च बहेशा बाटकम, छाव चनातुव मक्ष्य (महेब्रमहे क्षेत्र, ब्रावियात सरावित कि १ व्यात दिनिश विव व्यामियात भवहे म्क् क्व करेवा था(कन, ठाहा क्वें)न छ उत्परिकासिव कन-পদ্ধণ দৰ্মাত্মভাৰ ৰখন বিজ্ঞান সাধা অৰ্থাৎ জ্ঞান হইতে সমূৎপদ্ধ, তখন ভাষাৰ कर्षकामार्थ हुना ; मुठदार छात्रास बानडा बडेटड माद्र विद्याप्त सन-वष्टुः (वःवतः वदः,---(कम मा. अवे नश्राद्यकः उक्षः (वद्यभ वक्षः ववः ववः वदः वदेशः मकाश्वक इडेशाइन, ठरणुर्ववर्धी तक्ष वावाद (महेब्रभहे वह किहू वानिया - [नसांचक बहेशकितन . अहेबान चन्द्रश (बाव व्यक्तिश नह्य]। चाव 'र्जान (व. किছू ना बानियार मर्क्सय बहेबांडरमन, जाश्व हरेट भारत ना ; कारन, जारा बहेरन नांख्य कारन्या हुई क्षकात कहना करिएक वय अबीर (क्यम चामारम्य मर्साचा ५।१८३ चन्न विचारम्य चारक्य १४. क्या उर्द्य भक्ष्म छाश एह ना ; अहं श्रकात करूरे नाक्षत हरेशकात **वर्ष क्या**ना कडिएक वह । [चार वीच किन कि चान्तराहे मर्जायत वहेता बारकन], ভাগ হটলেও বিভাকন স্পায়ভাবের অনিভাত্ত হাতে পারে; ু সভুতরে विनिट्टाइन (व.) ना-विशास हेश्य वक्षे (वावक व्य ना ; कादव, व्यव्हास हैशात छेननिक वा त्रवाधान वहेरक नारत। चिकतात्र अहे (व, उच विव নিত্য এবং অপরিচ্ছিন্ন, ব্যাপি রম্ববিদ্ধার প্রভাবে বে, আরোপিত অবিদ্ধা ও एरकार्याव ध्वः नुनाबनक्रण क्राराणन, छाहः (न्यानिक खवाहिक विश्वाह, का (कहे विश्वाद क्रिक्श्य (शाय मुखाविक हत्र मा । १७ । २॥

বেশা বা ইদম গ্ৰ আগীত দাত্মানমেবাবেং। আহং ব্ৰহ্মান্সীতি। তথ্যাত্ত সৰ্ব মহুবং, তদ্যোয়ে দেবানাং প্ৰভাৰুধ্যত, স এব তদ্ভবং তথ্যীশাং তথা মুখ্যাশাং, তদ্ভৈতং পশাদ্ধিব মিদেবঃ প্ৰতিপেদেহহং মনুৱন্তৰত সুগ্যশেচতি। ভালিমপোতহি য এবং বেলাহং ব্রহ্মাশ্মীভি, দ ইল্ছ দর্ববং ভবতি, ভক্ত হ ন দেবাশ্চ নাভ্ত্যা ঈশতে। আজা ছেষাত্ দ ভবতি, অব যোহন্তাং দেবভামুপান্তেহক্যোদাবক্তোহহমশ্মীভি, ন দ বেল; যথা পশুরেবত দ দেবানাম। যথা হ বৈ বহবঃ পশবে। মমুষ্যং ভূষ্যুরেবমেকৈকঃ পুরুষে। দেবান্ ভুনজ্যো-ক্সিমেব পশাবাদীয়মানেহপ্রিয়ং ভবতি কিমু বহুষু, তন্মাদেষাং তন্ন প্রিয়ং, যদেতন্মপুষ্যা বিচ্যাঃ ॥ ৪৬ ॥ ১০

স্কানি থি । প্রাণ্ডকত প্রপ্ত প্রাণ্ড প্রাণ্ড বিন্দুচ্যতে "বন্ধ বা" ইত্যাদিনা। বিনা বিধান প্রাণ্ড বিশে (কর্ম) বন্ধ বিধান (কর্ম) করে (ক্ষান্ত বিশান) করে (বিজ্ঞানত বিধান) করে (ক্ষান্ত বিধান) করে করে (ক্ষান্ত বিধান) করে বিধান) করে বিধান (ক্ষান্ত বিধান) করে বিধান (ক্ষান) করে বিধান (ক্ষান্ত বিধান) করে (ক্ষান্ত) করে (ক্

অব (পকান্তরে) বা (জনা) অনো (উপাক্তা দেবং) অবং (ববং
পুথক্), অবং (উপাসকঃ) অকঃ (উপাক্তাং পুথক্) অবি (ভবাবি), —ইতি
(এবং) অক্তাং (আত্মভিয়াং) বেবতাষ্ উপাত্তে; সাং (উপাসকঃ) ন বেদ
(এক ব কানাতি); [অতএব বস্থুজাণাং] ববা পতঃ (ভোগ্যঃ), সাঃ
(অক্রমবিং) [অপি], বেবানাং এবং (ভবা ভোগ্যঃ), [অবিঘান্ পুরুষোহণি
প্রস্থাৎ দেবানাং ভোগাঃ ভবতীতি ভাবঃ]। ববা (ব্যং) ব্যবং প্শবঃ

(शा-: स्वापतः) वक्षणः कृष्णः (खेनरकानः कृषिक), अवः (क्षरः) अरेककः
नृक्ष्यः (वक्षणः) स्वान् कृनकि (क्ष्याः क्ष्याः विन्यापत्रकि ; अक्षिन् नामी
वागी स्वार्तः (खन् क्ष्याः । निर्वे विद्याः । क्ष्याः । क्षयः । क्ष्याः । क्षयः । क्ष्याः । कष्याः । कष्यः । कष्याः । कष्यः । कष्यः

মূলা-বুলাদে। স্থির পূর্বে এই জগৎ ব্রহ্মস্বরূপ ছিল; ভিনি, 'यामि ४हेएडि उम्म' এहेक्सभ बाकारक्रे अनिग्राहितन: स्मरे कार्राप ভিনি সর্বাস্থিক হট্যাছিলেন। দেবভাগণ, প্রিগণ ও মনুযুগণের মধ্যে যে বে ব্যক্তি ভাগকে (একাকে) বুঝিরাছিলেন, ভিনিই সেই লকা হটয়াছিলেন। বামদেব ক্ষি সেট এট ব্ৰহ্মভত্ব অবগভ হইয়া বুলিয়াছিলেন যে, আমিই মনুও স্থা চইয়াছিলাম। বস্তমান সময়েও যে লোক এই প্রকার বুঞ্চিত পারে যে, 'আমি ইইডেছি—ব্রহ্মস্বরূপ', তিনিও এই সর্বাস্থভাগ প্রাপ্ত হন: দেশগণও ঠাহার অনিষ্টসাধনে সমর্থ ৩ন না। কারণ্ িনি এ সমস্তেরই আছু: হন: পকাস্তুরে, যে লোক ইহাকে ত্যাগ করিয়া অন্য দেবতার উপাসনা করে,—'আমি । উপাসক) অশু, এবং ইনি (উপাস্তও) অশু এইরূপ ভেদ দৃষ্টিভে অপর দেবভার উপাসনা করে, প্রকৃতপক্ষে সে লোক ব্রহ্মকে ভ:নে না। মসুযাগণের যেমন পশু, ভিনিও দেবগণের নিকট ভক্ষপ, অর্থাৎ পশুর স্থায় দেবগণের উপভোগা হন। বস্তু পশু ষেক্লপ মমুষাকে ভোগ করে অর্থাৎ মমুষ্যের ভোগ সাধন করে, তেমনি সেই ভেম্মশী এক একটি লোকও দেবগণের উপভোগ। হইয়া बारक: এकि । भक्क जनरत नहेंदा अबवा इस्त्रां इहेरन वबन অপ্রিয় বা দুঃৰ উপস্থিত হয়, তথন বহু পশু এক্লণ হইলে ভ কথাই नाहे : এहं कांत्रान्हें एवडापिरात छाहा खित्र नत्र त् मसूचामन ব্ৰগাড়ৰ অবগ্ৰ হয় 1 ৪৭ ॥ ১০ ॥

न्याक्तक काव्याक्त्। यात्र कियान विकारिय वर् उप नवंत्रवर

गृष्टायः-विश् चंत्रव चारम्, यत्रार ७६ नर्सम्बद्धिः। अस त्रावित्व नर्सामामामिकः अधिनत्रनार-

বন্ধ শণর্য, সর্কভাবক সাধ্যযোগণরেঃ; ন হি প্রস্ত বন্ধার সর্কভাষা-শভিক্তিজানসাধ্য; 'বজানসাধ্যকে সর্কভাষাপ্রিয়াহ - 'তত্মারুৎ সঞ্চলত্ত্বং' ইতি; তত্মায় "বন্ধ বা ইয়স্বপ্র শাসাং" ইতি অপবং ব্রমের ভবিতৃমইতি। >

ৰক্ষা'বৰ বোধা হয়বো বাধাণ: স্থাং; "সকাং ভবিছাছে। মন্থা মন্তাইতি হি মন্থা: প্ৰকৃতাঃ; হেৰাং চান্তাল্য'নংগ্ৰেমসসাংনে বিশেষগোহিকার উন্তান্ত্র, ন পরস্থ বাধানে। নাগাপরস্থ প্রভাগতেঃ গাতেঃ বৈতৈক মাপরবাধানিকার ক্ষানা ক্ষানাক্ষান্বান্ধানাক্ষানাক্ষানাক্ষানিক্ষানাক্ষানাক্ষানাক্ষানাক্ষানাক্ষানাক্ষানাক্ষানাক্ষানিক্ষানিক্ষানাক্ষানাক্ষানিক্ষানাক্ষানাক্ষানিক্ষা

তল্প, স্কাভাবোপপভোৱানতাৰ্দে(ধাং। নাছ সোহকি লোকে প্রমার্থতা, বো নিবিভবশাহাবাদ্যমাপথতে 'নতাশেচাত। তথা অথাবিঞান-নিধিওফ্ডা চেৎ স্কাতাবাপবিং, 'নতা) চেতি বিরুদ্ধ। অনিতাহে চ কর্মদলভুলা-তেত্যক্তোকেশাকে

অবিভাক্তাস্ক্রিবি । তেৎ স্প্রাণণিক্ত ব্রহ্ণবিভাক্ত সভাবে, ব্রহ্ণভাবিপুর্বক্ষন: বার্বিভাগে প্রাণ্ডির্যালিকা সংক্ষা হয় আবিভাগে স্ক্রেরিভাগে প্রক্রিভাগে সংক্ষা হয় আবিভাগে সংক্ষা কর্মার্বিভঃ; আবিভাগা হু আব্রহ্ণবিস্ক্রিক ক্রান্তিরিপ্রিক্ বর্মার ক্রিকারার ব্রহ্ণবি ক্রান্তিরি বা তল্মলব্রাদি; তেবের ব্রহ্ণবি আবারোপিত্যবিভাগে অব্রহ্ণবিস্কা ব্রহ্ণবিভাগ নিব্রতি, ইতি মন্ত্রের বিদ্যালিকার আবারিং প্রথার্থকি বর্মার বিভাগে শ্রহ্ণবিভাগি স্কর্মার আবারিং কর্মা ক্রান্তি কর্মার ক্রান্তির বিভাগি বিশ্বীরের ব্রহ্ণবিশ্বিদ্ধান ব্রহ্ণভাগি ইতি, প্রত্রান্ত্রহার প্রাণ্ডিশ্বিদ্ধান ব্রহ্ণভাগি হিলিকার প্রাণ্ডিলিকার স্থানিকার স্থানিকার

অধিভারতবাতরেকেশারশ্বরুপর্বরুপ বিভ্নত এবেতি চেৎ; ন; তত্ত ব্রন্থবিভয়া অংশাবাত্তপণভো: ন হি কচিৎ সাক্ষাবভাগতাপে'ঢ্রী দুটা কলী বা ব্রন্থবিভা; অধিভায়াত সর্কটেনে নিবর্তিক। দুক্তভে; তথা देशनि चत्रवचननर्षप्रशासकाङ्ग्यस्य निर्द्धाकान् उपनिकाः न क् नावयापिकः यद कर्षुः निर्द्धाः स्था चईति उपनिकाः क्यापार्देव अक्टाक्रकक्तानाः द

ব্রহ্মণাবিভাত্বপশিভিবিতি চেৎ; ন; ব্রহ্মণি বিভাবিধানাৎ। ন বি ওজিকারাং রক্ষাবাধানাগেশেংশতি, ওজিকারং আপাতে—চক্রেচিরাপনারাম্ 'ইরং ওজিকা, ন রক্তম্' ইতি। তথা 'স্থেবেং সর্কাং, ব্রহ্মবেং সর্কার্, আরৈবেং সর্কার, আরৈবেং সর্কার, আরেবেং সর্কার, আরেবেং সর্কার, আরেবেং সর্কার, ব্রহ্মণাবভাধারে প্রপানামসভাাম্। ন ক্রমান ওজিকারা মর ব্রহ্মণাতর্মধারে প্রপানভাধারে প্রপানামসভাাম্। ন ক্রমান ওজিকারা মর ব্রহ্মপারারে প্রপানভাধারে প্রপানভাগিত; কে তরি গুল ব্রহ্মপার্ত্মগর্মারে প্রশাসক ব্রহ্মপার্ত্রাক্ষ ব্রহ্ম; কিছু নৈর প্রসানিভাব প্রবিভাবিত। তর্বেরং—ন 'বভাকর্ত্ত ব্রহ্মপার্তিত। তর্বেরং—ন 'বভাকর্ত্ত ব্রহ্মপার্তিত। তর্বেরং—ন 'বভাকর্ত্ত ব্রহ্মপার্তিত। ব্রহ্মপার্তিত। ব্রহ্মপার্তিত। প্রভাবিতা ব্রহ্মপার্তিত। ব্রহ্মপার্তিত। প্রত্তিত লগতা ব্রহ্মপার্তিত। প্রতিভাক—শসমং স্থেব্ ভূতের্ণ, "অর্থান্তা ওড়াকেশ", "গুনি হৈর ম্পান্তিত, "ব্রহ্মপর্কারি ভূতানে", "ব্রহ্মির্ সর্কারি ভূতানে", "ব্রহ্মপর্বার্ণ ভূতানি" ইতি চ মন্ত্র্মণিং ভ্

নধেবং শাল্পোপদেশানৰ্থক্যমিতি; বাচ্যেবম্, অবগতে অপেবানৰ্থকাম্। অবগমানৰ্থকাম্পীতে চেৎ; ন; অনবগমনিবৃত্তেকৃ ইয়াং। তল্লিবৃত্তেরপান্ত্রপান্ত্রপান্তরক্ষে ইাত চেং; ন, দৃষ্টবিবোধাং; দৃশ্ভাতে হি এক্সবিজ্ঞানাদেবানব্যমনিবৃত্তঃ; দৃশ্ভমানমপ্যস্পপন্নমাত ক্রবতে। দৃষ্টবিবোধাং ভাং। ন চ দৃষ্টবিবোধাং কেন্চিন্পান্তাপসমাতে . ন চ দৃষ্টেম্ছপশলং নাম, দৃষ্টমানেব। দশ্লান্ত্রপানিবিত চেৎ; ত্ত্তাপোট্যৰ বৃক্তিঃ। গ

"পুণাে বৈ পুণে ন কথা ভবাত ." "তং বিভাকৰ্থী সম্বার্ভেতে।"
"মধা বাছা কঠা বিজ্ঞানাত্ম পুক্ষঃ" ইত্যেবমাদিক্র'ভস্বতিভাগেতঃ পরশালিক্রণান্ত্র সংসারা অবসমতে; তবিক্রণত পরঃ "স এব নেতি নেতি"
"অপনাধাল্যতােতি" "ব মাধাপ্রপাপ্য বিজ্ঞাে বিমৃত্য়ঃ" "এতক বা অকরক্ত প্রশাসনে" ইত্যাদিক্রংতভাঃ; ক্লাণক্রণালানিত্র্কশাজের্ চ সংসারিবিক্রণান্ত্র ইল্পন্তিতঃ সাধাতে; সংসারত্বাপনয়াধিত প্রক্রিদর্শনাং 'ফুটমক্তর্মীখরাং সংসারিণেছিবসমাতে; "অবাকানালরঃ" "ন মে পার্থাতে"
হাত ক্রতিশ্বভিত্যঃ; "সোহবেট্টবাঃ স বিজ্ঞানিতবাঃ" "তং বিজ্ঞান্ত
লপাতে" "ব্রধাবল্যােতি প্রস্থা "একবৈবাকুইবানেতং" ব্যা বা একক ব্যং

গাঁব্যবিধিতা" "ভবেৰ বীৰো বিজ্ঞান" "প্ৰণবো গছা, পালা কাৰা, এক ভৱকা-কুয়কে" ইত্যাধিকপাকপুনিৰ্দ্বেশাচ্চ; মুৰুক্ষোন্ধ পজি-নাৰ্থবিবেশবেশেশ-বেশাৎ; অসভি ভেবে কন্ধ কুছো পজি: ভাব ? ভৰকাৰে ৪ দক্ষিণোকর-নার্থবিশেষাক্ষণপজির্থবাদেশাক্ষণপজিকে'ভ; ভিন্নত জু পরস্থাকারনা সর্বা-বেভন্তপ্রস্থা ৮

कर्च-क्रामनावर्थनशरूषाक, —िक्सान्तवृष्णः मःनारी जारः वृक्षणः शाणकः विवादि विवादि विवादि । वि

তৰিজ্ঞানত কচিং পুক্ৰবাৰ্থনাবনেছ বনিয়োলাৰ সংস্থাবিদ এব - ৰবং ব্ৰহ্মানীত ব্ৰহ্মদললাবনাৰ উপদেশ কাল চেবং আনকাতে কি ব্ৰহ্মগ্ৰহণ কিং সমল গ্ৰেই—আৰং ব্ৰহ্মান্ত কি ব্ৰহ্মগ্ৰহণ কিং সমল গ্ৰেই—আৰং ব্ৰহ্মান্ত কি নালাবন্ধ কি ব্ৰহ্মান্ত ব্ৰহ্মান্ত প্ৰন্থ কি কি ব্ৰহ্মান্ত প্ৰন্থ কি কি ব্ৰহ্মান্ত কি ব্ৰহ্মান্

ন চাপারৎ প্রয়েজনা ব্রেজ্বপদেশক প্রাতে; "ব্রন্ধ বেন ব্রন্ধৈর ভবঙি" "জ্জাং বৈ জনক প্রায়েছিনি" "জ্জাং হি বৈ ব্রন্ধ ভবতি"ইভি চ তদাপথিপ্র বর্ধার। সম্পর্কিতেই, তহাপজিন স্থাই। ন ক্রন্তার্গুভাব উপপদাতে। বচনাই সম্পর্কেরিশ তভাবাপজিঃ স্থাদিতি চেই; ন; সম্পর্কেই প্রত্যাত্ত্রাই বিজ্ঞানস্ভ চ বিশ্বাজ্ঞাননিবর্ত্তকত্ত্রা হৈকেশাকার ক্র্যান্ত্রাহার। ন চ বচনং ব্রন্ধন সামর্থাজনকর্। জ্ঞাপকই হি শাহ্রং ম কারক্ষাত হিতিই। শস এই ইহ প্রবিষ্টাই ইত্যাদিবাক্ষাের্ চ পরক্ষৈর প্রবেশ ইতি বিতম্ব ভ্রাজ্বিত ন ব্রন্ধতাবি-পুরুষকল্পনা সাধনী। ১১

इंडोर्बनायनाळ—देनचनयमनयमनयसम्बद्धनाव्यक्तमः त्राव्यक्ति विकासः नर्व-क्राप्नेनियमि अञ्जितायविद्यार्थः—काक्यस्यार्थस्यवास्यन्यार्थ— "रेखाइनामनन्" "अधारतत नवम्खनन्" रेखि ; छना मर्सनारनामनिष्यम् इ दोधनविद्यानर मिनिएफार्श्यः । छत्न विष्य मध्यात्री तक्तनारक जाणान्यन् नारवर -- रेखि कर्त्वाण, देहेणार्थक नामन्य छार ; छना इ नाव्यम्भक्तरामनरवात-रवार्यरतामानमञ्जन्य कविष्यः छार । नामरक्ताक्रमण्डल--- नाम इ "जाजान-रमारायर हेछि मरमादी कर्त्वाण, 'तक्षिण)' हेछि वामरक्ता म छार 'जाजानस्वारवर हेछि ; मरमादिन अव रक्षार्यानमरहार । ३२

আংগ্রনি বেন্দুরস্কৃত্যান হতি চেং; ন: "আবং ব্রহামি" ইতি বিশেষণাং; অঞ্চলেছেন্দ্র: তাং, অর্বসৌইতি তা বেশেষাত, ন তু 'অব্যক্তি । 'এইমি ইতি বিশেষণাং 'আন্থানম্বোবেং' ইতি চাবধারণাং নিশ্চিত্য আইন্ধব রক্ষেতাবগ্রাতে, তথা চ সভাপপল্লে অন্ধবিভাবপদ্ধাং, নারণা সংসাতিবিভাবি অন্তথ্য ভাষা। ন ১ ব্রহ্মবারেক্ষে হেক্ডোপপল্লে প্রমার্থতঃ, ভ্রাপ্রকাশাবির ভানোবিক্ষয়াং । ১০

ম চোভবনিষিত্রতে ব্রথবিদ্যতি নিলিতো বাপদেশো বৃক্তঃ, তদা ব্রথবিদ্যা সংসাবিবিদ্যা চ আং ; ন চ বস্তনোহজ্জবতীয়ত্বং ক্লাল্ডিং বৃক্তম্ তর্জানবিব-শালাম্, শোড়ং সংশল্পে হি তথা আং ; নি কতং চ জানা পুরুষার্থসাধনবিব্যতে —"বস্তু আদ্বা ন বিচিকিৎসাত্তি" "সংশল্পাছা বিন্দাতি" ইতে প্রতিশ্বিত্যাম্। অতো ন সংশ্বিতো বাক্যার্থো বাচাঃ প্রস্থিতাবিনা। ১৪

ত্রখণি সাধকত্বকরন। অবদাদি তিং, অপেশ্লা—"তদাত্বান্ধেবাবেৎ, তব্যন্তৎ স্ক্ষিত্বং" ইতি—ইতি চেং,ন; শাল্পেলভাং; ন হ্বংক ননের্থ, শাল্পেলভাং; ন হ্বংক ননের্থ, শাল্পেলভাং; ন চ ত্রখণ ইইং চিকীর্ণা শাল্পিবিপরীত-কল্পন্ন। পার্থপারত্যাপ: কার্যাং। ন চৈতাবতোবাক্ষা যুক্তা ভবতঃ; স্কংছি নানাখে ত্রখণি কল্লিভ্যেব "একনৈবাস্ভইবাষ্" "নেহ নানাখে কিঞ্ল" "ব্রেছি বৈত্যির ভবতে" "এক্ষেব ছিতারং" ইত্যাহিবাক্যশভেভাঃ, স্কোছি লোক্ষ্যবহারো ত্রখণোর কল্পিভা ন প্রমার্থ: সন্, ইভাল্পিদ্যুচ্যতে—ইল্যেব কল্পনা অপেশ্লেভিঃ ১৫

ভন্মং—ৰং প্ৰবিষ্টং শ্ৰষ্ট বন্ধ, ভদ্ বন্ধ; বৈ-শন্ধেৰবাৰণাৰ্থঃ; টকং
শনীনন্ধ বং গৃহতে, অত্যে প্ৰাক্ প্ৰাভবোধাৰণি ব্ৰট্ৰবানীং সক্ষেত্ৰন্ম; কিন্তুঅপ্ৰতিবোধাৰ 'অবন্ধান্ধ অসৰ্কং চ' ইত্যানন্তখাবোপাৰ 'কণ্ডাৰং ক্ৰিয়াবান্,
কলানাক ভোক্তা, পুৰী ছু:ৰী সংসাৱী' ইতি চাৰ্যাবোপাৰভি; প্রমার্থভন্ত ব্ৰদ্যৈৰ ভবিসক্ষণং স্থাক; তৎ কৰ্মকিদাচাৰ্থ্যেৰ সমানুনা প্ৰভিবোধিতং 'নাসি नश्नात्ती'रेजि चाषानर्यवात्वर चार्जावकम्. चविष्ठाशास्त्राणिजविष्यविष्ठ-विष्ठाव-मक्कार्यः। ১৬

ক্রবি কোহসাবাথা বাভাবিক:, ব্যাত্মানং বিদিত্তত্ব ব্রন্ধ। নতু ন ব্রন্থ ভারান্ধ্; দলিতো হুসোঁ— ব ইছ প্রবিশ্ব প্রাণিতাপানি'ত ব্যানিতি উদানিতি স্বানিতীতি! নতু 'অসৌ পৌঃ, অসাবন্ধ:' ইতোব্যসে বাপদিশুতে ভবতা, নায়ানং প্রত্যক্ষং দর্শরসি; এবং তহি স্তর্হী শ্রোতা মন্তা বিভাতা স্থায়েতি। নক্রাণি দর্শনানিক্রিয়াকর্জু: ব্রুশং ন প্রত্যক্ষং দর্শর'স; ন হি প্রিরেব্ধরাত্র ব্রুপন্, ছিদির্কা হেড:; এবং 'বি সৃষ্টের্ল' হী, শ্রুতে শ্রোতা, মতের্মতা, বিজ্ঞাতের্মিক্রাতা, স্থায়েতি ১৭

নমু অত্ত কো বিশেষো এটার ? বলি দৃটের্ন্ডা, বলি না ঘটন্ত এটা, সর্কথাপি এটার : এটবা এব তু তবান্ বিশেষমাহ—দৃটের্ন্ডাটিত ; এটা তু যদি
দৃটো:, বলি বা ঘটন্ত, এটা এটার । ন, বিশেষে পপথে:—অন্তারে বিশেষ: যো
দৃটের্ন্ডাটি, স দৃষ্টিক্টেরবিত, নিভামের পশুভি দৃষ্টিম্, ন কণ্ডিদ্পি দৃষ্টিন্ দৃশুভে
প্রাট্রা; তেরে এট দিটা নিভারা ভবিতবাম্ ; অনিভা। তেও এট্র দৃষ্টিং, তের দৃশ্রা
যা দৃষ্টিং, সা কম্বাচির দৃক্তের্থাপ—যথা অনিভারা দৃষ্টা ঘটাদি বন্ধ। ন চ
তথ্য ক্রেন্টাই ক্লাভিক্পি ন পশ্রতি দৃষ্টিম্ । ১৮

কিং ৰ দুট এই:—নিতাঃ অদুতা, অন্য অনিতণ দুখেতি ? বাচ্য; প্রশিষ্ধা তাৰদ্মিতা৷ দুটা, অকানছৰদৰ্শনাং; নিতাৈব চেং, সংক্ষাংনছ এব স্থাং; এইছ নিতা৷ দুটা—"ন ভি ছাই ফুটেনিপরিলোপে৷ বিছতে" ইতি হাতে; অনুমানাজ— অছুজাশি বটাগাতাস্থিবত৷ বগ্নে দুটাকুপদতাতে; সা তহি ইতর্দ্ধীনাশে ন নহাতি; সা দুই ফুটা, তথা অবপরিদুখার৷ নিতামা দুটা৷ বন্ধশন্তলা অবংকাতিঃসমাধার৷ ইতরাম্নিতা৷ দুটাং অপ্লান্তনা বাংশার্থা কাস্নাপ্রভাৱনাং নিতামের পক্রন দুটের্ডিঃ৷ তবতি: এবক সতি দুটারেব অনুস্বাস্থ্য আর্থাকাবং ন কাশানামানিক দুটীবাতিরিজ্ঞাহগুলেতনা এই। ১৯

তৎ ব্ৰহ্ম আন্তান্ধেৰ নিতঃ দৃশ্ ত্ৰণ মুখানাগিতানিতা দৃটা দিব জিতা যৰ আৰেৎ বিশিত্ব নামু বিপ্ৰতিবিশ্বং—"ন বিজ্ঞাতি বিশ্বতিবেশঃ কৰং বিজ্ঞানায় বিপ্ৰতিবেশঃ; কৰং দৃশ্বেক্তী ইভি বিজ্ঞানত কৰ; অনুজ্ঞানানণেকখাত—নচ এই নিতাৰ দৃষ্টিৱি-ভোগং বিজ্ঞাতে কই বিবয়াং দৃষ্টিমন্তানাকাজ্ঞাত; নিবৰ্ততে বিজ্ঞাই বিশ্বন

দুটাকাজ্ঞা, তদসন্তবাদেব; ম ক্ৰিডমানে বিধরে আকাজ্ঞা কন্তচিচপ্তাহতে;
ম চ দুন্তা দৃষ্টির্ন্তীয়ং বিষয়ীকর্ত্ত মুংস্বতে, বহুডাবাকাজ্ঞেহ। ম চ সম্প্রশ্বীকাজ্ঞা কন্তেব; তত্মাক্তানাধ্যাবোশশমিবৃত্তিরেব "আআম্মেবাবেং" ইত্যক্তম্, মান্তমো ক্রিয়ীকর্পম্।২০

তৎ কণমবেদিতাৰ — লগং কৃষ্টেন্টা লায়া ব্ৰহামি তবামীতি। ব্ৰহেতি
— ৰৎ সাঞ্চালপরোক্ষাৎ সর্বান্তর লায়া লগনায়ান্ততীতো নেতি নেতাস্থামনবিতোবমাদিলকণ্য, তদেবাহমন্তি, নান্তঃ সংসাতী, বধা তবানান — ইতি।
ভলাদেবংবিজ্ঞানাথ তথ ব্ৰহ্ম সর্ক্ষমতবথ - লব্রহাধারোপণাপগমাথ তথকার্যান্তাসর্ব্বর্ক্ত নিম্বন্তা সর্ব্বন্তবং । তলাক্ ব্রুদ্ধের মন্তবা মন্তবে— বং ব্রহ্মবিজ্ঞা সর্বাং ভবিবাাম ইতি বং পৃষ্ট্য— কিমু তথ ব্রহ্মাবেৎ, বলাথ তথ
সর্ব্বন্তবিতি, তল্পিতিং— "ব্রহ্ম ব ইন্দ্রন্ত্রলাসীৎ, তলাক্ষান্তবাবেৎ — লহং
ব্রহ্মালীতি, তলাথ তথ সর্বায়ভবন্দিতি ২১

তৎ তত্ৰ বেং ৰো দেবানাং মধ্যে প্ৰতাব্যাত প্ৰতিবৃদ্ধান্ আছানং মধো-ক্ষেন বিধিনং স এব প্ৰভিবৃদ্ধ আছা তত্ত্বৰ অতবং; তথা বহুণাম, তথা মন্তু-ক্ত'পা' চ মধ্যে। দেবাদীনামিতাাদি পোকসুইংপেক্ষা, ন ব্ৰহ্মসুহোচাতে; "পুৱং পুকুষ আমিশং" ইতি সূক্ষিৰ ব্ৰহ্মিয়ায়ং প্ৰবিট্ৰিতাবোচাম অতঃ লৱীৱান্তাপাধিজনিত-লোকস্টাপেক্ষা দেবানামিতাছাচাতে; প্রমার্কতন্ত ভব্র তত্ত্ব ব্ৰহ্মিয়াপ্র আসীং প্রাক্ প্রতিবোধাং দেবাদিশ্বীংর্ম্প্রবৈধ্ব বিভাষানান্য, তথায়ানম্বোবেং, তবৈৰ চ স্ক্ষিত্তবং ৷ ২২

অতা বন্ধ-নিভাগা: সর্বভাগাপতিঃ কল বিতোহভাগত অছিছে ব্যাত্রা-হয়তি প্রতিঃ কথন গু—তব্রদ্ধ এতবায়ানমের প্রথমীতি পরন্ধ এতবা-ধেব ব্রহণো দর্শনার্থ কিব্যাসকোবার: প্রতিপেশে হ প্রতিপ্রধান্ধিল। স এতবিন্ ব্রহায়বর্শনে হবছিত, এতান্ধিলান্ধর্শ পরাস্থতে; প্রথম ব্রহারকার স্থা-ক্তোবীন্। তব্রভাগ পরান্ধতি ব্রহণিভা পরাস্থতে; প্রথম ব্রহারকার স্থাক্তেতাধিন। সর্বভাগাপতিং ব্রহ-বিভাক্তাং পরাস্থতি; পরন্ধ সর্বাত্র-ভাবং কলং প্রতিপেশে, ইতাশাৎ প্রয়োগার্থ ব্রহাবভাগবাহসাধনসাধাং ব্যাক্তং বর্ণবিদ্ধি—ক্ষুণান্ধ্বাতীতি ব্রহণ ২০

সেরং এক-বিভয়া সর্কভাবাপভিত্রাসীমহতাং কেবানাং বীর্ব্যাতিশরাৎ, নেলানীবৈধংসুদীনামাদ্, বিশেষতো বছজাশাদ্, অন্নবীর্বাছাৎ; ইতি স্তাৎ কল্পচিত্তিং, তবুংখাপনারাহ—তবিধং একতং এক বং সক্তাছগ্রবিষ্ঠং वृष्टिकिशिविण्यम्, अर्छादं अरुविश्विण वर्षवामकारणः, यः कण्डिशायुक्त्यार्थायप्रभा भाषामस्य अवः रवन भरः उद्याचीकि—स्पार्श्वाणाधिवमिक्जाविष्णामाधारताणिकाम् विष्णवाम् गःगावध्यामानिक्वयमस्वत्ववासः उद्येखवास्यवि
स्वनिष्ठिः, नः भविकानकागर्यविश्वरकः उद्याविकामानिशः नसः छवः । स
सश्वीर्यात् वावस्यविष्यं श्रीमवीर्यात् व। वार्षमानिस्कृ बङ्गर्खन् उद्यानाः
विष्णवः उविकानक वाण्डिः वार्षमानिस्कृ पूक्तश्वर् कृ उद्याविकामस्वर्थेनकाणि
क्वा नकारकः स्वाव भार-क्वा व उद्याविकापूर्वर्थास्यक्त विश्वनाः रवतः
प्रशावीर्षाः, इन अपि, भक्ष्रेतः भव्यवनात्र उद्यानकावक रान्तरः न
भवार्थाः (क्वाकाः । २८

বৃদ্ধবিভাদ্য প্রতি বিষ্করণে দেবাদা দ্বীশত ইতি কা শ্রাণ্ ইতি, উচাতে—দেবাধীন প্রতি ধণবর্তাং মন্তানাম্; "এক্ষচাধাণ লগিতাঃ, বজেন দেবেভাঃ প্রকার পিতৃভাঃ" ইতি হি কায়মানমের ঝণবন্তং পুরুষং দর্শরতি প্রতিঃ; পশুনিদর্শনান্ত —"অবে। অধ্যার । "ইত্যাদেশোক প্রতেশ্চ আয়ানো বৃদ্ধিবিশিপাদ্যিবর। অব্যর্গানির দেবাঃ পরত্যান্ মধ্যান্ প্রতি অমৃতক্ষপ্রতিং প্রতি বিশ্ব কুয়ারি'ত কাবৈয়বৈরা শ্রা। ২৩

শ্বপদ্ন শ্বনীরাশীর চ রক্ষি দেবা:; মহন্তরাং হ বুরিং কর্মাধানাং দর্শন্তিবাতি শ্বেলানাম—বচপশুসমতহৈত্বকক্ষ পুরুষক্ত; "তথাদেবাং তয় প্রিয়ন্ত্র, বদ্দেতৎ মন্ত্রা বিদ্যাং" ইতি চি বক্ষাতি , যধা হ বৈ বায় গোকায়া-বিষ্টিমিছেদেবং হৈবংবিদে সর্বাণি ভ্তাকুরিটিমিছেক্তিই ইতি চ; অন্ধবিষ্টে পারার্থানিষ্টেন থানেক্তিং পশুহক্ষেতাভিপ্রাহেটিবচনাভ্যান্তর্কানিষ্টেন থানেক্তিং পশুহক্ষেতাভিপ্রাহেটিবচনাভ্যান্তর্কানিষ্টেন থানি বিদ্যান্তর্কানিষ্টেন থানি বিদ্যান্তর্কানিষ্টেন বিদ্যান্তর্কানিষ্টানিষ্টির চিনাভ্যান্তর্কানিষ্টান

নৰেং সতি জন্তাৰপৈ কৰ্মদলপ্ৰাপিনু দেবানাং বিষক্ৰণং পেৰ-পানসমন্; হন্ত তহি অধিপ্ৰছেহ্ছাদয়নিংপ্ৰেয়স-দাবনাস্থানেনু; তবা ঈৰংখাচিন্তালক্তিবাং বিষক্ৰণে প্ৰভূত্মণ্ণ, তবা কালকৰ্মছৌৰবিতপদান্; এবাং হি
কলস্পত্তি-বিপত্তিহেত্মং লাখে লোকে চ প্ৰদিছন; অতোহপানাখালং লাখাৰ্বাস্থানে। ন; সৰ্কপদাৰ্থানাং নিয়তনিমিটোপাদানাৎ, জগবৈচিন্তাদৰ্শনাচ্চ,
বভাৰপক্ষে চ তত্ত্যান্তপাতেঃ, স্থবহুংখাদিকগনিমিতঃ কৰ্মেত্যেত্মিন্ পক্ষে
হিতে বেলম্ভি-কান্ত-লোকপ্ৰিগৃহীতে, দেবেশ্বকালাভাৰং ন কৰ্মদলবিপ্ৰাসক্ৰান্তঃ, কৰ্মণাং কাজিভকারক্ষাৎ—কৰ্ম হি ভভাভছং পুক্ৰবাণাং

বৈৰকালেখয়াছিকায়ক্ষনপেকা নাজানং প্ৰতিগততে, নৱাল্যকমণি ক্লৱানেহ্নমূৰ্যন্, ক্লিগায়া হি কায়কাজনেকনিবিভোগালানখাভাব্যাৎ; তথাৎ ক্লিয়াসূত্ৰণা হি গৈবেখরালয় ইতি কৰ্মসূত্ৰিয় ক্লপ্ৰাণ্ডিং প্ৰভাষিত্ৰকঃ। ২৭

কথান্বপোনাং বশায়গনং কচিং, সনামৰ্থাভাগণেভন্ধ। কৰ্মকানদৈন্দ্ৰনাদিৰ ভাগানাং ভণপ্ৰধানভাবভ্নিহ্ৰচো চুৰ্সিজেন্ডভিত ভংকতো মেংছো
লোকভ—কবৈন কাৰকং নাজং ফলপ্ৰাখানিতি কেচিং; দৈন্দ্ৰেভাগরে;
কাল ইত্যেকে; ভ্ৰয়াদ্বিভাৰ ইতি কেচিং; সৰ্ম এতে সংহতা এবেতাপ্ৰে।
তত্ত্ব কৰ্মণঃ প্ৰাধান্ত্ৰসাক্ত্বতা বেলস্থতিনাদাং "পুণ্যো বৈ পুণ্যেন কৰ্মণা
ভবিতি, পাপঃ পাপেন" ইত্যাদয়ঃ। বভ্যপোনাং স্ববিদ্যে কন্ত্ৰচিং প্ৰাধাভোৱবঃ, ইতবেনাং ভংকালীন প্ৰায়ন্ত্ৰভিত্ৰহে, তথাপি ন কৰ্মণঃ কাল প্ৰতি
প্ৰতি শ্ৰীনকান্ত্ৰকৃষ্য শান্তবাহনিক্ষিতিভ্ৰাং কৰ্মপ্ৰাধান্তভা। ২৮

ন; অণিভাগসম্বার্থান্ এখপ্রাথিকসভ্ত,—বছ্কেণ এখপ্রাথিকলং প্রভি দেবা বিদ্যং কুর্তিভি, তঞ্জ ন দেবানাং বিদ্যকরণে সামর্থান্ত; কন্ধাং ? বিভাগালানন্ততিভাল্ অখপ্রাথিকসভা; কবন্ধ; বর্গা লোকে এই ভক্তমূল আলোকেন সংবোগো বংকালা, তংকাল এব অপাতিবা'ক্তা, এবসান্তবিভাগ বিজ্ঞানং বংকালম্, তংকাল এব তবিবয়াজ্ঞানতিবোভাবা ভাং; অত্যে আন্বিভাগাং সভ্যামিবিল্যাকাব্যামূপপত্তে, প্রদীপ ইব তবংকার্যাভ্ত; তং কেন কভা বিশ্বং কুয়ার্ফেবা:—ব্যামান্তবের বেবানাং এছবিলং। ২৯

তদেতদাহ—আত্মা বরূপং ধারষ্ বতৎ সর্বপারৈবিজ্ঞেরং ব্রন্ধ, হি রত্মাৎ এবাং দেবানাং স প্রস্থবিদ্ তবতি—প্রস্থবিদ্যাসমকালমেবাবিদ্যামাজ্ঞবাবধানা-প্রস্থাৎ গুক্তিকারা ইব রক্ষতাভাসারাং গুক্তিকাদমিতাবোচাম। অতো নাত্মনং প্রতিকৃপত্মে দেবানাং প্রবন্ধঃ সন্তবতি। যত হি অনায়ভূতং কলং দেশকালনিমিভাভরিতম্, ত্রানাত্মবিবরে সকলং প্রবন্ধে বিয়াচরণার দেবানাম্; ন হিছ বিভাগ্যকাল আত্মত্তে দেশকালনি বিভানভরিতে, অবসরাস্থাপত্তঃ। ৩০

এবং তহি বিভাপ্রতারসম্ভত্তাবাৎ বিপরীতপ্রতার-তৎকার্যারোল্ড দর্শনালয় এবাত্মপ্রতারোহবিভানিবর্জকঃ, ন তু পুরা ইতি। ন; প্রধ্যেনানৈকান্তিকভাৎ—বলি হি প্রথম আয়াব্যরঃ প্রভারোহবিভাং ন নিবর্জরতি, তথাব্যোহিপি, ভূলাবিষরভাৎ। এবং তহি সম্ভোহবিভানিবর্জকঃ, ন বিভিন্ন

অর্থকে গতি চেং; ন. স্ক্লাখোপনিষদাব্ধাদহলস্থাং. এতা ব্যান্ত্র্যিক্সিট্রা হি চলাবোপনিষ্কঃ প্রকাশ লাগ্রিক্সিট্রা হি চলাবোপনিষ্কঃ প্রকাশ লাগ্রিক্সিট্রার্থিং—অবিভাগেক মেণ্ড লাগিলোগনার (এ: প্রক্রেক্ত ভালিভি চোক্তঃ পরিহারঃ। তথালাভঃ অক্তঃ স্কৃতঃ অসক্তল্য —ইতাচোভ্রু মেতং; অবিভাগিলোগনিবৃত্তিফলাবস্থা গ্রিভাগিঃ—য এবাবিভাগিলোগনিবৃত্তিফলাবস্থা গ্রিভাগিঃ—য এবাবিভাগিলোগনিবৃত্তিফলাবস্থা গ্রিভাগিঃ—য এবাবিভাগিলোগনিবৃত্তিফলাক্ত প্রতায়ঃ আভঃ অক্তঃ স্কৃতঃ অসক্তেরা বা, স্তার বিভাভাগিশ প্রমাৎ ন চোভ্রাব্রারগ্রেছিপাজি। ও

ষভ্তং বিপরীতপ্রতার-তংকাষাগোল দর্শনাদিতি; ন . তাজ্বলিতিহেতৃরাং—বেন কর্মণা শরীর্ষারকা তং বিপরীতপ্রতারাজাবনিমিন্তরাক্ত তথা চূতদ্বৈর বিপরীতপ্রতারদোৰদাযুক্ত কলবানে সামর্থাম্, ইতি বাবজ্বীরপাতা;
তাবং ফলোপভোগাজতর। বিপরীতপ্রতার রাগাদিদোরক ভাবনাজ্মাদিপত্যের মৃক্তেব্বং প্রব্রফলভারত্বেত্কসা কর্মণ:। তেন ন তসা নিব্তিকা
বিল্ঞা, অবিরোধাৎ; কিং তহি? সাল্লয়াদেব সাল্পবিরোধি অবিভাকার্যা;
বৃহ্ণপিৎসু, তরিক্লভি অনাগতভাৎ; প্রতীতং হি ইতরং। ৩০

কিঞ্চ, নচ বিপরীত প্রতারো বিভাবত উৎপদ্ধতে, নির্দ্ধিসরভাৎ—জনবধূত-বিষয়বিশেষস্থকাং হি সামান্তমান্তমানিতা বিপরীত প্রতায় উৎপদ্ধমান উৎ-পভতে, ষ্যা—ওজিকারাং রজত্মিতি। স চ বিষয়বিশেষাব্ধারণবতোহশেষ-বিপরীতপ্রতারাশরসোপসন্থিতভাৎ ন পূর্কাবৎ সম্ভবতি, ওজিকাদৌ সমাক্-প্রতারোৎপত্তে পুনরদর্শনাং। ৩৪

किर जू विकाशः शृर्वारभन्नविभन्नोजश्रजात्रकामजगःकारतरका। विभन्नोज-

প্রভাৱবিভাগাঃ শৃতরো বার্ষানা বিশরীত প্রভারকাভিষকশাৎ কুর্নজি; ববা— বিভাতবিশ বিভাগভাগি অক মানিবিপর্যরবিষ্ঠাঃ। সমাগ্রানবভাহিণ চেৎ পূর্ববিপরীতপ্রভায় উৎপভতে, স্থাগ্রানেহপাবিজ্ঞভাৎ শালার্ববিভানার্যে প্রভিন্নবিদ্ধা ভাৎ, সর্বক প্রধানবিধাবাৎ সম্পাতেত; প্রধাণাপ্রধাবরো-বিশেশাস্থপত্তাঃ। এতেন স্যাগ্রানানভারবের শরীব্যাভাভাবঃ কথাৎ ;— ইত্যেতৎ পরিভ্তম্। ৩৫

ভানোৎপত্তঃ প্রাণৃষ্ঠিং তৎকাল-ক্ষান্তরস্কিতানাক কর্মণামপ্রবৃত্তকলানাং বিনাশঃ সিংখা তবতি ক্লপ্রান্তিবিশ্বনিধ্যেশতেরেব; "কীয়রে চাত কর্মণি", "তত্ত তাবদেব চিরম্", "সর্কে পাপানাঃ প্রভূষ্তে," "তং বিশিষ্ঠ ন লিপাতে কর্মণা পাপকেন." "এতম্ বৈবৈতে ন তর্তঃ","নৈনং কৃতাক্তে তপ্তঃ," "এত ত বাব ন তপতি," "ন বিতেতি কৃতক্ষন" ইত্যাধিক্ষতিভাক; "ভানাগ্যিঃ সর্ক্রক্ষণি ভ্যাসাৎ কুক্তে" ইত্যাধিস্থতিভাক। ৩৬

বতু কলৈ: প্রতিবধাত ইতি, তয়, অবিভাবিবয়য়াৎ,—অবিভাবান্ ভি বনী,
তত্ত কর্ত্বয়াপপরে; "বত্র বাজনিব তাত্তরাক্রাছের পরেং" ই'ত ভি বন্ধাতি
—অনক্রং সবস্থ আহাবান্, বত্রাবিভায়াং সভায়রান্ধি তাৎ, তিবিরক্তবিতীয়চন্দ্রবং; তত্রাবিভায়ভানেক কারকাপেকং মর্শনাদি কর্মা তৎকৃতং কৃষ্ণক্র দার্শাতি—তত্রাফোইজং পর্জেবিভালিনা; বত্র পুনকিভায়াং সভায়ের্বজান
ক্রতানেক হল্রম প্রহাণম্, "তৎ কেন কং পরেং" ই'ত কর্মাসম্ভবং দর্শারতি।
তত্মাদ্বিভাবিবির এব ব্যবিষ্কৃত্র প্রস্থাবাৎ, নেতরত্রতা এতচ্চোভারত্র
ব্যাচিব্যাশিব্যমাট্রের বাক্রিক্রিজরেও প্রদর্শায়য়ামঃ। ৩৭

তল্পথেৰৈ তাবং— লগ বং কলিচন্তক্ৰবিং ল্লাম্ লাহনো বাতিবিজ্ঞাং বাং কাঞ্চিদ্ৰবভাষ্ উপাত্তে - ভতিনমন্বারবাপবল্যপথারপ্রশিবনাথানাদিন: উপ আছে—ভত্তা গুণভাবমুপপথা আজে—অরোহসাবনাথা যত্তঃ পুথক্, অরোহ্য-ম্মাবিকৃতঃ, মহাইম্ম কণিবং প্রতিক্রিয়ে—ইত্যেবং প্রভাহঃ সন্ উপাত্তে, ন স ইঅংপ্রভায়ঃ বেল বিভানাতি তর্ম। ন স কেবল্যেবজুভোহবিদ্যান্ অবিভালি-দোৰবানের, কিং ভবি, বধা পশুর্গবাদিঃ বাহনদোহনান্যপ্রাইরক্ষপভূত্যতে, এবং স ইআভানেকোপকারৈক্ষপভোজবাদ্বাৎ একৈকেন দেবাদীনাম্; অভঃ পশুরিব স্ক্রার্থের কর্মবিকৃত ইভার্যঃ। ৩৮

এতত্ত হি অধিমুখে বৰ্ণাশ্ৰমাধিপ্ৰবিভাগৰতোহাধকতত কৰ্মণো বিভা-সহিতত কেবলত চ পাল্লোকত কাৰ্যাং মহত্তথাবিদো ব্ৰহাত উৎকৰ্ম:; শারোক্তবিপরীকত চ যাতাবিকত কার্যাং বস্তুকাদিক এব হাবরাক্তোহণ-কর্ম; বধা হৈতৎ, তথা "অব এরে। বাব লোকাঃ" ইত্যাধিনং বক্যায়ঃ কংলেনৈবাধারশেবের। বিভারাত কার্যাং সর্বান্ত্রভাবাণভিবিত্যতৎ সংক্ষেপতো দলিতম্ সর্বাহীরমূপনিষৎ বিভাবিভাবিতাপঞ্জবর্শনেনৈবাপ-ক্ষানা। বধা হৈয়েহর্ধঃ কংলত দাল্লক, তথা প্রদর্শনিক্ষানা। ৩৯

বভাবেৰ, তভাববিভাবকং পুক্ৰং প্ৰতি দেবা ঈশতে এব বিছং কঠুৰ্
অন্ত্ৰ্যক্ষ, ইতোত্মৰ্শন্তি—বৰা ৮ বৈ লোকে বহবো পোহৰালয়: পৰবঃ
বস্তুত্ব আনিনমান্ত্ৰন: বা অধিভাতারং ভূজা: পালগ্নেয়, এবং বহপতভানীর
একৈকোহবিভান্ পুক্ৰো লবান্—লেবানি'ত পিলাগ্রাপলক্ষণাধন্—ভূমজি
পালগতীতি—ইয়ে ইজালয়: অতে বতঃ সংম্পিতারঃ, ভূতা ট্রাগ্রেষাং
ভাতন্যক্ষারেজ্যালিনারাধনং কৃষ্ণভূলিয়ং নিংগ্রেষ্ট্রক তৎপ্রত্রং কলং প্রাজ্যান্
বীতোব্যতিস্থিঃ: ৪০

তত্র লোকে বহপত্মতো ববং একজিয়েব পশাবাদীয়মানে ব্যাল্লালিনা অপত্রিয়াবে মচমপ্রিয়ং তবতি,তবং বচণত্তানীয়ে একজিন্ পুরুষে পত্তাবাং ব্যাত্তিটিত অপ্রিমং তবতীতি 'কং ডিঅং দেবানাম্, বচপশ্বরুষ ইব কুটুজিন'। ভজানেয়াং দেবানাং তল প্রিয়ম্ : কিং তৎ দু বদেভদ্ রুশ্বাত্তিত্বং কর্মকন মনুষ্যা বিদ্বাং বিজ্ঞানীয়ঃ। তবা চ পর্বমনুষ্টীতাকু ৬গবতো ব্যান্ত—

"ক্রিরাবভিত্তি কৌরের দেবলোক: সমান্বতঃ। ন চৈতদিটং দেবানাং মতৈত্তিকপরি বর্ত্তনম্য।" ইতি।

আতো দেবাং প্ৰনিব বাছাদিভাং, বন্ধবিজ্ঞান্ধ বিষ্ণাচিকীৰ্যন্ত আৰু কৃতি বাছাদিভাং, বন্ধবিজ্ঞান্ধ, তং প্ৰধা দা ধ্যাকিছিল। কৃতি বাহাৰনপ্ৰ প্ৰকাশিক বাৰাকিছিল। তাৰামুক্ত ক্ৰিবাৰানপ্ৰ প্ৰকাশিক বাৰাকিছে বাৰাকিছে। তাৰামুক্ত ক্ৰিয়াং প্ৰভাতি বা, কাকৈতৎ প্ৰদৰ্শিতং ভৰতি বেবাপ্ৰিয়বাকোন ॥ ৪৭ ॥ ১০॥

টীকা। ইগানী প্ৰস্থান্ত চহুৰ সংখন ৰংগ্ৰত্যা গঞ্চ কৰব পৰা ে — ঘদী ভাগিদিনা।

তত্ত্ব বৃত্তিকৃতাৰ স্বত্যাস্থানে কৰিব লগাৰ্থন — প্ৰক্ৰেন্ত । তত্ত্ব পৰিচ্ছেন্ত গলাক সৰ্ধভাৰত সাধাৰসভ্যানিতি হেতৃৰাৰ — জনসাক্তাব্যক্তি । সিদ্ধাৰে সংখ্যক্তে স্পাধিল লোকনাৰ— ন হীতি । সা ভৰি বিজ্ঞানসাধ্যা বা ভূগিতাত আৰু— বিজ্ঞান্ত । ১

হিৰণাগ্ৰত বোপনেশ্যক্তানান্ত্ৰপ্ৰভাৰ: গ্ৰানিক চতুই মুখ্ ইতি পুঙ্জ খালানিক জ্ঞানবস্থাৎ, তথ্যান্তংগদিন ভ্ৰমণিত চোপানেশাধীনধীনাবোাগনে) ক্ষতঃ ন চানীনিভাভীতকালাবন্ধেগিভিভাভিত চলিন্ বৃদ্ধানে । সমর্বভিত্তি চ লামানির জ্ঞানে । কালান্ধনেতিংস্থলত ব্যান্থপনাহত্যাৎ মহাবাবাবে প্রকৃত্যান্ত নাশ্বর ব্যান্থ ব্যান্থ ব্যান্থ ব্যান্থ ব্যান্থ ক্ষিত্র ক্ষান্থ ব্যান্থ ক্ষান্থ ক্ষান্থ

- ১৯ পশ্যানালাল দুৰ্ঘত — জ্বোতি। বন্ধৰ্থেৰ শ্বনাদৰ্শন্ত হতে তক্ত সৰ্ক্ৰান্ধান্তে সাধান্তালি কাল্বান্তেৰ ওলাওছতি বিভাগ । সাধান্তালি বােক্ত বিভাগমান্তা, যথ ১৪ বা ভ্ৰমনিশাহিতি আহমালিভাত নম ছৌট্ড। সামান্তলয়ং প্ৰকৃতি
সাল্বাত—জ্বেহাড়ি। তব্য স্ক্ৰিবাৰাপ্তেনিভাগ, কা ফানিক্তাত— মান্তাব্ৰে
ক্ৰেডি। ১

কিঞ্চ, জীবভারজ্ঞৰ ত্বাবিভাক্তং পার্মাধিক বৈতি বিকরান্ত্রমন্ত্র বৃষ্ণতি—
ত্যাব্রিন্তার্গরেত্তি । ত্রান্তবাধ্বাধ্য বিভ্নতে প্রাক্তিত্যোদেনা । বস্থভাবিপ্তককরনা বার্থেত্তাকা বাক্তীকরাতি — স্ত্রেতি । ততিন্ পকে বহুবজ্ঞানাংপ্রান্তি পরধার্থিং পরা বজাসীরেবের প্রকৃতি বাকো বজ্ঞানোচাত উতি বৃষ্ণা বজাং, তত্তি বজ্ঞানভভ্ মুগামালখনমিতি যোলনা। গোর্মাণীক ইতিবসমূল্যার্থেতিশি বজ্ঞানতে নির্মাহতীত্যালগ্যান্ত—মহ্পতি । নির্হিত্রমন্ত্রসম্পান্ত বস্তু বজ্ঞান্ত্রস্থান্ত্রী পুরুষ্ণা,
ক্রান্ত্রসমূল্য জ্ঞান্ত্রসমূল্য বস্তু বজ্ঞান্ত্রসমূল্য বস্তু বজ্ঞান্ত্রসমূল্য ব্যাহতি ব্যাবর্ত্তান্ত্রমূল্য ব্যাহতি ব্যাহতীয়ান্ত্রসমূল্য ব্যাহতি ব্যাহতীয়ান্ত্রমূল্য জ্ঞান্তর্য ব্যাহতীয়ান্ত্রস্থলা জ্ঞান্তর্য ব্যাহতীয়ান্ত্রসমূল্য আন্তর্যক্ষিত্রসমূল্য ব্যাহতিয়া ব্যাহতীয়ান্ত্রসমূল্য ব্যাহতিয়া ব্যাহতীয়ান্ত্রসমূল্য ব্যাহতিয়া ব্যাহতীয়ান্ত্রসমূল্য ব্যাহতীয়ান্ত্রসমূল্য ব্যাহতিয়া ব্যাহতীয়ান্ত্রসমূল্য বিভালিক সমূল্য বিভালিক সমূল্য ব্যাহতীয়ান্ত্রসমূল্য বিভালিক সমূল্য বিভালিক সমূল্য বাহাস্থিতিয়ান্ত্রসমূল্য বিভালিক সমূল্য বিলাক সমূল্য বিভালিক সমূল্য

আহিংধীতেঃ সুৰাক মিতাৰে আজ্ঞান আজং গোণাৰাল দুই মিতাৰে লাল নাছ কুলে আছে।

ক্রান্ত । ও এ প্রিল পত বুলাগতৈ সভাবিতা ভিধানাস্পাললা বালাবি সিংছভ জ্ঞানে আলে আনে ক্রমণি হিছা আজ্ঞান গ্রেছা আনে ক্রমণি হিছা আজ্ঞান গ্রেছা আলে ক্রমণারিক বিশ্বে ক্রমণারিক বিশ্বে ক্রমণার্থী নাম্পালিক বিশ্বে ক্রমণার্থী নাম্পালিক বিশ্বে ক্রমণার্থী ক্রমণার্থী ক্রমণার্থীত বিশ্বাহীত ভাবং । এ

খিতীয়া করমুখাপথতি - আনিস্ক্রেট্ডি। এঞ্চিফ্টবৈষ্ণাপ্রস্কান্ট্রগরিতি মুবরতি— ন তেমেটিড়া অনুপশন্তিবের সাববতি—ন্ত্রীডিড়া সাক্ষাবারোপ্রভাবেশিতিবাবার বিভাগারিক ক্ষমব্বিদ্ধা কর্মাব্দিক প্রস্কৃতিক পদার্থিত শাবং। বিভাগারিকি ক্ষমব্বিদ্ধা করেছে - আনিস্ক্রোয়াভিডিড়া সম্প্রে প্রক্রাগারিকি মাবং। বিষ্ণুভাবিকি বিভাগারিকি মাবং বিভাগারিক বিভাগারিক সাবিক্তি বিষ্ণুভাবিকি বিভাগার প্রক্রিক বিভাগারিক সাবিক্তি বিষ্ণুভাবিক বিভাগার প্রক্রিক

বিস্তাবদিন্তাশরেনায়—ম্রিক্তি। অৱশ্ববাদেশ্বাভনকাবোগাল্যভা একভাবিপ্রব-করবেন্তাশসংযোগি—তত্ম্বাংট্টি। গ

ব্যাবিদ্ধান বুঁ ন তথ্ঞীতাক বথকেতো বা অৰ্থ: গ্ৰুপ্তৰণ এংগাংগীতি বাং তথ্ঞান্তন্তী-কৰোঁত ভক্তবাজ্ঞীত । গ্ৰনাধি হংগাৰন্তাংগাং কথ্য শেকাণাৰাগদনা চ বাৰণ ব্যাবিদ আস্থানজ্যপথ্যাধি ভাৰণে বিভীছে প্ৰভাগ নাইচাজ্বাজ্ঞ। ব্ৰহ্মণেছককে নাম নাৰ্থাত্তন ক্ৰাভিশ্বভীক্ৰণাৰ্থতি —নাম্ম্যোক্ষ্মজ্বাক্ত ক্ৰাণ্ডনাগ্ৰন্থ ব্ৰহ্মণেছকে গ্ৰাবিদ্ধান্ত তেনাৰ্থী নাৰ্থাত্য ব্ৰহ্মণে গ্ৰাভ্য হ ক্ৰাজ্ঞ। স

বাংগান্ত ভালান্ত বিষয় বিষয় প্রতি না ক্রিন্ত নির্বাহন বিশ্ব নির্বাহন নির্বাহন বিশ্ব নির্বাহন বিশ্ব নির্বাহন বিশ্ব নির্বাহন বিশ্ব নির্বাহন বিশ্ব নির্বাহন নির্বাহন বিশ্ব নির্বাহন বিশ্ব নির্বাহন নির্বা

নকভাবিপুক্ষক জনাং নিরাকৃত্য অপক্ষে শাস্ত্রসূপ্তিং, সম্প্রতি প্রকারশ্বের পূর্কংশক্ষতি কর্পুন্য উল্লিট । আলিখনে বোচনা বিজ্ঞানমন্তঃ প্রাণ্ডের উল্লেট্য ক্রিট্র জন্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্ত

ভারের নিজান্তরবাহ—মুমুন্ধু-শুন্ডি। পতির্বেশনাঞ্জা, ভজা নার্পনিবেশ্ছেনিছিঃ, বেশো লক্ষরা রক্ষ,ভেষামূপ্রেশান্তেওিবসভিস্করজীভানের, তথাপি কবা ভেলনিভিক্সরত—
অল্ডিনিন্ন না ভূলাভিবিভাগেলাভ—ভ্রমান্তাকে ভোলি কবা ভলি পভাগিকনুপপন্নতে, ভত্রাহ—ভ্রমান্তেও। স্বাবেশ্বরবাদিবে ভোলে বেংক্তরবাহ—ক্রের্নান্তিও।
ভেগে সভাগপন্ন। কর্মানিত পেরংও। তথেন স্কুট্রাভি—ভ্রের্নান্তিভিনিন্তও। ভর্তেরে রামানিকেরপি কথা রক্ষরানিপ্রকানর্বাহার প্রোপনান্তিও। ব্যক্তবাদ্যানিতিও। ব্যক্তবাদ্যানিতিও। ব্যক্তবাদ্যানিতিও। ব্যক্তবাদ্যানিতিও। ব্যক্তবাদ্যানিকাও
ভারক রক্ষরকারতা ব্যক্তবাদ্যানিকাও
ভারক রক্ষরকারতা ক্রিয়ানিকাও
ভারক রক্ষরকারতা ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকাও
ভারক রক্ষরকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকাও
ভারক রক্ষরকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিলাকার বিভাগিত ভ্রমানিকার বিভাগিকার বিলাকার বিভাগিকার বিলাকার বিভাগিকার বিল

কিঞ্ সপ্ৰতিপক্ষে ওলপত্তি ক্ষমন্ত্ৰতি বিকলা বিভীংং প্ৰভাৱন মু চ্চেতি।
আন্তঃ দৃৰংভি—ল্পেন্টিকেন্টি। তং ব্যাহবেলাবিবাকামান্তিতা শহতে—
অচন্দানিতি। সম্প্ৰেনানবার তথ্যান্ত্ৰান্ত্ৰান্ত্ৰাই —নেন্ট। ভক্তা নানছেচপোনং, নানজানানক হাং। ন চ প্রাছাপাসনালগান্তভাক্ষণ, বিভজ্ন নইজ বানুপপছে।
ক্রতিক ন পূর্বনিভগত্তা'গলাবা'লেছিনী, ভংগান্জাপ্তা তত্তাবোপচারাং; অভে। ব্যক্তাবা
খতঃ সিছো ন সাম্পাদিক ইতাহি -বিভ্রান্তন্ত্রান্তন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তন্তন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তন্তন্ত্রান্তন্

রঞ্জোপণেশক্ত সম্পাঞ্চনতে বোষাস্তরনাধ ইন্ট্রান্ট্রনিটি তাদের বিবৃণ্ বিষ্টনর্থনান চটে সৈক্ষ্রনাউ। ববোজার বঙ্গ তাংশংগ্রমান আবুপনিবলী ভাত্র ভেতুরাক —ক্যান্তিন আব্যাহ স্থাতি । বর্ষান্তারনানগণনারবাদের করি ইত্যানু শালানারিতি । মুনিকানারে বাবাহিত্য লাক্রিকাল — এতাবাদিতি । না কেবলমুগণেশক সম্পাঞ্চনতে বৃষ্টাইন পাক্রিরোগাং, কিং তু সার্জ্বাপনিবর্ধিরোগােহ্রী ভাঙ্ক—ত্যাত্র । ইইন্থ নিব্যক্ত্য ভগ্রমান নিগমার্ভি—ত্যাত্র । মন্ত্র বৃষ্টারগােকে রাজক্তি লাগং জীবশহাের্ডিলাইছি-রোক্ত্য, উপসংহারে ঘটেল ইতি বাবহারাং ত্রিরোগাং লক্ত্য স্বাহাত্রিভাত আহা — ত্র্পানিতি । রাজভাবিপুরুষ করাগায়্প্রপানবিদ্যান্ত্রিবাধক্তেত্য স্ব্,ইলানীং রুজ্বোলিবাক্ত্য রাজ্বাক্তি । রাজভাবিপুরুষ করাগায়্প্রবিশ্ব বিশ্বতি সংজ্ঞান্ত্রপতি । বাবাহারণ অধিক্রেক্তি ভার্মান বাক্রিরাণ্ড সংজ্ঞান্ত্রপতি বাবাহারণ করামান্ত্রক্তি । ১০

শ্বোকরন্ত্রপথিতে কুর্মীবাহরন্তরান্ত্রাবিভানান্ত্রপথিকে পরে। গুরুঙে, ভবিস্থা চ এক-বিস্তুতি সংজ্ঞানিবিভিত প্রতে—আহজ্ঞানীতি। বাঞ্চান্ত্রিবিভানিক সাক্ষ্মিতি। তথের প্রপ্তরভি—জ্ঞানেক দৈতি। ব্যোজানগরে ক্ষিত্রবাহ—জ্ঞানিত লক্ষ্মিতি। বভারতেকে বাপ্রেনাজ্পপতি বিশ্বর্যকি ক্ষালালায়—ম ভেডি। ১০

ভাতাং বা বন্ধান্তনোর্ভেলতেংকা, তথালি । গুলাভিল্লবিদ্ধান্তাং ব্রন্ধবিদ্ধেতি বিশ্বতো বংশ-বিশ্বের বিশ্বর বিশ

কীৰপ্ৰয়োগভাৰতেলয় ভেলাভেন্তোলাগোপ প্ৰধেণ এক একপ্ৰবাচাং, ব জীবকন্তাবীজ্যক, স্প্ৰান্তাপ্ৰতেলগৈ লোকাপ্তত--প্ৰক্ৰীট্ড । ভলজান্ধেবাবেশিভ
আত্তা প্ৰস্কৃত্য, তলস্কা, তল আনন্তিবাং, অত এব ন তবক্ষ্ৰিপাণ ন চ ক্ষ্কৃত্য ক্ষ্কিআনান্দ্ৰিং, প্ৰস্ত ক্লিভাকাৰকক্ষিতক্ষ্যিতে ন প্ৰং এক বক্ষপ্ৰিপাণ ন চ ক্ষ্কৃত্য ক্ষিকআনান্দ্ৰিং, প্ৰস্ত ক্লিভাকাৰকক্ষিতক্ষ্যেতে ন প্ৰং এক বক্ষপ্ৰিভাবিং।
নাম্য প্ৰস্তি নাৰক্ষ্যিন নৰ্বাতি, ভজাপৌজনেষ্যাতে ন প্ৰং এক বক্ষপ্ৰিভাবিত।
নাৰক্ষ্যেতিতি ক্ষাব্যক্ত নিজ্ঞানিক ক্ষাব্যক্ষ ক্ষাব্যক্ষ প্ৰান্ত নাৰক্ষ্যান ভ কল্প তেইনবোচাতে, ন
ভাইক্ষ্যেতিত পালান্তি ক্ষাব্যক্ষ নিজ্যক্ষ্য ক্ষাত্ত, নাৰক্ষ্যান ভ কল্প তেইনবোচাতে, ন
ভাইক্ষ্যেতিত ভাইবিত নাৰক্ষ্যানিক নিজাক্ষ্য ক্ষাব্যক্ষিত্যাপ্ত আৰু, সাৰক্ষ্যানিক।
নুক্যাৰ্য স্কৃত্যিক সাৰক্ষ্যানিক ন ভ ক্ষাব্যক্ষিত ক্ষাব্যক্ষিত্যাপ্ত আৰু, সাৰক্ষ্যানিক।
ব্যক্ষাৰ্য স্কৃত্যিক সাৰক্ষ্যানিক ন ভ ক্ষাব্যক্ষিত্যাপ্ত ক্ষাব্যব্যক্ষয়ের বানিক্ষ্যানিক ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক্ষয়ের বানিক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক্ষয়ের ক্ষাব্যক্ষয়ের বানিক্ষয়ের বানিক্ষয

নিক, সর্বাচাশি সংসারত রক্ষণাবিদ্ধরাংখাসাভ্যতত্ত্ব সাধক্ষাদ্বশি ওরাধাক্ষরিকার্থপথনে কাংকৃশপত্তিরভাব নম চেন্তি। ১০ ওলিন্ করিবল ক্রেন্থি বিভাগনিকার করিবলৈ উল্লেখিকাংশবলি সভ্যয়তি ভাগনিকার করিবলৈ বিভাগনিকার বিভাগনিকার

পরশব্দ নিরারভা বণকং বর্ণনতি—তত্মানিতি। ওবাভিরেবেণ নগরাভীতি স্বর্গতি—বৈশক্ষ ইতি। ওংপদার্থসুদা বং-পদার্থং করাতি—ইন্ন্তিভি। ভরো-র্মভতো তেবং পরিয়া পদায়ন: ব্যাচটে—প্রাণিতি। তভাপরিজ্ঞিরখনাং—জর্জাং চ্ছেতি। কৰং ভৰি বিগৱীভবীবিভ্যাপভ্যাহ—কিন্তিভি। বৰাপ্ৰভিভানং কৰ্মাদেকান্তবন্ধনাল্য শাহ্ৰবিংবাৰং বৈব্যিভাহ—প্ৰয়াপ্তিভিভিতি। ভবিস্কৃতবন্ধন্ধন্বতসংগাহৰহিভবিভি বাৰং। কিছু ভবুবন্ধতি ভোজং পৰিস্কৃতা কিং ভববেহিভি ভোজাভারং
প্রভাহ—ত্তৎ ক্রপ্রাপ্তাদিতি। পূর্মবাক্যোভগবিভাবিশিষ্টববিকারিকেন ব্যবহিভং বন্ধনাসি সংগারীভ্যাভাবোৰ বন্ধাৰতা ক্রপিজোবিত্যবাধানবেবাবেহিভি স্বভঃ। আইমব
প্রধ্যেবজ্ঞান্ত্রেব ব্যাংশবিভোব্যব্যবহারভ বিষ্কৃত্যাহ—ত্যবিস্কৃতি । ১৬

অকৃত্যাশ্রণশার্থ বিবিচা বকুং পৃষ্ণতি — তহ্নীতি। স এব ইছ অবিষ্ট ইচারাশ্রনো শনিভ্যাৎ প্রাণনাগিনিগভ ভত শহৈবাশ্বসভাতুং প্রভাগালি বক্তব্যবিভাগি— নঞ্জিতি। আস্থানং প্রভাগালিভূং পৃষ্ণভত্তংপ্রোক্ষরন্ত্রাহিতি প্রতে — নম্মুজানিতি। আস্থানং তেং মতাক্ষিভূমিক্ষনি, তহি অভাক্ষেৰ তং বর্ণগানীতাকি প্রবং ক্রমীতি।

বেদং এতিজাস্ক্রণ: এতিবচন্ত্রিত ভোষ্টে — সম্ভারতি । এতাক্ষাক্রীবি-ক্রিয়ার্ডংকর্ট: বর্গন্ধি ভবেক্যাক্রাক্রন ইটিউ। বলি বর্ণনাক্রিয়াকর্ত্বর-পোক্রিয়ারেণ বিজ্ঞান। নোপনান্তি, ভবি বৃট্টাবিনাজিকেনাম্বোজ্যা কুনাকু অবানিভার্কন এবং ভবি সূত্র্টারতি। ১৭

প্রমাৎ প্রবহনাথমিন্ মহিনহনে মই বিশ্বা বিশেষো নাজান্ত পর্যন্ত ।
বিশেষভাবং বিশাস্থ কি অন্নী প্রানিনা । বইজ মই বৃহর্তিটোত বিশেষে অভীরবানে
ভগভাবেভিন্মাণ্ডভোগভাগি— প্রমিন্না ওত্তি । ওবা মইবালি বিশেষো ভবিষ্ঠীভাগিলান্ড প্রমিন্ত বিশেষ প্রতিব্যবহান আইতি বিশেষবহীকৃতা পরিস্কৃতি—নেত্যাদিন্তা । এতবের কুইবভি - অস্ত্রীতি । সর্বী মইয়েম্বিক্রোভি । বৃট্টের্ডি ভারবব্রবাভিক্রেভাগে বিশেষ বিশাস্থিতি—যো সূত্রিটারাতি । তর্ত্ত বৃষ্টিরাতি ভবত্তি ভারবব্রবাভিক্রেভাগে বিশেষ বিশাস্থিতি—যো সূত্রিটারাতি । তর্ত্ত বৃষ্টিরাতি আরি বৃষ্টিরাতি ভবত্তি ।
বিভাগেলান্ত ভবত্তি ভবত্তি ।
বিভাগেলান্ত ভবত্তি ভবত্তি ।
বিভাগিলান্ত ভবত্তি ।
বিলান্ত ভবত্তি ।
বিভাগিলান্ত ভব্তি বিভাগিলান্ত ভবত্তি ।
বিভাগিলান্ত ভবত্তি ।
বিভাগিলান্ত ভবত্তি ।
বিভাগিলান্ত ভবত্

গৃহবাং প্রমাণভাষারারিতি প্রতে—ক্রিমিডি। ভর্তাব্যাতি—কাঢ়ে।
মাডে। ভ্রানিভাগে গৃহীবস্থতাবে সাধারতি—প্রান্তিহ্রান্তি। উত্তর্ব বৃদ্ধা বাচীকরোভি নিউডাব্যেডি। স্তাতি নিভাগে গৃহীং প্রভাগ সম্বাতে—ক্রান্ত্রিতি।
ভবৈবোপণভিষাৎ—অনুমান্ত্রান্তাত। ভবেষ বিশ্বণোভি—অক্রান্ত্রিতি।
আগ্রিভে চনুমানিহীনভাগি পুংলং বরে বাসনাময়বটাবিবিয়া গৃহীক্রপানা, বা চ সা ভারপ্
ভালে চনুমানিহীনভাগি প্রমানিহানিভাগি ব্যানিহানিভাগিত।
ইবাা : বিসভা বিভাগবাভিচাহিদাং পরেইবাব্যাভি প্রমাণেশভেভিভার্থ। নবাদা
গৃহীকভাবন্তেং করং বৃট্টের্ডেড্রাভ্যনত আব্—ভ্রহ্রান্তি। নিভাবে ব্যক্ত-ক্রিকালি

म्बद्धाकि। निरायकः परिवर्ष् । यह्न पृष्ठास्त्राह्म । यहा पृष्ठाप्रयोगिकः। वाषा प्रदेशदेशि । विकास । व

নিভাবৃত্তীৰভাষৰান্তপৰাৰ্থং পৰিপোধা প্ৰভাজভানি ধোজানি—ভানুপ্ৰন্তেন্তি। বাজা-শেৰবিবাৰং চোলাভি—নাৰিভি। জিং কৰ্মখেনান্তলা প্ৰানং বিভগতে, কিং বা নাজিবেনিভি বাজাং, নাজোহনজুলগৰাবিভাল—নাভি । ল'বিভীৰ ইভাল—এবামিভি। ভবি ভবিষঃ আনাভ্যয়ণে ভবামিভি। ভবেৰ আইনভি—এবং সূত্ৰটোৱাভি। ভবি ভবিষঃ আনাভ্যয়ণে ভবামিভি ভুলোবিবাৰে ন প্ৰন্থ ইভালভান আন্তলানেতি। ন বিপ্ৰতিবেদ ইভি পূৰ্বেণ নগৰঃ। নাল্যভাৰৰ্থং বিবৃণাতি—নাভিভি। নিভাৰ বন্ধপত্তিভি পেনঃ। বিপ্ৰান্তম্ব গালীয়নুতিবিভাগাৰু। কভাং গৃত্তীঃ ভ্ৰান্তমেভি। আছবিষয়কুলণা নাল্যভাৰঃ বাজিলালাবিভিভাগভাহ—না ভৌলিভি কিং চ, দুইবি গুভাছ্যুকা বা গৃত্তিপেভাবেদ নাভঃ, ইভাল—না ভেভি। আন্তল্ভ প্ৰনাল্যভাবাধিভি ভারঃ। বাজিয় ইভাল—না ভেভি। আন্তল্ভ বাল্যভালাভ প্ৰশাল্যভাবাধিভি ভারঃ। বাজিয় ইভাল—না ভেভি। আন্তল্ভ বুজিৰ শোৱেছণি ক্ষুণ্ডনবাল্যভানজীক্ষণার বাজা প্ৰেৰিবাবাধিভিজ্যাপনংগ্ৰতি ভ্ৰমান্তিভি । ২০

ৰাজ্যান্তরখনাকাপূর্বক নানন্তে—তেও ক্রপ্রয়ান্ত । ওবজরাবি বাচাই ন্যুক্টোরিতি । ই'ভ-পদনবৈধিতানের ব্যবহাত । ক্রপ্রকাশ বাচাই ক্রক্রেডীড়ি । ব্রপ্রাহণ পদার্থরোবিধে বিশেষগান্তাব্যভিত্যতা বাজ্যার্থনাক—ভ্রুক্রেডি । আচার্থোপ-বিশ্বেংর্থ বন্ধ নিজ্ঞান দর্শন্তি অনুপ্রান্ত । ইতি বন্ধো বাজ্যার্থক্রানস্বান্তার্থঃ । ইলানীং ক্রম্বাজার বাচাই —ভ্রুম্যান্তি । স্প্রভাবনের বাাজহোতি—অব্যান্তর্কারিত । ব্রক্রিয়া সংস্কৃতি বিশ্বরা ও বুচাত ইতি পদান্ত নির্বেধিবন্ধ প্রশংক্তি ভ্রুম্যান্তর্ক্রিডি । বৃহধ্ব ক্রিটিছিতি—অব্ প্রান্তি । ব্রক্রিটিডি । ব্রক্তি ক্রিটিছিতি—অব্ প্রান্তি । ব্রক্তি ক্রিটিছিতি—অব্ প্রান্তি । ব্রক্তি ক্রিটিছিতি—অব্ প্রান্তি । ব্রক্তি ক্রম্যান্ত । ব্রক্তি ব্রক্তি নির্বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি ব্রক্তি নির্বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি ব্রক্তি নির্বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি ব্রক্তি । ব্রক্তি ব্রক্তি । ব্রক্তি নির্বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি ব্রক্তি নির্বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি ক্রমান্ত । ব্রক্তি বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি নির্বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি ব্রক্তি নির্বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি বিশ্বরান্ত নির্বিশ্বরান্ত । ব্রক্তি নির্বিশ্বরান্ত ব্যক্তি নির্বিশ্বরান্ত নির্বিশ্বরান

ষণারিহোজ্ঞান বস্থবারারিকাতিবন্ধননিব্যালিবাক্ত চানিকাবিশ্বন্ধেত্ব ভণা জাব-বিতি বক্তুং ভর্বো যো দেবানাবিত্যানিবাকাং ওলক্ষরানি বাচেই ত্রেত্রেভি। ববোজেন বিবিনাহর্লানিক লপার্থপরিলোবনানি:নতার্থং। জানানেব মুক্তির্ন সাধনান্ধরা-বিজ্যেব লার্যার্থং। বিবক্ষিত্রবিকার্থানিরবং প্রকট্ঠতি—ত্রপ্রভ্যানির্না। বো বং প্রভার্থান্ত, দ এব ভলত্বনিতি পূর্বোণ সম্বন্ধঃ। রক্ষেবাবিন্ধরা সংসর্গত, মুচাতে চ বিন্ধরা, ইত্যুক্তরাক্ষেবাদীনাং বিন্ধাবিস্থান্তাং বছবোক্ষেক্তির্বিন্ধরা সংসর্গত, মুচাতে চ বিন্ধরা, ইত্যুক্তরাক্ষেবাদীনাং বিন্ধাবিস্থান্তাং বছবোক্ষেক্তিরাক্তাং —দেবান্ধ্যান্তিন্তা-ক্ষীন্তি। ভলত্বির ভেলবর্টনে কা হানিরিত্যাপ্রাচ্চ—পুর ইন্ডি। আবিন্ধকং ভেল-মনুক্ত ভলার্না হিত্রকটেত ক্রক্তির বিন্ধাবিন্ধান্তাং রন্ধবোক্ষেক্তে না প্রবাধিনের পর্বাবিধ্যান্তিই পরিমার্শন্তি-ক্ষিতি। প্রবোধার প্রাপণি ভন্ন ভন্ন দেবানিশ্বীরের পরবার্বধ্যে প্রকার্নাক্তির, উপ-বেশিকং জ্ঞান্ধন্বনিস্থান্তাশ্বনাহ—ভ্যান্তি। তবৈব্যুব্ণরজ্ঞানান্ত্রারিক্সরান্ধর্না: ১২২ ्ष्टेष्ठकिशारियाकावयकायां याक्रावि—क्यकां देखिः गामायक्ष्मिकाव्यक्षित्रम् अवस्था गाहरो—क्यथिकाप्रेषित्रम् । क्ष्माम् युक्तिकाक्ष्मियां स्थानिकार्यक्षित्रक्षित्रक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षित्रक्षित्रक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षायाव्यक्षायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षायाव्यक्षित्रम् । क्ष्मायाव्यक्षित्रम् ।

ধোনাংসি বচৰিয়ানীতি এসিছিনাখিত। শৃষ্টে – হাৰ্ড্ডমানিকৈছিটি। শ্ৰেন্ড স্বাহেনোন্ত্ৰনাক্যনাগার ব্যাক্ষোতি – আন্ত আংক্ত্যোন্ট্না। বংগক্তেনায়াবিদ্য একারেণ রন্ধবিজ্ঞাভূতিতি সময়:। অণিশ্রণার্থং ক্ষান্তি –ক্মিমুক্তেতি। স্বাধীব্যান্তর বিশ্বকরণে প্রাধ্যে শেষ্টি কিযুত বাচাবিতি বোজনা। ২০

অথাপ্ত চিবেৰাবোগৰভিপ্তে চোৰৱাত - ক্ৰছ হৈছে । প্ৰাণিবিজ্ঞ বৰ্ণৱৰ্ উন্তৰ্ভন্ত ইতি। অবৰণানিবোন্ধৰণ দেবাৰকো ৰবাৰ্ এতি বিছং কুৰ্মন্তীতি প্ৰেং। কৰং দেবাৰীন্ এতি বৰ্ত্যাশায়শিবং, ক্ৰাহ - ক্ৰমন্তহোদেতি। বৰা পক্ত-ৰেং স দেবাৰামিতি বছৰ্যাশাং পত্ৰাপুক্তৰালি তেবাং পাৰকল্লাকেবাৰকলাৰ এতি বিছং কুৰ্মন্তীত্যাং - প্ৰত্মিতি। 'অবো বন্ধং বা আলা সৰ্কেবাং ভূতানাং লোকং' ইতি চ তেবাং সৰ্ক্মাণিতোগ্যক্ততেক সৰ্ক্ষে তৰিছকরা তবতীত্যাক - অহ্পো ইতি। লোকক্ষভাতি গ্ৰেম্বৰ্থ একটনতি - আজোন ইতি। বৰাংধৰণীৰ্ প্ৰভূত্যৰণি বিছ-বাচনতি, তথা বেবাৰতঃ প্ৰতিপ্ৰিন্নক্ষণাৰ্থং প্ৰভল্ঞান্ কৰিবং প্ৰভান্তম্বাধিমুক্তি বিছং কুৰ্মন্তীতি তেবাং ভানু প্ৰতি বিশ্বকৰ্ত্যপ্তা সাৰকাশৈবেভাৰ্থ। ২ং

পণ্ডনিগৰ্ণনেৰ বিৰক্ষিত্ৰৰ্থং বিৰুণোতি—অপাশুনিক্তি - পণ্ডহানীয়ানাং বছৰ্যাণাং গেবাছিতী বন্ধাহ কেছুমাহ—অহস্তেক্সামিন্তি। ইডল্ড বেৰালীনাং বছৰ্যাৰ এডি বিষক্ষবন্ধান্তৰ্জাতো সভাবিভাবিভাবি—ক্ষমান্ত্ৰি। ইডল্ড ডেবাং ভাব্ এডি বিষ্ণতর্ত্তর ভাজীভ্যান-অন্থ্যক্তি। বলোকো তেঃ। এবংবিদ্ধ সর্বান্ধতাকোহর্বিভি কর্মনাবন্ত্ব । ক্রিলাপায়বন্ধার্থকভার:। বন্ধবিদ্ধেশি বন্ধুনাপান বেবারিপারভন্তাবিবাভাগ কিবিভি ভে বিশ্বনাগরভীভ্যাপভ্যান-ক্রজাবিত্র ইতি। বেবারীনাং
বন্ধুবান্ প্রতি বিশ্বকর্ত্তে শ্রামুপপারিভার্পসংহরতি—ভজ্যাটিট্টি। ব কেবলযুক্তবেন্ধুবলাবেদ, বিং ভূ সাবর্থাভেভার-প্রভাক্তরভ্রেক্টিটি। ১৬

নাবর্ব্যাক্তেবিক্সাকলপ্রান্তের কেবাং বিশ্বকরণ, তবি কর্মকন্যান্তার্থন জারিডারিপ্রস্থাং দ্বতে —স্বিভিত্য করত তেবাং সর্বায় বিশ্বাচনগরিভাও আর ছেন্তেডি। অবিপ্রায়েল বিশ্বাসাভাবং। সামর্ব্যাহিশ্বকর্ত্ত্বেংভিপ্রস্থান্তর্বার জ্বেপ্রতি। অভিপ্রস্থান্তর্বার—ক্রেপ্রাইলাজি। বিশ্বকরণে প্রভাবনিতি পূর্বেণ সরবাং। ইবরাধীনাব্যাহক্ত্বাক্তর্বাকর প্রসাদমার—প্রস্রাং ক্রিভিত্য "এই ছেব সাধু কর্মক কার্যানি।" "কর্মী
হৈর ভত্তত্বাক্তর প্রসাদিবাকাং লাপ্রশ্বার্থান বেরাধীনাং বিশ্বকর্ম্বরাধীনামিশি ভংসপ্রবার্যার্যান্তর ক্রে বিশ্বাসাভাবান্ত্রপ্রস্থানাং প্রাক্তিরিক ক্রিভ্রার— সম্ভোক্তির স্থিতি।

ক্ষিত্ৰত্বৈত্ৰিক চোডাং লিং বা বৈদিকত । ইতিবিক্ষান্তং দ্বছতি -- মেত্যাদিমা।
হয়াছাৰশিপালহিবল ছ্ডান্তালকৰ্নাৰ প্ৰাণ্নাং প্ৰছংগাদিভাৱতমান্টো অভাববাৰে চ
বিহুত্নিবিজ্ঞানবৈতিজ্ঞানবৈত্যালক্ষ্ণান্তপ্ৰপান্ত কৰ্মকঃ এগৰেইবাৰিভাৰ্যং বিতীয়ং
প্ৰজ্ঞান -- ক্মুক্তে । কৰ্ম হৈব' ইত্যান্তা প্ৰতিঃ 'কৰ্মণা বৰাতে অভঃ' ইড্যান্তা
প্ৰতিঃ অগবৈচিজ্ঞান্ত্ৰপত্তি । কৰা কেতুনিছিভিত্যালকা কৰ্মণা কেনিকলে বিশ্বকন্ত্ৰীভাৰত্মান -- ক্মুম্পামিতি । কৰা কেতুনিছিভিত্যালকা কৰ্মণা কোমকলে বিশ্বকন্ত্ৰীভাৰত্মান -- ক্মুম্পামিতি । কৰা কেতুনিছিভিত্যালকা কৰ্মণা কোমকলে বিশ্বকন্ত্ৰী
ক্ষুম্পামিতি । কৰা কেতুনিছিভিত্যালকা কৰ্মণা কেনালাল বিশ্বক্ত বিশ্বাক্তি । কৰ্মণা কোমকলি --ক্সুম্পা ক্ষুম্পালক কামকলনপ্ৰভাৱতমান ক্ষুম্পান ক্যুম্পান ক্ষুম্পান ক্ষুম

ইতাহিশি কর্মকলে নাবিপ্রভাগনীতান —ক্রের্মনামিতি। এবাং বেবাদীনাং কিছ্-বিশ্বন্ধনে কার্ব্যে বর্ণনিজ্বিবেটবাং প্রাণিকর্মাণকানব্রের বিশ্বন্ধরণাথতিপ্রসঙ্গাদভোহন্তরাশি সর্বান তবাং তবংশকা বাভোতার্য:। তত্র তেবাং কর্মবন্ধরিছে ভেশ্বন্ধনান —ক্রেন্সাম্প্রস্থিতে। বিশ্বন্ধনান কি কার্যাং ক্রেন্স্থলানরতি। ন চ দ্বংগদুতে পাণা-দ্বন্ধতে, দ্বংগনিবের পাণনামর্থাক সাম্বাধিগতভাগ্রভাগেরার্থাৎ, তথ্যাংপ্রাণিনাম্বন্ধনান ক্রেন্সাল্যে বিশ্বকারণবিতার্থ:। দেবাদীনাং কর্মপারতন্ত্রে কর্ম তৎপরতন্ত্রং ন ভাব, প্রবানপ্রবানবিতার্থকা ক্রেন্সাল্যান্ত্রান্তর্ভাগিত। ইভক্ত নামীনাং নিয়ভো গুণ-প্রধানপ্রভাগিতাহ্—দুর্বিত্রক্তর্মেক্তিত। ইভি-বংলা দেবর্থ:। বতো গুণপ্রধানভূতো বভিবিত্রবের বাদিবিপ্রভিপতিং ক্রেন্সাহন্ত্রাক্তিতাট্ননা। কর্মং তবি বিশ্বর্যভান্ত

ংকেচর্থে সমসন্তর্থকা ব্যান্তরে - জ্রুনে ভানে কৈছি । কর্ণ: ব্রহ্মবিদ্ধান্তর্ক । বর্ণে ব্রহ্মবিদ্ধান্তর্ক । বর্ণে ব্রহ্মবিদ্ধান্তর্ক । বর্ণে ব্রহ্মবিদ্ধান্তর্ক । বর্ণে ব্রহ্মবিদ্ধান্তর্গক । বর্ণে ব্রহ্মবিদ্ধান্তর্গক । বর্ণান্তর্গক বিদ্ধান্তর্গক বিদ্ধান্তর্গক বিদ্ধান্তর্গক বিদ্ধান্তর্গক বিদ্ধান্তর্গক বিদ্ধান্তর্গক বিদ্ধান্তর্গক বিদ্ধান্তর্গক বর্ণান্ত্র্গক বর্ণান্ত্র্যান্ত্র্গক বর্ণান্ত্র্যান্

ভাৰভাৰভাৰদৰভাৰৎকলে দেবাৰীনা ন বিশ্বকৃতিভ্যুক্ত-পেন্ডা কৰ্বা: নততে একং ভ্ৰুইডিড । আনভানভাৰদৰে ন কলজান 'নবৰ্ডবেকানানিব ভন্নলানাপ ব্ৰহ্মানীভি আনস্বভাজাবাৰ। ন চান্ত্ৰেৰ ক্ষাৰ্যজ্ঞানানি আনিংবাছ্মিপি প্ৰাণ্যকেত্ৰভাৱ ও দৃইভাব। অভ্যোক্তিভাৱনিক আন্তৰ্ভাৱনা নিবৰ্ডবেকা গুলাবালাক ক্ষান্তিভাৱনিক ভ্ৰুতিভাৱনিক ক্ষান্ত্ৰিভাৱনিক ভ্ৰুতিভাৱনিক ভ্ৰুতিক ভ্ৰুতিভাৱনিক ভ্ৰুতিক ভ্ৰুতিভাৱনিক ভ্ৰুতিভাৱনিক ভ্ৰুতিভাৱনিক ভ্ৰুতিভাৱনিক ভ্ৰুতিভাৱনি

করারঃ পরাতি—এবং তহুনীতি। অধিজ্ঞা জানসভ; উরজ্ঞান নিবর্ত গুড়িত। তদ্বয়তি - সেন্ত্রাদিনো। জাবনাগিছেত্ব প্রভাগে বৃত্তুকিতোহনং তোক্ষেত্র বিভাগিন নক্ষা। তত বৃত্তুকাল্লাপর ভক্ত প্রকাশালা নিবর্ত্তা নিব্দিন্ত। প্রভাগনাভিত্য প্রভাগনাভতে—অনুপ্রভিত্য বিভাগত নিব্দিন্ত। প্রভাগনাভিত্য প্রভাগনাভতে—অনুপ্রভিত্য উর্কাশিনা প্রভাগনাভিত্য ব্যাধি – সেত্যাদিনা। তবের বেবং বিশ্বয়তি—্ব্যুক্তামিক্তি। পালার্থে জানসভভিত্য বিভাগনাভিত্য বিশ্বয়তি।

আরেতেবেশনীতেতি অবভনাজনান-সভিনাত্রসভাবে ততে। বিভাগানাথবিভাবতি বিভি শালাবিভিজনিতিবিভাব—অভ্যক্তীতি। আন্বর্ণাস্থাকে নবেংশি ন নান্তবিবন্ধ ভাবিভাগানাথবিভাব নিবর্তনিত। আনুবিভিন্যভাবীসভাবে নবেংশি ন নান্তবিবন্ধ ভাবিভাগানাথকে নবেংশি ন নান্তবিবন্ধ ভাবিভাগানাথকে নান্তবানাথিকৈ পরি-বর্তীত—লাক্তভাবানাথকৈ কেন্ত্বীতানাবান্তবান্তবান্তবাহে নান্তবান্তবাহে আনুবন্ধ ভাবিভাগানাথকৈ কর্মান্তবাহিন ভাবিভাগানাথকা নিবর্তনা ক্রিলালাকা নান্তবাহিন ভাবিভাগানাথকা নান্তবাহিন ক্রিলাভিন ভাবিভাগানাথকা ভাবিভাগানাথকা নিবর্তনাতি—ভাবানাতিক ভাবানাথকা ভাবানাথকা ভাবানাথকা ভাবানাথকা ভাবানাথকা নান্তবাহিন ভাবানাথকা ভাবানাথকা

তানাবৰ্ণাগৰেণাবিগতিত্ব পততে—আৰ্থনাদ কৈতি ভোনিতি। পতিপ্ৰসংক্ষৰ
বৃষ্ণাভি—ন জুকুনিতি। বংগজক্ষতীনান,বাগৰেণাপ কৰা সন্দৰ্শবোপানিবৰাং ভত্বপ্ৰসন্তিবিত্যাপত্যাহ—প্ৰজ্যান্তি। এভাবনাপ্ৰাপ্তবাৰজ্ঞানাভৰজ্ঞাননিবৃত্তিবিত্যভাৱনাজভাৱত সন্থায়। অহাবীসহা প্ৰতীতি তাসাং প্ৰবৃত্তে সংবাহবিসংবাহাজাং মানহাবেপাচভোষাৰ্থবাহতেতি প্ৰসন্তভেইত্বং পততে—প্ৰজ্যাক্তি। প্ৰাভ্যৱহংগীগৰাঙা, নাম্বনকংসাভিত্য: ভভ বেলালা প্ৰজ্ঞাহ বোৰহজীতি ন সংবাহালিপভেত্যাহ সোক্তিক্তি। বিষধস্ভাবনাজিত্যাপি কলজভেত্ৰব্বাহ্বং স্বাভিত্তিত্যাহ অনিক্ষেত্তি। আন্তল্ঞানভ ভবজাননিবৰ্ত্তিক প্ৰসভত নিয়নকাপত্য ক্ষতীভাবি — ক্তআণ্ডিক্তি। ভোক্তানকৰ্তান্ত্ৰিকে বিশেষ্টি—জ্বিদ্যাদ্ধীতি। ১০

আননদভেরস্থান্তানত বাচন্তানধানির নিছের জানং বংগুলিং, সন্তান্তি প্রোক্তনমুদ্রনিতি। বর্ণনায়ন্তা আনবংগনন্তানি পেবং। প্রায়ের বর্ধনের বিশ্বনার কিবলার ক

নমু জানবনারভকর্মবদারভাগি কর্ম কর্মবাবিশ্বোরিবর্তরিবাভি, নেডাহ—ভেনেডি। অবিস্থানেশেন সংগ্রন্থত কর্মণো বিস্তা নিবর্ত্তিনা ন তবতীভাত্র বেডুমার অবিয়োগিশ-নিক্তি। স বি জানাবারজ্য কর্ম কীরতে তব্যবিরোধিশাদবিভালেশাক তব্যহিতেরভাগা জাবস্থৃত্বিশাস্ত্রবিরোধানিতি ভাবং। আরম্ভ কর্মণো জানানিবর্তুত্বে জান্য কর্মনিবর্তুক্ষিত্তি

क्षाचारामा उपूर्वः बाजनम् ।

क्याः श्वीविधिक्षाव-विकाः कार्योकि । श्रीविधिक्याव-श्वाक्षेत्राणिक । कार्य-विद्यां विश्वविक्षावन्त्राव्यकः वर्षः कार्याश्वयक्षाक्षात्राव्यक्षात्राव्यक्षात्र्यः कर्यवाश्यक्ष्यः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः व

ন্ধনাংকতর্থনির্ভাবণি নিচ্বল্ডেনার্ডকর্ম ন নিবর্তকে,ডবাচ ববাপুর্বাং নিপরীভ প্রভারানিপ্রপুঞ্জিক্ষবিদ্বিশেবো ন ভাগত আব—ক্রিপ্রেক্তি। কেতুনিভার্থং বিপরীভ প্রভারবিষয়ং
বিপর্বভি—অন্যেপ্র্রেক্তি। নার্লাত নিব্বিবরে বিবরণভাবাবিপরীভপ্রভারভার্ত্বপ্রিবুপ্রক্তি—জ ভেডি। আল্বভাগৃহীতবিশেষত গাবাভানতানবন্দাতি বাবং,
আগ্রহনোভি পাঠে পার্থেবার্থ: বিহুনো বিপরীত প্রভারানিপ্রতি ভানেহণি ন বরাপুর্বার
ভবস্বং, বনা ভূ ববাপুর্বাং সংসারিদ্বিভাগিতাহবিবোধানিভি ন্যোভন্ ন পুর্ক্তনাদ্বিভি।
ভব্যাভূত্বং প্রবাধ্যতি—শুস্তিক্রকাদ্বিভিত। ৩০

বধাজানহতে। বিশ্বীত প্রভাবভাবোচসূত্রতে, তথা ভবভোগণ কচিবিশরীভঞ্জাতে।
দৃপ্ততে, তথা চ কথা ভবাস্থভবিব্রোধো ন প্রসংহতিত্যাশ্বা প্রেশ্কলানবভি বিশ্বীভঞ্জাত।
সংস্কৃতি নাশরোক্ষণানবনি ওকার্চাবিভাভিগ্রেখনাই—ক্ষতিতিতি । পরোক্ষানাবারঃ
সংখ্যার্থ: পর্কারী বশরোক্ষানার্থা অভ্যাবিভাজানাভিবিক্তক-ধ্যাব্যাভাবোভিং ।

বিছুৰো বিধান্তিন নামন্ত্ৰ বিপক্ষে বোৰনাৰ—জ্মাণ্ডিত। তংশুৰ্কতবন্ধনি-মানিলগৰ্বঃ। সমান্তানাবিহাতে বোৰাত্ত্ৰাণ —জ্ফাং চ্ৰেডি। জানাবজানবাংনে ভত্তবিধান্তানসা স্বিধন্নসা বাধিত্তার বিহুৰো ভাগতিবিভাগণাত জানাব্যাক্ত ভজ্জন নাজেন প্রায়ং ছিডিভেডনাবাং প্রেমিডি সভোগুতিপক্ষং প্রভাগ — প্রভ্রেমেডি। প্রযুক্ত-ক্লমা কর্মনো ভোগাল্ভে করে নাত্তাভূক্তিক স্থাংনেতি ববিং। ক

ৰাৱকৰ্মণা কেইছিচিম্কে,ডংবৰাং আন্নিৰ্বাচম্পনাৰত—জ্ঞানেশ্থপজে-নিন্তি। তথা দ ব বেৰাল্ডনৈতি বিছবো বিভালনপ্ৰাণ্ডো বিছনিবেৰজ্জাত্বপদ্যা ব্ৰোজেহিৰো ভাঙীভাৰ্য:। ব কেবলং জ্ঞভাৰ্যপদ্যা ব্ৰোজাৰ্যনিছিঃ, কিন্তু ক্ৰতিস্থাতি—জ্জীয়ত্তে চেত্যান্দ্ৰনা। ৩৯

ভীবৰ্কিং সাধ্যতা ভালকলে প্ৰভিবতাতাৰ উক্তঃ, ইযানীং পূৰ্ব্বোক্তং প্ৰাধীক্ষক্ষৰতি,
—যান্তিভি। পণিবং বি বিশ্বনাহিবিদ্বো বৈতি বিক্লাহিক্তঃ দ্বঃক্তিনিক্সীকরোতি—
তল্পেন্তালিকা। পণিবলোতি শেষঃ। তবেৰ ক্টাইনি-আনিক্সাইনিভি।
অবিশ্বনাহতি কঠবালীভাৱ বাননাব—যন্ত্ৰিভি। বজাবাৰখালাবং প্ৰক্ৰোপ্ৰামিবিদ্বা ক্ষতি—অনুস্যাক্ষিতি। প্ৰশিক্ষ বিশ্বনা বেজাকং বাতীক্ষ্ঠিং কন্য নাতি কৰ্ম্বাধী-ভাৱাপি প্ৰধাণনাম শ্ৰু পুনন্ধিভি। বিভাগে সভাগৰিভাৱাত্বক সানেক্ষ্মৰনা ভ প্ৰধাণং বন্ধ সম্পদ্ধতে, ভাৰ ক্ষানেৰ কাষণাত্বৰ কেনেভ্যাহিনা ক্ষানেল্যক্ষৰ কৰ্মবিভিতি বোজনা। প্ৰধাণনিভ্যক্তি বিশ্বস্থতি—ক্ষ্মানিক্তি। গ্ৰ বিষয় বৰা কৃষ্টা ভৰতি, তথা "অধ বোচভাব্" ইন্তাগাবনভয়ন্ত্ৰ বৰ ভথাতে প্ৰথমিকাই। তথকলানি ব্যাভবাভি—অত্থান্ত্যাহিনা। নিভাগন্তামন্ত্ৰীয় বৰ ভথাতে প্ৰথমিকাই। তথকলানি ব্যাভবাভি—অত্থান্ত্যাহিনা। নিভাগন্তামন্ত্ৰীগাবিদ্যান্ত্ৰাগা(ছা)বনলাই। বাবো গভপুন্দানিনা পূজা। বন্যুগলালো নৈবেন্তসমৰ্গন্ত: প্ৰনিধানকৈকাঞান্ত। ব্যালং ভৱৈবানকভিতপ্ৰভাৱপ্ৰাক্তৰণ্ড। আদিশ্যং প্ৰছিলগাভিপ্ৰহণাইন্। কেন্তৰ্পন্তলোপাসনং ব পান্নীত্ৰিভাভিপ্ৰেভাভকেৰ বিৰুপোভি—অত্যাহিলাহিন্ত। তথা মুন্নাল—ন্ জ ইতি। বাক্যান্ত্ৰমন্ত্ৰীয় বাচাই—ম জ কেন্ত্ৰস্থাতি। সোহবিধানেবৰ্জপ্ৰীয়-বন্ধাং পণ্ডৱিব খেবানাং ভবতি। ভেষাং মধ্যে ভগৈটককেন ব্যক্তিকাশ্যাইনত্তি।গালাভিভি বোজনা। পণ্ডসাথে সিভ্সবইং ভখছভি—অত্যাহিত্তি। ও৮

শ্বনাৰেলাক্তিৰ কিং কৃষ্ণ ভবজীভাগেকান্তাবিদ্ধান্ত। সংসার েভুষণ প্রিভবিভি বজুববিদ্ধান বিশ্বনা সন্ধিশতি—প্রত্যক্ষত্যা দিয়া । কর্মনাংভূতা বিদ্ধা নেবভা ধ্যানান্তিন। শারীরবং বাভাবিক কর্মণাংশি হৈবিবাং প্রচন্তি; চ শল:। ভঞ্জ সং-কাংশী বিদ্ধা নগ্রীবর্শনানিজপেতি ভোল:। কথা বংগান্তং কর্মকানবিদ্ধান্ত: ভালিসাংশ্রাধান-অথা ভোভি। প্রবৈধানিভার্থ: বিদ্ধাপ্রাধ্বন্ধক্রামতি - বিদ্যোধ্যান্তাভিত। প্রাধানান্তাং বাল্যতি—ভালাং। ক্রীভিত। কথাবভ্যবন্যাভে, প্রাভ্ অনুথভিত। ১

ৰম্বাণাৰবিদ্ধাৰতাং বেৰপগৰে স্থিতে কলিভবাত—ঘদ্মাদিন্তি। তত্ৰ প্ৰবাণ-কেনোন্তৰং বাকাৰ্থাণততি— প্ৰকৃদিন্তি। কিবিধনবিদ্ধাৰতো দেবাদিণালবনিতাা-পতা বাকাভাৎপৰামাত— ইয়া ইন্দ্ৰণদেয়া ইন্তি। অভিসন্ধিনবিদ্ধাৰতঃ পূত্ৰবন্তেতি শেষা। ৪০

এক বিরেক্টোরিবাজ্যনাগর বাতেই — তত্ত্রি। সমুবাণাং প্রকার্যব্রাথান-রিপ্রে কেবানাবিতি হিছে কন্তপারমণি ভ্রজানং তেবাং দেবা বিধিবলীভাক্তন ভ্রমণিক্রি। ভ্রমণিজ্ঞার কৌলভাঃ কর্পনেত্যক্তব। সমুবাণাামুংকর্বং রেবা ন বুবাজীভাত্ত প্রবাণনাক — তেথা ভ্রমণিজ্ঞা কৈবলগরিঃ স্থতরা-র্বিট্রেডি ভাবঃ।

ৰেবাদীনাং নসুবোৰু ব্ৰহ্মজানসাগ্ৰিচকে কি ভানিভ্যাপভান—আন্ত ঐতি।
ভোং বিশ্বমাননাথিক প্ৰান্তনাত আন্তাদিনিত। তবি বেবাদিভিক্তপচভানাং মন্ত্ৰাাণাং
নুৰুকৈব ন সম্পন্তেভোশভানি—য়ং জিভি। উকা বি---

"ন দেবা দণ্ডনাদার রক্ষতি পশুপালবং । বং তি য়ক্তিভূমিক্ষ্টি বুরা। সংবোজয়ন্তি কুম্" ॥ ইতি ॥

ভবি কিনিতি দর্কানের দেবা মাজুসুকুলীভ্যাশভাক্ত অপেরীন্তিমিন্তি। দেবভাপুরাবুবরসুনোচভিবিভবিভি বাবং। সম্প্রতি দেবতাবিভ্রনকোন স্থানিভর্গবাহ—ভুজ্যাদিন্তি। অবিভব্স নসুবোরু নেবাধীনাং স্বাভন্তাং ভঙ্গবার্থা। প্রভাবি-প্রবাদখনাতাবনপ্তাং দন্ দেবাধীনাং ব্রিপ্ত: ভাত্তবিশক্ত বুর্জাবৈক্ল্যাধিতার্থা। সংবীতিবিব্যক্ত
ভুক্রেন্তানাধিতবৈরাগাঃ সর্কাবি কর্মানি সংক্রত বিভাবাশক্ষ্যবাধিকং প্রতি একারা

ষনাঃ ভাবিত্যাৰ—ভাঞ্জনাদীন্তি। প্ৰবণাধিকসমূভিউন্নপি বণীপ্ৰবাচানপরো ভবেৎ, অনুধা বিদ্যালয়ৰ কলে প্ৰভিবন্ধগৰবাবিত্যাপ্ৰেনাৰ—প্ৰিদ্যোগ প্ৰক্ৰীন্তি। ভবাবি-বিদ্যাপ প্ৰক্ৰীন্তি। ভবাবি-বিদ্যাপ প্ৰক্ৰীন্তি। ভবাবি-বিদ্যাপ বিদ্যালয় কৰা কৰাৰ কৰিছে। বিদ্যাপ্ৰ বিদ্যাপ্ৰ বিদ্যাপৰ বিদ্য

ভাষ্যাকুবাদে। এবানে এন অর্থ-অপর এন (কার্যা এন); কেন
না, সর্বান্তভাবপ্রান্তি বধন জিনাসাধ্য, তধন তারার সম্বন্ধেই ঐরপ কল-সম্বন্ধ উপপর হয়, কিন্তু পরবন্ধের বে সর্বান্ধিতাব, তারা কোনও জিন্ন। বারা নিজ্যা নম তারা বাতাবিক; অবচ "তবাং তৎ সর্বন্ধ্ অতবং" এই শ্রুতি অত্তর সর্বাতাবাপত্রিকে বিজ্ঞানের কল বলিয়া নির্দ্ধেশ করিতেছেন। অভএব "এবানে এন বং ইন্দমন্ত্র নাসীং" এই এন্ধ-শব্দের অপর এন্ধ অর্থ হওয়া উচিত। ১

व्यवना वक्षाविकात धारात्व धारे कथा वना इहेरछ। । धारे कम् (व अध्य विष्यांतरम मर्बाठावामः वहेवात छेनवूक, छाष्ट्रम अध्यक्ष बनाव ব্ৰন্ধ-শব্দে অভিহিত হটতে পাঞ্জেন; কেন না, এখানে "স্বৰ্ধাং ভবিস্তম্ভো ৰত্ত। বছতে" এই শ্ৰুতিতে বহুত্বপেরই উল্লেখ রহিরাছে; আর অভ্যানর ও निः खारमञ् উপায়াভূষ্ঠানে বে, बञ्चभागतको वित्यवादिकात चाह्न এ कथा शुर्वित तमा इत्रेवारक । किन्न भवत्रक वा मभव तक ध्रमांभणि काशास्त्र ভাষাতে मधिक व नाहे। भाष्ठ बर वृचित्व हहेरव रह, कर्मनहकृत, रेवाफ-मण्डमध्रिक चनत-उक्षविष्ठात चक्नीनरम विमि चनव उक्षकाव खाल इरेबा(इन, अवः नर्सक्रकाव क्लाना नामली श्रेटिक निवक क नर्सकानलाति निवद्यम वैश्वात काय-कन्त-वद्यम दिश हरेश निशाह, अवर छविष्ठरा नहत्वकार লাভ করিবেন, ব্রহ্মবিভার সম্বন্ধ নিব্রদ ব্রহ্মভাবী ভাষুণ নীবই এখানে ব্রহ্ম-শক্তে অভিহিত হইতেছে। বাবহারকেত্রে ভবিশ্বৎ বৃত্তি বা অবস্থা ধরিয়াও मन बार्तान कतिराज रावना वातः, वया—'अवनः नहिष' (चाष नाक कतिराजरहः; शक्र नाम किंद ठाउँनई नाक करत, छाठ नाक करत मा; कांदन, ठाउँन शाक कविद्रम बाहा दश,छादात्रहे नाम काक (श्वरम); चूकवार बनिट वहेंद्र (ब, त्यात्म हाकेत्वच कविवार व्यवहात्म मका कविवा क्रिया मक व्यवहात्र कवा व्हेशा वारम । चारश्रक क्षेत्रन वावहात्र रावा वातः, ववा--"नविज्ञासकः नर्सकृष्ठा-क्षप्रक्रियान्" (गतिबाक्यक, नर्सकृष्ठ व्यक्षक्षश्रम वादाव व्यक्या, न्यस्त्रम ৰাজ কৰিছা), সৰ্বাস্থাত অভয় কান হইতেছে পাছিলাক্য-এবণেয়। (পদিলাক্ষ ইইবান পূৰ্ববৰ্তী) উপায়; 'এবানে কিছু অংগ্ৰই নেই ভবিবাৎ পাছিলাকাকে নিজৰৎ এবন করা হইয়াছে); এবানেও ভজ্ৰপ; এইয়াপ বৃক্তি অসুসায়ে ক্ষেহ কেহ ব্যাধ্যা কৰিয়া বাকেন বে, প্ৰস্কভাবী প্ৰস্কনিষ্ঠ কীনই এবানে প্ৰস্কলাক্ষ্য অৰ্থ, অপন কিছু নহে। ২

না, এয়প ব্যাখা সকত হইতে পারে না; কারণ, তাহা হইলে সর্বভাষা-পত্তি কলের অনিতাম্ব বোৰ আসিরা পড়ে। অপতে এরপ কোনও সভা পর্যার্থ নাই, বারা নিতা, অবচ কারণবিশেবের সহবোগে অবস্থান্ত প্রাপ্ত বন্ধ বন্ধ; এইয়প সর্বভাষাপত্তি বহি প্রস্থবিজ্ঞানম্বপ কারণ হইতে সমুৎপন্ন হয়, তাহা হইলে তাহার নিভাভাবান্ধ নিক্তরই বিক্লম্ব হয়। আর যদি উহা অনিতাই বহু, ভাষা বইলেও উহা বে. কর্মকলেরই তুলা হইলা পড়ে, এ খোৰ পূর্ব্বেই ক্রিড হইলাছে। ০

चार यति यत्न कर्, उपविचार कन त् नर्सहारागित, छाशार वर्य-व्यविष्णकृष्ठ व्यवस्थानिवृष्टि बाज, छडित बाव किंदू मरद; छादा दरेराव अध-नर्क अध्यानी भूकरपत कत्तमा कता विकत बहेता बात ; वर्षार पति कृषि मरम क्या (न, शक्त गरक वामकारनद गूर्स । गयक कोवर वामका, ध्यर जन्मवान वनिता विकास जन्मको जन्मको । (क्यन व्यविधायान বেৰন ডজিতে রভতের আবোপ হটরা থাকে: অগবা নভোষতবে द्यम धन-मानिनामिकारमञ्ज चार्यात महेश मारकः रक्षित अहे उत्पादक व्यविष्यंत थालार वामर्कष ७ वास्त्रकार वार्तातिक वहेतार : ব্ৰহ্মিকা ভাষারই নিবুভিনাংন করিয়া থাকে; তাতা হইলে প্রকৃতপক্ষে ব্রহ্ম শব্দের স্থাাৰ্থকাপ যে পরত্রত পঞ্জীর পূর্বে বিভয়ান ছিলেন, "ক্রছ বা ইছবারে আগীং" বাক্যে সেই ব্ৰছই অভিহত হইতেছেন বলাই বুজিবুজ হয়; (कम ना, वर्षार्थ छच श्राञ्चिमान कतारे (वर्षत प्रशाव। कि**यु रव** माक ভবিবাতে ব্ৰহ্মতাৰ লাভ কবিবে, অব্ৰেই তাহাকে ব্ৰহ্ম বলিবা কল্পনা করা क्वमहे बुक्तियुक्त वत्र मा ; कात्रन, खेळन वर्ष-खक-नत्मत्र वादा मुनार्य, जाराज विश्वीक: व्यक्कि, वित्तव द्यारावन ना वाकित (व, ववाक्क वर्ष পরিত্যাপ কৰিয়া অঞ্চার্থের করনা করা, তাহাও বুকিবিরুদ্ধ। ৪

আর বলি বল, অবিভাকত অব্রমণ ও অনর্মভাব ভিন্নও বভন্ন অনুর্মণ ও অক্রমভাব নিশ্চরই আহে; না; [বলি ঐরণ থাকে, ভাবা বইলে], ক্রম- বিভার ভাষার নিয়ভি বইতে পারে না; কেননা, বিভা বে, নাজাৎ সম্বে কোনও সভা বজন অপলাপ বা উৎপায়ন ভবিতে পারে, ইয়া কোমাও বেবা নায় না; পরস্ত সর্বত্তই অবিভাগান্ত নিয়ারণ করিতে বেবা বায়। তল্প এবানেও ব্রহ্মবিলা কেবল অবিলায়ত অব্রহ্ম ও অসর্বাহই নিবারণ করিতে পারে, কিন্তু কবনও কোনও পারবার্থিক বস্তু জন্মাইতে বা নিবারণ করিতে পারে না (১)। অভএম বর্ধাক্রত অর্থ পরিত্যাপ করিয়া বে, অঞ্চত অর্থের কল্পনা করা, ভাষার কিছুসাত্র প্রবাহ্মন নাই। ৫

विष वन, उत्करक व्यविका वाका नष्टव दश मा ; मा, त्म क्वांश मक्क वह ' না : কারণ ? বেবেছ [শালে] ব্রহ-কাবের বিধি রবিয়াছে। ভজিতে বছি उपायत चनारवान वा नाटक, छावा वहेटन, ७कि इक्त त्याहत वहेटन नव किंग एकि-- तक्ष न(र' अञ्चन देन(रामद करमक चानक रह मा: अहेबन अस्तर विष परिचात बारताथ ना बाक्ठि, छाता बहेरन कथनहे 'अ नवचहे नथ, अ সমতই এছ, এ সমতই আছা' 'এছাতিরিক্ত এই বৈতের মতা নাই।' हेलानि बाट्या अमृश्यित अक्षितिकारमञ्जू विवास मानक्षक हडेल मा। িপকারতে বলি বল বে, ী ভাজিকার ভার ব্রক্তেও অভবর্তের (অক্ত ভাবের) चार्याण व चार्या नारे, এ क्या चायता यनिष्ठित ना: ভব कि मा, जम निरवरे चाननारछ चनान चन्नवर्ष चारवारनव विविक्त मरह. बन्द छिनि छाहात क्छां नहि। [हैं।, बन्न विलाल,] तक विलाल क्छां वा वाडिवृक्त रम मः ग्रहा, किंद्र बक्षडिइ चात्र (कामेश ८६ छन्नवार्थ (व चित्रवार কর্ত্তা কিংবা ত্রান্তিবৃক্ত, তাহাও ত তোবার পতিপ্রেত নহে। বিশেষ্ড: 'ক্রছান্তি-রিফ শত কোনও বিভাতা নাই','এতহতিরিক শপর বিভাতা নাই''ভূমি বেই तक प्रवर्ग, 'जाजारक वे जनगठ रहेशहितन,' 'जानि तक्षक्रम' 'विकि महक करवम] हैनि चन्न अवः चावि चन्न, वच्छा छिनि बात्मन ना' हेन्छावि वह #ि वहेर्छ, धवः 'नर्बहरठ नवान,' 'रह विक्रनित वर्ष्यन, वाविहे बाका' 'कुक्टब थ ठांशारन' 'विनि नर्बक्टरक' हेफांबि चुलियांब वहेरक, चांब

^{(&}gt;) ভारপर्य।—कार्त्रक नाम नामावन कः चक्रार्टित विद्यापः राष्ट्रे कावर आर्वाकरव चक्रार्टित साम हरेश थार । किन्न वाहा चक्रात् । चक्रार्टित कन वरह, जाता क्यार्टित साम वाहा विन्ने क्ष मा; कार्याह चिक्रक ७ चन्ने विच्न चिक्रक ना हरेश नहां काल्या प्रतिक्रक ना हरेश नहां काल्या क्ष्या काल्या काल्

বীহাতে সমস্ত ভূক বর্তনান' এই মন্ত্র হাতেও ব্যোক্ত লভিপ্তাই প্রামা বার ।৬
তাল কথা, [প্রমাতিরিক্ত কোন বিজ্ঞাতা না থাকাই বহি সতা হর, তাহা
হইলে ত] পালোপবেশের কোনই আয়ন্তক হর না; প্রভরাং প্রমাণনাতির পর,
আকত পালোপবেশত নির্মাণ হর। ইা, ৬ কথা সভাই বটে, প্রমাণগতির পর,
শালোপবেশ অনর্থক হর হউক; (তাহাতে কতি কি ॰) বহি বল, প্রমাণগতিও
অনর্থক বা নিতারোজন হইরা পড়ে ॰ না, ৬য়প আপত্তি হইতে পারে না;
কারণ, অবগতি হারা বে, প্রমাণবিহর আনবস্তি বা অভ্যানের নিয়তি হয়,
ইহা ত প্রভাক্তির । হহি বল, একম্বপকে, সেই অভ্যাননিয়ন্তিও সম্ভব হর না;
না;—সে কথাও বলিতে পার না; কারণ, ইহা প্রত্যাক্ত বিরুদ্ধ কথা হইরা পড়ে;
আর প্রত্যাক্তির হর,ইহা ত প্রতাক্তই ক্ষেত্র কথা হইরা পড়ে;
আর প্রত্যাক্তিরক কথা কের স্বীকারও করে না; বিশেষতঃ প্রত্যাক্তরিক
বলিরাই হুইবিবরে অস্পুপত্তি বা অস্কৃতি হইতে পারে না। মুলি সল, প্রতাক্তর
হুর্পনিরও অস্থপত্তি বা অস্কৃতি হইতে পারে না। মুলি সল, প্রতাক্তর
কর্পনেরও অস্থপত্তি বা অস্কৃতি হরতে পারে না। হুলি, অর্থাৎ
অস্কুত্রস্থিত কর্পনে বাচনিক অস্কৃতি কর্পনই বাধক হইতে পারে না। ৭

ভাষার পর, 'পুণাকর্ম যার। পুণাবান্, আর পাপ যার। পাণী হয়,' 'বিছা
(জান) ও কর্ম ভাষার অনুপানী হয়,' 'পুরুষ (জীবারা। মন্নন, অবধারণ ও
জিরার কর্জা' ইড্যালি প্রতি, স্থতি ও বৃক্তি হইতে পরস্বাম্বার বিপরীত্যভাবসম্পন্ন মন্তন্ধ সংসারী আহ্বার অভিত্ব জান। বাইতেছে, আর 'সেই এই আহ্বা
(পরব্রুছ্ক) ইচা নহে ইহা নহে? 'অপনারালি (ক্লুমা-পিপাসা) প্রস্তৃতি) অভিক্রেম
করে,' 'বে আহ্বা নিম্পাণ এবং অরামরণবর্জ্জিত,' 'এই অক্সরের (ব্রুক্ষের)
নাসনে' ইত্যালি প্রতি হইতে জীব-বিলক্ষণ পরমান্তার সন্তাব অবগত হওয়া
যায়; এবং কণাদ ও পোত্রর প্রভৃতিকর্ম্বৃক প্রণীত তর্কণাল্পে মুক্তি যারাও
সংসারী জীবের বিপরীত্যভাবাপর কর্মন্তের অভিত্ব সাধিত হইরাছে। বিশেষতঃ
জীবের সাংসারিক হৃঃথআলা-নির্ভির চেটাদর্শনেও বুঝা বার বে, সংসারী জীব
নিম্পন্নই ক্ষমর হইতে পুথক্ পদার্থ; 'তিনি বাগিল্রিররহিত ও আদ্বরহিত' 'বে
পার্থ (অর্জ্বুন,) ব্রিজগতে আ্বার কিছুই কণ্ডব্য নাই' ইত্যাদি প্রতি ও স্থতিনাম্রও উক্ত অতিপ্রারই সমর্থন করিতেত্বে। ভাহার পর, 'ভাহাকে অব্বেণ
করিবে, তাহাকেই আনিবেং 'তাহাকে আনিলেই আর নিপ্ত হয় না', 'ব্রছবিৎ
পরস্বপুক্রর আন্তাকে লাভ করেন' 'একইরণ কর্মন করিবেং' 'হে গার্গি,বে ব্যক্তি

এই খকর—পর্রহকে বা জানিয়া' 'ধীর পূরুব তাঁহাকেই খবগত হটরা'
'প্রণব্দে বল্লঃ, আত্মাকে শর, আর রন্ধকে তাহার লক্ষ্য বা বেব্য বলা
হইরা বাকে' ইত্যাধি প্রতিবাক্যে (জীব ও ব্রহের) কর্ত্তা ও কর্মরূপে নির্দেশ
হইতেও [জীব ও পরবাদ্যার ভেক সমর্বিত হইতেছে]।

ভাষার পর, মুর্কু বাজির দেহত্যাগের পর প্রনোপবাসী বার্গবিশেবের উপরেশ হইতেও [উক্ত সিদ্ধান্তই প্রবাশিত হয়]; কারণ, জীব ও পরবায়ার বলি ভেল না থাকে, ভাব। হইলে, কাহার কোণা হইতে পতি হইবে? আর প্রনাভাবে, ভত্তপবোসী হক্তিশায়ন ও উভরারণ, এই বিবিধ বার্গোপ্রেশও উপপর হয় না, এবং প্রবা হানের উল্লেখও উপপর হয় না; ক্লাভবে, পর্যায়া হইতে ভিরের (পরিচ্ছির জীবের : পক্ষে উক্ত স্বভ্ত কথাই প্রস্থাত হইতে পারে। ৮

কর্ম ও জ্ঞানসাধনের উপদেশও ইবার অপর কারণ; কেননা, সংসারী জীব বলি এম বইতে বতর হয়, তাহা বইলেই তাহার সম্বন্ধে মৃত্যির অন্ত জ্ঞানোপদেশ ও অন্তালরের বর্গালিফলের এন কর্মাণদেশ আবস্ত্রক বইতে পারে; কিন্তু ঈশরের সম্বন্ধে সেরপ উপদেশ কথনই সম্বন্ধ হইতে পারে না; কারণ, তিনি আগুকার, অর্থাৎ তাহার অপ্রাপ্ত এমন কোনও কার্যবন্ধ নাই, বাবা তাহাকে পাইতে বইবে। অতএব এম-শম্পে বে, প্রস্কৃতারী পুরুব অভিহিত বইতেছেন, ইবাই মৃত্যিবুক্ত; এ কথা বলি বন, তহুতরে আমরা বলি বে, না. তাহাও মৃত্যিবুক্ত হইতে পারে না; কারণ, তাহা বইলে প্রম্বাশব্দেশের আনর্থকা হইতে পারে, -- প্রম্বাত্যী পুরুব বলি প্রম্বন্ধ না বইরাও কেবল 'আমি এম' এই প্রকারে আয়ুম্বরুশ অবগত বইরাই স্ক্র্যান্থানার প্রাপ্ত বহর। বাকেন, তাহা বইলে, সংগারী-আত্মবিষয়ক বিজ্ঞানেই তাহার সেই স্ক্র্যান্থাতাবন্ধ্রপ বিজ্ঞানকলের সিদ্ধি স্ক্রাবনা বাকার, নিশ্চরই পরব্রজ্ঞাপনেশ নির্থক বইরা পড়ে। ২

পুনশ্চ বলি বল, কোনত্রপ পুরুষার্থনিছির উপাঃরপে আত্মবিজ্ঞানের বিনিয়োগ বা প্রয়োগ না থাকার বুঝা বাইতেছে বে, সংসারীর ব্রক্ষ-সম্পাদনের নিবিত্তই "অংং ব্রদ্ধাত্ম" এই উপজেশ; কেন না, ব্রত্মের স্বরূপ কানা না থাকিলে 'আমি ব্রন্ধ' বলিরা কিলের সম্পাদন করিবে ? (১) কারণ,

⁽১) তাৎপর্বা — উপাননা অনেক একার---'সম্পদ্ উপাননা' তাহারই অভতর। সম্পদ্
পর্ব---অপেকায়ক অপস্থাই কোন এক বছকে উৎস্থাই বছর সহিত অভিন্নভাবে চিন্তা করা।

বাইতে পারে, নচেৎ নহে। না, এ কথাও হইতে পারে না; ভারণ, 'এই আন্ধানকসক্রপ', 'বাহা সাভাৎ অপরোক ক্রম' 'বে আন্ধা' 'তিনিই সভা, তিনিই আন্ধা' এই প্রকর্পে 'সেই এই আন্ধা হইতে' ইত্যাদি সহল সহল প্রতিতে ক্রম ও আন্ধ-শব্দের সাবানাধিকরণা নির্দেশ হইতে ক্রম ও আন্ধান্ধরের একার্যক প্রতীত হইতেছে। অন্ধ পরার্থকেই অন্ধ পরার্বন্ধপে-সম্পাদন (আরোপ) করা হইরা থাকে, কিন্তু অভিন পরার্থকে ক্রমন্ত করা বাইতে পারে না। বিশেষতঃ 'এই সমন্তই সেই আন্ধা' এই প্রতিও প্রভাবিত জুইবা আন্ধারই একম্ব প্রকর্পন করিভেছে। অতএব এথানে ক্রিভেই আন্ধার ক্রমন্থ-সম্পাদন করা বারোপ। করা উপপর হইতে পারে না। ১০

उत्चानरक्ष्यंत्र अकडित (र अक कान क्षेत्र क्षात्राक्षम आहे, काहा । कामा वारेरलहा मा; कारन, 'अफविर उक्षरे रम' '(र क्रमक, जूनि क्रस्त त्रवायक्रम त्यांश रहेबाह'. अवर 'मिन्हबरे तक वक्ष चलब' रेजाबि व्यक्तिए কেবন ব্ৰহ্মাবাপত্তিই এক্ষাত্ৰ প্ৰায়েক্ত ক্ষাত্ততে। 'অহং ব্ৰহাত্তি' চিকা বলি সম্পৎ বহু, তাহা হইলে কৰমই প্ৰদ্ৰভাষাপ্তিকল সিদ্ধ চইতে পাৰে मी: कांद्रन, अक नमार्व कवनडे चनत नमार्व बहेता बाहेरल नारत मा। विक वन, वहरावत (अणियाकात) वर्ग मण्यक्षानमाव कर्म ए छहावामिक बहेरव: जाबता विज, मा, छावा इटेएछ शास्त्र मा; क्म मा, 'मानाम'-डेशानना ७ कान वा किस' निव चांत्र किहरे नर्द ; चांत्र कान रद, अक्यात বিধাজান বা প্রথমিরভি ছাড়া আর কিছুমাত্র করিতে পারে না. এ কথা আৰৱা পূৰ্বেই বলিয়াছি। বিশেষতঃ গুধু শাস্ত্ৰীয় বচন ত কৰমও কোনও बच्चत मक्तिवित्नव महरशामान मवर्ष नहरः भाववावारे कार्यक चर्वार चित्रकाछ वस्तक कामर्त्राहत कतिया क्षत्राहे नारश्चत थाराम कार्या. किस काम बच्चर बक्किविट्यंव छैरशावन वा अलमवन कवा छावाव कावा नरह : हैवा मर्समक निषाय: '(मह अहे प्रदायक हैगाव माना श्रविद्वे' हैकारि बारका शरकाक्षवहें क्षारान निवाचित बहेशाता। चटकर, वशास तक-नरक

এবালেও সংসারী দীব রক্তাণেকা অনজুই, ভাই ভাতার আপনাতে রক্তাব সন্দাবন করা আবস্তুক হুইভেছে; অবচ বে বন্ধ জানা প্রনা নাই, সেরুণ বস্তুতে ভস্তাব সন্দাবন করা ভোগরাপেই স্কুবণয় হয় না। এইজন্ত সংসারী ক্রীবের পক্ষে রক্ষবিবরে প্রান থাকা আবস্তুক হুইভেছে। ক্রডি "অবং রক্ষান্তি" করার সেই অপেন্ডিভ বিবর্তীয় বির্দেশ করিয়াকেন বালা। ব্যভানী পুদ্ধবন্ধ অর্থাৎ বে পুরুষ ব্যভাব লাভ করিবেদ দ্বীচীন হইভেছে না ! ১১

वित्यवका अञ्चल वर्ष कवित्य चलीहे चार्यक्रक वार्याक दहेश लाइ-वन वक्षति देशका निर्देश कार किक्टर वाहिट्य-- नर्सक्तरे अकरण वर्षार अक्षण. बहेब्रम विकास मधूर्यापम कडाहे (स. बहे मध्य डेमिनशह पांडियड প্রতিপাভ বিবয়, ভাষা এই উপনিবছেরই বধুকাও ও মুনিকাতের পরে व्यवात्ववाका वरेष्ठ कामा वारेटकरक - विश्ववातक त्याव चारक -] "देखान-गानमप्" (देवारे अञ्चनानम्), जात [मृतिकार्कत त्यात जारह—] "अजारप् चार बजु चनु ठवन चर्चार देशहे निक्ठि चनु ठव । बहेडन, नर्सनाबीह উপনিবং-সমূহেরও ব্রৈক্তবিজ্ঞানই এক্ষাত্র পর্ব বা প্রতিপান্ত বিবর বলিয়া व्यवशिक बहेबारक। अवक व्यवहार, 'बाकायन अव व्यवद' बारका विक बद रहेर्ड प्रकृति माना के बिक रह, अहा रहेरन अधि पाने पाने একছবিজ্ঞান বাধিত হট্যা বার: তাহার কলে উপক্রম ও উপসংহারের विरवाद वर्षेष्ठ नारवदे कामक्षण क्यान कविरक दर । केवन निर्द्शन चकुपमक्ति चगत कारन्..."चःचानन अव चरवर" वास्त्रा विष मरमात्री चाचावरे कवना कदा रह. छारा रहेल "चाचानत्वर चत्वर" এर बाकार्क उप-विका नार्य पविविध वहेरठ शांतिक ना : रकम ना, अहे शरक मरनांडी चाचाइहे (बक्क (विकास) हरेश शक्त (किंच भवताबह नरह)। >>

বলি বল, 'আআ' লখে বেতা—উপানকের অতিরিক্ত অক্ত বছর কথা বলা হটরাছে; না, তাহাও বলিতে পার না; কারণ, 'অহং ব্রছাম্মি' ('আনি ব্রহমন্ত্রপ') এইরূপে বিশেষিত করা হইরাছে। অক্ত পথার্থ ই বলি বেড হইত, তাহা হইলে 'মরন্ মনো' অর্থাং 'ইনি অনুক্তরূপ' এইরূপই নির্দেশ করা উচিত হইত; কিন্তু কবনট 'অহম্ অমি' বলা সকত হইত না। এবানে বিশেষ করিয়া 'অহন্ অমি' বলার এবং "আআনবের অবেং" এইরূপ অবধারণ থাকার নিঃসংগরে বুলা বাইতেছে বে, অক্তর্যাম্মা অর্থ কবনই ব্রম্ভ লিয়ে গংলারী হইতে পারে না। আর এইরূপ অর্থ হইলেই "আআনমহেবাবেং" বাকোর "ব্রম্ভবিদ্ধ" নাবে অভিধান করাও সকত হ'তে পারে, নতেৎ নতে; পাছারে, এরূপ অর্থ না হইলে ইহা 'সংসারি-বিভা' নাবে অভিহিত হওয়াই উচিত ছিল। স্বর্ণ্যের সথম্ভে আলোক ও অক্তনারের ভার, একই পার্যর্গের নথম্ভ ব্রমন্ত ও অব্রহ্ম ও অব্রহ্ম রূপারের বর্ণয়র উপপার হইতে

পারে না; কারণ, একই ত্র্যের আলোক ও অভকারের সহিত স্বত্তগাত বেরণ বিরুত, ইহাও তত্ত্বপ বিরুত্ত; ত্রিতরাং একই বছর উক্ত উল্লেখিং ভাব ক্ষনই স্কুবপর হইতে পারে না]। ১০

আর বহি ঐ উভয়কেই ইহার নিষিত্তরণে প্রীকার করা হয়,তাহা হইগেও ইহার কেবল 'রন্ধবিছা' নাষকরণ সক্ষত হয় না; বরং তাহা হইলে 'রন্ধবিছা'ও 'সংসারিবিছা',এই উভয় নামে বাবহার করাই সক্ষত হয়; কিন্তু তন্ধান উপবেশ করাই বহি বিবৃদ্ধিত হয়, অর্থাৎ প্রতির অভিপ্রেড ১র, তাহা হইলে কথনই ওয়প অর্থান্ধরতীর চাব কল্পনা করা সক্ষত হইতে পারে না (১); কারণ, তাহা হইলে উপনিইবিষয়ে প্রোতার সংশয় উপন্থিত হইতে পারে । অবচ 'বাহার নিশ্চিত বৃদ্ধি হয়, কোনরূপ সংশয় না বাকে' এবং 'সংশ্যায়ক লোক বিনষ্ট হয়' ইত্যাহি প্রতি ও স্থতিশার হইতে জানা বাহ ব, নিশ্চার্যাক্ত জানই প্রস্পক্রবার্থ মু'জের সাধন; অভএব প্রহিতার্থী ব্যক্তির প্রেক্তার্যাক্ত আনই প্রস্পক্রবার্থ ক্লেনা করা কথনই উচিত হয় না। ১৪

আর বহি বল, "ভহাত্মান্যবাবেং" ইত্যাহি প্রতি অনুসারে, আযাহের সার ব্রহ্মতে ও বে সাধকর-কল্পনা, তাহা সহত নহে; না, এরপ আপত্তিও করিতে পার না; কারপ, তাহা হউলে পারবাকোর প্রতিট তিরছার বা অনুবাস করিতে হর; কারপ, ইনাত আর আমাহের কর্পনা নয়, পরস্থ শাস্ত্রই প্ররূপ কল্পনা ক'ররাছেন; স্কুরাং এই উপালন্ত বা অনুযোগ শাস্তের উপরই প্রবোজা, (আমানের উপর নহে); অর্থান প্রত্যাস করা ইছ্যার প্রকৃত র্থের বিপরীত কল্পনা তাহা ক্রনই শাল্পার্থ পরিত্যাস করা উচিত হয় না। আরও এক কর্পা, শুধু এই সাধকর-কল্পাতেই তোষার অসহিকৃতা প্রবর্পন করা সহত হয় না; কারপ, ভাগতিক নামাহ বা বিতাপনাক্রই ত ব্যন্থতে পরিক্রিত ভির আর কিছুই নহে; ইহা—'তাহাকে এক প্রকারেই দর্শন করিবে' 'এলপতে নানা—ব্রন্ধতির কিছুই নাই' বে অবভার বৈতের ক্রার হয়,' 'নিশ্রুই তিনি এক ও অহিতার' ইত্যাদি বাক্যপের হইতে

⁽১) তাংগ্রা--'শর্জয়ভার' লায়ট এইরপ --একই ব্যক্তির অর্ডাংশে বৌবন, ভার অর্ডাংশে জরা (বার্ডকা); বৌবনাংশে বুরকস্থাক ভোগ, ভার জরাভারাক্রান্ত অংশে আচীনপ্রকৃত জ্ঞানব্যানাদি করিছে পারে; এরপ ব্যবহা বেনন সভবপর হয় না, ১৪৯০। একই বিভাতে 'রক্ষবিভা' ও 'নংসারিবিভা' এই উভরভাব কলনা কয় ১ইওে পারে না।

প্রতিপর হয়। বিশেষতঃ বর্ষন সর্বপ্রকার সৌকিক ব্যবহারই একষাত্র ব্যাহতে পরিকল্পিড, প্রকৃতপক্ষে কোনটিই সং নহে, তবন, ব্যক্তর কেবদ সাধ্যক্ষ-কল্পনায়ই বে, অশোভনন্ধ বলা, ইহা অতি সাধান্ত কথা, (উপেকার বোগ্য)। ১৫

শতএব, স্তারণে বে বন্ধ প্রবেশ করিয়াছেন, এবানে তিনিই বন্ধ-শব্দের অর্ব; প্রতির 'ইব' শব্দের অর্ব—শব্দারণ; 'ইবং' আর্ব—শরীরবণায়ন্তপে বাহা গৃহীত হয়; অপ্রে অর্বাৎ জানোগরের পূর্বেও এ সবত্ত ব্রহমন্তর ছিল; কিন্ত প্রতিবোধ বা স্বাক্ জানের অতাবে অব্রহ্মতাব ও অসর্বাহ অধ্যারো-শিত হওরার—'আমি কর্তা, ক্রিরাসম্পন্ন এবং বন্ধত ক্রিয়াকলের তোকা, পুরী, ছংবী ও সংসারী' ইত্যাহি তাবনিচর আয়াতে অব্যারোণিত করিয়া বাকে; প্রকৃতপক্ষে কিন্তু তৎকালেও কর্ত্মতোক্ত্মানির বিপরীত ব্রহ্মরকাই এবং সর্বাহ্মরও বাকে। ব্রহাক্ আচার্ব্য কোন রক্ষে বৃত্তাইয়াহিলেন বে, 'ভূমি সংসারী নহ'; শিবা সেই প্রতিবোবের কলে স্বাভাবিক আজ্মবন্ধপ উপলব্ধি করিয়াছিলেন। প্রতির 'এব'শক্ষের অভিপ্রান্থ এই বে, [তিনি বাবা আনিয়াছিলেন, ভারাতে] কোন প্রকার অবিভাস্মরোপিত বিশেষ ধর্শের সম্বন্ধ ছিল না। ১৬

এবন কিজানা করি, এই বাতাবিক আন্তা কে ?—বরং ব্রন্থও বাহাকে অবগত হইরাছিলেন ? কেন, আত্রার কবা কি অরণ করিভেছ্ না ?—'বিনি ইবার অভ্যবরে প্রবিষ্ট হইরা প্রাণ, অপান, ব্যান, উলান ও সমান-ব্যাপার করিতেছেন' এইরণে ত অপ্রেই এই আত্রার অরণ প্রবর্গন করা হইরাছে। [আহ্রা, কিজানা করি,] লোকে বেবন 'এটি গো, এটি অব' ইত্যালি নির্দেশ করিয়। বাকে, ত্রিও তেমনি পরোক্ষাবেই আত্রার নির্দেশ করিছেছ, কিন্তু প্রতাক্ষ ত বেবাইতে পারিভেছ্ না ? ভাল কবা, এরণ নির্দেশই বলি আবর্গক মনে কর, তাহা হইলে বলিভেছ্— সেই আত্রা হইতেছেন প্রত্তা (বর্ণনের কর্তা), প্রোভা (বাক্য-প্রবর্গের কর্তা), ব্যা (স্বর্গাহ প্রবাদির ক্রিয়া)ও বিজ্ঞানা (নিশ্বাত্মক জানের কর্তা); [প্রতরাণ প্রবাদির ক্রিয়ার বহুলোগে আত্রা ও প্রভাক্ষাই প্রকর্পত প্রত্যক্ষাই প্রবর্গান করান বহুতেছে না ; কেননা, গ্রন্থই ত আর গ্রাহা অরণ নয়, অরণা ছেলনই ত ছেলনকর্তার অরণ নয়। আক্রা, ভাহা হইলে

विकाश, विभिन्ने त्रहे वहा, अवर्षत्र त्यांचा, वनस्वत्र क्वां ७ विकास्तद्र । विकाश विकाश, विभिन्ने त्रहे चाचा। >१

चाचा, विकामा कति, कामात्र वह त्मर केवत्त्रव ब्रदेश मराह पूर्वात्यका कि विराप्त वना बहेन ? जाजा वृष्टिवहें (आरमवहें) खंडा एकक, वा परिवहें खंडा ब्रेक, न्त्रांखरे खड़े। जिक्क जात किन्नूहें नरर ; जूनि 'बृष्टिन खड़े।' विनेता स्करन अहैवा विवत नवरवरे किकिश विराम विराधक ; किक अहै। वरि वृत्ति किवा चाहेत वर्णनक्या वह, छादा बहेताथ छिति खडेाहे, छडित चात किहुहे महरू । मा, छाका बरकः, कातन, अनारमक विश्वचरणक डेननांच हत्र--এবানেও বিশেষ আছে.-- বিনি বৃষ্টির এটা, তিনিও বলি বৃষ্টিবল্লণই হন, काका करेरण कृष्टि (काम) नर्सवारे छाहाद वर्णमात्राहत हरेरछ लाइत, कथमरे স্ত্রীর পৰিজ্ঞাত থাকিতে পারে না। স্ত্রীর দৃষ্টি (জানপভাৰ) নিতা হওয় .चारकक, चांत अहे।त वृष्टि वा अकाननकि वित्र चनिका (नावविक) वत्र, छाहा रहेरल, त्व वृष्टिकि काशात वृक्त व्यवीर शकाममीत, नमत्रविरमस्य सत्र छ শেই দ্যাটি বৰ্ণনের বিষয় ন। চইতেও পারে; বেমন অনিত্য লোকদৃষ্টি বারা क्ष प्रोति वस [नवरव पृष्टे वह, चाराद नवरव चपुष्टे बाटक,] कृष्टित सहै। किस ভদ্ৰণ কৰমও বৃষ্টিকে প্ৰকাশ মা করিছা থাকে না, অৰ্থাৎ বৃদ্ধিতে ব্যমই (बहुन बृद्धिक छेरक वर्षेक वर्षः श्रकाननीन अहै। (बाबा) छरक्नार तिहै वृद्धविकामहरू अवानिक कतिया थारक ; चायात चविकाल क्रमन चान बारक मा : कारबहे जासाय प्रक्रिक निष्ठा विनय शैकार कविएए दर । ১৮

ভাল, তবে কি এটার ঘৃষ্ট ছুইটা ? -- একটি নিতা অবচ অনুতা, আর
অপরটী অনিতা অবচ মুক্ত ? ইা, এটার অনিতা মৃষ্টি ত (ঘটপটাবিবিষয়ক কান ত) প্রসিত্তই আছে ; কেননা, অগতে অবও অনম্ভ ছুই প্রকারই
লোক দেবিতে পাওরা বার । মৃষ্টি বিদি নিতাই হুইত, তাহা হুইনে কেবই
আর অভ বাকিত না ; এটার মৃষ্টি কিছ নিতা অবাৎ সর্বাহাই বিভ্যান ;
কারণ্ড ফ্রান্ড কালেভেল—'মৃষ্টির এটা বিনুধ্য বন্ধ না' ; এবং অম্বান
ভারাও ইহা সম্বিত হুইতে পারে—ছেবিতে পাওরা বার অভ ব্যক্তিও
অধান্যক্তে প্রাক্তিনিক ঘটাবিবিদ্যক মৃষ্টি লাভ করিয়া বাকে, অবাৎ
অভ স্বাভিত্তত স্থান্যকে ঘটাবি বিষয়া ধর্মনা করিছে দেবা বার, তবেই
আলৈ বে, বাক মৃষ্টি বিষয়ে ইনলেও সেই নিতা মৃষ্টিট ক্রমণ বিষয়ে বন্ধ না ;
ভারেই এটার প্রকৃতি বিষয়ে ব্রহালেও স্বর্থ স্থান্ত ব্রহার না করিছে প্রকাশনাক্ত সেই

শ্বিৰ্থ নিতা বৃটি ভারা—বশ্ব ও লাপ্তং সময়ে বাসনাময় ও বৃত্তিভাগ লগত গৃটিটিকে সর্মাণ বর্ণন করেন; এইলভই ভাহাকে বৃটিও প্রতা বলা হইল গাকে। এইলগই বলি নিভাভ হইল, ভাহা হইলে বৃথিতে হইং, অগ্নিয় উক্তা বেরপ খাভাবিক, তক্রপ এই নিতা বৃটিই আত্মার প্রকৃতবন্ধপ; কিন্তু ক্যাম্পতে বেরপ বৃটির (ভানের) অভিনিক্ত চেতন আত্মা একটি পুণক্ পথার্থ, বেহাতের আত্মা সেরপ পুণক্ বন্ধ নং। ১৯

त्मरे तथ पानमारकरे पाराशिक प्रतिवादिष्क्रियाँक प-चन्नगरकरे वानिशाहित्तम । अवन वानिक वरेरकरक (व, विक्राकाद विकास क्या छ अधिविक्क ; कार्य, अधि विश्वास्त्र-'विकासिय विक्रांचादक कानित्व मा हेजावि। ना. अवश्विव विक्रांत किन्नात विराध वह मा; स्मा मा, चाचा त्व पृष्टित्र छडे।, चवीर मुसंकातह श्रकानक, हेवा ७ निक्तवर बामा वाहेएएड । वित्तवरु: बाबादक नावाबनक: क्षानाचन-निवालक्ष वानाज वहेरव: (कनना, ब्रेडीव निकाविकान-नवक विकाल वाकित्न, प्रदेशित नवटक चात चन्न विकासित चाकाकाक कर ना वर्षार उद्देश वनत कारमत्र नाहारम वाननारक वामिना चारक--अवन वामिरक काशांत्र हेका वह ना। बहात चिर्णिक विकासमुबद बाका मुख्यमूत वह मा विनारे, बहे विवास अञ्च वृष्टित आकाकः जानना शरेरावरे निवास शहेता वात : (कम मा, (व विशव विश्ववाम नाहे-निर्णाच भगठा, जादा बामिबाब च काबादा चाधर रव ना वा स्टेएक शाद ना। चात एउ एडि चर्नार बाबुशकान बृहिवृद्धिक क्यमहे जुड़ीरक (बाबारक) श्रकान कविरूक नवर्ष হয় না বে, ভাষা আনিবার ভয় আনাকাকা উপস্থিত হইবে। ভালোডা, जानमात विवाद जानमात जाकाकः रख्या मध्यमद्व रव मा। ज्ञान "जाजानन् धव जारवर' कवाइ जर-जजानकृत कर्जुवारि जारवाननिवृद्धि-बात. विश्व चाचारक क्षकाणिक करा गरह (>)। २०

^{(&}gt;) ভাৎপৰ্যা—আপৃত্তি হইরাছিল, আজা ববন ব্যাহ্যাশ, আর জান বা আনা আর্থ ববন বিবয়তে প্রকাশকরা; অবচ প্রকাশকে প্রকাশ করাও বধন অসভার, ভখন উক্ত জাভিত্ব অর্থ লক্ষত হয় ভিয়ালে? ভাষাকার ভত্ততার বলিভেবের বে, এবাবে 'থাবেং' (আনিরাছিলেন) কথার অর্থ—প্রকাশ করা নহে, কিন্তু অজ্ঞাবের বহিষ্যার আন্তাতে বে, কর্ম্যুত ভোচ্নাধি লক্ষ্যার্ম আরোশিত হইরাছিল, কেবল ভাষার বিস্তৃতি করাই এবাবে "আবেং" করার অর্থ;

ভিনি কিপ্ৰকাৰ কানিয়াছিলেন, তাহা বলিতেছেন—'কানি হইভেছি

কৃষ্টিয় ত্ৰটা (বুভিবৃভির প্রকাশক) আছা—প্রকাশন' [এই প্রকাশ কানিয়াছিলেন]। এবানে ত্রছ অর্থ—বাহা সাকাৎ প্রভাক্তরণ, সর্কাশ্তন, অপনারাহির অতীত, "নেতি নেতি" প্রভিপ্রতিপাত এবং অতুন ও অনপ্ ইত্যাহি
প্রকার সর্কাজগৎ-বিলক্ষণ; সেই ত্রছই আনি, কিন্তু আপনি বেরুপ বলিতেছেন, আনি সেরুপ ব্রছাভিত্তিক হুতর সংসারী নহি। অত এব, এবংবিধ জানের
প্রভাবে সেই ত্রছ সর্কাশ্যক হইরাছিলেন, অর্থাৎ আরোপিত অত্রছতার
অপনয়ন ও আরোপক্রত অসর্কাভাব নিরুভির কলে সর্কাশ্য চাবাপন্ন হইরাছিলেন। অতএব বহুজেরা বে, ত্রজবিভা বারা সর্কাভাবপন্ন হইব বলিয়া
বনে করে, ইহা বুভিবৃক্তই বটে। পূর্কে বে গান্ন করা হইরাছিল—'সেই
ত্রছ আবার কাহাকে জানিয়াছিলেন, বাহাকে জানিয়া ভিনি সর্কাশ্যক

হইরাছেন ? "ত্রছ বা ইল্বন্তে আসীং" ইত্যাদি বাকো ভাবাই উভয়
নিরুপিত হইন। ২০

এই অগতে দেবগণের যথ্যে বিনি বিনি প্রতিবৃদ্ধ ইইয়াছিলেন অর্থাৎ বিধানে আত্মন্ত্রপ আনিহাছিলেন, প্রতিবৃদ্ধ সেই আত্মাই সেই প্রশ্ন হইয়াছিলেন; সেইয়প পরিগণের বংগ্য এবং সেইয়প বছয়গণের মংগাও ইইয়াছিলে। এখানে বে,ছেববয়য়য়াছি বিভাগোন্তি করা ইইডেছে, ভাষা কেবল লৌকিক ব্যবহারায়্রবারিষার, কিন্তু প্রশ্নজানামুসারী নহে; কেননা, "পুরঃ পুরুষ আবিশং" এই প্রতি অমুসারে প্রস্কই বে, সর্মান্ত অমুস্থাত আছেন, একথা আম্বা পূর্কেট বলিহাছি। অভএব বৃধিতে হইবে, প্রতিতে বে, 'লেবামান্' ইত্যাদি ভেলোক্রেশ করা ইইয়াছে, ভাষা কেবল শতীরাদি-উপাধিকত লোকপ্রতীভির অমুমারিষারে; প্রস্কৃতপক্ষে কিন্তু বিজ্ঞানলাভের পূর্কেও সেই সমন্ত দেবাদি শরীরেও ক্রম বিজ্ঞানট ছিলেন, কেবল অন্ত্রপ্রার্থিকে, সেই আনালুসারেই সর্মান্ত্রাব লাভ করিয়াছিলেন। ২২

এই ব্ৰহ্ম-বিভা হইতে বে, সৰ্বভাবপ্ৰাপ্তিরণ কল লাভ হয়, এ কৰার স্কৃতি স্পাদনাৰ্থ প্ৰতি নিজেই বন্ধ সমূহের উল্লেখ করিতেছেল তাহা কি প্রকার ?

ভেরনা, শবহং একাশনান্তাৎ নাভাস উপযুক্ষাতে ।।" কর্বাৎ বয়ং একাশ প্রাধেয় একাশ করা ক্ষমত স্থাপন হয় না।

দর্শন করত, অবীৎ এইয়প এফবর্শনের কলে তৎকরেই বুরিরাছিলেন,
অবীৎ তিনি উক্ত এফবর্শনে লবভিত হইরা এই সময় মন্ত্র করিরাভিলেন—'লানিই মতু ও প্র্যা ব্টরাছিলান' ইত্যাদি। ''ভবেতৎ এফ
পর্জন্'' কর্যাট এফবিভার সহিত সম্বত্র প্রকাশক; আর 'লানি বহু ও প্রা
বইরাছিলান' এই বাজ্যে সর্বাচারপতিরপ এফবিভার কল প্রকাশ করা
বইজেছে। 'ভোলন করিতে করিতে ভূলিলাভ করে' বলিলে বেনন
ভোলনকেই ভূলিফলের কাষণ বলিরা নির্দেশ করা বর, ভেসনি 'বর্শন করভ
সর্বাভানরপ কললাত করিরাছিলেন' এই প্রয়োগেও বুরাইকেছে বে,
এফবিভান্তকত সাধনই মুজ্জিরপ কলসিছির কাষণ। ২৩

जान करा, उत्परिकार कमश्रहण (व. गर्सकाबाणिक: वेहा दहारोदीमानी (क्रेन्ट) शक्ति प्रकार के विराज---विराचकः बकुष्ठविराज्ञ शाक्ष छात्। क्यमके मुख्यमद मार ; कार्य, हेराता प्रतिभव प्रवर्गक्तनलाव ; कारातक यस अहेबन पानका रहेल गाँद ; जन्मानाम्यान निविध विश्वास्त्र — वर्णनामि क्रियान्त्रीय अहे दा गर्स क्षाय-श्रीवरे उत्पन्न कथा वना बहेन, अवनश्र-वर्धवाम भवाइथ, वि काम नाक বাছবিশরে আন'ক পরিত্যাপপুর্মক 'আবি উক্ত ব্রহ্মস্করণ' বলিরা আরাকে बार्मम- देशविन्यवस्थित जाविकारमञ्ज्ञ (व नमुद्देश विरम्पदेश बार्शिक वरेबाहिन, त्र मम्ब यमनीछ वृद्धि।, बाबि निक्त हे मरमास्वर्ध बन्धमूहै वरः वाशाकाबद्रकार वृद्धिक त्रबद्धन, व्रदेखान चार्त्वानन्दि करदवः ব্ৰদাৰ্লানে আব্দাকত অনুৰ্বাহি নিয়ত ত্ইৱা বাওৱায় ভিনিও উচ্চ नक्षावानव स्म । कावन, महानक्षित्रमात बावएवक्षक्षिक किरवा वर्धवान-कार्गीन बोनवार्या बद्धादार अब वः अब वक्षात्मव किकिसावक कारका परि नारे, वर्षार उम्म । उम्मविका। नक्शन शतकरे हिन्दिन नमान । वर्षनान-कानीन (नाक्तिपत्र उर्धावका-क्ननाट बरेनकाविक्छाइ (बनिक्डणाइ) भाषण बहेरक भारत, कहत्वर विशवस्त्र — (व शाक्र वरवाक विवास उपकान गांठ करन, महानोदी (एनमन् जाहात चक्नान ना नर्बाठानाचित्रन क्यमारक वाश वहारेट नवर्ष हन मा, चालत बाद कवा कि १। २६

कान, विकान। कवि, व्यविशाद क्लकाविष्क रायमन विद्यारनायन कवित्रा वारकत, क्रमन वानक। कवित्राद कावन कि १ दे।, बना व्हेरकहरू— বেবেছ, বর্তাপণ বেণসপের নিকট ওপপ্রও, সেই কারণে [ঐরপ আগতা হইতে পারে]। 'প্রকর্মণ বারা থবিগণের যক্ষ বারা বেণসপের এবং সভান বারা পিতৃপণের নিকট বইতে [বণবুক বইবে]'; এই প্রতি অন্ধ-কানেই মন্ত্রের বণসমভ প্রতিপাহম করিতেছে; প্রভাজি পতর ভূটার হইতেও ইহা অবগত হওবা বার—"অবো অরং বা" ইত্যাহি প্রতি বইতেও আমা বার বে, বহুত্বপণ বন্দর বেনতাহিগের নিকট অবসর্প বা বণপ্রভেত্ত ত্ব্য, তবন বেনপ আগনালের বৃত্তিরকার কল বণপ্রভ মন্ত্রাগণের মৃত্তিন্দ্রিত অবস্থি বিশ্বাচরণ করিতে পারেন; অন্ধন্ধ উক্তপ্রকার আগতা ভারসমতই ব্রেট। ২০

দেবপণ নিজ নিজ গণ্ডগণকৈ খীয় শরীরের যত রক্ষা কলিয়া বাকেন।
অতঃপর শ্বয়ং প্রতিও—এক একটি পুদ্ধবংক দেবভাপ্রভৃতির বহুপত্যানীর
বলিয়া, বলুবাছিগকে কর্পাধীন (ভোগসাধন বলিয়া) প্রকর্ণন করিবেন—
'বলুবাগণ বে, এই আহ্মত্তর অবগত হয়, ইচা দেবভালিগের প্রিয় নংহ।'
এবং 'বলুক্ত বেবন আহ্মীয় লোকের অন্নিটি, অকল্যাণ-নিতৃতি ইক্ষা করে,
ভেষ্পি ভূতগণ প এবংবিধ জানীর কল্যাণ কামনা করিয়া বাকে'। এই
'অবিটি' ও 'অপ্রিয়' কথা হইতে জানা হার বে ব্রন্ধজান লাভ হটলে ভাষায়
পরাধীনভাব নিয়ন্ত হইয়া বার; প্রভরাং বঞ্চনন্থ বা প্রিয়ন্থ কিছুই তথন
বাকে না; অতএব, ব্রন্ধবিদের ব্রন্ধবিদ্যা-কল্যাভে দেবগণ অবন্তই বিয়াচরণ
করিতে পারেন; কারণ, ভাষার। বহাবাভাব-সম্পায়। ২৬

ভাল, ভাষা হইলে ত অক্তাক্ত কৰ্মকল প্ৰান্তিতেও বিয়াচনৰ কথা, দেখপৰে পক্ষে পেংশানের তুলা অৰ্থাৎ কলবোগের যত অতি সহল; অহা ! ভাষা হইলে ত অত্যাধ্য ও মুক্তিসাৰন কৰ্মান্ত্ৰানেও লোকের আরু কিছুমান্ত্র আহা বা বিবাস থাকিতে পারে না। এইরপ অচিডাশক্তিসম্পন্ন ইবরেরও বিয়াচরণে বর্বেই ক্ষমতা আছে, এবং কাল, কর্ম্ব, ময়, ওব্ধি ও তপভারও বিয়োৎপালনে প্রভূষ বহিরাছে; কারণ, ইহারা সকলেই বে, কলের সিছি ও অসিছির বেতৃত্তত, ইহা পাস্তে ও সমালে প্রসিদ্ধ আছে; সেই কারণেও শাজোপছিই কর্মান্ত্রীনে লোকের বিবাস থাকিতে পারে না। না, এরপ আপতি হইতে পারে না; কারণ, প্রভোক কার্যের অভ পূবক্ পূবক্ বিবিছ-প্রথমের ব্যবহা রহিরাছে, এবং ক্যতেও তম্বন্ধণ বৈচিন্তা ক্ষেবিতে পান্ধা বার, কিছ ব্যাবহে বাহারা কারণ বলেন, তাহাছের যতে উক্স উত্যই

উপপন্ন হইছে পারে না। কর্মই হে, স্থান্থ: ব-কলের নিষিত, ইয়া বেয়, স্থাতি, বৃদ্ধি ও লোকবাষ্টারের অনুযোগিত। এই পক্ষি এইণ করিলে বুখা বার হে, বেবভা, ইপরাও কাল, ইয়ারা কেরই কর্মকলের বৈপরীভাকারী নহেন; কেন না, কর্মস্থ বাহা প্রধান করিছে চাহে, উহারা ভারাই সম্পাদন করিয়া থাকেন নাত্র; কারণ, জীবপণের ওভাওত কর্মস্থ স্থায়ক্ত দেবভা, কাল ও ইবাদি কারকনিচয়ের সাহায় না কইয়া আন্দলতে স্মর্থ হয় না, আর কর্মকং আন্দলাত করিলেও কনপ্রধানে স্মর্থ হয় না; কারণ, বহু কারকের সাহায়ের কল প্রধান করাই জিয়ার প্রভাব; স্বভরাং বলিতে হইবে হে, বেবভা ও ইবার প্রভৃতি সকলেই জিয়াকলের অনুস্থ বা সহায়নাত্র; কালেই কর্মকল-প্রাপ্তিতে কার্যারও অনাধাস বা নৈরাক্তর স্কাবনা নাই। ২৭

ছণবিশেষে বেৰতাগণও কৰ্মপরিচালিত হইরা ছাব সমুৎপাদন করিয়া थारकन ; कातन, छीरावा करचंत्र इःयशामनक्तिक निर्वादन कतिएक मधर्य श्रम न) । जारात गत, कर्न, कान, देश्य (चड्डे) ७ यहच आरवत द्य अन-ध्यान-कान, वर्षार (काषाछ कर्ष दत्र ध्रयान, बाद काम अकृति हत्र छादाद बदीन, चाराव रमाश्व कार्नाह दव अशान, चाव क्वीह दव छाहाव चरीन, रेखाहि अकात (र प्रकाणिकात, देश प्रसिद्ध ७ इसिट्डर, प्रवीर क्लावात काम्हे श्रवाम, बात काबृष्ठि ब श्रवाम दहेरव, हेरांत्र व्हित्रठा मारे, अवर विका वाबाद हेश मिन्छत्र कता गरम नतः । अहे काशायहे अ गयाय मार्गिक मानावाकात आबि छेश्डिल हहेवा शास्त्र.—(कह (कह रामम-क्षेरे क्लशाबिब अक्षांव कादन, बाह्य किंदू मार्य; बानाद रामम देवनहे कन धरारमय कादन; बाह्यदा वर्तम-कानरे कर्यकन अयान कवित्रा पारक ; चावाव (कर (कर बरनव-क्ष्या ७ (एन) वित्र विद्युव विद्युव च्छा बहे कन अवान कवित्रा पारक ; चावाब चन्द्र अक एम (माक बामद्रा बारक्म-कर्ष ७ कामध्यक्ति काद्रविष्ठः निविभित्र बहेबाहे क्रमश्रवात्मक कांद्रप बहेबा पारक। जन्नर्था कर्षत्र श्रापाक बोकाइ कविशा 'नुना कर्यंत करम नुना (पूर्वा) रह, बाद नानकर्यंद करन नानी दश' रेखानि (वह ७ इंडिमाज-नब्द [कर्चरकरे कमध्यर विश्वा दिव क'त्रवारक्त] । पतिक चाविकात नत्नावसमयदा देवारक मरवाक कर्य-বিশেষের প্রাধান্ত অভিবাক্ত হয়, এবং অপর কর্মভুলির প্রাধান্তশক্তি ভৎকালে निक्रदणार बारक मछा, ज्यानि करचन डेनपूक कमश्रां महानाज नहींच्या नारे । कांत्र, कम-अकारत (न, करवंत्ररे आयाण, देश क्षेत्र के कुंकि बाहा ১) क्षेत्राविक हरेतारह । २४

विश्वादि, छारा छ परिषाद परिवाद परिवाद परिवाद नाइ परिवाद का विश्वाद का विश्वा

সেই কথাই বলিতেছেন—বেবেতু সেই এছবিৎ পুরুষ ব্রছবিছা-লাভেও স্থকালেই অবিভাষান্তরশী বাবধানের বা অব্যক্তাবের অপপন বঙরার— ব্রজভাকারে প্রতিভাগবান ভজির ভজিবর্শের ভার এই দেবপণের আহ্মন্তরপ হল,অর্থাৎ সর্বানাত্রপ্রভিগাভ সেই ব্রহপত্ত ব্যের ব্রহমন্তরণ বন, এ কথা আনরা পূর্বেই বলিয়াভি; এই কারণেই আপনারই প্রতিকৃলাভ্রণে ব্যেগণেরও চেটা ক্যা স্কর্ম কর না। প্রভাবের বাহার কল অনাত্মন্তরণ—বেশ ও কানাধি বারা

^{(&}gt;) ভাংগর্ব্য —কর্মের আবাজজাপক নার —"পুনোন হৈ পুনোন ভবতি, পাণঃ পাণেন"
ইভ্যাদি ক্ষতি এবং "ধর্মমা রম্মেন্ত্র্ব্ ইভ্যাদি পুতি। ভার বা যুক্তি এই—প্রেক্তি
অববৈচিত্রের অনুপশতি প্রকৃতি।

⁽২) বিজ্ঞার ক্রম্বরণ বৃত্তিলাতে দেবগণের বিশ্বাচরণাশভার অসলে কর্মকল আথিতেও বেধনণের অভিকৃত্তাচরণ আশবিত হইরাছিল, ভর্মধা এথমতঃ ক্রমণের বেধনণের বিশ্বাচরণাশভা বঙ্কন করিয়া এবন বিজ্ঞাকন দেবগণকর্ভুক বিশ্বাচরণাশভার স্বাধান করিয়ার উল্লেখ্য 'ন' ইভ্যাদি বাক্যের অবভারণা করিভেছেন।

वारतार्थाकि म्यूनी बाचनम्।

वापरिक वर्षाय विकास स्थान क नवता केरणिक ; कांकृत वारामक कर्णाकार विद्यानगर स्थान कर्णाकार विद्यानगर स्थान कर्णाकार विद्यानगर स्थान कर्णाकार विद्यानगर कर्णाकार कर्णाकार कर्णाकार करा विद्यानगर कर्णाकार कर्णाकार कर्णाकार कर्णाकार करा विद्यानगर कर्णाकार करा विद्यानगर करा विद्यान

कान, कामकन वृद्धि चरावृद्धि रा नयनानीनरे स्त्र, जारा स्ट्रेस्न वृत्रिक बहेरव रव, छ०कारम चविष्कित्र कानवात्रा वर्धवात्र वा वाकात्र अवर आत्माश्यत शत्य विश्वतीष्ठ आम (साबि) ७ ७५ गाँवा वहे वक्षांत सम-श्रवात्वत कार वधन कारनद व्यविद्धित पादा नाहे, नकास्टर विभवीच कान अवर छरकादां । वयन वृद्धे बहेशा बाटक, छथन वरखडे वीकांत कतिए बहेरव (व, चाँचव चार्तिते चविका-निवृत्ति दव, चांच चारम दव मा; मा. अक्रप बावशांक बहेरक मारत या: कारन, काहा हहेरन अवय स्नारम बाव **पश्चिम कामक परि**नकाश्चिक वा वाकिहाती हरेशा श्राकः; रकम मा, चांचवित्रहरू अवरवादमञ्ज कारम वांच चवित्रानांबद्धि कविएक मा मारव, काला बहेरम चल्चि आत्मक (महेब्रमहे बहेर्छ भारत : कावन, केवरवर्षे चनिकात क्रमा । चाचा, छाश वहेल वनिन (व. मक्छ चर्वार चविष्यवहाद अवस्थित विकासके व्यविष्णां विवर्धक, विव्या विकास मार ; सा, अ क्यां अन्य रह सा । कांबन, जीवक्यांत क्वमहे चविष्टित जामधावार रहेए शादा ना : कांवन चक्र कोबम-बाब्दबंद चकुन दिया कडांछ मावक वह : कुछहार छदकात व्यवाशकारत विचा-श्रणात रहेरणहे भारत मा ; (बरहजू, केहाता भन्नभवविक्रक । चात र्राप्त वन, कीयमाधिक किया निकृषि कविका व्यवकान गर्वास अहे विकाशकार अवस्थान रहेशा शास्त्र: मा. काराक विनयक शास मा: काबन, विकाशकारम्ब मरवावित्यव व्यवस्थित ना वाकाय, व्यवस्थित करवाव क्षणाशक्तीमन कर्तिक क्रेंदि, हेहात निक्डि मरबा। ना बाकात बाजार्यहरे অববারণ হইতে পারে না অভিপ্রার এই বে, এতগুলি প্রত্যরধারা অবিভার নিবৰ্ত্তক, এল্প কোনও ব্যবস্থা না বাকায় প্ৰকৃত পক্ষে শাল্পের উদ্দেশ্যই वित्र कता बाहेर्ड शास्त्र ना: देश जनमारे स्थानावर: मुख्यार क्यमरे चीकार्वा बहेरक भारत मा । मा अ कवांच बला बाहेरक भारत मा; कांचव, चाक ७ पांचिम अकारतत मर्था चित्रमाळ विश्मवय मारे, पर्याय अवस्थायमा विष्णा-

প্রভার-বারা অথবা মরণকাল পর্বান্ত প্রবিহ্নাণ বিভা-প্রভারবারা অবিভঃনিবর্ত্তক, এরূপ বিশেষ করিয়া বলিবার কোন কারণ নাই; আদি ও অভ্যা প্রভার সভাকে পূর্বে বে চুইটা কোব কবিত হইয়াছে, এখানেও দেই চুইটা লোবেরই সভাবনা আছে। তাল কবা, এইঙপই বলি হয়, তারা হুইলে বলিব, জান অবিভার নিবর্ত্তকই নর; না,—দে কবাও বলা বার না; কাবণ, ভিনি নেট বিজ্ঞানের প্রভাবে সর্বান্তক হুটয়াছিলেন,' ব্যাহরের অবিভাগ্রান্থ ছিল্ল হুইয়া বার,' 'লে অবভার আবার মোহই বা কি বিভাগি ইত্যাদি ইতিই এ বিব্যার প্রবাণ। ৩১

বহি বল. "তথাৎ তৎ সন্ধন্নতবং" ইত্যাহি ক্রতি কেবল 'অর্থবাল' বাত্র,
অর্থাৎ ব্রহ্মবিভার প্রশংসায়কমাত্র, কিন্তু প্রকৃত সভাগপপ্রভাশক নহে; না,
ভাষা ইইলে সর্কশাবীর উপনিবল্ স্কৃষ্টেরই অর্থবাল্য হুইতে পারে। কারণ,
সর্কশাবীর সমত উপনিবল্ট কেবল এইনাত্র অর্থ প্রতিপালন কাররাই বিপ্রায়
লাভ করিরাছে। বলি বল, ঐ সমত্ত উপনিবলের প্রতিপালা বিবর আয়া বরন
প্রভাজপন্য, ভবন অর্থবাল হর হউক; না, সে কর্যান্ত বলিতে পার না; কারণ,
এ কর্যার বীমাংসা পূর্বেই ক্রিত হুইরাছে, অর্থাৎ বিভাগভাবে বে, অবিল্যাক্রতে শোক-বোহ-ভরান্তির নিকৃত্তি হর, ইরা প্রভাগ অর্থাৎ বিভাগভাবান্ত;
স্কৃত্রাং এ বিবলে প্রতির অর্থবালয় কর্রনা করা সক্রত হর না; এ ক্রথা পূর্বেই
বলা হুইরাছে। অতএব, অবিভালি-লোবনিকৃত্তিরূপ ফলোৎপালনেই ব্রথন
বিভার পরিস্কান্তি, ভবন জ্ঞান সমত্তে আলা, অন্তা, সম্বত্ত বা অসম্ভত ইত্যানি
আপত্তির অবস্থই নাই। কারণ, বে প্রভারে অবিভালি লোব-নিচর নিবারিত্ত
বন্ধ, ভারাকেই বিভা বলিরা বীকার করা হর, এখন ভালা আছই হউক, বা
অন্তাই হউক, সম্ভতই হউক, অসম্ভতই হউক, সে সম্বন্ধে কেনাও কথা নাই;
স্কৃত্ত্যাং এ বিবরে আগভিরত্ত অবস্থ নাই। ৩২

আর বে, বিপরীত বৃদ্ধি ও তরস্থান কার্যার্যনিত্রণ অপর কেতু প্রকৃথিত হাইরাছে, তাহাও সকত হর নাই; কারণ, প্রায়ন্ত কর্মণোবাই ঐরণ বাবংগারের কারণ, অর্থাৎ বে কর্মাস্থারে উপস্থিত বেং আরম্ভ বা উৎপন্ন হাইরাছে, সেই কর্মাই ঐলপ বিপরীত বৃদ্ধি-বোবের সমৃৎপাদক; বিপরীত বৃদ্ধিনংমুক্ত তামুন্দ কর্মেরাই অসম্প্রাণ কর্মানারে সামর্থা; এই কারণে, বে পর্যান্ত বর্মানার বিশ্বান বার্যা, সেই পরাভ কর্মানারের অক্তরণে অর্থাৎ কর্মানার বিশ্বান বার্যান ব্যান্তরার অক্তরণে অর্থাৎ কর্মানার বিশ্বান বার্যান্তরার ও রাগ্ন

বেবাদি বোবেরও উত্তাবন করিয়া বাকে; কারণ, ভোগের হেতৃত্ব কর্মপ্রদি ভবনও কল দিয়া বিরত হর নাই; স্বভরাং ব্যুক্ত বাণের লাভ প্রারহ্ম শেষ লাভ ভরা পর্যান্ত ভাগের বিরাষ চইতে পারে না। এই কল বিরুদ্ধ নর বলিরাই সমুৎপর প্রদাবিভা তাদৃশ বিপরীত প্রভারের নিবারণ করে না, [বিরুদ্ধ দলেই বিভা বারা অবিভা বাবিত হইয়া বাকে, অবিরুদ্ধ হলে নহে]; ভবে, ভবিত্তংকালে আনবিরোধী বে সমন্ত অবিদ্যা-কার্যা সমুৎপর হইবে, বিরুদ্ধ ভাব বলিরা কেবল সেঠ সমন্ত অভানকার্যাকেই নিরুদ্ধ করিয়া বাকে; কারণ, ভাবা ভবনও অনাগত: আর প্রারহ্ম হইন অভাত; বিভারাং ভারার আর নিবারণ করা সন্তবপর হয় না](১)।০৩

আরও এক কথা, বথার্থ বিভাগতার বাজিব বিপরীত বৃদ্ধি হওরা সম্ভবপরও হর না , কেন না, সে সমর ঐরপ আনের কোনরপ বিষয়-বিজ্ঞেরও বর্তমান থাকে না ; সাধারণতঃ বে যন্ত বিশিষ্টরণে অবধারিত না হর, সামান্তাভারে পরিবৃট্ট তামূপ বর্ত্তীবশেষকে অবলখন করিয়াই বিপরীত আন সমুৎপর হইরা থাকে; বেমন—ওজিতে রহুতজান হইরা থাকে; কালেই বে বাজি বন্ধারত বিশেষ ধর্ম অবধারণ করিতে সমর্থ হইরাছেন,—বিপরীত জানের সর্মপ্রকার সংখ্যার বিমন্ধিত করিতে পারিয়াছেন, ভাষার 'নকট পূর্মবৎ প্রায়ভ্জান সমুৎপর হওরা কথনই সম্ভবপর হয় না; কেন না, ওজিজানের পর তবিবরে পুনর্মার আন্তিজান অগ্নিতে ধেব। বার না; িক্তরাং বন্ধ চহবিৎ ব্যাক্তর প্রেম্পর ব্যারীর আন্তিজান অগ্নিতে ধেব। বার না; িক্তরাং বন্ধ চহবিৎ ব্যাক্তর প্রেম্পর ব্যারীর আন্তিসমূৎপত্তি অসম্ভব)। ৩৪

কোৰাও বা, বিজ্ঞা-প্ৰাছ্ডাবের পূৰ্বতম বিপরীত-প্ৰঠীতজা: সংস্কাহ-সমূহ হইতেও বিপরীত-জানাভাস (বাহা আপাততঃ বিপরীত জান বলিয়া

⁽э) ভাৎপদ্ম—এবানে আপতা বইরাহিল বে. বছনিত্বা ধনন কারত কর্ম ও তৎকলের নিবৃত্তি করিতে সংব্ হয় না, তবন অনারত কর্মেরও নিবৃত্তি করিতে পাবে না, তহতরে বলিতেয়েল বে, থেনানে জানের প্রতিকুলভাবে কর্ম ও কর্মকল উৎপন্ন হটবার সভাবলা আছে, জান কেবল ভাতৃল চবিবাংকর্ম ও কর্মকলেরট বাবা বটাইয়া বাতে, কিন্তু থেবানে কর্ম ও তৎকল জানের অবিযোগী, অবচ প্রেমিংশর, নেবানে জান উৎপন্ন হটয়াও সে সমুহারের নিবৃত্তি করিতে পারে না। প্রায়ত কর্মগুলি জানোয়ায়ের প্রেমিংকল দিতে এবুত হটরাও, অবচ জানের পরিপন্নীও মত্ত, ভ্রতার অভ্যান উৎপন্ন হটয়াও নেওলির বাবা বিভে পারে লা, পঞ্চারের বে সম্বন্ধ কর্ম ভ্রমণ কর্মক কর্ম বিভে আরত গরে নাই, ভারাবের কর্ম জান বারা নির্মাত হয়।

বনে হয়, কিন্তু বাভবিক পকে নেওলি বন্ধৰ বাত্ৰ. নেই সমত বন্ধৰাত্ৰক আন্) উপ্পন্ন হইলা হঠাৎ বিপন্নীত বুভি-জন ক্যাইছা ব'কে; বেননা, বে লোক পূৰ্বানি বিবিকাশ আনে, ভাগানই কিন্সুখন্তে প্ৰনাজক বিপন্নীত বুভি বচিন। বাবে, [ইয়াও ডেমনি]! আন বন্ধি ব্যাৰ্থ-ভবজ লোকেন্তৰ পূৰ্বাবং বৃত্তি-বিজ্ঞান উৎপন্ন হয় বল, ভাগা হইলে ভ ভব খানের উপন্নই লোকেন্ত্র অবিধান উপন্থিত হইতে পারে; ভাগার কলে শালার্থজ্ঞানে লোক-প্রস্থানিই ব্যাধ্যত্ত ঘটে! বিশেষতঃ কোন্টি প্রমাণ, আন ভোন্টি প্রমাণ, ইহা নিশ্চন্ত করিয়ার বিশেষ কোন উপান্ন না থাকার সমত্ত প্রমাণই প্রমাণনাধ্যে পরিপ্রিত হইতে পারে। এ কবা বাবা 'ভব্জ্ঞানলাভের পরক্ষণেই নরীব-পাত ব্যা মা কেন গু' এই প্যাণভিও বভিত হলে। ৩৫

'জানীর কলপ্রান্তি সম্বন্ধে কোন প্রকার বিমের সন্থাবনা নাই', ক্রতিও এই কথা হইতে ইহাও প্রমাণিত হইতেছে বে, তত্বজানোগরের পূর্বে, পরে ও তৎস্বকালে ভাত এবং ক্যান্তরস্কিত যে সমন্ত কর্ম উপনও কণ থিতে আছত করে নাই, সে সমূহর কর্মও বিমন্ত হটয়ং হায়। প্রতি বলিভেচেন—'ইহার (জানীর) সম্ভ কর্ম কর প্রাপ্ত হয়', 'প্রারন্ধ কর্ম কর না হওয়া পর্বান্তই জাহার বিশ্বর্ধ', 'সমন্ত পাণ লম্ভ ইইয়া হায়', ঠাচাকে ভানিলে পর আর পাণ-কর্ম হায়া লিপ্ত হয় না', 'কেবল ইহাকের পূব্য ও পাণ আক্রমণ করিতে পারে না,' 'পূব্য ও পাণ ভাহাকে তাণ ছেয় না,' 'ইহাকের কেবল ভাগ ছেয় না', 'কোবা হইজেও ভাত হয় না' ইত্যাদি। আর স্বভিশান্তর বলিতেছেন—'হে আর্ক্র, জানরূপ করি সমন্ত কর্ম তত্মীভূত করে' ইত্যাদি। ৩৬

আর বে, জানীরাও বংশ জাবদ্ধ থাকেন বলা হইরাছে, ভাহাও স্বত হইতে পারে না; কারণ,বল্লতির বিষয় হইতেছে— ববিধান্ পূরুষ; কারণ,কর্জ্বাধি বর্ম ভাহার স্বছেই উপপন্ন ধর। বিশেষতঃ এই উপনিবদেই পরে বলা হইবে বে, 'বে অবহার ক্রম-বন্ধ জীব হইতে পৃথক্তাবাপরের প্রায় ৬য়, তথনই একে অপরকে ধর্লন করে'। ইহার অভিনাধ এই বে, বে অবিভা বিভ্যান থাকিলে জীব হইতে অনপ্র বা অপূথপ ভূত আত্মানামক সংস্কৃতিকে পূথক্ প্রার্থের প্রায় বোধ হয়,—বেমন তিমিরয়োগঞ্জর ব্যাঞ্জর নিক্ট এক চন্ত্রও স্বিভীয়বৎ প্রতিভাত হয়; সেই অবহারই অবিভান্নত অনেক কারক সাপেক ধর্ণনাধি ক্রিয়া ও ওজ্ঞনিত ক্রের স্ক্রাব—"তল্ল অভ্যোহতৎ প্রেত্তিই ইন্ড্যাধি বাক্ষ্যে প্রধর্শন করিভেছে; প্রভাবনে, খবন বিশ্বার উলয় বয়,

उथम चिकाइन्ड चरमक्षत्रम निर्वातिक दरेश संब, कविनतार 'किरमब संबा काहारक वर्णम कविरय' और वार्ला किशास चमकायमा क्षेत्रण्य किशास चमकायमा क्षेत्रण्य । चक्रत्रम, क्ष्मीवित चक्रीम मक्ष्मित देव विनार पृक्तिक हरेर रह, चिकाइक्ष्मित्र विश्व स्थापन सरह । ०१

'ভদ্ৰধা ইবৈৰ তাৰং' ইতালি। বে কোৰও অব্ৰক্ত পূক্ৰ অভআৱভিন্ন, বে কোৰও বেবতার উপাসনা করে, অর্থাৎ অতি, নৰ্কার,
নাস (সভপুলাছি ছারা পূজা), বলি-উপহার (নৈবেল স্বর্গন), প্রবিনাম (চিন্তের একার্মতা) ও ব্যান প্রভৃতি ছারা নিকটে পাকে—সেই
দেবতার ওপভাব বা অব্যানতঃ অবলকনপূর্কক বঙ্গান বাকে, অর্থাৎ
আনার উপাস্ত এই অনাস্ত্রবস্তুতি আনা হইতে পূথক, উপাসনার অধিকারী আনি বইতেতি—ইবা হইতে পূথক, এবং আমাকে অব্যর্গের জার
টইনি খারাধনা করিতে হইবে, এইরপ বিহাস সহকারে উপাসনা করে,
নিল্ল আনসন্দার সেই উপাসক কিন্ত প্রকৃত ভন্ত আনে না। সেই ব্যক্তি
বে, কেবল এবংবিধ অবিভা-ছোনেই কর্ষিত, ভাছা নহে; ভবে জি গু মা,
প্রাদি পভ্যেরপ বাহন ও ছোহনান্তিরপ উপকার সাধন করিরা (স্হত্বের)
উপজ্জ হউরা থাকে, ঠিক সেইরপ সেই উপাসকও বজানি কার্যা ছারা এক
এক ব্যক্তার ভোগ সম্পাদন করিরা থাকে; এই জন্ত ভালুল পূক্ষও প্রভর
ভারই স্বর্গপ্রকার কর্পে অবিভার লাভ করিয়া থাকে। ও৮

বণাপ্রমাধি বিভাগসম্পন্ন কর্ণাধিকারী উক্ত অবিধান্ পূরুষ পারোক্ত বে সম্বন্ধ কর্পের অনুষ্ঠান করেন, দে সম্বন্ধ কর্প উপাসনাসংকৃতই হউক, আর তথিবুক্তই হউক, ভাহার উৎকৃষ্ট কল হইভেছে—মহুবাদ হইতে আরক্ত করিয়া ব্রহ্মখনাত পর্যান্ত; আর শারোক্তের বিপরীত (অনাব্রীর) স্বাভাবিক কর্পের অপকৃষ্ট ফল হইভেছে—মহুবাদ হইতে আরক্ত করিয়া হাবরভাবপ্রান্তি পর্যান্ত। বাহাতে এই কণা প্রমাণিত হইতে পারে, ভাহা এই অব্যান্তের শেষাংশে "অব অরো যাব লোকাঃ" ইভ্যাদি বাক্যে আমন্ত্রা প্রতিপাদন করিব। বিভার কল বে, সর্বান্ত্রভাবিলান্তি, ভাহাও সংক্রেণে প্রচ্পান্ত বইয়াছে; এই সম্পূর্ণ বৃহত্বার্ণ্যকোপনিষ্কৃতি বিভাও অবিভার বিভান-প্রমাণ্ড হইতে পারে, আমন্ত্র। বাহাতে ইহা সমন্ত্র শারের প্রতিপাভার্ত্রণে প্রমাণিত হইতে পারে, আমন্ত্র। ভাহা প্রস্থান করিব। ৩৯

(बारकू, बरेशकर माञ्चार्य मिनींक बरेम, त्मरे त्यकू त्यवन व्यविचान

পুদ্ধবন্ধ থাতি বিদ্বাচন্ত্ৰণ বা অন্থ্যন্ত্ৰহৰ্ণন করিতে অবগুই সূবৰ্ধ হন; ইহা প্ৰথমিক করিবার উক্তেড়ে বলিতেছেন—অগতে গো, অথ প্ৰভৃতি বহুপত বেল্লপ নিজের প্ৰভূ বা রক্ষ বহুস্তকে তোপ করিবা থাকে—পালন করিবা থাকে, ভক্ষণ বহুপত হারক বহুসকে তোপ করিবা প্রথম এবগণকে ভোগ করে অর্থাৎ পোষণ করে—এই ইল্লাকি বেবগণ আবা হইতে পূথক, আবার প্রভূ, আবি ভ্রতার স্থায় যতি, নমন্বার ও বাগানি করিবা থারা ইলাকের আরাননা করিবা ইলাকেরই অন্থ্যন্থপত অন্থান্থ (পর্নাকি) ও নিয়ন্ত্রের (বুজি) কল লাভ করিব, এইরূপ বনে করিবা থাকে। এখানে "কেবানাং" এই ক্ষেত্রান্ধ প্রভূতিরও বোধক; [কুতরাং বছুবাগণ বেনন ক্ষেত্রার গোগা, তেমনি পিঞালিবও ভোগা)। ৪০

অগতে বাবার বহু পত আছে, তাবার একটি পত গৃহীত হইলেও ধর্বার বিশ্ব বি

⁽১) ভাংপথা—এবাবে 'অন্তৰ্ণ বলিবার অভিনান এই যে, বাছা খেবিলে বেলার্থ 'অন্তব্য, অথবা বেলার্থ 'অনপ্রক্রক বাছা ছিত হইলাবে, ভাষার নাম 'প্রতি লাম। ভবিপৰ অধীন বেলার্থকৈ সমল করিয়া বুরাইবার নিমিত্ত প্রতিলায় করে। করিখাছেন ; প্রতনাং প্রতিলায়ের উপায়েল বেবিলেই ভাষজুরাপ বেঘবাকোর 'অন্তব হইলা থাকে। এইজন্ত 'আন্তব' বাংলাক প্রতিলায়কে বুরার। আলোচাগুলে ব্যাসের 'অন্তব বলিবার উল্লেখ্য এই যে, ব্যাপ বর্ণম প্রতিভ পৃতিলায়ের বব্যে "ক্রিয়াবৃত্তিং" ইত্যাধি বাধ্য বিশ্বত ক্রিয়াছেন, ভবন ভিনি বিশ্বতাই এই ক্রেভি হইছে ই ভাব সংগ্রহ করিয়াছেন, এরপ অভ্যান করা বাইছে পারে; সুভারার ভীয়ার ক্রাক্তেও এই ক্রেভিয় উন্নল পর্বাই গরিক্ট হইডেছে বুলিতে হইবে।

উপভোগ্যভাব হইতে উপিত না হউক, এই বনে করিরা বেবপণ তাথাবের একবিঞানেও বিয়াচরণ করিরা থাকেন; আবার বাহাকে বিষ্কুত করিতে ইচ্ছা করেন, তাহাকে প্রভাবিসাধনের সহিত সংবাজিত করেন, অপরকে অপ্রভাবির সহিত সংবোজিত করেন। এই 'কেবাপ্রির' প্রতিবাক্যে কাকু দারা (তলিজ্ঞানে (২) ইবাই জাপন করিগেন বে, অতএব বুরুক্ ব্যক্তি বেবতার আরাধনার তৎপর, প্রভাতজ্ঞিসম্পর, বিনীত ও প্রবাহহীন (সাবধান) হইবেন, (কথনও তরিপরীত হইবেন না) ॥ ৪৭ ৪ ১০ ঃ

আ ভাজ্য-ভাজ্যতা। প্রিতঃ শাষার্থ:—"আরেতোবোপাসীত"
ইতি; তত চ বাচিব্যানিতত সার্থাদেন "তবাহর্ষ্ত্রমবিভাগ" ইত্যাদিনা সম্বদ্ধরোধনে অভিবিতে; অবিভাগান্ত সংসারাবিকারকারপদ্ধ্ মুক্তম্—"অব বোহভাং দেবতাস্পাত্তে" ইত্যাদিনা। ভ্রাবিঘান্ বনী পত্রদেবাদিকর্মকর্তবাতরা পরতর ইত্যক্তম্। কিং পুনর্দেবাদিকর্মকর্তবাত্তে— নিষিত্রম্প বর্ণা আপ্রয়ান্ত; তত্র কে বর্ণাঃ ? ইত্যাত ইম্মারভাতে— ব্যিনিত্রস্থান্তের্ কর্মায় অরং পরতর এবাহিক্তঃ সংস্রতি। একজৈবার্বত প্রদর্শনার অগ্নিস্থান্তরবিজ্ঞাদিনর্গো নোক্তঃ; অরেন্ত সর্ম্য প্রকাশতেঃ স্প্রীপরিপ্রণার প্রদর্শিতঃ। অরক্ষোদিনর্গত্তির জইবাঃ, তক্ষেম্বাৎ; ইর্ তু স এবাভিনারতে অবিভূষঃ কর্মাধিকার্ডেগ্রন্থনিয়া।

ভাষ্যা নুবাদে। উপনিবং-শান্তের বাহা প্রকৃত অর্ব, তাহঃ
"বাবেতোবোপানীত" ক্রতিতে সংকেপে উক্ত হইরাছে; তাহারই ঝাবা।
করিবার অভিগ্রান্তে অর্বাহর্ক্ত "তহাহঃ বহুরছবিছয়।" ইত্যাহ বাক্যে সম্বদ্ধ
এবং গ্রন্থানত অভিহিত হইরাছে। তাহার পর অবিছাই বে, সংসারপ্রাধির
কারণ, তাহাও "অব বোহতঃং দেবতারুপাতে" ইত্যাদি ক্রতিতে কবিত হইরাছে; সেবানে এ কবাও বলা হইরাছে বে, অবিহান্ পুরুষ বণপ্রত— হেবানির
কার্ব্যসম্পাদনে বাব্য বলিরা পত্রর ছার পরাবীন। এবন জিলাত হইতেছে বে,
দেবাদির কর্ম বে অবভাই করিতে হইবে, তাহার কারণ কি ? বর্ম ও আগ্রন;
ভঙ্গাধ্যে এই অবিহান্ পুরুষ সেই ব্যাহ্যাদি বর্ণরগ নিবিভের সহিত সংস্কর্ট

⁽২) ভাংপথা -'কারু' ধর্ব--খরবিকৃতি; 'কারু: রিরাং বিকারো মা পোকভীত্যাদি-ভিগানে:।" (অয়র:)। অর্থাং লোকভরাদি কারণে যে, থানির (কঠবরের) বিকৃতি, ভাগার নাম কারু। প্রতি যদিও পাই কথার মুমুক্তর পাকে প্রভাতভিসাধনার কথা বনেন নাই বটে; কিন্তু ভাগার বাকাওলীতে ইক্সপ অভিনায়েই মুখা ঘাইতেংও।

বৃদ্ধবন্ধ অভি বিষাচয়ণ বা অভ্যাহতারণনি ভারিতে অবভাই সুমূর্য বন ; ইবা নাম্পনি করিবার উল্লেখ্য বলিভেছেন—অবভে গো, লব অভ্তি বহুপত বেল্লপ নিজের অভু বা রক্ত বহুলকে ভোগ করিব। বাকে—পাগন করিব। বাকে, তক্রপ বহুপত হানীর একএকটি ব'বিধান পুরুষত হেবপণ্ডে ভোগ করে অর্থাৎ পোষণ করে—এই ইপ্রাধি বেবপণ আবা হইতে পৃথক, আবার প্রভু, আবি ভূত্যের ভার ভাতি, নবভার ও বাগানি কার্ব। ভারা ইহামের আবাননা করিব। ইহামেরই অভ্যাহতারত অভ্যায়র (বর্গামি) ও নিঃপ্রেরণ (মুক্তি) কল লাভ করিব, এইল্লপ বনে করিব। বাবে। এবানে "মেবানাং" এই মেবতান লক্ষটি পিতৃপণ প্রভৃত্তিরও বোরক; [স্কুডবাং বছ্যাপণ বেধন মেবভার ভোগা, তেরনি পিত্রাধিরও ভোগা]। ১০

ক্ষাতে খাবার বহু গত আছে, তাবার একটি গত সৃহীত হইলেও থাবিং, বামালিকর্ত্ব অপহাত বইবার মত হইলেও বেবন অত্যন্ত অগ্রির (হুংব) উপহিত হয় তেখনি বহুপত হানীয় একটি পুরুষ পশুভাব হইতে অথাং অবিভাবহা হইতে উবান করিবার উল্বোগ করিতে থাকিলে, বহু পশু অপহাণে সৃহছের বেবন হংব হয়, তেখনি বেবপণেরও বে, বহা অগ্রিয় হইবে, ইব। আর বিভিত্র কি গুলেই বেহু ইবাছের তাহা প্রিয় নর; তাহা কি গুলা, বহুত্বপণ বে, কোন প্রকারেও এই রহ্মান্ত ও আনিতে পারে; ইহা বেবপণের প্রিয় নহে । অনুনীতাপ্রছে তপবান বেদবানেও এইরপই অর্ব (১ : করিয়াছেন,—'বে কৌছের (অর্জুন), ক্রিয়াধিকত পুক্ষ বাহা বেবলাক পরিপূর্ব হইরা রহিচাছে; মরবনীল স্থানবগণ বে, দেবপণেরও উপরে বাকে, ইব। তাহাছের অভিপ্রেত নতে'; অভ্যান, পশুসণকে বেরুপ ব্যান্তাহির বিকট হইতে রক্ষা করির। পাকে, তক্রপ সমুন্তপ্য আমানের

⁽১) তাংশ্বা—এবানে স্থন বলিদার অভিনাম এই বে, বাহা গেবিলে বেদার্থ স্থাপ তথ্য, অবনা বেদার্থ স্থাপ্র কানা হতিত হউয়াছে, ভাষার নাম 'স্বাচি শায়। অবিপৰ অটিল বেলার্থকৈ সমল কবিয়া ব্রাইবার নিনিত্ত স্থাভিশায় রচনা করিচাথেন; স্বচনাং স্বাচিশায়র উপায়ল গেবিলেই ভবস্থাল বেদবাকোর স্থান বইয়া বাকে; এইজভ 'স্থাম' বালালেও স্বাভিশায়কে ব্রার। আলোচায়লে বাাসের স্থান বলিবার উল্লেখ্য এই বে, বাাদ বৰম স্থানিভ স্থিলায়ের বব্যে "ক্রিমার্থি" ইত্যাদি বাকা বিভগ্ত করিয়ারেন, ভবন ভিনি বিল্ডেই এই ক্রডি ইইডে ঐ ভাব সংগ্রহ করিয়াছেন, এয়প অক্সাম করা বাইডে পায়ে; স্থামার উল্লেখ্য এই ফ্রডির ই ফ্রডির ইয়ল করিয়ার করিছেও এই ফ্রডির ইয়ল স্থান করি প্রিকৃত্ত হইবে।

व्यवस्थाताः एक्यर वायानम् ।

উপভোগ্যভাব হইতে উপিত সা হউক, এই মনে করিয়া বেবগৰ ভাবাহের ব্ৰথমিলানেও বিশ্বাচয়ৰ করিয়া বাকেন; আবার বাবাকে বিবৃত্ত করিতে ইচ্ছা করেন, ভাবাকে প্রভাবিসাধনের সহিত সংবোজিত করেন, অপরকে অপ্রভাবির সহিত সংবোজিত করেন। এই 'রেবাপ্রিয়' প্রভিবাক্যে কাকু বারা (ভাল্যেরে (২) ইবাই জাপন করিপেন বে, অভএব বৃষ্কু ব্যক্তি বেবভার আরাধনায় ভৎপর, প্রভাভজিসম্পন্ন, বিনীত ও প্রশাহরীন (সাবধান) হইবেন, (কথনও ভবিশরীত হইবেন না) ॥ ৪৭ ॥ ১০।

আ ভাস- ভাজ্যক। প্রতঃ শারার্থ:—"লারেতোবোপাসীত"
ইতি; তত চ ব্যাচির্যাদিতত সার্ববারেন "তহাহর্ব্রম্বিভয়া" ইত্যাদিনা সম্ব-গ্রেমনে অভিহিতে; অবিভায়াক সংসারাবিকারকারবন্ধমুক্তব্—"অব বোহভাং দেবতার্পান্তে" ইত্যাহিনা। ত্রাবিদান বন্ধী
পশুবদেবাদিকর্মকর্মবাতরা পরতয় ইত্যক্তব্। কিং পুনর্দেবাদিকর্মকর্মবান্ধে
নিষ্ক্রম্পু বর্ণা আশ্রমাক; তার কে বর্ণাঃ ইত্যাত ইহমারতাতে—
ব্যামিত্তসম্বের্ কর্মান্থ আরং পরতয় এবাবিক্রতঃ সংসরতি। এততৈবার্ধত
প্রদর্শনার অধিস্কানন্ধরবিক্রাহ্মনর্দেগা নোকঃ; অরেম্ব সর্ম্য প্রজাপতঃ
ক্রিপারপুরণার প্রদর্শিতঃ। অরক্রেমান্ধ্রম্বিকারহেত্প্রধর্শনার।
ইব তু স এবাতিবারতে অবিভ্রয় কর্মাধিকারহেত্প্রধর্শনার।

ভাষ্যানুবাদে। উপনিবং-শান্তের বাহা প্রকৃত অর্ব, ভাহা "বান্তেবোপানীত" প্রতিতে সংকেপে উক্ত হইলাছে; তাহারই ব্যাব্যা করিবার অভিপ্রান্থে অব্বাহর্ক "তহাহ: বল্ডছবিজয়া" ইত্যাহ বাক্যে সম্বন্ধ এবং প্রয়োজনও অভিহিত হইলাছে। তাহার পর অবিভাই বে, সংসারপ্রাধির কারণ, তাহাও "অব বোহজঃ দেবতারুপাতে" ইত্যাহি প্রভিত্তে কবিত হইলাছে; সেবানে এ কথাও বলা হইলাছে বে, অবিহান্ পূরুব বণপ্রত— ফেবাহির কার্য্যসম্পাদনে বাধ্য বলিরা পত্র ভার পরাধীন। এবন ক্রিজাত হইতেছে বে, দেবাহির কর্ম বে অবভই করিতে হইবে, তাহার কারণ কি । বর্ম ও আপ্রম্ন; জন্মধ্যে এই অবিহান্ পূরুব সেই ব্রাহ্মপাহি বর্ণর্কণ নিমিন্তের সহিত্ত সংস্কট

⁽ ५) ভাংপধ্য -- কাকৃ' অর্থ-- পরবিকৃতি; 'কাকৃ: ব্রিরাং বিকারে। বঃ শোকভীজ্যাধি-ভিথানৈ:।" (অবর:)। অর্থাৎ লোকভরাধি কারণে বে, থানির (কর্তুবরেঃ) বিকৃতি, ভাগার নাম কাকৃ। প্রতিভাগিত করার মুমুক্তর পক্ষে প্রভাতভিদ্যাধনার কথা বংলন নাই বটে: কিন্তু ভাগার মাজ্যভাগিতে উল্লেশ অভিনারই মুখা মাইতেতে।

কৰে শ্ৰিকাৰ প্ৰাপ্ত বইবা প্ৰাণীৰভাবে সংসাৱী হইবা থাকে; সেই বৰ্ণ কি, ভাষা নিৱপথের নিবিভ এই প্রবর্তী বাক্য আছত বইভেছে। আছ এই বিষয়ট পূবপ্তাবে প্রকর্পন করিবেল বলিয়াই পূর্বে অভিকৃতির পর ইপ্রাণি বেৰুস্টের কথা বর্ণনা করেন নাই; সেথানে কেবল প্রভাগভিত্র স্টেক্তির পরি-পৃত্রবের অভই অভিকৃতির কথা বলিয়াছেন যাত্র; আর অভভ্য ইপ্রাণিস্টিও স্থেবের অভই অভিকৃতির কথা বলিয়াছেন যাত্র; আর অভভ্য ইপ্রাণিস্টিও স্থেবের অভই (প্রভাগভিত্র স্টেমধ্যেই সন্ধিবিত্র) বৃত্তিতে হইবে; কাঙণ, ইবা হইতেছে—ভাহারই পের বা অবশিষ্ট অংগ; এথানে কেবল অবিভাগের কর্মাধিকারের নিবিত্ব-প্রতর্থনার্থ পুরুস্ভাবে অভিহিত হইতেছে যাত্র।

ব্ৰহ্ম বা ইনমগ্ৰ আগীদেকমেৰ, তদেকত সন্ন ৰাভবং।
তল্পেয়োরূপমতাসকত কল্পম্—যাভেতানি দেবতা কল্পাণিক্রো
বল্পাং সোমো কল্পঃ পর্জভো যথে। মৃত্যুরীশান ইতি। তন্মাৎ
কল্পাৎ পরং নান্তি, তন্মাদ্তাক্ষণঃ কল্পিয়মধন্তান্তপান্তে রাজসূরে, কল্প এব তদ্যশো দধাতি, সৈয়া কল্পন্ত যোনির্যদ্ ব্রক্ষ।

ভক্ষাদ্ যন্তপি রাজা পরমতাং গচ্চতি ত্রকোবাস্তত উপনি-শ্রমতি স্বাং যোনিম্, য উ এনত হিনস্তি স্বাত স যোনিমুক্তি, স পাশীয়ান্ ভবতি, যথা শ্রেয়াত্যত হিত্যিকা॥ ৪৮॥ ১১ ।

ज्ञास्तार्थं । चार्य (श्राहेः क्राह्) हेन्स् (क्र्याहिं (क्रम् कार्य) अवस्त अव देद (खित्रहों) चानीय। एव (अव) अवस्त (चन्नकार नय) न वाच्यय [चाच्याः वर्ष्याः नन्नावित्रक्तः) च्याः (च्यावित्रकार) व्याः (च्यावित्

ক্ষা: এব তথ (বকীরং) ববং (রক্ষেতি ব্যাভিত্রপন্) বধাতি, [রাজস্থে অভিবিজ্ঞের রাজ। রক্ষাতি দাবাতি বছিক প্রতং প্রতিবৃদ্ধি—রাজবৃদ্ধ রক্ষানীতি; তারের বনঃ আবানবিতি ভাব:]। সা এবা (প্রকৃতা) ক্ষাত্রতারিং (কারবং)—বং রক্ষ (রাজবং); তথাৎ (ক্ষায়েপ্র রাজবংবানিধালের হেভো:) রাজা (ক্ষায়ঃ) বছলি (সভাবনারান্) পরস্বতাং (রাজস্থের পরবোৎকর্ষং) গজতি; [তবালি] অভতঃ (অভে—রাজস্মকর্মসারার্থঃ পরন্ধ) গজতি; [তবালি] অভতঃ (অভে—রাজস্মকর্মসারার্থঃ পরন্ধ, বাং (বকীরাং) বোনিং (কারবজ্ঞাণ;) রুদ্ধ এক উপনিম্নরাত্তি (আল্রাতি পুরোহিত্য অল্রে হালমতীতি বাবং)। বঃ উ (বঃ পুন:) বাং বোনিং এনং (রাজবং) হিনজি (অবজানাতি), সঃ (হিংসাকারী কন: পাণী এবং) পাণীধান্ (অতিশ্রেন পাণী ভবতি), ববা লেরাংসং (অভস্থক্টং) হিংসিরা [তবতি, তবা ইতার্থঃ] ৪ ৪৮ ৪ ১১ ৪

মূলাকুবাদে। স্তির পূর্বে এই জগৎ একমাত্র ব্রহ্মস্করণ ছিল, তিনি একাকী [কর্ম্মসম্পাদন করিতে] সমর্থ হইলেন না ; তিনি উত্তম শ্রেম্বর ক্ষত্রিয়-জাতি স্তি করিলেন—বাগারা দেবগণের মধ্যে প্রসিদ্ধ ক্ষত্রেয়—এই ইন্দ্র, বরুণ, সোম, ক্ষত্র. পর্চ্ছন্ত, বম, মৃত্যু ও ঈশান। অভএব ক্ষত্রির অপেকা আর শ্রেষ্ঠ নাই ; এই কারণেই রোচসূর্য যজে ব্রাহ্মণ নিজে নীচে বিসিয়। উপরিশ্বিত ক্ষত্রিয়ের আরাধনা করিয়া থাকেন ; ক্ষত্রিয়েই সেই বলঃ (ব্রাহ্মণছখ্যাতি) প্রহণ করেন ; সেই ইছাই ক্ষত্রিয়ের বোনি, অর্থাৎ বলঃপ্রান্তির কারণ,—বাগা ব্রহ্ম (ব্রাহ্মণ জাতি) ; অভএব ক্ষত্রের ভাতি বদি [রাজসূরে] পরমোৎকর্ম প্রান্ত হন, ভথাপি অন্তে অর্থাৎ বজ্ঞ-সমান্তির পর পুনর্বার স্ববোনি ব্রাহ্মণকেই আশ্রের করেন,—অত্রে স্থাপন করেন। বে লোক এই ব্রাহ্মণের হিংলা বা অবমাননা করেন, কণতঃ ভিনি ব্রহ্মণেরই উচ্ছেদ্যাধন করেন; এবং ভক্তন্ত ভিনি অভিশর পাপী হন—বেমন অক্ষান্ত শ্রেষ্ঠ বস্তু হিংলা করিয়া হইয়া থাকে, [ভেমনি] য় ৪৮ য় ১১ য়

न्ना क्या का का का वा देश्यत मागोर--रश्वर महे।वि-त्रगानतः त्रम--वायनवाकावियामान् तरमकावियोग्रक--रेन, रेनर क्यानि-

কানি পুনন্তানীত্যাহ—ভত্তাভিবিক্তা এব বিশেষতো ।ন্ধিপ্ততে —ইক্লো দেবানাং রাজা, বক্লগে বালদান্ সোধো বাজধানান্, কত্রঃ পশুনান্, পর্জন্তো বিছাল্লীনান্, ববঃ পিতৃগান্, মৃত্যুং রোগালীনান্, ঈশানে ভাসান্, ইংতাব-নালীনি কেবেরু কত্রাণি। ভলপ্র ইক্লাদিকত্রকেবভাগিটিভানি বস্থাক্ত্রাণি সোন-স্থাবংগ্রানি পুত্রবংপ্রভানি স্টাল্ডেব এটবানি; ভলব এব হি কেবক্ষ্যান্থি প্রভাগ । ২

ৰখাৰ ব্ৰহণা অভিনয়েন কৃষ্টং ক্ষত্ৰ, তখাং ক্ষাৎ পৰং নাভ —বাৰণভাতেরণি নিয়ন্ত্, তখাৰ্থাৰণ: কাৰণভূতে।হাঁপ ক্ষত্ৰত, ক্ষিত্ৰ বৰভাৎ বাৰন্তিঃ সন্ উপবিশ্বতম্পাভে,—ক ? রাজস্বে। ক্ষত্ৰ এব তদাখাবং
কাং ব্যাতিরূপং—ব্রেছিত দ্বাতি শ্বাপ্তি : বাজস্বাতিবিজ্ঞেন আসন্দাং
স্থিতেন রাজ্য আমহিত:—ব্দ্বিতি প্রিক্ পুনতঃ প্রভাহ—খং রাজন্
ব্যাসীতি; ভাতেদভিধীয়তে—ক্ষত্ৰ এব ভাবশো দ্বাতীতি। ৩

নৈৰা প্ৰকৃতা কথাত ৰোনিৱেব, বহু প্ৰদ্ধ। তাৰাণু বদ্যপি রাজা পরস্বতাং রাজস্বাভিষ্কেশ্বণং পদ্ধতি আপ্নোতি, একৈব প্রাদ্ধনাতিক্বৰ অবতঃ অন্তেক্ষণাতিনা উপনিপ্রয়তি আপ্রতি বাং বোনিং—পুরোধিতং পুরো নিধন্ধ-ইতার্থঃ। বন্ধ পুনর্মলাতিনানাৎ বাং বোনিং প্রাশ্বণাতিং প্রাদ্ধণং য উ এনং হিন্তি গুপ্তাবেন পশ্রতি, স্বানান্ধীয়ানের স বোনিস্কৃতি—সং প্রস্বং বিজ্ঞিনত্তি বিনাশয়তি। স এভৎ ক্রম পাসীধান্ পাপতরে। ভবতি; পূর্মবিপ ক্ষায়ং পাপাএব জ্বাছাৎ, আন্তর্ম স্বাহিংসরা স্ক্তরাষ্ট্র ব্বা লোকে প্রেরাংসং প্রশ্বতনং হিংসিছা পরিভূর পাপতরে। ভবতি, তবং ৪০৪। ১১ ৪

্টীক্ষা। সক্ষিত্ৰ বাক্যবাৰাৰ বাচেই—প্ৰক্ৰেন্ড। পৰে পঞানিসৰ্বাৎ পূৰ্বাৰিত বাবং। বৈ-সক্ষাৰবানপৰিত বৰন্ বাক্যবৈতিপূৰ্বকৰেত্বিভাভাৰিবাহ—ইফ্ছিডিঃ।

বিভারবেশ্বারং ব্যাচটে—সাজীদিন্তি। কবং তবি ভক্ত কর্মান্ত্রাবনামধ্যদিভিনিত্যান পরা সমসভবনাতাং ব্যাচটে—ততে ইন্ডি। তবে স্ট্রাকান্সাধারা প্রটিভিনিত্রাক্র পুনরিন্তি। একা তেও কর্মান্তিঃ স্ট্রা, কবং তবি বাকেনানীতি বহুতিবিভ্যাপভ্যাহ—তদ্মান্তিঃ ক্রমান্তিঃ ক্রমান্তিরেক্সান্তিঃ ক্রমান্তিরেক্সান্তিঃ ক্রমান্তিরেক্সান্তিঃ বহুক্সেনিত্রার্থিত ব্যাক্রমান্তি। ক্রমান্তিরেক্সান্তিঃ বহুক্সেনিত্রার্থার ক্রমান্তিরিত্রার্থানিত্রার বহুক্সিনিত্রার্থাঃ ক্রমান্তিঃ ক্রমান্তির বহুক্সিনিত্রার্থাঃ ক্রমান্তির বহুক্সনিত্রি সম্বন্ধঃ বহুক্সিনিত্রার্থাঃ ক্রমান্তির বহুক্সনিতি সম্বন্ধঃ ১৯

ভেষাং বিশেবতো গ্ৰহণ: ক্সভোজনকা ব্যাপনিজুমিতি নৰানঃ সন্নাহ—ক্ষ্যান্তি পুন্নিজ্যোদিনা। নম্থ তিনিতি বেংবৰু ক্ষমতীক্ষ্যাতে। নাজাভ কৰ্মামূলীন-সামৰ্থানিভাৰ্য: মন্থ্ৰোবেৰ ভংগ্ৰীকপনেইব্যেভ্যাপভ্যান-জন্মন্ত্ৰিজ্ঞ। ভৰাপি বিৰক্ষিত্ৰ। গ্ৰহীপুৰ্ভতা বজ্ঞবাত্ৰান্ত্ৰোগ্যাহ—জন্মন্ত্ৰিজ্ঞ। ২

ভশানিত্যাদি বাগেই—যন্মানিতি। ক্ষান্ত নিমন্থ বৰ্ণধৰ্ণ কেম্বন্থান ক্ষান্ত নিমন্থ বৰ্ণধৰ্ণ কৰিব কৰিব। উক্তৰেৰ প্ৰশান্ত সুযোজি। আনন্যাং নকি নামন্।

করে বকীরং বপ: সমর্পরতো রাজপত নিকর্বাপ্তাহ—লৈক্ষেতি। হলোর'লেপকত তুলাবাৎ কুডোংবাভরতেবং করেবণি প্রভুকালে রাজণাং প্রামেন্ডাডাঃ
প্রাহান—ভস্মান্ট্রিডি। করত রক্ষাভিতবে গোবরবণাচ্চ তত ভবপেকরা ভত্তবর্ধবিভাহ—অস্থিতি। প্রবাধানশীতি বজুবুপকং। বউ এবং হিম্বাভি প্রতীকরব্ধন,
বর পুনরিভাবি বাবেরান্তিতি ভেবং। উন্প্রভর্মকত প্রায়েশে হেছুবাহ—
পুর্ব্বম্পীতি। রাজণাভিতবে পাশীরক্ষিভিত্তহ্যাবরণের বুলাবারোপরতি
—যথেতি। ১৮৪১১

ভাষ্যাকুতা হ। "রন্ধ বা ইবনপ্র পানীং" ইতাবি। ব বন্ধ
পরিস্টির পর পরিভাগাগর এবং রাম্ব-কাজাতিবান নিবন্ধন বন্ধ নাবে
প্রভিত্ত হন, এই ক'রেরাবি ভাতিসমূহ [পরে | একমাত্র বন্ধই—বন্ধের
নাহত প্রভিত্তরাধী ছিল,—ক্ষরেরাবি বিভাগ ছিল না। নেই বন্ধ একাকী—
পরিপালনক্ষম ক্ষরেরাবিরহিত থাকিতে সমর্থ হইলেন না, প্রধাং কর্দ্ধসম্পাদনে সমর্থ হইলেন না। সেই কারবে, সেই বন্ধ—'পানি রাম্বন,
প্রায়ার পক্ষে এইরূপ কর্ম করা পারগুক্ত' এইরূপ চিন্তার পর বান্ধনাজাতিত
কর্ম ক্রিতে ইচ্ছুক হইলা, পাণনার কর্ম্বরা কর্মে কর্ম্বর রন্ধার নিমিত্ত
প্রোরার্য—প্রথম্যত জাতি উত্তম্বন্ধে স্কটি করিলেন। তিনি বাহা স্কটি
করিলেন, সেই প্রেরান্ত্রণ বন্ধটি কি? না ক্ষর—ক্ষরেরাভি; ভারাই
বিভিন্ন বান্ধিক্রম্যে বেধাইতেন্ত্রন —ক্সতে এই বে, দেবগর্থের মধ্যে প্রশিদ্ধ

শ্বিদ্ধ- গণ। তাভিনির্বেশয়নে একেতেও বৈক্ষিক বছৰচন হইবার বিধান পাকার, অথবা নৃক্তিভেবে একেতেও ভেক্ আরোণ করার 'ক্সাণি' পক্ বছৰচন হইরাছে। অভিপ্রায় এই বে, ইন্সানি-বক্লণাদিও ব্যক্তিগত বছবের স্থিত তথার প্রিরম্বলাতিরও অভিনয় আবোণ করার এগানে বছবচনের ব্যবহার অকৃচিত হয় নাই। >

णहात्रा (क (क ? এই चाकाक्यात्र, जाहारम्य मरता मानात्र। चिकिक्यात्र, विश्वविद्यात्र जाहारम्य जाहारम्य कि विश्वविद्यात्र कि विद्यात्र कि विद्यात्य कि विद्यात्र कि विद्यात्य कि

বেছের, এক বিশেষকরে করিছের কৃষ্টি করিছাছিলেন, সেই বেড়ু প্রাধানভাতিরক নিরভা বা পরিচালক করিছ অপেকা আর কেব নাই; এই কারপেই
বাক্ষণ করিছকাতির কারণ-বন্ধণ কইছাও করিছের নীচে অবস্থান করত
উপরিস্থিত করিছের উপাসনা করিছা থাকেন; কোথার ?—রাকস্থানারক
বজে: করিছেই আপনার বলং অর্থাং প্রাধানায়তি স্থাপন করেন,—রাকস্থ বজে অভিবিক্ত রাজা সকোপরি উপাবই ক্টছা থাকিক্কে (পুরোজিতকে) 'প্রথন্'
বাজিছা সবোধন করেন; ভত্তরে থাকিক্ আথার রাজাকে বলেন বে, 'রাজন্
বং ক্রম অসি' অর্থাং বং রাজন্, তুরি ক্ইতেছ এম; এই মভিপ্রায়েই "কর এক ভত্বলো কথাতি" বাক্য অভিবিত্ত ক্টতেছে।০

এই বে এম, ইহাই কজিয়ের বোনি (উৎপত্তির কারণ); দেই হেত্ রাজা বিভি পরসভা—রাজস্থাভিবেক্থাত পরম উৎকর্ম প্রাপ্ত হউক, ভবানি অন্তে অর্থাৎ রাজস্থ বজসমাজির পরে কিন্তু থ-বোনি একতেই— রাজ্যজাভিকেই আশ্রর করেন, অর্থাৎ সেই পুরোধিতকেই আবার অগ্রভাগে রাজ্যজাভিকেই বিংলা করে, অর্থাৎ বে লোক আপনার স্বন্ধর্যে এই ব্যোনি রাজ্যজাভিকেই বিংলা করে, অর্থাৎ অবজ্ঞার ভাবে কর্মন করে, সে লোক বীর বোল্ফিকেই—নিজের উৎপত্তিকারণকেই বিভিন্ন করে—বিনষ্ট করে। বেই রাজ্যি এইয়াল করিয়া পালীরান্—অভিনর পাণগ্রভ হয়; করিব- জাতি কুম্বভাব বলিয়া পূর্বেও নিক্মই পানী ছিন, পৰে আপনার উৎপত্তিত কারণ রাজপের হিংলা করার আরও অধিক পানী হয়; অগতে কোনও শ্রেষ্ঠ বা প্রখানিত ব্যক্তিকে হিংলা করিয়া—অভিকৃত করিয়া লোক ব্যৱস্থা অধিকতর পালী হইরা বাকে, ইহাও তক্তপ । ১৮১১ঃ

স নৈব ব্যন্তবৎ, স বিশমসঞ্জত—যাত্মেজানি দেবজাতানি গণশ আখ্যায়স্তে—বদৰো ক্লন্ত। আদিত্যা বিশ্বে দেবা মক্লত ইতি ॥ ৪৯॥ ১২॥

স্মান্তনাথ :—সং বাদশং) ন এব ব্যত্ত্বং (দ্বাস্থ্যী বণি প্ৰকাশে স্মাৰ্থা নৈব বজুব); [মজঃ] সং বিশং (বিভোগাৰ্ক্সনক্ষাং বৈশ্বজাতিং) অক্সমত,—
বানি এতানি দেবজাতানি (বে এতে দেবজাতিনিশেষঃ : সগশঃ (সংক্ষাবেশ)
আখারক্তে (কথাকে) —বসবং (অইসংব্যকঃ বস্থপণঃ), ক্লাঃ । একাদশসংখ্যকাঃ), আদিতাঃ (যাদশসংখ্যকাঃ), বিশ্বে দেবাঃ (বিশাসা অপভানি
ব্যোদশ, স্বৰ্মে বা দেবাঃ), বক্লতঃ (বারবঃ সপ্তস্থ্য প্ৰণাঃ) ইতি ১৯১১ ২৪

মুলান্দ্রাদে। ক্ষজ্রির পরও তিনি নিজের কর্ম্ম সম্পাদনে সমর্থ হইলেন না; ওড়্বন্স তিনি বিভোগার্জ্যনক্ষম বৈশুজাতি স্থান্ত করি-লেন, বাঁহারা এই এক একটি গণ বা সংঘাতরূপে কবিত হইরা থাকেন; বেমন — অফ বস্থু, একাণশ রুদ্র, আদশ আদিত্য, ব্রয়োদশ বিশেষেব, এবং উনপঞ্চাশ্য মরুহ কর্যাহ বায়ুসংঘাত ইতি ।৪৯৪১২৪

স্পা প্রস্তান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্তর ক্রেইংশি স নৈব ব্যবহয় কর্মবাবন বিজ্ঞান ব্যবহা বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান কর পুনরনে) বিউ । বাজেলানি কেবলালানি—বার্থে নিঠা, ব একে ক্রেলাভিক্তিয় ইভার্য। স্বলঃ স্বাং স্বর্থ আবাহাকে ক্রান্তে ক্রান্তে ক্রান্তে ক্রান্তে ক্রান্তে ক্রান্তে ক্রান্তে ক্রান্ত ক্রান্ত করে বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান ক্রান্ত করে করে বিজ্ঞান ক্রান্ত করে বিজ্ঞান করে বিজ্ঞান

্রীক্ষা। কর্ত্র'বেণত নিবর্ত করিবত স্টবাং কিব্তরেশ্ডাল্টাই—ক্ষত্র-ইন্ডি। তথাচটে—কর্মণ ইন্ডি। বন্ধ বাজনোধ্যাত্যতিবাদী পূচ্যঃ। তথা কর্মস্থাৎ পূর্ববিবেতি যাবং। করং তবি বৌল্কসামর্থাসম্পাধনহারা কর্মাস্টাবন্ধ কর আর্—জ বিশক্তি। বেৰজাভাৰীতাই ভকাৰো নিঠা। গৰং গৰং কুছা ভিবিভাগোৰং বিশাৰিতাগৰতাৰ—সংশক্তি। বিশাং সমুদায়গ্ৰগাৰতভাগি প্ৰভাক্ষিতাগ্ৰ— প্ৰায়েকংগ্ৰাক্তি ৪ ০১ ৪ ১২

স নৈব ব্যভবৎ, স শোদ্রং বর্ণমস্ফ্রত পুষণম্—ইয়ং বৈ পুষেরত হাদত সর্কাং পুষাতি যদিদং কিঞা। ৫০। ১০।

ञ्चलकार्थाः। नः [नूमण] तेन वास्तरः [चणः] नः त्योजः वर्गः (नूजवाजिः) भूववम् चण्यकः । हेन्नः (वृज्ञवामः भृथियो) देव (अनिष्को) भूवाः । विकार । वेन्नः नर्वाः —वर हेनः कि (वर्षः विकारि, जरः) भूवाति / भूकाणि) । ८० ॥ २० ॥

শুলান্দ্রাদে। তিনি ভখনও সমর্থ ছইলেন না; তখন তিনি শুল্লভাতি পৃষণের স্থান্ত করিলেন; এই পৃথিবীই 'পৃষা' নামে প্রসিদ্ধ ; কারণ, এই বাহা কিছু দেখা বায়, এই পৃথিবীট তৎসমন্তকে পোষণ করিয়া থাকে ॥ ৫০ ॥ ১০ ॥

न्नाक्कक्षक्काक्काक्काक्का । -नः পরিচারকাভাবাৎ পুনরণি নৈব বাঙবৎ; न गोत्तर वर्षत्रक्षक ; শূত্র এব শৌত্রঃ, কার্বেছণি বৃদ্ধিঃ। कः পুনরণৌ শৌত্রে। वर्षः, तः क्षेत्रः ? পুৰবং—পুৰাভীতি পুষা। कः পুনরণৌ পুষা ? ইতি বিশেষ-ক্তরিশিতি—ইবং পৃথিবী পুষা। ক্ষানেব নির্মাননার—ইবং বি ইবং সর্বাং পুছতি ক্ষিত্রং কিশ্ব ৫০। ১০। ্টীক্ষা। কৰু পানবিভ্ৰনাৰ্ক্ষিত্ পাং স্টবাং কৰং বৰ্ণাছৰস্ট্টোল্ড্যাৰ্—জ প্ৰিক্লিভান্তক্ষিত। পৌৰং বৰ্ণসংগতে ডাত্ৰৌকাৰো বৃদ্ধিঃ। পুৰাজীতি পূৰেভাজ্জাৎ প্ৰশ্নতানবভান্তবাদিভান্ত—বিশ্ৰুক্ত ইন্ডি। পূৰ্বজ্জাৰ্থাৰৰে প্ৰসিদ্ধাৎ কৰং পৃথিবায়ং বৃত্তিভাগ্জাৰ—ক্ষম্পুত্ৰতি । ৫০ । ২০ ।

ভাজ্যান্দ্রনাদে। তিনি পরিচারকের অভাবে পুনক লগমর্থ ই মহিলেন; তিনি পৌত্রবর্ণ স্টি করিলেন; এবানে পৌত্র অর্থ—পূত্র; মার্থে তাত্তত প্রত্যর ইকাররভি—উকার ইইয়াছে। তিনি মাহাকে স্টি করিলেন, সেই শূত্রবর্ণটী কে? পৃথন্—বিনি পোষণ করেন, তিনি পূবা; এই পূবা বে, কে, ভালা বিশেষ করিলা নির্দেশ করিতেছেন—এই পূথিবী হইতেছে পূবা; নিজেই ইলার ঘৌপিকার্থ প্রথশন করিলেছেন—বেহেতু এই পৃথিবীতে বাহা কিছু আছে, পূথিবীই ভালা পোষণ করিলা বাকে, [নেই হেতু পূথিবীর নাম পূবা] ॥ ৫০ ৪ ১০ ৪

দ নৈৰ বাভবতচ্ছে যোরপ্রতাসক্ষত ধশ্মম্, তদেভং ক্ষত্রশ্ব ক্ষান্ত ক্ষত্রং যদ্ধশ্বশ্বাদ্ধশ্বাং পরং নাস্তাৰো অবলায়ান্ বলীয়াখনমাশখনতে ধশ্মেণ—যথা রাজ্যেবম্, যো বৈ দ ধর্মঃ দত্যং বৈ তং, তথ্যাৎ দত্যং বদন্তমাহর্দ্ধশ্বং বদতীতি, ধশ্বং বা বদন্তখ দত্যং বদতীতে ভেডেটবৈতত্ত্বং ভবতি ॥ ৫১ ॥ ১৪ ॥

ज्यस्ताव्यः। तः [बदः हजूदा वर्गान् रुद्देशि] न अव वाक्यर ; कर (क्यार) (व्यदाक्रशः (व्यक्षदेः (व्यवाध्यः) वर्षः व्यक्षरुक्षकः (व्यक्षियाद्यः रुद्देशन्); ७९ (भूद्वाक्षरः) व्यक्षः (व्यदाक्षयन्) क्वयः (व्यव्यक्षाद्यः वर्षः; क्यार (व्यक्षरः—निवायकः); [किः ए९ १ देखादः—] वरं (वः) वर्षः; क्यार (व्यव्यक्षणि निववः वार (द्यक्षः) वर्षार शवः (व्यव्यक्षः) वर्षः; क्यार (व्यव्यक्षणि निववः वार (व्यक्षिः) वर्षार शवः (व्यवः) वर्षः । माधि । व्यव व्यव्यक्षित्रान् व्यव्यक्षिः) वर्षः (व्यवः) वर्षः (व्याः) (व्यव्यवः (वर्षवर्षः) वागःमार्थः (व्यक्षिः) । वरः देव (व्यवः) त्रवः वर्षः, वरः देव (त्र व्यवः) त्रकाः (व्यव्यक्षतः) ; क्यार (वर्षः त्रवः) त्रवः वर्षः वर्

केव्यू हि (निकार) अवर (अप, गर्था) अप कर्गक, [नहि अक्यू व्यवका विविद्याल देखि कारा] । ८२ । ১৪ ।

উপ্রশাস নাত্র ।—ভিমি চারি বর্ণ সৃষ্টি করিয়াও কলিয়েলাভির উপ্রশাস নিক্ষর সমর্থ হউলেন লা; সেই লাল ভিনি একটা কলাগেকর উৎকৃত্র পদার্থ উত্তমন্ত্রণে সৃষ্টি করিলেন। ভাষা কি ? ভাষা ধর্মা; ভাষার স্কর্ট সেই এই উৎকৃত্র শ্রেরণার্থ টা কলের করে করে করিছে কলিয় লাভিরও নিয়য়া (লাসনকারী এবং উপ্রক্রাক্ষেণার্থ উপ্রা, বাছার নাম—ধর্মা; অভএব কলিয়ের নিয়য়া বলিরা ধর্মাণেকা আর শ্রেষ্ঠ কিছু নাই; কারণ, জগজ্জাব ভাষা বারা নিয়মিত—নিক্ষিক পথে পরিচালিত হইয়া থাকে। সেই নিয়য়ুত্ব কি প্রকারে উপপন্ন হয়, ভাষা বলা ইইভেছে,—অবলীয়ান্ অভিলয় তুর্বল ব্যক্তিও বলীয়ান্কে আপনার অপেকা অধিকত্র বলবান্ পুরুষকেও ধর্মাবলে আশংসা করে অর্থাৎ জয় করিতে ইছয়া করে,—জগতে গৃহস্থ লোক বেয়প সর্ব্বাধিক ক্ষমভাপন্ন রাজার সাহাবো [ক্রয়েছু ইইয়া থাকে], ভক্রপ; অভএব সর্ব্বাণেকা অধিক কলশালা বলিয়া ধর্ম্মের ক্ষত্রিয় নিয়য়ুত্ব সিয় হইভেছে বেঃ ১৪৪।

স্পাক্ষকভোজাতা। সংচত্যা স্থাপি বর্ণান্ নৈব বাভবৎ, উপ্রঘাৎ ক্ষতানিরভাগভয়া; ৩২ প্রেরোরপষ্ অতাস্লত কিং ৩২ ? ধর্মবৃ;
ভবেতৎ প্রেরোরপং স্থাং ক্ষতা ক্ষতাপি নিয়ন্তু, উপ্রাদপ্যগ্রং—মৃত্রা
বৌধর্মা; ভবাৎ ক্ষতাপি নিয়ন্তু ঘাৎ ধর্মাৎ পরং নাজি, ভেন হি নিয়নাজে
নর্মো ৩২ কবস্—ইত্যচাতে—অবো আপ অবলীয়ান ভ্রমানতরঃ বলীয়াংস্ক্ আছানো বলবভরমপি আশংসতে কাময়তে কেছুং বর্ষেণ বলেন,—বর্ণা
লোকে রাজা সর্মবিস্কর্মনাপি কুট্ছিকঃ, এমস্; ভবাৎ নিছং ধর্মান্
বলবভরমাৎ স্ক্রিরভ্যস্।

খে ৰৈ স ধৰ্মে। ব্যবহারসক্ষণে। সৌকিটকর্ম্যবাহ্রমাণঃ, সভাং বৈ তথ ; সভাবিতি বধাশাল্লার্থতা ; স এবাছরীরমানো ধর্মমান। ওবতি ; শাল্লার্থডেন জারমানত সভাং তথতি । যমাধ্যেম্য, তথাৎ,—সভাং বধাশাল্লং ব্যবহারকালে, আহ: স্থীপত্না উত্যবিধেকজাঃ—ধর্মং ব্যক্তীতি, व्यनिष्ठः (लोकिकः क्राप्तः प्राचीकिः; क्ष्यः। विश्वास्ति वर्षः वा (लोकिकः वावरावः प्रश्ववादः—नक्षः ववकि, पाद्यावनः ववकोकि । वकः वृद्धकृष् केवाः क्षाप्तानमञ्जीवनानकः, वकः वर्षः वव कर्षाः, क्ष्याः न वर्षः। क्षात्रावः-कंष्रत्रक्षः पाद्यमानक्षेत्रपानकः, वकः वर्षः वव कर्षाः, क्ष्याः न वर्षः। क्षात्रावः-कंष्रत्रक्षः पाद्यकान् देक्षाः निर्माति विषयविः । व्यवकाविन्द्रितिष्ठः। वर्षाव्यक्षित्रकरुः, क्षाति क विनर्गकः वव कर्षाःविकावनिष्ठित्। व । ।) ॥ ।

निका। उन् शहमारी गारे कार्यक क्षांत्रकार्यकाः वर्षगारीकाक बार-क 🖰 🕃 র ইন্ডি। অবিষ্ঠাপ্তথা বিধানকাভাবে । কলাবিশুভ বসভাববংশিভ বাবং। ভঞ্চবঃ सह अर्च वननः : कृत्वा वर्षण मन्निम्ब पः, क्योणन वरमनिरविवान - छर कथः মিটি। মনুভাৰত্বতা পৰিবৰ্ধত উত্যাত ইত্যাদিনা। ভাৰবোৰাবৰতি অংশতি। बाक्षा व्यक्ष्मित होति (-व:। वर्षाकारकारका निवस् एवं मह्याविष्ठवर दश्यवद्यान-(या ना अक्ति। क्या पर्वत्र मणावर, म वि गुज्यवर्षा वहमव्यः मणःविकावाणवरण्या-यानाक विवाद भाक्यांनिकः अवादक्कि - यन्यां-विकार्यकार क उदराज [मा छ। डेक्शन(क) वर्षमकाविवतः, वर्षः ववशोरकासम्ब विस्वात-श्राक्तासिकि। वना नाम्राष्ट्रमादान वश्यः वर्षाः वर्गाठ देखि वर्गाच, छवा मूर्त्वाच-वश्मदेवमहीरकान वर्षाः वण्याः महार वण्डीकार्वार्शक (वाक्या । वर्षस्य वाहरहे-स्मिकिकचिकि । वहार ৰণতীক্ষোণেৰ কুটয়'ভ—শাজ্ঞাদেতি। কাৰ্যাকারণভাবেনানারায়েকভনুপনংকরভি— প্রতাদিতি। পাছার্বসংলয়ে লিষ্টবাবহারাভিতরা, বরা বর-বরাহায়িলবেবু। বর্তসংলয়ে च नाम्राविवनामिनेतः, वनः देवचावनमानिवृत्तादानमानिद्वादादि । वद्या दिवृद्वकृत्वादा-इस्ट्राटिकार्विक कारः। वर्षण मकाम्टक्ट क्रिक्टवार-जिल्ह्यामिकि । एक मर्स-বিষয় বেচপি গড়তে কিমারাভঃ, ওলান- জন্মাৎ লাইডি। ভবি ববোভবর্ষবশালের वर्षावृक्षेत्रवित्रक्षं विवादिवातकाविक्तिक व्यविकानकार - जास हो छ। कु: क्यारता आक्रमाकृषियानः पूरवाशाशृक्षापक एकक्षिवास्तार्था करेषवाणियानावस्वर পুৰুত্বভালুৱাপুৰে বিভাগৰ লাখ-ভানি ভেডি। ব বৰবিছবো বাৰ্ষিকত একিবাছিছু । विविद्यम् मरम् क्षेत्राद्यो विविद्यास्त्रम् अवानामानाविद्यार्थः । ०) ।) ।

ভাজ্যান্দ্রাদে। লোকে বাহার বাবহার বা সমুষ্ঠান করিরা থাকে,—বাহা সেই ব্যবহারাত্মক ধর্মা, ডাহাই প্রসিদ্ধ সভা। সভা বর্ষ— শাপ্রপ্রতিপাদ্য অর্থের বাধার্থ্যবোধ; ভাহাই লোকের সমুষ্ঠিত হইরা ধর্ম্মনামে পরিচিত হইরা থাকে, বখন ভাহাই আবার শাস্ত্রার্থক্সপে জ্ঞানগোচর হয়, তখন 'সভা'নামে অভিহিত হয়। বেহেডু, এইরূপই ব্যবহা, সেই হেডু ব্যবহার সময়ে বে ব্যক্তি বখাশাস্ত্র কথা বলে, সভা ও ধর্মের

শাৰ্ক্যাভিজ্ঞ স্থাপন্ধ, লোকেরা ভাষাকে বলিরা থাকের বে, এ বাজি ধর্ম বলিভেছে—লোকপ্রসিদ্ধ নাব্য (ধর্ম) বলিভেছে; সেইম্পণ একদ্বিপরীভভাবে বে বাজি ধর্ম কিংবা লোকিক ব্যবহার বলিরা থাকে, ভাষাকে কলা হয় বে, এ বাজি ধর্ম বলিভেছে কর্মাথ শাস্ত্রসম্মত কথা বলিভেছে। ইহা—জ্ঞারমান ও ক্রপুষ্ঠারমানরূপে বে উভর ভব (ধর্ম ও সভা) বলা হইল. প্রকৃতপক্ষে ইণা ধর্মই. (ধর্মের অভিরিক্ত নহে)। অভএব জ্ঞানান্মক ও ক্রপুষ্ঠানান্মক সেই বর্মই শাস্ত্রজ্ঞ ও শাস্ত্রানভিজ্ঞ সকলকেই সমানভাবে নিয়মিত করিয়া থাকে; সেই জন্মই উহা ক্রিয়েরও ক্ষত্র। অভএব ধর্ম্মাভিমানী অবিহান পুরুষ ধর্ম্মবিশেষের অনুষ্ঠানার্ম রাক্ষণ, ক্ষিয়ে, বৈশ্য ও শৃক্তর বর্মাভিমান করিয়া থাকে; কেন না, রাক্ষণ, ক্ষিয়ে, বৈশ্য ও শৃক্ত ও ক্ষাবভাই কর্ম্মাধিকারের নিমিন্তব্যরূপ অর্থাৎ

তদেতদ্বক্ষ ক্ষত্ৰং বিট্ শূদ্রং তদ্যিনৈব দেবেষু ব্রক্ষা-ভবদ ব্রাক্ষণে মমুবে যু ক্ষত্রিয়েণ ক্ষত্রিয়ে। বৈখ্যেন বৈখ্যঃ শূক্তেণ শূক্তক্ষাদ্যাবেব দেবেষু লোক্ষিক্ষত্তে ব্রাক্ষণে মমুষো-দেতাভ্যাথ হি রূপাভাং ব্রক্ষাভবং।

বাধ যে: হ বা অস্মালোকাৎ সং লোকমদৃষ্ট্য থৈতি স এনমবিদিতো ন ভুনক্তি, যথা বেদে। বাহননৃক্তোহন্ত কর্মাকৃতম্, যদিহ বা অপ্যানেবংবিদ্ মহৎ পুণাং কর্ম করোতি ভদ্ধান্তান্ত এবাদ্ধানমেব লোকস্পাদীত, স য আদ্ধানমেব লোকস্পাদীত, স য আদ্ধানমেব লোকস্পাদীত, স য আদ্ধানমেব লোকস্পাদীত ন হাস্ত কর্ম কীয়তে। সন্মাদ্ধোবাদ্ধান যদ যৎ কাময়তে ভত্তৎ স্কতে ॥ ৫২ ॥ ১১॥

ज्यक्ताव्यः। ७६ (भृत्सीकः) ७७६ ा वर्गत्वहेतः) तक, कतः, विहे (देवकः) मृतः [एके देखि (नवः]। ७६ (तारे, तकः) त्यव्यक् मध्या चात्रमा अव (चात्रवक्षणदेवर) तकः (ताचनः) चच्यदः, वस्तव्यक्ष् (ताचनचक्रत्यन तकः) चित्रद्यस्य (देखाविमा स्थवचित्रमः) [चार्यकेकः] कवितः [चळवर], देशका (क्ष्म्अकृषिना कवितिः) देखः (क्ष्म्यर्),
भूत्वन (नृशानकर्तन कवितिः) नृतः [क्ष्म्यर्]। क्ष्मार (स्राक्ष्मा), स्राप्त्यू
(स्रानाश्चर्तन कवितिः) विद्यान (व्यक्ष्मा), स्राप्त्यू
(क्ष्मानशः) देख्रात (व्यक्षितः) विद्यान व्यक्ष्मा (व्यक्ष्मानशः) देख्रातः (व्यक्ष्मानशः) व्यक्षात्यः [क्ष्मानः]; क्ष्मा म्प्राप्त्यः (व्यक्षानशः प्राप्तः) [क्ष्माकर्ताः] वाष्ट्रतः व्यव्यक्षात्यः व्यक्षात्यः व्यक्षात्यः व्यक्षात्यः व्यक्षात्यः व्यक्ष्मात्यः व्यक्षात्यः व्यक्ष्मात्यः व्यक्षात्यः व्यक्षात्यः व्यक्ष्मात्यः व्यक्षात्यः व्यक्षात्यः ।।

অব (পকার্তনে) বং ব বৈ (নিক্তরে) বং , আরানং) লোকং (অবক্তরের।:) অবৃষ্টা । অবং রখাবীতি প্রতাকষ্ অক্তরা) অবাৎ লোকাৎ বর্ত্তবান্তবের বর্তনান্ত) বৈতি (পক্ষতি—রিহতে); সং , আরা) অবিবিত্তঃ (অবিজ্ঞান্তঃ সন্) এনং , (প্রতং) ন জুনজি (ন পানর্যন্তি, দ ন মৃচাতে ইতার্থঃ : [অর সৃটারব্যবাহ -) ববা [সোকে] বেহঃ অনন্ত্রুঃ (অননীতঃ), কর্ম (ক্র্যাহি) বা অকতং (অনিসাহিতং সং) [ন পানর্যন্তি, তবং]। বং (বহি) ইছ (সংসারে) বৈ অনেবংবিৎ (আত্মতানর্যন্তির) বহৎ প্রাং কর্ম অপি (সভাবনারাং) করেছি (নিপাহরতি), অভ (ক্রিবঃ) তথ বহুন্তিতং কর্ম , হ , নিক্তরে) অভতঃ (অতে—বর্যারে) জারতে , নপ্রতি) এব, [বং কৃতকং, তর্গনিতাহিতি কাবঃ]। [অতঃ] আত্মানব্ এব লোকন্ম উপাসীত জানীত); সং বঃ (বঃ কন্তিং) আত্মানব্ এব লোকন্ম উপাসীত জানীত); সং বঃ (বঃ কন্তিং) আত্মানব্ এব লোকন্ম উপাত্মে অভ (উপাসিত্য) কর্ম ন হ (বৈন) ক্রিতে; [কর্মানার্যনে, ইতি নিত্যান্থনাহোহরং]। [উপাসকঃ । বং বং (অভাইং) কারতে, অত্মাৎ আত্মনঃ এব ছি 'নন্তরে) তথ তথ স্বত্তে (আত্মতাহাণের তত্ত স্ক্রার্থঃ সম্পার্থতে ইতি ভাবঃ) গ্রংহারং।

মূলান্দ্রাদে। এইরপে দেই ব্রাহ্মণ, ক্ষমির, বৈশ্ব ও শুদ্র স্টেই হইল; অভএব দেবগণের মধ্যে [ফলকামনা থাকিলে] অগ্নিডেই দেই কল ইচ্ছা করিবে, অর্থাৎ মগ্নিসাধা যাগাদি কর্দ্ম থারা দেই কল লাভ করিবে, আর মন্থারর মধ্যে [ফলেচ্ছা থাকিলে] আহ্মণে প্রার্থনা করিবে, অর্থাৎ ব্রাহ্মণলান্তে বতুপর হইবে; কারণ, প্রক্রী ব্রহ্ম এই উত্তরেন্টেই—কর্দ্মের কর্ত্তাররপে ব্রাহ্মণে, আর কর্দ্মের অধিকরণরূপে অগ্নিডে অবিকৃতভাবে প্রকৃতিত হইরান্ত্রেন।

পকান্তরে, বে ব্যক্তি বলোককে—বর্ণনীয় আত্মাকে বর্ণন না করিয়া বর্ণাৎ আত্মবিজ্ঞান লাভ না করিয়া ইহলোক হউতে প্ররাণ করে, সেই রাজি অবিধিত—আত্মভানবিহীন হওয়ায় এই আত্মলোক ভোগ করিছে সমর্থ হয় না; শেমন বেদ অপঠিত থাকিয়া—অথবা বেমন অত্য কৃষিকর্ত্ম প্রভৃতি অসম্পাদিত অবস্থায় [কাহাকেও পালন করে না], ইহাও ওজ্ঞপ। অগতে এবংবিধ জ্ঞানবিহীন কোন লোক বদি মহৎ পুণাকর্ত্মও করেন, তাহার অসুন্তিত্ব সেই কর্ত্ম পরিণামে নিশ্চয়ত কয় প্রাপ্ত হইয়া থাকে, অভএব আত্মস্থায়প লোকেরই উপাসনা করিবে; সেই বে ব্যক্তি আত্ম-লোকের উপাসনা করে, তাহার কর্ত্ম ক্ষাণ হয় না, অর্থাৎ কর্ত্ম না থাকার ভাহার আর কর্ত্মকরের ভয় থাকে না: সেই ব্যক্তি বাহা বাহা কামনা করে, এই আত্মা হইডেই ভৎসমন্ত্ম পাইয়া থাকে ॥ ৫২ ॥ ১৫ ॥

न्नाद्धक्तकाकाना। उत्तरकाष्ट्रमंतिः एडेन्—उष करा विहे नृत्त हेणि; केवतार्व केनगरवादाः। यद्धर साई, त्रथ, कर्यादेग्य, नारम् करान्त, त्रात्मृत्तक त्रावनकाणिः भक्षयः; जाधाना जाधनप्रकानन महाराम् त्रकाण्ययः; हेण्डाम् वर्ष्य् विकाशकार त्यानाः भित्रात्म भित्राह्मक्षयः – हेन्नाविरायका-विक्रिक्षः, देशक्रम देशकः, नृत्तम नृत्यः। यत्राय भवाष्ट्रम् विकाशनप्रम् भवते त्राधन अत्र हाविक्रकः साई, जयः, क्ष्यावद्यादिन त्यात्मम् एवा त्याक्ष्यः कर्षक्रमित्रकाल, व्यावनकार कन्न अत्यक्षांत्र कर्ष्य कर्षाविक्रम्तरकाष्ट्रिक्षरान वाविक्रक्षः कन्न अव्यावन्तिकारम् कर्षः कर्षकार्यः वार्षक्रक्षः हर्ष्यकार्यः। अत्र कृत्रा कर्षकारं वार्षक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षः वार्षक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षः वार्षक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षं हर्षकाष्ट्रम् वाविक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्रम् वाविक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षंत्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षेत्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षेत्रकाष्ट्रम् वाविक्रक्षेत्रकाष्ट्रम् वाविक्रकाष्

বাধাৰে বন্ধবাৰু—বন্ধবাৰাং পুনঃ বংগ কৰ্মনগৰ্মানাং নাথাখিনিবিছ-ক্সিয়াণেকা, কিং ভবি, কাভিযান্তবন্ধ প্ৰচিত্ৰতিনৰ পুন্ধবৰ্ণনিতিঃ। বন্ধ ভূ কেনাধানা প্ৰচাৰ্থনিতিঃ, তবৈৰাখাখিনসক্ষিয়াণেকা; স্বতেক --

"करगारेनव क् गःगिरशक्वावरणा नाळ मःनहः।

ভূৰ্ব্যাৰভন্ন বা ভূৰ্ব্যাকৈতো ভাৰণ উচাতে।" ইতি। পানিস্তাভ্যাকৰিলত। ভৰাত্তাখণত এব বছবোৰু লোকং কৰ্মকাধিক্তি। ব্যাকেতাভ্যাং হি ভাৰণাধিস্থপাভ্যাং কৰ্মকাধিক্ষণবন্ধপাভ্যাং বং এই, স্থ সাক্ষাক্ষণৰ । ২

व्यक्ष वृ नवनायरमाक्यरमी आकरन राज्यकीचि (कविष्) व्यवन्, व्यन्-

-

णांविकारम क्यांविकामार्वर वर्षविकायक व्यवकार, गरम म विरायनार । योष क्या जांक्मरण्य गर वयारमारमक, गरम विरायनम्बर्कर कार---"वर जांकमपूरे,।" वेकि ; यरमांक्यांकिकिकरक्षमानीमानम व्यवस्थार अक्टण जांकम, क्या यम् --वेकि क्ष्मः विरायनम्, व्यवक्षमानाक व्यवस्थार ; यरमम ग्राविकामार अम्बद्धानाक ; व्यवसामकामाक व्यवस्थानाद ; व्योकि म क्यांक्यामार वाक्षितास "क्ष्मेषक वर्ष वेकि 10

त्रवना गृहे। वर्नाः कर्नार्थम् ; छक्क कर्म धर्माशाः नर्नारम् कर्मगण्याः निष्ठक् शूक्रपार्थभावनः ह ; उत्पाद्धिन्य (ह्नः कर्मश्राः त्याः लाकः शृह्याण्याः व्याहितिराह्याः श्राम्पारः (कः छटेष्ण्य शृष्ट्याः क्रियाः हिताः ह हेण्याः व्याहः व्याहः (व्याहः व्याहः व्याह

मुखान्त्रस्थानविषर् ।

শিক্ষাভাষ্যের লোকস্থাতে, তত তিন্ গু—ইজুচোডে—স বাত তর্ব জীয়তে, তর্বাভাষ্টের —ইতি বিভাগ্নাহা: যথা অবিষ্য় কর্বজন্মকরণ সংসাত্যের সভত্যের; স তথা তহত বিভত ইভার্য; "বিবিদায়াং এবীজায়াং সাম বাত ভিত্তসং ইতি বছং। ১

খাত্তবোকোশাসকত বিশ্ববো বিভাসংবোধাৎ কবৈৰ ৰ কীয়তে, ইভাপরে বর্ণয়তি; লোক্শভার্থক কর্মসন্ধায়িবং বিধা পরিকল্পরাতি কিল-একে। ব্যাকৃতাবৃদ্ধ কর্মান্তবার লোকে। বৈশ্ববার্থকার, তং কর্মসন্ধান্তিনং লোকং ব্যাকৃতং পরিজ্ঞান ব উপাতে ওক্ত কিল পরিজ্ঞানকর্মান্তবিদিনং কর্ম কীয়তে। তবেৰ ক্রম্মন্থানিনং লোক্ষরাকৃতাবৃদ্ধ কান্তব্যাপ্তাবৃদ্ধ ক্রমন্থাশাত বকুপাতে, ভক্তাপরিভিন্ন কর্মান্তবিশ্বাৎ ওক্ত কর্ম ন কীয়ত ইতি । ১

ভৰতীয়ং শোভন। করনা, ন তু প্রোতী, বংলাকনবেন প্রকৃতন্ত পরবাদ্দনাক্তিবিভয়াৎ, বং লোকবিতি প্রস্তৃতা বর্ণকং বিধায়াশ্বশা প্রকেশেণ পুরতীক্তব প্রতিনির্দ্ধিশাৎ—আন্নানবের লোকবৃণানীতেতি; তব কর্মবন বাহিলোকক্সনারা অনবসর এব। ৮

পরেণ চ কেবলবিভাবিবরেণ বিশেষণাৎ—"কিং প্রভন্ন করিবানি, বেবাং নোহবলান্থাং লোক:—ইতি; পুরুদর্যাণয়বিভান্নতেভাো হি লোকেভাো বিশিনটি—অমবান্থা নো লোক ইভি। "ন হাস্ত কেনচন কর্মণা গোকো নীয়ভে, এবোহস পর্যো লোকঃ" ইভি চ। ভৈঃ স্বিশেষণৈরতৈক্ষবাক্যভা মুক্তা; ইবাপি বং লোক্ষিতি বিশেষণ্যক্ষিমং। ১

আমাৎ কাষয়ত ইত্যস্ক্রমিতি চেং; ইং মে। লোকঃ পরসাম্বা, তত্বপাসনাথ সূত্রৰ ভবতীতি হিছে, বৃদ্ধং কাষয়তে, তত্তব্যাদাম্বনঃ ক্ষতে ই'ত ভয়ামুপ্রতিব্যতিরেকের ক্লবচনসন্ক্রমিতি চেং; ন; স্বনোকোপাসন-ছতিপর্যাং। স্মান্তের লোকাং স্ক্রিটঃ সম্পদ্ধ ইত্যর্বঃ, নাজ্যতঃ প্রার্থনীয়ন, আঞ্চলম্মাং। "লাম্বতঃ প্রার্ণ লাম্বত লালা" ইত্যাদিস্কত্যস্বরে বৃধা; স্ক্রাম্বভাবপ্রদানার্বো বা স্ক্রবং। >>

বহি বি পর এবায়। সম্পত্তে, করা বুক্ত: "পশাবোৰায়নঃ" ইত্যাশ্বশব-প্রয়োগ:—শশাবের প্রকৃতাবাদ্ধনো লোকানিত্যেবর্ধঃ; পত্তবা পর্যাকৃতা-বহাৎ কর্মনো লোকাভিতি স্বিশেষণ্যবস্থাৎ, প্রকৃতপর্যার্গোক্যায়ন্তরে স্থাক্তাবহায়ায়ন্তরে চ। ন ক্ষিন্ প্রকৃতে বিশেষিকে পঞ্চাল্যালাবহা প্রতিপ্রতঃ শক্তাভাবহা ১৫ । তীবাল । পুনতভিবনর্থানবোজন্—উক্তর্যার্থ ইছি । প্রান্ত বেবের ববিভন্ত ব্যবিভাবত বছবোর্ডানব্রের বোজনার্থ ইছি লাবং। প্রবিভন্তনিনিইবরাভন্তনিভার-বিভাবত বছবোর্ডানবিভারন্তনের বিভাবত প্রান্তনিক্রেরাভন্তনের বিভাবত করিব ইন্তাপিক বর্ষার ইন্তাপিক বর্ষার ইন্তাপিক ব্যবিভিত্তন বিভাবত করিব ইন্তাপিক বর্ষার ইন্তাপিক বর্ষার করিব বিভাবতা বিভাবতা বিভাবতা বছালিক ব্যবিভিত্তন । ব্যবেশিক কর্মার বিভাবতা বছালিক ব্যবিভাবতা বছালিক ব্যবিভাবতা বছালিক বার্মার বিভাবতা বছালিক বার্মার বার্মার

পরে। হবা বাবনে চ ববা শহরাবনকাং লোকবাত বিজ্ঞতীতি তর্ত্ত প্রপ্রক্ষাথানবন্ধবন্ধি—আন্ত্রেভি। বর্ত্তবী ভবাবিভাবিবালাবিবরা। অক্রবান্ধান্ধান্ধ কর্মকলবিহ লোকব্যার্থা ব শহরারা, অক্রবন্ধপ্রকাশিত ব্যর্ভি—জ্ঞান্ধানিতি। কর্মার্থকার্য্থি কর্ম্ব অনুভিনিভার্থনিতি বাবং। বাকানেবন্ধবিবেশবন্ধানি কর্মকনতৈবার
লোকব্যান্ত্রিভার্থ—প্রেমন চেভি। তবের অপকর্যত—অন্তি ক্রীভি। শহশক্ষে বিধিত বিধেবনং ব্যাবর্জ্যাভারার বইতে চেৎ, বংগকেংশি কবং কর্মপৃতিবিভাগক্রাহে—অন্ত্রান্তর্জাভ। পরপ্রকাশ্বরহা। বহু অক্সতে বাকো বোকক্রের্থা পর্যান্ত্রা বিধেবনার্থা নিজেবিভার্যান্ত্রিভার ক্রিন্ত্রান্ত্রিভার বিধেবনার্থা বিধেবনার্থা বিধেবনার্থা বিধেবনার্থা ক্রিন্ত্রান্ত্রা ক্রেন্ত্রিভার বিধেবনার্থিভিভাগ্রান্ত্রা ক্রিন্ত্রিভার বিধেবনার্থিভিভাগ্রান্ত্রা ক্রিন্ত্রিভার বিধেবনার্থিভিভাগ্রান্ত্রা ক্রিন্ত্রিভার বিধেবনার্থিভিভাগ্রান্ত্রা ক্রিন্ত্রিভার বিধেবনার্থিভিভাগ্রান্ত্রা ক্রিন্ত্রিভার্যান্ত্রা বিধেবনার্থিভিভাগ্রান্ত্রা ক্রিন্ত্রেভি। ক্রের্থা ব্যর্থারিভিভাগ্রান্ত্রান্ত্রিভাগ্রিভাগ্রান্ত্রিভালিক বিলিক্রিভালিক বিলিক্রিভান্ত্রিভালিক বিলিক্রিভান্ত্রিভালিক বিলিক্রিভালিক বিলিক্রিভালিক বিলিক্রিভান্তিলিক বিলিক্রিভা

व्यक्तिकार्याः पूर्वनकार-अक्ट्रनिकः। वर्षम्यक्रवर्षिकिरकार्यकाः पर्वारिक करकाकि। मरेबीसन गरेब एक पर्वशावता कान् अवि निवक कुरविक (रेबियो। ७४ पुंपरवीनाव्यवविधियोगाः श्रीवध्यार-छन्द्राविद्योः। वरिविद्धाः रवरकाकनकर्य वृक्तिरवष्ट्रिकि नकर अधिरक्षकृष्ट्रकर वानावृत्ताः **१४७-- व्यक्त कोट्यक्ति। बानारकः वृष्टिन वर्षरा शावनशामश्रवि विमाश्रदाः** করি। তর নিবিভযুগালান: চেডি বল সঞ্চিপ্তি জানিচ্যুন্তি। নিবিভা বিষু-लाकि-काशाबीरमिक । वाषांवाक बाक्क मरव (वक्षाव-व्यापादबरमिक । चरः वकानीकान्दरे,कि नवकः। यः पत्रमाकावनविविदेश जिल्दकः कदमनः प्रशाका व पानक्षीकि दावना । पत्रवादनाः पञ्चपकार्यश्यः आणि पानविकृतः आण्यापकार-स ब्लाक्नवाइनविदेशकवानीकि बहेबान्। अविविक वेकाण वार्यात्रविक्र-(क्वारि) प्रवासारका त्यारण वांचारका कृषणीतात्र वर्षणमृक्तः त्याकः रेक्की-क्षांक्या वर्षाक—जय हेर्त्वाज। वळाच्यावावाव्याच्याच्याच-क्रहार्यक्का वर्षा क्रोकिटका क्ष्यरवा क्ष्यरवाक्ष्याकाला व त्वाकाविववर्कतः माञ्चामः कृतकि, कवा प्रवासांश्यीकार्यः। उदेखर अकृतकः वृहेत्ववहर बात्रहि - वया Complete: व्यक्तिशाक्षित्राचित्र क्षत्र न स्था न स्था न स्था न स्था न स्था न

বুজেরবিদ্যাধনেশনথাবিশ্বনি কেন একানের জানিজাবিদ্যান অন্ত ইতি। আনুবার্থবাহ— আং লোকমিন্তি। ভবের কুটরতি—আংত্রানমিন্তীন্তি। আরুবার্থকার একানে কুটরতি এবাবে কু পুনক্ষিত্রা- বর্বান্তরিবার্থবাশি ভাবিত্রার্থনা ।

বিশ্বাক্ষণাকাকাথারা নিক্ষিপতি—জ ম ইন্ডি। কর্মকাক্ষ করিবন্দুল কর্মনাহক্ষণ ব্যক্তের ব্যক্তের ব্যক্তি ব্যক্তি ব্যক্তি বিশ্বাক্ষণ করিব ক্ষিত্র বিশ্বাক্ষণ করিব ক্ষিত্র বিশ্বাক্ষণাক্ষণ করিব ক্ষিত্র বিশ্বাক্ষণাক্ষণি বিশ্বাক্ষণাক্ষণি বিশ্বাক্ষণাক্ষণি বিশ্বাক্ষণাক্ষণাক্ষিতি।

্ৰাপ্ৰাৰ্থিকাটি কেবলজানাৰ্তিভিত্যে বংগৰতথা ব্যাধাতং নজাতি ভঞ্জ ভৰ্তুনগ্ৰু-ব্যাব্যাপ্ৰাণ্যতি—আন্তব্যাতি। পাধ্যমেটোগ্যেপত ক্ৰাভাবে কৰা ভৰত্যবাচো-

क्षपान्यक्षामः नम्बर् वाकान्।

वृतिविद्यान्त क्वावाववाविद्यांकावाव क्वावाव त्याव वाववावाववावाव विवाद त्याववाव क्वावाव क्वावाव क्वावाव त्याववाव क्वावाव क्वाव क्वावाव क्वावाव क्वावाव क्वावाव क्वाव क्वाव क्वावाव क्वाव क्वाव

আন্তাবিক্তাবিদ্যুক্তরগরিতি প্রবিধান করিবিত্য নির্বিধান করিবিতার করিবিবার করিবিবার

পরতৈর লোক শব্দার্থরে বেষম্ভরনাগ-- প্রের্নেন্ডি। উভাবেদ আপকান্তি--পুর্ব্রেক্ডি।
অব পরের বাংলারু পরবান্তা লোকপান্ধার্য, প্রকৃতে ভূ কর্মকলমিভি বাবহেন্ডি কেব, বৈব-নেকবাভায়নম্ভবে ভাষেকভায়াবান্তানিক্তানিক্তি। এক বাকাছসভাবনারের বর্ধক্তি--ইন্ফার্কীন্ডি। বংবান্তরনান্তাবিশকের লোকে। বিশেষ্ডিম্বর্ণান্তাবিশ্বনার্থানিক
শব্দের বিশেষ্টিত। পূর্ববাকো ১ খং লোক বন্ধ্রেভি বন্ধবন্ধবান্তিনা ভভ বিশেষ্ণাং
কৃতিত। ভবা চ পূর্বাপ্রালোচনান্তাবেক বাকার্যনিভিত্তিভার্থ্য।>

গ্রকরণের পরত লোকশবার্থবয়কং বিজবিরোধারিতি চোণগতি—অন্যানিন্তি।
হলে বিষ্টুগোভি—ইক্সভানিনা। বর্ণাদণং বিজং ব প্রকাশবারিতি বহা সহালতে—সেভানিনা। বভিবের পাইছভি—আন্যাক্রেন্তে। বোকাক্জাভারিতি
বেষঃ। বর্ণা হাব্যোগে ভভার্থবারনঃ প্রই বনুচাতে, ভবাত্রাপান্তলোকং ভোতুবেওং-কলবানবিভানি—আন্তাভ ইভি। তবভু বা, বা বা ভূৎ,, ব্যাভোবেভানিরর্থবায়ং, ভবাপি
তত্ত সর্বান্ধবন্ধবন্ধবিভান্তনত লোকপ্রেন পরবান্ধবন্ধবিভানি—ক্র্যাক্তরাভি।
তথ্য ভব্যবন্ধবিভানিত বাতাং গৃহাত্তরভি— প্রক্রাক্রিডি।>

কিউ, আন্ত্ৰণাক্ত বিধাপতিন্তেহপূভাৰ্থনচিভায়। বজায়োভীভাবিভাবেৰ নিৰ্বাভ্যন্তা-নামিকসপলোক্ষণভালি ভাৰ্থনাং প্ৰটেজনাত্ৰ লোক্ষমিভাহ—অন্তি আছি। কিং ৪, যদি লোক্ষমেল প্ৰথ হিৰাবভিয়নুচাতে, ভয়া সন্ধিশেৰণা বাকায় ভাৎ, অন্তৰ্যা বং লোক-নিভি অন্তৰ্গসমান্তলোক্ত ভ্ৰথমেড্যনভ্ৰোক্তম্বলোক্ত চ বাৰ্ডাবোৰাও। ব চাল विकारतः वाकार वृदेष्, का पर माकविक सङ्ग्राः प्रशास्त्रवासापि स्ताव देवार्-कार्यक्रिः विस्तरतः विदेवराषाविकास प्रशासकात्रावर्गक्षरः किर व काविकार-पंकार-- म जीकि। पर माकविक सङ्ग्रक प्रशासकात्रावर्गक विस्तरिक वातार-इकासा प्रशासकात्रवामायकात्रवा व सकि एक र प्रकारक, कक्षाः स्रवकात्रावरिकार्यः १२०१२१

क्रांक्यांक्यांक् । बहेडरम बायम, क्रिस, देश ७ मृथ, बहे ठाणूम्यां एडे दरेग ; म्यूट्डर मर्थाक बहे पर्नित्वारमं आद्यांकम दहेरा ; बहे यक भूर्त्सांक एडिड ब्यांटर केममध्यांच वा भूमकृत्या कथा दहेग । ताहे ता एडि क्यां कथा, किर्म रायम्यांच मर्था व्यवदान कथा दहेग । ताहे ता एडि क्यां कथा, किर्म रायम्यांच मर्था व्यवदान कथा व्यवदान व्यव

ক্ষিয়ন্তপে অর্থাৎ ইপ্রপ্রকৃতি কৈব ক্ষান্তির অধিটিত হইয়া ক্ষান্ত এবং বৈব-বৈশ্বাধিটিভন্তপে বৈশ্ব ও পুত্র-পুবাধিটিভ হইয়া পুত্রন্তপে অভিবাক্ত অইয়াছিলেন। বেবেজু, স্থাইকটা এক ক্ষান্তি বর্ণনিরে বিকারাপর, কেবল অন্তি ও প্রাথনেই আবাহত পাই হৈছু কেবলপের বধ্যে কর্মকল পাইতে ইইলে অন্তিক্তই ভাষা ইক্ষা কার্যা থাকেন; [বুলিতে হইবে,] অন্তিপ্রপাতিত বজাতি কর্ম করিয়া [কল পাইতে ইক্ষা করেন); কারণ, ইবার কন্তাই এক বজাতি কর্মকর্মকর অনিক্রপ্রকৃত্র অন্তিক্ত কর্মান্তেন; অভন্তব সেই-আন্তিক্ত কর্মক্ষাত্রন করিয়া (ব, কর্মের উপরুক্ত কল পাইতে ইক্ষা করিয়া বাকে, ইয়া সক্তাই বটে। ১

আবার বহুতের বংশা কর্মকলনাভের অভিনাৰ থাকিলে ব্রামণেতে ভাষা প্রার্থনা করিয়া থাকেন, নেথানে আর অধিপ্রভৃতি সাধনসাপেক ক্রিয়ার প্রয়োজন বর না; পরস্ব, কেবল আভিস্যান্তলাতে (প্রামণা-লাভেই) পুরুবের অভীটান্ডি ইউয়া থাকে; পরস্ব বেধানে পুরুবার্থনিত্তি

⁽⁾ তাৎপর্ব্য--ক্রম দেখনগের মধ্যে অবনে অনিক্রণে একটিও বইলেন, ভাষার পর
নেই অন্নিক্রণে থাভিরাই দৈব ক্রিয়ে-বৈপ্তাধির প্রটি করিলেন; আবার মন্থ্যের বব্যে তিনি
কর্মেই রাজনক্রণে অকটিভ বইলেন; পেনে নেই রাজনক্রণে বাভিরাই বানবীয় ক্রিয়ে ও
ক্রৈয়ানির প্রটি করিলেন; কারেই করি ও রাজনকে অবিস্থৃত ভাবে রজ-প্রট বলা বইল, আর
অনুয়ানার ক্রিয়ানি-স্টেতে অন্নি ও রাজনক্রণ বিভারের নাধান্য অনেভিত বাভার,
ক্রিয়ানি-স্টেতে বিভারান্তর বারা শুটু বলা বইল;

वर्षाः नुकरशः वडीडेक्मनिष्टि रावडाः वर्षी

रह, (करण ग्रिशांतर विशिष्ट निविधारीय क्रिशेश व्यापना, (वस्त्र मार)। (यरक्, विविधार विशेष —'आक्षा अवस्था व्याप स्था (वस्त्र क्रिशेष व्याप स्था व्याप क्रिशेष व्याप स्था क्रिशेष व्याप स्था क्रिशेष व्याप स्था क्रिशेष व्याप स्था क्रिशेष व्याप क्रिशेष व्याप व्याप क्रिशेष व्याप व्

এ হলে কেং কেং বাাবাঃ করেন বে, 'লোক' বর্ষ পরবাছা;—ব্যক্তিত ও আছবে সেই পরবাছ-লোক লাভ করিতে ইন্দা করিছা বাকেন; কিছ সে ত্রপ বাাবা) সকত বর না; কেন না,বতলিন জীব অবিভার অবিভারে বাতে, ভতলিনই ভাহার কর্মেতে অবিকার, বর্ণবিভাগ সেট কর্মায়ন্তানেরই উপবােদী; এই বস্তুই এবানে বর্ণবিভাগ বলা বইরাছে; এবং পরবর্তী বাক্যেও ইহাকে বিশেব করিয়া বলিয়া বির'ছেন। এবানে 'লোক' বনে বলি পরবাছাই উক্ত বহত, ভাহা বইলে নিশ্চরই 'বং লোকব্ অভূই।' এইরণে বিশেব করিয়া বিনার কোনই আবস্তুক হইত না। পঞ্চাছরে, এবানে বলি ব-লোকাভিরিক্ত অন্ত কোনও প্রার্থনির লোকের প্রভাব বাহ্যির কন্ত এবানে 'খে'-বিশেববের সার্থকত কেনিও প্রার্থিত 'লোকে'র বাাহ্যুক্তির কন্ত এবানে 'খ'-বিশেববের সার্থকতা হইতে পারিত; [কিন্তু সেরণ ও কোনও প্রাক্ত

⁽১) अर्थर्गा—व्यात वान्छा इरेशांका दरे त्य, छान, वाव्यगाणारे यदि नाक्र्यत व्यान वार्यनीय इत, छारा इरेश्न हेश इरेश्व टक्स वक्ष्मात वर्गांव कर्मांच कर्मांच याव इरेश्व गाइ, कि वीर्यं व्यक्त वर्णां हेश इरेश्व टक्स वक्ष्मात वर्गांच याव इरेश्व गाइ, कि वीर्यं व्यक्त व्यक्त वर्णांच वर

नारे] कारण, नवनाया (य. नकरमधरे 'प.' अ क्या र कारा वाकिशय नारे । यात्र व्यवस्था व्यवस्या व्यवस्था व्य

त्य (व कर्षमञ्जावसम्ब कन्न ठाविवर्तक गृष्टि कविवारकमः (महे कर्राव मान वर्ष : क्रब्राहरण विविच तारे कर्ष गर्भवर्रवारे विवदा अवर शूक्यार्वनिविद्यक्ष केशांव: यरि च-लाक भवनाचारक ना कानिरमक त्यहे क्य बाबार भावता बांच. छाता बरेरन, छातारक कामिता कन कि ? अहे जानकार वनिरक्षक्र - 'वर' देखादि । डेक भूर्तभक विश्वामार्थ 'वर्ष भव अवक रहेशाह । (व कांत्र शक्ति, प्रताकरक--आमांतरण मनामांत्रों) भवनामारक 'मनर त्रवाचित्रान ना वानिश चनिष्ठा ७ ठवानक कार ७ कर्पश्रप्त अस कर्षकम अधिमाश क्यांबीय विनहारे देवेक, जाब ७६ जावन-बाह्याविक क्ष्मीक्षित्राम्बक बनिवारे बक्क मिन्त्रारे चानक [चक्रव] मनांच्युरु अरे मारमादिक दबब्धक्वाक्षक त्वाक क्रेटिंट (हो क्याबद्दन श्रवाकाक मध्याब बहेट्ड) श्रत्रांव कटत्र-वृक्त दश्च, त्य वाक्ति विश्व व्यवकार्य वाकहे वटहे, छवानि चनिक्छ चर्वार चनिका वादा चादठ वाकाइ वनमय-गरवााद चनिव-পুরবে সাধারণ লোকের ভার (১) অ-বর মত অবিঞাত থাকার এই चाचारक रकान करत मा, चर्बार त्याकरमाहकशिक रवान चनमोठ कति॥ तका करत मा, बनाल (यह जमम्क-जनवीठ वाकित्म त्यम कवाहि विवास বোধোৎপাৰৰ করত পালন,করে না, অবনা লোকপ্রণিত অভাভ ভভাবিকর্ম (बक्रण निर्म मण्याविक मा बहेरन योत क्रमध्याम यात्रा भागम करत नाः क्का बाबा अङ्कारक परनाक स्टेरनक चीत निका बात्रवहरण अक्षेठ कविरक का शांदिल विकार किशांत शांशांत्र शांशांत्र वादा दका करत ना । क

णान, विकाश कति, य-लाकर्गाम अहे शतिशालम अत्याधन कि १ कर्ष स्टेट्ड डेशब्ड क्लबाडि यदम अद, अदर वाडोडेक्नगायन कर्यक यदन

⁽३) छारपदा-नरवात जगतिपृत्य क्यात वर्ष अहे-"व्यय क्यांत" अहे त्योकिक वात्का द्वस्य व्यक्तमहाद्य मित्र क्या दहेशक मरवात नतिपृत्य मा दक्तात व्यापनादक 'क्यात' विका वृत्तिह्य माद्य गरि, अवाद्यक क्याम मिद्रक मस्त्राहे 'क' (वाता) वहेंशक व्यक्तात त्यादव काता वृत्तिह्य मा मातिहा वामनादक 'क' वहेंदक क्या (व-क) विजया वदम क्षिता वादक ।

शक्य नविवादन दक्षितारक, कनम कर्ष्यकीरमध करमरे चाचाद चनक-नामम मध्यमन बहेरम । मा,--छारः बहेरक मारव मा : कावन, यक महार्थमारवाहे कत वरक्कारी: अहे क्या है वित्तव कविता र्याम्टल्स्य द्य, अहे मध्याद्व विश काम बहुडकर्षा शृक्ष 'व'-रमाक बाखारक म। बामिया, **अस्**रिक्कानहीय व्यवचार पारबाक विश्वामाञ्चमारत पविरक्तार हेरेकनमायक का व्यवस्थानि পুৰাকধের অনুষ্ঠান করে.—ইবার সাধাব্যেই আবার অকর কললাভ চইবে त्रात कविता निवसत अपूर्णान करत, अविद्यास्त्र (नहें कर्चक्रि अविश्व-मूलक कायमात्र नाम महाक्रित क्षतात्र वाचित्र वश्रवर्गामानित क्षेत्रवीत् जाव मरमाना कारत वरत वर्षा वर्षा कहनकुक कनरकान त्वर वरेश त्राम नत्र, निकारे छार। काशास रह . कावन, तारे वर्षाप्रकारमा मुनीक्छ कावन व्यविष्ठा ७ काव, क्रेकारे ठकन वर्षाय व्यक्तियात्री : कार्यारे कर्षाविष्ठ करनः विश्वाणिकावरे जेनना स्रेटिए ; वरु वर विकारे नुनाकार्यक काल व्यवकान पविभागत्वय वाचा क्वमंत्र हरेए पार मा (>)। मठबर बाह्याकारे -पानाकारे छेनानमा कवित्व : अवत्य 'व'-लाका अधार वाकार अवारत 'व' नव ता वा'करमक 'बाबानव' नरव बरमाक वर्वरे श्रम कविएक कहेरन । द

সেই বে লোক আন্তারত উপাসনা করে, তাহার কি ক্স হয়, তাহা ব সতেছেন —নিক্তরত তাহার কর্ম কর প্রাপ্ত হয় না; কাম্বন, তাহার কোম কর্ম নগলিট থাকে না, বাহার কর হইবে; 'কর্ম কর বর না' কথাটি সিদ্ধ পলার্থেরই অনুবাস বা প্রক্লরেখনাত। অবিহানের সক্ষম কর্মের কল করাম্বক সংসার-হর্ম বেরূপ অবিজ্ঞ্জ্যিতাবে থাকে, টহ'ার (বিহানের) সক্ষমে সেরূপ হ্যে ক্থনগুণাকে লা (সন্তব্যরও হয় না); বেষন [ক্ষনক ব্লিরাছিলেন—] 'মিধিলা ধেশ ভ্রমীকৃত হইলেও আনার কিছু সন্ধ হয় না', ইহাও ক্রেনি। ৬

ত) ভাবপুর্বা -বেরাভুপায়ে এইলপ একটি নিয়ম আছে বে, 'মব কৃতকং, ভবনিভানু'
আর্থিব বারা বারা ক্লিরালভা কোন একার দিবা বাইতে উৎপন্ন, ভাষা বভ ক্রই হউক,
বা মত বীর্বভালভারীই এউক, নিশিপ্ত সমর অভীত হইলে ভাষাকে জন পাইতেই তইবে।
এ নিয়মের কোবাও আভিক্রম নাই। বিশেষভা বে যে মত অবিভা বারা নাজাব বা
পালভারা সবজেও উৎপাতিত, ভবিল্ভালেও ভাষার বিভাভা হইতে পারে না, বেমর পর্যন্ত
বিবিধ পরার্থ। এবানেও পুরাতন ক্ষম কিয়াজভা, বিশেষতা বোহরর অবিভা ও অবিভাবুলক ভাষার ক্ষম, ভবন ভারার বিবাশ্ত অবভাবার।

শপর সম্প্রায় বলিরা থাকেন বে, স্বান্থলোকোপাসক বিভানের বিভাশভাবে ভবছাটিভ কোন কর্ষেরই কর হর না; এবং উপাসনার কর্মস্থলণ 'লোক'
শব্দেরও ভারারা বুই প্রকার অর্থ করনা করিরা থাকেন.—একটা অথ হইভেছে
—কর্মকলের ভোগভূষি অভিযান্তাবন্ধ বার্যুক্তাবন্ধ) হৈরণাগর্জ লোক
(হিরণাগর্জসম্পাকিত হান)। বিনি সেই পরিচ্ছিত্র অনাত্মলোকের উপাসনা
করেন, কেবন সেই পরিজ্ঞিলাত্মস্থার অভ্যতিত কর্মই কর প্রাপ্ত বন্ধ। আপর
অর্থ হইভেছে এই বে,) বে বাজি কর্মকলাত্মক সেই বিরণাগর্জ লোককেই
অব্যান্তাবন্ধ-কারণ্ডলে পরিকল্পিত কর্মবন্ধা উপাসনা করে; অপরিচ্ছিত্র কর্মক

হাঁ, একপ বল্পনা গুলিতে শুন্দর বটে, 'কল্প প্রত্যন্থগারিকী চইতেকে না; বেবেজু, এখানে 'ব-লোক' লগে প্রমায়াই অভিবিজ্ঞ হইরাকেন; কাবণ, প্রথমে "বং লোক্স্" এইরপ প্রভাব করিরা ভাষারই প্রতিনির্দেশ ছলে 'ব'লক পরিভ্যাপপুর্যক আয়-লক হোস করিরা 'আয়ানস্ এব লোকস্ উপাসীত' বলা হইরাকে; প্রভরাং এখানে কর্মসম্পর্কিত লোককল্পনার অবস্তুই নাই। ৮

বিশেষতা প্রকর্ম গুরু বিভাবিব্যক—'আব্রা স্থান থাবা কি করিব, বারা থারা আমারের এই আন্ত-লোক লাভ হইবে না' এই বাংকা বিশেষভাবে নির্দেশ করাতেও [ঐরণ করানা সঙ্গত হইতে পারে না ; কারণ,] এথানে "অর্থান্তা নো লোকঃ" এই বাংকা পুরু, কর্ম ও অপরবিভালর লোক সমূহ হইতে এই আন্ত-লোকের বিশেষত ভাগন এর। হইয়াছে; ভাগার পর 'কোন কর্ম বারাই ইহার (আন্তোপাসকের) গোক ও সম্বা ন্থান) ব্যাহত হয় না; ইহাই ইহার পরম লোক অর্থাৎ সর্কোৎকট্ট গ্রুবা হান; এথানেও দেইস্কল অর্থেই 'লোক' শব্দের্য ব্যাহার করা হইয়াছে। ১ডএব এথানেও 'বং লোকস্ব' এইরণ বিশ্বেণ স্থিবিট থাকার পূর্বোক্ত বিশ্বেণমূক্ত ওাকাওনির স্থিক্ত ইহায় একবাকাতা করাই স্বীচীন। ১

বৃদ্ধি বল, তাহা বইলেও "জন্মাৎ কাষ্যতে" এইলপ কলনির্দ্ধে কর।
পুল্ক বর না; কারণ, এখানে 'অ-লোক' অর্থ প্রবাদ্ধা; ভাষার উপাসনায়
ভথ্মপ্রশান্তি বথন শাল্প-সম্ভ নিভাত, তথন 'বাহা বাহা কাষ্যা করেন, তথসম্ভ এই নাদ্ধা বইতেই সন্দার হয়' এইলপে সেই উপাসিত আদ্ধার অভিরিক্ত
লক্তর কলের প্রাত্তি-কথনও মুক্তিসক্ত হয় না; না, এ আপ্তিও সক্ত হয়

মা; বেবেছু, ইরা ব-লোকোণাননার ছতিপ্রকাশক বাত্র, প্রের্ড-ক্ষপ্রকাশক বতে, ইবার অর্থ বইন্ডেছে এই বে, ভাবার বাহা কিছু অভীই, তৎসবত্ত ব-লোক হইতেই নিশার হইরা থাকে, এভরতিরিক্ত আর কিছুই ভোবার প্রার্থনীয় নাই; কারণ, ভিনি আপ্রকাম; [সুতরাং অন্যত্ত ভাবার কিছুই প্রোর্থনীয় থাকিতে পারে না], বেষন অন্ত প্রভিতে আছে—'আরা হইতে প্রাণ, আতা হইতে বিক্সমূচ' ইত্যাধি। অথবা পূর্বে বেষন স্ক্রাত্মভাব-জাপনের অন্ত "ওআং তৎ স্ক্রেডবং" বলা হইরাছে, ভেম্বনি এখানেও স্ক্রিভাবপ্রবিদ্ধান্ত বির্ধান করা ব্রহাছে। ১০

প্রকৃত পক্ষে উপাসক ধৰি পরসান্ধাই কইরা বান, তাকা চইলে "ক্সাছি এব" এই বাকো 'প্রকাশিত স্বস্ত্রণ আন্ধা-পোক কইতে' এইরূপ অর্থানাতের ভক্ত এবানে 'আন্ধা-পাক্ষর প্রয়োগ করা অবস্তই বৃক্তিসঙ্গত কইতে পারে; নচেং পরসান্ধ-লোকের নিবেবার্থ এবং হাজাবল্লার ব্যার্থতার জন্ত, 'জ্যাা-রূতাবল্প—যাক্ষা এবনও অতিবাক্ত হর নাই, সেই অবাক্ত কথালোক কইতে' এইরূপেট বিশেষ করিয়া বদা আবন্ধক কটত; কিন্তু এখানে প্রস্তাবিত বিশেষভাবে নির্দেশ করিয়াছেন: স্বতরাং উভয়ের মধ্যবর্তী একটা অঞ্চত অবস্থা অববারণ করা যাইতে পারে না। এবং ১ ১৫ ৪

আভাত্ৰ-ভাত্ৰাম। খণে দৰং বা খাছা খনাবিধাৰ বৰ্ণ-প্ৰয়ন্তভিবানো ধৰ্মেণ নিৰ্বাসানে। দেবাদিকপ্ৰভাতৰা পত্ৰৰ প্ৰতম্ন ইত্যান্তব্য কানি পুনভানি কথাণি ?—বংক্ট্ৰান্ডঃ। পত্ৰৰ প্ৰসম্মান্তব্যি; কোৰা ডে দেবাদ্যঃ ?—বেষাং কপ্ৰভিঃ পত্ৰত্পক্ষোভি—ইভি, তদ্ভঃং প্ৰপ্ৰান্ত—

আ ভাল-ভাল্যানু বাদে "বংগা এরং বা আছা" ইডালি।
বর্ণপ্রবাদকত অভিযানসম্পন্ন আব্বান পুরুষ ধর বারা নির্ধানত কইয়া বেষডা
প্রভাৱ কর্পসম্পান্ধনে পরাধীন (বাবা) বাকেন, এইকত পণ্ডর ভার পরভয়;
এ করা পুরুষ না বংগাছে। সেই সময় কর্ম কি কি, বাহার অন্তর্ভাবের ভয়
অবিবান পুরুষ পশুবাৎ পরাধীন বইরা বাকেন; থার এই বেবালিই বা কে
কে, অবিবানেরা বিবিধ কর্ম বারা বালাবের উপকার সাধন করিয়া বাকেন;
এবন এই উভয় বিবর বিশ্বভাবে বলিভেছেন—

অথে। অন্নং বা আছা সর্বেবাং ভূতানাং গোকঃ স বন্ধু হোতি বন্ধলতে তেন দেবানাং গোকেছৰ বনসূত্ৰতে তেন ধৰাণাৰণ যথ পিতৃতো৷ নিপৃণাতি যথ প্রজামিকতে তেন পিতৃণামণ যত্মসুষ্যান্ বাদয়তে বলেভাছেশনং দণাতি তেন মসুষ্যাণাং অথ যথ পশুভঃস্তৃণোদকং বিন্দতি তেন পশ্নাং বদস্য গৃহেবু খাপদঃ ব্যাহ্ম্যাপিদীলিকান্ত্য উপজী-বস্তি তেন তেষাং লোকে৷ বথাহ বৈ খাছ লোকায়ারিষ্টি-মিকেদেবহু হৈবংবিদে সর্বাণি ভূতানারিষ্টিমিছস্তি, তথা এতদিকিঃ মীমাহনিতম্ ॥ ৩ ॥ ১৬ ॥

ज्ञहालांचीः। नर्षा वांचातिरहः चत्रः (श्रवतः) चांचा (क्यां'व-क्रकः व्यविद्याम् पूक्रवः) मध्येवार कृषानार । (ववावि-निनी न कासानार) (नाकः - লোকাতে ছুবাতে ইতি লোক:--ভোগ্যা); সা (অবিবান্) বং **क्रहा**डि (हात्रः करवाडि), यर यण्डि, (छम (१०१४) वाननकरन-क्यना) (क्वामा: (माक: (८)गा:); यथ वर पहळाछ (घःवव: (वनामीम् পঠতি), ভেন ক্ষানাং লোকঃ ভোগাঃ); অৰ বং পিতৃভাঃ নিপ্ৰাতি (পিভাৰকাৰি প্ৰবৃদ্ধতি), বচ্চ প্ৰামৃ ইচ্ছতে (অপতামুৎপাৰয়তি : তেন (कर्चना) निख्ना [त्नाकः], यथ यर यक्ष्यात् वानश्ट कनामनावि-कारमम मृश्य कालबंडि), वर ६ अकाः (अक्राक्षकाः व्यवस् (व्यवः) क्यांकि, (क्य (क्येना) बक्रवाानार [लाक: ; अब वर मक्तकाः कृत्नामकः विक्रांक, भन्न छुर्नावकर श्रावद्य , (हम भन्नार (भाकः) ; भगा (भनिद्वः) शृद्धयु यर का निनीतिकाकाः (भनीतिकानर्वावर : वानवाः (कवनः) ब्यार्थन (निक्न:) 5 देनबीर्यत. (छम (छमार मानः; प्रया पाप (चकीवांत) (माकांत्र (नवीवांत्र । चित्रक्षिः (चित्रमानः) हेराव्य (कामरत्य) [समः], अवर (भूकावत्वव) व (निन्हात) अवश्वित , वरवाकावामवानित्य) मुर्वादि कुछानि चतिक्रिर (चविनाचर) हेव्हिक (कामशरक); ७९ अ७९ (जापाज्यः) विविद्यः (विरम्पायन कालः नर) मीमार्गन्तः (कस्वास्त्रा विद्याद्विकर) [क्युकीकि (प्याः] । ०३ ३७ ३

সূত্রাত্র । কর্দ্মাধিকারী এই আত্ম। (অবিধান পুরুষ) নর্ব-সূত্রের (বেবালি প্রাণীর) লোক সর্বাৎ জোগ্য; নেই স্বিধান্ বে থোন করে, এবং বাগ করে, ভাষা ধারা নে নেবগণের ভোগ্য হয়, আর নে বে, অহর হঃ অধারন করে, ভাষা ধারা ধবিগণের, আর লে বে, পিতৃসপের
উল্লেখ্যে জলপিও প্রদান করে, ভাষা ধারা পিতৃসপের, এবং লে বে,
[অভ্যাগভ] মছুন্মগণ্ডে বাস করার ও জলদান করে, ভাষা ধারা
মনুষাগণের, এবং পশুগণকে বে, ভূণ ও তল প্রদান করে, ভাষা ধারা
পশুগণের, আর গৃহে বে, পিপীলিকা হইতে আরম্ভ করিরা খাপদ ও
পাক্ষণণ তীবিকা লাভ করিরা থাকে, ভাষা ধারা ভাষাদের লোক
(ভোগা) হয়; লোকে বেমন বায় শরীরের অস্ম অরিষ্টি (অনিষ্টাভার
বা অবিনাশ) ইচ্ছা করিরা থাকে, ভেমনি দেবভা প্রভৃতিও, বে লোক
আপনাকে দেবাছির ঋণগ্রন্থ বলিরা মনে করে, ভাষারও অরিষ্টি
কামনা করিরা থাকেন; লেই এই বিষয়টী [পশুষহাবক্তপ্রকরণে]
বিদিত (বিভিত্ত) এবং [অবদানপ্রকরণে] মীমাংসিত্তও (বিচারিতও)
হইয়াছে ৪ ৫০ ৪ ২৬ ৪

স্পাঞ্জ ভাষাম। খংগ ইভাগ বাকোপভাষার্থ। খরং वः अङ्गर्कः गृथौ कर्षाधिकरकार्यवचान् मङ्गोद्धिकारुकाकाविविधिके निक चारब्रकाहारक मरमेवाः (ववादीनाः निनीनिकादानाः कृतानाः स्मारका (छात्रा चारब्रार्वः, मार्बवाः वर्गाञ्चमाविविद्धिः वर्षाक्रमकाविचार । देशः भूमः कर्षावायदेवनभकुर्वत् (कवाः कृष्ठावायवायाः भागः—हेकूछाउक-স গৃহী ৰং কুৰোভি ৰং ৰুণতে,—বাসো বেৰতাৰুদিও অৱপৰিভ্যাৰঃ, म ध्वारमध्याविष्टक। (सायः, त्वन शायशामनक्त्यन कर्षनावक्रकर्षवादक्रम (भवानाः १०२९ नवच्यापन व्यांत्वस है क (नाकः ; व्यथ नवक्वात्व पाशाय-वर्गार्थ परवरः, रथन बर्गेनाः (नाकः ; वर वर निष्ठरणा निम्नापि अवस्थि निकारकारि; वक अवाविकाल अवार्ववृथयः कार्याक - हेका छार-गण्डाममध्यार्था, तार्शाकारमाध्यक्षेकार्थः, त्यम कर्षमायक्षकवार्यम निष्नार नाका निष्नार (कानारवन भवकाव। नाका; वर वर वक्षान् वानवरण कृष्यकारियात्मम मृत्व, वक (काका वनत्वाव्यवत्वा वा व्यवित्वा-श्नमर प्रशाकि, (कम वश्रुवानान् ; जन वर नक्षकाक्रमायकर विकास नक्षति, (कम नन्तान्) पर्क मृश्स्त्र् चानका प्रशास्त्र । निनीतिकाकिः मस कनवनि-ভাওভাগনাদি উপভাবতি, তেন ভেবাং নোক:। ১

- यथावत्रत्यकामि कचावि क्वांत्र नकरशकि व्यविकाः, ख्याव् वधा व देव कारक यात्र त्याचात्र वरेष व्यवात्र व्यविक्षित्राचार प्रकाशास्त्र विकाशास्त्र व्यवात्र व्यवाद्य व्यव्य व्यवाद्य व्यवद्य व्

টীকা। কভিকাৰংহৰতায় বৃত্তবন্তানাজ্ঞাপুৰ্কতং ভাংশধানাহ—অশ্ৰেম ইড্যানিকা। অভেডাবিভাৰতা প্ৰত্যাহ গ্ৰহণ আৰু লালনা আৰু লালনা নিৰ্দেশ নিৰ্দিশ নিৰ্দিশ নিৰ্দিশ নিৰ্দেশ নিৰ্দিশ নিৰ্

ভাষের প্রস্থারা প্রকটনতি কৈঃ পুনারাতে। বলতিভ্রেচেণালাগার্থখন। বিশেষাৎ পুনক্ষিনাশতা বলতি-চোলনা ছবাদেবতাকিলাসবুলারে কৃতার্থলাগিতি ভাষে-নার—স্থাপা ইন্ডি। সানেচনং গলেশ:। উল্লক জুলোতিলানেচনার্থিকঃ ভাষিতি , ১

ব্যবাক বোরাকিভির্বেরালীন প্রভাগক করে। সুনিবো বিদ্যা প্রতিবন্ধসন্তবান্তবুপকারিকবানুভিরিভাগেলার — অভ্যান্তবিত । পূর্বেরারকবন্ধানারভিরেরেরর্বন্তু সরবন্ধরাকারকভার কর্মবাক — তুল্মান্তি । কেবালীনা কর্মাবিকারির কর্মানিপরিপালননের পরিরক্ষানিতি বিবজির। পূর্বোজং প্রারহি — তুল্মান্তি । ববোজং
কর্ম কুর্মান্ বন্ধানি বেরালীন প্রভাগকরেছি, ত্রাণি ন তর্মকর্ডারন্তক, নানাভাগানিভ্যাপভ্যাহ — তুলা ইন্তি । ভূতবজ্ঞা সম্প্রারল্য পিতৃর্বনে । দেববজ্ঞা রক্ষরজন্তেভারং
পূর্ক ব্রারহিছি ভ্রান্তি বিভারং বিনঃ নাম্বর্বের্যা, ন বি ক্লমবোদনানি ক্রত্রিভান্
বাস্থ্যীরতে, ভ্রান্ত মীম্রাইজিভ্রমিতি । ভ্রেত্রবন্ধরণ্ডে বন্ধ বন্ধতে স্বর্ধনার্থনির্বের্যানি
ভ্যান্তব্যান্ত্রক্ষরক্ষরক্ষর্বান্ত্র । কর্ম ক্রান্তর্যানির্বান্ধানির্বান্ধ্যন্ত্রিভানির্বান্ধরার্যান্ধান্ত্রিভানির্বান্ধ্যন্ত্রিভানির্বান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যালিক বিল্লান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্যান্ধরার্যান্ধরার্যান্তর্যান্তর্যান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্ধরার্যান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্ধরার্যান্তর্যান্ত্র্যান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্ধরার্যান্তর্যান্তর্যান্ধরার্যান্যান্ধরার্যান্তর্যান্তর্যান্ধরার্যান্তর্যান্ধরার্যান্তর্যান্তর্যান্ধরার্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ধরার্যান্ত্র্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর

ভাজ্যাকুতাদে। 'নগে' নদ বাকারস্তহক। স্থাপ্রম্থ কর্ণাধিকারী দরীবেলিরানিসমন্তিক বে অবিধান ধেরণেও 'আয়া' শকে অভিথিত হয়, দেই আয়াই বেবতঃ হইতে শিশীলিকা পর্বাধ সর্বভৃত্যের নোক অবাধ ভাগ্য; কারণ, বর্ণাশ্রমনিধিত কর্ম যার। সমান্ত্রের উপকার সাধন করিয়া বাকে। কি কি বিশেষ কর্ম যারা উপকার সাধন করিয়া বাকে।

क्छविरमरवर लोक वय. छोटा विलिखाइन-त्यहे मृश्य (व,द्राम कविशा वारक, अवर बान कविता बारक, तारे रक्षाव थ बानायक कर्य छाराव व्यवक्र-कर्यता ; गुरो के कर्च बाताहै (बनमर्गत मिक्छे गठन छात्र ग्वाबीम शास बावह वारक; बड़े क्रम (म रक्षमानंद्र (मान वा रक्षमा वद्द; वाम वर्व-रक्षमा केरबाड चवठा। १ (पनकारक केरबड़ कविका बीच जना छा। महा), दबन ভাষাভেই আবার আসেচনের (सनीप अवाशालित) আবিকা থাকে, ভবন खालांत माथ वह (वाय: [गृवय] मित्रखत (व, भाठ करत — अखाव (व, (वर्णाव नाञ्च च्याप्तम करत, छादा पाता (न विषयत्वत मारू कर करत ; चात्र (ब, लिख्न-(मारकत উष्टां कर्माना विषय करान करत, अवर महान हैका करत, वार्वाद मशान नारवश्च वक (हरे। करव,--अवारन 'हेक्का' नरक छैदनकि नर्वाक वृक्तिक इहेर्द, [कुठताः वर्ष बहेरटरइ-- । मनान डेर्यावन करतः ; मर्वात्नारमावन गुरीय वरक्षकत्त्वता ; अहेबक हेशा पादा भिष्कृत्रत्वत्र त्नाक, व्यर्गाय भिष्कृत्रत्व (जानाञ्चल नवण्ड ् लवारीन) वारक ; चार :व, वक्षानगरक केलबूक हान ७ बनाव धारानपूर्वक गृहर यात्र कहात्र, अवः गृहत्र वात्र कक्क वा ना करूक, आर्थनाकाडी बब्रुश्वनगरक (व, बह अवान करत. छाश वांता बब्रुया-त्रर्पत् (नाक] इत ; भाव रव, लक्षत्रपरक पान कम विद्रा वाटक. छ्याता পভগবের [ताक] इह ; এবং ইহার (हुशोत हु: ह व. चानव ७ मांचनन শিশীলিকাপ্রস্কৃতির সংল কণা, বলি (১) ও ভাওপ্রকালনাদি ভোগ किशा बार्क, 'शहा बाता ठाहारबंद लाक ((छात्रा) अह । ১

(वर्ट्स्, अहे व्यविषान् गृहत् क्यांऽवन यावा . एवठा अक्ठिव डेनकाश्मावन कविष्ठा थारक, त्मरे (हर्ड् कन्ट्ड (वयन य-लाटकत यक—योत .एट्ड क्छ व्यविष्ठि—व्यविष्ठा व्यविष्ठकाव हेव्हा कविष्ठा याटक, व्यविष्ठ विद्यालय व्यव उक्षा ७ (लायबाव यावा मर्जाटकावाद (यादव मित्रमानन कविष्ठा याटक, एक्सन विनि डेक्क्सकात कानवान्—'वाचि मर्जाक्ट्डित ट्यांचा, क्षेत्र काम व्यवादक अहे मम्ब कर्षवा-क्यम्लावन यावा ववम्बित्याद्य कविष्ठ वहेद्द,' अहेड्टम व्यवमान क्ष्म व्यव यादक करत्र, भूक्षकाव एक्सन म्यवक व्यवहे काम व्यविष्ठि—व्यवमान क्ष्म कविष्ठा वाटक, व्यविष्ठ शृहक्षम द्यवन मक्ष्मका कविष्ठा वाटक, विक एक्सन (व्यवम्ब द्यावा व्यविष्ठ व्यवस्थान-निवृधिष्ठ क्रम मर्जाका

^{(&}gt;) कारणशः अवादम 'विम' वार्य-- गक्यशंब्यकः वाकर्यक 'कुक्यक' पृथ्वितक स्टेटव । देशात्र विकाक विश्ववन 'गक्यशासका' कथात विभागीतक त्वितक स्टेटव ।

णारव तथा कविशा थारक; अहे क्छाहे नमा बहेशारह (व, त्महे (वह त्यव-भरतव हैदा शिव नव [त्य, यामवनन वृक्तिमाण करह]; त्महे अहे विवश्रक्ति चर्चार धन-लडित्मारवत छात्र वर्त्याक-श्रकात कर्षमृत्रदत्व चर्याक-छंवाण। 'लक्ष्यवा-वक्त-श्रक्तवत्व विकास बहेशारह, अवः चरशामश्रकतत्व मौत्रारिक (२) चर्चार चर्याक-छंवाज्ञत्व विस्तित्व वा निषाविष्ठ हरेशारह । ८० ॥ ১७ ॥

আভাসভাসা । শাহৈবেদ্ব গ্ৰাণীং। ব্ৰহবিবাংশুং ডমাং প্ৰভাবং কৰ্বাচাৰ্ডন্ত্ৰণাং প্ৰভিত্নতে, কেনায়ং কাৰিছঃ কৰ্বভ্ৰাবিকাবেহ্ব ইব প্ৰবৰ্ততে, ন পুন্ধাব্ৰোক্ৰাপাৱে বিবাহিকাৱানাক্ত্ৰ; কমাংকাব্ৰাব্ৰাক্তি। বাচ্ছ; কমাংকাব্ৰাব্ৰাৱানাক (তহলি ক্ৰছি, শক্ৰা শক্তাভাগিৰ ক্তনাশ্ৰাক্তাই ন জু সামাজং প্ৰব্যাৱাং বিশিষ্টাধিকাৱানাক চ্ব; তথাত বিভবাব্ তেন, বেন প্ৰেবিভোহ বৰ এব বহিন্ধ যে তৰতি সমালোকাং। ২

মন্থ অবিভা সা; অবিভাগান্ বি বহিন্ধীকৃতঃ প্রবর্ততে,—সাপি নৈব আবৃত্তিকা; বছসক্ষণবিঃবাহিকা চি সা, প্রবর্তকরাজন্ত প্রতিপর্যাত্ত আকৃত্তিব প্রতাদিশতন প্রস্থৃতিবেতু:। এবং ত্রি উচাতাং—কিং তং বং প্রকৃতিবেতুরিভি। ত্রিভাতিবাছতে—এবণা কাম্য সা; সাভাবিকাামবিদ্যায়াং কর্ত্তানা বালাঃ পরাচঃ কামানভ্রন্তি—ইতি কাঠকক্রতৌ, স্বতৌ চ—"কাম এবঃ ক্রোব এবঃ" ইত্যাবি, বানবে চ—"নর্কা প্রবৃত্তিঃ কামবেতুকোর" ইতি; স্পর্বাহর্তিঃ স্বিভারঃ প্রবর্তিঃ প্রবাহর্তিঃ স্পর্বাহর্তিঃ প্রবাহর্তিঃ

⁽२) कार्यया—'ग्रेक्यशयक्ष' के 'ग्रायमानश्यकात' व विवत्त जिल्ला—"गाठी कामकाहि वीमार नग्वा। कर्णपर विन: । १८७ ग्रेक् वशयक्ष। वक्ष्यकाविनावकाः।" "ग्रायश्यक्ष सम्बद्धाः ग्रिक्यक्षक कर्णग्व। दशास्त्र देशदा प्रतिकारिक। नृष्यकार्शनिव ग्रुक्तव् । यक्ष्),

वर्षाव ()) (वर्षाव माष्ट्रगार्थ—इस्वरकः :) (दाव --(१वर्षा) हे(क्ट्रक्क इवाकाव— देवरकः, (०) कुक्विय-कृत्रकः, (१) विकृत्तन हेट्यटकं कर्णाकाविष्याय—विकृतकः, वाद (०) व्यक्तियुक्तात्र वाय—मृशकः । 'वक्ष्यश्रादकं माद्य अधिव ११ वक्षकाव वृश्यात्र वाद्यात्र । विक्रित्त विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्या

টিকা। বালাভবনানার বাবাজুং পাভনিকাং করোভি-কাই ব্যুহ্বক্ট্যানিকা। করিব বছনং, ভ্রাবিকারে। ফুর্ভানং, ভরিবিভি বাবং। বিভাবিকারভূপারে ক্ষর্পানে প্রবৃত্তিভারেও। ববাজিবিলারে ক্ষরিভি বাবং। বিভাবিকারভূপারে ক্ষর্পানিক প্রকৃতিবিভি বছনে—ক্ষরিভি। উক্তর্যাক বোভি-ক্রান্তি। কর্মবিভারেও কর্মবিভারেও কর্মবানের ক্ষেত্রান্তি। কর্মবিভারেও কর্মবানের ক্ষেত্রান্তি। কর্মবিভারেও কর্মবানের ক্ষেত্রান্তি। ক্ষেত্রান্তিও কর্মবানের ক্ষরান্ত্রান্তিও ক্ষরান্তিও ক্ষরান্ত্রিতিও।

শ্রভাগবিদ্ধা বংৰাকাবিশবিশো নির্বেদ প্রবৃত্তাকুরণে বেবুরিতি শবন্তে—মৃশ্রিতি।
ভাষে পুটরতি। অবিদ্ধাবানিতি। ভজাং বরণে প্রবর্তকার ব্যাভি—লাপীতি।
অবিদ্ধাবাস্থি প্রপ্রাধ্যাবিদ্ধার কর্মাবান্তা কারণকারণভাষে—প্রস্কৃতকাতি।
নভালিন্ কারণেংকারণবেশবিদ্ধা প্রবৃত্তিরিত চের্ড্রাই—এবং ভ্রন্থীতি। উত্তরবালার্ভ্রবেদ্যাবভাগ ভাষিবিশ্বিতং প্রবর্তকং নাজপতি—ভাতিভাতিশীয়াভ ইতি।
ভ্রাবিতঃ প্রভারের সংবাধ্যতি—আভাতিভাতিভাতিভাতিভাতিলাত্ত্ব—
স্মাতিভাতিভাতি। শব্র কেন প্রবৃত্তাহ্বর্ত্ত ভিত্তি। শব্র কেন প্রবৃত্তাহ্বর্ত্ত ভিত্তি। শব্র কেন প্রবৃত্তাহ্বর্ত্ত ভিত্তি।

'কাম এয় হোৰ এয় বলোগুৰসমূহকঃ' ইন্ড্যালি। 'অকানজঃ ক্ৰিয়া কাচিত্ বৃক্ততে মেহ ক্ষাচিৎ। বদৰতি ক্ষুত্ৰতে ক্ষুত্ৰত কামক চেইডাৰ্'

ইতি বাভাবালিভাহ —ছামুখ্ৰে চেডি। বলিভবিভি শেষ:। উভেংগে ভৃতীয়া-বাহেশেবৰণি প্ৰবাহনি— জ প্ৰযোধ ৰ্ম ইডি:

আভাস-ভাজ্যা-মুকাদে। "পাধৈবেদ্ পঞ্জ পানীং"
ইত্যাদি: প্রথমিং বাজি ব'দ কর্ত্তবাদ্যা-বভনমন্তপ পূর্বোক্ত পশুতার হইতে
বিষ্কু হইতে পারেন, তাহা হইপে, তিনি কেন কাহার (প্ররণান প্রেরিভ
হইয়া বেন অবশেরত মত কর্মবন্ধনানিকারে প্রবৃত্ত হন । এবং কেন্ট্
বা আত্মবিয়োকের করা উত্পান্ন বিভানিকারে প্রবৃত্ত না হর । তাল,
এখন আবার এ আপত্তি কেন । পূর্বেই ত বলা হইয়াতে বে, বেবভারা
ভারাদিপকে রক্তা করেন; ইা, এ দ্বা বলা হইয়াতে সভা, কিন্তু বাহার।
ব্যেক্তাধিপরে অবিভারভুক্ত কর্মানিকারে অবস্থিত, বেবভারা কেবল
ভারাদিপকেই রক্তা করিয়া বাকেন, কিন্তু বাহার। কর্মে বিশিক্ষারিকার লাভ
করে নাই, ভালুপ সাধারণ পুরুষ্টিপন্তে ভালার রক্তা করেন না; ইরা না

বলিলে কুটনাশ ও অক্তভাত্যাগৰনামক ছইটি হোৰ উপস্থিত বয় (১)। অভএৰ সৰগ্ৰই দেৱপ কিছু আছে, পুঞৰ বাহার গ্ৰেমণায় অৱপ হইৱাই বেন স-লোক হইতে (অংজা হইতে) বৃধিযু ব হইৱা বাকে - ১

ভাল, সে গলার্থ চাঁ ত অবিভা; কেন না, অবিভালনার পূর্বই বহির্ব বইয়া প্রব্ন হইয়া গালে; প্রকৃত্যকে কিন্তু অবিভাব প্রবৃত্তির কারণ নহে; গরত ভাষা কেবল বভত অভগাট বাত্র আবরণ করিয়া বাত্রে; নেইকভই উহা প্রস্তুতির বাজভাব প্রাপ্ত হইয়া বাকে, বেনন একত বপ, পর্তপ্রভূতিতে গতনের ভারণ বলিয়া পরিবাণিত হয়, ইহাও ভেষনি। ভাষা হইলে, বল—প্রবৃত্তির বৃদ্ধারণভূত সেই বভাট কি ৷ ইা, ভাষা বলা হইতেত্বে—সেই বভাট হইতেত্বে এবণা—কান; কঠোপানবাদে আত্রে—'বভাবনিত্ব অবিভাবিকারে বর্ত্তমান বালকণণ, অর্থাৎ বালকের ভাষ চক্ষরিত্ব অবিভাবিকারে বর্ত্তমান বালকণণ, পর্যাৎ বালকের ভাষ চক্ষরিত্ব প্রকৃত্যন বাভ বিষয়ের অন্ত্রণর করিয়া গাকে;' স্বভিত্তেত্ব (ভগরভূগীভাতেও) আত্রে—ইহা চইত্তেত্বে—কান এবং ইহাই জোব, (২) ইত্যাদি। বভ্নমণ্ডিভাতেও আত্রে—'কানই সর্বাপ্রবির বেতু বা প্রবোধক'। এথানেও অব্যাহরর নব পর্যান্ত নেই বিব্রুই বিভ্ততানে প্রবর্ণন করা বৃহত্তেত্বে।

আব্রৈবেদমগ্র আদীদেক এব, দোহক ময়ত-জায়। মে স্থাদণ প্রজাবেয়ার বস্তঃ মে স্থাদণ কর্ম কুর্বীয়ে-

⁽১) তংগপর্য-শত্তরাশ ও শত্তরাভাগের দুই প্রকার বেবে। ছত্তরাশ আর্থ -বাঙা করা দুইরাছে, অবচ করা বিবাই বই বইরা বাব, অর্থাং অকৃষ্টিত কর্মের করাভোগে লা বঙ্গা; আর অকৃষ্টাভাগের অর্থ-বাই। কয়া হল নাই, তাঙার প্রান্তি, অর্থাং করাপুটান বা করিয়াক আক্ষেত্রভাগের করাপ্রতি। ছত্তকর্মের বাব বইলে গোকের করাপুটানে উংলার বাকে না; আর অকৃষ্টাভাগের ইইলে অবভের বৈভিত্তা লোগে পাব, এবং কর্মক্রের অনিজ্ঞা ক্রিছেও পারে।

⁽२) कार्यया—वर्ष्य विकास किवादित्य —याक्ष काशव त्यस्याव पविवादित वहेशा व्यक्तिक स्थाद व्यक्तिक क्ष्रेश व्यक्तिक व्यक्ति क्ष्रेश क्ष्रेश व्यक्तिक व्यक्ति क्ष्रेश क्ष्रेश व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति क्ष्रेश व्यक्ति व्यक

তে তাৰাৰ্ বৈ কামো নেছ্ডণ্চনাতো ভূরে বিশেৎ, তথা দিপেততে কাকী কাময়তে—কায়া মে স্থানথ প্রকারে যাথ বিভং মে ভাদথ কর্ম কুর্বীরেভি, স বাবদপ্যেতেষা-মেকৈকং ন প্রাপ্রোত্যকৃৎস্ন এব তাবমন্ততে, তত্তো কুৎ-স্থা—মন এবাস্থান্থা বাগ্ কায়া প্রাণঃ প্রকা চক্স্মান্তিকং বিভং চক্ষ্য হি তথিশতে জোত্রং দৈবত প্রোত্তেশ হি তক্ত্ ণোত্যা-শ্রেবাস্থ কর্মান্তনা 'হ কর্ম করোতি, স এব পাঙ্কো বজ্ঞঃ পাঙ্কং পশুং পাঙ্কং প্রকা পাঙ্কি মদত সর্ববং যাদদং কিঞ্চ, তিদিত সর্বমাপ্রোতি য এবং বেদ ॥ ৫৪ ॥ ১৭ ॥

ইতি প্ৰথমাধ্যায়ত চতুৰ্থং ত্ৰাহ্মণম্ । ৪ ।

अञ्चलार्था:- चात (गद्रोगविद्यशेष पूर्वर) हेवर (चन्नर हरहिन्द्रापि-विभिद्धेः । चामा अकः. (चनवातः) अव चानीर, नाजर बाताविकः किकिर); नः (अकाको) चकावक्ष्ठ (काविकवान्)— (व (वव) कावा (भन्नी) नहार, वर्ष (काशानवकानकश्य) अवारश्य (देशव-वन-व्यादमार्वर क्षणाञ्चरतन डेरनदा ७(वहन् :; चर्च (चनचत्रर : विस्तर (धनर) त्व छार, चर (विश्वनाकामस्यः) (दर्गानाः वर्गायमार्वः) कर्ष (वर्षायमार्थनः) কুৰ্মীয় (কুৰ্ব্যাষ্) ইভি। এতাবান্ (এতংপরিষাণ: পুত্র-বিত্ত-লোকত্রণ:) ue (व्यवदावर्षः कावः (मार्छ। अतः, नागाविकः), देव (अतिरवे) ; हेक्क् (पांकत्रम्) इ न (पांन) [बनः] परः (रावाकनपनार कावार) कृतः (व्यविक्र) म (बर्क्य (म माइक हैं ; क्षत्राय (व्यविक्रमाद्याः अवर वावद्याक अर (राष्ट्रा:) अष्टि (रेशामी: 'पान अकाकी (पन्नशा: वनः) कामराष्ट - बाहा त्व छाद, चर्च क्षवारहर चर्च विकट त्व नाहि, चर्च कर्च कुर्बोह देखि। गा (बकाको पुक्क) साम्य अरखनाः (नरवाकामाः कानामाः) धरेक्कः (वहवरः) वनि व बारवादि, धारः वहरतः (वन् रः) धर [जरवर्गीक] वक्टक ; [जनीर नवीर-माद्ये एक कृरवका करवीकि वस्थान्]। [सर्वाककावनव्यका इरवर्वार निर्मार्वाहकूमकवर्णान अकावाहरतनः गर्वाकश्वाकश्वाकश्वव व्यावकता स्वयका मन्नारतिषुत्र बार--- । यक (बस्य-क्वांक्यांनिमः) हे (विकार्क) कृश्यका [केवारक---] मनः (व्यक्यमारः) अव

चक्ठ वक्टर्रवाकिनानिनः) जाचा (जाचा देन), नाक् (जनः) काता (जाची), आवः (जक्ट्रांकः) अका (जक्रांकः), क्रम्ः वाक्र्यः विकः, वि (वचार) क्रम्यः (जक्रयः) कर्राः (वक्रः) विच्राः (आवः देनतः (विवाः विकः), वि (वचार) (आवः (अवःविक्राःकः) कर्राः (देनतः विकः प्रेतांकि, जाचा (चन्त्रोतः) अन्य चक्र कर्षः (वि (वचार) जाञ्चनः (जनेतिः वि) कर्षः कर्रांकि (जन्नावः विकः) ; जः अवः वक्रः जाक् करः (जक्रकः विवः) ; जक्षः (वक्रांकः) जाक्षः (जक्रकः) जाक्षः (वक्रांकः) ; जक्षः (वक्रांकः) जक्षः (जक्रांकः) जक्षः (जक्रांकः) विकः (वक्रांकः) (वक्रांकः

रेषि अथबार्यास्य हरूपेः आवन् । हर

ম্লানুবাদ: ব্যে (পদ্মারহণের পুরের) এই বাস্থা (प्रशास्त्रमानो कोव) এकहे हिल्लन ; डिनि कामना कतिएलन-सामान বারা (পত্নী) হউক, আমি সপ্তানরূপে প্রাচ্তু । ইব ; আমার বিত হউক, আৰি কৰ্মা (ধৰ্মাদিসাধন ক্ৰিয়া) কারব, ইভি। অগতে এ৩ৎ-পরিমাণ কামই প্রসিদ্ধ, অর্থাৎ এডদভিরিক্ত আর কোনরূপ কাম্য বিষয় नाइ : हेल्हा कतिरामध तक हैशात स्थिक किह लाख करत ना ; त्रहे (क्ष् বর্তমান সময়েও একাকী লোক কামনা করিয়া খাকে---আমার আয়া ষ্টক, আমি সন্তানরপে ভারাব; আমার বিত্ত হউক. আমি কর্মা করিব हैं । तम वक्रमन डेक्स कामा विषद्भव मध्या এक এक टिंड প্राश्च मा क्या डिटक्न (म निन्द्रिके बानिनाटक सकुरम (सन्ते) विनया महत नहि : ্ৰিকিডে হইবে বে, উক্ত কামের প্ৰাপ্তিতেই আপনার পূর্ণতা বোধ करत]; खाशत पूर्वता [अहेन्द्र(भक् मुद्धाविक हम--) मर्कार्यविकातकम मनरे रेशन जाणा, नार् 🕹 जालके होतान जाना. जान छारात जाना (সন্তান), চকু মামুৰ সম্প্ৰত্ন ক্ৰেন্ডাৰ্ডাৰ ছানা মমুদ্ৰসম্পাদিও বিভ ्रविद्योक्तने कतिया पारकः ; अवरनिष्टियः छाराव रेवव जन्नायः, कावनः क्षवरनिक्राप्तत मादारगारे देशव मन्नादश्व छष् क्षावन क्षित्रा वारक : देशव (कारे कर्ष (कर्षनाथन), (कन ना, (पर पातारे कर्ष मण्लावन

করিয়া থাকে। সেই এই বজা হইতেছে পাঙ্জ; অর্থ মন: ও চন্দু: প্রভৃতি পদার্থে নিশার, বজার পশুও পাঙ্জ, বজারর পুরুষও পাঙ্জে; অধিক কি, এই বাহা কিছু, তৎসমস্তই পাঙ্জে (মন: প্রভৃতি পকাবরবসম্পর); বে বাজি এই পাঙ্জে ভম্ব জানেন, তিনি ইহার সমস্তই প্রাপ্ত হন । ৫৪ । ১৭ ।

ইভি প্ৰথমাধ্যায়ে চতুৰ্বত্ৰাহ্মণব্যাৰা। । ৪ ।

শাক্ষেক্সভাল্যান্ লাবৈবেষর লানাং লাবৈব—
বালাবিকাইবিষান্ করি করপনংবালনগণে বলা লব্রে প্রাক্ত করিবলাং
লাগেলাভিনীরতে; ভলাগান্তন: পূর্বপূষ্ঠ কামানান লাগাবিকের করিবলা
নানাং; স এবক লানাং—লাগেলেবলাবীলক্তাবিদ্যাবানেক এবানাং।
লাভাবিকা৷ বালান কর্ডাগিকারকজিগাকনাম্বকলাথারোপলকবলা
হবিদ্যাবাননগা বালিভ: সং অকামংত কামিতবান্। কর্বপূণ লাগা কর্মাধিকারবেল্লুড়া, বে মন কর্ডু: সাং; ভগা বিনা লহমনধিকত এব কর্মাণ; লতঃ
কর্মাধিকারসম্পাদ্ধে ভবেজ্ঞালা; অবাবং প্রশাবিকারসম্পাদ্ধে বিবাহন কর্মাধিকার
পানার; অব বিত্তং বে সাং—কর্মাধিনাং প্রাধিকারশন্ত বালান্ প্রাপ্ত লাগিকারশানান কর্মাণ, বেনাংবন্ধা ভূচা দেবাদানাং লোকান্ প্রাপ্ত লাগিকারশানান কর্মাণ, ভবেজার হাল্যানিক পূর্ববিত্তপর্বাধিসাধনানি। >

এতাবান্ বৈ কাম এতাব্যিবরপং ছিল ইভার্থ: এতাবানের হি কাম্যিতবা। বিষয়:—বহুত পারাপুশ্রবিত্তকর্মাণি সাধনণক্ষণৈবণা, লোকাক এয়:—মনুত্তপোকঃ পিতৃপোকো দেবলোক ইভি—কলভূতাঃ সাধনৈব-পারাক্তাভাঃ; ভর্মা হি পারাপুশ্রবিভক্ষণক্ষণ। সাধনৈবণা: তত্মাৎ সা একৈব এবণা বা লোকেবণা; শ একৈব সভী এবণা সাধনাপেকেভি বিবা; অভেহবার্য্যভূতি ভততে হেতে এবণে এবং ইতি। ২

ক্লাৰ্বথাৎ স্বাঃৰত লোকেবা অৰ্থান্তা উজৈবৈতি—এতাবাৰ্ বৈ এতাবানেৰ কাম ইতাব্যিয়তে। ভোজনেইতিহিতে ভৃত্তিন হৈ প্ৰণতিবেহা, তথ্যতাহোজনত। তে এতে এবনে সাধাসাধননকৰে কামঃ, বেন প্ৰস্কোহবিহাৰ্ অৱল এব কোল-গাঃবহাজানং বেইছতি—কপ্যাৰ্থ এবাজানং প্ৰশিক্ষৰ বহিছু বীজুতো ন বং লোকং প্ৰতিজ্ঞানতি। তথা চ তৈতিগাঁৱকৈ —"অগ্নিয়ুছো হৈব গুৰুতান্তঃ বং লোকং ন প্ৰতিজ্ঞান্তি" ইতি। ৩ स्थः पूमरक्षांच्यववादीरक कावावाय, जनववाद जनका दि कावा ६—
हेरकाकशानका रवक्षाय—क्षांच म हेक्य्-इन—हेक्याणि, जकः चत्रांच कण-गावमनक्षांच कृतः जविककृतः म विरावध म गावकः । म दि (गारक कन-गावम-वाकिक्षिः वृद्धेवपृष्ठेः वा मक्ष्यायकि । मक्ष्याविवस्या दि कावः, कण टेडक्याकिरहरक्षाकावाद् कृतः वक्ष्यंच—क्ष्याविवस्य देव काव हेकि । क्षक्ष्यः क्षयकि—वृद्धेर्वयमृद्धेर्यः वा गावागावमनक्षयविकाद्धः व्यक्ष्याविकादः विवत्रम् क्षयावतः कावः ; जरकाक्ष्याविक्षय गुल्वावविकादः ।

ব্যাবেণব্যিকা আন্ত্ৰনামী পূৰ্বাং কাষ্যামান, তথা পূৰ্বতল্যেছিল। এবা পোকবিজিঃ; প্ৰজাপতেকৈবংঘৰ সৰ্ব থাসীৎ—সোহবিংহুবিজ্ঞঃ।ডজঃ কাষ-সৰ্ক্ত একাকান্ত্ৰমানঃ পত্তুপ্ৰাতাঃ 'স্থাইনজ্ঞং, তাং স্থত্বং, জজঃ সৰ্বোহ্ছমানীবিভি হাজস্ব; তথাং তৎস্থাই এতহি এডবিপ্লাপ কালে একাকী সৰ্ব প্ৰাক্ষাভিজ্ঞাতঃ কাষ্যতে—কাষা যে তাং অৰ প্ৰকাণ্ডেঃ; অৰ বিজং যে তাং, অৰ কৰ্ম কুলীয়—ইত্যুকাৰ্যং বাকান্। সং—এবং কাষ্যামানঃ সম্পাদয়ক কাষ্যামান, বাবং সঃ এডেবাং মধোজানাং কাষ্যামানং সম্পাদয়ক কাষ্যামান, বাবং সঃ এডেবাং মধোজানাং কাষ্যামানং বছতে; পারিশেলাং সম্বানেইবতান্ সম্পাদ্যতি বনা, না জল্প কুংগ্রাং ব

বলা তুন শক্তেতি কংগতাং সম্পাদ্দিকুন্ তলা অসঃ কংগছসম্পাদনান্ত্ৰ-ভাষা তসা অকংগছিলানিন: কংগতেরখেবং তবতি। কংগ্
আরং কার্যকরণসম্পাত: প্রবিচ্ছাতে—তার বনোহস্ত্তি বি ইতরং সর্বাং
কার্যকরণভাতবিতি বনঃ প্রবানখালাছেব আন্তঃ,—বলা জাহাদীনাং কুটুখপ্রিরান্তের, ক্ষকারিখাজালাখিচভুইসসা; এবনিবাপি বন আন্তঃ পরিকর্মতে কংগতারৈ। তলা বাক্ জাহা, বনোহস্ত্তিখসাবাভাষাচঃ । বালিতি
ক্ষতোদনাদিসকলো বনসা প্রোত্তরাহেশ গৃহতেহববার্যতে প্রস্কৃতিত ক্রেলা
ক্ষানের বাক্ । ৩

ভাতাক বাৰ্যসাভাং কারাণতিস্থানীয়া চাং প্রশ্নতে প্রাণঃ কর্পার্থ—
ইতি লাণঃ প্রকেব। তল প্রাণ্ডেইাদিশকণং কর্প চজুত্ব ইবিভসাধার
ভবজীতি চজুত্ব প্রিবং বিভব। তৎ বিবিধং বিভং—বাহ্বস্থ ইভয়ক্ত; অভো
বিশিক্ষী ইভয়বিভনিয়ন্তার্থং বাহ্বস্থিতি। প্রাণি বি বহুবাস্থভি বিভং
চকুত্র বিং কর্পাধ্যম্ভ, তলাৎ ভৎয়ানীয়ন্ত্র, তেন স্বভাকজুর্বাহ্রমং বিভব্।

চক্ষা হি ষ্যাৎ ভ্যাপ্তৰং বিস্তং বিশ্বভে প্ৰাৱাণগভত ইভাৰ্য:। কিং পুনৱিভয়বিভাপ প্ৰোত্তং হৈনস্—বেশবিষয়ভাবিজ্ঞানসা, বিজ্ঞানং হৈনং বিভাপ; ভবিষ শ্লোত্তবেৰ সম্পতিবিষয়পু: কথাও প্ৰোত্তেশ হি স্থাৎ ভবৈষয় বিভঃ বিজ্ঞানং পুংশাভ; অতঃ শ্লোত্তামীনভাবিজ্ঞানসা শ্লোত্তংয় ভবিভি । ৭

কিং পুনরেভৈরাছাখিবিতাতৈথিক নির্মন্তাং কর্ম ইছাচাতে—
আবৈব—আছেতি বরীরস্চাতে। কবং পুনরাছা কর্মবারঃ ? অসা
কর্মবান্তাং। কবং কর্মবেত্রস্ ? আছন। তি পরীরেপ বতঃ কর্ম
করোতি তদা অভংগবাতিযানিনং এবং কংগতা দশ্যা—বর্ধা বাহা ভাষা দসক্ষণা, এবস্ । তথাং দ এব পাঙ্ভাং প্রতিনির্ভাঃ পাঙ্ভাং বলঃ
দর্শনিষাল্পর্ভাহকরিবাছিল। ৮

कथर भूमतमः भक्षप्रमाधिकारतम सक्षत्रम् १ छेठारत स्वाधारहार्शन् स्वः भक्षप्रकारामः, म ठ भक्षः भूकष्ण भाक्ष्ण अन, वर्षाक्षण्यस्वाधिभक्षरतामारः, जनाह---भात्रकः भक्षपिकार्षिः, भात्रकः भूकषः भक्षप्रकारतामा निर्मातः भूकपरमाधि भूषक्षप्रकारताम् कर्षानामानि स्वाधार्षिक स्वाधार्य स्वाधार्य स्वाधार्षिक स्वाधार्य स्वाधार्षिक स्वाधार्षिक स्वाधार्षिक स्वाधार्य स्वाधार

रेंडि क्षयमानामा हरूर्वः बायनम् ॥ ॥ ॥

টীক্রা। এবং ভাংগগর্ভা প্রভাকষাদার পদাবি ব্যাকরোভ—আইজ্যেরেন্ড্রা-দিসা। বর্গী বিষয়ভোভকো ব্যৱহারীতি বাবং। কবং ভঙ্গি বেছভাবে ভঙ্ক ভাবিত্যশি ভাবিত্যাশভাহ—জনমানীন্তি। সশবং বাহিন্দ্রভূত্বধাকাষাদাবিত্তং ব্যাহটে – আভাবিক্রোভি।

কাৰনাথকার: প্ররপ্তাক প্রকটর ি—ক্রপ্রামিতি। কর্পাধিকারবৈদ্বাই ভজা: নাবরতি—ক্রেন্তাতি। প্রবাধ প্রতি কার্যার বেলুক্তোভাকেরবর্তা। প্রভার বাসুব-বিভারতানবন্ধালের ভিত্তীয়েছিবনবঃ। ভৃত্তীয়ক বিভান্ত কর্মানুষ্ঠানবেলুক্তিবক্তরেতি বিভান্য। কর্মানুষ্ঠানকল্যার—ব্যেক্সভি।>

 জোকৈবৰ্ণাং পৱিশিশন্ত—জন্মৰ্থা স্থীতি। তথং ভবি নাথবৈৰংণাভিভিভাগৰভাব— জৈকৈকেজি। এভেন বাভাগেবেংগান্তভবিভবভীভাব—আক্ত ইণ্ডি।২

নাধনবৎ ক্ষাবশি কাষধানং তেৎ, কথং ভবি ক্ষতা। নাধনবান্ত্ৰখিতভালাববিভিত্ত, ভ্ৰাহ—ক্ষ্যকাৰিত্ৰ ক্ষিত্ৰ । উত্তে নাধৰে নাধানাবিক্ষিত্ৰান্ত দুইাভনাহ —ক্ষেত্ৰজন ইন্তি। নাধনোকে নাধানাবিভ্তিতভালানিতি অভান্তভ্ৰাবেংশি ক্ষমেবৰণতে ক্ষমেবিভ্তা নাধানাবিভ্তিতভালানিতি অভান্তভ্ৰাবেংশি ক্ষমেবৰণতে ক্ষমেবিভ্তা নাধানাবিভ্তিতভালানিত তথ্য ক্ষমিবিভ্তা নাধানিতভালানিত তথ্য ক্ষমিবিভ্তা নাধানিতভালানিত তথ্য ক্ষমিবিভ্তা ক্ষমিবিভ্তা ক্ষমিবিভ্তা বিভাগিত ক্ষমিবিভ্তা ক্ষমেবিভ্তা ক্ষমিবিভ্তা ক্ষমেবিভ্তা ক্ষমেবিভ্তা ক্ষমিবিভ্তা ক্ষমেবিভ্তা ক

বাকাশ্বরেশাশা বাচটে —ক্ষথামিত্যা দিনা। তথাবেতাবন্ধবাবীতে কোবিতি পেবা:। উভাবেবার্থ নোক্টবেটডা পাইছতি—ন জ্যাতি। সভবাভবাতাবেংশি কাবন্ধিবাভবা সাহিত্যাপভ্যাব—লক্ষ্যেন্ত। এতবাভিবেতৰ সাবাসাধনাতি-তেতেপেতি বাবং। তথাব বৈহাণ কাবন্ধিবাভিজতেহতি প্রাথমান এত দুক্তমিতি। কাবনান্ধবাং সাবাসাধনভ্যাক ভাবনাত্রহাং সর্বাচে পুরর্বভাই বাবামাধনভ্যাক ভাবনাত্রহাং সর্বাচে পুরর্বভাইবাং ভাত্তা পর্যাক্ত লাভিজ্যাহিশ্যেবাহেশ্যেবাছা ব্যাবার সংভাবাদ্ধক: কৃষ্য কাব্যিভবাত্রহাণ কাবনুভিজ্য প্রাথমান্ধর্মিত বিশ্বত্যাহিশ্যেবাছার্মিত। ব্যাবার সংভাবাদ্ধক: কৃষ্য কাব্যিভবাত্রহাণ ক্ষমান্ধ্রিভার্মিত। ব্যাবার সংভাবাদ্ধক: কৃষ্য কাব্যিভবাত্রহাণ ক্ষমান্ধ্রিভার্মিত। ব্যাবার সংভাবাদ্ধক: কৃষ্য কাব্যিভবাত্রহাণ ক্ষমান্ধ্রিভার্মিত। ব্যাবার সংভাবাদ্ধক ক্ষমান্ধ্রান্ধরিভার্মিত। ব্যাবার সংভাবাদ্ধক ক্ষমান্ধ্রান্ধরান্ধ্যান্ধর্মিত ব্যাবাদ্ধিক ক্ষমান্ধ্যান্ধরান্ধ্যান্ধরান্ধ্যান্ধরান্ধ্যা

ভশাবশীজানি বাচেরে—মন্দ্রানিতি। আছতবিতিবের ন বৃত্পুর্কাগরিশানিকং
বৃত্তনিত্যাপ্রভাব-প্রজাপত্তেশ্রুতি। তর বেতুবেন প্র্যোজং লাবরতি—জোঞ্জি-ভেজ্তানিনে। তরৈর কার্যানিকস্বস্থানং প্রয়তি—জন্মানিতি। স বাব-নিত্যানিবাকামানার বাচেরে—জ প্রসমিতি। পূর্কাং স বংবা বাকাপ্রবর্ণনির্বাং। বিভীব্দ ব্যাব্যান্তব্যপাতীকারিবেরং। ক্রীন্ডবর্ধবাহ—প্যানিশ্রেরানিতি। ব

ততে। কৃৎস্থতেভেভেচ্ছবভার্যা ব্যাক্রোভি – মন্দ্রেভানিনা। অক্ৎস্থাভিনানিনাে বিক্তা: কৃৎস্থানিভানে —ক্ষপ্রমিতি। বিরোধনভানে কাও লাবিং বিভাগ:
নর্বাভি—অন্নমিতি। বিভাগে প্রভাভ বনসাে বজনান্তকরনাবাং নিবিভান তিত্রাতি।
উত্তরের বানভি – মন্থাতি। তথা বনসাে বজনাব্যকরনাবনিভার্থ:। বাভি ভারাভক্ষরাভাং বিবিভাগ-মন্ ইতি। বাভে বনোজ্বভিতং স্কপ্তবনপুরংসভা ভোলভি—
বালিভীতি। ৬

বাণভ বাজাৰ কলনাং সাধ্যতি—ভাজাং চেন্ডি। কৰা পুৰন্তত্ব ছিবং বিভ-বিজ্যুক্ত, প্ৰবিশ্বপানি ভবেজানভাহ—ভত্ত্ৰভি। আলাধি হবে সিংখ সভীতি বাৰং। আছিপবেস ভালভেটা সুক্তে। সান্ত্ৰনিতি বিশেষণভাৰ্যকাং সম্ব্যতে—ভজি-বিশ্বমিভি। সভাতি চকুৰো ৰাজ্যবিভাষা প্ৰপ্ৰভাতি—প্ৰাক্তি। ভংগদপ্ৰামুট-বেৰাৰ্থ্য ব্যাহটে—ভ্ৰেম অক্ষান্তাভিভি। ভংগানীয়ং বাজ্যবিভাগান্ত। ব্যাহ্বেশ বিশ্বমেন্তাভং। স্বভাবৰ সাধ্যতি—ভক্ষা শীক্তি। ভক্ষাভকুৰ্যাভ্ৰাং বিভাবিতি। यानाकापृत्रवयुक्तवानावृगागः । क्यान्यः श्रूमितिष्ठि । व्यान्यः – स्मर्थाकः । व्य रस्युगान—कन्यानिकाणियाः । १

ব্যবানাদিনিবার্তা। কর্ম প্রবশ্র্যাকং বিশ্ববৃদ্ধি—ক্রিম পুন্দ্রিক্ত্যাদিনা। ইবেছি স্পাধিপজাভিঃ। পরীবৃদ্ধ কর্মবৃদ্ধিতি বিভিন্ন পরিবৃদ্ধি—ক্রেথা পুন্দিরিতি। অভেডি ব্যবহানোক্রে। হিন্দার্থো বভ ইতান্দ্রতে। ভড়ো সুংগ্রভেড়াকর্পন্রের্ডি— ক্রেক্তি। ইক্তরীভাঃ সুংগ্রে বিভে ক্ষিত্রাধ—ক্রম্যাদিন্তি। ৮

ৰভেতি দৰ্শবোভিঃ। প্ৰো: পুতৰত চ পাঙ্ভবং ভজ্ঞবাৰ্থ: পুতৰত প্ৰভাৱি-পোৱাৰ পূৰ্য এবনমুক্তবিভাগেতান – স্পান্ত আৰু সীতি। ম ভেগনং প্ৰপুত্ৰহাটোৰে পাঙ্ভবং, কিং ভূ সৰ্বভেতাল – কিং সহস্কৃতি। ভলাগাগাভিতত কৰ্মত বজ্ঞবং প্ৰবোধানবিক্তবিভি পোৱা। মুল্ডিকনং বাংক্তোভি — এক্সিডিঃ বাাবাভাবি বাংকাৰ্থ্যমন্ত্ৰিক ক্ষান্ত ক্ষান্তিক সাধাং সাধানং চ পাঙ্ভবং স্ত্ৰাব্যান ভাষা ভলাবংব্যানুসক্ষান্ত ভগাবিধেৰ ক্ষান্ত ক্ষান্তিকাৰ্থাঃ ১০০ ৪ ১০

हेकि पुरुवाश्याककावामिकादार अथवाबाद्य प्रकृषेर बाक्ष्यव् । ১०।

ভাল্যান্দ্রাদ্ শাদ্রে ইবর আনীং ইত্যাদি। আছাই—
বভার্নির অবিভানশার বেবেলিরানি-নংগাতবিনিই নামনাদি বর্ণই অব্রে—
পদ্মীর্রুবনের পূর্বে আল্লা নাবে অভিবিত গ্রহা থাকে: অতএব বৃথিতে হইবে
বে, আল্লা দইতে পৃথক্তুত কামানান অর্থাৎ প্রার্থনাবোদ্যা ভারাদি অপর
কোনও ভিন্ন পদার্থ ছিল না; কেনল এক বার তিনিই ছিলেন—আ্লাদি-কামনার
বীত্তরপ-অবিদ্যাসম্পন্ন একই বস্ত ছিল। বাহা থাবা কর্তৃত্বপ্রভৃতি ভারকত্ব,
ক্রিয়া ও ক্রিয়াক্লের আবোল হইয়া থাকে, সেই বাতাবিক অবিভানভাৱে
বালিও বর্থাৎ বৃঢ়তার অবিভান্যভাবাণন্ন তিনি কামনা করিয়াছিলেন,—
কি প্রকার প্রথমি কর্তা, আমার কর্ত্তাধিকারপ্রযোজক আন্না (পদ্ম)
ইউক ; ভারার অভাবে কোন বৈধ কর্প্তেই আনায় অধিকার নাই; অভ্যন্তর ক্রিবিকার লাভার্থ আনার করি। ইউক ; (১) আনি ভারাতে স্কান কলে
অনিব, অর্থাৎ আ'নই স্বান্তবেল উৎপন্ন হইব ; অত্যণন্ন আনার বিত্ত—কর্প্ত

^()) छारमदी "वानावारी न छिटिर छू क्यांत्रशी दिवा । यांक्टवर दिया छिटेन गृदः नःछात्रवर छि:" अहे माञ्चयाक्षाकृतादः काना याव १४. वक्ष्यादः व्यवस्क दिवा अक्ष्ठ व्यवस्क व्यवस्क अक्ष्य अक्ष्य कि क्ष्यां व्यवस्थि । उत्तरमा १४१ यहि व्यवस्था नयस व्यवीक स्टेशा मन व्यवस्था नयस व्यवीक स्टेशा मन व्यवस्था नयस व्यवकारमा नयस व्यवकारमा नयस व्यवस्था नयस्था नयस्य नयस्था नयस्या नयस्था नयस्था नयस्था नयस्था नयस्था नयस्था नयस्था नयस्था नयस्था

বিশাবনের উপারভূত প্রাধি পশু বউক, ব্যবস্থ আমি অভ্যান্ত (প্রাধি)
৬ মুক্তির উপারবরণ কর্ম করিব, হাজা বাবা আমি কর্মবিষ্ট বইলা ক্ষেত্রা
অভ্যান্তর লোক (বাসস্থান) লাভ করিতে,পারি, আমি সেই কর্ম করিব, এবং
পুত্র, বিত্ত প্রাধিকাতের উপার বরুপ কাষা কর্মেরও অন্তর্জান করিব। ১

কাৰ পৰ্বাৎ প্ৰাৰ্থনীয় বিষয় এচাৰ্থই এইপৰ্যান্তই পৰ্বাৎ এ স্বশ্বত বিষয়ই পদ্মিন্তিয় বা সীবাৰতঃ এই পদ্মিনাণ বিষয়ই কাৰ্যনিত্ব। বা প্ৰাৰ্থনীয়—জাহা, পুত্ৰ বিভ এবং বিজ্ঞাবা কৰ, সাধ্যাত্মক এই ত্ৰিবিধ একা (কাৰ্যনা), এবং পূৰ্বোক্ত সাৰ্থনিবদায় কলবন্ত্ৰপ ত্ৰিবিধ লোক—বস্থালোক, পিতৃলোক ও কেবলোক; এই ত্ৰিবিধ লোক পান্তিই জাৱা, পুত্ৰ, বিহু ও কৰ্মন্ত্ৰপ সাৰ্থনিবদায় উদ্দেশ্য; অভএব সেই বে লোকৈববা। এক্ষাত্ৰ ভাষাই প্ৰকৃত এববা; এবা একই বটে, কেবল সাধ্য বা সিন্ধিয় উপায়ান্ত্ৰসাহেই ভাষাৰ কৈবিধা কল্পিড হইয়া বাকে যাত্ৰ; এই লক্তই পদ্মেক্ষাত্ৰৰ কল্পিয়া বলিবেন বে, 'এই উত্তয় এবলাই (এক)' ইভি।

जात्खवाखरे कनार्व, वर्षार करनात्मरनारे नार्वावख रहेवा थार :

मूखतार मारिक्वनी करनकरन केळहे एरेवार ; काळहे ज्ववादन कवा

स्वेरलाइ (व, 'काम এह नविद्यानहे वर्षे'; (काकरनव कना विनास स्वम नृषक्

कवित्र जाव कृतिह कथा विनास वव ना: कावन, कृतिमाणहे (काळरनव

करमा (क्यान ध्वारनक नृत्याना क विदेश्यनाव कथा वशास्त्रहे

(मारिक्वनाव वर्षाक वृत्वित्रा नहेरा कहेरा :) नावा क नावमाचक

वहे केळव अकाव अवनाहे काव, ज्वित्रान नृक्ष्य हेरा श्वा (अवित्रह

स्वेत्राहे (यन ज्वान शर्व (कानकाव कोर्तेष्ठ छाव जानमारक (वित्रह

(ज्वावह) कवित्रा वारक—रक्ष्य कर्ष्यार्त वर्षामित्वन कवक विद्यु वी

हेरेवा च-रनक जावारक कारम मा। किविवीव अधिरूक्त वहेन्दन कथाहै

⁽३) कारनश-जनटक किन श्रकार कामना (क्षितिक नात्रका पांत्र, -- वक मूरेश्वना, विक्रीय विदेखना, कृतीय (मारेक्नना: -- मूक्ष्मानना, विक्रणायना अन्य श्रेष्टिक क्ष्मालकार्यका। अवादन क्षण्डित प्रत्या (क्षणायना किर्माणना किर्माणना किर्माणना किर्माणना किर्माणना किर्माणना किर्माणना विक्राणना प्रत्या क्षणायना विक्राणना प्रत्या क्षणायना व्यवस्थान व्यवस्यान व्यवस्थान व्यवस्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्य

चाह्य—'चित्र वादा विरमादिक अवर पूर्व वादा क्रांच वरेता [चित्रवात् पूक्त } -चाताक व्यविक वाद ना' देकि। ०

্লাছা, জিলাসা করি), কামনার বিবর ব্যন জনত, তথন কামনাও
নিক্তরই জনত ; প্রভাগে এবশার (কামের) 'এতাবছ' (নিজিট পরিমাণ)
অন্যারিত বইতেতে কি প্রকারে ? এইরপ আপতা করিরা তাবার বেতৃ
বলিতেছেন—বেংহতু, ক্ষো করিলেও ইবার জনিক—কন ও সাধনাম্বক
কাম্যে অবিকত্তর কোন কাম লাভ করিতে পারে না ; কেন না, করতে
নিক্তর বা পাওলোঁ কক বে কোমপ্রকার লব্বা (প্রাপা) বিবর আছে, তাহার
কিছুই কল ও সাধনের অভিবিক্ত নবে; কাম হইতে লব্বা কল ও
সাধন বাতাত কোন বিবরের বধন অভিয়ত নাই, তথন "এতাবানু বৈ
কামা" এইরপ নির্ভারণ করা মুক্তিমুক্তই বইরাতে। এই কথা বনা
ভটতেছে বে, অবিধান পুরুবের অবিকারজুক্ত সাধা (কন) ও সাধনাজ্বাক বে, বিবিধ এবণা (কামনা), তাহার নাম কাম ; ইবার প্রয়োজন
ন্ত্রিকও হইতে পারে, পারগোলিকও হইতে পারে ; ইবার বার্ত্তর ভাষনা ত্যার করিতে হইবে আর্থাৎ উক্ত বিবধ
কামনা ত্যার করিতে ব্রবেঃ ধ

হেছে, এবংবৰ আন্তর্গা প্রবাহণী প্রবাহণী আবিহান পূক্ষ কাষনা করিছা-ছিলেন, তৎপূর্ববর্তী পূক্ষণ গেইলপই [করিছাছিলেন]; কারণ, ইবাই হইছেছে লোকওজার উপার বা বাবছা; পূর্বোক্ত প্রকাশতর স্থান ট্রিক এইরপই হইছাছিল; ববা—তিন পরিবাহা বা সজ্ঞান বলতঃ তাঁও হইলেন; তাহার পর কার্যুক্ত বা ভোগাতিলাবা হইয়া একাকী অবহায় প্রীতিলাক করিতে না পারিয়া পেই প্রশ্রীত অপনয়নের ইন্দার দ্বী পাইতে ইন্দা করিলেন; সেই দ্রীতে উপনৃত হইলেন; তাহা হইজেই এই প্রাই হইল; এ কবা পূর্বেই উক্ত হইয়াছে। সেই করেবেই তাহার স্পাই এই রগতে এবনক—বর্জনান সবয়েও হারপরিপ্রবের পূর্বে একাকী বাংকলা গোকে কামনা করিয়া বাকে—'আনার লামা হউক, আনি সন্তানরূপে কন্মির, আনার বিত্র হউক, আনি বর্ষ-কর্মা করিব', ইয়ার ক্ষর্য পূর্বেই উক্ত হইয়াছে। সেই পূক্ষা এইরপ কামনা করিয়া এবং কায়া-প্রকৃতি সম্ভ কায়া বিষয় সম্পাহন কারতে বাইয়া বক্ষণ উক্ত আরাধির এক একটা বিষয়ও প্রার্থ না বন্ধ, তক্তপ সোধানাকে অনুন্ধই—'আনি অনুন্ধুণ আছি' এইরপই ব্যন্ধ করিয়া বাকে;

देश रहेरण्डे नृषा नाहेरण्डः (व. वयम तम देशाः मयण्यनि मन्नाशम कविरण भारत, ज्वमदे जाहात भूवंजा हत । र

यसर्व विद्वार वात इरवण (पूर्वण) मन्नावन कतिर मर्व दत्र ना. तरे व्यवहार छाशंद पूर्वण-मन्नावया विश्वर क्रिक्षण नाण वरेता थारक ; कि श्रकार ह [छाशंद पूर्वण मन्नावया वरेता थारक ; कि श्रकार ह [छाशंद पूर्वण मन्नावया वर्ष क्रिक्षण क्रिक्ण क्रिक्षण क्र

আয়া ও পতিয়ানীয় সেই বাক্ ও যন গাঙা কৰেও অত প্ৰাণ প্ৰেরিছ ছইয়া বাকে; এই অভ প্ৰাণ ছইডেছে প্ৰভাহানীয়; সেই প্ৰাণেৰ ভেটা যা বাগোৱান্তক কৰ্ম গাধাওপতঃ চক্ষু-প্ৰাক্ষ বিভ গাৱা নিশানিত হইগা বাকে; এই অভ চক্ষু হইডেছে মানুৰ বিভ; ভাৰা আবাৰ বিবিধ,—বানুৰ-সৰ্বাও ভাৱান্ত; এই অভ অপত্ৰ বিভেন্ন নিৰেধাৰ্থ বিশেষ কৰিয়া বলিভেছেন—'ৰানুৰ বিভ' ইতি; কাৰণ, মঞ্জ্বসৰ্বা প্ৰাণি বিভ হইডেহে চক্ষ্মান্ত এবং কৰ্মনিশান্তনের উপায়বন্ধণ; সেই বেডু প্ৰাণি বিভেন্ন স্থিতে সম্বন্ধ বাকায় চক্ষু হইডেছে—প্ৰাণিয়ানপাতী মানুৰ বিভ; কাৰণ, চক্ষুত্ৰ সাহায়োট মনুন্ধ-বিভ প্ৰাণি পত্ৰ উপলব্ধি হইয়া বাকে ভাল, অপত্ৰ বিভাটি কি স্থানেত ইউডেছে—বৈণ বিভ; কাৰণ, বেবভাই প্ৰধানতঃ প্ৰোত্ৰবিজ্ঞানেও বিবান; কাৰণ গুলিকান হটডেছে—বৈণ বিভ। অপতে প্ৰোত্ৰই সম্পান্ত বিশ্বয়ে প্ৰধান; কাৰণ গুলিকান প্ৰোত্ৰাৰীন বলিয়া প্ৰোত্ৰই বৈণ বিভ প্ৰথণ কৰিয়া বাকে; অভএব বেবভা-বিজ্ঞান প্ৰোত্ৰাৰীন বলিয়া প্ৰোত্ৰই সেই বৈণ বিভ প্ৰথণ বিভ। গুলিকান প্ৰোত্ৰাৰীন বলিয়া প্ৰোত্ৰই সেই বৈণ বিভ বাণ কৰিয়া বাকে;

এই আত্মা হুইতে আরম্ভ করিয়া বিত পর্যন্ত বাহা উচ্চ হুইগ, ইহা বারা এবানে কোন্ কর্ম নিপাদন করিতে হুইবে ৷ তাহা বলিতেছেন— আত্মাই—এবানে 'আত্মা' নবে গরীয় অভিহিত হুইতেছে; আত্মা কর্ম- ছানীয় বহু কি প্রকারে ? বেবেড়, এই পারাই কর্মনিপতির বেড়; কর্মনানিপতিরই বা বেড় বর কি প্রকারে ? বেবেড় পারা পরীয় ঘারা কর্ম করিয়া বাকে। বাক্ প্রকাত কায়াবি ঘারা বেরপ ক্ষরতা সম্পাধিত হইবা বাকে, তক্ষণ এই অক্সংস্কাভিযানীয়ও এইপ্রপেই ক্ষরতা সম্পাধিত হার বাকে, ইবিতেছে—কর্মানুর্বিতি প্রবেশ্ব কেবল জ্ঞানবাত্ত সম্পাধিত পাঙ্ক —
উক্ত পাঁচটি বিষয় ঘারা সম্পাধিত—শাঙ্কে ব্যা ৮

ভাল কৰা, কেবল পক্ষমশালন বাবাই ইয়ায় বজৰ হইল কি প্ৰকাৰে গুইা, বলা হইডেছে—বেহেডু, লোক প্ৰসিদ্ধ বজৰ, বে পক্ত ও পূক্ৰৰ বাবা নিপালন করিতে হয়, সেই পক্ত ও পূক্ৰৰ ত নিক্ছই পাঙ্জ ; কাবৰ, উক্ত বনঃপ্ৰকৃতি লাচন্তি পলাৰ্থন সভিত ভাহাৰেও সম্ভ আছে। ভাহাই বলিয়া বিভেছেন বে, গৰাধি পশুওও পাঙ্জ (উক্ত প্ৰায়েশ্যমান) এবং পূক্ৰও পাঙ্জ; পূক্ৰে পশুৰুৰও পাঙ্জ (উক্ত প্ৰায়েশ্যমান) এবং পূক্ৰও পাঙ্জ; পূক্ৰে পশুৰুৰও বাহিলেও ভাহাৰ কৰাধি লাভ্ৰম বিশেষৰ আছে; এই কন্ত পূৰ্যক্তাৰে পূক্ৰের উল্লেখ করা ঘইনাছে। অধিক কি, কৰ্মনাৰৰ ও ক্ষকল স্বৰ্থই—এই বাহা কিছু আছে, ভংস্যকই পাঙ্জ। বে ব্যক্তি এইলে লালে—আপনাতে এই পাঙ্ক বন্ধ সম্পাদন করে, সে মুখ্যমান সম্প্র অগ্যকেই পাড্যান্ত্ৰলে লাভ করে ৪ ৫০ ৪ ২৭ ৪

कें अवनावारित क्लूब आबर्यन कांबाक्नान कांबा

भक्षपर खामानम्।

বং সপ্তান্তানি মেধর। তপসাজনরং পিতা। একমক্ত সাধারণং বে দেবানভাজরং ত্রীণ্যাত্মনেংকুরুত পশুভা একং প্রায়ছং তত্মিন্ সর্বাং প্রতিষ্ঠিতং যচ্চ প্রাণিতি যচ্চ ন। কত্মান্তানি ন ক্ষীরস্তেহস্তমানানি সর্বাদা যো বৈতামক্ষিতিং বেদ সোহন-মন্তি প্রতীকেন। স দেবানপিগছেতি স উর্জন্মপদ্ধীবতীতি স্লোকাঃ ৪ ৫৫ ৪ ১ ৪

সন্ত্রনাথাঁ। পিতা অগৎকারণৰ্ ঈশ্বঃ \ (মধ্যা (জানেন \ তপ্সা । কর্ম্মণা) বং (বানি সপ্ত অরানি (জীবতোগানি) অজনরং; অস্ত (অরগ্রহণ প্রকাশ) একং (অরং) সাধারণং (সর্বভোগাং), বে (অরে) কেবান্ অভালরং (প্রাণিভবান্), এণি (অরানি) আয়নে (বিশ্বে । অক্কৃত । কৃতবান্), একং (অরং) পশুলাঃ প্রাবহুৎ (গ্রেবান্); তিমিন্ (এক স্থিন্ অরে) সর্বাং প্রতিষ্ঠিতং স্থিতং)। [কিং ভৎ সর্বান্) ইত্যাহ—] বং চ (অপি) প্রাণিতি (প্রাণান্ বারর্থিত), বং চ ন (প্রাণান্ ন বারর্থিত), তানি (অরানি) সর্বাণা অভ্যানানি (ভোজাযানানি) [অপি] কন্মাৎ (বেতোঃ) ন কার্যন্তে (ন ক্রং বাভি) ? বে৷ বা এতাং অক্তিতং (অরানামকরং) বেদ (আনাভি), সঃ (বেতা) প্রতীকেন (ক্রপানাবিশেবেণ) অরং অরি (ভক্গভি); সঃ বেবান্ অপোভি (প্রায়োভি), সঃ উর্জ্যং উৎকর্ষং) উপজীবভি, ইভি (অন্মিন্ বিষয়ে) (রাজাঃ (বক্সাণাণা নলাঃ) [স্তীতার্বঃ] ।।৫৫।।১।।

অনুসাকুতাদে। পিতা সর্বাৎ আদিকর্তা, মেধা ও ওপস্তা বারা প্রথমে যে সপ্তবিধ অন্তের স্থান্তি করিয়াছিলেন, তাহার একটা অর সর্বাসাধারণের অস্ত দিরাছিলেন, তুইটা অর দেবগণের অস্ত দিয়াছিলেন, ভিনটা অর নিজের ভোগ্য করিয়াছিলেন, আর সপ্তগণের উদ্দেশ্যে একটা অর দিয়াছিলেন। বাহার। প্রাণধারণ করে, আর বাহারা করে না, অর্থাৎ বাহারা চেতন ও বাহারা অচেনত, সকলেই সেই অন্তে প্রতিষ্ঠিত, অর্থাৎ অরাজিত। সর্বাধা জীবভক্য হইরাও সেই সমুদ্র করপ্রাপ্ত হর না কেন, যে ব্যক্তি এই অক্সর-রহস্ত জানেন, তিনি অংশ- ক্রেমে অর ভোগ করিরা থাকেন.; তিনি দেবদ লাভ করেন, তিনি ভেজবি-জীবন প্রাপ্ত হন; এ বিষয়ে এই সমস্ত প্লোক অর্থাৎ সংক্ষিপ্তা- থকি মন্ত্র আছে ৪৫৫৪১৪

প্রতিষ্ঠান্ত ক্রিক্তান্ত '—বং সপ্তায়ানি বেবরা। অবিভা প্রভা; তথাবিদান্ অভাং বেবতামুণান্ত—অভােহসাবভাহরম্বাতি; স বর্ণাপ্রবা-ভিষান্য কর্মকর্ত্তরা নিগতো ক্রোত্যানিকর্মতি: কামপ্রস্কৃত্তরা বেবারীবা-বৃণক্র্মন্ সর্কোণ ভ্রানাং লোক ইত্যুক্তর্। ববা চ কর্মজিরেকৈক্ষেন্তর্মন্ত্র বৈরস্তা লোকে। লোকে। লোকে স্টঃ, এববনাবলি ক্রোভানি-পাঙ্ভ কর্মজি: সর্মাণি ভ্রানি সর্মঞ্চ অগবে আয়াভার্যান্ত্রমান্তরত। এবর্ষেই কঃ কর্মজি: সর্মাণি ভ্রানি সর্মঞ্চ অগবে। ভ্রান্তা ভ্রোন্ত্রান্তরা, সর্মাণ কর্মজি কর্মজিলের বিলাপ্রকরণে মধুবিলায়াং কল্যান্তঃ,—সর্মাং সর্মাণ্ডা কর্মজিত আর্থিকরবিজ্ঞানার্থন্ । বনস্তে ক্রেলিয়ানার্থন্য কর্মণা আরক্জামানং কর্ম্বা-কারণ্ডেন সপ্তায়াল্যান্ত।বে, ভ্রোন্তানার্থন্য লাজ্যক্রমান্ত্র বিজ্ঞানার্থন্য কর্মজিলান্ত্র স্বাম্বালান্ত্রমান্ত্

নিকা। বাদশাভ্যব্যতার্থা সম্বৃতিং বহুং বৃহৎ নার্ভাতি—হাই অঞ্চালানীজ্যানিদ্যা। ভরেতাভিঞ্জবাদশোভিঃ। উপারিশ্বিতং তের্থানিভার্থাকার্থানেবান্ত ন সংব্রেতি ভর্ত্থানিভা পূর্মার প্রভাতি বোলনা। লথা অন্ননিভার্ত্যাকার্থানিভি— ল প্রপ্রিমানিভার্ত্যানিভিন্ন ইভি। লাবৈবের্যার আনীবিত্যালার্ত্য সার্থিতি ক্রাম্মন্ত্র ইভি। বৃত্ত্যাভ্যব্রহ্মবর্তালার্ভ্যশেক্তিং প্রভি—হালা চেডি। গৃহিলোলগভন্দ পর্লার্থা কর্মবর্ত্তাভ্যব্রহ্মবর্তালার্ভ্যশেক্ত প্রভাত পর্লার্থানিভিত্তালার্ভ্যার্থান্ অভ্যাব্রেত্যালার্থানিভার্থান নার্থানিভার্তালার ক্রাম্মনিভার্তালার ক্রাম্মনিভার্তালার ক্রাম্মনিভার্তালার ক্রাম্মনিভার্তালার ক্রাম্মনিভার্তালার ক্রাম্মনিভার্তালার ক্রাম্মনিভার্তালার ক্রামনিভার্তালার ক্রামনিভার্তালার ক্রামনিভার্তালার ক্রামনিভার্তালার ক্রামনিভার্তালার ক্রামন্ত্রালার বিশ্বিতালার ক্রামনিভার্তালার ক্রামনিভার্তালার ক্রামনিভার্তালার বিশ্বিতালার ক্রামন্ত্রালার ক্রামনিভার্তালার বিশ্বিত। উল্লেখ্যানিভিত। তালার বালার্বাভিত বালার্বাভিত বেরং। অন্তর্ত্তালার ক্রামন্ত্রালার বিভিত্তালার বিশ্বিত। উল্লেখ্যানার্বিভিত বেরং। অন্তর্ত্তালার বিশ্বিত। তালার্বালিভিত বেরং। অন্তর্ত্তালার ক্রামন্ত্রালিভিত। তের্যালার বিভিত্তালার বিভ্যালার বিভিত্তালার বিভাত্তালার বিভাত্তালার বিভাত্তালার বিভিত্তালার বিভাত্তালার বিভাতালার বিভাত্তালার বিভাত্তালার

916

कारण्यकार जनकरस्यकि सारः। श्रामनस्यकां। सहयरकाश्राकि—द्शास्त्रकाः। विक्रिश्च १८।)।

ভাষ্যানুবাদে। 'বং বস্ত খ্যানি বেগর।" ইত্যাদি। খবিভার कवा वका बहेबारक : छाबारक वना बहेतारक रव, व्याववान शुक्रव 'वावि वक, बनः चानाव छेनाज चन्न' देखाकः त चानाखितिक व्यवकाद छेनामना कवित्रा पारकः वर्गाञ्चमाण्यामा अवः कर्षशावृद्धिः कर्षमिवत ७ कावभाषाम् त्मरे **चिवाम नृक्य हामारि कर्य पाता (१**वमर्गत क्रेनकांत मारम कर्य न्बंपूर्ण्य र्लाभा रहा। नवच क्लबर्स अन् अन्जे कविशा निक्र निक्र कर्य पाता এই লোককে বেশন ভোলাব্ৰংশ সৃষ্টি করিয়াছে, তেখনি তিনি নিজেও আবার পূর্বোক্ত হোমানি পাও ক কথ হার। সময় মৃত ও সময় লগৎ সৃষ্টি করিয়াছেন। बहेडरन वारकारक दीव विका ७ क्वीकृतारव नर्मक्तराठव रक्काल वरहे, क्षाणा वरहे, बनः क्षांच वरहे, कार्वाच वरहे; विषाधकत्वत मध्विषात क्षेत्रस्य (२५ व्यवादि, ६व डाव्यत्) यावदा विनव द्य, कार्यायाज्ञहे कार्यत्य वश्यक्षण ; कावन, ठाश बादा कारेखकप्रकाश्यव प्रविश वहेट भारत । जिनि গাঙ্জ (পঞান্তৰ) হোষাদি কাম্যকৰ্ম ও বিজ্ঞান দ্বারা নাপনার ভোলারপে (च चन्द मृष्टि कविद्याद्यन, त्महे मम्द्र चन्द्र कार्या-काद्य छात्व विकक्त बहेद्र। मध बह नार्य बिकिट ट्रेश शांक : कात्रन, रेशक कोरवत छावा वा खाताई: बहेब्राल विकास क्वाएक किंन तारे का नम्हत निका मात्र क्षित हत। ख्वाकारत मः क्लिन छः क्षेत्र कामपूर ७ जावारमत विभित्राम क्षान कविरक्ष बनिया केल बाकाक्षित हो। इ वर्षाय बन्न प्रमुखात । ११ ।।

যৎ সপ্তান্ত্রনি মেধরা তপদান্তন্ত্রং পিতেতি, মেধরা হি ভপদান্তন্ত্রং পিতা একমক্ত দাধারণনিতীদ্বেবাক্ত ভৎ দাধারণমন্ত্রং যদিদমন্ত্রতা দ্ব এভতুপাক্তেন দ্ব পাপানো ব্যাবস্তত্তি,
মিশ্রেছ হেতৎ।

বে দেবানভাজয়নিতি হতক প্রহতক তন্মা-দেবেভ্যো অ্হনতি চ প্র চ অ্হনত্যথো আহর্দের্শপূর্ণমাসাবিতি। তন্মানেষ্টিবাজুকঃ স্থাৎ, পশুভা একং প্রায়দ্ধনিতি তৎ পরঃ। পরো হেবাথো মনুষ্যাশ্চ পশবশ্চোপঞ্জীবস্তি, তন্মাৎ

व्ययत्यारकाम् - गक्यर व्याचनम् ।

সুষারং জাতং য়তং বৈ বাত্রে প্রতিদেহরন্তি তনং বাসু-ধাপরস্তাধ বংসং জাতমাহরত্পাদ ইতি, ভাষিন্ সর্কাং প্রতি-তিতম্—যচ্চ প্রাণিতি যচ্চ নেতি, পয়সি হীদ্ধ সর্কাং প্রতি-তিতং যচ্চ প্রাণিতি যচ্চ ন

ভদ্যদিদমাতঃ সংবৎসরং পরসা জুহনদপ পুনয় ভা জরতীতি, ন তথা বিভাদযদহরেৰ জুহোতি ভদহঃ পুনয় ভাষপজয়ভাবং বিশ্বান সর্বাহ হি দেৰেভাহিয়ান্তং প্রযক্ষতি।

কুমান্তানি ন কীয়স্তেৎস্থমানানি সর্ব্বদেতি; পুরুষো বা অকিতিঃ, স হীদমন্নং পুনঃ পুনর্জ্জনয়তে।

যে৷ বৈভানকিভিং বেদেতি, পুরুষো বা **অকিভিঃ, স** হালমন্নং ধিয়া ধিয়া জনমতে কর্মভিষ**ি**ছতন কুর্য্যাৎ ক্লীয়েত হ; সোহন্মতি প্রতীকেনেতি, মুধং প্রতীক মুখেনেভাতৎ স দেবানপিগচ্ছতি স উর্জ্জমুপজাবতীতি প্রশহসা ৫৬ ॥ ২ ॥

স্মান নাথ: [মরার্থস ছ্রিজের বাং প্রতি: বর্ষের ভর্ষ্বাহ—
'বং' ইত্যাদি। 'বং সপ্তারানি নেধরা তপসালনরং পিত:-ইতি' ইতি প্রতীকর্।
[অস্তার্যর্থ:—হি-পব্য প্রসিদ্ধিত্ন :] পিতা বেধরা (জানেন) তপসা
(কর্মণা চ) বং অলনরং (স্টেরান্) [সপ্ত অরানি ইতি] হি প্রসিদ্ধা।
'একন্ অস্ত সাধারণন্ ইতি' ইতি; [অস্তার্ম্বর্থ:—] অস্ত (পিতৃঃ) ইবং
(বজ্যাণান্) এব তৎ সাধারণন্ (সর্বভাবাং) অরন্,—বং ইবং (লোকপ্রসিদ্ধানরন্ অরন্) উপাতে (অরভাগণারারণ তর্মতি), সং পাপানুরঃ
(সাধারণন্ অরন্) উপাতে (অরভোগণারারণ তর্মতি), সং পাপানুরঃ
(পাপাৎ) ন বাধিওতে (মৃত্যতে); হি (ব্যাৎ) এতং (অরন্) বিশ্রং
(পূর্ণা-পাপ সম্বিভন্)। 'বে বেবান্ অস্তালর্থ-ইতি' ইতি; [কিং তৎ মরন্?
ইত্যাহ—] হুতং (অর্থা প্রজিপ্তাং) চ, প্রকৃত্য বিষয়েন ভ্রমণি (ব্যাৎ প্রস্থাতা)
(হ্রম্বাচ: ভূম্বন্তি (হোন্য ক্র্মন্তি), প্রভূম্বন্তি (ব্যান্য অর্পরিভি) চ।
অতে আন্তঃ (ক্রমন্তি)—সর্ব-পূর্ণবাসে) (হর্মাণ পূর্ণবাসক্ত বাবে) বে

च्या) देखि ; छचार ((दर्छाः) देविवासूनः (कावावात्रनीनः) व छार (व ভবেং), [অণিভূ বর্ণপূর্বাসপর এব ভাবিতি ভাবঃ]। 'পডভাঃ **ब्यार क्यारक्र-रेजि' रेजि--[किः जारक्या] जर (बकः बहः) नहा** (इकर); हि (यचार) यञ्चाः इ शयस ६ चरता (अधनर) शवः ध्व केश-জীবভি (পিবভি), [বতু অন্তৎ]; তত্মাৎ (হেতো:) কাতং ভূমিউং) क्रुवाचर (विकर) व्यत्य चकर वा (विकरत) व्यक्तित्ववित, धनर वा वक् वानवृत्ति (भाववृत्ति); स्व (छन्दार) कास्य वरमः (निकर) सङ्गावः (न ভূপভোক্তা) ইতি আহ: (কবছরি) [কনা:]। তত্মিন সর্বাং প্রতিষ্ঠিতং बार्मिक, बार्क म-रेकि' रेकि--हि (बचार) वर ह आविकि (व्यानवावनर करबांकि), यर ह (व्यक्ति न [क्षांनिकि], डेक्ट नर्बार नविन (वृद्ध) क्षांक्रिक्यः; ७९ / ७ वार: वर हेवः चाह:-- गःवरमतः [शामा] भवना (इ.स.म.) क्रार १ (शावर क्रांन् पूनम् क्रार (पूनम वनर) व्यापकारि (মৃত্যুৰ্ অভিক্ৰাৰভাতাৰ্য:) ইতি ; তবা ন !বভাৎ (আনীয়াৎ)—বধৰঃ (বলিন্ **অহনি)** এৰ জুৰোভি, ভদৰ: (ভবিন্ মৰ্নি–সভ এব) মৃত্যুং প্ন: व्यवक्राक-अवः विवान् (कामन्) वि । मिन्तरम्) (वरवक्षाः नर्वाः व्यक्षाकः ় অহমীয়ৰ অয়ং - প্ৰবন্ধতি : হয়:তি, ব্ৰোক্তবিজ্ঞানৰেৰ হেবেডাঃ সৰ্বায়-ষাৰ্যভি ভাষঃ)। 'ৰুখাৎ ভানি ন শীয়তে মুভযানানি সুৰ্বায়া--ইতি' ইভি---भूक्तकः (चाचा) देव (श्रांतिष्के) व्यक्तिः (चक्तव्यक्तः), तः ्र पूक्तवः) वि (निकार) रेक्य चन्नः पूनः पूनः चनव्रात (উर्शावविष्ठ), { त्रचार न कोवरक हेकि कावः]। '(वा वा अकाव् व्यक्तिक: (वव--हेकि,--पूत्रावा वा व्यक्तिक:; नः (नूक्यः) वि विशा विशा (कारमम) कर्षातः हेमः व्यवः व्यवहरू ; वद (विश) व (व्यनिष्डों) जल्द (काम-कर्षाल्डानर) म कुर्गार, [छना] कीरहक [चत्रम्], र-नवः (चनवात्रानर्यः)। 'तः चत्रम् चि क्रजोरमन-ইভि' ইভি---मूपर (अशनः) अछीकः (अछोक-नकार्यः, (छत) मूर्यम [बह्रम् व्यक्ति] हे (शहर । नः दावान् चिनत्रक्ति, गः केकन् केनकीविष् हेलि (এ७६) अन्तना (चन्न-विकानमा चित्रिकार्यः) ॥६८॥२॥

সুলান্দ্রাদে। [প্রেলিক মারের প্রকৃত অর্থ—লোকের অব্যান্থন না হইতে পারে, এই আলছায় প্রতি নিজেই ভাষার অর্থ প্রকাশ করিয়া বলিভেছেন—] "বং + + + পিড।ইডি" ইবার वर्ष क्रि-भिका व्यक्तिक्सी (वर्षा पाता (विकारनत मार्थारा) अवर তপক্ত। ভারা অর্থাৎ বিহিত কর্মা ভারা উৎপাদন করিয়াছিলেন। 'একছ + + + हेडि.' देशांत वर्ष-ठीहांत एके व्यवस्थ मधा देश माधांत्र-সর্বভোজ্য অন্ন,--বাছা সাধারণতঃ লোকে ভক্ষণ করিয়া থাকে: বে वाक्ति এই माधारन चाप्तत छेभामना करत, वर्षाय देशांकर चमूतक থাকে : লে ব্যক্তি কখনই পাপ হইতে বিমৃক্ত হইতে পারে না ; কারণ, ঐ অন বইডেচে পাপ-মিঞাত। "বে + + + কভারব্রবিভি." हेश्य वर्ष- इंड ७ लड्ड, ि এই हुईंग्री बन्न (वर्गन्द विमाहित्व : হত বর্থ-বাহিত সুভাদি ত্যাগ করা, বার প্রস্তুত বর্ধ-হোষের পর উপদার প্রদান করা]: সেই কারণেট দেবতা উদ্দেশ্যে হোমও করিয়া बादक, এवः श्रद्धाम (हारमत भवनको बिनममर्भन) कविवा बादक ; আবার কেছ কেছ বলিয়া থাকেন বে, ঐ ভূইটা আন্স-দর্শ ও পূর্ণমাস নামক চুইটি বাগ: দেইতেডু কাম্যকর্ম্মের অনুষ্ঠান বিষয়ে তৎপর হটবে ना, (भवश्व निडाकर्त्यारे मन पिर्व)। 'भएकाः + + + आवाक् रेटि", ইংার অর্থ-লোকপ্রসিদ্ধ দুয়া: কারণ, অক্সান্ত দ্রব্য ভক্ষণ করিবার আরে। শিশু মনুষ্য ও পশুগণ হগ্ধই পান করিয়া থাকে; এইএক নবলিত জান্মলে পর প্রথমেই গ্রন্ত পান করার, অথবা স্থনাপান করার: **এই कात्र(नर्ड नवका**छ ग्रवामि वश्मरक 'सङ्गाम' (जुनासामा नत्र) वना इहेबा थाटक। "जिन्त्रन + + + वक्त मिकि", हेशा वर्ष-वाशाबा लानम-पानलपान जान करत. बाद वांश्रा पानलपान जान करत ना (স্থাবর পদার্থ), সে সমুদর্ এই মুগ্ধরণ অন্তে প্রভিতিত ; অভএব, কেছ কেছ যে বলিয়া থাকেন, একবংসর কাল ছগ্ধ ছারা ভোগ করিলে श्रमभूष्य कात कात वर्षाय तम तमक नाज करत, अक्रम वृक्तिकः ना ; शत्रह्व (वह एन श्राम करत, ठिक लाहे जिनहे शूनमंत्रण कर् করে, [ভারাকে আর সংবৎসর অপেকা করিতে হর না]; বিনি এইরূপ बादनन, जिनि ममल जारे मिनगएनत जेम्बरण धारान करतन । "क्यार + + + नर्बरावि"; [देशोव केसव--] भूत्रप (कांका) व्हेरकट्ट

भूमा के जा विश्वात कातक; (क्रम ना, भूमावर स्थान पाना भूमा भूमा क्रिका कात करियात कातक। (वा वा + + + क्रिका माना भूमा क्रिका कातक। (वा वा + + + क्रिका माना माना माना माना माना माना कातक। क्रम काम क्रमा कातक। भूमा क्रमा कातक। भूमा कातक। भूमा कातक। भूमा क्रमा कातक। भूमा कातक।

শিক্ষিক ভিক্সিকা ।—বং স্থান্তান—বং অভনর্থিত কিন্তা-বিশেষক; বেষরা প্রজন্ম বিজ্ঞানে তপদা চ দর্শণা; জানকপদী এব বি বেষাতপ্য-শব্দবাটো, তরোং প্রকৃত্যাং; নেতরে ধেধা-তপদী, অপ্রকৃত্যাং পাঙ্ভং বি কর্ম জারাহিদাবদন্; "ব এবং বেদ"ইতি চানস্তব্ধের জানং প্রকৃত্যার প্রসিবরোক্ষোতপ্যোগ্রাম্বা কর্মি।; অতে: বানি স্থান্তানি জানকর্মকায়ে জনিত্যান্ পিতা, তানি প্রকাশগ্রিদান ই'ত বাকালেয়:। তত্ত্র সমাণাম্বভিরোহিতভাব প্রায়েণ ভ্রিজ্ঞেয়ে। তবতীতি তদর্ববাগ্যানার ব্রহ্মণং প্রকৃত্যে। তত্ত্ব বং স্থান্তানি বেষরা তপ্যাজনরং।পত্তে, অস্য কোহর্ব: ? উচ্যতে—ইতি, বি-শব্দেনের ব্যারেই প্রসিব্ধাবিদ্যোত্তকেন; প্রসিদ্ধে ক্ষ্যা মন্ত্রার্থ ইত্যর্থ:; ব্যক্ষনন্ত্রিত অনুবানগ্রন্তেশ মন্ত্রেশ প্রসিদ্ধার্থ তৈর প্রকাশিক্তা; অতো ব্যক্তবিশ্বাহ—বেষরা হি তপ্যাজনবং পিতেতি। ১

নমু কৰা প্ৰসিদ্ধতা অসাৰিনোতি ? উচাতে—আয়াদিকপাঞ্জানাং লোকফলসাধনানাং পিতৃত্ব ভাৰৰ প্ৰত্যক্ষেব; অভিহিতক—"আয়া যে সাংশ ইত্যাদিনা। তন্ত্ৰ চ দৈবং বিভং বিদ্যা কণা পুৰুষ্ঠ কণভূতানাং শোকানাং সাধন্য স্তেইত্বং প্ৰভাত্যভিহিত্ত্ব; বক্সমাণক প্ৰসিদ্ধেৰ। তথাৰ্ যুক্তং বৃক্তঃ—বেৰয়েভ্যাদি। ২

ত এবণা হি কলবিবরা প্রসিট্ডব চ লোকে; এবণা চ জারালাত্।জন্ "এডাবান্ বৈ কারঃ" ইত্যনেন; অন্ধবিদ্যাবিবরে চ সর্কৈকথাৎ কানালুপণড়ে:।
এতেন অশাস্ত্রীয়প্রজা-ভপোত্যাং বাতাবিকাত্যাং কগংলাভূষ্মুক্তবেব ভবতি;
হাবরাজস্য চানিষ্টকলস্য কর্মবিজ্ঞাননিষ্টিকাং। বিব্যক্তিক শাস্ত্রীয় এব
নাধ্য-নাধ্যভাবা, অন্ধবিজ্ঞাবিধিংসরা ভবৈরাগান্ত বিব্যক্তিকাং--সর্কো

टापर गर सामा अक्षेत्र सम्मन्य ।

यक्त राज्यगंजनपरः मत्नारबार्क्कवार्थिकाः मारामायमब्द्रणा इरस्य-रिकारिया रेट्डाक्यावितका व्यविकासम्बद्धाकि ।०

ভ্ৰান্তানাথ বিভাগেল বিনিয়োগ উভাতে -একষত সাধারণ্যিতি ব্যাণালয়, তত বাধানালয়—ইবনেবাত তথ সাধারণ্যালয় আছু ভোজ্বমুখারত; কিং তথ গুবিক্ষমভাতে জুলাতে সর্বৈত্য প্রাণিতিব্যক্তানি, তথ সাধারণ সর্বান্তান্ত ব্যাভারণ পরি ভালা প্রাণালয় কর্মনালয় কর্মনালয় ক্ষাণাল্য -তথপরো ভবতীভার্থঃ; উপাসনং বি নাম তাৎপর্যাং কৃষ্টাং লোকে—'গুকুমুপাতে' 'রাজানমুপাতে' ইভ্যাকে), তথা- ক্ষরীসন্বিভার্থারোপভাগে প্রথানঃ, নাকৃষ্টার্থকর্মপ্রধান ইভ্যারণ । স এবজ্তো ন পাপানেহধর্মান্ত বান্তান্ত ন বিষ্চাত ইত্যাতথ । তথাচ ব্যাবর্থঃ—"বোষ্ত্রারণ বিশ্বতানিঃ; স্বভিত্যপ—"নাজার্থং পাচরেলয়স্থ।" "অপ্রভারৈভ্যাে বাে ভূঙ্জে জেন এব সং।" "জ্যাক্ষ ক্রপ্রা বাটি" ইভ্যাকিঃ । ৪

কলাৎ পূনঃ পাণানো ন বাবেজতে ? বিল্লং ক্তেৎ—সর্বেবাং হি স্বং তদপ্রবিভক্তঃ, বং প্রাণিভিভূলিতে, সর্বভোলাবাদেব বা বুবে প্রক্রিপান বাণোহণি প্রাসং পরস্থ পীড়াকরে৷ মুক্ততে—ব্যেদং স্থাহিতি হি সর্বেবাং ভঞালা প্রভিবদ্ধা; ভলার পরস্থ স্থাড়িবিদা প্রশিভূষণি শক্যভে; "মুম্বডং হি মনুষ্যাণান্"ইভ্যাদি প্রশাক্ত ২

পৃথিপ। বৈশবেশবাসমং বদহক্ষনি নিরপাত ইতি কেচিং। ভর, সর্বতোজ্পাধারণকং বৈশবেশবাস্থারত ন সর্বপ্রাণজ্ত্বামানারকং প্রভাজত্ব; নাপি 'বছিলবলাডে' ইতি ভবিবরং বচনবস্থ্নত্ব। সর্বপ্রাণজ্ত্বামানারতঃপাতিরাচ্চ বৈশবেশবাস্থাত বৃক্তং প্রচালালাভত অরত প্রহণন্, বৈশবেশবাতবেকেশাপি প্রচালালাভাগ্রহশনাং, ভক্ত বৃক্তং বছিলবল্যত ইতি বচনব্। ৬

ধাদ হি তয় গৃহত্ত, সাধারণদানেন পিত্রা অক্টবাবিনির্ক্তে তত্ত প্রসাজায়াতার্। ইবাতে হি তৎপ্রষ্ট্রং তবিনির্ক্তর্যক সর্বভারতাতত । ন চ বৈশবেশবাং শাস্ত্রোক্তং কর্ম কুর্মতঃ পাণানোহবিনির্ভির্কা; ন চ তত্ত প্রভিষেধাহতি। ন চ মংক্তবন্ধনান্তির্শনং স্বভারক্তিভিত্তেৎ, শিটনির্মান্ত্রনার্থি, সকরবে চ প্রভারাল্লবর্ণাৎ; ইভরত্র চ প্রভারারণপত্তেঃ; "অহমমন্ত্রন্ত্রনার্থি ব্রহ্বর্থাৎ। ন

(व रायामणाव्यक्तिण यद्यभवत्। (व रायद्य सहै। रायामणाव्यक्, रक

एक (व) देकि, केहारक,—एकक अवस्थक । व्यविकारो दनमन्, अवस्थ व्या विवस्थान् । पत्राव् एव अरक मात्र व्यवस्थक (व्यामकाकार निका, क्यारमध्यानि श्रीनः कारम (वर्राका) क्यांक (वर्राका वेष्ट्रप्रमाणिकीं निवासिक व्यामाः क्यांक, अक्यांक क्यांक वर्षा विवस्थाक क्यांक वेशांकः । भारता समारक साहः—एव साह्य निका (वर्राकाः अर्थ म इष्ट-अवस्थ, किः कर्षा क्यांक्य साहः—एव साह्य निका (वर्ष्यक्यांकिक्यांक व्यवस्थकः वर्ष्यः अवस्थकः वर्ष्यः अवस्थकः । प्र

বহাণি বিষং হতপ্রহতরোঃ সম্বর্গত, তথাণি প্রৌতরোরের তু দর্শ-পূর্ণবাসরোধিবারতঃ প্রসিদ্ধতরন্, বর প্রকাশিকভাব। গুণ প্রধানপ্রাপ্তে চ প্রধানে প্রথমতরাবগতিঃ; ধর্শপূর্ণবাসরোক্ত প্রাণান্তঃ হত প্রহুতাপেক্ষা; ভস্মাৎ ভরোরের গ্রহণং বৃদ্ধন্ম—(ব দেবানভালরদিভি। বলাদেবার্থমেতে শিল্লা প্রকৃত্তে দর্শপূর্ণবাসাবো অরে, ভস্মাৎ ভরোধিবার্থমিবাভার ন ইছিরাজুকঃ ইছিবলনশীলঃ। ইষ্টিশক্ষেন কিল কাষা। ইইবঃ; শাতপণী ইরং প্রসিদ্ধিঃ; ভাজ্ঞালাপ্রভারপ্ররোগাৎ কামোটিবলনপ্রধানো ন ভালিভার্থঃ। ১

প্রভা একং প্রাবস্ক্রিতি—বং পশুতা একং প্রাবস্ক্রং পিতা, কিং পুন-অবস্ত্রন্থ তথ পর:। কবং পুনরবগ্রাতে পশ্বোহস্তাল্প ব। যনঃ ? ইতি আড় আছ—পরা 6 অগ্রে প্রবহং বলাং মধুবাস্ত পশ্বস্ত পর এবোপভাবভাতি, উচিতং বি ভেষাং তর্মন্, অক্তবা কথং তদেবাপ্রে নিম্নেনোপজীবেয়ুঃ। ১০

দ্ধনতে তংগবোপজীবতীত্যাত — বঞ্যাক পশ্যক বলাথ তেনৈবারেন বর্ততে অন্তব্দেশ, বলা পিত্রা আদে বিনিরোগ্য ক্তা, তথা; তথাৎ কুমারং বালং লাভং প্রতং বা কৈবলিকা ভাতকর্মণ ভাতত্রপদ্যকুলং প্রতিশেহরতি প্রানহতি; তানং বা অন্থবাপরতি পক্ষাৎ পারহতি মধাসন্তব্দক্ষাই তানং বা অন্থবাপরতি পক্ষাৎ পারহতি মধাসন্তব্দক্ষাই তানং বাতে বাপরতি মন্তব্দক্ষাই পদ্দান্। অব বংসং ভাতমাহ: — কিছৎ প্রবাধে বংসঃ ! —ইভোবং প্রায় সন্তঃ — অভুলাম ইতি — নালাণি ভূপসভি, অভীব বাল্য পর্যবৈধ্যালি বর্ততে ইভাবং। ১১

বভাবে লাভকণানে) বৃতবৃশকীবন্ধি, বজেতরে পর এব, তৎ সর্বাণাি পর এবােশকীবন্ধি; বৃততাাাপ পরােবিকারভাৎ পরভাবে। কথাৎ প্রঃ সঞ্জবং সং প্রাং চতুর্বভাব ব্যাব্যায়তে ? কর্মাবনভাব; কর বি পর্যাবনাঞ্জবন্ধি বােলাবি; ভাচ কর সাবনং বিভসাব্যং বক্সাবাপভারত্তরত সাবাভ, ববা কর্মপ্রানৌ পূর্বোভাবরে; অভঃ কর্মপঞ্জাৎ করবা সহ পিতীকভাাপ্রেনঃ; নাধনখাবিশেবাদৰ্শনবদ্ধাৰ।নত্ত্বাৰকারণবিতি চ; ব্যাব্যানে প্রভিপত্তি-নৌকর্ব্যাচ্চ—পুৰং হি নৈরতর্ত্তোশ ব্যাব্যাভূং শকাতেইয়ানি, ব্যাব্যাতানি চ পুৰং প্রভীয়তে ৷১২

'তালন্ সর্বং প্রভিষ্টিতং যক্ত প্রাণিতি যক্ত ন' ইতি, অন্ত কোহর্ব ইত্যু-চাতে—তালন্ পদরে পর্যান, সর্বাধ্যান্তানিভ্তানিকৈবলকাং ক্রং অবং প্রভিতিত্য—বক্ত প্রাণিতি প্রাণ্ডেইবেং, বক্ত ন —হাবরং শৈগাছি। ভক্ত হি-শংক্তিন প্রশিক্ষাব্যক্তকেন ব্যাধ্যাত্র্। কবং পরোক্ষরাত্ত সর্বপ্রতি-চাল্মণ কাংপ্রোণপতেঃ; কারণক্ত অগ্নিহোজানিকর্মনাগ্রন্থ; অন্নি হোজাভাত্তিবিপরিণানায়কক অগ্ন ক্রংন্নিতি প্রতিশ্বতিবাদাঃ শতনো ব্যবহিতাঃ; অভ্যে মুক্তবের হি-শক্ষেন ব্যাধ্যানন্ত্র ১০

ৰস্তৰ বিশাবনে বিশ্বসাহ: — সংবংসরং পরসা ক্ষেদণ পুনৰ ত্যাং করতীতি; সংবংসরেণ কিল আৰি বটিশতাভাত্তীনাং সপ্ত চ শতানি বিংশতিক্তিতি বাজ্মতী থিটকা অভিসম্পদ্ধনানা: সংবংসরক্ত চাহোরাআৰি, সংবংসরক্তিং প্রদাপভিষাপ্রবৃত্তি; এবং কৃষা সংবংসরং ক্ষেদণকরতি পুনর্ত্যন্—ইতঃ প্রভা দেবের সভ্তঃ পুনন প্রিরতে ইতার্থ: —ইত্যেবং আক্ষণালা আতঃ। ১৪

ম তথা বিভাব ন তথা এইবাস্ : বছৰরের জ্যোতি, তদহা পুনর্ ভাষণজয়তি,
ন সংবংসরাভ্যাসমপেকতে ; এবং বিদান্ সন্ — বছক্তং—পদ্মসি হীবং সর্বং
প্রতিষ্ঠিতং পরজাহাতবিপরিশাষাক্ষণ পর্যন্তি ; তৎ—একেনৈবাছা
জগলায়ক্ষং প্রতিশহাতে , তছ্চাতে—জগলহতি প্নর্ভাঃ পুনর্ববশ্ব সরুৎ
মুখা বিদান্ শরীরেশ বিহুলা সর্বায়া তবতি, ন পুনর্বশাদ্ধ পরিচ্ছিরং শরীরং
সূত্রাভীতার্থঃ । ১৫

कः पूनार्ह्णः, नस्तावाशा मृज्ञानगण्याशिष्ठ छिठाटि—नर्त्तर नमणः वि यथार दिरवणः नर्द्वाण्याद्वाणम्बर्धात्व छणानाक नावर शास्त्र शास्त्र विकासिक्तान्तर विकासिक्तान्तर विकासिक्तान्तर निर्माणकार श्री नर्वाणकार विकासिक्ता कृषा पूनने शिवस्त हेलि। यदेणस्त्र गृत्वस्त्र शास्त्र विकासिक्ता कृषा पूनने शिवस्त हेलि। यदेणस्त्र गृत्वस्त्र शास्त्र विकासिक्ता विकासिक ্তথাভানি দ জীরতেহধানানি দর্মধেতি। বহা পিআরানি স্ট্র্ শক্ত পৃথক পৃথক্তভক্ত এভানি -ভরাএভ্ডোব তৈর্ভাক্তিরহান নানানি ভরিবিভাত্তবাং হিডে: -দর্মরা নৈরভর্তোণ; রুভকরোপপতেশ কুজতেবাং কর:; ন চ ভানি জীর্ষাণানি, কর্পভোহনির্ভারণেণৈবাবস্থান-কর্মনাৎ; ভবিভবাকাক্যকারবেন; ভশাৎ কলাৎ পুনভানি ন কীয়তে ইভি কর্মাঃ ১৭

ভতেবং প্রতিবচনন্—প্রথো বা অভিনি:। ববানো পূর্বরানাং প্রটানীৎ
পিতা বেবরা আরাদিন্তভেন চ পাঙ্ভাকর্মণা ভোকা চ, তবা বেলো বতাভরানি, তেথি তেবাবরানাং ভোজারেছিল গভঃ শিশুরু এব—বেবরা
ভলনা চ বতো অনরভি ভাজরানি। ভবেতবভিবীয়তে পূর্বো বৈ বাছগানাং
ভোজা, নঃ অভিতির্ভরবেজ্য়। কব্রভাকিতিবনিসূচোতে—স বি ব্যাদিবং
ভূজানানং সপ্তবিবং ভার্যাক্রবলক্ষরং ক্রিরাক্রায়কং পূনঃ পূন্রুরোভ্রো
অনরতে উৎপাবরতি, বিরা ধিরা ভত্তথাল ভাবিতা ভরা ভরা প্রজরা, কর্মভিন্ত
বাহ্যবার্তিটেঃ; বহু বিব হ—বংলাতথ সপ্তবিধ্নরমূক্তং কর্মবা্রমণি ন
ক্র্যাথ প্রজরা কর্মভিন্ত, ভাতা বিজিলোত ভূজানান্দাং সাতভোন ভাবেত
ভ্রাভ্রানির ক্রিভিন্ত, ভাতা বিজিলোত ভূজানান্দাং সাতভোন ভাবেত
ভ্রাভ্রানির ক্রিয়ে পূর্বো ভোজা শ্রানাং নৈরস্বর্ধোণ ব্রধাপ্রজং ব্রাক্র্যানানভূপি অলানি ন ক্রিয়েভ ইভার্বঃ ১৮

ৰতঃ প্ৰজাকিয়ালকপ্ৰবিষাত্বত সৰ্বো োকং সাধাসাধনলকণং বিশ্বাক্ষণাত্মকং সংহতানেকপ্ৰাণিকপ্ৰান্নাসভানাবভ্ৰমণ কৰিবলৈ কৰিবলৈ কৰিবলৈ নিৰ্মাণিক কৰা কৰ্মানিক কৰা কেন্দ্ৰায়াৰ কৰিবলৈ কৰা কৰ্মানিক কৰাতে; তংগ ভাষাপাৰ্যকৃত্যতে—বিশ্বা বিশ্বা ক্ষমতে কৰ্মাভিষ্ণ হৈতন্ত্ৰ কুৰ্বাণ, ক্ষাধেত হৈতি—বিশ্বভানাং হি অস্বাণ্ প্ৰস্থিবিশ্ব আন্তৰ্বা চতুৰ্পপ্ৰস্থাবন্তি। .>

বাে বৈ ভাষজিভিং বেলেভি। বকাষাণাঞ্জি নাবাঃভিনিন্নবসরে
ব্যাধ্যাভাতেবেভি কথা ভেষাং বাধান্থাবিজ্ঞানকলমূণসংগ্রিরতে—বে। বৈ
বভাষজিভিন্নরতেত্ব ববােজং বেদ—পুরুবাে বা অভিভিঃ, ব হীদবরং বিরঃ
বিরা কলমতে কর্মভিঃ, বভৈতর কুর্যাৎ কীরেভ হেভি—বােহরণভি প্রভী-ভেনেভাতার্ব উচ্চতে—সূবং মুবাবং প্রাধান্তবিভাতৎ, প্রাধান্তবৈশ্যানাং
পিছুঃ পুরুবস্যাকিভিন্ধ বাে বেদ, সােহরমভি, নারং প্রভিত্বভূতঃ শৃষ্, ্যবা খজা, ন তবা বিধান সন্নানামাস্তো ভোকৈব ভবতি, ন ভোৱাভারিশভতে। স বেধান্ অপিগছতি স উর্জনুপতীবভি—বেধানপিগছতি বেবাদ্রভাষং প্রতিপ্রতে, উর্জনমূতকোপতীবভি বহুকাং, সা প্রশংসা, নাপ্রার্থোহলেছিভি । ৫৬ । ২ ।

শ্রিকা। ত্যান্ত্রন্ত্রন্থাপনাদার নাচাই—মংক্রান্ত্রান্তি। ব্যান্তরিভিন্ন নাচারি ক্রান্ত্রনানিতি। ব্যান্তরিভানি বিবেশন নাদিতি পথন্য তথা ত তর্ত্বন্থ পিত্যাদিতি পেনা। প্রশ্নিবানগানিত্র বিবা, ক্রান্তরালি তথা, তে কলামন ন গৃংহতে, ভ্রান্ত —জ্ঞানকর্মানী ইন্ডি। ইডারারে প্রকৃত্বর্থ বিক্রান্তরা প্রকৃত্বর্থ বিক্রান্তরা প্রকৃত্বর্থ বিক্রান্তরা প্রশানিত্র আনকর্মণার প্রকৃত্বর্থ কেতৃত্বর্থ করিত্রান্তরা আনকর্মণার বালাং প্রস্তি — অত ইন্ডি। ব্যানার্থী চ্যান্ত্রন্তরাপ নাগান রাজ্যবালালয় বালাং প্রস্তি — অত ইন্ডি। ব্যানার্থী চ্যান্ত্রনানিত্র বিশ্বান্তরা বিশ্বান্তরা বিশ্বান্তরা বিশ্বান্তরা বিশ্বান্তরা বিশ্বান্তরা বিশ্বান্তরা বিশ্বান্তরা বালান্তরে সংগ্রান্তর কর্মান্তরা কর্মা

তৎগ্ৰসিভিযুপপাধ্যিত্ব পৃত্ৰভি —ন্ত্ৰিতি । সাধাসাধনান্তকে লগতি বং পিতৃত্ববিত্তা-बरका गावि. ७९ अक्षकपार अनिवन् व्यक्षकरक वि ब्रावाणि नव्यावश्वतिवानिकार--जेक्राक ইতি। জন্যাত গাওভবাৎ প্ৰান্তবে :বিভাহ—অ'ডাইস্তং চেডি। বচ বেবা-खर्लाखाः छ्रहेषः बद्धवाक्षनाद्याककः, छवनि आंगद्धवनः, विद्याकर्षभूजानावकारन नाक-बरारम्बाष्ट्रमण्डविशाः -छञ् (छाउ। **प्रकाडवद्याः मखवायः। प्रतरेनवावः** লোকো মধা ইভাবে। বকামাণভাভাভার প্রসিভভেতাহ—বক্ষামাণং চেতি। ৰস্কাৰ্যভেবং প্ৰাসন্ধৰে মন্ত্ৰভ পৰিছাৰবিষয়ং একিপমূপপত্ৰবিজ্বাপমংহৰতি—ভঙ্গমণাদৈতি । ২ প্রকারাররের মন্ত্রার্থক প্রান্তর্বাহ -এক্রনা হীতি। ক্রাবিষয়থ ভজা: বাস্তব্ সিভবিতি বজুং हि-পূৰ:। তলা লোক নসিভছেংশি কৰং ব্যাৰ্থত অসিভছৰত আহ— এমণা চেত্ৰ। ৰায়াড়াৰকত কাৰত সংগাৰাৰতকৰবলোকেংশি কাৰ: নংগাৰ-वातरक्षक कावकाविरवराविकावि अनकवावकाहि – द्वाक्का वेरास्कृष्टि । कका विवरता स्वाकः। चित्रविक्रीप्रचाक्षानाविन्विन्विन्दिन कामानुबन्धे । त्राद्या नावकक्षरः । तः वि विद्याः काननिशासा अभः नवान् कानाविभाषा (बाटक नवप्रकि। अके। कृष्ण करि क्यापान-वीनकत्रा मरमाविद्याविनी, कत्र मरमावाक्ष्यकिन् काविकार्यः। नात्रीवक व्यावादकः मरमाव-रकृष क्यालक्ष्याद्वीवक क्यः कर्ष्वकृष्यिकारिकार-अरुक्रम् ६। विरक्षायक कावक मश्मावरक्ष्याभवर्षत्वाकि वावर । वाकाविकाकाविकावीनकावसमुकाका-मिकार्यः।

रेक्क प्रदाव वश्यक्षेत्रावक्षराहेराविकार-न्यायना स्टब्स्डि । १९ ग्रहाम-

বীভাদিবরণণত বেগন বীভাদিরাভণত চাকরোধনর্থকু তাংপর্যাহ —বিহক্ষিত্র-ভিতি। শারণণ্ডত পারনপাদের মাধ্যমাধনভাষালগারীনাবৈদ্বাসভ্যার ভভাত বিব-কিক্সমিভার্য। শারীরভ সাধ্যমাধনভাষত বিব্যাহন বেগুবাহ—প্রক্রোভি। ওবের অপকরতি—অনুর্ব্যা হীতি। মুংগরভীতি মুংবভবেতুরিতি বাবং। একুডনপ্রভারণ-ব্যাব্যাসমাধ্যবিভিশ্যে বিব্যাধ্যম্প্রস্থানের বা। ০

ৰম্ভাক্ষণয়েঃ শুকাৰাভাৰৰ্থনুকা সংগ্ৰন্থপ্ৰপ্ৰবন্ধান্তভি—ক্ত্ৰত । সপ্তৰিবেংয়ে গৱে সন্তাতি বাৰং। বাৰ্যান্যৰে বিব্ৰোতি —অক্সেড্যাদিন্দা।

নাধারণবন্ধনাধারণীকুর্নতো দোনং বর্ণনতি -জ হা ইন্তি। তৎপরো ৬বতীজ্বাক্তং বির্ণোতি—উপান্ধন্য হাতি। রাজনোজেধর্ণে বজঃ প্রমাণনতি - জ্ঞা চেন্তি। নামং বিদলং বেনাজ্বপ্রভাগ্যরঃ বলি জানভুকনো ৮৬তে, তলা দ বধ এব ততেতি নামংবারতাসাধারণীকরণং নিন্তিসভিত্তার্থ: তবৈর পুতীকলাছরতি -আ্ তির্পীতি। শন বুখা ঘাতরেং পশুর্। ন তৈ চঃ খবমরীরাবিধিনজং ন নির্মণেথ ইতি পালভাং প্রইনার্। 'ইরার্ভোগান্ ভি বো দেবা দাত্রে বজভাবিভাং। তৈজ্ঞান্ ইতি শেষঃ। 'জনেনা অভিদংসতি। শেষঃ পর্জো রাজনি বাবরান্তসভাগ্ ইত্যক্তরং পালত্রার্থ। তরাজ্বপাদভার্মে ব্রারাজন্যাতকং। ববাতঃ 'ন ইন্তিপ্রক্রান্তা উচ্চত্র প্রদেশতভাতিশীমতেও ইতি। সভায়তকংক বপাশং মার্ডিনোবছতীতার্যভূং গাপকরেবলেবিত্তসভান্যার্থীকৃত্য ভূঞানত গাণিতেতি।

"ৰথৰ) তুৰ এতেকাঃ পৃথ্য: ভূঙ্কে+বিচক্ষণঃ। স ভূঞানো ৰ কানাতি খগুইগ্ৰুকিবাধনঃ।।"

वेक्षाविवाकावाविनवाम: •

আৰাজ্ঞাপুৰ্বাক হৈত্বৰ চাৰ্যা ব্যাকরোতি -ক্রজ্মা দৈজ্যাদিনা। বৰ্বভোৰাছং নাধরতি -যো মুক্ত ইজি: পরত বয়াজারতে বিভি বাবং। শীড়াকরতে কেতুবাল-ম্মেন্তি। অভেক্টকন্যান্তে — ভ্ৰম্মাদিনিত। নাধারণব্যবন্ধানাত্তী ক্র্তিকরত কেতুবাল-মুক্তুতং স্থাতি । বংগ বি বছব্যাণা মুক্তবন্ধনাত্তি। বিভিতি, ভাগ ভালাবারশীক্র্তিচো বরভার পাপং ৮৭ চাতার্য। ব

একবজেতানিবন্ধৰাকণরোঃ খণকাৰ্কা কর্পণকণকৰাৰ -পৃতিশৈতি। বৰরং সৃথিনা প্রভাৱনটো বৈধৰে নাবা: নির্মান্তাতে, তং নাবারণনিতি কর্পণকৈক্ষমিতারাঃ। নাবারণনাক্ষণপত্তের বৃজ্যিক ব্যাব্যাননিতি ব্যাতি—ত্যক্ষতি। বৈধ্যেষত নাবারণক্ষমানানিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালনিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিক বিভাগতিবিধ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিবিদ্যালিক বিভাগতিক

বিপক্তে নোৰবাং—আদি ভীতি। প্ৰসক্তেইখং বিবাচটে—ইজ্যান্ত ভীতি। প্ৰপক্তে বাধ্যবেশবিরোধং নোবাভরবাং—স ভেডি। গেনাবিভুলাখং যভ বাবর্ভরি— ম চ ওক্তোক্ত। পৰিবিশ্বভাগি ভৱ বভাবস্থুৰণিভবাভবস্থারিনঃ পাণানিবৃত্তিরিভ্যা-পর্বাহ—ম চেতি।

'बरकर राजि किरीकर बन्जा देन्सकर रुखि।'

ইডাকরণে বৈধ্যেরত প্রভাগারশ্রণাক্ত ওনমুর্চারিনো ন পাপ্যদেশোংগীভানি— অক্সরণে চ্রেডি। সর্থানারাধারশ্রেরে তু বংশরত নিশাগ্রনমূশপদ্ধতে, কেন ভনেব প্রাক্রিয়ার—ইক্সরহক্রডি। তবৈর প্রভারের সংবাদরতি—অক্সফ্রিডি। অবিভানি হবিষ্ণারিষ্ণায় প্রবেষ ভূপ্রানং নরবহ্যমনের ভক্ষানি ভ্রমর্বভালং করোরীতার্বং। ব

ৰন্ধাৰণৰাগাৰ কাৰান্ত্ৰ নাৰ্ধাৰণ বাচটে—কে দেং নামিড্যাদিনা। ইত-প্ৰচল্পে কাৰ্ডিন স্থাতি চন্দ্ৰভূপিন মৃত্যাদিনিত। প্ৰভাৱৰণ বাক্ষেতি – আইথা ইতি। বৰি দৰ্শপূৰ্বিদ্যো দেখারে, কৰা ভবি চতপ্ৰচতে ইতি প্ৰভাৱৰাৰ – জিত্তি চিচ্চিত্ৰ চিচিত্ৰ চিচ্চিত্ৰ চিচিত্ৰ চিচ্চিত্ৰ চিচ্চিত্ৰ চিচ্চিত্ৰ চিচ্চিত্ৰ চিচ্চিত্ৰ চিচিত্ৰ চি

তহি যে দেবানিতি ক্রতবিষ্ণ গ্রুমান সংগ্রাম প্রথমণকাল পূর্কাশকরক আন ন্যান্ত ক্রীতি। প্রসিদ্ধান্ত হৈ কেতৃয়ান নাই ক্রেমান প্রথম কুইং নির্মাণার বিনাধ হবিষ্ণ্যকাল ইত্যানির স্তেম্ব নাই প্রথম কর্মান নাই ক্রেমান কর্মানির বিনাধ হবিষ্ণান্ত ইত্যানির স্তেম্ব নাই কর্মান কর্মানির ক্রেমান কর্মানির ক্রেমান কর্মানির ক্রেমান কর্মানির ক্রেমান কর্মানির ক্রেমানির কর্মানির ক্রেমানির ক্রেমানির

দর্শপূর্ণনাদরে বিষয়ে সংগ্রহণ বিষয়ে ক্রান্ত নাম ক্রান্ত নাম ক্রান্ত নাম ক্রান্ত নাম ক্রান্ত নাম কর্ম ক্রান্ত নাম ক্রান্ত না

পরাবিবর- বন্ধপদ্যাদার এরপূর্বকং তর্গর কর্বাত-প্রভাজ্য ইন্ডি। পর্নাং প্রোংরাব্রেডভূপপাদরিক্ পৃক্ষতি—ক্রথং পুনারিক্রে। পরে হীতি এতীকর্পাদার ব্যাকরোতি—অপ্র ইন্ডি। প্রবি বিশ্বকর্ষাদর্শ, ব্যাবিভূপিক্রমাৎ। উচিতাং অভিবেক্ষারা প্রাক্তি—অক্সপ্রেক্তি।>•

निवदनन वापनः शनुनाः सङ्गकीयनवनव्यक्तिनविकि गणाय-क्रश्चितिकि। सङ्गा-

বিবরে বা আর্ডনিভরপ্তবিবরে বেতি পৃক্ষতি—উচ্চান্ত ইন্ডি। ভ্রান্তবৃদ্ধবাৰ্ট্টেডেন প্রথমিনিটিডে। চকারো বহুবারারগরেনার্ড। তেনৈর প্রথমবারি বিবরতি বাবং। বৃতং বেতি বাপ্রের বজাবারিকরন্তোভক:। আত্তরপং হেন, ত্রৈবণিকেভ্যোন্থরেনাং আভকর্বাভাবান্থ বোগ্যভাবনভিক্রনা অন্যেব কাভং কুরারং অধ্যক্ষ পায়বলীন্তান্ধ—অপ্রাক্তর্জন্তিভিত্ত। বরা ভেবাং আভকর্মানিক্রিটানাং আভং কুরারং পুতং বা ভনং বা প্রবন্ধ পারবভীতি বাবং। পশুবিবর্জ অর্থাং পশ্বন্তেতি প্রভিত্তসমাবানং অভ্যান—অনুসন্তেন্তি। পশ্বাং আভং বংসাবিভি সম্বন্ধ: পশ্বাং পরোংরবিভানে বেলাক্রিটিং প্রবাণয়তি—অনুপ্রাক্তি। বিশাংপ্রধিকারবিভ্রেরারেণিত্রশন্তঃ। প্রতিব্যান্তিনিটিং প্রবাণয়তি—অনুপ্রাক্তি। বিশাংপ্রধিকারবিভ্রেরারেণিত্রশন্তঃ। প্রতিব্যান্তিনীতি । ১১

বছ বেবাৰত্রে যুক্তোপজাবিষমূপন চাতে, প্রন্ধে নোপজাবন্ধি, যুতপরনোর্জেরাৎ অতঃ প্রক্রম পরনো ভাগানিদ্ধনত আহ —হাক্তেতি। নমু সুত্রপূলাবনোর্থনি পর এবোপক্রীবভার্কং, ভ্রম্ভোজনার, ভ্রাহ—হাত্রস্থাপানীতি। মন্ত্রপাঠকুরমভিক্রমা পথরে
বাাবাতে প্রভাবতিভিত্তে—কচ্মান্তিত। বে দেবানভালয়নিতি বাাবাতে সাবনে সাবনম্বাবিশেষাংপরোহশি বৃদ্ধিয়নিতার্থক্রম্বালিভা পরিহরতি -ক্রম্মোন্ত। ভ্রের প্রক্রিত—ক্রমান্তি। ভ্রের পরিভিত্তি—ক্রমান্তিত। বছলি পরোরপর সাবনমান্তিতা কর্ম প্রস্থাত, ভ্রাণি নর্পপূর্বনাসাম্বর্ধার কর্ম পরনার নিবাতি, ভ্রাহ—ভ্রক্তেভিত। বিভেন পরনা সাবাং কর্মান্তরমান সাবনমিভান্ত কুটার্থনাত—হাত্রিতি। প্র্রোভে দর্শপূর্বনাসা বাবনমান ক্রমান্তরমান সাবনমান ক্রমান্তরমান কর্মান্তরমান কর্মান কর্মান্তরমান কর্মান ক

প্ৰৱলা নৰ্কাৰিটানবিষয় মন্ত্ৰৰতাৰ্য অৱপূৰ্বক ভণীন: বাজণ: বাচটে ক্তব্যি-। সক্ষ্যাদিলো। মন্তেনো বাজণে প্ৰতিভাগতাগৰলাহ—ক্ত্ৰাক্তি। পৰ্যান হীতি বাজণে হি-প্ৰদা অনিভাৰভোভক্ষৰতি। তেনু চ হেতুনা হি-প্ৰেন ভণিছিভাগিক: মন্ত্ৰণ বাৰাভিনিত বাজনা।

ব্যার্থত লোকপ্রসিদ্ধানার প্রসিদ্ধান্ত। বিশ্বের ব্যাধান্ত মুক্তবিভি শক্তে—ক্ষথমিতি। কার্বাং কার্বে প্রতিভিত্তবিভি কারেন বৈছিকাং প্রসিদ্ধিনার স্থা-বতে—ক্ষান্তবিভিত্ত। পরনো স্থান্তবাহাত্ত মুখ্য স্থান্তবাহাত্ত। প্রতাং কার্বভেত্তাপ্তাহ—ক্ষতি- কোত্রাদীতি। 'তে বা এতে পাৰতী কতে উৎকাৰততে প্রায়িক্যাবিশতঃ' ইভাানয়ঃ ক্ষতিবালা দ্বাপন্ধত্যীকাশিক্ষবেণায়িকোত্রাক্তিভাবকাতিং বর্ণনতি ।—

> 'অর্মে এাডার্ডি: স্থানাদিভার্শতিউতে। আদিভান্দারতে বৃষ্টির টেরের ডুক: এজা:।।'

১ডাবের: প্রতিবাদা:। পর্যি বীভ্যাদি বাছণমূপদংবরতি—আন্ত ইন্ডি। পরসঃ সর্বাজনমারারত শুভিস্থতি প্রসিত্তাহিতি বাবং।১৩

দর্মণে প্রদি প্রতিষ্ঠিতনিতি বিধিৎনিতদর্শনভতরে শ্বাবাছরায়নতথে নিশিতুনুতাবয়তি—
যক্তিনিতি। ন কেবলৈন কর্মণা মৃত্যুজয়ঃ কিন্তু বর্ণনাবিতেনেতি বর্ণনিতুমিরিলোরাহিত্যু
সংখ্যাং কথাতি —জংক্র্মজন্তেনেপ্রতি। উভাচতিসংখ্যাহাং স্বৎসরাবজিয়ায়ামিরিলোরবিধাং স্প্রতিশ্যার্থী কিনেত্যুজন্। নমু প্রত্যাহং সালং প্রতক্ষেত্যাহতী বে বিশ্বেতে,
তৎ কথমান্ত্রীনাথে বইয়িকিলানি জীলি শতানি স্বৎসরের তবন্ধি, ততাহ - জ্বপ্র চ্ছেত্তি।
প্রত্যোক্ষরারাবিজ্ঞানতি প্রয়োগাণায়েক্সিন্ন্ স্বৎসরের প্রেলিলা সংব্যা, তবৈর
প্রয়োগার্থানাং বিংশতানিক। স্প্রশতস্থানা সংব্যাতি নিজনিত্যর্থা। আহতীনাং সংব্যামুক্সা
তাস্ বাক্ষরানামিইকানাং দৃষ্টিনাহ প্রাজ্ঞ্যান্তীনিক্তি। ভাসামিশি বইয়িকিলানি জীলি
শতানি সংবারা তবন্ধি, তথা চ প্রত্যাহতীরিভিলিজ্ঞ্যানাং সংব্যাসামান্তেন বাক্ষ্অতীরিইকালিতর্বার্থী। আভিবরীনামিইকানাং স্বৎসরাম্বরাহোরাজেরু সংব্যাসামান্তেনের সুইব্রাতিই -জংক্র্মজন্তি। তাজিশি বইয়িকানি জীলি শতানি প্রনিভানি,
ভবা চ তেরু ব্রোভেন্টিকান্ধীং রিষ্টেতার্থী। তিত্যেহারী স্বৎসরাম্বরাক্ষাণিভানিনিক্রিলান
জংক্র্মজন্তি। বা সংব্যাসাম্ভানিত্যরিং বিহাসেং স্পাল্যানিত্য বিহানীর বিহারের স্বাল্যান্তরি। আহোমান্তেইকার্যান্ত বার সংব্যাসাম্বাল্যানিত্যরিং।

গৃষ্টবন্ত কলং ধর্ণতি—একামতি। উকসংবাংলামাকেনারিংবারাকটারপ্রবন্ধ কর্ববিদ্ধানি বিশ্বনার করি বার্মিক । উকসংবাংলামাকের বিশ্বনার করেবারার বিশ্বনার বিশ্

একীরমভমুগনংক্তঃ ওরিশাপৃষ্ঠকং মহাভাষনাং —ইত্যেবামিস্ত্যালিকা। এবং বিধানিস্থাকং বাজাকরোভি—মানুক্তামজি। ভরংবৰ বিধানে শাহোরারাবভিয়ারভিনারের ভর্ত্তমান প্রভাগতিং প্রাণা মৃত্যুসপলয়ভীভাষি—স্ত্যুস্কেন্ত্রের উভেইবে
ক্ষতিবরভার্য ব্যাহাই – জনুচ্যাত ইডি । ১০

नकः वीक्षाविद्यकृत्।कामाकाकान्त्रव्यूवाणः नाकदाकि—कः श्रूम्बिक्षावित्याः। वर्षाक्यनंत्रवादकदेवपावकाः मृत्यूविक्षकोकाः वाक्ष्याकः नश्यक्षकि—काद्धिकः। वर्षा नश्यक्षिकाश्चाकः, क्ष्या वश्यद्वद्वरकाकृति वाक्ष्यक्षयः प्रक्रिक्षिकारः। वक विवर्ध-वर्षकारी वीदः प्रस्कृः, नृद्देक्षय क्षयक्षावाक्ष्याक्षयाक क्षाविक्षितः। वर कृष्ण्यः ভথবিতাৰিতি ভাবেৰ কৰ্মনিশাঞ্জনাৱৰাৰ—ভটেনজাইভাড়। কৰ্মনাৱভূতাৰ্ণাগনা ব্ৰাহিণতি—হাজে। উপাসনাৱৰ্ত সৰ্ভৱদনা কথবতি—ভথ ভাইবাজিত। শেষ্ঠাকেংশি বাজধুনাৱৰণভাজ্যসাৰ্ভ্যাৰ—আগ্লাভ্যমিতি অধিষ্ঠায় পাল্ডিভ্ৰাহিণতাৰ্। ১৬

পৰৱে ব্যাব্যাতে অন্তৰ্গং মন্ত্ৰণখনাতে—কচ্ছালিতি। বহু চৰাৰ্যানি বাাব্যাভানি, আনি ব্যাচিন্যানিখনি, তেখবাাব্যাতেৰু ক্লানিভানিআৰু ক্লানিভানিআৰু ক্লানিভানিআৰ ক্লানিভানিভা নাবনে ব্যাহ্য নাব্যানাৰণি ভেবাবৰ্ণাহ্যক্ষৰশ্ৰীভাভিগ্ৰেত্ব। প্ৰপ্ৰস্থাতি বহাৰো ব্যাহটে অন্তৰ্জ্ব নাব্যানাৰণি ভেবাবৰ্ণাহ্যক্ষৰশ্ৰীভাভিগ্ৰেত্ব। ক্লাক্ষানাৰ ক্লাক্ষানাৰ ক্লাক্ষানাৰ ক্লাক্ষানাৰ ক্লাক্ষানাৰ ক্লাক্ষানাৰ ক্লান্ত্ৰানিভিন্ন ক্লাক্ষানাৰ ক্লান্ত্ৰান্ত ভিন্ন ক্লাক্ষানাৰ ক্লান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষানাৰ ক্লান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালেক্ষান্ত্ৰান্ত ভালাক্ষান্ত ভালাক্ষান্ত্ৰান্ত ভালাক্ষান্ত ভালাক্ষান্ত ভালাক্ষান্ত ভালাক্ষান্ত ভালাক্ষান্ত্ৰ বিদ্যান্ত্ৰ বিদ্যান

জাতিবচনবাৰাৰ বাচাই—ক্তক্ষেক্তানিকা তেবাং শিভ্যা বেছুবাৰ —শ্বেধয়েতি। ভোগকাকেংশি বিভিও এতিবিভ্জান কৰ্মণখন। প্ৰবাদ প্ৰশাস্থান প্ৰবাদ প্ৰশাস্থান প্ৰবাদ প্ৰশাস্থান প্ৰবাদ প্ৰশাস্থান প্ৰশাস্থান বিভাগত—ক্ষেমিত্যাদিকা। ভাষাভ্ৰমণ নাচাই ক্তক্তে দিক্তি। বেছুখাগমূলালা বিভাগত—ক্ষেমিত্যাদিকা। ভাষাভ্ৰমণমান গৰাতিই প্ৰবাদ বিভাগত শেবাং। উক্তেছ্ বাভিয়েক-ছামোপণাৰাৰ্ছ্ বহৈত্বিভ্যানি বাকাং, তথাচাই—প্ৰাদিতি। অবছবাভিয়েক্তিভালি বাকাং, তথাচাই—প্ৰদিতি। অবছবাভিয়েক্তিভালি ক্ষিত্যান ক্ষিতি। স্বাদানীতি। স্বাদানীতি। স্বাদানীতি। স্বাদ্যান ক্ষিত্যান ক্ষিত্যান বিশ্বাহিত স্বাদ্যান ক্ষিত্যান ক্ষিত্য ক্ষিত্যান ক্ষিত্যান ক্ষিত্য ক্ষিত্যান ক্ষিত্যান ক্ষিত্য ক্ষিত্য ক্ষিত্যান ক্ষিত্য ক্

বিয়া বিরেড্যাবিজ্ঞান্তে: স চীববিভারোক্ত: পরিহারং প্রপান্ধর্যাঃ সপ্তবিধারক কার্বাছাৎ প্রতিক্রপান্ধান্তেইপি পুনঃ পুনঃ ক্রির্যান্তাই প্রবাহার প্রবাহারনা ওবচনং বলাং পক্ষরীভানিরর্থে তাৎপর্যান্ত—অক্ত ইক্তি। প্রজ্ঞান্তিয়ালাং হেছুভাং সক্ষাতে বাবের্ডাভে বিপাভতে বং প্রবর্তঃ সন্বায়ভব্যন্তবার কং সংকা লোকভ্রনাচেতনারকো বৈতপ্রপক্ষ
সাধান্তের সাবনান্তের চ বর্ত্তরানো জারকর্ত্তকলভূতঃ ক্রিনাহানি বিজ্ঞা ইব সক্ষাতে। ভত্ত
ক্রেইভেড্ডিড়া সংহত্তানাং বিবং সহায়তের বিভানাবনেকেবাং প্রাণিনাবনভানি
কর্মানি বাসনান্ত ওৎসভানেনাবইক্রান্ত্রীকৃত্যাহিছি বাবং। প্রাণ্ডীতক্রের সংসারত
ক্রেই স্বভাবিতি বজুং বিপিনিট্ট—মানীডিড়া ক্রাহানি সারবভাতীভাত্ত গৃইছিনার্ক-ক্রান্তিটিড়া ক্রান্তেশি করবভাতীভাত্তেনাবিত্র। ক্রাহানিকা।
জনেকোবাহ্রণং সংসারজানে ক্রপভল্জেভনার্ব্ কেনাং পুননের সংসারোভ্রণা ভাতীভাত্তালাভানির স্বানান্ত ক্রাহান্তনাত্তাভিত্ত। ক্রিবিভি প্রতিক্রণক্রের্যান্ত ক্রাহান্তনার্যাক্র ক্রাহান্তন ক্রাহান্তনিভিত্ত। বৈয়ান্যান্তনিভ্রতিত্ত।
ক্রাহান্তনার্যাই ক্রিভিত। ইভি বৈরান্যার্যবিভিত্তি প্রয়ে। ১৯

नुसरवाश्वानावकश्ररकृतिकाननाक कब्सानवन्त करकनवार-त्या देवजाविका-

দিনা। ববোজনত্বৰতি প্ৰকৃত্য ইন্ডি। কৰবিবৰ ব্যাপন্তালয় ভবীৰ বাজন-নবভাগ বালবোডি প্ৰাথ ক্লিডিডা দিনা। ববোজোপাদনবভা ববোজং কন্ত্ৰ। আবাজেনৈৰ নোংলবভীতি সৰজঃ। বিছুবোংলা এতি প্ৰবাভাৱে বেজুবাৰ —অক্লানা-মিডি। উজন্বং মভিসুত্তাভি—ভোইস্তেইব্ভি। প্ৰশ্ভিনিভৱে শপ্তমতি –জ দেক্ষানিভাগিদিনা॥ ৫৬॥ ২।

ক্রাক্রান্ত। 'বং সপ্ত মন্তাদি। 'বং'পষ্ট 'মজননং' ক্রিয়ার বিশেষণ; 'মেথা' মর্থ—জান, এবং 'ডপাং' মর্থ—কর্ম; এথানে জান ও কর্মের প্রসম চলিতেছে; এইবছ জান ও কর্মই বেধা ও তপাং নক্ষের এব; কিন্তু মন্তপ্রকার বেধা ও তপাছা মর্থ নহে; কারণ, এথানে ভাষাদের কোনই প্রসম নাই। মান্তাদি-লাভের উপায়ম্মরপ পাঙ্ক, কর্ম [প্র্মে বর্ণিত হইয়াছে], এবং পরেই "ব এবং বেষ" বলিয়া জানের প্রসম্ভ মরা ইইয়াছে; মন্তএব এথানে লোকপ্রসিদ্ধ বেষা ও তপাছার আশভা করা উচিত হয় না। মন্তএব, পিতা জ্ঞান ও কর্ম ঘারা বে সপ্ত প্রকার মন্ত উৎপায়ন করিয়াছেন, 'নে সমুদ্ধ প্রকাশ করিব' এইরপ বাক্য-শেব-পূরণ করিয়া নইতে হইবে।

উক্ত বয়সমূহের অর্থ প্রছের আছে; এই এর সহজে সাধারণের বৃত্তিগরা বয় না; এই কারণে ব্রাহ্মণ (উপনিবদের অংশ) নিজেই সেই বয়ার্থ প্রকাশে প্রায়ুত্ত হইতেছেন (১)।

जनारा "वर नवानामि (वस्ता जननारकमत्तर निर्णा" अहे बाह्य वर्ष कि १ वना व्हेरज्ञ - अनिवार्थ-अजिनावक हि-न्यक केवत-अवारम्य क्या विज्ञा व्यिक्त : विज्ञाय अहे (व, केक बन्ध-नव्यत वर्ष क अनिवह व्याद । बाह्य "वर व्यवस्त्र (किन (व किर्नाद क्रिजावित्स) अहे वाक्षिक व्यवसामकार्य अपूक व्हेतार ; (अनिय्द क्रिक्ट व्यवस्त्र व्यवस्त्र व्यवस्त्र वर्ष);

^{(&}gt;) বেদ সাধারণত: ছুই ভাবে বিভক্ত ;—(२) বন্ধ, (२) নাজব। বন্ধভাবের অধিকাংশই কর্মবিধারক ও কর্মে বিনিষ্ঠিত , আর রাজবভাবের অধিকংশই বন্ধার্থ প্রকাশনে ও জ্ঞানোপ্রেলে প্রয়ুক্ত । সাধারণতঃ রাজবেরাট বন্ধের ব্যাখ্যা করিবা বাক্তের ; এইজড় বেবেয়রও বে অংশ বন্ধের মহস্য প্রকাশ করিবারে, সে অংশকে 'রাজব' নাবে অভিবিভ করা ঘৃইয়াছে। এবানেও এই বিভীয় প্রভিত্তে প্রথমেক বন্ধভবিত ব্যাখ্যা রহিরাছে; এইজড় ভাষ্যভাষ ইহাকে 'রাজব' শবে উন্ধিতিত ক্ষিয়াছেন।

श्रूषेताः जारा वात्राक देशात अगिक्यदे अकान कता रहेशास (६); अहे कार्त्रात केक जायन अकि निःश्यक-कार्यदे विनिशासन-"स्वयहा वि क्षणा व्यवस्थ निका" देखि । >

ভাল, জিজানা ভরি, এ কথাটী প্রনিভার্থক কিলে? ইা, বলা হইতেছে
—ছারা হইতে কর্মপর্যান্ত বে সমন্ত লোক-ফলের নাধন উক্ত হইরাছে,
পূক্রমই নে সমুদারের প্রভাজনিত পিতা, 'আমার আয়া হউক' ইত্যাদি
বাক্যেন নে কথাই অভিহিত হইরাছে; আর দৈব বিত্ত বিদ্যা, কর্ম ও
পূক্ত বে, কন্মন্ত্রপ লোক-সমূহের ক্ষি-নাধন, এ কথাও বলা হইরাছে;
এবং পরেও বাহা বলা হইবে, তাহাও প্রনিদ্ধ আছে; অতএব "মেধরা"
ইত্যাদি কথা অবস্তুই বলা বাইতে পারে। ২

কলের উক্তেই বে এবনা বা কাষনার প্রবৃত্তি হইরা থাকে, ইহাও প্রপাত হপ্রসিদ্ধ; আর ভারা প্রভৃতি বিষয়ই বে, এবনা বা এবনার বিষয়, এ কথাও "এতাবান্ বৈ কাষঃ" এই বাক্যেই অভিনিত হইরাছে, কেননা, ব্রন্ধবিদ্যালাতে সর্বাত্ত একম অর্থাৎ একার্যভাব হইরা বার; স্থতরাং সেধানে আর কোন প্রকার কাষনা হইতে পারে না; ইহা থারা এ কথাও বলা হইল বে, মভাবসিদ্ধ অপাত্রীয় জান ও কর্ম থারা অপৎস্কৃতি হইরা থাকে; কেননা, স্থাবরস্বপ্রাপ্তি পর্যান্ধ বে সকল অনিষ্ট কল, কর্ম-বিজ্ঞানই তাহার নিদান! প্রকৃতপক্ষে কিন্ধ শাল্রেকে বে বে করের বেতু বলিরা নির্দেশ করিয়াছে, সেইরপ কার্যা-কার্যপ্রাবহ প্রতির অভিপ্রেত, (কিন্ধ অপাত্রীয় সাধ্যসাধনভাব নহে); কারণ, ব্রন্ধবিদ্যান্ধ বিধান করাই বনন প্রভিত্ত অভিপ্রেত, ভবন অপাত্রীয় বিষয়ে বৈরাগ্য-সমূৎপাদন করাও তাহার অবশ্যই অভিপ্রেত; অভএব বুবিতে হইবে বে, ব্যক্তাব্যক্তময় এই সমন্ত সংসায়ই অভন্ক, অনিত্য, সাধ্য-সাধনভাবাপন্ধ ভ্যবন্ধ এবং অবিভার অধিকারভূক্ত; এইরপ জানবশত্য যাহার স্কর্মরে বৈরাগ্যের সঞ্চার হয়াছে, তাহার অভ

⁽২) ভাংশব্য--এসিড বিষয়ের প্রকাশক বাজাকে 'অসুবাদ' বলে। আলোচ্য ছলে কেবল সপ্তপ্রকার অলোর ইংশাদন বাত্র উল্লেখ করা কইবাছে, কিন্তু কি প্রকারে বা কবন, ভাষার বিশেব কোন কবা নাই; কাজেই ইয়াকে একপ্রকার সিভবং নির্কেশ বলা বাইছে পারে; এই অসই ভাষাকার এই কবার্টাকে অসুবাধের ভূলা বলিরারেন।

टापरनारकाता-- गफनर सामानम् ।

ज्यविका निवयन क्या यावककः [कात्करे वर्णिक रहेरव द्य, उपविकास यक्ष देवशाना मध्यमानम क्यारे अधित याजिताकः]। ०

चमारा अपन अपनचः चमनमूरक विचानकाम विनित्तान नना हरे।छाह. -- "अक्षम्मा नावावनम्" अरेड्रेस् रहेन मह-नव (महाकव), ठावाव वावा। अहेडन ---वरे नहा 'देशहे मानामाठः (छाक भरत मानाम नम' वहेन्न नर्व कविक बहेबारक । काम, किसामा करि, त्मरे अन्ती कि १ विवन- । मनक शाबिना बाछार करे बाहा ७७१ करत. निका चढ मुक्ति गर देशांकरे मानावन-नर्वरणाकात (जाशवरण निवर्गित कतिवादिरमन व बाक्ति नर्वशायिक विचित्र (रकुक्ठ अहे नानांतन पदात छेनानना कःत, पत्रीर अहे पदाहे अक्रिकं दश, अवरक्क तारे लाक भाग-चर्च हरेत वादिक दश मा-পাপৰুক্ত হর না। অগতে তৎপরতা বা একনিটা বর্থেও 'উপাদনা' বক্তের व्यातान (पविटा नावन) नान: (यनन--'कहत डेनानना नान' तावान डेनानना कद्दर्व है शाबि । च छ ब व वृक्ति छ हरेटन दय, च बीव-रमायन कवाई बाहाब बरनारवान नारे ; अछातुन लाकरे नानविकुछ वह ना }। अछातुन बहुक चाट -- 'त्याय-- विकत चत्र नाठ करते' हेजाबि। चांच चाटब चाटब --'रक्वन जानमात बस बह नाक क्वाहेरन मा'. 'रव लाक हेहारवह (रवन-शाया) केरबाड कान ना कविशा कावन करत, तम नाकि निकार कात." 'क्रनहा चर्चार (अर्ड उावनवाठक (s) राक्तिश करोड बहक्क माक कहिता পাপশুতি লাভ করে' ইত্যাবি। ৪

ুভাল, পাপবিষ্ক্ত বর না কেন ? বেবেড়, ইবা বইডেছে পাপবিপ্রিত; কারণ প্রাণিবণ যাহা ভোজন করিয়া থাকে, প্রকৃতপক্ষে ভাষা সর্বসাধারণের অবিভক্ত সম্পত্তি; সেই ভারণেই ইবা থিপ্র বা অবিভক্ত ধন। বেবিজে পাওয়। যার, বধনই কেব একটি প্রাণ স্ববধ্যে নিকেপ করে, ভবনই ভাষা অপরের শীড়াজনক বইরা থাকে; কারণ, ঐ প্রাস্টি বইতেছে সর্বভোজা অর্থাৎ সক্ষেত্রই ভোজনের যোগা; সেই প্রাণের উপর

^{(&}gt;) कारप्रा-अवादन 'जनश' नरन (अवंशाक्षप्रवाणवी वृष्टिक व्हेरन । नाव विवाद्यासन-"वृष्टिक ज्ञानश देवन जानरकाणिनीवरण" वर्षात एव नाकि (अवं जावनरक व्याप्त एक एक अवंशा व्याप्त व्याप्त व

স্কলেবই 'ইয়া আবার হউ চ' এইরণ আল। হইরা বাকে; অভএব পরক্ষীয়া সমুৎপাদন না কৰিয়া একটা প্রান্ত পলাধাকরণ কয়া বায় না। স্বতি-পারেও আছে—'বছৰাগণের পাণ [অয়াগ্রিক]' ইত্যাদি। ৫

কেব কেব বাবা করিয়া বাকেন বে, গৃহত্বপৰ প্রান্তরে বে, বৈববেৰ বাবে আর প্রবান করিয়া বাকে; [ইবা হইতেছে সেই আর]; বজ্জানে আর প্রিক নহে; কারণ, 'বৈববেন' বজে বে আর প্রবন্ধ বইলা বাবেন, সর্মপ্রাণিজ্যান্তর আরের ভার ভাবাতেও বে, সমস্ত ভোজার সাবারণ কম্মান্তি, ইবা ত প্রত্যাকে পাওয়া বায় না; তাবার পর "বং ইবন্ অভতে" বাকাটিও প্ররণ অর্থের শক্ষে অভ্যুক্ত হইতেছে না (২); বিশেষতঃ বৈববেন-ম্জীয় আয়ও বর্ষন সর্মপ্রাণীয় ভূষামান অরেয়ই অর্থত, তবন ভূমুর ও চাঙালাহির ভক্ষবেরাগ্য অরেয়ই প্রহণ করা উচিত; পক্ষান্তরে, বৈববেরজ্যান আয় হাড়াও কুমুর ও চঙালাহির ভক্ষবির আরেয় সম্ভাব বেবিজে পাওয়া বায়; স্তরাং তহিবরে প্রত্যক্ষবোধক 'উদ্যু' বস্তের প্ররোগ বৃক্তিমুক্তই বয়। ৬

পঞ্চান্তরে, এবানে সাধারণ অন্নবোধক অন্ন-শব্দে বলি সর্ব্যাণিতোক্যা
আন প্রহণ না করা হয়, তাহা হইলে ইবার অর্থ কর এই বে, পিতা
ইবার স্পষ্টিও করেন নাই, এবং কাহারে। জন্ম বিনিরোপ্ত করেন
নাই; অগচ অন্নবাত্রই বে, তাহার স্পষ্ট এবং প্রাণিবিশেবের অন্ত
নির্দিন্ত, ইহা সকলেরই অন্প্রেমিক। বিশেবতঃ পাল্লোক্ত বৈশ্বদেবনামক
কর্তান্ম্রহাতার পাপস্পর্ল হওয়াও বৃক্তিসকত হর না। আর বৈশ্বদেব বাপের
বে, কোবার্ড নিবেশ আহে, তাহান্ত নতে; এবং বংশ্ব-বিংসাদি কার্ব্যের
নার ইহা বে, প্রভাবভাই নিন্দিত, ডাগান্ত নতে; কারণ, শিষ্ট লোকেরা
ইবার অন্তর্টান করিয়া গাকেন; পক্ষান্তরে, বৈশ্বদেব-বাপের অকরণে প্রভাবারেরও উল্লেখ আহে; অবচ অন্তর্গান করিয়া পাকের।
বিবেশ অবিস্থানক অন্তর্গান করিয়া বার্বার স্বানাধারণ অন অর্থ করিলে
বিবেশক অর্থিস্থাকে অন্তর্গানিকে বিন্না নিব্যে অন্তর্গান করে, আরি

⁽१) छा९नवी--'रेगर्' नत्म नावात्रवाः श्राक्तमा विषय प्यारेश वात्म, किस्र देशस्य वत्म त्या अभावारे वा क्ष्म करा, रेश च श्राक्ष व्याप व्याप वात्म श्राह्म श्राह्म श्राह्म व्याप व्याप

ভাষাকে ভক্ষণ কৰি' এই সম্বক্তনাত্নারে অঞ্জ প্রভাষারোজিও পুসক্ষত হয়; অভএব আয় শব্দের সাধারণ আয় অর্থ এবণ করাই স্বীচীন। ১

'বে বেষাৰ্ অভান্তৰ' ইতি বন্ধ,—বে কুইটি অন্ন কৃষ্টি কৰিয়া হেৰ-গণের ভোগে বিনিষ্ক করিয়াছিলেন, সেই কুইটি অন্ন কি কি, ভাষা বলা ইউতেছে—ভাষা হত ও প্রহত; হত অর্থ—অন্নিতে বােন করা, আর প্রচত অর্থ—হােমানন্তর বলি বা উপহার প্রদান করা। বেহেছু. পিভা এই কুইটি অন্নদান করিয়াছিলেন; সেই হেতু এবনও সূহস্থপ উপস্ক্ত সময়ে বেষপণের উদ্দেশ্রে হােম করিয়া বাকে.—'আষরা এই অন্ন বেষপণের উদ্দেশ্রে হােম করিয়া বাকে.—'আষরা এই অন্ন বেষপণের উদ্দেশ্রে প্রচান করিয়া বাকে। অপত্রে বলেন, পিভা বে, বেষপণের উদ্দেশে কুইটি অন্ন হিন্না বাকে। অপত্রে বলেন, পিভা বে, বেষপণের উদ্দেশে কুইটি অন্ন হিন্নাভিলেন, ভাষা হত ও প্রহত বহে, তবে কি পুনা, সে কুইটি ইইভেছে কর্শ ও পুনাস নামক কুইটি বাগ।
[বে অন্নে এই] হিন্ন-প্রভিন্ন কিছুমান্ত বিশেষ না বাকায়ও [বুরিভেন্নের,] হত ও প্রহতের উল্লেখ প্রাথমিক অর্থাৎ আপাত উত্তরমান্ত্র (কিন্তু ইবা প্রকৃত উল্লেখ নহে)। ৮

ষ্ণিও হত-প্রহৃত স্থমেও বিব্রুতির উপপত্তি সন্তবপর হয় স্তা, তথাপি প্রতিপ্রসিদ্ধ দর্শ ও পূর্বনাস বাবেরই দেবারার অপেকারত প্রসিদ্ধ; কারণ, ব্যেই প্ররণ কর্ম প্রকাশিত আছে। আর বৃধা ও পৌন, উভরের প্রাপ্তিসভাবনার্থন প্রথমেই মুখ্যার্থের প্রতীতি হইরা বাকে; এবং হত ও প্রহৃত আগত অপেকা দর্শ ও পূর্বনাস বাবের প্রাধান্তও আছে; অভএব "বে বেবাল্ অভালরং" বল্লে তর্হতরের প্রহণ করাই মুক্তিসকত হয়। বেহেছু, পিতা এই দর্শ-পূর্বনাস নামক আর হুইটি বেবভাগণের উল্লেখ্য নির্দিষ্ট করিয়া দিয়াছেন, সেই হেছু বাগতে সেই ছুইটি অলের ক্রেণ্ডোপ্তাম ব্যাহত না হয়, তক্ষত লোকে ইট্রাক্ত অর্থাৎ কাষ্যবাগান্তানে তৎপর হইবে না।—ইট্র শক্ষের অর্থ কাষা (ক্লাভিলাবে অন্তর্ভের) বাব; পতপ্র রাজ্যে এইয়পই প্রসিদ্ধি আছে। বল্ বাছ্র উত্তর 'তাছ্যীনা' প্রভাধ ('উক্জুক্') বাকার বৃথিতে হুইবে বে, কাষা ব্যাহতানকে প্রধান কর্মবা যান করিবে না। ১

"পশুড়া একং প্রায়ন্ত্র" ই।ত।—পিতা পশুগরে উদ্বেশ্র বে অর প্রয়ান করিয়াছিলেন, নেই অরট কি দু নেই অর—পঃসু (হুর)। তাল, পশুগর বে, এই অরের বাবী বা অধিকারী, ইহা কিনে কাবা वाह ? व्यवस्य र्गारकार्यम-त्यारकः, यद्यं ७ नक्ष्मन वाद-वृतिर्व रहेवार वहं क्षयांकरे इद क्षम कडिया वात्म ; धरे वृत्यम व्यवस्य व्यवस्य वाकार्या, महत्व क्षयांकरे मकाम कांश क्षेत्रका (क्षमीय) क्षित्र (क्षम १) > >

অপ্রে বে, ভাষাই ভক্ষণ করে কেন, ভাষা বলা হইছেছে— বেহেছু, শিভা নাইবে বেছুল নির্দিষ্ট করিয়া হিয়াছিলেন, বহুত ও পশুগণ আৰও টিল সেই স্কংশই সেই অন্ন হারাই জীবন ধারণ করিয়া বাকে; সেই হেছু জৈবনিক্ষণ (ক্রাঞ্জণ, করিয় ও বৈতা) আভক্ষের সময় (১) নবজাত বালককে পুর্বান-বৃত্ত ভূত লেহুন করাইয়া বাকে — ভক্ষণ করাইয়া বাকে; বাহামের আভক্ষে অনিকায় নাই, ভাষারাও ব্যাসভগ গ্রুত-প্রাশনের পরে বা অপ্রে জনপান করাইয়া বাকে; বস্থাবাতর প্রাণিপণ অপ্রেই জনপান করাইয়া বাকে। এই কার্যনেই নবজাত পভ্যবস্থাব ক্রাজার। বার্যা বাকে বে, এট 'অভ্যান' 'প্রথমণ্ড ভূণ ভক্ষণ করে মা, অর্থাৎ অতীব নিত ক্রেবল চুক্ক বারাই জীবন বারুণ করিতেকে'। ১০

প্রথমে বে, কাতকণ্ঠ-সবরে হত তক্ষণ করে, এবং ক্ষণণ সকলে বে,
ছুত্ব পাল করে, ইবার ঘারা ভাবারা সর্বভোতাবে ছ্রনেবনই করিয়া থাকে;
কারণ, মৃত ত ছুর্ত্বেই বিকার বং পরিণতি; সুতরাং উরাও হুর্ত্বেরই কর্বত্ব ভাল, পতর মন্ন হইতেহে সপ্তর, থবে ভারাকে চ্পুর্বরণে ব্যাব্যা কর হইতেহে
কেন ? [উত্তর—] বেবেজু, ইহা কর্মসাধ্য কর্বাৎ কর্মান্সভির সহায়; ক্ষারহোত্রেলি কর্মজনি সাধারণতঃ ছ্রুল্লণ সাধ্যসাণেক; সেই কর্মজ আবার বিজ্
সাধ্য এবং পর্যন্তী ত্রিব্ধ ক্ষারের সাধ্য, ক্ষার্থি বিজ্ ঘারা কর্ম সম্পাদ্য
ক্ষিত্রে হর, এবং সেই কর্ম ঘারা আবার বজ্যমাণ ভিন প্রকার ক্ষা সম্পাদ্য
ক্ষান্তে হর; উহাহরণ বথা—পূর্ব্যোক্ত হর্ম-পূর্ব্যাস নামক ছুইট ক্ষা; ক্ষান্তব্য
কর্মের সহিতে সক্ষ ঘাকার কর্মের সন্ধে বিশাইরা এক্যে উপ্যেশ করা হইসাক্ষে; বিশেষতঃ যুক্ত ও ছুর্ত্বের কর্মসাধ্যক্ষ বথন জুলা, কিছুষাত্র বিশেষ নাই,
এবং ক্ষান্ত সারিধ্য ক্ষান্স্যা পাঠলক আনভ্যা বা সারিধ্য বধন ক্ষারণ কর্মাণ

^{(&}gt;) তাৎপর্যা—'আডকর' বশবিধনংভারের অক্তব সংভার। পুত্র-সভান ভূমিট হইবা-মাল, পিভাকে এই সংভার সম্পাদন করিতে হয়। এই সংখ্যারে সংজ্ঞাভ নিওকে প্রথমেই পর্বপাত্রন্থ যুক্ত নেহন করাইকে হয়, পরে ভক্তপান করাইকে হয়, যুক্ত ভোজনের পুরুষ্ণ নিককে আরু কিয়ুই থাইকে দিবে না।

क्षेत्रपार्थात्रकार्याः वास्त्रपार्थः।

উংশক্ষণীয়। ব্যাখ্যা-সৌকর্যাও ঐশ্বন অসমন্দেশ্য অপন্ন কান্তব্যুক্ত নাজার বাহার পৌর্বাপর্য আছে, পৌর্বাপর্যজ্ঞানে লে সমূহরের ব্যাখ্যা করিকেও প্রবিধা হয়, কোন কট হয় না, এবং ঐশ্বনে ব্যাখ্যা করিলে বৃদ্ধিবার পঞ্জেও বিশেষ সাহাব্য হয়। ১২

"তবিষ্ দৰ্বং প্রতিষ্ঠিতং বজ প্রাণিতি, বজ ন" এই অংশের বর্ব কি, ভারা বলা বইতেবে—বাহা প্রাণণারণ করে অর্থাৎ বাদ প্রধানারি প্রাণ-চেষ্টা করে, এবং বাহা প্রাণ বারণের চেষ্টা করে না হাবর—পর্বতপ্রভৃতি, অধ্যান্ত, অবিভৃত ও অবিবৈশ্বতাত্মক দেই নিবিল জগৎই ভারাতে—হুত্তে প্রতিষ্ঠিত বা আপ্রিভ; বাহা বলা বইণা, ভারণ বে, লোকপ্রণিত, প্রনিত্তিজ্ঞাপক বি-পত্নে ইবা হাভিত কইবাত্ম। ভাল, পর:-জবাটী সর্বাজগতের আপ্রার হয় কিরণে গুবে বেভু, উবা কারণ; এবানে কারণ মর্থ অন্তিবোত্তারি কর্মনিশালক; এই নিবিল জগৎই বে, অন্তিবোত্তারি কর্মে প্রায়ত্ত পরিশাস্ত্র বাহুতির পরিশাস্ত্র বৃদ্ধানা উক্তপ্রকার প্রনিত্তিগাণন করা মৃক্তিসক্ষতই হইরাছে: ১০

্শপরাপর রাজপেও এই কথা বলিরা থাকেন—সংবংসরকাল কৃষ্ণ থারা হোন করিলে প্রমারণ এর করে; অভিপ্রার এই বে,এক বংসরে অরিছোত্রবাপের আহতি বর—তিন শত বাট, [আবার সারংকালের আহতি থারলে স্বান্ট সংখ্যাও এতত্ত লা; ত্বভাং] সংবংসবের দিন ও রাত্রি বিলিত হইরা বাত্রতা ইন্টিবন্ধপ (বাপহানীর) নিশার হয়; ভাহারা সংবংসরাত্মক অন্তিসংক্ষক প্রাণ্ডির প্রাপ্ত হয়; এই প্রকার চিভাপ্র্যক্ত এক বংসর হোন করিলে প্রমৃত্যিকে কয় করে, অর্থাৎ বহলোক হইতে প্রস্থান করিলা ত্বেলাকে অন্ধ থারণ করিরা—পুনর্যার আর বরে না, বেনের ব্যান্থণসূত্র এই প্রকার ব্যান্ত্র। আক্ষেম। ১৪

কিন্ত এইরূপ বৃথিবে না অর্থাৎ এরপ বলে করিবে না বে, বে বিবে বোন করে, ঠিক নেই বিনই পুনর্বারণ কর করে, আর সংবৎসরবাণী হোবের অপেকা করে না; এইরপ জানলাভ করিরা জানবাৰ পুরুষ পুনবুরিণ কর করে, পূর্বে বে মলা হইরাছে, এই সময় জগৎই আহতির পরিবানসকল; স্কুলরাং সমস্ত জগৎই আহতি-সাধন পরেতে অবহিত (হুয়ালিত ; সভএব এক বিনেই অর্থাৎ এক্লিন্নাল্ল হোবেই স্ব্রাক্যকাশ্বভাব লাভ করিবা বাকে,

ন্ধান্তভাৰথাতিতে বে, বৃত্যুকে জন্ন করে, ভাষার বেরু কি পু বলিভেডি
—বেংছে, সে লোক সারং ও প্রাভঃকানীন আছডি-স্বর্গণ বাবা সমস্ত বেবভার উলেন্ডে সমস্ত জনাভ অর্থাৎ ভক্ষীর ক্রয় প্রধান করে; অন্ত এব ইয়া যুক্তিযুক্তই বটে বে, সমস্ত ক্ষেবভার অন্তরণে আগনাকে আছভিষয় ক্ষিয়া—সমস্ত বেবভার সকে একাত্মভাব বা অভিন্নভাব প্রাপ্ত ক্ষিয়া—বিশ্ব বেবভার সকে একাত্মভাব বা অভিন্নভাব প্রাপ্ত বিশ্বে স্বর্গবেশমন্ত ইয়া পুনর্মার আর মৃত্যু লাভ করে না। বরং প্রাত্মপঞ্জ কর্মা ক্ষিয়াছেনে 'বিন্তু বৃদ্ধা ভগতা করিয়াছিলেন; ভিনি মুক্তিও পারিলেন বে, ভগতাতে অনম্ব কল লাভ হয় না; আন্তি প্রভাবের উল্লেখ্যে আগনাকে এবং কৃত্যমূহকেও আনাতে আহতি প্রদান করি; অন্তর্গবের আগনাকে এবং কৃত্যমূহকেও আনাতে আহতি প্রদান করি; অন্তর্গবের ব্রেইন্থরণ বারাজ্য আবিপতা লাভ করির'ইভি। ১৬

'সর্বাহা কৰিত কইবাও সেই অনসমূহ কর প্রাপ্ত কর না কেন গু' এ কথার অর্থ এইল্লপ—পিডা বে সমনে সপ্ত প্রকার কর কটি করিয়া বিভিন্ন প্রাণীর উল্লেক্ত ভিন্ন ভিন্ন প্রধান করিলেন, সেই সমর কটতেই সেই সমন্ত ভোজ্ব-প্রকর্ত্তক অনসমূহ নিরক্তর ভব্তিত চইতেছে; অতএব করের কারণ বিভয়ান বাকার সে সমূরারের কর হওরাই উচিত; অবচ সে সম্ভ অন্ন আনও কর প্রাণ্ড কর-ভগতের অক্রন্তপে অবহিতি কেবা বাইতেছে; অভএব, ইহা কর না কইবার একটা কারণ অবশ্বই বাকিবে; এইলছ জিজাসা ক্টতেছে বে,কি কারণে সে সমূহর অন্নে কর ক্টতেছে না গুড়

ইবার প্রস্তান্তর এচ—"পুরুষঃ অকিতিঃ", ... এই পিতা প্রথমে বেমন কাম ও পদ্মীসাপেক পাঙ্ক কর বার। উক্ত অন সমূহের সৃষ্টি ও ভোগ করিছে সমর্থ ইইরাছিলেন, তেমনি তিনি বাহামের উদ্দেশ্তে অরপ্রান করিয়াছেন, তাহারাও নিক্তঃই সেই সমুদ্ধ অন্নের ভোকা ও পিতা (প্রহা) বটে; কারণ, তাহারাও বার কাম ও কর্ম বারা সেই সমুদ্ধ অন উৎপাদন করিতেছে। সেই এই কথাই বলা হইতেছে বে, পুরুষ—বিনি অর ভোকন করিয়া থাকেন, সেই ভোকাই অক্ষিত্ত অর্থাৎ অনুক্ষর না হইবার কারণ। তাল কথা, এই পুরুষই অক্ষরের হেছু হয় কি প্রকাশে? তর্মনের বালতেছেন—বেহেছু, এই পুরুষ (জীবনণ)

শত এব বৃথিতে হইবে বে, জান ও ক্রিরা প্রবাহান্ত্রগত, কার্য্য-কারণারক ও ক্রিরাফল্যরপ এবং সমষ্টিভূত বহুপ্রাণীর কর্মজ্ঞ বাসনা হইতে সমুৎপর বলিয়া ক্ষিক, শতৃত্ব, নহা-ক্রেডে: ও জনপ্রবাহের তুলা, কহলীপ্রস্তের ভার শসার (সভ্যভারহিত) গলের ক্ষেনা, মারাময় মরীচিকা ও ম্বপ্রাহি সদৃশ, কিছ তথাপি, সংসারাসক্ত প্রান্ত লোক্সিগের নিক্ট শবিক্তভাবে শবহিত নিত্য সারবানের ভার প্রতাত হইরা থাকে; লোকের জ্বন্থে বৈধাসাসমুৎ-পাসনার্থ "ধিরা ধিরা জনরতে" কথার এই তত্তই জ্ঞাপন করা হইভেছে। এইরপে বিবর-বিরক্ত লোক্সিগের মন্ত চতুর্থ পর হইতেই প্রস্থবিদ্যার প্রতাবনা শার্মজ্ঞ করা সম্পত হটরাছে। ১১

"বো বা এতার্লিতিং বেছ" ইতি। বথাক্ত ব্যাব্যা বারাই অপর
অন্নরের ব্যাব্যা নিশার হইরা সিরাছে; এইরপ বনে করিরা প্রতি সেই
আরত্নের তথ্যিক্রানের কথা না বনিরা কেবল কলের বাত্র উপসংহার
করিতেছেন,—বে ব্যক্তি এই অঞ্চিত অর্থাৎ অরক্ষর না হইবার ব্যোক্ত
কারণ অবপত হন, পুরুবই এই অরসমূহের অঞ্চিত, পুরুবই বার কান ও
কথ বারা পুনঃ পুনঃ এই অরস্টি করিয়া বাকে; পুরুব বহি হাই না করিত,
তাহা হইলে নিশ্চরই অন্নের কর হইরা বাইত—এই রহত কানেন, তিনি
প্রতীক বারা অন্নতক্ষণ করেন। এ কথার অর্থ বলী হইতেছে—মুখ অর্থ —মুখা—
প্রাথাত্ত; বেলোক অরক্ষা পুরুবকেই অক্ষরে প্রধান হেতু বলিয়া কানেন,তিনি
আর ভোগ করেন, কথনই অন্নের অর্থান হন না, অর্থাৎ ব্যোক্ত বিভাসশ্যর
পুরুব অরসমূহের আয়াভূত হইয়া অরসমূহের ভোকাই হন, কিন্ত কথনত অঞ্চ

ত্রীণ্যাত্মনেহকুরতেতি মনো বাচং প্রাণ: তাভাত্মনেই কুরু তাভত্রমনা অভূবং নাদর্শমন্তত্রমনা অভূবং নাজোবমিতি নন্দ ভ্ৰেব পশুতি মনসা শুণোতি।

কাম: দক্ষরে। বিচিকিৎসা আত্মাহজ্ঞার প্রতিরপ্পতিত্রীধী-ভীরিত্যেতৎ সর্বাং মন এব, তত্মাদুপি পৃষ্ঠত উপস্পৃত্তো মনসা বিজ্ঞানাতি, য: কন্চ শব্দে। বাগেব সা।

ত্ৰা হস্তমাণ্টেবা হি ন, প্ৰাণোছপানে। ব্যান উদান: সমানোছন ইভ্যেত্ত সৰ্কাং প্ৰাণ এবৈতন্ময়ে। বা অয়মান্ত্ৰা বান্ধাৰো মনোময়ঃ প্ৰাণময়ঃ য় ৫৭ ৪ ৩ ॥

ज्ञाकार्याः—"वीम जावान ज्ञाक्त" वेकि. [वेवर वावीक्षापाः वाक्रिये—] यवः वाक्र वान् —कांन (वीन ज्ञानि) ज्ञान्तरं (ज्ञान्तरं (ज्ञान्तरं) ज्ञान्तरं) ज्ञान्तरं (ज्ञानरं) (ज्ञान्तरं) ज्ञान्तरं (ज्ञानरं) (ज्ञानरं) (ज्ञानरं (ज्ञानरं) ज्ञानरं (ज्ञानरं) (ज्ञानरं) (ज्ञानरं (ज्ञानरं) (ज्ञान

वाक् ववः [णठः वाठः कःवाव् छेडारठ—] अया (वाक्) वि (अव) खखर (वाठाः 'छथानिनिविदः) खाव वाः (खद्यपठा —वद्धवा श्रकानिका), वि (वचादः) अयः वाक् शृतः व [खड शकाडा] । [खर्पयानीः शांवप्रहातः गावप्रहि—] शांवः (प्रवनागिकाविद्यानवर्ते वाष्विरावयः) ख्यांतः (खर्पायायो), वाग्तः (गर्वर्वर्वको), छेशांवः (छेदकः व्हरूः, गथांवः (श्रक्कविश्वावि-शविषायरक्ष्यः), खनः व्यावानार (ठडेशगांवावः वेठि अष्ठः गर्वः शांव अव, (व व्यावाविद्यित्वादकः वेठि अष्टः श्रवावयः शांवयः हेडार्थः ॥ १०१०

মালাম বাদে "ত্রীণি আজনে অকুক্ত" এই বাব্যের অর্থ বলিতেছেন [আদিকরা:] মনং, থাক্ ও প্রাণ, এই ভিনটা অর আজার জন্ম পৃথি করিয়াছিলেন : [লোকে বলিয়া খাকে—] আমার মন অন্ধ্র বিধয়ে ছিল, তাই শুনিতে পাই নাই', [ইহা হইতে বুঝা য়াইভেছে যে,] মন বারাই দর্শন করে, এবং মন ছারাই প্রাণ করে। তাহার পর, কাম (ভোগাভিলাম), সকরে (ভাল মন্দ চিন্তা বিচিকিৎসা (সংশয়), প্রজা (শাল্রে ও আচার্য্যা-বাকো দৃট্ বিশ্বাস), অপ্রত্ম (প্রজার বিপরীত), য়ভি (বৈর্যা), অর্থান্ড (বিধ্যা), অর্থান্ড (বিধ্যার বিপরীত), য়া (লক্ষা), বা (বুজিরুত্তি) ও তা (ভয়). এ সম্প্র মনই (মনেরই ধর্ম্ম); কেই কারণেই পন্দান্তালে কেহ স্পর্শ করিলেও বুজিতে গালে যে, [ইহা-দিগের স্পর্শ]। বে কোনও রকম শব্দ, ভাহা বাক-ই (বাক্যের অর্থান্ড, কিন্তু ইহা অপরের প্রকাশ্য নহে। ভাহার পর, প্রাণ, অপান, ব্যান, উদান, সমান ও অন—এ সমস্তেও প্রাণুই; আত্মান্ড এডস্কর, বাঙ্মর, মনোময় ও প্রাণময় অর্থাৎ বক্ত্ মন ও প্রাণই ভাহার বিশেল্য সাধন য় ৫৭ য় ৩।।

স্পাক্ষেক্সভাক্ষা ম। পাঙ্কত কৰণ কৰত্তানি বানি আণ্ডা-ছাপকিস্তানি, তানি কাৰ্যাভাৎ বিতাপবিষয়ভাক্ত পূৰ্বভ্যোহয়ে তাঃ পৃষ্ঠং-ক্টানি; ভেষাং ব্যাব্যানাৰ্থ উত্তয়ে এছ লা আছণপবিশ্যাজ্যে। আন্যান্ত্ৰেভ্তি। কোহতাৰ্থ: শৃষ্ঠাচাজ্যে—মনঃ বাক্ আণ্ডা, এতানি बीराशिन ; णानि गरमः गाठर आर्थक जान्यस्य जान्यार्थसङ्क्रक कृष्टवान् ऋहै। जारको भिष्ण । >

তেবাং বনসোহতিকং বন্ধপক প্রতি সংশ্ব ইভাত আব—অতি
ভাবং বনঃ প্রোজিবাত্তকরণগতিরিক্তব্; বত এবং প্রসিত্ত্ব—বাত্তকরণবিবরাত্মস্বতে সভাপি অভিনুধীভূতং বিবরং ন সূত্রাভি, কিং বৃষ্টবানসীবং
ক্রপন্? ইত্যুক্তো বহুতি—অভ্যানে সভারং বচঃ ইত্যুক্তঃ অভ্যাননা
আসং নাধান্, ভংগেবং প্রতবানসি ব্যারং বচঃ ইত্যুক্তঃ অভ্যাননা
অভ্যাং নাপ্রৌবং ন প্রতবাননীতি। তথাত্ বভাস্থিবে। ক্রপাত্মিরংবসমর্বভাপি সভক্তম্বাবেঃ অববিবরস্বত্বে ক্রপাত্মানিকানং ন ভবভি, বভ
ত ভাবে ভবভি, ভবত্রতি মনো নামাত্যকরণঃ স্কাক্রণবিবলোপ্রামীভাবর্গস্তে। তথাৎ সর্কো হি লোকো বনসা ভেব পশুভি মনসা প্রোভি,
ভবাপ্রত্বে কর্ণনাভভাবাং। ২

অতিকে সিত্তে ননসং বর্ষপাথবিদমূচাতে—কাষং জীবাতিকরাভিলাবাজিং, সম্বন্ধ প্রত্যুপত্তিতবিদ্ধবিক্ষনং শুক্লনীলালিভেলেন, বিচিকিৎসা
সংশব্দানন, প্রদ্ধা অনুষ্টার্থেব্ কর্মপু আজিকাবৃদ্ধির্কেণতানির চ, অপ্রদ্ধা
ভাষপতীতা বৃদ্ধিং, মৃতিঃ বারণং—কেরালবিদানে উত্তর্জনন্য, অমৃতিঃ ভাষপর্যারঃ,
দ্রীঃ কল্পা, বীঃ প্রজা, ভীঃ ভরম্, ইত্যেতৎ এবমানিকং সর্বাং মন এব—
বনসোহত্তাকরণস্য জণাণোতানি। মনোহজিত্তং প্রভাল্লক কারণমূচাতে—
ভঙ্গারনো নামান্যালাকরণন্য, বজাৎ চক্ষো হুপোচরে পূর্ততোহপ্যাপশ্রীঃ
ক্ষেনিহিৎ হত্তভারং লালঃ আনোরম্বিতি বিবেকেন প্রতিপত্তে; বলি
বিবেকক্সানো নামান্যালি, তাঁল ব্লাম্যেণ কুতো বিবেকপ্রতিপত্তিঃ স্যাৎ;
বল্পবিক্রপ্রতিপত্তিকারণম্য ভ্রমনঃ। ৩

অভি তাৰলন:, শরপক তসাধিগতন্। ত্রাণারানী চকক্তানি কর্মণাং মনোষাক্রাণারানি অধাাত্মনিভ্তমবিদৈনক বাচিবাসিতানি। ভত্তা-বাাজিকানাং বামনঃপ্রাণানাং মনে। ব্যাখ্যাতম্। অবেদানীং বার্জনো-ভাারভ্য—বঃ কলিলোকে শক্ষো ধ্যনিস্তালালিবালাঃ প্রাণিভির্মাণিনিক্সনঃ ইডরো বা বাহিত্রবেলাহিনিবিজ্ঞা, সর্কো ধ্যনির্মাণের সা। ইবং তাব্যাচঃ শ্লেপস্ক্রমন্। ৪

অব তলাঃ কাৰ্যসূচাতে —এবা বাস্ বি বসাস্ অভযতিবেয়াবলানযভিবেয়-নিৰ্বন্নৰ আয়ভা অসুপতা, এবা পুনঃ ব্যৱভিবেয়বৎ প্ৰকাশ্যা অভিবেয়প্ৰকা- শিকৈৰ প্ৰকাশাস্থকতাৎ প্ৰবীপাছিবৎ; ন বি প্ৰবীপাছি প্ৰকাশ: প্ৰকাশাস্তৱেৰ প্ৰকাশুন্তে, ভৰৱাৰ্ প্ৰকাশিকৈৰ বৰং, ন প্ৰকাশ্যা-ইত্যানবহাং প্ৰতিঃ পৰি-হয়তি এবা হি ন প্ৰকাশ্যা, প্ৰকাশক্ষবেৰ বাচঃ কৰি।বিভাৰঃ ৷ ৫

चर्य श्रीय উচাতে—श्रार्था यूथनानिकान्यभाषी। स्वष्ट्रिक्तः व्यवस्तर्थः व्यापः । चर्यस्ताया व्यापः व्यापः । चर्यस्ताया व्यापः । चर्यस्ताया व्यापः । व्यापः ।

ব্যাব্যাতাভাগান্তিকানি মনোবাক্প্রাণাব্যাভ্রানি; এচকর প্রভবিকারঃ প্রাণাপতৈারেটেকাভ্যনংপ্রাইণরারকঃ কেঃহ্যাব্যং কার্যকারণস্কাতঃ পূ আলা পিও আয়ুবরপরেনাভিষ্টোহবিশেকভিরবিশেবপৈচকর ইত্যুক্তভ বিশেষেণ বাল্যো সনোব্যঃ প্রাণময় ইতি ফুটাকরণমূহ ৫৭ ৪০ ৪

টীকা। সাধনারক বয়চতুইর বয়াক্ষরকারণবন্দিভিত্ব গুণাঞ্চলেণ পুরুষোপাসবঞ্চ করা চোক্ষবিদানীয়া রাজপ্রবাধেকর রুজ্জ ভাংপর্বাধান পাঞ্জুক্ত ভাংপর্বাধান পাঞ্জুক্ত ভাংপর্বাধান পাঞ্জুক্ত ভাংপর্বাধান বাচাই—ত্রীপ্রজ্ঞানিক্ষা। বাজপ্রকাশ বর্ষাকর বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ করিবলাল বিভাগ ব

অন্তরেভাদি বানার্পাদতে তেন্সামিতি। বল বিভারণার্থা ওর বন্দাহছিত্বাক্রে নাবছিত — অত্যি তাবাদিতি। আরেন্তর্গর্বনারিবে সভাপি কর্যাচিকেবার্থীক্রার্থানা ক্রেন্তর্গান্তিপতি ন চাণ্টানি তরিতি বৃক্তং, ভক্ত বৃইনন্দানিবান্তর্গান্তরাল্যান্তর্গানিবান্তিরে
ক্রান্ত্রালাচিকেবান্ত্রপতি নালকরণান্তিরিকারে বিষয়প্রাহি কর্যানিত পেরঃ। ভাবের প্রনিভিত্নান্তরালিকারে বিষয়প্রানিকারিকারে কর্যানিকার্ত্রালাচিক বার্থনান্তর প্রক্রিকারে কর্যানিকার্ত্রালিকার বিষয়প্রানিকার কর্যানিকার বিষয়প্রানিকার বিষয়প্রানিকার বিষয়প্রানিকার বিষয়পর বিষয়প্রানিকার বিষয়প্রানিকার বিষয়প্রানিকার বিষয়প্রানিকার বির্বাহিত স্বর্গানিকার বিষয়প্রানিকার কর্যানিকার বিষয়প্রানিকার কর্যানিকার বিষয়প্রানিকার ভালিকার বিষয়প্রানিকার ভালিকার বিষয়প্রানাক্ষর বিল্লা বিষয়প্রানিকার ভালিকার বিষয়প্রানিকার ভালিকার বিষয়প্রানিকার ভালিকার বিষয়প্রানিকার ভালিকার বিষয়প্রানাক্ষর বিল্লা বিষয়প্রানাক্ষর বিল্লা বিষয়প্রানাক্ষর বিল্লা বিষয়প্রানাক্ষর বিল্লা বিষয়প্রানাক্ষর বিল্লাকার বিল্লাকার বিষয়প্রানাক্ষর বিল্লাকার বিল্লাকার

কাৰাবিবাকামবভাৱা বাহুৰ্বানু বনসঃ বন্ধাণ এতি সংগ্ৰহ নিৰভতি – আছিল ইডি।

আন্তাৰিবৰদানানিক্তি। বিবজিতোহনেতি সভা সনোৰুজ্যোন্তেভবুণেডোণনংহনতি— ইক্ত্যেক্তান্তি। বৈভঞ্জুতুৰং ননো ভোজু দৰ্মনান্তানানাৰ্তান্তে বিষ্ঠত ইভাতি-শ্ৰেন্তানিত্তি। ভালতি নিৰ্মেশ কৰণমন্ত্ৰ নিৰ্মিতি। ভংগাভংগালণং জ্যোন্ততি— শ্ৰুমানিতি। ভালতি বিবেদ কাৰণমন্ত কৰণমিতি সৰ্ভাঃ। চজুবসন্তানান্ত্ৰেম আৰ্থ-বিশেষাদৰ্শনেহণি সন্তানুক্ত্য বচা বিমাণি মুমানিক্তেশনং ভাতিভাগভাতি—মানীতি। ক্ষান্ত আৰ্থনান্ত্ৰাবিষ্টে বিবেচন ভাবেলানিভাৰ্থঃ। বিবেচনে কাৰণান্ত্ৰেম স্থাণি কুভো ননঃনিভিতন্ত্ৰাহ—মন্তানিত্ত। ৩

বৃষ্ণং করিবতি—অন্তি ভারাদিতি। উত্তরপ্তরণভারারন্তুং জুনিকাং করেনি—
ক্রীনীতি। এবং জুনিকারারভাগানিক বাশ্বাখানার্বং থং কক্ষেতানি বাকাখানার
ব্যাকরোতি—অন্থেত্যকুদিনো। শলপর্বাছে। ধ্বনিধিবিধা বর্ণারকোহবর্ণায়কত।
ভজ্ঞান্তো ব্যবহর্তভিভাগানিস্থানবাজাে বিভীছে৷ খেবাদিকৃত:। স সর্বোহাণ প্রকৃতা
বাসেবেভার্য:। প্রকাশক্ষাজং বানিভূম্বাভক্ত প্রধাণবাহ—ইদ্রং ভ্রোক্রান্তা। তথাকভিবেহনির্বাহক্যানাব্যকাশার্হতি শেব:। ১

বাচাহর্ণি প্রকার্ডনার করা প্রকাশকরাত্র বাগিজ্যুক্রিভাশিক্যান প্রক্রোতি।

কুটাজ্য সর্ববিদ্ধে নাম প্রতি । প্রকাশকরের সঞ্চাত্রবেছি লেবঃ। প্রকাশিকাশি

বাজ্যুকার্ডা চেন্তত্রাশি প্রকাশকার্ত্রবেট্রানিত্যুনবন্ধা ভাল্পরিনাসার্ব্রেয় হি নেতি ফ্রাভিঃ

প্রকাশকরাত্রয় বাগিজ্যার। বশর্মির্জায়কস্তর্শনার ভাল্পরা প্রকাশকর কার্যার

কুল্লান্তে, ভার বাচঃ কর্মশবস্থা ভবেবেত্যার নাড্রানিস্ক্রা। ব

আধ্যান্ত্ৰিক প্ৰাণে বিষয়ং বাকাসবতাৰ্থা বাকেলে ভি—অহ্প্ৰান্ত। বুৰাকে নকাৰ্থা সকলবাৰ্থা ক্ষমবাৰ্থাক ক্ষমবাৰ্থাকী হ' বায়ুবৃত্তিঃ, তত্ৰ প্ৰাণৰক্ষমবৃত্তে নিষ্ক্ৰমান-প্ৰশাস্থাকী হ'ল বায়ুবৃত্তিঃ, তত্ৰ প্ৰাণৰক্ষমবৃত্তে নিষ্ক্ৰমান-প্ৰশাস্থাকী ক্ষমবাৰ্থাক নিম্বৰণাদিতি বাবং। ক্ষমবাৰায়েক বালাপানহানিম্বৰণ ক্ষমিক্তি ভবোভঃ। বাৰ্থান্ত্ৰেক বালাপানহানিম্বৰণ ক্ষমবাৰ্থাতি ভবোভঃ। বাৰ্থান্ত্ৰেক বালাপান্ত্ৰান্ত্ৰিমান ক্ষমবাৰ্থাক প্ৰকৃতিকাৰ্ণাচ্ছ— অনুকৃতিকাম্নিতি।

তথাপি তৃতীয়ন্ত আপৰ্যনত ভালাং পুৰক্তিবিভাগৰভাৰ—প্ৰশ্ন ইন্তীতি। নাধা-বশানাবাৰপত্তীব্যান্ আপ ইতাপৌনকজানিভাৰ্য:। মনসো দৰ্শনানিষ্ধাচোছভিধের অকাশন-বচ্চ আপ্ৰাণি কাৰ্যাং বক্ষবানিভাগৰভাৰ—কৰ্মা চেতি। ১

এন্তন্ত্ৰর ইন্তান নরটো বিকারাধ্যং বৃত্তসভার্ত্তনপূর্বকং কথৰতি আক্রাক্তান নীতি। আধ্যান্তিকানাং বাগাদীনাননারককর নারগতি প্রাক্তাপতৈতান্তিতি। আন্তবস্ত্রপুং প্রপূর্বক্ষনন্তরনাকোন নির্দারগতি—কোধজাতিতি। কার্যকরশনজ্ঞাতে কথনান্ত্রপঞ্জনিত্যাপভ্যাহ—আজ্ঞান্তরনাপত্তেসেতি। বাধ্বর ইন্ডাাধিবাধ্যভ পূর্বের পৌনসভানাপভ্যাহ—অজ্ঞিশেষ্টেমেস্তি। বা

ভাস্থাসুত্রাদে।—পূর্বে পাঙ্ক কর্ণের ফল বরণ যে ডিনটি অল্ল উলিখিত বইয়াছে, সেওলি নিজে কর্ণনত এবং ভাবাদের বিষয়ও

टापरमाध्याम् -- नक्षर खायानम् ।

(কার্যাও) বিভাবি (বহু), এইকড় পূর্ববর্তী সমস্থ্য সংপক্ষা ব্যস্তাভি উৎস্থাই; সেই সমস্রেরের ব্যাব্যার কড় পরবর্তী সম্প্র প্রাত্তপ আরম্ভ হাঁতেছে। "ত্রীপি স্বাত্তমে অকুক্ত" এই প্রতির স্বর্থ কি, তাহা বলা হাঁতেছে— যনঃ, বাক্ ও প্রাণ, এই তিনটি স্বরঃ পিতা প্রবাহে বনঃ, বাক্ ও প্রাণ এই তিনটি স্বরুপ্তি করিয়া স্বাণনার কড় বিশিষ্ট করিলেন। >

क्यारा मानव मक्कि क प्रवत विवास लाकित मानद माहि : बहैक्स विनारण्डम — (अविशिव विश्वित विश्व विकास विनार क्षेत्र विकास चारक: (बरवफु: এटेब्रम मांक श्रीमिक चारक रव, वहित्रिक्तित ७ वाक विवस्त्रत नहिल बाखाव नवक नायकिल वहेरन व हेल्लियन तन विवास त तार कार कार (वयन -- 'फु'व कि बड़े ज़नहि पर्यन कतिबाह ?' बड़े खकाद किलानिक इडेबा लाटक बिनता वाटक दव, जामात यम जन्न विवाद महिविष्टे किन. विवशास्त्र मिथिडे कि बाजाय चानि देश क्वि मारे : त्रहेडल, क्वि कि আষার উচ্চারিত এট শব্দ ও'নিংছি গ' বিজ্ঞাপা করিলে লোকে বলিয়া बारक.- 'बाबाद यम बन विवाद हिन, जारे (काबाद मन) छमिए शारे নাই।' অভএৰ বুবাইতেছে বে, চকু: প্রভৃতি ইক্সিন্সির দ্বপঞ্জতি বিবন্ধ-গ্ৰহণে সমৰ্থ ছইলেও এবং নিজ নিজ বিষয়েব স্থিত সম্বন্ধ লাভ করিলেও वाहात अमृतिधान क्रम ७ म्यामि विवाद काम हव मा : अवह वाहात मृतियान थाकिएन क्रम ७ मचापि विषय कान दर, ठम्पः अन्छि, देखिराव चिछिविक এবং সম্বন্ধ ইল্লিয়ের বিষয়গ্রাহিকাশজ্ঞির সহায়ত্তত মনঃ নামে একটি শতম অল:ভবৰ আছে। অভএব, মনের বাগ্রতাবছার বর্ণন ছর্ণনাছি ব্যাপার विष्णत इह ना. छथन बत्नत महाराहे (व. मकन लारक वर्षन ७ अवन कृतिशाबादक, हेश अवजरे बीकात कृतिए सरेटन। २

এইরংপ বনের অভিত প্রথাণিত হইল, এখন তাহার স্বরুপবিজ্ঞানার্থ এই কথা বলা হইতেছে—কাব—ত্রীসবালিকনাদির অভিলাব, সংকল্প-সমূধে উপন্থিত বিধন-বিধরে বিকল্পনা অর্থাৎ ইং। শুক্ল বা নীল—ইত্যাদি বিভর্ক, বিচিকিৎসা—সংশ্বাত্মক আন, প্রভা—অভূটার্থ—পূধাপাপাত্মক কর্বে এবং ক্ষেতা প্রভৃতি বিধরে আলিকাবৃদ্ধি (সভাতাজ্ঞান—বিধাস), অপ্রভা—প্রভার বিপরীত, বৃতি—ধারণ করা অর্থাৎ ক্ষেত্মির অবসম্ভাক্ষার উত্তল—উত্তেশনা করা : অমৃতি—বৃত্তির বিপরীত, হ্রী—লক্ষা, বী—প্রক্রা অর্থাৎ বোধ-প্রভিক্, ভী—ভং, এ সম্বন্ধ বনই, অর্থাৎ এ সম্বন্ধই সভাকরণ মনের স্কলণ ।

বনের অভিতবিশ্বরে আরও কারণ বলা হইভেছে—বেহেড্ চক্সুর অগোচরে অর্থাৎ বে ছান চক্ষ্ ছারা হেবিতে পাওয়া বার না, সেরপ ছামেও বলি কের পার্লা করে, ভাবা হইলেও কেবল মনের সাহাব্যেই বিস্পষ্ট রূপে বুরিতে গারা বার বে, এটি হন্তের স্পর্ল, কিংবা এটি আফুছেশের স্পর্ল ; ইহা হ'তেও মনোনামক অভঃকরণের অভিত প্রমাণিত হয়। বলি অফুভবগত পার্বকা বোবের উপায়ন্তরপ মন না থাকিত, ভাচা হইলে ওধু অগিলিরের সাহাব্যে কথনই ঐরপ বিবেকবোধ হইত না ; অভ এব বুরিতে হইবে যে, যাহা ছারা ঐরপ স্পর্ণবিবেক নিস্পন্ন হইরা থাকে, ভাচাই মন। ৩

বনের অভিত সাধিত হইল, এবং তারার স্বরূপও নির্নাতি বইল;
অভগের কর্মের ক্ষম্মান অধান্তে, অবিভূত ও অবিহৈবান্ত্রক সনঃ, বাক্ ও
প্রাণনামক অন্নত্রের ব্যাখ্যা করিতে হইবে; তল্পখ্যে আধ্যান্ত্রিক বাক্,
মনঃ ও প্রাণ-নামক অন্নত্রের মধ্যে মনের স্করণ ব্যাখ্যাত হইরাছে, ইহার পর
এবন বাক্-নামক অন্নের স্করণান্তি বলা আবস্তুক; এতলর্থে পর্বর্জী বাজ্যের
অবভারণা করা হইতেছে।—অপতে বে কোন প্রকার শক্ষ — প্রাণিপণের কঠ
ও তাল্ প্রভৃতি স্থানে অভিবাল্য অকারানি বর্ণায়ক ধ্রনি, অধনা বাভ্যয় ও
বেখানি-সমূখিত সভা প্রকার ধ্রনি, (১) সে সমন্ত ধ্রনি বাক্ট অর্থাৎ বাক্
হইতে পৃথক্ পলার্থ নহে। ৪

শতংশর তাহার কারা বলা হইতেছে—বেংচ্ডু এই বাক্ পঞ্জেন— শতিবাহাবসানের পর্বাহ বাচার্য নির্বাহর প্রস্থাত; পতিবের বা বাচার্য বেষন বাক্যের প্রকাশ্ত, এই বাক্ কিছ সেরণ কাহারো প্রকাশ নহে, পরস্থ বাক্যার্থেরই প্রকাশিকা; কারণ, বাক্ হইতেছে—প্রকাশিদির ভার সকাশ-প্রভাব; প্রকীণ প্রস্তৃতি প্রকাশ বা আলোকপরার্থ কবনও প্রপার প্রকাশ হারা

⁽১) ভাবপর্যা—পদ্ধ সাধারণতঃ ছাই একার, বর্ণ ও থানি। ওলবো বর্ণান্তক পদ্ধানি কঠ ও ভালু একৃতি ভালে আভারনীৰ বাবুর প্রেবণা বারা অভিবাজ করা বাবে। বে বর্ণ হৈ ভানের অর্থে পাইরা বাকে, ভারাকে সেই নাবে অভিবিভ করা ব্যঃ বেবন—'অ', কর্ম্য, 'হ' ও বিমর্ম, ইবারা কঠের সাহাব্যে অভিবাজ হব বনিরা কঠার্মণি। বর্ণ উচ্চা-রণের ভাল আটটি, ববা,—'অটে) ছানানি বর্ণামানুরঃ কঠঃ শিরভবা। জিল্পান্সক বভাল নানিকোটক ভালুকা।" এভবভিবিজ আর এক একার শব্দ আছে, ভারার নাব কানি। খানি-বৃদ্ধ সাধারণভঃ আবাভবাত্রের করা; বৃদ্ধানি বাভ্রুবন্ত ও অভাভ বন্তর প্রশান আবাতে এই অনির ভাই ব্যুবা বাকে। ভাই বিশ্বনাধ বনিরাহেন—"প্রাণা আবিজ্ঞ বৃদ্ধানিত্রে।

প্রকাশিত হর না, তেবনি এই বাক্ও অপরেরট প্রকাশক হর, কিন্তু নিজে কাহারও প্রকাশ্ত হয় না। এইরপে প্রতি নিজেই আর্শন্তি অসবস্থা গোরের পরিহার করিয়া বলিতেছেন—নিশ্চরই এই বাক্ প্রকাশ্ত নহে; প্রকে প্রকাশিত করাই ইবার কার্যা (২)। ৫

অভংগর প্রাণের কথা বলা হইতেছে—প্রাণ অর্থ—সুথ ও নাসিকাপ্রাদেশে সঞ্চরণনীল ক্ষয়ত বার্বতি বা বার্ব ব্যাগারবিশেব; সম্প্রিকে
নিঃসরণ করে ব লয়া—প্রাণনাথে অভিহিত হয়; অপান অর্থ—অধ্যেশেগারী
বার্বতিবিশেব, মলসুত্রাদি অপানরন করে বলিয়ঃ অপান নামে অভিহিত
হয়; ক্ষর হইতে নাচিনেশ পর্যন্ত ইবার প্রচারতার লান। তাহার নাম বাান,
বিশেষরপে সংখ্যন করা বাহার কার্যা; বাান বার্ত্ত প্রাণ ও অপানের সন্তিভানীয় এবং বার্যাসাথা কর্মের নিশালক; উদান—উত্তর্বপে উর্ক্রমান্তি
কার্যা নিশালনের হেতুস্করপ—উর্ক্রপারী, পালতল হইতে মুক্ত পর্যন্ত
ইবা কোর্ছেতির স্থান; স্বান—ভুক্ত ও প্রত অরম্যাদির স্বীকরণ করে,
ইবা কোর্ছে (অঠরে) অবস্থান করে, এবং ভুক্ত বন্ধর পরিপাক করে; অন
অর্থ—বাস্থ্য রাজিবিশেব; উক্ত প্রাণ প্রকৃতির বে, সর্বান্তার হৈছিক চেইসম্পর্কিত সাধারণ ব্যাপার, ভাহার নাম অন; এই বে সম্বর্গ প্রাণাদি স্থানির
কর্মা বলা হইল, ফলতঃ এ সমন্ত প্রাণ্ড প্রবিশ্ব বার্রতি ইক্ত হইল;
প্রান্থান্ধি বিশেব বিশেব ব্রিপ্রপ্রশ্নেই ইব্যর কার্যাও প্রথণিত হইন, ১)। ও

⁽২) ভাংশব্য -শ্ৰদ্যতে অনবস্থাবোৰের আপতা এইক্লপে হটতে পারে—প্রথ বলি গঞ্জাল না ইইড, তাহা হইলে প্য বেক্লপ অব প্রকাশ করে, ডক্রপ প্রক প্রকাশের অভও অপর প্রভাগকের আবন্তক হইড; আবার সেই ভৃতীর প্রকাশকের প্রভাগের অভও অপর প্রভাগকের আবন্তক হইড, এইক্লপে চিহ্নতান প্রকাশকের অপেকা পাকিছা বাইড; ক্লে কে:ন নক্তই অর্থপ্রভাগনে স্বর্থ হইড না, এইঅভ প্রকে স্থাকাশ ব্লিছা শীকার কছা আবন্তক হইরাছে। ভাই ভাষাকার বলিয়া বিলেক বে, গ্রাক্ প্রকাশি-কৈন্ব, প্রয় ব্যবস্থাতা ইডি।

^{(&}gt;) ভारगर्दा—सान नशर्की कि : अ नगर्द्ध विषय नकर्य वार्ट्स स्वरंश व्य इरेडि अयान ७ विहादन्य, कार्ट्स केरेलन निर्द्धि—नार्त्याशर्वायन नर्मन-"नानाककर्यन्तिः आनाम् वार्ट्स गक्ष वर्षाय आन, वर्णान, वार्म, नयान ७ देशन, अरे व नीविड वार्ट्यूकर, देशा पश्च गर्मा नर्द्स : गश्च वन,वृष्टि ७ वर्ष्याय अपृष्टि वाष्ट्राव्योन कर्यनिक्ट्स नामास्य वार्णाय मात्रा । विकास अरे वन, व्यक्तिय अपृष्टि अविविष्ठकरे विक निक गर्मी नर्णायन

এইরপ বন, বাক্ ও প্রাণ-নাবক অর্জয় বর্ণিত হইল। 'এতয়য়' অর্থ — প্রজাপদিসম্পর্কিত এই সরম্ভ বাক্, বন ও প্রাণ দারা ইহা নির্মিত; এই বেবেজির স্বাচীকৃত সেই বছাট কি ? তাহা আয়া; আয়া অর্থ এখানে দেহ-পিও; অবিবেকী লোকেরা অভ্যানবশত: এই বেংপিওকেই আয়া বলিয়া বনে করে; এইজ্ঞ ইহাকে 'আয়া' বলা হইল। 'এতয়য়' শম্মে বাহার সামাজাকারে উল্লেখ করা হইয়াছে, 'বাঙ্বয়', 'সনোম্বর' ও 'প্রাণমর' শম্মে তাহাকেই বিশেষতাবে নির্মেশ করিয়া পরিক্ষুট করা হইল। ৩৭॥ ৩॥

আভাসভাষ্য ম্। তেষামেব প্রাণাপত্যানামনানামাধিভৌতিকো বিভারোহভিগমতে—

আভাসভাস্থানুবাদে। – শতঃপর উক্ত প্রান্থাপত। পরসমূহের শাধিকেতিক বিস্তার বর্ণিত হইতেছে—

ত্রেরা লোকা এত এব, বাগেবায়ং লোকে। মনোহস্তরিক্ষ-লোক: প্রাণোহসৌ লোক: ॥ ৫৮ ॥ ৪ ॥

স্কান্তার্থ।—এতে (বাঙ্-মন্-প্রাণাঃ) এব এর: লোকাঃ (ভূর্ত্বঃবর্নাবানঃ), নৈতেভ্যে ব্যতিরিক্তান্তে ইতি ভাবঃ)। [তত্ত বিশেবমাহ—]
বাক্ এব আরং (ভূর্তবানঃ) লোকঃ (ভূঃ), মনঃ অন্তরিক্তানঃ, তথা প্রাণঃ
আসৌ লোকঃ (অর্লোকঃ)। [উক্তবন্নর্যমেবং চিন্তনীরম্ ইতি ভাবঃ]। ১৮॥৪॥

মূলানুবাদে।—এই বে, অন্তব উক্ত হইল, ইহারাই ত্রিলোকস্বরূপ; বাক্ই এই ভূলোক, মনই অন্তরিক্ষলোক (ভূবলোক),

করিয়া থাকে, ভাষাণের সেই বিলেশ বিশেষ কার্য্যের সাধারণ কল হইতেছে—এই প্রাণাদি ভেষ; বেষল একটা বাঁচার মধ্যে কতক্ঞলি পালী থাকিলে, সে পানীগুলি নিজের প্রয়োজনীয় কার্য্য করিতে থাকিলে, স্বতট খাঁচাটি নড়িতে থাকে, কিছু কোন পাথীট বাঁচা নাড়িতে বহু করে না, ইহাও তেমনি বটে। বৈদায়িক্সপ এ কথার সম্মত চন না; জীহারা বলেন—প্রাণ একটি সভল্প পদার্থ; ইচা পঞ্জুতের সম্প্রীকৃত রঞ্জোজাগ হইতে উৎপন্ন। "পঞ্চবুজিন নাবে বাগদিক্ততে" (বন্ধক্ত ১)০), কর্থাৎ অস্তঃকরণ বেমন ক্রমণ্ডঃ এক হইলেও বৃদ্ধি বা বাগোরতেদে ভিনপ্রকার—বন, বৃদ্ধি ও অহকার নাবে অভিহিত হইরা থাকে, তেমনই প্রাণ বৃদ্ধতঃ এক হইলেও কার্যান্ডেদে পাঁচপ্রকারে বিভক্ত হর মাত্র।

ভাষ্যকার এবানে 'ব্যান' বায়ুকে বীর্ষ্যনাধ্য কার্যা নিম্পাদনের সহার এবং প্রাণ ও অপান-বায়ুর সন্ধিমরূপ বনিরাছেন। এ কবা ছান্সব্যোপনিবনে আরও স্পট্টাক্ষরে কবিত হইরাছে। ববা—'অব বা প্রাণাশানরে। সন্ধিঃ,স ব্যানঃ' ইভালি। (ছান্সোগ্য ১০০১ –৫) সেধানে স্কট্টার। बात প্রাণ इंड जिल्ह — चर्लाक, वर्षाय এই जिल्हाकर छेक जितिश बारमा ॥ ८৮॥ ८॥

স্পাক্ষর-ভাস্থান। এরে। লোকাঃ ভূচুবিংবরিত্যাব্যাঃ; এত এব বাদ্মনঃপ্রাণাঃ; তত্ত্ব বিশেষ:—বাবেবারং লোকঃ, সনঃ—ক্তরিকলোকঃ, প্রাণোহসৌ লোকঃ এ ৮ ॥ ৪ ॥

ভাল্যানুবাদে। ড়া, ডুবাও বা নামক লোকজাও ইহারাই—
বাক্, মনাও প্রাণমরণই; তল্পথা বিশেষ এই যে, বাক্ হইভেছে—
এই পৃথিবীলোক, মন হইতেছে— বভল্লিকলোক, আর প্রাণ হইভেছে—
বলেকি ৪ ৫৮ ৪ ৪ ৪

ত্তা বেদা এত এব, বাগেবথে দে। মনো য**ভূবের দ: প্রাণ:** সামবেদ: ॥ ৯॥৫॥

স্ত্রকার্থঃ। এতে , বাঙ্ধনংপ্রাণাঃ) এব এরঃ বেদাঃ (বপ্রস্থানারাণাঃ)। [ভঞায়ং বিশেবঃ —] বাক্ এব বংগদঃ, বনঃ বক্রেনঃ, প্রাণঃ সামবেদঃ; [অধক্রেন্ড বেদ্যার্কিডয়ং বেদ্য ভিছেবিভি ভাবঃ] ১৫৯৯ ৪৪

মুলালুবাদে ইগরাই বেদত্রর, তন্মধ্যে বিশেষ এই বে, বাক্ই ঋগ্বেদস্বরূপ, মনই যজুর্বেনস্বরূপ, এবং প্রাণই সামবেদ-স্বরূপ ॥ ৫৯ ॥ ৫ ॥

দেবা: পিতরো মনুষ্যা এত এব; বাগেব দেবা মন: পিতর: প্রাণো মনুষ্যা: ॥ ৬• ॥ ৬ ॥

স্ক্রকার্থঃ। এতে এব বেবাঃ পিতরঃ বছুরাঃ। [ভঞ] বাক্ এব বেবাঃ, মনঃ পিতরঃ, প্রাণঃ বছুরা ইভি । ৬০ ॥ ७ ॥

মূলা-বুবাদে। এই ষমত্রই দেবগণ, পিতৃগণ ও মমুদ্রগণ; তথাধ্যে বাক্ দেবগণস্বরূপ, মন পিতৃগণস্বরূপ এবং প্রাণ মমুদ্রগণস্বরূপ ॥ ৬০ ॥ ৬॥

শাক্ষ-ভাষ্যম্। ।। টীকা। । ॥ • ॥ • ॥ ।॥ ভাষ্যামুবাদ্। । ॥ • । • ॥ শিতা যাতা প্ৰৱৈষ্ঠ এৰ, মন এৰ পিতা বাঙ্মাতা, व्यापः वासा ॥ ७५ ॥ १ ॥

ञ्चलार्थाः । – अरह अर भिठा, याषा, अवा (महक्रिक) ; [ए.४] यमः अर भिडा, राक् याचा, खानः खना देखि । ७) । १ ।

মুলানুবাদ। এই মন্তর্যুই পিডা, মাডা ও সন্তানস্বরূপ, उन्नर्था मनदे निजा, बाक्दे माजः, अवः आगदे मखानन्त्रम । ७) ॥ १ ॥

न्यांक्ककाकाका । उपा बता (परा देशारोमि रामानि वय-419 1 42-43 1 4-9 1

जिक्को। जिल्लाकोबाकाबहुत्रकः वाकाः विकासविकारियाकार अध्यापिकार-**डरथंडि ॥ ०३-०) । ०-१ ।**

ভাষ্যানুবাদে। महेब्रम (स्वतंत्र) को "वाश (स्था:" हेशारि चिमिक संचित्र वर्ष महन : (श्रुक्तार बाह्यात सावक्र माहे) । ८०-७> । ८-९ ।

বিজ্ঞান্তং বিজ্ঞান্তমবিজ্ঞাত্যমত এব, যৎ কিঞ্চ বিজ্ঞান্তং বাচন্তজ্ঞপম, বাগ্ছি বিজ্ঞাত।, বাগেনং তদুভূহাবতি ॥ ৬২ ॥ ৮ ॥

ज्यसमार्था: । क्या कठ कर विकास (विद्यापन कार),विकिसाय. व्यविकालर (5); [छताप्र: निर्मयः-] यथ किक निकालर, छथ नातः (बहमक अगम् : हि (बचा: वाक् विकाश । श्रकानकक्षणपानिकानिकः) । िवानांवकानकनमुहात्त बाक् छर विकासर) कृषः बनर (वानविकृति-विष्र) व्यवि (शासप्रति । । । । ।

মুলালুবাদ। বিজ্ঞাত, বিভিজ্ঞাত এবং অবিজ্ঞান্তও ইহারাই ; वाहा किছ विद्यात. जरममञ्जूषे वारकाश ज्ञान: कांत्रन, वाक् निर्काह বিজ্ঞান্তা; [বেলোক বাক্যের এইরূপ বিভূতি জানেন,] বাহু নিজে (मह विख्वाङ्यक्रभ रहेवा डाहादक भावन कतिया थ!क ॥ ७२ ॥ ৮ ॥

अनाम्बद्धान्याच्या । विकास विविधान्त्रविधान्यस्य धर . पत बिर्म्य:--यर्किक विकाला विम्नाडे: काठः, वाहत्रक्षमम् ; कत्र प्रश्रवम् (रक्-मार---वान हि विकाला, क्षकानायकदार ; क्षमविकाणा परवर, वा च्यामिन विज्ञानप्रकि ; वार्केव नवाक् वसूर व्यक्तावण देकि वि वक्ताकि । वाविश्वविक इत्रर क्षाबृहाएड--चार्त्रदेवनः वरवाक्रवादिवृद्धितिवः छविक्राव्य कृषा व्यवि পানরতি। বিজ্ঞাভন্তপেইগরাসার ভ্যোকাতাং প্রতিপত্ত ইতার্থ । ৬২ । ৮ ।

क्षाप्तान्त्रीय-नेक्ष प्राप्तान् ।

িকা। বিভাগবিধাণাধান ওপত বিশেষ করিছি—ক্রিটেইডিই বিভাগ দর্বা বালে স্থানিতি প্রকিলালোক্ত দর্ভার। প্রকাশকরেশ কর বালে বিভাগবিধাশকার—ক্রপ্রান্তি। প্রকাশসকরেশ কুলো বাল বিভবিদ্যাশকার— বাত্তেভি। বাণ্ডিশেকবিভূতি:। ১২।৮।

ভাষ্যান্দ্রনাদে :— সার বে, বিজ্ঞান্ত এবং স্থাবিজ্ঞান্ত এবং স্থাবিজ্ঞান্ত এবং স্থাবিজ্ঞান্ত এবং স্থাবিজ্ঞান্ত এবং স্থাবিজ্ঞান্ত এই স্থাবিজ্ঞান্ত বিশ্বের রূপ ; ক্রিড নিজেই নে স্থাতে বেছু প্রথমিক করিছেনে—বেংকতু বাক্ট বিজ্ঞান্ত ; কারণ, বাক্ নিজেই প্রভাগান্ত ; বাহা স্থান্ত পথার্ব বিজ্ঞানিত করিছা বের, সে নিজে স্থাবিজ্ঞান্ত বাজিবে স্থিতিব প্রভাগ্র এই বে. বে বাক্ ; বন্ধ) নিজে স্থাবিজ্ঞান্ত বাজের স্থানিত বা প্রকাশিত করিছা পারে স্থানিত বালে, নে ক্রম্ভ স্থানার বিশ্বের বিজ্ঞানিত বা প্রকাশিত করিছে পারে না। ইবার পরেও বাল্যেন বে, 'বে স্থাট্ট, বাক্টেই বন্ধ জানা বার্থ ইতি। ব্রেরাজ্ঞ প্রকাশ্র বাজ্যার বিভূজ্যিক ক্রমান বার্থ ইতি। ব্রেরাজ প্রকাশ্র বাজ্যার বাগ্রিক প্রকাশ্র বাগ্রিক ক্রমান বালেন করিছা বাজ্যার বাগ্রিক প্রকাশ্র বাগ্রিক ক্রমান বালেন বিশ্বার পরিজ্ঞান্তভাবে ভোলনীর হইয়া বাজে। স্থাকপ্রায় এই বে, বে বে স্থান-জ্যোলন করিছে ক্রমান, ভারা ডি'ন জানিতে পারেন ৪ ৬০ ৪ ৮ ৪

যৎ কিঞ্চ বিজিঞ্জাস্তং মনগতক্রপং, মনে: হি বিজিঞ্জাস্তং মন এনং তদ্ভূত্বাবতি ॥ ১০ ॥ ৯ ॥

ज्यक्ताव्याः। वर किक विक्रिक्षात्रः, उर मनगः क्ष्मम् ; वि (प्रचार) मनः विक्रिक्षात्रः (क्षिणात्रा मस्मार्थः केष्ठार्थः `, ७ ४०० मनः ७९ (विक्रिक्षात्रः) कृषा, अमर (मस्माविकृष्ठिविकर) चर्षक्ष (वक्षक्ष) ॥ ७० ⇒ ॥

মুলান্দ্রাদে। বাহা কিছু বিশেষরূপে ভিজ্ঞান্ত, ডাহা মনেরই রূপ: বেহেডু, মনই বিভিজ্ঞান্ত; মনই বিজিজ্ঞান্তরূপ ধারণ করিয়া ইহাকে (মনের মহিমাভিজ্ঞাকে) রক্ষা করেন ৪ ৬৩ ৪ ৯ ৪

ञ्याक्ष्म काञ्चाका ।—एवा वर किक विविधानः, विन्नहेर काक् विहे: विविधानम्, एर गर्वः वनःगा क्ष्मम् ; वनः वि वपार निष्क-याना वाष्मपिक्षानम् । পূर्ववस्ता विकृति विवः कतः—यम अनः एषिक-सान्तर कृषाविध विविधान-प्रकारिय वाष्ट्रयान्य । ०० । ० ।

क्रिका । मिक्कामानाक्वार मक्करिककाककशाहिक शार । उत्रार मर्कर विकि

the second of th

व्याप्तां क्यां क्यां एक । त्यां क्यां क्यां क्यां विकास - विकास - विकास क्यां क्या

स्ता, व्यर्गाद मानाव कडावे वामात वाकाविक वर्ष : अवे वक वनवे विविध्याक्षण्ठारण श्रीवृत्तीक । शृर्श्यक कात्र, वर्ण्यत विकृतिक राज्यिक कम और त्य, यम निर्वादे त्यवे विविद्याक वक्षण्यत व्येषा वेदारक (वर्ण्यक विकृति-कारक) प्रका कवित्रा थारक, वर्षाय विविद्याक्षण्डात्यवे कावात व्यक्षण्य व्यक्षण्या वर्षाय व्यक्षण्य वर्ण्यक वर्णक वर्णक वर्णक वर्ण्यक वर्यक वर्णक वर्यक वर्णक वर्णक वरावक वर्णक वर्णक वर्यक वरावक वर्यक वर्णक वरावक वरावक

বং কিঞাৰিজ্ঞাতং প্ৰাণক ভক্ৰপং, প্ৰাণে ফবিজ্ঞাতঃ প্ৰাণ ধ্ৰনং ভদ্ভৃত্বাহ্বতি ॥ ১৪ । ১০ ।

ज्यक्कतार्थः। यर किक व्यविक्षातः (क्षामा'नवडो ह्यम्), छर (ख्यमुक्तरे) आनुष्ठ रूपम्, वि (यषः) आनुः व्यविक्षातः। जानाः छर (व्यविक्षातः) ह्या जनः (आनुविङ्किनियः) व्यवित (दक्षति) ३५३३ ५०३

ছুলান্ত্রাদে। বাছা বিছু অবিজ্ঞাত বস্তা, তৎসমস্তই প্রাণের ক্লপ; বেছেডু, প্রাণই স্বরূপতঃ অবিজ্ঞাত। প্রাণত সেই অবিজ্ঞাত রূপ ধারণ করিয়া প্রাণবিভৃতিজ্ঞ লোককে রক্ষা করিয়া থাকে। ৬৪ । ১০ ।

ল্পাক্সন্থান, প্রাণত তক্রণ প্রাণো ক্ষিতাতঃ; মনিজাতরণো বি বস্থাৎ প্রাণোচনিক্রক্সতেবিজ্ঞাতবিধিজাতবিজাততেওেন গাল্লনার পরিভাগে হিছে এলো লোকা ইত্যানরো বাচনিকা এব। সর্বাত্র বিজাতবিদ্ধান্তর্শ নাল্ডনাথের ওত নির্মাণ করিয়া। প্রাণ এনং তত্ত্ব। অবভিঃ অবিজ্ঞাতরণো-শৈবাত প্রাণোহরং ভবতীতার্থা। শিক্তপ্রাণিতিঃ সন্দিক্ষানাবিজ্ঞাতরণ শক্রকা আচার্যাশিকাদরো স্তুক্তে; তবঃ মন্প্রাণ্থোরণি সন্দিক্ষানাবি-ভাতরোরয়বোপপতিঃ।। ৬৪।। ১০।।

টীকা। পৰিক্তমতেরবিজ্ঞাতরপো বসাৎ প্রাণক্তমাববিজ্ঞাত: নর্মং প্রাণক্ত স্থপ-ক্লিভি বোজনা। বিজ্ঞাতানিরপাতিরেকেণ লোকবেলাক্তমাববিজ্ঞাতানিরপথাতিবানেকৈব বারাধীনাং লোকাক্তারকে নিজে কিবর্বং এবো লোকা ইত্যানিবাকানিত্যাপক্তা ভবৈব ব্যানার্থনিক্তার—বিজ্ঞাক্তিভিত কুমাবিবেকৈক্স বিজ্ঞাতানিরমুক্টেকাপায়েক্ত থাব-বিক্তম্বং মুক্তো বিজ্ঞাতারকার্যাক্তমতে নিয়ক্তং প্রভাবিজ্ঞাপ্তার—অর্প্রক্রেডিড। वानविष्युविध्याः नवावि क्षाः च्यावि-द्वानं क्ष्मिः। 'स्मारक विधावः' स्वानविष्युविध्यावादिवास्त्रवं वानास्त्रवं स्वावास्त्रान्ति विधानवाद-निर्द्याद्विते विस्तविष्युविध्याविष्यास्त्रात्वान्यां विष्युविद्यास्त्र स्वावायमानव्ययः क्या वदस्यव्याः स्वाविष्य्याविष्यादेशास्त्रियास्यास्त्रान्याक्षः विवानव्ययस्त स्वावायमानवस्यः क्या वदस्यव्याः

ভাজ্যান্ত্ৰাদে। দেইগ্ৰহাৰ, বাহা কিছু মৰিলাত পৰ্বাৎ বিলাদের वाताहर, मामशानाम । मार, छाहाहे शाराब हुन ; कारन अविट खानाक मिक्क श्लाप (पूरा पारेत्वह (प्.) जान पहनवः मनिवाहरे रहे । नामू, ৰদ ও গ্ৰাণেঃ বৰাজ্ঞাৰ বিজাত, বিভিন্নাত ও অবিজাতভেবে বিভাগ ছিবভৰ वाक्रिक व, बाबाब "अरबा लाका:" हेक्सांवि दिश्वान, छोड़ा क्यम बाइनिक वर्षाय त्माकाविकाल बादिक अत्याजन याहर बनिवारे वर क्रकि केंद्रण উপধেশ করিয়াচেন। পূর্বোক্ত সকল মূলে বিজ্ঞাতামিতাৰ স্বাভাবিক বেবিতে भावता वात ; भावता करे अधिवाकाश्चिमादारे (माकाश-मृद्धीरकथ गारमन व्यवक्रविश्वा मृतिष्ठ वहेर्य। 'श्रान छात्रा हरेता हैशरक प्रका करते' क्वां क्व बहे -बान (व, विवासित बहुवं न हरेता वार्क, ठांदा छाराह বিজ্ঞাতকণ মতে; পরস্ক সম্পূর্ব অবিজ্ঞাঃ, অর্থাৎ প্রাণ বে, ভাহায় পোষণ কৰিতেছে, ট্ৰা ভাচার অধিজ্ঞান্ত বাবে। অনেক স্বয় বেৰি**তে পাও**য়া बाब (ब, चाठावी e निष्ठा প्रकृष्टि विदेखवी লোকের। (ब क्रेनकाबनायन करवन, विश्व ७ भूत शकृति त्म उनकात वृत्तित भारत मा, व्यवना कविवास मुम्पूर्व मिक्शन बाद्ध ; मिहेड्स यन ७ श्राव विकास वा मास्वशानीर वाक्तिक कार्शत्व व्यक्तिवाल विक्रम व्य मा। ५३ ॥ ১० ॥

জাভাগ-ভাশাঘ্। বাবাংত: বাবনঃগ্রাণানাবাবিকৌতিকা বিভার:, প্রাঃবাধিকৈবিকার্ণ পারতঃ—

জ্যা ভাঙ্গ- ভাজ্যান্সু-বাদে।—বাৰ্, বন ও প্ৰাণের স্থাবিভেটিক বিভান বা মহিষা বণিত হইল, স্বভাগন্ত স্থাবিহৈবিক বিভানপ্ৰবৰ্ণনাৰ্থ প্ৰবৰ্তী প্ৰতি স্থান্ত হইছেছে—

ভত্তৈ বাচঃ পৃথিবী শরীরং জ্যোতীরূপমরমগ্রিন্তদ্বাৰভ্যেৰ বাক্ ভাবতী পৃথিবী ভাবানরমগ্রিঃ।। ৬৫ ।। ১১ ।।

अञ्चलादाः। एटेड (एडाः खेवान(एडाइएवादाः) नातः [देवः विश्वनामाधिका] नृतिवी नडीवः (नावकृषः चावादः), वहम् चितः : (काकिश्वनर (क्षकामाञ्चकः कश्वनवद्यतर ह नहीशः), कर (क्षमार दरकाः) योवकी (वरमतियाना) अव नाक्, मृश्वितो (क्षामा) कावको, क्षश्र व्यक्षिक कावान्। [विद्यमा विक्रमानाः नाक्—कार्याः कश्वकः क्ष्म कार्याः व्यक्षमानाः व्यक्षकामान्त्रः, कश्वक व्यक्षित्रः क्षमानाञ्चकः (क्ष्म कावः)।। कर ।। >> ।

শ্লাব্রাদে। প্রোক্ত বাকের আগ্রন্থত শরীর হইছেছে পৃথিবী, আর জ্যাত্তির্মার করণস্থারণ শরীর হইডেছে—এই অগ্নি; মতএব বাক্ বেপরিমাণ, পৃথিবীও সেই পরিমাণ, এবং অগ্নিও ওকুলা-পরিমাণ । ১৫ । ১১ ।

টীকা। বৃত্তসন্ত ভূগৈ বাচং পৃথিব চ্যান্তগাৰণতি — আনিলাতি ইতি। আৰি-বৈশিক্তি প্ৰিল্পিনাৰ ইতি বাবং। সমন্তব্যসন্ত তাংপৰ্যান্ত্ৰা বাল্যানাৰ বাৰ্যানিক ভিত্ত বাংশ বিশ্ব কি বাবং। সমন্তব্যসন্ত তাংপৰ্যান্ত্ৰা বাল্যানাৰ বাৰ্যানিক ভিত্ত ভ্ৰাহ—জ্বিক্তানাৰ বাৰ্যান্ত্ৰা কৰাৰ বিশ্ব কি বাৰ্যান্ত্ৰা কৰাৰ বিশ্ব কি বাৰ্যান্ত্ৰা কৰাৰ বিশ্ব কি বাৰ্যান্ত্ৰা কৰাৰ বাৰ্যান্ত্ৰ

ভাজ্যান্দু আদে: —সেই প্রথাপতির পররূপে বারার বর্ণনা করা ব্রুল, এই পৃথিবী হইভেছে সেই বাকের শহীর, বাহিরের আগ্রহ; আর জ্যোতীরপ, পর্বাৎ পৃথিবীতে পালিত প্রকাশায়ক করণবরূপ বইভেছে—এই পার্থিব আরি: প্রকাশভির বাক্ সাধারণতঃ হুইপ্রকার—একটী কার্যাক্ষরণ,

भगति महनवस्त ; क्यारा मंद्रियति हैरेक्टर भाषा वा मध्य वर भद्र-मानास्म, भाव महनप्रति हैरेक्टर भारत्य वा माजिक वर अमानास्म ; तारे पृथ्वी क भवि केश्वर अभानिक वामृक्ति भाव किंद्र नरह । काशक भाषां, वाम् भवाष क महिम्हकार्यकर विकिश्नाना आख हरेशः (व-नविभान रह,तारे तमन भारत भाषां करण मविक नाद्यं का पृथ्वि । तारे निश्चानरे वर्षे ; अनः भारत्य भवीर (मानिश्चान पृथ्वि । भाषां भारत्य भवी पृथ्वि । अविक भाषक (तारे नविभानरे वर्षे । भाषां भारत्य भवी पृथ्वि ।

অধৈতক্ত মনগো ছোঃ শরীরং ক্যোতীরূপম্যাবাদিত্যন্তপ্যাব-দেব মনস্তাবতা ছোন্তাবান্যাবাদিত কো মিধুনত সমৈতাং ততঃ প্রাণোহ্লায়ত স ইন্দ্রঃ স এবোহসপত্নো বিতীয়ো বৈ সপত্নো নাক্ত সপত্নো ভবতি য এবং বেদ। ৬৬ । ১২।

ज्ञालाश्वाः— वर्ष अवत्र (श्रवानात्वद्यदिन कविवत्र) सनमः छोः (श्राताकः) महोतः (कार्याक्वम्), व्यानो व्याविवाः (खाकोकनः (खनानाद्यकः कर्षाकृवम् । छर , व्यार (स्टाः) वानर (नरमविवानः । अन सनः, (छोः , श्राताकः (व्यान) । १११ठो (छाष्ट्रनमविवानिक्षेत्रं अन्); व्यानो व्याविवानः (व्याविवानः); त्वे (विवाविद्यां)) विव्याः (महण्यवनवद्यः - मदेवठा । श्रात्यव्याः); छवः (छाणाः साधाः निष्ट्रमाणाः (विवाविष्ठाः । श्रातः व्यावव्यः) । स्वरं (खानः) । १ व्यावः ।

অ্বলান্ত্রাদে। প্রজাপতির ব্যার্কণে পরিক্ষিত মনের শরীর হাডেছে স্থালোক, আর জ্যোতীরূপ বা প্রকাশান্ত্রক করণ হাছেছে এই আদিত্য: অঙএব মন বালুল পরিমাণবিশিষ্ট; স্থালোকও ভালুশ পরিমাণ সম্পন্ন, এবং আদিতাও ভব্লাপরিমাণ, ভাহারা উভরে বিধুনীকৃত (সন্মিলিড) হাল, ডাহাতে প্রাণ উৎপন্ন হাল; সেই এই প্রাণ সর্বভ্রেট, এবং অসপত্ন বা প্রভিশক্ষপৃত্ত; কারণ, বিভীয় ব্যক্তিই मानु बेरेना बाटक। दर शांकि ध्येर एक व्यक्तक हम, डीवार ट्रिक्ट व्यक्तिक स्थाना । ७० । ३२ ।

ব্যক্তির-ভাজাত। থবৈতত প্রাণ্ণতায়োভতৈর বন্ধা ব্যক্তিলোকঃ পরীয়ং কার্যাধার, ব্যোভারপং করণমাধেরেইসাবাদিওঃঃ, আ ভার বাবংপরিমাধ্যেবাধাান্ত্রপত করপজাধারকেন ব্যবস্থিতা হোঃ, ভালান্যাধানিক্রো ভ্যোভারপং করপ্রাংবর্ ভাগানা হড়ে। বাহ্যমন্ত্র প্রাণ্ডিরের মিপুনং বৈপুর্বাভয়েত্রসংস্কৃতি সহৈতাং সক্ষেত্রাং। বাহ্যমানিক্রা প্রাণ্ডিরের মিপুনং বৈপুর্বাভয়েত্রসংস্কৃতি সহৈতাং সক্ষেত্রাং। বাহ্যমানিক্রার প্রস্তাহ পিত্রা বাভারিন। বাহ্য প্রভারত পরিশাদার কর্মানিক্রার প্রস্তাহ পিত্রা বাভারিন। বাহ্য প্রভারত পরিশাদার কর্মনে। বে, লাজং স ইলঃ পর্যের্থাঃ, ম কেবন্যিক্র এব, অসপত্রোহ্যমিরানার সপত্রের বজ ; কং পুনং সপত্রে। নামঃ, বিতীয়ো বৈ প্রতিপ্রভারেশ ন সপত্রের ভিত্রীয়া সপত্র ইভালতে। তেন বিতীয়বহুলি স্তি বাহ্যমন্স ম সপত্রের ভালতে; প্রাণং প্রতি প্রভাবেশ্যমণতে এব বি তে স্থান্ত্রিব। তহ প্রাস্থিক ভাসপ্রবিজ্ঞানক্ষণ্যিকং, নাজ বিছ্যং সপত্র। প্রতিপ্রভা তরতি, ব এবং মধ্যেত্রং প্রাণ্ডমন্তর বাহ্যমন্তর বিহুরং সপত্র। প্রতিপ্রভাব তরতি, ব এবং মধ্যেত্বং প্রাণ্ডমন্তর বাহ্যমন্তর বিহুরং সপত্র। প্রতিপ্রভাব তরতি, ব এবং মধ্যেত্বং প্রাণ্ডমন্তর বাহ্যমন্তর বিহুরং সপত্র। প্রতিপ্রভাব তরতি, ব এবং মধ্যেত্বং প্রাণ্ডমন্তর বাহ্যমন্তর বাহ্যমন্তর

ক্তাব্দ্যান্দু নান্ধ বে, প্রাধাণতা পর্বণে উক্ত বন, ছালোক হইতেছে ইবার পরীর পর্বাৎ কার্যাধ্বকণ পাশ্রর, খার এই পাবিতা বইতেতে জ্যোতিহবরণ কারণ। পাব্যাধ্বক বা পাবিতোতিক মনের বাবা পরিবাণ,

জ্যোতিশ্বর কর্মশ্বরণ বনের আধায়ন্ত্রণ করিক হালোকের পরিবার্থ क्रिक करबूदन : अनः क्यारिक द्वारमामाधिक धनानमः करनेवदन व्यक्तिकारः পরিমাণ্ড ভঙ্গা : আবিবৈধিক বাস্ত বনঃখানীর সেই অধি ও আবিভা बांकानिकाञ्चरन नवन्नरव नवच नांक कदिन--केवरव केनमक बहेन: উদ্বেক্ত--আবাদ্যিক বন ও আবিবৈধিক আবিতাকৰী পিতাকৰ্ত্বক উৎপাদিত असर राक्षानीत अप्रतमा याकावर्ष्त अवाचित रहेश कर्य मुन्नाहर कविष : अवेक्षण मान कविषा द्वारणाक छ পृथिबीय माना केलाव महामिल एरेन । ভारामवरे मध्मार्थव मध्म न्यानाचक कर्व कविराध वक्त श्राव-बांव केर नव करेन । विभि कविशानन, किनि केन-नवरमध्य (नवम केवर्ग मन्त्रप्र), किमि (व रक्षत्र वेट्टरे वर्डन, कादा नरद, पत्रत्र अभगद्रक वर्ड-वादाय मुन्द्र नाहे; नुनद्र (क १ (व विठी । वाक्ति अधिनकहान केन्द्रित इह तिहै विछोत्र वाक्ति 'नगत्र' मार्य भविवित बहेता वारक । तिहै रहतू वाक् क बर्बर बर्या म्ब्रिटोइलाव विश्वयान शक्तित्व छ।बादा मुबद्देशव (अकि-नक्छा। अवना करत ना . (परवर्श छ।बादा (सम्म श्रार्थ वर्शन, विदेश्वछ-छारक छाराहा छञ्चन ब्यारनह चरीनठा चरनचन करिया बारक। ब दिवरह अनुमान्य वह मनानुमानिकारनद बहेबन मन मुन्ति हहेरछह (द. विमि को अकात रावास्माल धानाक चनना विमा बारनन, त्वर छीवांड श्रीकिशक वा मंख्य स्त्र मा १ ६७ १ ३२ १

অধৈতক প্রাণস্থাপঃ শরীরং জে।ত্রীরূপনসৌ চক্সন্তদ্যাবা-নেব প্রাণস্তাবত্য আপস্তাবানসৌ চক্রস্ত এতে সর্বর্থ এব দমাঃ সর্ব্বেইনস্থাঃ, সুযো হৈতানস্তবত উপাত্তেংস্তবস্তুত স লোকং জয়তাথ যে। হৈতাননস্থাস্থপাত্তেংনস্তুত স লোকং জয়তি ই ৬৭ ই ১৩

সাল্যনাথ। — অব (বাকারিছে) এড স্ত (প্রকাশতারক্ত স্থ) আগত আগ: (কলানি) শরীরং (কার্বাং); অনৌ (চন্দ্র: (কার্তারকাং (প্রকাশাস্থক-করণভূতঃ) : তৎ প্রাণঃ বাবান্, এবং আগ: (কলানি) অণি ভাৰভাঃ (তৎপরিবাণাঃ), অনৌ চন্দ্রঃ [অণি] ভাবান্। তে (প্রেজাঃ) এতে (বাপান্থঃ) সর্বে এব স্বাঃ (সম্পাঃ) সর্বে অনভাঃ ; সং বঃ ব এভান্ অভ্যতঃ (অধ্যাত্মানিভূভভ্রণেশ পরিছিয়ান্ ক্রমা] উপাতে, সং (উপান্ধঃ)

व्यक्षपद्ध (गविष्क्षित) (गांकः (कांकः) व्यक्ति (व्यक्षपद्धित); व्यक् (श्रकांक्षरत्त) वः व अठाम् व्यवक्षाम् (व्यगविष्क्ष्यम्) केंगारवः, नः (केंगानकः) व्यवकः (व्यगविष्क्षितः) (वाकः व्यक्ति । ७९ । >०।

অনুলান্ত্রাদে — এইবে প্রজাপতির অর্থার প্রাণ ; জল ইহার শরীর এবং চন্দ্র ইহার প্রকাশনর রূপ : এইজন্ত, প্রাণের বে রূপ পরি মাণ, জলেরও সেইরূপ পরিমাণ এবং এই চন্দ্রেরও সেইরূপ পরিমাণ ; প্রকৃত পক্ষে ইহারা সকলেই সমপরিমান এবং সকলেই অনস্ত বা অপরি ছিল ; সেই বে কেড ইহামিগ্রুক অস্তবান্ বা পরিচ্ছরভাবে উপাসনা করে, তিনিও অস্তবান্ বা পরিচ্ছর লোক (ভোগস্থান) লাভকরেন, আর বে ব্যক্তি এসমস্তবে অনস্ত বলিয়া উপাসনা করেন, তিনি অনস্ত লোক লাভ করেন হ ৬৭ ঃ ১০ ঃ

ক্ষাক্ষেত্র ভাষ্য হা । অবৈত্য গ্রহত প্রাধাণতারত গাণিত, ন প্রোক্তরনত্তরিভিত্ত আপ: শরীরং কার্বাং করণাধারঃ; পূর্ববজ্ঞো ভীরপ্রসৌ চল্লঃ; তার বাবানের গাণঃ ধাবংপরিষাণঃ অব্যায়াভিতে দেবু ভাব ব্যাপ্রিত্য আপ: তাবংপরিষাণাঃ , তাবানসৌ চল্ল অবাবেছঃ তাবপ্রকুপ্রবিষ্টঃ করণভূতঃ অব্যান্ত্রবিভূতক তাব্যালিয়ানের। তাক্তেতানি পিত্রা পাও জেন কর্মা স্টানি ট্রীণারানি বায়নঃ প্রাধানি; অব্যান্ত্রমনিভূতক লগৎ সর্বান্ত্র এতৈর্ব্যান্তম্ব; নৈতেভোচ্তরভতি বজ্ঞ কিঞ্চিত্তি কার্যান্ত্রকং করণায়কং বা

সম্ভাবি দ্বেত্র প্রভাপতি; ত এতে যাগ্রন: প্রাণা: সর্ক এব সম্বাভাগা ব্যাধিষতঃ মাধ্যমানিকের সাধ্যামানিক্তং ব্যাপ্য ব্যবস্থিতঃ; অতএবানতঃ; ব্যবস্থারভাবিনো হি তে। নতি কার্যকরণ প্রভাগানেন সংসারেঃ হ্বপ্রতে; কার্যকরণাক্ষকঃ হি ত ইত্যক্তন্। স মা কল্ডিং হ এতান্ প্রভাগতেরাস্তত্তানম্বতঃ পরিভিন্নান্ অব্যাক্ষরণেণ অবিভ্তরণেণ বাৈপাতে, স চ তহ্পাস্নাক্ষপন্ন ক্লম্ভবেরং লোকং অম্বতি পরিভিন্ন এব ভাষতে, নৈতেমামাক্ষত্তা ভবতীত্যর্বঃ। অব পুনর্বে বৈভানমন্তান্ সর্কাশ্বনান্ত্রনান্ত্রিকান্ উপাতে, সোহস্থাবের লোকং অম্বতি ৪ ৬৭ ৪১০ ৪

िका। वादिश्विकदशस्त्राध्यनम्हाकिकृतिविक्षानवर्षाम्यकृत्य। नरपठरण्याः कक्षरका स्रवादिक्षाक्ष्य सार्वक विकित्ति । स्वत्यः, व्यापः म स्वर्यक्षिः। वश्यक्ष स्रवाद्यक्षम् स्वत्रवाद्यक्षम् स्वत्रम्यक्षाम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यक्षम् स्वत्रव्यक्षम् पूर्वववामं ववनण पृथिवी रक्षण गंद्रीयर वया करवान्छ । देवतरण वागरकारक ग्राक्षित्वविद्या । व्यवस्थित व्यवस्थित व्यवस्थित स्वाप्य स्वर्थ ने व्यवस्था स्वाप्य स्वर्थ ने व्यवस्था स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय

ভাষ্যান্ত্রাদে।— স্ব-প্রের স্বর্গ স্থানর্বা; স্থার 'এডড' প্রের স্বর্গ — প্রাঞ্জাপতা স্থান্তরে বর্ণিত প্রাণ, কিন্তু স্থান্ত প্রথান্তরে প্রভান্তরে উক্ত প্রাণ নহে; দেই প্রাঞ্জাপতা স্থান্তর প্রাণ্ডর ক্ষম হইতেছে কারার—করণের স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর প্রিয়াণ্ডর প্রথান্তর প্রিয়াণ্ডর প্রথান্তর প্রথান্তর প্রথান্তর প্রথান্তর প্রথান্তর প্রথান্তর স্থান্তর স্থ

উক্ত সমন্ত আছাই প্রকাশতিবরণ, সেই বে এই বাক্, মন ও প্রাণ, ইবারা
সকলেই সমান, সকলেই তুলাপরিমাণ, এবং মধান্ত ও অবিভৃতভাবে
যত কিছু প্রাণি-বিবর আছে, তৎসমত বাাণিরা অবহিত আছে; এই
কারণেই অমতও বটে; কারণ, উহার। সকলেই মানৎসংসারভাষী, অর্থাৎ
যতকাল সংসার আছে, ততকাল বর্তমান বাকে। কেন না, কার্যা-কারণভাষ ভাগে করিলে সংসার বলির। কোন পরার্থ প্রতীতিগোচর হর না। বে
কোন ব্যক্তি প্রজাশতির আর্থস্তপ এই সর্থায়কে অন্তবান্ অর্থাৎ অব্যাখরূপেই বৃত্তিক আর অবিভৃত্তরণেই বৃত্তক—পরিভিন্নভাবে উপাসনা করেন,

ভিনি নেই উপাদনারই অন্তল্প কল—অভবাৰ (পরিছিন্ন—সীবাৰত) ভোগছান বন্ন করেন, অর্থাৎ ভিনিও পরিছিন্নই হন, কর্থনও ও স্থতের আত্মন্তর হন না। পকাভরে বিনি ও স্থতেক অনভন্নপে স্কাত্মক—স্কাত্মীর আত্মন্তপে অর্থাৎ অপরিছিন্নরপে উপাসনা করেন, তিনি অনভ—
অপরিছিন্ন লোকই বন্ন করেন অর্থাৎ তিনি নিকেও ও সম্ধ্রের আত্মন্থ। প্রাপ্ত হন ৪ ৬৭ ৪ ১৩ ৪

আভাস-ভাজা ম। পিতা পাঙ্কেন কৰণা স্থায়ানি স্ট্। বীণায়াভাষাৰ্থক বাহিত্যুক্তব্য তাভেডানি পাঙ্কক প্ৰকৃত্যানি ব্যাব্যা-ভানি; তত্ৰ কৰা পুনঃ পাঙ্কত কৰণা কৰবেতানী ভাচাতে—বন্ধাৱেশপি বিষয়ের পাঙ্কতা অবস্থাতে, বিভক্পবোরণি ভন্ন স্থবাং। ভত্ত পৃথিখালী মাডা, বিধাবিভা) পিতা, বেহিছবনয়োৱন্তব্য প্রাণঃ, স্প্রবেতি ব্যাব্যাতম্। ভত্ত বিভক্পী স্থাব্যিভব্য, ইত্যাবস্থা—

পাঞ্চাল ভাল্যাল্যবাদ্। – পৃথে কৰিত হইরাছে বে, পিতা পাঞ্চ কর্ম বারা সপ্ত প্রকার অন্ন হাই করিয়া—ভন্মবো তিনটি অন্ন আপনার অন্ত নিমিট্ট রাখিলেন; সেই এই অন্নওনিকে পাঙ্কা করের ক্লমন্ত্রপ বিলয় বর্ণনা করিয়াছেন। সেই অন্নওগে বে, পাঙ্কা করের ক্লমন্ত্রপ, হইন কি প্রকারে, এবন তাহা কবিত হইতেছে,—বেবেতু, উক্ত ত্রিবিব অরেডেও বিন্ত ও করের সভাব বিভ্যান রবিয়াছে: সেই বেতু উক্ত অন্তর্ভার পর্যাক্তর বা পকান্তকভার অবগত হওয়া বাইতেছে; তন্মবো পৃথিবী ও অন্নি বইতেছে বাতা, হালোক ও লাখিত্য হইতেছে প্রকাশ বান্তনান্ত; এ কবাও বিভ্ততার ব্যবিত হইরাছে; এবন কেবল অন্তর্ভারর মধ্যে বিত্ত ও কর্মের ক্রমান ক্রমান করা হাইতে পারে, ভালার অন্তই পরবর্তী ফ্রাডের ক্রমান করা হাইতে পারে, ভালার অন্তই পরবর্তী ফ্রাডের ক্রমান করা হাইতেছে—

স এব সংবৎসর: প্রজাপতি: বোড়শকসন্তস্ত রাত্রর এব পঞ্চবশ কলা প্রবৈধান্ত বোড়শী কলা,স রাত্রিভিরেবা চ পুঁয়াতেহপ চ শীরতে, সোহমাধাতাত রাত্রিবেতরা বোড়গুল কলয়া সর্বা-বিশং প্রাণছবন্ধপ্রবিশ্য ততঃ প্রাতর্জারতে, তত্মানেতাত রাত্রিং প্রাণভৃতঃ প্রাণং ন বিচ্ছিন্যাদপি কুকলাসকৈতক। এব দেবভায়া প্রপচিত্তৈয় ॥ ৬৮। ১৪

ज्यक्तार्था:--नः (व्यवक्राया) अयः मस्वरमकः (मस्वरमयमः कानवहनः) अवान्धिः (बाइनकनः (वाइन कनाः-मनद्वाः यष्ठ, मः ए(बाक्कः); बाजवः (बार्वाबाजवर्षेकाः व्यक्तिवाचाः विवदः) अर चन्न **११०१५ क्लाः, अना (निड्या-स्थानाडी बराक**ा) **এर सफ स्थाइनै** (বোড়ণানাং পুরণী) কলা (অবরবঃ); সঃ (প্রজাপভিঃ) রাজিভিঃ (क्षतिनवाविक: ठिविकि:) यद ह चान्दार्क (नूर्ता क्वकि) [कक्नरक], **चनकोश्रस्त (कोनक ए**न्डि) [इक्ष्मरक]; मः खन्नामरिः) चनानाजार (ভংগ্ৰেকাম্) বাজিং (ডিবিং) [প্ৰাপ্য] এডয়া (প্ৰাক্তয়া) বোড়ডা ः चर्यामाद्याः कन्यः देवः (यानष्टिकः) नर्सः श्रामकृद (श्रामिकाकः) चन्रशिक्ष (मार्क्यू श्रानियू श्रानिक्ष) एकः (चनवतः) श्राकः (मनविवान व्याणःकारम) बाहरठ (अजिनर-कमामध्युकः व्याहर्वर्वे)। ज्वार (व्यवक्षात्रार आनित् अवान्दाः अवन्द (१८०१ः) व ठार (व्यवक्षात्रार) वाजिर [क्षाना] बठका (एवठावा जब चन्हिरेश (नुबारेव-नवानवार्यर), व्यानकुष्ठः (ब्रानिनः), [किः वहनः], कृष्णामणानि व्यानः न विक्तिगार (व विरवासदार) ; हक्नारा हि वृद्देवारवार्शन स्वत्रमाः, सार्शन वज व रखनाः, नियु यक्ष्यार ठाउँ चारा है कि काना है । ७৮ । ১৪ ।

মূলানুবাদে। সেই সরত্রের সাম্বর্রণ সংবংসরর্জী (কালাম্বর্ক) প্রজাপতি বোড়ল কলাসংযুক্ত; রাত্রি মর্থাৎ প্রতিসমাধি পঞ্চল তিথিই তাহার পঞ্চল কলা (ম্বরুর), এবং প্রবা (নিজ্যা ম্বা) ভাহার বোড়লসংখ্যক কলা; তিনি এই সমস্ত রাত্রি ম্বারাই [শুরুপক্ষে] পূর্ণ হন, আবার [ফুরুপক্ষে] কাণ হন; ভিনি ম্বাবাস্থান রাত্রিণ্ডে সমস্ত প্রাণীর, ম্বভাস্তরে প্রবিষ্ট মাকিরা পর্যাধিক প্রাণ্ডান কলি প্রতিপৎ তিথিতে পূন্য প্রান্তর্ভুত্ত হন; সেই হেডু সেই রাত্রিণ্ডে ঐ দেবভারই পূলার মন্ত ম্বর্ণাৎ সম্যানার্থ কোন প্রাণীর প্রাণিব্যাহ্যন (হিংসা) করিবে না, এমন কি, কৃষ্ণাসেরও (কান্নালেরঙ) নর ৪ ৬৮ ৪ ১৪ চ

শ্বিক্তির ভাশ্যেক। গ এব সংবংগরঃ—বেহিন্ন আরাদ্যা প্রবাণতিঃ প্রকৃত্যঃ, গ এব সংবংগরাদ্যা বিশেবতো নির্দিপ্ততে। ব্যেতৃপক্ষঃ—ব্যেতৃপ কলা অবহবা অন্ত, নেহিন্ন ব্যেতৃপক্ষঃ, সংবংগরঃ সংবংগরাদ্যা কালরণঃ। তত চ কালাদ্যয়: প্রকাণতেঃ রাজর এব অহারাজ্যানি—ভিবর ইতার্বঃ, পক্ষর করাঃ; প্রবা এব নিত্তার ব্যবহৃত্য অন্ত প্রকাণতেঃ ব্যেতৃনী ব্যেতৃপারাঃ পূর্বী করা। স রাজিতিরের ভিবিভিঃ কলোজাতিঃ আপুরিতে চ অপকারতে চ; প্রতিপ্রাত্তা—ভিহি চক্রবাঃ প্রকাপতিঃ ওরপকে আপুরিতে কলাভিন্নপচারবানাভির্মন্ততে—বাবং সম্পূর্বন্তনঃ পৌর্বরাভাব; ভাভিরেরাপচারবানাভিঃ কলাভিরপকারতে কলাভার বিশ্বনা বাব্যাহার রাজিং বংজে বা বাবহিত। প্রবা কলোজা, এতরা বাক্তা করা সর্মবিবং প্রাণ্ডৎ প্রাণিলাভ্যপ্রবিত্ত – বরণঃ পিরভি, বজৌবনীরপ্রতি, তৎ সর্মবেরাব্যাহ্যন। সর্মং ব্যাণ্য—অন্যাবাস্যাহ রাজিবর-ছার,ভতাহিপরেচ্যঃ প্রাতক্ষারতে বিতীয়র করা সংবৃত্তঃ। ১

এবং পাত্কায়কোছনো প্রকাণতিঃ—বিবাদতে) মনঃ পিঁচা, পুৰিবাধী বাপ্তায় বাজা, তংগত প্রাণঃ প্রকা, চাত্রৰ গাতিবলং কলাং বিভিন্—উচয়াপ্তর্বিদ্যাধিতবং, তালাং চ কালানাং কালাবর্বানাং কপংপরিশাবেজুবন্ কর্মা; এববের কুংমা প্রকাশতঃ—ভাষা যে স্যাধ্ব প্রকারে, অব বিভং বে ভাষা কর্ম কুর্মায়—ইত্যেবশাস্থল এব পাচ্কুক্ত কর্মায় ক্ষরতঃ সংবৃদ্ধঃ; ভারণাস্থাবারি বি কার্যাবিতি লোকেছপি 'ছডিঃ । ২

ক্ষাবেৰ চন্দ্ৰ এতাং রাজিং সঞ্চলানিভাতমন্থ প্ৰবিটো প্ৰবন্ধা কলন। বৰ্ততে, ভলাবেভাঃ এতাৰবাৰাজাং রাজিং প্রাণভূতঃ প্রাণিনঃ প্রাণম্থ দ বিভিন্দাং প্রাণিনং ব প্রবাণরে বিভাতৎ—লগি কুকলাগত—কুকলাগো বি পাণান্ধা বভাবেকৈর বিভাতে প্রাণিভিত্ব হৈ গ্রাহল ইভি ক্যা। সন্থ প্রতিবিটিনর প্রাণিভিগো "লহিংসন্ সর্কভ্তাক্তন্ত তীর্বেভাঃ" ইভি; বায়ন্থ প্রতিবিভাঃ ভর্মাণি ন প্রাবাস্যান। প্রভন্ন প্রতিপ্রস্বার্থং বচনং হিংগানাঃ কুকলাস্বিব্যে বা, কিং ভর্মি, এতস্যাঃ সোনব্যের লগিনিত প্রার্থি ৬৮ । ১৪ ৪

্টিকো। আনতা ক্ষরভাগবিধরে বাবিধরে বছবাভাবাৎ কিব্রথন্তরেরেরেরাপ্তা
মুখ্য কর্তিনভি—ক্রিডেডি। ভেবাং ভৎকরে এবাপাভাববাদার প্রতভ—ক্রিডে।
নাম্বাক্ষের ক্রিডিয়ুবরের পাও,করাব্যকিং ধর্ণরভি—ক্ষরান্তিকে। ভাষাৎ কার্পনিধি

অবশিষ্টাববাবাভাগা নিবিষ্টাং কলাং প্রশাস্থ বিভীয়কলোংশজিং শুদ্রপতিপৃথি ধর্ণতি—আ প্রকলিপতি নিজি। আনিজাভবের বিশিনতী—আনপ্র ইন্ডি। ছাবরং প্রকার বিশাস্থানি কর্মানি ক্রামানি ক্রিয

পাও কৰ্মৰ ক্ষম প্ৰথাপতে কল্বা আগৰিক বৰ্ষনাহ— অন্মানিক তি। অপি কৃত্যান্ত তেতি কুতো বিশেষকিতি চালচাক — প্ৰক্ৰজাতো আঁতি। কৃত্যত পাণাপ্ৰথ, ভ্ৰাহ — সূত্ৰতি শিক্তি। বিশেষকিৰেণ্ড শেষাপ্ৰভাগৰহাখিয়ে সামাজনামেৰ ভাগতি পভ্যতে— স্মৃত্ৰিত। তীৰ্ষক্ষ শাহ্মবিভিত্য অপৰিষয় নামাজনামেৰ ভাগতি পভ্যতে— স্মৃত্ৰিত। তীৰ্ষক্ষ শাহ্মবিভিত্য অপৰিষয় নামাজনামেৰ বিশিল্প বিশ্বা বিশ্বা বিশ্বা বিশ্বা বিশ্বা বিশ্ব বিশ্ব

ভাল্যান্ত্রাদে। 'সা এবা সংবংসরা' ইত্যাবি। এই বে বিবিধ্ লরায়ক প্রজাপতি ববিত হইনেন, তিনিই বিবেষভাবে সংবংস্বরণেও নির্দিষ্ট হইতেছেন: 'বোড়বকল' অর্থ— বাহার বোলনী কলা—অবরব আছে, তিনি বোড়বকল, সংবংস্ব—সংবংসরাক্ষক—কালক্ষণ। সেই কাল-বছণ প্রজাপতির বাত্রিস্বৃৎ—বিবারাত্র বর্গাং প্রকাশ ভিবিই প্রকাশ কলা; আর প্রবা—নিত্যা—সর্বাহা হিরমণা [অহানার্যা বহাকলা] এই প্রজা-পতির বোড়ব—বোড়বসংবারি পূরক কলা। চন্ত্রকী সেই প্রকাশতি রান্তি-স্বৃহ বারা—ক্ষারণে উক্ত ভিবিস্বৃহ বারাই স্বঃক্ পূর্ব হন, আর অপকীপর ক্ষরবার্যার হন চন্ত্রকী প্রজাপতি ভালসক্ষ পূর্বিবাতে বাবং পরিপূর্বত্য না হন, ভাবং বর্জনান কলা—প্রভিপত্যকি ভিবি বারা যুদ্ধি পাইতে বাকেন, ভাবার বেণ্পরাত্র অহাবস্থাতিবিতে সেই নিতা। ক্যাকে (অবাতে) পর্বাব্যিক ना रह, (नरे नर्गत कोश्यान कनानपूर यात्रा क्रकनरक कत्र नारेट वारकम (১)। व्यापका त्राजिए व अया कना वर्डयान वारक यमा रहेशाय, कानावा अवानिक (नरे वाक्षणक (नरे वाक्षण

প্রথাপতি বক্ষাবারণে পাঙ্কত্বপ—পদান্ত; ছালোক, আছিঙা ও বন হইতেছে পিন্তা,পৃথিবী, অগ্নিও বাক্ ভালার আছাছানীর বাতা; ভত্তরের মধ্যবন্তী প্রাণ প্রভাবতণ; চক্রকলা তিখিসমূল হইভেছে—বিস্তঃ কেন না, বিজের ধেবন প্রান-বৃত্তি আছে, ভেবনি চপ্রকলারও প্রান্থতি আছে; এবং মহাকালের অংশকৃত সেই কলানমূলই কপতের বিচিত্র পরিণাম ঘটাইতেছে; ভক্ষণ ভালারাও কর্মবন্তপ; এইরণে অর্থাৎ উক্তপ্রকার দিতা, বাতা (আছা), পুত্র, বিস্তুও কর্মবৃথ্য বলতঃ পূর্বভাগান্ত উক্তপ্রকার দিতা, বাতা (আছা), পুত্র, বিস্তুও কর্মবৃথ্য বলতঃ পূর্বভাগান্ত উক্তপ্রকার দিতা, বাতা ক্ষারা হউক, আমি কর্মবৃথ্য বলতঃ প্রতাগ্রে উক্তপ্রকার ক্রিবন, ইত্যাকার কামনাজ্বারী পাঙ্কে কর্মের ক্রমব্রণে অভিবান্তে হইছাছেন : কেন না, অগতে কারণাক্রপ কার্যাস্থিক গ্রেভাবিক নির্থানিত। >

⁽১) তাংপথা - জনপুথাৰে বেংছল কলাও কথা এইএপ লিখিত আছে — ''আছ। বোদ্ধলামেন ধেনি গোলা নহাকলা। সংগিতা প্ৰমানাল বেছিবাং থেছবাৰিক। আনানিপৌৰিক্ষা বং এব পালনা কলা। ভিগম্ভাং স্বাধানে। বোড়লৈও ব্যাসনে।'

মন্ত্রি এই বে, চল্লমওলের বোচলভাবের মন্তর্গত একটাভাবের নাম 'ব্যা', অমান্তে 'বহাজলা' বলে, ইয়া নিতা এবং সর্কাকলাতে অন্তর্গত ও সকলের আরামুক্তা। ইয়ার দ্রাস্থান্তর নাম, চিন্নিম একইল্লংশ বাকে। এই 'অন্য' কইতে পূর্ণিয়া পর্যন্ত যে, চল্লের কলা-স্মৃত্, ভারারাই ভিবি নাবে বিব্যাভ; তারার পরিমাণ বোড়ল, ইরার করত নতে, বেশীও মতে: বাফল বা প্রয়োগদানায়ক কালের নাম স্বেবসর; প্রহাণভিত্তে স্বেবসর বলাতে উল্লেক্তে কাল্যমন্ত্রণই বলা কলা, ভিবিত কালেরই অংশবিশেন; কালেই উচ্চ বোড়ল তিনি কালক্ষরী প্রহাণভিত্র অব্যবহাণে পরিস্থাত কইতে পারে। প্রতিপ্রত্ ক্রিয়া বা অমার্যন্ত বে প্রকাশ ভিবি (কলা), ক্রকাশে সে সমূর্যন্তর কর হয়, আবার ক্রেপ্রত্তে বৃদ্ধি হয়, 'অনা' করাটি কিছু টিকই বাকে। উহাকে আন্তর্গত ক্রিয়াই অপ্য প্রকাশ করা বর্ত্তান বাকে। এইআন্ত উহাকে অল্যায়ায়ায়ার বাল বালে।

বেহেতু, উক্ত প্রকাপতি এই অবাবজ্ঞা-হাত্রিতে চন্তরণে দ্বত প্রাণিয় হাত্ররে প্রবিধ ইছা। ক্ষরা। (অবা) ক্ষরার সহিত অবস্থান করেন, দেই হেতু এই অবাবজ্ঞা-হাত্রিতে কোন প্রাণিরছি প্রাণিন্দের করিবে না,—প্রাণিহিংসা করিবে না; এবন কি, ক্ষলানেরও কান্দ্রাণেরও) না; ক্ষলান অভাবতই পাণায়া, পর্নন করিনেও অবলগ করার; এইকর সহকেই ভাহাকে হিংসা করিবে না ।। ভাল করা, 'তার্ব ভিরন্থনে কোন প্রাণীরই ভিংসা করিবে না' ইজ্যাধি প্রতিকে নাবারণ ভাবে প্রাণিবিংসাই ও নিশ্বভ হইরাছে; ভিবে এবানে আবার বিশেব করিয়া নিবেনের প্রবোজন কি? । ইা, হিংসা নিবিভই বটে, ভবাপি বে, এবানে বিংসার নিবেন করা হইরাছে, ভাহার উদ্বেশ্ব—অবাবজার অক্তর্জ বিংসার প্রতিপ্রসন্ধর (অনুষ্ঠির) কর নতে অববা কুক্তানের হিংসা-বিধানের কর্মত নতে; ভবে কি না, এই সোম্বেরতার (চল্লম্প্রী প্রবাণতির) অপ্রিভির —পূলার কন্ধ বাত্র, কর্বাৎ রাজনের হাতি আবর প্রস্কানার্বই এই নিবেনের অবভারণা করা হইরাছে । ৬৮ র ১৪ ৪

যো বৈ দ দংৰৎদরঃ প্রজাপতিঃ বোড় কলোহরমেৰ দঃ,
যোহরমে বংবিং পুরুষস্তত বিভাষের পঞ্চদশ কলা আছিবাত
বোড়শী কলা দ বিভেবিৰ চ পূর্বাভেহপ চ ক্ষীরতে তদেত মন্ত্যম্
যদর্শাত্মঃ প্রধিবিভিং তত্মাদ্যতাপি দক্ষ জ্ঞানিং জীরত আত্মনা
চেক্জীবাত প্রধিনাগাদিত্যেবাত্ম ॥ ৬৯ ॥ ১৫ ॥

[ক্ষমাঃ }। [রবচক্র-ডানীরং আত্মা চেৎ তাবভি, তলা প্রবিদ্যানীর-বিষ্ণ বিশ্ববেহণি পুৰতেন সংস্থাতে এবেডি চাবঃ } ঃ ৬২॥ ১৫॥

আলাপতি, ইনিই সেই প্রজাপতি—এই যিনি এবংবিধ-জ্ঞানসম্পন্ন অর্থাথি অন্তর্জাতিত পুরুষ; বিত্ত তাহার পঞ্চনশ কলা, এবং সান্ধা আর্থাথ অন্তর্জাতিত পুরুষ; বিত্ত তাহার পঞ্চনশ কলা, এবং সান্ধা আর্থাথ দেহপিও তাহার যোড়শ কলা; সেই পুরুষ এই বিত্ত ন্ধারাই পুষ্টিলাত করিয়া থাকেন। আবার ক্ষাণও হইটা থাকেন; তাহার এই বে, দেহপিও, ইহা হইতেছে—নভা অর্থাথ রথের চক্রন্থানীয় (প্রধান), আব বিত্ত হটাতেছে—নভা অর্থাথ রথের চক্রন্থানীয় (প্রধান), আব ক্রন্থাও বিত্ত স্থানীয় প্রথান), আব ক্রন্থাও বিত্ত স্থানীয় গালে, ভিছা হইলে, বিলাকে বলিয়া থাকে—রথচ ক্রন্থানীয় ইনি বিত্তান হইয়াছেন, অভিপ্রায় এই যে, নেমি নদ্ট হইয়াও চক্রটি রক্ষা পাইলে থেমন পুনঃ সমাধান করা বায়, থেমনি বিত্ত নদ্ট হইলেও যদি দেহপিও রক্ষা পায়, ভাহা হইলে ভাগার পুনঃ পূর্ম্ব বন্ধা প্রাণ্ডি সন্তব হয় । ৬৯ ৪ ১৫ ৪

न्याक्कक्का-ज्ञाक्काः (या देन मः পরোক্ষতি হিত: সংবৎসরঃ প্রঞ্পতিঃ বেণ্ডুৰকলঃ স নৈবাতালং পরোক্ষো বছৰাঃ, যথাদরংঘৰ সংপ্রজ্যক উপলত তে কোন্দ্ৰরূপ যা ব্যোক্তং তালায়কং প্রঞ্গতিবাদ্ধান্ত বেদ্ধি, স এবংবিং পুরুষঃ; কেন সাধারেন প্রঞ্গতিবিত, তহু যুঙ্ —তক্তৈয়ংবিদ্ধা পুরুষণ্ঠ প্রাধিবিভাবে । প্রকল কলাঃ, উপস্থাপস্থাপতি ভিল্ল তিছিলায়াক কর্ম ; তাল কংগতারৈ – আইছান পিও এব আল বিভ্যা বোড়নী কলা ক্রম্থানীয়া; স চক্ষ্যবিবেইনৰ আপুর্বাতে চ অপক্ষায়তে চ, তলেভলোকে প্রস্থানীয়া; স চক্ষ্যবিবেইনৰ আপুর্বাতে চ অপক্ষায়তে চ, তলেভলোকে

छएएटर नडार — मार्टेटा विटर मछ।म्, नाटिर १। वर्ष्टीटि; किर छर १ वर्ष्ट्रर (यार्ड्डम् व्याद्य निकः अर्थाः विकः निवयः इपामोवर वाद्यः — हळ्टाउवा-बर्ध्यमादि । छत्राप् वद्यानि मर्क्टगानिर मर्क्ष्यानद्वयः वोद्याद्य दोवर्ट्ड झानिर ब्यार्ट्ड्डाछि, व्याद्यमा हळ्नाचिद्यानीर्थन (हच्च विच कोवाच । व्यवस्थि वाद्यम नाद्यवाद्यमाद्यम् व्यवस्थ कोर्यार्ट्ड्ड्य्य्य व्यवस्थ व्यवस्थ व्यवस्थ व्यवस्थ । व् িকা। বংশুগৰাখিবিক্ষান্ত্ৰক্ষণ ক্ষণপূল্যনৰমুক্ত, ভবৰ্ষনি ক্ষাণ্ডিনিভাব্ধ কৰে কৰ্ত্বাবিভাৱ—যো মা ইন্ডি; প্ৰভাক্শুগৰভাষান ক্ষাণ্ডিং প্ৰৱন্ধা প্ৰভাৱনতি—ক্ষোণ্ডিতি। ভত প্ৰভাগতিবন্ধনিভাবিভাগত প্ৰিয়ন্তি ক্ষেত্ৰাত ক্ষেত্ৰাত ক্ষিত্ৰা। ক্ষালাং ক্ষাবিভাগত ভবাহ-ক্ষিত্ৰা। ক্ষালাং ক্ষাবিভাগত ভবাহ-ক্ষিত্ৰা। কৰা ভাষাং ক্ষাতিং ক্ষাত্ৰাক্ষিত ভবাহ-ক্ষিত্ৰাল ক্ষাত্ৰাত ভবাহ-ক্ষিত্ৰাল ক্ষাত্ৰাল ক্ষাত্বাল ক্ষাত্ৰাল ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰাল ক্ষাত্ৰাল ক্ষাত্ৰাল ক্ষাত্ৰাল ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্বাল ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত্ৰ ক্ষাত

আবৈৰ প্ৰবা কলেডুক্তি অংশৰ ৰপচকৰ্টান্তেন স্পট্টাতি—স্তেসেন্ড দিন্তি। নাজি ক্ষাপ্তিক। অংশাৰীয়ং বা নজাং ধৰেৰ কল্পানা স্বোধানাতি নিজং ক্ৰান্তিন। প্ৰীয়ক্ত চক্ষপিতিক। স্বাধান্ত প্ৰবাহন প্ৰবাহনিক। প্ৰবাহন ক্ষাপ্তিক। ক্ষাপ্

ভাল্যান্ত্রাকে। ইতঃ পূর্বে বেছব-কণাযুক্ত সংবংসরাশ্বক বে
প্রভাগতিকে পরোক্ষাবে (ইপ্রিরের অগোচররপে নির্কেশ কর বইরাছে,
ভারকে নিভান্তই পরোক্ষ গণিয়া বনে করা উচিত নবে; বেকেছু, ইনিই
সেই প্রভাগতিরপে প্রাক্ষতঃ ভানগোচর কইতেছেন; এই 'ইনি'কে প
বিনি উক্ত প্রকার অল্লারাশ্বক প্রভাগতিকে আহম্মরণে উপদত্তি কবিলাছেন, বংগাক্ত ভানসম্পন্ন সেই পুরুষ। কিরুপ ধর্মের সামা নিবছন ভাগার
প্রভাগতিত্ব, ভারা বলিতেছেন সেই বে, এবং'বর ভানসম্পন্ন পুরুষ, পরাকি
বিভাই ভারার প্রকাশ কণং, কারণ, চল্লাকণার ভার বিভেরও প্রাস্কৃত্বি
আরে, এবং বিস্কু যারা কর্মের অল্পন্নান্ত সম্পন্ন হইছা বাকে (>)। সেই
বিন্ধান্ পুরুষের আল্লা—কেংগওই ভারার পূর্বতা সম্পান্তনের উপবাদী
ব্যক্তির প্রধা কগারানীয়। চল্লের কার দেই বিন্ধান্ পুরুষও বিভের কৃতিতে
কৃত্বি পান, আবার বিভের অপ্রচার জীব হন, ইরা প্রস্তিক করা।

ইহাট দেই নতা, নতা অৰ্থ- নাতির হিডকর, অথবা নাতির বোগ্য; সেটা জি গু বাহা এট ছেছাগত, চক্রের বেখন অর-দেবি প্রভৃতি (চক্রের বলাকা ও প্রায় ভাষার বেইনী প্রভৃতি), বিভও ভেষ্টা (পরিবার্থবি-ছানীর : এট কারবেই যতি ক্থমও স্ক্রেগাণ্ডবে পুক্রের চানি রানি (ছাব)

^{(&}gt; ভাবশ্বা - চল্লাজনার বেল্লা ক্লান-বৃদ্ধি আছে, বিষয়েও সেল্লপ ক্লান আছে, এবং চল্লাজনা বেবন অপন্তের নানাবিধ বৈভিত্তা (কর্ম , নাবন করিছ বাজে, পুরুষ বিশ্ব বালাও ভোষনি বিশিষ কর্ম সম্পাদন করিছা বাজে; এইছাপ সাম্প্রান্থনারে বিশ্বকৈ করাস্থানীর বলা ক্টান ।

ষটে, আর রখচক্রের নাভিছানীর বেংগিও বলি জীবিত থাকে, অর্থাৎ সর্বাহনাশ বইলেও পুরুষ বলি অপরীয়ে রকা পার, তাবা বইলে লোকে বলিয়া থাকে—অর ও নেবি প্রস্কৃতিবিষ্ক্ত রবচক্রের ভার ইনিও প্রথি ছারা—বিভালি বাল পরিজনে কাশ হইলাছে: অভিপ্রায় এই বে, যান পুরুষ জীবিত থাকে, তাবা বইলে চক্রের মর নোমছানীয় বিও ছারা ভাবার পুরুষ জীবিত থাকে, তাবা বইলে চক্রের মর নোমছানীয় বিও ছারা ভাবার

ज्ञां ज्ञां ज्ञां ज्ञां । जनः शहर्षम देवनिविवासम्हणम कर्षना वाद्याच्यः व्यवागिष्ठवं नहीं च वावाग्यम्, चनव दक काशिनिवाः शहर नावशनीविव्याच्यः, एव शूक्षक्षां श्रादिशानाः (शाक्षां व्यावस्थावाः गामाक्यानव्यम्, न शूक्षांचीनाः (शाक्ष्मां व्यावस्थाः विद्यानव्यविवयः) भारतः शूक्षांचीनाः गावनानाः गावानिश्याप्यः वक्षान् वेद्याक्षक्षिकः।

সাভাস-ভাস্থা-বুলান্ এই প্রকার বৈধানিক ও বিজ্
সম্বিদ্ধ পার্ক কর্ম হার। পুরুষ স্বাধ্যায়ক প্রজাপতি ইউতে পারেন,
এ করা বিভি চইরাছে। সেবানে সাধারণভাবে কানা বিভাকে পরিবারছানীয় বলা চইরাছে। সেবানে সাধারণভাবে কানা বিভাকে পরিবারকর্ম কর্ম ভাষার ইয়ার। সকলই লোক-বিশেষপ্রান্তির উপার্থন্ত্রপ,
কিন্তু পুত্র কর্ম ও অপরাধিকার বে, বিভার প্রকার লোক কন্সাধনের সভিতে
ক্যোলক্রম রাধানী দ সক্ত আছে, তাহা কানিকে পার। বাম নাই; অত্যপর পুত্রান্ত্রিক সাধনের সাক্ত সাধনীর বিশেষ বিশেষ ক্ষের সহিত্ত বৈয়প
সক্ত আছে, তাহা বলা আবক্তক, অর্থাৎ কোন্ সাধন ক্ষমের
ক্ষেত্র সিদ্ধি হয়, এখন ভাষা বলিতে এইবে; তক্ষনা পর্যর্জী কাক্তন।
(ক্রম্ভি) আরম্ভ ক্টভেডে—

শ্বৰ বেয়া বাব পোকা মনুব্যলোকঃ পিছলোকে। দেবলোক ইতি, সোহ্য়ং মনুব্যলোকঃ পুক্ৰেণৈৰ জ্বো। নাম্মেন কণ্মণা, কণ্মণা পিছলোকো বিশ্বরা দেবলোকে। দেবলোকে। বৈ লোকানাত শ্রেষ্ঠস্তশাবিদ্যাং প্রশতসন্থি । ৭০ । ১৬ ।

জান্তাকাৰ্য: — লব (লভাগরং) এয়া (লিবিবাঃ) লোকাঃ (ভোগ-ভানানি) বাব (লোকাঃ),—নমুস্তলোকঃ, পিছুদোকঃ, রেবলোকঃ— ইভি ना जार वक्षणां प्रतिन वय वया (विकृष्य क्षिक क्ष्रं जाकाः), जर्मन कर्णना न (व्यक्ष्य जाकाः); निकृत्वाकः कर्णना [क्ष्याः]; व्यवताकः विकास जानाः अविवश्यः विवशः क्ष्यं विवशः विवशः क्ष्यं विवशः क्ष्यं विवशः क्ष्यं विवशः क्ष्यं विवशः क्ष्यं विवशः (व्यक्षः), क्ष्यं विवशः विकास (व्यवताकः देव (व्यवः) व्यक्षः (व्यक्षः), क्ष्यं विवशः विकास (व्यवताकः विवशः क्ष्यं विवशः विकास (व्यवताकः विवशः विवशः

শ্লাপুলাদে — লতঃপর ত্রিবিধ লোক অর্থাৎ তোগন্থান প্রসিদ্ধমনুবালোক, পিতৃলোক ও দেবলোক। তন্মধ্যে একমাত্র পুত্রদারাই এই
মনুবালোক তথ্য করিতে পাবং যায়, কিন্তু অক্ত দারা কর্মা দার!—
নঙে; কর্মাদারা একমাত্র পিতৃলোকই তার করিতে পারং বাবং, এবং
একমাত্র বিন্তা দারাই দেবলোক তার করিতে পারং বার। লোকত্রবের
মধ্যে দেবলোকেই ভোঠ; সেই কারণে পণ্ডিতগণ দেবলোকলাভের
সংধ্নত্তত বিভারে প্রশংসা করিয়া পাকেন ৪৭০ ৪ ১৬ ৪

न्याद्वास्त्रसः ज्ञास्त्रसः व्याप्त वार्षाणकार्याः अतः नार्यणयवार्यार्थः — वह अव वारक्षाक्षराधन है। (लाकाः, म नामा माविका याः, रू रक्ष हेश्राह्यः — वृष्यार्थाकः (यञ्गार्थः) (वर्षाकः है है। (ठ्याः त्राह्यः म्बूषःर्थाकः पूर्वादेवव माःस्म कथाः (कठवाः मावाः; यथाः ह पूर्वा रक्ष्याः, छर्थाव्यव्य वक्षायः, मारक्षम कथाः (विष्याः) (विष्यः) (वर्षाकः। कथाः व्यवः) विषयः।
विषयः
रक्षर्थमः (क्ष्यर्थमः विष्यः) (वर्षाकः) देव र्थाकामाः व्यवः।
रक्षर्थाकः म पूर्वः मार्थः वर्षाः व्यवः।
रक्षर्थाकः व्यवः वर्षाः व्यवः वर्षाः अवः।

্রীক্রা। অন্তর্যাত্তির প্রধান ব্যবহার বিষয়ে কর্মিক ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর বিষয়ে বিষয় বিষ

জ্ঞান্ত্রান্থে — শব শবরী বাব্যারজ্ঞানত ; "এয়া বাব" এই বাব শক্ষে আর্থ অববাবণ ; লাজ্ঞান্ত সাংমননতা লোক বা ভোগভূষি নিশ্চই ভিন্টী , নামও নর, অধিকও নয়। সেই লোকজ্ঞানি বি, ভাষা বন্ধা ইইভেছে— বন্ধজনান , শিভ্নোক ও বেবলোক ইবাবের ববো এই বহুজনোকটি একবাত্র প্রজ্ঞাী সাধনের সাহাব্যাই জন্ন কারতে পারা বায় — ভোগান্ত্রর করিছে পারা বায়; কর অন্ধ বার্যা— কর্ম বা কিছা ভাষা লয় করিছে পারা বায় (বন্ধপে বহুজনোক কন্ন করিছে বন্ধা না প্রভারা বেরপে বহুজনোক কন্ন করিছে বন্ধা না বার্যা শিভ্নোক ক্ষা করিছে পারা হার। কর্ম বার। -উনাদনাবাহাত্ত আরিছোত্রানি বার। শিভ্নোক ক্ষা করিছে পারা , আনর একবেন্ধাক উপাদনা ভারা) কেলোকট জিলেকের মধ্যা ভোইলোক , সেই করেনে জানিগন ক্ষাবেলাক গিছির উপান্ত্রন প্রবান করিছে লাক্ষ্য করিছে বিজ্ঞান করিছে গারা করিছে বারা নাব্যা করিছে বিজ্ঞান করিছে লাক্ষ্য করিছে বারা করিছে বার্যা করিছে বার্যার প্রবাহন করিছে বার্যার প্রবাহন করিছে বার্যার করিছেন করিছে বার্যার করিছেন করিছেন বার্যার করিছেন বার্য

ষধাতঃ দক্ষভিষদ। শৈষাশাহতেহধ পুত্রনাহ— থং ত্রন্ধ বং
বজ্ঞত্বং লোক ইতি; স পুত্র: প্রত্যাহাহং ত্রন্ধাহং যজ্ঞাহং
লোক ইতি; যবৈ কিঞ্চানুক্তং তক্ত দর্মক্ত ত্রন্ধেত্যেকতা,
যে বৈ কে চ মজ্ঞান্তেষাত্ব দর্শেষাং লোক ইত্যেকতৈতাবদা ইদ্ধ দর্মাবেতন্মা দর্মের সম্মানতোহতুনজনিতি, তন্মাৎ পুত্রমমুলিইং
লোকামাহত্তন্মাদেননফুলানতি; স যদৈবংবিদন্মাল্লোকাৎ প্রৈত্যাবৈতিরেব প্রাণ্ডে: সহ পুত্রমাবিশতি। স যন্তনেন কিঞ্চিদক্রমাকৃতং ভবতি, তন্মাদেনত দর্মন্থান পুত্রো মুর্জাত;
তন্মাৎ পুত্রো নাম সঃ, পুত্রেশৈবান্দিলাকৈ প্রতিতির্ভত্যাধৈনমেতে দৈবাঃ প্রাণা ক্রম্ভা ক্ষাবিশক্তি ॥ ৭১ ॥ ১৭ ॥

टाबरमोरशामा-भवनर वाचनम्।

ज्यक्षकार्थाः - प्रक्र लामकारम्बर क्या सर्थन, क्यार् व्यवहारि । वर (राज्याबार), वहा : वहानकः) मध्यक्ति (मध्यश्रामः---पूर्व पायम् हेवाम्यावातः, तमावात-मर्पनात टेडण्डः [केंडाटक -] [निडा] यशः (प्रतिन् कारतः देश्यवान् । प्रतिग्रन् -हेडि । प्रश्रह ं विकासांडि), चन (चनवतः-- हरः) पूत्रवृ (चाह्रवः, चार ६ द्वरोडि)--पः अब, वर बचा, पः (नावः हे कि , मा : a वब्का । प्रका श्रावा (निचक्र श्रीहर्वाह }—पदर अब, पदा पक्ष: (मानः—ाहि। [अट्राय विन्तीकृष्ठाह्-] १८ विक १८ किव्लि चनुकर (वहा चरीठम् चन्तीछर 5 चन्तिहेर) उन्न नर्सन्न जब ईडि अक्टा जबनरबन अक्चर विविध्यन विठावी) : (व (क क देव - अतिर्द्ध) । वजाः (ववक्रकेशः - वक्रकेशः व्यवस् हिठाक , (७वा मार्सवाः वक:-हेकि अवता (वक्क-मार्वाक-वाहिमा अक्षार विविध्व हिवाबी ; , 'हवा (व :क ह देव (श्रविद्यों) (नाकाः াম্ম কেতবা: সম্ভা কিতা: অকিতাক), তেবাং সর্কোবাং লোক:—ইভি अक ठः, (नाक-मायन ठ (नाकनामान्यहरार अक्षा विव कठिवछार्यः), ि अठावद्यः कानः वद्यवाद्यमः यव कर्त्तवायातीः, हेष्ठः भवः उदमुद्धाः चुत्र मन्नावनीत्रम् ; ३४। ८छारकः नामः (र समाः मन प्रमुखंदा पानम्, छता ह ८क्तिर अन्दृष्ठिताः, अञ्चर्षतान्त (क्तिर, अतःभवः (१ मूर्स प्रदा अनुरहेताः ; তথা বে লোকাঃ সম ভেতবাঃ গড়ঃ কেচিং ভিডাঃ অভিতাত সভি, हेलानुः (च नृत्यं पद्म (कठनाः। चड उक्त-वक्र-लाक्नरेकः वश्वक् क्षांब्राम-(नाकका-कर्व्ठः विविक्तिता] , हेमर नर्वा , ब्रश्किक्ताः) अठावर टेव अञ्चल ब्रमान्टबर, यर (रवक बराबना, वक्क बक्काना, टानक b क्याः : ४७६ मर्कः मध्यः हेठः चचार (नाकः६) [व्यक्तिः] या (मार) अञ्चल (भाग'इम्रोठ, अविवादार्थ गर्छ), है। छ । छत्रार---[वचारवस्] ভশ্বাৎ (হেতোঃ) অসুলিটং ্ পিতৃঃ লাসনে খিতং) পুত্রং নোকাং (শেক-(इडक्त्रः) चाहः (क्यप्रति) [मिक्छाः] . २ चाः ((इरक्षाः) अनः भूतः बङ्गात्रांक , परनावत्राधमात्र উপ'दनवि) [निकतः] ; धवःविः ् स्वाक-७५८:) मः (छन(महे। निष्ठा रे दश (दिवन् काल) वचार लाकार देविष (जिल्ला देवा) जिला) जिला आहेनः (शक्यमाधीनः मह) भूका व्यानिवासि (जनाचाना नावकाका चार्रिकविश्व क्ररणन वाद्याकि); जत्वन · जानक्ष्यकृत्तानित्वा) दवि विकिर (चक्क्वार) जक्रवा (क्विकः क्षयारका यां) क्ष्मणः (व्यवस्थितः) क्ष्मणः, [क्ष्मः] ता तृक्षः [व्यवः व्यवः शास्त्रमा तृष्णिक्षः] क्ष्मणः (क्ष्म्याक्ष्मण्यः) असः (विक्षः) पृक्षणः (व्यवः (क्ष्मणः) पृक्षः (व्यवः) पृक्षः (व्यवः वृक्ष्मणः । विक्षः वात्रम् (व्यवः वृक्षमण्याम् विक्षः । तः (विक्षः) वृक्षः (प्रद्याः विक्षः) असः (व्यवः व्यवः । व

মুলাম্বাদে।—বহংগর 'সম্রান্তি' বণি চ চইতেচে—[সম্রান্ত বর্থ সম্প্রদান—পুরেরেও আপনার করেবা সম্পাদ্দের ভার সমর্পণ 📜 লোক বখন আপনাকে আসম্মৃত্যু মনে কৰে, তখন পুদ্ৰকে আহনান क्रिया वरतन- कृषि उक्त ((दन). कृषि गक्क, अवः कृषि लाक। পিতা এইরপ বলিলে পর ু সেই পুদ্র প্রতিবচনে বলেন—হাঁ, আমি ব্ৰহ্ম, আমি বজ এবং আমি লোক, [ইহার অর্প এই বে, আমার] वार्श किंदु अभोत वा अनशीत-- अशहन कहिट नाको अहि, वृधिह तह সকলের ব্রহ্ম, অর্থাৎ ভূমিই তৎস্বরূপ—অংশার কণ্ণবা অধায়ন ভূমি পূর্ণ করিবে ; যে কোনও যজ্জ [আমার কন্তব্য চিল 🏃 তুমি লে সমুনয়ের বজ্ঞসরপ, অর্থাৎ ভূমি আমার কর্ত্তবা যজ্ঞ সম্পাদন করিছেব; আর বে কোন লোক (ভোগভান) [ভয় করা—আয়ত্ত করা আমার উচিত ছিল], তুমি সে সকলের লোকস্বরূপ, অর্থাৎ তুমি সে সমুদয় লোক ভন্ন করিবে : এ সমস্ত—(গৃহার কঠবা) এই পর্যান্তই বর্থাৎ व्यक्षत्रम, यख्य ७ (लाककारत्रम व्यक्तित्रक किछू माहे; व्यामात्र शहे कर्त्रवा-ভার বহনপুর্বাক পুত্র আমাকে ইংলোক হইতে প্রয়াণের পর রক্ষা করিবে; এই ভক্তই পণ্ডিভগণ অনুশিষ্ট (গুলাসনপ্রাপ্ত) পুত্রকে লোক্য অর্থাৎ পিভার শুভলোকলান্ডের অমুকূল বলিয়া থাকেন; এই कात्रपटि भिष्ठा भुक्टरक [अंक्रभ] उभरमण मित्रा बारकन। क्ष्यात्रिक स्थानमञ्जूषा भिञा (य ममग्र देश्राम दहेर अपनाम करत्रन, পুত্রে প্রবেশ করেন; পিভার কোনও কর্ম্বা কর্ম বৃদ্ধি ঘটনাক্রমে করা না হইরা থাকে, ভাহা হইলে পুত্র [নিজে অমুন্তানপূর্বক] নেই কর্ম্ব পুরণ করিয়া) এই সম্প্রতিকারী পিভাকে সেই কর্ম্ব জালা-বন্ধন হইতে বিমোচিত করে; এই ক্রপে পিভার কর্ম্বরা পূরণ করে বলিবাই সন্তানের পুত্র নাম প্রসিদ্ধ; সেই পিভা [মুভ হইরাও] এবংবিধ উপদেশপ্রাপ্ত পুত্র ধারা ইহলোকে বর্মান থাকেন। মুত্যুর পর সেই পিভাতে হিরণাগর্ভের এই সমুদ্র অমর প্রাণ প্রবেশ করে, অর্থাৎ তথন ভাহার মর্ব্যভাব চলিয়া বার ৪ ৭১ ৪ ১৭ ৪

প্র-কর্ম-ভাস্যান। এবং দাবালোকত্ত্য-ক্লভেবেৰ বিনিমুক্তানি পুত্র-কর্ম-বিলাখ্যানি ত্রীণি সাংনানি; জারা ভূ পুত্রকর্মাধ্যাৎ ল পুরক্সাধ্যানি বিভিন্ন লিভিছিল; বিজং চ কর্মাধ্যাথ ল পুরক্সাধ্যাথ ল পুরক্সাধ্যাথ লিভিছিল; বিজং চ কর্মাধ্যাথ ল পুরক্সাধ্যাথ ল পুরক্সাধ্যাথ ল পুরক্সাধ্যাথ লাভিছিলেইনৰ ভবতীতি প্রসিত্র। পুত্রভ ভূ অভিনারকর্ম কেন প্রকারেশ লোকভাতেইব্রিভি ন ভারতে; অভভবক্তর্যাতি আর অন্তর্যারভাতে—

সম্প্রতিঃ স্প্রানন্ ; স্প্রতি বিভাষাণত কর্মণা নামধ্যের ;
পুষ্টে বি সাহবাগোরস্প্রানং করোতানেন প্রকারের পিডা, তেন
স্প্রতিসংস্কর্মনাং কর্ম। তৎ করিন্ কালে কর্মানিভানি-নাং পিডা
বলা ব্যিন্ কালে প্রেয়ান্ মহিবান্ মহিবানীভারিটাছিলপনিন বভতে, অব
ভলা পুরুষাহুলার—কং প্রথ, বং বজঃ, বং লোক ইতি। স এবর্জঃ পুরঃ
প্রভাব; স তু প্রবেবাল্পিটো জানাতি—বহৈতৎ কর্মানিভি; ভেনার—
অবং প্রথ, অবং বজঃ, অবং লোক ইতি, এতবাকান্তবন্। ২

अण्डार्वविद्याश्य हेणि वदाना अण्डिका। थाना अवर्षाण-नरेष किन वर किन व्यविदेव सन्क्रवी स्ववती स्वक्त एक नर्केट व स्वव्या स्वविद्य पर अच्छा अक्ष्य ; व्याह्य प्रवाहत्य प्राप्त प्रवाहत स्वविद्य ; न्याहित स्वविद्य । स्वविद्य स्वविद्य । स्वविद्य स्वविद ভবত ইতাৰ্য। বে বৈ তে চ লোকা বয়া বেজবাাঃ সভো বিজা অবিভাল, তেবাং সর্বোবাং লোক ইত্যেত্ত্বিন্ পদে একতা; ইত উৰ্চং বং লোকঃ মহা কেতবাংছে। ইত উৰ্চং বয়া অধ্যয়ন-বজ-লোকজয়কৰ্তব্য-ক্ৰছুম্বাহি স্বাশিতঃ, অহন্ত মুক্তোহ্বি কৰ্তব্যতাৰন্ধনবিষয়াৎ ক্ৰতোঃ। স্বাচ সৰ্বাহ তবৈৰ প্ৰতিপন্নবান্ পূৱা; অস্থাইছাৎ। ত

ভারেষ পিতৃরতিপ্রারং বহানা আচাই প্রতি:—এতাবং এতৎপরিবাণং বৈ ইবং সর্বং—বহু গৃহিণা কর্তবান্ধ, বহুত বেহা অব্যাত্রনাঃ, বজা বইবাঃ, লোকান্ড জ্বের্ডাঃ; এতরা সর্বাং সর্বাং বান্ধ ভারং ব্যবীনং ব্যোহ-অপন্তিভ আর্থনি নিবার ইত্যেহ্যালোকাৎ না মানু অভুনত্তং পালরিবাতি— ইভি লুড়র্বে লঙ্জ, ছম্পনি কালনিম্বাভাবাং। ব্যাহ্বেরং সম্পন্তঃ পূ্রাং পিতরব্যালোকাৎ কর্ত্বগতা-বহুনতেঃ ব্যোচ্ছিবাতি, তথাৎ পুরবর্গপিটং লোকাং লোক্তিওং পিড়ুং অধ্যক্তান্ধনাঃ। অতএব ক্লেম পুরবন্ধনাতি— লোকাংকাছিবং না ভারিতি—পিতরঃ।৪

স শিতা বছা বিষন্ কালে এবংবিৎ পুত্রস্থাপিতকর্তবাতাক্রত্থ আছালোকাৎ প্রৈতি মিরতে, অব তবং এতিবেব প্রকৃতিবাত্তনাং প্রাথৈ পুত্রমাবিশতি পূলং বাাগ্রোতি। অব্যাত্মপরিক্ষেব্যুক্তবাত্তনাং বিভুৰাত্তনালা কেনাবিশ্বিকেন রূপেণ পুণিবার্যাকাভায়না তিয়ং আইনপ্রকাশপ্রকাশবহ সক্ষাবিশ্বি . তৈঃ প্রাইবং সর পিতাপি আবিশতি, বাত্তনাগ্রাত্তাবিভাং পিতৃঃ; অর্থখানতা বামনংপ্রাণা অব্যাত্তাবিভাং পিতৃঃ; অর্থখানতা বামনংপ্রাণা অব্যাত্তাবিভাং বিভারঃ —ইত্যেবং ভাবিতো হি পিতঃ; তথাৎ প্রাণাত্মবৃত্তিত্বং তীতি বুক্তমুক্তন্ —এভিরেব গাবৈং সর পুত্রমাবিশতীতি; সংক্ষাং হুসাবাত্তা তবতি পুত্রস্থতা তা এতত্তকং তবতি—বস্তু পিতৃরেবনক্ষিত্তং পুরোভ্রতি, সোহবিল্লব লোকে বর্ত্ততে পুত্রমণেন, নৈব মুতো বরুবা ইত্যার্থঃ। তথা চ প্রতাত্তরে—"সোহস্থান্থিতর আত্মা পুণোতাঃ কর্মভাঃ প্রতিবাহতে" ইতি। ৫

णर्यकानोः প्रतिर्माहनगार- न पृताः विक क्वाहिवरान विका प्रकृता रकार्यक्रिकः प्रकृत प्रकृतः कर्वतान्, छनार कर्वताकावनार विका प्रकृति नर्मनास्त्राकशास्त्रिक्षक्रिकार पृत्ता मुक्ति रवाहवान, छर नर्मर प्राच्यक्रिकं पूर्वाक्षाः; छनार--- वृत्तम सावस्य न विकान् वनार, छनार पूरका नावः; हेवर छर भूक्षक भूक्षकः--वर विकृत्वितः सुवित्र सावस्य।

अवस्यारकाषाः--- नकवर साव्यनम् ।

টীকা। বৃধ্বস্থয়তি — এই মিডি। পুরাধিকজারাবিভারেরি রক্তবাং কলবিশেষে বিনিরোগে বক্তবাং ইত্যাপভাষ্য সংখ্যা জিডি। ন পুথৰ পুরুষ্বভাষিতি বেরঃ।
ন পুথকুসাধনং কর্মাঃ সভাপাধিতি তাইবান্। ভবরেবং সাধনতরনির্মন্তবাণি বিজ্ঞান্তবিধী বিষয় সংলক্ষরতারে ভিবিতি পুরানিরপথিতি। ভাষ্ট— ক্রিপ্রাক্তর্যকর্মকেশান্তি।
বংগান্তে ভাল্পে পুরুত লোকনেত্যজ্ঞাপনার্থং সংগ্রহিবাকাবিভাষ্য জনত ইন্তি।
অধান ইতি পথবাং ব্যাব্যায় সংগ্রহিপাবং ব্যাব্যই— আ প্রাক্তিন্মিতি। ভিনিবং সক্ষরামধ
নাব, প্রধান—আং প্রাক্তিনি ক্রীতি। তবেব কর্ম বিশ্বরাভি—পুনুত্র জ্বীতি। অবেন
প্রভাৱনিতি সংলগ্যাপ্রস্থানিতি। পরিষয়ানিপাবেন মুখ্যাধিনপ্রেয়ঃ। প্রভাব
বাকাব্যাবিধি সংলগ্যাপ্রস্থানিতি প্রভাবিদ্যানিপারিক। জারিভি। বার্যা
বাকাব্যাবিধি সংলগ্যাপ্রস্থানিতিইং হলা কার্যাবিভি পুরুত প্রাণ্যপ্রিটভাভাবে প্রভিত্যান্ত্রশাক্ষ্য

ববৈ নিকেরাণিবাল্যানাং পুত্রাসুমন্ত্রণনাইলার্থকেরাজারাং পুরক্তরিজ্ঞানজান্ত্রন এতি করি নিকেরানিবাল্যে বাল্যার্থনাইলার্থনাইলেডি। বাল্যার্থনিক বাল্যার্থনাইলেডি। বাল্যার্থনিক বাল্যার্থনাক বা

ভৱেতি হবোকাজুলাসনোজিঃ। একরা সংগবিকালি এতাকমানার ব্যাচটে—জার্জাই জীজি। অবভাবে ভূতেংগে বিধিকত সভে। তবিবাদর্শবং কথবিতাশিলাহ—জুক্র-জীজি। পুরাজুলাসনত করববাধ—অন্যান্দেড্যাদিনো।

কৃতসংগ্রন্থিক নৰ্ শিকা কিং করোভীভাশেকারাবাং—কা পিছেন্তি। কোন্ধাং প্রবেশ্যে ব হি বিশিষ্ট্রত কেবলত বা বিলে সর্পবিধ প্রবেশ: সভবভাত আহ—জ্মধানি ক্রোক্তি। বেজুবিধ্যাজানাধি:। বাধাবিধাবিষ্টেশনি ভূতোহ্বাভয়ত নিভুরাবেশ্বী-বিভাগভাহ—আনিভিত্ত। ভভাবিদ্যেব ক্ষোয়াভি—অফায়ক্তি। ভাবনাক্ষাবাহ— ভুজ্মানিভিত্ত। পুত্রবিশ্বেশ্যং পাছিল্যায়ত পিছুত্বব্যবিভাগ্রাণ্ডাহ—অক্টেজাং আঁতি। বৃত্তত শিল্পবিতা লোকান্তাবৃত্তত কৰা বৰোজন্তগৰবিত্যাপত্যাৰ—এজন্তুপুত্ৰ-মিজি। পুত্ৰত্বপোত্ৰ হিভিনেৰ বিভ্নতে—ইন্ত্ৰেডি। বৃত্তাংশি শিতাংকৃদিই-পুত্ৰাব্যাত্ৰ বৰ্ততে নামাৰভাতং ব্যাবৃত্তঃ কর্তন্ত ও পথত্ৰতি ভাষঃ। উত্তেহৰ ক্ৰিতিং সংবাদম্ভি—জ্ঞ প্ৰা স্কেডি। বন্ধী-প্ৰথমভাৱে শিতাপুত্ৰাবৃত্তাত্তে।

ন ব্ৰীভাবিবাক্যববভাব্য ব্যাক্ষেত্ৰি—অনুশ্ৰক্তাপ্তিন্ধা। অনুভবকুভাবিভি ভ কৈছে । ভাষাবিভি প্ৰভীক্ষাবায় ব্যাক্ষেত্ৰি—পূন্তেশ্ৰেন্ত্ৰ। ভবেৰ প্ৰপ্ৰভাৱি— ইচ্ছে ভাষাকি প্ৰাইবাৰ্টাং বিশ্ববভি—জ প্ৰেড্ডিড় পূৰ্বেইবভল্লোভন্তব্যুক্ত ব্যাহিত—এন্ত্ৰামিতি, ব্যোক্তাং প্ৰাইভাৰ্শ্ববোহিশ্ববাহ—ম ভ্ৰম্প্ৰাইভাৱি ভাষাং শিভা ভৌ অভিড, ভ্ৰাহ—ক্ষেত্ৰেপ্তি। ভবেৰ ক্ষুট্টিভ—ম স্থীতি। অনুশিক্তপুৰেইবভল্লোকন্তিনং শিভৱব্যিকভাবিক্ষিত্ৰাট্ৰ বাৰ্টাং ভ্ৰয়াক্ষেত্ৰিতি— আনুশ্ৰন্তি। পূৰ্বাক্ষৰণবিক্ষেত্ৰাব্যাহ্যবাহাৰ । ১৮: ১৭।

ভাল্যান্দ্রবাদে। ববোজপ্রকার সাবনীর জিবিব লোকপ্রাধিন
রূপ ক্লভেষান্দ্রসারে পুত্র, কবা ও অপরাবিধান, এই তিন প্রকার সাবন
কবিত হইরাছে; পদ্ধাও একটি সাবন বটে, কিন্তু পুত্রাবপাধন ও কবাসম্পাধনই পদ্ধার প্রধান উল্লেখ্য; পুত্রাব উহা পুথক্ বতন্ত্রসাবন নতে; এই
কারবেই,সাবনরপে পদ্ধার আর পূবক্ নির্কেশ করা হর নাই; এবং বিভও
ক্রম্মশাবনেরই উপারস্করপ; পুত্রাব তাহাও বতন্ত্র সাবনরপে পরিপাশত
বহুনাই; ভারার পর বিধ্যা উপাসনা) ও কবা বে, লোকবিবেশ করের সাবন
হর, ভারাও আক্রমান্ত বারাই বন্ধ, অর্থাব বিদ্যা ও কবা উভন্নই ক্রিয়ান্নক;
পুত্রাব তাহারা উব্লেগ্র হইবার পর লোকবিবেশ-প্রাপ্তির উপার হইতে পারে;
কিন্তু পুত্র বব্দ ক্রমান্দ্রক নতে, বিদ্য বস্তু), তবন সেই পুত্র বে, কি প্রকারে
লোকব্রের হেতু বা সাধন হইতে পারে, তাহা ত বুলা বাইতেছে না;
অন্তর্ভর প্রকাশ করিরা ভার্য বলা উচ্চিত, এইকক্ত পরবর্তী ক্রতি আরম্ভ
ক্রত্রেছে—

'জব' অর্থ—জনতর—অতঃপর; সম্প্রতি অর্থ—স্বাধান; 'সম্প্রতি'
শৃষ্ঠি বৃষ্ণাধান কর্মের নাম; পিতা নির্নাধিত প্রতিক্রমে পুত্রের উপর
নিজ্যে অন্তরে কর্মনাপাদনের তার সমর্পন করিয়া বাকেন; এই কারণে
এই ক্রিটি ক্রেক্রেইরাছে—'স্ম্রতি'। সেই কর্মটি কোন সমরে করিতে
নুষ্ঠি, তারা বালতেছেন—সেই পিতা বে সময়ে অরিটানিম্পনি (১)

[्]रा () । कारणवा—व्यविष्ठ वर्ष वृष्ट्रात्रकः । । । वर्षः व्यवावः व्यवावः व्यवावः व्यवावः व्यवावः व्यवावः व्यवावः

गरन करवन—'वावि शवरणारक भवन कविय—वविषे धरेवन वृद्धिक शारतम, त्म भवाद व्यादम कविवा विण्य गर्मित व्याद (त्या), कृषि यक धवर कृषि है [व्यापात है त्या । ति भूद धवर ध्यापात विश्व विश्व है विष्य । ति भूद धवर धवर विश्व विश्व विश्व है विषय है विषय विश्व विश्

बहें परापंत्र पर्व क्षक्षत्र या पलाई चाहि बत्त कविश क्षकि निवाहे शहाब बाबाद अपूर्व दरेश बनिया विटिह्म-माबाद बार्ग कि मनुक, मबीठ वा चमशीष्ठ चन्ति चाह्य, [पृथि] .त त्रमूरहाइहे तक, अहे तक-तहा अक्षा चर्चार अक्ष वा चाँछहच विविध्य हरेबाह् ; चिटियां को त्व, अठकांन तक नवास भागाव (व, भवावन कार्या कर्डवा (६न, इंडानव प्रविदे तारे बन,-रणाबात कर्तृद्ध छार। मन्नव र्केक , रमहेन्नभ, रव मबक यज्ञ चामात चन्नुराव हिन, उत्रादा (र न्या पन पना पानि पद्धान कतिहाहि वा कति नारे ; रन नपू-परवृत्त कृति यक्ष ; अपात्मक अकः विविक्त ; अविद्याव अहे रव, देक्ष:पूर्व त्व नवक व्यक्त भाषां कर्का क्रिक्त हैवात नव क्रिक्त तिहै वळ, चर्चार ति नवुष्य ৰ্জে হোষার কর্তুহে সম্পন্ন ৰউক ; আর বে সমস্ত গোক বা ভোগস্থাম আমার क्ष करा (बाहर करा : डेडिंग हिन, उत्पादा किन ७ बाकि डेम्ब अनानरे चारक, लूबि ता ममूरव लाक ; अवारमध लाकनरर अकड विविक्त, रेखानब 'ठ्रांव (नहे लाक, चवार छाव:(क तहे नवृषत्र लाक वत्र कविटा हहेता। बुब्दिय (व, देशांत भारत आयांत करांता अवायन, वेळालूशन ७ लाक्यम क्यांत ভার ভোষাতে স্থাপিত ব্রণ; আবি কিন্তু অবস্তব্যভারণ বল্ল-বন্ধন बहेट्ड विक्रुक बहेनाय। भूक भूटबंदे केवन निका भादेशांबन; काटबंदे रन निष्ठां क्यांकान वरावरद्वान वयोगांद कदिया गरेन ।

म मृद्धांच म गर्काच प्रकाश्चरः ।" जानव्यकृत वाक्ति शोगिनिकीन कवित्म एर, यक श्वर, काशा गाव मा, श्वरूषक (रक्तका अश्च करव मा, अवर जक्रमको मक्त्य वर्गम करव मा। काशव गढ़, 'अकृरक-विकृतिक मा,' जवार जक्तमार प्रकारक गविवर्त्तम,—किक्कृत्य पाक्ति स्कार वर्गम स्वक्ता, माका वाक्ति कृत्य स्वक्ता देखारि । स्कार जाकारण मरमास्य मनव वर्गम, जवना परक्षरक कीवन पूर्वि क्ष्मम हेकारि व कवित स्टब्स वर्गा ।

প্রতি এ বিবরে উক্ত পিতার এইছণ অভিনার ধনে করিয়া বলিভেছেন—'এতাবন' এই পরিবাবই এ সবল্প অবাধ সুবীর কর্তার কর্ম,—বের অবারম করিছে হইবে। এই পুত্র আবার কর্মনা সমত তার আবা হইতে পুরক্ করিয়া অর্থাৎ আবার কর্মনালয় নিম্নে প্রহণ করিয়া এই জগৎ হইতে প্রস্থিত আবাক কর্মনালয় নিম্নে প্রহণ করিয়া এই জগৎ হইতে প্রস্থিত আবাকে পালন করিবে; বেকেতে কালবাবহারের বাবাবাধি নিম্নন না বাকার ভবিষ্যারে। বেকেত্, এবংবিধ সংগ্রহ (পিতার কর্মনালয় প্রস্থেত) ইবলোকরে কর্মনাল-বহুতে পিতারে কর্মনালয় করিবেন; সেই অরুট প্রয়োকণার কর্মনালয় কর্মনার শিক্ষাপ্রাপ্ত প্রকে পিতার লোকা—বর্মানিলাক করের উপরোধী বলিয়া বাকেন; এই উন্নেক্তেই—এই পুত্র আবার বোকলাতের অন্তর্গ্রহর, বনে করিয়া জনকপণ প্রক্রে ব্রোক্ত প্রক্রের ব্রাক্ত প্রক্রের ব্রাক্ত প্রক্রের ব্রাক্ত প্রক্রির ব্রাক্ত প্রক্রিয়া থাকেন; এই উন্নেকেই—এই পুত্র আবার ক্রেক্ত ব্রের ব্রাক্ত প্রক্রের ব্রাক্ত প্রক্র ব্রাক্ত ব্রাক্ত ব্রাক্ত ব্রাক্ত প্রক্র ব্রাক্ত প্রক্র ব্রাক্ত বর্ত ব্রাক্ত ব্রাক্ত ব্রাক্ত ব্রাক্ত ব্রাক্ত ক্র ক্র ব্রাক্ত ব্রাক্ত বর্ত ব্রাক্ত ব্রাক্

এकार्वित क्रांमणणण त्रहे लिछ। त्र प्रवृत्त व्यागमात कर्त्वाचां प्रस्तृत क्षेत्रत मार्गन करिका अहे शृतिको क्षेत्रत ख्रांन करवन,-मृहाख्य हन, छदन किनि बहै आधारिक बाक, मनः व आन पावाहे नुस्ताल अरबन करबन, प्रवीद शासा वाथ हम। किशार अहे (व, वह एव दहान (वयन क्यावाविक सावी-(भन्न क्षण) महे बच्छात्र इक्ष्मिक व्यापिक वत्र, एक्पीन (महे भिकात वाक.यमः खानक छवन बदाह्य श्रीताक्षत वर्षाय देशिक श्रीमात्र बादक शांकवाद कान कारन ना बाकार बार खड़क बन चाबिरेशियक गांबबो ७ वर्षि अक्छिकरन नर्वावश्वय मर्दा व्यक्ति बहेशः बारकम ; भिठाश वाक्, ममः । धानरक बाध-ভাবে ভাবৰা করার উক্ত বাক, বন: ও প্রাণের সহিত প্রবিষ্ট হটরা থাকেন: कातन, निर्धा छवन बहेबन छावनानन्त्र सन (व, जावि हहे(अधि जवास छ व्यक्तिवाणि विविधकार्य विकृष्णिकार वास्त्र वा व्यक्ति वाक्ष्य वाक्ष्य का चळ्य : त्यहे कादाव विका छवन आविद चनुदृष्टि वा चनुप्रदेश कादाहा बाटकत : चक्रव 'विचायन आदेन: नर' देलामि नाटका नावा नना वृहेबाह्य। छावा बुक्तियुक्तरे वर्षे । वित्तवकः तिका छवन नकरमध्य माध्यक्षण स्म ; श्रूष्णवार পুত्रतत गरमक मक्ति रहेता भएका, मक्तव बनारम (न, 'बक्तिन खारेन: मह पूजवाविनकि-वना वरेवारक, छादा वृक्तिवृक्तके बरेवारक । पश्चिमात कहे रव. रव निकार भूम बरेशन चयुनिहे वा यूनिभावात दर, किन भूमक्षन देवलाहकरे

(१४, णक अविष्ठिक (११४१) क्याँ णाइ —'कारात (मृत निहात) वह न्यत्रणी णगत णात्र। नृताकर्य-गणायमत यह अविविधिक्रण दक्षिक इत्र' हैति। व

ইবার পর এবন প্র-শব্দের নির্মাচন—বোগার্থ বনিতেছেন—এই নিভা
ফর্কুক বিছি কবনও কোন প্রকাশের কোন কর্ত্তবাক্ষা অনুপাছিত বাহিন্দ,
ভালা হইলে সেই পুত্র নিধে অক্তান হার। ভালা পুরণ করিয়া সেই নিভার
অনুপাছিত বর্গারি-লোক প্রান্তির প্রতিবছকত্বকা দেই কর্ত্তবাতা-বছন হইকে
পিতাকে বিবৃদ্ধ করে; সেই বেছু—বেবেতু পুত্র কর্ত্তবাসরিপ্রণ বারা নিভাকে
পরিমাণ করে, সেই বেছু পুত্র নামে প্রনিষ্ক; ইবাই পুত্রের পুত্রর অর্থাৎ
প্রস্রুগভার কারণ—বে, সে নিভার ছিল্ল কর্ণাৎ অপূর্বতা পূরণ বারা পরিজ্ঞান
করে। সেই নিভা বৃত হইলাও এবংবিধ পুত্র বারা ইহ-লোকেই প্রভিন্তিত
(বক্ষান) থাকেন; এই প্রকারে উক্ত নিভা উর্থণ পুত্র বারা এই বন্ধ্রা
লোক বন্ধ করেন; কিন্তু বিভাও কর্ম্ব বারা এই প্রকারে বেবলোক ও নিভ্নু-লোক বন্ধ করিবে গাবেন না; পুত্র বেরণ নিজের অভিন্ত লাভিন্ন করিবিক্ত কর্মান্থলন বারা লোক বন্ধ নাবন করে, বিভাও কর্ম্ম কিন্তু করে
না, ভারারা কেবল আন্তর্গান্ত করিয়াই লোকবন্ধ নাবন করিয়া থাকে। এই
রূপে পুত্রতে কর্ত্তবা করের ভারার্গণকারা নিভাতে বিব অর্থাৎ হিন্নগ্রন্তন্ত্র

পৃথিবৈ চৈনমগ্রেশ্চ দৈবী বাগাবিশতি, সা বৈ দৈবী বাগ্ ঘয়: যদযদেব বদতি তত্তত্ত্বতি ॥ ৭২ ॥ ১৮ ॥

সন্ধানাথ:। কৰবাবিশ ঠাতি প্ৰতিশাৰ বিছ্বাহ—"পৃথিবৈয়" ইত্যাদি। পৃথিবা (পৃথিবাঃ) চ আল: চ (পৃথিব্যগোঃ) দৈবী (অধিধ্যতাল্পা) বাক্ [আবাছিকপরিজ্বং তাক্]] এনৰ্ (ক্লুসম্প্রভিকং) আবিশ্বি। সা বৈ বাক্ বৈবী (তভা—অনুতাহিংবাৰ বহিতা); বল্লা বিশ্বা বাচা) বং বং এব বহুতি, ডংডং ভবুতি (সাক্ষ্যং লভাত্ত,—অবোধা চন্তু বাণু ভবুতীভাইঃ)॥৭২॥১৮॥

অ্লান্ত্ৰাদে। কি প্ৰকারে প্ৰবেশ করে, ভাষা বলিভেছেন— পৃথিৱী ও আগ্নির অধিবেশতা বাক্ বথোক্ত সম্প্রতিকারী পুরুবে প্রবেশ करत ; डांबोर्ड देवने वास्, यांबा बांबा यांबा यांबा वला इत्र, खांबा छांबारे नन्नात्र इत्र ; वर्षाय खांबाद बारमाच वाक्नकि लांख इत्र त १२ त ১৮ त

म्बद्धस्य-छान्याचा। क्षति वकाणि-वृतिरेश देशतिणाति। अवर वृत्तक्षीवर्षतिकार बद्द्यालाकिविज्ञातिकार व्यक्षात्र विकास विकास

ক্ষেত্ৰ শিত্ৰোক-দেবলোকৰয়েছিপ পিত্লোক-দেবলোকাভাং বার্-ভিরেব; ভবাং পুত্র-কর্বাপরবিভাকি: সমুজি গ্রাণ্ড গৈলি: জিলা এডেলো লোকেভাঃ বার্ডঃ প্রমান্তিভানেন মোক্ষরিকভীতি প্রশার্থ বোভার্বাভেব পুত্রাধিনাধনানীভাবি। তেবাস্থি মুখাপিধানার ইংমের পভি-জন্তরা ক্তম্প্রভিক্ত পুত্রিশং কশিশং জ্যান্ত্রান্থিং ক্সপ্রভর্মার প্রস্তা। ২

ন চেবাৰেৰ কলং বোজকলখিতি প্ৰাং বজুষ্, আৱস্থ্যাৎ বেধাতপাভাবান্ধান্ধান্তানাৰ প্ৰাং পুনৰ্জনৱত ইতি ধৰ্ণনাৎ, "বহৈতর ক্র্যাৎ ভীৱেত
ধু" ইতি চ ক্রপ্রবেশ্ব, শ্রীয়ং ক্যোতীরপ্রিভি চ কার্য্য-কংশ্যোপপত্তঃ,
"আহং বা উপন্"ইতি চ নামন্ত্রপ্রায়েরেনোপ্রভাবিং ন চেবারের
নাধ্যক্তর সংকৃত্য সৈৎ কঞ্চিয়োক্ষং ক্পচিৎ আরান্ধক্যবিত্যপাধের
বাক্যান্ধপত্তং প্রার্থিনাধ্যানায় আরান্ধক্যপ্রিব্যোপভীবভাবাক্যক্ত। ০

পৃথিবৈ পৃথিবাত এনসংগ্ৰত দৈবী অবিবৈদায়িক। বাক্ এবং কৃতস্মাজিকৰ্ আবিশতি; সংক্ষিং হি বাচ উপালানভূতা দৈবী বাক্ পৃথিবাজিকৰণা; সা কাথাজিকাসলাবিদাবৈদিকতা; বিশ্বজনোগপন্য
আবন্ধকক ইবেংকং একীপপ্ৰকাশৰত ব্যাহ্যোতি। তব্তজ্চাতে—
পৃথিবা আবেকৈনং দৈবী বাগাবিশভীতি। সা চ দৈবী ধাক্ অনুভাষি
লোধপ্ৰতিভা ভঙা, বলা বাচা দৈবা ধং-বংকৰ আন্ধনে প্ৰৱৈশ্ব বা বহুতি,
তথ্যভ্ৰতি— অনোবাজপ্ৰভিন্তাত বাগ্তৰভীভাবাঃ ৭২ ৪ ১৮ ৪

বীবাংসক্পক্ষ বিভাগতা ভর্ত্বপ্রকৃত্যপুৰাণছতি — ক্রেন্তি নিয়াত । ক্রেন্সোক্ত লয়ভতো বাারভিগণেতাপের্বর্ধ। পুরাধিসাধনাধীনভতা লোক্রহবাারভাবশি ক্যাবেলকা সম্পদ্ধতে, ন বি পুরাবীভেগ বৃভিসাধনানি বিশ্বকাবিরোঘাবিত্যাপত্যাহ—ভ্রম্মানিন্তি। পৃথিবো চেত্যান্তে।ভাগ ক্রতিরেগ বাবাংসক্ষতগন্ত প্রকৃত্যপি নিরাক্রোক্রিভি ব্যাভি ভ্রমাঃ মতি। ক্যাং সা ভরতং নিয়াক্রোভীত্যাপতা ক্রিং বিশিবন্ধি—
স্কুত্তিভি । ০

নারাখোগানিত্তথানিবলনিকত প্রতিবিধাত্ত; তথানেবের বৃতিবানিজ্যাপ্রাহ—
ম চেডি। তথাপি কবং বংগাডং করং বেছে। ব করতি, ভনাত—হেত্তিত ।
নারাখনো আনকর্মভাতে হেতুবাং—পুনঃ পুনরিছি। হনাবেরবৃতিতে বেততবাং—হত্তেতি। ভাগান্তব্যক্তভোপি পুনতাবে ব বৃতিবিভাহ—শ্রীকৃত্তিত ।
বিল্লাক্ত্রবৈতত গ্রাহ্মভাত্তরপি পুনতাবে। বঙাতত্তি। ব বৃতিবিভি
বৃত্যান্তবাং—প্রথমিতি। বর্ষবিকভাতত প্রান্তিক্ষমণি ক্ষাবিধিকত বিহুবাে
বৃত্তিক্ষাবিভি বাবাইভিংবভাহে—ম সেন্দ্রমিতি। ব বি পৃথিবৈ ভেলাবিশানাকৈতত সমুক ক্রমভাবেকার্থিক। ভিজাত ভিজাত বাবাহিভি ভালাবিভার্ত।

পৃথিব। কেনাধিবাকাবেটকেন শক্ষাং প্রতিক্ষিণা ভবকরাণি বাদেই—পুথিবার্ট ইন্ডি। এনবিত্যুক্তবন্ত ব্যাকরোতি –এন্মিন্টে। কবং পুনং প্রাক্তবা বাঙশান নক্ষাবিশন্তি, করাব—অনুক্ষিয়াং ক্রীডি। তবি ভংগারকেবাধবিত্ববার্থ আইবিব বাখিতি বিভূপি বিশেষে নাভীভ্যানভাবে—আ ক্রীডি। বৈবাং বাটি বোববিববন্তবারকান নাথবতি—আ ডেডি। বিশ্বাহঃ বেভলং বাজিকতি অনুমান্ত্রেডি। ২২। ১৮।

काळ्याक्यात्र ।—: क अकारम, जाना विश्वत्यम—"मृथिदेना देवन्य" वैज्ञानि । अवे अकारम मूज वाता वश्र्यात्माक, कर्य वाता रिष्ट्रताक क विज्ञा वाता त्यवत्याक क्ष्म क्षावे भूज, कर्य क भगवा विज्ञान (अव्यविका क्षिम विज्ञान) अवाय क्षम, देश वहर अधिके अवर्णन कवित्राद्यन । अ विष्ट्रत क्षित का वावपूक (वाहान) क्षेष्ठवारकात विरावध वृक्षित ना भाविता भूक, कर्ष क चभन्न विद्याद दाक्षणावनका कक्षमा कित्रा बारकता क्षित्र वाद्या क्षित्र वाद्या किर्मा वादकता क्षित्र केर्ना काला वाद्य कर्षत्र केरान वाद्या क्षित्र केरान क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र

কেই কেই বলিয়া থাকেন বে,পিত্নোক ও থেবলোক অন্ব করা শব্দের অর্থন্ত পিতৃলোক ও কেবলোক কটতে ব্যার্ডি । বিরজি । ভিন্ন আর কিছু নবে; অতএব একসন্দে পুত্র, কন্ম ও অগরা বিভার অর্ডান করিলে এই ত্রিবিধ-লোক ইটতে লোকের নির্ভি বা বৈরাগা উপস্থিত কন্ন, তখন বৈরাগাসভাল পুত্রম ক্রেম প্রযায়-বিবছে জান লাত কার্যা, তল্পীরা মোক লাভ করিয়া থাকেন; অতএব পরস্পরাস্থতে পুত্রাদ সাধনত্ত্রন্ত বোক্ষলাতেরই উপায়অন্তর্প ইতি। অর্ভ্রেমে আন্তর্ভানসম্পন্ন সম্পত্তিকারী পূত্রবান্ কন্মীর ফলপ্রধর্শনে আন্তর স্থান ক্রমার করিবার উত্তর্গরন্থ আন প্রার এই বে, পুত্র ও কর্মানি সাধনগুলি বনি স্ত্রস্তাই যোক্ষ সাধন চইত, ভাষা ক্রমে করনই মোক্ষর্যন পুত্রকে ক্রোকিক্সাধনে বিনিষ্ক্র করা হাইত না। হ

আর ববোক্ত ফগই বে, মেক্ষেক্তা, একবাও বলিতে পারা বার না; কারণ, এই কল অর্থ্রের সহিত সম্বত্ধ, অগ্যারও পাবার মেধা ও তপতার কার্যা বা কল; স্লাতিতে পুনঃ পুনঃ উৎপাদনের কবা আছে, এবং বাদ উৎপাদন নাকরিতেন, ভাষা চইলে সে সম্বত্ত নিশ্চরই কর হইও', এই প্রতিতে ক্ষের উল্লেব কেবিতে পাওরা বার। 'পরীর জ্যোতিংগরূপ' এবানে আবার কার্যা ও সাবনজ্যে নির্দেশ রহিরাতে,অবিকত্ত উপসংহারে "এরং বা ইদং" প্রতিতে উক্ত মলকে নাম, রূপ ও কর্মান্ত্রক বাল্যা বাক্য স্মাতি করা হর্যাছে। আর একই বাল্যা হইতে বে, ইই রক্ষা কর্মনা করিবে—উক্ত সাবন্যার এক্ষা অগ্রেটিন্ত হুইয়া কারারো পক্তে বোল্ড ক্যা, আবার কার্যার পাকে; একই বাল্যা হুইতে ঐক্প-ছুই রক্ষা অর্থ্যান্ত্রক স্থান্ত্রক প্রায়া বাকে; একই বাল্যা হুইতে ঐক্প-ছুই রক্ষা অর্থ্যান্ত্রক স্থান্ত্রক প্রায়া বাক্তি মা; ক্যে মা, পুরাধি সাবন্যান্তের অন্যান্ত্রক ক্যা একর্শনিই

नन्त्र वाकाष्ठि गविनवाद्ध स्टेशांखः । प्रकशः अकरे वारकः से अकाश सूरेः । तकर क्षा कश्चमः कश्च क रकान वर्त्वस्थ स्टेरक गार्वताः व

পৃথিবী ও অধির দৈবী অধিবেৰতাক্তপ বাক্—ইবাতে বিনি ব্ৰোজ্ঞ সংগ্রন্থি সম্পাহন করিবাছেন, তাহাতে প্রবেশ করে; পৃথিবা ও অধিকাণ বাক্ ক্রেডেছে সর্বপ্রাপ্তির বার্ক্যের উপাধান বা উৎপত্তির কারণ্যকণ; কিন্তু বেহাসজিবোরে সেই বাক্ নিক্রন্তারে (পরিজ্ঞান করিয়া গাকে); জানীর সেই আসজি-ছোৰ ছুরীকৃত হটরা বার; স্করার পারছেব-ননক আবরণত তাক্ষিয় বার, তবন আবরণতবে করের জার ও প্রধাণ-প্রকাশের জার বাক্ত বিস্থাত লাভ করিয়া বাকে; "পৃথিবা আবেশ্ড" ইত্যাদি বাক্যে সেই অভিপ্রান্থক প্রকাশ করা হইয়াছে। সেই দৈবী বাক্ই অগত্যতাাহ-বেবিপূনা বিশুদ্ধ; যে ব্যাক্ত নির্ভেশ্ধ অকট হউক বা পরের অকট হউক, এই দৈবী বাক্য বারা বাতা বাহা বলে, তাহা ভাহাই হয়, অর্থারে ইহার বাক্য অন্যাহ্নত হয় ল বংন্ডেন

क्रियान क्रिया विकास क्रिया विकास क्रियान क्रिया क्रिया विकास क्रियान क्रिया विकास क्रियान क्रिया विकास क्रियान क्रिय

अवस्थानाथः। छवा विवः (इतिकार) व विद्यार (प्रवित्र) है (चित्र) दिवर (प्रधावनिष्यः) वनः धनर (इत्याखनः वयर) चाविनां छः छर देव (धवः) देवतः वयः, [किः छरः] (वन (वन्यः)) [कनः । चानव्यो , चानव्यान्) धवः ववित, चरवाः, पूनः) न (पाष्ठि (न द्रावन् ववित, छरः।। १२। ১৯।

মুক্না-বুবাদে। সেইরূপ ছালোক এবং আদিতা হইতেও দৈব মন আসিয়া ইহাতে প্রবিষ্ট হয়; ভাহাই দৈব মন. বে মন দারা এই ব্যক্তি নিরবজ্জির আনন্দা—কেবলই সুখী হয়. কিছু কথনও লোক পায় না; কারণ, ওখন কোন প্রকার ছংখ-কারণের সহিত ভাহার সমৃদ্ধ থাকে না। ৭০।১৯।

भ्या अक्षा-काम्या मा। ७वा विवर्षकान् व्याविकार ह देववर वन व्याविका,-कक्ष देववर वतः, वकावनिकावारः, द्वन वनना वनावासस्याव

क्यांन्द्ररागानस् ।

क्विक प्रयोग क्विक ; व्याया व्याप त्र त्यावकि, त्यावाविविविका-नग्राचार १ २० १ २० ६

টীকা। বাচি বণিভভারং বনভভিবিশতি—ভতুথান্তি। বং বন্য বভাবনির্বর্তথে বৈববিদ্যালয়, ভবেব বিশিষ্টা—ব্যেক্সেডি। অনাবিভি বিবস্থতি। বেন বননা বিবায় শোচভাশি ভভেবভাবাৎ, ভবৈববিভি পূর্বেশ্ স্বতঃ। ১১।

क्ष्मान्त्र्यान्तः तने वानाव दारान व वानिन दरेष देव यम काराक वारण करत, प्रकाव कद विना कारावे देवर प्रमः, त्य प्रमः वाना वरे राक्षि त्वरण वामची--प्रवीदे रहः क्षमत त्याक करतः माः, कारण, • क्षम काराव काम वानाव त्याक कारावत महिक मध्य वारण माः।वानाः।

শন্তাশৈচনং চক্সমদশ্চ দৈবঃ প্রাণ শাবিশন্তি, দ বৈ দৈবঃ প্রাণে। যঃ সঞ্চরতশ্চাসঞ্চরতশ্চ ন ব্যথতেহথো ন দ্বিষ্যতি, দ এবংবিৎ সর্বেষাং ভূতানামান্ত্র ভবতি, যথৈয়া দেবতৈবত দঃ, যথৈতাং দেবতাত স্বর্গণি ভূতানাবস্ত্যেবত হৈবংবিদ্যু স্ব্রাণি ভূতাক্সবস্তি। যন্ত্র কিঞ্চেমাঃ প্রজাঃ শোচস্তামৈবাদাং তদ্ভবতি পুণ্যমেবাদুং গঙ্গাত, ন হ বৈ দেবান্ পাপং গছতি ॥ ৭৬ ॥ ২০ ॥

ज्ञास्तिथः। उदा लडाः ठ ठळभगः ठ देवाः श्रापः जनः (क्रुक्तिश्वाः) व्यापः, वः (व्यापः) गण्डत् (व्यापः) ठ न वाष्ट् (व्यापः) ठ न वाष्ट् (कार्याम् वाष्ट्र वाष्ट्र (व्यापः) १ व दिश्वां (व विवां । व्यापः) १ व दिशां (व विवां । व्यापः) १ व दिशां (व विवां । व्यापः) १ व दिशां (व विवां । व्यापः) १ व्यापः) १ व्यापः (व्यापः) १ व्यापः (व्यापः) १ व्यापः (व्यापः) १ व्यापः) १ व्यापः (व्यापः) १ व्यापः (व्यापः) १ व्यापः) १ व्यापः (व्यापः) व्यापः (व्यापः) व्यापः) (

(७७६) अन् नक्षि । मृ स् (देनह) दिसान् नानः नक्षाकः (दिसा । नानिनः क्षत्रि देकार्यः) ॥५०॥६-॥

শুলান্দু আদে। বল এবং চন্দ্র হইডেও দৈব প্রাণ আনিয়াঁ লাজবের বিদ্
বাজিতে প্রবেশ লাভ করে, ভাহাই দৈব প্রাণ. বাহা সকরণ কর্মক বা
না-ই কর্মক, কোন লবস্থায়ই বাগিত হয় না, এবং বিনক্টও হয় না;
বংগান্ড ত্রিবিধ লালভম্বন্ধ ব্যক্তি সর্ববৃত্তের আম্মারূপ হন—এই
দেবতা—হিরণাগর্ভ যেরপ (সর্ববৃত্তের আম্মা), তিনিও ভেমনি ; এবং
সমস্ত ভূতগণ যেমন এই দেবভার (হিরণাগর্ভের) রক্ষা করেন—বক্ষাদি
বারা পূলা করেন, ভেমনি এই আয়ত্রেরবিদ্ ব্যক্তিকেও সর্ববৃত্তে রক্ষা
করিয়া থাকে। এই প্রাণিগণ বাহা কিছু শোক করিয়া থাকে, সেই শোক
সর্ববিশাণি-সাধারণ হইয়া থাকে, কিন্তু অয়ত্রয়াম্মবিদ্ ব্যক্তিতে কেবল
পুণাই গমন করে; কেননা, পাপ কখনই দেবগণকে আশ্রেম করিছে
পারে না ১৭৪২০ঃ

লাভ; দ বৈ দৈবঃ প্রাণঃ কিংলকণ ইত্যাতভ—বঃ দক্ষন্ প্রাণিলাভ; দ বৈ দৈবঃ প্রাণঃ কিংলকণ ইত্যাতভ—বঃ দক্ষন্ প্রাণিভেবের্ অনকরন্ সমন্তিবাস্তিরপেণ, অবনা সকরন্ কমনের্ অসকরন্ ছাববের্, দ বাবতে ন ছংখনিবিভেন ভরেন মুল্যতে; অবো অপি ন বিহাতি
দ বিনপ্রতি ন বিংসামাণভতে। দঃ—বো ষর্বোজ্ঞারণ বেতি ব্যালাবকর্মন্, দঃ—সর্বেবাং কৃতানাবাদ্যা ভবতি, সর্বেবাং কৃতানাং
প্রাণো ভবতি, সর্বেবাং কৃতানাবাদ্যা ভবতি, সর্বেবাং কৃতানাং বাস্ভবতি—ইত্যাবং সর্বান্ত্রায় সন্বল্লো ভবতি স্বর্বান্ত্রানাং বাস্ভবতি—ইত্যাবং সর্বান্ত্রায়তরা সন্বল্লো ভবতীতার্থং, স্বর্বজ্ঞা। মধৈবা
প্রাণিতঃ বিরবান্ত্রেবেতা, এববের নাম্ন স্বর্জ্ঞাক স্বর্বান্ত্রেবিবং স্বাণি
ক্রিলানিভিঃ স্বাণি কৃতান্তরার পালর্জি প্রস্তুতি, এবং হ এবংবিবং স্বাণি
ক্রিলানিভিঃ স্বাণি কৃতান্তরার পালর্জি প্রস্তুতি, এবং হ এবংবিবং স্বাণি
ক্রিলান্ত্রেবিভানিকেশ্বাং প্রাং স্তর্জ্য ইত্যর্বঃ। ১

 ইভি; অসা ত্ সর্বাভবে। ব আকুজতে, বভাজোপ।ত—ভরোরাভববুতি-বিশেবাভাবার ভরিবিজ হংবর্ণপথাতে। বরপহংববক্ত নিবিভাতাবাং— ববা হি কবিংক্তির্ভ ক্যাচিক্ংবর্ৎপততে—ববাসৌ পুরো রাভা চেভি—পুরাধিনিবিভব; ভরিবিভাতাবে তথ্যবণ্ধিবাছিণ নৈব হংবর্ণ-বারতে, তবা কবরতাপি অপ-রাজ্যায়নো বব-তবভালিহংবনিবিভবিব।। আনাধিবোরাভাবারৈর হংবর্ণকারতে। তব্তেহ্চাতে—। ২

यर के किक वर्षक देवार खनाः (भागंत, घटेनव मदेवन मनांकः कात्वांकिविविद्य द्वांकर कर्तांक, खानाः व्यक्षानाः भविष्यवृद्धिः खानाः मतिष्यवृद्धिः खानाः मताखन्य क्रिन नदं कि मर्तृकः ७८९९ विवृक्षः व।। खनूर कृ वाकाभरकः भरद वर्षनाः भूगारवन — ७३८वन कनविद्यं महांकः भूगाः विक्रि—निविधिभवः दि (ठन भूगः इठम्, (छन छर्षनायम महांकः; न द देव (प्रवान् भागः मर्त्यांकः, भागकनमाविगवां । भागकार द्वांवर म मक्षांकांवरे । १० ३ २०।।

টীকা। বৰস্থাকং স্থান্ধং প্ৰাণেংডিদিশভি—ডেপ্ৰেডি। তাৰেৰ বৈবং প্ৰাণং প্ৰশ্ব-পূৰ্বকং প্ৰকটন্তি—ল বা ইডি। দ এবংৰিদিভাগি বাচটেই—ল ম ই,ড। বিদি-কম সাভাবিঃ। দ কেবলং বৰোজনেৰ বিদ্যাদশং, কিন্তু দলাভবনপ্ৰতিভাবি—(ক্ৰম্প্ৰভাৱি)

মর্কভাক্তর ওকাববোগাং প্রালাশতাং প্রথমবার্থিবিধানা বাবেলি বির্বাহিন স্থানা বিধানা বির্বাহিন স্থানা বির্বাহিন স্থানা বির্বাহিন ক্ষার্থিবিধানা ক্ষার্থিবিধানা বির্বাহিন ক্ষার্থিবিধানা ক্যার্থিবিধানা ক্ষার্থিবিধানা ক্ষার্থিবিধানার ক্ষার্থিবিধানা ক্ষার্থিবিধানা ক্ষার্থিবিধানা ক্ষার্থিবিধানার্থিবিধানার ক্ষার্থ

ভাষ্যাব্যাদে। পূৰ্ববং ধল ২টতে এবং চল্ল হটতে গৈৰ প্ৰাণ আলিয়া ইবাতে (অন্নয়ায়বিদ্ বাভিতে) বাধি হয়। সেই দৈৰ প্ৰাণের বৃষ্ণৰ যা পরিচয় কি প্রকার, তাহা বলিতেছেন বাং। বিভিন্নপ্রকার প্রাণি- गर्भव मर्था ग्रमवन करव, अवर ग्रमहै-वाहिष्ण्य ग्रम्भव माछ करव, व्यवा वाहा व्यव्य (श्रिक्टिश) ग्रमवन करव, व्यव श्रांत्र—शावानिव यर्था ग्रमवन करव मा, रक्षाम व्यव्य हर्षा व्यव्य मान व्यव्य कर्षा व्यव्य मान व्यव्य कर्षा व्यव्य मान व्यव्य कर्षा व्यव्य मान व्यव्य व्यव्य मान व्यव्य व्यव्य मान व्यव्य कर्षा व्यव्य मान व्यव्य कर्षा व्यव्य मान व्यव्य कर्षा व्यव्य मान व्यव्य कर्षा व्यव्य कर्मा व्यव्य कर्मा व्यव्य कर्मा व्यव्य कर्मा व्यव्य व्यव्य व्यव व

चठः भव अहेव भाषण कवा वहेट एक - भूति वना बहेबारह (व. किमि नर्सधानीय चाधवडल रम, क्रिड किम विक नर्सधानीय (परविश्वाणिय সহিত অভিনতাবট প্ৰাপ্ত হন,ভাষা চইলে সেই প্ৰাণিবদেৱ প্ৰব-ছ্যুৰের সহিত मचच नाम क्या 9 केशन मधन वह १ नः —डाश मधन व्यमा : कायन १ रेस्ट्रक् ठवम छै।बाब बृद्धि ला : क्रिक्ष धाव लवि छ। व कविता चलविक्तिकाव आह दश: याहाता बाह्यादक ल बांक्द्र विनश वटन करत. डाशास्त्रके बारकावाचि कांत्रव कृ:ब-मक्क ब्हेट (प्रवा वाह, किंद्ध এই मकायुक्तावालत अहत्ववायुक्तीव लाक चाट्यात्नव कर्छः ७ चाट्याद्नव कर्य -डेक्टव्हटडे ज्ञा श्रकां चाप्रवृद्धि ৰাকার অৰ্থাৎ স্বান্ধত্য আৰু বৃদ্ধি সমুৎপত্ন ব্ৰহাত্ব আক্রোপারিক্ষিত कु:(बढक मक्कावमा बाटक मा ; कादन मा बाकाव (व. कु:बाकाव दव, वत्रवक्कावक ভাহার অপও बृद्देश--(यत्रन कान नाक्ति मृद्धा दहेल , नाकिनिरमस्यत्र হুঃব হইয়া বাকে,—'এই মৃত ব্যক্তি আমার পুত্র কিংবা ব্রাভা' ইভাাছি नश्यक्रानरे (नरे दृ:(वह विश्व । चनित्र, (नरे नयवत्रन काश्मी वादाव वाहे, মৃত্যুক্শনেও কিন্তু ভাষার সেরপ হংব হয়ে নাঃ ভেষান অপরিচ্ছিয়াছবৃদ্ধিসম্পর ভাচুৰ উৰ:মন্ন পক্ষেত্ৰ হ্ৰানহান বৰভাহি আভিজ্ঞানমণ হোৰ বিভবান मा बाकाश चर्बार विवडे वरेशा बाक्शांत्र मिन्डबरे इन्त नमूर्वात सव ना। चल: नव बनारन (नवे बवे क्वारे बना बरेरकरम-२

वहें खेळावन (व्यानिनवृष्) य किंदू लोक कविता नारक, काशांता निविद्यक्षाननम्नित्र ; वहें कांत्रत तन्दें व्यानिनत्वत निव्करें तन्दें त्यांकावि-कवित्र कृत्रत्व नवक कहें । नारक, वर्षार निविद्य आवित निव्कर्त नवक नवकतानिदें तन्दें त्यांकाक कृत्रित क्षांत्र क्षांत्र कांत्र का

জাভাস ভাসাম, 'ত এতে দৰ্ম বে দ্যা: দৰ্শেষ্নৱা:'
ইতাৰিশেৰে বামন: প্ৰাণানামুশাসনমূজম, নাৰভ্ষণতো বিশেষ উক্তঃ।
কিষেবদেৰ প্ৰতিপত্যাম, কিংবা বিচাৰ্যাধানে কন্চিবিশেষঃ এভমুশাসনং
প্ৰতি প্ৰতিপত্য ক্ষাতে, ইড়াচাতে —

আভাস-ভাজা। নুবাদে। 'ইছারা সকলেই সমান, সকলেই অনন্ত' ইজানি সাধারণভাবে বাক্, মন: ও প্রাণের উপাসনামাত্র উক্ত হইরাছে, কিন্তু ভালারে কাহারো সম্বন্ধে কানত্রণ বিশেষ করা বলা চর নাই; এখন সম্বেদ্ধ হইজেছে বে, বালা বলা চর্ট্রাছে, ভালা ঠিক সেই ভাবেই অর্থাৎ সাধারণভাবেই বৃজিতে হইবে, কিংবা বিচার করিয়া ছেবিলে সে সম্বন্ধে ত্রত ও উপাসনারপ কোনপ্রকার বিশেষ কিছু বৃজিতে পারা মার; এই আলকার বলিতেদেন—

অধাতো ত্রভনীনাখনা, প্রজাপাতর্ছ কথাণি সক্ষে তানি ক্রীক্তক্তোভোনাক্ষিত্ত—বদিয়াম্যেবার্ছার্নত বাগ্দঙ্গে, জকান্যহ্নিতি চকুঃ জোয়াম্যহ্নিতি জোজনেব্যভানি কর্মাণি ব্যাক্স, তানি মুকুঃ জ্ঞানে। ভূরোপ্যেনে ভাষ্ণাগ্রেৎ

टापरमारशामा--- शक्यर वाषानम्।

আমাতি আেনেশেৰৰে নাথোদ্যোৎক মধ্যম: আপকাৰি আতৃং দঞ্জিয়ে ৷

ৰন্ধ বৈ নঃ শ্ৰেষ্ঠে। যঃ সঞ্চরতশ্চাসঞ্চরতশ্চ ন ব্যবতে ন নিবাতি হস্তাক্তৈব সর্বের রূপনসাথেতি ত এতক্তিব সর্বের রূপ-মন্তবত স্ক্রমানেত এতেনাখ্যায়স্তে প্রাণ। ইতি; তেন হ বাব তৎ কুলমাচক্ষতে যান্ত্রন্ কুলে ভবতি য এবং বেদ, য ত হৈবংবিদা স্পর্কতেংসুগুষাত্যসুগুলা হৈবাস্ততে। ত্রিয়ত ইতাধ্যাত্মমু ॥৭৫॥২১॥

ज्यादार्थाः चर (श्रवागारेशनकाः) तक्योगाःमः (तक्य वस्रायाः বোণান্ন-কৰ্মণঃ নামাংন:--নিভাব:) [উচাতে]--প্ৰকাণতিঃ কিন (ঐভিত্ कर्षान (क्रियानायमानि कें लड़ानि) नम्राक (महेवान्); कानि महोनि (केरनाविकानि न'व) वाकारकन , नदलादः) वालक्क (लाक्काः कव्यः)। [लाई। श्रकाववाद -] 'बर' विवादि अव (नावाकावतः कविवादि अव, व ততো নিবৃত। ভবেহুমু' ইতি (এতং এতং । বাক্ বালিন্দ্রিক কর্ম) বরে (बुठवडी : : जना अन्य क्रमानि धव (वर्णनवानिक्य कविनाद्यान, म करका विद्वतः कविष्ठाचि) हेति हकू: वृद्ध ् दवर बत्तर वृत्वतर); क्या विदर (अधार्थ (अवनवाभाव: कविषायात) हेि (अठर) (अधार्थ [या], चक्रा'न क्यानि (प्रकृशकृशैनि हेलिशनि) अवर व वानाविवर तकर कृष्णविक्रि)। (मुठ्ठाः (मातकः : अनः ं अनवस्यै) जुना कानि कर्नानि (देखिनानि) উপংখ্য (উপগ্ত:), जानि , हेश्वितान) चाद्यार (अवस्थान वास्वाम्), छानि इ चःश्वा (श्वापा) चराइड (चरतावर इक्यान्-चयर्क्याणा विश्वज्ञानि इन्द्रवान् भ्, उत्पार (मृत्रामा शःकावचार (वर्षाः) वाक् (वानि-क्षित्रः - व्यामाणिः, पकर्षपः विद्यारः । अव (निकारः), व्यूः[यणि] व्यापाणि अप, (आब: आगरिक अप ; अप देवम् अप म चारबार (परुर्वन: निवासिक्ट्रर नक्ष्मः म वक्षाः [मृङ्गाविकित्यवः:]; [स्मार्थाः] यः पासः ववावः (पूर्वाः) श्रानः (श्राननावित्रकृष्टिकः)। जानि पृक्ताश्रणनि यात्राशीम हेल्लिबानि । आकृर मधिरत (छर आकृर मत्नामिरवन्तर हन्द्रः); चत्रः (म्याः व्यापः) देव (अप) नः (चचाकः पत्या) (अकेः (अयानः), यः नकश्य । जनकश्य । (पशानातः वृत्रंय जक्त्रंय जनि) व वापरः (व द्रावयक्रवर्षि), जब (क्या) व विक्रकि (व विश्वकि) ; स्व (जाकारि)

নর্বে (বরং) অন্ত (প্রাণ্ড) এব রুণং অসাব (আজ্বের ভ্লাব্ছে)
ইডি; ডিডঃ] ডে সর্বে (বাগাদ্যঃ) এডড় (প্রাণ্ড) এব রুণং
অঙ্কর্ (ভ্রেব আয়্বের প্রস্তাঃ); তথাৎ (বাগানীনাং প্রাণাম্বভাবাৎ
হেডাঃ) এডে (বাগাদ্যঃ) এডেন (প্রাণেন প্রাণান্তেন) প্রাণাঃ ইডি
আব্যাহ্রে (ক্রাব্রে)। বঃ (জনঃ) এবং (ব্রোক্তপ্রকারঃ প্রাণ্ড্রেং বেছ (জানাডি), তেন (বিভ্রা—ভ্রান্তা) তং কুলং (বঃশং)
আচক্তে (ক্রাব্রি) [নৌক্রিড়া],—[সঃ] বিদ্রু কুলে ওবিড (উৎপ্রতে); বঃ উর্ (পুনঃ) এবংবরু। (র্বোক্তবিভানবত। সর্ব) পর্বেড়ে,
[সঃ] অনুভ্রাতি (প্রত্যাহ্রং লোব্য আপ্রতে), বর্ণুড়া রুব্য আর্বানং—
ব্রেক্ পরিক্রা প্রত্ত (সুড়ো ভব'ত), ইসি আধ্যান্ত্রান্ত্র আর্বানং—
ব্রেক্ পরিক্রা প্রত্ত (প্রতার্ষিং) রুব্র । ২১ ।

মূলানুবাদ। অংপর বতমীমাংসা অর্থাৎ উপসনাত্মক কর্ম-বিচার আরম হইতেছে,-পুর:কালে প্রকাপতি কর্মসমূহ অর্থাৎ কর্ম-নির্বাহক ইন্দ্রিয়গণকে সৃষ্টি করিয়াছিলেন: সেই ইন্দ্রিয়গণ সৃষ্ট হুইয়া স্থি স্থ কর্ত্তরা বিষয়ে] পরস্পারের প্রতি স্পর্জা করিভেলাগিল,— বাগিন্দ্রির নিয়ম করিল যে, আমি সর্ববদাই কথা বলিব (কখনও বিরস্ত क्ट्रेव ना) : 5क्क्: निग्नम कविल (य. आमि नार्यवाडे मर्णन कविब, धवर खाबर्णाख्युव निवय शहर कविल (य. आभि नर्खनाई खावर कवित : अहेन्नर व्यक्ताम इत्तियुग्गा गर्यातामा निक्रनिक कर्यमयत्क नियम धार्य कतित । दिख्य मुद्रः अध्यक्षणी शहेशा ।।।एनत निक्छे उपश्वित बहेत, धारः डाश्विगतः वाद्यतं करिनः डाशतं भव मृङ्ग डाशिकगत् व्यवक्रक कवित व्यर्थाय क्षांत्रास्त्र व्यक्तिकात्वात्रकात्व कर्षात्रकात्व वाथा घरे।हेत : (महे कात्रा नाक् e कार्या कित्रा भिक्रमाख हा, ठकू e भिक्रमाख स्य এবং अवर्णिया পরিপ্রাপ্ত হইয়া (স্বব্যাপার হইতে বিরম্ভ হয়) : পক্ষান্তরে, মৃত্যু কেবল ইহাকেই আয়ত্ত করিতে পারে নাই, বাহার নাম स्थाय প্রাণ বা প্রাণাপানাদি পঞ্চবৃত্তিবিশিষ্ট মুখ্য প্রাণ। সেই ইক্সিয়গণ खाशाटक क्यानियात क्या महनानिर्यंत्र कवित्र, काशता बुक्ति हर, दैनिहे व्यापादका माथा (आहे,-विनि कार्या कक्रम वा ना-रे कक्रम,क्शिकर आव

হন না; বেল, আমরা সহলে ইহারই স্থাপ জ্ঞানা করি; ভাহারা সকলে এডংখ্রন্পই হইল অর্থাৎ প্রাণকেই আন্থায়ণে প্রহণ করিল, সেই হেতুই এই বাগালি ইন্দ্রিয়গণ ইহার নামে—প্রাণসংজ্ঞার অভিহিত হইয়া বাকে। বিনি এই হল্প অবগত হন, তিনি যে বংশে হল্পগ্রহণ করেন, সেই বংশ তাগারই নামে প্রসিদ্ধি লাভ করিয়া থাকে। এবংবিধ জ্ঞানীর সহিত্ত যে গোক স্পর্কা করে, সে লোক দিন দিন শুক্ষণা প্রাপ্ত হয়, শুক্ষ হইতে হইতে শেষে মরিয়া বায়; ইহা হইল অধ্যান্তাধিকারের ব্রজনা ৭৫না ২১।।

न्नाक्कत-छान्नाचाः वशावः वनवतः तव-वीवाशा वेनानवकर्यः विकास (नकार्यः । এवार श्रानामाः कण कर्ष बक्द्यन वादिवक्यान् —हेकि बीबारमा প্ৰবৰ্ততে : তত্ৰ প্ৰজাপতি:—হ-শখ্য কিলাৰ্থে,—প্ৰজাপতিঃ কিল প্ৰজাঃ স্ট্ৰা কৰাৰি-করণানি বাগাণীনি-কৰাৰানি হি তানীত কৰাৰী হাচাতে, मण्ड महेवाम वात्रावीत करवानी टार्बः। छानि पूनः महानि व्यक्तास्त्रम हेटद्विष्ठश्वन्नर्दश्व न्नर्दशः ठळः। कथ्यः विवास्याय-वद्या-भावायमनाष् अञ्चलद्रदेशवारः अधिक वाक बक्त मास मुक्तको,-- सम्बद्धार्शन यरमध्याक्षि वरालाजावस्मातकः नकः, त्माक्षि वर्गवयास्यः वीदीविष्टि। তথা অব্যাধানবিতি চকুঃ; প্ৰোধানানবিতি প্ৰোত্তম্ব , এবনভাভাপ কৰানি करनामि बवाकच-वह वह वक कच-वराकच ; छामि करनामि बृङ्खिकः व्यवः व्यवद्या कृषा केमरबर्ग मध्यक्षातः, क्षेत्र १ छानि कर्गाम च्यामारब अञ्चलाधार्थाः अवदार्णनाचानः शनिकशन् ; चात् । ह छानि चनाकृ चनरवानः कृष्ठवाम् मृहाः—चकर्षशः अधाविष्ठवामिष्ठार्थः। खत्रावश्रापक्षि वस्त परकृति अवता वाक् आवारताय-अवद्यानना वृत्रामा मध्या पर्वातः क्षान्ति ; ज्या जावानि उत्तः ; जावानि (जावम् । यय देवर्यन मूग्रः वानः माधार म बाधनाम् मृङ्गः जनस्तो,--(व:६वः मनावः वानः, छन् ; (छना-णावर्गि स्थाव अन वक्ति शर्वाच । छात्रीकशांत कश्नांत कर कार्र प्रविदय मुख्यांक प्रम: -- चप्तर देव स्मार्थ्याकर प्रदेश (अर्ड: अनुक्रवर: वकारिकः, बचार या मकारण व्यवकारण म बाबार वाया व विवासि-ररक्षानीर करेंक्य आवक नार्स यह अनवनाय आवशकासन अधि-শভেষ্যি—এবং বিনিভিড। তে এডটেডৰ সর্বে ছপ্রভবন্ প্রাণয়ণ-

त्रिवित्यंत्र खेकिनहाः खोनकण्यत् श्रीताः—चन्यत्वणितः म मृत्यासीयनीर निर्वाकाचीकिः

কিঞ্, বং কৃতিৎ উ হ এবংবিদা প্রাণায়দশিনা লাইতে তৎপ্রতি-পন্দী সন্ত্র, সংশ্বিদ্ধের শবীবে অসুভ্রান্তি শোষমূপপঞ্জিত, অসুভ্রা বৈধ শোষং গবৈবাৰত: অবে দ্রিবতে, ন সংসা অনুপক্ষতে। দ্রিবতে। ইত্যোবসূক্তমব্যাত্তঃ প্রাণায়দর্শনন্তি উল্লোপসংহারোহবিবৈবত-প্রত্নীবার্থার ৭৪ ৪২০৪

ধ্বাপতের্বাগানিষ্ প্রবায়া পদপ্রশ্নচাতিয়ানীদিওার কার্যানিককম্থানং ধ্বমাণ্
চাতি—ক্তন্মানিকি। বাগানীনাং ভয়রওপনির্বায়ণানবর্ধানপনার্থ। প্রাঞ্জাপত্যে
প্রাণে বৃত্যুরভবাভাবে কার্যানিককম্থানং প্রচাতি তেনেন্ডি। প্রবর্গতে প্রাণ ইতি
সক্তঃ। ভবাহণি কবং প্রাণত্তির রতং বার্যানিভাগেকারামান—ভানীতি। প্রানার্থমন্ত্রাপ্রান্ত্রকার্যান্তর বর্ণানিভিত্যাতি। ভত রেটপে কলিকবাহ—ক্তেভি। ইতিপর্বাং গাভিন্তোতি—প্রবাহ বিনিভিত্যাতি। ক্ষমাকং বাগানীনাং রভানি কৃত্যার্জারবায় ন পর্বাগ্রানীতি বিনিভিত্য ব্যার্থনে প্রাণন্তব্যেতি নক্ষয়।

क्षापटमामाः --नक्षर खाचन्य ।

বাণরণবনুকা করণানাং করাব্যবাধ—বন্দ্রানিন্তি। বর্ষাবিভাক করাবিতি বন্ধুনি বিদ্যালয় করাব্যবাধ—বন্ধ্যানিন্তি। বর্ষাবিভাক করাবিতি। বাহি বিদ্যালয় বিভিন্ন বিদ্যালয় বিভাগ করাব্যবাধ—প্রকাশ করাব্যবাধ ক

ভাজ্যান্ত্ৰান্ত অভঃপর ব্রহ্মীয়াংগা—উপাসনাবিচার আরম্ব হটতে:], অর্থাৎ উল্লিখিত প্রাণপণের চকুরালি কর্পবর্গের) মধ্যে কালার কম ব্ররণে (অংকপাসনীয়রণে : গ্রহণ করিতে হটবে, তাহার মানাংসা (সিভাজ) বলা চটতেতে —

ল্লাণ্ডর ব-শ্বটা ঐতিহ্নস্তত : প্রাকালে প্রকাশতি প্রকাশব্ব ক্ষ্ণী করিয়া কল-সমূহ অর্থাং বাক্প্রকৃতি করণবর্গ ক্ষ্ণী করিয়াছিলেন; কর্লা সম্পাদন করাই বাক্প্রভৃতি ইন্দ্রিরে প্রধান উদ্বেশ,এইকর বাক্প্রভৃতি করণ-সমূহকেই 'কল'নামে অতিবিত করা হইয়াছে : সেই বাক্প্রভৃতি ইন্দ্রিরবর্গ ক্ষ্ণী করিয়া পরস্পাদের সহিত স্পর্কা—সংঘর্ষ কর্বাং পরস্পাদের প্রতি প্রতিরোগিতা করিতে আওল্প করিল - তাঙা কি প্রকার ? বাগিল্লির এইরূপ রস্ত বারণ করিল বে, 'আনি বলিবই—নিজের কর্মবা ব্যানার—শংশাক্তারণ হইতে ক্ষমণ্ড বিরস্ত করিব না , আয়ার পার পারও ব'ল কেছ 'নজের কর্মবা-কর্ম ইইছে বিরস্ত না হইয়া থাকিতে সমর্থ হয়, তবে সেও নিজের ক্ষমতা প্রকাশ করিব; এবং প্রতি না হয় বারণ করিল বে,) আনি নিয়ন্তর প্রশান করিব; এবং প্রবেশ করে (রত বারণ করিল বে,) 'আনি নিয়ন্তর প্রবাহ করিব।' এই-স্কাশ অপরাপর করণসমূহও (ইল্লিরগণও ন্বানাক্র্য,—স্পর্বাং বারক (মৃত্যুর বেরুজ্ত) প্রস্কাশী হইয়া সেই করণপথকে সংগৃহীত করিল।১

কি প্রকারে ? সেই বাক্প্রজ্তি করণপথ নিজ নিজ কার্ব্য প্রয়ন্ত করণপথ নিজ নিজ কার্ব্য প্রয়ন্ত বৃত্য ভাষা: লগতে প্রায়ন্ত করণপথ নিজ নিজ কার্ব্য প্রায়ন্ত করণ করিয়া ভাষারিপ্রকে প্রয়ন্ত করিয়া ভাষারিপ্রকে করিয়া ভাষারিপ্রকে করিয়া ভাষারিপ্রকে করিয়া ভাষারিপ্রকে করিয়া লাক্ষ্য করিয়া ভাষারিপ্রক্ষ করিয়া লাক্ষ্য ব্যায়িকর ভাষারিপ্রক্ষ করিয়া করিয়া ভাষারিপ্রক্ষ করিয়া লাক্ষ্য ব্যায়িকর করিয়া লাক্ষ্য করিয়া ভাষারিপ্রক্ষয়ার করিয়া লাক্ষ্য ব্যায়িকর করিয়া লাক্ষ্য করিয়া

'चर्चार्य वारकाकात्रात व्यवक श्रेता निकार व्यवक्षित व्यवक्षी वृक्षावर्ष्य चाव्यांच श्रेता निर्वाद कर्च श्रेरेख विवेश श्रेत (त्रहेत्रण वृक्ष्य खांच श्रेत अवश्यवत्तविविवेश खांच श्रेत।

করণবর্গের মধ্যে এই বে. মধ্যম প্রাণ, প্রমন্ত্রণী মৃত্যু কেবল সেই মৃথ্য প্রাণকেই (প্রঃণাপানাগিতেলযুক্ত পকর্তি প্রাণকেই) অভিত্ত করিতে পারিল না; সেই কারণে একমাত্র প্রাণই অবিপ্রান্তরাবে অকথে (খান-প্রাণাধি কার্য্য) প্রমূত্র কইয়া বাকে । তখন অপরাপর করণপণ সেই প্রাণকে আনিবাস অক্ত অর্থাৎ মৃথ্য প্রাণের হল্ত অবগত কইবাস অক্ত মনোনিবেশ করিল; তখন ভালারা বৃথিতে পারিল বে, আমাধ্যের মধ্যে এই মৃথ্য প্রাণই প্রেই অর্থাৎ সর্বাণেকা অধিক প্রশক্ত; বেকেত্র, এই প্রাণ সকরণ কল্পক বা না-ই কল্পক, কিছুতেই বাধিত হল্প না এবং বিনাইও বল্প না; বেশ, এবন আমার। সকলে এই প্রাণকেই আয়েস্বরণে আপ্রম্ন করি; এইরপ অবধারণ করিয়া ভালারা সকলে এই প্রাণবন্ধপই ক্রাণারিল, অর্থাৎ প্রাণের প্রক্রণ করিয়া ভালারা প্রকলে করিয়া প্রহণ করেব। প্রাণবন্ধত বিভাগি মৃত্যুণন্যারণের পঞ্চে মধ্যেই নয়, এইরপ খনে করিব। প্রাণবন্ধত বাবণ করিয়াছিল ২

বেহেতু অপবাপর সংগ্র ইক্রিছই প্রাণরণে অরপ পরিগ্রহ করিয়াছিল—
প্রাণবর্গ স্পন্দন ও বীর বর্গ বন্ধ প্রপ্রকাশন, এতত্ ভর্মণে প্রকাশিত হইয়া
ছিল, দেই হেতু এই বাক্প্রস্কৃতি করণবর্গও প্রাণসংক্ষার —'প্রাণ' এই নাবে
অভিহিত হইয়া বাকে প্রাণ তিয় অনা কোবাও চলন - স্পন্দন-ব্যাণার
ছুই হয় না; কারণ, ববনই ইক্রিয়ের কোনরপ ব্যাণার ঘটে তবনই ভাহার
পূর্বে কোনরপ স্পন্দন-ক্রিয়া পরিছুই হইয়া বাকে। বে ব্যক্তি সমস্ত
করণের ইক্রিয়ের ববোক্ত প্রাণাম্মতাব এবং প্রাণবন্ধ-বাচাতা অবসত হন,
সাবারণ লোকেরা সেই বংশকে সেই বিমানের নাথেই অভিহিত করিয়া
অর্থাৎ সেই বিমান্দ পুরুষ বে বংশে অস্বগ্রহণ করেম, সেই বংশী
ভাহার নাথেই পরিচিত হইয়া বাকে—'অসুক্রের এই বংশ' ইন্তানি, বেরন
ভাগভা' একটি বংশের নার। বিনি বাক্ প্রকৃতি ইক্রিয়পণের উক্ত প্রকার
ব্যাণরূপতা ও প্রাণসংক্ষা ভানেন, ইলা হইতেছে সেই বিজ্ঞানের কল। ও

আরও এক কবা, বে কোন লোক প্রতিপক্ষ ইইয়া ইহার সহিত— ববোক্ত প্রাণাত্তনবিত্ত সংগ্রহি করে, নিশ্চয় সে লোক এই শ্রীরেই (বর্তমান লেকেট) ওছতা প্রাপ্ত বয়, অয়ে অয়ে গুড় বইয়া তালেশের সন্মিয়া यात्र, किन्न ग्रहमा—देकाम भाकात केशवाद (काम मा किन्ना क्यमहे महत्त्र मा, व्यवीय व्यवाद कडे भारेत्रा महत्त्व। अहे क्षकाहत व्यावाद्यिक क्षानाञ्च-प्रमृत्यत्व कथा वना वहेगः हेशत भहत व्यविद्यव्यकात क्षानार्थ अवाह्य केका क्षमात केशमहत्त्वात कता वहेग १९८१२ २३

শ্বাধিদৈবতং শ্বলিরামোগছনিতামিদিঙে তপ্তামাহনি-তাদিতো। ভাতামাংনিতি চক্রমা এবমনা দেবতা য্বাদৈবতত স যথৈষাং প্রাণানাং মধ্যম: প্রাণ এবমেতাদাং দেবতানা বারুঃ, মোচন্তি হ্না দেবতা ন বারুঃ দৈবানন্তমিতা দেবতা যহায়ঃ॥ ৭৬॥ ২২।:

স্কলেখিঃ। অব (অনবংং) অংকৈবতং (বেবতাং অবিকৃত্য প্রেরং দর্শনন্) [উচাতে]—অয়িঃ 'অংং অনিয়ানি এব' ইতি ব্রহং দ্বে (ধৃতবান্); আবিতাঃ ক্র্যাঃ) 'অংং তপ্সানি নির্ব্বাং তাপং লাসানি)' [এব] ইতি (ব্রহং) দ্বেঃ); চল্লনাঃ 'অংং তাসানি (নির্ব্বাং প্রকাণিবাে) [এব] ইতি (ব্রহং) দ্বেঃ]; অনাাঃ দ্বতাঃ (বাষ্প্রভ্রঃ) [অণি] এবং বাগানিবং ববাবৈবতং (অবক্র্যান্ত্রগারেণ) [ব্রহং বৃতবভাঃ । অবাং প্রাণানাং বাগানীনাং মবাে, সং (প্র্রোক্তঃ) মবামং (মৃথাঃ) প্রাণাঃ ববা (মৃত্যানা অনভিত্তঃ ববং), (তবং) এতাসাং দেবতানাং অগ্রিপ্রভূতীনাং) মবাে) বায়ুঃ [অণে মৃত্যানা অনভিত্তঃ]। হি বসাং) অনাাঃ দেবতাঃ ব্রোচবি (অতঃ সক্ষ্রি,—অক্রাতাঃ বিরতা তবি), বাহুঃ ন [অক্রাণঃ আননায়কাং বিরতঃ ভব'ত]; সা এবা দেবতা অনভ্রিতা (অতঃরহিতা), বং (বঃ) বায়ুঃ [বেবতানাং মধাে বায়ুঃবে কেবলং অক্রান্থ নিতাং ক্রুবি-রিভিত্যারঃ ৭৬ ৪ ২২ ৪

আুলান্ত্রাদে। অতঃপর অধিদৈবত অর্থাৎ দেবতাবিবয়ক এত মীমাংদিত হইংওছে—অগ্নি এত ধারণ করিল—আমি সর্বাদা প্রকালিত ছইব; আদিতা [এত ধারণ করিল]—মামি সর্বাদা তাপ দিব; এবং চক্রা, এত ধারণ করিল বে,] আমি সর্বাদা প্রকাশ পাইব; অপরাশর দেবতাও এইরূপ করিল। পূর্বোক্ত বাক্প্রভাতির মধ্যে বেমন একমাত্র মুখা প্রাণই কেবল মৃত্যুকর্তৃক আক্রান্ত হয় নাই, (অপর সকলেই আক্রান্ত হইরাছে, ভেমনি এই অগ্নিপ্রভৃতি দেবভার মধ্যেও কেবল বার্ট [মৃত্যুকর্তৃক আক্রান্ত হয় না]; কাবণ, অপরাপর সমস্ত দেবভাই অস্তম্ভ হয় অর্থাৎ নিজ নিজ কর্ম্ম করিয়া পরিপ্রান্ত—বিরভ হয়, কিন্তু বায়ু সেরূপ হয় না: সেই এই দেবভাই অস্তবহিত্ত—বাহার নাম বায়ুং ৭৬॥২২॥

টীকা। অব্যান্তবৰ্ণনমুক্তাংবিলৈ ব্যৱস্থান বন্ধুন্দ নুৱাৰ বিষয় বি

ভাষ্যানু বাদে: খনন্তর খবিংবত খবাং বেবতা-বিবরণ ধর্ণন (উপাসনা) কবিত বইতেছে: পেবভার মধ্যে কোনু বেবভার এত (নির্ম) এইব করা শ্রেম্বর, ভাষা মামাংসিত (বিচারিত) বইতেছে—

পূর্বোক্ত গ্রাক্সরতের সতই সমত [বৃষিতে বইবে]; আমি কেবলট এজনিত থাকিব, জরি এইরপ সত বারণ করিল; আমি নির্ভর ভাগ বৈব, আমিতা এইরপ স্তত প্রংশ করিল; আমি সর্বাধা প্রকাশ পাইব, চন্ত্র এইরপ বুজ ধারণ করিল। অম্যান্য ক্ষেতাশশ্র নিক্ষ নিক ক্ষাবিধরে এইরপ সত

ध्यरमञ्जामः नाममञ्जामन् ।

वादन कतिन । ज्याजि वात्राचि देखिरदात गर्या स्वयन स्वरं अक्यांस मुखे । तान्दे स्वयन मुझ् कर्कृत जा क्रांच ददेश चक्ष ददेस्त विनिष्ठक यह माहे, ज्यांच अक्षांच आपटे स्वयंग अक्षांगरन ज्यांच दिशास्त, अर्थ जांच अक्षांच स्वयंगरानद मर्या याद्क स्वयंग, ज्यांच मुझ् कर्कृत जाकांक क क्षांच वह नारे ।

অধ্যার বাক্ প্রস্তৃতির নারে অধি প্রস্তৃতি অন্যান্য বেবভারণ অন্তর্গন করে অর্থাৎ নিক নিক কর্ম হউতে বিরত হয়,কিন্তু মুখ্য প্রাণের ব্যার একমান্ত্র নেই বারু বেবতাই অন্তর্গিত হয় না; অতএব, এই বে বারু, ইছাই একমান্ত্র অনত্রিতা ক্ষেত্রতা। এইরূপে অধ্যার ও অধিকৈশত ব্রতের বীমাংসঃ প্রস্তৃত্র করিয়া অবধারণ করিলেন বে, প্রাণ ও বারুর ব্রতই একমান্ত্র অভ্যা আছে, (ত্তিরে আর সকলের ব্রতই তর হইরাছে) ৪৭৬২২৪

অধৈষ প্লোকে। ভৰতি—যতশ্চোদেভি সূৰ্যোৎস্তং বত্ৰ চ গচহ ঠাতি, প্ৰাণাম্ব। এষ উদেতি প্ৰাণেখন্তমেভি তং দেবাশ্চক্ৰিরে ধর্মাত স এবালা স উ শ ইতি, যারা এতেছমূহ্য প্রিয়ম্ভ তদেবাস্যন্ত কুর্মান্তি।

তত্মাদেকমেব ব্রতং চরেৎ প্রাণ্যাক্তিবাপা**ন্তাক্ত নেত্র। পাপ্যা**মৃত্যুরাপ্লুব্দিতি, যত্ত্য চবেৎ সমাপিপয়িষেত্তেনো এত**ত্তৈ দেব**ভারে সাযুক্তাত সলোকতাং জয়তি ॥ ৭১ ॥ ২৩ ॥

हैि अथमाशास्त्र शक्यः बाक्यनम् ॥ > ॥ ७ ॥

ज्यहाल्मार्थः। जय (वाकाविष्णः) [जवित् जार्थः] अवः (वजावावः) हाकः (त्राक्षः (त्राक्षः विष्णः वषः) जविज्ञ-त्र्वाः (जविदेववः जाविष्णः, जवावः ह हकः) वदः (ववार वादाः जावाकः) উत्विष्णः (केन्नाक्षः हि), [नातः नवतः न्यूर्विनवदः ह] वद्य (विव्यत् वादः), जात्य ह) जकः वक्षि (विव्यत् । विहः) विहः ।

(जन्ने कांच जानकरक); (वंदार (वद्यावदा, वांचावदा ह) कर (आंदर वांदर क) वर्षर कांक्रस्त (आंदेजकर वांद्जकर क दृष्ठवकः); मः (आंदर वांद्र क) अब जका (वर्षयामगवस्त्र) [जक्षवकारक], मः के (अव) चः (जांचाविति क्विरन---कविवादकारक ह) [जक्षविवास्त्र, (वर्षविविक्त (चवः) देखि ।

এতে (বাগাবর: অর্যাবরক) অমূহি (অর্থিন্—প্রাকাণে) বহ (প্রাণ্ড্রজং বার্ড্রজং চ) অথিবর (গুডবর:) অরা (ইরানীং) অণি মুর্বারি (অক্সরন্ধি) (অর্যাণি বাসাবর: অর্যাবরক পূর্বারীতং প্রাণ্ড্রজং বার্ড্রজং চন পরিভারবীভার্ব:)। তথাং (হেজো:) [অন্যাহণি] একব্ এব প্রতং চরেৎ (পরিণান্তংং)— প্রাণ্ডাং (প্রাণ্ডান্তরাণারং কুর্বারং) অপানাহং চ কুর্বারং, প্রাণ্ডান্তরাণারের বিশ্ববাপারং চ কুর্বারং, প্রাণ্ডান্তরাপারের ইন্তিরান্তরাণারের বার্ত্রজো ভবেরিতি ভাব:)। ['নেতং'শক্ষ: 'তীভিস্টকঃ;] [কুডঃণ] মৃত্যু: (প্রবন্ধী সন্) বাঃ বাং) আরাবৎ (প্রায়্রার্থ) নেং; (বছরং অথাং প্রহার্থ প্রায়্রার্থ) নেং; (বছরং অথাং প্রহার্থ প্রায়্রার্থ) কোন; ইতি ভাব:] ইতি। উ বিভর্কে) বন্ধি চরেং (প্রতন্ধ্রভাতত), [ভলা] স্বাণিণারিবেং (স্বাণার্মিভ্রুল্ ইন্তেং—ন পুন: ভর্মরতো ভবেং); ভেন (প্রভ্রম্বারণ প্রন্ধ) উ এতকৈ ব্রত্রের (ব্রত্রাঃ ক্রের্ডা) ভবেং) স্বাণ্ডাং (ক্রান্ডার্থং) স্বান্ত্রারং) স্বান্ত্রারং স্বান্ত্রারং স্বান্ত্রারং স্বান্ত্রারং) স্বান্ত্রারং (ব্রত্রার্থ স্বান্ত্রার্থ স্বান্ত্রার্থ স্বান্ত্রার্থ স্বান্ত্রারং) স্বান্ত্রারং স্বান্ত্রারং স্বান্ত্রারং ব্রত্রার্থ স্বান্ত্রারিং ব্রত্রার্থ ব্রত্রারণ স্বান্ত্রার্থ স্বান্ত্রারং ব্রত্রার্থ স্বান্ত্রার ব্রত্রার্থ স্বান্ত্রার ব্রত্রার্থ স্বান্ত্রার ব্রত্রার ব্রত্র ব্রত্রার ব্রত্র ব্রত

केलि श्रवनावारिक श्रक्षकाचनक महनार्वः sases]

সূলান্দ্রাদে। উক্ত বিষয়ে এইরাণ একটা শ্লোক আছে—
সূর্য্য যাহা হইতে উদিত হন, এবং যাহাতে অন্তমিত চন ইতি। ইনি
প্রাণ হইতে উদিত হন, এবং প্রাণেই অন্তমিত হন; দেবগণ ভাহাকেই
ধর্ম অর্থাৎ নিজেদের অনুসরণীয় করিয়াছিলেন; আজও তিনি এবং
ভবিষ্যতেও তিনিই [অনুসতে ও জমুসরণীয় হইবেন]। এই দেবগণ পূর্বের্মাহা (বে ত্রত) ধারণ করিয়াছিলেন, আজও সেই ত্রত পালন করিছেছেন; অভএব একই ত্রত আচরণ করিবে—আমাকে পাণে অভিভূত
ক্রিবে—সনে করিয়া কেবল প্রাণাপান-ব্যাপারমাত্র করিবে; আর বিদ্
ত্রত প্রধণ করে, ভাহা হইলে অবস্তই ভাহা সমাপন করিবে; ভাহা দারা

क्षांत्रार्थात्रः-नक्ष्यं बोक्यम्।

এই দেবতার (বারু ও প্রাণনেবভার) সাবুজা (সহবেণিজা) ও সালোকা (সমানলোকভা) জর করিয়া থাকে ঃ ৭ : ঃ ২০ ঃ

্হিতি প্ৰথমাধানে পঞ্চম ব্ৰাহ্মনব্যাখ্যা ৷ ১৷৷৫॥]

স্থাক্তর-ভাস্থাম। অবৈত্তিবার্থ প্রভাবত এব রোজে বছো তথিত। বতক ব্যাব বাহোরবৈতি উলাক্তি প্র্যাঃ, অব্যাস্থাং চ চমুরাম্বনা প্রাণাং —মত্তক বত্র বারে প্রাণে চ প্রকৃতি মুর্বাঃ, অব্যাস্থাং চ ব্যাপ্তবার চ পূক্ষত,—তং বেবাঃ তঃ ধর্মং বেবাঃ চক্রিরে বৃত্তবার বাগাবয়ে। হ্যাপ্তবাক প্রাণ্ডকার বাব্রতঃ চ পূর্ণ বিচার্য। স এব মত ইয়ানীং খোছণি তবিস্কৃত্যাপি কালেছস্থ্যভাতেছস্থ্যভিত্ত চ কেবৈরিত্যভিপ্রায়ঃ। তারেবং মন্ত্রং সজ্জেণতো বাচেইে ব্যাহণন্—'প্রাণাম্বা এব পূর্বা উলেভি প্রাণেছস্ত্রেতি। ১

তং বেবাশ্চক্রিরে ধর্মং স এবাত স উ ব ইতাত কোহর্ব ইত্যান্ত—
ববৈ এতে প্রতমন্তি অনুদিন্ কালে বাগাদবেহিয়াাদরশ্চ প্রাণ্ততং
বার্ত্রচং চ অগ্রিয়ত, তদেবাভালি কুর্মার অসুবর্তভেহস্থানিবাতে চ; প্রতম্ তরোরভর্ষের । বগু বাগাদিপ্রতং অগ্রাণিপ্রতং চ ভত্তর্ষের, তেবাবত-মন্ত্রালে স্থাপ্রাণ্ড বাথে) প্রাণে চ নিম্প্রিস্থানাং। ২

चरेष ठवक खाळ व् — "वश देव पूक्तः विशिष्ठ, खानः छवि नागरणार्छ, खानः वनः, खानः हक्षः खानः खावः, यम खत्यार खानार खाना पूनर्वा इष्ठः हे छात्राच्यत् । चवा विदेश विश्व च — वश वा चितः प्रत्रक्षि वावः, छर्शन्वा छि, च्यार नव्यवा वो विश्व खात्र विश्व वावः हिंद खात्रिक्षः, वावः हक्ष्यः, वाद्यो विनः खिल्लिकाः, वाद्याद्व वावि प्रत्याद्व वे विश्व विश्व खात्रकाः, वाद्याद्व वावः विश्व विश्व विष्ठ । च

वनार्वाद्धवर्ष बठः वात्राविवद्यापित् ठाव्र गणः वरवण्याद्याणः व्यापता ठ गविलाक्षकः गरेसंस्टि वद्यम् वर्णायानः बठन् — छन्।वर्णाश्याक्षकः गरेसंस्टि वद्यम् वर्णायानः वृद्यारः, जनाकार जनावनवालावकः । व वि
व्यानानावद्यानावकः व्यापनानानान् छन्।वर्षाश्चः जनावर्षायाकः । व वि
व्यानानावद्यानावकः व्यापनानान् — त्वरः या वाः भान्। वृद्याः व्यवक्षे वाद्यं वर्षः
वाद्यारः— त्वव्यकः भविष्यः— वर्षायक्षणावृष्यः व्यक्षः जाः, वक्ष व्यवदः
वृद्यानां वेर्ष्यायः वर्षा वाद्यस्य वाप्यक्षकः। विष्यक्षितः व वर्षायः
व्यक्षकः व्यापत्रकः, नवानिभविष्यः नवानविष्यिक्षः, विष्याविष्यः

देखि अवसाशास्त्र नक्षः खायनम् ॥ > ॥ व ।।

িকা। রাজণার্থবার্চার্থ: বল্লববরার ব্যাকরোতি—অ্থান্ড্যাদ্দিনা। পুরো: ইনিবৈব্যুবর্তানে বারোক্তনাছতি, তাত চাপ্তস্থান্যবাসন্তেহতং পঞ্চতি। স এব চার্যার করোবসনতে চত্ত্বাছনা আপাছবেতি, পুরুষত তাপসমতে ৮ তলিয়েরাতং পঞ্চতীতি বততে ভাবে বিভাগ:। রোকভোত্বার্ড: আপানিভ্যাদিরাজ্বব্যাহিতং প্লোকে পূর্বভালাপনার করের ব্যাকটে—তং দেরা ইতি। বাহপত প্রস্কৃত্বার্থ সামাজেন চ বিপেবং ক্লার্ড আর্থ—প্রক্রান্ত্র ইতি। স এবেতি বর্ষপ্রাহর্ণ:। তত্তেতি স্বানী সংপূর্বমন্ত্রাতি ইবং মন্ত্রান্তি পূর্বার্থি:। ১

উন্তর্গাইক আন্ধাননাকাংপূর্মক (বাণা বাচেই—ভ্রমিভার্শদ্দনা) । বৈএভয়ং বেবৈ মুক্তাবেল নামাংশিকং তেওসুৰজ্জীভার্ম । বিশেষণভার্মবিদ্যানাকাত—অক্তিভিড । ২

উক্তং বেপুৰবিভয়ক্তৰাজিতা বিশ্বস্থতি — ব্ৰাহজেত্বাপৰাৰ্থে চিপ্ৰকাশ ক্ষুদ্ৰজ্ঞতি সাৰাজীভোৱৰ । বাস্থ্যৰ ভাগান এই ভাগান উপাত্যক্তি । উপৰাসী ক্ষাং বন্ধ ইঙাৰ্থ: । ইভিশ্বোগ্যিকভ্যান্যস্থানাৰ্থ: । ৩

শান্ত ভাষািত বাহেই — হান্ত্ৰভবিত্যেক্ষেৰ প্ৰতং ধাৰ্যামিতি বন্ধবান্ধণাভাগং প্ৰতিপান্ত ভাষািতি বাহেই — হান্ত্ৰাহিতি। ব হি বাণাগ্যােগ্যােগ্যাে বা পরিম্পান্ধবিদ্ধ
হিন্ত ছান্ত্ৰইন্তি, তেন প্ৰাণাগ্যিত হৈ তৈওকুবৰ্জাত এবে গ্ৰন্থ । এক মেৰেতি নিগ্ধে প্ৰাণ বাাণাবভান্তম্য হেন্ত্ৰাই — ম স্থাৈতি। ভন্তুপৰ্যে কলিভনাগ—তভ্যাাফিতি। বৰু বাণবাভান্ত বাবনাগ্ৰমভান্তভাবিক বাভনকুৱান্দ্ৰবিদ্ধানিতা লাইছাৰ কাৰণভাগ নিগ্ধাং বৰ্ণবিভি—হিত্ত্বাতি। নেৰিভাগিবাকাভাক্ষাৰ্থকুক্তা ভাংপ্ৰ্যাৰ্থবাদ— আন্তৰ্জমিতি প্ৰাণাগ্ৰমভান্ত সমুক্তিবানবাৰ্তা নৰ্পেন্তিশ্বনাগােবিদ্যুভিত্ৰশং সংভাগন্যমন্ত্ৰশ্বভিত্তি। বিশ্বক বাৰ্থবাৰ্থ—অফি স্থািতি। বাণাগিপনিত্ৰপন্তিলাৰ্থ নিগ্ৰম বিশ্বমতি - ভিত্তা দিক্তি।

বিজ্ঞানত বজুং ভ্যিকাং কর্মেভি—েন্দ্রমেডি। রভবেব বিশিনটি—প্রান্থেতি।
প্রতিপৃত্তিখন প্রকটাতি—ক্র্যুকুত্তিভিতি। সম্মতি বিভাগনং করাভি —প্রমান্তি।
ক্রমেভিয়ের বিজ্ঞানে ক্যবিক্যাং ভাগিভাগেভা বিজ্ঞানপ্রকর্মণেকং, ব্যাহ্তাং, ভারিকর্মান্থেত সম্মেক্সিভাগে—ক্রিক্সোন্তিত ৪ ০০ । ২০।

देखि व्यवादना कथावादीकातार अववादाार व नवर जावन्य । ० १

क्षांच्यांच्यांच्यः नाक्ष्यः साम्बन्यः।

জ্যাক্রাক্রাদে। সংক্রেপ করাজ অর্থন প্রকাশক এইলপ নাম্নীনি লাক লাছে। প্রাবেশ [আবিট্রাবিজ্নপে] বাহা হইতে—বে বাহু হইছে উনিত হল, এবং আবাজিক চক্ষরণে প্রাণ হইছে [উনিত হল] (১), আবার অপর সভানিবরে (সাহংকালে) ও পুর্বিদ্রের বাহার হবো অর্থাৎ বাহুতে ও প্রাণেতে অভ্যানন করেন; বেশতালা পূরাকালে হাহাতে ধর্মন্তপে বাহণ করিরাছিলেন, অর্থাৎ আবাজিক বাক্ প্রভৃতি ইল্লিয় ও আবিহৈবিক অনি প্রভৃতি বেবতা বিচারপূর্বাক বাহানে বাহ্রত ও প্রাণেত্রত প্রহণ করিরাছিলেন। বেশতাসন বর্ত্তবান স্বান্ধে ভাষার অপুরুদ্ধি করিতেছেন, এবং ত্রিবাহকালেও ভাষারই অপুন্রবে করিবেন। এই ব্রাহ্মণ (এই প্রতি) নিজেই "প্রাণাদ্ধানি ইত্যাদি বাক্যে উক্ত বহের সংক্রিপ্র বাবান করিতেছেন। ১

ত্রথন 'তং দেবাঃ চক্রেরে ধর্মং স এবাছ স উর্থা' এই মন্ত্রীয় অর্থ কি, হাধা বলিতেছেন নএই আধাাত্মিক বাক্ প্রকৃতি আরু আবিদৈবিক আরি প্রকৃতি দেবতাগণ পুরাকালে, যে রত—বে বাহুরত ও প্রাণ্ডরত ধারণ করিয়াছিলেন, আলও তাঁহার। সেই রত পরিপালন করিতেছেন, এবং ভবিষাতেও পালন করিবেন, অর্থাৎ কবনও তাঁহাছের রত ভর্ম হয় নাই। আর বাগাছি ইন্দ্রিরের ও অরি প্রভৃতি বেবতার নিকম্ব যে রত, তাহা তথ্য হইচাছে; কেননা, অভবিত হইবার সবরে ও সুমুক্তি-কালে ভালাকের রতের (নিরম্ভর অনন ও প্রোচ্চারণ কার্যাের) নিম্বতি ক্ষেণ্ডে পাওয়া বাহ; অভিপ্রায় এই বে, অর্থি প্রভৃতি বেবতা বে, 'অলিব্যাম্যের অহম্' ইত্যাহি রত গ্রহণ করিয়াছিলেন, অন্তর্গবন-

कारन कीरारम् तन्ते अधिकाञ्चल कार्यनिक शास्त्र मा, अन्य याक् अकृषि विकाशनेक (य, 'विकाशन क्यम्' रेकामि अक अदन कविमाहित्सम, सुनृति-नवम केनकिक वरेता, कारारमक त्रिरं वान् वारमाम शास्त्र मा; नवकरे आत्म विमोन वरेमा याम; क्या वाम् क आन त्य ज्ञ वामन कविमाहित्सम, त्र अक कांक नर्यन्तिक क्ष्मकरे प्रविभाष, अवय सुनृत-कविमात्कक क्यामकरे वाक्तिय। २

অন্তর্যন্ত এ কথা উক্ত আছে—'পুরুষ ববন নিব্রিক্ত হয়, তবন বাক্
প্রাণ্ডে প্রায় হয় অর্থাৎ প্রাণে বিলীন হয়; বনও প্রাণ্ডে প্রাপ্ত হয়,
চক্ষ্য এবং প্রবংশিরন্ত প্রাণে অন্তর্নিত হয়; আবার ববন পর্যন্ত হয়।
এই পর্যন্ত বেন অধ্যাত্মস্থানের কবা; অতাপর অবিবৈশ্বত সম্বান্ত প্রবেশ
করে, তবনট অগ্রি অন্তর্মিত (নির্মাণিত) হয়; সেই অক্টই তাল্শ
অগ্রিকে লক্ষ্য করিং। লোকে বলিচা থাকে বে, অগ্রি অন্তর্নিত ইইচাছে;
কারণ, তবলালে তাহা বায়র অন্থপত হটনা থাকে; আবার আছিতা ববল্ল
অন্তর্মিত হন, তবন তিনিও বায়তে প্রবেশ করেন, চক্রাও বান্তে
প্রবেশ করেন, বিক্রমৃত্ত বান্ত্র সধ্যা অবন্ধিত হয়, পুনর্মার সেই বায়
হইন্তেই প্রাথার প্রান্ত্র কন' ইতি। ৩

বে বেজু, বাক্ প্রজ্ তি তিরে ও পরি প্রজ্ তি বেবতার মধ্যে এইরণ প্রতই অন্থপত হহিরছে, অর্থাং বার ও প্রাণের বে. পরিলান্ধনারক ব্যাপার, সম্বন্ধ বেবপন প্রতরপে তাহারক অনুসরণ করিতেছেন, সেইছেছু অপর লোকেও একই প্রত আচরণ (অনুষ্ঠান করিবে। সেই একটা প্রত কি ? "প্রাণাং"—প্রাণন ব্যাপার করিবে, এবং ''অপারাং" অপানবাস্থর কার্য্য সম্পান্ধন করিবে, অর্থাং কেবল প্রাণ ও অপানের কার্য্য সম্পান্ধন করিবে, অর্থাং কেবল প্রাণ ও অপানের কার্য্য সম্পান্ধন (বাসপ্রধান তাঃগ করা) ও অপানের কার্যা— অপানন (মনম্প্রাদির অহোনরন করা), এই উত্তর প্রভার কার্য্যের ক্ষিত্র ক্ষিত্র বাংলার ত্যাপ করিবা অর্থাং ভারাকের ব্যাপার ত্যাপ করিবা অর্থাং ভারাকের ব্যাপার ত্যাপ করিবা অর্থাং ভারাকের ব্যাপার ত্যাপ করিবা অর্থাং ভারাকের ব্যাপারে আন্তর্ভ করিবে, এই ভারে একই প্রভেম্ব অন্থ- করিবে। এ করার অভিপ্রায় এই বে. আন্থি বন্ধি উক্ত প্রাণ্যক্ত হুইতে

टापरमध्यामः--- शक्यरं बाचनम्।

540

विह्ना करें, करन निकारे मुख्य भाषात्म आन महिरन, और करह कींक कर्यक्ष आनंद्रक अक्त महिरन । भाष वर्षि कन्यक आनंद्रक शावन करह, करन भन्नाई काहात्र नवानन कहिरक हेक। कहिरन — रहनान नाकिरन । यदि केक अक करेरक विद्या करने, करन निकारे काहात आन अन्य क्वारिकां रम्यकान नेतिक्क (मृक्षा कर्यक भारता) व्य ; भक्त भन्नाई मृशीक अक नवानम कहिरन । व

এই ব্রত বারা—প্রাণ্ড্রত এবণের কলে প্রাণাত্মভাবপ্রাপ্তি বর, ভাবা বারা
সর্বভৃতি –বাক্ প্রভৃতি ও অরি প্রভৃতি বেবভাগন নিভরই বংগত্রপ (আরা
বটতে পূবক্ নহে) এবং আবিট সর্বভৃতে পরিস্পালনের বেতৃত্ত এবংবিদ্
ব্রতবারণের অনে এই প্রাণ-বেবভাগট সাব্ধা—সব্পূতার অর্থাৎ একারভাব
কিংবা সলোকতা—স্বাদলোকে বাস প্রাপ্ত হন; [আনের ভারতবাাত্মসারে
উক্তর্জার ক্রতেম ক্রিত হটল]। ১৭।২০।

अथमानाहत नक्त जायत्वेत कानाकृति । Sie ।

यप्टेर द्यामानम्।

ত্রয়ং বা ইদং নাম রূপং কর্মা, তেষাং নাম্নাং বাগিত্যেতদেষা-মুক্থমতো হি সর্বাণি নামাত্যতিষ্ঠতি ।

এতদেষাং দামৈত্তি দক্ষিন নিজঃ দমমেতদেষাং একৈছি । প্রদান নিজ্ঞি । প্রদান ।

শুলান্দ্রাদে। পূর্নে সাধ্য-সাধনভাবে যে সপ্তপ্রকার আয়ের কথা বলা হইরাছে, সে সমস্তই ত্রিবিধ (তিন ভাগে বিভক্ত)—
নাম, রূপ ও কর্ম্ম; বাক্ অর্থাৎ সাধারণ শব্দমাত্রই উক্ত নামসমূহের উক্থ অর্থাৎ উৎপতিস্থান; কারণ সমস্ত নামই এই
শব্দসামান্ত হইতে সমৃদুত হয়। এই বাক্ই সমস্ত নামের সাম
অর্থাৎ সামান্ত ভাব; কারণ, এই শব্দসামান্ত হইতেছে সমস্ত
নামের সমান—এক-ধর্ম্মাক্রান্ত; আর এই শব্দসামান্তই উক্ত নামসমূহের ব্রহ্ম অর্থাৎ আত্মা; কারণ, শব্দ সামান্তই সমস্ত বিশেষ বিশেষ
নামকে ধারণ করিরা রাখিরাছে; [কেন না, শব্দাভিরিক্ত নামের
কোনও অন্তিম্ব নাই] ॥ ৭৮ ॥ ১ ॥

न्याक्रकाञ्चाक्रा,। श्रवेष्ठश्विणाविषश्यम व्यवस्थः माधामाधममभ्यः गाक्षसः समर वाराष्ट्रवादास्थादमस्यानि सम्बन्धः । १०७७ पानिष्याः शानवद्या अवाक्ष्ठनम्बन्धाः—वृष्यवीक्षयः वर्षात्वच्य व्यवस् । किः चय व्यवस् वृष्टे वृष्टिः — नाम व्यवस् कर्षाः (कष्टि अनादेश्वयः — मान्याः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वर्षः वर्षः वरः वरः वर्षः वरः वरः वर्षः वरः वरः वरः वरः वर्षः वरः वरः व

"পরাকি বানি বাজ্বং বয়ক্থখাৎ পরাত্ত পদাতি নাররায়ন্।
কলিছীয়ং প্রতাগাছানবৈক্ষাবৃহচকুরমুভছবিক্ষ্য ।" ইত্যাছি । >

কৰং পুৰৱত বাজ্ঞাবাজ্ঞা কিয়াকারকলগন্ধন সংসাহত নাম্বলকৰ্মান্ধক হৈব,ন পুনরান্ধবন্—ইলোডং সন্থাবিভিছ্ং শকাত ইতি। অলোচাতে
—হেবাং নারাং বংগালনাজানাং—বংগিত শক্ষাবাজ্যাতে, "বা কক প্রে।
বাবের সা" ইত্যক্তবাং বাগিতোভত শক্ত বাছর্ব: শক্ষাবাজ্যাত্রম্, এডবেভেরাং নামবিশেষাগামুক্রং কারগন্ম উপাধানন্য, সৈত্রকরণকণানামির সৈত্রবাচলঃ; ভদাহ—লতো জ্যান্নামসানানাং স্কাণি নাবানি বক্সভাতে বেবলত
ইভোষ্যান্ধিপ্রবিভাগানি উল্ভেড্ড উংপদাতে প্রাবভ্জাতে সর্বাচলান্ধি
সর্বক্রা: কার্যক কারণেনাব্যাত ব্রক্তন্ন তথা বিশেষাগাক সাম্বাতেহত্যবাহা । ২

কথং স্বাক্তবিশেষভাগ ইতি —এতৎ শব্দসাধাকৰ এবাং নামৰিশেষাধাং সাম, সম্বাধ সাম সামাক্তবিভাৰ্য:। এতৎ হি ৰক্ষাৎ সংক্রিনমিভিগ্নাস্থ-বিশেষ্টেয় সমস্। ৩

কিঞ্চ, আন্তলাভাবিশেবাক্ত নামবিশেষাণাখ্—ৰদা চ ৰত্মাধান্যলাভো ভবতি, দ ভেনাপ্ৰবিভজ্ঞা দৃষ্টা ৰথা ঘটাদীনাং সৃষ্টা; কবং নামবিশেষাণাখ্ আন্তলাভো বাচ ই:ড ? উচাতে—ৰভ এতখেবাং বাক্ৰখবাচাং বন্ধ বন্ধ আন্তা, ভভো হাজ্যাভো নারাখ্,শখবাতিবিজ্ঞখন্তপাত্পপজ্ঞা। ভৎ প্রভিপাধরতি— এভজ্ঞখনাযাজং বি ষ্পাক্ত্মবিশেষান্ দর্মাণি নামানি বিভর্তি বারবভি অন্তল-প্রবাদন । এবং কার্যকারপজ্যেপপজ্ঞা: দামাভাবিশেষাপ্রভাগ্রেশ্বশ্রাপাণ পজ্ঞেদ নামান্যপ্রধাণাং শখনাজ্ঞা দিছা। এবস্থেরয়েয়িপি দর্মং ব্যাভাহ ব্যোক্তশ্ব ৪ ৭৮ ৪ ১ ৪

্রীক্ষা। এপন্ডিভাবিভাবার সক্ষেণেণোপনহোরার্থণ রাজনাভঃববভাররতি— অন্তেডিভি। ক্লমণি জানকর্মণোক্রভাবনেবর্গর ব্যবহুৎ এভত্তবিভি স্বত্য। তথা-্রভাবক্রিয়ায়াযুক্তং তারেছি—আ ভেডি। ব্যক্তবিধাক্তক অসতঃ সংস্কৃতিং সুস্বাহ্ বাৰ্থনিতি। বাৰ্থনোপাধাং বছৰিতি পভাং প্ৰভাব—ক্ষি ভালিজ্যাদিনা।
কিবৰ্থ পুৰ্বযুক্ষাৰ ইভাপভাব—অনাইজ্যেবেভি। পাৰ্থপাৰ্থনি—মুখ্যাজ্যাদিন্তি। প্ৰাৰ্থেৰ কাতো ব্যেক্ত ভ্ৰম্পেৰ প্ৰায়ন্ততে। বৈৰাগাধি কিবৰ্ধিজ্যাপ্ৰায়ে—ন হীতি। প্ৰিয়েভিংশি কুত্বনিভ্ৰা ভ্ৰাবিভাবী ভাবিভাপভায়—
বাহ্যেভি। প্ৰাৰ্থেৰণ্যান্ত্ৰীয় প্ৰভাগিত্ৰা।
প্ৰায়ে—তহুংভি। ক্ষ ভহি প্ৰভাগিত্ৰা।—ক্ষম্ভিদিভি।

উপসংঘাৰভেত্বং সকলতে। সর্বাধ্ব অপতে। নাবাধিবারতং আবাবাতাবাবসুকবিভি
প্রতাত—ক্রথমিতি। অনুবানৈং সভাবনাং দর্শনিতি আলুক্তি। তার ভবনাবাত্তহেতুক্বসুনানবাধ—ভ্রেমিতি। বাধিভোত্ত্ব্বামিতি । উল্বেখ্য বাক্পলার্থমাক—সংক্রতি। সংগৃহীভবর্থং বিরুগোতি – যাং ক্রমেটভোর্টিনেনা। উক্তর্মুপ্পার্থিত্ত্রের বাভাবিভ্যাহ—ভ্রেনিত্তে। কার্যাকারণভাবেংশি কিবারাভবত আহ— ক্রান্ত্রিং চেতি। সর্বো নাববিলেবাভ্রমানাভবতে। ব ভিন্ততে ভবলাব্যাং, বং বংভার্যাং, ভততো ব ভিন্ততে, বনা বুলো বট ইভার্থং। সর্বো নাববিলেবাভবনাবাতে কলিভাঃ
আভোকং ভলস্বিভ্যাত্র ক্রমেণাস্থিত্বসর্পাদির বিভাস্থানাভ্রমাহ—ভ্রম্থিতি। কার্যাণাং
ভাষপেচস্থাবিদ্ধিতি বাবং।

ভাস্থানু বাদে প্রাণায়তাবপ্রতি বা প্রাণাণতা পদলাভ বাহার
সর্বোৎকট কল, সেই বে, এই সাধাসাধনাত্মক অভিবাক্ত অপং বর্ণিত হটরাছে,
এবং আরও বে, বৃক্ষের বীকাবস্থার ন্যায় এই অগতেরও অভিবাক্তির পূর্ববর্তী
অব্যাক্ত শব্দ বাচ্য অবস্থা কথিত হটরাছে,দে সম্বত্ত এই ভিন প্রকার; সেই
ভিনটি প্রকার কি কি, তাহা বলা হইডেছে—নান, রূপ ও কর্ম; এই ভিনটিই
অনাত্মা, কিছ বাহা সাক্ষাৎ প্রতাক্ষ প্রস্থারশ আরা, তৎপরপ নহে, পরত্ত আয়া
হইতে ভিন্ন; অভ্যাব এই সংসার হইতে বাহাতে বিরক্তি (বৈরাণ্য) হইতে
পারে; সেই উল্লেক্ত অন্তর্ম বা ইন্স্প ইত্যাধি শ্রুভিন্ন আর্ক্ত হইরাছে; কেন্স্

না, অনামভূত এই সংসায় হইতে বাহার চিত্ত বিরক্ত বা বৈরাপ্যসভার না হয়, তাহার পকে কথনই "বন্ধ ব্রহালি" (আনি ব্রহ) এইরপ আর-নোকের উপাসনায় বৃদ্ধিবির প্রায়ুভি হইতে পারে না; কারণ, বাহাবিবরে অপুরতি ও প্রতাগাত্মবিবরে প্রবৃত্তির প্রকার বিরুদ্ধভাব, কঠোপনিবরেও আছে—'বরভূ (আহ্বিভা) ইপ্রিয়পণকে পরাস্থা করিরা হাকি করিয়াছেন; সেই হেছু ত্রীয় পরাত্ম – বাহুপ্যার্থ ই দুর্শন করিয়া বাকে; কিছু অন্ধরায়াকে দুর্শন করে না; অনুভত্তনাভের ইন্দ্রায় বাহার চক্ষু অর্থাৎ আনভূত্তি আর্ড (পরিবর্ত্তিত —অন্তর্থা) ব্রহাছে, এমন কোনও বার ব্যক্তিই প্রত্যক্ষ আন্থাকে বর্ণন করিয়াছেন' ইত্যাহি। ১

জিয়া, কারক ও কণায়ক, বাাক্তাবাাক্ত অর্থাৎ সুলক্ষায়ক এই
সংসার বে, কেবলই নাম, রূপ ও কর্মায়ক, পরত্ব আয়বরূপ নর, ইহা
কি প্রকারে উপপাদন করা বাইতে পারে ? তত্ত্তরে বলা হইতেত্ব—
প্রতির 'বাক্' শব্দে শব্দামান্ত অর্থাৎ সামান্তাকারে শব্দমাত্র বুরাইডেত্বে;
কারণ, পূর্কেই বলা হইরাছে বে, 'বাহা কিছু শব্দ, সে সমন্ত বাক্ই' (বাক্
হইতে পূর্বক্ নতে); 'বাক্' এই শব্দের বাহা অর্থ—সাধারণ শব্দমাত্র,
তাহাই এই ব্যোক্ত বিশেব বিশেব নামের (রাম, প্রাম ইত্যাদি শব্দের)
উক্ধ—কারণ —উপাদানস্বরণ; বেষন সৈত্বব-পর্কত লবণকপাসমূহের
উপাদান, তেমনি। এই কথাই বলিতেছেন—বেহেতু, এই নাম-সামান্তাক্ষ
বাক্ হইতেই সমন্ত বিশেব নাম - 'দেবদন্ত' 'বক্ষদন্ত' প্রকৃতি ভিন্ন ভিন্ন শব্দ
সমূহ উথিত হন্ন -উল্পত হন্ন অর্থাৎ লবণাচল হটতে লবণকপার ভার বহির্মত
হিন্না থাকে, অথ্য কার্য্য বা জন্য পদার্থবিত্ব অন্ত্রনিবিষ্ট থাকে। ২

ভাল, নাৰ ও বাক্, এতত্ত্যের মধ্যে সামান্ত-বিশেষভাব বটে কিয়পে ?
[ভত্তারে বলিভেছেন--] এই বে সামান্ত শব্দ-বাক্, ইবাই বিশেষ বিশেষ
নাবের সাব—সমভা বা সামা অ'ছে বলিরাই সাম অবাং সম্বন্ধী। বেহেতু, এই
বাক্সামান্ত শীর অবহা বংশবান্ত নাম-সমূহের সহিত সমান; [সেই
বেষ্ট্ই ইবালের সামান্ত-বিশেষভাব সন্তব হয়]। ৩

শণিচ, বিবেৰ বিবেৰ নাৰও'নর আঞ্চলতে বা শভিব্যক্তিতে বিবেদ বা পাৰ্থকা না থাকাও অপন্ন কারব,—বাহা হইতে বাহার আন্দলত বা তিংগতি হয়, ধেৰিতে পাওৱা বাহ, সে ভাষা হইতে অবিভক্ত বা অপুৰস্ বেশন বৃত্তিকার সহিত ঘট-সন্থের (অতেখ, ভেষ্টিন)(১)। বাক ্ইডে
বিশেব বিশেব নাম-সম্থের আন্ধাভ বন্ন কি প্রকারে, ভাষা কবিত
ইউডেছে—বেংছতু বাক্-শব্যাচ্য বাক্ বন্ধচী হইডেছে—এই নামসন্থের বন্ধ আরা, সেই হেতুই বাক হইতে নাম-সন্থের আন্ধাভ
বীকার করিতে হর; কারণ, কোন নাম্বেরই শব্যাভিন্তিক প্রন্ধ উপপর
হর না। এ কথার উপপাদনার্থ বনিতেছেন—বেংহতু, এই সামার্ক শব্দই
(বাক্ই) প্রন্ধান্যপূর্ণ করিয়া শব্দওলিকে—সম্বন্ধ নামকে ধারণ করিয়া
হাবে; [অভএব সামান্ত ও নাম্বিশেষের মধ্যে সামান্ত-বিশেষ থাকা আন্তর
হউতেছে না]। এইরূপে কার্য্য-কার্যভাবের উপপন্তিইছেতু, সামান্য-বিশেষভাবেরও উপপত্তি হেতু এবং উৎপাদকত্ব হেতুও বিশেষ বিশেষ নামগুলির
সামান্য-শল্ভকতা সিদ্ধ হইল। এখানে বে সম্বন্ধ কথা বলা হইল, পরবর্তী
প্রতিব্যর ইয়ার সম্বন্ধ ব্যাক্ষা করিতে হইবের ৭৮। ১৪

অধ রূপাণাং চকুরিতে। তদেধামুক্থনতে। ছি দর্কাণি রূপাণু তিষ্ঠস্তেতেদেশাত সামৈত দি দর্কারণ রূপাণু তিষ্ঠস্তি দর্কাণি রূপাণি বিভর্তি॥ ৭৯॥ ২॥

স্মানান্ত বিভাগ বিশ্ব নির্বাহিত করং (চক্রা বিং রপ-সামান্ত্ ইতোতৎ এবাং রপাণাং (বেতপীতাদীনাং) উক্থং (উৎপত্তি-দানং); বি মুখাং, অতঃ (অহাৎ—রপসামান্তাং) সর্বাণি রপাণি (মেতপীতাদিরপতেলাঃ) উভিচ্তি (উলাক্তি); তথা এতং (রপসামান্তং) এবাং (রপান্তিবাশাং) সূমে (সম্বাহ সাম্যান্ত্রা); বি (মুখাং) এতং (রপসামান্তং) সর্বৈঃ রুপাং (মেতপাতাদিতেকৈঃ) স্বং (স্থানং—এক্যমা-প্রং); এতং (রপসামানাং) এবাং (রপাণাং) এছ (ব্যাপকং—আহ্বা);

(১) ভাংশগ্ৰ—এখানে বাক্শলে সাধারণতঃ শক্ষাত্র অভিহিত চইয়াকে, সাধাত্র শক্ষেই বিশেষ বিশেষ নাম হইতেছে—'এব্যান, লাম, লাম' ইভাানে বিশেষ বিশেষ নাম; সর্বান্ত বিশেষ অবস্থান্তলি সামালাবস্থার অভতুক্ত হইয়া থাকে; থেষন বৃক্ষ-সাধান্তের অভর্গত হয়—বৃক্ষবিশেষ—আন, লাম, কাঁটাল প্রভৃতি। ভাষার শন্ত, সাধান্ত বৃক্তই ভক্তাভীর বিশেষ বজর ভারণ হইয়া থাকে, বেষন—সাধান্ত বৃত্তিভাই—বৃত্তিভাই কটানিয় কাল্ডণ ইয়া; কার্যানাত্রই অকারণের ব্যাপা (অবীন) হইয়া থাকে; অভঞ্জ নাম-বিশেষক বাক্সামাল অভনিবিত্ত।

हि (क्यार) अधर (नावानासनासन) नर्सान सनान (नर्सान् सनाज्यान्) विकर्ति (वात्रप्रति) ; [कार्यावायदेश्वर कायनास्त्रविदेशाणिक कारः] १९७१२ ह

মুলান্দ্রাদে। এখন নামনির্দেশের পর রূপসক্ষে সামা নির্দেশ করিতেছেন—চক্ষ্ —চক্ অর্থ—চক্ষু প্রায় সাধারণ রূপমাত্র; এই চক্ষ্ হইছেছে—শেতপী চাদি বিভিন্ন রূপের উক্থ উৎপত্তিস্থান; কারণ, এই সামান্ত রূপ হইছে আনক; এই রূপসামান্তই আবার সমন্তবিশেষ রূপেরসাম অর্থাৎ সাম্যাবন্ধা বা প্রকৃতি করুপ; কারণ, এই সামান্তরূপতি অপর সমন্ত বিশেষ বিশেষরূপের সহিত্ত সমান—ঐক্যাবন্ধা প্রাপ্ত; এই রূপসামান্যই এই সমন্ত বিশেষ বিশেষ রূপমাত্রই এই সামান্য রূপ দারা বিশ্বত বা ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে । ৭৯ । ২ ।

স্পাক্ষর-ভাষ্য ম. অংকানাং রপাণাং বিভাবিত প্রত্তীনাং—
চক্রিতি চক্র্বিষ্পামান্তং চক্ষ্যকাতিবেরং রপসামান্তং প্রকার্তনিক্ষ্ বীরতে। অভো ক্ স্কানি রপাণাভিত্তি, এতক্ষেং সাম. এততি স্কান্ত সমম, এতক্ষেণাং ব্রহ্ম এতক্ষি স্কানি রপাণি বিভাৱি॥ ৭১॥ ২॥

টীকা। ভত্ৰ বাাধানসংশেক্ষাণি পদানি বাংকরোভি—অধ্যেত্যা দিনো। নাৰ-বাাধানানৱৰ্গনগণৰাৰ্থ:। চকুক্ৰ্বনিতি সৰজঃ। চকুণিতি চকুংশকাতিবেল চকুৰ্বিবহ-সামাজমতিবাগতে, ভক্ত ভ্ৰপনাথাতা, তগণি প্ৰকাজমান্তি মোজনা ৷ ৭৬ ট ২ ৷

ভাল্যানুবাদে।— সধ শবের সর্থ—নাধনির্ধেরে সান্তর্য;
চন্থ: সর্থ—চন্দ্র হিল সমন্ত বিষয়—চন্দ্র প্রকাশ্য সাধান্য দ্রপবাত্তই
সক্তিতে হইতেছে। (এই চন্দ্র) রপ-সমূহের সর্থাৎ বেত-ক্লাদি বর্ণ
সমূদরের (উক্ধ); কারণ, ইহা হইতেই সমন্ত দ্রপ উৎপর হয়; ইহা সমূহদ
কপের সাম; বেহেতু ইহা সমন্ত দ্রপের সমান, এবং ইহাই এই সমন্ত বিশেষ
বিশেষ দ্রপঞ্চাকে ধারণ করিয়া রহিয়াভে (১)। ৭১। ১।

⁽১) তাংপর্যা—জডির এই কণা হইতে বুকা বাইকেছে বে, প্রবাস গুদ্ধ একটা অবিশেষিত লগনাত ছিল, বেড প্রতাধি বিভাগ ছিল না ; পরে সেই নির্কিশেন সামাজ লগ হইতেই বেড পীতানি বছ বিধ জপের আবিভাগ হইলাছে। বর্তমান সময়ে পাশ্চাভা পভিজেল বে, গুল্ল বর্তীকে, সময়ে করের সমন্তিভূত বা কোন বর্ণ বর বলিঃ। নির্কেশ করিলা থাকেন, ভাতাই কি এই লগ সামান্য) এই সামান্য জগকেই সমন্ত জপের আক্র এবং সমভাবহাও ব্যাপক বালানা নির্কেশ করিলাছেন ।

অধ কর্মণানালেত্যেতনেবাবৃক্ধনতো হি সর্কাণি কর্মাণ্-ভিত্তব্যেতদেবার সামৈতজি দর্মে: কর্মতিঃ সমমেতদেবাং এলৈ-ভঙ্কি সর্কাণি কর্মাণি বিজ্ঞতি, ভলেতৎ এয়ং সদেকময়নালা একঃ সল্লেতৎ এয়া তল্ভেদমূতং সন্ত্যেন ছলাং, প্রাণে। বা অমৃতং নামরূপে সভাং ভাভাগ্রাময়ং প্রাণশ্ছলঃ ॥ ৮০ ॥ ৩

> ইতি প্রথমাধ্যায়ে ষষ্ঠং ত্রাক্ষণম্ ॥ ১ ॥ ৬ ॥ ইতি বৃহদারণাকোপনিষদি প্রথমোহ্ধ্যায়ঃ ॥ ১॥ (বৃহদারণাক জমেণ তু তৃতীয়োহ্ধ্যায়ঃ ।)

ज्यक्तांश्री:-- चर्च (चमक्त: ', विर्णम-तम्भावकामाः वर्षकर्षनाः क्षत्राबारक व्यक्तं व केवारक है; चादा देति (परी बबूटारक, परीयनाथायाय क्षेत्राबाक्काक । बाट्यिक बन्द बनार (त्नाकित्रामार) कर्षनार (वर्णमञ्चनवादीमाः न्यनायकामाः 5 अवमादीमाः कर्षात्वावार) छक्तर (डेंश्लिक्कामः) ; वि (वचार) नर्साति कर्यात् । कर्यात्वाकाः) चक्कः (कर्य-नामानायुकार महीशार) देखिशीत : ७७२ । नामानः) अवार (कर्यवित्नशानार) माब (मबर्फ्ट) : वि (बचार) ७ टर मोर्सः कर्ष (6: मबर े निर्मावन माबानान-किरवकार) : बाठर बवार (कर्यावरमाना) तथ (वालक -- मामा) : वि (बचार) कठर (कर्चनावाकः) नवीनि कर्चानि विक्रित । कठर (बर्राक्कर मान. ब्रमः, कर्ष ह 🖔 वहर (जि.दबीवर चट्डाब्रमध्यहर) मर कवः (चित्रर) - चहर चाचा (वर्षाभक्तः) । नामक्रमकर्षनीम चश्चक्यार, व्यस्त्र हात्रमध्यार, व्यस् करेंकार मुन्नाविधि वादः]; बाद्या ((वदः) के (विनि) अवः (माद्याः) मृत् बक्द बहुर (मायक्रणकर्षाञ्चकः)। छद बछद । यमायान्) चमुछः मृत्वान क्षानर (गाथर) ; [किर छर क्षमुटर, किरवा मटार, छवार-] बाव: (नक-बुकाबक:) रेव (व्यनिष्क्षे) चत्रुकः (चत्रुकः व्यवाद्यक्षवन्त्रविक:) : नाव-व्राप मुखार, काकार (मायकणाकार) कार ब्यानः इतः (मावः मनावक 2014:) 1 v - 1 0 1

ইভি প্ৰব্যাব্যায়ে বৰ্তনামূৰ্ব্যাব্যায়াঃ সমস্যাহাং প্ৰব্যাহ্যায়ঃ ১ ঃ

ফুলান্দুআদে। অন্তংগর [কর্ণের সামান্য-বিশেষভার কর্ণিটি ইউডেছে—] আত্মা—কর্মসম্পাদনের হেডুকুত পরীর হইডেছে—বিশেষ বিশেষ কর্ণ্ণের উক্থ (উৎপত্তির কারণ); কেন না, সমস্ত কর্ণ্ণইই ইয়া হইডে উৎপদ্ম হয়; এই কর্মসামান্তাত্মক পরীর হইডেছে এ সমপ্তের (বিশেষ বিশেষ কর্ণ্ণের) সাম অর্থাৎ সামান্তাত্মক; কারণ, বিশেষ বিশেষ সমস্ত কর্ণ্ণের সহিত ইলা সম অর্থাৎ সামান্তাত্মক; এই কর্মসামান্ত্রেক পরীর হইডেছে—সমস্ত বিশেষ বিশেষ কর্ণের আত্ম (ব্যাপক); কারণ, ইলাই অপর সমস্ত কর্ণ্ণিকে থারণ করিয়া আছে। ইলারা তিন হইয়াও এক—, আত্মা কেংল্বরপ); আত্মাও আবার এক হইরাও (শেষক্রপে ভেনরহিত হইরাও) এই তিন; [কারণ, দেহ ড অল্লভ্রেরই বিকার বা পরিশান]। প্রসিদ্ধ এই অমৃত সত্য ছারা আছোদিত আছে; পূর্বেরন্তাত্মপাই অমৃত (মরণাইতিত); নাম ও রূপ হইডেছে—সত্যা, সেই নাম ও রূপ ছারা এই প্রাণ আছোদিত বা আরুত রহিরাছে ৪৮০ ৪ ৩ ৪

के जिल्लामा । १६ व्याचन । १६ ।

ण्डिकाश्वन्, रेण्डिकश्चनशः नर्दकर—दिविदेश्वरः नरः वक्त् । दिनाशक्तिकश्चन्, रेण्डिकश्चनशः नरदकर—दिविदेश्वरः नरः वक्त् । दिनाश्रेतकश्चन् रेट्राहाटट—पश्चाशा पहरः निकः कार्याकश्वाशनणावः छवाशद्याश शावाणः—"वक्तरशः व। पश्चाशा" रेणावितः । वक्तरशेवरः नर्वरः
गाक्रश्वाश्चरः । वह्न नाव श्चनः कर्द्यक्ति । पाणा के व्यव्यक्षिः कार्याकर्तनम्बाकः नत् प्रवाशाविक् शिरेष्टक्षादिन वार्विक्ष् वक्तरव वहरः नाव
कर्तनम्बाकः नत् प्रवाशाविक्शविदेशकादिन वार्विक्ष् वक्तरव वहरः नाव
कर्तरभवितः। प्रदेशक्ष्यभावान् प्रवृत्तः नरकान व्हितिरक्षक्र वाकानार्वः

देखि अववाधारत वर्षर आवनम् ॥:॥ 🖦

देखि अत्मानिक्षणगरूण्यामार्थनश्च मध्यस्त्रमांत्रश्चाकणाणांत्रण अनुवारकमन्द्रेः इत्ते दृश्यादनात्मामान्यम् वात्रा अवत्याद्वादाः ।) ।

িকা। রশনক্ষণানন্তবিশবকুচাতে। ক্রিলাবিশেষাণাং ক্রিয়ায়েছ্পর্তাবং এর-বারা ক্ষেত্রতি—ক্রপ্রমিড্যাদিনা। স্বাহণক্ষের দরীবনির্বর্তাদের পুরুষ্থিব রাজ্যশেষসমূল্যতি—আগ্রানা হী,তি। উলৈবোণগতিবাধ—পানীনে চেডি। ভথানি ক্রেয়াল্যং শ্রীবনির্বর্তাং কর একাবিকালা সঞ্জন্মভাবি ভতান্ত ইতি।

ক্রমাণ স্থাতে কার্যকরণজনোবার্যবিকার্যান—ভ্রম্ভানিভি। আর্থকক্রেলাবিবের বিক ইতি বাবং। অবিনালী বুলবেরে গঞ্কাল বাবরোজং ব গুলুতীভার্তা। স্ক্র কার্য কুরুণকক, ক্রান্তরে বাবরণে ইভ্যান—সাহ্মান্তি। কর্ববাবারাং ক্রান্ত—ভ্রিন্সান্ত্রকে অন্তি। প্রীকৃত্বক্রান্তরের ক্রান্তরে, ভ্রতারাং স্বরং
সক্র আক্রেভি ব্যুৎপত্তে স্থাং বৈরাক্র পরীয়ং কার্যান্ত্রীকৃত্বক্রন্তর্যান্তর্ক,
ক্রান্তর্যক্রক্রক্রিক্রান্তরের ক্রান্তরের ভ্রতান্তরের ক্রান্তরের ক্রান্তর্যান্তরের ক্রান্তর্যান্তরের ক্রান্তর্যান্তরের ক্রান্তর্যান্তরের ক্রান্তর্যান্তরের ক্রান্তর্যান্তরের ক্রান্তর্যান্ত্রান্তর্যান্ত্রান্তর্যান

रशावस्त्राहरू - च्याक केन्द्रि । अनिहरू मधाविद्याविद्यः व्यक्षः विवक्षणात्राक् विविद्यालक्ष्यानमार्वरः कृष्यस्यः मण्डलः कविदाहि । स्वताविद्यावि

সেই যে, এই নাম, তপ ও ক্ষত্রের, এই তিনটিই পরস্পার পরস্পারকে,
আল্লা ক'বরা অবলান করে, প্রস্পার পরস্পারের অভিবাজির সামায় করে,
এবং প্রস্পার প্রস্পার বিশ্ব প্রাপ্ত হইরা থাকে; ইরারা জিল্ডবিইছের
ভাচ (১) স্থিতিভভাবে অবলান করত এক—, কিন্তুপে ইংগ্রের একর, ভারা
বলা হাতেচে—এই আ্রা অর্থাৎ কার্যাকর্পভাবাত্রক এই সুলবের;
ইন্তাপুর্কে "এত্রায়ে বা অ্যনাত্রা" ইন্ত্যালি বাক্যে সে করা উক্ত হইরাছে।
এই যে, নাম, এপ ও করা, এই তিন্নী লইরা এই সুল ক্ষান্ত্রত লগান্ত্র আন্তর্গতিরিক্ত প্রত্রে সভা নাই); সম্প্র বেংগ্রেরাছবিশিষ্ট এই আ্রন্থ আবির্গ্যান্ত্রত করার্যাক্ষ বটে, এত্রভিত্তিক্ত নারে):

সেই এই আন্ত:—পরে বাধার কথা বলা ধটবে, সেই **অমৃত বারা আরত** আছে; প্লাত নিজেই এই বাকোর **অর্থ বাল্য বিভেছেন**; **প্রাণই অমৃত অর্থছে** দেহাভারতঃ বেহবিধারক কর্ণবিধান : মহরকার সাবৰ) আন্তর্নাণ

⁾ वार १९१ — अवादन ११ जिएएक क्या बना बहेबारक, देश मधानीक 'जिएक' नद्द एवन देश गुरुष्याद्व अंग्रेड मांचांन्य हिन्दी एक बाज एक वार्टि । दनदे विविध एक दश्चम गुरुष्य गुरुष्याद्व केन्द्र कर वहिंद्य महाद्यान वादक, अवर दिवानकाह कन्न्याद वाकि। वादन कविद्य मध्ये दश, दृष्यांन अह नाय, क्या क कर्षक गुरुष्याद गृहण्याद्व व्याज्ञाद वाकि। व्यवस क्यांगायदन मध्ये क्षेत्र। वादक।

व्यान वरेखाद चन्छ---व्यानमानि विमानप्रतिष्ठ ; कार्या वा केश्ना द्वारायाचा नाम क स्वन वरेखाद 'नका' ; तारे माम क स्वतन केन्द्रेशक किशायाचान व्यान क्यान्य न्यान नाम क स्वन वार्य व्यान नाम क स्वन वार्य व्यान व्यान निवास व्यान व्यान

ইতি প্রথমবান্যায়ে বঠ আছাশের ভারাজ্বাদ ৪ ১ ৪ ৬ ৪ ইতি প্রথমরেরোকোপানবদের প্রথম অধ্যায়ে শাস্তর-ভাস্তের অঞ্বাদ সমার্ড ৪ ১ ৪

विजीद्यशिषातिः।

প্रथमः त्याच्यम्।

** 500 00 000

ख्या छा ज्या छा का का । 'बारबाला श्वामीठ' उनस्वरत ह मर्बविद्धेः गार, अस्व हा सुरुष मर्शवार (श्वश्तामस्वद्वेगम् —बासामस्वरास्वर खवा-वोकि—बास्टवस्यकः विद्याप्तियः वद्य (उनस्वितियः मः -ब्यास्मायखा-श्वयाचीति, म म (बाहित बांवसारियः अक्टेबबाइस्ट्रेगम्" "मृख्याः मः मृद्यायास्त्राति, व देव मारम्य पद्यति" हेरतास्यावितः श्विकालो विद्याविद्याः

তত্ত্ব চ অধিভাবিষয় সর্বা এব সাধা-সাবনাছিভেছবিশেব-বিনিরোপেন বাাবাতে: আ তৃতীয়াবাহপ্রিস্বাধ্যে। স চ বাাবাতে:-ছবিভাবিষয় সর্বা এব বিপ্রকাব: - অবঃ পাণ উপইছকে। সুহত্তের ভভাতি-সক্ষণ: প্রকাশকেহসুতঃ বাহুল্চ কার্যানক্ষণেহপ্রকাশক উপজনাপায়ধর্মকঃ ভূপকুল্মুভিকাশ্যে: গৃহজ্বের সভা-ক্রাচ্যো বর্তাঃ; ভেনায়ভ্রশক্রাচাঃ প্রাণ্ড্যা ইতি চোপ্রহত্ত্ব। >

স এব চ প্রাণো বাজাগাংতেবেবনেকরা বিজ্ঞান প্রাণ একো বেব ইস্কাচাতে। তত্তিব বাজা পিও একা সাবাবণা—বিরাজ্বৈখানর আলা পুরুব'বখা প্রজ্ঞাপতিঃ কো বিরবাপর্কা—ইত্যাদিতিঃ পিওপ্রবানৈঃ শইস্কান ব্যাহতে প্রাণিপ্রতিক্তকর্পান এককানেকক বন্ধ এতাব্যেব, নাতঃ প্রবৃত্তি, প্রত্যেকক পরীব্যেকের্ পরিস্থান্তা চেতনাব্য কর্ক্ ভোক্ক চ—ইত্যবিজ্ঞান বিষয়বেবাত্যবেনাপগতো পার্গো। ব্যাহ্যবা ব্যক্তাপদ্যাপাতে ভবিপরীভান্ধ-মূপকাতশক্তঃ প্রোভা। ০

जनः वि वकः भूक्षेणकिषिवाशाशिकाकास्य स्वर्णाशासीक्षेर त्वाकृष्कि-चन्न वस्यकि; विनवाद वि एक्षेणाश्चवः स्वर्णाश्चर्यस्य स्वर्णाश्चर्याद्यः स्वर्णाः वर्णिकः देखि ह वैद्यात् ; देशनि ह नाकगा-पाळक्षामस्याद्यमादिनस्यत्वस् यद्या मध्याद्या अवस्या यकावि ; क्ष्यार विदे अवस्यादिकाश्वरम्य मृजी-नक-मिकाकश्वनामाच वक्षमयर्थनार्थ वादकः । ॥

ি ক্রিক্রাঃ বৃতীবেধনাত্ত পূজিওবিদ্ধাবিদ্ধহোত্তি প্রণাক্তি সম্প্রতি বিদ্ধান প্রপক্ষ বিদ্ধান ক্রিক্রাঃ বৃত্তি বিদ্ধান ক্রিক্র ক্রিক্রাঃ করা ক্রিক্রাঃ ক্রিক্রাঃ করা ক্রিক্রাঃ ক্রিক্রাঃ করা ক্রিক্রাঃ করা ক্রিক্রাঃ ক্রিক্রাঃ করা ক্রিক্রাঃ ক্রিক্রার ক্রিক্রাঃ ক্রিক্রাঃ ক্রিক্রাঃ ক্রিক্রাঃ ক্রিক্রায় ক্রিক্রাঃ ক

करा व्यवस्थि विद्याविद्यानिवर्गनिवर्गनिवर्गाहर नाकाति, ठडाठ अस्तर्धा छ । मन्धाः डाक्यत वृष्टवर्ग कराति । स्वाधिन छ । विद्याविद्या रहारानि धार्य । स्वाधिनमा माध्यमावर्गकर्मनामावर्ष्य । यानाका तका अर्थ वित्यक्ष । विद्यावर्गा वावष्या नामा, त्वाधिकार्थ । जेनाकाद्यावर्गाय वृष्टवस्थान । स्वाधिकार्थ । करावार्ष विद्यावर्गाय वृष्टवस्थान । स्वाधिकार्थ । स्वाधिकार्थ विद्यावर्गिकार्थ । स्वाधिकार्थ ।

ভয়োভনত্ত বিশ্বপতিশেষার্থ পুরুষ্ঠ বিশ্বস্থা কর্মান্ত কর

वृश्यम्साक्षाक्षणकवास्त्रवर्षाक्षणि । स्वाविष्णक्षण्यां संस्वाविष्णः स्वाविष्णक्षण्यां स्वाविष्णः स्वाविष्णः

কিমিতি বঞ্জান্ত্রপাদ, তিকা পাণ্ডতে, তরাক—এনা আহিছি । ব্যাশকার্থনিক পুরুষতি – পুনুর পান্তরাক্তি । অবে। অবিভবানাবাধিক তেতি লেবা। আবাধিক নিজী-কাতে কোনহাক নিপ্রান্থের আইডি । বরা কর্কনান্ত্রের সমর্গনিবালান্তর্থা আহ্বা কর্পনাত্রের সমর্গনিবালান্তর্থা আহ্বা কর্পনাত্রের অর্থানিক নিজ্নান্তর্থা আহ্বা কর্পনাত্রির আহ্বার্থিক নিজ্নান্তর্থা আহ্বার্থিক নিজ্নান্তর্থা সমর্পনি লোগেল কুম্পানান্তর্ব্ধ আহ্বার্থিক নাম্প্রান্তর্ভ্ব তেব না প্রপ্রান্তর্পনাত্রির ক্রিক্তার্থানিক ক্রিক্তার্থানিক নাম্প্রান্তর্ভাব না প্রপ্রান্তর্থানিক ক্রিক্তার্থানিক ক্রিক্তার্থানিক ব্রান্তর্ভাবিক নাম্প্রান্তর্ভাবিক নাম্প্রান্তর্ভাবিক নাম্প্রান্তর্ভাবিক নাম্প্রান্তর্ভাবিক নাম্প্রান্তর্ভাবিক নাম্প্রান্তর্ভাবিক নাম্প্রান্তর্ভাবিক নাম্প্রান্ত্রার ক্রিক্তার্থানিক ক্রিকের ক্

আনাত্রিকারণ সুন্মতিপ্রার্থন্ত্রাগ্রান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর উন্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর্যান্তর প্রান্তর প্রান্ত

व्याञ्चाञ्च-द्वाव्यान्त्रकाध्यः प्रशासातः स्वः वरेतारः (६, "बाषः रेखार देवातील" (बाषात्रस्यरे देवात्रता कतितः), अक्षात स्वरदः स्वयं नर्कविस्तव स्वयं निष्ठ व्हेश्क शारा; सांव नर्कार्णका शिवक्षयं विद्या स्वयं स्वयं क्षा क्षेत्रका स्वयं स्वयं क्षा क्षेत्रका स्वयं स्वयं स्वयं क्षा क्षेत्रका स्वयं स्वयं

उन्नर्था छुडीर क्षणार्वत : न्य । र्याख भाग भागमाणि हिर्म १०१ क्ष विरम्भ विरम्भ क्ष्मणाल्य १०१ क्ष्मणाल्य १०० व्याच १०० व

সেই প্রাণই আবার বাফ অধিকচণের দেহাদির) প্রতেদায়য়ার বহুপ্রকারে বিস্তৃতি লাভ কবিয়াচে; অবচ প্রাণকেই আবার এক দেবতা বলা চইয়া থাকে: তাহারই বাফ্ শিশুটী দেহশিশুটি) এক---সর্বসাধার্ রশের সম্পর্কিত, যাহা স্থানি দেহাগরগরূপে বিভক্ত ক্টরা (১) বিরাট, বৈখা-

⁽১) তাৎশর্মা—খন্ত ফডিট পূর্ব্যাদি দেবতাকে রাজের ফেরার্থন বলিয়া করানা করিয়াকেন : কথা—'কন্যান্তিরানাং ক্রৌনু'র্দ্ধ। ধা লাভিক্তরণৌ ক্ষিত্র : পর্যাক্তক্তিশা বোজে ক্রিয়াকিন নন্য: ইত্যাদি। এবানে পর্যা ও অন্তি প্রকৃতিকে সেই রক্ষ-প্রকাশনিয় ক্রেয়াক্তরে করানা করিয়াকেন। এইএশ আরও অনেক্সক্তরে প্রকাশনিয় অবহয়ন্ত্র্ণ্ বিশেষ পরার্থের রূপক পরিক্রমনা দেখিকে পাওছা বাছ।

विजीदतारशानाः—दायनः वापानम् ।



নর, আখা, প্রথবিধ, এজাপতি,কণ্ড হিরবাবর্ত—ইত্যাধি প্রধানতঃ বেছার্থ-বোধক পথে অতিহিত হটয়া বাবে: প্রথম্বর একড ও অনেকড এই পর্যান্তই, ট্রায় অধিক আর কিছু নাই; সেই একট চেডন বস্ত পরীরভেগে পরিস্থাপ্ত আর্থাৎ বেবচেবে ভেরপ্রাপ্ত বইচা কর্ত্তা ভোজারপে প্রতীত বইহা বাবে; প্রভরাণ উলা অধিভারই অধিকাইভূক্ত; অবিভাবিকৃত সেই বছরেই আখান রূপে কুত্রিকডর সার্থানামক রাধ্বকে এবানে বজারূপে উপক্রম্ব করা হইছেছে এবং ভাষপদীত ববার্থ আন্তর্গনী অভাতশক্তনামক রাখাকে প্রোভারপে প্রস্থান করা হইছেছে। ০

বেবের, কোন ছজের বিষংকে এইস্কপে—পূর্মণক ও সিছান্তরণে প্রতিপালন করিলের ভাষাতে সহলে প্রোভার চিত্র আক্রই বইরা থাকে, পকারতে; ভর্মপাল্লের প্রায় কেবলের পর্যাধনাত্রবাবক পালে নিম্নপন করিলে ভাষা আভিবন্ধ ছুর্মোধা বইরা পায়ে, কারণ, এই আছাবন্ধ অভান্ধ ক্ষমপ করিলে ভাষা আভিবন্ধ ছুর্মোধা বইরা পায়ে, কারণ, এই আছাবন্ধ অভান্ধ ক্ষমপ করিভেও সমর্থ কর আগাল বাক্যে এই আহাবন্ধকে বাহাকে প্রথমিক ভর্মিস্বার্ এবং সাধারপ্রভিষাত্রেরই অসমা বলিয়া বিশ্বভাবে প্রকান করিয়াছেন। ভাষার পর ছালোগোগিনিবনেও আছে—'আচাব্যাবান্ পূক্ষম ভাষাকে আনে' 'আচাব্যা বইতে সক্র বিশ্বাই উংক্রইতম' ইভি , তপ্রক্ষীভাতে আছে—' (বে আর্ক্রন) তর্মপনী আনিগন ভোষাকে জানোপালেশ বিবনেন, বিশ্বেষ্কর এই বৃহম্বারনাকোপনিবলেও লাকনোর সহিত বাক্ষমভারের ক্ষোপক্ষমপ্রসাক বিশ্বেষ আড়ক্ষেরে সাহত আন্ধার হুজেরৰ জাপন করিবেন; সেই থেকু সল্লভণে পূক্ষপক্ষ ও পিছাত্ত পদ্ধ কল্পনাপ্রক্র প্রথম্বনিক্রপনীক্ষেশে বে চেইা, ভাগা পুর মুক্তিযুক্তই হুইংছে। ১

বিশেষত আচার বিধির উপরেশ করাও আপারিকার অপর উজের,
অবাথ কিরপ ওপান্দার লোক বকা (আচারা) গুরুরের, আর কিরপ ওপান্দার
লোক প্রোতা হারের, এবং কি প্রকাবের বা উপরেশ হিতে হয়, আর কি
প্রকাবেই বা ভাষা প্রয়ণ করিতে হয়, ইত্যান্ত ওকু-পিথার কর্মবা উপরেশের
বঙ্গত ঐরপ আবাহিকার অবভাবে। করা আবন্তক হয়; প্রভাক আবাহিকা
হাতেই বক্ষা ও প্রোভার অর্থাথ স্থাচারনিই ওক ও বিবেশ ঐরপ
আ্লার অনিতে পালা বার। ভাষার পর,আত্মতত-বিহরে ওও ওক্র্তি প্রয়োপের
নিবেশ করাও ঐরপ আবাহিকার আর একটি উল্লেড; আবাহিকাক্তর

। ওঁ। দৃপ্তবংলাকিইন্চানে গাপা আন, স হোবালেছা ১শক্তা কাশ্যা — একা তে এবাপ্তাই, স হোবাচাগতেশক্তা — সহজ্ঞা মেডভাং বাচ নলো জনকে জনক ইতি বৈ জনা ধাবন্ধীতি॥ ৮১॥ ১॥

জনজনেত্ৰ অনুচানঃ বচনসমৰ বজা দুপুৰাণাকি: (দুপ্ত:-পৰিতঃ বলাকাছা অবভাষ্ -বাবাকি: গাৰ্না (পৰ্বগ্ৰেষ্ট আন (বজুৰ : ব ্ ক্ল ভাজ); সং (পাৰ্নাঃ) হ কিল কাজা কালীৱালং -অল্ডেনজেং (ভ্ৰামণেত্ৰং বালানং নিবাচ (উজ্ঞান্) -(ত ভূৱাং) বঙ্

⁽⁾ विश्वना - अवादि भानका करेंगांकिल दयः संगतियाम अदया पात्रव्य भावादंदिक।
या प्रवासान महिदनिक भादाः स्वत्र नामक विश्वन दिवान दिवान । उन नामके । उन नामके । करागंकिल कि अध्यादिकान महिदनिक भादाः स्वत्र नामक विश्वन नामके । उन नामके । विश्वन भावादे । विश्वन । विश्वन । विश्वन भावादे । भावादिकान भावादे । विश्वन भावादे । भावादिकान भावादे । विश्वन भावादे । भावादिकान भावा

हेराइ र-अक्गार नाहि ('तम त्व तमानि' देखि नहमनिविद्यः) नदतर (नवार नदतर) नदा [क्छानिकि त्वरः]; 'समकः सनकः' देखि नवस्त्वम नाकाप्तर रहिक्ष् ; कठक समकः देव (अगिर्द्धा) [(आठा], समकः [वाठा] देखि [इसा] समाः (कथ्यवरः, विवस्त्वरः, अठिअदौठातक) स्विधाविद्ध (सम-क्ष्म स्थानस्थि), [उद्दर वदानि नदावनर झाराविटि छावः] ॥ ৮১॥ >॥

অন্সান্দ্রাদে। গর্ষিতবভাব পর্গবংশীর বা াকি নামে একজন
বক্তা ছিলেন; ডিনি কালিরাজ অলাতশক্রর নিকট উপদিত হইরা
বলিলেন—ভোমাকে ব্রহ্মতন্ত্র বলিব। অলাতশক্র বলিলেন, ভোমাকে
এই কথাতেই আমি সহস্র (গা) গান করিছেছি। [বক্তা, শ্রোভা ও
প্রভিন্তরীকা] গোকেরা 'জনক জনক' বলিয়া বাবিত হয়; [মুডরাং
আমাতেও সে সমন্ত ওপের সন্তাব মনে করা অসক্রত হয় না] ১৮১৪১৪

শাক্ষমভান্যান। তত্ত্ব পূর্বপদ্ধারী অবিচা-বিনয়বন্ধবিং

গুরুবালাকিঃ—পুরুং পর্কিতঃ অসমাগ্রেমবিরাদের, বলাকায়া অপত্যাং
বালাকিঃ, গুরুকারের বালাকিক্চেতি পুরুবালাকিঃ, হ-শত ঐতিহার্থ আন্মারিকায়ার; অনুচানোহস্থকনসমর্থা বক্তা বালী, গার্গাঃ গোত্রতঃ, আস বভূষ
কচিং কালবিবেরে। স হ উবাচ অভাতশক্তং অভাতশক্তনামানং কার্রং
কালিরাজয় অভিগম্য—ত্রম্ম তে ব্রবাধীতি—ত্রম তে ভূতাং ব্রবাণি কর্মান।

স এবস্ক্রোহজাতশক্তর্ভাচ—সহত্রং পরাং হয়ঃ এতভাং বাচি—বাং বাং
প্রভাবোচঃ—ত্রম্ম তে ব্রবাধীতি, তারশাত্রবের গোসহত্রপ্রহানে নিবিভবিভাভিপ্রায়ঃ।

हिन्का । याँपारिकार्य रहता दिएड क्यकशनि सांग्रहे क्रद्रशक्ताविका । प्रत्यक राहित्व रहतूनाव -व्यक्तिकाश्विकद्वक्ति । वर्षिकार रहतूनार व्यक्ताशिका । रहत्त्व प्राथिकिकतिकासानि क्यारिकाक्ष्मकारक । व्यक्ति स्व अस्तिक सार्वक महत्त्रपांदय विविधिकि (नवः) क्षावित वाष्ट्रहे — अरुश्वक क्षेत्रिः। अविद्या ध्यक्क वाह्यपि क्षयद्वाद्वाद्या देव विभाव हेकि वाष्ट्र। वाकार्यवाद्यं — अरुश्वक्रा विश्वक्र्यं विद्यक्ष्यं विद्यक्ष्यं विद्यक्ष्यं विद्यक्ष्यं विद्यक्ष्यं विद्यक्ष्यं विद्यक्ष्यं विद्यक्षयं विद्यक्यवे विद्यक्षयं विद्यक्यव

ভাজ্যান্দ্রভাদে । পূর্বপদ্ধবাদী (স্বাস্থানগাৰী) দুধ-বালাকি—ববার্থ প্রক্রান না বাকার দৃধ পর্বাবিত (অভিযানী) ও বলাকানারী বাতার প্র—বালাকি ; দৃধ্য স্বক্র বালাকি—দৃধ্যালাকি, [কর্মবারর স্বাস], পর্মপোরির—গার্গ্য নাবে একজন স্বন্তান—স্ক্র্রুচন স্বর্থ স্থাৎ বজা—বালীছিলেন। 'হ' প্রকী ইতিহুপ্তক; [সূত্রাং বুক্তিতে হইবে বে] কোন এক স্বরে তিনি প্রাহ্ন্ত ত ইরাছিলেন। তিনি কাল্ল কানীরান্ধ স্বভাতপক্র নিকট উপন্থিত হইরা তাহাকে বলিয়াছিলেন—স্বামি তোহাকে প্রস্লোপদেশ দিব ; সেই স্বভাতপক্র এইছপে স্বতিহিত হইরা তাহাকে বলিলেন—এই ক্রাছই স্বামি তেরাকৈ সহল্র পে। দান করিব বে ক্র্যা পুনি স্বামার প্রতি বলিয়াছ—"প্রস্ক তে প্রবাদীতি", [সেই ক্র্যাতেই] ; রাজার স্বতিপ্রায় এই বে, এই ক্র্যান্টই সহল্র গো-লানের নিষ্কির বা উপন্তক করেণ।

তাল, সাক্ষাৎ প্রখোপদেশকেই সহস্র লানের নিষিত্ব বলিয়া কলনা কর না কেন !—'তোমাকে প্রখোপদেশ লিব' ৩৬ এই কথাটিকেই সহস্রহানের কারণ বলিতেছ কেন ! হাঁ,বলাহ ইতেছে—বেহেছু খরংপ্রতিইয়ালার এইলপ অতিপ্রায় প্রকাশ করিয়াবলিতেছেন—কনক লাতা, কনক প্রোতা, এইলপ ছুইটি বাকাকে লক্ষ্য করিয়া 'জনকঃ' 'জনকঃ' এই ছুইটীয়াল পদ বলা হইলাছে; [বছতঃএইলকে ছুইটা লাভুহ ওলোভুহ বোধক প্রদ্রশ ছুইটীয়াল গৃদ বলা হইলাছে; হুইবে]। বৈ গল্পী প্রসিদ্ধিভাতক; জনক লান করিতে ইছুক ও লাবণ করিতে ইছুক, এই জন্ত লাভ্যর ওলালু, বিষম্পু (বলিতে ইছুক) এবং প্রতি-প্রবেশ্ব লোকসমূহ তলভিমুবে বাবমান হয়; অতএব সে সমন্ত ওণ আমাতেও সন্তাবনা করিয়াছে; [কালেই প্রদ্রপ বাকা লাখা লাখন স্বশ্রহান করা আলাভনক্রয় পক্ষে সন্তবপর হুইতেছে] ৪৮১৪১৪

স হোৰাচ পাৰ্সে। ব এবাসাবাদিজ্যে পুরুষঃ, এতবেরাহং জ্বোপাস ইভি; স হোৰাচাহ্জাভজ্জের্মা বৈভাগ্নিব সংব্যিকাঃ, সর্জ্যোর প্রভারাং প্রভারাং বৃদ্ধা রাজেভি বা প্রথমসমুপাস-



ইডি ; স ব এডমেবসুপাতেহডিডাঃ সর্বেবাং ভূডানাং সুর্বা রাজা ভবতি ৪ ৮২ ৪ ২

মূলান্ত্রাদে। দেই গাগ্য সভাতশক্তকে বলিনে এই বে অদিভাষণ্ডল মধাবর্তী পুরুব, আমি ইহাকেই ক্রন্ধ বলিরা উপাসনা করি ? সেই অঞ্জাতশক্ত বলিলেন—নানা এরুপ অন্ধ বিষয়ে আমার সহিত সংবাদ করিও না, অর্থাৎ আমার নিকট এই আদিভা পুরুবকে ক্রন্ধ বলিয়া বুবাইবার চেন্টা করিও না : কারণ, আমি ইহাকে সর্বাস্থ্যতর অভিষ্ঠা (উপরিশ্বিত) মন্ত্রক ও রাজা (গাল্ডিমান্) বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি। অপরও যে লোক ইহাকে অভিষ্ঠানে গুণসুক্ত বলিয়া উপাসনা করে, সে বাক্তিও সর্বাক্তরের অভিষ্ঠা মন্তরক ও রাজা হন ৪৮২ ৪ ২ ৪

শাক্সক্তান্তান্ত। এবং রাজানং ওপ্রবৃত্তবৃদ্ধীভূতং স হ উবাচ
গার্গাঃ—ব এবাসোঁ আধিত্যে চকুবি চৈকোংভিবানী চকুবারেশের অধি
প্রবিষ্টাঃ অবং ভোজা কর্তা চেতাবন্তিতা,—এতবেবাবং এক পঞ্জাবি অবিবৃ
কার্যক্রবস্থাতে উপাসে। তথাৎ ভবহং পুরুষং এক ভূতাং এবীবি
উপাবেভি। স এবনুক্তঃ প্রভাবাচ অকাতসক্তঃ—বা বেভি হকেন বিনিবাররন্—
এতবিষ্ প্রকৃবি বিজেয়ে বা সংববিষ্ঠাঃ; বাবেত্যাবাবনার্থং বির্কানন্,—এবং
স্বানে বিজ্ঞানবিশ্বরে আব্রোবিঃ অবান জ্ঞানব্দ ইব বর্ণান্তা বাবিতাঃ ভাবঃ;

चंद्रा वा मरविष्ठीः वा मरवावर कार्वावतिष् तकि ; सक्टकार कामानि, क्यू तक वक्तू वर्दनि ; म कू वंद्रशा कांद्रक अव । चवं त्वर वक्त्य—कांनीत्व वर तक्ष्माज्य, म कू किंद्रशा कांद्रक अव । चवं त्वर वक्त्य—कांनीत्व वर तक्ष्माज्य, म कू किंद्रशा कांद्रक अव । चवं तक्ष्माय ; वक्षः मर्कत्यकवर कात्म, वर्षे तवीति । कथन ? चिक्तां चाकीकां मर्कानि कृष्णामि किंक्कीकि चिक्तां, मर्त्ववार क कृष्णामार वृक्षा निवार वात्मिक देव वाच्या वीतिकत्यात्मकार, अटेकिक्तित्यतेनिक्तित्वक्त् उच्च चित्र वाव्यक्षमारक कर्ष् त्वाच्य तिविद्यक्षमारक विवार विवार

তীকা। কৰি মান্ত্ৰা গোলাংগৰিত। মান্ত্ৰা মান্ত্ৰা মান্ত্ৰা আৰু নিৰ্বাহন গৰিত । বৃদ্ধিকাং বৈশ্বস্থা কৰি লাভি নিৰ্বাহন কৰি কৰি মান্ত্ৰা কৰি কৰি মান্ত্ৰা কৰি কৰি মান্ত্ৰা কৰি কৰি মান্ত্ৰা কৰ

ৰতিটাঃ সংক্ৰামিভানি থাকাং প্ৰাৰাহ্যভাৰী বাাক্রেভি- আইপ্রভানি ছিন্তা। এক পুৰুষ্থিতি পেয়া। ইতি পথে। গুণোপালিসবাধ্যানা প্রকাশীখা। বৈভিও গৈলিটাং এক, ভত্বশাস-ভ কনমণি আনামীকুড়ো কনমান্ত্ৰ্যাহতে— জ্ব ইড্রি। ভিত্তিতি বংলাভং কর্তাভে, ভ্রাং—যুহু প্রতি । ৮২। ব

ভাষ্যাকুষ্যাদে। এইরপে রাজা প্রবণেশ্বার অভিষ্বীকৃত হইলে পর, প্রোক্ত গার্বা তাহাকে বলিলেন—এই বে আলিতা ও চন্দুর অভিযানী একটা পুরুব, যিনি চন্দু বারা ক্ষরাতাররে প্রবেশপূর্কক কর্বা ভোজা ও অনুভবিতারপে বর্ত্তযান আছেন; আমি ইহাকেই ত্রন্দ বলিয়া লানি এবং কার্য্যকরণ-স্বাইকৃত এই পরীর মধ্যে আমি ইহারই উপাসনা করিয়া বাজি। অভএব আমি তোমাকে বলিতেছি—কৃষিও ত্রন্দ্রন্থিতে সেই পুরুবের উপাসনা করি। সেই অভাতশক্ত এইরপ অভিহিত হইরা প্রভাতবে বলিলেন—নামা—হক্তবারা বিবারণ করত বলিলেন—এরপ ত্রন্থবিবরে ভানলাভের অ্লুভ

विकास कामा व्यवस्थान्।

वरेतारह; व्यक्तिवात और रव, काक्या विवा स्वन व्यामारात केंकरतार क्रिकेट क्षम व्यामारियरक वित्त अकी मूर्यंत यक मूकारेटक रकी करा, कांदा करिया निकार विकृषिक रहेत ; व्यक्तिय अविवास व्याम महिला मां, व्याप्त अकाश्म तक्षियरत व्याप्त कथा वित्त ना। यदि कृति व्याप्त क्षमा, कांदा रहेरम राहे तकहे विवास भाग ; किंद्र वाहा व्यापाद कांनाह प्रतिहास, क्षांदा व्याप्त विविध ना।

আর ছ্রি বলি বনে করিয়া থাক বে, আনি কেবল প্রথমান্তই আনি,
কিন্তু বিশেষভবনোপে তাহার উপাসনা ও উপাসনার কল আনি না; ना;—
তাহাও তোমার বনে করা উচিত হর না; কারণ, ত্রি বাহা বলিজের,
ভাহার সর্বন্তই আনি জানি; কি প্রকার ? [বলিতেছি—] ইয়া হইছেছে
সর্বন্ত্তর অভিচা বল্প ও রাজা বরুণ; সর্বন্ত্তকে অভিক্রম করিয়া
আবহান করে বলিয়া অভিচা এবং হীরিভেণ থাকার রাজা (প্রকাশবার)।
এই সমূদর বিশেষভাবিশিট এই প্রথকে আনি এই দেহবরো কর্তা ও
তোজারণে উপাসনা করিয়া থাকি। এবংবিধ ভাবিশেববাদে বিনিউপাসনা করেন, তাহার কলও এইরপই হইয়া থাকে,—বে কোন ব্যক্তি
ইহাকে বংগাক্ত প্রকারে উপাসনা করেন, তিনি নিজেও সর্বন্ত্তর অভিচা
শিরঃ ও রাজা হন; কেননা, বেরুপ ভাবোপে উপাসনা করা হয়, কলও
ভল্পর্কণই হয়; কারণ, প্রতি বলিতেছেন—'ভাহাকে বে বে ভাবে উপাসনা
করে, সেইরপই কল হইয়া থাকে'। ৮২। ২৪

স হোৰা চ পাৰ্পে। ব এবাদো চল্লে পুরুষ:, এডবৈৰাহং ব্ৰেলোপাস ইভি; স হোৰাচাহলাডশক্রা বৈভদ্মিশ্ সংৰজিচাৰ বৃহন্ পাণ্ডৱৰাসা: সোমো রাজেভি বা অহ্যেডম্পাস ইভি; স ব এডবেৰব্লাতেহহরহর্ষ সূতঃ প্রহুছো ভবভি, নাজারং কীয়তে ৪৮০৪০

अञ्चलाव्यक्तिः [जनमूक्तः] मा गर्नाः केनाव रं—सः जन जामोकाक्र [जनमूक्तः] गूक्त्यः, जरः जकः (व्यानकनमुः गूक्त्यः) जन व्यव (व्यानुक्ताः) केगाम (केगामिकनाम् जनिः) देखिः [जनमिकितः] मः जनाकनकः ए केनाव-जक्षित् (व्यान्-गूक्तः) मा ना मानविकाः (मून्यारः मा कार्तेषः); जन्म जकः (प्रमुक्तः गूक्तः) पृत्य (महाम्) गाकनामाः (गाकक्षाक्रमः ব্যার রাজা (রীর্ডিবান্ চন্তাতিবানিপুরুবন্ত ; বানঃ বন্তং বন্ত; নঃ তবোজঃ), নোবঃ রাজা (রীর্ডিবান্ চন্তাঃ) ইভি বৈ উপানে ইভি ; নঃ বঃ (অভোহণি কল্ডিং) এতং (চন্তাতিবানিনং পুরুবং) এবং বুরুবানিগুণনিবিষ্টং) উপাতে, আন্ত (উপাসকত) অবরহঃ (প্রত্যহং স্তঃ বজে সোবঃ অভিস্তঃ) প্রস্তুত্তঃ (বিকৃতিবানের চ প্রকর্ষেণ সূতঃ) তবিতিই; (প্রকৃতি-বিকৃতিবাগান্ত্র্চান-সামর্ব্যান্ত সম্পদ্ধতে ইতি ভাবঃ) আন্ত আহং ন জীয়তে (অভ্যান্ত্রো ভবতীতার্বঃ) ৪৮০ ৪ ৩ ৪

সুলান্দ্রাদ্ ⊢ [অভাতনা এইরপ বলিলে পর] গার্গ। নশ্চ
ভাগাকে বলিলেন —এই বে, চল্লে পুরুষ (চন্দ্রভিমানী প্রাণপুরুষ),
আমি ইহাকেই ব্রহ্মবুনিতে উপাসন। করিয়া থাকি । [এই কথা
আবণ করিয়া] অভাতশক্র বলিলেন—না না এরপ কথা বলিও না;
আমি ইহাকে রহন্ [মহৎ] পাওরবাসাঃ [শলরপ ওস্লবত্রে আর্ড]
সোমও রাজা (কীরিমান্) বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি। যে
লোক ইহাকে এইরপে উপাসনা করে, প্রভাহ ভাষার সভ ও প্রস্তুত্ব
নিশার হয়, অর্থাৎ প্রকৃতি ও বিকৃতিসংক্ষক বার্গেনিতা সোমাভিবর
অবিবার সামুর্থ হয় : কথনও ভাহার অর্ক্য হয় না ৯৮০ ৪ ৩ ৪

শ্বিক্তর ভাষ্যা ম। সংবাদেনাদিতারশ্বনি প্রত্যাব্যাতে প্রভাবনা, চল্লবনি প্রশালয় প্রতিপেদে গার্গ্য। ব এবাদোঁ চল্লে বননি চৈকঃ প্রথম ভোজা কর্তা চেতি পূর্ব বিশেষণাই। বছন বহান, পাওবং ওলং বাদো করা, নোহরং পভরবানাঃ, অপ শ্রীরহাৎ চল্লাভিয়ানি ন্যপ্রাণায়। সোমো রাজা চল্লঃ, কর্তালভূতোহভিমুনতে সভান্যকে। বজে, তাবেকীকুএতবেবাহং প্রজ্মে, কর্তালভূতোহভিমুনতে সভান্যকে। বজে, তাবেকীকুএতবেবাহং প্রজ্ঞান্য বিশ্বত প্রাহ্রহঃ সূত্য সোমোহভিমুতো ভবভি বজে, প্রস্তুত প্রকৃত্য স্থলাং সূত্য ভবভিবিকারে —উভরবিধ্যলাভূতান্যাবর্ত্য ভবভীতর্ত্য; স্বাহং চান্য ন কীয়ত স্বান্ধকোপানকন্য ৪৮০ ৪০ ৪

मूक्त आत्रक नाक्यांग्यादिकार्थः । वृ दक्यमः द्याक्यद्यय क्ष्मया पृक्षकः, किः कृ स्वाहि,
मयावर्गायवर्षवाविकारि—व्यक्तिकि । कः क्ष्मयमः मकायकः पृक्षिकः । वृक्षवर्षकः
कृ कार्याद्यद्यानातिकि वर्षः । यक्ष कृषातिकः —व्यक्ष्मित्रः वृक्षवर्षकः । वृक्षवर्षः । वृ

ক্রান্সান্ত্রাপে। কথেপক্ষনক্রে অলাতশক্র পূর্বোক্ত আহিত্যরন্ধের প্রত্যাধ্যান করিলে পর. পার্গ্য পুনন্ড চক্রমধ্যে অন্যবিধ ক্রন্ধ প্রতিপন্ন
হইলেন; তিনি বলিলেন—চল্লেও বনোষধ্যে অবিষ্ঠিত এই বে, একটি পুরুষ
পূর্ববিধ কর্ত্বর ভোক্ত্রাধি বিশেষভাবিশিত্র। রহন্—বহুৎ, (পাঙর
তর্নবর্ণ, বানঃ—আছাদন বাহার, তিনি পাঙরবাসাঃ; লল হইতেছে
চক্রাতিযানী প্রাণের শরীর; [এই জন্য প্রাণকে 'পাঙরবাসা বলা হইরাছে];
নোম রাজা (বাঁতিমান্) চক্র; বে সোম লতা বলে অভিন্তুত (সংস্কৃত্র)
হইরা থাকে, তাহার সহিত এক করিরা অর্থাৎ সোমলতা ও সোমনামক
চক্র, এই উভরকেই এক অভিন্তরণে প্রহণ করিরা আনি প্রস্করণে উপাসনা
করিরা বাকি। বে ব্যক্তি বংগাক্ত গুণসন্দার উক্ত পুরুষের উপাসনা করে,
প্রত্যহ তাহার বল্লে সোমলতা অভিনিক্ত হয়, এবং বিকৃতি বল্লেও উত্তররূপে সোমাতিব্য সুম্পন্ন হর, অর্থাৎ প্রকৃতি ও বিকৃতি উভরবিধ বজাস্থ্রাবেই
তাহার শক্তিমাত হইরা থাকে; সেই অল্লান্থক প্রয়োপাসক্রের পর ক্ষরক।
কর্ম প্রাপ্ত হর নাও ৮০। ০

স হোৰাচ পাৰ্গো। য এবানে বিদ্যান্তি পুক্লবঃ, এতথেৰাহং অক্ষোপাগ ই:ত, স হোৰাচাঞ্চাতশক্তপা বৈতস্থিব সংব্দিষ্ঠ-

⁽⁾⁾ ७१०गरी---वारिष्ठा २०म व्यत्पका इञ्चनका विकार वह, अवेश्वय स्वापनायाय व्यास, स्वरं स्वापनायिक व्यक्तार अवास्य १०६० व्यक्तिक व्यत्यका "हुर-" स्वा व्यवस्था

⁽२) कारणवेः मावावनकः सङ्कि क विकृष्टिकार यस विक्रितः स्य म्यक्ष वरक्ष मयक वरक्षाकिकाम नृष्याकृत्यकारम कविक बारवः, स्य वयक वृक्षक वरक 'सङ्कि', व्यःव स्य मयक वरक वरक्षकिकाम नृष्युद्धारम कावक या करेवा व्यवस्थ कविक व्यक्तिकाम व्यक्तिस्यक कवा वरक वर्षा वर्षेकारकः, स्य मयक वृक्षक वरक 'विकृष्टिः।

वरका द्वादामकात भावादि नरकात मण्यायन कविरक एक, दबहुँ- नाकावर क्षाक्रपर वर्गाक्रपर । वर्गा प्रदेश वादक ।

वृश्यातगरकाशनिवर् ।

ভেক্ষীতি বা অহনেতমুপাস ইতি; স ব এতবেবৰুপাছে ভেক্ষীত ভৰতি, ভেক্ষিনী হাস্ত প্ৰজা ভৰতি ॥ ৮৪ ॥ ৪ ॥

ज्यक्काव्यं: [भूनक] नः भानीः देशह ह यः अव जानी विद्यादि (विद्यादिवानी) भूक्यः, जदः अदः (भूक्यः) अव उत्त देशां हेण ; नः ज्ञाद्याद्यात्र ह देशह—अद्याद्य (विद्यादभूक्यः) या या नःवित्रिः ; जदम् अदः 'दिवादी' हेलि देव देभारन हेलि । नः यः अदः अय्य देभारव, नः (क्ष्यवी द द्यादा) अव्यक्ति (नविद्या) (द्यादानी ह [अय] द्यादा । नविद्या) (द्यादानी ह [अय] द्यादा । नविद्या । भूक्ष्यः] ३ ৮०३० ॥

মুলা-মুল্রাদে ।—গার্গা প্রশ্ন বলিলেন—এই বে,বিছাছভিষানী প্রশ্ন, আমি ইহাকেই অন্তর্ভিতে উপাসনা করি। অঞ্জেশক বলিলেন—না—না— এরপ কথা বলিও না; আমি ইহাকে 'ডেম্ম্বী' বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি। বে লোক এইরপে ইহার উপাসনা করে, তিনি নিজেও ডেম্ম্বী হন। ৮৪।৪।

শাক্ষে ভালাক। তথা বিছাতি ৰচি ছবরে চৈকা কেবতা; ভেলাবীতি বিশেষণৰ; তথাতিং কলৰ—তেলাবী হ তথতি তেলাবিনী হাস্য প্রকাভবতি। বিছাতাং বহুৰস্যালীকরণাদাদ্দনি প্রজারাং চ কলবাহ্লাব্র ৮৪ র ব ॥

্টীক্ষা। সংবাদবোষেৰ চল্ডে রক্ষণাশি প্রভাগোতে সক্ষাধ্যবাহ—ক্ত্রেপ্রাক্ত। ১৭-বেকরুপানকানে কলমিভ্যাশভাহ—বিজ্ঞানিতি । ৮৪। ৪

ক্তাৰ্য্যান্ত্ৰাদে। দেইলপ বিহাতে – লগৰে এবং থকেও একই দেবতা অবস্থিত। 'তেলবী' পদ্দী পুৰুবের বিশেষণ ; উক্ত উপাসনার কল এই বে, জিনি ভেলবী হন, এবং তাহার প্রকাও (সন্তানও) তেলবী হইয়া থাকে। এথানে, বিহাতের বহুর বীকার করার তত্নাসনার কলস্বরূপ আত্মাতে অর্থাৎ উপাসকে এবং সন্তানেও তিয় তিয় ক্ষতিক হইল। ৮৪। ৪।

স হোৰাচ গাৰ্সো ব এবাৰমাকাণে পুরুষঃ, এতনেবাহং অক্ষোপাস ইতি, স হোৰাচালাতশক্রমা মৈতন্তিব সংবদিওাঃ ; পূর্বকরেকীজি বা অহনেতমূপাস ইতি, স ব এতনেবর্গান্তে. পঞ্চালঃ নাজান্মালোকাং প্রজোক্তিত ৪৮০৪০ ভাষ্ক ভাষা হৈ। সং গাগাঁঃ উবাচ হ—বং এব ভাং আভাবে পুরুষ, ভাষা এচৰ এব এম (এমবেন) উপানে ইতি। সং অভাতশক্তং উবাচ হ—এভ-বিন্ (আকাশপুরুষে) বা বা সংবছিচাঃ; ভাষা এতং পূর্বং (ব্যাপি) অপ্রবর্ত্তি (অক্সিংং) ইতি বৈ উপানে ইতি। সং বং এতং (আকাশপুরুষং) এবং উপান্তে, [সং উপানকঃ] প্রজন্ম (সন্তানেন পশুভিঃ [চ] পূর্ব্যতে (পূর্বো ভবতি); অসা (উপাসকসা) প্রজা অবাং গোকাং ন উম্বর্তিত ন বিজ্ঞি-ভতে ইতার্বং) ৪৮৫ ৪৫ ৪

অ্লান্ত্রাদ্ধ — সেই গার্গা বলিলেন— এই বে, আকাণাভিয়ানী পুরুব, আমি ইণাকে ব্রহ্মবৃদ্ধিতে উপাসনা করি: সেই অভাতশক্ত বলিলেন—না—না—আমাকে ইগা বলিবেন না; আমি ইগাকে বাগিক ও নিজিয় বলিয়া উপাসনা করি; যে লোক এইরপে ইয়ার উপাসনা করে, সে লোক কখনও সম্বান ও পশুসম্পাদে গ্রান হয় না, এবং এজগতে কখনও তাগার সম্বান বিয়েজ্য হয় না।। ৮২ ।। ৫॥

न्यास्त्रक्ष- ভाष्या घ्रा । उदा वाकात क्रशाकात क्रवत रेक्श त्वचा ; पूर्वम् वश्चवति रुठि तित्वववदम् ; पूर्वदित्ववक्रमविषम्—पूर्वारक अवदा प्रकृति ; वश्चवितित्ववक्रमम्—नामा वश्चात्राकार श्रवा ठेवर्डठ देठि, श्रवा महानाविद्यिति ।। ५० ।। ६०।

Dami uneffenneberafmerer ergente :

গ হোৰাচ গার্গে। য এবারং বারে পুরুষঃ, এডবেবারং ব্রেমোপাদ ইাড; স হোৰাচাজাতশক্রথা নৈতবিব সংব্দিষ্ঠাঃ, ইল্রে: বৈকু. ঠাহপরাজিতা দেনেতি বা অহমেত্রমুপাদ ইভি, স ন এডমেবসুপাতে, জিমুর্হাপরাজিমুর্তবভাজভন্যজারী র ৮২ ৪৬ সঞ্জাবারঃ। সংপার্গাইবাচ হ—বং এব শবং বারো (বাব্ ভিবানী পুরুষঃ), শৃহং এতম্ এব ব্রহ্ম উপাদে ইতি; নঃ (এবমুক্তঃ) শ্বলাতশকঃ
উবাচ হ—এতসিন্ (বায়ুপুরুষে) মা মা সংবদিষ্ঠাঃ; শ্বহং এতং
(বায়ু-পুরুষং) ইক্তঃ (পরমৈশ্র্যান্) বৈকুঠঃ (কুঠারহিতঃ—শপ্রতিহতশক্তিঃ) শপরান্ধিতা (ন পরেঃ ন্ধিতপুর্মা) সেনা (সম্প্রিভূতা) ইতি বৈ
উপাদে ইতি; সঃ ষঃ এতম্ এবম্ উপান্ধে; [সঃ] নিকুঃ (ব্রম্পীনঃ)
শপরান্ধিকুঃ (বিকেত্রহিতঃ) শন্যতন্ত্যনায়ী (শন্যতন্ত্যানাং শন্যতঃ
শাস্তানাং শক্রণাং বর্শীনঃ চ) ভবতি ॥ ৮৬ ॥ ৬ ॥

জ্বানু আদে।—সেই গার্গ্য পুনশ্চ বলিলেন—এই যে, বায়্অভিমানী পুরুষ, ইহাকেই আমি ত্রন্নাবৃদ্ধিতে উপাসনা করিয়া
থাকি; অজাভশক্র বলিলেন—না—না—এবিষয়ে কথা বলিবেন না;
আমি ইহাকে ইন্দ্র (পরমৈখর্যাশালী) বৈকুঠ (অপ্রভিহতশক্তি) ও
অক্সের অপরাজিতা সেনা (সমষ্টিভূত) বলিয়া উপাসনা করিয়া
থাকি; অস্তও যে লোক উক্তপ্রকারে ইহার উপাসনা করে; সে
লোকও জয়শীল, পরের অপরাক্ষেয় এবং শক্রজ্যী হয়। ৮৬ । ৬।

শাক্ষর ভাষ্য হা। তথা বায়ে প্রাণে হলি চৈকা দেবতা; তস্যা বিশেষণম্—ইন্ধঃ পরমেশরঃ, বৈকুঠঃ অপ্রসহঃ, ন পরৈর্জিতপূর্বা অপরাজিতা, সেনা—মকতাং গণরপ্রসিদ্ধেঃ। উপাসনফলমণি—জিফুর্র জয়নশীলঃ, অপরাজিফুঃ ন চ পরৈজিতবভাবো ভবতি, অন্যতন্ত্যালায়ী অন্যতন্ত্যানাং সপন্নানাং জন্মনশীলো ভবতি ॥ ৮৬॥ ৬॥

টীকা। কৰ্মকলিন্ ৰামাৰপ্রাজিত। সেনেতি গুণা স্বৰ্ভি, ভ্যাই—মক্কিড়া মিডি। বিশেষপ্রয়ত্ত ক্লেড্রং, ক্রেব ব্যুৎপাদয়তি –জিফ্ট্রেড্যাদিমা। স্বত্ত-ভ্যানায়ন্তভোষাভূতে। কাভানায় ১৮০। ১

ভাষ্যান্দ্রাদে । সেইরপ বায়তে—প্রাণেতে এবং হৃদয়মধ্যেও একই দৈবতা; তাহার বিশেষণ—ইন্দ্র অর্থাৎ পরমেশর (উৎকৃষ্ট ঐশর্যসম্পন্ন), বৈকৃষ্ঠ অর্থাৎ অপরের অনভিত্যনীয় এবং অপরাজিতা অর্থাৎ শক্র বাহাকে কথনও লব্ন করিতে পারে নাই, এমন সেনা; কারণ, বায়ুর গণত্ব (সমষ্টিতাব) প্রসিদ্ধ আছে, [তরিবন্ধন বায়ুসমষ্টিকে সেনা বলা হইয়াছে]। উপাসনারও ফল এই বে, তিনি জিফু অর্থাৎ জয়শীল, অপরাজিফু—অক্তর্ক্ত অপরাজিত—পরাজিত না হওবাই তাহার বতাব, এবং অক্তন্ত্যকারী—ক্তন্তার—শক্রপণের জয়কারী হন ॥৮০ ॥ ০॥

স হোৰাচ গার্গ্যে য এবারময়ে পুরুষং, এতমেৰাহং ব্রেরাপাস ইতি; স হোৰাচাঞ্চাতশক্র্যা মৈতন্মিন সংবণিষ্ঠাঃ; বিষাসহিরিতি বা অহমেতমুপাস ইতি, স য এতনেবমুপাত্তে, বিষাসহিহ ভবতি, বিষাসহিহ ক্রি প্রকা ভবতি ॥ ৮৭॥ ৭॥

সম্ভালাহা:—সং পার্গাঃ উবাচ হ—বং এব সরস্থা পুরুষ, সহং এতম্ এব ব্রম্ম উপাদে ইতি; সং স্পলাতশক্তঃ উবাচ হ—এতদিন্ (স্থাতিবানিনি পুরুষে) মা মা সংবদিষ্ঠাঃ; স্বহম্ এতং বিবাসহিঃ (স্থাই মং হবিঃ বিভাতে ক্ষিপাতে, তৎ ভনীকরণেন সহতে ইতি বিবাসহিঃ ', ইতি বৈ উপাদে ইতি; সং যং এতম্ এবম্ উপাত্তে, সং বিবাসহিঃ ভবতি, স্বস্য প্রস্থা (সৃত্তিঃ চ) বিবাসহিঃ ভবতি ॥ ৮৭ ॥ १॥

মূলান্যবাদে।—সেই গার্গ্য বলিলেন—এই বে, অগ্নিন্থ পুরুষ, ইহাকেই আমি ব্রহ্ম বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি; অলাভদক্রে বলিলেন—না না—এ বিষয়ে সংবাদ করিবেন না; আমি ইহাকে 'বিবাসহি' বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি। যে লোক উক্তপ্রকারে ইহার উপাসনা করেন, তিনি নিজেও বিবাসহি হন, এবং তাহার সম্ভানও বিবাসহি হয়। 'বিবাসহি' অর্থ—অগ্নিতে প্রক্রিপ্ত হবিঃ প্রভৃতিকে যিনি সহ্য করেন, অর্থাৎ ভন্মাভূত করিয়া থাকেন ॥৮৭॥৭॥

न्ना क का का का का विश्व कि का प्रतिका कि का कि का प्रतिका कि का कि का

টীকা। বছৰিৰ্নিবাভে দিপাতে, তং সৰ্ন্ধং ভদ্মীকরণেৰ সহতে, তেৰাৱিৰ্নিবাসিং। বৰা পূৰ্বাং বিছাতাং বাহল্যাহানৰি প্ৰবাহাং চ ক্লবাহল্যানুকং, তথাগ্ৰাপানীৰাং বহনদ্বাহ্পা-সক্তাদ্বনি প্ৰবাহাং গাঁওায়িকং সিধাতীভাং —অস্থ্ৰীতি। ৮৭। ৭ ।

ক্তাম্প্রান্দ্র। স্বরিতে বাগিজিরে ও হদরে একই দেবতা; তাহার বিশেষণ—'বিষাসহি'; বিষাসহি স্বর্ধ—পরের প্রতি স্বয়াশীল। পূর্বের ক্যুস: এখানেও স্বরির বহুদ্ব নিবন্ধন ফলের বাহুল্য উক্ত হইল ॥ ৮৭॥ १॥

দ হোৰাচ গাৰ্গ্যে য এবায়মপদ্ পুরুষ:, এতমেবাহং ত্রেছা-

পাদ ইতি, দ হোবাচালাডশক্রন্মা মৈডলিন্ সংবদিষ্ঠাঃ, প্রতিরূপ ইতি বা অহমেডমুগাদ ইতি, দ য এতমেবমুগান্তে, প্রতিরূপথহৈবৈনমুপগচ্ছতি নাপ্রতিরূপমধ্যে প্রতিরূপোংশ্যা
জ্ঞানতে ॥ ৮৮ ॥ ৮ ॥

স্মানাথ — সং পার্গাঃ উবাচ হ— যং এব অরং অপ (অলের — কলাভিনানী) পুরুষা, অহং এতম্ এব ত্রন্ধ উপাসে ইতি; সং অলাভশক্রঃ উবাচ হ—এতখিন্ (কলাভিমানিনি পুরুষে । মা সংবিদিলাঃ; অহম্ এতং এভিরূপ ইতি বৈ উপাসে ইতি; সং যং এতম্ এবম্ উপাত্তে, প্রতিরূপং (অকুকুলং রূপং) এব এনং (উপাসকং) উপপদ্ধতি, অপ্রতিরূপং ন; অবো (অপি) অখাৎ (উপাসকাৎ) প্রতিরূপং (অকুরুপং এব) কারতে, (ন ডুবিরূপঃ) ॥ ৮৮॥ ৮॥

মুলা-মুবাদে। – দেই গার্গা বলিলেন — এই যে জলাভিমানী
পুরুষ, ইহাকেই আমি একা বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি;
আহাতশক্র বলিলেন — না না, এবিষয়ে সংবাদ করিবেন না; আমি
ইহাকে প্রভিক্রপ [আগ্রামুক্তপ] বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি;
অপরও যে ব্যক্তি এইরূপ ইহার উপাসনা করে, প্রভিক্রপ অর্থাৎ
অমুকৃল বিষয়ই ভাহাকে প্রাপ্ত হয়, কখনও স্প্রভিক্রপ প্রাপ্ত হয়
না, এবং ইহা হইতে অমুকৃল বিষয়ই সংঘটিত হয় ॥ ৮৮ ॥ ৮॥

স্থাক্র ভাষ্য । অপুরেরণি কদি চৈকা দেবতা; তম্বা বিশেষণ্য—প্রতিরপঃ অনুরপঃ প্রতিম্বাপ্রতিকৃদ ইতার্যা। ফলম্—প্রতিরপং ক্রিম্বিশাসনামূরপ্রেব এনমূপ্যক্তি প্রাগ্রেতি, ন বিপরীত্য ; অক্ত— অস্থাবিধ এবোপ্লায়তে । ৮৮ । ৮ ।

টীকা। এতিরপদং এতিকুলম্বিটোডগাবেরগতি—আনুকাপ ইডি। অভচ্চ কলবিভি সম্বয়। অসাম্বাসিম্বিটার্থ:। তথাবিহ ক্রিডায়ক্ল ইভি বাবং।৮৮।৮

ভাষ্যাব্দুবাদে। ধনে ওকে ও নদরে একই দেবতা খবছিত; ভাষার বিশেষণ—প্রতিরূপ; প্রতিরূপ খর্থ—অক্তরপ খর্থাৎ প্রতি ও শ্বভিশাল্লের খবিরুদ্ধ। ইহার ফল এই বে, প্রতিরূপ খর্থাৎ প্রতি ও শ্বাটি-শাল্লোক্ত শাসনের অক্তরণ ফলই প্রাপ্ত হয়, কর্মণ্ড বিপরীত প্রাপ্ত হয় না;

विजीदतांक्याना-व्ययम् वाचनम्।

না; পৰিকল্প ভাষার নিকট হইতে ভাচুৰ পুরুষ্ট উৎপন্ন হইরা বাকে ১৮৮ ৪৮ ৪

স হোৰাচ পাৰ্গো য এবায়বাদর্শে পুরুষঃ, এভবেবাহং ব্রেলোপাস ইভি, স হোবাচাঞাতশক্রপা মৈতস্থিন সংবদিষ্ঠাঃ; রোচিফুরিভি বা অনমেতমুপাস ইভি; স য এভবেবমুপাতে, রোচিফুর্ছ ভবভি, রোচিফুর্ছাক্ত প্রজা ভবভি, অথাে বৈঃ দ্রিগছেভি সর্কাব স্তানভিরোচতে ॥ ৮৯ ॥ ৯ ॥

उन्हाला थं: - तः तार्गाः उताह ह—यः अत जतः जावर्त (जावर्नत्राः वक् नावितायः निवासं । त्रावितायः । वक् अत विवासं । त्रावितायः । वक् अत विवासं । त्रावित्रां । त्रावित्रां । त्रावित्रां । विवासं । विवासं

শ্বনান্দ্রাদে। সেই গার্গা বলিলেন—এই বে, দর্পণাদিখিত পুরুষ, ইহাকেই আমি ব্রন্ধ বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি; সেই অকাডশক্র বলিলেন—না না—এই বিষয়ে সংবাদ করিবেন না; আমি ইহাকে বোচিষ্ণু (দীপ্রিশীল) বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি; বে বাক্তি উক্তপ্রকারে ইহার উপাসনা করিয়া থাকে, সে নিক্তেও রোচিষ্ণু হইয়া থাকে, এবং ভাহার সন্তানও রোচিষ্ণু হর, অধিকত্ত সে বাক্তি বাহাদের সহিত সন্মিলিভ হয়, ভাহাদের সকলের অপেকা অধিক দীপ্রিসম্পন্ন হয় ॥ ৮৯ ॥ ৯ ।

ল্পাক্ত ক্রাক্ত্যকা। আদর্শে প্রসাদস্তাবে চান্তর বড়্পারে), হার্থে চ সমত্তিস্থাতাব্যে চ একা দেবতা; তক্তা বিশেষণম্—রোচিক্র হীতিসভাবঃ; ক্লক্ত তবেব; রোচনাধারবাহনাাৎ ক্লবাহলাব্য ৮৯ ৪ ৯ ৪

ঠিকা: বার্চে চেরোচবের শরৈছি – লাজেডি। সর্বাক্তিবের বিশেষক বের-ডেডি বিশেষকা স্ববাহত। তথের রোচিন্ত্রিভার্ব:। ৮১।১ ভাষ্যা-সু-আদে। খাবর্ণে (বর্ণণে) এবং খভাবনির্থণ বঞ্চাপ্রকৃতিতে খার বিশুদ্ধ সম্প্রধান ব্যবহেও একই বেবতা খবছিত;
ভাষার 'বিশেবণ —রোচিকু; রোচিকু খর্ব—বভাবনিত্ব দীর্থিমান্; কলও
ভাষার ভবস্করণই; খীরির আশ্রেরবাহন্য নিবন্ধন উপাসনা-কলেরও বাহন্য
উপ্ত ক্রন ৪৮০৪০৪

স হোৰাচ গাৰ্গে। য এৰায়ং যস্তং পশ্চাক্সকোষ্ণুদেভি, এতমেৰাহং অক্ষোপাদ ইতি, সহোবাচাঞ্চাতশক্ত-শ্মা মৈতশ্মিন্ সংবদিষ্ঠাঃ,অহ্মবিতি বা অহমেতমুপাদ ইতি, স য এতমেৰমুপাতে সর্বাহ হৈবাশ্মিকাক আয়ুরেভি, নৈনং পুরা কালাৎ প্রাণে। কহাতি ॥১০॥১০।।

স্বাভার্থ-সং পার্গাঃ উবাচ হ—য়য়ং (পদ্ধরং) পুরুষং অয়্
(লক্ষ্টীকৃত্য) পশ্চাৎ (পশ্চাভ্রাপে) যং এব অয়ং শলঃ উদেতি (উলগছতি),
আহং এতন্ (শলং) এব এন উপানে ইতি; সং অলাতনকঃ উবাচ হ—
এতনিন্ (বংলাকে শলে) যা যা সংবলিষ্ঠাঃ; অহং পুনঃ এতং অস্থঃ
(প্রাণঃ) ইতি বৈ উপানে ইতি; সং বং এতন্ এবন্ উপান্তে, [সং
উপাসকঃ] অনিন্ লোকে সর্কন্ এব আয়ুং (সম্পূর্ণন্ আয়ুং—বর্ষণ্ডন্) এতি
(প্রাপ্রোতি), প্রাণঃ কালাৎ (কর্মন্নতোগান্থপ্তাৎ সময়াৎ) পুরা
(আপ্রে) এনং (উপাসকং) ন জহাতি (পরিত্যলতি), (নাসে অকালে
বিশ্বকে ইত্যর্থঃ)। ১০ ৪ ১০ ৪

অনুলালুবাদে ।—প্নদ্দ গাগ্য বলিলেন—মামুৰ গমন করিবার সমর তাহার পশ্চাতে এই বে. শব্দ উথিত হয়, আমি তাহাকেই বশ্দবৃদ্ধিতে উপাসনা করিয়া থাকি; এ কথা শুনিরা অলাডলক্ষ বলিলেন—না—না—এ বিষয়ে সংবাদ করিবেন না; আমি
ইহাকে 'লফ্' (প্রাণ) বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি; বে ব্যক্তি
এইয়াপে ইহার উপাসনা করে, সে ব্যক্তি ইহলোকে সম্পূর্ণ আর্
লাভ করে, এবং কর্মতোগ শেষ হইবার পূর্বেব প্রাণ তাহাকে ত্যাস
করে না ৪ ২০ ৪ ২০ ৪

ञ्याकाका क्यांच्याच्य्। वदा शक्यका व अवाहर मया शकार गृहेत्कार-

विकीरतार गातः --दावनर कांपानन्।

म्राचि, जशायक बीननरक्षः वानः, करवनीक्ष्णारः ; जक्षः वानः, जीवन-रस्त्रिकि जनः, कण कनव् नर्सनाद्दित्व (लाटक वक्षीकि—नर्याभाकः कर्यना जाद्रः, कर्यकनभविष्दितकानारः भूता भूतिः रवानाविकिः श्रीकानानम्भानः वाराम मधाकि ॥ ३० ॥ ३० ॥

টীকা। আংগ্ডেব্যাহবিভ্যাণীতি শেষঃ। তত্ত গুণংগুণাননভেত্তাই। দর্মবাস্থু-মিড্যেত্যান্টে—যুগ্ধানা ক্রমিডিয় । ১০ । ১০

ভাল্যান্ত্রাদ্ ।—গবনকারীর পশ্চাতে এই বে শব উবিত হয়, সেই শব এবং লীবনের হেতৃত্ত অধ্যান্ত্রাণ, এই উতরকে এক করিয়া এবানে 'শব' বলা হইরাছে; অনু অর্থ—প্রাণ, 'লীবনহেতৃ' কবাটী ভাহার তথ (বিশেবণ); ইহলোকে সম্পূর্ণ আহু লাভ করা ভাহার কল; প্রাভন কর্মান্ত্রারে বে পরিষাণ আহু লাভ করিরাছে, কর্মকলান্ত্রায়ী সেই পরিবিত আহুছালের পূর্ব্বে রোগাদি ছারা পীভাবান হইলেও প্রাণ ভাহাকে পরিভাগি করে না ৪২০ ৪২০ ৪

স হোৰাচ গাৰ্গ্যো য এবায়ং দিকু পুরুষঃ, এতমেবাহং ত্রেলা-পাস ইতি, স হোবাচাজাতশক্রেশ্মা মৈতন্মিন্ সংবদিষ্ঠাঃ, বিতীয়োহনপগ ইতি বা অহমেতনুপাস ইতি, স ব এতমেব-মুপান্তে, বিতীয়বান্ হ ভবতি, নাম্মাদ্যণশ্ছিদ্যতে ১৯:॥১১॥

স্কালাথ: । – সং পার্গ্য: উবাচ হ—বং এব জাং দিছু পুরুষা, পাছং এতব্ (বিগতিযানিপুরুষং) এব এক উপাসে ইতি ; সং জ্জাত্দক্র: উবাচ হ— এতবিন্ (দিক্পুরুষে) বা বা সংবহিষ্ঠা: ; জহন্ এতং বিতীয়: জন-পগঃ (জ্বিবুক্তবতাবং) ইতি বৈ উপাসে ইতি ; সং বং এতব্ এবন্ (ব্যোজ্ঞ গুণবোপেন) উপান্তে, [সং] বিতীয়বান্ (স্বিতীয়ঃ) ভ্বতি, জ্জাৎ (ইবং প্রাণ্য) পণঃ (ব্যপং) ন জ্জিভতে (বিজ্জেং জ্জাবং ন প্রাধ্যোতি) ৪ > ১ ৪ > ৪

ভালানু আদে। লেই গাগা পুনশ্চ বলিলেন—এই বে, দিক্সমূহে অভিমানা পুরুষ, ইহাকেই আমি ব্রক্তরণে উপাসনা করিরা
থাকি; অভাতনক বলিলেন—না—না—এ বিষয়ে সংবাদ করিবেন
না পানি ইহাকে বিভার ও অনপগ অর্থাং অবিষ্কৃত্যভাব বলিরা
উপাসনা করিরা থাকি; বে কোন লোক উক্তপ্রভাৱে ইহার উপা-

সনা করে, সে ব্যক্তিও বিভীয়বান্ (সংগ্রহ্ক) হয়, কখনও ভাষার অগণ-বিচেত্দ হয় না ৪৯১ ৪ ১১ ৪

স্পাক্তর ভাষ্যক। দিকু কর্ণরোঃ দ্বদি চৈকা দেবতা অখিনো দেবাববিষ্ক্তসভাবে ; গুণগুত বিতীয়বহুম, অনপগঙ্গ অবিষ্ক্ততা চাক্তোংক্তম্, দিশামখিনোকৈবংধর্মিহাং ; তদেব চ ফলম্পাসকত্ত—গণা-বিক্তেলে বিতীয়বহুক ॥ ১১॥ ১১॥

্ট্ৰীকা। কা প্ৰয়নবেকা বেৰকা, কৰাৰ—অস্থিনাংকৈতি। ওচ বেৰছেৰি বাৰং। বৰোজ্য কৰ্মমুশশাসমূচি—দিন্দামিকি। বিকীগ্ৰহা সাধুকুলাস্পিতি-বুজমুন্ত ১ ১ ১ ১

ভাল্য। নুতারে। দিক্সমুহে—কর্ণবাস ও দ্বার একই দেবতা;
সেই দেবতা হইতেছে অবিষ্ঠাবখাব অবিনী-কুমার্থয়; স্থিতীয়খাব
ও অনপগর অর্থাং পরন্দারের সহিত বিভিন্ন না হওরা ইহার ওব; কারণ,
দিক্সমূহ ও অবিনী-কুমার্থয়ের এইরপট বভাবসিদ্ধ ধর্মা; উপাসকও
তদক্রপ কলই লাভ করিয়া পাকেন, কখনও ভাহার বগণ-বিজ্ঞেদ হয়
না, এবং স্থিতীয়ভাবও নই হয় না, অর্থাং কখনও ভাহার সহায় বিজ্ঞেদ
ঘটে না ॥ ১১ ॥ ১১ ॥

স হোবাচ গার্গ্যে য এবাংং ছায়াময়ঃ পুরুষঃ, এতমেবাহং ব্রেক্সোপাস ইতি; স হোবাচাজাত ক্রেণ্ম মৈতন্মিন্ সংবদিষ্ঠাঃ, মৃত্যুব্রিতি ব। অহমেতমুপাস ইতি, স য এত্যেবমুপান্তে, সর্বাহ হৈবান্মি লোক আয়ুরেতি, নৈনং পুর কালান্মভুলোগভতি ।৯২।১২

স্কারনাথ: ।—স: পার্গা: উনাচ হ—য: এন অবং ছারামর: পুরুবং, অহং এতর্ এব ব্রন্ধ উপাসে ইতি; স: অভাতশক্র: উবাচ হ—এতবিন্ (ছারাপুরুবে) মা মা সংবদিষ্ঠা:; অবম্ এতং মৃত্যা: ইতি বৈ উপাসে ইতি; সঃ মঃ এতম্ এবং উপাতে, [সঃ] অবিন্ লোকে (অগতি) সর্কাং (সমগ্রং) আরুং এতি; কালাং (কর্মফলভোগাবজ্জিরাং কালাং) পুরা ; অগ্রে । মৃত্যাঃ এনং (উপাসকং) ন আগজ্জতি (ন প্রাপ্রোতি) ॥ ১২ ॥ ১২ ॥

ক্লান্দ্রাদে। গার্গা পুনরপি বলিলেন—এই যে ছায়াময় (ছায়াভিমানী) পুরুব, আমি ইছাকেই ব্রশ্বর্থিতে উপাধনা করিয়া থাকি; অভাডণক্র বলিলেন—না—না, এ বিষয়ে সংবাদ



করিবেন না; আমি ইহাকে মৃত্যু বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি; যে ব্যক্তি ইহাকে এইরপে উপাসনা করেন, ডিনি ইয়লোকে সম্পূর্ণ আয়ুং লাভ করেন, করনও নির্দ্ধিউ কালের পূর্বের মৃত্যু ইহাকে আক্রমণ করে না, অর্থাৎ সে ব্যক্তি অকালে মরে না ৪ ২ ৪ ১ ২ ৪

স্পাক্ষর ভাষ্য । ছারারাং বাবে তমনি স্থায়াং চাবরণায়কে
মজানে হলি চৈকা দেবতা; ততা বিশেষণম্—মৃত্যুঃ; ফলং দর্মং পূর্ববং;
মৃত্যোরনাগমনেন রোগাদিশীড়াতাবো বিশেষঃ ১২ ৪ ১২ ৪

্টীকা। শ্বরধোশানকথের ওবোরধোশানকভাশি কনবিভ্যাহ—ক্ষ্রকৃত্মিন্তি। কনভেবভাবে কথমুশানবংকর ভাবিভ্যাপ্তাভি – তুত্ত্যানিন্তি। ২২। .২

ভাষ্যানু বাদে — ছায়াতে খৰাং বহিঃদ্বিত খনকারে এবং দেহত্ব খাবরণান্ধক খঞানে ও দদতে একই দেবতা অবস্থিত আছেন; মৃত্যু শম্মী তাহার বিশেষণ; উপাদনার ফল সমন্তই পূর্মবং; কেবল বিশেষ এই বে, মৃত্যুর অমুপত্তিতে রোগাদিকনিত পীড়াও তাহার ঘটে না (১) ঃ ১২৪১২ ঃ

দ হোবাচ গার্গো য এবায়মান্ধনি পুরুষঃ, এতমেবাহং ব্রেলাপাদ ইতি, দ হোবাচাজাত ক্রমা নৈতস্থিন্ দংবদিষ্ঠাঃ, আল্লাইতি বা মহনেতন্পাদ ইতি,দ য এতনেবমুপাত্তে আল্লাই হ ভবত।াল্লাহিনা হাস্ত প্রভা ভবতি, দ হ ভূফৌমাদ গার্গাঃ ॥১৩॥১৩

ज्ञाह्म ज्ञार्थः — गः भागाः उतात ह— यः अत चत्रः चाचिन (क्षणाः भागाः) भूक्षः, चहः अत्र अत्र अव उच्च उभागः हितः गः च्याञ्चाकः उतात ह — अत्र वित् (चाच्याकृतः) या या गःतिष्ठाः ; चह्च अत्र चाच्ची (चाच्यान्) हेति देव उभागः हितः गः यः अत्र अत्र उभागः, [गः] चाच्ची (चाच्यान् वश्चाः अत्र वृद्धः) उत्ति ह ; — चन्न अवा क चाच्चिनी उति ह। गः (गार्गाः) [अत्र ज्ञाः] प्रकोष् चाम (चन्नर किम्र वक्ष्यान् वृत्वान् त्र वृत्वान् । इन्तेषः (अत्र विव्) ॥ ००॥ ॥ ००॥

(১) তাংশবা ৷—অভীত বলৰ ঞ্চিত্ৰ কৰেছ বহিত ইণাছ পৌৰক্ষা পথা পৃত্তি-হানাৰ্থ বাদিবেছেৰ বে, উপাননাৰ কলনত নামা বাদিনেও বিশেষ এই বে, নেবাৰে বলা ব্ৰত্তিকৈ—অভালে মুড্যু হয় না, ভিড বোগাৰি যাত্ৰা হইতে পাৰে; আৰু ইয়াত কল হইতেহে—উপান্তের অভাল মুড্যু ত হবই না, অধিকত্ব হোগাৰি যাত্ৰাও ভাষাত্ৰ হয় না ৫ অ্লাকু বানে ৷—গার্গ্য প্রশত বলিলেন—এই বে আত্বস্থ (বৃদ্ধিত্ব)
প্রথা, আমি ইহাকেই ব্রহ্মবৃদ্ধিতে উপাসনা করিয়া থাকি; অলাত শক্ত বলিলেন—না—না, এ বিবয়ে সংবাদ করিবেন না; আমি ইহাকে আত্বরী (আত্মবান্) বলিয়া উপাসনা করিয়া থাকি; যে ব্যক্তি যথোক্ত প্রকারে ইহার উপাসনা করেন, তিনিও আত্মবী (প্রশাভারা বনীকৃতার) হন, এবং ভাহার সম্ভানও প্রশন্তবৃদ্ধিসম্পন্ন হয়; গার্গ্য [ইহার পর] ভুকান্ড ভ ইইলেন । ১০। ১০।

শাক্ষর ভাষ্যাক। আছনি প্রভাগতে বৃদ্ধে চ দ্বাদ চৈকা দেবতা; ততাঃ আছবী আছবানিতি বিশেষণৰ; ফলষ্—আছবী হ— ভবতি আছবান্ ভবতি, আছবিনী হাত প্রজঃ তবতি, বৃদ্ধিবত্লভাং প্রকায়াং সম্পাদন্যিতি বিশেষঃ। বহং পরিফাত্রেইনবং ক্রমেণ প্রত্যাশ্যাতের ব্রহুষ্ঠ স্থার্গাঃ ক্ষাব্রদ্ধবিজ্ঞানে। প্রতিভাসমানোত্রভূকীয় স্বাক্শিরা আস্তঃ ১০ঃ

টীকা। বাজানি ব্ৰহ্ণাভ্ড সময়ং একোশখিশভি—প্ৰাল্পাকাটিত। আন্তৰ্য বজাৰকম্ব কলভাৰগাহিমার একামাং ভগভিবানমূচিভবিভ্যানভাহ— কুজীতি। ১০। ১০

ভাজ্যা পুরাদে — বায়াতে মর্থাৎ সমষ্টিবৃদ্ধিত্ত প্রজাপতিতে এবং ফ্রন্থে একই দেবতা অধিষ্ঠিত; তাজার বিশেবণ— আয়বী; আয়বী অর্থ— আয়বান, বায়ার আয়ে — বৃদ্ধি অবশে আসিবাছে; উপাসনার ফল—উপাসক আয়বী হয়—আয়বান মর্থাৎ আয়বগু হয়, এবং তায়ার সয়ানও আয়বী হয়; বৃদ্ধির সংবায় বাহলা বশ্তঃ সয়ানেও আয়বই ফল সম্পাদন করা অসম্ভব হয় না। পার্থা বপোক্তরুমে যে সমস্ত রক্ষের কথা বলিলেন, তৎসমস্ভই অজাতশক্রর পরিজ্ঞাত পাকায় ক্রমে প্রত্যাধ্যাত হইলে পর, পার্যোর বন্ধ-বিজ্ঞান নিংশের হইয়া গেল, তখন তিনি আর কোনও উত্তর দিতে সমর্থ হইলেন না, আবোমুর হইয়া চুপ করিয়া রহিলেন ॥ ২০॥ ১০॥

স হোবাচাক্সাতশক্ত রতাবন ০ ইতি, এতাবদ্ধীতি, নৈতাবতা বিদিতং ভবতীতি, স হোবাচ পার্গা উপ দ্বা যানীতি ।। ৯৪ । ১৪। স্বাক্তার্থা: [পার্গ্যে কুদ্ধীদুতে সতি] সং প্রদাতশক্তঃ উবাচ ব— গড়া-বং নু ! (এতাবদেব বদীয়ং ব্রহবিজ্ঞানব !) ইতি ; [পুতবাৎ বৈশ্যব] ; এব- भूकाः शानीः छवाह—] अछावर दि (अछावराय) [तम त्राविधानिविधार्यः]
देखि ; [छरक्षता अबाजनकः आह—] अछावछा (अछावत्राजविधानाम)
म विश्विष्ठर (विध्वाछर) छवछि [त्राव हेिछ (नवः] । [अवस्काः] ताः शानीः
छवाह र—वा (वार) छेनवानि (निश्वादान छेननास्त्रत्व) [अरुविछ (नवः]
देखि ॥ >८ ॥ >८ ॥

অন্তান্ত্রাদ্য। [গার্গ্য এইরপে নির্বাক্ ইইলে পর] সেই
অলাডশক্র গার্গ্যকৈ বলিলেন—এ পর্যান্তই ড! অর্থাৎ ডোমার
ব্রহ্মবিজ্ঞান এখানেই পরিসমাপ্ত ইইল কি ? [তহন্তবে গার্গ্য বলি-লেন]—ইা, এই পর্যান্তই, ইহার অধিক আর আমার জানা নাই;
অলাডশক্র বলিলেন—শুধু এইমাত্র জানেই ক্রন্থানিভার হয় না,
অর্থাৎ ডোমার যথোক্তপ্রকার বিজ্ঞানই ব্রহ্মজানে যথেষ্ট নহে;
সেই গার্গ্য বলিলেন—আমি শিশুভাবে আপনার আশ্রন্থ লইডে
ইচ্ছা করি॥ ১৪॥ ১৪॥

স্পাঞ্জ ভাষাম। তং তথাতৃত্যালকা গাগাং স হোবাচ ঘলাত-ৰক্ৰঃ—এতাবং নৃত ইতি, কিষেতাবন ব্ৰহ্ম নিজাতন্? আহোবিদ্ধিক-ষপান্তি । ইতি । ইতর আহ--এভাবতীতি । নৈতাবতা বিদিতেন ত্রন্ধ বিষিত্য खबढीजाह खबाठनकः-किमर्बर गर्सिटाश्ति "उक ट उवानैठि"। किस-ভাৰৰিদিতং বিদিত্যেৰ ন ভবতীত্বাচাতে ! ন. ফলব্ৰিক্সান্ত্ৰণাৎ ; नচাৰ্থ-বাদছমের বাক্যানামবগরং শকাষ্; অপূর্কবিধানপরাণি হি বাক্যানি প্রভূপা-म्यानिक निकारव-विकास मार्थिक कनानि नर्बा अनुरक्ष विक्रकानि ; वर्षवामरक अवस्त्रमञ्जूष । कथः वहि निका-বতা বিলিতং ভবতীতি ? নৈৰ দোৰঃ, অধিকৃতাপেক্ষাৎ—ব্ৰহোপদেশাৰ্থং হি ভশ্লৰৰে অভাতৰত্ৰৰে অমুধাত্ৰছবিদ্ গাৰ্গাঃ প্ৰবৃত্তঃ ; স বৃক্ত এব মুখ্যব্ৰছবিদা वकाछमक्रमा व्यवाजविष् त्रार्गा वकृष्-वय्षाः जव वक्तुः अहत्वय्, छत्र জানীৰ ইতি; বভুমুণাত্ৰস্ববিজ্ঞানমণি প্ৰত্যাখ্যায়েড, তথা "এতাবতা" ইতি ন জনাৎ, ন কিকিছ ভাতং দরেত্যেবং জনাৎ; তথায়বন্ধি এচাবন্ধি অবিদ্যা-বিবরে ব্রন্ধাণি; এতাববিজ্ঞানবারভাচ্চ পরব্রন্ধবিজ্ঞানক বৃক্তমেব বকুৰ্---নৈতাৰ্যতা বিশিষ্ঠং ভৰতীতি। অবিভাবিষয়ে বিজেয়কং নামন্ত্ৰপকশা-শ্বক্ৰকৈৰাং ভূতীৱেহ্বাৱে প্ৰদৰ্শিতৰ : তলাৎ "নৈতাৰতা বিভিতং ভৰতি"

ইতি ক্লবড়া পৰিকং বন্ধ আভব্যবস্তীতি ধর্ণিতং ভবতি। ভক্ত শঙ্গণায়ার ন বক্তব্যবিভ্যাচারবিধিজো গার্গ্যঃ বর্ষেবাহ—উপ বা বানীভি—উপপক্ষা-নীতি—বাদ, বধান্তঃ শিক্তো গুরুষ্ ১৪ ঃ ১৪ ঃ

তীকা। বিগৱার্থা মুকিভিভি কর্বান্ধ-ক্রিয়েন্তার্কান্তি। বাকার্থা ক্ষেত্র-ক্রানিক্যাং ক্ষরীন্ত নক্ষিমিন্ত্যান্তিমা। আবিভাবের্বিভিন্তনিবের প্রভিজ্ঞার বেজু-বার-মা, ক্রিয়েন্ত্রিনিন্তি। বৈভাবি বাকারি কর্পবিজ্ঞানগর্যার্থাবন্ধাবিভাগিল। নালেন্ত্রিনিন্ত্র। কর্বানিত্রি। কর্পবিজ্ঞানগর্যার্থাবন্ধাবিভাগিল। কর্পবিজ্ঞানগর্যার্থাবন্ধাবিভাগিল। কর্পবিজ্ঞানগর্যার্থাবিভাগিল। কর্পবিজ্ঞানগর্যার্থাবন্ধাবিভাগিল। কর্পবিজ্ঞানগর্মার্থাবিভাগিল। কর্পবিজ্ঞানগর্মার্থাবিভাগিল। কর্পবিজ্ঞানবিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডিনিত্রিভাগিল। কর্পবিজ্ঞানবিভাগিল। কর্পবিজ্ঞানবিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডালার্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডালার্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডালার্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডালার্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডালার্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডালার্ডিনিত্রিভাগিল। ক্রিয়াণ্ডালার্ডালার্ডালার্ডালার্ডালিত্রিলালার্ডালিত্রালিত্রিলালার্ডালিত্রিলালার্ডালিত্রিলালার্ডালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালার্লালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালার্লালার্লালিত্রালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিত্রিলালার্লালিলার্লালিত্রিলালার্লালিলার্লালিলার্লালিলার্লালিলার্লালিলার্লালিলার্লালিলার্লালিলার্লাল

"অৱশ্যেনাৰ গ্ৰহ্ম বাশ্যাল বিধীয়তে। অসুস্থা চ ওপ্ৰবা বাশ্যালন ওয়োঃ।। নামাণ্ডৰ ওয়ে নিবোৰ বাস্যাভাত্তিক বসেব"

Battelminiafaferin fe : >0 : 10

ভাজ্যাত্রাক্ বিদেশ প্রতাব উজ পার্গাকে তাদৃশ অবদাপর দেখিরা জিলাসা করিলেন—এতাবং নৃ ৩! এই পর্যান্তই কি তোমার
সম্পূর্ণ ব্রন্ধজান ? অধবা এতদতিরিক্ত আরও কিছু আছে ? গার্গা
বলিলেন—এই পর্যান্তই । অলাতশক্র বলিলেন, শুধু এই পর্যান্ত জানিলেই ত
ব্রন্ধকে লানা হয় না ; তবে কেন 'আমি তোমাকে ব্রন্ধোপদেশ দিব' বলিরা
পর্ম প্রকাশ করিতেছে । তাল, তুমি কি বলিতেছ যে, এই পর্যান্ত বিজ্ঞান,
বিজ্ঞানই নর ? না, সে কলা বলিতেছি না ; কেন না, উক্ত বিজ্ঞানসমূহেরও
পৃথক্ ফলপ্রতি রহিরাছে ; উক্ত ফলবোধক বাকাগুলিকে অর্থবাদ বা শুতিবাদ
বলিরাও গ্রহণ করা বাইতে পারে না ; কারণ, প্রত্যেক উপাসনার
উপদেশস্থলেই প্রবাণান্তরাবিজ্ঞাত বিষয়ের উপদেশে বাক্যের ভাৎপর্যী পরিলক্ষিত ইইতেছে, বধা—"অতিভাঃ সর্বোবাং ভূতানান্ন" ইত্যাদি ; উপ্রেশেন্ত্র

পদ্মণ পৃথকৃপুথক্ কলোৱেৰও সৰ্বতেই বেৰিতে পাওৱা বাহ; কিছ উক্ত বাক্য ভলিকে 'অৰ্থবাৰ' বলিলে এ সমভ বিবয় কৰমই সুসকত হইতে পাহে মা।

ভাল কথা; তাহা হইলে "নৈতাহতা বিভিন্ন তবভি" সর্বাহ ওপু এই পর্যান্ত বিজ্ঞানেই ত্রন্থ বিজ্ঞাত হন না; এই কথা সম্বত হয় কিছপে ? না, ইহাতে দোৰ হয় না ; কারণ; ইহা হইতেছে স্থান্তত-সাপেক কথা , স্পতিপ্রায় এই বে,গার্গ্য নিম্নে স্মুখ্য-ত্রন্থবিং—পর্যুক্ষজানরহিত হইরাও তত্র্যু স্থাত-শক্তকে ত্রন্ধোপদেশ দিতে প্রবৃত্ত হইরাছেন ; কাভেই বর্থার্থ ত্রন্থবিশারম্ব স্থাতালক সমুখ্যক্রন্থক পার্গ্যকে স্বন্ধই বলিতে পারেন বে, ভূমি স্থানাকে, বে মুখ্য ত্রন্থের উপদেশ দিতে প্রবৃত্ত হইরাছ, প্রকৃত পক্ষে ভূমি নিজেই তাহা জান না । স্থার এখানে বলি স্মুখ্য ব্রন্থবিজ্ঞানও প্রত্যাখ্যাত বা নিষিদ্ধ হইত, তাহা হইলে কখনই 'এতাবতা' বলিতেন না ; পরত্ত ভূমি কিছুই জাননা, এইরপই বলিতেন ; স্থতএব বৃত্তিতে হইবে, পার্গ্য, বে সম্বন্ধ ক্রন্থ নির্দেশ করিরাছেন ; স্থাবিজ্ঞানিকারে সে সমুখ্যও স্থাবাই ক্রন্ধশ্রেশীয়, এবং তাধিব্যুক্ত বিজ্ঞানও পরব্রন্থবিজ্ঞানের হার বা উপায় স্থান্ত ; স্থাত্রাং গুধু ইহা হারাই ক্রন্থ বিজ্ঞান লাত হয় না বলা বৃত্তিমুক্তই হইরাছে।

বিশেষতঃ এ সমন্তও বে. বিজের এবং নামরপ-কর্মান্তক, তাহা এই বৃহ্দদারণ্যকেরই তৃতীর অধ্যাবে প্রদর্শন করা হইরাছে; অতএব 'এই পর্যান্ত বিজ্ঞানদারা ব্রন্ধ জানা হয় না' বলিরা অভাতশক্র জানাইলেন বে, এতহতিরিজেও মুখ্য ব্রন্ধ জাতবা রহিরাছে। গার্গ্য দেখিলেন বে, অক্সসর অর্থাৎ শিক্ষতাবে উপস্থিত না হইলে তাহাকে ইহা বলা বাইতে পারে না; এই জন্ম তিনি নিজেই বলিলেন—অপর শিক্ষ বেরূপ গুরুর নিকট উপস্থিত হর, তত্রপ আমিও আপনার নিকট উপস্থিত হইতেছি; [অতএব আমাকে সেই জাতবা ব্রন্ধতর উপদেশ দিন] ॥২৪১১৪৪

দ (হাবাচাঞ্চাতশক্ত: প্রতিলাম: চৈতহ, বদ ব্রাক্ষণ:
ক্ষত্রিয়মুপেয়াদ—ব্রহ্ম মে বক্ষতীতি, বৌৰ ছা অসমিয়ামীতি,
তং পাণাবাদায়োত্তছোঁ, তৌ হ পুরুষত হস্তমাজগ্মভূ:, তমেতৈনর্মজিরামন্ত্রাঞ্জে—বুহন্ পাগুরবাদ: দোম রাজনিতি, দ নোত্তহোঁ, তং পাণিনাপেষং বোধয়াঞ্কার,দ হোতহোঁ ১২০০১০। স্কালা বৈ:। সং অবাতনকং উবাচ হ—প্রতিলোবং (বিপরীতং) চ এতং, বং প্রাক্তা—বে (বহুং) প্রদ্ধ বক্সতি ইতি [কুরা] ক্ষরিরং উপেরাং (শিক্সরতা উপাপক্ষেং); [অতঃ বং আচার্য্য এব তিওঁ; অহং] বা (বাং) ক্রপরিক্সানি (প্রদ্ধ উপদেক্সানি) এব ইতি; [এবন্ উক্তা] তং (পার্গ্যং) পাণী আচার (বজে ধুরা) উত্তো (উপিত্বান্)।

তে (গার্গাভাতশক্র) সৃধ্বং (নিছিতং) পুরুবং আজগ্মতুঃ ; তং (সৃধ্বং পুরুবং) এতৈঃ বজানাগৈঃ গার্গোটেজঃ রহরাদিনানভিঃ) আমন্তরাংচক্রে (আকারিতবান্) [অজাতশক্রঃ]—বহন্ পাওরবাসঃ সোম রাজন্ ইতি। সঃ (সুধ্বঃ পুরুবঃ) ন উত্তরে (ন উভিতঃ) ; পানিনঃ আপেবং (আপিক্ত আপিক্ত) বোধরাংচকার (বোধিতবান্) ; সঃ (সুধ্বঃ পুরুবঃ) উত্তরে হ ॥ ১৫॥ ১৫॥

ক্লা-ন্বাদে। সেই অজাতশক্ত বলিলেন—'ইনি আমাকে ব্যোপদেশ দিবেন' এইরপ মনে করিয়া ব্যাহ্মণ যে, ক্ষত্রিয়ের নিকট উপস্থিত হয়, ইহা প্রতিলোম অর্থাৎ আচারবিক্ষ; [যাহা হউক], আমি অবশুই ডোমাকে ব্রহ্মোপদেশ দিব; এই কথা বলিয়া ভাহাকে হস্তে ধারণ পূর্বক উথিত হইলেন; ভাহারা উভরে একজন স্থা পুরুষের সমীপে গমন করিলেন; সেই স্থা পুরুষকে গার্গোক্ত 'বে বৃহন্, পাণ্ডরবাসং, সোম, রাজন্' ইভাাদি নামে আহ্বান করিতে লাগিলেন, কিন্তু ভাচাতেও সে ভাগরিত হইল না; তথন হস্ত আরা পুনং পুনং ধাকা দিয়া জাগরিত করাইলেন, তথন সে উঠিল । ১৫ । ১৫ ।

শাক্তর-ভাক্তাক্র। দ গোবাচ মলাচদক্র:—প্রতিলামং বিপরীতকৈতং; কিং তৎ ? বং বাদ্ধণ উত্তর্যর্থ আচার্যাহেছবিক্তঃ সন্ ক্ষরিয়মনাচার্যাক্তাবন্ধ উপেরাং উপপদ্ধেং শিক্তর্ত্তা—ব্রদ্ধ যে বক্ষাতি ইতি; এতলাচারবিশাবের নিবিদ্ধন । তথাং তিওঁ বমাচার্যা এব নৈন্; লপরিয়াযোর দাবহন্, বিদ্ধিন ব্রদ্ধ বিদিতং তবতি, বতন্তাং বৃদ্ধ বেদান্ । তং গার্গাং সলক্ষরালক্য বিজ্ঞজননার পাণে হত্তে আদার গৃহীরা উত্তর্থ উবিতবান্ । তে বার্গালতনক্র পুরুবং স্থাং রাজগৃহ-প্রদেশে কচিদালগাড়া আগতোঁ। তং চ পুরুবং স্থাং প্রাণ্য এতৈন বিভিঃ—রহন্ পাওরবাসঃ সোৰ রাজন্—ইত্যেতঃ আবহুরাক্তে। এবদাবহ্যবাণেছিপি স স্থো

নোতছো। তমপ্রতির্থানানং পাণিনা আপেবং আপিরাণির বোধরাঞ্জার প্রতিবোধিতবান্; তেন স হ উত্তছো। তথাত্ বো পার্ণ্যোতিপ্রেতঃ, নাসা-বিন্ শরীরে কর্তা ভোক্তা ব্রম্বেতি। ১

कथर प्रतिषयनभगरि — युश्च प्रवायन- उर्मायना युवा देन भी भी जिल्य कर ज्वादा श्वा है। ज्वा है।

নমু স্বেছপি পুক্ৰে বিশিষ্টেন মিভিরামন্থিতো ভোজৈব প্রতিপথভঙ্গে, নাভোজা—ইভি নৈব নির্ণঃ ভালিভি; ন, নির্দ্ধারিভবিশেষরাত্ব
পার্গালিপ্রেতভ —বে৷ হি সত্যেন ছরঃ প্রাণ আছা অমৃতঃ বাগালিখনতামিতো নিয়োচংস্, ষভাপঃ শরীরং পাওরবাসাঃ, ষণ্ড অসপন্থরাং রুহন্,
বণ্ড সোমো রাজা বোড়শকলঃ, স অব্যাপারারড়ো ব্যানিজ্ঞান্ত এব
অনভ্যমিতবভাব আন্তে; ন চাজভ কন্তচিবাপোরভানিন্ কালে পার্মেণাভিপ্রেরতে তরিরোধিনঃ; তথাং অনামভিরামন্থিতেন প্রতিবোছবার;
ন চ প্রত্যব্যাত; তথাং পারিশেভাং গার্গাভিপ্রেতভাতোজ্বন্ বছলঃ তে

ভোক্ষভাবতে ভূলীতৈব বং বিষয় প্রাপ্তম্ ন হি দত্মভাষঃ
প্রকাশয়িত্বভাবঃ সন্বিহিঃ ত্ণোলপাদি দাছং ববিষয় প্রাপ্তং ন হহতি,
প্রকালঃ বা ন প্রকাশয়তি। ন চেৎ দহতি প্রকাশয়তি বা প্রাপ্তং বং
বিষয়ন, নাসে বিহ্নিটা প্রকাশয়িতা বেতি নিশ্চীয়তে; তথা অসে প্রাপ্তশ্বাদিবিধরোপদন্ বভাবতেৎ গাগাাতিপ্রেভঃ প্রাপঃ, রহন্ পাভরবাস
ইত্যেবমাদিশদং বং বিষয়মুপদভেত—খণা প্রাপ্তঃ ত্ণোলপাদি বহিনিহেৎ
প্রকাশয়েক্ত অবাভিচারেশ, তহং। তথাৎ প্রাপ্তানাং শ্বাদীনাম্ শ্বাভিবোধাদভোক্ষভাব ইতি নিশ্চীয়তে; ন হি মন্ত মঃ স্বভাবো নিশ্বিতঃ,
স তং ব্যভিচরতি ক্লাচিদপি; শতঃ দিছং প্রাণ্ডাভোক্ত মৃথ্। ৪

তীতি শৃণ্মণি সংবাধানানো বিশেষকো ন প্রতিগভতে; ভাবেননি রবমি-ভোবনার্থীনি বন নামানীতাগৃহীতসক্তরাং প্রাণো ন গৃহাতি সংবাধনার্থং শব্দ, ন ছবিজাভ্রাদেবেতি চেং; ন; দেবতাজ্যুপসনে অগ্রহণাত্মপদকে:। বস্ত হি চন্ত্রাভতিযানিনী কেবতা অধ্যাত্মং প্রাণো ভোজা অভ্যাপসমাতে, তম্ভ তয় সংবাবহারায় বিশেবনায়া সক্তেহিবতং গ্রহীতবাঃ; অক্তবা আহ্বানাদিবিবরে সংবাবহারোহত্মপদরঃ স্থাং।

ব্যতিরিক্তপক্ষেণি অপ্রতিপ্রেরবৃক্তমিতি চেং, —বস্ত চ প্রাণব্যতিরিক্তো ভোক্তা, তন্তাপি বৃহত্বিত্যাদিনামতিঃ সংখাধনে বৃহত্বাদিনামাং তলা তথিবহাৎ প্রতিপত্তিবৃক্তা, ন চ ক্লাচিদিনি বৃহত্বাদিনকৈঃ সংখাধিকঃ প্রতিপত্তাবানা বৃহতে। তথাং অকারণমভোক্ত হৈ সংখাধনাপ্রতিপত্তি-বিতি চেং; ন, ত্রত্তাবিলাক্রাভিমানাপ্রপপ্রেঃ; যক্ত প্রাণব্যতিরিক্তো ভোক্তা, সঃ প্রাণাদিকরণবান্ প্রাণী; তক্ত ন প্রাণদেবভামাক্রেছিমানঃ—বথা হতে; তথাং প্রাণ-নামসখোধনে কুংলাভিমানিনো বৃক্তবাপ্রতিপতিঃ; ন তু প্রাণক্তাসাধারণনামসংখোগে; দেবভাগ্রনাভিমানাচ আয়ুনঃ। ৬

শ্বনাৰ-প্রয়োগেইপাপ্রতিপরিদর্শনাদমুক্তনিতি চেং,—সুৰ্বস্থ বং লৌকিকং দেবদভাবি নাম, তেনাপি সংঘাধ্যমানঃ কলাচিং ন প্রতিপন্ততে সুৰ্ব্যঃ, তথা ভোক্তাপি সন্ প্রাণো ন প্রতিপন্তত ইতি চেং; ন; আন্ধ-প্রাণয়োঃ স্থাস্থ্যবিশেবোপপতেঃ; সুৰ্প্তহাং প্রাণগ্রন্তয়োপর তকরণ আন্ধা বং নাম প্রস্কামানম্পি ন প্রতিপন্তত; ন হুতং অস্থাস্থ প্রাণস্থ ভোক্তারে উপরতকরণতঃ সংঘাধনাগ্রহণং বা যুক্তম্ ।১

শ্রপদ্ধনাষতিঃ সংবাধনমন্কমিতি চেং,—সন্থি হি প্রাণবিষয়াণি প্রসিদ্ধানি প্রাণাদিনামানি; তারুপোঞ্জপ্রসিদ্ধের হ্রাদি-নামতিঃ সংঘাধনমন্ক্রম্, লৌকিক-রায়াপোহাৎ; তথাছোক্ত রেব সতঃ প্রাণস্থাপ্রতিপ্রিরিতি চেং; ন; দেবতাপ্রত্যাধ্যানার্বহাৎ; কেবলসংঘাধনমাত্রাপ্রতিপ্রক্রির শ্রপ্রসাধ্যান্ত্রিক প্রাণস্থাতোক্ত হে সিদ্ধে, মং চন্ত্রদেবতাবিষদ্ধৈন বিজ্ঞিং সংঘাধনম্, তৎ চন্ত্রদেবতা প্রাণোহিমন্ পরীরে ভোক্তেতি পার্গান্ত বিশেষপ্রতিপত্তিনিরাকরণার্থম্ব; ন হি তৎ লৌকিকনারা সংঘাধনে পক্যং কর্ম্ব। প্রাণপ্রত্যাধ্যানেনৈৰ প্রাণগ্রহাৎ করণান্তরাণাং প্রস্তাম্পশ্রেক্তিক বালাম্ব্রপ্রতির ; বেবতান্তরাভাবাক। ৮

नम् 'चिकाः' रेजाणासरीजात्वन वार्यन चनगरमन्जारवस्य सनिवस्तिकि

চেৎ; म; ভক্ত প্রাণ এবৈকরাজ্যপগরাৎ সর্বশ্রুতির অরনাভিনির্পনেন, "সভ্যেন জ্বরং" "প্রাণো বাংস্তর্" ইতি চ প্রাণবাক্তাভক্ত জনজ্যপগরা-ভোজ্য। "এব উ কেব সর্বে দেবাঃ, কতম একো বেবঃ ? ইতি , প্রাণঃ" ইভি চ সর্ববেধানাং প্রাণ এবৈকরোপণাধনাত ।৯

ভণা করণতেদেখনাশতা, দেহতেদেখিব স্বতিজ্ঞানেজ্ঞানিপ্রতিসন্ধানাস্থপ-পড়েঃ; ন হি অন্তদৃইশ্ অন্তঃ করতি জানাতি ইন্দ্রতি প্রতিসন্ধণাতি বা ; তথাৎ ন করণতেদ্বিবরা ভোক্ত রাশতা বিজ্ঞানযাত্রবিবরা বা কলাচিদপুলপস্ততে ৷>•

নপু স্পাত এবাস্থ তোক্তা। কিং ব্যতিবিক্তকল্পনেতি; ন; আপেবণে বিশেষদর্শনাং; বদি বি প্রাণশরীর-স্পাতবাত্রো তোক্তা ভাৎ, স্পাতমান্তাবিশেষাং স্থা আপিইছ অনাপিইছ চ প্রতিবাধে বিশেষা ন ভাৎ;
স্পাতবাতিরিক্তে তু পুনর্ভোক্তরি স্পাত-স্বছবিশেষানেকভাৎ পেবলাপেবদক্তাত-বেদনালাঃ স্থতঃধ্যোহমধ্যমাধ্যোত্তমকর্মকন্তেদোপপত্তেক বিশেষা
স্কাত্যাত্রে স্বছকর্মকন্তেদাপূপপত্তিবিশেষা মুক্তঃ। ১১

তথা শলাদিপটুমান্যাদিক তক। অন্তি চারং বিশেবং—বলাৎ শার্শবারে-ণাপ্রতিব্ধানানং পুরুষং স্থাং পাণিনা আপেবন্ আপিভাপিভ বোৰয়াঞ্চ-কার অজাতশক্রং, তলাং ব আপেবণেন প্রতিবৃত্ধে—অসল্লিব ক্রেন্তিব ক্তকিদাপত ইব পিওঞ্চ পূর্কবিপরীতং বোধচেটাকারবিশেবাদিববেন আপাদরন, গোংভোহতি গার্গ্যাতিষত্ত্রস্বতো ব্যতিরিক্ত ইতি সিছন্। ১২

সংহত্যাক্ত পারার্জ্যোপপতিঃ প্রাণস্ত ; গৃহস্ত জন্তাদিবং শরীরস্ত অবক্রপটস্থকঃ প্রাণঃ শরীরাদিতিঃ সংহত ইতাবোচাম—স্বনেধিবং চ, নাতিস্থানীর
এতবিন্ সর্ক্ষিতি চ ; তথাদ্গৃহাদিবং বাবরবসম্পার্কাতীয়-বাতিরিক্তার্বং
সংহত্ত ইত্যেব্যবস্থান ঃ ১০

ভত্ত জাতৃণকাঠা দিগৃহাবরবানাং বাস্ত্রজনোপচরাপচরবিনাশ-নাবাঞ্জি-কার্যাধর্মনিরপেকসমস্তাদি-তদিরবন্ত গৈত্যক্ বিজ্ঞান্তর্বনং ভৃট্য বজাবহে— তৎস্থাতত চ—তথা প্রাণাভবরবানাং তংস্থাতত চ বাস্ত্রজনোপচরা-প্রকর্মবিনাশ-নাবাঞ্জিকার্যাধর্মনিরপেকসমস্তাদি-তদিবরন্তই প্রোত্যক বিজ্ঞান্ত-র্বনং ভবিতৃস্থতীতি ৪ ১৪

দেবতাচেতনাৰৰে গ্ৰহাৎ গুণতাৰাংছণগৰ ইতি চেৎ,—প্ৰাণত বিশিটে-ন'বিভিন্নবন্ত্ৰণকৰ্পনাৎ চেতনাৰ্থৰজ্ঞাপগতৰ; চেতনাৰ্থে চ পাৱাৰ্থ্যোপগৰঃ স্বাৰ্থ্যপায় ইতি চেৎ; ম'নিকুপাধিকত ক্ষেণ্ড বিজ্ঞাপন্তিব্যং ১২৫ ক্রিরাকারকক্লাত্মকতা বি আত্মনো নামরপোণাবিজ্ঞনিতা অবিজ্ঞাব্যারোশিতা; তরিবিকো লোকত ক্রিরাকারকফলাতিমানলক্ষণঃ সংসারঃ;
স্ নিরুপাবিকাত্মকরপবিভরা নিবর্তরিতব্যঃ—ইতি তৎস্ক্রপবিজ্ঞিজাপরিবরা.
ইপনিবলারত্তঃ—"ত্রন্ম তে ত্রবাদি" "নৈতাবতা বিদিতং তবতি" ইতি চোপক্রম্যা
"ক্রতাব্যরে গ্রন্থত্বন্" ইতি চোপসংহারাৎ; নচ অতোহভদ্তরালে বিবক্ষিতমুক্তং বা অভি; তথাচনবস্ত্রঃ সম্বাদ্ধণতাবাল্পপম ইতি চোলতঃ ১৬

বিশেষকতো হি সোণাধিকত সংব্যবহারার্থে গুণগুণিভাবং, ন বিপরী-গুড়; নিরুণাথ্যে হি বিজ্ঞাপরিবিভঃ সর্ক্রামুপনিবদি, "স এব নেতি নেতি" ইত্যুপসংহারাং। তথাদাদিত্যাদিরশ্বভা এতেগ্যোহবিজ্ঞানময়েত্যো বিল্লেগোহস্তোহন্তি বিজ্ঞানময় ইত্যেতৎ সিদ্ধ ॥ ১৫ ৮ ১৫ ॥

নিকা। পাৰিতাাধিরকভো বিশেষবাধ যালিয়ারিত। আগত বাজিনবাবতৈব সংবোধনার্থ অব্ভানাত্রবণাবাংশবর্গানোরভাগোক্তবং নিবাডীতি কলিচনায়— ক্তব্যাদিকি।

ষ্ট্রণি আন্তিহং হিছা কথে পুরুষে বিবেশ্বর্থ গুলোরণারিগুর হ ভোটেন সংখাবিগ্র ব্যাবিগ্র ব্যাবিশ্র ব্যাবিশ্র

কাণভাগেত্বং ব্যভিবেশ্বাল নাগতি—ভোপুনুমান্ত শতিকি । ব চ পুরক্তে, ভবাবভাগেতি পের। উভবর্গং বৃহাত্তের শাহিতি —ন স্থীজ্যাদিনে। উলপং বারভূপর। বিশব্দে বোবনাং—ল স্থোদিনে। উভবর্গং নাজিশাহ—অ্যোসিনা। বাপভাগেত্বস্থান্থবিত -ক ম্যানিভি। বছশি বাণঃ বাণে প্রাণীয় বানি- र्पारक, क्यारिन (क्याक्यकारमा क्यापिक, त्यकाय-म श्रीकि । मरपायनप्योधननः मकानवार्थः ।»

ভত খনাবাঞ্চাং সম্বভাগনাত্ত, সানাম্বকৃত্যিতি শ্বতে—ল্ডোইনার্থিতি।
শ্বাবের বিশ্বরতি—ল্ডান্ডেল্ডিল্ডিলিনা। বেবভাগাঃ সম্বভাগনাত্ত্ব পর্বজ্ঞমানিল্লেল্ডান্স ক্রেন্ডেডি। ভবের প্রশ্বতি—মান্ত ব্রেডিলানিনা। ভরেতি
প্রস্বপর্ক্তিনির্দেশঃ। অবভাগিত প্রভাগস্পপ্রিমান—অন্তর্ক্তি। আনিশ্বের বাদস্বভিসম্বাহািন সৃহতে। সংবাবহাবােহিভিলাভাগপ্রসাবাবিং।

নিব্যুক্তি। নাগৃনীকা চোড়া নির্বোচন ছানিইছনাথি ছুলা ইছি শক্তে—ক্যক্তিনির্ব্যুক্তি। নাগৃনীকা চোড়া নির্বোচন মস্ত চেতি। ছবা সুব্ধিবশারা প্রকিগতিরু তেতি সবছা। ভবিবর্গাবিভাতিরিভারনিয়নগানিক নাবং। অভাবাতিরিভভাষন: সংবাধননকপ্রবণনিতি চেপ্রেভার — মৃচ্ ক্রুক্তাভিনিতি। ঘরিইছন্য সংবাধনশবাপ্রতিপ্রাবণি ভোড়বালানারজ্ঞাবাই। অভাতুতে প্রাণক্তে শেষা। বর্বা
হতঃ পাবেছর বিরিভাবিনাবোজা বৈলো বোডিইভি, নর্মবেরাভিনাবিত্রবাদ্দের ভবলাভিনানিয়াবের কংগ্রেইছিন: সর্মানার্যাকরানিয়াবপুনিয়ানীয়প্রাণনাত্রে ছবভাষান্তরানার্যাকরা, ন বচেরনগানিতি পরিহরতি— মৃত্যুক্তি ইতি। ছবের ভূইন্তি—
মুক্তোতি। প্রাণনাত্রে প্রাণিকরণনভাহিত্রানাভাবে কনিভ্নাল—ক্তন্মইনিতি
চল্লভাপি প্রবিশ্বরালভাবিতি নবোর্বে কুংলাকিনানী সংলাভিতি। অরাণাভূলাবিত্রবালপ্রেরিভাগিতাচি—মুর্ত্তিভি। বোর্বিক ভ্রাকিনা
স্কাভিনানসভবাজন্তরাবালাবিশি নাপ্রাণভাহি— ক্রেক্তেতি। বাণিইভারবা
স্কাভিনানার্যাক্রিনানভাবিত্রভাত রুইভুক্তবিনারকের ভববোরার ভূলাভেত্রর্থ।
ভিনিইভারবা
বেশভারানাথ্যবিভিনানাভাবিত্রভাত রুইভুক্তবিনারকের ভববোরার ভূলাভেত্রর্থ।

वाननावरकाविकाविकः नरवारवाद करक्वावन्, नावाक्वाविकि नकरक-वर्धः निरक्षिः। कर्षकः न्यादेशिकः क्षित्रविक्षः व्यक्तिकः विरक्षविकः विद्यविक्षः व्यक्तिकः विद्यविक्षः व्यक्तिकः विद्यविक्षः व्यक्तिकः। व्यक्षित्रवाद्याकः नरवाद्यविक्षः व्यक्तिकः। व्यक्ष्यः व्यक्तिकः। व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्ष्यः व्यवक्षः विवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः विवक्षः व्यवक्षः विवक्षः व्यवक्षः विवक्षः विवक्षः व्यवक्षः विवक्षः विवक्षः विवक्षः व्यवक्षः विवक्षः व

ভ্যোপক্তমবিয়োবং শব্দে নাজিছি। বলিওভাব্যের চাত্তমালের নাজীতি লেবং।
বভ্যো বেবচাভেলে নাজীত স্বাধ্যে ন্য স্তেই ক্রি। প্রাণে বেবচাভেন্টভেলে বৃত্তিনাই—অন্নর্যাক্ত্রীন্তি। স্ব বেবভাররত ভোক্তাং, গার্গাত বপকবিরোধারিতি শেষাঃ
সর্বাক্রভিনিকৃত্তিং, তাং সক্ষেপ্রের বর্ণারতি—এক ইক্রি। ততি বেবা বাজ বংলাভাবিন
সক্ষেপবিভয়ালাং সর্বোধারে বেবানাং প্রাণারতেবৈত্তমুগণান্ততে। অলো স্ব বেবভারাতিবের সভান্তান
ক্রীচার—ক্রইস্থোস্ট্রিতি। প্রাণাৎ প্রস্তুত্ত বেবভারাতিবের সভান্তান
পান্তেত প্রাণান্তবিধ্যান্তি। প্রাণাৎ প্রস্তুত্ত বেবভারাতিবের সভান্তান

করণাবাবভোজ্যে হেবরবনার—তত্ত্যক্তি। বেংকাকেবিধিবকি বাবং। অনাপরা ভোজ্যক্তি পেরঃ। ভরোকারবণারংবাক—দেকত্ত্ত্বেলিয়ত্ত্বিক্তি। ব বি
ব্যাদির্ এডাকং ভোজ্যং পরাকে। ২বঃ লোকবেকাবিবপি ন ভোজ্যাপরা বুরু।।
তেমু স্বভিক্রপক্ষাবভাষারা বোহনং লগকলাকঃ, ন পরং পুরোকীকাবিক্রভিন্নারক রাবোবাবিভাবিঃ। অনুসপ্তিবের স্ট্রভি—ন তাতি। ক্ষিক্রিন্ত নিরাময়ক বোর বাপ্রাহিশি মহিনকানায়ক্রবের প্রাক্তের।ই—ব্রিক্রান্সভি।>

জানানীনাধনান্তবৃদ্ধা বুলবেণক তবক পূর্ণাপকাত নাজিতি। নজাভো কৃতচতুইনসমানার বুলো বেণ ইতি যাবং। গৌনোধনং পঞানী গ্রানিজভাকেও ভজাবতস্থেটিনিজ চাবং। ধানালানানিজিক কলনা ন ব্লেডাব —াক্ষা আজিনিজ্জ্লিন্ত।
স্থানজভাকার বৃহতি —মাপেশ্রপ ইতি। বিশেষকর্ণির বাহিবেকবানা বিশ্ববৃতি—আজি
ইতি। কানেন সহিত্য বুলা পরীক্ষেত্র সজাভক্তরাজো ববি ভোলা ভাষিতি
বোজনা। কংগ্রেছণি করা পেরপাপেনগুরাকবালো বিশ্ববং ভাবিভ্যানভাকি —
স্থানিজ্জিত। জন্ত সজাভিন স্বর্জানেনা কর্মানভারিকব নাপানিপালালাকভ্যানিজ্জিত। জন্ত সজাভিন স্বর্জানিলাভার বন্ধানিবালালাক প্রান্তবিদ্ধানি বুলাক্ বিশ্ববাদ্ধানিক বিশ্ববাদ্

শ্বশর্ণনীবাং পটুর্যভিপটুরং বালাবভিবার।বিভোবনারিকা করে। বিশেষো বোষে
মৃক্ততে, নোহলি সজাভবারে ব সিবারী গ্রাহ—ক্তেপ্রেক্তি। অনুক ঠতি বাবং। চকারো
বিলেষাক্তববার্ত্ত। বা তবি প্রভিবোরে বিশেষো ভূমি গ্রাম্বভাব—অভি চেভি। বিলেষধর্মন-কলবার—ক্তম্মালিতি। আরিবকের ওবালি সৃক্তে। অক্তঃ সজ্যানিতি শেষঃ।১২

त्वरात्वत्रवाचवर्षां व्यावणावादाः (रषडव्याः — ज्यस्य चार्त्रप्रक्रिः। (रवृत्र नाववरि — मृद्धरम्भक्षः। वया त्वविववान् वियः नत्वत्वत्, ष्रोयय व्यावण नावविविज्ञार् — আন্তৰ্গনিস্মতেচাতি। তিং চ. থাংগ নাতিহানীয়ে সৰ্বাং স্বৰ্গতানিত প্ৰচাৰত, ভব্নুতং ডত সংহত্যবিভাগে—সাক্ষীতি। সংহত্যসম্মত-ত প্ৰাক্ষিতি।>০

ঝাণবেৰ গণাধাৰ্থানুষানং খাব্যন্ত্ৰবিক্তবিভি শক্তে—সৈত্ৰভেডি। আপনেৰ-ভালাভেডনম্বাৰ কৰমভূগণৰতং, ভতাৰ—প্ৰাণস্ভেডি। ভবাংশি অকুতেংস্থাৰে কৰা খাব্যন্তৰিব্যাৰ বিশ্বেশ কৰা বিশ্বেশ কৰিব কৰা নিৰ্দেশ্য কৰা বিশ্বেশ কৰিব কৰা নিৰ্দেশ্য কৰা বিশ্বেশ কৰিব কৰা নিৰ্দেশ্য কৰা বিশ্বেশ কৰা ব

হবেৰ পুটারি—ক্রিয়েড্যানিয়েনা। উপনিবৰারতো নিরুপাধিকং স্বরূপং জাসারিজু-বিভান প্রক্রাংশ—ক্রম্মেডি। বে বাব নাজনে। প্রশে বৃষ্ঠা দৈবাবৃষ্ঠা দেভাবিশব্দা মজানুপনিবলি নোপাধিকসপি এক বিবজিচনিত্যাপভাছে- না চ্ছেডি। বিশ্ববাদাক কলিজনিবছরবারেতি নেতাভি নির্বিশেষবন্ত্রস্বর্ণনাগডোঃভাষার্ডনিভি ভোজেনা নিরুপা-বিভানের বৃদ্ধ এতিশাভাবিতি ভাবঃ। শেবশেবিভাবভাগ্রতিপান্ততে কলিজনার— ভাল্যানিস্তি ।>৬

বিষর্থ্য १ বি শেষপেরিভারত হাত্রেভিন্ত আই — বিশেষ প্রস্তুত্র ইতি । বোদাবিষয় প্রথমেরিভারে বিবিশ্বনত হাত্রিভারত বিশেষকভারতিক সমর্থিকার ।
ব বিশ্বীভার বিষয়বিশ্বন প্রথমেরিভার হাত্রাহ—মিক্ষালারিভার বিশেষকভারতিক ।
ব্যবেশিকভারতে বিশ্বন্ত ইভার্য । পানিশেষবাভারিভারর্থ্য কালিশ্যোপ্রথম্ভতি—
আক্রিভারতার তি । ১৫ ।। ১৫ ।।

ভাষ্যাব্দু আকে। সেইখনাতনক বনিনেন—ইহা হইতেছে প্রতিলান পর্বাৎ সদাচারবিক্ষত ; ইহা কি ? উত্তৰ বৰ্ণ প্রাথণ পাচার্ব্য-কার্ব্যে পরি কারী হইরাও বে, খভাবতঃ খনাচার্ব্য (খাচার্ব্য কার্বে বাহার খনিকার নাই,) সেই খন্তিরের নিকট নিব্যরূপে 'ইনি খাষাকে প্রখোপদেশ দিবেন' বনিরা উপন্থিত হওরা ; খাচার-বিধারক শান্তে ইহা নিবিদ্ধ খাছে ; খতএব ভূবি খাচার্ব-রূপেই থাক, খানি নিশ্চর ভোষাকে সেই বিজের রূপ্য প্রথমের উপদেশ দিব, বাহা খবগত হইলে সেই বিজের রূপ্য প্রথমকে খানিতে পারিবে।

আভাজনক পার্বাদে সলক্ষ বৃদ্ধিত পারিরা ভাষার আধাসসম্পাধনার্থ ভাষার পাণিতে—হত্তে হত্ত বারণ পূর্কক পারোধান করিলেন। ভাষারা উভরে পার্বা ও অভাজনক নিলিত হইরা রাজভবনের অংশবিশেবে কোন এক পুশ্ধ পুরুবের সনীপে সনাগত হইলেন। সেই পুশু পুরুবের নিকট উপস্থিত হইরা পূর্বোক্ত রহন্, পাওরবাসঃ, সোম, রাজন্, এই সমত নামে আমন্ত্রণ (আহ্বাম) করিলেন; কিন্তু সেই পুশুরু এইরূপে আমন্ত্রিত হইরাও পারোধান করিল না। আগরিত হইভেছে না, দেখিরা তখন ভাষাকে হত্ত খারা বারংবার সকালন করিরা বোধিত (আগরিত) করিলেন; ভাষার ফলে সেই পুশু বাজি পারোধান করিল। ইহা হইতে বৃধা পেল বে, গার্গ্য বাহাকে কর্তা ভোজা বলিরা মনে করিরাছিলেন, প্রকৃতপক্ষে এই দেহমধ্যে ভাষা কথনই কর্তা ভোজা বন্ধ নহে।>

ভান, ইহা কি প্রকারে বুঝা বাইতেছে যে, সুপ্ত পুরুষের সমীপে গমন, এবং ভাহার সন্ধোধন (আছবান) ও অসুথান বারা গার্গ্যাভিপ্রেড ব্রন্ধের অব্রন্ধর বিজ্ঞাপিত হইন ? [উত্তর—] হাঁ, গার্গ্যাভিমত কর্যাভোজা ব্রন্ধ পুরুষ বেরূপ আর্মবন্থার ইন্মিরবর্গের সহিত সন্মিনিত, অজাতশক্রর অভিপ্রেড করণাধিপতি আত্মাও তক্রপ; রাজা বেমন ভূত্যবর্গের সন্নিহিত থাকে, তেমনি আত্মাও করণসন্নিহিত থাকে সত্য; কিন্তু বে অবস্থার গার্গ্যাভিপ্রেত ভূত্য স্থানীর আর অজাতশক্রর অভিপ্রেত আমিস্থানীয় আত্মার বে কারণে বিবেক বা পার্শক্য অবধারণ করা বাইতে পারে, তাহা দ্বির করা বার না; কারণ, তদবন্থার আত্মা ইন্মিরবর্গের সহিত সংকীর্ণ বা পরম্পর সন্মিনিত থাকে; অভিপ্রার এই বে, ভোজার বৈ ক্রই ঘ ভিন্ন কবনও দুশুর নাই, আর অভোজারও বে, কেবল দুশুর ব্যতীত ক্রই ঘ নাই, এই উত্রই জাগ্রদবন্থার পরম্পর সন্মিনিত থাকার পুথক্ করিরা প্রদর্শন করা অসম্ভব; এই জন্ত ভাহাদের স্বপ্ত পুরুষস্থীপে প্রন্ধ করা আবশ্রক হইরাছে ।২

ভাল কথা, সুপ্ত পুরুষেও বিশেষ নামে বাহার আলোন করা হইরাছে:
ভাহাতে যে ভোজা বলিয়াই বৃথিতে হইবে, অভোজা বলিয়া নহে, এরপ ভ
নির্ণর হইভে পারে না ; না,—এরপ আশভা হইতে পারে না ; কারণ, ইহা
ভারা গার্গ্যের অভিপ্রেড আত্মার স্বরূপগত বিশেষ ধর্মও অবধারিত হইরাছে,
—হাহা পুর্নোজ সভ্য-স্বায়ত প্রাণ আত্মা ও অনৃত্রম্বাচ্য, এবং বাক্প্রভৃতি
উল্লিখনর্ম অভ্যনিত বা নির্দ্যাপার হইলেও অনভ্যনিত বা স্ব্যাপার

থাকে, পাঙরবাস (বেতবন্ত বন্তপ) কল বাহার শরীর, জনগত্ন বা নির্বেক্ষ বলিরা বাহা 'রহৎ, এবং বাহা বোড়শ-কলাবিশিষ্ট সোমরাক চল্ল (বীধিনান্ত্রণ তাহা ত বীর ব্যাপার সম্পাদনে ব্যাপত থাকিরাও পূর্কবিজ্ঞানাত্মল অনন্তমিত বতাবেই বিভ্নান আছে; সে সময়ে পার্ন্য বে, ভবিক্রছ অন্ত কাহারও ব্যাপার বা ক্রিরাস্থ্রভানকে লক্ষ্য করিরাছেন, তাহাও নহে; অভ্যাব পার্ন্যাভিত্রেত আত্মাই বদি কেহবানী হইত, তাহা হইলে, ভাহার নাম বরিরা আজ্মান করার নিশ্চরই তাহার ভাগরিত হওরা উচিত ছিল; অবচ তাহাতেও সে লাগরিত হর নাই; অত্যাব বুকা বাইতেছে বে, পার্ন্যের অভি-প্রেত ক্রম্ম কর্মনই তোজা নহে। ত

পাৰ্গ্যাতিপ্ৰেত ব্ৰদ্ধ বভাৰতই তোক্তা হইত, তাহা হইলে নিক্তাই উপদ্বিত নিজের বিষয় তোপ করিত, অর্থাং ঐ সুমন্ত নামে আছুত হইয়া শবল্পই লাগরিত হইত; কেন না, বতাবতঃ লাহ ও প্রকাশকারী শল্পি जानमात्र मान जुनामि वन्न आह रहेता वन्न करत मा. किश्वा ध्वकाञ्ज বিষয়কে লাভ করিয়াও প্রকাশ করে না. এরপত কৰনও ছেবিতে পাওয়া বার मा : शकासरत व्यक्ति वित्त व-विवत श्राप्त हरेगां क्ष मा करत. किश्वा श्राप्ता ना करत, ठाहा हरेल अवश्रहे निकिठ हत त. अधि शहक अरह अवर প্রকাশকও নছে: সেইব্লপ, উপস্থিত শব্দাদি বিষয় ভোগ করাই বদি পার্গ্যা-ভিষত প্রাণের বভাব হইত, তাহা হইলে নিজের উপভোগা বিবর 'বৃহন্ পাওববাস:' ইত্যাদি শব্দগুলিকে অবশুই উপলব্ধি করিত: বছি বেত্রপ উপত্বিত তুণাদি বিষয়কে দম ও প্রকাশ করিরা খাকে, কর্মনও ভাষার ব্যতি-ক্রম করে না, তদ্রপ। অতএব উপস্থিত শক্ষাদি বিষয় প্রহণ না করার নিশ্চর হইতেছে বে, গার্গ্যাতিষত প্রাণ বতাবসিদ্ধ ভোজা নহে; কেননা, ৰাছার বাহা বভাব বলিরা অববারিত সে কথনও আপনার সেই বভাব অভিক্রম করে না, বা করিতে পারে না; অভএব ইহা হইডেও भागाजित्था श्रापत चलाक्षरे निष रहेन। 8

বদি বল, সংখাধনার্থ প্রবৃক্ত নামগুলির সহিত সক্ষ না হওয়ার স্থাও পুরুষের নিত্রা তল হর নাই, [কিন্তু তাহার অভ্যেক্ত দু নিবছন নহে], অভিপ্রার এই বে, বেষল একত্র উপবিষ্ট বছলোকের বধ্যে কোল এক অনের নাম ধরিরা ভাকিলেও 'এ ব্যক্তি আবাকে ভাকিতেতে' এইরুপ স্বন্ধ প্রহৃণ করিতে না পারার [বুকিতে না পারার] সংখাধানান ব্যক্তি विकास प्रम् भावता मानवाद मरवायम विन्ना वृत्तिरक भारत मा, रक्षिति विद्याल प्रम् भावता महिला मानवाद भावता विद्याल महिला मानवाद आवाद महिला मानवाद आवाद महिला म

আপতি বইতে পারে বে, ব্যতিরিক্ত পক্ষেও [প্রাণাতিরিক্ত ভোক্তা बीकाड शक्क । महारामनात्मत्र अक्षर मृक्तिविक्क स्टेट्टाइ - त अकाछ-শক্তৰ ৰভে প্ৰাণাভিবিক্ত পদাৰ্থ ই ভোক্তা, তাহার মতেও 'বহন' প্রকৃতি নামে স্বোধন করিবার পর, নেই তোজ বিবরেই প্রবৃক্ত 'রহন্' প্রকৃতি নাম डेनन्दि कहा छ छेठिछ ছिन ; चन्ठ छेळ 'इहन्' প্রভৃতি নামে সংখাদন ক্ষিলে ক্ৰমণ্ড ভাষা উপলব্ধি কয়িতে ৰেখা যায় না : অতএব সংখাধন শব্দ अस्य मा कहा कवनहै श्रालित चालाकुरकृत कात्र (क्रालकः हरेएठ शास्त्र मा। মা-এমুণ আগভিও হইতে পারে না; কারণ, স্র্রাতিমানীর একদেশ ্তথু क्षानबारत) अख्यान करां न तम ह दर ना, अवीर अजाहनक बाहारक ভোকা বনিয়া নির্দেশ করিয়াছেন, সেই আলা হটতেছে প্রাণপ্রকৃতি সময় বেহোপকরবের স্বামী-প্রাম্ব : কেবল প্রাণদেবতা মাত্রে তাহার মমনাতিমান নাই: বেষন দেহাবরব হতনাত্রে দেহীর অভিযান হর না, তেমনি: এই ৰভুই কেবল প্ৰাণনাৰে সংখাধন করায় সর্বাতিযালী আন্মার উপলব্ধি না হওরা বুক্তিস্কতই হইরাছে; কিন্তু গার্গাতিষত প্রাণের অসাধারণ বা মুখ্য নাম केकाइराक्त बानविक ना रक्षत्र किहुए है नक्ष्य बरेए हा ना ; विस्वरक्ष चाचार त्वरहालियान ना धाकार अ शत्क चारोक्तिक ठाउ चनर कारन ।१

বদি বল, নিজের নাম ধরিরা ডাকিলেও বধন সমর সমর অপ্রতিবোধ বা জাগরিত না হওরা দেবিতে পাওরা বার, তখন উক্তপ্রকার আগতি করা সঙ্গত বইতেছে না; অভিপ্রার এই বে, লোকপ্রসিদ্ধ বে, দেবদত প্রভৃতি নাম, त्म मान नाम गरिया मानामन करियान द्वाम महानामान कृत्य वार्ति वार्तिन रह मा, काम आन द्वाम रहेया गीय महानामान कृत्य वार्ति गारव हु मा;— व क्यांन रहेरक गारव मा; कामन, पामा के आहत प्राप्त प्राप्त क्यांन क्यांन रहेरक गारव मा; कामन, पामा के आहत प्राप्त क्यांन क्यांन रहेरा गारव क्यांन क्य

বদি বল, অপ্রসিদ্ধ নাবে সংবাধন করাটা বৃদ্ধিসকত হয় নাই; অর্থাৎ প্রাণবাচক প্রাণপ্রকৃতি বহুতর নাম রহিয়াছে; সে সমস্ত প্রসিদ্ধ নাম পরিভাগ করিয়া 'রহন্' প্রকৃতি অপ্রসিদ্ধ নামে সংবাধন করাটা বৃদ্ধিসকত হয় নাই; কারণ, ইহাতে লোকপ্রসিদ্ধ নিয়ম পরিভাগ করা হইয়াছে; অতঞ্জ বীকার করিতে হইবে বে, প্রাণ ভোক্তা হইলেও এই কারণেই ভাহার আগরণ হয় নাই। না, একবাও হইতে পারে না; কারণ, গার্ম্যাভিমত চল্লাছি দেবতার কর্ত্বয়াদি প্রত্যাব্যান করাই এই বাক্যের উদ্দেশ্ধ; অতিপ্রায় এই বে, সংবাধন-শব্দের অপ্রবণেই ত আধ্যাদ্ধিক প্রাণের অভ্যক্তম সিদ্ধ হইয়াছিল, ভগাণি বে, চল্ল-দেবতারাচক নাবে সংবাধন করা হইয়াছে, ভাহার একবাত্র ভাহাত আর লোকপ্রসিদ্ধ প্রাণবাচক নাবে সংবাধন করিলে স্কুস্পন্ন হইত না। এইয়ণে প্রাণের ভাক্তম প্রত্যাব্যান করাতেই প্রাণগ্রন্থ আণের বিলীন অপরাণর করণবর্গের ভোক্তমন্ত্রাবনাও পরিষ্ঠ হইয়াছে; বিশেষতঃ চল্লদেবতাভির অপর কোনও দেবভার ভোক্তম বীক্ত না হওয়াতেও এ পক্ষেত্রাক্তম্ব ব্যবহা উপপর এইতেছে না। ৮

বদি বল 'শতিষ্ঠাং' হইতে 'শাস্থবী' পর্ব্যন্ত ক্রতিবাক্যে বৰন বিশেষ বিশেষ গুণসম্পন্ন দেবতাবিশেষ প্রদর্শিত হইরাছে, তখন শার শন্তের ভোজ্যু সন্তাবদা নাই কেন ? না, সে কথাও বলিতে পার না ; কারণ, 'শর-নাভির' (রথচক্রের শলাকাধার রছে,র) দৃষ্টার বারা সমস্ত ক্রতিতে, প্রাণেই সমস্ত দেবতার একীভাব (বিলয়) বীকার করা হইরাছে; বিশেষতঃ 'সভ্যাবারা শার্ত' এবং 'প্রাণই একবাত্ত শমুত (বরণরহিত)' ইত্যাধি ক্রতিতেও व्यानाचित्रिक काकार नदावर बोक्ट दर मारे। 'रेरारे नर्मारवायस्य ; मिरे अकी स्वका (क १—व्यान,' अरे अंडिक्ट व्यानरे नर्मारवाय अक्ष वा नक्ट डेननाविट स्रेशाह। »

এইরপ বিভিন্ন দেহের ভার অপরাপর ইপ্রিরাদিতেও কোন আদহা হইতে পারে না; কেন না, তাহা হইতে শরণ, জান ও ইচ্ছাপ্রভৃতির অস্থসদান হইতে পারে না (>); কারণ, অভের দৃষ্ট পদার্থ অপর লোকে ক্ষনও শরণ, উপলব্ধি, কিংবা তথিবয়ে ইচ্ছা বা অন্থসদান করিতে সমর্থ হয় না; অতএব চক্তঃপ্রভৃতি ইপ্রির কিংবা ক্ষণিক জ্ঞান সম্বন্ধেও কথনই ভোক্তরানতা উৎপন্ন হইতে পারে না। >•

ভাল, তাহা হইলে দুক্তমান দেহ-স্ত্র্যাতই ভোক্তা হউক ? অতিরিক্ত্র জ্যোক্ত্য কল্পনা করিবার প্রয়োজন কি ? না; যেহেতু আপেষণে (হস্ত্র্যার স্কালনে) বিশেষ বা পার্থকা দেখিতে পাওয়া যায়; যদি এই প্রাণ ও পরীরস্মিত্তিই ভোক্তা হইত, তাহা হইলে যখন তাহার কোন অবস্থাতেই বৈলক্ষণ্য নাই, তখন পাণিপেষণ করুক বা নাই করুক, জাগরণ সম্বন্ধে কখনই বৈলক্ষণ্য হইতে পারে না; কিছু ভোক্তা যদি দেহস্ত্র্যাতের অতিরিক্ত হয়, তাহা হইলেই সেই ভোক্তার সহিত স্ত্র্যাতের সম্বন্ধণত বৈচিত্রা পাকায় পেষণ ও অপেষণক্তনিত বেদনার এবং স্থবত্থ ও মোহের উত্তমাধ্যতাব ও কর্মফলের প্রভেদ বলতঃ ঐরপ বোধণত বৈচিত্রা উপপত্র হইতে পারে; পক্ষান্তরে তথু দেহশংঘাতের সহিত পক্ষানির সম্বন্ধ ও কর্মফলের প্রভেদ হওয়া অসম্বন্ধ বিলয়াই জাগরণগত ঐপ্রকার প্রভেদ হওয়া যুক্তিযুক্ত হয় না। ১১

এইরপ, শকাদির মৃত্তীব্রাদিঞ্নিত প্রভেদ্ধ বর্তমান রহিয়াছে—বেহেতু

⁽১) ভাংগর্বা—ভিত্র ভিত্র বেহাবাছের বিভিন্ন ব্যক্তির বাবে বেরূপ একের মুট্ট প্রথবি অপরে প্রবন্ধ ইক্সা করিতে পারে না, ভদ্রপ চন্তুংগ্রন্থতি ভিন্ন টিল্র ইপ্রিয়র বা প্রবন্ধীয় বা বিশ্বাহন বেই ছক্ষ্প নই হইলা প্রের্থন বে ক্ষ্পান্ত বিশ্বাহন বিশ্বাহন

তথু স্পর্শনাতের সপ্রতিবৃদ্ধ স্থেপ্রাক্ষণকে স্থান্ত করিরা বারবার স্থান্ত করিরাছিলেন, সেই বেত্ই বৃধিতে হইবে বে, বাহা হত্ত-সঞ্চালনের ফলে প্রতিবৃদ্ধ হইরাছিল—বেন প্রস্থানিত হইরা, বেন স্ক্রিড হইরা, স্থানা স্থান প্রতিবৃদ্ধ ইরাছিল—বেন প্রস্থানিত হইরা, বেন স্ক্রিড ভাষারাজিগত কৈচিত্র্য-সমাবেশ বারা ছেহকে প্র্কবিপরীত (স্তেতনার্থান দেহকে চেতনাবিশিষ্ট) করিরাই বেন ভাগরিত হইরাছিল, সার্গ্যাভিষ্যত ব্রহ্ম-সমূহ হইতে সম্পূর্ণ পুরক্ তাদুশ একটা তোজার স্থান্তির সিদ্ধ হইন। ১২

অপিচ, সংহতৰ নিবন্ধনও পাৰ্ণ্যাতিমত প্ৰাণের পরার্থৰ বা পরাধীনৰ উপপদ্ম হইতেছে। গৃহের বিধারক জন্তানির কান্ত শরীরধারক অত্যন্তর প্রাণ্ঠ
বে, শরীরাদির সহিত সংহত বা স্থিলিত, একবা আমরা পূর্বেই বলিরাছি।
ইহার সংহতরপক্ষে 'অর-নেমি'ও অপর একটা দৃষ্টান্ত; কারণ, ক্ষতিও
বলিরাছেন 'রধচক্রের নাভিন্তানীর এই প্রাণেই সমন্ত নিহিত আছে'। অতএব
ইহা হইতে আমরা এইরপই বুকিতেছি বে. গৃহাদি বেরগ নিজের অবরবক্ত
অংশ সমূহের অতিরিক্ত অপর কাহারও জন্ত সংহত হইরা থাকে, তদ্রপ প্রাণ্ড
নিজের অবরব সমূদ্য হইতে পৃথগৃত্ত অপর কোনও বন্ধর অন্ত সন্থিতিত
হইরা আছে। ১৩

ত্তম্ব, কৃত্য, (তিন্তি , তৃণ, কার্চ প্রকৃতি গৃহাবর্ধ সমূহের করা, বৃদ্ধি, অপচর, বিনাশ, নাম, আফতি, কার্ব্য ও ধর্মের (মতাব বা ওণাদির) অপেকা না করিরা বাহারা করান্থিতি প্রকৃতি লাভ করিরা থাকে, দেখিতে পাওরা বার, সেই গৃহাদি সংহত পদার্থগুলিও তাদৃশ দ্রন্থী, শ্রোভা ও অকুতবিভার উদ্দেশ্রেই স্থিতিলাভ করিয়া থাকে; এতদর্শনে আমরা বেরুপ মনে করি, সেই গৃহাবর্ধসমূহের অবস্থাও তদমূরুপ; সেইপ্রকার প্রাণাদির অবর্ধ-সমূহের এবং তৎসমন্তিভূত পদার্থেরও এতদতিরিক্ত এমন কোনও অসংহত পদার্থের উদ্দেশ্রে সংহত হওরাই সমীচীন, ইহাদের কর্ম-নাশাদির সহিত বাহার কর্ম নাশাদির কোনও সম্বন্ধ নাই। (১) ৪ ১৪

বদি বল, দেবতার চৈতক বীকার করিলে গুণগত সাম্য থাকার তাহাদের মধ্যে আর গুণতাব অর্থাৎ অক্তের প্রতি তোগসাধনতা উপপন্ন

⁽১) ६ छारपदी—'मास्क'-धर्य—এकज्रिक—विनिष्ठ वा मावहर ; 'बहनाक्षिवर' वर्ष (हाकाह वर्षाष्ट्र विरक्षत्र वक्ष पनाका नव्रवह छात्र) मार्ट्यक मध्य प्रतीत्र म्यूनिक हरिहारक, এই क्षांक्रि प्रतीत-भवक वर्षकः शारवत्र मास्क्रद्रश्च प्रत्क माक्स्यहास

बरेंद्र शाद्य मा; चिकांत्र और दि, वित्यं वित्यं माय वित्रा मद्यायम् क्षात्र मिक्त्रदे आत्म्य दिकांत्र (मद्यायम् (मद्यायम्) चोकात्र कत्र स्टेशाद्यः चयन मद्यायम् चौक्र्य स्टेशाद्यः, क्ष्यं वित्र स्टेश्व दिन् व्याप्त स्वाप्त स्वयं प्रमाण्यम् वित्र क्ष्यं वित्र स्वयं विद्यायम् वित्र स्वयं वित्र स्वयं विद्यायम् वित्र स्वयं वित्र स्वयं विद्यायम् वित्र स्वयं वित्र स्वयं वित्र स्वयं विद्यायम् वित्र स्वयं व

শাষার বে, জিরা, কারক ও ফ্লাম্বকতা পর্বাৎ জিরা প্রকৃতির সহিত আ্যার বে সম্বন্ধ, তাহা হইতেছে নার-দ্রপায়ক উপাধিক্ষিত ; কাজেই সে সমন্ত পরিছা ধারা আরোপিত এবং সেই
ক্ষারোপই কীবদনের জিরা কারক ও ফ্লাতিবানাম্বক সংসারের
একষাত্র কারণ; সর্কোপাধিবিনির্গুক্ত আ্যাতব্ব-বিজ্ঞানম্বারা তাহার নির্বিত্ত
সাধন করিতে হইবে: সেই উদ্দেশ্রেই এই উপনিবদের প্রারন্ত হইরাছে;
কেন না, 'আমি তোমাকে ত্রন্তব্ব বলিব' এবং 'গুরু ইহাতেই ত্রন্থ
বিজ্ঞাত হন না' এইরপ বাক্যোপক্রম করিরা উপসংহারে বলা
হইরাছে বে, 'ক্ষরে অমৃতদ্ব বা মৃক্তির স্বরূপ এই পর্যান্তই'। উক্ত
উপক্রম ও উপসংহারের মধ্যে বে, ক্ষর্ত কোনও বিবর বিবন্ধিত (শ্রুতির
ক্ষাত্রপ্রত্র) বা উক্ত আছে, তাহাও নহে; ক্ষত্রের প্রাপ্ত উত্থাপন
ক্ষিরার স্কুরোগ প্রতিত্তি না। ১১৬

বিশেষ-ধর্মসম্পন্ন সোপাধিক বন্ধরই লোক-ব্যবহার-নিশান্তির অন্ত অণগুণিভাব (অঙ্গান্ধিভাব) হইয়া থাকে, কিন্তু তদিপরীত—

করিতেহেন, বিশেবতঃ প্রাণাশান্তি বাহু-পক্তের স্বস্তুত্ব বলিয়াও প্রাণের সংহতত মুখিতে পারা বার, সংহত প্রধান্তিই পরার্থ অর্থাৎ কেবল পরের ভোরসাবন করাই ভাষার প্ররোজন; ভত্তির বিজের কোনও প্রয়োজন নাই। বেবল বৃক্ত, লভা পূর অক্তি সংহত অর্থাৎ পরস্পরের বিলনে স্বই বস্তু-সকল বিজের কোন প্রয়োজন না বাক্তিকেও তেবল পরের উজ্জেত কল, পুলা; ছারা-ছান প্রস্তুত্তি প্রয়োজননিভিয় বিজিত বসিয়া আহে। একত জানি-জেই কণিনও "নংহত-পরার্থবার" এই সাংবা স্থারে বিংশত-ভাবে বলিয়াছেন বে, এই জনতে প্রস্তুত্তি বত কিছু সংহত পর্বাৎ সাবরৰ বন্ধ আহে, ভংগনভাই পরার্থ, পরের ভোগ সম্পানবাই সে "মুনারের। একমার উজ্জেত্ত্ব প্রভাগ্যর প্রাণের প্রভাগ্য ও ভারবজন পরার্থতা অক্ত্যার করা বাইতে পারে; ভার্যার কলে প্রাণের অভোক কই প্রয়াণিত রুইভেছে।

e38

নিক্লণাবিকের পক্ষে ভাষা সভব হর না; অববা সমস্ত উপনিক্ষের, নথ্য নিজ্য নীরূপাখ্য অর্থাৎ নির্মিশের ব্রক্তন্ত প্রতিপাধন করাই ক্রভির অভিপ্রেড; ভারণ, উপসংহারে 'সেই এই আলা ইহা নহে' ইত্যাদি বাক্যে নির্মিশেবের করাই উল্লিবিত হইরাছে। অভএব অবিজ্ঞানময় (অভ্যন্তার) বংগাক্ত আলিত্যাদি ব্রম্ভ হইতে সম্পূর্ণ বিপরীত অন্ত বিজ্ঞানময় আলারাই অভিন প্রমাণিত হইল ৪ ১৫ ৪ ১৫ ৪

স হোবাচাজাতশক্রথ বৈষ এতং হথোছত্থ ব এব বিজ্ঞান-মনঃ পুরুষঃ, কৈয় ভদাভূৎ, কৃত এতদাগাদিভি, তত্ন হ ন মেনে পার্সঃ । ৯৬।। ১৬।।

সাধানাথ:—সং অভাতনকং উবাচ হ—বং এবং বিজ্ঞানবরঃ
(বিজ্ঞানং বৃদ্ধিং, তৎপ্রধানদাৎ পুরুষং বিজ্ঞানবর উচ্যতে;) পুরুষং, এবং
বন্ধ (বিষিন্ধ কালে) এতৎ (বপনং বধা তাৎ তথা) সূবাং অভূৎ,
এবং তথা (তিনিন্ধ গ্রকানে) ক (কুত্র) অভূৎ (আসীং), কুতঃ
(কুত্রাৎ ছানাৎ বা) এতৎ (ভাগরণং বধা তাৎ, তথা) আগাৎ
(আগতঃ)? ইভি; [এবস্কঃ] গার্গঃ তৎ (অভাতনকপৃষ্ঠং) উন বেনে
(ম জাতবান্) হ (কিল্ । ১৬ । ১৬ ।

মুলান্দুবাদে। অধাতদক্র গার্গাকে বিজ্ঞাস। করিলেন—এই বে বিজ্ঞানময়—বৃদ্ধিপ্রধান পুরুব (আরা). ইনি বে সময় এইরপে নিজিত ছিলেন, তখন কোথায় ছিলেন, এবং কোখা হইভেই বা এইরপে আসিলেন ? গার্গা কিন্তু অঞ্জাতশক্রের বিজ্ঞাসিত এই বিষয় বৃষিতে পারিলেন না ৪ ৯৬ ৪ ১৬ ৪

স্পাক্তর ভাষ্যাত্ম। দ এবসভাতশক্রব্যতিরিক্তাদ্বাভিদং প্রতিপাভ পার্গ্যবাচ—বত্র বনিন্ কালে এবং বিজ্ঞানবরঃ পুরুবঃ এতং স্বপনং স্থাঃ অভ্থ প্রাক্ পাণিপের-প্রতিবোধাৎ; বিজ্ঞানং—বিজ্ঞারতেহনেবেত্যতঃ-করণং বৃদ্ধিরুচ্যতে, তল্পরঃ তৎ-প্রায়ো বিজ্ঞানবরঃ। কিং পুনভৎপ্রায়বর্ণ ভবিরুপ্রভাবন্, তেন চোপ্রভাবন্, উপ্রভুদ্ধ চ ॥ >

কুরং পুনর্বরটোংনেকার্থবে প্রারাথিতবাবগব্যতে ? "দ বা-জরবাদ্ধা বন্ধ বিজ্ঞানবরো বনোবরঃ" ইত্যেববাবে প্রারাথি এব প্ররোধ্বর্থনাৎ, পরবিজ্ঞান-বিকারস্বভাগ্রসিদ্ধবাদ, "ব এব বিজ্ঞানবয়ঃ" ইতি চ প্রসিদ্ধবন্ধ- वाबाष् चनत्रवाभवाव द्राफाळाज्ञवर्गः भावित्यकाः श्रीवाव देखवः छचाः नकत्रविकत्राकाचकवकःकत्रभवः, जन्नतः रेट्याजः , भूकवः भृति भवनाः ॥ २

কৈৰ তথা অভূদিতি প্ৰশ্নঃ বভাৰবিশিকাপন্নিৰন্না,—প্ৰাক্ প্ৰতিৰোধাৎ ক্ৰিয়াকান্নকক্ৰবিপন্নীত্ৰতাৰ আন্ত্ৰতি কাৰ্য্যাভাবেন দিন্দৰ্শনিবিতন্। ন হি প্ৰাক্ প্ৰতিবোধাৎ কৰ্মাদি-কাৰ্য্যঃ সুধাদি কিঞ্চন গৃহতে; ভৰাদকৰ্ম-প্ৰবুক্তৰাৎ তথাবাভাব্যমেবান্ধনোহ্বপন্যতে—যদিন্ স্বাভাব্যহ্ত্ৎ, ৰতন্ত্ৰ বাভাব্যাৎ প্ৰচ্যুতঃ সংসানী বভাববিদক্ষণ ইতি — এত্ৰিৰক্ষনা পৃক্তি পাৰ্ন্যঃ প্ৰতিভান-নহিতঃ বৃদ্বিবৃৎপাদনায় ॥ ৩ ॥

'কৈৰ তদাহত্ৎ কৃত এতদাগাৎ' ইত্যেতত্ত্বং গাঁগোঁগৈৰ প্ৰইবামানীৎ; তথাপি গাৰ্গােণ ন প্ৰথিতি নােদাত্তে অঞ্চলকঃ; বােধরিতব্য এবেতি প্ৰব-ৰ্জতে, আপরিক্যান্যেবেতি প্রতিজ্ঞাত্বাৎ। এবমনাে বাৃৎপাক্ষমানােহপি গার্গাঃ
—ব্রৈৰ আন্মাত্ৎ প্রাক্ প্রতিবােধাং, যত্ত এতদাগ্যনমাগাং—তত্ত্বং
ন বাৃৎপেদে বক্তুং বা প্রইং বা—গার্গােছ ন মেনে ন জ্ঞাতবান্ ॥ ১৬॥ ১৪॥

টীকা। বৃষ্ণবৃদ্ধানস্বয় প্রস্থান বাচটে জ এনমিস্তা দিনা। এচং খণনং বধা কবলি কবেনি বাবং। ব্যেকুলিং কানং বিশিন্ত – প্রালিডি। তনা লাজুনিভি নকর:। বিজ্ঞানম ইকাল বিজ্ঞানং পরা এবং ডিংকারে আবাজেন বিকারার্থে বছারিভি কেলিং, কারিনাকরার্ভি—নিজ্ঞানমিডি। অবংকরণপ্রাথবার্থনা ন প্রকরাজে, কলানকত কেনানকজানিকাজিপতি ক্রিং পুনানিজি। অনম প্রাণাাবিজ্ঞা বৃদ্ধানিকভাগ্যে তাবিহালি—উপনাক্র জং চেডি।

নিহাৰকাভাবং শক্তিয়া গৃহিবহাতি—ক্ষঞ্জিত্যাদিনা। একবিংহৰ বাংকা পৃথিবীয়া ইভ্যাবেশ আহাৰ্থবোশনভাবিজ্ঞানময় ইভ্যাবেশ ভাৰপ্ৰথমৰ বহুটো নিল্ডিবিজ্ঞানহানীৰ জীবক প্ৰমান্তভাবিজ্ঞানবিকাহন্ত প্ৰতিস্বাভ্যানতি বিজ্ঞানিত আহাৰ্থবাহন্তভাহ— প্ৰায়েক্তি। অপ্ৰতিভাগি বিজ্ঞানবিকাহন্ত ইতি প্ৰতিভাগিত্যাদিকালিতান্তভাহ কৰ্মনান্তভাৱিভাগিতান বিজ্ঞানবহুতৈ ইতি প্ৰতিভাগিত্যাদিকালিতান্তভাহ কৰ্মনান্তভাৱিভাগিতাৰ ৷ প্ৰথম প্ৰমান্তভাৱিভাগিতাৰ ভাৰতান্তভাহ কৰ্মনান্তভাৱিভাগিতাৰ ৷ প্ৰথম প্ৰমান্তভাৱিভাগিতাৰ প্ৰথম বিভাগিতান ক্ষমেন্তভাৱিভাগিতাৰ লাভ্যানিত লাভ্যানিত প্ৰথমিকালিতান ক্ষমেন্তভাৱিভাগিতাৰ ক্ষমেন্তভাৱিভাগিতান ক্ষমেন্তভাৱিভাগিত লিকালিত লাভ্যানিতিভাগিত লিকালিত লাভ্যানিতিভাগিত লিকালিত লাভ্যানিতিভাগিত লিকালিত লাভ্যানিতিভাগিত লিকালিত লাভ্যানিতিভাগিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লিকালিত লাভ্যানিত লাভ্যানিত

বত্রে রাণি বাবোর বাজাবেরর রাণি ভাংপর্বারাং—কৈন্ত ইন্তি। বরপ্রাপনার্থ বর্মানুভিরিভাত এন্টরভি—প্রালিতি। কার্যাভাবেরেড়াক বারভি নার্ক্রাভি। ভবাবিভাতার্থবাহ—অক্রর্মান্ত্রমুক্তানিন্তি। কিং ভবাবাভাবাবিভি, ভবাহ— মুদ্রিভি। ভিডিঃ বিভীননার্থ্য ব্যক্তিশিভি—মুক্তব্যক্তি। हें एक्ट्रिय व्यवस्तर्थागवि — व्यक्टिंग्स्डि । ज्याचाजास्यस्य व्यवस्थ । व्यक्टिंग्स्डि । ज्याचाजास्यस्य व्यक्टि । व्यक्टिंग्स्डि । व्यक्टिंग्स्डिंग्स्डि । व्यक्टिंग्स्डि । व्यक्टिंग्स्डिंग्स्टिंग्स्डिंग्स्डिंग्स्डिंग्स्डिंग्स्डिंग्स्डिंग्स्डिंग्स्डिंग्स्ड

ভাক্সান্দ্রবাদ্য। অভাতদক এইরপে প্রাণাতিরিক আদার অভিদ প্রতিপাদন করিয়া গার্গাকে বলিলেন—এই বিভানবর পূক্ষ বে সমরে পাণিপেবণে আগরিত হইবার পূর্বে এইরপে নিজিক ছিল, সে সমরে এই পূক্ষ কোবার ছিল ? বিভান-শব্দে এবানে ভানসাধন অক্তর্করণ বৃদ্ধি অভিহিত হইরাছে; বিভানমর অর্ধ—প্রায় তৎস্বরূপ! ভাল, 'তৎপ্রায়' (বিভানপ্রায়) শব্দের অর্ধ কি ? [উত্তর—] বৃদ্ধিতে উপলত্য, বৃদ্ধি দারা উপলত্য (উপলব্ধির বিবর) এবং বাহাকে বৃদ্ধি দারা জানা বার, ও বিনি বৃদ্ধির সাহাব্যে বিজের বিবর অবপত হন; এই কর পূক্ষকে বিভানপ্রায় বলা হয়। ১

জিলাসা করি, "মরট্" প্রত্যরের বহ শর্ম সবেও এবানে প্রারার্থির প্রহণ করা হইতেছে কেন ? (>) [উত্তর—] বেহেতু 'সেই এই বন্ধবন্ধপ আলা বিজ্ঞানময় ও মনোমর, ইত্যাদি ক্রতিতে প্রারার্থিই মরট্ প্রত্যারের প্রয়োগ দেখিতে পাওয়া বার; এবং পরবিজ্ঞানমন্ত্রপ আলার বিকার বা পরিণামও প্রসিদ্ধ নাই। বিশেষতঃ এবানে এই 'বিজ্ঞানমন্ত্র' শন্ধটীকে প্রসিদ্ধের স্থায় ব্যবহার করার এবং 'অবর্য' ও 'উপমা' শর্মেরও এবানে সম্ভব না বাকার, ফলেকলে শ্বনিষ্ট প্রারার্থেরই প্রহণ করিতে হইবে; শ্বত্রব বুলিতে হইবে বে, বিজ্ঞান শর্ম স্থানার প্রে (বুছিতে) শর্ম (শ্বহান) করে বিজ্ঞানমর'; সেই আলাই শ্বানার প্রে (বুছিতে) শর্ম (শ্বহান) করে বিজ্ঞান 'পুরুষ' শক্ষে শভিহিত হয়। ই

(>) ভাৎপর্য—বিভার, অবহব, প্রায় ও প্রচুর্বার্থে "বর্ত " প্রভারের বিবাব আছে; বেবন বুজিভার বিভার সুপ্রম, লোগের অবহব লোগের, অধির সমুশ্ব আহিবর, প্রাছর প্রম্ভর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রম্ভর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রম্ভর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রম্ভর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রম্ভর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রম্ভর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রম্ভর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রম্ভর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রাছর প্রমান প্রাছর প্রমান প্রাছর প্রমান প্রাছর প্রমান প্রমান প্রাছর প্রমান প্রমান প্রাছর প্রমান প্রমান

দে সময় এই পুরুষ কোষার ছিল ? এই প্ররেয় উদ্দেশ্ত—জাদ্বার প্রেক্ত শর্মণটা জাপন করা,—লাগরণের পূর্বে কোন প্রকার কার্যা না থাকার জাদ্বা বে, ক্রিয়া কারক ও কলের বিপরীত্যভাব, ইহা প্রবর্শন করাই উক্ত প্ররের অভিপ্রেত অর্থ ; কেননা, জাগরণের পূর্বে ক্রিয়াক্ত্র স্থাদি কোন কিছুই লক্ষিত হয় না ; অতএব কর্ম্ব-প্রযুক্ত বা কর্মাধীন নয় বলিয়া, উহাই আদ্বার প্রকৃত স্থভাব বলিয়া বুঝা বাইতেছে। তৎকালে যেরপ স্বভাবে ছিল, এবং বেরপ স্থভাব হইছে প্রচ্যুত হইয়া নিজের স্বভাব-বিপরীত সংসারধর্ম-সম্পন্ন হইয়াছে, ভাহা বুঝাইবার জন্তই, অপ্রতিত গার্গোর প্রকৃত জ্ঞানোৎপাদনার্থ এই বাক্যের অবভারণা করিতেছেন। ত

"ৰু এৰ তদা অভ্ং ?" এবং "কুতঃ এতদাগাং ?" এই ছুইচী প্ৰশ্ন করা গার্ম্যেরই উচিত ছিল সত্য, কিন্তু গার্ম্য তাহা করেন নাই; তথাপি অলাতশক্র উপেকা করিলেন না; এ বিষয়টা গার্ম্যকে অবস্তুই বুৰাইতে ছুইবে, এই বিবেচনায় তিনি নিজেই বুঝাইতে প্রব্নন্ত হুইলেন; কারণ, অলাতশক্র প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন—আমি অবস্তুই তোমাকে বুঝাইয়া দিব; তদকুসারে তিনি নিজেই প্রব্নন্ত হুইলেন। অলাতশক্র এইরূপ বুঝাইরা দিলেও পার্ম্য বুঝিতে পারিলেন না বে, এই পুরুব লাগরণের প্রে কোণার ছিল, এবং কোণা হুইতে আসিল,—এই ছুইটা বিষয় জিলাসা করিতে কিংবা প্রকাশ করিয়া বলিতে গার্ম্যের বুজিক্ষুর্তি ছুইল না। ১৬। ১৬।

স হোবাচাঙ্গাভশক্রথতিব এতং হুপ্তোহভূদ্ য এব বিজ্ঞানমরঃ পুরুষঃ, তদেষাং প্রাণানাং বিজ্ঞানেন বিজ্ঞানমাদায় য এবোহস্তম্ব দিয় আকাশন্ত সিপ্তেতে, তানি যদা গৃহ্লাত্যথ হৈতং পুরুষঃ
বিপতি নাম, তদগৃহীত এব প্রাণো ভবতি গৃহীতা বাক্ গৃহীতং
চক্ষ্পৃহীতত প্রোক্তং গৃহীতং মনঃ ॥ ৯৭॥ ১৭॥

क्र्याक्रार्थः। [विकाशिकार्यक्षरवाश्मात्र] गः चक्राक्रमकः [शार्ग्यः] क्रेवाच र—वः अवः विकासवतः शृक्षयः (जीवः), [गः] अवः वज (वित् कृष्णः) अक्षर (चश्मर ववा क्रार क्या) ज्यः चक्र, कर (क्या) [अवः] विकासम (चक्रक्षत्रशादीनवित्नवक्षासम गर) अवाः व्यागामाः (वाक्क्ष्णीमाः) বিজ্ঞানং (সম্ববিষয়গ্রহণসামর্থাং) জাদার (গৃহীয়া) বং এবং জান্তর্দরে (রদরজ্বরে) জাকাশঃ (জাকাশসভাবঃ পরঃ জাল্পা), ভিমিন্ (পরমাম্বনি) শেতে (বর্ততে); বদা (বিনিন্ কালে) ভানি (বাগাদিবিজ্ঞানানি) গৃহুটি (জাদতে), অং (ভদা) হ (এবৃ) পুরুষ্টা, এতং (বধা ভাৎ, ভখা) মপিতি (নাম মং রূপং জ্পীতি প্রাপ্রোতি ইতি বাংপভ্যা মপিতি-নারা প্রসিদ্ধা ভবতি), তং (ভদা মাপকালে) প্রাবঃ (মাপেক্রিরং) গৃহীতঃ (উপসংস্কৃতঃ) এব ভবতি, ভখা বান্ধ্ গৃহীতা, চক্ষ্ণং গৃহীতং, প্রোক্রং গৃহীতন্ব, মনঃ [চ] গৃহীতং [ভবতীতি শেষঃ , ভদা সর্ক্রেক্রির-ব্যাপারোপরমঃ ভবতীতি ভাবঃ] ॥ ১৭ ॥ ১৭ ॥

মুলানুবাদে। অন্নাতশক্র নিকেই গার্গাকে বলিলেন—এই
বিজ্ঞানময় পুরুষ, যে সময়ে এতদবন্ধায় স্থুও ছিল, সে সময়ে এই
পুরুষ অন্তঃকরণোংপর বিশেষজ্ঞানের সহিত বাগাদি ইন্দ্রির্মাতক্রান গ্রহণ করত, এই যে, ক্রন্য-মধাবর্তী আকাশ-পদবাচ্য পরমান্ধা,
তন্মধা অবন্ধান করে। এই পুরুষ যে সময়ে সেই বিজ্ঞানসমৃদর
গ্রহণ করে, সে সময়ে এইরূপে সীয় রূপ প্রাপ্ত হয় বলিয়া স্বপিতি
নামে প্রসিদ্ধি লাভ করে; সে সময় পুরুষকর্তৃক নিশ্চয়ই প্রাণ আিশেক্রিয় গৃহীত হয়, বাগিন্দ্রিয় গৃহীত হয়, চক্ষু গৃহীত হয়, শ্রবণেন্দ্রির
গৃহীত হয়, এবং মনও গৃহীত হয়। ১৭ ৪ ১৭ ৪

ক্ষাক্ষর ভাব্যাম।—স হোবাচ অলাতশক্রঃ বিবন্ধিতার্থসমর্পণার!
বারেব এতং মুপ্তোহভূং য এব বিজ্ঞানময়ঃ পুরুষঃ,—"কৈব তদা অভূং, কৃত
এতদাগাং ইতি বদপ্তাম, তং শৃগু উচ্যমানম্—যাবৈ এতং সুপ্তোহভূং,
তদা তদ্মিন্ কালে এবাং বাগাদীনাং প্রাণানাং বিজ্ঞানেন অন্তঃকরণগতাভিব্যক্তবিশেববিজ্ঞানেন উপাধিবভাবজনিতেন, আদায় বিজ্ঞানং বাগাদীনাং
ব্যবিষয়গতসামর্থ্যং গৃহীদা, ব এবং অন্তর্মাধ্যে হদরে হদয়ত্ত আকাশঃ—বঃ
আকাশশন্দেন পর এব ব আন্মোচ্যতে, তদ্মিন্ বে আন্মন্তাশে শেতে
বাভাবিকেহসাংসারিকে; ন কেবল আকাশ এব, প্রভাবরসামর্থ্যং—
"সূচা সোম্য তদা সম্পন্নো ভবতি" ইতি, নিলোপাধি-সম্বন্ধতং বিশেষাদ্ধস্কলপমূৎকৃত্য অবিশেষে স্বাভাবিকে আত্মন্তেব কেবলে হর্ছত ইত্যভিপ্রায়ঃ।>

বহা পরীরেজিরাধ্যকতার্থকতি, তরা অসৌ বাছনি বর্তত ইতি কর্মবর্ততে ? নাম-প্রসিদ্ধা; কাসৌ নামপ্রসিদ্ধিতিতাহ—তানি বাগাধি-বিজ্ঞানানি বহা বন্দিন্ কালে গৃত্তাতি আদতে, অব তরা হ এতৎ পুরুষ্ট ক্রমণিতিনাম এতরাম অস্ত পুরুষ্ঠ তরা প্রসিদ্ধা ভবতি; গৌণনেবাস্ত নাম তব্তি,—ব্যোদ্ধানমণীতি অপিগজ্জীতি ব্যাতীভাচাতে।২

সভাং বণিভীতিনাম-প্রসিদ্ধা আত্মনঃ সংগারণত্ম-বিগল্পং স্থপন্যস্বাতে,
নতু অন্ত বৃক্তিরভীত্যাশভাহ—তৎ তত্র বাগকালে গৃহীত এব প্রাণো তবতি,
প্রাণ ইতি আবেজিরন্, বাগাদিপ্রকরণাৎ; বাগাদিসকত্বে হি সতি তর্বপাধিবাদক্ত সংসারণবিধিং লক্ষাতে; বাগাদরক্ষোপসংগ্রতা এব তথা তেন;
কথব ? গৃহীতা বাক্, গৃহীতং চন্দুং, গৃহীতং লোত্রং, গৃহীতং মনঃ; ভত্মাদুপসংগ্রতেরু বাগাদিব্ ক্রিরাকারকফলাত্মতাতাবাৎ স্বাত্মন্থ এবাদ্ধা
তবতীত্যবন্যতে ৪৯৭ ৪ ১৭ ৪

টীকা- কৃষ্ণিবিক্তবোধ্যবাদা তথা ক্রিল্ডান্ত ব্যাহ্রার বছটো নাড়ীতি বিক্তিভাবর্ত্ত প্রকৃতিবাদ্য বছরং প্রন্থন্ত ন্যাহ্রান্ত । উপাধিনতাংকরণ, তল প্রার্থন্ত প্রান্থন্ত প্রান্থন্ত প্রান্থন্ত নাল্ডান্ত প্রান্থন্ত প্রান্থ প্রান্থন্ত প্রান্থন্ত প্রান্থন্ত প্রান্থন্ত প্রান্থন্ত প্রান্থ প্রান্থ প্রান্থন্ত প্রান্থন্ত প্রান্থ প্রান্থ প্রান্থন্ত প্রান্থন্ত প্রান্থন প্রান্থ প্রান্থ প্রান্থ প্রান্

ভাবি বনেভাবিবাকাবাকাজাপুর্ককবানতে—মদ্দেভাবিদিনা। বিজ্ঞাবানি ভববাধবানীভাভব। পুরুষ ইতি এববং বঠাবেঁততা বকাভি—আন্ত পুরুষ অনুক্রান্তি। ভাববাধিবারা বিশেববাধ—পোন্মেনেভি। গোনবং বৃহণান্তি—আন্ত ভব্দুবাভ নিয়েরেভি। নারোহর্ববাভিচাক্তাপি বৃইবার ভববাব খাপে অরপাবস্থানতি পভাবন্ত ভব্দুবাভ ইবেভাবি বাভানুবাণা বাতেই—জভ্যামভাবিদিনা। কা পুরবাদ্ধং বাপাবস্থানাবদ্ধং নাতিবরপেহবর্তাবিভার কৃতিবিধাকা ভবভি, ভলাক- আপাদীভি। ভবা স্থুপ্তাব্দ্ধাব্দুবাহি ভোলাকা হৈতভাভানেন কেতুনেভাবং। খাপে করণোপ্যবাহার বিশ্বণাতি—আন্তর্ধানিভানা । ভর্মপাব্দুবাকার ব্যৱহানিভান ভক্ষাবিদ্ধান। ১০। ১০।

ভাজ্ঞান্ত্রাদে। সেই সমাতশক্ত নিজের স্ভিত্রেতার্থ প্রচাণনার্থ ক্ষান্ত্র এই বিজ্ঞানময় পক্তর যে সময়ে এইরপে সুপ্ত ছিল, 'সে সময় এই পূক্ৰৰ কোৰার ছিল, এবং কোৰা হইতে আদিল। এই কৰা বৈ ছুৰি
নিজাসা করিয়াইলে, ভাষা প্রবণ কর, আনি বলিতেছি—বে সময় এই পূক্র
প্র ছিল, সে সময় বিজ্ঞানের সহিত কর্মাং অব্যাকরণে বিষয়াভিন্যজ্ঞিল
কলিত বিশেষজ্ঞানের সহিত বাক্প্রকৃতি ইলিরপণের বিজ্ঞান (বিষয়া
প্রহণের সামর্যা) প্রহণ করিয়া, ক্লরের অভ্যতরে—মধ্যে বে এই আকাশ—
আগনার আভাবিক অসংসারী আলা সেই আকাশে শরন (অবহান)
করে; কেবল বে, আকাশেই শরন করে, ভাষা নহে, পরস্ক 'বে সোমা
সে সময় সংস্করণ পরমালার সহিত সম্পর—একীভাষাপর হয়' এই
প্রতিবাক্যাল্লসারে বুবা বার বে, নিজনরীরেরপ উপাধির (১) সহিত সম্পর—
নিবন্ধন আলার বে সবিশেষভাব ঘটিরাছিল, ভ্রমন ভাষা পরিভ্যাপ করিয়া
আপনার স্বভাবদির নিবিশেষ বিভ্রতাবেই অবহান করে। এবানে
'আকাশ' শব্দ স্বর্গ পর্যাল্য অভিহিত হইরাছে। ১।

তাল কথা, এই পুরুষ বে সময় শরীর ও ইব্রিরসমূহের অধ্যক্ষতা বা পরিচালকতা পরিত্যাপ করে. সে সমর জীব বে, বীর আত্মতে বিলিত হয়, ইহা জানা যায় কিসে? নামপ্রসিদ্ধি অভ্যারে; সেই প্রসিদ্ধ নামরী কি, তাহা বলিতেছেন—বে সময়ে সেই বাক্প্রস্থতি ইব্রিরের বিজ্ঞান সমূহ সংগ্রহ করে—আপনাতে উপসংহার করে, তথন পুরুষের 'বলিতি' নাম হয়, অর্থাৎ তথন পুরুষ এই 'বাপিতি' নামে প্রসিদ্ধ হয়। ইহার এই নাম্যন্তি নিশ্চয়ই গৌণ—বোগার্থমূলক; কেন না, সে সময় নিজেয়ই প্রায়ত বল্প ত্ব— আত্মাকে প্রাপ্ত হয়া থাকে; এই জন্ত তাহাকে 'বাপিতি' বলা হয় [ত্ব— অপ্রীতি—বাপিতি; প্রোদরাদি নির্বে 'অ' লোপ ও ইকার হয়]।২

ভাল 'বণিতি' এইরপ নামপ্রসিদ্ধি অনুসারে তৎকালে আছার সংসারধর্মবিলক্ষণ অর্থাৎ অসংসারী বরূপ জানা বার সত্য, কিন্তু এবিবরে ত কোনও
বৃক্তি দেখা বার না, এই আশভার বলিতেছেন—সেই সুবৃক্তি সবরে প্রাণ
নিশ্চরই সুবীত হয় শক্তিহীন হয়', বাগাদি ইজিরের প্রকরণে পতিত হওয়ার

(३) छाद्शां - गक्षां - नदाव्यां विषय्ति व्याप्त कर्। विषय्ति एक्ट कद विषय्तारकः " देशव वर्ष - गक्षां (धाद, क्यां , नवां , शांत, क्यां), सद, पूर्व, एक् क्रवित्र (६७, १७, दृद, स्ववां क ध्यां वां) अन्य एक खार्तिक्ष (६५, कर्ष, विद्यां वांतिकृत कर्षे), अरे गडावर् कश्यांतिक्ष परीद्वत नाव विषय्त्वीच ना प्रवादीका । अरे विषय वांतिके बीद्यत वेगावि ; देशव वांदिके बीच क्षक्शवांति क्यांत्र करव अस् देशवांदक क नवांतिक व्याप्त क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र वांदिक । जनात 'जान' वर्ष-जालिक ; अक्ठ नक नागि हिलाइक महिक मक्क निर्वान वे जानाव मागावन अकान माह्या बार्क ; वृद्धि मदात महे बामिक हेलिकम पूक्तकर्व जेनारहड हहेबा बार्क ; कि अवादत ? बामिकिक मृश्वीच बन्न, उक्त मृश्वीच बन्न, त्याज मृश्वीच बन्न, जार बन्क मृश्वीच बन्न। व्यवस्था वाक् अव्यक्ति हेलिक निष्ठक मृश्वीच स्वताक किन्ना कावक के कनावक वानहातक चन्न बार्क ना ; कार्क्य जन्म पूक्त बाह्य वाह्य व्यवस्था व्यवस्था

স যজৈতৎ স্বপ্নায়া চরতি তে হাক্ত লোকান্তত্বতেৰ মহারাজো ভবতুত্তেৰ মহাপ্রাহ্মণ উত্তেৰোচ্চাবচং নিগচ্ছতি, স যথা মহা-রাজো কানপদান্ গৃহীত্ব: যে জনপদে যথাকামং পরিবর্তেত, এবমেৰৈৰ এতৎ প্রাণান্ গৃহীত্ব। যে শরীরে যথাকামং পরি-বর্ততে ৪৯৮ ৪ ১৮ ৪

স্কালাথ:—ইদানীং ব্যাবহাগা বিশেষং দর্শনিত্যাহ—দ ব্রেতি।
দঃ (বিজ্ঞান্ত্য পুরুষঃ) যত্র বন্ধিন্ কালে। ব্যায়া দেশনাথিক্যা ব্যায়ালালাও (ব্যবহাতি), তং (তদা) অসা পুরুষদা) হ তে (আগ্রদক্তবদোচরাঃ)
চরতি (ব্যবহরতি), তং (তদা) অসা পুরুষদা) হ তে (আগ্রদক্তবদোচরাঃ)
লোকাঃ (ভোগাঃ কর্মফলানি) [যথা—] উত (অপি) মহারাজ ইব ভবতি,
উত মহারাজণঃ (শ্রেইরাজণঃ) ইব ভবতি, তথা উত (অপি) উচ্চাবচং
(উচ্চং উন্নতং—দেবাফিতাবং, অবচং অপক্রইং প্রাদিতাবং) ইব চ নিগছতি
(প্রায়োতি), [অত্র ইব-শব্দপ্রেগ্নাথ ব্যাপ্তা-মহারাজাদিভাবানাং
মিখ্যাখং দর্শিত্ব]। সঃ (প্রাস্থিত) মহারাজঃ বথা জানপদান্ (জনপদে রাষ্ট্রে ভবান্ ভোগান্) গৃহীয়া আদায়) খে (প্রকীয়ে) জনপদে
(প্রাহিত্তপ্রদেশে) বগাকামং (ইচ্ছাস্থ্যারেশ) পরিবর্ত্তেত (পরিত্রসতি),
এবং (ভবা) এব এবঃ (প্রার্শী পুরুষঃ) প্রাণান্ (বাগাদীন্) গৃহীয়া
(জাপ্রিভন্থানেতাঃ প্রত্যান্ত্রতা) খে (প্রকর্মণক্র) শ্রারে বগাকামং পরিবর্ততে। বিশ্বাব্যায়াং বাগাদিকরণানাং ব্যাপারোপরমেষ্ঠপি অন্ধঃকরণং
স্ব্যাপার্যারে বর্ততে, পুর্থে ভূ অরঃকরণস্যাপি ব্যাপারোপরম ইভি
বিজ্ঞাঃ] ৯৮ ৪ ১৮

স্ক্রান্তাল-সম্প্রতি কৃষ্তি ও বরাবদার প্রতে ঐগর্ন ক্রিডেমেন,—সেই বিজ্ঞানময় পুরুষ যে সময়ে [বরাবদায়] বিচরণ

.

করে, সে সময় ভাহার লাপ্রদক্ষ ভোগদান ওলি উপশংকত হয়;
বেমন—সে বেন মহারালই হয়, বেন থেডে প্রাশ্বনই হয়, অথবা বেন
উত্তমাধম ভোগ্য বিবয়ই প্রাপ্ত হয়। লোকপ্রসিদ্ধ মহারাল বেরপ
বীয় লানপদ অর্থাং বারালাগত বিবিধ ভোগ্য বিবয় প্রহণ করিয়া
বীয় লনপদে যথেকে পরিভ্রমণ করেন, তত্রপ এই বিজ্ঞানময় পুরুষও
নিলের বাগাদি ইপ্রিয়গণকে লাগরিত স্থান হইতে সংগৃহীত করিয়া
বাক্রমিভিড পরিরের মধ্যে বিচরণ করিয়া থাকে। ব্যাবস্থায়
বাগাদি ইপ্রিয়ের কার্য্য স্থানত থাকিলেও অন্তঃকরণের কার্য্য চলিতে
থাকে, কিন্তু সুবৃত্তি সময়ে সেই অন্তঃকরণের কার্য্যও স্থানত হইয়া
বায়; ইহাই উভয় অবস্থার প্রভেদ ॥ ৯৮৭১৮ ॥

শাক্ষয় ভাল্য ম্।—নমু দর্শনদক্ষণায়াং বপাবছায়াং কার্য্যকরণবিরোপেংপি সংসারধর্ষিরমন্ত মৃততে—বথা চ লাগরিতে সুবী হুবী বন্ধবিবৃদ্ধঃ শোচতি মৃততে চ; তহাং শোকষোহবর্ষবানেবারব; নাত শোকবোহালয়ঃ ক্ষর্যালয়ণ্ড কার্য্যকরণসংযোগভনিত-ভাল্যা লব্যারোগিতা ইভি;
ন, মৃনায়াৎ,—সঃ প্রকৃত আল্লা যর যবিন্ কালে দর্শনদক্ষণয়া ক্ষয়া ক্য়য়া
রুল্যা চরতি বর্ততে, তদা তে হ লাস্যা লোকাঃ কর্মফলানি—, কে তেণ্
তৎ তত্র উত লপি মহারাল ইব তবতি; সোহরং মহারালক্ষিবাস্য
লোকঃ, ন মহারালছমেব লাগরিত ইব; তথা মহারালক্ষিবাস্য
লোকঃ, ন মহারালছমেব লাগরিত ইব; তথা মহারালক্ষ ইব; উত
লাপি, উচ্চাবচং—উচ্চক দেবছাদি, লবচক তির্যাক্ষাদি, উচ্চাবিৰ লবচনিব্
চ নিগল্যতি; মুবৈব মহারালভাদরোহস্য লোকাঃ, ইবলক্ষ্পরোগাং ব্যক্তিচারদর্শনাচ্চ; তথার বন্ধবিরোগাদিলানত-শোক্ষোহাবিতিঃ বন্ধে সম্বয়ভএব।>

নমু চ ববা লাগরিতে লাগ্রংকালাবাভিচারিশো লোকাঃ, এবং বয়েছপিতে লগ্য মহারাল্যাদ্য়ো লোকাঃ বস্নকালভাবিনঃ বস্নকালাবাভিচারিশ আমুক্তা এব, ন ভূ অবিভাবারোপিতা ইতি,—নমু চ লাগ্রংকার্যকরণাম্বক্ষ দেবতাম্বক অবিভাবারোপিত্রন্, ন পরবার্যকঃ, ইতি ব্যতিরিক্তবিভানবরাম্বর্ণনেন প্রমণিত্রন্; তৎ কথং দুইার্ভাবেন ব্যলোক্ষ্য, বৃত্ত ইবোল্ডীবিভান্ত প্রমুক্তবিভাতি ৷ সভাব্, বিভানবহে ব্যতিরিক্তে কার্যকরববেশতা-মহগ্রহণনিব্বিভাবারোপিত্র-তিক্তবারাবিধ রন্তভ্যবর্ণন্ন-ইভ্যেত্রৎ

निगणि गणितिकाशाविषश्रवर्णनवादारेनरः न व् जविश्वविणगण्डेहरः वाह केक्फ, रेजि—चनवनि वृद्धोत्वा बाश्चरकार्यकत्रत्ववाश्वयर्णनमक्नरः पूनक-बाबारकः मर्स्स वि व्याहाः क्षितिस्त्वयर्गकार्यास्त्रहेणुकक्कीकर्यकः।

ন ক্লাবং ৰামে অক্স্তব্যালভাগরো লোকা আলক্তা আলনোহনত লালংপ্রতিবিষ্কৃতত লোকসা বর্ণনাং; বহারালী এব তাবং বালস্থাস প্রকৃতিব পর্যানে শরানঃ বহান প্রস্কুপসংক্তকরণঃ পুনরুপসতপ্রকৃতিং বহারাজবিবালানং লাগরিত ইব পত্রতি বালাগতং ভূলানমিব চ তোগান; ন চ তদ্য মহারাজস্য পর্যান্ধ শরানাং বিতীয়েছে: প্রকৃত্যপেতা বিষয়ে পর্যান্ধনি লোকে প্রসিংছাছি, বহসে। স্থঃ পত্রতি। ন চোপ-সংক্তকরণসা রূপাধিষতো বর্ণনাম্পতিত; ন চ ক্লেহে ক্লোভরসা তত্তু-লাস্য সন্তব্যাহনি, বেহহুসোর হি ব্যাদর্শনম্পত

নশ্ব পর্বাদ্ধে শরানঃ পরি প্রবৃত্তবাদ্ধানং পশ্বতি, ন বহিং শ্বপ্রান্
পশ্বতীত্যেত্তহাহ—সং মহারাজঃ জানপদান্ জনপদে ভবান্ রাজোপকরণভূতান্ ভূত্যানজাংক গৃহীয় উপাদায় শে আশ্বীয়ে এব জয়াদিনোপাঞ্চিতে জনপদে বথাকামং—যো যং কামোহস্য বথাকামম্—ইচ্ছাতো
বথা পরিবর্ত্তে ইত্যর্থঃ; এগমেব এব বিজ্ঞানময়ঃ, এতালতি ক্রিয়াবিশেবণম্,
প্রাণান্ গৃহীয়া জাগরিত্ত্যানেতা উপসংগ্রহ্য শে শরীয়ে শ এব থেছে
ন বহিং, বথাকামং পরিবর্ততে—কামকন্মত্যাম্ভাসিতাঃ প্রায়ন্ত্তবন্ধস্থীবাসনা অন্তব্যতীত্যর্থঃ। তথাৎ প্রে মুবাব্যায়োপিতা এবাস্কৃতবন্ধসম্পীন
বাসনা অবিজ্ঞানঃ এব সন্তঃ; তথা জাগরিতেহপীতি প্রত্যেতব্যুস্। তথাছিভাষাভূত্যাং ক্রিয়াকারকলাল্পনা বিজ্ঞানময় ইত্যেতং সিগ্ধ্। বলাভ্ভান্তে জই
শিব্যক্তাঃ ক্রিয়াকারকলাল্পনা কার্যাকরণলক্ষণা লোকাঃ, তথা বরেহপি; তথাছভোহসে প্রত্যঃ সম্মাণরিতলোকেত্যা জই। বিজ্ঞানময়ে
বিক্রায় ১৮ ৪ ১৮ ৪

টীক্সা—নবংবাভিনেকাজ্যাং বাবাছাপাধিকবাছনং সংবানিছবৃত্তং, তত্ৰ বাভিনেকাসিভিনাপত্ততে—স্মৃত্তি। বাভিনেকাসিভে) কলিভবাক—জন্মান্তি। বছত কল্পূৰ্ণকলিব্যান্তেৰ বন্ধবৰ্মবাভাবালান্তঃ সংগানিব্যিত্যভাবাহ— ম ফুলান্ত্ৰপ্ৰিটি। বছপুৰাবন্ধানে) ন প্ৰেভাবীজ্ঞনাধি বোহবৃতি । প্ৰকৃত্ত ইন্ড্যান্তিন্দ। প্ৰবান বন্ধবভাবে
নিশ্ভিতে ন ভতান্ত্ৰীবন্ধান্তং কৰাতে, ভনাক—মুইস্ক্ৰেটিভা বংগ বৃহ্টানাং নবান্ধবভাবীনাং
কাৰ্যাস্থ্যীবন্ধবিদ্যা বাভিনান্ধৰ্মন্। বছত বিব্যানে নিভন্ধবাহ—ক্ষুত্ৰান্তিন্তি।

विवर्ध ब्लाना व विवास ७९ मानावारिकाविद्याच्यानावासा नवविष्ठ वराष्ठ- सभू छ

এতবেৰ নাথচিত্বং প্ৰতে—মৃত্যিতি। তথা ন ববেতাাহিবাকার্ভাবেরাবহার্যা
নাচরে—মুক্ত্রিরিড্যাদিনে। বধাকায় তং তং কাষ্য্রবাভিক্রেরাভার্য: এতচিত্রি
ক্রিয়ারা এইপজ বিশেষণ্যেত্ব্রহণং করা ভয়তি ইবেতার্থ:। পরিষ্ঠ্রহের বিরুপোতি—ক্রিয়েতি। বোগাদেশাভাবে নিতে নিভ্রুষ্ঠং বর্ণটি—জন্মাদিতি। বল্লভাবিবাহে ক্রিয়াবিক্রেরা আর্থিভেজাশি ভবাছং প্রাং বিক্রের্যালিতি।
ক্রিয়াকার্যক্রান্ত্রক ইতি বিশেষণং স্বর্ণটে—অন্যাদিতি। আর্থিভর বৃইার্যাক্রারা
নাই বিক্রের্যাক্ত । ক্রিয়ুক্তরারে নিতে ক্রিয়াহ—জন্মাদিতি। অন্তর্ণকরাত্র নিত্রকরাত্র নিতে ক্রিয়াহ—জন্মাদিতি। অন্তর্ণকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্র নিত্র নিত্রকরাত্র নিত্রকরাত্র নিত্র নিত্র নিত্রকরাত্র নিত্র নিত্র নিত্র নিত্র নিত্র নিত্র নিত্রকরাত্র নিত্র নিত্র

ভাল্যান্দ্রাদে। পুরুষ ভাগ্রদবদার বেমন সুখী দুঃধী হয়, এবং বন্ধবিষ্ক্ত হইয়া লোক-মোহান্তি হয়, ঠিক তেমনি বিষয়ান্ত্তিবৃত্ত বন্ধাবদ্বান্ত দেহেন্দ্রিয়ানির ব্যাপার বিরত গানিলেও সংসারধর্ম স্বন্ধানির সমন্ত জ্বাহ্যিত পেওয়া বায়; জতএব শোক বোহানি ধর্মই পুরুষের বাতাবিক; ইহার লোক-যোহানি ও স্বন্ধ্যানি ধর্মতান ক্ষমই হেছে-লির-সংযোগ্রদানিত ল্লাবিষ্কাক নহে। না, একথা হইতে পারে না; বেছেড়ু পুরুষের ঐ আতীয় সুধ দুঃধানি ধর্ম্বানি বিধ্যা অস্ত্য;—এই আলোচ্য আলা বে সমন্তে বন্ধান্তি অবলধনপূর্ণক অবদান করে, তথ্য ভাষার সেই

শবভ লোক কৰ্মকা,—নৈ সমন্ত লোক কি কি ? [তাহা বনিতেছেন—]"
শেবানে বেন মহারাজই হয়; সেই এই মহারাজ্যই যেন তাহার লোক—
কৰ্মকা; বান্তবিক পক্ষে কিন্তু জাগ্রদবহার জার ঠিক মহারাজ্যই হয় না;
সেইন্তপ যেন মহাঁগ্রাহ্মণই (শ্রেষ্ঠ প্রাহ্মণই) [হয়], এবং উচ্চাবচ—উচ্চ
দেবৰ প্রস্তৃতি, মার অবচ অপকৃষ্ট পশুপক্ষিতাব, এই উচ্চই যেন এবং অবজ্ঞই
বেন প্রাপ্ত হয়; ইহার এই মহারাজ্যাদি লোকসমূহ নিশ্চয়ই মিধ্যা; কারণ,
এখানে ইব-শক্ষের প্রয়োগ রহিয়াছে এবং বাভিচারও দৃষ্ট হইতেছে, অর্থাৎ
বর্মদুষ্ট কোন পদার্থই জাগরণের সমগ্রে বর্তমান পাকে না ব। অক্সন্তুত হয় না।
অতএব বুবিতে হইবে, আন্তা প্রাবস্থায়, যথার্থ ই বন্ধবিয়োগাদিকনিত
লোক-মোহাদি ধর্মের সহিত সম্বন্ধ হয় না।>

धवन जाशित हरेएउक (य. काश्यकाल ब्ल्यान लाकन्यर (बद्धभ জারংকালাব্যভিচারী অর্থাং মহক্ষণ জাগদবস্থা ততক্ষণ মান স্থায়ী,ঠিক ভক্ষণ वश्वकारम ब्रह्मान महादाखहानि त्वाक्त्रमूब्ध वश्वकान्छावी बाख बाबी) इब. এবং ब्यूनसएं। ठावात वाधिकात् । (अन्डाडा ।) पृष्ठे इब मा ; कुछबार (म मुबल छाहार बायान्डहे (बाहानिकहे) नर्ह, किंद्र क्यनहे ब्यक्ति। পরিকল্পিত মিধ্যা হটতে পারে না। বিশেষতঃ ভাগ্রংকালীন কার্যাকারণভাব-সম্ভৱ ও দেবতাছার-উভয়ত যে, অবিজ্ঞাপ্রিকার্ড অপার্মার্থিক, ট্রাড পাৰিপেৰৰ ছাত্ৰা প্ৰাণাদিত অভিত্তিক বিজ্ঞানময় আয়াত পত্ৰপপ্ৰদৰ্শনেই श्रामिक इहेबारक, ठरव मुज्यकीवरनट काय दक्तन नहीरबाद महाध्यांच छाहांच चात पुनक्रवान हरेरा कि श्रकात ? है। ज नवा महा, कि कि किएड व्यक्ट-প্রতীতির কার প্রাণাদি-বাতিরিক বিজ্ঞানময় আন্থাতেও বে. কার্যাকরণ-(म्ट्लियानिड मुक्क अवः (मन्डायात्राव श्रामनेन, श्रामानि-माहिदिक बाचाद विषय अपनीक वृक्तियातारे ताबाल अमानिक बरेबाटक मता, किस व्याचात विकास पात्रभावामर्गत्मात कक (न गुलिय जिल्ला करा वह माहे ; अहे कक हे बावार-कानीन कार्याकतनमञ्ज ७ (मवटा ब्राटान-अपर्यना प्रक मुद्देशकी बगटा इंदे(मध अवात्न छाहात पुनक्रहारन कता चारकक रहेट्टरक ; दक्तना,ममन गुक्तिहै चि সামাভ মাত্র বিশেষভাবে প্রযুক্ত হইলেও পুনক্ষতি দোব হইতে বিনিশ্ব জ হইরা বাকে; অভিগ্রায় এই বে, পূর্বে কেবল খুল কন্ম দেহবয় হইতে আত্মাণ वित्यक वा भावकामात आधिभाषिक सहैवाह, अवर वश्वकीत्कक मुख्यत ব্রিরা দ্বীয়া ভাষার দুরীতে স্মন্ত্রেরও সভাভা প্রভ্যাব্যান করা ব্রুরাছে।

প্রিক্ত কণা এই বে,] ব্যাস্বরে অনুত্ত বহারাক্ত প্রকৃতি লোকথলি বে, বথার্থ আত্মত অর্থাৎ আত্মার বাতাবিক ধর্ম, তাহা নহে;
কারণ, তৎকালে বাহা বাহা পৃষ্ট হইরা থাকে, তৎস্যক্তই আত্মা হইতে
তিয়—আগ্রুত্ত পদার্থের প্রতিবিদ্ধ বা অন্তর্মপ যাত্র; নিজের অনাত্যাধি
প্রকৃতিবর্গ বে স্থার, পূথক্ ভাবে নিপ্তিত আছে, ঠিক সেই স্বরে
প্রকৃত মহারাক্তই ইল্রিয়-ব্যাপারবিহীন অবহার পর্যান্ত পরান থাকিরা
ব্যাপ্রকৃত করা আনাকে আগ্রংকালের ভার সক্ষ্তিত অনাত্যস্থে
পরিবেট্টিত এবং উৎসবে উপদ্বিত হইরা বিবিধ বিষয় তোগ করিতেছেন—
ক্ষেত্রিত এবং উৎসবে উপদ্বিত হইরা বিবিধ বিষয় তোগ করিতেছেন—
ক্ষেত্রিত পান; প্রকৃতপক্ষে পর্যান্ত পরান সেই বহারাক্ষের অন্তিরই
ক্ষিবাত্যুপে (ব্যাভির স্মরে) প্রস্কি নাই, বাহাকে তিনি ব্যাবহার ফর্নন
করিবেন; বিশেষতা হাহার ইল্রিয়সমূক নিক্রিয় অবহার রহিরাছে, ভাহার
পক্ষে রপাদিসম্পার বার দর্শন করা কথনই সন্তব্যার হইতে পারে না।
আর একই দেহের মধ্যে বে, ততুলা অপর দেহেরও সন্তাব সন্তব হর,
তাহাও নহে; কেননা, ব্যাক্রন দেহত্ব ব্যক্তিরই হইরা থাকে।০

আশকা হইতেছে বে, পর্যাতে শরান বাজিই ত আপনাকে পথে (দেহের বাহিরে) বর্তমান দেখিরা থাকে ? তহতরে বলিছেছেন বে, না, বাহিরে স্থান্তলন করে না,—দেই প্রসিদ্ধ মহার্রাজ বেষন জানপদ—জনপদাৎপর (দেশজাত) রাজতোপ্য হতা ও অক্তাক্ত বছনিচর প্রহণ করিয়া জয়দিগক বীর জনপদের মধ্যেই (রাজামধ্যেই) বথাকার—ইহার বেষন বেষন কাষনা হয়, তদলুসারেই অবহান করেন, ট্রক তেমনি এই বিজ্ঞানমর আয়াও এইরপে প্রাণ সর্হকে প্রহণ করিয়া—আগ্রমবহা হইতে আহরণ করিয়া বীর পরীরমধ্যেই ইচ্ছালুসারে অবহান করে, আর্থাৎ পূর্বাতন করে ও কর্মালুসারে সমূত্ত পূর্বালুত্ত বছর অক্তরণ বাসনারানি অক্তর করিয়া বাকে, কিছু বাহিরে কিছুই অল্কর করে না। অতএব সপ্রে বে সম্বত্ত বিষয় আহরণকর বিষয় আল্কর্ত হয়, দে সম্বত্ত প্রত্তপক্ষে বিভ্রমান না থাকার আর্থান্তলে বিষয় আর্থানিত হয় মাত্র; আগ্রমবহান্তর সেই রূপই বৃথিতে হইবে। অতএব বিজ্ঞানময় আয়া বে, স্ভাবত্ত এবং ক্রিয়া কারক ও ফল-সম্বত্তহিত, ইয়া প্রমাণিত হইকেছে। বে বেডু এইার বিবরীত্ত্রী (মৃত্ত প্রার্থ) ক্রিয়া

কারক ও কলাস্থক কার্য-কারণভাববিশিষ্ট লোকসন্থই বথে ও আঞ্জন-বহার দৃষ্ট হইরা থাকে, সেই হেতু বগ্ন ও আগরণাবহার দৃষ্ট লোকসন্থ হইতে সম্পূর্ণ পূথক্ এটা বিজ্ঞানময় আত্মা বিশুদ্ধ অর্থাৎ বগ্ধ ও আঞ্জন-বহার অস্তুত্ত বিশ্বের সহিত অসম্ভব্ধ ১৮ । ১৮ ।

আভাসভাস্থা। বর্ণনরতো বরে বাসনারাশের প্রথা অভছর্মভেতি বিওছতা অবগতা আছনঃ; তত্র "বধাকাবং পরিবর্ততে" ইতি
কাষবশাং পরিবর্তনমূক্তব; দুই মুক্তসম্বভন্ত অন্ত বাতাবিকঃ—ইত্যওছতা
শন্ত্যতে; অতত্তিবিভার্থনাহ—

ज्या क्राञ्च क्रिक्श क्रिक्श क्रिक्श ।—विवश्यनीतासक वशावश्य वागमा वा बाधरकामीन भःकात वृद्धे वय विवश क्रिक्श क्रिक्श महिल आसात जनवा क्ष विकश्य कामा भित्राहि, এवः 'यशाकायः भांत्रवर्शतः' এই क्था प्र जनवा वामास्क्रण भतिवर्शन क्षित्र हरेगाहि; अठ अव वश्यक्षीत तिर वृद्धमण्ड वास्त्रविक विवश वामका हरेत्व भारतः, व्यवतामार्थ विनादिक निर्मा कामका हरेत्व भारतः, व्यवतामार्थ विनादिक निर्मा

শধ বদা ক্ষুপ্তো ভবতি যদা ন কন্সচন বেদ, হিতা নাম নাড্যা শাদগুতি: সহস্রাণি হৃদয়াৎ পুরীততমভিপ্রতিষ্ঠন্তে, তাভি: প্রভাবস্থা পুরীততি শেতে, স যথা কুমারো বা মহারাশো বা মহাত্রাহ্মণে বা শতিশ্বামানন্দক্ত পহা শ্রীতৈবমেবৈর এতক্ষেতে ॥ ১৯ ॥ ১৯ ॥

সন্ধানাতঃ—অথ বদা (বিষন্ কালে) [পুরুষঃ] সুমুপ্তঃ শুবতি, বদা কল্পচন (প্রকাদে: কল্পালি কিঞ্চন) ন বেদ (বিজ্ঞানাতি), [তদা]—[বাঃ] বাসপ্রতিঃ সহস্রাণি (বাসপ্রতিসহস্রসংখ্যকাঃ) হিতাঃ নাম (হিতাখ্যাঃ) নাডাঃ ব্যরাৎ (কংপিণ্ডাৎ) প্রীততং (ক্ষয়বেইনশ্—তত্বপদক্ষিতং দেবং) অভি (ক্ষ্যীকৃত্য) প্রতিষ্ঠিত্তে (প্রস্থিতাঃ—নির্গতাঃ), তাভিঃ নাড়ীতিঃ) প্রত্যবস্থা (প্রীরং ব্যাপ্য) প্রীততি (প্রীতে) প্রীত (বর্ত্তে); সঃ (সুমুপ্তঃ) বথা কুষারঃ বা বহারাজঃ বা বহারাজ্ঞণঃ বা আনন্দক অতিমীং (অতিশান্ধিনীশ্ অবহাং) প্রা (প্রাপ্য) প্রীত (অবতিষ্ঠেত), এববেব (তব্ধ এব) এবঃ (বিজ্ঞানবন্ধঃ) একং (শ্রনং বথা ক্রাৎ তথা) [সর্বসংসারধর্ষণ্ অতীতা] প্রতে (বর্ততে ইতার্ষঃ) ১৯৮১০ঃ

चूलान्यानः। এই विकासमा भूतम (व नमात व्यूख वत, त नमत

কোন বিষয়ে কিছু জ্ঞান থাকে না, [নে সময়ে], হিতানামক বে বাহতঃ হাজার নাড়া কংপিও হইতে নির্গত হইরা পুরীততে— ক্ষরবেউনে অর্থাৎ তথিশিউ শরীরাভিমূবে বহির্গত হইরাছে, সেই সমস্ত নাড়ীছারা নির্গত হইরা সমস্ত শরীরে পরিবাধি হইরা অবস্থান করে। পূর্বা-প্রদর্শিত সেই কুমার কিংবা মহারাজ অথবা ক্ষেত্রাক্ষণ বেমন্বেশ্বসদায়) আনন্দের উৎকর্ব প্রাপ্ত হইরা থাকে, এই বিজ্ঞানময়ও ঠিক সেইরপে শরন করে (অবস্থান করে) ৪৯৯ ৪ ১৯ ৪

স্পাক্তির ভাক্তাকা। অধাবদা সুবৃধ্যে তবতি—বদা ব্যারা চরতি, তদাপারং বিশুদ্ধ এব ; অধা পুনর্যদা হিছা দর্শনর্তিং ব্যার, বদা ববিষ্ কালে সুবৃধ্য সুষ্ট্র স্থান সম্পাদং বাহাবাং গতঃ তবতি—প্লিল্যিব অন্তস্মন্ত কাৰ্ডং হিছা বাহাবোন প্রশীদ্তি।

কদা সুৰুপ্তো তথতি ? বদা যদিন কালে, ন কন্সচন ন কিঞ্নেতাৰ্থঃ ; বেছ বিজ্ঞানাতি ; কন্সচন বা শ্লাদেঃ সম্বন্ধি বস্বব্যুং কিঞ্চন ন বেছ—ইত্যব্যাহাৰ্য্যস্থ ; পূৰ্বন্ধ ক্ৰাব্যৰ্, সুপ্তে তু বিশেষবিজ্ঞানাভাৱত বিবন্ধিতহাৎ । ১

এবং তাববিশেববিজ্ঞানাতাবে সুবৃধ্যে তবতী হ্বাক্তব্ ; কেন পুনঃ ক্রেব্রণ সুবৃধ্যে তবতী হ্বাচাতে—হিতাঃ নাম হিতা-ইত্যেবংনায়্যো নাডাঃ শিরাঃ মেহতায়বদবিপরিধামভ্তাঃ, তাক ঘাসপ্ততিঃ সহত্রাণি—দে সহত্রে অবিকে সপ্ততিক সহত্রাণি—তাঃ ঘাসপ্ততিঃ সহত্রাণি ; ছদয়াৎ—হদয়ং নাম বাংসপিতঃ, তত্মাৎ বাংসপিতাৎ প্তরীকাকারাৎ, পুরীততং হদয়পরিবেইনমাচকতে—তত্বপদক্ষিতং শরীরবিহ পুরীতক্ষ্যেনাতিপ্রেতং—পুরীততমহ্প্রিতিভিত্তিক দ্বীরধ হুবাং ব্যায় বৃত্যঃ অব্যপ্রভার ইব বহিমুণ্যি প্রস্তুতা ইত্যর্থঃ। ২

তত্ত্ব বৃদ্ধেররঃকরণত হাদরং স্থানম্; তত্ত্বস্থিতিয়াণি চেতরাণি বাহানি করণানি; তেন বৃদ্ধিঃ কর্মবরণাৎ শ্রোক্রানীনি তাতির্নাড়ীতিঃ বংস্যাভারবং কর্শন্ম্ন্যাধিস্থানেতাঃ প্রসারহতি; প্রসার্য্য চাধিতিষ্ঠিত ভাগরিতকালে; তাং বিভানমরোহতিব্যক্তবাস্থানৈতেভাবতাসতয় ব্যাগ্রোতি; সভোচনকালে চ তস্যা অস্থসভূচতি; সোহস্য বিভানমরস্য বাণঃ; ভাগ্রিকিসাম্ভবে। ভোগঃ (১); বৃদ্ধ্যাধিসভাবাস্থবিধারী হি সং. চন্ত্রাধিপ্রতিবিদ্ধ ইব জলাভ-স্থবিধারী। তত্ত্বাং তস্যা বৃদ্ধেশ গ্রেবিবয়ায়াঃ তাতিঃ নাড়ীতিঃ প্রভাবস্থিবস্থ

⁽**১) ভারদ্**বিক্লোভুডব: ইভি গাটাভার।

প্রভাবতথ্য প্রীততি শরীরে শেতে তির্ছতি—তথ্যবিধ লোহণিওত্ব শবিশেবেণ সংব্যাপ্য শরিবৎ শরীরং সংব্যাপ্য বর্ডত ইতার্থঃ। স্বাভাবিক এব সাম্বাদি বর্ত্তবানোহণি কর্মান্ত্রপতবৃদ্ধান্তর্ত্তবিদাৎ পুরীততি শেতে ইত্যাচাতে। ন হি সূর্ত্তিকালে শরীরসম্বন্ধোহতি; "তীর্ণো হি তদা সর্বাহোকান্ দ্বন্ধন্য" ইতি হি বক্সতি। ৩

দর্শন্যারভ্যথিবির্জেরমবন্থেতার দৃষ্টান্তঃ,—স বণা কুমারো বা অত্যন্তবালো বা, মহারাজো বা অত্যন্তবপ্তপ্রকৃতিঃ বণোক্তরুৎ, মহারাজণো বা অত্যন্তবপ্তপ্রকৃতি বণোক্তরুৎ, মহারাজণো বা অত্যন্তবিপ্রকৃতিজাবিনরসম্পারঃ, অতিয়ীম্—অতিশয়েন হুঃখং হন্তীতাতিয়ী আন-অস্যাবহা সুখাবহা, তাং প্রাণ্য গরা শরীত অবতিষ্ঠেত। এবাঞ্চ কুমারাদীনাং বভাবহানাং সুখং নিরতিশয়ং প্রসিদ্ধং লোকে; বিক্রিরমাণানাং হি তেবাং হুঃখন্, ন বভাবতঃ; তেন তেবাং বাভাবিক্যবহা দৃষ্টান্তবেনোপাদীয়তে, প্রসিদ্ধাৎ; ন তেবাং বাগ এবাভিপ্রতঃ, বাপস্য দাষ্টান্তিক্তেন বিবন্ধিত্তাং বিশেষভাবাক্ত; বিশেষে হি সতি দৃষ্টান্ত-দাষ্টান্তিকভেদঃ স্যাৎ; তথার তেবাং বাপো দৃষ্টান্তঃ,—এব্যেব, ঘণায়ং দৃষ্টান্তঃ, এব বিজ্ঞানময় এতৎ শর্মং শেতে ইতি—এতক্ষমঃ ক্রিয়াবিশেশণার্থঃ,—এব্যয়ং বাভাবিকে বে আত্মনি স্ক্রিগ্রের্জাতীতো বর্ততে বাপকালে ইতি॥ ১৯॥ ১৯॥

ৰুত্তৰনৃত্ত ধাৰপূৰ্বকং অবৃধিপতি একার পর্যাতি—এবং তাত্রাদিন্তি। বিভক্ষ ধারি-নিবিত্তবারাকো বি চা উচাতে। তানাং বেঃস্বত্বানাবন্তর।তিকেলাভাবারনবিকারত্বাহ— আলোকৈ। তাসাবের বধানসংবাাং কর্বরতি—ভাশেন্ততি। তাসাং চ ক্রম্বর্থিনীবাং ভত্তো নির্মন্ত বেরব্যাব্যা বহিষ্ক্রিবর্গ — ক্রম্মাদিন্তি। ২

ভাভিত্রিভাবি বার্ক্তিং ভূমিকাং করোর—ভ্রম্নস্তি। পরীবং সপ্তব্যর্থং। দর্গারে করণানাং বৃত্তিক্রমের কিং ভাভবার—ভ্রেম্নস্তি। তবাপি আম্বার্ক কিনায়াভ্রিক্রান্দ্রার —ভাং ক্রিক্রান্ম্ময় ইতি। ভোগপালা লাগরবিষয়ং। মুভিবিকান্ময় ইতি। ভোগপালা লাগরবিষয়ং। মুভিবিকান্ময় করাছা লাগর্জী-ভূয়েকে, তথসাকোল অনুভবন্ পশিক্রীক্রার বেকুলাই—ভূম্মানিকি। ক্রিক্রানিকি। ব্যাবর্ধনার বাধ্যবিদ্যালাকি। ক্রিক্রানিকি । প্রাক্রিক্রানিকি । কর্মানিকি । ক্রিক্রানিকি । কর্মানিকি । ক্রিক্রানিকি । ক্রিক্রান

विकामारब्रम्भा पूरीकि प्रममान्यापक पूर्वापनिवाद काविकापकाद—काक्काविक ইক্ষি। केपनिवादकाव विकास विकास विकास विकास विकास काविका

ইয়নংখিত প্ৰকৃত। সুৰ্বিক্চাতে। উচ্চেৰু বৃহীতেৰু বিৰক্তিনংশং নৰ্শনতি—প্ৰজাং চ্চেতি। হংবাণ তেখাং প্ৰসিদ্ধনিত্যাণভাগি—ছিক্তিয়মাণান্দাং স্থীতি। তুনানানিখাণতৈৰ বৃহীত্তং কিং দ ভানিভাগিভাগি—ম তেক্সামিতি। তথাণত বৃহীতত্তনামধাণত লাই ভিত্তবিভি বিভাগনাশভাগি—বিশেক্ষাক্তাবাদিতি। কৈন্ত ভনাইজুদিতি প্ৰস্নতোভনৰ্ণণানিভন্নসংগঠি – এবমিতি। ১১। ১১।

ভাল্যান্দুবাদে—অতঃপর বলা হইতেছে বে, জীব বে সমর সুর্ও হয়—যখন সমদর্শনে অবস্থিত হয়,তখনও এই বিজ্ঞানময় পুরুষ বিশুছই থাকে; তাহার পর যখন দর্শনাম্মক স্থাবস্থা পরিত্যাগ করিরা সুর্ও—সমাক্রপে স্থাবস্থা পরিত্যাগ করিরা স্থাব সংযোগজ কল্যতা পরিত্যাগ করিয়া স্থায় সজ্জা লাতে প্রসন্ধ (নির্মাণ) হয়, তজ্ঞপ প্রসন্ধ হয়। তাল, জীব কোন সময়ে সুযুগ্ধ হয় ?—বে সময়ে কাহারও অর্থাং কিছুও জানে না; অথবা শলাদিবিষয়-সম্পর্কিত অন্ত কোনও কিছু জানে না;—এই অংশটুকু অধ্যাহার বা প্রণ করিয়া লইতে হইবে; এই উত্তর প্রকার ব্যাখ্যার মধ্যে প্রথমেক্ত ব্যাখ্যাই তায়; কারণ, এখানে সর্বপ্রকার বিশেশ-বিজ্ঞানের অভাব প্রতিপাদন করাই শ্রুতির অভিপ্রেত। ১

এই কথা বলা হইতেছে যে, যে সময় কোনপ্রকার বিশেষ বিজ্ঞান থাকে না, বিজ্ঞানময় আন্মা তথনই সুষ্প্র হয়। কি প্রকারে সুষ্প্র হয়, এখন তাহা বলা হইতেছে — দৈহিক অন্ধ-রসের পরিণামভূত 'হিতা' নামে প্রসিদ্ধ কতকওলি নাড়ী (শিরা) আছে; সেই নাড়ীর সংখ্যা ঘাসপ্রতি সহস্র—ছই হাজার অধিক, আর সন্তর হাজার—সেই বাহান্তর হাজার নাড়ী হৃদ্দ হইতে পুরীতংনাড়ীর অভিমুখে গিরাছে। হৃদ্দ অর্থ — মাংসধণ্ডবিশেষ; সেই মাংসধণ্ডী পদ্মের সৃদৃশ; হৃদ্দেরে বেইনকে 'পুরীতং' বলে: এখানে কিন্তু সেই পুরীতংবিশিষ্ট দেইই পুরীতং-শন্দের অভিপ্রেত অর্থ; 'পুরীততের দিকে নির্মান্ত হইরাছে' কথার অর্থ এই বে, অখনপত্র বেরূপ শিরাজালে বের্টিত, তক্রপ ঐ নাড়ী সৃষ্ঠণ্ড সমন্ত শরীর ব্যাপিয়া বহিনিকে প্রস্তে হইরাছে।২

শরীরাভ্যন্তরত্ব সেই হাদর হইল বৃদ্ধির—শতঃকরণের স্থান বা আগ্রর;
শপরাপ্লের ইলিরগণ তত্রতা বৃদ্ধির শবীন; সেই হেছু ঐ বৃদ্ধিই প্রোত্তাদি
ইলিরগণকে বংশ্ত-জালের ভার ওত-প্রোতভাবাণার উক্ত নাড়ীসবৃহ বারা
কর্ণাভূলি (কর্ণাভূতি) প্রভূতি ইলিরস্থানে প্রসারণ করিরা বাকে, এবং প্রসারণ

क्षित्र निर्द्धके काक्षरकारन के अवस देखिए क्षित्र क्षित्र करत वर्षाय शह-চালনাৰি কাৰ্ব্যে কৰ্ডৰ করে। বিজ্ঞানময় আত্মা আবার বীয় অভিবাক্ত टेक्डमा बाजा तारे वृद्धित्क व्याभित्रा थात्क, वर्षाय वृद्धित्क छेडानिक क्षित्रा द्वार्य: (नरे वृद्धि वथन नाकांतित रह, ज्यम विकानवह अत्वन नाकांत-क्नोहे ब्याख रहा। त्रहे नशकाठ-प्रनाहे विकासमह आधाद वशक्ना: आद মাঞ্রংকালীন বে চৈতন্ত্র-বিকাসাত্মক অমুভব, ভাছাই ভাছার ভোগ অর্থাৎ জাগরণ দশা: কেন না, চন্দ্রাদির প্রতিবিদ্ধ বেমন জলামুসারী হইয়া बांक, रूपनि विकानमत्र बाबाल वृद्धित नमान प्रणाव श्राप्त हरेता बाद ি স্বভরাং বৃদ্ধির সংকোচ ও বিকাসামুসারে তাহারও সংকোচ-বিকাসাদি প্রাব্তি বুক্তিবুক্তই বটে।] সেই হেডুই জাগ্রৎকালে বৃদ্ধি ধ্বন পূর্বোক্ত নাড়ীসমুহ ছারা প্রাণে সমর্পিত হয়, তখন বিজ্ঞানময়ও তদমুসারে সর্কারীয়ে चित्रिंग करत: जश्रालीत्वत चित्र त्रवल नमल लोहचत वाश हरेगा শবস্থান করে, তেমনি বিজ্ঞানময়ও তখন স্কতোভাবে স্ক্ৰিরীয় ব্যাপিয়া ভাহাতে অবস্থান করিতে থাকে। যদিও আত্মা সর্বাদাই স্বত্তরপে অবস্থিত আছে সত্য, তথাপি প্রাক্তন কথামুবারী বৃদ্ধিবৃত্তির অনুগামী হর বলিরা পুরীতংনাড়ীতে (শরীরে) অবস্থান করে বলা হইয়া থাকে মাত্র; কারণ, चुर्विकात्मक चाचात्र शृर्वित काम्र मतीत्रमञ्ज विक्रमान वात्क ना (১)। चन्नर क्षिकि भारत विभावन (व, '(नहे नमाप्त (खुनुश्चि नमाप्त) कुमाप्तत नर्सविध দ্রঃধ শতিক্রম করিরাগাকে'। ৩

এই সুবৃত্তি অবস্থা বে, সর্ব্ধপ্রকার সাংসারিক অবস্থা হইতে সভন্ধ, তৰিবন্ধে দৃষ্টান্ত এই বে, প্রসিদ্ধ কুমার অর্থাৎ অভ্যন্ত বালক, অথবা সর্ব্বস্থামী এবং স্বেদ্ধাকারী মহারাজ কিংবা অভিনয় পরিপক্তাপ্রাপ্ত বিভা-বিনয়াদিগুণসম্পন্ন প্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণ বেরূপ অভিন্নী—হৃংধের অভিনয় নির্ভিসাধক আনন্দাবস্থা

(১) ভাংপ্ৰ্—"পুৰুবিকালে সকলে বিলীনে ত্যোহভিভূত: প্ৰস্কুণমেডি। পুনক ৰুৱান্তঃ কৰ্মবোগাৎ স এব লীব: বণিতি প্ৰবৃদ্ধঃ ঃ"

পাত্রে আছে, প্রবৃত্তি সময়ে এই আঙ্গেছের সমস্তই কারণগরীর অঞ্জানে বাইলা বিলীন হয়, এবন কি, তাঁহার কৃত্যান পুল গেছত তবন থাকে না, অপরলোকে বে, প্রযুপ্তের পুলবেহ বর্ণন করিলা বাকে ভাষা ভাষাবের আবিষাত্র; কীব সে সময়ে ভবোধনে অভিভূত হুইলা কর্ম সন্থ্যানে কেবল আনন্দময় অবস্থা অনুভব করিতে থাকে; নাধার প্রাক্তন কর্মের প্রেরণার পরিচালিত হুইলা সেই বীবই আবাহ ক্রমে বয় ও বাগরন অবস্থা প্রাপ্ত হুইলা থাকে। (পুৰাবছা) প্ৰাপ্ত হইয়া শরন করে— স্বহান করে। প্রকৃতিছ্ উক্ত কুমারপ্রভ্তির স্বাধিক প্রশন্তি লগতে প্রপ্রিম ; ভাহারা হবন যাভাবিক স্বহা হইতে প্রচাত হয়, ভবনই ভাহাদের হংব উপহিত হয়, নচেৎ হর না; এই লক্ত ভাহাদের স্বভাবনিত্ব স্ববাহাল লগতে স্থানিত্ব; কিন্তু গ্রহণ করা হইতেছে; কারণ, ভাহাদের স্বাবহালগতে স্থানিত্ব; কিন্তু ভাহাদের স্বৃধি স্বহাটীয়াত্র দৃষ্টান্তরূপে গ্রহণ করা প্রতির স্ভিপ্রেশত নহে; কারণ, স্বৃধি স্বহাটীকে দার্টান্তিকরূপে প্রতিপাদন করাই প্রভির স্বভিপ্রত; বিশেষতঃ স্বৃধিবিবরে সাধারণের সলে উহাদের কিছুবাত্র বিশেষ বা পার্থকাও নাই; বাহাতে স্থাংলিক কিছু বিশেষ বাকে, ভাহাই দৃষ্টান্তরূপে পরিগৃহীত হইয়া গাকে, (স্বিশেষ পদার্থ হয় না); স্বভ্রের ভাহাদের স্বৃধি-দশা কথনই ইহার দৃষ্টান্ত হইতে পারে না। বেরূপ দৃষ্টান্ত প্রদর্শিত হইল, ঠিক সেইরূপ বিজ্ঞানমর স্বান্থাও এইরূপে শরন করে—স্বন্থান করে, স্বর্থাৎ উক্ত দৃষ্টান্তের ক্রার বিক্রান্যর স্বান্থাও নিদ্রাসময়ে সর্ক্রিব সংসারধর্ম স্বতিক্রমপূর্ক্রক শীর স্বান্থান্তর্লে স্বন্ধন

আ ভাস ভাসাম। কৈব তদাত্দিতাসা প্ররস্য প্রতিবচনম্কন;

অনেন চ প্ররনির্গরেন বিজ্ঞানময়স্য বভাবতো বিশুদ্ধিরসংসারিবকোক্তন্। কৃত
এতদাগাদিতাস্য প্রস্যাপাকরণার্থ আরম্ভঃ। নমু বিনন্ প্রায়ে নগরে বা বো
ভবতি, সেংহক্তর পদ্ধন্ তত এব গ্রামাৎ নগরাঘা পদ্ধতি, নাক্তঃ; তথাসতি

"কৈব তদাত্ৎ"ইত্যেভাবানেবার প্রশ্নঃ; ষরাত্ৎ, তত এবাগমনং প্রসিদ্ধার্থ, নাক্তঃ, ইতি "কৃত এতদাগাৎ"ইতি প্রশ্নো নির্থক এব। কিং ক্রতিক্রপালভাতে ভবতা । ন; কিং ভহি । দিতীয়স্য প্রস্যার্থাক্তরং প্রোভ্নিক্ষারি;
অত আনর্থকাং চোদরামি। ১

এবং তর্বি কৃতঃ" ইত্যপাদানার্থতা ন গৃহতে; অপাদানার্থৰে হি পুনক্কতা.
নার্ছার্থনে; অন্ত তর্হি নিমিডার্থ: প্রশ্ন-কৃত এতদাগাৎ—কিন্নিমিডমিহাগমনমিতি। ন নিমিডার্থতাপি, প্রতিবচনবৈদ্ধগাৎ; আত্মনক সর্বত্ত
অগতোহিরিফ্ নিজাদিবছৎপতিঃ প্রতিবচনে প্রশ্নতে; ন হি বিক্ নিজানাং
বিক্রবণে অন্তিনিনিভন্; অপাদাননের তু সঃ; তথা পরবাদ্ধা বিজ্ঞানবহ্ন্যাদ্ধনোহপাদানদেন প্রশ্নতে—"অবাদান্ধনং"ইত্যেত্রিন্ বাক্যে; তথাৎ প্রতিবচনবৈলোব্যাৎ "কৃত্য" ইতি প্রশ্ন্য নিবিভার্থতা ন শক্যতে বর্ণনিকৃত্ব। ২

নতু অপাদানপক্ষেৎপি পুনক্ষজভাদোবঃ ছিত এব। নৈৰ দোবঃ, প্রশ্নাভাগাত্মনি ক্রিয়াকারকফলাত্মতাপোহস্য বিবন্ধিত্যাং। ইছ ছি বিদ্যাবিভাগিবয়াবুপভানে,—"আরোভ্যেবোপাসীত" "আত্মানবেবাবেং," "আত্মানবেব লোকমুপাসীত"ইতি বিভাবিবয়ঃ; তথা অবিদ্যাবিবয়ণ্চ পাঙ্জাংকর্ম তৎফলকারত্রয়ং নামরপকর্মাত্মকমিতি। তত্রাবিভাবিবয়ে বক্তবয়ং স্ক্রিক্তব্। বিভাবিবয়য় আত্মা কেবল উপভান্তঃ, ন নির্ণাতঃ; তরিপ্রায় চ "ব্রহ্ম তে ব্রবাণি" ইতি প্রক্রাক্তম্, "ক্রপমিত্যামি" ইতি চ। অতত্তত্ত্বজ্ম বিভাবিবয়ভ্তং জ্ঞাপরিতবয়ং মাধাত্মতঃ। তন্ত চ মাধাত্মাং ক্রিয়াকারকফল ভেদশ্ত্র অত্যাবিভামবৈভ্যং মাধাত্মতঃ। তন্ত চ মাধাত্মাং ক্রিয়াকারকফল ভেদশ্ত্র অত্যাবিভামবৈভ্যং হিত্য চিবিক্তিম; অতত্তদমূরপে প্রশান্ত্র স্বাপ্যেতে ক্রত্যা—"কৈব তদাভূৎ, কৃত এতদাগাং" ইতি। ৩

তত্র—বত্র ভবতি, তদধিকরণম্ : যদ্ভবতি, তদধিকর্ত্রাম্ ; তরোশ্চাধিকরণাধিকর্ত্রারার্ভিদে। দৃষ্টো লোকে । তথা —যত আগহ্ছতি তদপাদানম্, ব আগহ্ছতি সকর্তা তলাদক্যে দৃষ্টা । অতথা আয়া কাপ্যভূদক্তনিরক্তঃ, কুতশ্চিদাগাৎ অক্তনাদক্তঃ—কেনচিন্তিরেন সাধনান্তরেণ ইত্যেবং লোকবং প্রাপ্তা বৃদ্ধিঃ ; সা প্রতিবচনেন নিবর্ত্তরিতব্যেতি । নায়মায়া অক্তঃ অক্তনাভূৎ, অক্তো বা অক্তনাদাগতঃ, সাধনান্তরং বা আয়ক্তি ; কিং তহি ? স্বায়ক্তেবাভূৎ— "স্বায়ানমপীতো ভবতি" "সতা সোম্য তদা সম্পরে ভবতি" প্রাক্তেনায়না সংপরিষক্তঃ" "পর আয়নি সংপ্রতিষ্ঠিতে" ইত্যাদিঞ্জিত্যঃ ; অতএব নাক্তঃ অক্তনাদাগছ্তি ; তৎ ক্রান্ত্রেকেণ ব্রুর্বাভাবাৎ । নগুলি প্রাণাদি আয়ুব্তিরিক্তং ব্রুত্তর্ম্ ; ন ; প্রাণাদেক্তে এব নিশ্যন্তে । তৎ কথম্ ? ইত্যাচ্যতে—

টীকা—স ববেভাবেঃ সম্বভিং বকুং বৃথং স্থার্ডিছি— কৈম ইতি। কিং প্ররাজ্মন্ননির্বিদ্ধ কনতি । বংশদার্থিছিনিভার—অন্সেন্ডি। ওছিবারা নাম্বাং চ
ডলেজনিভার—অন্সংলানিঅং (চিডি। উর্বিশ্বত তা পর্বানান—কুড ইডি।
পূর্বেশোভরত সভার্বাং শকতে—ন্মিডি। হিভাবব্যেরের নির্দ্ধানিভারেশাসভাব্যেনিনিবার্ত্বিরা এরে প্রভিষ্কান সাবকাশনিভাগিভাগি — কথা লক্তীভি। অপৌরবেরী কভিরশেবলাবপুত্রবাদনভিপ্ত নীরেনি সিভারী স্থাভিসভিনার্য — কিং শ্রেনিডি। ন
ক্রেভিয়াক্ষণাতে, নির্দ্ধোর্যাধিভি পূর্ববালার—শেকি। ক্রেভিনারেশাক পরে স্থারি, ভোজা
নির্ধ্বাননিভাগি — কিং ভারীভি। ভার নাবকাশনং পূর্ববালী নাধরতি ক্রিভীয়ক্রেভি।

পূর্মবাদিভপাদানাদর্শন্তরে পঞ্চনাঃ অন্তবনাবে নভোভবেদী ববীতি—প্রক্র ক্রেই জি।
ক্ষমভার্থবং, তথায়—জাজিতি। তটি ভজাবপাদানার্থবেদ পুরক্রভদারস্থানাদিভার্থঃ।
ক্রমবেশিনং পূর্মবাদী দ্বনতি—ন্মেডি। অপাদানার্থভাবদিভাপেরর্থঃ। ভবের স্কুটরতি—
আইন্মেশ্রেডি। অগতঃ সর্বাভ ডেডবজাডেরবছ ডেডি বজুং চপকঃ। ২

ভবি ভবৰপাৰ।বাৰ্থা প্ৰকাণ বৃধিবাৰী পূৰ্বেক্তিং সাহবভি—সৃষ্টিতি। সর্বাধিতাভজ্জনিৰ কান প্ৰভাগৰাই বন্ধ প্ৰসাধিত বিজ্ঞান প্ৰতিশিপাৰ।বিভিন্নি ন প্ৰকৃতি বিভিন্নি নিজাৱী আভিস্থিত বিজ্ঞান কৈ প্ৰসাধিত বৈশ্ব কোন ইতি। বংগাতং বন্ধ প্ৰস্থাভাগে বিৰক্তিবিভিন্ন আভিনিতাগৰা চৰকং ভালী নাৰ্বিক্তৃবৰ্তি—ইত্ত ত্ৰীক্তি। বিজ্ঞানিবন্ধ কৰিছত কৰিছত কৰিছত বিভাগৰাৰ প্ৰতিভাগী ভাগৰাৰ কৰিছত কৰিছত কৰিছত বিভাগৰাৰ প্ৰতিভাগী ভাগৰাৰ কৰিছত কৰিছত কৰিছত বিজ্ঞানিক কৰিছত কৰিছত কৰিছত বিজ্ঞানিক কৰিছত কৰিছত বিজ্ঞানিক কৰিছত কৰিছত কৰিছত বিজ্ঞানিক কৰিছত কৰিছত বিজ্ঞানিক কৰিছত কৰিছত কৰিছত বিজ্ঞানিক কৰিছত কৰিছিল কৰিছত ক

কথা বৰোক্তবাৰান্ত্ৰানাৰ্যানোপৰানিকঃ প্ৰশ্ন নিক্তানিকা গুৱা: ক্ৰেড নৰ্থবাৰ—
তেন্তে । প্ৰশ্ন প্ৰশ্ন ক্ৰিছিত্ব । প্ৰভিন্ন প্ৰশ্ন কৰি লিভবাত তৰ্পস্থানিক ক্ৰিছিড লোভ তৰ্পস্থানিক ক্ৰিছিড লোভ ক্ৰিছেড লোভ ক্ৰিছিড লোভ ক্ৰিছেড লোভ ক্ৰেছেড লোভ ক্ৰিছেড লোভ ক্ৰিছেড লোভ

ভ্যান্তাস্ক ক্রান্ত্রাদ্য।—'এই বিজ্ঞানময় তৎকালে কোষায় ছিল' ? এই প্রশ্নের প্রত্যুত্তর বলা হইরাছে; এবং সেই প্রশ্নার্থ নিরূপণ দারাই বিজ্ঞানময় আদ্বার বিশুদ্ধি ও অসংসারিও উত্যুই বলা হইরাছে। অভ্যপর 'কোথা হইতে এইরপে আসিল ?' এই প্রশ্নের উদ্ভৱ প্রদানের উদ্দেশ্ত ক্রতির অবতারণা হইতেছে। এখন শহা হইতেছে এই বে, বে লোক বে প্রামে বা বে নগরে বাস করে, সে লোক অন্তর মাইবার সময় সেই প্রাম বা সেই নগর হইতেই প্রস্থান করিয়া থাকে, কিন্তু অন্ত দ্থান হইতে করে না; ইহাই বখন লোকসিদ্ধ নিরুম, তখন "কৈব ভলান্ত্র" এই একটা মাত্র প্রশ্নাই উচিত; কেননা, বেখানে ছিল, সেখান হইতে আসমনই প্রসিদ্ধ; অন্ত দ্থান হইতে নহে; মৃত্রাং "কৃত এভলাগাং" ('কোখা হইতে এইরপে আসিল'; এই প্রশ্নটী নিশ্চরই নির্বাহ্ক হইতেছে। ভাল, ভবে কি ভূমি ক্রতির উপর অভিযোগ করিতেছ ? না—ভাহা নহে; ভবে কি না, দিতীয় প্রশ্নের অন্তর্জার আর্থ শুনিতে ইচ্ছা করি; এই ক্রেই আমর্থক)-লোবের উত্থাপন করিতেছি। >

ভাহা হইলে বলিভেছি, এবানে 'কুডঃ' পদের তপাদানার্বভা (কোষা

হইডে—এরপ অর্থ) গ্রহণ করা হইডেছে না; কারণ, অপাদান-অর্থ গ্রহণ করিলে প্রকৃতি দোব বটে, কিন্তু অন্তপ্রকার অর্থ গ্রহণ করিলে আর সে কোব ঘটে না। আছা, তাহা হইলে, এবানে 'কিনের জন্ত আগবন' এইরপ নিবিভার্থেই প্রান্ন হউক ? না—নিবিভার্থতাও হইডে পারে না; কারণ, প্রতিবচনে অন্তরণ দেখা বার; কেন না, প্রতিবচনে শোনা বার বে, অগ্নি-ফুনিজারির ভার আরা হইতেই সমন্ত অগতের উৎপত্তি হইরাছে; অবচ অগ্নিজ্বনিশ-জননে অগ্নিক কবনই নিবিভ কারণ নহে; পরন্ত অগ্নি তাহার অগাদানই বটে; সেইরপ পরসাল্লা বে, বিজ্ঞানবর আল্লার অপাদান, এ কবা "অলাদান্দন" (এই আল্লা হইডে) এই প্রতিতেও প্রভ হইতেছে। অভএব প্রতিবচনের সহিত সাব্য না বাকার "কুতঃ ?" এই প্রান্নের নিবিভার্থৰ ব্যাখ্যা করিতে পারা বার না। ২

ভাগ কথা, অপাদানপক্ষেও পুনক্ষক্তি দোৰ ত আছেই ; না—ইহাতে দোৰ হর না: কারণ, আয়াতে আরোপিত ক্রিয়া-কারক-ফলাম্বকতা প্রাঞ্জি দুরীকরণ করাই প্রশ্নবরের অভিপ্রেত। এখানে চুইটি বিষয় উল্লেখিড হইরাছে, একটা বিভার বিষয়, অপর্টি অবিভার বিষয়: তরাধা 'আত্মা विवाहे छेशानना कतिरव' 'बाबारकहे बानिरव' 'बाबविक् लारकहरे डिशानना कतिरव' अ नमख बहेन विद्याविषयत कथा, चात्र शुर्व्माफ शांक कर्च ७ छरकन नामक्रण ७ कर्चायुक यन नमछ रहेन पविचार विरह । हेहां बर्श व्यविद्याविकात्व वक्तवा विवत्र नमछ हे वना बहेबारह : बाव विचान विषय (विटक्रम , जाजान क्वम जिल्ला मात कना सरेनाह, किन बिर्नड कड़ा इह नाहे; त्रहे बाख्यक्रम निर्नाइत बढ़ाहे "उब उठ उर्वान" (चानि छात्रारक त्राकारण निव । अवः "क्लाविशानि" (नुवादेव) अदे কৰার উপক্রম করা হইরাছে। অতএব বিভার বিবরীভূত সেই ব্রছই बबात्व बनावबद्धार्थ विकाशनीय, चात्र उत्तवत्र वशाव-चत्रशि (व. कित्र), কারক ও কলাত্মক তেম্পুর অত্যত্ত বিশুদ্ধ অধৈত, তংপ্রতিপাদনই প্রতির অভিপ্ৰেত: সেই বছৰ ক্ষতি সেই অভিপ্ৰাৱাত্বারী চুইটি প্রারের উবাপন कविष्ठाहम-"क धर छना चकुर, कुछ धछनानार" देखि। ७

ভথব্যে বিশেষ এই বে, বাহাতে বাকে, তাহা অধিকরণ, আর বাহা থাকে ভাষা হর অধিকর্তব্য বা আধ্যের ; এই অধিকরণ ও অধিকর্তব্য (ভাবের) পরার্থ মুইটির ভেদ বা পার্থক্য সর্ব্যাই দেখিতে পাওরা বার ; এই প্রকার বাহা হুইতে আইলে বা বহির্গত হয়, তাহা অপধান, আর বাহা আইনে,

ভাষা কর্ত্তা কর্তাকেও অপাদান হইতে ভিন্নই দেবিতে পাওরা বার। এইরুপ लाक वावशात मुरहे बत्न शरेरा भातिक त्व, जन-जविकत्व शरेरा कि শাস্থা কোধাও ছিল, এবং খণর কোনও সাধনের সাহায্যে খত কোনও হান হইতে অন্ত আত্মা আনিরাছে; সেই আনভাই প্রত্যুত্তর বারা निवात्र कतिरा बहेरत ; [अहे कन अवारत तना बहेरलह (व,] अहे जाजा षष्ठ वा भृषक्वत मरह, षष्ठक हिनल मा, अवर षष्ठ बाखा (व, षष्ठ हाम हहेरल चानित्राह्, छाहाथ नहर अवर चाबार अरे चानमत चन्न कान नारनथ नारे, (বাছা থারা আত্মার সেরপ আগমন হইতে পারে 🐪 তবে কিনা, "ব্যাত্মান-ৰপীতো ভবতি" "নতা নোষ্য তলা সম্পন্নো ভবতি" ইত্যাদি শ্ৰুতি হইতে জানা বার বে আত্মা তথনও আপনাতেই থাকে; অন্ত কোন স্থান হইতে चाहराख ना, এवर "चवार चायनः" এই अठित वनिराज्य (व, चायात অতিরিক্ত শ্বতম কোনও বন্ধ নাই। কেন !--আস্থাতিরিক্ত প্রাণ প্রভৃতি আরও ত অনেক বন্ধ রহিরাছে ? না, সে কথাও বলিতে পার না; कात्रन, श्रानामि वश्रश्ननि अरे बासा रहेट्टरे श्रावृष्ट् च रहेत्राह्, [बठअर श्रान প্রভৃতি কোন বস্তই আত্মা হইত বতত্র পুণক্ পদার্থ নহে]। ठाहा কিপ্রকার ? वना इहेट्डिक्-

স যথোণনাভিস্তস্তনোচ্চরেদ্ যথায়েঃ কুন্তা বিক্ষুলিক।
ব্যাচ্চরস্তোবমেবাম্মাদাত্মনঃ সর্বে প্রাণাঃ সর্বে লোকাঃ সর্বে
দেবাঃ সর্বাণি ভূতানি ব্যাচ্চরন্তি, তন্তোপনিষৎ সভ্যাত্ম
সভামিতি, প্রাণা বৈ সতাং তেষামেষ সভ্যাম্ । ১০০ । ২০ ।
ইতি দিতীয়াধারেক্ত প্রথমং ত্রাহ্মণম্ । ২ । ৪ ॥

সন্ধান্ত্ৰাথ: প্ৰতৰ্ পৰ্বং দৃটাবেন জচরিত্ৰাহ—"সঃ বৰা" ইতি।
সঃ (গুলিছা) উৰ্বনাতিঃ (সৃতাকীটঃ) বধা তত্ত্বনা (প্ৰপ্ৰেতন প্ৰেণ)
উচ্চয়েং (উৰ্ছং পজেং), পাঃে (বছেঃ সকালাং) বধা ক্ষুদ্ৰাঃ বিক্লিছাঃ
(বছিকলাঃ) ব্যুদ্ৰৱন্তি (বিবিধাকারেণ প্ৰস্পত্তি), এবাৰেষ (উক্তদৃষ্টাত্ত্বৰাকার)
প্ৰাৰ্থকেৰ) অসাং (বিজ্ঞানবন্নত প্ৰতিবোৰপ্ৰাকালীলাং স্বন্ধপাং) সর্বে প্রাণাঃ
(বাক্প্রক্তন্তঃ) সর্বে লোকাঃ (প্র্যাধরঃ) সর্বে দেবাঃ (প্রাণাবিকাতারঃ
লোক্ষিকারত অন্নিপ্রক্তন্তঃ), সর্বাণি ভূতানি (ব্রজ্ঞানিত্তপর্বানি),
ব্যুক্তরন্তি (বানাকারং প্রাক্তবন্তি), তত্ত্ব পত্ত (সর্বকারণভূতত্ব ব্রহণঃ)

উপনিবৎ (রহন্তং নাম)—সভ্যস্ত সভ্যম্ইভি; [কিমিলং সভাং নাম ? ভদাহ] প্রাণাঃ বৈ (এব্) সভং (সভ্যনামানঃ); এবঃ (আত্মা) ভেবাং সভ্যম্ (সভ্যভাপাদকইভার্মঃ) ॥ ২০০॥ ২০॥

পুলান্দ্রাদে। উক্ত বিষয়ের দৃঢ়তা সম্পাদনাথ দৃষ্টাম্ব প্রদর্শন করিতেছেন;—প্রাসদ্ধ উর্ণনাভি (মাকড়শা) যেমন ব্যারীরোপের সূত্র ঘারা উদ্ধে যায়, এবং অগ্নি-হইতে যেরপ কুল কুল কুলিক সমূহ চতুদ্দিকে বিক্লিপ্ত হয়, ঠিক তজ্ঞপ এই আত্মা হইতে—বিজ্ঞানময় আত্মা ভাগরিত হইবার পূর্ব্বপর্যান্ত, যে আত্মা ব্যারকণে অবস্থানকরে, সেই আত্মা হইতে, সমন্ত প্রাণ, গ্রোভাদি ইন্দ্রিরর্গ, সমন্ত লোক—ভোগস্থান স্বর্গাদি, সমন্ত দেবভা—ইন্দ্রির ও ভোগস্থানের অবিগতিগণ এবং সমন্ত ভূত (প্রাণিগণ) নানাকারে—দেব, তির্যাক্ ও মনুষাদিরূপে উপ্রিত হয়, সেই আত্মার রহস্ত নাম হইতেছে—সত্যের সতা; প্রাণসমূহ সতা, ই আত্মা সে সমুদায়েরও সত্য, অর্থাৎ সত্যতা সম্পাদক॥ ১০০॥ ২০॥

শা হ্র ভাষ্য ম। তর দৃষ্টান্তঃ,—যথা লোকে উর্ণনাভিঃ লৃতাকীটঃ
এক এব প্রসিদ্ধঃ সন্ বায়াপ্রবিভক্তেন তরনা উচ্চরেৎ উদ্পাছেৎ; নচান্তি
তদ্যোদামনে বতোহতিরিক্তং কারকান্তরম্; যথা চ একরপাদেকবাদগ্যঃ
ক্ষুদ্রা অরা বিক্লিকাঃ ক্রটাঃ অগ্যবয়বাঃ ব্যাচরন্তি বিবিধং নানা বা উচ্চরন্তি;
ববেমে দৃষ্টান্তে কারকভেদাভাবেহপি প্রবৃত্তিং দর্শয়তঃ, প্রাক প্রবৃত্তেশ্চ বতাবত একবম্, এবমেব অবাদাস্থানঃ বিজ্ঞানময়স্য প্রাক্ প্রতিবোধাদ্ বৎ বরপন্,
তব্যাদিত্যর্বঃ। সর্ব্বে প্রাণা বাগাদয়ঃ, সর্ব্বে গোকাঃ—সর্ব্বাণি কর্মফলানি, সর্ব্বে
দেবাঃ প্রাণলোকাধিছাতারঃ অগ্যাদয়ঃ, সর্ব্বাণি ভূতানি ব্রন্ধাদিন্তবপর্যান্তানি
প্রাণিকাতানি—'সর্ব্বে এত আগ্মানঃ' ইত্যাহ্বিন্ পাঠে উপাধিসম্পর্কজনিতপ্রবৃদ্ধানাবিশেবান্থান ইত্যর্বঃ; ব্যাচরন্তি। >

ষশাদান্তন: স্থাবার-জন্সমং জগদিদশ্ অগ্নিবিন্দ্ নিশ্বদ্ বৃচ্চরত্যনিশন্, বিদিন্নের চ প্রনীয়তে জনবৃদ্ধার বদান্তকং চ বর্ততে স্থিতিকালে, তত্মান্ত আত্মনঃ বন্ধান উপনিবদিত্যতাতৈ,—
শান্তপ্রামাণ্যাদেতক্ষণগতো বিশেবাহ্বসীয়তে—উপনিগমন্তিত্বং নাম।

কানাৰুগনিবং ? ইত্যাহ—সত্যন্য সত্যনিতি; না হি নৰ্কত্ৰ চোপনিবং অনৌকিকাৰ্বত্বাৎ কৃষিজ্ঞেয়াৰ্বা, ইতি তদৰ্বনাচ্টে—প্ৰাণা বৈ সত্যৰ্, ভেৰাৰেব সত্যদিতি। এতদ্যৈৰ বাক্যন্য ব্যাধ্যানায়োভৱং ব্ৰাহ্মণৰন্নং ভ্ৰিছতি ॥ ২

তবতু তাবহুণনিবন্যাগানার উত্তরং ব্রাশ্বন্থর ; তত্যোপনিবন্ধিত্যুক্তন্ ; তত্র ন জানীরঃ কিং প্রকৃতভাদ্ধনো বিজ্ঞানময়ত পাণিপেবণোধিতত সংসারিণঃ শক্ষাদিত্ব ইয়মৃপনিবং ? আহোবিং অসংসারিণঃ কত্যচিং ? কিকাতঃ ? বদি সংসারিণঃ, তদা সংসার্থ্যের বিজ্ঞেরঃ ; তবিজ্ঞানাদের সর্বপ্রাপ্তিঃ, স এব ব্রন্ধশন্যাচাঃ,তবিক্তির ব্রন্ধবিদ্যেতি; অধ অসংসারিণঃ,তদা তবিষয়া বিভা বন্ধবিদ্যা, তদাচ্চ ব্রন্ধবিজ্ঞানাং সর্ব্বাতাবাপতিঃ ; সর্ব্ধনেতজ্ঞান্মপ্রামাণ্যাভবিত্ততি ; কিছু অনিন্ পক্ষে আন্মেত্যেবোপাসীত "আন্মানবেবাবেং—আহং ব্রন্ধান্তি ইতি পরব্রব্বক্ষপ্রতিপাদিকাঃ ক্রতয়ঃ কুপ্যেরন্, সংসারিণভাততাতাবে উপদেশানর্থক্যাং । বত এবং পণ্ডিতানামপ্যতং মহামোহস্থানন্ অনুক্রপ্রতিব্রন্ধবিষয়ন্, অতো ব্যাশক্তি ব্রন্ধবিদ্যাপ্রতিপাদকবাক্যের্ ব্রন্ধবিজ্ঞান্তনাং বৃদ্ধিবৃহৎপাদনায় বিচারিয়্রামঃ ৩

ন তাবং অসংসারী পরঃ—পাণিপেষণপ্রতিবোধিতাং শবাদিভূজোইবহান্তর-বিশিষ্টাৎ, উৎপত্তিপ্রতেঃ; ন প্রশাসিতা অপনারদিবর্জ্জিতঃ পরো বিশ্বতে; কলাং ? বলাং 'বল অপরিক্তামি'ইতি প্রতিক্তার, স্থাং পুরুষং পাণিপেষং বোধ-রিষা, তং শবাদিভোক্ত্ববিশিষ্টং দর্শরিষা, তক্তৈব বগ্রহারেণ সূব্ধ্যাধ্যববহা-তরমূরীর, তলাদেবাত্মনঃ সূব্ধাবহাবিশিষ্টাদ্ অগ্নিবিফ্লিক্লোর্থনাভিদ্টাভাভ্যাব্ উৎপত্তিং দর্শরতি প্রতিঃ—"এব্যেবালাং" ইত্যাদিনা। ন চালো অসহুৎ-পত্তিকারণ্যকরালে প্রতাংগ্তি, বিজ্ঞান্যরক্তৈব হি প্রকরণ্য। ৪

সমানপ্রকরণে চ প্রত্যন্তরে কৌবীতকিনাম্ আদিত্যাদি-পুরুষান্ প্রন্তত্য "স হোবাচ, যো বৈ বালাকে, এতেবাং পুরুষাণাং কর্জা, বস্ত চৈতৎ কর্ম, স বৈ বেদিতব্যঃ" ইতি প্রবৃদ্ধকৈ বিজ্ঞানময়স্ত বেদিতব্যতাং দর্শর্মিত, নার্বান্তরত্ত । তথা চ "আম্বনন্ত কামার সর্বাং প্রিরং ভবতি" ইভ্যুক্ত্যা, ব এবাদ্মা প্রিরঃ প্রসিদ্ধঃ, তত্ত্বৈব স্তইব্য-প্রোভব্য-নম্ভব্য-নিদিধ্যাসিতব্যতাং দর্শরতি । তথা চ বিজ্ঞোপন্তাসকালে "আ্মেত্যেবোপাসীত", "তদেতৎ প্রেরঃ পুরুষং প্রেরো বিভাৎ," "তদাদ্মানবেবাবেদহং ব্রদ্ধানীতি" এবমাদিবাক্যানামান্ত্র-লোম্যং স্থাৎ পরাভাবে । বন্দাতি চ—"আ্মানং চেবিশ্বানীরাদ্যনশীতি পুরুষঃ" ইতি । ৫ नर्जरपराह्म । अधामान्यराज्येक्य आर्थाएक महिन्छि, न परित्रांक्या पंचानिषय अवर्थाएक जरमी अरबादि । जया कोरीकिममाराय "म साव्य वि-विकामीक, बकावर विकार" रेखाविमा वामाविकवरेनबीरामुक्त कर्जु द्वय विकामीक समिति । ७

অবস্থান্তরবিশিটোংনংনারীতি চেৎ—অবাণি তাৎ, বা ভাগরিতে
শক্ষান্তর্ব বিজ্ঞানবরঃ, স এব সুব্রাখানবস্থারং, গতঃ অসংনারী পরঃ
প্রশাসিতা অতঃ তাহিতি চেং; ন, অস্ট্রাং; নক্ষেবংবর্দ্ধাং পরার্থে
দুষ্টোংক্তর বৈনাশিকসিভারাং। নহি লোকে পৌঃ তির্ভ্ গজ্ঞান্ বা পৌর্থাতি, শরানম্ব অবাহিকাতাররবিতি। তারাক্ত—বছর্দ্ধাে বা পরার্থঃ
প্রমানেনাবস্তাে তবতি, স ক্ষেনানাবস্থাররেশণি তছর্দ্ধা এব তবতি; স
চেৎ ভদ্ধাক্যং ব্যক্তিচরতি, সর্কঃ প্রমাণবাবহারো লুপোত। তবাচ ভাগবিদ্ধা
সাংব্য বীবাংস্কাদ্যঃ অসংসারিশাে তাবং বৃক্তিপতৈঃ প্রতিপাদরবি। ৭

সংস্তিবাংশি অগছৎপতিত্বিতিলয় জিত্তাক পুঁছবিক্ষান স্থাতাৰা দৰ্ভাবিতি চেৎ যৎ বছতা প্ৰশক্তন স্থাপিতং তবতা, শক্ষাদিভূক্ সংসাবোঁ বাবহান্তব-বিশিটো অগত ইহ কর্ডেতি, তলসং বতো অগছৎপতিত্বিতিলয় জিলাক পুঁছবিজ্ঞান জিলাক প্রত্যক্ষা সংসারিণঃ; স কর্মন্দানিঃ সংসারী মনসাশি চিন্তবিভূমনকাং পৃথিবাাদিবিক্যাসবিশিষ্টং অগৎনির্মিণুয়াৎ ? অতোছ-বৃক্তাবিতি চেৎ; ন, শাস্তাৎ; শাস্তং সংসারিণঃ "এবমেবান্দান্তময়" ইতি অগছৎপত্তানি কর্মরত; তমাৎ সর্কং প্রভ্রেমিতি স্থানর্থকেং পক্ষঃ। ৮

"বং সর্জ্ঞাং সর্কবিদ্" "বো শনারাপিপানে অভ্যতি" "অস্কো নহি
সন্ধ্যতে", "এতত বা অকরত্ব প্রশাসনে", "বং সর্কেন্ কৃতেনু তিওঁরস্কর্বাবাস্তঃ"
"সরকান্ পূরুষান্ নিরুষাত্যকামং", "স বা এব বহানজ আছা," "এব
সেন্ত্রিবরণঃ" "সর্কাত্ত বনী সর্কত্যেশানঃ" "ব আছা অপহতপাপা।
বিজ্ঞাে বিস্তৃতঃ" "তৎ তেলেহসজত" "আছা বা ইন্থেক এবাপ্র-আসীং"
ব লিপাতে লোকহুংবেন বাহঃ" ইত্যাদিশ্রতিশতেত্যঃ— স্বতেল্ডঃ "অহং সর্কাত্ত
প্রভাবে সন্তঃ সর্কং প্রবর্জতে" ইতি—পরোহস্কাসংসারী, প্রতিস্থৃতিস্তারেজ্যান্ত,
স্ব ভারণং ক্রমতঃ । ১

নতু "এববেৰাখালাখনা" ইতি সংসায়িণ এবে।ৎপতিং ধর্ণরতী্যুক্তব্ ; ব, "ব এবােংকর্ত্বর আকাশ্য" ইতি পরত প্রকৃতবাৎ "কথাবাখনা" ইতি মুক্তধ পরত্যৈব পরাবর্ণঃ। "কৈব ভবাংকুং"ইভাত প্রস্তৃত প্রতিবচনবেনাকাশ-



नगरात्रा शर पार्त्वाच्य -'व अर्थाश्यांवर पार्याणियाद्राणं हेकि। "नण त्यारा क्या नगरात्रा क्यकि", "प्यवसर्वव्यक्ष अवस् अवस्थाक्य व विच्छि" "आर्क्याव्यक्ष मध्यक्षिणः "आर्क्याव्यक्ष मध्यक्षिणः "क्याव्यक्ष मध्यक्षिणः हेकावि- व्यक्षिणः पार्याण्यक्ष श्री पार्याणः विच्छा पार्याण्यक्ष भ्रा पार्याक विच्छा विच्छा प्राचित्र श्री पार्याणः - अक्ष्य अव श्री प्राची क्ष्यक्ष व्यक्ष विच्छा विच

খন চ "খাখেতোবোপাসীত," "খাখাননেবাবেছবং ব্রখাখি" ইতি ব্রথবিদ্যা প্রখণ্ড); ব্রথবিদ্যক ব্রথবিদ্যানবিতি, "ব্রখ তে ব্রবাণি" ইতি "ব্রখ অপরিবানি" ইতি প্রারথক। ত্রেকানীবসংসারি ব্রখ করতঃ কারণ-বলনারাজতীতং নিত্য-গুরুত্বক্রমভাবন, ত্রিপরীক্ত সংসারী; ত্র্যাহবং ব্রখাখীতি ন গৃহীরাং। পরং হি বেবনীপানং নির্দ্ধঃ সংসারী আছবেন শরন্ করং ন লোবতাক তাং ? তথারাহং ব্রখাখীতি যুক্তম্ । >>

তথাৎ পূলোদকালগিন্বভিনৰভাৱৰপূপহারখাব্যাহ্যানহোগাহিতিঃ আরিরা-ধান্তবেত; আরাধনেন বিদিয়া সর্কেশিন্ত ব্রন্ধ তবতি; ন পুনরসংসারি ব্রন্ধ সংসাধ্যাশ্বরেন চিব্তরেৎ—অভিনিব শীতবেন, আকাশনিব বৃত্তিমকেন। ব্রন্ধাশ্বর-প্রতিপাদকর্মপি শাস্তব্যবিদ্যা তবিহাতি। স্কৃতক্শাস্থ্যাক্ষাহৈত্বি-মবিরোধঃ প্রাৎ। ১২

न, यश्व-वाक्यवारणावरेष्ठव व्यवनाववर्गाय, "गृतक्तक" देवि व्यक्का "गृहा गृहा व्यावित्य" देवि, "इत्याद कार अविकरणा वक्ष्य, वक्षण क्षर अविकरणा वक्ष्य, वक्षण क्षर अविकरणा वृद्ध, वक्षण क्षर अविकरणा वृद्ध, विकर्णावाण गृहेक वृद्ध नामानि क्षावित्यम् वर्षायण देवि नर्मणावाण गृहेक वृद्ध नामानि क्षावित्यम् वर्षायण दर्म वृद्ध ; क्षर आवाक्याणाः—"उर तृद्धे। कर्मवाक्ष वित्यम् वर्षाय वर्

बरेंक्वर क्रिकः नामार्थः, क्या भववास्त्रकः त्रशाविषय् ; क्या व मक्ति नामान

র্থকার্, অসংলারিকে চোপকেশারর্থকাং স্পটো কোবং প্রাঞ্চঃ। বলি ভাবৎ পরবাদ্ধা সর্বভূতান্তরাদ্ধা, সর্বদারীর সম্পর্কলনিতহুংধান্তভূতবভীতি স্পটং পরস্ত সংলারিক প্রাঞ্জন করে। কর্মনারিক প্রতিপাদিকাং প্রতরঃ কুপ্যেরন্, দ্বতরক, সর্বেচ ভারাঃ। অব কর্মকিৎ প্রাণশরীরসক্তরৈভূহিবং ন সম্বাজনইতি শকাং প্রতিপাদরিভূব্, পরবাদ্ধনং সাব্য-পরিহার্ব্যাভাবাৎ উপক্ষোন্দর্কন্তবোবো ন শকাতে নিবাররিভূব্। ১৪

শত্র কেচিৎ পরিহারবাচকতে,—পরমান্তা ন সাঞার ভূতেবল্পপ্রবিষ্টা খেন রূপেণ; কিং তহি ? বিকারভাবনাপত্নে। বিজ্ঞানান্ত্রনং প্রতিপেদে। স চ বিজ্ঞানান্ত্রা পরস্বাহতঃ অনক্তক: বেনাক্তঃ, তেন সংসারিষসম্বন্ধী, বেনানজ্ঞঃ, তেন অহং ব্রন্থেতি ধারণাহ্য: এবং স্ক্রিবিক্তম্বং ভবিষ্যতীভি। ১৫

তত্র বিজ্ঞানাশ্বনো বিকারপক্ষে এতা গতরঃ—পৃথিবীদ্রবাবদনেকদ্রবাসনাহারক্ত সাব্যবক্ত প্রবাদ্ধন একদেশবিপরিণামো বিজ্ঞানাশ্বা ঘটাছিবং;
পূর্বসংস্থানাবস্থক্ত বা পরকৈতদেশে। বিজ্ঞিয়তে কেশোবরাদিবং; সর্বা এব া
পরঃ পরিপ্রেং জীরাদিবং। তত্র স্থানজাতীয়ানেকদ্রবাসমূহক্ত কন্চিদ্ দ্রব্যবিশেষো বিজ্ঞানাশ্বরং প্রতিপশ্বতে বদা, তদা স্থানজাতীয়্রপাদেকদ্রমুপ্রবিত্রবেব, ন ভূ প্রমার্থতঃ; তদা চ সতি সিদ্ধান্তবিরোধঃ। ১৬

শব নিতাাবৃত্তি বিভাবর বাস্থপতোঃ বরবী পর শাখা। তক্ত তদবস্থ কৈ কাশে।
বিজ্ঞানাস্থা সংসারী, তদাপি সর্বাবর বাস্থপত রাদবর বিন এব শবর বপতো
লোবা খানে বা, ইতি বিজ্ঞানাস্থনঃ সংসারি হলোবেশ পর এবাস্থা সম্বাতে,
ইতীর বপানিই। করনা । কীর বং সর্বপরিশাবপক্ষে সর্বাক্ষতিস্থতিকোশঃ, স্ব্রানিইঃ। ১৭

"নিষদাং নিজিন্তং শান্তং," "দিব্যো কৃৰ্ব্য পুৰুষা স বাধাত্যকলো কৃষ্ণ,"
"আকাশৰৎ সৰ্মগতক নিত্যঃ", "স বা এব বহানক আত্মাকরোঃবরোঃবৃত্যঃ",
"ন আনতে ত্রিয়তে বা কলাচিৎ" 'অব্যক্ষোঃমৃত্যু" ইত্যাধিঞ্জতিত্বতিতানবিক্লভা এতে সৰ্বে পক্ষাঃ। অচলত প্রযান্তন একজেশপক্ষে বিজ্ঞানাত্মনঃ
কর্মকল-দেশ-সংস্করাত্বপত্তিঃ, পরত বা সংসানিত্বিভ্যুক্তর্। ১৮

गर्रोक्रकरहरनाः विकिन् निकार पृष्ठिका विकासका गरगरकीकि हरू, क्वारि गरकायहर-पृष्ठेत्वय कळ्ळाबिः, ७८गरगरतः । गरमाय-आरंगायहाय-प्रस्तुहर व्यक्तकाळाळिण्यनवयाका-विद्यादकः । वायायहरूकक विकासका नरमतृत् भवनाष्मम्ब्र्धारमाणावाययवायवः त्वायम्बृत्वाणाः व्यवस्थानस्य भवनाष्माता दृश्यिक्धाविः। >>

অধিবিক্লিলাবিষ্টাভঞ্জেন বোৰ ইতি চেং; ন, প্রভেজাপকভাং—
ন শাসং পরার্থাকর্ছ প্রস্তব্য কিং তহি ? ববাক্তানারজাভানাং
জাপনে। কিংচাতঃ ? পূপ্—অতো বত্তবি ; ববাক্তা ব্র্যার্থানিশহার্থবর্দা
লোকে প্র সভাঃ ; তদ্টাভোপায়ানেন তদবিরোব্যের ব্যৱহাং জাপরিচ্ছ প্রস্তাহ
শাস্থাং ন লৌকিকবন্ধ-বিরোধজাপনার লৌকিকবেন স্টাভর্শাহতে;
উপারীরনানোহিপ স্টাভোগনর্থকঃ ভাং, লাই ভিকাসকতেঃ ; নহি অভিঃ শীতঃ,
আদিত্যো ন তপতীতি বা স্টাভেশতেনাপি প্রতিপাদরিচ্ছ শক্ষান্, প্রধানাভ্যের
অন্তবাবিপ্তবার্ ব্যবহা । ২০

ন চ প্রমানং প্রমাণাররেণ বিরুষ্ঠে; প্রমাণাররাবিষয়মের হি প্রমাণাররং আপরতি। ন চ গৌকিকপদ-পদার্থাপ্ররেণবাতিরেকের আসমেন লক্ষ্য-মঞ্চাতং ব্যৱস্থাপমরি চুষ্; তথাৎ প্রসিদ্ধায়মন্ত্রতা ন শ্যক্ষ্য প্রমান্ত্রমন্ত্রার্থাংশিংশিকর্মনা পর্যার্থিতঃ প্রতিপাদরি চুষ্। ২১

"কুলা বিফুলিলাঃ" "মমৈবাংশঃ" ইতি চ ক্রয়তে অব্যতে চেতি চেৎ; ন, একত্বপ্রতারার্থপরবাৎ; অয়েহি বিজুলিলোংরিরেব, ইত্যেকভপ্রতারাহে। লৃটো লোকে; তথা চ অংশঃ অংশিনৈকভপ্রতারাহঃ; তাত্রবং সতি বিজ্ঞানাত্মনঃ পরমাত্ম-বিকারাংশ্যবাচকাঃ শকাঃ পরমাত্মৈকভ-প্রতারাতিবিৎসবঃ। ২২

উপক্রমোপসংহারাচ্যাক.—স্কাস্থ হি উপনিবংস্ পূর্ববেকরং প্রতিজ্ঞার দৃইাতৈইচ্ডিক প্রযায়নো বিকারাংশান্তির অপতঃ প্রতিপান্ত পুনরেকরমূপসংহাত ; তত্ববা ইতৈব তাবং— ইবং স্কং ব্যরবাদ্ধা ইতি প্রতিজ্ঞার
উৎপতিছিতিলয়তেত্দৃইাতৈর্বিকারবিকারিয়াভেকরপ্রতারহেত্ন্ প্রতিপান্ত
"অনৱর্থবান্ত্র" "অর্থাদ্ধা এম" ইত্যাপসংহরিষ্ঠি ; তথানুপ্রবোশসংহারাভ্যান্ অন্নর্থো নি-চীয়তে—প্রথান্তিক-প্রতার-প্রতিত্তে উৎপতিছিতিলয়প্রতিপান্তানি বাক্যানীতি ; অভ্যা বাক্যভেকপ্রস্কান্ত। ২০

সর্বোগনিবংশু বিজ্ঞানান্ত্রনঃ পরবান্তনৈককপ্রতারে বিবীরতে—ইভাবি-প্রতিপত্তিঃ সর্বোন্প্রিনন্দান্তিনান্ ; তবিব্যেকবাক্যবোগে চ সভবতি উৎ-পভাবিবাক্সানাং বাক্যান্তরকল্পনান্তাং ন প্রবাণনতি ; ক্যান্তরক কল্পনিতব্যং তাৎ ; তথাত্ৎপভাগিকতর আবৈক্তপ্রতিপাদনপরাঃ। ২৪

वय ह मध्यशहरिक बाबाहिकाः मध्यहरूए-क्किर किम बाक्यूया

वाक्यां अय वांणिक्णांयपित्वा वांष्णृतः मरविद्यः; माह्न्या वर्षणांयणां वांषणां विद्याणां वांषणां विद्याणां वांषणां विद्याणां वांषणां विद्याणां वांषणां विद्याणां वांषणां विद्याणां वांषणां वां

আত্র বালপুত্রত বালপ্রতারবদ্ বন্ধপ্রতারো দৃচীতবতি—'বিফ্লিলবন্ধের পরসাধ্ ব্রহ্মণা এই ইত্যক্তে, বিফ্লিলত প্রাগরেরংশা দরোক্ষদর্শনাং। তত্মাদেককপ্রতারদার্ভার স্বর্ণমণিগোহারিবিফ্লিলদৃটারাঃ, মোংপজ্যাদিকেল-প্রতিপাদনপরাঃ। সৈত্ববন্ধন প্রক্রেকরসনৈর ব্যাবধারণাং "এক-বৈবাল্লটবান্ন" ইতি চ—বদি চ ব্রহ্মণন্ডিরপটবদ্ ব্রহ্মসমূলাদিবক্ত উৎপ্রতালকেশর্মবিচিত্রতা বিভিগ্রাহরিবিতা, একরসং সৈত্ববন্ধনার ব্যাহ্মশ্বিতিরতা বিভিগ্রাহরিবিতা, একরসং সৈত্ববন্ধনার ব্যাহ্মশ্বিতির নাপস্মহরিভাই, "একবৈবাল্পপ্রইবান্ন" ইতি চ ন প্রাবোল্যত "ব ইহু নানের পরতি" ইতি নিক্ষাব্যনং চ। ২৬

ज्यात्मकक्षरेशकक्षश्रद्धात्र-मार्जादेवर गर्सादमास्त्र ७६शकिविधिनवामिकक्षनाः, न ठ६श्रद्धात्रकद्भावः। न ठ नित्रद्यवश्र श्रद्धात्मानः गरमादिनः गरमादिक्ष-त्मकक्षना काषाः। चट्डाक्टलकार श्रद्धात्मनः। चत्मक्ष श्रद्धाक्षरम्न-गरमादिककक्षनाद्वारं श्रद्धव गरमाद्योठि कक्षित्रर च्टावरः। २१

শ্বন পরোপাধিক একদেশঃ পরস্ত ঘটকরক। ছাকাশবং; ন তথা তত্র বিবেকিনাং পরসাধ্যকদেশঃ পৃথক সংবাবহারতাপিতি বৃদ্ধিকং-পদ্যতে। শ্ববিবেকিনাং বিবেকিনাঞোপচরিতা বৃদ্ধিক টেও; ন, শ্ববিবেকিনাং মিখ্যাবৃদ্ধিখাং বিবেকিনাং চ সংব্যবহারমাত্রাবস্থমার্থাং — হথা ক্তলো রক্তনাক: প ইতি বিবেকিনাশি কথাচিং ক্তনা রক্তনা চাকাশস্ত সংব্যবহারমাত্রাবস্থমার্থিং প্রতিপদ্যতে ইতি, ন পরমার্থতঃ ক্তনা বা শাকাশো তবিকুমুর্থতি। শতো ন পভিত্রেশ্বরপ্রশ্নিত-

পভিবিষয়ে প্রস্থানাংশ্যেকরেশকরেশিবিকারবিকারিকর্মনা কার্য্যা, সর্বাক্ষনাপনরনার্থসারপরবাৎ সর্বোপনিব্যান্। অতো হিস্তা সর্বাক্ষরা-বাকাশক্ষেব নির্বিশেষতা প্রতিপক্ষ্যা—"আকাশবৎ সর্বাপক্ষ্য নিত্য্য", "ন নিপাতে লোকহুংখন বাহুঃ" ইত্যাধিক্রতিশতেতাঃ। ২৮

म चाचामर त्रचित्रकार क्याउर—केशचकरेगाती नैटिकरणम्, व्यकानाचरक वा प्रवित्रि व्यवकरणम्, प्रक्रंक्यनाशमध्यादिगात्रवादः गर्त्साशमित्रवादः । व्याद मामद्रत्याशाधिनित्रिका व्यवचाद्रमात्रवर्षिति गर्त्सं गावदाद्याः—"स्रशः स्रशः व्यविद्याता वकृतः" "प्रक्रीति स्रशाति विविद्य वीद्रः, मामामि स्रवाधिवसम् वसार्कः हेट्यावयास्मिद्यवर्त्द्याः, म यव चाचनः मश्माति-चम् ; चनक्रकाक्याधाशावित्रस्यात्रक्रमित्रद्वक्रक्षिक्वित्रकृत्वाद्यावर्त्त, म शब्द-वाद्यादः । २>

"ব্যায়তীৰ লেলায়তীৰ", "ন কর্মণা বর্ষতে নো কনীয়ান্।" "ন কর্মণা লিপাতে পাপকেন", "সমং সর্কেন্ন ভূতেনু তিভ্রন্তং পরবেশ্বরম্।" "শুনি টেব খপাকে চ" ইত্যালিঞ্জিভারিভারেতাঃ পরমান্ধনোহসংসারিতৈন; অভ একলেশঃ বিকারঃ শক্তির্কা বিজ্ঞানাস্থা অক্টো বেতি বিক্রম্বিভূং নিরবর্ষন-স্বাস্থ্যপথ্যে বিশেষ্তো ন শক্ততে। অংশাদিক্রতিস্বৃতিবালাকৈকরার্ধাঃ ন ভূতেনপ্রতিপাদকাঃ, বিবক্ষিতার্থেকবাক্যবোগাদিতাবোচাম। ৩০

সর্বোপনিবলং পরষালৈকভ্রজাপনপরতে, অথ কিবর্বং তংপ্রতিক্লোহর্তো বিজ্ঞানান্তকেঃ পরিকল্পতে ? ইতি, কর্মকাওপ্রাথাপাবিরোধপরিহারালে-ত্যেকে ; কর্মপ্রতিপাদকানি হি বাক্যানি অনেকজিল্লা-কারক-কলভাক্কর্মা-প্রশানি, বিজ্ঞানান্তভোভাবে হি অসংসারিও এব পর্যান্তন একতে, কথ-মিইকলাস্থ ক্রিয়াস্থ প্রবর্ত্তরেইং অনিইকলাভ্যো বা ক্রিয়াভ্যো নিবর্ত্তরেইং ? কন্ত বা বছন্ত যোকারোপনিবলারভ্যেত ? অপি চ পর্যাইন্ডক্ষবাহিপক্ষেক্ষরে পর্যাইন্ডক্ষবাহিপক্ষেক্ষরে পর্যাইন্ডক্ষবাহিপক্ষেক্ষরে গ্রহণক্ষর ? বছন্ত হি বছনালারোপ্রেশং, ভক্তাবে উপনিবজ্ঞান্তাং নিবিবর্ত্তব । ৩১

वर छहि छेनमिरवादिनक्छ कर्चकाञ्चादिनस्य हारा-निव्हाद्धाः नवानः नवाः—स्म एकाकास्य कर्चकाञ्चः निवानक्षमवाद्यामः म मञ्चल बावानाः अचि, अरवानमिरवर्णः। १२० छहि, यष्ठ बावास्य वार्यविद्यात्वः नाजि, उरैष्ठय कर्चकाञ्चाद्य श्रावानाम् । केनमिरवाः छू बावानाक्षमवादाः वार्यविद्यात्वः अरवः—हेकि वाक् बावानाम्। म विक्रमंकाञ्चः बावानः नवधानार छनिष्ट्रार्रिङ ; न वि धारीनाः आकाधाः आकानास्ति, न आकान-इक्ति ह देखि । ०२

व्यक्तमारिव्यवानिव्यक्तित्वाक्र—म (क्यनपूर्णनिवास) वरेषक्यः व्यक्ति-गाम्बद्धाः चार्विविचाकः कर्मकाक्ष्वावानाविचाकक कूर्ववि, व्यक्तकानिनिक्तिक-क्ष्मविक्तकार्दिः व्यवादेगक विक्रकार्वः ज्याम्ब्रामानार्यस्वानिवनाम्, क्ष्मार्वका ना स्वः म स्वत् वरेषक्यविक्तवार्वका। ००

न, উट्छाउउवार। श्रवानक हि श्रवानववश्यानक वा श्रवारभावनीक्रभावनिविद्यम् पक्षा १०२, उद्योगीनाः श्रावानाश्यम् रचार्ता श्रावातः ।
किर ठाकः ? यति ठावक्षिनियाः उद्यक्षकश्राठिशिष्ठ-श्रवाः कृषंष्ठि, कथवश्रवानः उदयक्षः ? न कृषंद्याद्वि १०६-स्थाधिः चैठव् हेिः । म उवारमवरः
वत्तन् वक्षयः —উপনিংহ श्रावाना श्रीठिद्यवार्थः उदर्शः वाकाम्पनिवदश्यावानाश्रीठिदयः किर न कर्त्रार्श्यः पाधवां क्षभश्रावन्त्रः भ्रव कर्त्राठि, विष कर्त्राठि
छवक् उत्रा श्रीठिदयार्थः श्रीवाः उववाकाम्, भ्रीवन्त क्षभश्रकानरका अरवः ।
श्रीठिदयः विष्ट । १०३

নৰত্ৰ প্ৰত্যকা বৰাক্যে উপনিবংপ্ৰমাণ্যপ্ৰতিবেধাৰ্থপ্ৰতিপজিঃ অৱে) চ স্থাপপ্ৰকাশনপ্ৰতিপজিঃ প্ৰমা : কন্তৰি তবতঃ প্ৰছেবো ব্ৰক্ষৈক্তপ্ৰতায়ে প্ৰমাং প্ৰত্যকাং কুৰ্মতীব্ উপনিবংসু উপশতামানাসু ? প্ৰতিবেধাসুপপতেঃ । শোক-মোহাজিনিয়ক্তিক প্ৰত্যকং কলং ব্ৰক্ষৈকৰপ্ৰতিপত্তিপাৱল্পায়জনিত্ৰিতাবোচাৰ। তথাছক্তোভৱৰাৰ্থনিবলং প্ৰতি অপ্ৰামাণ্যকা তাৰ্যাভি । ৩4

যভোক্তং বাৰ্থবিষাত্করন্তাদপ্রামাণ্যমিতি; তদুপি ন. চম্বপ্রতিপ্রের্জানকাভাবাং। ন হি উপনিবল্পো ব্রক্তিক্ষেবাহিতীয়ন্, নৈব চ,—ইভি প্রতিপত্তিরন্তি—বধা অগ্নিক্রঃ শীতক্তেত্যমান্যান্য বিক্তার্থন প্রতিপত্তিঃ। অভ্যাপন্য চৈত্রবাচান; ন তু বাক্যপ্রামাণ্যমন্য এব প্রায়ঃ—বহুত একস্ত বাক্যভানেকার্থন্য; সভি চানেকার্থনে বার্থন্য ভাবে, তহিষাভক্তি বিক্তর্ভাহজ্যেহর্থ্য।—ন ক্তেৎ বাক্যপ্রমাণকানাং বিক্তমবিক্তর্তেক্যং বাক্যম-ক্ষেত্রর্থং প্রতিপান্যতীত্যের সময়ঃ; অবৈক্তান্তি একবাক্যতা। ৩৬

দ চ কানিচিত্পনিব্যাক্যানি ত্ৰহৈকত্ততিবেশং কুৰ্মতি। বনু নৌকিজং বাক্যমু—অন্নিজং শীতক্তেতি, ন তত্তৈকবাক্যতা, তদেকবেশক প্ৰীয়াণান্তঃ-বিন্যান্ত্ৰানিত্ৰাৎ—অন্নিঃ শীত ইত্যেতকেশং বাক্যমু; অনিক্ষক ইতি ছু প্ৰায়াণান্ত- রাছভববারকণ্, স ভূ বরবর্ণাববোধকণ্ ; অতো স অধিঃ নীত ইত্যুকেলৈকু-বাকাতা, প্রবাণাভরাছভবতারলেনৈবোপজীবভাং। বভূ বিজ্ঞার্থ-প্রতিপার চরিছং বাক্যমিতি বস্ততে, তং দীতোজপলাত্যান্ অধিগরসামানাবি-করণাপ্রয়োগনিবিতা ত্রাজিঃ ; স বেবৈকত বাক্যভানেকার্বছং দৌকিকত বৈধিকত বা । ০৭

ৰজ্ঞোজ্য-কৰ্মকান্তপ্ৰাৰাণ্য-বিষাতক্ষুপনিবৰাক্যমিতি; ভয়, অভাৰ্যবাং। ত্ৰমৈক্ষপ্ৰতিপাদনপরা হি উপনিবদঃ ন ইটাৰ্থপ্ৰাপ্তে নাৰ্যোপ্তেশ্বং,
ভিষিত্ব বা পুক্ষনিয়োগং বারম্বন্ধি, অনেকাৰ্যবাহুপপভেষে। ন চ কৰ্মকান্তবাক্যানাং বার্থে প্রমা নোংপভতে; অসাবারণে চেং বার্থে প্রমাষ্ উৎপাদয়ভি
বাক্যম্, কুডোঃভেন বিরোধঃ ভাং। ০৮

ব্ৰহৈণৰে নিৰিবছৰাৎ প্ৰবা নোংপছত এবেতি চেং; ন, প্ৰত্যক্ষাৎ প্ৰবায়াঃ। "বৰ্ণপূৰ্ণবাসাভাগে বৰ্ণকাৰো বজেত।" "ব্ৰাহণো ন হত্তবাঃ" ইত্যেববাদিবাকোতাঃ প্ৰত্যক্ষা প্ৰবা কাৰ্যবানা, সা নৈব ভবিস্তৃতি, বহুপিনিবলো ব্ৰহ্মকন্মং বোধ্যিক্ষরীতানুষান্; ন চানুষানং প্ৰত্যক্ষিত্ৰেৰে প্ৰাৰাণ্যং লততে; তথাদসন্বেকৈতন্ত্ৰীয়তে—প্ৰবৈধ নোংগছত ইতি। ঞ

লপি চ. বধাপ্রাপ্তবৈধাবিত্বা-প্রত্যুপত্যাপিতত ক্রিরাকারককলতা-প্রথমে ইটানিট্রোপ্রিপরিহারোপারদাবাতে প্রবৃতত তবিশেষকানভত্তা-চকাবা প্রতিঃ ক্রিরাকারকফলতেমত লোকপ্রদিবত সত্যতাবসভ্যতাং বা নাচটে, ন চ বার্রতি, ইটানিট্রকপ্রাপ্রিপরিহারোপারবিধিপর্ভাৎ। ৪০

वर्षा कार्याव अद्रवा अधिः कार्यानाः विशाणान्यञ्चरः गठाणि वर्षा-आखारम्य कार्याञ्चलागाः उरमाननाञ्चय विषयः न क्—कार्यानाः विशाणान-अञ्चलकामर्यक्रणस्कि । विषशिकः उत्रा निठाशिरहाजानिगाञ्चलि विशाणाम्यञ्चरः कित्राकादकरञ्चर वर्षाभावस्यागाः देहेवित्यभावित् व्यक्ति-हेवित्यशिव्यादः वा कित्रणि आसाणमः शक्षः व्यक्तियाज्ञोनि कर्षापि विशयः, व व्यवणानगानश्चरियम्बिति न श्ववर्ष्यः,—वश्च कार्याप्। म क शूक्या न अवर्ष्यम् व्यवणानवः, वृद्देषारः,—वश्च कार्यमः। विणवणास्य कर्षाधिकाः देखि एषः । म, अरेक्कपविणाताः कर्षादिकाःविराश्चलकारः। अरुक्य अरेक्करः विज्ञवन्नाक्तियान्त्रः। क्रुक्षर्यक्रमाकायस्य-शिव्याः केरुक्य (यिक्वर्षाः। 8)

पूक्रवचात्रानाविदेविद्याक-वातका वि भूक्यांनार देखा त्रानावक

विक्रियाः । ज्ञान वाश्विवद-प्राणाञ्चनक्रत्यस्या म नाप्तर निवर्षतिष्ठ्रः नञ्जन् । वाणि चञ्चावर्थः वाश्विवद्वविद्यञ्चरम् विवर्षतेष्ठ्यः नञ्जन् । क्ष्यः नाप्तारक्ष्यवर्थः ज्ञान्यक्ष्यः ज्ञान्यक्षयः विवर्षद्वः विद्यानद्वः । व्यादः वृक्ष्यक्षयः विद्यानद्वः । व्यादः वृक्ष्यक्षयः विद्यान्यक्षयः विद्यान्यक्षयः । व्यादः वृक्ष्यक्षयः विद्यान्यक्षयः । व्यादः वृक्ष्यक्षयः विद्यान्यक्षयः । व्यादः वृक्ष्यक्षयः विद्यान्यक्षयः । व्यादः वृक्ष्यक्षयः विद्यान्यक्षयः । व्यादः वृक्षयः विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षयः विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षयः विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्यविद्यविद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षयः । विद्यान्यक्षय

তর পুরুষাং বরবের বধারুতি সাধনবিশেবের গ্রবর্তনে পান্তর সবিত্বআদীপাদিবহুদান্ত এব। তথা কন্সচিৎ পরোংশি পুরুষার্বঃ অপুরুষার্ববহুবভাসতে; বন্ধ বধারতাসং, স ভধারণং পুরুষার্বং পপ্রতি: ভদুদ্ধশানি
সাধনাস্থাপাদিৎসতে। তথা চার্ববালোহশি—"এরাং প্রাঞ্জাপতাাং প্রনাণতে
শিতরি ব্রহ্মর্বার্ক্," ইত্যাদিং। তথাৎ ন ব্রহ্মকরং জাপরিস্করো বেদান্তা
বিবিশারক্ত বাংকাং। ন চ বিবিশার্থেতাগতা নিবিষয়ং ক্যাৎ, নাশি
উক্তকারকান্ধিতেকং বিবিশার্থ উপনিষ্দাং ব্রক্ষেকরং প্রতি প্রামানাং
নিক্তরতি; ব্রবিষয়পুরাণি হি প্রমাণানি লোমান্দিবং। ৪০

তত্র পণ্ডিতপ্রক্রাঃ কেচিং প্রচিত্তবলাং সর্ক্ষাং প্রমাণ্ডিতরেতরবিক্রম্বং বছরে, তথা প্রত্যক্ষাধিবিয়োগমণি চোদরত্তি ত্রক্ষৈক্ষে,—শব্দাদরঃ কিল লোক্রানিবিরা তিরাঃ প্রত্যক্ষত উপলতারে; ত্রক্ষৈক্ষাং ক্রবতাং প্রত্যক্ষাবিরাং ক্রানিবরা তিরাঃ প্রত্যক্ষিত শ্বাহাণ্যকারঃ কর্তারক ধর্মাধর্মরাঃ প্রতিশরীরং তিরা অনুষ্ঠীরত্তে সংসারিণঃ; তত্র ত্রক্ষৈক্ষাং ক্রবতামমুখানবিয়োধক, তথাচ আলম-বিরোধং বদরি—"প্রামকাষো বন্ধেত", "পশুকাষো বন্ধেত", "পশুকাষো বন্ধেত", "পশুকাষো বন্ধেত", ক্রমিকাষো বন্ধেত" ইত্যেবমাদিবাক্যেতাঃ প্রায়পশুস্বাদিকাষান্ত্রং নাধনাতক্রমিতারক্ষ তিরা অবংশারে। ৪৪

चार्त्राहारक—त्व कृ कृष्ठकृतिवादाकत्वना ताचनाविवनीशनमा जन्नकम्मनीमाः चानवार्वविच्छित्रनच्यवात्रवृष्टतः हैवि । क्षत् ? स्त्रात्रातिषारेतः नचाविविः श्राक्षक केननकावारेनत्र चन अञ्चर विक्रपारक—हैवि वनरका वक्षताः— किर नचानीमार (करनाकारेनक्यर विक्रपारक ? हैवि ; चन न विक्रपारक ; में कृषि श्राक्षविरत्रायः । ३०

বলোক্তব্ প্রতিশরীরং শব্দান্তাপদভারে৷ বর্ষাবর্ণরোভ কর্তারো ভিন্না

णक्षीतरकः । ७०। व्यक्तिकरक जक्षानविद्यायः −देकिः विद्याः देकतक्ष्यीतक-देकि व्यक्ष्याः । ००

শব বৰি প্রয় — নবৈরি বাভিরস্থান কুশলৈরিতি; কে ব্রবস্থান কুশলাঃ ? ইত্যেবং পৃটানাং কিব্তরস্থ পরীরে জিরমন আশ্বাহ ত প্রভ্যেকর সুমান-কৌশল প্রভাগানে, শরীরে জিরমন সংসাধনা আশ্বানে। ব্যবস্থান কুশলাঃ, অনেক কারক সাধারাৎ জিরাগায়—ইতি চেং। ৪৭

अवर छोई सम्मानकोनाम ज्यठावानकवश्यम्यः ; सामक्कावकमाना हि क्रिविट ज्यदिवाम् । भन्ने द्वाम्यानः । ज्ञान्यानः । क्रियाः ना पन्नोद्वित्रयुव-सामानदिनः कावरेकवासकईका निर्मातंद्वित्रययाम् । छ्ञ 'ववस्थानक्ष्याः' हेट्छावः वयदिः पन्नोद्वित्रययः नावना सामानः आख्याकः विवयम् । व्यवस्थानक्ष्याः हेट्छावः वयदिः पन्नोद्वित्रययः नावना सामानः आख्याकः व्यवस्थानक्ष्याः । हि सामानद्ययं सामानिः मानिक्ष्यम् । व्यवस्थानक्ष्यः । व्यवस्थानक्ष्यः । व्यवस्थानक्ष्यः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानका सामानिः । व्यवस्थानिः । व्यवस्थानिः । व्यवस्थानिः । व्यवस्थानिः । व्यवस्था

তত্র কিম্পুনিনোতি ? কেন বা লিজেন ? ন হি আজনঃ সতো তেলপ্রতিপাদকং কিছিৎ লিজনতি, বেন লিজেনাস্থতেবং সাধ্যেৎ । বানি লিজানি আজ-তেলসাধনার নামত্রপবিত্তি উপজ্ঞানি, তানি নামত্রপপতানি উপাধর এবাজুনঃ
—শটকরকাপবারকভূজ্জিলানীবাকাশত । বল আকাশত তেললিং পত্রতি, তবা আজনোহপি তেললিং সভেত সঃ; ন হাজনঃ পরতো বিশেববভূগেশত্রতাকিকশতৈরপি তেললিজ্যাস্থনো বর্ণবিত্তুং শকাতে; স্বত্ত ভূরাহণ-নীত্রেব, অবিব্যবাহাজনঃ । ৪৯

ষ্বং পর আশ্বর্থবেনাভূপগঞ্চি, তক্ত তক্ত নামন্ত্রপাশ্বকভাভূপগনাৎ
নামন্ত্রপাত্যাং চ আশ্বনো গুরাভূপগনাৎ, "আকাশো বৈ নাম নামন্ত্রপাত্তানির্কাহতা, তে বছরুরা, তত্ব অলা ইতি প্রক্রে, "নাম-রূপে ব্যাকরবাণি" ইভি
চ ; উৎপত্তিপ্রবান্ত্রের হি নামন্ত্রপে, তরিসক্রণং চ ত্রন্ধ, অতঃ অভ্যানতৈবাবিষয়তাৎ কুতোহভূমানবিরোবঃ। এতেন আগমবিরোবঃ প্রভূজ্য । ৫০

বছজং ব্রবৈক্ষে বলৈ উপদেশঃ, বল্ল চোপদেশগ্রহণকলন্ব, ভবভাবাদেশবাপদেশানর্থকারিভি; ভবপি ন; অনেক্ষারক্যাব্যমাৎ ক্রিরাণাং কলোভো ভবভি। একবিন্ ব্রমণি নিরুপাবিকে নোপদেশঃ; নোপদেশ্রা, ন চোপদেশগ্রহণকলন্ব; ভবার্থনিবরাক আনর্থকানিভোভরজ্যপরভবেব।

শ্ব শ্বেক্তারকবিবরানর্বভাং চোডতে; ন, বভোংজ্যুপননবিরোধালান্ত-বাহিনান্। ০>

ভবাৎ ভাকিক-চাইভইরাকাপ্রবেশ্বন্দ্র অভয়ং হুর্গবিষ্ধ্ অয়নুছাগরাং
শাহন্ অলপ্রনাদরহিতেত—"করং বনাবনং দেবং বনভো আত্মইতি",
"কেবৈর্ত্রাণি বিচিকিৎসিতং পুরা," "নৈবা তর্কেব বতিরাপনেয়া"—বরপ্রনাদনভাত-প্রভিত্তিবাকেতাত, "তাত্মতি ভবৈম্বতি তফুরে ভবতিকে"
ইভ্যাদিবিক্রভবর্ষসম্বাহিত্রকাশক-মন্তবর্শেতাত। দীতাসূত - "মংস্থানি সর্ককুতানি" ইভ্যাদি; তমাৎ পরক্রমবাতিরেকেব সংসারী নাম নাভম্বত্রমতি।
ভবাৎসূষ্ট্টাকে—"ক্রম্ব বা ইম্মক্র আসীৎ, ভলাস্থান্ধেবাবেৎ—অহং ক্রমানীতি"
"নাভদভোংতি ত্রই নাভদতোংতি প্রোত্" ইত্যাদিকতিবতেতাঃ। তথাৎ
পরত্রেব ক্রমণ্য সভাত্ম সভাং নাম উপনিবৎ পরা ১০০২০ঃ

চীক্ষা—বৰ্ষজাভাৰভাগিবিং পৰিব। ব্ৰহৰি নাৰি স্থানি না। কিবাৰতো ব্যাৰেশীন হাংপতিবৰ্ণনাথ্যভাগেহিল। ব প্ৰাণাছাংপতিবিধি পৰতে নস্তং ক্ষপ্ৰাইন্তি। বংগ্ৰাজ্যবৰ্ষাক্ষিতা ক্ষলা পৰি বিভিন্ন ক্ষিত্ৰ ইন্তি। বাজাপ্ৰবিভ্নাক্ষিত্ৰ ব্যাজ্যবৰ্ষাক্ষিত্ৰ। ক্ষাৰ্থকা ক্ষিত্ৰ ভ্যাৰে ব্যাজ্যবৰ্ষাক্ষিত্ৰ। ক্ষাৰ্থকা ক্ষিত্ৰ ভ্যাৰে ব্যাজ্যবৰ্ষাক্ষিত্ৰ। ক্ষাৰ্থকা ক্ষাৰ্থকা ক্ষাৰ্থকা ক্ষাৰ্থকা ব্যাজ্যবৰ্ষাক্ষিত্ৰ। ক্ষাৰ্থকা ক্ষাৰ্থকা ক্ষাৰ্থকা বিভাগ ক্ষাৰ্থকা বিভাগৰ ক্ষাৰ

ততেতান্তৰভাগী বাজেই—অন্যাসিক্ত্যাসিক। । বস্থ প্ৰভাগ পু ১৯ এখণো বাজকে পু শ্ৰাক্তবেশি সংস্থ কিবিভাভ অন্তৰিবছৰাৰ চলং ক্লিছে। আৰু-শ্ৰাক্তবিভিশ্ন কৰা কিবীক্তাবিভাগিকাং —এড ক্লেডি। ১

কোণি নোজং অভিবয়ন বভ-ভিং কলৈকান্ত্ৰনিতি অৱত, কত বিবরজুয়নিতি বাবং । ব বি বেন কেবৰতিলৈ লায়াং এটা অভিবজ্ঞান বিভাগে । 'অবণাধাণি বয়তিবো ন অভাগ উভ্যাধিকতে বিভাগে । বিচায়-বোলকস্কা তৎকাৰ্য্য বিভাগস্থানহৈছি—কক্ষ ইন্দ্রি। ক

সংশয়াদিনা বিচারকার্যাভাষরভার্যা পূর্বাপকরভি—স জ্ঞান্তান্তি। অসংকর্তা হীবলে বিবভাতে, এছতে চ সুমূর্তিবিশিষ্টাব্দীনান্দশলবাচানে, ভলাগীবলা জীবানভিতিতে নাভীভার্য। ভবের প্রপ্তাতি—ক্ষেত্রালিকা। প্রকৃত্তেংশি বাবে অসংকারবছনীবর-তৈয়ান ক্ষরতিয়ানভাষে—স চ্যেতি। ভল প্রকারবিধার ক্ষেত্রান্দলিক। চ

काष्यवनावित कीर कराज वनश्वाहंगार-ज्यामक्षकत्रात छिछ। क्या-वरण १ वीर्यवरहणः वनशवित्रावित्रवन्त्रन्त्रन्त्रमण्डारात सहेरात्। नागात्यवनावित क्षेत्र-रेणर (विश्ववाहः वाणायवावित्रवन्त्रमण्डारात वर्षत्रि-छक्षा छिछि। क्षेत्रक्रिः विक्रण नवण विविधवाणांचारव नृत्त्री । वर्षत्रावानाःना)वाष्ट्रवृत्ताः दश्ववत्रवार-छक्षा-रिष्ठाः।विस्राः।

ইঞ্চ দ্বীবজৈগ বেশুভেজাাং--জুক্রেড়ি। ওটএগ বেশ্বন্ধবাৰ--ভুক্রেন্ডি। স বৈ বেশ্বিদ্বা ইভাগ্র ম শাইং জীবজ বেশিক্সাছবিং জু শাইনিভি ভেব:। ৬

পাণাবলাজীবাজ্ঞবজ্ঞবজ্ঞবজ্ঞবি বেপ্তবস্থাকৈ প্ৰস্তেরীপরে। বেলারবেলো বাজীকালে নেবৰবাণী গোগৰতি — অবজ্ঞান্তরেছিত। গোলবের বিশ্বনাতি — অথাপানীছিত।
ইক্তোপপজিনবেংগীতি বাবং। নাবলাভেলাবজ্ঞবজ্ঞবালন্ত্রভালালালালালালিভি প্রিকরতি সাস্ত্রেজাসিভি। প্রবাহেশ্যক্তভোকার স্থাজেন প্রাইতি—স্থাজিতি।
ভারের বেপ্তব্যাক-স্যান্ত্রাহৈছে । ভারতানিবিশিষ্টকৈ বাপবৈশিষ্টাভক নংসারিবারেরবেণ্ড্রোল্ডা ক্রাক্তভালে ব্যক্তিশাতিবাহ—ভেগ্রা ক্রেভি। আমিনবো নোকামতাধিন্তরিবারবানিনারেরার্থি। অনুন্তিন্তরিভি। ভারতবিব্যক্তিরালিভারি
বাজ্ঞবজ্ঞবিবারবানিনারেরার্থি। অনুন্তিন্তরিভি। ভারতবিব্যক্তিরালিভারি
বাজ্ঞবজ্ঞবিব্যক্তিরিভারি। ব

बीर्स वरव्यविश्वष्ट्र रुक्त क्यानवर्षकाः, गावानवः, कक्ष स्वाहिकविक नकरक-व्यव्यान्त्रहनाः श्रीक्ति । वेवश्रेक्तवकारणवर्षः । व्यक्तः धानाविककृषिकि त्यदः। नश्यव-वाकाः विद्यतावि—व्यव्यक्ष्ट्रक्तांत्रसाः। कावाकावागरण्यम् वृववि—म् भोक्का-क्रिक्तिः। विद्योवश्यावश्यमः व्यक्ति —क्रव्यान्तिकि । अ

(त्रवहवायवृद्धानविक-वः काळाक के छातिस्त्रा । कात् पृथ्वसाविकशिवाः पृथ्वसाविकशिवाः पृथ्वसाविकशिवाः पृथ्वसाविकशिवाः प्रवाद्याः स्वतः विकादिकशिवाः स्वतः विकादिकशिवाः स्वतः विकादिकशिवाः स्वतः विकादिकशिवाः विकादिकशिवः

जिक्ति। र मास्त्रभृष्ठभारगृक्षात्रभ महासः। अविराह्यः।

विषयार-अञ्चल अद्यक्ति। यथ वङ्ग्यस स्वर्थवार-जन्माहिति। रेश्यम प्रयास्य वाताविष्टितिकार-जरुजासिल देखि। यस्यस्य। धनस्यस्य। १९७१) >-

पणीवरता स्वयंशास्त्र स्वतं, स्वरंग स्वतं स्वतंत्रः स्वतंत्रः । स्वतंत्रः स्वतंत्रः । स्वतंत्रः स्वतंत्रः । स्वतंत्रः । स्वतंत्रः । स्वतंत्रः । स्वतंत्रः स्वतंत्रः । स्वतंत्रः स्वतंत्रः

কৰং কৰীবৰে যকিং কুৰ্বাধিক্যাপকা, বাৰিংবৰেঞাৰ -প্ৰসন্মাদিন্তি। পাৰিপৰং প্ৰকাশিবংগ্ৰহাৰ্থ। ঐভাষাপাহাৰাৰ্থবিৰেৰ অমনি কৰ্তবাভ্যাপক্যাক্—ম পূন-মিডি। কা মহি পাহাৰভিত্যাক—অক্ষেতি। বুৰাৰ্থবন্ধৰে ভিনিজ্যৰ্থবাৰ্থেজ্যা-প্ৰভাৰ—অক্ষেতি। সংসাধিকাশংসাধিকা বিৰো বিক্লব্ৰোকী বৈৰম্ভনা শীকোকৰ-বৈৰ্যান্থপান্তিভাগ্ন। ১২

विकानाश्वित्वकः कोर्ययवित्ववः काग्निन्तः विवायवन् पविवयि — (मञ्जाने मिस्र)।
प्रदेश्य व्यवस्थारी वश्ववाश्वनाश्वाश्वाश्वाश्वः — श्रृ सं देख्यानिस् । वयसः वरश्वि व
पृष्टीवावितिः, कवार-कर्माक्षित्रम् (छक्तिः। ১०

শাস্ত্রীবনশোক্ষনবিধ্নালয় থাকর্ত্বানিকি শক্তে ন্যুস্তে। পরভ নংগারিছে ভ্রমংনারিছলায়ানর্থকাং কলিভনাহ—তথা চেতি। নংগারিশাংনজভাগি পরভানং-নারিছে নংলারিছাভিন্তা। পান-নারীছাপ্রেশার্থকাং তং বিশৈব খুকিনিছিছিও কোরাছার-নাই—ভ্রমণ্ডানিরুম্বে চেতি। ভ্রমান্তা ঘোষং বিশ্বণোভি ন্যুস্তি ভ্রমিন্তানিতি।

শৈ নিপাতে লোভয়ংখন বাহাং ইভ্যান্তাঃ ক্রম্ভাঃ। 'বভ নালহুডো ভাষো খুভিবভ ন নিপাতে' ইভ্যান্তাঃ পুরুষ্ট। কুইরান্ত্রভাবগো ভাষাঃ। ছিতীয়ং মোবং প্রন্ত্রশাল্য প্রভারতি—ভ্রম্নেড্যাহিন্সা। ১০

বোৰকা বৰ্ণাননবিৰ্ণাণ্ডতি—আন্ত্ৰেন্ডি। কৰং ভবি ভভ ভাৰ্ণা এবিইভ জীবৰং, ভজাৰ—জিং জাৰ্নী ডি। কৰিছ অধিকাৰ্থপি কৰে। কেবালাং একেডি গীনকেং অজনোহণি সনোনিকভালবাৰ—ভা চেডি। তথাপি কৰং শভিতবোধাভাৰভাৰ—ক্ষেত্ৰেন্তি। এবাৰি ভিল্নাভিন্নখণনাৰ্থনা সৰ্ববিদ্যাপদেশাধিনিক্ষেণ্ড। ১০

वण्यानिकः विश्वाणकं तिक्षश्रकि छ्या हि । वश्य श्रव्य श्य श्रव्य श्य श्रव्य श्य श्रव्य श्य श्रव्य श्य श्य श्रव्य श्रव्य श्रव्य श्रव्य श्रव्य श्रव्य श्रव्य श

জীয়ং দৰ্শং বা নৰ্বান্তনা ক্ষিত্ৰকানিস্ত্ৰপৰ্ব পৰিপক্ষক, কৰা ক্ৰম্ভ এক পজো জীকজাকৈৰ পৰিবৰ্গতিক কৰাভ্যন্ত। কৰাভ্যন্ত ব্ৰহাত—ক্ষয়েন্ত্ৰ্যাগিল্লা। নানান্তবাপাৰ নৰাহাবে৷ বা ভাবি ব্যক্তোভাবেকাৰি পদক্ষেত্ৰ, ন ভবৈকাৰ ভাব ন বি ব্যবহাৰ ক্ষাইনকাৰ; ন
চ সমুদ্যাপদ্যপৰ্বায়ক্ত সমুদ্যাহিকো কেবাকেৰাভাৱে দুৰ্ভবিদ্য কৰিবলাক্তি। ভবি
ন্যাহায়ক্ত ন্ত্ৰবেশ ব্ৰাইনকাৰ না ক্ষান্তন্ত্ৰা ভোক্তি। ন বি ভ্যানাৰ্থ ক্তানি
সম্ভবিত্তি ভাষা। ১০

विशेषसम्भ विश्व प्रशासि - आर्थ्यक्तान्तिमा । नक्षेषय पृथवविष्ठ व्यवस्था प्रीरिक् प्रभूषाक (क्ष्यक्रियां प्रशासि व्यवस्था विश्व विष्व विश्व विश्व विष्व विष्य विष्

ক্ষতিশ্বতী বিবেচনৰ প্ৰভাৱনাধানক ব্ৰণমাহ—নিজন্মতিয়ানিনা। কৃষ্ট্ৰত বিভাৱনত ভাইল ক্ষেত্ৰালা প্ৰিণামানতবা ভাষানীনত প্ৰবাহনত ক্ষেত্ৰিক ক্ষেত্ৰালা প্ৰিণামানতবা ভাষানীনত প্ৰবাহনত ক্ষেত্ৰিক ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰিক ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰিক ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰ

ৰীবন্ধ সংশবিবহণি গৱন্ধ ভয়াবীতি পথতে— প্রক্রেন্ডি। পরত বিরব্যবহন্ত-চব্যবস্থিতভূপপত্তিং ববাবো ধ্বচতি—ভ্রেন্থালীভি। বন প্রভাবচন্তঃ স্টুড়ি, ভন্ত ভল্ত ভল্তং আল্লোভি, ভণীচাব্যবহণান্তে চ প্রবাহনা অবেশভব্যবহণানার বুদ্ধে সভাপচন্তঃ ভাব, তবা চ প্রভাবহণা হতো বিপঞ্জি তন জিন্তভাঞাত্তিবি চ তে বজ্জভি ভ্রোপ্ত হ ভাবিভাগ্যবহন্ত্রশ্বন্ধ ভূমবিভাবিবাভাবিয়োবো ভবেজভার্তঃ। প্রভৈত্যেশো বিজ্ঞান

বৃদ্ধাহনিক্ষিক্ষাইক্ষানিবলাৰ প্ৰভাননা হীবাং নিৰাবীভাৱে। কাৰামা, প্ৰৈত্ব-বেশবে নোকো বোৰেছবননি, বুভাবেলনা ক্ষাক্ষানাভি প্ৰতে—আইনিক্ষান্ত্ৰ। ক্ষিত্ৰ সংগিছি। শামাৰ্থে বৃদ্ধিক্ষতা ৰ নিৰাবীতি বৃদ্ধিত—স ক্ষম্ভিনিছি। ককাৰ্যে বিশ্বনাত—স শামা্ত্ৰিছি। বেছভাবনাভালেণ্ড্ৰক বিভন্ত—ক্ষিত্ৰ ক্ষম্ভিন্ত ভুলানিব্যায়ভাবিক্ষাভানানিক্ষাক্ত। অত শামাজভাবিক্ষাক্ত, ভবালি প্ৰভ নাতি নাৰ্ব্যানিক্ষানি নিৰাবানিক্ষিত্ৰ । অত শামাজভাবিক্ষাক্ত, ভবালি বভাবতে বন্দ্ৰক বিশ্বন্ত্ৰৰ লাজনাভিত্ৰ ক্ষিতি—ক্ষিত্ৰাক্ত ইন্ধি। পামাজ স্থানাভাবিত্ৰ ক্ষম্ভিনিক্ষানিবানিক্ষানিক্ লোকার—উপানী দ্রহার্ত্তা এটাছি। নামছেনেভবর্থ বৃষ্টাছবিশ্বের্থিটিছঃ। শইরতি নাম্প্রাক্তি । বং

নতু লৌকিবং প্রবাণং লৌকিবণ্যার্থাবিক্তরের বার্থা সর্বাচতি, বৈধিকং প্রবাণিক-বেরং ভবিক্তরাণি বার্থা প্রবাণরের নিক্তিবিব্যায়ত আন—স্প্রেডি । বহু প্রবেচন জাতজাপভার লোভারশেকভারতিকে বেরংশি কা কানিব্যায় স্প্রেডি । লোভার-বিভাগির শক্তে বিব্যায় কালিবিদ্ধান কালিবিদ্

ৰীক প্রাণেয়ান্ত্রীকারে জবিশ্বভোগীত জভাগতি প্রথা করিছ — জুবা ইণ্ডি । তথ্য প্রিয়ার — ক্ষেত্রা জিনা। বিজুলিকে দলিতং ভাগং সর্জানাগেরাংতি দিশভি জ্ঞানি প্রভিত্ত । প্রথাকনীভা বিজে নাই ভিত্তা ভাগতি । প্রথাকনী সভ জীবভৈত্ববিষয়ে প্রভাগনার বিজ্ঞানি সংগাজাঃ ।২০

বেবাবেকস্বপ্রহারণভারবের্থে বেরস্কাং সংস্কৃতি—উপ্রেস্মেডি। খনের পুটরতি
—অর্ক্রাম্ম ইনিডি। উত্তর্গ-বার্থনির চরা বিচলতে—ডদ্ম্যোজি। ইবেডি প্রকৃতি
ভোগনিসমূক্তি। থাবিপাদেশাপনানিয়ানি সৃষ্টে। বিস্তুত সংগ্রহরাত্যব্দসায়রভি—জজ্যা সিক্তি। তেরাং স্বাধীনইবে দোবং বস্প্রেকস্বপ্রভাগার্থি বেরস্কুসার—আন্তর্গতি। ০০

'সম্বৰ্থজ্ঞাকৰাভাৱে ৰাজ্যভ্ৰক্ত বেনতে' ইতি ভাগেনেক্ত বাণকাবি- অনুস্থাপা বিশ্বস্থান্তি। কিঞ্চ ভোগে বাৰ্থিকৈ অনুস্থানাৰ ক্ষান্ত্ৰং কল্পনীৰৰ। ম চৈক্ত অভ্যানিবন্ধনা অংকলে নিয়াকাজ্যেৰ ভেত্ত ক্ষান্ত্ৰীকলা মুক্তা, সৃষ্টে সভাষ্ট্ৰকলানবকালা-নিয়াৰ—শ্বস্থান্ত্ৰাং ভেত্তি। ইংগভাগিজ্ঞানা বাৰ্থিকিবাসন্থান কলিভবুলসংকাভি —ভিস্মানিতি ধ্ৰ

 গ্ৰনং গভীনং বনস্। সংলামপ্ৰীকৃষ্ণইনে হেছুযান—পক্ষমান্দ্ৰাক্তামিকি। উভাগিন্তা-ভংকাৰ্যবিধানিকীং বাভাগিন্তাং লভাভি - মুন্দ্ৰমিক্তি।বং

वासन्त्रक वासावनीकि सकावनश्वारक्षशिकारिन सकावीकि सकावरक्ष, इक्ष विकृतिकारिन्देशस्य श्वामकायि स्वयुक्ति । जनानि कर सक्ष्यवाववार्धः, वसाव — सिक्कृतिक्र रेक्षाकि । वृष्टेरवरक्षकर्यन्य क्षाविकि नवायुक्ते । वेश्नवादिकाम नावि नाव अश्यक्षिकास स्वयववयाः — रेक्स्क्र सिक्षः । व्यारवाद्यक्षः नवस्य विक्षः नवस्य । विकायकार व्यारवाद्यक्षिः । मानुशिक्षम्ये विवृत्यावि — स्वति (छाड) विकाय । विकायकार व्याप्य स्वयक्षः ।

এক বজাববারণক নাম— ভল্মাদিভি। এক বজ ভেবনহন্তং বাছড়িয়ুবেক স্থাপতিব-বণৰ্। আনিশ্যেৰ এবেশ নিয়মনে স্কেতে। ন ভংগ্ৰছাৰ কলাবছাত্ৰ ভল্কাবেশি-প্ৰাাতিভাগে বিৰক্ষিত্য। কিক শবলৈক কেশে বিজ্ঞানাছে ছাত্ৰ ভালেক কেশে বাছাবিকো বা নাকেশিবিকো বেডি বিজ্ঞান্তং বৃধয়তি — ন ভেডি: বিশ্বে বাহবার—ভালেক ক্যেতি।২৭

বিভীয়গুৰাপছতি—আইপ্ৰান্তি। এক দেশভৌপাৰিক স্বপাক্ষ প্ৰচিন্ন বিবেক বৰাং ভববভাৰ্তি ভালাং ভালে বছালঃ পুৰণু ভুলা বাৰচাবান বৰাছি বৈৰ বৃত্তি লাভে উপাবিকান স্বান্তিকাৰ বিভাগতি কাল্য কাল্য

বিবেকিনাথবিবেকিনাং চার্ডনি পরিজ্ঞিরবীকপন্তেভোডাবডা ন জন্য বস্তুতো দ্রন্থাংশভাবি নিধারীভাতত্ব বৃষ্টান্তেন সাবহাজি—অনুপ্রান্তি। অবিবেকিনাবিবেডাংশর্পর ।

দ্রন্থানি বন্ধভাচংশাধিকজনা ন কর্তুবোডি ভাই ভিকর্শনংগরতি—আন্ত ইন্তি। অংশাংশিব্যোক্তিশভাক্তরবংকবৈশিকবেশীতি। অভংশবোশান্তনের ব্যেক্তং কৃষ্টিভি—কার্ত্রাক্ষান্তব্যক্তি। সর্বানাং কল্পনাবারশনভাববোর্ত্ত সাহত্যোভীউভংশক্ষান্তপন্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তিভাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তলাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তল ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তল ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তল ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তল ক্ষান্তল ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তভাক্তর ক্ষান্তল ক্ষান্তল ক্ষান্ত

বজবে। বিজিনেবছেং গান্তবন্ধকে বেশবা সনিপেশ্বং কিং দ নাৰিজ্ঞাপজাং— লাজ্যালয়িক্তি। জান্তা নিৰ্জিনেবজেং, ক্ষাং ডক্তিন্ ব্যবহান্তবাদিকাশ-জুল্যা-দিক্তি। 'আন্তৰি মৰ্কো ব্যবহানে নাৰ্যমণোণাধিনপুত ইভাৱ নাৰ্যবন্ধ—ক্ষ্ণাপং ক্ষাপ-মিক্তি। অনংবাহনবিশ্বীভূক্তং বিলেখণং বিশ্বহান—লুক্তক্ত ইক্তি। ২৯

बांका। वश्वादिक्याक्ष्वीकाव वाववार-शाक्षकीकि । कुक्कावक्यारि कामः

नवनावयः मान्यक्षाकः विवाद्यकः। यष्ट् वया विवानावर्गः प्रत्या वीषणं वयायकः ? कारकारमणारिमाकः यव व्याद-त्यक्षाद्यात् शिक्षः। वया वर्षः 'नारगरक विवा पृथ्विति' 'नरेनवारना वोवानात्य' 'नारणः वावावानायमातः' 'नर्गः वय व्याचारमः शुक्रविते' देवि कवित्रवित्रायावश्चाद-व्यारणाज्योकः। ••

काशम्याकार वीरवनस्वातःगानिकारि क्यागाः विश्वकृतः स्वाक्षमारेयकाणस्य क्रिक विक देवतानिकः क्यांक, वेकार-व्याद्धांतंत्रश्रीत्रे आस्त्रांचितः। वक्षण्यातके विवान् वरेवक्यर्श्यक्षण्यान्तः। वक्षण्य स्वातः करणस्य प्रश्नाकृतः। वेकारेवकाय क्षणिकि स्वरः। किष्विधि व्यारः वदाया दिक्षिणाः वक्षण्यान्ति। क्षणानिकः। स्वराद्धाः। क्षणानिकः। क्षणानिकः। क्षणानिकः। क्षणानिकः। क्षणानिकः।

ক্ষেত্র বিভাগ্র কর্মান বিভাগ্য করে বা বছলা বা বছলা বিভাগ্য ব

ভত্তাপি আঠাভিকভেষনাথা আষাণাভ কুঅভিপন্নথা, ব হ ভেষ্য ঠাভ্র 'বিশ্বাবাভাবাহিকাভিনেকান-প্রকাশ স্থানী, ত। চোল্পনায়া বিশ্বণাঠি- ক্ষেন্তে।
ইভি চোল্পনাথ পরিধারতাপি সামানিভি পেয়া। সমূ কর্মণাঙা ভেষ্পনা রক্ষাভক্ষেত্রপায় অভিজ্ঞান্ত। ব হ নন্তনি বিষয়া সংভ্রহাভোগ্রহাভারামাণাসভ আরক্ষেত্রেইভি। ভুনার্শনিবলানপি বার্থাবিবারকভ্রিভানাবাহাই -উপনিম্মানামিভি। বার্থা প্রকৃতিবাহার জন্মানার স্ট্রাবিভেন্ন। বভুচা কর্মণাভ্রহাভিন্দ আয়ান্য ন ভাবিকা; ভাবিকা ভূ কাভান্তরভাল, ভত্তাহ—স্থানিভি। বভিনানানাভ ব্যহানিক্ষা, ভাবের ভল ভাবিকাশ, ন হি প্রমান্য ভব্তা স্বাহ্নভিন ব্যাহাভানিভাভিব্রেভা বৃষ্টাভ্রাহ—স্থান্তি। বাথবিদ্যাহার কর্মণাভবিব্যাহাজাণনিব্যাহনানানিক্সভ্রন্নব্যক্ষাবিভিন্তা। কর্ম

উপনিবৰ্থানাৰে বেক্ডঃবাং—প্ৰক্ৰ্যক্ষণাসীক্তি। প্ৰভাকাণীন নিক্তিনি কেন-প্ৰক্ৰিপক্তবানি, তৈনিতি বিশ্বয়। প্ৰায়নবিধাপুণপাধিতানাং স্ক্ৰাণাৰ্থাণাবিত্যা-প্ৰচাৰ—ক্ষমণাৰ্থকা শ্ৰেডি। ০০

निकासके- म्यामिना। अस्य प्रेमिन् नागक्कावयाय-अवानुस्कृति

वार्त अरवादगावक्त्राकारक्षि आवागाविक्ता अकाव -क्ष्मुद्रशक्ति । परवाक्त्रांता स्व अवूक्त आवाधनआवाध्यर दरम्बन्धि विर मनकेषि गृक्ति -क्षिप्रमृक्ति । क्षा कियू गित्रमः वार्क द्वापविक म दबकि विक्ता केष्ठम् मृत्रमि नक्षि क्षा अविक्रिति । विवाद्यानि । विवाद्यानि । विवाद्यानि । विवाद्यानि । विवाद्यानि । विवादि विवाद अव्याद अव्याद अव्याद अव्याद अविक्रित्य विवाद विवा

केट्रवर्शर्थः क्रियम्परिकाः विषयि स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र । विद्यास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व स्वास्त्र स्व

শাবাবেষুদ্ধবিষ্ণ বিষয় প্রাথান প্রতিশাস্ত ভগপ্রাথান প্রেক্তর্ভ্রতি—
শংস্ক্রান্তর্নান্তি। কবং হি ভাগা বার্থবিষ্ণাভকর: কিং ভালো প্রাক্তর্ভ্রতির
নৈব ভেডি প্রতিশিক্তরশন্তে, কিং বা কাল্ডির্ট্রভক্পতিশন্তিরভালোপ্রিরভন্তরশতিবেরং কুর্মন্ত্রীতি বিক্রান্তং ব্যক্তি—স্তুস্পতি। কমন প্রশ্বতি—স্তুস্পতি। একজ বাকান্যানে বর্ষধ্বীকৃত্য বৈর্থোন্যান্তরশ্বতিনাক—অস্কুস্পতি। একজ বাকান্যানে বর্ষধ্বনিস্কৃত্য বৈর্থোন্যান্তরশ্বতিনাক—অস্কুস্পতিনাক—স্তিত্র ভ্রতির ব্যক্তিনাক—স্তুস্পতিনাক—স্তিত্র ভ্রতির ভ্রতির ব্যক্তিনাক—স্তিত্র ভ্রতির ভ্রতির

বিভাগং ব্যক্তি — মৃ ক্রেন্তি। একনা বাকানারে কর্পবাং লোকে বৃষ্টাক্তানভাগ্ন—
ক্রিন্তি। তথেকবেশনোভাগিবাকাং বিশ্বংগতি —আক্রিন্তি। অক্সায়ক্তে।
ভাগরোজেকবাকারাভাগং কলিচনার—আক্ত ইন্তি। বের্থবৃত্তবের ক্ষুত্তি—প্রশ্রাপনিভাগেনিত্ত। বীজঃ বৈশিয়োগতি বিভাগেনিকবেশন ক্রেন্তান্য, কর্ম ভবি ভত্ত বোকন্য
বিশ্ববাধীবিভাগেন্যার—অভিন্তি ১০৭

वार्थिकार प्रवास वार्था स्वास्त्र विश्व क्षिण्य विश्व क्षिण्य स्वास्त्र विश्व क्षिण्य स्वास्त्र क्षिण्य स्वास्त्र स्वास्त्र क्षिण्य स्वास्त्र स्व

বিষয়ৰ প পৰোধপাৰতং প্ৰবাধানত ইবিৰৱভাৰত্বভাৱিত ভাৰতি পভতে —গ্ৰহক্ষতি। প্ৰভাকবিৰোবাৰত্বভাৱৰৰ ভাৰতি পৰিবৰ্তি —/মুক্ত্যান্তি বা । ৩২

ইজক কৰ্মকাজ্য নামানাগানিতি বংশ বিজীঃ প্ৰভাক--জালি চ্ছেতি। বংগঞাৰ-জ্যেতিৰ বাৰ্যান্ত্ৰিজ্ঞজ্বপৃথাশিজভেতি। নান্ত্ৰান্ত্ৰ্ৰ্যান্ত্ৰিজ কৰ্মকাজ্য নাৰ্যান্ত্ৰিজ জ্বাৰ্যান্ত্ৰিজ জ্বাৰ্যান্ত্ৰীজ জ্বাৰ্যান্ত্ৰিজ জ্বাৰ্যান্ত্ৰীজ্বাৰ্যান্ত্ৰীজ্বাৰ্যান্ত্ৰীজ্বাৰ লাখনান্ত্ৰীজ্বাৰ জ্বাৰ্যান্ত্ৰীজ্বাৰ জ্বাৰ্যান্ত জ্বাৰ্যান্ত জ্বাৰ্যান্ত জ্বাৰ্যান্য জ্বাৰ জ্বাৰ জ্বা

অবিভাৰতাং কর্ম্ম একুজিবাজিপতি--ব্যিদ্ধান্ত সংস্থাতি । এবাবেবভাবিজ্ঞানং বা কর্মম একুজিবাজি বিষয় বিষয় বিষয় বিশ্বাসন্থ বা কর্মম একুজিবাজি বিষয় বিষয় বিশ্বাসন্থ বি

নমু কৰ্মকান্ত সৰজ্ঞ বোৰহব মনুকাতিশ্বনতে। বাধানিবৰ জনবোধান্ত প্ৰান্ত নিবিশ্বন বিভাগ সভাবনকৰা অধিবন্ধ জনবাধান্ত ভাৰত বিভাগ সভাবনকৰা অধিবন্ধ জনবাধান্ত বেশঃ। তাৰে কুইবভি—আন্ত্ৰেকা জীতি। নামজাকাৰকৰাৰ প্ৰথমকৰা জনবাধান্ত বেশঃ। তাৰে কুইবভি—আন্ত্ৰেকা জীতি। নামজাকাৰকৰাৰ প্ৰথমকৰা জনবাধান্ত ভাৰত ক্ষিত্ৰ প্ৰভাগৰনাৰ—স্কুপ্ত স্থাতি। তাৰ নামজাকাৰকৰাৰ ক্ষাৰ্থিক। নামজাকাৰকৰাৰ ক্ষাৰ্থিক। তাৰ নামজাকাৰকৰাৰ ক্ষাৰ্থকাৰ ক্য

ভত্ত সৰক্ষণিশেৰেশাবেশে সভীতি বাবং: বৰাক্ষতি পুক্তবাণাং অনুষ্ঠিক্ষেৎ পত্তবাৰ্থকৈ কৈওলামুক্তি স্থাপ কাৰ্যসভয়ে ভত্তপাচন্ত্ৰৰণাখিতু সংভাগপৃথিক। অনুষ্ঠিঃ বুৰিপূৰ্বাকাৰিণামুক্তিভভাগেতাৰে - ভত্তপ্ৰতিভ । বাগানিবৈভিন্তাাক্ষণায়েংগভিত্যবাৰ্থক । উক্তং কি --

'অণি বৃজ্ঞাননে পুরে পুরাজয়ং স ইছাতি।
নতু নির্কিণয় বোজং গ্রন্থয় তি ভৌগ্রম' ইত্যাতি ।

তবি তবং পুরুষাধীববৈক্ষিত্রিয়ন অন্তেতি। পুরুষাধন্ত্রিয়াছ—
ক্রেন্স্ সূত্রাকাশীতি। বাভিন্নাল্ল্যাহন পুরুষাবাহ পুরুষাধন্ত্রিভার বর্ত্তনাল—ক্রিয়া ক্রেন্স্ কর্মান্ত্রিয়া কর্মান্ত্রিয়া কর্মান্ত্রিয়া কর্মান্ত্রিয়া কর্মান্ত্রিয়া ক্রেন্স্ কর্মান্ত্রিয়া ক্রিয়ার্থ্যান্তর্বাহর পুরুষাবাহ ক্রেন্স্ ক্রিয়ার্থ্যান্তর্বাহর পুরুষাবাহ পুরুষাবাহিন্ত্রিয়ার্থ্যান্তর্বাহরে পুরুষাবাহিন্ত্রিয়ার্থ্যান্ত্রিয়ার্থয়ান্ত্রিয়ার্থ্যান্ত্রিয়ার্থ্যান্ত্রিয়ার্থনান্ত্রিয়ার্থানিত্তিয়ার বিশ্বরাহ্যান্ত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্রিয়ার্থানিত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত বিশ্বরাহিন্ত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত্র স্বিল্পিয়ার্থানিত বিশ্বরাহিন্ত্র স্বিল্পিয়ার স্বিল্পিয়ার্থানিত বিশ্বরাহিন্ত্র স্বিল্পিয়ার স্বিল্পিযার স্বিল্পিয়ার স্বিল্পিয়ার স্বিল্পিযার স্বিল্পিয়ার স্বিল্পিযার স্বিল্পিযার স্

वर्षावायण्यमण्यायः म् ह्यात्रिः, वष्टावतः द्वावायाः वर्षावयक्षाण्ययः वर्षायायाः द्वावयक्षाण्ययः वर्षायायाः वर्षायाः वर्षायः वर्यः व

पन्त महित्यां विश्व पार्ट (व्याहान), आवाना तृतः ; मध्यकि व्यक्तिकार-वृत्यानवि — क्ष्ट्रसृष्टि । वेटका नाष्ट्रस्ता वोक्टक मधिक वावः। महित्यादिकार-वराकाः अञ्चलित (क्ष्रार्थः। क्षर्टेटकार्ट्टकवानवराकाः अञ्चलक्षित्वा विश्वत्व, वज्ञाद--क्ष्ट्रसृष्टिः। वया वर्टकक्षः चर्चक नाष्ट्रक क्ष्राकारिक्तिकार- क्ष्रद्रव, क्ष्रा वज्ञात विक्र (व्यवकारीकि द्यावया। ••

७য় सम्विष्टाः धण्डेप्रवि--नाव्यास्य देखि । स्थान्यस्यविद्यानस्य क्ष्म्यस्य । प्रत्याप्रस्यविद्यानस्य क्ष्म्यस्य । प्रत्याप्रस्य प्रत्याप्रस्य । प्रत्य । प्

বাদন্তবিবাধাৰ ন নাম কৰিব কৰিব প্ৰাৰ্থি প্ৰভাগ - ক্তে ক্তু ক্ষুক্তৰেন্দি। ইতি বৃথকা কেবাৰিতি পেবা। বৈভ নানি প্ৰবাবাধিক কাইব কৰিবি বছতা কৰা পোচাৰেতি পৃথকি—ক্ষুপ্ৰিক্তি। ভন্ন নাম কৰিব কৰিব — ক্ষেত্ৰ ক্ষুপ্ৰিক্তি। ভন্ন কৰা ক্ষুত্ৰ ক্ষুপ্ৰ ক

चक्रपानविद्धानः प्रशास्त्रकृत्वति —चट्न्क्रिक्ति । या छ्या ना स्वयंवरपृत्तिक्व्यक्षान् । नाभ्यत्वतः, चश्रपष्टपृत्तिकवक्षांन नवश्वकृत्वविद्धात्तिः वक्ष्यानदेकवाकृत्वान्। व्यवक् छोत्याः चश्रपृत्तिकव्यतः पश्चवक्ष्यविद्यान् व्यवक्ष्यक्षाः चार्यक्षाः विद्यान्त्रम् व्यवक्षयः विद्यान्त्रम् व व नावाक्षर्थवक्षयाक्षयाक्षयान्ववाक्षयाक्षयाक्षयाक्षयान्ववावतः —च्यान्यक्षाः विद्यान्यकः

কোৰাজহাতিবিশ্বল প্ৰকৃতি — আনুপ্ৰিক্তি। অভ্যৰ্থং পৃষ্ণতি — কৈ সুন্ধুন্দ্ৰিক্তি। ব হৈ মুখ্যখনে বা ক্ষৰজাভান বা কেবছাৰকো বা। সংজ্ঞী, ভলোহতেজনভাকুৰাতৃ-ছাবোৰাং। স ভূতীভজ্জাবিকাভিভানিতি ভাষ্য। কিংপদ্ম প্ৰভাৰ্থনাং বছা প্ৰবিভান্ত—প্ৰীশ্ৰেক্তি। আছা কেবছিবছনাধনবিনিটোংখুবাভা কিছাবাৰ্থন কলাত-ক্ষাবা্ছাৰেং বিশিষ্টান্ত ক্ৰাভুবাভান প্ৰভিৱন্ধান্ত ক্ষাব্যালয়ে ব

वां नवस्तरकरून (बदरनारकरस्य वा करवांक्र नाविश क्षेत्रकार्यात : वाक्ष्यात्रकार्यातिक

कार-कर्जि । रेक्कावर काव्यानाव्यानिकार-(सहस्र्कि । किर्यका क्ष्मार्थक प्रकेशि-म श्रीकि । क्षारोगार व्यक्तिकावितवर्याशावित्यका स्थावित क्ष्मार-वामीकि । वाष्ट्र- त्याकोश्रद्ध विवासक वृद्धे (द्वव न'परि- वाह्माकि । किरकोगावित्या वा वाष्ट्रावित्य वाह्माद्धकः माधाक, वाह्मकः विद्याशावित्यक्षिति । व्यक्तार-स्थावित्य । व्यक्तिक ।

শাৰা স্বাহাতিবিভাগৰনাভীবোধনাবৰ বিশ্ববন্ধন্য বাধবিধানুষ:নাজনাবভাগত না-নিছিং বৰ্ণনতি—অনুনানেডি। ভালাবাধনাহত বাজাপথৰে নানৰ্পভততি—আক্ষাপ ইডি। ভটাবোপপতিবাদ—উৎপক্তীডি। অসুনানাবিধাবনুপনবেল্ড অন্ত ইডি। আগববিধানৰ্ভভাগতিবেশন নিনালভাতি এতেত নিডি। উপাধিক বেলাক্ষমত ব্যৱহানত বাধবাকে বাধবাকে বাধবাক

ইতি মুহলায়ণ্য কাণ্ডিবস্তাবাদীকারাং বিশ্বীবাধারিক প্রথমং - প্রাক্ষণমূল ও ৮ ৮ চ

ক্তাম্মান্দ্ৰাদে। পূৰ্বে বাহা বলা হইল, ভবিবনে লোভগ্ৰনিছ ক্ষাত্ৰ এই লেকেই উৰ্বনাতি—সূতাকীট (মাকড়লা) বেষন এক হইয়াও আগনার অপূথপ্ত হল হারা উপরে উঠে, অবচ ভাষার উর্ত্যমনে আগনার অভিন্তি অপর কোনও সহার নাই, এবং একই প্রকার অগ্নি হাঁতে বেষন ক্ষুত্র ক্ষুত্র বহু বিজ্লিল অর্থাৎ ছোট ছোট অভিকান সন্ত্র বহুবিগভাবে অববা অনেকাকারে উপিত হয়; উক্ত দুটান্ত হুইটা বেষন কারকের (ক্রিয়াসাধনের) অতেন্তেও প্রবৃত্তি বা ক্রিয়ানত পার্থক্য প্রকান করিতেন্তে, অবচ কার্যায়ন্তের পূর্বে একর বা অভিন্তানই বুলাইতেন্তে; ঠিক তেমনি এই আত্মা হইতেও, লাগরিত হইবার পূর্বে বিজ্ঞানমর আত্মার বাহা সক্ষপ, সেই সক্ষপ হইতে সমস্ত প্রোণ (বাক্প্রভৃতি ইল্লির !, সমস্ত লোক ক্ষেত্রভাত্মক ভ্-প্রভৃতি হানান, সমস্ত দেবতা লগ্রাণ ও লোকের অবিপত্তি অন্নি প্রভৃতি এবং সমস্ত ভ্ত ব্রহ্মান তুলপর্যার প্রাণিসমূহ) নিঃস্তত হয়। [কোন কোন পুত্রকে "সর্কাণি ভ্তানি" হানে "সর্কা এত আত্মানয়" পাঠ আছে, ভাছার অর্থ এই বে. উপাধিসম্বন্ধ বশতঃ বাহারা লাগরিত হইরা বাকে, সেই সমস্ত আত্মা (গুড আত্মা নহে)]। >

দাবর-জন্মান্তক এই লগং অগ্নিজ্ব লাগ্ন বাহা বইতে নিরন্তর
নির্গত হং, বিনাশকালেও অনুবৃদ্ধের কায় বাহাতে বিনীন হয় ছিতিকালেও
বংশপ্রপে বর্তমান থাকে; সেই এই আন্নার উপনিবং—উপ অর্থ স্বীপ;
আন্ধ-স্মীপে লইয়া বার বলিয়া তথাচক শক্তে 'উপনিবং' বলা হইয়া
থাকে। তথাচক শব্দে বে, এইপ্রকার বিশেষার্থ বুকাইবার ক্ষরতা
আছে, তাহা শান্ত-প্রোমাণ্য হইতে অবধানিত হইয়া থাকে। সেই
উপনিবল্টী কি, তাহা বলিতেছেন—'সভাক্ত সত্যর্থ' (সভারও সভ্য
অর্থাং সভাতা-বিধারক)। উপনিবং-শব্দী আলৌকিক (লোকব্যবহারের
অতীত ; সূতরাং উহার অর্থও ছলিজের; এই ক্ষর্ত বরং ক্রতিই ভাহার
অর্থ প্রকাশ করিয়া বলিতেছেন—প্রাণসমূহ হইতেছে—সভ্য, আন্ধা আ্বারু
সে সমুদ্ধেরও সভ্য; পরবর্তী বাকাশ্বর ইহারই ব্যাব্যায় প্রমৃক্ত হববে। ২

আছা, উপনিবং-ব্যাখ্যার তত পরবর্তী বাক্যমর আরম্ভ হয়, হউজ;
এবানে 'ভাছার উপনিবং' এই কথাচীবাত্র আছে; কিন্তু আবলা বৃকিতেছি
না বে, এই উপনিবংটী কি প্রজাবিত বিজ্ঞানমর আলার

— বিনি পানিপেবংশ
উবিত এবং শ্রমারি বিবরোগতোক্তা সংসারী, ভাষার নাম

কামও অসংসারীর নাম

ভাগ, ইহা জানাতেই বা কন কি

[ইা, কন এই
বে],বলি সংসারীর উপনিবং হয়, তবে সংসারীই বিজ্ঞের বইবে, ভাষার জানেই

দর্শার্থনাত হইবে, এবং তিনিই ব্রশ্ব-শব্দাচ্য ও তবিষক্ষ বিজ্ঞা বা আনই ব্রশ্বিতা হইবে; আর বলি অসংসারীর উপনিবৎ হর, তাহা হইলে তবিষক্ষ বিজ্ঞাই ব্রশ্বিতা হইবে, এবং তাহুশ ব্রশ্ববিজ্ঞান হইতেই সর্বার্থ প্রাপ্তি হইবে। অবস্ত, শাত্র-প্রাথান্যের বলেই ববোজ্ঞা বিষরগুলি নির্মাণ্ড হইবে, (কিছুই অসন্তব হইবে না); কিন্তু এই পক্ষে অর্থাৎ জীব ও প্রশ্বের তেহ-পক্ষে হের এই বে, 'তাহাকে আত্মা বলিয়াই উপাসনা কর্মবে' 'আনি ব্রশ্বরূপ ইত্যাকারে, আত্মাকেই উপলব্ধি করিয়াছিলেন' লীব ও পরপ্রশ্বের অভ্যাকার প্রত্যাকারে, আত্মাকেই উপলব্ধি করিয়াছিলেন' লীব ও পরপ্রশ্বের অভ্যাকার প্রত্যাকার প্রতিসমূহ বিরুদ্ধ হইয়া পড়ে; [আর অভ্যেমণাক্ষ বিশ্বর্থক হইরা পড়ে; [আর ভ্রন্ত অভ্যাকার করিব হইরা পড়ে; [কারণ, অভ্যেম হইনে, কে কাহাকে উপদেশ দিবে গু]। বেহেতু প্রশ্ন বিবরে জিজানিত বিবরে) কোন প্রকার উত্তর প্রদেভ হয় নাই, সেই হেতুই এই হানচী পণ্ডিতপণেরও বহামোহ হান অর্থাৎ বিশেষ ব্রান্তিজনক; অভএব ব্রশ্বিত্যা-প্রতিপাদক ক্রতিবাক্যে ব্রশ্বজ্ঞান্থ ব্যক্তি-ক্রির বর্ধার্থ বোধ সমূৎপাসনার্থ ব্যাশক্তি বিচার করিব। ৩

এবানে অসংসারী পরবাদ্যা ইহার আর্থ নহে; কাবন, পাণিপেবণে আপরিত ও শব্দাবিবরোপভোক্তা বতর অবস্থাবিশিষ্ট আত্মা হইতে তাহার উৎপজির উয়ের রহিয়াছে; তোজনাদি লণ্ হাণ্ড অপর বে, কোনও প্রশাসিতা বা সর্বাশাসকর্তা। আছে, তাহাও নহে; কারণ, বেহেড় 'আমি তোমাকে প্রকৃত্ব জাপন করিব' এইরপ প্রতিজ্ঞার পর পুরু পুরুষসমীপে গমন করিয়া শব্দাবিবরের উপভোক্তা। সেই পুরুষকে প্রদর্শন করিয়া এবং ব্যাবস্থা। প্রহর্শন হারা অসুষানের সাহাযো পুরুষিনামক অবস্থানিকও সেই পুরুষের সবছেই অববাহিত করিয়া প্রতি নিজেই অন্তিম নিজ ও উর্ণনাতির কৃষ্টার হারা পুরুষি অবস্থাবিশিষ্ট সেই আত্মা হইতেই উৎপজি প্রকৃত্বিতেছেন—"এবনের অন্তাংশ ইত্যাদি। এই প্রকরণের মধ্যে কোরাও অন্ত কোরও অগ্রহণের উয়ের প্রত হইতেছে না; কোনা, এটা হইতেছে—বিজ্ঞানমন্তেরই প্রকরণ। ৪

বিশেষতঃ কৌৰীতকী উপনিষদে তুলাং করণে (অর্থাৎ ইহারই অক্সমণ প্রক্তিরণে) আবিত্যাদি পুরুষের প্রকাষের পর 'তিনি বলিলেন—হে, বালাকি, বিনি এই আবিত্যাদি পুরুষপণের কর্তা, এবং ইহা বাহার কর্বা, ভাহাকে প্রানিধে ইত্যাদি বাক্যে প্রবৃত্ত বা নিল্লোখিত বিভানময়কেই বিভার বলিয়া প্রতিপাদন করিয়াছেন, কিছু অন্ত কোনও পদার্থের বিজ্ঞেলা প্রতিপাদন করেন নাই। এই প্রকার [এই উপনিবলেরই অন্তক্ত] 'আত্মত্বরিও কন্তই সমন্ত বন্ধ প্রিয় হইরা বাকে' এই কবা বলিয়া প্রিয়রণে প্রনিদ্ধ আত্মান্তেই স্কর্টবা, প্রোতবা, বন্ধবা ও নিধিব্যানিতবা বলিয়া প্রকর্শন করা হইবে। এইরপ হইবেই এতংপ্রকর্টীর বিভার প্রারম্ভে বে, 'আত্মা বলিয়াই উপাসনা করিবে, সেই এই আত্মা পুরু ও বিভ অপেন্ডাও অধিক প্রিয়' 'আনি ব্রত্তক্তি—ই আত্মাকেই অবগত হইরাছিলেন' ইত্যাদি বে সমন্ত বাক্য আছে, পরমান্তার অভ্যবপক্ষেও সে সমন্ত বাক্য অনুবান বা অনুক্রম হইতে পারে। পরেও বলিবেন —'পুরুষ বন্ধি আপনাকে বৃথিতে পারে বে, আনি হইতেছি—এই প্রকার। সর্মান্ত বান্ধ বিজ্ঞত)' ইত্যাদি। ব

বিশেষতঃ সমন্ত বেদার শাস্তে অহমাকারেই পরমান্তার বিজ্ঞেরছ প্রদর্শিত হইয়া বাকে, কিন্তু কোবাও শলাদি বাদ পদার্থের স্থায় 'ইহা ব্রদ্ধ' ইত্যাকারে বিজ্ঞেরতা প্রদর্শিত হয় না। দেখা কোবীতকীর প্রতিতেও 'বাক্যকে ভানিবে না, কিন্তু বস্তাকে জানিবে' ইত্যাদি বাক্যে বাক্ প্রভৃতি ইল্লিয়ে ব্যাপ্ত কর্তারই বিজ্ঞেরতা প্রদর্শন করা হইয়াছে। ৬

পঞ্চান্তরে যদি বল, ইহা অবস্থান্তর্বিশিষ্ট সংসারীও হইতে পারে;
আর্থাং প্রাঞ্জবন্ধার বে বিজ্ঞানয়র আত্ম। শক্ষান্তি-বিষয় উপত্যোগ করে, সেই
বিজ্ঞানয়রই যদি সুগ্রিরণ অবস্থান্তর প্রাঞ্জ হইন্না সংসারধর্ণবর্জিত
(অসংসারী) অন্ধ —পরবেশ্বর হর ; এ কগাও বলিতে পার না ; কারণ, সেরুপ
কোষাও দৃষ্ট হর না, অর্থাং বিজ্ঞানবাদী বৌছদিগের সিছান্ত তির অন্ধ
কোষাও এরপ সিছান্ত দেখিতে পাওরা যার না বেং সো বর্ষন পরন
করে বা গাড়াইন্না গাকে, তর্থনাই সে গোপদ-বাচ্য হর, আর শরন করিলেই সে
আর্থান্তর্ভীয় অন্ধ প্রদার্থ হইন্না যার । ভার বা বৃক্তিও ইহার অপর কারণ,
—প্রমাণ ঘারা বে বন্ধর বেরুপ বর্ষ বা বভাষ প্রতিপন্ন হর, বেশ, কার ও
অবস্থান্তেক্তে ভাষার সেই বর্গাই অন্ধ্য বাকে, (ক্রমও অন্ধ্যা হর না) ;
বন্ধপ্রকান্ধ প্রমাণ-প্রবেশ্ব ব্যবহার বিক্ত হইনা বাইত । বৃক্তিবিশান্তর সাংবাবাদী এর্থা শীষাংসক্ষণও শত্ত শত্ত বা বাক্ষের। গ
ভাষিত্র প্রমাণ-প্রবেশ্ব স্বর্থন করিন্না বাক্ষের। গ

যদি বল, সংগারী আত্মার পক্ষেও বধন কথাতের উৎপত্তি, স্থিতি ও

महानि कार्राव कर्क मक्क वह मा, छक्क व भक्क छ ह्छिन्छ वहेरकर मां; पिक्यांत वहे रक्, पूर्व विराय अहान महकारत रक, प्यांत विवरतागरणांका ७ स्वृत्तिक्षण प्रवहायक्षक मरमात्री प्याचा हहेर छ अवह्र पिक हानम किताह, छाहा छ नवीठीम हहेरछ हा। रक्तमा, मरमात्री प्याचात रक्, वह अबर एक, विठि ७ अवह मावन किताब छेल्कु जाम, पिक भावन नाहे, हेरा मर्मरमार्थक अछाक्षमित ; यह हार प्याचारम्व रमहे मरमात्री प्याचा-चाहा बरम बरम छ छिता किता मित्रभव कहा बात मा, प्रविद्यादित विठित्र मित्रस्माण्या रमहे जन्म किताब मित्रभव कहा बात मा, प्रविद्यादित विठित्र मित्रस्माण्या रमहे जन्म किताब मित्रभाव विठित्र मित्रस्माण्या रमहे जन्म किताब मित्रस्माणां स्वाचा वित्र । मा प्रवृत्ति विद्यान मात्रहे अर्थाव अवहर्त्त स्वाचा वित्र । मा प्रवृत्ति मारा मित्रस्मा किताब मित्रस्मा स्वाचा वित्र । स्वाचा वित्र । मा प्रवृत्ति मारा मित्रस्मा किताब किताब मित्रस्मा होर्ग किताब मित्रस्मा होर्ग किताब मित्रस्मा होर्य किताब मित्रस्मा होर्ग होर्ग किताब मित्रस्मा होर्ग किताब मित्रस्मा होर्ग होर्ग किताब मित्रस्मा होर्ग होर्ग होर्ग किताब मित्रस्मा होर्ग होर्य होर्ग होर्य होर्ग होर्य होर्ग होर्ग होर्ग होर्य

তাহার পর 'বিনি সর্বাঞ্জ ও স্ক্রিং অর্থাৎ সাষাক্ত ও বিশেব তাবে সমস্ত বিবর ভানেন', 'বিনি জুবা পিপাসা অতিক্রম করিরাছেন', তিনি অসক, অতএব কোবাও আসক্ত হন না 'এই অকরের প্রবের) শাসনে' বিনি স্বত্ত্ত অবস্থিত অর্থামৌ অমৃত্যরপ' 'সেই বিনি সমস্ত পুরুবকে (জীবকে) অতিত্বপূর্ণাক অতিক্রম করিয়াছেন' 'তিনিই এই মহান্ অল আয়া' 'ইনিই সর্বালাক-বিধারক সেই', 'তিনি সক্সকে বলীভূত রাবেন এবং সকলের জীবর,' 'বিনি করা-মর-ব্রক্তিত নিপাপ আয়া', 'তিনি তেল স্ক্রী করিলেন', 'স্তারির পূর্বাে এই জগৎ এক আয়ায়পেই ছিল' 'স্ক্রিরারীত তিনি লাগতিক হৃংবে লিপ্ল বন না' ইত্যাদি শত শভ প্রতি হৃষ্টিত এবং 'আমিই সকলের উৎপত্তির কারণ, আমা হৃষ্টেই সমল প্রাকৃতি হর' ইত্যাদি শ্বতিশার হৃষ্টতে এবং তদকুকুল বৃদ্ধি হৃষ্টতেও জানা বার বে, সংসারীর অতিরিক্ত একজন পরমান্ধা আছেন, এবং তিনিই জগতের মূল কারণ। ১

वन चानि रहेट्टर (द, "वदर्य ज्यामान्तरः" वह अवि नश्माती चाचा रहेट्टरे चनट्टत छैदनिक श्रम्ब कतिर्टर, व क्वा भूर्क बना रहेत्रार ; [वदन चावात डिक्टर क्या दमा रहेट्टर (क्य १], ना त्म क्या दमा हत नाहे ; कातन, 'वहे (द, वनत्रवादर्जी चाकान' वहेन्द्रम

विक्रीरतारशाता-वार्यस वायन्त्

আকাৰ দৰে পরবাদ্ধা প্রজাবিত বাকার উক্ত বাকোও নৈই পরবাদ্ধার্থই পরাধর্ণ (সম্বন্ধ) করা বৃক্তিসকত। 'এই বিজ্ঞান্তর তবন কোবার ছিল বৃণ এই প্রায়ের উভাবেও আকাল-শ্বন্ধান্তা পরবাদ্ধারই উল্লেখ করা হইরাছে; ব্যা—'এই বে, ব্যরহ্বর্গুর আকাল, তিনি তর্মধ্যে অবস্থান করেন' ইতি; পরবাদ্ধাও বে, আকাল-শব্দের একটা অর্থ, তাহাও —'বে সোধা, তবন সংক্রমের সহিত বিনিত হর', 'এই প্রাণিপণ প্রতাহ এই ব্রহ্মনোকে পরন করিরাও তাহাকে লাভ করে না', 'প্রাক্ত পরবাদ্ধার সম্বন্ধনিত হইরা, পরহাদ্ধাতে অবস্থান করে' ইত্যাদি প্রতি দারা অববারিত হইরো, পরহাদ্ধাতে অবস্থান করে' ইত্যাদি প্রতি দারা অববারিত হইরেন, 'ইহার অভ্যন্তর বে ক্লুম্র আকাল আছে' এইরূপ উপক্রমের পর নেই আকালেই আবার আন্ধ-শব্দের প্রয়োগ ক্ষেত্রত পাওরা বার। অভ্যন্তর বৃত্তিতে হইবে বে, পরহাদ্ধাই এবানে প্রস্তাবিত; ক্ষুত্রাং "এব্যব্যান্থান্তর" এই স্থানে পরহাদ্ধা হইতে কৃষ্ট হওরাই বৃক্তিস্কে; আর সংসারী আদ্ধার বে, কৃষ্টি হিতি ও সংহার সন্ধন্ধে আন ও সাম্বর্গু নাই, এ কথা আম্বন্য পূর্মেই বলিরাছি। ১০

বিশেষতঃ এবানেও ব্রন্ধবিভার প্রভাব বহিরাছে; বধা—'লালা বলিরাই উপাসনা করিবে,' 'আবি ব্রন্ধবিদ্ধক আনা; 'আবি তোমাকে করিরাছিলেন'। ব্রন্ধবিজ্ঞান অর্থ—ব্রন্ধবিদ্ধক আনা; 'আবি তোমাকে ব্রন্ধতানাদেশ দিব এবং 'আবি তোমাকে ব্রন্ধ বুকাইব' ইত্যাদি বাক্যে সেই ব্রন্ধবিজ্ঞানেরই করা আরম্ভ হইরাছে। এখন বিবেচ্য বিশ্ব হইতেছে এই বে, অপৎকারণ ব্রন্ধ বইতেছেন অসংসারী, অপনারাদি-বর্মাতীত এবং নিত্যওছ বুছ ও বৃক্তব্যতাব; আরু সংসারী জীব হইতেছে ট্রন্ক ভাষার বিপরীত; প্রতরাং 'অহং ব্রন্ধানি' (আবি ব্রন্ধ) বলিরা কর্বনই ভাষার পরিব্রহ হইতে পারে না; কেন না, অপকৃত্র সংসারী জীব, প্রপ্রকাশ সর্ক্রেরর পরবেশ্বরকে আপনার অতিয় আলারণে গ্রহণ করিলে, সে অপরাধী হইবে না কেন ? অত্যবং 'অহং ব্রন্ধানি' (আবি ব্রন্ধ) ইত্যাকার বুদ্ধি করা উচিত লহে।১১

খতএব পুশ-জনাত্রনি, বৃতি, নবছার, উপহারপ্রকান, নাবজন, ব্যান ও বোগাদি বাহাই ভগবদারাবনার ইছা করিবে; কিছু অহিকে শীতনমুপে অববা আফাশকে বৃতিমানু সাকারভ্রপে চিন্তা করার আর অসংসারী পরবাত্মাকে কবনই সংসারী বীবের সহিত অভিয়ন্তশে চিন্তা করা উচিত হয় না। সংসারী আত্মা ও ব্রহ্মের একর চিন্তাগ্রতিশাসক শান্তভনিকে 'অর্থান'। প্রশংসাবাক্য) বলিরাই প্রবণ করিতে হইবে (১)। এইরুণ নিরাম্ব ছির হইনেই সবস্ত ভর্কশার, লোকবাবহার ও যুক্তির সহিত অবিরোধ স্থানন হইতে পারে। ১২

मा-अञ्चल क्या रहेटड लाटर मा ; (कम मा, यत्र ७ जावनवाका दहेटड बामा बाह (व. त्वरे भववाबारे बोवबर्ग (परवर्श अविहे सरेशास्त्र--अववकः 'क्षबरम विभव' करेबल উপक्रम कवित्रा 'शूक्रम मिहे ममुशारबत मरश क्रारम করিরাছিলেন,' 'প্রভাক রূপের অভ্রূপ হইরাছিলেন ভারাই তাহার প্রভাগ-(बाबा क्रम', 'बीड (उच) रूक्यान नवक क्रम निर्वाप कतिहा त्म नयूनारहत्र विराप विराप नाम अवानभूर्वक त्महे ताह नात्म वावदात कत्रका क्यारवा **प्यवद्यान करवान' हेळाडि नर्सनाबीड नहळ नहळ वड ७ वर्षनाबनाका प्रमानीडी** मृष्टिकर्शावरे महोत्रवामा आवानक वा अकान कतिरहाइ । त्मरेक्रम छिमि ভূতত্ত্ব কৃষ্টি করিয়া তর্ত্তাে প্রবেশ করিয়াছিলেন', 'তিনি এই সীমা অভিজ্ঞাৰ-भूर्सक देश चात्रा প্রাপ্ত बहेशाहिरमन.' '(महे एवका (भव्रतक हेका कतिरमम —আৰি এই জীবাস্বায়ণে এই তিনটি দেবতার (অনি জল ও পুৰিবীয় मर्था अरबन कवित्रा [नाम ७ ब्रभ अक्टिंठ कवित.]' अहे भवमाचा मर्जपूरतव **শত্যন্ত**ে গুড় বা প্ৰস্তাৱভাবে আছেন, সেই≎ত প্ৰকাশ পান না,' ইত্যাদি आधनकात्रक भवनायात्रके योवस्यस् अस्तन अधिभावन कविरक्ताः । विरम्बकः मुबल अंडिट उप्तर अंडिर बाय-ग्या अंद्रांग पाकाइ, (मेरे बाय)-ग्यरे चावात अञानाचा चौ:नत्रव वाहक द्वपात अवः 'हैनिहे नर्कहृत्यत चन्नताचा'

⁽১) ভাংগধা— প্রথমত: বেদ ই তাপে বিষক্ত (১) মন্ত্র ও (০) ক্রাছণ; মন্ত্রান্ম ক্রবান্ধ ক্রান্ধত: ক্রিয়া ও ভংগানন সকলনে নিযুক্ত; পার প্রান্ধণ লগি ইতিবাস ও প্রথমিন সকলনে নিযুক্ত; পার প্রান্ধণ লগি আহে। বিধিন প্রশাসাক্রণক আনুত্র। উভঃ ভাগের মধ্যেই করুক্তান অর্থনিদ বাকা আহে। বিধিন প্রশাসাক্রণক আনুত্র ক্রিয়েবের নিয়া-প্রতিপাদক বাকাকে অর্থনিদ বলে। অর্থনিদ ভিন প্রকার"বিয়াবে ওপরান্ধ: ভালকুরাদোচন্দ্রান্ধণ ভূলবান্ধনান্ধরান্ধনিন। মন্ত্রান্ধনিক প্রান্ধান্ধরান্ধনিন। মন্ত্রান্ধনিক প্রথমিন ক্রাণান্ধরান্ধরান্ধনিন ক্রাণান্ধরান্ধনিক বিধান করে। ভূলবান্ধনান্ধনিক প্রথমিন বলাক্রন ক্রাণান্ধনিক ক্রাণান্ধনিক ক্রাণান্ধনিক ক্রাণান্ধনিক ক্রাণান্ধনিক ক্রাণান্ধনিক ক্রাণান্ধনিক ক্রাণান্ধনিক। ক্রাণ্ধনিক। ক্রাণ্ধনিক ক্রাণান্ধনিক ক্রাণ্ডানিক। ক্রাণ্ধনিক ক্রাণান্ধনিক ক্রাণ্ডানিক। ক্রাণ্ডানিক করা প্রান্ধনিক ক্রাণ্ডানিক। ক্রাণ্ডানিক করা প্রান্ধনিক। ক্রাণ্ডানিকার করা প্রান্ধনিকার ক্রাণ্ডানিকার।

এইরণ শাই প্রতি থাকার আনা বার বে, পরবাস্থার অভিনিক্ত সংসারী বলিরা কোন পথার্থ নাই; এবং 'নিশ্চরই এক অধিতীর' 'এ কবৎ ক্রম্বই' 'এ লগৎ আত্মবরণই' ইত্যাদি প্রতি অসুসারেও আন্ধার ক্রম্বরণতা অবধায়ণ করা বৃক্তিসকত হইতেছে। ১০

ভাল কৰা, এইরপই বধন পাস্থনিভান্ত নির্বীত হইল, তথন সংসারিত্ব বা জীবতাবও পরমান্ত্রারই বৃতিতে হইবে; তাহা হইলেও পান্তের কথা বিরুদ্ধ হইরা পড়ে: [কারণ, পান্তের পরমান্ত্রার অসংসারিত্বই বর্ণিত আছে।:] আর আন্তঃ বিলি আরু মান্ত্রারী হর, তাহা হইলেও পান্ত্রোপালেনের আনর্থকালের ও লাইই প্রতিভান্ত হর; [কারণ, অসংসারী আন্তার সম্বদ্ধে আরু বিধিনিধেন সন্তব কর না।] সর্কান্ততর অবরান্ত্রা পরমান্ত্রার বিদিনেধে সন্তব কর না।] সর্কান্ততর অবরান্ত্রা পরমান্ত্রার বিদ্ধি সংসারিত্ব বর্ণ লাইই বীকার করা হয়; অরচ সেত্রপ হইলে পরমান্ত্রার অসংসারিত্ববাধক সমন্ত প্রতি, স্বতি ও কার বা বৃক্তি বিশ্ব হইরা পড়ে। আরু মনি বা প্রাণ ও পরীরসমূর্ভক তৃংবের সহিত আন্তার কর্মকিৎ অসম্বন্ধ্য প্রতিপানন করিতে পার, তাহা হইলেও পরমান্ত্রার পক্ষে প্রান্ত ও পরিত্যান্ত্রা কিছু না বাকার উপলেশের আনর্থকারপ যে যোন, কিছুতেই ভাষার বারণ করিতে পার না। ১৪

কের কের এ আপজির পরিহার হলে এইরপ বলিরা থাকেন—পরবাদ্ধা বে, সাক্ষাৎসগদ্ধে সীলরপেট স্তস্পের অভারতে প্রবিষ্ট হন, ভাষা নরে; ভবে কি না, পরবেশ্বরট বিক্তাব্দ্বা প্রাপ্ত হইরা জীবভাব প্রহণ করেন; সেই জীব পরসাদ্ধা হইতে ভিন্নও বটে, অভিন্নও বটে; বে ভাবে ভিন্ন, সেই ভাবেই ভারার সংসাধিত স্বহুংগালি স্থম্ব), আর বে ভাবে পরবাদ্ধার সহিত অভিন্ন, সেই ভাবেই 'অহং ক্রম' বলিরা প্রহণার্হ হন; এটরপ বলিনে সমন্ত কথাই অবিকৃত্ত হইতে পারে। ১৭

উক্ত সিহাকে—বিজ্ঞানায়া ভীবের বিকার সভাবপক্ষে এই কর্মট প্রা অবস্থিত হটতে পারে—দ্রবাপদার্থ পৃথিবী থেরপ বছরব্যের স্বাহার বাস্বাধী-কৃত সাবরব, তেবলি পরবাশ্বাও বছ এব্যের স্বাধীকৃত একটা সাবরব প্রবাপদার্থ; পৃথিবীক্ত আংশিক পরিধান ঘটানির ভার ভারারও একাংশ্বাত্রের পরিধান বীবাশ্বা; অববা কেশ ও উবরাধিকৃতি বেরুপ নিজে পূর্ত্তাবাদ্ধান করিকেও, ভারার একাংশ্বাত্র বিরুদ্ধ বা রূপান্তবিত হয়, ভ্রুপ বাভাবিক चन्द्रांत वर्धनान भवनाचात्रश्रं अकरणनाज विकांत आश्रं रहः चन्द्रां क्ष्म अञ्चलित वह राज्ञभ नर्सारत्नाहे प्रशापि चाकारत भविन्छ दतः, छक्षभ भवनाचाश्र नर्साणित नर्माणित कीवज्ञराभ भविन्छ दतः। উक्ष भव्यवरात्र वर्षाः, विष्ट्र भवाजीत वहविष अवाविभिद्रे भवनाचात्र चश्चिरत्न कीवछाय आश्रं रत्न तका छोत्र वहविष अवाविभिद्रे भवनाचात्र चश्चिरत्न कीवछाय आश्रं रत्न तकः। छोत्रा हरेराः, चर्चन्द्र विगार्ज हरेराः राज्ञ मान्द्र छेभ्छित्र चत्र विकान थाकात्र भवनाचात्र अक्षरतायक कथाछि निक्तारे छेभ्छित्र वा राज्ञाभार्य अव्यवस्थान विश्वार हरेराः भवाव्यार्थं अव्यवस्थान व्यवस्थान विकार छोत्र वा स्थार्थं अवस्थान विकार हरेराः भवाव्यार्थं अवस्थान हरेराः भवाव्यार्थं अवस्थान हरेराः भवाव्यार्थं अवस्थान हरेराः भवाव्यार्थं अवस्थान विकार हरेराः भवाव्यार्थं अवस्थान हरेराः भवाव्यार्थं अवस्थान हरेराः भवाव्यार्थं अवस्थान हरेराः भवाव्यार्थे अवस्थान हरेराः भविन्यार्थे अवस्थान हरेराः भविन्यं विवाय्ये विकार्ये विवायः विवायः

বদি বল, পরমাদ্ধা হইতেছে—সর্বাদাই অব্ত-সিদ্ধ অবর-স্ববিত—
অবরবী (১); স্তরাং তিনি বীর বাতাবিক অবহা পরিত্যাগ না করিলেও,
ভাহার একদেশ সংসারী জীবাকার ধারণ করিতে পারে; তাহা হইলেও অবরব
হবন সমস্ত অবরবে অমুগত বা অমুস্যত, এবং অবরবীই ধবন অবরবের দোবভণভানী, তবন জীবাদ্ধার সংসারির দোব পরমাদ্ধাতেও অবগুই সংক্রামিত
হইতে পারে; অতএব উক্তপ্রকার কর্মনাও অনিষ্ট অর্থাং বার্থসিদ্ধির অমুক্ল
মহে। আর হৃদ্ধের জার সর্বতোভাবে পরিণামপক্ষেও সমস্ত প্রতি ও শ্বতিবাক্যের সহিত বিরোধ উপস্থিত হর। ১৭

'ভিনি নিরংশ' নিজির ও শাস্তবভাব', 'অপ্রকাশ অমূর্ত্ত ও জন্মরহিত পূক্রব (পরমায়া) বাহিরে ভিতরে অবভিত,' 'আকাশের কার সর্বব্যাপী ও নিত্য' 'নেই এই আত্মা মহান (ব্যাপক), জন্মরহিত, অজর, অমর ও অমৃত' 'কবনও জন্মে না বা মরে না' 'এই আত্মা অব্যক্ত' ইত্যাদি শ্রুতি, স্থৃতি ও বৃক্তি সমন্তই এ পক্ষে বিরুদ্ধ হর। আর অচল বা গতিহীন পরমান্থার একদেশ জীবাত্মা, এই পক্ষেও জীবাত্মার কর্মকল-ভোগোগবোদী প্রদেশে পরন করা সম্ভবপর হর না; আর পতিসম্ভব

(১) ভাষ্পাহ্য-বন্ধর বব্দব সাধারণতঃ দুই প্রকার-দ্রুসিন্ধ ও অনুস্থানিও; বে স্মান্ধান্ধর্ম সংবোগ হারা বিলিত ২৮, সে সবত দুক্ত সিন্ধ, বেসন-এক ডিড ওকক্রি কেশ এবালে কেশক্রি প্রশাস পূবক্ হইছা একত্রে একটি অবছবী আকার ধাবন করে। আর অনুভানিও অবছব—বেষম ঘটের অবছব সমূহ; বটের অবছবক্রি ক্ষিণ্ডালেও বট চাজিলা পুরুষ্ণ বাকে সা; ঘটের অবছবনাশে বটেরও বিনাশ হইছা বাল, তেমনি প্রাধান্তেও পরবাধান্ত নিতা অনুভানিও অবছব ব্যানিক মুখিতে হইনে বে, ক্ষিণ্ডালেও আব্রুষ্ণ সাহ স্বিভ

हरेल (य, शतवाचात्रहे शरगातिष गणायमी हत्र, अ क्या छ शृंदर्सहे स्त्रा हरेताए। २৮

বদি বল, অন্তিত্বিকের ভার পরবাদ্ধার ই একদেশরুকী বিজ্ঞানাত্ম। জীব)
সংসারী হয়; ভাহা হইলেও পরবাদ্ধার অবরব ক্টিত হওরার, ভাহার সেই
অংশে কত উপস্থিত হইবার সন্তাবনা। অনুর সেই ক্টেত অংশই বদি অভ্তর
বার, ভাহা হইলেও পরবাদ্ধার অপরাপর অংশবিশেষে ছিল্ল (পর্ক) উপস্থিত
হইতে পারে; অধিকন্ত পরবাদ্ধার অন্তবং-(কতশৃক্ততা)-বোধক ক্রতিবাক্যেরও
বিরোধ হইরা পড়ে। বিশেবতঃ পরবাদ্ধার অংশকরপ বিজ্ঞানাত্মার সংসর্বপ
বা নিঃসরণ বীকার করিলে, পরবাদ্ধান শৃক্ত কোনও স্থান না থাকার
তব্যধ্যে অপর অবরবের নিঃসরণ ও প্রবেশ হইলে ত ক্রবরে শৃক বিভ্
হইলে ধেরপ বিদ্না হর, পরবাদ্ধারও তত্ত্বপ বেদনা উপস্থিত হইতে
পারে। ১৯

বদি বল, প্রতিতে বধন অগ্নিফ্লিকের দৃষ্টান্ত রহিরাছে, তধন এ আপতি দোবাবহ হর না: না, সে কথাও হইতে পারে না; কারণ, প্রতি কেবল আপক বাত্র, অর্থাৎ কোন শারাই কোন পদার্থকৈ রপান্তরিত করিতে পারে না, পরভ বে বন্ধ বেরপ তাহার সেই বরপটিই বধাবণভাবে জাপন করিরা দের বাত্র; কিন্তু কোন বন্ধরই বভাবের বিপর্যার বটায় না। ভাল, তাহাতেই বা কি হইল ? হাা, ইহাতে বাহা হইল, বলিতেছি; প্রবণ কর,— সাবয়ব বা নিরবয়বণ বে সমন্ত পদার্থ বেরপ ধর্মসম্পার বলিয়া অগতে প্রসিদ্ধ, সে সমুদারের ভৃষ্টান্ত প্রদর্শনারা তদপ্ররণ অপর কোনও বন্ধ প্রতিপাদন করাই শাল্রের উদ্বেশ্ব; প্রতরাং শাল্র কথনই দৌকিক বন্ধর বিরোধ-জাপনের কন্ত লোকসিদ্ধ ভৃষ্টান্তের উল্লেখ করিতে পারে না; আর বদি তাদৃশ দৃষ্টান্তেরও উল্লেখ করে, ভাহা হইলে সেরপ ভৃষ্টান্ত নিশ্চরই অনর্থক হয়; কারণ, হাইণিত্তকে— বাহার লক্ত ভৃষ্টান্ত, তাহার পক্ষে প্ররণ ভৃষ্টান্তর কোনও উপপত্তি হয় না; কেন না, শত শত ভৃষ্টান্ত বারাও অগ্নির শীতলতা বা আহিত্যের অভাসক্তা প্রতিপাদন করিতে পারা বার না; কারণ, প্রত্যক্ষাকি প্রবাণ বারা অধি প্রভৃতি বন্ধর অভ্রপ্রকার বভাবই প্রতিপন্ধ হইয়া থাকে। ২০

আৰু, এক প্ৰমাণ কৰনই অপর প্রমাণের বিরোধী হয় না, বরং অগর প্রমাণের যাহা অবিষয় অর্থাৎ অক্ত প্রমাণ যারা বাহা প্রমাণিত হয় নাই, নেইয়াপ বিষয়ই জাপন করিয়া থাকে। বিশেষতঃ পাল্লপ্রমাণ করনই। লোকপ্রনিদ্ধ বিবরের সাহায্য ব্যক্তিরেকে অবিজ্ঞান্ত কোনও অলৌকিত বস্তু জাপন করিতে সমর্থ হর না; অভএব লোক-প্রসিদ্ধ নির্মের অভুসরণ করিয়া কেইই পরবাস্থার সাব্যব্দ বা অংশাংশিতাদ কর্মনা করিতে স্মর্থ হয় না। ২>

বি বল, 'বেৰন ভাষি ক্ষ ক্ষ ক্ষ ক্ষিপ্ন'ন্দ' ইচ্যাদি প্ৰতিতে এবং 'আবাই অংশ নীৰভূত' ইত্যাদি শ্বতিশাশ্বেও [নীৰকে প্রবাদ্ধার অংশ বলা বইরাছে; ক্তরাং ইবা ভবিজ্ঞাত কিনে ?]; না—এ কথাও বলা চলে না; কাঁৱণ [লীব ও প্রবাদ্ধার] একম্ব বা অভেদ-প্রতিপাদনেই উ স্বন্ধ প্রতি শ্বতির তাৎপর্ব্য; কেন না, অগ্নির ক্ষিত্র প্রকৃতপক্ষে অগ্নিই গটে, অগ্নি ইইডে প্রকৃষ্ক মহে; ক্ষুত্রাং জগতে অগ্নি ও তাহায় ক্ষ্মিক এক অভিন্ন বলিরাই ব্যবহারের বোগ্য ! অভএব অংশ বাক্রই অংশীর সহিত একম্ব-বাবহারাই; এত্যক্ষ্মারে বৃত্তিতে হইবে, বে সমত্ত শক্ষ প্রমাণ লীবাদ্ধাকে প্রবাদ্ধার বিকাশ্ব বা অংশ বলিরা নির্দেশ করিয়াছে, প্রকৃতপক্ষে সে সমত্ত শক্ষ লীবের সহিত প্রকৃষ্মান্ধার একম্ব প্রতীতি বাজের বিধারক। ২২

উপক্রম উপসংহারও ইহার অপর সমর্থক,—সমস্ত উপনিধনেই প্রথবে একম (প্রমের অবিতীয়তা) প্রতিক্ষা করিরা, (প্রতিক্ষা— প্রকৃত বিবরের নির্দেশ) দুইার ও মুক্তিমারা সমস্ত অপথকে পরমায়ার বিকার ও অংশানিতাবে প্রকিশালন করত পুনল্ড উপসংহার কালে একছের কণা বলিয়াছেন উলাহরণ ম্বা—এবানেই 'এই সমস্ত অপথই আছম্মরূপ' এইরপ প্রতিক্ষা করিরা, অসতের উৎপত্তি, ছিতি লয়ের বহু দুইার প্রমর্শন করিরা কারণ সহছে, বিকার ও বিকারীয় অর্থাৎ কার্যা,ও কারণের একম্বপ্রতীতির অকুন্নে নহনিব কারণ প্রকৃতি করিয়া উপসংহারছলে বলিবেন বে, 'প্রম্ন কোন গরুবই ভিতরে বা বাহিন্দে নাই' 'এই আলাই প্রস্ক' ইতি। ২০

অভএব বাক্যের প্রারম্ভ ও উপসংসার হইতে এই সিভাতই অববারিত হইতেছে বে, অগতের উৎপতি, দ্বিতি ও প্রদার প্রতিপাদক বাকাওলি কেবল পরবাদ্ধ-ক্যানের কৃষ্ণভাষাপনের কর্তই প্রযুক্ত হইরাছে; এরপ বীকার বা ক্রিলে বাক্যতেকের সভাবনা হয়। [একটা বাক্যের মুইপ্রকার অর্থ করাকে বাক্যাকের বণে।] ২০

া । এ বিষয়ে উপনিষৎ-সভাষায়বিশায়ধগণ একটি আব্যায়িক। (গল) বলিয়া বাহুখ্যা—কোন এক যাজপুন অন্তেম গরই শিভাষাতা কর্কুত পরিভাক हरेता नावकत्म भतिनकिक रहेताहिन : नरमभतिकत्म मा माना नाकात हन আপনাকে ব্যাধনাতীয় মনে করিয়া ব্যাধনাতাচিত কর্মের অভ্নয়ণ করিতে नानिन क्रिक 'कावि स्टेरफि--नाना' अहेबन वान करिना करनक ब्राह्मिकिक व ब्रीकृष्ठीरम क्षेत्रक दहेन मा । वथन क्यान अक्सम शहब बहान ৰ্ছাপুত্ৰৰ সেই ৱাৰপুত্ৰের রাজ্যসন্দাহ পাইবার স্কাৰনা বৃদ্ধিতে পারিরা ভাষার রাজপুত্রর জাপনের এক বলিদেন—'ভূমি ব্যাবজাতি নতে, ভূমি चन् वाबाव भूव ; (कान धकारत वाावगृरह धारवन कतिवाहवाज', त्न छ । ब बहुन धारवाद माछ कतिहा जापकाछी । काम ७ छहुछि कर्चमृत्र পরিত্যাপপূর্বক আপনাকে রাজা বনে করিরা আপনার পিতৃপিতাবহাছির আচার ও রীতির অনুসরণ করিতে লাগিল। ট্রিক সেইরূপ এই জীবাছাও অধিক্লিকের ভার পরমান্তার তুলাবভাব হইয়াও পরমান্তা হইতে বিভক্ত ब्हेबा अहे (महिल्क्षामिया भारत्या धार्यन कतार्थ, निर्म मश्नाववर्षिविक्रिक इहेबां (महिलामिनाठ-मानाइ-पायंत्र चनुतृति कविता पाक,-चामनाइ भव्याच्छात कामा ना शकाव जाभनात्क त्यादिवाचक, इन, चुन अवर सूरी हृश्यो विशवा अध्यान कतिहा थात्क, शाव, आछार्यात निकृष्ठे वहेरक 'कृषि এই (मह्दलियाश्वक मद, नाकार उत्तवक्रण।' अहेक्रण नवाक् स्राव माछ कदिबाद भट, करे शैवल भूख दिल ७ वर्गावि-विवद्रक कावना भविछा।भ-नुसंक 'बाबि उब' हेठाकात उबायकार आध रह । २०

উক্ত দুৱাৰছলে বালপুরের বালবৃথির ভার ছুবি অন্নিমূলিকের ভার
পররেজ হইতে বহির্গত হইরাছ'. এই কথা বলিলে, জীবেরও রেজবৃত্তি
দুল্লর হইরা থাকে; কারণ, অন্নি ছইতে 'হির্পবনের পূর্বে ক্লিজ ও
অন্নির একথ বা অভিন্নভাব প্রভাজনুর; অভএব প্রথণ, বনি, লোছ ও
ক্লিজের বে, দুরার প্রথণিত হইরাছে; বুলিতে হইবে, জীব-রেজের অভেববৃত্তির দুল্ভাসম্পালনই ভাহার মুখা উভেড; কিন্ত উৎপত্তি প্রভৃতি ঘারা
ভোগপ্রতিপালন করা ভাহার উদ্দের নহে। সৈত্তবণিও বেরুপ সর্বভাজাবে
লবণয়নে পূর্ব, ভজ্রপ আত্মাকেও এক্যার জানস্কর্রপ বলিরাই অবধারণ
ক্রিতে হইবে; ভারণ, প্রতি বলিভেছেন,—'ভাহাকে এইরুপেই কর্দন
ক্রিতে হইবে; ভারণ, প্রতি বলিভেছেন,—'ভাহাকে এইরুপেই কর্দন
ক্রিতে হইবে'। চিন্তাপটের ভার এবং কৃত্র ও সমুক্রাবির ভার ব্যক্তর ধ্বজেও
হকি, ভাহা হইলে ক্রমেই উপসংহারন্থনে সৈত্তব্যক্তির ভার ভিতরে

যানিতে নর্বার একরন (ভানরণ) যানিতেন না, 'এবং একরণেই ধর্নন করিতে হইবে' এই শ্রুতিযাক্যেরও প্রয়োগ করিতেন না; আর 'বে লোক এই ব্রুতেন নানাভাষের বভ ধর্নন করে' ইভ্যানি নিকাবাক্যেরও নির্বেশ করিতেন না। ২৬

অভএৰ বৃতিতে হইবে বে, একসাত্ত একপ্রপ্রাস্থার বৃচ্চতা-সম্পাধনের অভই উৎপত্তি, হিতি ও প্রদায় কিছিত হইয়াছে, কিছু সেরূপে লানিবার উল্লেখ্য নহে। তাহার পর, সংসারী শীবাস্থাকে নির্বর্থত অসংসারী পরসাম্থার এক বেশ বা অংশ বলিয়া করনা কর। বৃত্তিবৃত্তও হয় না; কারণ, পরসাম্থা পতা-বভই অবেশ অর্থাৎ অব্যবহিতীন: পঞ্চান্তরে অবেশ: নির্বর্থ) পরসাম্থার এক্ষেশে সংসারিদ করনা করিলে প্রকৃতপক্ষে পরসাম্থারই সংসারিদ করিত হইয়া পত্তে; [অভএব এরূপ করনা কংনই সঙ্গত হইঙে পারে না]। ২৭

विक तम, यहे-करकांत्रि উপाविकत चाकारेनकाशनत मात्र शरवाचात्रक च्छा छेगारि चादा अकालन कतिछ हहेएछ भारत मा -छाहा हहेरल विदिकी (माकविरात क्थमछ गद्रवासात अक्टब्स वीव गुवक विनवा क्षकीक बहेरत भारत ना। श्रीम तम, दिरवकी अविरवकी मकामबहे क क्षेप्राहिक काम (शोवार्षविषद्भक काम व हरेएठ स्वया वाह : मा. त्र कथां विनारं भार मा ; कात्रन, जान्म इत्न व्यविदयकी विकासाक-बिट्नंड वृद्धि लाखिवन-विथा। जात्र विद्युकी लाकिम्द्रित वृद्धि इत (करन वावहात-निशाहक नाज ' नठा नाह ; फेलाहतन-स्वयन नीक्रण আভাৰত সময়বিশেৰে বিবেকী লোকের নিকটও ক্ল বা ব্রফ্রবর্ণ বলিয়া প্রতীত হয়; বৃদিতে হইবে বে, আকালের তাদুশ কুক্ষত ও রক্ততা কেবল ব্যাবহারিক দশার সভা লাভ করিয়া বাকে মাত্র : কিছ আকাশ করমও সভা সভাট প্ৰাহাদের নিকট ক্লফ বা বজাবৰ্ণ বলিয়া সভাভা বৃদ্ধি সমুৎপাদনে সমৰ্থ बह मा। चल्कव बाहाता गलिक, काशामित गत्क उच्चवक्रममिक्रमान समा क्षाच्य बरमारनिकार, विकाद-विकादी विकास, अकारम अकारनिक कहना कृता छेड़िक महः ; कावन, नर्सक्षकांत्र क्वमात्र निवनम कवाहे नवक छेन्निवर्षह সার কর। অভএব সর্বপ্রকার করনা পরিভ্যাপপূর্বক আকাপের ন্যায় ব্ৰব্ৰেড নিৰ্দিশেৰতাৰই প্ৰহণ করিতে হইবে; কারণ, শভ্পত ক্ৰতি ৰলিভেছেন-'ভিনি আকাশের ন্যায় সর্বাচ ও নিভা', 'সর্বাহ পর্যাত্তা व्याक्षाद्य निश्व एवं मां देखाति। २৮

विक्री बोर्काक्र-धार्यस् बोचनम्।

শিলি, উক্তর্যার পরির একবেশে শীকর করনার ন্যার, পরবা প্রকাশশীল পর্বের একাংশে শরকার করনার ন্যার জীবারাকে করনও প্রথনিক্ষণ পর্বাহ প্রথনের বিপরীত গভাবসন্পর বলিরা করনাও করিবে না; কারণ, সর্বপ্রকার তেলকরনার শপনরনেই সবত উপনিবংশারের প্রকৃত তাংশর্য। শতএব সংলারবর্ত্তবিশিক্ষত শারাতে বে সমূহর কেন্যাবহার, কংসবত্তই নাব-রূপান্তক উপাবিসবন্ধকনিত, (পাতাবিক নবে); কারণ, 'প্রক্ষ প্রভাবে বিবেকী পরবেশর সবত রূপ, আরুতি) নির্মাণ করিরা এবং সে সমূলারের নামকরণপূর্বাক সেই সবত নামে সভোবন করিরা অবহান করিতেতেনে', 'এবংবিধ বহু বরু হইতে জানা বার বে, পরবান্তার সংগ্রিক-বর্ত্ত শার্তিক নহে, পরন্ধ আরুক্তানিক নির্মাণ করিরা এবং ক্রে পাতাবিক নহে, পরন্ধ আরুক্তানিক বির্মাণ করিরা এবং ক্রে পাতাবিক নহে, পরন্ধ আরুক্তানিক সোলিক-বৃদ্ধিত প্রবাহ্মকার বির্মাণ করিবিল সংশ্

'তিনি বেদ গানই করেন, ক্রিরাই করেন', কর্ম বারা র্থিও পান না, অথবা করিয়াও বান না', 'পাপকর্ম বারা নিগু হন না', 'পর্মভূতে স্বান্তাবে ' অবস্থিত, কুকুর এবং খপাক চাঙালে [সম্বর্ণা]' ইত্যাবি ক্রতি, স্থতি ও বৃক্তি হইতে পরনাথার অসংসারিবই প্রতিপন্ন হইতেছে। অতএব ব্রহ্মকে ব্যবন নির্বন্ধৰ বলিয়াই শীকার করিতে হইবে, তথন বিজ্ঞানাত্ম ভীবকে তাহার এককো, বিকার, শক্তি কিংবা অন্ত কিছু বলিয়া কল্পনা করা বাইছে পারে না। অংশাবিতাবপ্রকাশক ক্রতি ও স্থতি বাক্যগুলির প্রধান উদ্বেশ্ব হইতেছে—জীব-ব্রহ্মের একক প্রতিপাদন করা, কিছু ভবপ্রতিপাদন করা নহে; কারণ, তাহা হইলেই ক্রতির অভিপ্রেড বিষয়ে একবাক্যতা (এক-দ্রণতা) রক্ষা পাইতে পারে, এ কথা আবরা পূর্বেই বলিয়াছি। ৩০

পরবাদ্ধা – পরপ্রবের একদ জাপন করাই বহি সবত উপনিবদের অভি-প্রেত হয়, তাহা হইলে তদিক্র অর্থ – বিজ্ঞানাপ্রতেদ করনা করিবার প্রয়োজন কি !—ইহার উভরে কেহ কেহ বলেন,—কর্মকান্ডের (কর্মপ্রতি-পাদক গালের) প্রাবাদ্য ও অবিরোধ হাপন করাই উহার প্রয়োজন ; কারণ, কর্মপ্রতিপাদক বাকাগুলি প্রধানতঃ বছবিব ক্রিয়া, কারক, কর্ম-কন, ভোজা ও কর্মাণেক ; সুভরাং শীব্যেদ না বাক্ষিয়ে, পজাভরে অনংনারী পরবাদ্ধার একদ হইলে স্বভলি ক্রিকান্যে লোকের অভীকন- নাবক কর্মান্ত্রানের বিধান করিবে? অর্থাৎ নীবান্ধার বনি জেন না বাকিত, আর বনি অনংনারী পরবান্ধাই একবাত্র পদার্থ হইতেন, ভালা হইলে ক্রিয়াকারকানি ভেদনাপেক কর্মকাণ্ডের কোনই আবস্তুক হইত না, অনিইক্যনাথক কর্ম হইতেও লোকদিগকে বারণ করিতে সর্ম্ব হইত না; এবং কৈনি বন্ধ, নীবের কর্মই বা নোহজ্যেক উপনিবদের অবভারণা হইবে? অধিকর পরবান্ধার একহবাদীর পকে পরসান্ধার একবোপজেনই বা কিরপে হইবে? আর সেই একবোপজেনের কনই বা হইবে কি প্রকারে? কেন না, বন্ধ বাক্তিরই বন্ধননালের ক্ষম্ব উপনিবৎনর প্রান্ধান হর, কির সেই বন্ধনই বন্ধি না গাকে, ভালা হইলে সম্বন্ধ উপনিবৎনারেই ত নিবিবর বা নির্মাক হইরা পড়ে। ৩১

এইরপ সিঙার বির হইলেই কর্মকাওবাদী পক্ষের সহিত উপনিবলাদী পক্ষেরও বিরোধ-পরিহারের পথ বা উপার সমান হইতে পারে তেল মা থাকিলে কর্মকাও বেমন নির্দিশ্যর হেতু প্রামাণা লাভ করিতে পারে না, উপ-নিবলের পক্ষেও তাহা সমান! আছা, এইবপই বিদ হর, ভাষা হইলে বাহার প্রমাণ বীকার করিলে অভ কাহারও বার্বে বাাগাত না গটে, সেই কর্মকাওেরই প্রামাণ্য হউক; উপনিবংসমূহের প্রামাণ্য বীকার করিলে, ববন পার্বের ব্যাগাত ঘটে, তথম উপনিবং-সমূহেরত বারং অপ্রামাণ্য হউক; বিলেমভঃ বৈচিক কর্মকাও (বেলের কর্মতাগ) প্রমাণরূপে পরিগ্রহীত হইরা কথনই আমান্য অপ্রমাণ বিলয় পরিগণিত হইতে পারে না; কেন না, প্রজীপ নিভের প্রকান্ত বন্ধকে কর্মনও প্রকাশ করে, আবার কথনও করে না, এরপ ভহইতে পারে না;, অতএব উপনিবদপেক্ষা কর্মকাণ্ডেরই প্রামাণ্য হওরাই সম্পূর্ণ উচিত। ৩২

বিশেষতা প্রত্যকালি প্রমাণবিরোধন্ত এ পক্ষে অপর কারণ; উপনিধংশান্তপুলি ব্রক্ষৈকর প্রতিপাদন করিয়া কেবল যে, কর্ম্মকান্ডেরই প্রামাণা
ব্যাঘাত করিতেই, তাহা নহে, পরন্ধ বে সমস্ত প্রত্যকালি প্রমাণের সাহায়ে
বৃহত্তর ভেদপ্রতীতি ইইরা গাকে, সেই সমস্ত প্রত্যক্ষ প্রমাণের সক্ষেত বিশ্বন
ইইতেই। অতএব উপনিধং-সমূহেরই অপ্রামাণ্য অববা অভপ্রকার অর্থ
ব্য হউক, কিন্ত ব্রক্ষেকর প্রতিপাদনকরাই বে, উহাদের শ্বর্থ দয়, ইহা
বিক্ষিত। ৩০

मा- व क्या वहेरू भारत मा; कात्रन, हेशात क्या भूरतिहै क्या

644

रहेशार । वकीर संवारतह त्यं, सामाना वा प्रसामाना, ववार्व कारतह केंद्र-गारन ७ पहरनाश्मरे छारात्र अक्नाव कात्रन, पर्वार त्व व्यान व्या-नवार्य काम क्यांत : कावारे बागान, जात ता बागान वान-नवार्य काम क्यार मा. काराहे कक्षमान : देश ना रहेला नवाहि कारवर विशत क्या अकृष्टिक क्षत्रानगरमा गतिमनिक रहेरक गातिक। जान्या, हेरारकहे ना क्ल कि ? [क्ल बहे ता,] डेननियर-नवृष्ट यति ब्रोटक्क वियस वर्वार्य कालहे भग्रूरभाषम करत, छरन चान चक्षमान बहेरन रूम ? नि नम, मा-क्सार्य काम नमूर्भाषम करत मा, रायम-- 'कवि चैठन' वहे क्वांत व्यार्थ कान क्यांत দা, তেমনি: এলপ বলিলে, তোমাকে আমি ভিজাসা করি বে, উপনিবদের श्राचाना-मिरवनार्व कृति. (व नारकात व्यवतान कतिरुक्, ('केननिवर श्राचन मर' विज्ञास्त ता वाकाश्व कि विन्तरहें छैनवियायत श्रीवाना-विरायक बहेरकार मा ? चरवा चर्षि कि वर्धकान ब्रगांकि श्रकान करत मा ? चर्चार चर्षि स्वस्त मिन्नकर क्रम क्रान करत, रहमिन रहामात वाकाश मिन्हररे छेनिकररत প্রামাণ্য-নিবেধ করিতেছে : অভএব ভোষার বাকাও নিক্তরই প্রবাণ : [ভবেই बहेन,] छावात निरंशक वाका विक क्षवान वह, छर छेनिवर नारबक्छ चवछरे खात्राना हरेत्व ; चछअव वहानस्त्रदारे वजून त्व, रेराव भविदात वा बीबारमा चात्र कि बहेरछ शास्त्र १। ७६

প্রশ্ন হইতেছে বে, আবার বাক্য হইতে বে. উপনিবরের প্রাবাণ্য-প্রতিবেশ-বোধ, এবং অরির বে রূপ-প্রকাশকরজান, তাহা প্রত্যক্ষরিত্ব; প্রভরাং তাহা প্রথাণ। তাল কথা, তাহা হইলে ত্রবৈক্তপ্রতীতি বিবরেও প্রত্যক্ষরা-সর্থ-পালক উপনিব্ধ-সন্থের উপর ভোষার এত বিবেশ কেন ? শোকবোহালি অনর্থনিয়তি বে, ত্রভাবৈক্তজানের প্রত্যক্ষরিত্ব কল, এ কথা আবরা পূর্বেই বলিয়াছি। অতএব-এ প্ররের উভর পূর্বেই প্রবৃত্ত হওরায় উপনিবরের সম্বন্ধে অপ্রাবাণ্য পভা হইতেই পারে না। ৩৫

আরও বে, বলা হটরাছে—বার্থব্যাঘাতকর (উপনিব্দু নিজেই নিজের আর্থের ব্যাঘাত ঘটার) বনিরা উপনিব্দু শাস্ত প্রবাশ হইতে পারে না; ভাষাও বইতে পারে না; ভারণ, উপনিব্দুশাস্ত্র, বে অর্থ প্রতিপাদন করিতেছে, ভাষার ব্যাঘাতক, বা অনুভাবোধক অপর কোনও প্রবাশ বেবিতে পাওয়া যায় 'মা। 'অরি উভও বটে, বীতলও বটে' এই বাজ্য হইতে বেবন বিভ্রু বৃইটি (বীতোভক) অর্থের বোধ হইরা থাকে, [মুভরাং ঐ বাজ্য অঞ্জ্যাণ হয়];

केनिवर्णात्र क जात्र (नक्षण अकवात्र 'अस निकारे अक जविकीत', जावात्र 'निकारे अक जविजीत नर्रं, अरे त्रकात रिक्कार्य अकिनावन कतिरहरू ना; [जक्ष्य केनिवर्णात्र जात्रवा्ष जात्रवाण रहेरत (कत ?] छात्रात्र भर, जावत्र और ता, अकरे वारकात जात्रवार्य वीकात कतित्रा विज्ञाहि, अकुक्तरक छात्रा वरेरकरू—'कक्ष्मभगववाप (>); किंद्र वारकात आवाना निक्रमर्भत नवस्त त्य निवन—अकरे वारकात जरतकार्यक कथनरे आक रहेरक भारत ना; जात्रवार्यक हरेरकरे वार्यराव्यक अवार्य विचाकक — अरेक्स भवन्यत-विक्रम जात्र अक्षेत्र कर्य रहेरक भारत; किंद्र वीवात्र वारकात्र आवाना वीकात करान, छात्राव्य निकास वरेरकर अरे ता, अकरे वाका कथनक विक्रम अवार्यत निकास वरेरकर अरे ता, अकरे वाका कथनक विक्रम अवार्यत अर्थ वरेरकरे अक्षाकाला करात ना वा कतिरक भारत ना; कात्रव, वर्षात्र अक्ष वरेरकरे अक्षाकाला व्यत्न, (किंद्र जरतकार्यक भरक तिरे अक्षाकाला निकास वरेरकर निकास वरेरक

আর উপনিববের বংগাও বে, কোন কোন বাকা এতৈকান বিবেধ করিতেছে, এরপ ও বেবিভে পাওয়া বার না। তবে বে 'অরি শীতন ও উক' এইরপ নৌকিক বাকা আছে, নেবানেত একবাকাতা একার্বে নম্বর) কবনই হর না; কারণ, ঐ বাক্যের একবেশ বে, 'উক্কব'; তাহা ও প্রত্যাক্তরাক্ত; [শুতরাং ঐ অংশটুকু প্রনিছের অক্রাক বাত্র]; অতএব 'অরি শীতন' এই একটিই নেবানে প্রকৃত বাকা; 'অরি উক' অংশটি কেবল প্রবাণান্তরাক্তুত বিবরের স্বারক বাত্র, কিন্তু প্রবিবোধক নহে; কালেই 'অরি শীতন' এই অংশের সহিত উহার একবাকাতা হুইতে পারে না; প্রত্যাক্তুত উক্তার স্বরণ করাইরাই উহা চরিতার্থতা লাভ করে। কেহু বে, এই বাকাটিকে বিক্রার্থ-প্রতিপাদক বনিরা বনে করে, তাহা ব্যাবিষাত্র; 'শীত' ও 'উক' পদহরের সহিত অরি-শব্দের নাবানাবিকরণা-প্রয়োগই (স্বানবিভজিত্বত

^{(&}gt;) তাৎপর্যা—পরণকের অভিনত করা বীকার ভরিচা সইরা বাহ। বলা বর্গ, তাহাকে 'অকু:প্রবাধ' কলে। সেওপ বাকাহোকি বারা বপকের কোনও হানি হয় না। আলেন্য ছলে বিশক্ত হে, একই উপনিবহ্-বাংকার বার্ধনাবারকতা ও বার্ধনাবারকতা পর্যাধারকতা করাই ন্যাধার করিছেছিলেন; একর বলিকেন্তেন বে, না বিশক্তের উপ্রপ আগতিই বইকে পান্ধ না; করিব, এই করা আনার নিভাল্যন্তর সংহ অক্ষুপ্রবাধার; অক্ষুপ্রবাধার বিভাল্যন্তর সংহ অক্ষুপ্রবাধার; অক্ষুপ্রবাধার বিভাল্যন্তর সংহ

াৰণেবণ-বিলেধাভাবই) ঐলপ আছি-সমুখণাবনের কারণ; কিছ ইং। স্থানিভিড বে. লৌভিক বা বৈধিক প্রয়োগের কোবাও একট বাকা সনেকার্থ-বোধক হয় সা। ৩৭

আছও বে আপতি হইরাছিল—উপনিবদ্ণান্তওলি কর্মকান্ডের প্রানাণ্য হানি করিতেছে; (২) ভাহাও নর; কারণ, উপনিবদের অর্থ বা ভাৎপর্ব্য অন্তঞ্জনার অর্থে, (কর্মকাণ্ডের প্রানাণ্য-বিদ্যান্তে নহে)। প্রক্রৈকপ্রতিপাদনেই সম্ভ উপনিবদের ভাৎপর্ব্য; কিন্তু কোন উপনিবদের প্রভাগতির বিবর-প্রান্তির উপযোগী সাধনোপদেশের কিবো ভবিবরে লোকনিরোগের কোন বাধা দিভেছে না; কেন না, ভাহা হইলে উপনিবদ্বাক্যেরও সেই অনেকর্মতা হোম ঘটে; অবচ ভাহা কর্মকই যুক্তিসকত হর না। আর কর্মকাণ্ডের বাক্যগুলি বে, নিজ নিজ অর্থ বিবরে প্রবা—বর্ধার্ক্তান সমুৎপাদন করে না, ভাহাও নহে; অসাধারণ—বাহা অন্ত বাক্যের বিবর নর, সেরপ অর্থ বিবরে বাদি প্রবা সমুৎপাদন করে, ভাহা হইলে অন্ত বাক্যের সহিত ভাহাং বিরোধ হালৈ কেন । ৪ তা

বদি বল, অবৈত্রভবাদে নিবোল্যাদি বিবর বাকে না বলিরাই ঐ প্রবা বাক্য সন্থপানন করে না; না, এ কবাও বলা চলে না; কারণ, "বর্মান্তিলাবী বর্ণপূর্বাস বান করিবে" "প্রাক্তকে বব করিবে না" ইত্যাদি বাক্য হাছে বে, প্রবা অন্নিতেত্বে, ইয়া প্রভাক্তিত্ব; উপনিবৎ পান্ন প্রক্রৈকত প্রতিপানন করিলেও প্রধা আন অন্নিবে না—কবাটা হইতেত্বে অনুধাননাত্র; কিন্তু প্রভাক্তিক্রত্ব অনুবান ত প্রাবাণ্য লাভ করিতে পারে না; অতথ্যব উপনিবলের প্রাবাণ্য বীকার করিলে বে, কর্মকাতীর বাক্য প্রবাই উৎপাদন করে না বর্লিরা করিন করা, তাহা বুক্তিসম্বত নহে ৪ ক্ষ

चारता अरु क्या, रा अवस लाक विवाधक्य क्यापुरे किया कात्रक

⁽ ১) জ্ঞাৎ পর্য্যা—কর্মকান্তে আছে—বীকাৰ বর্মকর্ম করে করের অভ ; কর্মের বাদিক নেই কল কর্মকর্ম নীবনৰ কোন করিছ আনশানাক করে, এইজান পাশকরের করে হুংব জোন করে। এই জানীয় কেবছন্তি নাইজাই কর্মকান্তের আনির্ভাব ; আর উপনিবন বনিকেহেন—না—বীকান কর্মান করে। করে বহুংব করে প্রায়র প্রকর্ম নাইজানির বীনির্ভাব প্রায়র করে। করিছেন কর্মকান কর্মকান ক্রমকান ক্রমকান্ত ক্রমকান্ত্রাক্ষ কর্মকান ক্রমকান ক্রম

७ मरनव छैनव निर्वत कविता देवेशांकि ७ मनिवे-निविद्यादव छैनाव-नावरन श्रवत दव, अवर कविवरत विराव क्लाव कवरे बारन वा, कादारात कछ क्लिबाक्नावि-विवतक अकि कवनरे मान्यानिष्ठ क्लिबा-कात्रकावि विकारमत नक्षाका वा मनकाठा श्रीकिनावन कविरक्षण्य वा, किरवा निरवक कविरक्षण्य वा; क्लिबा, रेवेशांकि ७ मनिवे-निविद्यादव छैनावविद्यात्वरे अधित कादम्बा, (किंद्र नक्षानकाका विवरत मरद) ॥ ॥•

কাৰাবিৰয়ওলি বিধ্যাজ্ঞানপ্ৰতুত হইলেও তৰিবায়ক শ্ৰুডি বেষন কেবল लाक्क्षिनिष्ठि जञ्चनारत त्रहे कावा-विवत्र जवनवन कतित्रा छङ्ग्वराउहे छैनवूक नांबरमञ्ज विवास कतिया बारक, किन्न कामाविवस्थान विवास्थानमुगक बिन्हा त्रश्रीनृत व्यवकृत्व श्रीलिशास्य करत मा, व्यवा छिन्।रम्थ विक्र ৰাকে না; ভেষনি নিতা অন্নিহোত্রাদি-বিষয়ক শান্তও প্রাসিতি অনুসারেই विशास्त्रान्त्रनक लाकश्रीमक क्रिया-कारकाणि विशास व्यवस्थान हेरेकाबि वा चनिरे-शतिशातक्षण कान अकृष्टि क्षाताबन (व'रव चविरशातावि, কৰ্মজনির বিধান করিয়া থাকে, কিন্তু 'এ সবতাই অবিভাগিকার্ভিত অসং! वित्रा कवनहे छविवास कांच वास्क ना ; कांचाविवि हेरात वहीलवृत ; चार चित्रानानी लात्कता (व. देशांक क्षेत्रक दरेरव मा. कारांक महर: कायन, कायमाचैन पूक्रस्त्रा स्थम कायाकर्त्य क्षत्रक रहेवा बारक, राज्यनि ভাছাছিগকেও ইছাতে প্রবৃত্ত দেখা বার। বদি বল, বিধান লোকদিপেরই কর্ম্বেতে অধিকার: না-্সে কথাও বলিতেই পার না ; কারণ, ব্রহৈক্তবিভা त. क्वांविकाइविद्धावी, अ क्वा शुर्लीरे छेक रहेगारह । उत्प्रकृष शुरू छैनाबान्य विवद (क्रियांकायकारि) ना शाकात छैनाबान्य श्रद्ध वहेट नाट मा बनिया द. উপরেশের নিজ্পর লোব উবাপিত ব্টয়াছিল, কবিত বৃদ্ধিতে নে আগভিত্ৰও পরিহার বলা হইল বুবিতে হইবে। ৪১

কর্মান্ত্রতাতা প্রবাদিশের ইক্ষা ও অনুবাসাধির বৈচিত্রাও অপর হেড়ু; লোকদিশের ইক্ষা ও অনুবাস অনেক প্রকার এবং বিচিত্র; স্তরাং বার্ বিবরে বাহালের ব্যর নিতার অনুবক্ত, শার কিছুতেই ভাহাদিশকে নেই বিবর হইতে বিরক্ত করিতে স্বর্থ হর না; এবং বভাবতই হাহালের চিক্ত বাল্ বিবর হইতে বিরক্ত, ভাহাদিশকেও বাল্বিবরে প্রয়ক্ত করিতে সুবর্থ হর না; কিন্তু শার হইতে এইবাত্র হর বে, প্রবীপাদি আলোক বেরপ অনুকার-ববান্ত্র বন্ধ বিবরে জানবাত্র জনাইরা কের, সেইম্লণ—'ইহা ইইসাবন, উন্না, অনিইসাবন'— এইয়াপে সাধ্যসাধন-বিষয়ক সম্ভ প্রকাশ করিয়া বের সাত্র, কিন্তু শাত্র কথনই লোকবিগকে ভ্তাপ্রভৃতির ভার বলপূর্থক কোন বিষয়ে প্রকৃতিও করে না, বা নিযুক্তও করে না; কেননা, বেধিতে পাঙ্যা বাহ—
বহুলোক অনুরাণের প্রাবন্যবশতঃ শাত্রবিধিও অভিক্রম করিয়া চলে।
সেই হেছু সাধারণ লোকের বৃদ্ধিবৈচিত্রেয়ে প্রতি লক্ষ্য করিয়াই কর্মশাত্র
নানাপ্রকার উপবেশ করিয়া থাকে ১৪২

শাস্ত্র কেবল সাধ্যসাধন-ভাবনাত্র প্রতিপাদন কর, পরে অরু লোকেরা
নিজ নিজ ক্রচি অকুসারে ভির ভির বিবরে প্রবৃত্ত বইরা বাকে; পূর্ব্য ও
প্রবীপপ্রভৃতির ক্রার শাস্ত্রও তবিবরে উদাসীনই বাকে, অর্থাৎ কাহাকেও
প্রবর্ত্তিত বা নিবর্ত্তিত করে না। পরনপুক্রবার্থ মুক্তিও আবার কারো
নিকট অপুক্রবার্থ—পুক্রবের অপ্রার্থনীয়বৎ প্রতিভাত হর; বাহার
বেরুপ প্রতীতি হয় সে ভলকুরপ পুক্রবার্থই দর্শন করিরা থাকে; এবং
ভলকুকুল সাধনসমূহই প্রবৃত্ত করিতে ইছা করে। এভচকুরপ অর্থবাছও
আহে—'প্রশাপতির সন্তানত্তর প্রজাপতির নিকট ব্রন্ধর্চর্ত্ত অবল্বনপূর্ত্তক
বাস করিরাছিলেন' ইত্যাদি। অতএব বলিতে হইবে বে, বেদান্তপাত্র
ব্রহ্মকন্ধ প্রতিপাদন করে বলিরা বিধিশাস্ত্রের বাধক হয় না। বিশেষতঃ
তথু এই ব্রহ্মকন্ধ প্রতিপাদন করাতেই বিধিশাস্ত্র একেবারে নির্মিবর
হইতে পারে না; এবং ক্রিরাকারকাদি ভেদ প্রতিপাদন করে বলিরা
বিধিশাস্ত্রও ব্রহ্মকন্ধ-বিষরে উপনিবদের প্রান্থান নিবারণ করিতে পারে
না; কেননা, শ্রোত্রাদি ইল্লিরের ক্রার প্রমাণ-সমূহও নিচ্ন নিচ্ছ বিষয়েই
প্রমাণ বা সার্থক (বিবরান্তরে নহে)। ৪০০

এ বিবরে পণ্ডিভয়ন্ত কের কের বনে করে বে, সমন্ত প্রমাণই প্রমানার চিন্তর্গান্ত অন্থসারে পরশার বিক্রম্ব ; স্কুতরাং প্রক্রেম্বর্গণকে প্রজ্যান্তি প্রমানের ব্যব্যেও বিরোধ উপস্থাপিত করে, —পক্ষমান্তির বিবরওলি বে, প্রোপ্রাধি বিভিন্ন ইল্লিয়ের তির ভিন্ন বিবর, ইহা প্রত্যক্ষ হইতেই বুবা বার ; কিন্তু বারারা প্রক্রেম্বর বা প্রস্থান্ত বিলয়ের বার্ত্তাক্ষ বিরোধ ইবার সভাবিত হর এবং প্রভ্যেক পরীরে পজানি বিবরের অন্থতবিতা ও বর্ষাধর্শের অন্থতাতা সংসারীও ভিন্ন ভিন্নই অন্থবিত হর ; স্কুতরাং সেধানেও প্রক্রেম্বর্গনারীর পক্ষে অন্থবানবিরোধ উপস্থিত হইতে পারে ; এইপ্রক্রায় তীহারা আগ্রম-বিরোধন্তও উল্লেখ করিয়া থাকেন ; বথা—

'প্রাবাভিলাবী বজ করিবে,' 'পঞ্চলাবী বজ করিবে,' 'কর্মকাবী বজ করিবে,'
ইভাবি পারবাক্য হইতে জানিতে পারা বার বে কার্য প্রাব, পণ্ড ও বর্গ প্রভৃতি এবং তৎপ্রাপ্তির উপায়ন্ত বজাবির অনুষ্ঠাত্বপণ্ড ভির ভিন্ন— এক নতে ৪ ৪৪

উক্ত আগতির উত্তর প্রবন্ধ হইতেছে – মৃতর্ক-কর্নিত্তিত রাজণাদি
বর্ণাপন্দ (রাজনাদি বর্ণের কনজন্মণ বে সমন্ত লোক এইমণ আগতি
করিয়া থাকে, তাহারা নিশ্চই দয়ার পাত্র; কারণ. তাহারা বেদার্থনিম্নপণে সম্প্রদারক্রলারণত শুরুরিলাতে যক্তিত আছে। [তাহারা
করার পাত্র] কেন ? [বলিতেছি—] শ্রোত্রাদি ইল্লিরের সাহাবে। প্রত্যক্ষতঃ
উপলবিশানর শক্ষাদি প্রমাণের সহিত প্রব্যের একস্বনাদ বিরুদ্ধ হইতেছে—
বাঁহারা বলেন, তাহাদিগকে ভিজাসা করা উচিত বে. শক্ষাদি বিষরের
ভেলান্থসারে আকাশের একস্ব বিরুদ্ধ হর কি না ? বদি বিরুদ্ধ না হর,
তবে আলোচ্য বিষরেও প্রত্যক্ষ-বিরোধ হর না, [কারণ, উতর পক্ষেই
বৃদ্ধি স্বান] ৪০৪

আরও বে বলা হইরাছে—নিম তিয় পরীরে বজাদি বিবরের উপদারিকর্ত্তা ও ধর্মাধর্মের অন্তর্গতা পৃথক্ পৃথক্ বলিয়া অন্থাতি হইয়া থাকে;
স্বতরাং প্রক্ষের একস্বপক্ষে সেই অনুমানের বিরোধ উপস্থিত হয়।
এখন তাহাছিপকে জিজ্ঞাসা করা উচিত যে, কর্ত্তায় প্রতেশ অনুমান
করে কাহারা? বলি বলেন—অনুমানকুশন আহয়া সকলে [অনুমান
করিয়া থাকি]; জিজ্ঞাসা করি, অনুমানবিভাবিপারেশ তোমরা
আবার কে? এ কথর উত্তর কি? বলি বল, পরীর, ইলিয়, মন
ও আলা, ইহালের প্রত্যেকপত কর্ত্বর মুক্তি বারা থতিত হইলে পর,
পরীয়, ইলিয় ও মন প্রকৃতি বাহার সাধন বা ভোগোপকরণ, সেই আল্থপর্যায় আমরাই হইডেছি—অনুমানকুশন আমরা; কায়ণ, জিয়ামান্তই বহু
কায়কসাধ্য অর্থাৎ অনেক কারকের সাহাব্য ব্যতীত কোন জিয়াই নিশায়
হইতে পায়ে লা য় ৩৭

তোবাদের অন্থবানকোশন এই প্রকার হইলে ড ভোবাদের (আত্মার)
বছর হইরা পড়ে। কারণ, কিরা বে, অনেত-ভারক্সাধা, ইহা ড
ভোরাবিদেরই অত্যীকৃত কথা; অহ্বান ৩ কিরা; নেই ক্রিয়াও বে, শ্রীর,
ইঞ্জির ও বনোরূপ সাধ্যের সাহাব্যে আত্মাকর্ত্তক সম্পাধিত হইরা থাতে.

देश शृंदिर चोक्नक वरेडार्ड; ज्यावन 'जान्या ज्यानक्नन' वित्रत, भागेत्र, रेखित ७ वर्गाक्रम नावनविभिद्धे जाज-गण्याक जाजात अरकाक-गण यहच चीकात कर्वा वरेडा गर्फ; जरहा! छार्किक वनीवर्षकर्ष्क कि क्रमध्यात ज्ञानारकोनम केढाविक वरेडार्ड! त्य पूर्व जामनारकरे कारम मा, तम जावात कि अकारत तमरे जाजनक रक्तारकर क्रिका कतिरक मवर्ष वरेर्म १। १৮

ভাষার পর কথা হইভেছে বে, কোন্ বেছু থারা কিসের অন্থনান করিবে ?—আছার ভ বতঃসিদ্ধ তেদপ্রতিপায়ক এখন কোনও নিজ বা আপক চিক নাই, বাবা থারা আছাতেবের অন্থনান করিতে পারা বার; আর আছাতেব-প্রতিপায়নার্থ নামরূপাত্মক বে সমন্ত হেছুর উপভাস করা হইরা থাকে, প্রকৃতপক্ষে সেওলি আকালের ঘটাবি-উপাধির ভার কেবলই নামরূপণত্ত, সেওলিও আছার উপাধি ভিরু আর কিছুই নহে। সে, বে বিন আকালের তেদক হেতু প্রদর্শন করিবে, সে বিন আছারও তেম্প্রাহক হেছু প্রদর্শন করিতে পারিবে; অভিপ্রার এই বে, ঘটপটাবি উপাধি থারা বেষন অথও আকালের তেমসিদ্ধি হয় না, তেমনি নামরূপাত্মক কেবেজিরাবি উপাধি থারাও আছার ভেম প্রমাণিত হয় না; কেন না, আছার উপাধিক ভেমবাধী শত শত ভার্কিক একরিত হইরাও আছার কোনপ্রকার তেম-গ্রাহক লিজ বা হেছু প্রদর্শন করিতে সমর্থ হয় না; আর আছার বে, খতঃসিদ্ধ ভেম-নিজ, তাহা ত নিশ্রেই স্ক্রপরাহত; কারণ, আছা হইভেছে শ্বরপতঃ অবিবয় অর্থাৎ ইজিরের অগম্য । ১৯

প্রতিপ্রদান বাহা কিছু আন্ত-গর্ম বলিয়া বীকার করিয়া থাকেন, তৎসবত্তই নামরপান্ধক বলিয়া বীকৃত হওয়ায় এবং 'আকাশই (আকাশ-শব্দাচ্য প্রবই) নাম ও রূপের (নামরপান্ধক লগতের) নির্মাহক; সেই নাম ও রূপ বাহার বংগ্য অবস্থিত, তিনি প্রম্ব' এই প্রতি অনুসারে দাম-রূপ হইতে আন্মার পার্থক্য বীকৃত হওয়ায়, অধিকত্ব 'আনি নাম ও রূপ প্রকৃতিত করিব' এই প্রতিতে নাম ও রূপের উৎপত্তি-বিমাশ অবচ আন্মার তইবল-কণ্য প্রতিপাশিত হওয়ায় আন্মার স্বাহত অনুসান্ধরই অবিবহন্য প্রতিপন্ন হইয়াছে; স্বতরাং তবিবরে অনুসানবিরোধের সভাবনা কি ? ইয়া বারা অর্থার্থ আন্মার অবিবরন্ধ প্রতিপাদন বারা তৎস্বত্বে আপত্তিত আবন্ধবিয়ারও পরিষ্কৃত হইল ৪ ৫০

আঁরও বে, আগতি করা হইরাছে—একৈকৰ বীনার করিলে, বাহার উলেন্ডে উপবেশ এবং বাহার সেই উপবেশক কল ইইবে, সেই হুইই না থাকার প্রক্রেরণাবেশ অনর্থক হর; না—সে আগতিও হুইতে পারে না; কারণ, ক্রিরারান্তই ববন বহু কারক্রারা, তথন উক্ত প্রকার অস্থবোগের তানীই বা হুইবে কে? সর্ক্রোণাবিবিবর্জিত প্রক্রেরণান্দে বছতঃ উপবেশ্রা উপবেশ ও উপবেশের কন, কিছুই নাই; সেই হেডু উপনিবৎ-সন্থেরও বে আনর্থকা, তাহাও বাকুতই বটে। বহি বল, অনেক্কারক্রার্য উপবেশেরই আনর্থকা উত্থাপিত হুইতেছে. (উপবেশাদির আনর্থকা নহে); তাহাও আগতিবাগ্য হর না; কারণ, দেহাদির অতিরিক্ত আত্মাতিবাদ সর্ক্রন্তত। সকলেই ববন আত্মজানার্য উপদেশের আবস্তকতা অস্থীকার করিরা বাকে, [স্তরাং তোমানেরও তাহা অস্থীকত]; অতএব উক্ত আগতিটি অস্থীকত-বিক্রছ অর্থাৎ তোমরাও বাহা অস্থীকার করিরা থাকে, তাহার বিক্রছ হুইতেছে। ৫১

चठ अब 'चावि कित चात्र (क (नहें बनायन यक व वार्ट चयक वार्ट. अवन) (क्यरक जन्मरक कानिएक नवर्ष इत्र.' '(क्यनन क अहे चाचकविवाद সন্দেহ করিরাছিলেন', 'ওধু তর্ক যারা এই আত্মবিজ্ঞান লাভ করা যার না', ইত্যাদি--বেৰলভ বৰ ও অনুগ্ৰহের বলে আত্মবোধ-প্রতিপাদক প্রতি ও প্রতি भाष्ट्र इहेट छ. अवर 'छिनि न्यासन करतन, खारांत छिनि न्यासन करतन ना. তিনি গুরে আছেন, এবং তিনি নিকটেও আছেন' ইত্যাদি বিক্লছবর্থ-मक्करवायक बद्रवाका वहेरावक काना बाद्र दा. मर्बावहनिवादक त्महे प्रशीव (उकारेक्टवान्) वाक्पहेश्चवव ठाकिकमानव श्रावानव वार्वाना, वक्षविक কনের অলভ্য এবং বাহারা শাস্ত ও ওক্রাসাললাভে বঞ্চিত, ভাষা-দেরও অগনা। ভগবংগীতাতেও আছে—'সমত ভূত আমাতে অবস্থিত [अन्ह आबि किहुए हरे नारे'] रेजाहि। अठधव वृक्ति रहेर (व, भवत्वाजितिक मानावी जोव बिनवा पठत कान भवाई है माहे ; अध्यव हेहा वृष मण्ड क्यांहे नमा हंहैरडाइ (व, 'बार्क वहे वनर वक्यांज ज्ञासन किन. (महे अब शारात शाननात 'सहा अधानि' निमा सन्तक बहेबाहित्वन । 'अठवितिक यह उद्दे। नाहे, यह द्वाचा नाहे' हैचारि नक नक क्षति वरेरक व कना नवर्तिक वरेरकरक । वक्षतक भागात नकाम्' अरेष्ठि गतवायत्र रे गता क्षेत्रविषद वर्षाद प्रवश्च मात्र । >०० । १० । देखि विकीशांगारत वायन बाकरनत कांक्राक्रांच । १ १ > १

বিতীরং ব্রাপ্পন্।

আ ভাত্ৰ ভাত্ৰ । "বৰ জপরিবানি" ইতি প্রস্তব্; তর বতো লগজাতন্, ব্যারন্বনিংশু লীয়তে, তবেকং ব্রদ্ধ – ইতি জাপিতন্। কিবারকং পুনপ্তর্গেও লীয়তে চং পঞ্চারকম্; ভূতানি চ নামরপায়কানি; নামরপে স্তানিতাপি হাজুম্; তত স্তাত্ত পঞ্চায়কত্ব স্তাং ব্রদ্ধ। কগং পুনভূতানি স্তাম্ – ইতি মুর্বার্ত্রামণন্।

মৃত্যানুত্ত স্থাক হাং কাৰ্য্যক বৰণা অধান ক্তানি প্ৰাণা অপি স্তান্। তেবাং কাৰ্য্যক বৰণা অধান ক্তানাং স্বাহনি দিখাব দিখাব প্ৰিয় আন্ধৰ দ্বাহত তে. সৈৱ উপনিষ্যাখ্যা। কাৰ্য্যক বৰণসভাহাৰ বাবেৰ দি সভাক্ত সভাং আন্ধৰ্ণাৰ্থ্য আৰু অৱধাৰ্থ্যতে। অঞ্জেক্তং "প্ৰাণা বৈ সভাং তেবামেৰ সভান্ত" ইতি। তত্ৰ কেপ্ৰাণাং, কিয়তো বা প্ৰাণবিষ্থা উপনিষ্যা, কা ইতি চ—অন্ধোপনিষ্থ প্ৰসাক্ষৰ কৰণানাং প্ৰাণনাং অৱধান বৰ্ণ্যৰ্ভত —প্ৰিয় ভূপাৱাৰায় বৰাৰণ্যৰং।

मुखनविवायान्यक्षाः मण्डिर पक्षः कृतं कृतं कृतं क्रिक्तं व्यक्तिकृति । यक्या '(बाब का अनुविधानि, हेडि यहिकांत अवरका समानदा परः, उरविक्रीया अध्यक्ति ब्दाविवारत वर्षाः प्रकाः नृष्टि-्कियाद्यकं पृष्टि। बा बाह्य है व कार्य: विश्वविक्रामार्थः ७९वज्ञम्याव*—लट्रा*क्षण्डः। क्याः वृद्धि वायव्यक्षण्यास्यकः स्वयक्ति कृत्राः, वजारः कृष्टामीकिः वज वयववार--माधकारश देखिः कृतानाः महारव क्ष: अधार: महावृश्हात पृ'कविशावकात-उट्छान्छ। **७९म्डाविडास्त्राह्नाहारशब्** प्रवर् मकावामिकिशिक • वविवा मवावरत - कर्मा प्रकारिका। वक्र वाक महामिकि ्राद्यक्षा कृडावि महायवनामावि विवकारक हर, कदा क्रकि कार्याक्तरमञ्जूकी जातानाः ह मकावर्कः, क्यांव-पूर्व्हिः व्याणकृतकनदार कांवाकवरावाः ख्वालकाति कृतावि मकानिकाबीकाशाद कार्यक्रवराताः मकायः, सारा वर्ति कशायकाः मकानवराजा करवीकि माना देव मकाधिकाविकवांमकार्यः। . अवः नाकविकाः कृरवास्त्रशासनवृक्षः विवश्याहः... (अवाधिकः वेनिवव्यावावाव अवनवविद्याणिविकद्यविद्यानशाद - रेब्ह्यांकः। कार्यक्रमाधकावार कृत्रावार वञ्चनविद्यांतर्यानिवन्त्रार्याखान्य रक्ष्यार्-कार्याहरू वाक्यकरम्यम्बारा विकासयकाराकरमम्बिमार- अहत्रकार्गामस्याः। क्षिड्रका दश्काननरनाकश्विकाकाकाकाश्विक दनवः। अक दश्यक्षां क्षत्रिकृतिहे, कहि उरवरावर्गवारः, किविडि व्हा वक्षवक्षवार्गास, क्ष्यार - अभौक्रिः

ভাজাস-ভাজাের অনুবাদে। শতীত বাদণে প্রতিশাত হইরাছে বে, শানি তোমাকে 'ব্রহতক লাগন করিব', তথাধ্যে, লগৎ বাহা হইতে লগিরাছে, বাহাতে বর্জমান ও বলায়ক, এবং পরিলেবেও বাহাতে বিলীন হইবে, তাহাই ব্রহ্ম—ইহাও বিলাপিত হইয়াছে। এবন নিলাসা হইতেছে বে, সেই লগৎ কিরপ উপালানে গঠিত হইয়া লগ্ন লাভ করে এবং বিলাম হয় ? শর্মাৎ সেই লায়মান ও লীয়মান লগতের শ্বপটা কি প্রকার ? [উজ্ব—] পঞ্চতায়ক, শর্মাৎ সেই লগৎ পঞ্চততে রচিত। সেই পঞ্চত্তই নামরপান্ধক : প্রেই উক্ত হইরাছে বে, নাম ও রপ প্রত্য নামে কলিত ; পঞ্চতায়ক সেই সভোৱত পতা হইতেছেন—পরব্রহ্ম। পঞ্চত্তই বা কেন 'সতা' নামে অভিহিত হয় তরিরপণার্থ এই 'মৃত্যামুন্ত' নামক দিলীয় ব্রাহ্মণ খারহ হইতেছে।

উক্ত পঞ্চ ভূতই মৃত ও অমৃত অর্থাং মুল ও পলা, এবং কার্যাকারে (ছেহরপে) ও কর্ণরপে ইন্দিরভাবে। পরিণত কইলা প্রাণ নামে অতিছিত হয়, দেই প্রণ্ডমুহও 'সহা': অতাপর কার্যাকরণাল্পক সেই ভূত-সমূহের স্ত্যাতা অবধানণের ওক্ত পরবর্তী প্রাশ্ধণান্ত আরু হইতেছে, ইহাই 'স্ত্যা'-উপনিবদের ব্যাখ্যাল্গরপ : কেননা, কার্যাকরণের স্ত্যতা-নির্পাণ্টে 'স্ত্যান্ধ স্তাম্'—রেশ্বও অবধারিত হয়। এখানেই ক্লিত হইলাছে যে, প্রাণ্সমূহই স্তা, এই আন্তঃ আবার সে সমূদান্তরও স্ত্যা। পরিক্রেমন পথ চলিতে গলিতে সমীপব্লী কৃপ ও উল্পান্ধি দর্শন করিলা থাকে, তিমনি এখানেও প্রজ্ঞোপনিবং নির্পণ-প্রদৃদ্ধ প্রাণ্ডী কে, প্রাণের উপনিবন্ধই বা কতঞ্জি এবং অবপ্রতা বি কি—এইরপে স্বোপকর্ণীভূত প্রাণ্সমূহের স্ক্রপ অবধারণ করিতেছেন।

যো হ বৈ শিশুত সাধানত সপ্রত্যাধানত সমূপত সদামং বেদ,
সপ্ত হ বিষতো আহ্বানবরুপদ্ধি আরং বাব শিশুর্যোত্মর মধ্যমঃ প্রাণস্তক্ষেদ্যেবাধানমিদং প্রত্যাধানং প্রাণঃ সুবাদংদাম ॥ ১০১ ॥ ১ ॥

ক্ষেত্ৰাৰ: বা ব বৈ পিছং (ইতরকরণৰৎ বিবরের অব্যাপ্তভাৎ বিভবিৰ ক্ষিত্ৰকং প্রাণৰ) সাধানং (ভাৰীয়তে অবিন্—ইডি ভাৰানং অধিষ্ঠানভূতং ব্লশ্বীবং, তেন সহিতং) সপ্রত্যাধানং (প্রত্যাধানং শিরঃ, তেন সহিত্য), সন্থাবং (প্রথা বছন-রাজ্যা আয়েন সহিতং) বেল ্বিজানাতি), [সঃ বিজ্ঞাতা] সপ্ত (সপ্রসংখ্যাজান্) বিষতঃ (বেদকারিশঃ) প্রাত্তব্যান্ (শক্রানীয়ানি শর্ষণ্যানি চক্সং-প্রোত্তপ্রাণ্যানি কংগানি) অবক্রণত্তি (পরাত্রতি বলীকরোতাত্যর্থঃ)। [প্রতিঃ বর্ষের শিক্তপ্রতীন্ ব্যাংই—] অরং বাব প্রসিত্তো) শিতঃ (বৎসঃ ; কিঃ ?] যঃ অরু (অভ্যুত্তমানঃ) মধ্যমঃ (শরীরম্বান্তঃ) প্রাণঃ, [ইতংকরেণবং তাগাসক্রিবিংহাং তক্ত শিক্তাবং বিক্লিতঃ]; তক্ত মধ্যমপ্রথাণক্ত) ইল্বের (প্রস্থানং শবীরের আধানং (অবিষ্ঠানণ), ইলং (শিরঃ) প্রস্থানাং (প্রশোন্ধ বন্ধনীয়ন্তং); প্রাণঃ (প্রীধ্যারকঃ প্রকরিতঃ বান্তঃ) প্রণা (কীলং , অরং (ভূক্তং প্রবাং) গ্রাণঃ (বন্ধনক্ষঃ আরাভাবে শবীর-রিভাগদভাবং অরক্ত লাম্বমিতি তাবঃ । [বঃ বর্ ইবং বংস্থির বিল্লাক্ষকং প্রাণং বেল, তক্ত ব্রেশক্রং ফলং নিশ্বভূতে ইত্যালয়ঃ] ঃ ১০১ ঃ ১ ঃ

মুলা-মুলাদে। যিনি শিশুকে আধানের—আপ্রারের সহিত,
প্রাঞ্ডাধানের সহিত, দুণার সহিত এবং দানের—রক্ষুর দহিত্বদানেন,
ভাগার অপকারী সপ্রপ্রকার প্রান্তবা অর্থাৎ শক্রন্থানীয় চকু কর্ণ প্রোক্ত প্রস্তুতি মন্তকন্ম ইন্দ্রিয়াগণ পরাস্তুত হয়। [শুনি নিজেই শিশু প্রভৃতি শব্দের অর্থ প্রকাশ করিয়া বলিভেচেন—] ইহাই শিশুপদ্বাচা, বাহা এই মধ্যম অর্থাৎ দেহমধানতা প্রাণ; সেই স্ক্র্মান্থক প্রাণই এখানে শিশুপদ্বাচ্য বৎস। ইহাই অর্থাৎ দৃশ্বমান এই শরীরই ভাহার আধান —আগ্রন্থান; ইহা—মন্তক ভাহার প্রভাধান, প্রভ্যাধান অর্থ— নানাদিকে রক্ষিত্ত শব্যোপকরণ।] প্রাণ কর্থাৎ প্রাণ্ডাধান অর্থা— ব্যাপারবিশিষ্ট প্রাণবায় ভাহার দুণ: (খুটি), অর অর্থাৎ ভূক্ত জ্বা ভাহার দাম ক্রন্থাক্ত : [করণসমন্তিরূপ দেহকে, বে লোক উক্ত-প্রকার বংসপ্রস্থা ভিন্তা করে, ভাহার চক্তুঃ প্রভৃতি ইন্দ্রিয়নিচর বশীকৃত হয়] ১০১ ম০ন

न्यां क्रांकाकाका,—ता र देव विषर नावानर नवाजावानर नवापर नवामर दक्ष, जरकार क्षमन् ; क्षिप ? नव-नवनकाकान् र विवरण दव- বর্ত্ত্বান্—আত্বা বি বিবিধা তবন্তি—বিষয় অবিবর্ত্ত তা বিবলাে বে আত্বান্, তান্ বিবতাে আত্বান্ অবরুণতি ; সপ্ত বে শীর্ষণাঃ প্রাণাঃ বিবরােগলবিষারাণি তৎপ্রতবা বিবররাগাঃ সহক্ষাত্ আত্বাাঃ ; তে হি অত বাজহাং চৃতিং বিবরবিবরাং কুর্কতি ; তন তে বেটা:রা আত্বাাঃ, প্রত্যাধাক্ষেশপ্রতিবেশকর্তাং ; কাঠকে চোক্তন্—"পরাক্ষি বানি ব্যত্ত্থং ব্যক্তবাং পরা্ত্ত্ প্রতি নাজ্যান্ত্রন্ত্রান্ ত্র হা শিখালীন্ বেল—তেবাং বাধান্ত্যববধারর্তি স এতান্ আত্বাান্ অবরুণতি অপার্ণাতি বিনাশরতি। >

তবৈ কলপ্রবেশনাভিষ্থীভূতায়াই শরং বাব শিশুঃ। কোহদৌ ? বোঃরং বধারঃ প্রাণঃ—শরীরমধ্যে বং প্রাণো শিলায়া, বং পঞ্চধা শরীরমধিয়ঃ—রহন্ পাগুরবাসঃ সোম রাজন্—ইত্যুক্তঃ বিলিন্ বাছনঃপ্রকৃতীনি করণানি বিষ্টানি —পড়ু শৈশছুনিদর্শনাই : স এব শিশুরিব, বিবরেশিতরকরণবদপটুরাই। শিশুঃ সাধানমিত্যুক্তম্ কিং পুনস্তম্ত শিশোকংসন্থানীয়ম্ম করণাম্বনঃ আধানম্ ? তম্ম ইদমেব শরীরম্ আধানং কার্যায়কম্, আধীয়তহমিয়িত্যাধানম্ ; তম্ম হি শিশোঃ প্রাণম্ম ইদং শরীরমধিয়ানম্ ; অমিন্ হি করণামাধিকানি লক্ষাম্বকার্যাপলক্ষিয়ারাণি তবন্ধি, ন তৃ প্রাণমান্তে বিষক্তানি ; তরা হি দর্শিতমজাতশক্রণা—উপসংক্তের্ ক গোরু বিজ্ঞানময়ে নোপলতাতে ; শরীর-দেশব্যুত্রে ত্ করণের বিজ্ঞানময় উপলভাষান উপলভাতে ; তচ্চ দর্শিতং পাণিপেরণপ্রতিবোধনেন। >

ইছং প্রত্যাধানং শিরঃ প্রদেশবিশেবেদু প্রতি-প্রত্যাধীরত ইতি প্রত্যাধানম্। প্রাণঃ স্থুণা অন্নপানজনিতা শক্তিঃ-প্রাণো বলমিতি পর্যায়ঃ; বলাব ইন্তো হি প্রাণোহিনিন্ শরীরে "স ব্যাগ্রমায়াবলাং নেতা সম্বোহমিব" ইতি দর্শনাৎ,--ব্যা বৎসঃ সুণাবইস্তঃ এবস্। শরীরপক্ষপাতী বাহুং প্রাণঃ স্থুণেতি কেচিৎ। ৩

জনং দান—জন্নং হি ভৃক্তং ত্রেখা পরিণমতে; যং খুলঃ পরিণামং, দ এতদ্বাং ভূষা ইমানপ্যতি—মূত্রক পুরীবক; যো মধানো গদঃ দাগঃ, দ গদঃ লোহিতাদিক্রমেণ অকার্ব্যং শরীরং দাগুধাতুকম্ উপচিনোতি, মধোক্তনাগমে হি শরীরমুপচীয়তে, জনমন্তাং; বিপর্ব্যমেশসীয়তে পততি; যন্ত জণিছো নদঃ—জন্তন্ উর্ক্ প্রভাব ইতি চ কথাতে; দ নাভেন্নহং বলন্দেশনাগতা, বলনাবিশ্রেষ্টেম্ বাসপ্রতিমাড়ীসহত্রেম্ জন্প্রবিদ্ধ, মন্তংকরণস্কাভন্তণং লিখং শিক্ত-

সংক্ষকং, তক্ত শরীৰে ছিতিকারণং তবতি বলমুণজনরৎ সুবাব্যস্ত ভেলায়-মুভরতগোলবৎ স্থাব্যৎ প্রাণশসীররোনির্মন্তনং তবতি ৪১০১৪১৪

টীক্রা—রাধ্বভাগপর্বায়্কা ওবজরণি বোজরতি—যো হেন্ড্যাসিনা। বিশেষণভাববদার্থ রাজ্যান্ ভিনতি—প্রাক্তরা হীতি। কে পুনরন রাজ্যা বিষক্তরে
ভারত-ক্রেন্ডি। করং রোনানীনাং সম্ভবং বারকেবানিভাব –বিষয়েরিডি। করং
কেবাং রাজ্যারনিভাগিকা বিষয়ভিদানবারেশেনার—স্তব্প্রক্তরা ইন্ডি। করাণি করং
কেবাং বেই ব্যক্তরার্থিত। বারকিয়ানি বিষয়বিষয়াং বৃত্তীং কুর্কভোষাক্রিবরাবুণি ভাগ করিবারি, ভর ব্যোক্তরাজ্যার কেবানিভি, ভারত-প্রভাগিতি। ইন্তিভাগি বিষয় প্রবানি ভারের মৃত্তীকে বার প্রবান্ধনী ভাগ প্রবাদ্ধনি ভারের ক্রিক্তিভা
ক্রেন্ডিশ্বসংখনতি ভারত্রাত । ইক্রিশেরের বার্বায় নির্বেচিত বারধ। ১

শ্রাবে বাগাবীনাং বিষক্তান্ত কেন্তুনান -প্রভাৱনিশিক্তি। ববা কাত্যো ব্রক্তকুরারশি গাগবন্ধন নীলান্ প্রান্থবোৎপাটোওজানতি, তবা প্রাণা বাগাবীনীতি নিমর্পনবলাৎ প্রাবে বিষক্তানি বাগাবীন নিম্নান্থ লাভিয়া প্রাবিশ্ব প্রাণান্থ প্রাবিশ্ব নাম কর্মাবান্থ লাভিয়া লাভিয়া কর্মাবান্থ লাভিয়া লাভি

প্রভাগানতং নিরসেঃ বৃংশাদ্যতি প্রচ্ছেশেন্ডি। নদপ্রায়ক প্রাণক্ষ ছুণাছং ন্যর্থতে প্রক্রেডি। জং মুমুর্থান্তা ব্যিন্ কালে কেন্তন্তাং নীতা ন্যোত্তিব প্রতিপদ্ধতে, ক্রোংশাব্রীতি বর্ধে ধর্ণনাতিকি বাবং। নদাব্রজাহিত্যাহিত্য করে প্রাণ ইন্তান দুইান্তবাদ ন্যান্তনাত ভিন্ন করে প্রতিশাদ ন্যান্তনাত ভিন্ন করে প্রতিশাদ করে। কর্মান্তনাত প্রতিশ্ব নার্থান্ত নারীয়ে নারীয়া নারীয়া কর্মান্তনাত প্রতিশ্ব প্রতিশ্ব নারীয়া নারীয়া নারীয়া নারীয়া কর্মান্তনাত প্রতিশ্ব প্রতিশ্ব নারীয়া নারীয়া নারীয়া নারীয়া নারীয়া নারীয়া নারীয়া নারীতি প্রতিশ্ব প্রতিশ্ব প্রতিশ্ব নারীতিক ক্রিক্রান্তনাত ক্রেক্রান্তনাত ক্রিক্রান্তনাত ক্রিক্রান্তনাত ক্রিক্রান্তনাত ক্রিক্রান্তনাত ক্রিক্র

ভাল্যা পুরাক্ '—বে লোক শিশুকে (বংসহানীর হন্ধ প্রাণকে)
আধানের সহিত, প্রত্যাধানের সহিত, স্থুণার সহিত এবং হাবের সহিত
আনেন, তাঁহার এইরপ কল হয়। সেই কল কিরপ ? [বলা হইতেছে]—
তিনি সপ্তসংখ্যক (সাতটি) খেবকারী প্রাত্ব্যকে (শক্তকে : অবক্ত করেন
—গরাজিত করেন। প্রাত্ত্ব্য (শক্ত) স্থারণতঃ ছুই প্রকার—বেবকারী
এবং খেবহীন; তন্মধ্যে খেবকারী বে সম্ভ প্রাত্ব্য, ভাহাহিসকেই
গরাজ্ত করিরা থাকেন; শীর্ষণ্য অর্থাৎ বছকত্ব বে সাভটি প্রাণ শক্ষাকি

বিবরাস্থাতির বার, এবং তজ্ঞানিত বে, বিবিধ বিবরে অল্বাগ ; সহজ বা সজে সজে আত বলিরা তাহারাই এখানে ত্রাত্ত্ব্য শব্দে অভিহিত হইরাছে। কারণ, তাহারাই উপাসকের আত্বিবয়ক আনমৃতিকে বিষয়াতির্থে নিরোজিত করিরা থাকে; সেই বেডু প্রত্যগাত্মদর্শনের প্রতিবন্ধ করে বলিরাই ভাহারা বেবকারী (অনিইকারী) ত্রাত্ব্যবধ্যে গণ্য) (১)। কঠোপনিবলেও সে কথা উক্ত আছে, বথা—'বয়ড় (পরমেশর) ইলিয়নগুলকে পরানুথ আর্থাৎ বহির্মুখ করিয়া সৃত্তি করিয়াছেন, সেই হেডু জীব বাছ বজাই দর্শন করে, কিছ অন্তরাত্মাকে দর্শন করিতে পায় না' ইত্যাদি। বে ব্যক্তি উক্ত শিশুপ্রভৃতিকে জানেন—ভাহাদের প্রকৃত বভাব অবধারণ করিতে পারেন, তিনি নিজের ত্রাত্ব্যগণকে (শক্রগণকে) অবরুত্ব করেন—অপারুত করেন আর্থাৎ বিনাই করেন। ১

বলৈক্তে কল প্রবাদ অভিমূখীভূত শিক্তকে; লিণ্ড প্রভৃতি কলার আর্থ ।
বলিতেছেন —ইহাই লিণ্ড বলিয়া প্রসিদ্ধ; ইহা কি । বাহা এই মধ্যম প্রাণ ; —
শরীরমধ্যে বাহা লিছায়ক প্রাণ, বাহা [প্রাণাপানাদি] পাঁচ ভাগে বিভক্ত
ইইরা শুরীরমধ্যে প্রবিষ্ঠ এবং 'রহন্ পাণ্ডরবাসঃ সোম রাজন্' বলিয়া বাহা উক্ত
ইইরাছে, এবং পরবর্তী 'পড্বীশ-শছু'র দুঠান্তাম্পারেও ফান। যার যে, চক্ত্
প্রভৃতি ইল্লিরনিচর বাহারে আয়ন্ত, এখানে ভাহাই এই শিশু আর্থাৎ শিশুর
সমূল বলিয়া উক্ত হইরাছে; কারণ, অপরাণর ইল্লিরের কার ইহাণ বিবয়াসক্তি
প্রবল নহে। প্রতিতে শিশুকে 'সাধান' বলা ইইয়াছে; বৎসভানীয়
করণাশ্বক সেই শিশুর 'আধান' বন্ধটি কি । ইহাই—কার্যাত্মক (২০ এই

^{(&}gt; 'ভাংগৰ্যা শক্ত নাধাৰণতঃ ছই খেলীতে বিভক্ষ; এক সংগ্, অণ্য কৃত্ৰিম। ভাষাধ্য আহায়ঃ ক্ষাধীন শক্তমধ্য পৰা, ভাষাৱা সকল শক্ত, বেষৰ—ধায়ালগৰ, আৰু বাহায়া আমিট্ট-নামৰ কবিষা কাৰ্যাতঃ শক্ত হুহ, ভাষাৱা কুত্ৰিৰ শক্তে। সহজ শক্তেপুৰ্বভ অনিষ্টকাৰী না চইতে পাৰে, কিন্তু ভ্ৰমণি ভাষাৱা আকৃষ্য-সংজ্ঞা হুইছে বিষ্কৃত হুইছে পাৰে মা; এইজভ ঞাভি ভৰু 'আভ্ৰয়' বনিয়াই নিশ্চিত হুইলেন না, 'বিৰভঃ' বনিগেন। ইহা ঘায়া বুড়াইলেন বে, চন্দু, কৰ্ণ অকৃতি ইল্লিছভনি ক্ষেত্ৰল সহজ শক্ত নহে, প্ৰস্ত কৃত্ৰিৰ শক্তেও বটে; প্ৰভাঃ উহাদেন প্ৰাভব কৰা নিভান্ত আৰক্তম।

⁽২)—এই বেংসংঘাতকে কার্য ও করণজেবে বিভক্ত করা চটারাছে। তথ্যবো রীবের ভোগসাধন ইল্লিয় প্রকৃতিকে বলা হয় "করণ", আর তত্তির অংশ ওলিকে বলা হয় "কার্য"। কল কর্মা, কার্যায়াক বলিলে ভুল নেক্টামান্ত নুকার, "করণ" বলিলে ইল্লিয় প্রকৃতি সাধন-শিক্ষকে মুখার।

শরীরই ভাষার অংগান; আধান অর্থ—বাহাতে আহিত (রজিড) হর; এই শরীরই সেই আগরুদী শিশুর অধিষ্ঠান—আগ্রর; ভারণ, ইল্রিয়গণ এই শরীরমধ্যে অবহান করিরাই আজলাতে সমর্থ—বিবরোপলন্তির হার বা উপারভূত হর, কিন্তু কেবলই ইল্রিয়াগানে থাকিরা সমর্থ হর না। বেণ, অলাতশক্রও তাহা প্রকর্শন করিরাছেন—'স্ব্রিকালে ইল্রিয়নিচর শরীর হইতে সমাজত হইলে বিজ্ঞানম্য জীবের উপলন্তি হর না, কিন্তু ইল্রিয়পণ শরীরহ হইলে পর বিজ্ঞানমর আছাকে বিরয়াস্তৃতি করিতে বেখা বার'; এ কথা ত পাণিপেরণজনিত প্রতিবোধন ব্যাপারেই প্রকাশিত হইরাছে। ২

এই শির (মন্তক তাহার প্রত্যাধান; খংশবিদ্ধানে সংস্থিত (স্থাপিত বিদ্যা শিরকে প্রত্যাধান বলা হয়। প্রাণ অর্থাৎ অরপানারিজনিত শক্তি তাহার খুনা (বন্ধনাধার বঁটা ; প্রাণ ও বল একপর্যায় অর্থাৎ সহানার্থক শব্দ. কেননা, প্রাণট হইতেছে এই শরীরে বলের উদীপক; কারণ, [ইহারই অর্থ বর্চ অধ্যারে উক্ত আছে বে,] 'এই আয়া বে সময় অবল্য অর্থাৎ বলহীনতা প্রাপ্ত করাইয়া সম্মোহ—অচেতন তাবই বেন [প্রাপ্ত হয়]' ইভি; তদ্দর্শনে বুকা যায় বে, প্রাদি পশুশাবক বর্প খুঁটার তর করিয়া থাকে, প্রাণও ত্রমণ বলাবইক হইয়া থাকে। কেহ কেহ বলেন—এথানে খুণা অর্থ শরীরবর্তী প্রাণ-বায়ু। ০

শ্বর তাহার লাব,—ভূক্ত শ্বর তিন তাবে পরিণত হয়; তরাব্যে যাহা
মুল পরিণান, তাহা ছই তাপে বিতক্ত হইরা –বৃত্র ও বিঠারণে পরিণত
হইরা পূলিবীতে পতিত হয়; বাহা মধ্যম তাল —রদ, দেই রদই ক্রমশঃ
রক্তপ্রকৃতিরপে পরিণত হইরা বকার্য্য সপ্তথাত্বর পরীবের উপচর বা
রুদ্ধি সম্পাদন করিয়া থাকে; কেননা, পরীর শ্বরমর (শ্বরের পরিপাম)
বালিয়া বীয় উপাদান শ্বরপ্রাপ্তিতে রুদ্ধিলাত করিয়া থাকে, শাবার শ্বরের
শতাবে শীণ হইতে হইতে বিনত্ত হয়; শার বাহা স্প্রভ্যম রদ, শ্রন্থ,
উর্জ্ ও প্রভাব বা শক্তি বলিয়া কবিত হয়, ভাহা নাভিষ্ঠলের উপরিছিত
রুদ্ধপ্রবেশে শাদিয়া রুদর হইতে ইতপ্রতা বিস্তুত বিশ্বতিসহক্রসংখ্যক
(৭২০০) নাড়ীর মধ্যে প্রবিদ্ধ হয়, তমধ্যে প্রবিদ্ধ হয়য় এই বে, কয়ণস্বাহিশ্বরপু বিশুনামক নিল্লের, ভাহার বলাবান করত পরীর্ববের সংস্থিতির
বিজ্ হইয়া থাকে, শ্বর্থাৎ বিশুরূপে কয়িত ক্রে পরীর্ববের সংস্থিতির
বিজ্ বহিয়া থাকে, শ্বর্থাৎ বিশ্বরূপে কয়িত ক্রে পরীর্বেক এই মুল্লেরে
রক্ষা করে বলিয়া উহার নাম শ্রুণা"; দেই কায়ণে, উভ্যবিকে পাশস্ক্র

(वस्तर्कः) वरन-वस्तव त्रक्त्व जात्र अहे चत्रक आन प्रशः नहीरततः वस्त नावन स्टेशं वारक ॥ >+> ॥ >॥

আভাসভাসাম। ইদানীং তগৈয়ৰ বিশোঃ প্ৰভাগানে উচ্চা চছুৰি কান্ডনোপনিবদ উচাতে,—

আভাসভাস্যানুত্রাদ্।- এখন প্রত্যাধানে নিহিত সেই বিভার চন্দু বিবারে কতকওলি উপনিবদ্ কবিত হইতেছে—

ত্ৰেভা: সপ্তাক্ষিতৰ উপতিষ্ঠন্তে,তদ্ যা ইমা অকন্ পোহিকো রাজয়ন্তাভিরেশ্য ক্রেছিয়ায়ন্তঃ, অথ যা অক্ষাণস্তাভি: পর্দ্ধন্তঃ, যা ক্নীনকা তথাদিত্যো যথ কৃষণ তেনাগ্রিণচ্ছুক্লং তেনেন্ত্রেন ২ধরবৈনং বর্তনা পৃথিবাখায়ন্তা গৌক্তরয়া, নাস্তামং কীয়তে য এবং বেদ । ১০২ । ২ ।

স্কলাহা: ।—ইদানীং তলৈব শিলাঃ চকুবি কালনোপনিষদ উচাবে 'তৰেতাঃ' ইত্যাদিনা: এতাঃ (বন্ধ্যমাণাঃ) সপ্ত অক্ষিত্যঃ (ক্যমিনবারকাঃ) তাং (চকুবি নিহিতং করণায়কং প্রাণং) উপতিষ্ঠতে আরাব্যতি)। [কালা অক্ষিত্যঃ ? ইত্যাহ—] তাং (তার) অক্ষন্ অক্ষিণি বাঃ ইমাঃ (কৃত্যানাঃ) লোহিনাঃ (লোহিতাঃ) রাজ্যঃ (রেবাঃ), তাভিঃ লোহিত-রেবাতিঃ বারা) কৃত্রঃ (তদাব্যো দেবঃ এনং (মধ্যমং প্রাণং) অবায়তঃ অনুপতঃ সন্) [উপতিষ্ঠতে]; অব (অপি) অক্ষন্ (অক্ষিণ) বাঃ আপঃ (ব্যাদিসংবাদে অভিবাজায়ানানি ক্যানি), তাভিঃ (অন্ধিঃ বারা) পর্ক্তরঃ (মেবানেবতা) [অবায়তঃ সন্ এনং উপতিষ্ঠতে ইতি সর্কারাব্যঃ] বা কনীনকা (কৃত্যক্তিঃ, অক্ষিতারকা বা), তরা (বারত্তরা) আদিতাঃ; বং কৃত্যং (চাকুবং ক্রম্প্রণং), তেন (বারত্তেন) ক্রিঃ; অণ্বরা বর্ত্তা (নিরপন্ধণা বারা) পৃথিবী এনং অবায়তা সতী উপতিষ্ঠতে]। বঃ এবং বেদ, অক্স্বর্ত্তা) জাঃ [এনম্ব্রারতা সতী উপতিষ্ঠতে]। বঃ এবং বেদ, অক্স্বর্ত্তা) আরং ন কীরতে (স্বক্রয়াত তবতীতি ভাবঃ র ১০২ ৪২ ৪

আুকান্সুবাদে।—অকিতি অর্থাৎ কর না হইবার চেতৃত্ত এই সাভটি বেবতা সেই অরসগ্রন্থ প্রাণের উপাসনা করিয়া থাকেন। [কে কে, তাহা বলিতে ছেন — চকুর মধ্যে বে, এই সমস্ত লোহিতবর্ণ রেখা, সের সমস্ত থারা রুজ্বের ইচার অনুগত থাকিয়া [আরাধনা করেন]; আর চকুর মধ্যে যে সমস্ত জল আছে, তত্বারা শর্কজ্বের অনুগত থাকিয়া [উপাসনা করেন ;, চকুর যে কনীনক। অর্থাৎ দর্শনিশক্তি বা তারকা, ভাহা থারা আলিভা, চকুর যে কুল রূপ, তাহা থারা অগ্নি-দেব, যাহ। শুরুরপ, ভাহা থারা ইন্দ্র, চকুর নিম্ন পক্ষম থারা পৃথিবী এবং উদ্ধান্ধ থারা ভালোকদেবতা ইহার অনুগত থাকিয়া আরাধনা করিয়া থাকেন। যে ব্যক্তি এই উপাসনা তথা আনে, কগনও ভাহার অরক্ষয় হয় না ৪ ১০২ ৪ ২ ৪

শৃথিক রা-ভাল্য ন। ত্রেতাঃ সপ্ত অকিতঃ উপতিষ্ঠিতে—তং করণারকং প্রাণং শরীরে অরবছনং চলুব্যুচং প্রতা বল্যবানাঃ সপ্ত সপ্তশংগাকা অকিতয়ঃ অকিতিহেত্বাং, উপতিষ্ঠিতে। বছণি বরকরণে তিষ্ঠিতি-রূপপূর্ব আন্থনেপদী তবতি, ইহাপি সপ্ত দেবতাতিগানানি বরহানীয়ানি করণানি; তিষ্ঠতেরতোহত্রাপি আন্থনেপদং ন বিরুছ্য। কাল্য অকিতয় ইত্যুচালে—তংত তা বা ইমাঃ প্রসিদ্ধা অকন্ অকিণি গোহিলো গোহিতা রাজয়ো রেখাঃ, তাভির্বারভ্তাভিরেতং মধ্যবং প্রাণং রুত্র অবায়তঃ অনুসতঃ। অধ বাঃ অকন্ অকিণি আপঃ গুমাদিসংবোপেন অভিবাজাবানাঃ তাভিঃ অরিম্বারভ্তাতিঃ পক্ষরো দেবতান্তা অবায়তঃ অনুসত উপতিষ্ঠত ইত্যর্মঃ। সচাল্লভ্রেতাহক্ষিতিঃ প্রাণম্ভ, "পক্ষরে বর্ষতি আনক্ষিনঃ প্রাণা তবলি" ইতি শত্রুবাং।

বা কনীনকা দৃত্বজিঃ, তরা কনীনকরা বারেণ আছিত্যা বধাবং প্রাণমূপতিষ্ঠতে; বং কৃষ্ণং চক্ষুবি, তেনৈনম্ অন্নিপতিষ্ঠতে; বং গুরুং চক্ষুবি, ডেনেজঃ; অবররা বর্জভা পক্ষণা এনং পৃথিবী অবারভা, অবরজ-সাবাজাং। জ্যোঃ উত্তররা, উর্জ্বসাধাজাং। এতাঃ স্থ অর্জুভাঃ প্রাণস্য সম্ভতমূপতিষ্ঠতে—ইত্যেবং বো বেদ, ভগৈতিং ক্সন্-লাস্যারং কীরতে, ব এবং বেদ ৪১০২৪২৪

िका—रा व रे पिश्वविद्यारको श्रीकिविद्यापित्रवर्षित् शावादावव्यव्यक्ति कार पर्याः वर्षश्च व्यवपाद्याचा वा करवाकि—हेन्द्रानीविकारित्याः। वर्षः वयः व्यवस्थापद्याः क्रिक्टक, क्रोव्ययानपूर्वक विकेटकश्चरमध्यः क्षत्रकः। केन्द्र हि—हेगाव्यकः। (गाः বং ১ । ৭। ৭০] ইতি : মুখতে চারিভাং পাহজ্যোপভিষ্ঠত ইতি । ব চার ব্রেণ ভিতিত বিশ্বতে, কিব্যাকরতে মুখত প্রাণ্ড বঙাকি চ উদ্যুপনিবলো বিকাজে, ভরাব—ব্যান্ত শীন্তি । ব্রেণ কভারস্থভাননা করণে বিগতিতে ভিউভিন্নপূর্বের বস্তুপায়নেপরী ভরতি, ভবাপার সম্ভ করাবিকেরভানাথানি ব্যাহক্ষরিভানি, তৈন্ত করণাত্মপানবাস্থভানা-কর্মত রাব্ধ : অভিনিত্তিক্রপপূর্বেভার্থের স্থান্তির বোলনা । লোহিত্রবেগানীকরত রাব্ধ প্রভার্থকেরনভারবিভারপরার্থ্য। পঞ্চন্ত্রায়ন্তারা রাব্যাকর্মতের্ক্ত রাব্ধ—প্রক্রিভার্থিক বিশ্বতি সংগ্রাহ্য করাব—ব্যাহ—প্রক্রিভার্য করাব্ধ স্থান্তির ভ্রাহ—ক্ষেত্র ইতি । করা পূন্তেরভার্থ রাব্ধ প্রভারতিত্ব সংগ্রাহা বিশ্বতি, ভ্রাহ—প্রক্রিভারতি । সংগ্রাহালিকস্বাহ —ইক্সের্বিভিন্ন সংগ্রাহালিক সংগ্রাহালিক

ভাষ্যাকু আদে। - "তৰ্ এতাঃ সপ্ত অভিতরঃ উপতিষ্ঠতে" ইতি।
বক্ষাৰাণ সপ্তসংখ্যক এই অভিতি—কর্মনিবারক দেবপণ, পরীরে অন্ন-বছনে
আবছ এবং চক্তেমিহিত সেই করণান্তক প্রাণের উপাসনা করিরা থাকেন।
বন্ধপূর্যক উপাসনা অর্থেই উপপূর্যক "হা" বাত্র উত্তর আন্ধনেপদ হর;
এখানেও উক্ত সাতটি দেবতার নাম বন্ধানীর করণস্বরূপ কইরাছে; সেইহেত্
এবানে 'হা' বাত্র উত্তর আন্ধনেপদ (উপতিষ্ঠতে) হওরা অসমত
বর নাই। সেই 'কলিতি' দেবতা কাহারা, তাহা রলা হইতেছে—সেই
চক্ষর বব্যে এই বে. প্রসিদ্ধ গোহিনী অর্থাৎ গোহিত্বর্ণ রাজি—রেখাসমূদ,
সে সমূদর বারা ক্রন্থদেন ইহাতে অন্থপত বা সম্বদ্ধ থাকিরা এই বধান
প্রাণ্ডের উপাসনা করিরা থাকেন; চক্ষর বধ্যে বে জন—বাহা গুরাহিসংখাপে
প্রকাশ পাইরা থাকে, সেই জন বারা পর্যান্তদেন (বেলাবিষ্ঠানী দেবতা)
অনুসন্ত থাকিরা উপাসনা করেন; এই পর্যান্তই প্রাণের অন্নস্বরূপ অন্নিতি;
কারণ, অপর ক্রতিতে আছে—পর্যান্ত বর্ণণ করিলে প্রাণ আনন্দিত
বন্ধ ইতি।

চত্ত্ব বে কনীনকা—দর্শনশক্তি, সেই কনীনকা যার। [অপুণত থাকিয়া]
আদিত্যবেব শরীরবব্যক প্রাণের উপননা করেন; চত্ত্ব বে ক্ল রূপ, তাহা
যারা অধিবেব ইহার উপাসনা করেন, আর চত্ত্বতে বে তর রূপ আছে, তত্বারা
ইক্ল [উপাসনা করেন]; অবরা বর্তনী—চত্ত্ব নির পত্ম যারা পৃথিবী ইহার
অভুণত থাকিরা উপাসনা করেন; কেননা, চত্ত্ব নির পত্ম ও পৃথিবী,
উত্তরেরই নিরম্বর্ণ সমান; উর্ত্বহ পত্ম যারা হ্যুলোকবেবতা [উপাসনা করিয়া
ব্যুক্তেম]। এই সাভটী অফিতি প্রাণরকার হেতৃত্ত পদার্থ সর্বাহ। ইহারও
উপাসনা করিয়া থাকে, বিনি এবভাকার ভানলাভ করেন; ভাষার

धरे का रह त, क्वम कीशह चाक्य रह मा, चर्चार चहाकार पटि मा ॥ > रहरा

তদেব প্লোকো ভবতি—শ্বর্থবিদশ্চমদ উর্থ্নতিমন্
বশো নিহিতং বিশারূপমৃ, তক্ষাদত প্লবয়: দপ্ত তীরে বাগকমী
ব্রহ্মণা দ্বিদানেতি। শ্বর্থিবাদ্দিমদ উর্ভ্র্যু ইতীদং তচ্ছির:,
এব হ্বর্থাগ্রিদশ্চমদ উর্থ্যব্দিশ্ বশো নিহিতং বিশারূপমিতি,
প্রাণা বৈ বশো বিশারূপং প্রাণানেতদাহ—ভক্ষাদত শ্বর: দপ্ত
তীর ইতি, প্রাণা বা শ্বর: প্রাণানেতদাহ বাগকমী ব্রহ্মণা দ্বিদান্
নেতি, বাগ্র্যুক্তমা ব্রহ্মণা সংবিত্তে ১০০০০০

अनुसार्थाः ।-- ७६ / ७.व. विवतः अवः (वकावानः) त्वाकः (मक्कि-शार्कः वृद्धः) ভবতি-"वर्कान विनन्तवनः" हेजानिः। वर्कान विनः (बारबानकः) केईनुबः (हेन्द्रिकारन वकः) हमनः (वसीनवनः त्नाबाबादः भावावित्नवः) [चिक्क], जन्मिन (हबरम) विवेद्रभः (मर्वविवः) बनः নিছিজং (বুক্কিডং অভি), তক্ত (চৰস্সা) তীরে সপ্ত খবরং (ইন্তিবভ্রপাঃ) चांगाळ (वर्षातः) : जचना गःविषाना (जचना गर गःवाषः कृती তৰিবল্লবালোচনতী বাক (বাগিলিক:) শইনী [তত্ৰ শাভে] हेलि। (अर अणि: यहात्व वशार्यवाह-वैसीन विन: हवन: केईनुश: इंकि बक्कमा: देवर निदा-छर (त ठवत: ; हि (बचार) अवः (निर्वाह्मभः) चर्ताम विमः (चर्ताकि चर्याकारम वृषमस्वताचुकः विमः यन, नः छाबाकः भे, केईवृत्रः (केर्ड केनविकारम वृत्रः बुनाबकः) हवनः (हवनाईकिक)। उचिन पत्ना निश्चिश विषक्षभव-रेखालः (बहनाकाः) आगान् चार-देव (वठा) आगाः ((आजारीनि रेक्किशानिः नाहक्क निवस्नगर (ব্যাপকং) বুৰনঃ;(বৰঃকারণৰ '। তত্ত আসতে বৰরঃ সম্ভ তীরে—ইড্যেডৎ [बहुबाकार जिन्न (बाबाक नक्यान) जार (क्यहिं) ; देव (बंधर) खानाः (त्याजानीमि वात्रवन्त) वनतः (वनिभवनाताः) ; नाक वि चडेनी तक्या गरविशामा देंहि; बहेबी (ब्लाजावि-मश्वारभक्ता बहेबी) बाक दि (अव) मरविट्य (मरवायर खंद अकानमञ्जूष: करवाछ ; चछ: जन्मा मध्वितामा वाशिकार्वः)। >-७। ७।

মুক্তাব্দুক্র।দে। -পূর্বোক্ত বিষয়ে এইরূপ এবৃটি ল্লোক-সংক্ষি-প্রার্থক বাকা আছে; বগা—"অব্বাগ্ বিলক্ষ্যসঃ" ইত্যাদি "সংবিদানা" পর্যায়। অধোভাগে বা নিম্নপ্রদেশে বাহার গর্ভ আছে, ভাষা অব্বাগ্ বিল, আর উর্জভাগ যাহার বৃধ্ন অর্থাৎ গোলাকার উচ্চ, ভাষা উর্বুধ্ন, চমস অর্থ—সোমাধার পাত্রবিশেষ (হাভার মত); সেই চমসের মধ্যে নানাবিধ যশঃ নিহিত আছে; ভাষার তীরে'. (পাশে) সপ্ত ঋষি এবং ক্রন্ধ-সংবাদকারিশী অন্ট্রমা বাক্ বাগিন্দ্রিয়) অবস্থান করে ইভি।

ইহার মধ্যে অর্বাগ্রিল ও উর্জুন্ন চমস হইতেছে এই শির (মন্তক); কারণ, ইহাই অধোজাগে মুখ-গহরর বিশিষ্ট এবং উপরিচাগে গোলাকৃতি চমসের সদৃশ। 'তাহাতে বিশ্বরূপ যশ নিহিত আছে' এই মন্ত্রবাকাটী প্রাণের কথা বলিতেছেন; কারণ, প্রাণই নানাবিধ যশঃ অর্থাৎ যশের কারণ। 'তাহার তীরে সন্ত ঋষি বাস করিতেছেন' এই মন্ত্রও ইন্দ্রিরের কথাই বলিতেছে; কারণ, ইন্দ্রির সমূহই সন্ত ঋষিরূপে প্রাসিদ্ধ; স্কুরাং এখানে ইন্দ্রিরের বিষয়ই বৃঝিতে হইবে। 'অস্ট্রমী বাক্ ব্রেক্ষের সহিত সংবাদকারিণী' মন্ত্রটি বলিতেছেন—পূর্ববাপেক্ষা অন্টম বাগিন্দ্রিয়ই ব্রক্ষের সহিত সংবাদ করিয়া পাকে, সর্থাৎ বাগিন্দ্রিয়-দ্বারা ব্রক্ষবিষয়ক আলাপ সম্পন্ন হট্যা পাকে; অভএব বাগিন্দ্রিয়টি 'ব্রক্ষ-সংবিদানা' ৪০৭০৪০৪

লা ক্লেল্ড ভালাত । তথ তা এতলির্থে এব প্লেকঃ ম্রো ভবতি - অর্লাগ্বিলন্দ্রন ইত্যাদিঃ। তা মন্নার্থমান্ত শ্রুতিঃ - অর্লাগ্ বিলন্দ্রন উর্থ ইতি। কং পুনর্সো অর্লাগ্বিলন্দ্রন উর্বুগ্নং ? ইয়াং তৎ—লিরঃ, নম্যাকারং হি তৎ; কণর ? এব হি অর্লাগ্বিলঃ, মুব্দ্র বিলন্ধপদ্ধাং, লিরসো বৃগ্নকার্থাং উর্বুগ্নঃ। তলিন্ বলো নিহিতং বিশ্বরূপ-হিতি—বথা সোনঃ চনসে; এবং তলিন্ লিরসি বিশ্বরূপং নানারূপং নিহিতং হিতং ভবতি। কিং পুনত্তং ? বলঃ—প্রাণা বৈ বলো বিশ্বরূপন্, প্রাণাঃ প্রোক্রাদরঃ বায়বল্ট বন্ধতঃ সপ্রধা তেরু প্রস্থাতা বলঃ ইত্যেত্যাহ বল্লঃ, লক্ষাদিক্রানহেত্যাং। তস্যাসত ক্ষমঃ সপ্র তীর ইতি—প্রাণাঃ পরিক্ষণাত্মকাঃ. ত এব চ বৰমঃ, প্ৰাণাদেভদাৰ বমঃ। বাগটৰী ক্ৰমণা সংবিদাদেভি —ক্ৰমণা সংবাদং কুৰ্মভী অৰ্টনী ভৰতি; তছেতুৰাহ—বাগ্ৰাটনী ক্ৰমণা সংবিজে ইতি ঃ>০ঞ্জ

্রীক্রা—করাদিশকানাং বেবভাবিবর্থান্যক্রনাণি তবিবরভেজাপক্য ক্ষুবি ক্সমাদিগপন্যাক্রথাবিত্রন্যথবাজনা করপথাব্যপ্রশীরভাবিবর প্রেচি ন প্রনিক্সেবভাবিবর
ইডাভিথ্যেন্ডার—তথ্ তেত্রেতি। বরনা বাংবানসাপেকর ভবেজুলেডে। পিরসক্ষণালব্যক্ষাবিভাগেজ। পরাবতে—ক্রপ্রমিত্রাক্ষিনা। বাগইবীভাবৃক্ত, জনাই
সপ্তব্যেক্তর্থাৎ, ন ভৈদনা। বিশ্ববিভাগেলায়—ক্রক্রেপ্রতি। পথাবিত্রিক, তেন স্থাক্র
সংস্থিত প্রভাগ প্রানিক্সাবর্ধী বাগইবী সাংগিতি বাবং। তথাপি সপ্তবর্গ বিহার
ক্রিক্রা, তরার—ত্রক্রেত্র্মিতি। বর্গাক্তর্যতেশেন বিধা বাগিষ্টা, তর বক্তবেনাইবী,
সপ্তবী চাজুব্বেক্রোবিরোর:। রগনা ভূপস্কিভিচ্ছারিভি ভাবঃ ৪২০৩০।

ভाष्णान्यात् । এ विश्वत अनेत्रण अकि ह्याक वर्षार यह बाह्य-"बर्साभिवनः हमनः" हेलामि । अति नित्यहे महत्त्व वर्ष क्षकान कतिता वित्रिष्ट्न-"वर्त्वानविनः त्रमाः छेईवृतः" हेछि। এर वर्त्वानविन-चार्याञाल गर्छ-विनिष्ठे, এवः छेईतुः चर्यार जेशातत प्रितंत वर्त् नाकात क्रमाक्र कि ? [উछत-] अरे मलक स्रेटिह (नरे हबन ; कात्रन, बलकि वजावजरे চমপের সদৃশ ; कि প্রকারে ? বেছেতু, মুখটি গঠাকার বলিরা ইছা অর্থাগ্রিল, अवर यक्तकि वृक्षाकात (वर्ड नाकात) वनिता **উर्दर्**ड वर्ष्ट । 'ठाहाट विचक्रन যশঃ নিছিত আছে' ইহার অর্থ-চমসে বেমন সোম থাকে, তেমনি এই মন্তকেও विश्वक्रण वर्षां नानाविश क्रण निविष्ठ व्यविष्ठ व्याद्ध। तारे वनः कि ? প্রাণসমূহই বিশব্দ বলঃ ; মন্ত্র বলিতেছে বে, প্রাণ কর্মাৎ লোতাদি ইলির ও বায়ু বংশাব্রপে মন্তকের মধ্যে নিহিত রহিরাছে ; কেন না, উহারাই শব্দাদি উপদ্দির উপায় বরুপ। 'তাহার তীরে সপ্ত বহি অবস্থান করেন' ইহার वर्ष -म्मयनवैश थागरे बशान विश्ववाहा; डेक यद तरे थालत विषद्भ वना बहेबार्छ। 'उत्कद महिल मःवानकातिमी वाक लाहारमद चहेबी' ইছার অর্থ --ব্রম্বের সহিত সংবাদ করে--ব্রম্বতর প্রকাশ করে বলিরা वातिश्वित जाशासत अक्षेत्र ; अ कथात नमर्बक रहकू वनिरक्रहम---(वरहकू অষ্ট্রসংখ্যার পুরক—অষ্ট্র বাগিজিয়ই ব্রন্ধের সহিত স্থানভাবে জানদান कतिया शारक, [चळ अव वानिक्षित्रहे चहेनी] (>) । > • ० । ० ।

(১) ভাংগণ্য-পূৰ্ব ভূতীয় ফ্ৰডিডে বাক্তে আইনী বলা ক্ইয়াছে; এগাৰে আবায় ভাষাভায় বাক্তে সঞ্জয় বলিয়া উল্লেখ করিবেব : ইয়ার সীবাংসা এইয়াপ-ভক্ত:-প্রোক্তাকি অংশকঃ ইমানের গোডনভরবাজাবরনের গোডনেহিরং ভর্মবাজঃ, ইমানের বিশানিজ-জনসংগ্রী, ভারনের বিশানিজঃ ভারং জনদায়িঃ, ইমানের বলিজ-কন্মপাবরনের বলিজঃ ভারং কন্মপো বাগেবাজি-বাঁচা হ্যমন্ততেৎতির্হ বৈ নামৈত্রল্ বদজিরিতি, সর্বাভার ভবতি সর্বাদ্যানং ভবতি য এবং বেল ১০৪৪৪৪

ইতি বিভীয়াধ্যায়ে বিভীন্ন ভ্ৰাহ্মণম্ ॥২॥২॥

শ্বনাথ :—ইদানীং তানেব সপ্ত ধ্বীন্ বিভন্ন দর্শন্নিভ্নাহ—
"ইমাবেব" ইত্যাদি। ইনো (নির্দিন্তনানো কর্ণো এব (নিশ্চরে পোডনভর্নানো; [কো তো ? ইত্যাহ—] অসং (দক্ষিণঃ কর্ণঃ) এব গোতনা,
(ভদাধ্য ধ্বিহানীরঃ), অরং (বানা কর্ণঃ) ভর্নাজঃ (ভর্নাজাধ্য-ধ্বিদ্বানীরঃ); [চক্স্বরং দর্শরন্ আহ—] ইমো এব বিধামিত্র-জন্মন্ত্রী, অরং
(ইদং দক্ষিণং চক্ষুঃ) এব বিধামিত্রঃ, অরং (ইদং বানং চক্ষুঃ) এব জন্মদ্বিঃ;
[নাসিকান্তরং দর্শরন্ আহ—] ইমো এব বশিষ্ঠ-কল্পগৌ—অরং দক্ষিণঃ
নাসাপুটঃ) এব বশিষ্ঠা, অরং (বাননাসাপুটঃ) এব কল্পণঃ; বাক্ বাগিজিরং
এব সঞ্জিঃ; হি (বলাৎ) বাচা এব অরং অভতে; (তলাদেব বাক্ অজিঃ),
বং 'অজিঃ' ইতি নাম, এতৎ বৈ 'এব) অভিঃ হ প্রসিদ্ধন্, অভিঃ
আদনকর্ত্তা এব সন্ অজিরিভ্যুচাতে ইতি ভাবঃ)। যা এবং বেদ (জানাতি),
[সঃ বিনান্] সর্কান্ত (অরক্ত) অতা 'ভোকা) ভবতি, সর্কাং চ অক্ত
(বিভ্নঃ) অরং ভবতি (ভোগান্তন্ত্রাণভতে; ন পুনরর্মকক্ত ভোগ্যতাং
সভতে ইত্যুর্বঃ ; ১০৪।৪।

केलि विजीवासारव विजीव-खावनसामा ॥ २ ॥ २ ॥

মূলালুবাদে—[অতঃপর পূর্বোক্ত ধবিদের নাম ও স্বরূপ প্রদর্শিত হইতেতে—] এই চুইটিই গোতম ও ভরণাল; তম্বধ্যে এই

করিয়া বাসিল্লিছ ববিও সহাস কটক, তথালি ভাষাকে আহম বলিবার উল্ছেড এই বে, বাশিল্লিয়ের ছুইটা ভাষ্য—(১) অরভক্ষণ করা, (২) শব্দ্রেজ উল্লেখ্য করা; ভাষাকে অরভক্ষণের কর্তৃত্ব বিল্লা বাক্তক সভান করা ক্রিয়াকে। আহম করিছে আইম বনা হটায়াকে। অভন্তব উল্লিখিত ধর্মার অনুসাধে এক বলিবাই সভামত আইমড বিল্লোক স্থা বনাক ক্রিয়াকে।

দক্ষিণ কর্ণই গোড়ম ও বানকর্ণই ভরজাজ শ্বনি; এই ছুইটিই বিশাজিত্র ও জমদন্মি শ্বনি; তস্মধ্যে এই দক্ষিণ চকুই বিশাসিত্র, এবং এই বান চকুই জমদন্মি; এই ছুইটিই বসিষ্ঠ ও কশুণ শ্বনি; ভস্মধ্যে এই দক্ষিণ নাসাপুট বসিষ্ঠ ও বাম নাসাপুট কশুণ; লার বাসিন্তির হইডেছে—লত্রি শ্বনি; কারণ, লোকে বাক্যের সাহাব্যেই জমজোগ করিয়া থাকে। এই বে, জত্রি নাম, ইহা বস্তুতঃ 'অতি' নামেরই রূপাস্তর মাত্র। বিনি এইরূপে শ্ববিত্ব জানেন, তিনি স্ক্রবিধ জ্বন-ভোগের অধিকারী হন, সমস্তই ভাহার লল্প হয় ॥ ১০৪।৪।।

ইডি বিভার অধারে বিভার ব্রাহ্মণ 🛚 ২ 🗷 ২ 🗈

শাক্ষয় ভাস্যাখ্য। কে পুনন্তর চনসত তীরে মাসতে বনরঃ
ইতি ? ইবাবেব পোতন-ভরনাকো কণোঁ—মরবেব পোতনঃ, মরং
ভরনাকঃ—দক্ষিণশোভরক, বিপর্ব্যরেশ বা। তথা চমুবী উপদিশরু বাচ—
ইমাবেব বিধামিত্র-মমন্ত্রী, দক্ষিণং বিধামিত্রঃ, উত্তরং ভনদন্তিঃ, বিপর্ব্যরেশ
বা। ইমাবেব বশিষ্ঠ-কত্তপোঁ—নাসিকে উপদেশরু বাচ; দক্ষিণঃ পুটো ভবতি
বশিষ্ঠঃ উত্তরঃ কত্তপং, পূর্ববিধা। বাগেব মত্রিঃ মনক্রিরাবোগাৎ সপ্তরঃ;
বাচা হি মানু মন্ততে; ভনাদভিই বৈ প্রসিদ্ধং নাবৈতৎ—মত্ মাদত্রিরিতি,
মতিরেব সনু বদত্তিক্রচ্যতে পংরাকেশ।

স্ববিশ্বতভারনাতত প্রাণত পরিনির্বাচন-বিজ্ঞানাৎ পরা তবতি। পরিন্তব তবতি, নার্দ্মিরজেন পুনঃ প্রত্যভতে ইত্যেতহুক্তং তবতি—সর্ববভারং তব-তীতি। ব এবনেতত্ববোক্তং প্রাণবাধাম্মাং বেদ, স এবং বধ্যবং প্রাণো ভূষা আধান-প্রত্যাধানগতো ভোক্তৈব তবতি, ন তোজাব্ : ভোজাব্যাবর্ত্ত ইভার্বঃ 1>08181

বিতীয়াব্যায়ত বিতীয়ং ব্রাহ্ণার্ হং। ঃ

্টীক্সা —বিপ্রায়ের বেভাতং পূর্কবিষ্যুচ্যতে। আনঃ নথা ইতি নবজঃ। অনিছে-হেছুর্ববিদ্যাহারে।বাবিতি। বেছুং নাব্যকি—আন্তা আঁকি। নাব্যকং নিব্যক্তি—জন্মানিছিও। তি কবননিবিতি বাপর্বিভঙ্গে, অত আহ—আন্তিহ্মুহ্নান্তি। প্রাথনা ব্যয়ভাতনেওঁনা সর্বায়ভাত বভানিবিক্তনবিজ্ঞানাতিত নক্তঃ। সর্বাব্যাহারিবাক্তনিভানিক্তিনবিজ্ঞানাতিত নক্তঃ। সর্বাব্যাহারিবাক্তনেওং হনং. তিত্ত নাব্যাব্যাহারেব্যন্ত্রুক্তিবিজ্ঞান্ত ১২০০।১

প্রকাশিক বাদ দেশ কর্মির চরলের তীরে বাস করেন, এবন তাহা বলিতেছেন—এই কর্ম ছইটিই গোত্রম ও ভরবার, তরবো এই দক্ষিণ কর্মই গোত্রম, পার বাম কর্মই ভরবার, অবনা ইহার বিপারীতভাবেও ধরা বাইতে পারে, অর্থাৎ বামকর্মও গোত্রম হইতে পারে, এবং ক্ষিণ কর্মও ভরবান্ধরণে করিত হইতে পারে সেইরপ চক্স্মর্মর প্রস্থলন করত বলিলেন—এই ছইটিই বিধানির ও ক্ষমদন্তি করি; তরবার চক্স্ম ক্ষমদন্তি; বিপরীতভাবেও ধরা বাইতে পারে। নাসিকারর প্রকর্মন করত বলিলেন—এই ছইটিই বসিষ্ঠ ও করুপ; তরবার দক্ষিণ নাসাপুট বসিষ্ঠ, আর বাম নাসাপুট কর্মপ; এখানেও দক্ষিণ বাবের কোন নিরম নাই। অদন—তক্ষণ ক্রিয়ার সহিত সম্বন্ধ আছে বলিরা বাগিক্সিরই ইহাবের সপ্তম কবি। অতি এককন কবি; অদনকর্তা বলিরা বলিরা ভাহার এই 'অতি' নাম প্রস্থিম; প্রকৃত নাম 'অতি' হইলেও 'অত্রি' পরে প্রকারান্তরে তাহার সেই নামই অভিহিত হইরাছে।

এই 'শ্বত্তি' নামের প্রক্লভার্য বিজ্ঞানের ফল এই বে, বিজ্ঞাতা এই সর্ব্ধপ্রকার প্রাণাশ্বক শরের ভোক্তা হন; সমন্তই ইহার শর (ভোগ্য) হর। ইহা ছারা বলা হইল বে, পরলোকে সে কেবল ভোক্তাই হয়, কিন্তু শপর কেহ ভাহাকে ভোগ করিতে সমর্ব হয় না। হিনি বক্লাক্ত প্রকার প্রাণত্তব জ্ঞাননন, ভিনি এইরূপে ভেহত্ব প্রাণতাব প্রাপ্ত হইয়া এবং শাধানশ্বরূপ কেহে ও প্রভ্যাগানরূপ নিরে অবস্থিতি করত কেবল ভোক্তাই হন, কিন্তু শপরের ভোক্তা হন না, শর্মাৎ ভাহার ভোক্তাভাব নিরত হইয়া য়য়।

ইতি বিতীয়াধায়ে বিতীয় ত্রান্ধণের ভাষানুশাদ ॥ २ ॥ २ ॥

ভূতীরং ব্রাহ্মণম্।

ৰে বাৰ ব্ৰহ্মণো রূপে মুৰ্তকৈ বামূৰ্তক মাৰ্চ্যকামূতক বিভক্ষ যচ্চ সচ্চ ভাচ্চ ॥১০৫॥ ॥

স্ক্রান্তাংশঃ—বাব (প্রসিছো) ব্রহ্ণং বে রূপে প্রসিছে —স্কুর (বৃর্তি-বিশিষ্টং পরিছিরং) এব চ, স্বর্তাং (বৃর্তিরহিতস্ স্পরিছিরং) চ; তথা মর্তাং (সর্বাশীলং) চ, অমৃতং (স্বর্বাশীলং) চ; তথা হিতাং (স্তিরহিতাং) চ, বং (স্ফুং) চ, সং (বিদ্যাশালং) চ, তাং (স্কুলা প্রোক্তং) চঃ ১০৫। ১॥

ব্রম্বের ছুইটি রপ প্রসিদ্ধ,—একটি বৃর্ত্ত (বৃর্তিসম্পন্ন), **অপরটি অবৃর্ত্ত**; একটি বর্ত্তা (বরণশীল), অপরটি অনুতবতাব, একটি হিত (পতিবীন—পরিচ্ছিন্ন), অপরটী বং (পরনশীল), এবং একটি সং (বিশ্বসান), অপরটি ত্যুৎ (সর্বাসমারে পরোক্ষ) ॥ ১০৫॥ ১॥

স্পাক্ষয়-ভাস্থা তত্ত প্ৰাণা বৈ স্তানিছ্যকৰ। বাং প্ৰাণানাৰ্গনিবদং, তাং ব্ৰোপনিবংপ্ৰস্থান ব্যাব্যাতাঃ—"এতে তে প্ৰাণাঃ" ইভি চ। তে কিমান্থকা, কৰং বা তেবাং সভ্যবন্—ইভি চ বক্তব্যমিতি পঞ্চলাং সভ্যানাং কাৰ্ব্য-করণান্ধকানাং বন্ধপাবধান্ধাৰ্থিং ব্ৰান্ধাৰ্থভাতে—বহুপাধিবিশেষাপনম্বান্ধে "নেতি নেতি" ইভি ব্ৰহ্ণঃ সভ্যন্থ নিৰ্দ্ধান্ধিনিক্যা

তত্র বিরূপং ত্রন্ধ পঞ্চ্তকনিতকার্যকরণসকাং বৃদ্ধার্থান্যং বর্জাবৃতকভাবং তক্ষনিতবাসনারপঞ্চ সর্বজ্ঞং সর্বশক্তি সোপান্যং ভবতি; ক্রিরাকারককলাত্মক্ সর্ব্যবহারাম্পদর্। তাদেব ব্রুদ্ধ বিগতসর্বোপাবিবিশেবং স্ব্যস্কর্শনিবিশ্বর্থ অক্সক্রম্পত্যভন্ন, বাত্মনসারেগাবিশ্বর্থ অকৈভভাৎ "নেতি
নেতি" ইতি নির্দিশ্রতে। তত্র বহুপোহ্বারেণ "নেতি নেতি" ইতি নির্দিশ্রতে
ব্রুদ্ধ, তে এতে বে বাব—বাব-শক্ষোংববারণার্থঃ—বে এবেভার্থঃ, ক্রম্মণঃ
পর্যাত্মনঃ রূপে,—রূপ্যতে যাভ্যান্ অরূপং পরন্ ক্রম্ম অবিভাব্যারোপ্যবাণাভ্যান্।২

(क (क १० वृर्वर देवर वृर्वरम्य ह ; क्या मन्वंक मन्वंद्रम्य दिकार्थः । व्यवनीयवायवित्यवत् मृक्षामृत्वं त्य अत्यकावशत्यात्यः । कामि शूमकामि वित्य-वशामि वृद्धावृद्धरवाविष्ठि ? উठारक- मठाः ठ मठाः मत्रववित्, चवृष्टक छदि-পরীত্র ; হিজং পরিচ্ছিরং গতিপূর্ককং বং হারু ; বচ্চ-বাতীতি বং-ব্যাণি चनविष्दिशः विख-विनवीठम् ; नकः—नविद्याखरणा विरमण्यानामावावनवर्यः বিশেষবং, ভাচ্চ-ভৰিণরীতম্, তালিভোব স্কলা পরোকাভিধানার্ছন্ ১১০৪১৪

টীকা---দ্ৰবং বহুং বৃবং কাৰ্ডৰতি-ভৱত্ৰভি। অবাভণক্ৰমাঞ্গাবদানং সত सर्थः। डेन्थिकः अञ्चाक्षकिवासानिः ह्याबाक्किकिक्षक्षकः। हेक्कसामनकावन्तिः ৰাং-ক্তে কিমাজাকা ইতি। বছণো বিভাৰণীয়বাৎ বিবিভি ভূডানাং সভন্থং विद्वादारक ! कबार-यम् लोबोक्ति । द्वरापूर्णाविक्षामाः वस्त्राववाष्ट्रवाद्याविक मच्यः । मकाक मकाविकाम पश्चमकानिकतः (१४१, अवश्यमकानिकवा(१४१, क्रायाक-पञ्चरणाकार्थस्यकातः आकृतः राकाः अन्देन् अध्यनम्यारस्वात्मः वाष्ट्रमञ्जूनार्थमिति मबुवाद्वार्थः । ३

নবিশেষমেৰ এক ব নিৰ্কিশেৰবিভি কেভিৎ, ভাৱিহাকভূ': বিভৰতে-তত্ৰেতি। आक्षनार्ट पूर्व्याक्योका विष्य महीति शावर : १,व वाव देशाविक्ट: त्रांगाविक: बण्डणः विदृर्गिष्ठि পঞ্চস্তুত্তিতি। শব্দপ্রভার্থিকারং দোশাধানন্ ; নিরুণাধিকং বন্ধরণং वर्गकि-करमरवाँछ । अवः वृत्रकावांक ग्रक्शि काक्शिक -छर ब्रक्शिमा । देशक्रमा मधीकि वावर ।२

অষুষ্ঠা চেডাত্র চকারাবেদকারাগুরি: বিবলিভরগ্রে (क्या वर्त्ताकारीत वकामानविद्यवनाक्ष्यवाहनविद्याचानकृतानी जानकाह-जा छ नी-জেকি। সুর্ভাষুর্ভথারতভাবিভাবি বাহনি বানি বিশেষণানি, ভাতাকাকাবারা গর্ণবিভি --कामि श्रमितिकां मिना । पर प्रतिन्तिक श्राप्त, हर प्रविद्धिक विकशित स्थापना । विद्यामानमः अकाद्यद्यानमञ्जादासम् ३३ - वाः ३४

ইতঃপূর্বে প্রাণকে 'সভা' বলা হইয়াছে; ভাহার পর, প্রাণ-সম্হের বে সমস্ত উপনিধৎ বা রহস্তাম্বক নাম আছে, ত্রন্ধোপনিধৎ বর্ণনাপ্রসঙ্গে সে সমস্ত ব্যাখ্যাত হইরাছে — "এতে তে প্রাণাঃ" ইতি। সেই প্রাণ-সমূহের শত্তপ কি প্রকার, এবং তাহাদের সতাতাই বা কি প্রকারে উপপত্ন হয়, তাহা নলা আবশুক; এই জন্ত, এখানে আরোপিত, যে উপাধি নির্গনপূর্বক 'নেভি নেভি' করিয়া ত্রন্ধের প্রকৃত তব নিরূপণ করা শ্রুতির অভিপ্রেড, কাৰ্ব্য-করণভাবে (বেংজিররণে) পরিণত সেই সভ্য-সংক্ষক পঞ্জুতের বরুণাব্ধারণার্ব এই ভৃতীয় ত্রারণ স্বায়ত্ত হইভেছে-

বাষের ছইট রশ্ব; তন্ধব্যে একটি রূপ বৃর্তনাবে প্রাণিত বর্ণনীত এইই
পক্ষত্ত্বনিত দেহেলিরস্থত, আর লপর রুপটি অবৃর্তনারক অনরপনীত এইং
বৃর্তনাসনান্ধক; তিনিই পর্কজ সর্কান্তি ও সোপাব্য লবাং প্রকার বর্ণনার খোপ্য হন, এবং ক্রিয়া কারক ও কলান্ধক সর্কাবিধ ব্যবহারেও গোচরীভূত নহ; তরজানের বিষরীভূত সেই ব্রমই আবার উপাধিকত সর্কপ্রকার
বৈচিত্র্যাবিহীন জরামরপথিতিত ও সর্কাত্রনিস্তারক এবং থাক্য-মনের অগোচর্মও হন; অবৈত বা নির্কিশেব বলিরা তিনিই 'নেতি নেতি' বাক্যে নির্কিট
হইতেছেন। তাহাতেও আবার এবানে বিশেষ এই বে 'নেতি নেতি' কর্যার
বাহা বাহা পরিত্যাপ করিরা ওছ ব্রম্বরপ নির্দেশ করিতে হইবে, এই ছুইটিই
পেই পরিত্যাক্য বিষর, 'বাব' প্রের অর্থ-অব্যারণ বা নিক্তর করা;
স্বতরাং কর্ম হইতেছে বে ব্রম্বের পারমাধিক রূপ ছুইটিই, (ক্র্ম বেন্দী নহে);
অরপ (নিরাকার) ব্রম্বও অবিভাসমারোপিত বে ছুইটি বর ছারা রূপিত—
প্রকটীক্বত হন, এখানে তাহারেই নাম—ক্রপ।

সেই ছুইটি রূপ কি কি ?—সূর্ত্ত অনুর্ত্ত; 'এব' শক্ষে অবধারিত হইতেছে বে,এডদন্তত্ব বিশেষণসম্পন্ন রূপ সূর্ত্তান্ত্তেদে কেবলই ছুইটি, (ইহার অবিকণ্ড নয়, কষণ্ড নয়); সূর্ত্ত ও অসূত্ত রূপ ছুইটির পূথক্ পূথক্ সেই বিশেষণগুলি কি কি, তাহা বলা হইতেছে—মঠ্য ও অসূত্ত. স্থিত ও বং, এবং সং ও তাং; তর্মধ্যে মর্ত্তা অর্থ—মরণনীল; অমৃত ১র্থ—মর্তের বিপরীত—মরণরহিত; স্থিত অর্থ—পরিচ্ছিন্ন—নাহা গমন করিরা হিতি লাভ করে, আর মং অর্থ—মাহা গমন করে। তাহাই হং—ব্যাপক অপরিচ্ছিন্ন—ঠিক হিলের বিপরীত্যতাব; সং অর্থ—অপর সমন্ত পদার্থে যাহা নাই, এরপ অসাধারণ ধর্মসূক্ত; আর তাং অর্থ—সতের বিপরীত, অর্থাং বিনি সর্বাদাই 'তাং' বলিরা পরোক্ষতাবে বাধহারবোগ্য, (তাহা তাং) ৪ ২০২ ৪ ২ ৪

তদেতমুর্জং যদগ্যবায়োশ্চান্তরিক্ষাকৈতমর্ব্যা তৎ স্থিত বিষ্ণু বিষ্ণু কর্মান্তরিক্তম স্থিতিত মর্ব্যান্তরিক্তম স্থিতিত মন্ত্রান্তর ক্ষিত্র স্থানিক ক্ষিত্র স্থান

ज्यसम्माद्याः -- वदः पूर्वरः वित्यवन्त्रज्ञहेत्रविभिष्ठेरः वृद्धरः चवृद्धरः । खास्तरः, । फर्त्रावित्यवन्ति विकक्षा वर्षत्रिः -- "जरमज्द" हेजाविताः

छ८ (. पूर्तिकिर) बृढेर (वृढंदनम्) अठ६ ; [अठ६ किव् १] वारबार ह

व्यक्तिकार ह पर व्यक्तर (पृष्कृ कृष्णावयू), अकर (कृष्णावायकर वनर) गर्धार (प्राथवर्षकर), अकर क्षित्र, अकर नर, [अकर नर्बर आध्यक कृष्णायाम्य] ; क्षक्र अक्षक कृष्ण, अक्षक वर्षाक, अक्षक क्षित्र, अक्षक नक्ष अवर (क्ष्णायाम) वयर (नावर), यर अवर (नर्दार) क्षणि (क्षाणर ववाकि); वि (वक्षर) अवर (वर्षार) नक्ष (नक्षणक कृष्णवत्रक) तमर (नावर) 12-61 र व

শা ক্লেলাব্যক্তি । তত্ৰ চতুইয়বিশেষণবিশিষ্টং বৃষ্ঠং, তথা অবৃষ্ঠক ।
তত্ৰ কানি বৃষ্ঠবিশেষণানি, কানি চেতরানীতি বিভন্নতে। তদেতৎ মৃষ্ঠং—
বৃদ্ধিভাবয়বৰ্ ইতরেতরাস্প্রবিষ্টাবরবং খনং সংহতনিত্যর্থঃ। কিং তৎ ? বলতং;
কলাবতং ? বারোন্ড অভানিকাচ্চ ভূতৰয়াং—পরিশোষং প্রিব্যাদিভূতত্ররব্;
এতমান্ত্র্যুক্তরেত্র প্রাধ্যং ভূতত্রর্থ, ইলং নান্তাই বরণধর্মি ? কলাৎ ? বলাৎ
ছিত্তবেতৎ; পরিচ্ছিরং হি অব্যাভরেশ সন্তামুক্ত্যমানং বিরুধাতে—বধা ঘটঃ
ভত্তভ্যাদিনা; তথা বৃষ্ঠং, ছিতং পরিচ্ছিন্নবর্ধাত্তরসম্বন্ধি, ততাহর্ধাত্তরবিরোধাৎ মন্ত্যুক্ত, এতৎ সং বিশেষবাণাসাধারণধর্মবং; তলান্ধি পরিচ্ছিন্নব্, পরিভিন্নভাৎ নান্ত্র্যুক্ত নুর্ত্তরাধা মন্ত্যং, মন্ত্যভাৎ হিতন্, ছিতভাৎ সং;
ভাতাংভোভাব্যভিচারাৎ চতুর্ণাং ধর্মাণাং ব্যেষ্টং বিশেষণবিশেশভাবো হেতৃহেত্ত্বরাক্ত লল্ডিভব্যঃ। সর্মধাপি ভূ ভূতত্রেরং চত্ত্রঃবিশেষণবিশিষ্টং মৃষ্ঠং
ক্রপং ব্রহ্মাঃ। >

ভত্ত চতুৰ্ণবেক্ষিন্ সৃহীতে বিশেষণে ইতরণ্গৃহীতমেৰ বিশেষণম্ ইত্যাহ
—ভত্তৈত মূৰ্ত্ত, এতত মৰ্ত্যত, এতত ছিতত, এতত সতঃ—চতুইমবিশেষণত
ভূতত্ত্বভেত্ত্বিং—এব রসঃ সার ইত্যর্যঃ। তারাণাং হি ভূতানাং সারিষ্ঠঃ
স্বিতা; এতৎসারাণি ত্রীণি ভূতানি, বত এতৎকৃতবিভন্তানানরণবিশেষণানি
ভবতি। আবিবৈধিকত কার্যাতৈতত্ব রুপন্—বং স্বিতা—বংশতসভলং
ভপতি; সতো ভূতত্বরত হি বলাবেশ রস ইত্যেত্ব গৃহতে; মূর্ভ্যে হেব

नविका क्रमकि, नासिक्त । वक् बाविदेवविका क्रमक वक्तकाकाकाक्त कर प्रकार १२-६१।

টীআন—ভলেভি নির্ভারণার্থা সন্তবী। ভল এত্যেকং বুর্তামুর্তভনুইরবিশ্বেবণরতে বর্তাভি
বাবং। তথা হিতাবে মর্ত্রাং, ভলাং→প লৈচিছ্নাং ক্রীন্তি। ভলেব বৃষ্টাতের পাইছি—
ব্যেপ্তভাগিল লা। অভা বর্তাবাং বৃর্তাবিভি পেবঃ। বৃর্তবর্তাবারোভারতে হত্ত্বেভুমহাবং
ভোভবিদ্ধা বা-পবঃ। তথা পুরুক্তমুর্ বিশেবণবিশ্বেব্যভাবো হেভুহেভুমহাবভ নিক্ষেত্বাভলাং – ভাস্ক্রোইস্কৃত্তি। প্রপদ্ধণিভারভাগি ধাবছাভাবনাপভার্ত—ভার্ক্রবাবিশ্বিত্র।

ভতৈততৈ দা ইতোৰ বছবো ভিষিতি বৃষ্ঠভেডাাছিলা বিশেষণাসমূহীন্তন্ত্ৰে । ভ্ৰাৰ —জ্বেন্তি। সামধ্য পাধনতি — প্ৰয়াপাং স্থাতি। ভাৰ অভিজ্ঞানত হৈছুৰাই—অন্তচ্চিত্তি। একেন নবিভ্ৰতবেন কুডানি বিভাগনানালগভীপনি কুল গুলুং লোহিড-নিভোডানি লগানি বিশেষণানি বেবাং পূৰিবাংগুলনাং, ভানি ভবা। ভড়ো ভূডান্তভাষ্টানাংবা স্বিভ্ৰতনত আবাভিন্তিবাং বি এব ভপতীভাভাৰ্যনাং—আধিকৈবিজ্ঞান্তভিতি। বিভ্ৰতনায়াবানা ভঙ্গ ভাৰণপ্ৰিয়াঃ জান্ত ইন্তি। বঙলবেকৈছজান্ত্ৰা বিভ্ৰতনায়াবানা ভঙ্গ ভাৰণপ্ৰিয়াঃ জান্ত ইন্তি। বঙলবেকৈছজান্ত্ৰা হেম্বাই। অভন্তবেক্তানালায় ভঙ্গ ভাৰণপ্ৰিয়াঃ কুলি কুলিবাংগুলিক বিশ্বাকা কুলিকলান্তি স্বিভ্ৰতনাত্ৰী কুলিকলান্ত্ৰী কুলিকলা

ভালান্ত্র বাদে।—প্রেজি বৃর্ত ও সম্র্ উত্যই চারিট বিশেষণে বিশিষ্ট; তর্মধ্য কোন্ডলি মৃত্ত্রের বিশেষণ, আর কোন্ডলি সমৃত্ত্রের বিশেষণ, আর কোন্ডলি সমৃত্ত্রের বিশেষণ, তাহা বিতাপ করিয়া দিতেছেন। ইহা হইতেছে দেই বৃর্ত্ত—বাহা স্বর্মনে উপচিত —পরশার সংলিই অর্থাৎ আরুতিসম্পার সংহত পর্যার্থ। তাহা কি ? বাহা অন্ত ; কিসের অন্ত ? বাহ্ ও আকাল এই ভূত্ত্বর হইতে অন্ত, অর্থাৎ অবশিষ্ট ভূত্ত্রর—পৃথিবী, কল ও তেজ; ইহা বর্ত্তা—এই বে মৃর্ত্তসংক্ষক ভূত্ত্রর, ইহা মৃত্তা—মরণলীল; কারণ ? বেছেড় ইহা হিত ও পরিছিয় বা পরিষিত ; পরিছয়ে বন্ধবাত্রই পরিছিয় অপর বন্ধবারা বাধা প্রাপ্ত হয়া থাকে ; বেষন একটি ঘট ভল্ভ প্রভৃতি পরার্থ বারা [বাধা প্রাপ্ত হয়া প্রত্তি বিরুদ্ধ ইহা হিত সর্থাৎ পরিছিয়, লেই ছেড় অগর সর্বাপদার্থের সহিত বিরুদ্ধ ; বিরুদ্ধ বলিয়াই মর্ত্তা (বিনাশলীল) ; ইহাই সং অর্থাৎ বাহা অন্তর্জ নাই, উন্তুদ্ধ বিশেষভাবৃক্ত ; সেই ছেড়ই পরিছিয়, পরিছিয় বলিয়াই মর্তা ; এই জন্তই তাহা মৃর্ত্ত ; অথবা মৃর্ত্ত বলিয়াই মর্তা, মর্ত্তার হেড় হিত, হিতর হেড় সং। অন্তর্জন পরালার স্বর্তা, মন্ত্রার হেড় হিত, হিতর হেড় সং। অন্তর্জন পরালার

পরন্পরের সহিত নিরত সম্বর্ভ থাকার উক্ত বৃর্বাদি , চারিট বিশেষণের বিশেষণ-বিশেষ্যভাব ও বেড়-বেড়্যভাব (সাধ্য-সাধ্যভাব) ইচ্ছাল্পারে গ্রহণ করিতে পারা যায়। বংগাক্ত চারি প্রকার বিশেষণবিশিষ্ট উক্ত ভূততারই ব্রম্বের মূর্ত রূপ।

উক্ত বিশেষণ চতুইরের মধ্যে, যে কোন একটি বিশেষণ গ্রহণ করিলেই
অপর বিশেষণগুলি গ্রহণ করা হয়, এই অভিপ্রায়ে বলিতেছেন—সেই এই
বৃর্জের, এই মর্জ্যের, এই ছিতের, এই মতের, অর্থাৎ চতুর্জিধ বিশেষণ-বিশিষ্ট
উক্ত ভৃতন্তরের ইহা (পর্বা) হইতেছে—রস এর্থাৎ সার : কেননা, পর্বাদেশই
ভৃতন্তরের সারতম পদার্থ ; আধিদৈবিক দেহাকারে পরিণত কার্য্যের
ইহাই বর্ধার্থ বরণ—বিনি এই সবিতা (পর্বামণ্ডল), যিনি এই সৌরম্ভলরূপে
তাপ হিতেছেন ; কারণ, এই মণ্ডলারিছাতাই সতের—ভৃতন্তরের রস বলিরা
পরিগৃহীত হইয়া থাকেন ; কারণ, মৃর্জরণ এই পর্যাই তাপ দিতেছেন এবং
সকলের শ্রেষ্ঠতম পদার্থিও বটে । আর যাহা আধিদৈধিক করণ—মণ্ডলের
মধ্যবর্তী, তাহার কথা পরে বলিব ৮০০৫ নহ ম

অধাস্তাং বারুশচান্তারকং চৈতদয়তমেতদ্ যদেতং তাৎ, ততৈততা বৃত্তিততায়তকৈতত যত এতত তাতৈষ রদো য এব এতত্মিন্ মণ্ডলে পুরুষস্তাত হেব রস ইত্যাধিদৰতম্ ১১০ মাঞা

ক্ষান্ত্রাদে।—লভংগর রক্ষের সমূর্ত রূপ কবিত ছইভেছে— বারু ও আকাল [এক্ষের সমূর্ত রূপ]; ইহাই সমূত (অবিনাশী) ইহাই বং, ইহাই ভাং (সর্বন্ধা পরোক্ষান্ত্রক); সেই এই সমূর্তের—এই অমৃতের— এই বড়ের এবং এই ভাতের ইবা হইভেছে রস বর্ধাৎ সারভূত পথার্থ, বাহা এই সূর্বামণ্ডলে অধিনিত পুরুষ (দেবতা); ইথাই 'ভাং'-সংজ্ঞক রূপের রস; ইবা হইভেছে—অধিদৈবত বর্ধাৎ মণ্ডলাধি-ভাতৃদেবতাত্মক রূপ। ১০৭। ০।

শীক্ষন-ভাষ্যাম । অধান্ত্ৰ্—অধ অধুনা অনুৰ্বৃচ্যতে—বাহ্ত
অথবিকং চ—বং পরিশেষিতং ভূতবরৰ, এতদন্তৰ্ অনুৰ্বহাৎ, অন্থিতন্
অতোহবিক্ষাযানং কেনচিং, অমৃতব্ অনরপ্যত্তি ; এতং বং ছিতবিপরীত্ত্ব,
ব্যাণি অপথিছিরম্ ; বসাধ্ বংগতং অভেত্যোংপ্রবিতভাষানবিশেবৰ্, অতঃ
তাং, তাদিতি পরোকাভিধানাইষের পূর্ববং । >

তকৈতত অনুষ্ঠত এততামৃতত এতত বতং এতত তাত—চত্ইরবিশেষণতাম্থিত এব রসং। কোহসোঁ । ব এব এতবিন্ বঙলে—পুরুষঃ করণাশ্বনো
হিরণাগঠঃ প্রাণ ইতাতিবারতে বং, স এবং অনুষ্ঠত ভূতবরত রসং পূর্ববং
সারিচং। এতং-পুরুষসারক অনুষ্ঠং ভূতবরম্—হৈরণাগঠনিদারভার হি ভূতবরাভিব্যক্তিরব্যারুতাং; তথাং তাদব্যাং তংসারং ভূতবরম্। তাত হেব রসঃ
—বখাদ্ বে৷ বঙলহং পুরুষে৷ মঙলবং ন গৃহতে সারক্ত ভূতবরত, তথাদভি
বঙলহত পুরুষত ভূতবরত চ সাধর্মান্। তথাস্বুকং প্রসিদ্ধবন্তেভূপাদানন্—
'তাত হেব রসং' ইতি। ২

রসঃ কারণং হিরণাগড-বিজ্ঞানায়া চেতন ইতি কেচিৎ; ভত্ত চ কিল হিরণাগঙ্বিজ্ঞানায়নঃ কঝ বাব্ হরিক্ষয়োঃ প্রয়েক্ ; ভৎকর্ম বাব্ হরিক্ষা-ধারং সং মঞ্চেনাং ভূতানাং প্রয়েক্ ভবতি ; তেন স্বকর্মণা বাব্ হরিক্ষয়োঃ প্রয়েজিতি ভয়োঃ রসঃ কারণমূচ্যত ইতি । তয় মৃর্ভরসেন অভুলাজাৎ ; মৃর্জ্জ ভূ ভূতত্রয়প্ত রসঃ মৃর্ভমেব মওলং দৃইং ভূতত্রয়-স্বানজাতীয়ম্, ন চেতনঃ ; ভবা অমৃর্জয়োয়পি ভূতয়োজংস্মানজাতীয়েনৈব অমৃত্রস্রসেন মৃক্তং ভবিভূম্ ; বাক্য-প্রয়েজস্বারাৎ,—বধা হি মৃর্ভাম্বে চত্ইয়ধর্মবিতী বিভল্জোতে, তথা রস-রস-বভোরপি মৃ্রামৃত্রয়োজনোটনেব জায়েন মৃক্তো বিভাগঃ ; ন ক্রেবৈশসম্ । ৩

 ভ এতাৰ্ সম্ভ পূক্ৰাৰেকং পূক্ৰবক্ৰ্মন্" ইত্যাৰে আয়নসন্থানিৰ চ ক্ৰডাৰন্তেৰ্ পূক্ৰবৰ্তনোগাং। ইত্যবিদৈৰত্বিতি উল্লোপসংহায়ঃ অধ্যাত্ম-বিভাগোজ্যৰ্বঃ ৪১০ বালঃ

ব এব ইত্যাবি এতীক এইবং, তত বাবে।বং করবার কইত্যাবি। বব। কৃত্যারত বঙ্গং সাহিত্যিক, তববিত্যাব—পূর্ব্যার্থিক। সাহিত্যবন্ত কেরুবার—প্রক্রাবিত্যাবিত। বাহিত্যবন্ত করবার করবা

निवास्तवासि—छ्ट्रवार्डि। 'स्वर पूर्वज्ञान तर गरवासाव्यवित्रका ग्राह्मसावसावसाव - स्वूर्क्ट देखांछ। स्वर्षकारतो अन्यास्त्रकाव्यविद्यास्त्रका वारतः। स्वर्षकारक हर्षिका अन्यास्त्रकार्यकार स्वित्र स्वर्षकार्यकार स्वर्षकार्यकार स्वर्षकार्यकार स्वर्षकार्यकार स्वर्षकार स्वरूपकार स्

অর্থবৈশনং পরিবর্ত্ত শতকে—অমুক্ত রাজ্যোশ্পীক্তি। শর্বরদবন্দর্ভরদলমেনাপি তেওনভৈগ রাজগো সকলাপরত এবপনিভোত্ত্বরভি—
আক্তালামিক্তি। বক্তরত কেতনকার্যভারা কেতনতে সর্বাভ তথকার্যভার। তথাজনায়নয়োক্ষেত্তবাতেতি বিশেষণাবর্ত্তাবিভার্ত্ত। বক্তনার্যভাত কেতনতা পুরুষণাক্ষতি বর্ণানেইয়া-

বিভি শহতে—পুরুত্ত্বাপান্ত ইন্ডি। বহুপণভিং পহিবভি—দেন্ডালিনা। তলেব ব্যাতবাতি—দানা ইন্ডি। ইবা বিষকাঃ নবো নৈব প্লাবো ব্যবহার প্রকারিকু-বিভাবোর ব্যবহার প্রকার করেবিকু-বিভাবোর ব্যবহার ব্যবহার ব্যবহার করেবিকু-বিভাবোর ব্যবহার ব

ভাল্য। ব্যাদ্য। — "লগ লায় বন লায় জাপের কথা বলা চইতেছে — পায় ও লায় কিংলা লা এটা বে চুটটি মৃত লাবলিই রহিরাছে, ইয়া লায়ত, বেছেড়, ইয়া লায়ত লায় কিংলা লায়ত লায়ত

দেই এই অনুর্ত্তের —এই অনুত্তের—এই 'বতের' এই 'তাতের' অর্থাৎ
উক্ত প্রকার চতুর্কিধ বিশেবণবিশিষ্ট অনুর্ত্তের ইহাই রস (সার); ইহা
কি ? বাহা এই দুক্রমান সৌরমণ্ডলন্ত পুরুষ —বাহা করণবন্ধপ (কার্যান্ধপ
নহে.) হিরণাপর্ভ ও প্রাণ নামে অভিহিত হইয়া থাকে; এই মণ্ডলন্থ সেই
পুরুবই পূর্কবৎ অনুর্ত্ত ভূতবন্ধের রস অর্থাৎ সারতম পদার্থ। অনুর্ত্ত ভূইটি আবার এই মণ্ডলাধিষ্টিত পুরুবের সারত্ত; কারণ, হিরণাসর্ভের ক্ষম
শরীর নির্মাণের অন্তই অব্যান্ধত প্রকৃতি হইতে উক্ত ভূতবন্ধের অভিবাজি
বা ম্যাবিভাব হইয়া থাকে; সেই হেতু পুরুবার্থ সিদ্ধির অন্ত আবিন্ধৃতি বলিয়া
ভূতবন্ধ তাহার সার। ইহাই 'তাতের' (নিতা পরোক্ষের) রস বা সারত্ত,—
বিনি এই মণ্ডলন্থ পুরুষ; বেহেতু এই মণ্ডলন্থ পুরুষ মণ্ডলের লার প্রত্যান্ধগোচর হন না, অধ্য ভূতবন্ধের সারভূত্ত বটে, সেই হেতু মণ্ডলন্থ পুরুষে উক্ত
ভূতবন্ধের সাধর্ম্ম বা ধর্মপত সাম্য আছে। অতএব 'বেহেতু ইহা 'তাতের
রস' এইরপি প্রসিদ্ধবং হেতুর উপভাস করা বুক্তিসক্তই হইরাছে॥ ২

এছনে ভর্তপ্রণক প্রভৃতি কেই কেই বলেন—রস অর্থ—কারণ, তাহাই হিরণাগর্ভের আত্মা—চেতন পদার্থ; হিরণাগর্ভাতিযানী আত্মার এ জিয়াই বাহু ও অন্তরিক্ষের প্রবোজক বা প্রেরক; তাহার সেই জিয়াই বাহু ও অন্তরিক্ষে থাকিয়া অর্থাং প্রথমে উৎপন্ন হইয়া অপরাপর ভূতে জিয়া সমুৎপাদন করিয়া থাকে; দেইজন্ত হিরপাগর্ভাভিমানী আলা বীর কর্ম ঘারা বাহু ও অন্তরিক্ষের প্রেরণা করেন বলিয়া তত্ত্বের রস—কারণ বলিয়া অভিহিত হন। তাহাদের এইয়প কয়না সন্তত হয় না; কেননা, তাহা হইলে পূর্বোক্ত মূর্ত-রদের সহিত ইহার কিছুমাত্র সামা থাকে না; সেখানে মূর্ত্ত (আক্রতিবিশিষ্ট) সৌরমণ্ডলকে মূর্ত ভূতত্তরের রস বলিয়া কয়না কয়া হইয়াছে; সেই মণ্ডল ও ভূতত্রর উভয়ই একলাতীয়—মূর্ত জড় পদার্থ; কিছু কেহই চেতন নহে; অতএব তরমুসারে অমূর্ত ভূতমন্তের সমজেও তৎস্কাতীয় অমূর্ত পদার্থই রসরপে করিত হওয়া উচিত, কিছু তদিলাতীয় চেতন পদার্থ উর্নপ করিত হওয়া সন্তত্তরে বিরমে চতুর্বিধ ওপ্রোণে বিভক্ত করা রক্ষা পায়। পূর্বের মূর্ত্ত অম্বর্তনে যে নিয়মে চতুর্বিধ ওপ্রোণে বিভক্ত করা হইয়াছে, তেমনি রস এবং রসবানেরও ঠিক সেই নিয়মেই বিভাগ করা সন্তর্বকৃক্ত, কিছু "অর্ভবৈশ্বস্থার মর্থাৎ অর্জেক হিংসা করা আর অর্জেক রক্ষা করা সন্তব্যর হয় না (১)। ত

যদি বল, পূর্বে মণ্ডলকে বে. মূর্ত্তরসরূপে কল্পনা করা হইরাছে, সেধানেও মণ্ডলম্ব চেতনের প্রতিপাদন করাই প্রতির অভিপ্রেত; না, একধাও অতি অকিনিংকর; কারণ, প্রতির সর্ব্জাত মূর্ত্ত ও অমূর্ত্ত পদার্থমাত্রকে ব্রহ্মণে প্রতিপাদন করাই প্রতির অভিপ্রেত; সূত্রাং এখানে আর বিশেষ কি আছে? যদি বল, পুরুষ-শক্ষতি অচেতনে প্রয়োলা হইতে পারে না; না—ভাহাও বলিতে পারে না; কারণ, পক্ষ ও পুজাদিবিশিষ্ট লিম্বন্ধের প্রক্র-শক্ষের প্রয়োগ দেখিতে পাওয়া যার; যধা,—'আমরা এইরপে পুরুষ্ক প্রক্র থাকিয়া প্রজাসমুৎপাদনে সমর্থ হইতেছি না, এই সাতটি পুরুষকে

⁽১) ভাংপথা—"অর্থবৈশন" ভারট এইরপ—একরনের একট চাগদ ভিল, ডাংগর ইচ্ছা হইল, ঐ ভাগনট ভেলন করিলা নাংল থার,কিছ ভালার বাড়ীতে বে পরিমাণ লোক ভিল, ডাংগতে এক বাংল একখিনে আবলাক এইতে পারে না, অধ্য মাংগটা নই কলাক পুজিমানের কার্যা নয়; তথ্য লে মনে করিল, আজ ইনার অর্থেক ভেলন করিলা মাংল খাই, অবশিষ্ট আংশে চাগলট ভলাতল কক্তক, অপত্র স্বান্তে লে অংশ ভক্ষণ করা বাইবে; এরপ বাবছার বেনন চাগল বাঁচিলা আহকে না, তেমনি কর্মনা-রাজ্যেক এরপ বাবহারে কার্যা হয় না। এইরপ বাবছাকে বলে

(চন্দুরাদি ইল্রিয়কে) এক পুরুষ করিব, এইরূপ আলোচনার পর ভাষারা এই সাভটি পুরুষকে (বক্, চন্দু, শ্রোত্র, লিহ্বা, রাণ, বাক্ ও বনকে) গুক পুরুষ অর্থাৎ একটি নিল্পরীরে পরিণত করিল' ইত্যাদি, এবং অপরাপর শ্রুতিতেও কেবল অন্তরসের পরিণতিভূত দেহেও পুরুষ-শব্দের প্ররোগ গৃষ্ট হয়। "ইতি অধিদৈবতম্" বলিরা উপসংহার করিবার উন্দেশ্ত এই বে, অতঃপর বে, আব্যান্থিক বিভাগের কথা বলা হইবে, তাহ। জ্ঞাপন করা ৪২০৭ ৪৩

অথাধ্যাত্মম্—ইদমেব মূর্তং যদক্তৎ প্রাণাচ্চ যশ্চায়মন্তরাত্ম
নাকাশ:, এতনার্ত্তামেতৎ ন্তিবেতং দং, তবৈ তক্ত মূর্ত্তিক্তক্ত
মর্ত্তাক্তিক্তক্ত ন্তিবেতিক সত এব রুদো যচকু:, সভো ছেব
রুদ: ॥১০৮॥৪॥

সারাজাথ: 1—অধ (অতঃপরষ্) অধ্যান্ধ: (আন্থান: বেছৰ অবিকৃত্য প্রর্ভষ্) রিপম্ উচাতে]—ইদং (বক্ষাবাণষ্ এব (নিশ্চরে: মূর্ভং (মূর্ভাবাং রপম্); [কিং তং !] বং চ প্রাণাং (প্রাণাবারাঃ) অকং, বন্ধ অর্থান্থন অর্থান্থনি—দেহাতান্তরে) আকাশঃ (নতঃ), [তত্মান্থনারানি—দেহাতান্তরে) আকাশঃ (নতঃ), [তত্মান্থনারানি—দেহাতান্তরে) আকাশঃ (নতঃ), [তত্মান্থনারান্ধনি—দেহাতান্তরে) আকাশঃ (নতঃ), [তত্মান্থনারান্ধনি ক্রেম্বারান্ধনি বিশ্বারান্ধনি বিশ্বারান্ধনি বিশ্বারান্ধনি বিশ্বারান্ধনি বিশ্বারা বিশ্বারা বিশ্বারান্ধনি বিশ্বারা বিশ্বারা বিশ্বারান্ধনি বিশ্বারা বিশ্বারারা বিশ্বারা বিশ্বারার বিশ্বারা বিশ্

ম্লান্ত্রাদে।—অভংগর অধ্যাত্ম—দেহ-সম্বনী [মৃষ্ঠ রূপ কথিত হইতেছে]—ইবাই মৃষ্ঠ রূপ—বাহঃ প্রাণবার ও দেহাভান্তরত্ব আকাশ হইতে ভিন্ন—দেহোৎপাদক ভৃতত্ত্বয়; ইবাই মঠ্য, ইবাই ত্বিত, ইবাই সং; সেই এই মৃষ্ঠের সেই এই মঠ্যের সেই এই ছিতের এবং সেই এই সভের ইহাই রুস অর্থাৎ সারভূত, বাহার নাম চক্ষঃ; কারণ, ইহাই অধ্যাত্ম সভের মধ্যে শ্রেষ্ঠ বস্তু।। ১০৮ । ৪।।

স্পাক্ষরভাক্ষাক্ষা, অধ অধুনা অধ্যাত্ম বৃত্তাবৃত্তরোর্বিভাগ উচ্যতে—কিং ডৎ মৃত বৃ ? ইংবেব ; কিঞ্চেব ? বল্ভৎ প্রাণাচ্চ বারোঃ, ৰক্ষায়ৰ অন্তঃ অভ্যন্তরে আন্ধন্ আন্মঞ্চাকাশঃ বন্, শরীয়ত্বক বঃ প্রাণঃ— এতক্ষং বর্জায়িকা বদস্তৎ শরীয়ারস্তকং ভূতন্ত্রয়ষ্, এতগ্রন্ত্যাদি সমান-বস্তৎপূর্বেশ।

এতক্ত সতো স্থেব রসং—যচকুরিতি; আব্যাত্মিকক্ত শরীরারস্ককক্ত কার্যক্তিৰ রসং—সারং; তেন হি সারেণ সারবদিদং শরীরং সমন্তম্,—বণা অধিদৈবতমাদিত্যবওলেন; প্রাথম্যাচ্চ—চকুষী এব প্রথমে সম্ভবত ইতি, "তেলো রসো নিরবন্ত তাগ্নিং" ইতি লিকাৎ; তৈজসং হি চকুঃ; এতৎসার-মাধ্যাত্মিকং ভূতত্রসম্; সতো মেব রস ইতি মৃত্ত বি-সারমে হেম্বর্থঃ ১০৮৪৪৪

টীকা। চত্বা রস্থং প্রভিজ্ঞাপুর্ককং প্রকটনতি—আধ্যান্তি ক্রেছেড্যাচিন্না। চত্বা নাথের পরীরাব্যবেষ্ প্রথমাণ হেছম্বরনাণ— প্রাথম্যান্তচাউ। ভর
প্রবাব্যাং—চত্তু স্থী প্রেক্তি। সম্বতা জারবাব্য জল্পাচতুরী এব প্রথমে প্রবাব প্রথমে
সম্বতা জালেতে। পরস্থ হৈ বেষজন সিকল চতুরী এব প্রথমে সম্বতি ইতি হি প্রামণবিভার্বা। চতুবা নাথের হেছম্বরবাহ—ভেজ্ঞ ইতি। পরীর্বাঞ্জাবিপেবের নিশাহকং
চক্র সর্বাব্র সাহিত্যিপি ভোঞা বিশেষতক্তভূবি বিভার্ন "মানিডাক্ডভূড় ছাচ্ছিনী প্রাবি
পং" ইতি প্রতান। অভ্যাত্তগোলপার্যান্ত্রসূপ্রকাশ প্রবৃত্তিরবিক্রছেতি ভারা। ইতক
ভেজ্ঞাবন্যালে রস্পন্তকুবি সম্বতীভান্ন ভিজ্ঞাক্র ভারাতি। চতুবা মুক্তবার্ বুক্তুভ্বরেজার্কার্যারং হুজং, সাধন্যান্তেহাবন্তবের্ প্রাণাঞ্জাত ভল্পাধ্যান্তিকভূত্বর্বনার্যসিতিবিভার্বার ১০০০ন

ভাষ্যান্ত্রাদে। অতঃপর মৃত্ত ও অমৃত্তের আধ্যান্ত্রিক বিভাগ কবিত হইতেছে, অর্থাং দেহমধ্যে মৃত্তামৃত্তবিভাগ কি প্রকার, ভাষা বণিত হইতেছে—সেই অধ্যান্ত্র বঙ্গটি কি গুইহাই; ইহাই বা কি গু [উত্তর—] এই বে, প্রাণবার্ এবং এই বে, দেহাভাষ্তরত অবকাশান্তক আকাশ, এই হইরের/অন্ত অর্থাং দেহত আকাশ ও প্রাণরূপী বান্ত্র অতিরিক্ত অবশিপ্ত বে, শরীরোপাদানভূত ভূতত্ত্তর (প্রিবী, জল ও তেজ), ইহাই মর্ত্তা রূপ, ইত্যাদির ব্যাদ্যা পূর্কবং।

এই সতের অর্থাৎ সৎ-নাষক বৃত্তের ইহাই হইতেছে রস—বাহা চক্ষু:;
পরীরোৎপাদক আধ্যান্মিক ভৃতত্তরের ইহাই সার বা উৎকৃষ্ট ভাগ; কারণ,
অবিদৈবত ভৃতত্তরে বেবন আদিত্যমন্তল বারা সারবান্, তেবনি এই চক্ষু:বন্ধপ সারবন্ধ বারাই এই সমন্ত শরীর সারবান্। চক্ষুর প্রথমাৎপন্নমন্ত
সারবের অপর কারণ; 'সারভৃত তেক অধিরণে নিশার হইল' ইত্যাদি
লৌত বাক্যান্থসারে কানা বার বে, তেকই সর্বপ্রধনে প্রান্ধত্ত হইরাছিল;

চকুও তৈজস বা তেজোনর; কাজেই ইহাকে আধাান্ত্রিক ভূতত্ররের সার বলা বাইতে পারে ি "সতো হি এব রসং" কথাটি মূর্জ্ত্ব-সারন্থের হেড্রূপে উপক্তত হইরাছে ঃ > ০৮ ঃ ৪ ঃ

অর্থা মৃত্তিম্ — প্রাণশ্চ যশ্চারনস্তরাত্মরাকাশ এত দমৃত্যেতদ্ যদেত ত্তাৎ, তক্তৈত আর্থ্য ক্রিত আমৃত তৈত ত এত অ-ত্যাকৈর রসো যোহরং দাক্ষণেহকন্ পুরুষস্তাক্ত হেব রস: ॥১০৯॥৫॥

স্কুলাহা: ।— অগ (অতঃপরং) অনৃতং (অনৃত্রংজকং রপন্
[উচাতে] — প্রাণশ্চ, বশ্চ অরং অন্তঃ (অভান্তরে) আয়ন্ (আয়নি - দেছে)
আকাশং, এতং (প্রাণাকাশায়কং ভূতবয়ং) অনৃতং, এতং বং , এতং তাং;
তস্ত এতক অনৃত্র, এতক অনৃত্র, এতক বতঃ, এতক তাল এবঃ রনঃ
(সারঃ), বঃ অয়ং দলিশে অকন্ (অলিশি) পুরুবঃ (লিলারা); বি
(বসাং) এবঃ (দলিশাকি-পুরুবঃ) তাল (ব্যোক্তভূতব্য়ক) রনঃ
(সারঃ), [তলাদক্র প্রেট্রমিতি তাবঃ] ॥ ১০১ ॥ ৫॥

মূলান্যুবাদে— বতঃপর অমৃঠ রূপের কথা বলা হইতেছে— নেহন্ত প্রাণবায়ু এবং বাহা দেহাভাস্তরন্থ আকাশ, এই ছইটি ভূত অমৃত, ইহাই বং ও ইহাই ভাং; এই অমূর্ত্তের, এই অমৃত্তের, এই বভের এবং এই ভাতের ইহাই হইভেচে রস (সারভূত), বাহা এই দক্ষিণ অক্ষিত্ব পুরুষ (আছা): কারণ, ইনিই এই ভাতের সার পদার্থ। ১০৯॥ ৫॥

শাক্ষর ভাত্রাভা । অধাধুনা অমুর্ক্চাতে। বং পরিশেষিতং ভ্তরং প্রাণক বলারমররাম্বরাকাশঃ—এতদব্তর। অভংপ্রবং। এতত তাত এব রসঃ সারঃ—বোংরং দক্ষিণেইক্ষন্ পুরুষঃ ; বক্ষিণেইক্ষরিতি বিশেষ-প্রবং শারপ্রত্যকরাং; নিগত বি দক্ষিণেইক্ষি বিশেষতোহবিটাভূষং শারত প্রত্যক্ষর, সর্বা প্রতিষ্ তথা প্ররোগবর্শনাং। তাত বেষ রস ইতি পূর্ববং; বিশেষতেহিপ্রবণাদমুর্ভরসারতে এব বেষর্ষঃ ১০৯৫

্টীকা। কুড়ো বিশেষেভিনিতাশিকাবি—স্বাধিকে। ইড়ি। নাম্বনা তেন বা বনিবে-চক্তি বিশেষত এডাক্ডাবিভার্ব:। বিতীয়বাধানিষাক্তিত বেচর্বং কুটাভি—ক্লিক্স- েজাতি। বেতুমন্ত ভবর্থ কবরাত—ভ্যাক্তে। বব। পূর্বাত চতুনি নৃত্তানিচতুইলদুটা তাবৃদ্ ভূততামসাহতোজা, ভবাহতাশি নিজাল্ডসূর্ট্যানিচতুইলনা বিশেবেশার্থাননৃত্তাদিনা সাবর্ত্যাভবাবিবভূতব্যসাহত্য ভসা শহীতে প্রাধাতাভ তৎসাহত্সিভিনিজার্থ: ৪১-১১৫ঃ

ভাষ্যাকুবাদে।—এখন অমৃত্ত রূপ কবিত হইতেছে—অবলিও বৈ তৃত্ত্বস,—বাহ। প্রাণ, এবং বাহা দেহভান্তরন্থিত আকাল, ইহা হইতেছে—অমৃত্ত রূপ। অস্তান্ত অংশের ব্যাখ্যা পৃন্ধবং। এই বে দক্ষিণ চকুছিত পুরুষ, ইহাই তাতের (অমৃত্তের) সার; এখানে যে, বিশেষ করিয়া দক্ষিণে অকন্' বলা হইয়াছে, শাস্ত্রই ততিবে প্রমাণ; লিলায়ার যে, দক্ষিণ চকুতেই বিশেষরূপে অবিষ্ঠান হইয়া থাকে, ইহা শাস্ত্র-প্রমাণসিদ্ধ; কারণ, সমস্ত ক্রতিতেই উক্লপ প্রয়োগ দেখিতে পাওয়া বায়। "ভাস্ত হি এব রসঃ" ইহার অর্থন পূর্ববং। বিশেষরূপে গ্রহণযোগ্য নয় বলিয়া অমৃত্ত-সার্গরের ছেতু-প্রদর্শনার্থ এ বাক্যটি প্রস্তুক হইয়াছে ॥ ১০০ ॥ ৫ ॥

তক্ত হৈতক্ত পুরুষক্ত রূপম্—যথ! মাহারজনং বাদে। যথ।
পাগ্রাবিকং যথেন্দ্রগোপো যথাহ্য্যার্চিয়থ। পুগুরীকম্ যথা
সক্ষিত্যক্ত সক্ষিত্যকৈং হ বা অক্ত আঠবতি য এবং বেদ,
অথাত আদেশে। নেতি নেতি ন ফেতক্মাদিতি নেতাক্তৎ পরমন্তাথ
নামধ্যেত সত্যাস্য সত্যমিতি, প্রাণা বৈ সত্যং তেথামেষ
সত্যম্য ১ • ॥ ৬॥

ইভি বিতীয়াধারত তৃতীয়ং আহ্মণম্ ৷ ২॥৩॥

স্কুলার্থ: ।—[সম্রতি] তন্ত (পূর্কোজন্ত করণায়কন্ত) এতন্ত পূক্ষন্ত [রূপমূচ্যতে—] বধা মাহারকনং (মহারক্ষনং হরিল্লা, তরা রিল্লিং) বাসঃ (বরং), বহা পানু (পানুবর্গং আবিকং (অবিঃ—মেবং, তন্ত ইদং—আবিকং বেবরোমলং বরং), বগা ইল্লেগোপঃ (অত্যব্যক্তঃ কীটঃ), বগা অর্গ্রিটঃ (অলিশিবা), বগা পূত্রীকং (বেতপন্থং), বধা সক্ষত্যিতং (বুপপদিভোতনং সর্মতঃ প্রকাশকং), সক্ষত্যিতা ইব (সক্ষতিভোতনমিব) হ বৈ অন্ত (অকি-পূক্ষক্ষন্ত লীবন্ত); প্রীঃ (রূপং) তবতি, [কন্তুণ] বঃ এবং (ব্যোক্তং রূপং) বেদ, [তক্তৈতং ক্লমিতি ভাবঃ]।

অধ (সভ্যাব্যক্ষবরপনির্দেশানত্তরং), [বচং সভ্যক্ত সভ্যক্ষ অনির্দেশ-রপমতি], অভঃ (তবাৎ হেভাঃ) [তৎসরপং নির্দিশ্বতে—] আনেশঃ (ব্রন্ধণঃ নির্দেশাহরং)—নেতি নেতি—নহি এতবাৎ (সভ্যক্ত সভ্যাব্যাৎ পূর্বাৎ) পরং (অধিকং) অভং (নামরপাদিকং কিকিং) (অভি, নাক্রীভার্বঃ) সর্ববেব এতদাস্ক্রমতি ভাবঃ }।

অধ (অন্তরং : নামধেরং (ব্রহণ: বাচক: শব্ম: [উচ্চাতে]—সত্যস্ত স্ত্যস্ত ইতি ; প্রাণাঃ বৈ (প্রদিছো) সভাং (সত্যশ্ববাচ্যাঃ), এবঃ (অকিপুরুবঃ) তেবাং (প্রাণানামপি) সত্যস্ত (সত্যভাষারকঃ), [অতঃ ভস্ত 'সত্যস্ত স্তাম্ব' ইতি নাম বুলাতে তরামিতি ভাবঃ] ৷ ১১০ ঃ ৬ ॥

শ্বলান্দ্র আদে—দেই এই অক্ষিপুরুষের রূপটী—বেমন হরিন্তা-রঞ্জিত বস্ত্র, বেমন পান্ত্বর্গ মেবরোমজ বস্ত্র, বেমন ইন্দ্রপোপ (রক্তবর্গ কীটবিশেব), বেমন অগ্নির শিখা, বেমন শেতপদ্ম, এবং বেমন সক্রমিজ্ঞাতন অর্থাৎ যুগপং বহু বিত্যাৎপ্রকাশ, [তেমনি]; বে ব্যক্তি এই পুরুষরূপ জানে, তাহারও সক্রমিজ্ঞাতনের স্থায় সর্বতঃ প্রকাশময় এই ভইয়া থাকে।

শতঃপর এই হেড় (যে হেড়, ত্রন্ধের 'সভ্যস্ত সভাং' রূপটি এ পর্যাস্ত নিরূপিত হর নাই, সেই হেড়) 'নেতি নেতি' (ইহা নহে— ইহা নহে), ইহাই ত্রন্ধের আদেশ অর্থাৎ সেইরূপ; প্রথম 'নেতি' অর্থ —ইহা হইতে পর, দ্বিতীয় 'নেতি' অর্থ—অপর কিছু নাই, অর্থাৎ ব্রক্ষাতিরিক্ত অপর কিছুই নাই।

খনস্তার ব্রক্ষের অভিধারক নাম কথিত হইতেছে—ভাঁহার নাম হইডেছে,—'সভাস্ক সভাম্' (সভােরও সভাভাসম্পাদক)—'সভাের সভা'; প্রাণসমূহই সভা, ভিনি সে সমূদরেরও সভা ॥১১০ ॥ ৬ ॥

ইঙি বিভীর অধারের তৃতীর ব্রাহ্মণ । ২ । ৩ ।

ল্পা প্রস্থা ক্রান্ত্র ক্রান্ত্রের ক্রান্ত্রের কর্মান্ত্রের ক্রান্ত্রের কর্মান্ত্রের ক্রান্ত্রের কর্মান্ত্রের কর্মান্ত্রের কর্মান্ত্রিক কর্মান্ত্র

वाननायत्रः, वृद्धापृद्धवाननाविक्यानयत्र-नः (वानक्यानकः विविद्यः -- भक्केकिकिजवः वाद्यक्यानपृत्रक्किक्यान्यः नर्सन्तावाद्यान्यम् -- अंकानवाज्ञाज्ञ (विक्यानवाद्यान्य विक्यानवाद्यान्य विक्यानवाद्याः) विक्यानवाद्याः (विक्यानवाद्याः) विक्यानवाद्याः विक्यानवाद्यानवाद्याः विक्यानवाद्यानव

উপনিবদন্তা অপি কেচিং প্রক্রিয়াং রচয়ন্তি—মুর্ভার্তরাশিরেকঃ, পরবান্ধরাশিক্তবঃ, তাত্যাবজ্ঞাংয়ং মধ্যমঃ কিল তৃতীয়া, কঞা ভোক্তা বিজ্ঞানবর্ষেনাজ্ঞাতশক্তপ্রতিবোধিতেন সহ বিদ্যাকস্মপূর্বপ্রজ্ঞাসমূদ্যাঃ; প্রয়োক্তা, কর্মরাশিঃ, প্রবাদ্যাঃ পৃর্কোক্তো মৃত্যামৃত্যভূতরাশিঃ, সাধনক্ষেতি ।>

ত্র চ তার্কিকৈঃ সহ সৃদ্ধিং কুর্কার। নিশ্বালগুলৈর কল্মরালিরিত্যক্ত্বা, পুনস্ততন্ত্রক্তঃ সাধ্যাহতরাৎ — সক্ষঃ কল্মরালিঃ—পুশাল্রয় ইন গদ্ধঃ পুশ্বিরোপেগণি পুটতৈলাল্ররো ভবতি, তথান্নস্বিরোপেগণি পরমান্মৈক-দেশমাল্রহি ; স পরমান্মৈকদেশঃ কিলাক্ত আগতেন ভাগেন কল্মণা সভাগো ভবতি—নিশুণাইপি সন্, কঠা ভোক্তা বগাতে মৃচ্যুতে চ বিজ্ঞানাল্যা—ইতি বৈশেষিকচিত্তমপান্মসরন্তি। স চ কল্মরাশিত্তিরাশেরাগন্তকঃ, লতো নিভ্নি এব পরমান্মৈকদেশলাৎ, লত উলিতা অবিদ্ধা অনাগন্তকা প উষ্যুবদনান্মগল্যঃ—ইতান্যা কল্মনা সাধ্যাচিত্তমপুরত্তর। ৩

नर्सरम्बद व्यक्तिकः नव नामक्ष्मकञ्चनम् तमग्रेशः পश्चवि, त्नाश्मिष्द निष्काव्यः नर्सक्राव्यविद्यायम् शश्चवि ; कश्म १ छेक्षा अव व्यवः नावम्रवदः शत्रमाचनः नः नावम्यवदः भत्रमाचनः नः नावम्यवदः भत्रमाचनः नः नावम्यवदः भत्रमाचनः निव्यक्षिणाम् नावम्यवदः । निव्यक्ष्मक्ष्मणिवः, निष्यस्य ८६६ शत्रमाचन छेशविष्ठाम् नावम्यक्षम् किकृतक्ष्मकृष्णिक्षाकाभाष्यियः, व्या निष्काविद्यादि शत्रमाचाद्यमान्यम् वान्नावाः । ॥

অবিভারাশ্য বত উপানম্বরবং —ইত্যাদিকরন। অমুপপরেব। ন চ বাস্ত-দেশব্যতিরেকেণ বাসনারা বস্তুরসঞ্চরণং মনসাপি কর্মিছ্ং শক্ষম্ ; ন চ প্রতরো অমুগন্ধবি "কামঃ সকলো বিচিকিৎসা." "জ্লয়ে ছেব রূপাণি", "ব্যারতীব লেলায়তীব", "কামা বেছস্ত জ্লি প্রিভাঃ", "তীণোঁ হি ভলা সর্কান্ শোকান্ ক্লয়স্ত" ইত্যাদ্যাঃ। ন চাসাং প্রতীনাং প্রভালভা অব্যান্তর্বাপ্রদান गर्साणनिवनम् । जनारक्षणार्यकन्नमाः गर्स अत्वाणनिवन्ध्यम् कृसंदि, ज्वाणि द्वैनार्थस्यः ज्ञार, कावर ज्वजू, म त्व (ववः । १

ন চ "বে বাব ব্রহ্মণো রূপে" ইতি রাশিত্রয়পক্ষে সমঞ্চসন্ ; বলা ভূ মূর্জামূর্ত্তে ভক্ষনিতবাসনাশ্চ মূর্ত্তামূর্ত্তে বে রূপে ব্রহ্মপো চ ভূতীয়ন, ন চাক্তচভূর্থমন্তর্যালে, তদৈতদকুক্সনবধারণং "বে এব ব্রহ্মণো রূপে" ইতি, অক্তবা ব্রহ্মকদেশক্ত বিঞ্জানাশ্বনো রূপে ইতি কল্লান্, পরমাশ্বনো বা বিজ্ঞানাশ্বহারেপেতি।
তদা চ রূপে এবেতি বিবচনমসমন্তর্সন্, রূপাশীতি বাসনাভিঃ সহ বহুবচনং
মুক্ততরং ক্রাৎ – বে চ মূর্ত্তামূর্ত্তে বাসনাশ্চ তৃতীয়বিতি। ৬

অধ মৃঠামুঠে এব প্রমান্ধনো রূপে, বাসনান্ত বিজ্ঞানান্ধন ইতি চেৎ;
ন, তদা 'বিজ্ঞানান্ধ্যারেণ বিজ্ঞিয়মাণস্থ পরমান্ধনাং' ইতীরং বাচোরুক্তিরনর্বিকা স্থাৎ, বাসনায়া অপি বিজ্ঞানান্ধ্যারহস্তাবিশিষ্টমাৎ; ন চ বন্ত বন্তব্যরারেণ বিজ্ঞিরতে ইতি মুখ্যরা রন্তা। শক্যং ক্রান্তিরুম্। ন চ বিজ্ঞানান্ধা
পরমান্ধনো বন্ধরবন্ধ: তথাকল্পনায়াং সিদ্ধান্ধনানাং। তথাৎ বেদার্থন্তানাং
প্রচিতপ্রত্যা এবমাদিকল্পনা অক্ষরবাস্থা: নহি অক্ষরবাস্থা বেদার্থ: বেদার্বোপকারা বা, নিরপেশ হাদ্ বেদস্ত প্রমাণ্যং প্রতি। তথান্ রাশিতরকল্পনা
অসমস্ক্রমা। ৭

বোহয়ং দক্ষিণেহক্ষন্ পূরুষঃ" ইতি নিস্নাম্বা প্রস্তঃ অধ্যাম্বে, অবিদৈবে চ
"ব এব এত বিন্ মণ্ডলে পূরুষঃ" ইতি, "তক্ত" ইতি প্রস্কৃতোপাদানাৎ স্
এবোপাদীয়তে—বোহসে) তাক্তাব্ভিক রসঃ, ন তু বিজ্ঞানময়ঃ। নমু বিজ্ঞান
মন্তেবৈতানি রপাণি কমার তবন্তি গু বিজ্ঞানময়ক্তাপি প্রস্কৃতহাৎ, তক্তেতি
চ প্রস্কৃতোপাদানাৎ ; নৈবম্ ; বিজ্ঞানময়ক্ত অন্ধ্রপিছেন বিজ্ঞাপরিবিঃহাৎ।
মদি হি তক্তৈব বিজ্ঞানময়ক্ত এতানি মাহারজনাদীনি রুপাণি স্থাঃ, তক্তৈব
"নেতি নেতি" ইতানাধারেরপতরা আদেশো ন ক্তাং। ৮

'নতু অন্ত হৈবাসাবাদেশং, ন তু বিজ্ঞানবরত্তেতি—ন, বঠাতে উপসংহারাং—
"বিজ্ঞানারবে কেন বিজ্ঞানীরাং" ইতি বিজ্ঞানবরং প্রস্তুত্ত "স এব নেডি
নেডি" ইডি; "বিজ্ঞপরিয়াবি" ইডি চ প্রতিজ্ঞারা অর্থবর্তাং—বিদ্
ি চ
বিজ্ঞানবরত্তিব অসংব্যবহার্যাবাদ্ধরপং জ্ঞাপরিভূনিইং ক্লাৎ প্রস্তুত্তর্বাপাধিবিবরণ, তত ইরং প্রতিজ্ঞা অর্থবতী ক্লাৎ,—বেনাসে জ্ঞাপিতো জানাত্যাবানবেবাহং জ্ঞানীতি, শাস্থনিটাং প্রাম্নোতি, ন বিভেতি কুতল্ডন।
অব পুনরতো বিজ্ঞানবরঃ, অতঃ 'নেতি দেতি' ইডি ব্যপহিস্ততে, তহা

অভদদে বন্ধ, অভোহৰবীতি বিপৰ্যারো গৃহীতঃ স্থাৎ, ন "আঝানমেবাবেদহং বন্ধাবি" ইতি। তবাং "তস্ত হৈতস্ত" ইতি নিদপুরুষতৈবৈতানি রূপাণি। >

সভ্যক্ত চ সভ্যে পরমান্তবন্ধণে বক্তব্যে নিরবশেবং সভাং বক্তব্যব্ ;
সভ্যক্ত চ বিশেবরপাণি বাসনাঃ; ভাসামিমানি রপাণ্চারে। এতক্ত
প্রকৃত্ত পুরুষত লিলান্থন এভানি রপাণি। কানি ভানীভাচারে,—
ববা লোকে, মহারক্তনং হরিজা, ভয়া রক্তং—মাহারক্তনম্ ববা বাসো লোকে,
এবং ব্র্যাদিবিবরসংযোগে ভালৃশং বাসনারপং রক্তনাকারমুৎপদ্যতে চিক্তক্ত,
বেনাসৌ পুরুষো রক্ত ইভ্যুচাতে বন্ধাদিবৎ; ববা চ লোকে পাঙ্বাবিকং—
অবেরিদম্ আবিকম্ উর্ণাদি, ববা চ ভৎ পাণ্ডরং ভবভি, ভবা অক্তবাসনারপম;
ববা লোকে ইক্তবোপং অভ্যন্তরক্তা ভবভি, এবমন্ত বাসনারপম;
কচিবিবরবিশেবাপেক্তম রাগত্ত ভারতমাম, কচিৎ পুরুষচিত্তবন্তাপেক্তম।
ববা চ লোকে অগ্যাচিঃ ভাররং ভবভি, ভবা কচিৎ কন্তচিহাসনারপং ভবভি;
ববা পুঞ্জীকং শুরুম্, ভবলপি চ বাসনারপং কন্তচিহ্ববভি; ববা সক্রবিহাত্তম্—
ববা সক্রবিভাতনং সর্ব্বভঃ প্রকাশকং ভবভি, ভবা জ্ঞানপ্রকাশবির্ভাপেক্তম।
কন্তচিহাসনারপ্রপূপ্তারতে। ১০

ন এবাং আদিবত্তো মধ্যং স্থা। বা, দেশং কালো নিমিতং বা অবধার্যতে, অস্থ্যেয়ত্তাহাসনারাঃ, বাসনাহেত্নাঞ্চানস্থাৎ। তথা চ বন্ধাতি বঠে—"ইদলরঃ অলোময়ঃ" ইত্যাদি। তথার অরপস্থ্যাবধারণার্থা দৃষ্টাত্তাঃ—'বধা মাহারজনং বাসঃ' ইত্যাদয়ঃ; কিন্তুহি
প্রকারপ্রদর্শনার্থাঃ—এবং-প্রকারণি হি বাসনারপাণি ইতি। >>

वजु वामनाञ्चणविक्षिण्यस्य— मङ्गविष्णाञ्चियित्वि, ७९ किन दिव्वगा-भर्द्रञ्च स्थाङ्गञ्चार श्रीकृष्ट्यञ्चिष्ठि मङ्गास्य वास्त्रिक्ष्यञ्चेतिः; ७९ ज्ञमोत्रः वामनाञ्चलः दिव्यग्गर्द्रञ्च स्था स्वर्णाः स्था दिव्यग्गर्द्रञ्च—अवस् साव्याख्योः; अवस्थयाञ्च क्रिः स्थाजिष्ठ्यञ्चे छार्थः; स्था दिव्यग्गर्यः — अवस् अञ्च स्थाङ्गः वामनाञ्चलस्काः स्था स्वर्णाः । २२

এবং নিরবশেবং সভ্যস্ত বরপরতিধার বস্তং সভ্যস্ত সভাষবোচার, তত্তৈব বরপাবধারণার্বং প্রাশ্বনবিদ্যারভাতে। শ্বন্থ অনন্তরং সভাস্কপনির্দেশানন্তরং বং সভাস্ত সভাব্, তলেবাবশিষ্যতে বর্ষাৎ, শতক্তমাৎ সভ্যস্ত সভ্যং বর্কাণ নির্দেশ্যারঃ। আমেশঃ নির্দেশ্যে প্রশান কঃ পুনরসৌ নির্দেশ ইড্যুচাডে—নেতি নেতীভ্যেবং নির্দেশঃ। ১৩

নকু কথমাত্যাং নেতি নেতীতি শবাত্যাং সত্যন্ত সত্যং নিৰ্দিছিকিত নিতি ।
উচাতে - সর্বোপাধিবিশেষাপোৰেন : বিষিন্ন কলিবিশেষাইছি—নাম বা
রপং বা কর্ম বা তেলো বা মাতির্বা গুণো বা; তত্যারেণ হি শব্যবৃত্তিভবতি; ন চৈবাং কলি বিশেষো ব্রহ্মণান্তি; অতো ন নির্দেষ্ট্রং শক্যতে—'ইমং
তং' ইতি, পৌরসৌ স্পন্তে ক্রেরা বিষাণীতি বগা লোকে নির্দিশ্বতে, তথা;
অধ্যারোপিত-নামরপকর্ম্মণারেণ ব্রহ্ম নির্দিশ্বতে—"বিজ্ঞানমানন্যং ব্রহ্ম"
"বিজ্ঞানখন এব ব্রহ্মায়া" ইত্যেবমাদিশন্মে: যালাপুন: ব্রহ্মপমের নির্দিদ্ধিশ্বতং
তবতি নিরন্তসর্বোপাধিবিশেষ্ম, তদা ন শক্যতে কেনচিদ্ধি প্রকারেণ
নির্দেষ্ট্র্য; তদার্মেবাভ্যুপার্য: যত্ত প্রাপ্তনির্দেশপ্রতিবেধ্যারেণ "নেতি
নেতি" ইতি নির্দেশঃ । ১৪

ইদক্ষ নকার্ম্বরং বীপাব্যাপ্তার্থন্ ; ফলংপ্রাপ্তং তত্তরিবিধাতে ; তথা চ সতি অনিন্দিষ্টাশ্চা ব্রহ্মণ পরিস্কৃতা ভবতি ; অক্সণা হি নকার্ম্বরেন প্রকৃত্যর-প্রতিবেশে, ফদক্রং প্রকৃতাং প্রতিবিদ্ধর্মাৎ ব্রহ্ম, তর নির্দিষ্টন্, কীদৃশং স্থ বস্ত্র্নাশ্চা ন নির্দিষ্টন্ ; তথা চানর্থকণ্ড স নির্দেশঃ, পুরুষক্ত বিবিদিষারা অনিবস্তৃক্তরাং ; "ব্রহ্ম শুপরিক্তামি" ইতি চ বাক্যমপরিসমাপ্তার্থং ক্তাং । যদা ও সর্বাদিক্-কালাদিবিবিদিনা নিবর্ধিত। ক্তাং সর্বোপাধিনিরাকরণছারেণ, তলা সৈদ্ধবদনবদেকরসং প্রজ্ঞানখনমনম্ভর্মবাহাং সভ্যক্ত সভান্ অহং ব্রহ্মান্থীতি সর্বাতা নিবর্ধতে বিবিদিনা, আন্ধক্তেবাবন্থিত। প্রজ্ঞা ভবতি। ভ্রম্বার্থিপার্থং নেতি নেতীতি নকার্ম্বর্ম্ব। ১৫

নমু মহতা বদ্ধে পরিকরবন্ধং করা কিং বৃক্তমেবং নির্দেষ্ট্ই ব্রহ্ম ? বাচ্ম্ ;
কলাং ? ন হি—যত্মাং "ইতি ন, ইতি ন"—ইত্যেত্সাং ইতীতি ব্যাপ্তবাপ্রকারা নকারন্ধর্বিষয়া নির্দিপ্তমে, বধা 'গ্রামো গ্রামো রমনীয়া' ইতি অঞ্জং
পরং নির্দেশনং নাজি ; তত্মাদর্মেব নির্দেশো ব্রহ্মণঃ । বৃহ্জন্,—"তত্যোপনিবং সভাত্ম সভাত্ম" ইতি, এবংপ্রকারেণ সভাত্ম সভাং তৎ পরং ব্রহ্ম;
অতো বৃক্তমৃক্তং নামধ্যের ব্রহ্মণঃ ; নামেব নামধ্যেম্ ; কিং তৎ ? সভাত্ম
সভাত্ম—প্রাণা বৈ সভাত্ম, তেবামেব সভাবিতি ॥১০৬।৬।

ইতি বিতীরাধ্যারত তৃতীরং ব্রাহ্ণবৃ ৷ ২৪০৷

নিকা। তও বেভাবের ভাগুবাবপূর্বক: সবজবাৎ—ক্রহ্মণ ইতি। বিভাবে বিশেবঃ। ভভাবিধৈবং প্রকৃতভৈভভাবাবিং সমিধিভভার্তবসভূতাভংকরবৈত্ব রাবাধি-বাসনেতি বক্তঃ ভভেভাবি বাকাবিভাবঃ। কর্ববিবং ক্লণা জিলভ প্রাথবিভি, ভবাৎ— মুক্তে ভি। যুঠাবুর্ত্তবাসবাভিবিজ্ঞাননমসংবাদেন ৮ আনিকং বুছে প্রপাবিভি বাবং। নেননাজনো দ্লপং, ভবৈ করসভানে করণভায়পপভাতি বিশিন্ধ — শ্রিভি দ্রমিতি। বাজনজনাং বারহতি — মানুয়াতি। বৈচিত্রানমুক্তাানে কোনাহরণমুঃ অভঃকরণ গৈর
রাগানিবাসবালেওং, কবং পুরুবতরারে দৃষ্ঠতে, ভরান—জনুর্নাতি। ভবের বাজুকান্
বিজ্ঞানবাদিনাং ত্রাজিনার—প্রভাবন্দ্রান্তিতি। বুছিনাল্র মেনাহংগুভিবিনিতং প্রসং
ভঙ্গুবং রাগানিকস্থিতমান্তা, নাজঃ হারী ক্ষণিকো বেভি যর তে প্রাল্প: ৩০ ক্লপং বজ্ঞান
ইতি সম্ভঃ। ভাকিকাণানপি বৌছবত্তাবিমুদ্ধাবিস্থাবিতি—প্রভাবনুত্রার্থিতি—প্রভাবনুত্রার্থিতি—প্রভাবনুত্রার্থিতি—প্রভাবনুত্রার্থিতি। অভঃকরণ
বেবাহং বীপ্রাল্প: রাগানিবর্ত্তারান্তা, ডক্ত বাসনাম্বর্থ ক্রপং পটজ লোকান্ত্রণ, স চ সংসাধ
ইতি মন ভাকিকা লাজাঃ, ডক্ত দ্লগান ইভি পূর্কাবং। সাঝ্যানাং প্রালিমান — ই দে
মিক্তি। ক্ষমত্র বিভেগভাকিকং নিধাতি, ভরার প্রধানাশ্রেয়ামিতি। কেন প্রকাবে
পাল্প:করণমান্তারিকান্তা; হুল্লকাপ্র: ভক্ত দেশাপ্রগান্ত্রিকাতি। নাপ:করণমেনান্তা, কিন্তুল: সন্ধি
বন্ধ: সর্কানিকিয়াপুত্র: হুল্লকাপ্র: ডক্ত রুপং বন্ধান ইতি সম্বন্ধ: ১

ৰত্ৰ বিচিত্ৰা বিশক্তিটা লাগিণ্ডৰংকৰণ তক্ত কেডাডোচাতে, নাৰেভি বশক্ৰ্জা কৰ্তৃপ্ৰপূক্ষণকৰ্ত্বাপৰত উপ্পিন্যান্দ্ৰান্ত হৈছি । কীপূলী অক্তিৰেজুকে বালি বৰ্ত্ব ক্ষালাবৰৰ বালিঃ লগিছি—গুটুক্ত । উংকৃষ্টৰাণিবাচাই—প্ৰয়োজোতি । বাক্তৱৰ্যাৰ—জ্যুক্ত্যায়িতি ভাঙেতানি নীলি বৰ্ত্ব ন ষ্টাপ্ৰিবাচাক্তনালিক্তশম্ম ভ্ৰাৰ্কি প্ৰোক্তমালিকা বালিজংক্ষনামুক্তা ব্যামান্ত্ৰাভিগ্নিকা প্ৰয়োজনত্ত্ব হৈ ক্ষালাব্য হাৰ্কিক হাৰ্কিক

ভবেতব্ৰুবারভূব্যক্তবতে — জার্কামেড জিডি । তাতিকৈঃ সং স্বাধানবাদিকবেডং

নমু জীবে সম্বাহিকায়ৰে মন:সংযোগাসম্বাহিকায়ণাৰ কাৰায়াংশভিত্যিকায়ভঞ্জিত্ব বিষয়তে, গুলাধ—ম ভ্ৰাজায়িতি দুক্তমানসংসাহযোগাধিকম্বিকার জীবত প্রভাগেশাধিকম্বিকার জীবত প্রভাগেশাধিকম্বিকার জীবত প্রভাগেশাধিকম্বিকার জারাত্ত কর্মের প্রভাগিত করার প্রভাগিত ক

নিক্ষবিরোবেংশি পু:নি বাসনাগর্তীবোডরিরাকৃতা রাশিওরকরবাং বিরাকরোডি— ন্ চ্যেতি। কবং নিরাভেংশি বাবশবাবিশাবপ্রতা, তরাহ—ব্যুহন্তি। রাশিররপ্রকর্তাবভ রূপনথাংগর্ভাবে নিবের্গোর্টনিবেল: ভাত্রশিনবোংগর্ভাবে ক্রভি: শিক্ষবিভোহ— অন্যক্রের্থিতি। ভববের ক্রভে: শিক্ষেতি, ভত্রাহ—ভ্রুইন্টেড । রাশিরবা বীবার্ভাব-ভরনারামিতি বাবং। ৬

विवस्तरकाश्वानक्षाविद्यावर हावश्रवि—ब्यह्मिक्ति । हेवर वावश्रवाः बोक्वावा वि

ভিন্যাত পরত রপে যুর্তাস্থে ইকুজিরমুকা, বাসবাকর্তাকেরপি ওলারা তৎসবকারিবেরাবিভি মুখ্যতি - তেন্দেতি । বিজ্ঞানাব্যারা পরত বিজিগনাপ্যবস্থাইভালেং, তবেও নাজী-ভালেন্স তেতি । তথাভূতভাল্ডবাভূতভ চ বিজিগনা গুলুপগাল্যাধিত। কিক বাসত করেও। বল্লভর্তবাভাতিক বনাত।ভিকং বা ? নাল্ল ইভালেন্স তেতি । ন বিভাগে তেলা তেলনিয়ানাবিতি কটবান্ । পরপুক্ষণমূপসংবর্তি — তেল্লানিক্তি । তবলাবিক মনা রাশিকার ক্ষীবাভ কারাল্যালয়ব্দিভালিত । অক্সবাভূতি ভালিকার ক্ষীবাভ কারাল্যালয়বাহিত । অক্সবাভূতি ভালিকার ক্ষীবাভালের বেলুবাহ নিম্মান্তে আক্ষানিতি । বেলাবিভালার বিভাগিত । বিভাগিত ভালিকার বিভাগিত ।

ভজ বেছাত্র পরকীয় প্রক্রিয়াং অভ্যাব্যায় পরতে ভজ্কবার্থমান্ত নাই থাইছিল প্রক্রিয়ালিয়াক ক্রিয়ালিয়াক ক্রিয়াক ক্রিয়ালিয়াক ক্রিয়াক ক্রেয়াক ক্রিয়াক ক্রিয

নাম জীবভাবেশং কিন্তু ব্ৰহ্মণগুটাবভোগ প্ৰভাৱ হা ব্ৰহাত নাজিভাগিনের। বাংগি সাবে বিজ্ঞানাম্বাহন কেনেডালানসুপঞ্জন দ এব বেভি বেডালাপনাইভবাবেশেশনং বারাধিনাশি ভইজবাবেশে ল ভগবভোডাই। ইডল্ড প্রভাগবহুতিবালাবেশে ইডালে - বিজ্ঞানিয়াইছিঃ ভবের সমর্থইভি যান্বাভি ক্ষেত্রারাজীতিঃ ভবের সমর্থইভি যান্বাভি ক্ষেত্রারাজীতিঃ ভবের সমর্থইভি যান্বাভি ক্ষেত্রারাজীতিঃ জানকলং ক্ষরতি লাইজিভি ক্ষেত্রারাজীতিঃ জানকলং ক্ষরতি লাইজিভি ক্ষমণ্ডবিদ্যালিক বাভিন্নেক স্থানির্বিভ ভাগবহুতি ভা

নমু (সম্বাভা হৈ হৈ তানি রুণানি, কি হিত্যুপক্তসালে। পরনাম্বরণ সৈ ব বন্ধবাদ্ধান, অন্ধ আঃ— জাত্যুক্ত ভেডি। ইন্তাগোণেশবানেন কৌপুখনা গতথানু ব-াম্বাকা হরিছেতি বাবোকেন্। তার কোক প্রনিষ্ঠিং বর্ণায় ভিডি ভিডি উর্ণানীত। বিশ্বস্থিত। উর্ণানীত। বিশ্বস্থিত। কি বুলিলাকেন গ্রহার্থন্য বনসি বাবনাবৈচিক্তা কিং কারণ্যিতি, ভলাগ—ক্রণ্টানিভি। চিন্তাস্থিত কেন স্বালিকপ্রিণামো বিব্যাক্তা: ১১

অন্তাৰানবাদিবিশিষ্টস্ত্ৰোণাতিং কনবতীং তৎৰাকৰ্ণতিধানপূৰ্কক্ষতিগৰাতি অন্তিত চালিক্ষা। ব্যক্তি সৰ্কান বন্ধৰাতবোজি শেবং। তদীয়বিতানা ব্যক্তীক্ষ্ণং বিশ্বণা-সৰ্কনোতি। তদেব কৃষ্টয়তি—যথেত্যালিক্ষা। ১৭

মুখ্যন্তানভাগ্যহ্যবভাগ্যতি – এক্সিস্ত্যাদিনে। তথৈ। একং ইভি স্থয়: । কথাবনভাগিত্যুক্তে ভন্দৰ্শগ্ৰহণেশ্যং চাপেভিডং প্রগ্ন ব্যাক্ষাতি— অক্তান্তেভি। ১৬ ববোজাবেশভাভাবশ্ববারিত ব্যানঃ শততে—সৃদ্ধিতি। নিরব্ধিকনিবেশানিতেত্যব্ধিকে সচাত সভাচ এক নির্কেই বিষ্টিবিভি পরিবর্ধি—উচ্চাক্ত ইটি। নাজনো
বিধিব্ধেশ নির্কেই বশকাবিচি শেষং , নারজপাত্তভাবেহশি নাকণি প্রান্তবিভাগত।
ভাল্বির্বেশ নির্কেই বশকাবিচি শেষং , নারজপাত্তভাবেহশি নাকণি প্রান্তবিভাগত।
ভাল্বির্বেশিতে। অভাগীনাবভাবত নাকণাশি সভবাত্ত্যালা তার প্রকর্মাত তারিতি
চেয়েভাগে—স্ চেতি। উস্পর্বং বৈধর্মানুইাতের পাইরভি। পোরিতি। তবা
আভ্যাত্তভাগার নাকণি প্রমন্তবিভিতি শেষং। কবং ভাই ভচিন্নির্বেশ নাজোপরিভাতে,
অনাহ—মধ্যাত্রাসিতেভিত। বিজ্ঞানানকানিবালের প্রতেশিতি ন বিষ্টাতে, ভারাহ—
নাকাতে নাকেতার্বং। নাক নাকণানুশেতা সাকাব্যের বাহি বাবং। ভার প্রমন্তবিভাগি নাক্তির। বির্বেশ নাক্তির বাবং। ভার প্রমন্তবিভাগি নাক্তির বাবিষ্টাত বাবং। ভার প্রমন্তবিভাগি নাক্তির বাবিষ্টাত বাবং। ভার প্রমন্তবিভাগি নাক্তির বাবিষ্টাত ক্রির্বিত্ত নির্বিত্ত নাক্তির বাবিষ্টাত ক্রির্বিত্ত নির্বিত্ত নাক্তির বাবিষ্টাত ক্রির্বিত্ত নির্বিত্ত নাকের ক্রির্বিত্ত নাক্তির বাবং। তার প্রমন্তবিভাগি নাক্তির বাবং। তার প্রমন্তবিভাগি নাক্তির বাবিষ্টাত ক্রির্বিত্ত নির্বিত্ত নাক্তির বাবং। তার প্রমন্তবিভাগি নাক্তির বাবিষ্টাত বাবং। তার বাবিষ্টাত বাবং। বাবিষ্টাত নাক্তির বাবিষ্টাত বাবং। তার বাবিধ্বার বাবিষ্টাত বাবং। তার বাবিধ্বার ব

এবং বন্ধ বিশিবিশিত চেনেকেনৈৰ নঞাচলং, কৃতং বিভীয়েনেতাাল্ভাক—ইন্ত্ং চ্ছেডি: বীপালা বাাজি: নর্কাবিশ্বসংগ্রহন্তপর্ব: নকারবর্গিতা ক্ষেত্রেক্তি । বিষয়দেন প্রাপ্ত: নর্কাবিশ্বসংগ্রহন্তর্কার প্রভাগ বিষয়দেন প্রাপ্ত: নর্কাবিশ্বসংগ্রহন্তর প্রভাগ বিষয়দেন প্রাপ্ত: নির্বাহী তাহি—ভঞ্চা চ্ছেডি: ইভিশ্বত প্রকৃত্যালবিদ্ধাং প্রকৃত্য সূর্বাস্ত্র দেবজার বন্ধানে নকারপর্বাবসানং কিন্তি নেবাতে, তত্রাহ—অন্যুক্তে। বাল্ভানিস্তাভাবে দেবসার—ভঞ্চা চ্ছেডি: ক্ষম্মাক্তি চকাবের সমৃত্যালিতি। আনকানিস্তাভাবে দেবসার—ভঞ্চা চ্ছেডি: ক্ষম্মাক্তি চকাবের সমৃত্যালিকি বিশ্বতালাক ক্ষমার প্রস্কার্কার বিষয়বেরবেলকা বন্ধা নির্বিতা, তথা ব্যোভ্য প্রভাগ বিভিন্তালাকার স্কর্মানের বিষয়বেরবিদ্ধানার বিশ্বতালাকার বার্লার্কার, তেন নির্বেশ্বত সার্বাহন্ত বাল্ভানা ব্যালার্কার, তলা প্রভিন্তানার বাল্ভানার প্রভাগনার বাল্ভানার বাল্ভানার প্রভাগনার বাল্ভানার বাল্ভানার

বাবেশক এক্সনানক্তণ্যনাশ্যানক্ষয়কোন(৭) প্রিয়ন্তি—মন্মিক্রানিনা। ব নীতি প্রতীকোপাদানন্। ব্যাধিতাক দি শ্যাবিক ক্যাধিতাকেন স্বজ্ঞঃ। ব্যাপ্রবাহ সংগ্রাছা বিষয়ীকর্ত্ত না যে প্রকানঃ, তে নকার্থক বিষয়াং সজ্যে নিজিক ইতি বেভি নেজ্যেক্সাধিতানেন ভাবেনেতি বোজনা। ইতিশ্যাকাং বাধ্যাস্থ্যসালন্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরান্ত্রক্ষরাক্ষরান্ত্রক্ষর

> টিভি বৃহণায়ণালোপনিষয়াবাদীকায়াং বিভীগাবাদিস্য ভভীয়ং ব্যক্ষণমূল । । ।

ভালাকি আনি কালাকি প্রত্যান্ত কার্যান্ত বিভাল বইরা প্রথান ও প্রতিষ্ঠ কার্যান্ত কর্ত্ত পূর্ত ও প্রত্তরে বিভাগ বর্ণিত ইইরাছে; এখন পূর্বোক্ত এই করণান্তক নিজনেহাতিয়ানী পূরুবের বন্ধার্থনিচরের বাসনান্তক বিজ্ঞানের সহযোগে পট ও তিরিগত চিত্রের জার বৈচিত্রা সম্পন্ত যারা ইক্রভান ও মুগড়জানমূল এবং স্ক্রবিধ্যবহারের আন্তর্বন্তপ, 'ইহাই এক্যাত্র আন্তর্বন্তপ, 'ইহাই এক্যাত্র আন্তর্বন্তপ, 'ইহাই এক্যাত্র আন্তর্বন্তপ, 'ইহাই এক্যাত্র আন্তর্বন্তপ, বিজ্ঞান্ত প্রতিত্ত হইরাছে; মাবার এই বাসনান্তক রপটি বন্ধপত ক্রাণি রপের জার ন্তব্যপথার্থ আন্তার ওপ বলিরা নৈরায়িক ও বৈশেষিক্যপ বাহাকে ব্রিরাছেন: এবং সংখ্যাচার্যাণ্যও যাহাকে — আন্তার ভোগাপ্রাণ্যরে প্রত্তির পরিণায়ত্বত একটি বত্রপ বন্ধ ব'লয়। মনে করেন। ১

কোন কোন উপনিষদক্ষত (দাছার) আপনাকে উপনিধং-বিভাগ অভিজ্ঞানন করে, দেই ভত্তপ্রপদ প্রকৃতিও এইরপ বিভাগপ্রপানী রচনং করিয়া পাকেন যে, মৃত্ত ও অনুউদমন্তি একডাগ, পর্যমায়সমন্তি ভাছার অপর-ভাগ, আর ভত্তভারের অভিরিক্ত তৃতীর ভাগ হইতেছে—অভাতশক্ত-প্রবোধত কর্তা ভোকা বিভানময় আত্মার (ভীবের) সহিত স্থিলিত এবং কথা,

(১) জ্বাহ্নপার্যা -- বৌদ্ধ সন্তাগত বহুজাবে বিচক্ত, বিজ্ঞানবাদী সন্তাগর জাগানের অক্তরণ। বিজ্ঞানবাদী বৌদ্ধান বলেন প্রতিক্ষণে উৎপত্তি বাংসাদীল বুছিবিজ্ঞানত আলা এবং সন্তা বন্ধা, এরতিয় আর স্বক্তর এই বুছির পরিপাধ বা কর্মনায়ন আন না বাকিলে বন্ধা বন্ধা করাৰ বাই , কুতরাং আলাভিবিক্ত কোন বন্ধার অক্তির বীকার করিবারত আবন্ধান নাই ; কুতরাং বার্যা ও আবার অক্ত সমর প্রবাহী কর্মনাপ্রস্ত ; আব্রা হবে করি বলিয়াই সে সন্ত্রন্থ আছে, নতেও ভাষাবের অবিহত কোনই প্রমাণ নাই আহিক্য বুছিও ক্ষাক্তি উৎপত্ত হুইয়া পরক্ষণেই ক্ষানে আর হয়, বইল্লা বিজ্ঞান প্রবাহ ব্যবহাণ গ্রামান্ত কোন প্রাণ্ড আলিভ্রেছে; এই বিজ্ঞান বা বিজ্ঞানপ্রবাহই আরো, ভ্রম্বিভিক্ত আরা বালয়া কোন প্রধান নাই।

নৈয়ারিক ও বৈবেশিকপুৰ বলেব, আলা বিভা ও বিস্তু বালিক প্রবাপনার্থ; প্রাব ভাষার শুব; আন ও ডক্ষমিও সংস্থাত আলাকে আলাভ ক রহা বাবে; যন ভাষার আন-সাবম যাব্র।

সংবাদব্যের কলেন, কাবা নিক'ব ও নিজিত, আন্তার তোপ ও বৃক্তি এই উভয়বিধ এয়ো-ক্ষম সম্পাদনের অন্ত বিক্তবান্তিক প্রকৃতির বিভিন্ন পরিবাদ হটলা ব্যক্তে। প্রকৃতির প্রথম পরিবাদ—বৃত্তি। বৃত্তিই সাম্পাংসকতে আন্তা ভোগাপবর্গ নির্কাহ করিলা বাকে। छेगानमा ७ आक्रम कान-मरकातनमा । देशात पर्या क्यांति स्वर्धास्य अर्थाकक वा (अत्रक, बात भूरबीक वृद्धान्द्वनमा ७ नावननम्ब स्वराज्य-कारात अर्थाका ((अत्रवेत) देखि । २

शेराता बरेस्रण जिविद त्रानि कसना कतिता कर्यतानित्क निकारवराजिक বলিবা শীকার করত তাকিকগণের সহিত সন্ধি করিয়া থাকেন (সামগ্রের চেটা করেন : ; খাবার ভাষা হউতেও তীত হইছা. পাছে সাংখাসিছার আসিয়া পড়ে, এই তরে আবার বলেন পুশালিত গছ বেছপ পুশবিনাশেও ব্যুৱন্দিত তৈলে অবস্থিত গাকে, তমুপ স্বস্তু কর্ম্বরাশিও লিক্সেবের বিরোগে भवमाचात्र अकारम अवनयन कविता शाकः। भवमाचात्र त्रहे चारमहि नित्व নিওৰি ভটলেও আগত্তক অঞ্জীয় কল্পনংৰোগে সভৰ ছইয়া বাকে ; সেই বিভানষ্য আন্তঃ কঠা ভোকা বছ বুক বণিয়াও ব্যবস্ত হটয়া পাকে এটরপে তালারা বৈশেষিক-দর্শনোক্ত সিদ্ধান্তেরও অকুসরণ করেন। তালার পর আবার বলেন, পেট কলরাশিও ব্রাষ্ঠ ভূতরাশি হইতে আবিরা উপস্থিত হয় স্থাপন্তক : করেণ, প্রমান্তার একবেশ বিধার উহা স্থভাবতঃ 'বস্থানময় ও নিপুণি; ধূমি হইতে ছাত উৰৱৰ স্ভিকার কারতাব) বেৰন ভূষির একাংশমানে আলিত থাকে, তেমনি পরমায়া হইতে উৎপন্ন বাভাবিক অবিভাও সম্পূৰ্ণ প্রমান্ত্রকে আল্লয় না করিছা ভাষার এক-দেশকেই আল্লয় করিয়া গাকে: স্তরাং অবিভা অবত্তই আছ-বর্ম হইকে পারে, এইরপে সাংখ্যবাদীরও চিত্তবৃত্তির অকুসরণ করিয়া থাকেন। ৩

ভাষাত্র তাকিকগণের সাহত সামলত-রক্ষার পক্ষে ও সমস্ত কৰাকে অতি
বন্ধনীয় বালিয়া মনে করেন, কিন্ত ইহাতে উপনিবলের সিছাত্ত-হানি বা বৃত্তিবিরোধ ঘটে গাহা দেখিতে পান না। কি প্রকার হ পরসাধার সামলবদ্ধ
বালার করিলে যে, তাহার সংসারিত, সমিকারত এবং কর্ম-কলাঞ্নারে
গোকবিলেনে প্রনাধির অন্তপপতি বা অসক্ষতি ঘোধ ঘটে, এ করা প্রেই বলা
হইয়াছে; বিলেশতঃ পরমাধার সাহত জাবের চিরক্তন কেন্দ্র বীকার করিলে,
আর ক্ষমণ্ড তহ্তরের একর সংঘটিত হইতে পারে না। যহি বল, দট ও
ক্ষমণ্ডি-উপাবিষ্ক বটাকাশাদির ভার নিজ্বেহই প্রমাধার উপতরিত
ক্ষেত্রণে করিত হইতে পারে, তাহা হইলেও সুবৃত্তি-সমরে নিজ্বেহের বিয়োগ
হত্তরায়, ভিত্তপতিত কীন্তাবেন্ত বিলোপ হইয়া যায় ট্র, প্রভরাং নিজ্বেহত্ব
বাসনা প্রমাধানেই আল্লয় করিতে পারে; ভিত্তা হইলে, নিজ্বেহত্ব

भरत मरकावतानि कीवरक आजत कतिता वारक. ट्रावारवय अते कथा जनकरू इरेता भरक । व

ভাষার পর, উবর বেশের ভার অবিভাকেও বে, আলা হইতে উৎপর
উপাবিরণে করনা করা হইরাছে, এ সমন্ত করনাও কোন রক্ষেই সঞ্চ
হর না; কারণ, সংভারাপ্রর বর ছারিরা অপর বন্ধতেও বে, সংভারের
সংক্রেমণ হইতে পারে, ইহা ত বনে মনেও করনা করা বাইতে পারে না;
নিরোক্রত প্রতিসমূহও এ করা সমর্থন করিতেছে না,—'কাম, সংকর, সংলর
বাহৃতি [মনের বর্গা]', 'এ সমন্ত এপ রুদরগতাই বটে', ধ্বন বানাই করে, বেন
আক্রিই করে' 'বে সমন্ত কামনা এই উপাসকের রুদরাপ্রিত', 'তবন রুদরের
সমন্ত শোক উত্তীর্ণ হন' ইত্যাদি। আর উল্লিখিত প্রতিগুলির বে, ব্যাক্রত
আর্ব ছাড়া অর্থান্তরও করনা করা যাইতে পারে, ভাষাও নহে; কেননা, আলার
পরব্রেমন-প্রতিশাদনেই এ সমন্ত প্রতিপ্র তাৎপর্যা, এবং সমন্ত উপনিবৎলাপ্রও তথু এই বিষরতীর প্রতিপাদনেই পরিস্থান্ত হইরাছে। এই
জন্তই, বাহারা প্রতির অর্থ নির্পণে কুল্ল নয়, তাহারাই উপনিবদের
আর্ব বিক্রত করিরা অন্তপ্রকার করনা করিরা থাকে: তথানি সেগুলি বদি
বেলাপ্রয়েদিত অর্থ হইত, তবে কোন ক্রি ছিল না, এবং তাহাতে আনাদের কোন বিশ্বেষও নাই। ৫

বিশেষতঃ পূর্ব্বেক্ত রাশি ররকল্পনার পক্ষে 'বে বাব একাণো রূপে' ইত্যাদি বাকাও স্থানত হর নাং বদি মৃত্যামৃত্য ভূতমর ও তক্ষনিত বাসনারাশি, এতৎসমন্তিকে বিবিশ্ব বপ এবং এককে উক্তরপের আগ্রন্থত ভূতীর রূপ বলিরা বরা হব, এবং মধ্যে এতদতিরিক্ত চতুর্ব কোনও কিছু বরা না হয়, তাহা হইলেই "বে বাব একাণো রূপে" এই রূপ বিল্লপারধারণ সন্ধত হইতে পারে; পক্ষারণে এ কবা অবাকার করিলে ত একের একদেশভূত বিজ্ঞানাত্মার (জীবের) সক্ষেই এই ভূইটি রূপ কল্লিত হইয়া পড়ে, অথবা বিজ্ঞানাত্মার বিবিধ রূপ হওয়ার, তদ্মারা পরসাম্মারও রূপদাই কল্লিত হইতে পারে। তাহা হইলে 'নিশ্চরই ভূইট রূপ' এই প্রকার অবধারণ সন্ধত হয় না, বয়ং উক্ত বাসনাত্মানির সহিত বিশিতভাবে বহু রূপ সংঘটিত হওয়ার 'রূপাণি' এই এপ বহুবলন নির্দেশকরাট অপেকাক্ত স্থীচীন হয়; বৃর্ত্ত অবৃত্তি হৃই, আর বাসনারাশি ভাষার ভূতীর রূপ; ব্রুভ্রাং বহুবলন নির্দেশকর ব্রুভির রূপ; ব্রুভ্রাং বহুবলন নির্দেশকর ভূতীর রূপ; ব্রুভ্রাং বহুবলন নির্দেশক বিশ্বিক ক্ষার ভূতীর রূপ; ব্রুভ্রাং বহুবলন নির্দেশক ক্ষার ক্ষার বাসনারাশি ভাষার ভূতীর রূপ; ব্রুভ্রাং বহুবলন নির্দেশক বিশ্বিক ক্ষার ভূতীর রূপ; ব্রুভ্রাং বহুবলন নির্দেশক ক্ষার ক্ষার বাসনারাশি ভাষার ভূতীর রূপ; ব্রুভ্রাং বহুবলন নির্দেশক ক্ষার বাসনারাশি ভাষার ভূতীর রূপ;

विकीदशस्थावर-क्कीस्ट बायनम्

वित यह, वृद्धावृद्ध स्थ हरेष्टिरे भवनामान यथार्व स्था, मात वाननामवृद्ध (करन विकानाचा-बीरवहरे छन, नहमासाह नरह ; जारा बहेरनक, लाबास 'विकासका बाहा (बीवहर्त्र) विकासकावानह उत्पर' अ क्या निवर्त्र हहेब्रा পড়ে; काबन, वामना विषय विकासचाब विकास मास्त करत. তেমনি ভদারা পরমান্তারও বিকার সমুৎপাদন করিতে গারে; কার্ব্য-कात्रगठारात्र किहूबाज देवववा नाहे। विस्तवठः এक वद रव, अनत বল্ল খালা সভা সভাই বিকৃত হইলা বাল, এলপ কলনাও কৰনই স্বীচীন हरेल भारत मा। बात बोवाबा (व. भवबाबा हरेल भृदक् अकृष्टि पठड বৰ, ভাষাও নহে: কেননা, সেত্ৰপ কলনাত ভোষাতই সিমান্তের ব্যাঘাত पछि। अक अव विनास्त इहेरव (व. वाहात्र) विवादिविकारन विवृत्, साहात्रहे अवश्वित वरुठत जनात कहना कतिता पारक: छाहारकत केनाठीत नवक कब्रनाहे अवन्त-राष्ट्र वर्षां नवार्यरहिन् छ ; बात अवन्त-राष्ट्र कब्रना कथनरे वा वाद्यार्थंत डेशाया (त्यावक वित्रा शृहीत हरेट गाँदि ना ; कांद्रन, वठ: श्रमान (वननाय जाननाद श्रामणाद क्रम क्रम क्रमान ध्यातिक चालका करत ना. 'डेश क्छ: ध्यात्।: चठ धव छेत्न क्षकात वानिज्ञत क्षमा करा क्षमहे समझ्छ हरू ना। १

্ এইরপে পরগাঁর সিভান্ত গঙ্ন করিয়া এবন সমতে 'তং' পছের আর্থ কলিতেছেন] 'বং জরং দক্ষিণে জক্ষন্ পুরুষং' এই বাক্যে দেহসম্বন্ধ বে, লিক্ষাত্মা বর্ণিত হইরাছে, এবং 'বং এবং এতাধিন্ মণ্ডলে পুরুষং' এই বাক্যে বে, জাবিলৈবিক পুরুষ উক্ত হইরাছে, এবানে পূর্বোক্ত-পরামনী 'ভক্ত' পদের প্রয়োগ থাকার সেই শাধ্যাত্মিক ও জাবিলৈবিক পুরুষই 'বোহসোঁ তক্ত লম্জক্ত রসং' বাক্যে পরিগৃহীত হইরাছে, কিন্তু বিজ্ঞানমর (জীবাত্মা) নহে। তাল কথা, এখানে বখন বিজ্ঞানমর জীবাত্মারও প্রসন্ধ রহিরছে এবং 'তক্ত' পদেও বখন বর্ণিত বিবরেরই উল্লেখ করা হারাছে, তখন উল্লিখিত রুপত্রলি সেই বিজ্ঞানমর আত্মারই রূপ হর না কেন দু মা,—এংপ হইতে পারে না; কারণ, এখানে বিজ্ঞানমর আত্মার নীরণ্ডাব জ্ঞাপন করাই প্রতির অভিপ্রেত। উক্ত নাহারজনাধি রূপত্রলি বন্ধি বিজ্ঞানময়েরই বথার্থ রূপ হইত, তাহা হইলে, 'নেতি নেতি' বলিয়া তাহকেই আ্যার জর্মণ-ভাবে উপজেশ করা কথনই সক্ত হইত না। ৮

বলিতে পার বে. অঞ্জের স্বছেই এই অন্তপভাবোপদেশ, জীবাভার

नचरक मरह : मा-- (म कथा ७ मक्क वह मा : कांत्रन, वर्ड प्रशासिह त्याप 'বারে বৈত্তেরি, বিজ্ঞাতাকে আবার কিসের খারা 'কানিবে', এইরপে विकासमा जासात क्षेत्रका भन्न 'म अब त्मिक त्मिक' वादमा ताहै विकास-यह जाजात्रहे केनेनश्हात करा हहेबारक। छाहात नत, "विक्रमहिकांति" विजया প্রথমে যে প্রতিকা করিয়ালেন, ভাষার সার্থকতা বক্ষাও ইয়ার লগর কারণ : **क्वम मा. এधारम यक्रि विकासमा चामात म्रमान्यकारिक मर्स्सामारि** विनिर्देख ब्रह्मणि-गरा शामित्त, विश्व 'बर द्रवावि' वित्रा बाबात्क बुक्टि भारतन, नाञ्चार्य एक निका नाम कविएम भारतन, अवर काथ। हरेएछ छोछ हन्, ना चर्चार नर्जछब्बिनिर्मुक हरेएछ भारत्न, रनहे नर्भी। कांगन क्यारे विष क्लिक्ट इंग्र.- ठारा रहेरलरे देवन श्रीककांत भागना রকা পাইতে পারে: নচেৎ উরপ প্রতিষ্ণার কোনও প্রয়োগন পাকে না। আৰু বিজ্ঞানসম আত্মা ৰচি পরসাত্মা হইতে অন্ত পদাৰ্থ ময় এবং 'মেতি तिक' वारका विक तिके विकासमय कहेरल भगक चाचात कथाहे केशिबरे हत. काबा बहेरम केनरमन-शांश निक अवेक्षणवे वृषित (य. तक अकृषि नृषक भ्रमार्थ, अवर व्यामिक काहा स्टेट्स मुन्तूर्व प्रकृतः किन्नु व्यापनाटक कवनड 'আছং ব্রহ্মান্ত' বলিয়া অবগত হটতে পারিত না। অভএব অবগ্রন্থ বীকার করিতে ছটবে বে. "ডক্স হৈ তদা" ইডাাদি বাকো বে সম্পূর্প প্রদর্শিত कडेशारक. (म. मबल शिक प्रकृतितृष्ठे क्षेत्र, ' क्रीवाषात्र क्षेत्र नाह)। »

বিশেষত: সভোর সভা পরসাম্বার প্রকৃত বন্ধপ বলিং হটলে ভাষা निः स्वयं कतिया वनाहे मक्षछ: 'मटा'व निमिक्षे वक्षण वहेरछा वाममा (সংস্থাব-সময়) : উল্লিখিত এপগুলি সেই ৰাসনা-সময়েও সমুদ্ধেই উপদিং कड़ेरलक । बरबाक निक शुक्ररवद धड़े नवल क्रम ; रन नवल क्रम कि कि. खाडा वना इहेरछर्ड-बाहातकन वर्ग-हतिज्ञा, उन्।ता तक्रिक वहाक वर्तन 'আছার্ড্রন': লগতে বাহারজন বস্তু বেছপ রূপে রঞ্জিত হর, স্ত্রী প্রভৃতি विनव्यविष्यात्वत्र मश्यात्मक किरस्त (महेवन ब्रह्मनायाक नामनात्र ममुख्य स्त्र, মালার লক্ষ্প সেই বাজিকে ব্যালির ওলনার 'রক্ত' বলিয়া নিদেশ করা ছইয়া থাকে. এবং লগতে পাধুবৰ্ণ আবিক-- অবি অৰ্থ বেব,তাহার রোষ প্রভৃতিকে ৰাজ 'জাবিক', ভাছা বেষন পাণুর বর্ণ (বেড বা ঈবৎ স্কুড়াভ) হয়, কোন टकाल वाश्नात क्रमक छावृत्र दश ; व्यवता क्रमण देखरमान (व्यक्तव्यक्ति) अक्काफीर कींग्रे) (रमम चलाव प्रकारन दत्र, देशांप्र वागमात्र कर्णक क्यम



কথন সেত্ৰণ সক্ষটিত হয়; কথনও বা বিশেষ বিশেষ বিষয়ের সংযোগালুমারে বাসনাগত রাগের ভারতহাও হইরা বাকে, কথনও বা প্রহীতা পূরুবের চিত্র-রতির অন্থ্যারেও রাগের ভারতহা ঘটরা বাকে। অগ্নির শিবা বেঙ্গল ভারত (লবং রজ্ঞাজ) হয়, সমর্থিশেয়ে কোন কোন লোকের বাসনাও ট্রক সেই-ক্প কপেই প্রায়ক্তি হয়; পুওরীক (বেতপন্ন) বেরুপ ওরুবর্গ, সেইরুপও কোন কোন সমরের বাসনার ওপ হইরা গাকে; অথবা বিদ্যুৎ বেষন একসলে সর্বাঞ্জাশক হয়, জানাগোক সমূলত থাকিলে কোন কোন লোকের বাসনাও তের্মন সক্ষপ্রকাশক হয়। থাকে। ১০

বাসনার ৰত প্রকার রূপ আছে, সে সমূহরের আদি, বধা, অন্ধ, কিংবা সংখা। ছির করা বাল না, এবং দেশ, কাল বা নিষিত্তও (বাহা অবসকলে বাসনার জিল্ল ডিল্ল রূপ প্রকৃতিত হররা গাকে, সেই কারণও) নির্ণয় করা বার না; কারণ, বাসনারাশি নিজে অসংখা, এবং সে সমূল্যের ংহতু বা উৎপত্তির কারণও অনন্ধ। এই উপনিবদেরট বহু অধ্যারে বলিবেন—"ইন্সরঃ আলোমন্তঃ" অর্থাৎ এই প্রকার ও অমুকপ্রকার ইত্যাদি। অতএব বৃধিতে হইবে বে, এখানে "বলা মালারকনং রাসঃ" ইত্যাদি যে সমস্ত দৃহান্ত প্রদর্শিত হইরাছে, সেওলি বাসনার বক্প বা সংখা। নির্পণের কন্ধ নহে; তবে কি ? না, কেবল প্রকার প্রপার কল্প মাত্র, অর্থাৎ বাসনা-সমূহের বে, এই জাতীর বহু প্রকার রূপ আছে, তাহা জাপনের কল্পট উলাহরণবর্ষণে করেকটি দৃষ্টান্ত প্রকার কল্প হইরাছে মাত্র। ১১

ঝার সর্বাদেবে বে, সকুৎ-বিজ্ঞোতনসাদৃত্তে বাসনার একটি বিশেষ রূপ প্রদর্শিত হইরাছে, তাহাও কেবল, অব্যাকৃত আত্মান্তি হইতে প্রাভৃত্তি হিরণাগতের অভিবাজি বে, বিহাছিকাশের কার বৃগপৎ বা একই বারে হইর) বাকে, তৎপ্রদর্শনার্থ মাত্র। বে ব্যক্তি হিরণাগর্তের তামৃশ বাসনা-মন্ন অভিব্যক্তি অবগত হয়, ভাহারও বিহাতের কার বৃগপৎ সর্বান্তাসক লীপ্তি প্রকাশ পাইরা থাকে, অভিপ্রায় এই বে, বে লোক বাসনার শেখাক্ত এপটি লানে, হিরণাগন্তের কায় ভাহারও প্রী অর্থাৎ শোভা ব্যাতি বৃদ্ধি হইরা থাকে। প্রতিশ্ব 'হ' ও 'বৈ' শক্ষের অর্থ—অবধারণ। ১২

এইরংগ নিঃশেষ ভাবে সভাের বরপ নিরুপণ করিরা 'সভাের সভা' বালয়া বাহার নির্দেশ করা বইয়াহে, এখন সেই প্রবেরই বর্ষণাবধারণের বন্ধ এই বাকাটি আরক বইডেছে—অব অর্থ—অনভর অর্থাৎ 'সভাে'র বরুগা- ধারণের পর, বাহা সেই সভ্যেরও সত্য—সভ্যতাসম্পাদক, তাহার স্বরূপাব-ধারণ করা এখনও অবশিষ্ট রহিরাছে, সেই হেতু অতঃপর তাহার স্বরূপ নির্দেশ করিব। আদেশ অর্থ—ব্রন্ধের স্বরূপ নির্দেশ; এই নির্দেশ আবার কিরূপ, তাহা বলিতেছেন—"নেতি নেতি", অর্থাৎ তাহার সেই রূপ বটে নির্দেশ এই প্রকারই। ১৩

ভাল, ষিনি 'সত্যের সভ্য' ব্রহ্ম. 'নেভি নেভি' শব্দে তাঁহার স্বরূপ নির্দেশ করা সম্ভব হইতে পারে কিরুপে ? হাা. বলা হইতেছে—সর্বপ্রকার উপাধি-নিবেধ ছারা তাহ। হইতে পারে। বাহাতে নাম, রূপ, কন্ম, স্বভাবভেদ, কাতি ওপ বা রূপ প্রস্তৃতি কোনও বিশেষ ধন্ম বিশ্বস্থান আছে, তছিবয়ে সেই নাম-ক্ৰপাদি বিশেষ ধৰ্ম অবলম্বন করিয়াই শব্দ ব্যবহার হইতে পারে, কিন্ত बांदाट मह त्रमूम्य वित्नव धम चारमो नाहे, [डाहार्ट मस्मत अवृद्धि वा বাবহার হইবে কিরপে १]। ত্রন্ধে ত উল্লিখিত ধর্মের কোন একটি ধর্মণ্ড নাই ; সুতরাং 'শৃঙ্কযুক্ত ভক্লবর্ণ এই গোটি গমন করিতেছে' বলিয়া বেমন পোর নির্দেশ কলা হইয়া থাকে. তেমনি 'এটি ব্রহ্ম' বলিয়া কখনই ব্রহ্মব নির্দেশ করিতে পারা যায় না। এই গুরুই 'ব্রন্ধ বিজ্ঞান ও আনক্ষরপ' 'বিজ্ঞানখন আত্মাই ব্ৰুষ্' ইত্যাদি শব্দ-সমূহ ব্ৰেক্ষে নাম, রূপ ও কক্ষ স্থা-রোপণপূর্বক তাহার সাহায়েই ত্রঞ্চের নির্দেশ করিয়া থাকে ৷ পকান্তরে, वधन छाटात मर्स्साभाधिविनिर्माक निर्मित्न यत्राभत निर्मा कराहे অভিপ্রেত হয়, তথন ত কোন প্রকারেই তাহা নির্দেশ করিতে পারা বায় না: তথন কেবল আরোপিত ধর্মগুলির প্রতিবেধ দারা 'নেতি নেতি' বলিয়া নির্দেশই তাঁহার স্বরূপ-নির্দেশের একমাত্র উপায়। ১৪

'নেতি মেতি' বাক্যে''ন' তুইটি বীপ্ সার্থে প্রযুক্ত ইইয়াছে। বীঙ্গা অর্থ—
ব্যাপকতা বা সাকল্য: সূতরাং ইহা কইতে বুকিতে কইবে বে, ব্রন্ধেতে ধে
সমস্ত বিশেষ ধর্মের প্রাপ্তি সম্ভাবনা ছিল, তৎসমস্তই নিষিত্র কইতেছে; তাহার
কলে, উক্ত ক্রতিতে ব্রন্ধের স্বরূপ নির্দেশ হয় নাই বলিয়া যে, আশহা ছিল,
তাহাও পরিষ্ঠত কইল; নচেৎ তুই 'ন' ছারা বিদ্ধ কেবল তুইটি মাত্র বিষয়ই
নিষিত্র হইল; নচেৎ তুই 'ন' ছারা বিদ্ধ কেবল তুইটি মাত্র বিষয়ই
নিষিত্র হইত, তাহা কইলে, ব্রন্ধ বে, সেই নিষিত্র পদার্থ তুইটির অতিরিক্ত,
সম্পূর্ণ পৃথক্ পদার্থ, তাহা অনির্দিন্তই পাকিয়া বাইত; সূতরাং 'ব্রন্ধ কি
প্রকার' ? এই আকাজ্ঞারও কিছুতেই নিয়ন্তি কইত না; অতএব বিজ্ঞান্থ
বাজ্ঞির কিজ্ঞাসা-নিগর্জক নয় বলিয়াই প্রক্রপ নির্দেশও নিশ্রন্তই নির্পক্ত হইয়া

পড়িত; এবং "ব্রদ্ধ ক্লপরিকানি" (ব্রদ্ধোপদেশ দিব) এই প্রতিক্রানিত। সর্ব্যক্ষার বিশেষ ধর্মের প্রতিবেধের ফলে যথন দিক্ কালাদি অব্রদ্ধ বন্ধ বিবরে জানিবার ইচ্ছা সম্পূর্ণরূপে নির্ভ্ত হয়। যায়, তথনই জিল্লাম্মর বিবিদিয়া জানিবার ইচ্ছা) সমূলে নির্ভ্ত হয়। বায়, এবং তথনই 'আমি হইতেছি সৈত্তবপিঙের লায় একরস (একস্থতার), বাছাত্যক্তরবিবর্জিত, সত্যের সত্য ব্রদ্ধস্কপ' এইরপ তত্ত্বজ্ঞান আন্ধবিধরে সুপ্রতিষ্ঠিত হয়। অতএব 'নেতি নেতি' এই 'ন' ছইটি নিশ্চয়ই বীপার্থক—সর্বানিবেধক, কিন্তু পৃথক্ প্রকৃ বন্ধর নিবেধক নতে। ১৫

তাল; জিজাসা করি, মহা আড়ম্বরের সহিত এত বাক্যের ঘটা করিয়া অবশেষে কি এইরপ ব্রন্ধ নির্দেশ করাটা যুক্তিযুক্ত হইল ? হা, যুক্তিযুক্তই হইল; কারণ ? বেহেতু, 'নেতি নেতি' বাক্যম্থ 'ইতি' লব্দে নকার্যরের নি.বধ্য বিবর বত প্রকার হইতে পারে, তৎসমন্তই সংগৃহীত হইরাছে; বেবন 'গ্রামো গ্রামঃ রমণীরঃ' (প্রত্যেক গ্রাম রমণীর) বলিলে রাজ্যম্থ সমস্ত প্রামের সর্মপ্রকার রমণীরতাই বুঝার, এখানেও তদ্ধপ সর্মপ্রকার নিবেশ্য বিবরই গৃহীত হইরাছে; এবং বেহেতু, ইহার অতিরিক্ত আর কোন প্রকারে ব্যব্দের স্বর্মার্থ নির্দেশ হইতেই পারে না, সেই হেতু ইহাকেই ব্যব্দের বর্ধার্থ নির্দেশ বলিয়া বুনিতে হইবে। আর ব্যব্দের যে 'সত্যম্ম সত্যং' উপনিবৎ নাম) বলা হইরাছে, সে সম্বন্ধেও কথা এই বে, বেহেতু, বণোক্তপ্রকারে পরব্রন্দই সত্যের সত্যরূপে প্রতিপন্ন ইইতেছেন, সেই হেতু ব্যব্দের ঐ প্রকার নামধের (নাম নির্দেশ করা ঠিকই হইরাছে। সেই সত্যের সত্যার করা কি ? [তহুন্তরে বলিতেছেন—] প্রাণসমূহ হইতেহে সত্যা, তিনি সে সমুদ্যেরও সত্য অর্থাৎ সত্যতাসম্পাদক; [এইবন্ধ তিনি সত্যেরও সত্য] ॥১০০০।

বিতীয় অধ্যায়ে ভৃতীয় ব্রাশ্বের ভাষ্যাত্রাত ॥২॥২॥

एक्थर दामानम्।

শাস্ত্রাক্তাক্র । ভারেত্যেবাপাসীত; তদেবৈতদিন্
সর্কবিন্ পদনীরমান্তরন্, বলাং প্রের: পুরাদেঃ—ইত্যুপরুতন্ত বাক্যন্ত
ব্যাখ্যানবিবরে সম্বন্ধ-প্রয়োজনে অভিহতে—"তদান্ত্রানেবাবেদহং প্রশাস্ত্রীতি,
তলাতৎসর্ক্রতবং" ইতি এবং প্রত্যুগান্ধা ব্রহ্মবিস্থারা বিষর ইত্যেত্ত্পক্তর্।
অবিদ্যারাশ্চ বিষর: অক্তোহসাবস্থোহহমন্ত্রীতি, ন সবেদ" ইত্যারত্য চাতুর্কর্ণ্যপ্রবিভাগাদিনিমিতপাঙ্ককন্ম-সাধাসাধনলকণা বীলাত্রবদ্ ব্যাক্কতাব্যারতবভাবো নামরপকন্মন্ত্রক: সংসাবং "এরং বা ইদং নাম রূপং কন্ম"ইত্যুপসংক্তঃ
নাত্রীয় উৎকর্ষলকণো প্রদ্লোকান্তঃ, অধ্যেভাবশ্চ স্থাবরান্ত্যোভানান্ত্রীয়
পূর্ক্ষের প্রদর্শিতঃ "বয়া হ" ইত্যাদিনা। ১

এতশাদবিদ্যাবিষয়াধিরক্তসাস্ত প্রতাগাত্মবিষয়প্রশ্নবিদ্যাবিষয়। কর্পং
নাম স্থাৎ—ইতি তৃতীয়েংধ্যায়ে উপসংঘতঃ সমস্তোহবিদ্যাবিষয়:। চতুর্বে
তু ব্রন্ধবিদ্যাবিষয়ং প্রত্যগাত্মানং "ব্রন্ধ তে ব্রবাণি" ইতি "ব্রন্ধ অপ্রিয়ামি"
ইতি চ প্রস্তুত্ত তদ্ ব্রন্ধৈক্ষমষয়ং সর্ক্ষবিশেষশৃত্তং ক্রিয়াকারকক্ষলস্বভাবস্ত্যশন্ধবাচ্যাশেষ-ভূতধর্মপ্রতিবেধবারেশ নেতিনেতি' ইতি জ্ঞাপিতম্। ২

অন্তা ব্রশ্ধবিদ্যার। অল্বনে সর্রাসে। বিধিৎসিতঃ জারাপুল্রবিস্তাদিনকণং পাঙ্ক্তং কর্মাহবিজ্ঞাবিষয়ং যত্মাৎ নায়প্রাপ্তিসাধনম্ ; অন্তসাধনং হি অন্তব্যে ফলসাধনার প্রমৃত্যুমানং প্রতিকৃলং ভবতি ; ন হি বৃত্তৃক্ষাপিপাসানিয়ন্ত্যর্থং ধাবনং প্রমন্ম বা সাধনম্ ; মন্তব্যালাকপিতৃলোকদেবলোক-সাধনবেন হি পুরাদি-সাধনানি প্রভানি, নায়প্রাপ্তিসাধনকেন, বিশেবিত্তানি, কা চ ব্রশ্ধবিদে বিহিতানি, কাম্যক্রপ্রশাধনে "এতাগান্ বৈ কামঃ" ইতি, ব্রশ্ধবিদন্তাক্রমারাৎ আপ্রকাষত্ম কামান্ত্রপান্তঃ, "বেষাং নোঃম্বান্থাহয়ং লোকঃ" ইতি চ প্রতেঃ । ৩

किन्न वक्षविराश्लावनामचन्नः वर्षति ; रेज्यं वनायनाकः न अजम् ; नूबारणावनामानविष्यवस्यम्, विन्याविराय ठ—"रवशः त्नाःश्रमाचाः ६ यः रामकः" इंज्याकः "किः श्रम्मा कवित्यावः" देर्णाय विज्ञानरेखनं अज्या अज्या इत्यः ; नुक्षिक्षाकामक्ष्यरमानवर्षयञ्जनायाः च विन्यायाः नजाः नद कार्याः गाविकाता अकृर्शिकक्षणक विर्तावरेष्ठम विकालः ; गानवाकाक रेष्ठम अल्ब । कर्वविकाचित्रंगरतार्विकाचिकाचकरताः अल्बिक्ववर्षनः विरत्नावः ।

"ৰদিং বেদৰচনং—কুকু কৰ্ম ভাজেতি চ।
কাং গভিং বিদ্যান বাত্তি কাঞ্চ গছতি কৰ্মণা।
এতবৈ প্ৰাভূমিছানি, তৱবান্ প্ৰৱৰীভূবে।
এতাৰন্যোন্যবৈদ্ধণ্যে বৰ্ডেতে প্ৰতিকৃষতঃ" ।
ইত্যেবং পৃষ্টত প্ৰতিৰচনেন—
"কৰ্মণা বধ্যতে কন্ধৰ্মিদায়া চ বিষ্চাতে।
তলাং কৰ্ম ন কুৰ্মনি ৰতবং পারদর্শিনঃ ॥"

ইত্যেবমাদিবিরোধঃ প্রদর্শিতঃ। ৪

তন্মার সাধনাত্তরসহিতা ব্রন্ধবিদ্যা পুরুষার্থসাধনম্, সর্ক্ষবিরোধাৎ; সাধননিরপেন্দৈব পুরুষার্থ-সাধনম্ —ইতি পারিব্রাজ্যং সর্ক্ষসাধন-সন্ন্যাসলক্ষণম্ অভাবেন বিধিৎস্ততে; এতাবদেবামৃত্তসাধনমিত্যবধারণাৎ, বর্ষসমাধ্যে, লিজাচ্চ—কর্মী সন্ বাজবক্যঃ প্রব্রাক্ষেতি। ৫

নৈত্রেৰৈ চ কর্ম্মাধনরহিতারৈ মাধনহেনামৃত্যক্ত ব্রহ্মবিছোপদেশাং, বিভানিখাবচনাচ্চ; বদি হি অমৃত্যমাধনং কর্ম তাৎ, বিভাসাধ্যং পাঙ্জুং কর্ম্মেতি তরিন্দাবচনমনিষ্টং তাৎ; বদি ছু পরিতিত্যালরিবিতং কর্মা, ততো মুক্তা তৎসাধননিন্দা। কর্মাধিকারনিবিত্তবর্ণাশ্রমাদিপ্রত্যরোগনর্দান্ত—"ব্রহ্ম তং পরাদাৎ" ইত্যাদেঃ। ন হি ব্রহ্মক্রাদ্যাশ্রপ্রত্যরোগমর্দে ব্রাহ্মগেনেদং কর্ম্মবর্গাশ্রমাদার্মানং লভতে বিধিঃ; বক্তৈব পুরুষতোপমর্দিতঃ প্রত্যাহ্মা ব্রহ্মক্রাদ্যাদ্মবিষয়, তক্ত তৎপ্রত্যমসম্যাসাৎ তৎকার্ম্যাদাং কর্ম্মধনানাঞার্শ্রপ্রক্র সম্যাসঃ। তথাদান্মজ্ঞানান্দ্রেন সম্যাস-বিধিৎসরেবাধ্যাদ্মিকেয়ন্মান্ত্রতে। ৬

িকা। সংখাতিবিংসরা বৃধাং কর্তিরতি—আহ্জাহত্যহেবতি। কিবিভাল্ডজ্বের লাভ্যাং, ভ্রাহ—তহুদেবেকি। ইবং প্রেডভ বিভাবিংরভ বাভ্যাভ বাাধান্ত্রের বিষয়, ভর বিভাবিংর, সাবা। বৃভিত্তি সবহা, বৃতিত্ত কর্মিভাতে ভ্রাম্থানবিভালিনা বর্ণিতে ইভাবে—ইক্তুপেক্সস্করেভি। বিভাবিবরবৃত্য নিব্যরতি—প্রমাতি। উভ-বর্ণাভার বিষয়েভি—আনিক্রান্ত্রাহণ্টতি। বভোহনাবিভ্যাভারভাবিভার। বিষয়ত সংলার উপসংলভ্যান্তিভাবিবেভি সবহা। সংগান্ত্রের বিশিক্তি—চ্যুক্তর্মপ্রতি। চাভুর্মণ্ডি

চাতুরামধানিতি কবিভাগারি নিবিজং বভ পাঙ্ভভ কর্মপ্রক নাধানাধননিভোবনামক ইতি বাবং। জ্ঞানানিত্বং কর্মপ্রক্রিক্তি নাজ্যান্ধনিতি। ভবেব নিবা ন্যুক্তিপতি— লাহমন্তি। ন চোৎকর্মপুক্রাজ্যাং বিবা ভিত্ততে, ভবাভবুবাংরতি— পাজ্যান্ম ইন্ডি। উৎক্রো বি সংনাজ্যারাজ্ঞানং পারীরজ্ঞানকর্মপতা ইভার্য:। বিভারং কর্মপ্রক্রিক্তি। নিজরং সংসারং পাভাবিক্তানকর্মধানা ইভার্য:। ১

কিবিভাবিত্তাবিবৰো নাখাত:, ব হি স পুরুষভোপন্তাতে, ত্রাহ- এড জ্যানিষ্টি। এডাবাবৈধ বিষয়েশিন্ বা বাবেতি বিশ্বা, ডজাবিভি বাবং। ভাতীয়নগৃত্ব চাতুবিক্ষর্ব: কম্মতি-চাত্ত্বর্থ ডিডিড। ব

Mamiet faus an funcer ucmfa क्षरेवर विद्वानाकाविकात्रकात-उत्तरकान्छ। विश्वकः । क्षत्रार मरकारमा विविधमिक के पुरस्य मथकः । अक सककर क्यांविकारिकावीय विविधायकानः वाध्यांनामृत्रेवयानः वाणनविकः व्याध-प्रदेशान्तः। पर्यन मुद्रोत्यन नार्कक कर्षाताहकमानगराय क्या प्रवस्थानकारिक नहेब्डि-म हो।छ। প্রমৃত্যান্তি। সোচার বন্ধবালোকঃ পুরেবৈর করাঃ 'কর্মনা পিতৃলোকো বিক্তরা বেবলোকঃ' इक्ति विरम्भिक्षपु । अञ्चल्यन विरम्भिकत्वाक्षित्रामा मुक्किकविकि स्मादन (क्वांसाक । मक अवस्थित पकरम विकित क्वीर्यक्ट (बीकमानम्बन्धिन) व्या । ममक्कार कर्य-সংস্থাসনিত্রিক ভার-ম স্থেতি। কর্মণাং কাবাছেচপি একবিকজানি কিং দ স্থায়িকা न्द्राक अक्षांबाहरक्षित : व्यक्त क्षेत्र नृतावित्रावताष्ट्रगरिक काव-व्यक्त क्षेत्र । क मबुक्ककपक्षमकृष्टाना क्वार्टिनरवारनम पूनवृति - (काकि:च्यापंछ । (कावक्ति-अळामीकि। व्यक्तिकार काः, छरशकात एकश्वापारणाविक त्वरः for ante ofenite dere miem ceet; (einentalog: ente bis s femifente Bisiste Ceimai: au femint weit poten aggarifelen de bie neut i u ८क्वकाः अधिविद्यावादयन म्युक्तवानिष्ठिः, किन् वृक्तिविद्यावादक्ततान-अट्टांकि । विजी-इन्छकारबाइयाबनारवी वका नन्यवारक। युक्तिवरवायाक नब्क्षत्रानिश्वितकाह---वार्गरकाळ । एक सवनः गृहमाकः मृकिनिरहानः कृतेनि कर्माछि । सावन्त्रनक्तां विवर्धानिवर्षक्षांशः नृत्यकि विविद्यांशः क्षावर्शक यहिन्द्रांघिति । अविकः विवर्धना क्क कर्यकाकः श्राट, बांक्य-नगनारकः, सिर्यक्तिः श्राट करा विद्यापिः निवास सामर अबि अवयस रीमवार--अठिशिक्ति । विशावसीशावनीर्द्य नवन्तर-विक्रकट्ट सर्वटक, माण्यानवनिविधियानदाविष्ट्रक्यात्वय साण्डिक्या। व, मब्द्रावान् नगरवर्षायक कामक मानकानकविकारी । केटहाना गृहेक कमनत्का नामतकि त्नवः । विद्वादना स्नान-क्षंतिः व्यक्तकाक स्कार् ।

ন্দুজনাত্বণপতি নুশনকেছি— ক্রজানিছি। তথা তটি এথবিছা পুক্ষার্থনাধনবিছি, ভঞাব—অর্থানিক্রোথানিছি। বর্ষায় ক্রিয়াকালক ক্রডেনায়কছ বৈভেঞ্জনাত ক্রড-বিশ্বায় বিদ্যোগানিত বাবং। একাকিনী ক্রবিছা বৃতিবস্থুনিতি হিচে ক্রিডনার— वैद्धि श्रीविद्धा अर्थिकि। व व्यवस्य मरकामक अवशावित्योकमान्द्रेवादकः विद्धालकिः गामाकवर अक्षावित्यवित्यवादकः विद्धालकिः विद्धालकिः अक्षावित्यविद्धालकिः। कर्रे व्यवस्थिति । कर्रे विद्धालकिः। कर्रिक विद्धालकिः। विद्धालकिः।

ভবৈৰ নিজাভবৰণ — হৈছিল হৈছি । ব হি বৈত্ৰেটা ভাইছি আভভাইণি বছং কাৰ্যাবিকা বাইছি, পভিষাহয়বাহন ভাইছাল্যাবাহন বিভাগ ভাইছি আভভাইণি বৃদ্ধে নাগৰবেদ বিজ্ঞোপনেশাৰ কৰিলাগ্ৰহণ আনিত ইভাই: ভইনাৰ কেন্দুলালি কৰিলাগ্ৰহণ আনিত ইভাই: ভইনাৰ কেন্দুলালি কৰিলাগ্ৰহণ আনিত ভাইছি । বিষয় কেন্দুলালি বিজ্ঞানিকাতে। আন্ত ভংগালাহ কৰিলাগ্ৰহণ আন্ত বাণ্যাবাহন কৰিলাগ্ৰহণ আন্ত বাণ্যাবাহন কৰিলাগ্ৰহণ আন্ত বাণ্যাবাহন কৰিলাগ্ৰহণ আন্ত বাণ্যাবাহন কৰিলাগ্ৰহণ আন্ত বাংলাগ্ৰহণ আন্ত বাংলাখ্য বাংলাখ্য বাংলাখ্য বাংলাখ্য বাংলাখ্য বাংলাখ্য বাংলাখ্য বাংলাখ্য বাংলাখ্য বাং

আক্রাক্রাক্রাক্। প্রথকরণে বলা হইরাছে ব,
আরা বলিরাই আলার উপাসনা করিবে; সেই আলাই করতে
একবাত্র পদনীর বা আগ্ররহান; কারণ, পুর-ভার্থা প্রভৃতি প্রির
পদার্থ অপেকাও উহা অধিকতর প্রির; এই কবারই ব্যাথানছলে
'সেই আলাকেই 'অহং ব্রজানি' রূপে (আনি ব্রজ্বরূপ, এই
ভাবে) অবপত হইরাছিলেন, এবং তাহার কলে তিনি স্র্রান্থভাব
লাভ করিরাছিলেন' এই বাকো উহার সম্পদ্ধ এবং প্রয়োজনও অভিহিত
হইরাছে (১, এবং পরনালাই বে, বিভার (ব্রজ্জানের) একবাত্র বিষয়,

⁽১) ভাব পার্য্য -- কোন বিবর বুলিতে বা যুবাইতে হইলে এবংবই বজবা বিবর, ভাষার কল বা এরোএব এবং সেই বিবর ও এরোঞ্জের দ্বেরা বেরণা স্বত, ভাষা এতি পারন ভারতে হয়: এই কায়নে ভাষাওয়ে এবালে সাধারণভাবে বিবর, স্বত্ত ও এরোঞ্জের ভাষা স্থানা করিটা বিবাহেন। এবালে একবিছা হইভেছে বিবর, যুক্তি ভাগার এরোঞ্জন বা কল, আন জ্যিত ও গ্রহার নাব্য করিছা বালা বুলিকল লাভ করিতে হয়; "ভলাভানতেই অবেশ্য ইভালি বাজ্যেও এইলা নাব্য স্থানাতেই অভিনাতি হইলারে।

ভাষাও এইমণে এবণিত হইরাছে। আবার 'বে লোভ বনে করে, আবি অভ, এবং আবার উপান্ত বন্ধও অভ, প্রকৃত্যকে সে লোক বানে বা— অভ', এই হইতে আরম্ভ করিরা অবিভার বিবন্ধ অর্থাৎ অভ্যানাবিভারে বীআছুরবং অনাবিপ্রকৃত প্রাম্থনাতি চামুর্মার্থানাপেক পাঙ্কাকর্ম-নাধ্য ব্যক্তাব্যক্তবাধ নাম-ম্লণ-কর্মান্ত সংসার,—ইভঃপূর্মে 'গ্রেমং বাব নাম মূপং কর্মি এই প্রভিতে বাহার উপসংহার করা হইরাছে, অবিভার বিবরীমূত সেই সংসারের শাল্লাম্বারী কর্মান্ত্র্যারে প্রজ্ঞানপ্রাপ্তি পর্যন্ত উৎকর্ম, আর অপান্তীর কর্মান্ত্র্যারে হাবরভাবপ্রাপ্তি পর্যন্ত অপকর্ম বা অধ্যোপতি হইরা থাকে; সে কথাও "বরা হ প্রাভাগত্যাঃ" ইভ্যাদি প্রভিতে পূর্মেই প্রস্থাতি হইরাছে।

উভ্তথকার অবিদ্যার বিষয়ীভূত সংসাবে বাহায় বৈরাগোলয় হটয়াছে,
তাগার বাহাতে পরবাস্থবিষ্ক্রক এঅবিভালাত হইতে পারে, তল্পজ্ঞ
উপনিবলের প্রথম অব্যারোক্ত অবিদ্যার বিষয় সমস্তই তৃতীর অব্যারে বণিত
হইরাছে; চতুর্ব অব্যারে: উপনিবলের দিতীর অব্যারে) 'এক তে এবাণি"
"প্রম অপরিভানি" বলিরা প্রম্বিদ্যার বিষয়ীভূত পরমায়ার প্রভাব করিয়া,
সেই নির্মিশের এক অবিভার প্রামণকেই আবার ক্রিয়া ভারক ও ফলম্বভাব
সভাসংক্রক নিবিল বৃত্তবর্ম নিবেশপৃথ্যক "নেভি নোত" বলিয়া ভাপন
করিয়াছেন।>

এবন উক্ত ব্রহ্মবিভারই অলক্ষণে সন্নাস্থিবন্দ করা প্রতির অভিপ্রেত; কারণ, অবিভার বিষয়ীভূত পদী, পুত্র ও বিভালিসাধা পাঙ্ক কর্মগুলি আন্ধ্রপ্রান্তির উপার নয়; অগচ ধাহা র ফল-সাধনে অসমর্থ, সে ফলের কন্ত ভাছার নিরোগ করিলেও, চাহা হইতে প্রতিক্রণ অর্থাৎ অনিষ্ট ফল ভিন্ন, ইইজন হইতে পারে না: কারণ, ধাবন বা গমন কথনই ক্ষ্মা-পিপাসা-নিরভির সাধন হইতে পারে না; পাঙ্কেকণাল পুত্র প্রকৃতি সাধনগুলিও মুখ্যালোক পিতৃলোক ও কেবলোকপ্রান্তির উপায়রূপেই বিহিত হইনাছে; কিন্তু আন্ধ্রণাতের উপায়রূপে বিহিত হম নাই , স্তরাং সে সমুদ্য বারা ক্ষমই আন্ধ্রণাত হইতে পারে না; প্রমাণাত্তর ভারাও এ কথা সম্বন্ধিও হয় নাই ; কারণ, "এতাবান্ বৈ কাম্য" (এই পর্যান্তই কামনার বিষয়-২, এইরূপে ই সক্রণ সাধনের কাম্যত-প্রতিই রহিয়াছে। ব্রন্থবিদ্ ব্যক্তি আঞ্জন্ম।

। বিনি সমস্ত কাষ্য বিষয় প্রাপ্ত বইয়াছেন, সেই) আঞ্চলৰ পুরুষের ত কোন। প্রকার কাষনাও সম্ভবপর হয় না ; কারণ, প্রতি বনিতেছেন—'বে আমালের এই আত্মারণ কল সিত্ত হয় না' ইত্যাদি।>

क्ट क्ट उपनिमालक अम्मानक (काममानक) वर्गा करिया वारकम : अञ्चलक जीवात। त्रवात्रवारकार्यात्रव शहम माहे : श्रवावि काबना (व. व्यविद्याधिकारत श्रवता. अवर विद्याविवाद (व. काहांक मक्कर नाहे. हैश--(व. 'त्व चावालव अहे चावाक्षण लाक वक हत ना' अवः 'चाववा नवानवात कि कतिव ?' এই अधिके विछान कतिवा विवासन. छात्रा छात्राचा निकार लाल नारे. बदर क्रिया कावक क क्लाकि नर्वविध एकनिवर्धक विकास केशत (व. कविका ও ठ०कार्त्यामासन कन्यावनाइन बिरवाय फेंशकिए हर, ठाहां जाहांता अवश्र हर नाहे : अहिक कि. (बह्नवारमञ् केंकि भवास्त ठाहाता त्रवन करत नाहे। विद्याध **এই दि. । क्यं इटेंट्टाइ चरियायुक, जाउ विका इटेंट्टाइ कार्नायुक**. সুতরাং বিভ্রম্বতার বিক্সা ও অবিক্সা একর থাকিতে পারে না : বিয়াসোক্ত খুডিবাকা এই বে, | 'কখালুৱান কর, এবং কর্মালুৱান ভাগে কর' এটক্রপ भवन्तव क्रिक्ड तक्षताका क्षत्रिष्ट शास्त्रा बाह : बहदद बाशनाव निकृष्टे ইলা জানিতে ইক্ষা কবি বে, উক্ত জান ও কর্ষের বরুণ একমণ নর : সুত্রাং खेबाबा शबलाब প্রতিক্লবতাব: উত্থানের মধ্যে বিভাষারাই বা কিপ্রকার পতি লাভ করে গ আর কর্ম বারাই বা কিব্রপ পতি লাভ করে গ আপনি ভারা चात्रात्क वन्त ।' এই क्या किळामा कतित्व शत, छड्छत्त वामत्वच-'बीव क्य बादा वह इत्र. बात विश्वाबाता विश्वक इत्र ; त्मने दश्क करवनी विश्वन क्याबहारन विद्रुष्ठ थारकन' हेजाहि वारका कान ও करणद विरहाय अधर्णन कविदारक्षम । ४

অভএব স্বাভোতাৰে বিক্রম-ব্যুখন ব্যৱহাই ব্রছবিভাকে অপর কোনও সাধন সহবাদে পূরুবার্থ-সাধন অর্থাৎ বোক্ষণাভের উপার বলা বাইতে পারে মা; পরস্ক কথাদি অপর কোনও সাধনের সাহায়া না সইরাই ব্রছবিভা পুরুষার্থ-সম্পাদন করিয়া থাকে: এই কট প্রতি স্কবিধ সাধন-পরিভাগেরপ পারিব্রাভাগির স্ক্রাসকেই ব্রছবিভার অক্সমে নির্দেশ করিয়াহেন (১)।

⁽১) **ভাব-প্রান্ত্রি-স্থান্সর বাবারত পারিয়াতা** ; সম্ভাব-প্রবার বিধি চুই প্রকার ;~ (১) বিবিধিকা সম্ভাব ও (২) বিধংস্থাস। অববে প্রভাব সমার করিছা ক্রমে বার্ত্ত

বৰ্চাথারে একবিভাই মৃক্তিদাতের একবাত্র সাধনমণে অবধায়িত হওরার এবং সেই বর্চাথারেই কর্মগরায়ণ বাজধতা ধবির সন্ন্যাস-এহণ হইতেও ইহাই নিশ্চিত হইতেছে বে. সন্ন্যাসই বিভালাতের একবাত্র উপার, কর্মানি নহে। ৫

বিশেষতঃ কর্মন্থপ সাধনপ্রা সৈজেরীকে মনং বাজ্যব্য অনিও মৃজিলাতের উপায়রূপে ব্রহ্মবিজ্ঞার উপাশে দিয়াছেন এবং ধন-সম্পাদের নিম্পাণ্ড করিয়াছেন; কর্ম বিদ স্তা সতাই অমৃত্যলাতের সাধন হইত, তাহা হইলে, বে বিজ ঘারা পাও কু কর্ম নিম্পাদন করিতে হর, সেই বিজের নিম্পা করা নিম্পরই তাহার অভিপ্রেত হইত না; পঞ্চান্তরে,কর্মত্যাপ করানই ধনি তাহার অভিপ্রেত হর, তাহা হইলেই কন্ম-সাধন বিজের ঐরপ নিম্পাব্যন সৃজিন্ত্রেত হর, তাহা হইলেই কন্ম-সাধন বিজের ঐরপ নিম্পাব্যন সৃজিন্ত্রেত হারে তাহারে পরাভূত করে, ক্ষরিয়ন্ত তাহাকে পরাভূত করেই ইত্যাদি শতি হইত্রেও জানা যার যে, এম-বিজ্ঞা-প্রভাবে কর্মাবিকারের নিমিত্তীভূত বর্ণাশ্রমাদি বোধ তথন বিদ্যাত হারা যার; আম্বর্গত রাম্পান্ত-ক্ষরিয়ন্ত্রাদি বুদ্ধি বিনাই হইরা গেলে পর, 'ব্রাহ্মবের ইহা কর্ত্ররা, ক্ষরিরের ইহা কর্ত্ররা ইত্যাদি নিয়েল্ড বিশ্ব না বাকার বর্ণাশ্রমাদিসাপেন্দ কোন বিধিই কার্য্য করিতে পারে না। যে ব্যক্তির ম্বর্গত ব্যক্ষে-ক্ষরিয়ন্ত্রাদি বেধে বিনাই হইরা পিয়াছে, তাহার সেই ব্যক্ষবাদি অভিনান পরিত্যক্ত হওরার তাহারই কার্য্য বা অধীন যে সমুদ্ধ কর্ম্ম ও কন্মসাধন

ও বানপ্রস্থ আজ্ঞান পর রক্ষ্যাকাৎকারের অক্ত যে, সন্নাস-এবং, ভাবাকে মলে 'বিবিভিয়া সন্ধান', আর বাবারা সংগাহের অসারঙা উপন্ধি করিল ভার তার বৈর্গাবিশে, থে কোন আজ্ঞান করিও সন্ধান এবং করে, ভাবাকের সন্ধানকে 'বিষংসন্ধান' বলে। স্বাল্পের সন্ধান উত্তর্গারের সকলে এর বাই, ভাবারা যনি ব্যক্তিয়া, গাঙ্যা ও বানপ্রস্থ আজ্ঞান মনার না করিল কেবল মানসিক কৌতুবনবলে তরাৎ সন্ধান এবং করে, ভবে তাবা প্রকৃত্র সন্ধান বলিলা পরিপ্রিত কর না, পরস্থ নেরপ সন্ধান রুণ্য অনিইকরই হইনা বাকে। মাজ্ঞান বলিলামেন ক্ষরানি জীবাপাকুরা বলো মোকে নিবেল্ডেং। অনপাকুরা মোকত সেম্বান্যে প্রস্তর্গার। কর্মান বিলেশ্য করিলা বলালার বলালার স্বাল্পারী বন্ধ। উক্ত ভলান পরিলোধ না করিলা সন্ধান এবণ করিলে লোক অবোগারী বন্ধ। উক্ত উত্তর্গিত সন্ধান্যরুশ্বই ধ্বাবিধি বান্ধ করিলা স্বান্ধ বর্ণান্ধানি কিচ বিদ্যান্ধ বিজে কর স্বান্ধান বর্ণান্ধান্ধ করিল সাম্বান্ধ বর্ণান্ধানি কিচ বিদ্যান্ধ বিজে কর স্বান্ধান বর্ণান্ধান্ধ করা করিলা সাম্বান্ধ বর্ণান্ধান্ধ বিজে কর স্বান্ধান্ধ স্বান্ধান্ধ করা স্বান্ধান করিল সাম্বান্ধান বর্ণান্ধান্ধ বর্ণান্ধান্ধ আজনকে সন্ধান্ধি সাধনজাগোলাক করা স্বান্ধান্ধ।



ছিল, নে কলেকলে সমুদরেরও সন্থাস সিদ্ধ বইকেছে। অংএব সেই আত্মভাবের অভারণে সন্থাসবিধানের কন্ত এই আব্যারিকার অবভারণ করা বইতেছে।

বৈত্তেরীতি হোৰাচ বাজ্ঞবন্ধ্য উদযাক্তন্ বা অরেইছ-মন্ত্রাৎ স্থানাদন্দ্রি, হস্ত তেইনর। কাত্যারস্থাইস্তং করবা-বিভিন্ন ১০৭ ॥ ১॥

সন্ধান:—ইদানীয়াস্থজানাদ্যনে সন্নাগবিধানার্থবিদ্ধাধ্যান্তিকা প্রারভাতে—'বৈজেরীতি' ইতি ৷ বাজবড়াঃ স্থনামপ্রসিদ্ধ থবিঃ) হে বৈজেরি. ইতি উবাচ হ (বৈজেরীনারীং স্থভার্যাং সংবাধরামাস—) অরে (অরি বৈজেরি,) অবং অস্থাং রামাং সাক্ষয়াপ্রমাং) উত্বাস্তন্ (উর্ছং উৎক্রইং সন্নাসাপ্রমাং ধাক্তন্) অনি (ভবানি, গার্হস্তাং ত্যক্ত্র্যু সন্নাসাপ্রমাং প্রহীত্বং ক্রভনিন্দরোংক্তি ইভার্যঃ); (অতঃ হল্প (স্থতিপ্রার্থনে) অনন্ন কাত্যারক্তা (কাত্যারনীনাম-ধেররা দিতীররা মন ভার্যায়া সহ) তে (ভব অকং (স্পন্নীতরা মাধনাদিস্থদ্ধ আসীং, ভক্ত বিজ্ঞোং করবাণি কর্জুনিজ্ঞানি [সম্পদ্ধ বুনাজ্যাং বিজ্ঞা প্রমার গবিক্তানীতি ভাবঃ] ৪১০৭ ৪ ১ ৪

মূলান্যুলাদে—প্রসিদ্ধ বাজ্ঞবদ্য কৰি নিজ ভাষ্যা মৈত্রেরীকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন,— লরে মৈত্রেরি, আমি এই গৃহস্থাক্সম হইতে উদ্ধে বাইতে ইচ্চা করিতেছি, অর্থাৎ এভদপেকা উৎকৃষ্ট সন্মাসাক্ষম গ্রহণ করিব মনস্থ করিয়াছি; লভএব, বলি সম্মতি থাকে, ভবে এই বিভীয়া ভাষ্যা কাভ্যায়নীর সহিত ভোষার বিভাগ করিয়া দিতে ইচ্ছা করি, অর্থাৎ ভোষাদের উভয়কে ধন সম্পদ্ বিভাগ করিয়া দিতে ইচ্ছা করি ৪ ১ ৭ ৪ ১ ৪

न्ना प्रकार-क्रांच्याकाः। देशक्रीकि ह्यांचित शक्तवाः,—देशक्रतीः वाक्यांचाविक्यांचा वाक्यवः। नाम विद्यः। क्रेन्याक्य क्रेंद्र वाक्य् नाविज्ञाकायाम् वाज्यवादतः देवः 'व्यतः' देकि मरवायम् व्यव्यवादः वार्षश्चादः वाज्यवाद क्रेंद्र वहनिक्षम् व्यवि क्यांचिः व्यक्षः, वह व्यक्यक्रिः श्चार्थश्चाति (क.क्यः। विकाक्य-तिक व्यवक्षाति विकास कार्यक्षः) वार्षश्चावः भतीर, क्या नवक वित्ववर करवानि अवाविकानः क्या ; वित्वन नःविक्या पूरार निवानि ३ > १ ३ ३

নিকা। ভাষাবাৰ্যা কিং ক্রবানিতি, ভগত—উল্বান্তজিতি। বৈশ্যোহ-ব্যাবসূর্যে। আন্তর্যান্তর্যান্তনীতি স্বভঃ। ব্যোক্তজ্ঞান্তর ভাষাবার কর্ত্ত্যা কর্মানি—অক্ত ইন্ডি: সমি ভাষাহো সংস্থানত ভগত্ত্যাপূর্যান্তনিত্তা ভাষাহা কর্মানিকা কর্মানিকার কর্মানিকার ক্রিপ্রেক্তি। আবংগার্মিজ্ঞের আভাষ্যান্তনার ক্রিকার্মিজ্যান্ত্রা ভাষাবিকার অন্তর্যান্ত্রা ভ্রিকার্মিজ্যান্ত্রা ভ্রিকার্মিজ্যান্ত্রা ভ্রিকার্মিজ্যান্ত্রা ভ্রিকার্মিজ্যান্ত্রা ভ্রিকার্মিজ্যান্ত্রা ভ্রিকার্মিজ্যান্ত্রা নিজ্যান্ত্রা ভ্রিকার্মিজ্যান্ত্রা নিজ্যান্ত্রান্ত্রানিক ক্রার: ১২৭ ।

ভাষ্ণান্দু আদে—"বৈরেরীতি হ উবাচ যাজবন্ধাঃ" কথার অর্থ—
বাজবন্ধানামক ধবি বীর ভার্যা মৈরেরীকে সংলাধনপূক্ষক বলিরাছিলেন ;—
'শরে' শক্টামৈরেরীর সংলাধনস্চক ; [মারে মৈরেরি,] আমি এই গান হইতে
মর্থাৎ পাইস্থাপ্রম হইতে উপরে বাইতে—উৎস্কুই পারিরাজানামক সন্ধাসাপ্রম প্রহণ করিতে ইচ্ছুক হইরাছি ; হক্ত—[এ বিষয়ে] ভোমার অন্ত্রমতি
প্রার্থনা করিতেছি ৷ মারও এক কথা, আমার এই বিভীয়া ভার্যা
কাভ্যারনীর সহিত ভোমার অন্থ —বিজ্ঞেদ মর্থাৎ বিভাগ করিয়া গিতে ইক্ষা
করি ; আমার সহিত সম্বন্ধনিবন্ধন ভোমাদের উভরের মধ্যে বে সপারীক্ষপ
সম্বন্ধ হিল, ধনসম্পদ্ বিভাগ করিয়া গিয়া সেই সম্বন্ধের বিজ্ঞেদ করিতে
ইক্ষা করি : ধনবিভাগ খারা ভোমাদিগকে বিভক্ত করিয়া আমি চলিয়া
বাইব ৪ ১০৭ ৪২৪

সা হোৰাচ মৈত্ৰেরী বন্ধ ইর্ম্ ডপো: সর্বা পৃথিবী বিজ্ঞেন পূর্ণা স্যাৎ কথং তেনায়তা স্যামিতি, নেতি হোৰাচ বাজ্ঞবন্ধ্য:—ববৈৰোপকরণবতাং জীবিতং তবৈব তে ভীবিতৎ স্থানয়ত্বক্ত তু নাশাংখ্যি বিজেনেতি ৷: ১০৮ ॥ ২ ॥

স্মান্তনাৰ্প্র: ।—সা (এবস্কা) বৈদেয়ী উবাচ—' বাজবদাৰ উজবতী)
হ (কিল) ভগোঃ (হে ভগবন্ ,) বং (१क्षि) ছ (বিভর্কে) বিজেন
পূর্ণা (বনসহিতা) ইয়ং (অস্কুরবানা) সর্বা (সম্পূর্ণ) পৃথিবা মে
(বন) ভাং (ভনেং), [কথবিভি প্রারে] ভেন (ভালুশপৃথিবীসভাবেন)
অহং অবৃভা (স্কুরহিভা বিস্কা) কবং ভানু ? (ভবেরং কিনু ?);
বাজবদ্যা উবাচ (প্রভূমান) হ— ন ইভি ; উপকর্মণবভাং । ভোগস্থান-

সম্পন্নানাং) নীবিভং (জীবনং) যথা তাৎ (গৌকিজ্ববহনং ভবেৎ); তবৈব (তব্বেব) তৈ (তব অপি নীবিভং (স্থিতং);তাৎ; ছু (ক্বিট্ৰ); বিভেন (ধনেন-ধনসাধোন বা কৰ্ম্বন) জন্তবন্ধ (বাজ্ত) আশা (সভাবনাপি) নাভি ইভি ঃ ১০৮ ঃ ২ ঃ

অুলান্দুলাদে।—বৈত্রেরী এই কথা শুনিয়া বাজকানে জিলানা করিলেন,—ছগবন, ধনসম্পদ্পূর্ণ এই সমস্ত পৃথিবা বদি আবার [হস্তগড] হয়, তবে ভালা থারা আমি মৃত্যুবহিত (মুক্তা) হইতে পারিব কি ৷ প্রিভারেরে বাজকার বলিলেন—না; তবে জগতে ভোগোপ-করণসম্পন্ন ধনীদিপের জাবন বেরূপ হইরা থাকে, ভোমার ভৌবনও সেইরূপ (স্থ্যম্পার) হইতে পারে, কিন্তু বিস্তু বা বিস্তুসাধ্য কর্ম থারা অমৃতস্থলাতের আশাও নাই ইতি ৷৷ ১০৮ ৷৷ ২ ৷৷

শাক্সেয়-ভাল্যভন্। সা এবৰ্জা হ উবাচ—বং বহি, 'ছ' ইতি বিতর্কে; সে মন ইয়ং পৃথিবী তথা তপবন্, সর্বা সাগরপরিন্ধিপ্তা বিজেন ধনেন পূর্বা ক্রাং; কথন্ব দন কপঞ্চনেতি আন্দেপার্কঃ; প্রশ্নার্বা বা. তেন পৃথিবীপূর্ব-বিভসাধ্যেন কর্ম্মণা অভিহাত্রাদিনা অনুতা কিং ক্রারিতি ব্যবহিতেন সম্বন্ধঃ। প্রত্যুবাচ বাজবদ্যঃ - কথমিতি; বনি আন্দেপার্মন্ধ, অভ্যোদনং—নেতি হোবাচ বাজবদ্যঃ ইতি: প্রশ্নতং—প্রতিবচনার্থন্দ্র—নৈব ক্রাঃ অনুতা; 'কং তহি দু বগৈব লোকে উপকর্মন্বতাং সাধনবভাং জীবিতং স্বাধোগায়তোগসম্পন্নন্দ, তথেষ তম্বদেষ তব জীবিতং স্তাং; অনুত্রপ্ত তু ন আলা বনসাপি অভি বিজ্ঞো—বিজসাধ্যেন কর্মণেতি॥ ১০৮॥ ২॥

্টিকা । বৈজ্ঞের নোক্ষেবাবেক্ষরণ। কর্তার প্রকার্যক্ষারান্তনা বর্ণাত-জ্ঞেন্দ্রিক্ত । কর্মানার্যালিবভিজ্ঞানালভিজ্ঞান্তনাক্ষার । কর্মানার্যালিবভিজ্ঞানালভিজ্ঞান্তনাক্ষার । কর্মানার্যালিবভিজ্ঞানালভিজ্ঞান কর্মানার্যালিবভিজ্ঞানালভিজ্ঞান কর্মানার্যালিভার । বিশ্বনার্যাক্ষরাভিজ্ঞানার্যালিভার ও প্রকার্যালিভার নির্বাহিত্যাক্ষানার্যালিভার নির্বাহিত্যাক্ষ্যালিভার । ব্যালিভার নির্বাহিত্যাক্ষ্যালভার নির্বাহিত্যাক্ষ্যালভার । বিশ্বনার্যালভার বর্ষালিক্ষ্যাল্ভার । বিশ্বনার্যালভার বর্ষালিক্ষ্যালভারিভার । বিশ্বনার্যালভার বর্ষালিক্ষ্যালভার । বিশ্বনার্যালভার বর্ষালিক্ষ্যালভারিভার । বিশ্বনার্যালভার বর্ষালিক্ষ্যালভার বর্ষালিক্ষ্যালভার । বিশ্বনার্যালভার বর্ষালিক্ষ্যালভার । বিশ্বনার্যালিক্ষ্যালভার নির্বাহিত্যালিক্ষ্যালভার । বিশ্বনার্যালিক্ষ্যালভার নির্বাহিত্যালিক্ষ্যালিক

कान्यान्यान् ।- [वाकवदा वि बहेबन वनितन नड, डीसीएक

বৈজ্ঞনী বলিলেন,—প্রতিত্ব 'ছ' গলান্ট বিতর্ক-হচক; তলোঃ—হে তগবন্, বিহি গৰত অবাৎ সাগরপনিবেটিতা ও বনপূর্বা এই পৃথিবী ধ্যেন প্রকারে আবার 'অধিকারভুক্ত] হইতে পারে ? কান প্রকারেই নহে; ইবা হইতেছে 'কবব' বাবের 'আব্দেশার্ব' পক্ষে, (১) 'কবং' বাবের প্ররার্বও হইতে পারে;—সে পক্ষে আর্ব হিতেছে এই—পৃথিবীপূর্ব ধন বারা নিশাত অগ্নিহোজাতি কর বারা আবি কি অনৃতা হইতে পারিব ? বাক্তবরা প্রত্যুত্তরে বলিলেন,—'কবহ' বক্তা আক্ষেপার্বক হয়, তাহা হইদে 'নেতি হোবাত বাক্তবরাং' বাকাটী হইবে অনুবোহনস্কাক, আর বহি প্রহার্থক হয়, তাহা হইবে প্রত্যুত্তরে বলিলেন,—'কবহ' অরবোহক—নিশ্রেই অনৃতা হইবে না; তবে কি না, লগতে উপকরণবান্ —স্বসাধনসমন্তিত ধনীলিপের জীবন বেরপ স্থতোপসম্পন্ন হইরা বাকে, তোবার জীবনও ঠিক তত্রপই হইতে পারে; কিন্ত বিক্তবার্থ কর্বার্থকান হারা বনে বনেও অনৃত্যুলাতের হাশা করা বাইতে পারে না ১০৮।২।

সা হোৰাচ মৈত্ৰেয়ী যেনাহং নাম্বভা স্যাং কিমহং তেন কুৰ্যাম, যদেৰ ভগৰান বেদ তদেব মে ক্ৰহীতি ॥১০৯॥৩॥

স্পান্ধ: —[এবমুকা] পা বৈজেরী উবাচ হ— বেন (বিজেন বিজেনাধ্যেন কর্ম্পা বা) অমৃতা (মৃত্যুরহিতা) ন সাং (ন তবেরস্কু); তেন বিজেন অহং কিং কুর্মান্ (ন কিমপীতি তাবঃ); তপবান্ (পৃক্ষনীরঃ তবান্)বং এব [ভম্বতবসাধনং] বেদ (জানাতি), তদেব মে (মঞ্ছং) ক্রিছি (করঃ) ইত্যুর্বঃ ১০৯ ৪০ ৪

শ্ৰু বাদে। এই কথা শুনিয়া মৈছেরী বলিলেন,—বে কিন্তু বা বিক্তসাধ্য কর্মা বারা আমি কমুতা চইন না, আমি ভাষা বারা

अन्य श्रद्धा ।—'कवा' व 'कि' अवृष्ठि नवक्षि दिवस अवार्ध अविश्वावक. दिवस आदि अविश्वावक. दिवस आदि अविश्वावक. दिवस आदि अविश्वावक. दिवस अविश्वावक. विश्वावक अविश्वावक अविष्यावक अविश्वावक अविष्यावक

विकोरबाध्याविः— ह्यूर्वर वाचनम्।



কি করিব? (ভাষাতে আমার কিছুই প্রয়োজন নাই)। আপনি বাহা নিশ্চিতরূপে অমৃভয়সাধন বলিরা জানেন, ভাষাই:আমাকে বলুন ১১৯৯০॥

न्नाक्कस-न्धान्त्रः। ना हाराष्ठ देशात्री। धरमूका ध्रष्ट्राश्चः देशात्री—राष्ट्रावर तनावर नामृष्ठा छात्, कियवर एवन विख्य कृतीत् ? राष्ट्रय धनवात् क्रियम् क्रियम् क्रियम् क्रियम् विक्रियम् विक्रियम

্টীক্ষা। বিশ্বভাষ্টভ্ৰনাগৰখাভাবন্ধিপথা ভলিয়াগাং গ্ৰন্থ যুক্তিনাগৰংকেবাছ্মান-বান্ধাৰ্থ যান্ধুং পজিং নিযুদ্ধানা ডভে—জা ক্ৰেডি ৪১০১৪ন

ভাস্থা-সুকাদে।—'সাহ উবাচ বৈত্তেরী' ইত্যাদি। বৈত্তেরী এইরপ অতিহিত হইরা প্রত্যুক্তরে বলিলেন,—এইরপই বদি হর, তবে আমি বাহা যারা অমৃতা হইব না, সেই বিভ যারা কি করিব ? অর্থাং বিভে আমার কোন প্রয়োজন নাই; প্রনীয় আপনি বাহা তথু অমৃতরলাতের উপার বলিরা জানেন, আমাকে সেই অমৃতযুসাধনই বনুন ৫১০১ ৪ ৩ ট

স বোৰাচ যাজ্ঞবন্ধ্য:—প্রিয়া বভারে ন: সভী প্রিরং ভাষদে, এহ্যাস্থ, ব্যাখ্যাসামি তে, ব্যাচক্ষাণক্ত ভূ মে নিদিধা।সম্বেতি । ১১০ । ১ ।

জ্ঞান্তনাপ্র: ।— সঃ (এববভিছিতঃ) বাজ্ঞান্তঃ উবাচ হ— বড় (অনুকলারাং, আজ্ঞানে বা) আং বৈত্তেরি. [জং] নঃ (অবাকং) প্রিয়া (প্রীতিভালনং) সতী [ইলানীবপি] প্রিরং (বনোহসুকূলং) ভাবনে (কথরিন); এই (আগজ্ঞা); আগ্রু উপবিশ `[বর সবীপে]; তে (ভব) [অতীইন্ অনুভ্যনাবনন্] ব্যাখ্যাক্ষমি বিভারেশ কথরিব্যানি); ব্যাচজ্ঞান্ত (ব্যাখ্যানং কুর্মভঃ) বে (বর) [বচনানি] ডু নিহিব্যান্ত (অর্থং নিশ্চিত্য ব্যাভূবিজ্ঞা) ইডি ১০০০ ১৪ ১

শ্বাসুক্রাদে। [মৈত্রেরী এই কথা বলিলে পর,] বাজ্ঞবর্ত্তর আহলাদ প্রকারে বলিলেন,—করে সৈত্রেরি,ভূমি পূর্বেও আমার প্রিয়া (প্রিরকারিশী) ছিলে, এখনও আমার মনের মত কথা বলিভেছ; এস. আমার নিকট উপবেশন কর; আমি ভোষার ক্ষতীক্ত বিষয় বিস্কৃতভাবে

বলিভেছি; ব্যাখ্যাখালে তুমি আমার কথা স্থিরচিত্তে অবধারণ করিতে টেকী কর ॥ ১১০ ॥ ৪ ॥

শা জ্বাক্তাক্তাক্তা । স হোৰাচ বাক্তবহাঃ। এবং বিভসাধোহর্তবসাধনে প্রভাগাতে, বাক্তবহাঃ বাভিপ্রারসম্পত্তী ভূট আহ,
স হোবাচ—প্রিরা ইটা, বভেত্যকুকম্প্যাহ—অরে নৈজেরি, নোহসাকং
পূর্কমণি প্রিরা সতী ভবলী ইদানীং প্রিরমেণ চিভাত্ত্বগং ভাগসে; অভঃ এহি
আস্ব উপবিশ, ব্যাধ্যাস্যামি—বং তে তব ইটমমৃতবসাধনমার্কানং কর্পরব্যামি। ব্যাচক্ষাণস্য ভূবে মন ব্যাধ্যানং কুর্কতঃ, নিদিধ্যাস্ব বাক্যানি
অর্থতো নিশ্বনে ব্যাভূমিক্ষেতি ৪ ১১০ ৪ ৪

টীকা। ভাষাণেভিত যোজেশাহ বিষম্বামানে প্রৌতি জ হেজ্যান্তিনা। বিজেন নাবাং কর্ম, তামিরমুভবনাধনে পভিতে কিমহং তেন ক্র্যামিতি ভাষাহাংশি এজা-বাতে সতীতি বাবং। ভাতিমানো ন কর্ম মুক্তিকেত্মিতি, ভক্ত ভাষামাহাংশি সম্পত্নে সভাবিভার্য: ১০৪

ভাজ্যান্যুক্তাদে। "দ হ উবাচ বাজবদ্যা" ইতিণ বৈত্রেয়ী এইরপে বিশুসাধ্য আপেক্ষিক অমৃতভ্যবাধন কর্ম প্রত্যাধ্যান করিলে পর, বাজ-বদ্য বীর অভিলাব সিদ্ধ হওরার পরিভূপ্ত হট্যা বলিলেন—তিনি সদর হৃদরে বলিলেন,—আরে বৈত্রেরি, ভূমি পৃক্ষেও আমাদের প্রিরা অর্থাৎ প্রীতি-ভাজন ছিলে, এখনও প্রির ই—বনের মত কলাই বলিভেছ; অতএব এস, উপবেশন কর. [তোমার অভিলবিত বিবর] আমি ব্যাখ্যা করিব। ব্যাখ্যা-কালে আমার কথাগুলি নিদিধ্যাসন কর—তাহার অর্থ নিশুন্ন করির। চিন্না করিতে ইক্ষা কর, অর্থাৎ আমার বণিত বিদর অবধারণ করিরা ভাষ্যরে ধানি কর ৪ ১২০ ৪ ৪ ট

স হোষাচ—ন বা জরে পড়া: কামার পতি: প্রিরো ভবতি, আজনন্ত কামার পতি: প্রিরোভবতি। ন বা জরে জারারে কামার কারা থিরা ভবতি, আজনন্ত কামার জারা প্রিরা ভবতি। ন বা জরে পুরোগাং কামার পুরা: থিরা ভবতি আজনত কামার পুরা: থিয়া ভবতি। ন বা জরে বিজ্ঞা কামার বিজং থিরং ভবতি আজনত্ত কামার বিজং প্রিয়ং ভবতি। ন বা অরে ব্রহ্মণঃ কামার ব্রহ্ম থ্রিয়ং ভবতি।

আত্মনন্ত কামার ব্রহ্ম থ্রিয়ং ভবতি আত্মনন্ত কামার ক্ষক্রং প্রিয়ং ভবতি। ন বা অরে লোকানাং কামার লোকাঃ প্রিয়া ভবত্তি। ন বা অরে লোকানাং কামার লোকাঃ প্রিয়া ভবত্তি। ন বা অরে লোকানাং কামার লোকাঃ প্রিয়া ভবত্তি। ন বা অরে দেবানাং কামার দেবাঃ প্রেয়া: ভবত্তি আত্মনন্ত কামার দেবাঃ প্রিয়া ভবত্তি। ন বা অরে ভ্তানাং কামার ভ্তানি প্রিয়াণি ভবত্তি। ন বা অরে ভ্তানাং কামার ভ্তানি প্রিয়াণি ভবত্তি। ন বা অরে স্কর্মার কামার সর্বাং প্রিয়ং ভবতি আত্মনন্ত কামার সর্বাং প্রিয়ং ভবতি আত্মনন্ত কামার সর্বাং প্রিয়ং ভবতি। আত্মা বা অরে ক্রত্তবাঃ প্রোভব্যো মন্তব্যো নিদিধাাসিতব্যো মৈত্রেয়ি; আত্মনো বা অরে কর্শনেন প্রেরণেন মত্যা বিজ্ঞানেনেদ ও সর্বাং বিদিতম্ব। ১১১। ৫ ।।

সঞ্জনাথ:। অনৃতবসাধনং বৈরাগ্যর্পদিশন্ আছ—"ন বা অরে"
ইত্যাদি। সঃ (বাজবভাঃ) উবাচ হ—অরে বৈরেরি, পত্যুঃ কাবার
্রুখাদিপ্ররোজনার) পতিঃ ন বৈ (নৈব) প্রিরঃ (প্রাতিতাক) ভবতি;
[কিং তহি ?] আছনঃ ভূ: এব) কাবার (প্ররোজনার) [তার্য্যায়া] প্রেরঃ
ভবতি; তথা অরে নৈরেরি, জায়ারৈ (জারায়াঃ কাবার জারা ন বৈ
[পত্যুঃ] প্রিরা ভবতি; [কিং তহি ?] আছনঃ ভূ: এব) কাবার
কায়া পত্রী প্রুয়ঃ প্রিয়া বিরঃ (প্রোজালাক তবতি; তথা, অরে
বৈরেরি, পুরাণাং কাবার পুরাঃ ন বৈ [পিছুঃ] প্রিয়াঃ ভবত্তি,
আছনঃ ভূ: এব) কাবার পুরাঃ প্রিরঃ (প্রীতিপাঞালাক ভবতি। তথা,
অরে বৈরেরি, বিভক্ত (বনত পথালেঃ) কাবার বিরুং ন বৈ [ধনিবাং]
প্রিরং ভবতি; [আপিছু] আছনঃ ভূ: (এব) কাবার বিন্তুং প্রিরং
ভবতি; [আপিছু] আছনঃ ভূ: (এব) কাবার বিন্তুং প্রিরং
ভবতি; [আপিছু) আছনঃ ভূ: বাজপত্ত) কাবার বাছ ন বৈ প্রিরং
ভবতি, [আপিছু) আছনঃ ভূ: কাবার বাছ প্রিরং ভবতি। তথা অরে
বৈরেরি, ক্রম্ভ (অভিন্নস্ত) কাবার কছন ন বৈ প্রিরং ভবতি (লোকত);
[আপিছু] আছনঃ ভূ: জাবার প্রিরং ভবতি। তথা আরে ব্রেরেরি, লোকাবাং

(पर्नाशैनार) कावात लाकाः न देव क्षित्राः छवछि ; [जानिष्] जाजनः छू कावात लाकाः क्षित्राः छवछि । छवा, जद देवत्वति, त्ववानार कावात त्वातः न देव क्षित्राः छवछि ; [जानिष्] जाजनः छू कावात ,क्वाः :क्षित्राः छवछि । छवा जद देवत्वति, छूछानाः कावात छूछानि (क्षानिमः) न देव क्षित्रानि छवछि ; [जानिष्] जाजनः छू कावात क्ष्यां । क्षित्रानि छवछि । [किर वहना] जदा देवत्वति, नर्जन्न कावात नर्जरं न देव क्षित्रां छवछि ; [जानिष्] जाजनः छू कावात नर्जरं क्षित्रः छवछि । [जाञ्च] जदा देवत्वति, जाजा देव (क्ष्य) अहेवाः (नाजार-कर्जवाः) ; [छङ्गात्रवाह—] त्याणवाः (नाजार्गां (नाजार्गां) ; निक्रिगां निष्ठवाः (नित्रवार वाण्वाः) ; न्यवाः (वृक्षिणः वावश्वां । ; निक्रिगां निष्ठवाः (नित्रवार वाण्वाः) । जदा देवत्वति, जाजनः प्रनीतन अवत्यन व्या (विक्षां) । विक्षां । विद्यानि । विक्षां ।

মুক্তান্দুবাদে ।—যাজব্য কহিলেন,—লরে মৈন্তরি, পতির
প্রীতির কল্প পতি কথনই ভাগ্যার প্রিয় হয় না ; পরস্ক আন্ধ-প্রীতিব
কল্পই প্রিয় হয় ; সেইরূপ পদ্ধীর প্রীতির কল্প পদ্ধী কথনই সামীর
প্রিয়া হয় না ; পরস্ক সামীর আন্ধ্রীতির কল্পই পদ্ধী প্রিয়া হয় ; প্রের
প্রীতির কল্প প্রক কথনই পিভার প্রিয় হয় না ; পরস্ক নিক্রের প্রাতির
কল্পই পুরু পিভার প্রিয় হইয়া থাকে । সেইরূপ ধনের প্রীতির
কল্প ধন কথনও লোকের প্রিয় হয় না ; পরস্ক কেবল আন্ধ্রীতির কল্পই
ধনসমূহ লোকের প্রিয় হইয়া থাকে ; সেইরূপ নান্ধণের প্রীতির কল্পই
বান্ধান কথনই প্রিয় হয় না ; কিন্তু আপনার প্রথম কল্পই নান্ধণকাতি
লোকের প্রীতিভালন হইয়া থাকে ; এবং ক্ষরিয়ের প্রীতির কল্পই ক্ষরিয় [রাজা] লোকের প্রিয় হয় না ; পরস্ক আপনার প্রীতির কল্পই
ক্ষরিয় [রাজা] লোকের প্রিয় হইয়া থাকে । এইরূপ স্বর্গাদি
লোকের প্রীতির কল্পও স্বর্গাদি লোক-সমূহ কথনই সাধারণের প্রিয়
কয় না ; পরস্ক আপনার প্রীতির কল্পই স্বর্গাদি লোক প্রিয় ইইয়া
থাকে ; ক্ষরে মৈন্তেরি, দেবগণের প্রীতির কল্পও দেবগণ কাহারও
থাকে ; ক্ষরে মৈন্তেরি, দেবগণের প্রীতির কল্পও দেবগণ কাহারও



প্রিয় হন না: কিন্তু আপনার প্রতিসাধন বলিয়াই দেবসব প্রীক্তিভাজন হইরা বাঁকেন; অনে নৈত্রেরি, প্রাণিগণের প্রীক্তির জন্তুক্ত প্রাণিগণ কাহারও প্রিয় হর না: পরস্কু আন্ধ্রপ্রীতির জন্তুই প্রাণিগণ জপরের প্রিয় হইরা থাকে; অধিক কি, অনে নৈত্রেরি, অপর কাহারও প্রীতির জন্তুই অপর কেহ কথনই অপরের প্রিয় হয় না; পরস্কু আপনার প্রীতির জন্তুই সকলে সকলের প্রিয় হইরা থাকে। অভএব ডে নৈত্রেরি, সর্ব্বাধিক প্রিয় আন্থাকেই অবস্থ দর্শন করিবে, আল্ল ও আচার্ব্বের উপদেশ হইতে ভাহার স্বরূপ ভানিবে; ভর্ক্ভারা ভাহার স্বরূপ অবধারণ করিবে; ভাহার পর নি:সংশয়রূপে ভাহার স্বরূপ থান করিবে। অরে নৈত্রেরি আল্লার দর্শনে, প্রবণে, মননে ও নিধিধাসনেই এই সমস্ত জন্তুৎ পরিক্রান্ত হয় ৪ ১১১ ৪ ৫ ৪

শাক্তয়-ভাল্য ম। স হোবাচ—শন্তহসাধনং বৈরাপ্যমুপদিদিশ্বঃ
দারাপতিপুরাদিতো৷ বিরাপদৃৎপাদরতি তৎসর্যাসার। ন বৈ—বৈ-শব্দঃ
প্রসিদ্ধরণার্থা; প্রসিদ্ধরে এতং লোকে; পত্যাঃ তর্ত্ত্ব; কাষার প্রয়োজনার
দারারাঃ পতিঃ প্রিরো কবতি। কিং তর্ত্তি আব্দর কাষার প্রয়োজনারৈই
চার্যারাঃ পতিঃ প্রিরো কবতি। তগা ন বা অরে কারারৈ ইত্যাদি সমানবল্পং; ন বা:অরে পুরাণান্য, ন বা অরে বিভাল্য, ন বা অরে ক্রেল্য, ন বা
দরে ক্রেল্য, ন বা অরে লোকানান্য, ন বা অরে ক্রেল্যান্য, ন বা অরে
ভ্তানান্য, ন বা অরে সর্কার্য। পূর্বাং পূর্কাং বধানরে প্রীতিসাধনে বচনন্য, তর
তরে ইইতরভাবৈরাপ্যস্ত ; সর্বপ্রহণন্ উভ্যাস্ক্রার্থন্। তলালোকপ্রসিদ্ধরেশ্বং—
লাবৈর প্রিরঃ, নারং। তক্তেৎ প্রেরঃ পুরাৎ ইভ্যুপক্তবন্, তব্যাতৎ বৃদ্ধিহানীরং প্রপঞ্জিতন্। ভ্যাহান্মন্তীতিসাধনভাত্ গৌলী শক্তর প্রীতিরান্তেব
মুখ্যা।

उपार पाया देव पद प्रहेवाः वर्गमार्थः, वर्गमिववत्रवागाविक्षस्यः ; त्वावन्यः भूमिवाविद्यः पायप्रक्रमः ; भूमिववत्रवाधः प्रविद्यानिक्षयः विश्वाविद्यः विश्वाविद्यः ; व्यव्यवस्थितः ; व्यव्यवस्थितः ; व्यव्यवस्थितः । व्यव्यवस्थितः । व्यव्यवस्थितः । व्यव्यवस्थितः । व्यवस्थाविद्यः । व्यवस्थाविकः वर्गाव्यविद्यः वर्गाव्यविद्यः । वर्षः व्यवस्थावि क्षेतिविद्यः वर्गाव्यविद्यः । वर्षः व्यवस्थावि क्षेतिविद्यः वर्गाव्यविद्यः ।

নক্ষণৰ আত্মতবিদ্যরা অধ্যারোগিতপ্রত্যরবিদরং ক্রিয়াকার্ককলাত্মকর্ অবিদ্যাপ্রত্যরবিদরন্—রক্ষাবিব দর্শ-প্রত্যরং, তর্গকর্মার্কনাল —আত্মনি বলু অরে বৈজেরি, লুটে প্রতে মতে বিচ্চাতে ইলং দর্মাং বিদিতং বিক্রাতং ভরতি ৪ ১১১ ২ ৪ ৪

क्रिका : अपूर्वनायमधासकाम: farfwa- (seigt at men ebat butte amai. किविकि व वा बारत प्रकृषिकारि वाकाविकानकात-अनुरक्षितः । वेशाः कातावीतः वादार्वत्वम विकासकारकारकोपाधिकविकारकम प्रकाशकार्वाक (मध्य बाहरदे—म वा देखि । १२१ विश्वपादन कार्बाद , ७२१ — अनिकासिक । वर्षादक ক্ৰৰে বিভাৰক্ৰাই-পুৰ্ব্জং প্ৰকৃতিভিত্ত। বৰ্ষদানন্ত বিভিন্তৰত ভল্কাভিক্ৰমা ভলিত বিষয়ে পূৰ্বাং পূৰ্বাং বছননিতি বোজনা: তাম কেতুবাৰ—ভাগ্ৰেভি। সাবা আছে সৰ্বাং क्षिण्डाहुक्त, प्रकारीमायुक्त्वाषात्वम पूनकृष्कि शतकावि आपवान - कार्या श्रास्त्र शिक्षित । क्रेक्यक्क्रकामायनि बदनः कर्क्याः , व । अर्था विरम्परका अक्षेत्रः नकारक, रक्तम माथाकार्यः নৰ্মপৰ্বাহের বিভাগর্বপুৰ্বাহয়তি - জন্মানিভি। বিষয়বালৰ আখ্যান্ত:, ভাষেত্ৰাশি কথাতে তেও পুৰক্তলি: ভাৰতাৰ নত্তদেক্তদিতি। অবোশকান্বিবরণালা: ইতিবাধারেবেতামুক্তা, পুরাধারণি ক্ষম্বিধিত আরু ভ্রম্মান क्तिक : बायरमा मिश्किनवनैकाल्यवस्य मश्यामस्ययक्तिशासस्याकाशास्य गाउदहे-তত্মাদিত্যাদিম। चवर पुनविका वर्षनम्बर्गणाण, स्वाह--(आजना केन्द्रिः। अवनीवीवावक्रक द्ववाक्रकावकाकाः किविति मह्मवाववाद्यविकावकात्र-- এবং জীতি। विश्वासनाविष्ठदेशस्त्रभाव्यः। अत्रवाशिसमाधिकसावक्रात्राक्तः महेर्वद्वराष्ट्रसामः वाहरक टिएका: नव्यवानक्वाद्यक्षियमान्द्रविकानकाव-मह्द्रकाड । स्वतंत्र स्वानविकात्रदेव अवानकांकांकाः यनम्मिकाामनस्याः छ रकात्रीश्राक्तिकाश्राक्षकान्त्रीक्षकार्याः वना अवनानीक्ष मक्ष्मकृष्ठीदमन् मबुक्तिकानि, १वा मामश्रीरणोकनाक्षिकामः कर्मानृश्यः निवाहि । वननावकारत अवनेवारात् देवत कञ्चणकरकः। वननाविना विजिवकाशकारत वाकाक कन-वक्ष कानसम्बद्धारमात्रकार्यः। यहावर्यमञ्जू कारपर्यामान-वाम छारिकारः। वर्ष निकित्तर अक्षण वाति, स्टाप्य वर्गा अवावशायिक्षण वात्रवावशायिक वात्रवा विवान कावा, कक विवस्तका विका क्रियाकासणः क्रमुवर्धनार्थवाद्यक्ति मनका : क्षविकाशाद्या-শিক-মন্তারবিবরবিভান্তবের ব্যাকরোতি। অনিচ্ছেন্তি। mfamming mujefange ণ্টাত্তবাদ — বাক্তপাত্মিক্তি ১১১:৫৫

ভাজ্যান্দ্রাদে। - বোদকাতের একমাত্র উপায় বৈরাগোর উপাদ-শেক্ষায় বাজবত্য-থবি শ্রী-পুরামি বিবরে আসজি-নিবৃত্তির লভ প্রবমতঃ বৈরাগ্য-সমুৎপারনার্ব বলিতেছেন,—প্রতির 'বৈ' শব্দী প্রসিদ্ধিয়ারক; অগতে ইহা প্রসিদ্ধই আছে দে, পতির—বাষীর কাষের বন্ধ (প্রয়োজনে)
বাষী কথনই পরীর প্রির হন না; তবে কি না, আপনার কাষের বন্ধই
পতি ভার্যার প্রির হইরা থাকে; দেইরপ, "ন বা অরে আরারাঃ" "ন বা
অরে পূরাণাং" "ন বা অরে বিভক্ত" "ন বা অরে রন্ধণঃ" "ন বা অরে করকে"
"ন বা অরে গোকানাম্" "ন বা অরে দেবানাম্" "ন বা অরে ভূতানাম্" "ন বা
অরে পরাক্ত" ইত্যাদি অন্তান্ধ অংশের অর্থ পূর্কের অন্তর্জনাম্ "ন বা
অরে পরাক্ত" ইত্যাদি অন্তান্ধ অংশের অর্থ পূর্কের অন্তর্জনাম্ "ন বা
স্থান্ধত প্রীতিসাধনের উল্লেখ করার অভিপ্রার এই বে, প্রথমেই সে
সমুদ্ধর বিসায়ে বৈরাধ্য সমূৎপাদন করা আবপ্তক; উক্ত ও অন্তক্ত সমন্ত
'বসমুস্কেলনের করা প্রেমি "স্কান্ধ" বলা চইয়াছে। অতর্থন ইহা প্রসিদ্ধ
করা বে, কপতে আন্তান্ধ একমার প্রির, অন্ত কেহ নহে। পূর্কে বে,
"তল্পত্ব প্রোহ" ইত্যাদি বাক্য উপন্তন্ত হইরাছে, এই প্রতিটি
ভাহারই বিক্ত ব্যাখ্যান্থানীয়।

অতএব নায়াতেই মুব্য প্রীতি; সেই আয়্রপ্রীতির সাহাব্যকারী বলিয়া
অপ্তর বে প্রীতি-সম্বন্ধ, তাহা পৌৰ বা অপ্রধান। অতএব আয়াই প্রইবা—
সাক্ষাংকারের উপসুক্ত, অর্থাং আয়্বিব্যক দর্শন সম্পাদন করা আবস্তক;
প্রোত্তবা—প্রধান শাস্ত্র ও থাচার্য্য হইতে জাতবা; পশ্চাং মন্তব্য আর্থাং
মন্ত্র্যুক্ত তক হারা তাহার সমর্থন করিবে, তাহার পর নিবিধ্যাসিতবা
অর্থাং নিঃসংশর্ক্তপে তাহাকে ধ্যান করিতে হইবে; এইক্রপে প্রবন্ধ, মনন
ও নিনিধ্যাসনের সাহাব্যে পরিশোধিত হইলে পর, আয়া প্রত্যক্ষসোচর
হইয়া থাকে। যথন উক্ত সাধনগুলি একই আয়্ববিব্যরে অনুসভ্তাবে
প্রবৃক্ত হয়, তবনই ব্রক্তৈকর-বিশ্বরে সমান্ত্র্যুক্ত হয়, নচেং কেবল
প্রবাধানে হয় না। রক্ষ্তে সর্পানারির করে আয়াতেও অবিভা হারা
সমারোপিত দান্তিজানমূলক বে, বর্ণাপ্রবাদি-বক্ষসম্পন্ধ রাক্ষণ-ক্ষরিয়াদি
বিভাগ, হাহা অবলম্বন করিয়া ক্রিয়াকারক ও ফলসাপেক্ষ কন্ধ সম্বন্ধ
বন্ধার উক্তক্তে বলিতেছেন,—মবে বৈত্রেরি, আয়্ববিব্যে হর্ণনি, প্রবন্ধ,
সমন ও বিজ্ঞান হইলেই লুক্তমান সমন্ত ক্ষণং বিজ্ঞাত হইয়া থাকে ১১১১৪৪

ত্রদ্ধ তং পরাদাদ যোহতত্তাদ্ধনো ত্রদ্ধ বেদ কতং তং পরাদাদ যোহতত্তাদ্ধন: কতং বেদ, লোকাল্যং পরাত্র্যোহতত্তা- শ্বনো লোকান্ বেদ, বেদ। তং পরাত্ব্যি। হস্তভালন: বেদান্ বেদ, স্তানি তং পরাত্ব্যিহস্তভাগ্ধনে। ভূতানি বেদ, সর্বাং তং পরাদাদ্ বোহস্তভাগ্ধন: সর্বাং বেদ, ইদং ত্রশ্বেদং ক্ষত্রমিমেলোকা ইমে দেব। ইবানি-ভূতানীদম্ সর্বাং যদরমাপ্রা ॥১১২॥১॥

ज्ञाहरा व्यः—हेमानीः असंबाध सारा अभाविष्ठ — अर्थाह । अस् (बाधनका किः) कः ' धनः) अत्रामार (अत्र क्र्यार अत्रिक्षतर), [कष् १] यः (धनः) आधानः अक्षत । आधानि (त्रिक्रावाका) उस् (बाधनका किः) तम् (धाना) क्रया क्रया (धाना क्रया क्रया क्रया क्रया क्रया क्रया (धाना क्रया (धाना क्रया क्रया (धाना क्रया क्रया (धाना) धाना क्रया (धाना) धाना (धाना) धाना

আ লালু আদে '— এখন সর্বার আত্মভাব উপপাদনার্থ বলিতেছেন
— এক্ষ প্রাক্ষণভাতি ভাষাকে পরাস্ত করে (প্রভারিত করে), যে
বাক্তি ব্যাক্ষণভাতিকে আত্মা হইতে পৃথক্ বলিয়া জানে; সেইরূপ
ক্ষিয়েভাতি ভাষাকে পরাস্ত করে, যে বাক্তি ক্ষিয়েরে আত্মার
অভিরিক্ত বলিয়া মনে করে, কর্মফলাল্লক স্বর্গাদি লোকসমূহও
ভাষাকে বঞ্চিত করে, যে ব্যক্তি আত্মার অভিরিক্ত বলিয়া লোকসমূহকে জানে; লোকপাল ও ইন্দ্রিয়-পরিচালক দেবভাগণ ভাষাকে
বঞ্চিত করে, যে ব্যক্তি দেবভাগণকে আত্মা হইতে অভিরিক্ত বলিয়া
মনে করে; প্রাণিগণ ভাষাকে পরাস্তৃত করে, যে ব্যক্তি আত্মার
অভিরিক্ত বলিয়া প্রাণিগণকে জানে; অধিক কি, সমন্ত জগবই ভাষাকে
বঞ্চিত করে, যে ব্যক্তি সমন্ত জগবকে আত্মার অভিরিক্ত বলিয়া
মনে করে। এই আক্ষণ, এই ক্ষিয়ে, এই সমৃত্য লোক, এই সমন্ত

দেৰতা, এট সমস্ত ভূত এবং এই সমস্ত ভগৎ সেই আশ্বস্কৰ্পই বটে, যে আশ্বান ক্থা জন্টব্য শ্ৰোভব্য প্ৰভৃতি কণান্ত কৰা হইয়াছে ॥ ১১২ ॥ ৬।

স্পাক্ষর-ভাজাত। নমু কণমন্তিন্ বিদিতেইনাদিকিং তবতি? নৈগ দোৰ: ; ন হি আন্তব্যক্তিৰান্তং কিঞ্চিতি ; বদ্যন্তি, ন তবিদিতং ভাং ; ন হন্দন্তি ; আইয়েব তু সর্মন্ ; তবাং সর্মনান্তিনি বিদিতে বিদিতং সাথে। কথং পুনরাইয়েব সর্মনিত্যেতজ্ঞাবস্তি—

ব্রন্ধ ব্রন্ধণজাতিকাং পুরুষং পরাদাৎ পরাদ্যাৎ পরাদ্র্যাৎ, কৰু ? বাহন্যভাষ্ণনঃ আত্মন্ত্রপথাতিরেকেশ আইয়ব ন তবতি ইয়ং ব্রান্ধ্রণভিরিতি তাং বা বেদ, তং পরাদ্যাৎ সা ব্রান্ধ্রণতিরনাম্বন্ধ্রণেশ নাং পত্রতীতি; পরমাদ্রা হি সর্কোবায়া। তথা করং করিরজানিং, তথা লোকাং, দেবাং, তৃতানি, সর্কার্ ইদং ব্রন্ধেতি—যাক্রক্রান্তানি, তানি সর্কাশি আইয়ব, বদরমাদ্রা—বোংগ্রমাদ্রা গুইবাং প্রোতবা ইতি প্রকৃতঃ—বলাদান্তনো জারতে, আত্মনার লীয়তে, আত্মনগ্রুক ভিতিকালে, আয়ুব্যতিরেকেশাগ্রহণাৎ, আইয়ব সর্কার্ ১১২ ৪ ৬ ৪

শিক্ষা। আছনি বিভিন্ন সর্কা বিভিন্নবিয়াক্ষাক্ষিণতি সন্মিতি। গৃষ্টবিরোধনে নিরাধনৈ নিয়া সেনা ইতি। আছনি আন্দে আন্তবেদ দর্বা, ভাটোর্বাভরভাভাবা-বিল্লালয়ে পুটারি—অস্নী ভ্রানিসা। আলাক্ষাপ্রক্ দ্বাভাগানুক্র বাজার আন্তর্ভাভিত আন্তবিদ্যা। পুলবা বিশেষতো আছু: অরম্বুপভাল প্রতীক্ষ দৃষ্টারা বাজারাভি—ক্ষামভানিসা। প্রকাশে পুরুষলাগানিকঃ গর্মান্ত ক্ষামভানিত। প্রকাশিকা বাজারাভিনে ব্যবহালয়ে প্রকাশিকা বাজারাভাগি বাজারা ব্যবহাণিত বাজারা ব্যবহাণিত বাজারা ব্যবহাণিত বাজারা ব্যবহাণ বাজারাভাগি বাজারাভাগি বাজারা ব্যবহাণিত বাজারা ব্যবহাণ

ভাস্থ্যান্দু আদে। ভাগ, এক বৰ বিজ্ঞাত হইলে অপথ বৰ বিজ্ঞাত হয় কিব্ৰূপে ? না--ইহা গোৰ নহ; কেন না, আত্মাভিব্ৰিক্ত অন্ধ কোনও বন্ধ নাই; বদি বাকে, তবে অবস্তই ভাষা অবিদিত বাকিতে পাৱে সভ্য, কিন্তু আত্মাভিথিক ত কিছুই নাই; আত্মাই সমন্ত; স্ভৱাং আত্মবিজ্ঞানেই সমন্ত বিজ্ঞাত হইতে পারে। আত্মাই বে সর্কাত্মক কি প্রকারে, এবন ভাষা বুলাইরা বলিভেছেন---

নাম পর্বাৎ প্রাক্ষণনাতি ভাষাকে পরান্তিত করে; ভাষাকে १—বে ব্যক্তি পাছার পাছত প্রান্তি কানে, পর্বাৎ এই রান্ত্রপ লাভি কবনই পাছবন্ত্রপ হইতে পারে না, এইরপ যনে করে; এ বাজি প্রনায়-বার্রণে পানাকে বর্ণন করিতেছে—বলিরা সেই রান্ত্রপনাতিই সেই ব্যক্তিকে পরাভূত করে; কারণ, পরমায়াই ববন সকলের পাছা, [তবন সকল পহার্বকে পাছাব্ররোগ দর্শন না কর) অপরাধের কারণ হয়]। সেই রূপ ক্ষর অর্থাৎ করির জাতি, সেইরপ শোকসমূহ (পর্ণ প্রান্তি । সেইরপ কেবতাপণ, ভূতপণ, এবং সমন্ত কারণ লাভাই বটে—বে পাছা 'প্রকর্বা শোক্তবা' প্রভৃতি কবার প্রভাবিত হইরাছে, সেই পাছাই বটে; বেছেড্, পাছা হইতেই উৎপর হয়, পাছাতেই লীন হয়, এবং ছিতিকালেও সমন্ত লগৎ পাছা-ব্যরণেই থাকে; কারণ, আছাতিরিক্ত বলিয়া কোন বন্ধবই জান হয় না; সেই কেতু এ সমন্ত আছাপ্রপ্রপর্চ বটে। ওচাতিরিক্ত কিছুই নাই) ৪:২২৪ ৬ ৪

স বধা তুন্দুভেইন্সানক ন বাফাঞ্ শবা হন্ শকুরাদ্ গ্রহণায়, তুন্দুভেস্ত গ্রহণেন তুন্দুভাগিতক বা শব্দে। গুহীতঃ ॥ ১১৩॥ ৭॥

স্কুলাথ: :—ইদানীমায়বারপেণ কগণ্ডহণে দৃটার্থনবভাররতি—"ন
যথা" ইত্যাদি। সং (দৃটারাং) যপা (যথং) চুল্ডেং (ভদাব্যাভয়ন্ত)
হক্তমানত (দুড়াদিন) ভাচ্যমানত গতঃ) বাজান্ ভদিতরান্) শকান্ একণার
(প্রহীজুং) ন শক্রাং [কোঃপি জনঃ]; চুল্ডেং চুল্ড্যাধাতত (ছুল্ভাাছাত্র-শক্ষ্যমান্ত) গ্রহণেন ডু (পুনঃ) শকঃ অরুং শকঃ গৃহীতঃ ভবতি;
[এবং বা অরে অরুষ্ উত্যুক্তর্দশ্যক্তা সম্কঃ] ১১০ । ৭ ॥

ভাৰাকুতাপ ৷—কিরপে জগৎকে সান্নবরূপে গ্রহণ করিতে হয়, তাহার দৃষ্টান্ত বলিতেছেন—দেই দৃষ্টান্তটি হইতেছে এই—বেমন তুন্দৃভিবান্ত বাজাইলে বাহিরের অক্সাশন গ্রহণ করা যায় না, অর্থাৎ পৃথক্ বলিয়া ধরা যায় না, পরস্ক তুন্দৃভির কিংবা তুন্দৃভিশন্দের গ্রহণে অক্সাশন্ত সৃহীত হইয়া থাকে, অর্থাৎ অপর বত শন্দই আছে, তৎ সুমস্ত ভুন্দৃভিশন্দের সহিত মিলিত পাকিয়া তাহার সলে সলে প্রভীতি-সোচর হয়, [তারুপ] ঃ ১২০॥৭॥

विकीरमध्यापाः क्षूर्यः सामनम्

স্পাক্ষার-জ্ঞাক্ষ্য । কবং পুনরিবানীর ইবং সর্বাহরেতি প্রতি প্রতি প্রতি ; তর দুইার উচাতে—

বংশরপবাতিরেকেণাগ্রহণং বসা, তসা তহাজ্ববেব লোকে দুইব্;
স ববা—স ইতি দুইাল্ডঃ; লোকে ববঃ চুন্দুডেঃ তের্ব্যাহেঃ হ্রারানস্য
তাডামানসা স্পাদিনা, ন বাজান্ শজান্ বহিচ্তান্ শকবিশোন্
চুন্দুভিশকসাবাজাৎ নিষ্টান্ চুন্দুভিশকবিশেবান্ ন শুকুরাৎ গ্রহণার প্রহীতুর্;
চুন্দুতের প্রচণেন, গুন্দুভিশকসাবান্যবিশেবকেন গুন্দুভিলকাঃ এতে ইতি
শকবিশেগা গুলীতা ভবন্ধি, চুন্দুভিশকসাবানাব্যতিরেকেশাভাবাতেবার্
চুন্দুভাগাতসা বা, চুন্দুভগারনন্যাগাতঃ,—চুন্দুজাবাতবিশিষ্ট্রসা শকসাবানাসা গ্রহণেন ভালতো বিশেষ গৃহীতা ভবন্ধি, নতুত এব নিভিন্ন
গ্রহীতুং শকারে, বিশেষরপেণাভাবাতেবার্, তথা প্রজ্ঞানব্যতিরেকেশ
শক্ষাগারি হয়োর্ন কল্ডিছরবিশেয়ো গুলতে: তথাৎ প্রজ্ঞানব্যতিরেকেশাভাবাে
ফুক্তস্তেলাম্ভ ১২০৪৭ঃ

নীকা। বিভাবদান সর্বাচনানন আতুবন্দা আপনাভানিভানিকান করা সুন্ধিত। বট ভূবতীভানিঅভাননাতি পানিবভি—চিন্মাইন্তি। ব
বধা বুজুভেনিজানি বানামনতারণতি—ভ্রুন্তি। সর্বাচনভিন্তেনেশানন মন্তব্যর্থ। ব
বধা বুজুভেনিজানি বানামনতারণতি—ভ্রুন্তি। সর্বাচনভিন্তেনেশানন মন্তব্যর্থ।
বৃষ্টারে বিবজিত সংক্রিন্তি ন্যাইন্তান্ত্রন্তি। ব্রুল্ভিন্তানালভানি বাচাই লা
ব্যর্থেভানিস্থা। নন্ধিবেশনের বিবছনতি—মুকুভ্রীতি। করা ভবি বুকুভিন্তবিবেশনার প্রবাদ নদ্মুকুভ্রুন্তি। বৃত্তাভ্রুভিত। করা ভবি বুকুভিন্তবিবেশনার প্রবাদ নির্দ্ধান বিভাগি বাচাই স্কুকুভান্তিভ্রুভিত। বানবার্থনাল—ভূম লাভানিস্থান বিভাগি ভ্রুভিত। উল্পর্থা বাভিন্তেন্ত্রভিত। বানবার্থনাল—ভূম লাভানিস্থান বিভাগিত ভ্রুভিত। উল্পর্থা বাভিন্তেন্ত্রভিত। বিবছনিভ্রুভিত।
বিবজিত লাগ্রিভিন্তান্তর ভ্রুভিত ভ্রুভিত। ভবৈন বছনিশ্বেভ্রন্যভাবনামভিন্তেন্ত্র বছনিভ্রুভিত।
ব্যবিভিন্ত লাগ্রিভিন্তিন ভ্রুভিত। ভবৈন বছনিশ্বেভ্রন্যভাবনামভিন্তেন্ত্র বছনিভ্রুভিত।
ব্যবিভিন্ত লাগ্রিভিন্তিন ভ্রিভিত্ন ভবিন বছনিশ্বেভ্রন্যভাবনামভিন্তেন্ত্র বছনিভ্রুভিত।
ব্যবিভিন্ত লাগ্রিভিন্তিন ভ্রুভিত।

ভাল্যান্যুব্যাদে।—মাঞা, এই সমন্ত মগৎই বে, আন্তরন্ত্রপ এবন ভালা বৃথিবার উপায় কি ? [ইহার উন্তর]—ঘটপটাদি সর্বত্রই চৈতভান্তক প্রকাশের সম্বন্ধ অন্তপত ধাকার সর্বপদার্থের চৈতভান্তক প্রতীত হইরা থাকে (>); ভালিয়ে এই দুটার প্রদািত হইতেছে—

^{(&}gt;) তাংপদা - "ঘট প্রকাশ পাইতেংধ, পট প্রকাশ পাইতেংধ ইজ্ঞানিকশে প্রতীতিবোচর পরার্থ 'প্রকাশ সভ্যোগে জ্যোকর্যান্তর পোচর কইর। বাজে; প্রকাশ ও হৈতক্ত প্রকট পদার্থ, ক্ষেক্ত নাম মান্ত ভিন্ন, ক্ষিত্রকালেও বাস্তার প্রকাশ নাই; ভারুশ কোন প্রচার্থের অভিকত

ৰাহার অভাবে বাহার প্রভীতি হয় না, ৰগতে সে পদার্থের ভদ্ভিয়ভার द्विष्टि भाषत्रा बात्र । अणित 'मः' भवति बृहोसार्वक ; सभए हुन्छि सर्वाद ভেরী প্রভৃতি প্রচওশকর বাছবিশের আহত লগতারি ধারা তাড়িত হইতে थोकिरन त्ययन वाहिरवर भक्तपृहरक चर्चाः चक्रांक विराम नक्षकिरक गांधात्र इन्यू छिथानि इरेट भृषक् कतिया अहन कतिरछ भावा यात्र ना ; পরত ভুক্তির প্রহণে অর্থাৎ 'দাষাক্রবিশেষভারাপত্র এ সমন্ত শব্দ ভুক্তিরই শব্দ', এইরূপ গ্রহণ করিলে, তাহাতে বেমন বিশেষ বিশেষ শব্দগুলিও গ্রহণ कता यात्र ; काउन, माबाउन बुक्किनक होड़ा (म मकन भावाद नुबंक कालाव नारे ; अथवा इन्जाचारठत - आचाठ अर्थ आहमन - ठाएन : (नहे हन्क्छित আবাতোৎপন্ন শব্দ বাত্রের গ্রহণ করিলেই, তদ্শত বিশেষ বিশেষ শব্দেরও खर्व क्या रहेमा शांक ; किंद्र (कानज़ाशहे (महे नकवित्नवर्शन गुधक করিয়া প্রহণ করিতে পারা যায় না: কেন না. সেখানে সে সমুদয় শক্তের वित्यवाकाद चिटवास्कि नारे ; क्रिक (एमन, कि बशावग्राय, किया चान-द्रशावनात्र (कान व्यवनार्ट्ड अकान दार्डिट्टिक अकामास्क कारनद नश्क ব্যভিরেকে কোন বিশেষ বন্ধই গৃহীত (প্রতীতিগোচর) হয় না; অভএব প্রজ্ঞান ব্যতিরেকে বে, এ সমন্ত বন্ধর অভাব বলা হইয়াছে, তাহা বৃক্তি मक्छ दिहे। ३३०। १।

স যথা শশক্ত শায়মানক ন বাছান্ শশান্ শক্ষাদ্-এছণায় শশক্ত তু এছণেন শশাক্ত বা শব্দো গৃহীত: ॥১১৮॥৮॥

স্কুলোথা: ।—লবিএপে দুটারাজ্যমূচাতে "স বলা" ইতি । সং (দুটারাং লথক প্রায়মানক আপ্রায়ণক শকারমানক সতঃ , বাজান্ শকান্ এইণায় । এইছিং) ন শকুরাং ; শথাক শথাকক বা এইণেন ডু (পুনঃ) শকঃ (বাজ জানিঃ) সুহীতঃ (ভরতি] ; এবন্ধ ইত্যাহাত্তরেশ সম্ভঃ ঃ ১১৪ ॥ ৮ ॥

মূলান্দুবাদে।—আরে! একটা দৃষ্টাস্ত প্রদর্শিত কইণ্ডেছে; সেই দৃষ্টাস্থাটী এই—শহ্ম বেমন শক্ষের সহিত যোজিত হইলে অর্থাৎ শহ্ম

নাই; একালই ব্যস্তার প্রমাণ, সেই একাল বখন একসভার অভিনিত্ত গ্যার্থ নিয়, তখন বৃদ্ধিত চ্টবে বে, আগতিক ব্যানাক্ত রক্ষাত্তিত এক হটতে অপুৰণ ভূত এবং একসভার স্থা-বান্ হট্যা একাল পাইতেতে; সেই ব্যভাবির নাম ও লগাভাবে ক্ষানেই সেওলির প্রথমণতা বুলা বাইতে পারে।

বাজাইতে থাকিলে বেমন বালিরের জন্ত কোন শব্দ পৃথক্ করিয়া প্রহণ করা বার না, পরন্ধ আপুর্যামাণ শব্দের বা শব্দশব্দের প্রহণে অন্ত শব্দ ও গৃহীত হয় ॥ ১১৪ ॥ ৮ ॥

শাক্তির ভাষ্যমন্। তথা শ বথা শথা রার্যানিয়া শবেন সংযোগ্যমানস্যাপ্রায়াণস্য ন বাজনি, শ্রান্ শঙ্রাহিত্যব্যালি পুনবং ॥ ১১৪ ॥ ৮ ॥

্টীকা। তথা চপুভিদ্টাশ্ববিধি বাবং: পথত সূ এইবেৰেড্যাদিবাড়াবাহিনকার্থঃ। মুশুকেড এইবেৰেড্যাদিবালা: বৃটাশ্বটিভি-পূর্ব্বভালিভি: ১১৮ ৮ ট

ক্তাব্যাল্য বাদ্য ।—বেইরপ অপর দুরার—বেষন শথ রার্যান হইলে অর্থাৎ শন্দ্রংয়োজিত হইলে বাহিরের কোন শন্দ পুথক্ তাবে ধরিতে পার। বার না; ইত্যাদি পূর্ববং ॥ >>৪ ॥ ॥

म वका बोनारेव बाजमानारेव न बाज्यन् नकान् नकृ-वान्ज्यश्नाय, बोनारेव जू अहरनन बोनाबान्छ वा नरका गृहीजः ■ : ১৫ ■ ১ ॥

স্মানাথ:। — তত্রাপরে। দৃটাক উচ্যতে— "স বধা" ইত্যাদি। সং (দৃটাক্ত: বধা বীণারৈ বাজমানারৈ (বীণারা বাজমানারাঃ সত্যাঃ) ব্যহান্ শহান্ এহণার (এহীজুং) ন শকুরাং (শক্তোতি) [জনঃ]; বীণারৈ (বীণারাঃ) বীণাবাদক (বীণাবাদনক বা এহণেন জু (পুনঃ) শহঃ ্ বাহুঃ শহাঃ গৃহীতঃ [তবতীতি শেষঃ, এবন্] ৪ ১১৪ ৪ ১ ৪

শূলালু আন্ ।—বারো একটা দৃষ্টার বলা হইতেছে; তাহা এই— বেমন বীণাধর বালাইতে থাকিলে বাহিরের অন্ত কোন পথ গ্রহণ করিতে পারা যায় না, পরস্ক বীণার কিয়া বীণাথানির গ্রহণের সঙ্গে অন্ত শব্দও গৃহীত হয়, [এইপ্রকার] ১১১৫ । ১ ।

স্পাক্ষর-ভাত্তাত। তথা বাণারৈ বাতবানারৈ বাণার। বাত্যানারাঃ।
অনেক্টারোপালানবির সাবানাবহুৰগাপনার্থ—অনেকে হি বিসক্ষাতেতনাতেতন্ত্রপাঃ সাবানাবিলেবাঃ—তেবালারভার্যসভ্যা বথা একবিব বহাসাবান্যেংবর্তাবতথা প্রভানবনে কবং নাব প্রকারিতবা ইতি; চুকুভিশথবীণাশ্বসাবান্যবিলেবাণাং বথা শ্বরেংবর্তাবঃ, এবং ছিভিকালে ভাবং সাবাত-

वित्तर्वार्डितकार्डेककाः मकाववश्यम्, अवस्थानिकातः आक्ष्यास्य उद्गित्तिक मकाववश्यम् ॥ >>॥॥॥

টীকা। তবেতি বৃষ্টান্তবন্ধনানৰ্থা। একেনৈৰ বৃষ্টান্তেন বিৰক্ষি ভার্থনিছে। কিনিভাবেন্দ্র্টান্তোপাধানমিভাগলভাক অনুমূক্তেড়ি। ইংকতি অবহুভাঙে জড়িকা।
নানাভবহুত্বনে কৃষ্ট্রতি —অনুমূক্তে জ্বাজিত। কেনাং প্রদানান্তেইভ ভাবেলাগ কৃষ্টে।
ক্রমনি পর্বাননানিভাগলভাক জ্বেন্দ্রামিজি। ক্রমিডালাং পূর্বাং ভবেভাগালার:। ইতি
বস্তুকে ক্রমিডিবিডি নেবাং। বিষয়ং নামাভিয়েতি ভবিতেশোগৃল্পনান্তা। করেণেগাগৃল্পনান্ত।
ব্যক্তিবাধি ক্রমাভিয়েতি ন ভবভি, ব্যা হুকুভাগিলভাগুংসানাভ্যাভিয়েকেগাগৃল্পনান্
ব্যক্তিয়েকেন ন স্বীভাল্পনানং বিষ্ণভাগ — সমুন্দুজ্বীজি। প্রধ্যেত্বভাগ্রহান প্রকারণান

ভাল্যান্ত্রান্ লেষ্ট্রপ. বাগাৰর বাঙাইতে পাকিলে ইত্যাদি।
সামান্ত ধর্মই বে. বহুপ্রকার লাছে, তাহা বুঝাইবার কন্ত এখানে বহু দৃষ্টান্ত
প্রদর্শিত হইল। অতিপ্রায় এই বে. পরম্পার বিশক্ষণশ্রভাব চেতনাচেতনায়ক একলাতীয় বিশেষ বন্ধ লগতে বহু আছে, পরম্পারা সম্বাছে সে
সমুদ্ধের বেমন একারনতা,—একই মহাসামান্তে অঞ্চাব হয়, প্রজানখনেও
বে সেইরপই হর, তাহা কি প্রকারে বুঝান যাইতে পারে, অর্থাৎ তাহা
বুকাইবার নিমিন্তই বত দৃষ্টান্তের উল্লেখ ইই্যাছে। সামান্ত-বিশেষায়ক
দুস্তি, শভাও বীণাশক্ষের বেরপ শক্ষামান্তে অঞ্চাব হয়, ত্রুপ লগতের
স্থিতিকালেও সামান্তবিশেষতার রহিত হয় না বলিয়া [সামান্তরণে] একৈকদ্ধ
অব্ধারণ করিতে পারা বার ১১০ এক ব

দ যথাত্তৈ থায়েরভাগিতাৎ পূথ্য ম। বিনিশ্চরস্তোবং বা অরেহ্ম বহতো ভূতক নি:শ্বিতমেতদ্যদ্যেলো-যজুর্বেদ: দানবেদো গর্বাক্রিন ইতিহাস: পুরাণং বিদ্ধা উপনিবদ: শ্লোক: সূত্রাণ্যসূব্যাখ্যানানি ব্যাণ্যানাক্ষতৈ-বৈভানি সর্বাণি নি:শ্বিভানি ৪ ১১৬ ॥ ১০ ।

জ্যান্তর্বার্ত্তঃ। উৎপক্তঃ প্রাণণি ব্রবৈক্ষাবধারণার্থমাহ—"স বধা" ইত্যাদি। সং (দৃষ্টান্তঃ), বধা অত্যাহিতাৎ (প্রজ্ঞালতাৎ সতঃ) আছৈ -ধারেঃ (আর্ক্রার্ড-সম্বিতাৎ অরোঃ) পুণকু (নানারপাঃ) ধৃধাঃ (ধৃধাঃ বিক্সুনিকাদরক) বিনিক্তরত্তি (বিশেবেণ নির্গন্ধত্তি), অরে বৈত্তেমি, এবং (ব্রোক্তব্যেষ) অন্ত মহতঃ (স্ব্রাতিশারিনঃ) কৃতত্ত (নিত্যানিক্ত

ক্ষান্ত্রাদে। --উৎপত্তির পূর্বেও জগতের ব্রহ্মান্তার লবধারণের জন্ম বলিভেছেন—আর্দ্র কার্চ প্রদীপ্ত চইলে বেরূপ নানাপ্রকার ধ্ম (ধ্ম ও ক্ষুলিক প্রভৃতি) নির্গত চর, তে মৈত্রেরি, ভক্তপ এই মধান স্ভঃসিদ্ধ পরব্রন্ধেরও ইচা নিঃখাসম্বরূপ কর্বাথ নিঃখাসের লার ভাচা হইতে লয়প্রপ্রভঃ (ইচা কি ?) বাহা দ্যেদ, যঞ্জেরেন, সামবেদ, লথব্যান্তিরস, ইভিহান, পুরাণ, বিল্লা। (নৃভাগীভাদিশান্ত্র), উপনিনিবদ্ (ব্রহ্মবিলা) প্লোক, সূত্র, অসুব্যাখান, ব্যাখান বা অর্থবাদ্যাকা, এ সমস্ত নিশ্চরই এই ব্রন্ধের নিঃখাসবং অবদ্ধ প্রসূত্ত ১ ৬ ৪ ১০ ৪

न्नाध्यक्त-क्राम्म।क्र.। अवव वेश्निकात आवश्यकः ब्रोक्टवित्र नकावनगढ्यः वर्गा-माधिविक् निक्ष्याकात्राक्रियाः आत्र विवाधाविद्यादित्र व्यव्याद्याक्षयः अतः क्षत्रावद्यनिकृष्टः आवश्यकः अक्षामक्य अत्यवित्र मृक्तः अदोक्तिरवावकृतारवः। -

দ বধ। আরৈ থালেঃ আরৈ বাজিঃ ইভাংছিঃ আরৈ বাজিঃ, জ্যাক্ড্যা-বিতাৎ পূথক ধ্যাঃ পূথক নানাপ্রকারাঃ, গ্রপ্তবং বিজ্লিছাছিপ্রকর্শনার্থন, ধ্যবিজ্লিছাছরঃ বিনিশ্চরতি বিনির্মাতি; এবন্—ব্যারং গৃষ্টাভঃ; অবে বৈজেরি, অন্ত পর্যান্তনঃ প্রকৃত্যা বহুতো কৃত্ত নিঃব্যিত্তেতং; বিঃব্যিত-বিব নিঃব্যিত্ত ; ব্যা অপ্রব্যান্তনৈব পূক্রব্যানাে ভবতি, এবং বৈ অরে। ১

किर उद्विश्वित्ववित्र उट्टा बाध्विष्ठागुट्ड-वर वर्षकः स्कूर्णकः, नाव-त्वनः वर्षणिवतः -व्यूलिंवर बद्धवाध्य, देखिदान वेकि -केसी पूक्यवरनाः

নিরভরচনাবতো বিধাষান সৈবে বেদসাগিবাক্তিঃ পুরুষনিংখাসবৎ, ন চ
পুরুষবৃদ্ধিপ্রয়রপূর্যকঃ; অভঃ প্রয়াণং নিরপেক্ষ এব স্বার্ষে; তলাক্ষান্তনোক্তং,
তত্তবৈব প্রতিগতবাধ আছানঃ প্রের ইছ্ছিঃ,—জানং গা কর্মা বেতি।
নামপ্রকাশবলাদি রুপসা বিক্রিয়াব্যবদ্ধা; নামরুপরোরেব দি পরমায়ো-পাবিভূতরোঃ ব্যাক্রিয়মাণরোঃ সনিসক্ষেনবং তরাক্তবেনানির্মান্তরাঃ
স্থাবিভূতরোঃ সংসারম্বনিতি, আতো নার এব নিঃখনিতরম্ক্তম্, ত্রচনেনৈব
ইতরসা নিঃধনিত্রসিছেঃ। অথবা সর্মন্ত বৈতলাতস্তাবিদ্যাবিষম্যমূক্তম্—
"প্রশ্ব তং পরাধাৎ, ইখং সর্মাং ধদরমায়া" ইতি; তেন বেদস্যাপ্রামাণামাপ্রেরত, তলাশভানির্ভার্থবিদ্যুক্তম্—পুরুষনিংখাসবদপ্রব্যোধিত্যাৎ প্রমাণং
বেদঃ, ন ধ্যা আলো প্রমু ইতি ঃ ১১৬ ঃ ১০ ঃ



वमारियकामाविकित्रामाविक्यामार । वामिकार्वशार्य (का द्रकृतिकार्यका विक्रिकेट करिः विविधानियामार विविधिविद्यात राष्ट्रः विविधिवयुक्तवविद्यव्यक्ति कार-कार घटळाडि । वह न्यवंदि कात् (वक्क विकारक कार्यायाः शायकः, क्वविकारक क्वावि-विकास मार - जिल्हाकृति । विकास शाहरो त्याम विद्यानात । . प्रमाहकश्वितम् (वर्गावकाशकाकाविशक्षक्षकावयः द्वरक प्रवादकः व्यवनिवरण देखारकः महाक्रवः ७७ विक्कीवरकः। म ४ १७ कवानव्यामानाः अकाकारको वाक्रिकाशकः म ४ (नोक्ररवय-वांक्यरणक्यरक्यांचाव शांवानाम् । मृष्टिमृश्यानेष्ठवाष्ट्रास्य वर्धमरकः । व ह्यास्यवाकाः मामुक्तवराधिकार्यवाधिक कार:। निद्ध (१४७ सामादा कन्किवार-कन्याकिकि। नाव अनुकृत्वीद्ववाद्यानिकी व अनुअनकृत्वीः, नः कानुद्वतीया वृत्तिनृद्विश्वत्रेक्षकृत् गारक्षांवकाश्व मार्चिति । वक्षांग नावकक्षा सगणकेतिक नावकक्षेत्रस्थन सगलके वर्षाहुका, क्यांनि नक्तमःमान्यष्टेरनाकः नामक्रम्राहारवर मामाहरक व्याक् क्यप्रदेश मानाहका न चारिकः।नेकार-माञ्चक्रश्रेट्याद्विष्टिः। नसारवृद्धार्साकाराकारवृद्धादिकि वापरः। मामधानकोक्षतां मार्नाकियुननामिकयुनमाश्वीक- रेजीलि । वक्षावार्थः पृष्ठेशीय--वियमिकक्षितः विवादात्यावकावक्षण- व्यथास्यक्षांमिना । 'उपच्टामरमाज। विचारकान अधिविक्य र आयाना क्याकृत शक्ति वाकाताः । विचा स्थानाची म स्वयुक्त नारक्या-श्राप्ता वकाविश्वविक:- वर्षकावरेक्कशाः व्यवस्थाताः । ১১ ५) ०० ।

ভাল্যা-পুরাদে।—হিতিকাদের কার উৎপত্তিকাদেও পর্বাৎ উৎপত্তির পূর্বেও ত্রকৈকর অবধারণ করিতে পারা বার। অরি হইতে ধুন, কুনিল ও পিবা প্রভৃতি প্রার্ভৃতি হইবার পূর্বে বেরুপ এক:(গ্রাদি সম্বন্ধ) অরিই অবধারিত হর, তন্ত্রপ নাব-রূপান্ধক বিকৃতিবিশিষ্ট এই লগৎকেও উৎপত্তির পূর্বে একবাত্র প্রজ্ঞান্দন (জ্ঞানস্বর্গণ) বলিরাই অবধারণ করা বৃক্তিযুক্ত। এবানে এই বিবর্ট প্রতিপাদিত হইরাছে—

নেই দুটান্তটি এইরপ—সংস্থাপিত আত্রেণান্তি বছিত —আত্র কাঠ বারা প্রজালত অন্তির নাম আত্রেণান্তি, সেই অন্তি হইতে পৃথক —নানাপ্রকার গ্রহাশিং —গ্রশক্ষি বিক্ষু নিলাধিরও বোধক, গ্র ও বিক্ষু নিলাধি বেরুপ বিনির্গত হইরা থাকে; এইপ্রকার অর্থাৎ উক্ত দুটাক্ষের স্থার, অরে বৈত্রেরি, এই প্রস্থাবিত মহাম নিত্যসিদ্ধ পরমান্তার ইয়া নিঃখনিত— নিঃখানের • বড, অর্থাৎ লোকের নিঃখাস বেষন অনারাসে নিশার হইরা থাকে, ডক্রপ ঃ >

तिहे तक हरे**छ निर्धातित आह बादा आह्**क दत्त. ठादा वना

स्टेरल्ड् -- नादा चरवन, बङ्क्तिन, नावर्यन ७ व्यवसाणियन, धरे छाति अकात बञ्चत्रानि, (>) देखिदान-- छेर्सनी-पूक्तत्रात गरवार " अक्छि, (ववन - 'ইর্মনী নাবে এক অভারা' ইত্যাদি, তাহাও ব্রাহ্মণাংশেরই অবর্গত ; পুরাণ — 'পুরারভঞ্জকাশক) 'এই কগৎ আগ্রে অসৎ ছিল' ইত্যাদি ; বিভা---(मरक्यनविका (नुजानीजानि विका), यथा 'देशा . नदे (वम' देखानि ; উপনিবদ্— (ব্ৰবিভাপ্ৰকাশক বেদভাগ), 'প্ৰিয়বুছিতে উপাসনা कतिर्दि रेजािक ; (ब्राक -ब्राक्ष्यणान्य यद्यम्बर, यथा "उर्दिए (ब्राकाः" इंख्याबि ; श्व-मछाविवत्रमःश्रहाश्वक वाकामबृह, वश- श्वास। विज्ञाहे केशांत्रवा कविरव' हेलाचि । अञ्चवााचाान-वात्रव विववन वा वााचा . बाबान-वर्षवाक्वाका, (त्व भवत्र वारका विश्वत अनश्मा ও निर्वादन निका करा हरू); चर्चर चन्नुवाशान चर्च-वच्चनश्वहाचक वारकाव विवतन वा वार्षा, (बबन हर्ज बवाए बाबा हेल्जावानानी) अहे वारकात, चर्चवा त्यम 'त्व त्माक 'छेनान्न चन्न এवः चामि चन्न' अहेन्नान भारत. अकृत्रभक्त (म त्नाक जावारक कारन ना , तम वाक्ति तमवभरवत भन्नमम. करे वारकात वार्याचक रहेरछछ अशास्त्रत अवनिदेशन : आत वार्यान व्यर्क-बाइत विवर्ण या वार्षाः अहे यहि शकात बाइनहान : अहेत्राल यह ७ जावनचारमद ठेखन कडा बहेन । - -

এগানে বৃত্তিতে হউবে বে, নিশিষ্ট প্রণালী অন্তসারে রচনাবিশেষসম্পন্ন বেদ পূর্বেও বিভয়ানই ছিল; সেই বিভয়ান বেদই পুরুষ-নিখাসবং এক হটতে

⁽ ১)—ছলায়ান্তই ভাবি, চনগৰিলিই; চনগের অপন্ন লাম পাল; যে সমণ্ন বেচমান্ত্র পালবাবছা বিজিপ্ন নাট, কেবল কর্বান্তলানে পালবাবছিছি: সা কড়; জৈনিবিপ্তন); আন বাম কড়, জৈনিবি নলিবাজেন—বন্ধার্থনালন পালবাবছিছি: সা কড়; জৈনিবিপ্তন); আন বে সকল মন্ত্র ভাবার দিবলৈকেন পালবাবছিছি: সা কড়; জৈনিবি বলিবাজেন—প্রীজেণ্ সামান্তাই (জৈনিবিপ্তন) অর্থাৎ সের মন্তের নাম সাম। এই ভন্ ও বলুর্বোবের আজিজিভ বে মন্ত্রভাব, ভাবার নাম —বলুঃ। কুর্মপুরাবে লিখিভ আছে —"ভড়ঃ স বচ উদ্বৃত্তা করেবা কুর্মনান্তলা বাম —বলুঃ। কর্মান্তলা করেবা করেবা কুর্মনান্তলা বাম নামান্তলা করেবা করেবা কুর্মনান্তলা প্রা। পালানাং জু লভেলার বলুর্বোবননান্তলাং। সামবেবং সম্ভানে পালানান বিভেলতঃ। অবর্ধান্তলান বেদং বিভেগ্ন সকলেন জুঞ্ ' (কুর্মপু বন অল্বান্ত)। বেলার ছন্টাই ভাবি, একটি মন্ত্রভাব, অপন্নটা ত্রান্তলান, এবানে ভিত্ত ভিত্তা করার বন্ধান্তনান্তন।

খভিৰাক্ত হইয়াছে বাত্ৰ; কিন্ত কোনও ব্যক্তিবিশেৰে চিন্তাপূৰ্যক विवृद्धिक एव माहे : 'बहे कावरन वार्य-अफिनायन विवरत नन्तूर्न निवरनक-ভাবে প্রমাণ, অর্থাৎ বেদের প্রামাণ্য-নিশ্চরের জন্ত অপর কোনঙ প্রবাণের অপেকা করে না; উহা বভঃপ্রবাণ; অভএব বাহারা নিচ্ছের कनानि हेक्का करत. छोड़ारहत भएक. (यह स्नान वा कर्य-नाहा विकरण निक्रमन कविया निवाह, ठावा (महेब्रामहे अहन कवा छेडिछ। (कम मा. कामक बन वा ववत व विकाद छन्। विचित्रक्षकार मामानिवास्किर ठाहात कावन, व्यर्गर नाय-विस्पर्याताचे वक्षत्र विशिवायहा प्रतित्र। शास्त्र, (বর্ষণতঃ নহে 🔑 বিশেষতঃ পর্যান্ত্রার উপাধিত্ত নাম ও রপই ব্যাক্তাবছা श्राध क्य. अवर कम ও ठाकात कमत जात नाम अ अभरक जिल्ल ना चित्र वित्रा निक्रभन कडा बाद ना ; (व कान चवहाद बाकूक ना कन, (महे नाथ e क्रथ महेबांहे मध्यात : अहेबड अवात :क्रवन नायरक (पश्चतिक : विश्वाभवर छेरलब वना दहेन ; कावन, छाहाव विर्फाल है चल्द्वत्व-ब्रालव्य निःचानवः छेरल्वि अठिलक्ष इदेवा चाटक। [ইছার অভিপ্রায় এইরপ-] ইতঃপুর্বে "ব্রহ্ম তং পরালাৎ" ইত্যাদি প্রতিতে बिधिन कन्दश्रमकरकडे विविधानिकात्त (व्यन्छा) विविधा निर्देश कता হইবাছে; তাহার কলে (কপতের অরভূতি) বেকেরও অপ্রাধাণা আপক্তিত इंडर्ड शाबिड: : तहे चानचा-निवृत्तित क्यारे वहे क्या वना बहेबाद्ध (व. লোকের মিংখান বেরণ অবরপ্রত অর্থাৎ খাতাবিক চেষ্টার কল যাত্র, তত্রপ বেলরাশিও পরম পুরুষের নিঃবাসবং অবদ্ধপ্রত; কিন্তু অপরাপর এছ रवक्षण (मारकत क्रिक्षेत्रारणक. तक तक्षण नार ; अहे वक्षके हेवा चळ:-**選挙19 >) / >>6 # >・ #**

[া] ভাষণাৰা—বেংগন প্ৰায়ণা দুট প্ৰভাৱে সমৰ্থন কৰা বাইছে পাছে; প্ৰথমত বেং প্ৰায়ণ্ড বাৰ্তা বিশ্বিত হং নাই, প্ৰাপ্তা কৰে বেং বেতুপ আভাৱে প্ৰচলং চিন্তা, পৰ পৰ কলেও টক ভবস্কল বেংই আহি পুক্ৰেৰ স্কিপ্তা কৰে বেং বেতুপ আভাৱে প্ৰচলং চিন্তা, পৰ পৰ কলেও টক ভবস্কল বেংই আহি পুক্ৰেৰ স্কিপ্তাৰ উপস্থিত ইয়া বাকে, ভিন্তি প্ৰভিন্ত কেই বেংলালি নুজন স্কিন্ত প্ৰচল্ড প্ৰচল্ড আৰু চিন্তা কলিয়া পূজন নুজন বেং প্ৰথম কলিছে হয় না; ভালেই জালিয়া প্ৰদানপ্ৰায়ণি বাবে ইয়াকে বাহিল কৰিয়াকলায় প্ৰদান কৰে কাৰ্যাৰ কলিয়াকলায় প্ৰচল্ড কৰে কৰে কৰে বাবে সংক্ৰায়িক ব্যৱস্থাকৰায় প্ৰথম বাবেল কৰে। কিন্তানিৰ্বাহি—প্ৰক্ৰপ্ৰয়াধানি লোকে সম্পূৰ্ণ প্ৰস্কৃত্ব, কৰম ভংকাস্ক বেংগন অগ্ৰাহাণাপ্ৰায় ইইছে পাছে নাঃ

म वर्षा गर्बामांवनाय महत्वः वकावनस्वयः महर्ववायः विदेशवायः पर्ववायः महत्ववायः महत्वयः महत्ववायः महत्वयः म

ञ्चकाव्याः। सुवैकानवर अनवकारमः नि अनकाताः अनेककाः वर्न-बिक्र मुद्देश्वाबत्याय--"न ववा" हेलामि । भः (मृद्देश्वः) डेहारू मबुक्त मसीमार समास् (क्यानाः) अकावनः (अकटबनानप्रज्ञानः (छवा) मर्ट्सवार वावृश्वकानार ज्लेनीनार एक अकायनर (प्रवार नवश्वानय्) ; िषात क्रमात्मम ज्नानिमामानामां हो बारतः, विश्वनामाः भाषानामा त्रकृतः कांद्य नावाबार. कन-मब्अनिवृद्दीयमामाक ; अवयुक्तकानि (वायाम्]। अवर (छथा) मर्खियार भवानार नामित्क अकावनव्, अवर मर्खियार वमानार किन्दा अकावनम्, अवर मासनार क्रणानाः छन्। अकावनम्, अवर मासनार लकानार (जाजब अकावनब, अवर मर्क्सबार मरकन्नानार बनः अकावनब, अवर मुक्कामार विश्वानार क्रम्यः (वृद्धिः) अकाव्रनन्, अवर मार्क्यार कर्णनार हरको अकावनव्, अवर मर्ट्सवार चानमानाः छेलवः अकावनव्, अवर मर्ट्सवार विमर्नाशार भाव: (यमचातर) अकावनय, अनः मर्द्यनाः व्यथनाः (भवार) नार्को अकात्रमन्, अवः गर्स्सवाः (वर्षामाः वाक अकात्रमन्। [चळ नर्सत्र चवात्रीमार वंडाढानार उक्त्वित्वव अग्रह्मा खरुगम् । अग्रवाद्यानार ममुक्षात्रीमार ভু তত্তৎসাৰাক্তরা প্রহণম্, বিশেষাণাং চ সামাকে অভত বিঃ সমীচীন এব इंडि यक्ष्यम्]। >>१। >>।

অনুসান্ধ্রাদে। [এখন প্রলয়কালেও ব্রন্ধাতিরিক্ত ক্পৎসন্তার অভাবপ্রদর্শনের অভিপ্রায়ে দৃতীন্ত প্রদর্শন করিডেকেন] সেই দৃষ্টান্তটি এই—সমুক্ত বেরূপ সমস্ত জলের একমাত্র আঞ্চরশ্বান, এইপ্রকার

विकासिकामा अपूर्व वायन्त्।

प्रतिक्षित्र नगरा न्यार्गा माध्यम् । अरेवन नानिकावन नगरा नावन णाखार : अर्थेन विदेश नगर प्रत्य पाळाहणान : अर्थे क्षणात हरू मयक मालद माळाह: बरेसल कारालिय मयक मालद माळाह: এইরপ মন সমস্ত সভারের (ভালমন্স বিচারের) একমাত্র ভাঞার : এইরণ शहर वर्षाय वृद्धिनिकान निम्छ कात्मत अन्यात वार्धान : এইরূপ চন্তব্য সমস্ত কর্ম্মের একমাত্র আঞ্চর: এইরূপ উপস্থ বা क्रमानिक ममन वामरक अक्षाव बाधद : अहेन्द्रभ भाद वा मनवाद সমস্ত ত্যাগের একমাত্র লাভার : এইলপ পদ্ধর সমস্ত পধ্যে একমাত্র আপ্রয় : এটক্রণ বাগিন্দ্রির সমস্ত্র বেদের একমাত্র আপ্রবস্থান। ि अधारन अहेन्न भ वृत्तिएं इनेरन त्व, जनममहिन्न ममूज इनेरफरह क्रमार्ट्यावर माधावन क्रम, बाद नम्, नमी ७ उडामामित क्रम स्टेराइट लाहे करणबाहे विरामय क्रम माछ: विरामय धर्माकील माधावन धरमांबह অন্তৰ্ভ হইর। থাকে : সুভরাং নদ-নদী প্রভৃতি বিশেষ বিশেষ ছানগত क्रम अति (महे अनममित्रुक मम्द्राप्त व वस्तिविक श्रेता भएक ; ভেমনি বায়ু প্ৰভৃতিৰ বিশেষ বিশেষ ধৰ্ম-স্পৰ্শাদিও ভংসামা**ঞ্জান্ত**ক বৃক্ প্রভৃতির সম্বানিবিট হইয়া পড়ে; মত এব সামান্তসভার মতিরিক विष्णवधार्यात (कान्ड मखा नारे] ॥>>०॥>>॥

শাক্ষা ভাষ্যাত্য। কিলাভং ; ব কেবনং ছিড়াংগভিকালরারের প্রজানবাভিরেকেণাভাবাক্ষগতো বন্ধরন ; প্রদারকালে চ ; কলবুর বক্ষোদীনাবিব সলিব্যাভিরেকেণাভাবঃ, এবআলাব্যভিরেকেণ ভংকার্যাণার্থ নাম্মপকর্মণাং ভ্রমিরের দীর্মানানামভাবঃ ভ্রমিরেরর প্রজান্ত্রেরের প্রভাবর্মির ভ্রমিরানানামভাবঃ ভ্রমিরের প্রভাবর্মির প্রভাবর্মির ভ্রমির । ১

স ইতি দৃষ্টাঝঃ: বধা বেন প্রকারেণ, সর্কাসাং নবীবাসীভড়াঝাবিসভা-নামপাং, 'সমুজোহজিঃ একারনম্ একপমনম্—একপ্রবয় অবিভাগপ্রাঞ্জি-রিভার্যঃ। ধধারং দৃষ্টাঝঃ, এবং সংক্ষাং স্পর্কানাং মৃত্তক্লকট্টনপিছি-লালীনাং বারোরাম্বভূজানাং ওড় একাবনম্ ; বলিভি স্বস্থিবরং স্পর্কানাজ- নাত্রম্, ভবিন্ প্র্বিষ্টাঃ স্পর্নবিশেষাঃ—আগ ইব সমুত্রং—ভব্যভিষেকে গা-ভারতুভা ভববি; ভবৈয়ৰ হি ভে সংস্থানমাত্রা আসন্। ধ

তথা তদি লার্শ্যাভ্যাত্রং বন্দ্রবাচাং বনাস্থয়ে বনোবিষা-নারাভ্যাত্রে, ববিষা ইব লার্শবিশ্যাং, প্রবিষ্টং তঘাতিয়েকেণাভাবভূতং ভবতি; এবং বনোবিষয়ে।৽পি বুছিবিষয়নারাভ্যাত্রে প্রবিষ্টঃ তঘাতিয়েকেণা-ভাবভূতো ভবতি; বিজ্ঞানরাজ্যের ভূষা প্রজ্ঞানখনে- পরে এখণি আপ ইব সমুল্লে প্রদীয়তে। এবং পরল্পরাজ্যের পঞ্চানে। সহ প্রাহকেণ করণেন প্রদীনে প্রজ্ঞানখনে উপাধ্যভাবাৎ সৈদ্ধর্যন্ত্রং প্রজ্ঞানখন্যেকয়সম্ অনব্যর্ অপারং নিরম্বরং প্রদ্ধ ব্যবহিষ্ঠতে। তথাদাধ্যের একসম্বাহিতি প্রতিস্কর্যম্। ০

তথা সর্কোরাং সন্ধানাং পৃথিবীবিশেষাগাং নাসিকে মাণবিষয়সামান্তম্ ।
তথা সর্কোরাং রসানাং অকিশেষাগাং জিলেজিয়বিষয়সামান্তম্ । তথা সর্কোরাং
রপাগাং তেজাবিশেষাগাং চক্ষুং চক্ষুর্কিয়য়সামান্তম্ ; তথা শক্ষানাং গ্রোক্রাদিবিষয়সামান্তং পূর্কবং । তথা প্রোক্রাদিবিয়য়সামান্তানাং মনোবিয়য়সামান্ত
সকলে, মনোবিয়য়সামান্তভাপি বৃদ্ধিবিয়য়সামান্তে বিজ্ঞানমান্তে, বিজ্ঞানমান্তঃ
ক্ষা পরিমন্ প্রজ্ঞানখনে প্রসীরতে । তথা কর্মেজিয়াগাং বিয়য় বয়নায়ারসমনবিয়য়নিক্রবিশেশভংক্রিয়াসামান্তেখেব প্রবিষ্টা ন বিভাগবোগাঃ ভবন্তি—
সমুদ্র ইব অক্রিশেষাং । তানি চ সামান্তানি প্রাণমারুং, প্রাণন্ত প্রজ্ঞানমান্ত্রেময়
—শব্যে বৈ প্রাণঃ সা প্রজ্ঞা, মা বৈ প্রজ্ঞা স প্রাণঃ ইণ্ড কৌষীভিকিং
নোহবীয়তে । ৪

নমু সর্ব্যা বিষয়ইক্তব প্রলয়ে। তিভিডঃ, নতু করণসা; তর কো। তি-প্রারঃ ? ইতি—বাচ্ছ; কিন্তু বিষয়সমানদাতীর করণং মন্ততে প্রতিঃ, ন ভু দাত্যভারত্ব: বিষয়ক্তৈব সাম্ব্রহেক্তেন সংস্থানাভারং করণং নাম –বথা দ্রপবিশেষকৈত্ব সংস্থানং প্রদীপঃ করণং সর্বাদ্রপঞ্জনাশনে, বেং স্ক্রবিষয়-বিশেষাপাষের স্বাম্ববিশেষপ্রদাশক্তেন সংস্থানাভারাণ করণানি প্রদীপবং। তত্মার করণানাং পৃথক্প্রসায়ে বরঃ কার্যাঃ, বিষয়সামান্যান্মকর্যাভ্যম্ব প্রসায়ে নির্মান্যান্যান্মকর্যাভ্যম্ব প্রসায় সাম্বেটনর

हिका। म स्वा मर्कामावणाविकाविमवनवश्यवृत्वाणविक-किम्भान्तिर्वितः वर्षव गाकरवाकि—म् (काळ्याचिकिः) वावद्यवाकि श्रामाव्यक्तिरद्वर वर्षाव्यक्तिकः। वर्षाव्यक्तिकः। वर्षाव्यक्तिकः। वर्षाव्यक्तिकः। वर्षाविक्राव्यक्तिकः। ভার রজেভানভাবি—জেল্যাদৈতি। সভালানাদিবাভাব্রজনভবারদাদিভার্ব:।
বংগাভং বন্ধ বেং প্রবিশ্বরাং ভিষিতি ভঙি স বংবলাদি বাভাবিলাবভা ভল্লেক্সে
প্রদাহ বর্ণারি চুং বৃইরভব্রনবেভবিভাবে —আজ আহেছি । প্রকারভেংদিরিতি প্রকং,
কল্পানো প্রবাহনেভার নলরঃ। তর্গাধিকভানাবলাং কুডঃ সমূত্রে লয়ঃ, ব বি
লাগা তেন সম্ভিত্রিভানভাবি—আজিজানেভাতি। অর বি সমূত্রবন্ধ জনসামাভবৃহাতে ভর্গাভিবেকের ভ জনবিশ্বেশাব্যভাবে। বিবিশ্বরাধার ভব্যাব্যজনভালারাবালারবিভাবভ প্রাভিত্রিভ সমূত্রেলিভার প্রালিভিত্রাই। বিজ্ঞানীবাহিলাবিলাক্সভালারা
বালারবিভাবভ প্রাভিত্রিভ সমূত্রেলিভার প্রালিভারার কুডঃ পর্বাহার ভঙি বিজ্ঞান্তরিলার লাগাভিত্রভার প্রকর্তার প্রক্রিভ ভালিভাত্র বিশ্বরার প্রকর্তার প্রক্রিভাত্র বিশ্বরার প্রকর্তার বিশ্বরার প্রকর্তার বিশ্বরার প্রকর্তার প্রকর্তার বিশ্বরার প্রকর্তার বিশ্বরার বিশ্বরার প্রকর্তার বিশ্বরার বিশ্বরার বিশ্বরার বিশ্বরার বিশ্বরার প্রকর্তার বিশ্বরার বিশ্

ভবাপি নমপ্র লগতে। রক্ষরতিবেকেশভাষান্যক্ষিতিতে করা প্রজ্ঞিভিষ্টান্ত।
পরশার্থ বন্ধবিদ্ধান্ত কর্মিনির্দ্ধান্ত ক্রমেনির ক্রমানির ক্রমেনির ক্

কবং পুনন্ধ প্রতিপ্রায়ং অন্ধবি প্রাবদানং, করাই—ভত্তনাতি। বর্বা সংক্রিপ্রাণা-মেনু অন্ধবি প্রাবদানং তথোচাত হাতি বাবব। পুর্কবিধিত হবিষদানাজনতির হাই। সভলে লয় ইতি বেব:। বিজ্ঞানয় ইভাজাপি ংবৈব। এবং সংক্রিয়াং কর্মপানভাবেরর্থনাত্ত— ভথা অন্ধ্যান্তিয়ালো:মাভি। ক্রিয়ামানানানা প্রায়সংহানভেবর্মজুবেভাছি— ভগনি স্থোক্তি। ক্রিয়ামানবংলাভিত্তপাবিভূতবোলিসংভাবভেবরভিপ্রেড। প্রায়ম্বর্থনাত্তি বিজ্ঞান বিজ্ঞা

শ্রহিষ্বাং করণদশ্যে মাজিলারি, বছং ৮ বাাবাহতে, ভন্স কো বেছুবিভি পৃক্তি -নাজিতি। শ্রুবা করণদহতাকৃত্তবেলীকরো ছ - এক্ট্রিফ্রিড়। পূর্বভিন্নার প্রকট-ছতি--ব্রিং (জ্রান্ত) করণত বিষয়বালানাং বিবুগোতি---ব্রিফ্রান্টিড়া করণজ্বিত । কিছব ম্যাব্যিভাবিতাক্রাব্যাবিতি পুল্লতি - প্রাদীপান্তিভাক্তি। ক্সুবৈজ্ঞবং এপানিমু মধ্যে এপ্রিয়াৰ বালক্রব্যাং সম্প্রতিপরবিভাগিনাকুলাবানি পালক্রবানিকার্যাবিবিভাগিন। च्यांनाः विश्वनाकारमः क्षिष्ठवार —क्रज्यांक्रिकः नृवदिवदक्षमशाविकि स्नयः। क्षणानशक्षित्रामयाश्रीविकितकः ३>>१३>

श्रास्त्रान्त्र्यान्त्। बावल अक कक्षः (क्ष्यम मृहिकालक द्विणिनवत्तरे (व, जनवालित्तरक भना बारक ना विना नगरव जनावकण),
काश नरद, अनवनार्त्तक (महेन्द्रभः क्ष्यम स्क्रम, उत्तम अ वृद्दृष् अकृतित रवस्त
क्ष्य वालित्तरक (कानल चलिक नाहे, उक्तन अकानवन जन्म हहेरक नव्दश्व नाव, जन अ कर्वतानि वथन जाशास्त्र विनीन हत्त, उथनअ अकानवज्ञन
जन्म वालित्तरक नायकनाषित्र (कानल चलिक धारक नाः, चठअव वृतिर्द्ध हहेरद (व, जन्म निकत्तरे अक अ अक्षाज अकानवज्ञनः अथन अ कथारे वृह्ये वाता वृत्याहेरजस्त्र । वन्यामान वृह्ये वश्वित अनरवत्र जेशाहतनवर्तन अवनिक हहेरजस्त्र । >

প্রতির 'সং' পথটি দৃষ্টান্তবোধক: 'বথা' অর্থ—বে প্রকারে; সমুদ্র বে প্রকার নদী, বাপী ও তড়াপাছিপত সমস্ত বিশেষ বিশেষ জলের একারন—একযাত্র পরব্য স্থান—প্রলয়ের একমান নিকেতন আর্থিং সমুদ্রের সহিত জলের
অবিভাগাবস্থাঞাপ্রি; এই দৃষ্টান্তটি বে প্রকার, ঠিক সেই প্রকার বায়্র আ্থাভূত অর্থাং বায়-বতাব মৃত্র, কর্মণ, কঠিন ও পিচ্ছিগাদি সর্মপ্রকার স্পর্লেরই
বক্ হইতেছে একারন। এখানে বক্শদে বিশিল্পর্যাহ্ণ সামান্ততঃ স্পর্লযাত্রই বৃত্তিতে হইবে; জলসমূহ বেরূপ সমৃত্রে প্রবিত্ত হর, তত্রপ বিশেষ বিশেষ
সমস্ত স্পর্ল ই সেই স্পর্লসায়ান্তে অন্তর্ভুত হর—তাহার অতাবে অভাবগ্রন্ত
হয়; কারণ, স্থিতিকালে সেই বিশেষ বিশেষ স্পর্লগুলি সেই সামান্তেরই
অবস্থাবিশেষরূপে প্রকৃতিত হইরা থাকে মাত্র; স্থিতরাং প্রলম্বকালে সে
সমৃদ্রে বিশেষগুলি সেই সামান্তের মধ্যেই বিলীন হইর। অনুপ্র হইরা পড়ে] ॥২

ক্ষে স্পর্শবিশেষের অধান বের প্রায় সেই বক্শনবাচা স্পর্শনাবাকও আবার মনঃসংকরে অর্থান মনের বিষয়ীভূত বাহা কিছু আছে, তাহাতে—
বিশেষ বিশেষ স্পর্শন্ত বেরপ তাহারে প্রবিষ্ট হইয়। থাকে, তর্মণ প্রবিষ্ট হয় অর্থান মানস স্বস্ত ছাড়া তাহার প্রার কোনও অন্তির গাকে না; এইরপ মানের বিষয় স্বস্তুত সাবারণতঃ বৃদ্ধির বিষয়মানের অবঃপ্রবিষ্ট হয়—
ভলভিরিক্ত স্থাপ্ত হইয়া গাকে। এই বৃদ্ধিবিজ্ঞানে বিলীম হইয়া
ভলাত্মকভাব প্রার হইবার পর, জলসমূহ বেষদ সমূত্রে বিলিয়া বার, তেমনি
সেই বিজ্ঞানও আবার প্রজ্ঞানখন পর্রত্তে বিলীম হয়। এবংবিধ পর-

1001

শারাক্র: বাহণীর শক্ষাধি বিষয় ও তদ্বাহক ইজিরবর্গ প্রকাশখন পরব্রেষ্ট্রিলীন হইলে পর, উপাধিকত সর্ব্ধপ্রকার বিশেষ গৈর্বের তিরোধান হইরাযায়, প্রকাশখন ব্রহণ তথন সৈত্তবপিতের কার একরন (একখতাব),
অপরিবিদ্ধে, অসীম ও তেলশ্ব হইরা থাকেন। অতএব আত্মাকেই কবিতীর
এক্ষাত্র সত্য বলিরা বৃধিতে হইবে ॥০

(महेळन मानिकाया चर्याः चारनिवातात विवत्यात हे हहेरलह-नवय शरकत वर्षा विराम विराम मध्य स्थित [अकातन] : त्रहेक्य विस्ता चर्चार दमानिकशास विवदमात्रामा बहेरठाइ-नयस दानव-वित्यम वहांभ्य नवक बरन्य [अकावन]: (नहेंद्रभ हकू चर्बार हकूविक्यित्रतीक विवय-गावाना बहेरला -- नवल ब्रालद -- विराम विराम नवल ट्राबद (अकावन) : (महेळ्ल अवर्षित्रश्रोक विवयमायात इहेरल्क मयल मंस्वर (अकावन). हेलामित बाबा भूर्यत यह। तहेब्रभ अवस्थितशास विवतनांबात्मावध मानव नाबादन विनवासक भाकत्व : (महे मानन विनवनाबात्मादक चावाद नृष्टित भागाद्वन विष्णाञ्चक नृष्टिनिकाट्न ; श्विकानाञ्चलार श्रीश स्टेशा. পवि-्नर्व (महे निकानवन् भव्यक्त विनीन सहेवा शाक । त्रहेबभ कर्ण्यक्तिक-मग्रद्ध तहन, शहन, भगन, बन्छा। १ जानक शहि वित्नव वितनव क्रियाचक विवत्रश्रामिश (महे (महे भागीत क्रियानावात्ता व्यविहे इतः उदन नम्रास अविष्ठे . अन्तर्वाहत नाम विकानवाना चात्र किहू पाटक ना-बिनिया এक बहेबा बाब (>)। ताहै ताहै माधावन जावश्रमिक नाबाब मर्समायानायक शानवद्भणागत रहा: (महे शान छ वक्रछ: विकानाछि-विक नव--- वह विकानविवर्ष वर्ष : कार्य, कोबीठिकवाष्ट्र प्रक्रिंठ चार्क

⁽২) জ্ঞাওপোর্যা—সময় বন্ধমই মুইট অবদ্ধা আছে—(২) সামাজাবদ্ধা, (২) বিশেষবিদ্ধা;
বেষন সনুবাসমন্ত্রীৰ সামাজ অবদ্ধা মনুবাদ, আন ত্রাক্তি অভিনয় বিশেষবিদ্ধা;
বিশেষবিদ্যানাই সামাজাবদ্ধান অভকৃতি; তর্গুসারে নহ-নবী-জন্নাগ প্রকৃতিদ্ধ
অলভানিকে অন্দের বিশেষবিদ্ধা বনা স্ট্রাছে, আন সেই প্রকেন সমন্ত্রিক সমূহকে করের
সামাজাবদ্ধা বনিবা বনা স্ট্রাছে; সেইজক্ত নব নবীয় বিশেষ বিশেষ আভানি সমূহক
বাইলা মিনিবা এক স্ট্রা বায়। আলোচা ছলেও ছবিপ্রিয়ের প্রাক্ত সাধারণ বিশ্ব স্ট্রাক্তরে
স্পর্যানার; স্ট্রাপর্যা, অন্তর্নপর্যা প্রকৃতি স্পর্যান্তর্নীর করে, অবাধ সাধারণ স্থানীর বিভিন্ন সন্ত্রান্তর্নীর করে, অবাধ সাধারণ স্থানীর বিভিন্ন সন্ত্রান্তর্নীর করে, অবাধ সাধারণ স্থানীর স্থানীর করে করিবাধ্যানার স্থানীর করে করিবাধ্যানার স্থানীর স্থা

-

বে, 'বাহা প্রাণ নাবে প্রসিদ্ধ, ভাষা বছতঃ প্রজাসরণ; আবার বাহা প্রজা বনিয়া প্রসিদ্ধ, ভাষাও প্রাণ্যস্কণ' ইভি। ঃ

তাল, সকল ছলে কেবল ইপ্রির্থান বিবরেই লখের কথা অভিহিত ইর

ক্রীছে, কিন্তু কোণাও বিবর্থানেক ইল্লিরালির লবের কথা অভিহিত হর

নাই; ইবার অভিপ্রার কি

কি
ইনা, এ কথা আংশিক সভা বটে, কিন্তু প্রতি

বনে করেন নে, করণবর্গ ও বিবরস্থ্য, উভরই একজাতীর, ভিরজাতীয় নছে;

কারণ, শ্রমানি বিবরস্থ্যই অ-ব-প্রতীতির উপারত্ত অবলান্তর প্রাপ্ত হর্মা

করণ সংজ্ঞার—চক্ষ্য প্রত্তি নাবে প্রতিহিত হর মাত্র; রূপপ্রকাশনের উপার
কৃত প্রদীপ বেমন তৈজস রূপেরই অবলাবিশেষ মাত্র; ঠিক সেই প্রদীপেরই

মন্ত বিশেষ বিশেষ বিবরেই অগত বৈচিঞাবিশেষ-প্রত্যায়ক বিশেষ বিশেষ

অবলাগুলিই চক্ষ্যপ্রকৃতি করণবর্গরূপ প্রকৃতিত হয়; সেই জনাই করণবর্গর

প্রাপ্ত-নির্মাণের জনা আর পুণক প্রযুদ্ধের আবল্লক হয় না; কেন

না, করণবর্গ মধ্য বিষয়সমূহেরই সামান্তান্ত্রক বা সাধারণ অবলা মাত্র,

তথন ইল্লিরপ্রান্ত বিবরসমূহের প্রদায়-কগনেই করণ-সমুহেরও প্রলারাক্তি সিদ্ধ

হইতেছে ৪ ১১৭ ৪ ১১ ৪

আভাসভাম ন । ৪০ বছং দর্মং বদ্যমান্ত্রতি প্রতিজ্ঞাত্ম ; তত্র হেতুরভিহিত আন্তনামান্ত্রমান্ত্রজনান্ত্রপান্তনার প্রজানং ব্রহ্মির আন্তরেদং দর্মমিতি প্রবিজ্ঞাতং মং, তত্তর্কতঃ সাধিত্য। স্বাভানিকোহমং প্রদায় ইতি পৌরাণিক। বছরি ; যন্ত্র বৃদ্ধিপূর্বকঃ প্রদায়ে বন্ধবিদ্ধাং বন্ধবিদ্ধানিকঃ, অনুমাতান্তিক ইত্যাচন্দ্রত্ত-অবিদ্যানিরোধ্যানেপ (ম' ওবতি ; তদ্র্যোহয়ং বিশেষারম্ভা---

ভালাভালাভালাভালাভালে। পূর্বে প্রতিজ্ঞাত হইরাছে বে,
দুখনান বাহা কিছু, তৎসনতাই আত্মনরপ; ত'ববরে, আত্মার সাধারণভাব, আত্মা হইতে উৎপত্তি, এবং আত্মাতেই প্রনয়, এই কর্মী হেতুর
উল্লেখ করা হইরাছে; জতএব উৎপত্তি, তিতি ও প্রানরসময়ে চৈতন্যসভার অভিরিক্ত সভা না থাকার "প্রজ্ঞানং ব্রন্ধ" "আইত্মবেদং সর্বন্ধ"
ইত্যাদি পূর্বপ্রতিজ্ঞাত বিবরেরও সত্যতা সমর্থিত হইরাছে; কিন্তু পৌরাধিক
সভাবার বিদ্যা থাকেন বে, ইহা হইতেছে স্বাভাবিক বা প্রাকৃতিক
প্রভার, আর ব্রন্ধবিদ্যাদের ব্রন্ধবিভাগ্রতাবে বে, জানক্ষত প্রনর, ভাহাই
আত্যতিক প্রনর; সৃষ্টির কারণীভূত অবিদ্যানির্ভি বারা ইহা সম্পন্ন হইরা

विजीदमध्यातः- हरूपरं बाचनम् ।

बारक, [हेशात शत बात शूनबीत स्ट्री शहरव मा] , अहे विवत्रके अछिशास्त्र कतिवात बमा शतवर्ती वित्तव छेशास्त्रक बावकक बहेरकरक्---

দ বিধা সৈদ্ধবৰিল্য উদকে প্ৰান্ত উদকমেৰাকুবিলীয়তে নাহাস্থোদ্যাহণায়েৰ ভাং। বড়ো যতস্ত্ৰাদদীত লবন্ধেবৈবং বা অর ইদং মহমুত্যনস্তমপারং বিজ্ঞানখন এব। এতেভাো ভূতেভা: দমুখায় তাল্পেবাসু বিনশ্যতি, ন প্রেভা সংজ্ঞান্তীভারে ব্রথীমীতি হোবাচ যাজ্ঞবন্ধা: ॥ ১১৮ ॥ ১২ ॥

व्यक्तकाथः। वर्ष पृहेविवित्रमृहाट्य-मः (पृहेविः)-स्था (सस्र) रेमदर्शनमाः नवर्शनकः) डेम्ट्रक (क्ट्रम्) श्रीष्ठः (श्रक्तिशः मन्) উपक्ष এव अन्नः (प्रतानिः क्रम् এव नक्षीकृष्ठा) विनोत्रत्ठ ; चन्न (देनकनविनाम छेम्बरुपात्र (भूमंदर भृवक्क्टा बरीकूर) न ত (নৈব: স্তাৎ (কল্ডিলিপ স্মৰ্থ: ন ভবেছিতাৰ্থ:)। ভূ (পুন:) वटः वठः । बचार बचार कानार) जान्त्रीतः छेन्क्यू जानाः जानास्यः). [त्रक्षंत्र] भवनम् अवनव्यत्रम्) ६व [सावाज्ञात्वः, न छू देनस्विनाम्] ; चारत रेमा विशेष उत्तर देव (धवामव) केनर (शतमान्तानार) महर (अश्रतिक्तिः वृष्ठः (निव्यवत्रः) अनव्य अश्रति विकासकाः (विकास-মাজরপ: ' এব (নিশ্চরে)[ন বরুং কিঞ্ছি:] এতেতা: (বরোক্তেতা:) হতেতাঃ (পুৰিব্যাছিতাঃ) সমুখায় (উৎপক্ত। তানি অভু বিনশ্ৰতি (বিনপ্তি ভূতানি শক্ষীকৃতা বিনপ্তীতার্বঃ) ; প্রেতা (বিনাশানরবং) वित्यवनः छ। (बन्नमहः, हेस्य बाक्य हे जानिवाना वित्यवन्तिः) न बाहि, (ভলা নামত্রপাদিকতবিশেষবৃদ্ধিরপি বিলীয়তে ইতি ভাবঃ) ইতি (এতং) चार्त रेमार्आव. त्रनीयि कथवायि) हेठि वाक्रवदाः छेना ह (উक्कवान किंग) ॥ >>१ ॥ >२ ॥

মূলাকুলাদে—অপর দৃষ্টান্ত বলিভেছেন—সেই দৃষ্টান্তটি
এইরপ: সৈদ্ধবিদা অর্থাৎ লগণগণ্ড বেমন ফলে নিক্ষিপ্ত হইলে
সেই জলের সঙ্গে মিলিয়া যায়, কেহই আর ভাষা পৃথক্ করিয়।
উঠাইতে সমর্থ হয় না; কিম্ব সেই জলের বে বে অংশ হইডে
জল লইয়া আঞ্চাদন করা যায়. সেইখানেই ল্বণরস অনুভূত হইয়া

शांक: बार्व रेमाजवि, क्रिक रक्षमिन और निकामिक महद व्यवस्थ मनात विकानवनर (७६ विवाजवन्नभर) धरे जानामानि कृष्टर অবলম্বন করিয়া প্রান্তমূতি হয়, মাবার দেই সমস্ত মৃত্যের সক্ষৈ সংগই विभिन्ना बांत : विभिन्न बहेरात भर जाहात बांद मामसभावि मथड-क्रनिक क्लान विलय धर्म थारक ना : क्रान मिलिनि, क्लान देशके खामारक विकासकि— अहे कथा वास्तवसा विकास । ১১৮ । ३३ ॥

न्यास्त्रकृष्ट्रास्याच्यः उत वृद्देश्च উभागीशरू-भ शर्वानः टेमबर्गबनाः-निरवार्किकातः टेमबरः नियम्पन्यानकम्बिगैप्रटः, मामनार त्रिकुक्रम्कम्, उक्रिकातः उज्रष्ठरया रा देगद्वयः, देगद्वयन्तारमे विमास्कृति टेमस्विषिनाः ; विन এव विनाः वादर्व वश्अाताः। केन्द्रक निष्को वरवादमी शाब: श्रीकश: উन्कादव विनोत्रधानम् अव्यविनीगरः ; वत्रकोमरेजनन-मुलाई। कार्किना-शास्त्रिः विकासः यावानिमुलाई। प्रशासिक विकास विसद्भव, उपन्न देशकविद्नाः विनीव । इक्षाणाट : उर्गण्डमाद-- छेप्रकरमवानू िनी(ब्रष्ठ हैटि। न ह देनव समा विनारमाम् अवनाम छक्ष छ। भूकावम्-श्रहनात्र श्रहीकृष् देनव त्रमर्वः कन्तिर त्राार चूनिशृताहिल ; हेव-नासाहनर्वकः। शहनाः देवन मुनर्षः : कचार १ वटा वटः गयाम्यवास्त्रनार उद्दूषकमाममीठ--भृदीका जाजामहत्र, नवनाजामस्यव उद्गमकम्, न कू विमालावः >

ववात्रः वृद्धान्तः, अवस्मव कु व्यत्त त्मात्त्रात्रं, हेमः शत्रमाञ्चाबार महस्र छः বন্ধাৎ মহতো ভূতাদ্বিদাল পরিছিল্লা সতী কার্যাকরণোপাধিসম্বাং বিলা-काववाशद्वातिः म्हाः क्रवावत्रान्नावाणिभागामित्रः नात्रवर्ष्वव ठानिः सावव्य-কার্যাব্রিকা অম্যাবরাহমিতি: স বিলাভাব: তন কার্যাকরণভূতোপাধি-भूक्ञाविकनिष्ठः यहिष्ठ कृष्ट यातानो यहानमूखकानौरत शतमाचनि चक्रत्वश्यात्वश्यात् चार्कः देवद्यवनवामकदान अक्षानचानश्यात्वश्यात्व निवस्तात्वः विशासनिख्याविष्ठमविक्तां एक धावनिकः ; जिमन धविरहे परवानिकाल विनाजात्व>विनाक्टठ (अमलात अनामिक-हेमरमकमदेवणः बहक छड्डक बहड्छ: नुर्वबह्छत्रदार, चाकानाप्तिकात्रनवाक, कुछ: जिवनि কালের স্বরূপাব্যভিচারাৎ সর্কাদৈব পরিনিপারবিভি ত্রৈকালিকো নিঠা-প্রভারঃ; খববা ভূতশকঃ পরমার্ববাচী. মহন্ত পারমার্বিককেতার্বঃ।

विकीरमध्याम् अपूर्णः बायनम् ।

(म)किक्यः वराणि मदर् छपछि, पश्चनात्राङ्ग्छः दिनवरावित्वर्गराणाम् है। नत्रनार्थस्य ; चर्छः विनिमहि—देश्य वर्षः छर्छर्गरि ।२

খনতং নাভাৰো বিষয়ত ইতানতৰ; ক্যাচিয়াপেক্ষিকং ভাষিতাতো विनिम्हि चलात्रविछि । विक्रविर्क्तिकानः, विकानकं ठन्यनत्किष्ठि विकानयनः, धनमाना काणावत्रअणित्वधार्वः--वना मूदर्गपानाः हायन हेलि । अव-माना ≥ব্ধারণার্থঃ নাক্তমাতাত্ত্রমন্তরালে বিভাত ইতার্থঃ বলীদ্যেক্তরলৈতং প্রমার্থতঃ বাছং সংসারত্ঃবাসম্প্রত্ব, কিংনিবিভো৽রং বিন্যভাব আস্থনঃ --काट्या मृष्टः सूबी इःबाहः बरबट्यायबाधिनकर्ताः स्मक्तारमात्रवर्त्वाभक्तयः १---ইস্টাটতে—এতেভো৷ কৃতেভাঃ—বাকেতানি কাৰ্য্যকরণবিৰয়াকারপরিণতানি নাষরপাশ্বকানি সলিলকেনবুৰ লোণবানি বচ্ছত প্রবাশ্বনঃ সলিলোপযত, त्यवार विवयपर्वाचानार अञ्चानचरम उच्चनि भवनार्चविरवक्कारमम अविनामम-মৃক্তং নদীসমূলবং এতেলো ছেতৃত্তেলো ভূতেলঃ সভাৰৰৰাচ্যেলঃ नमुशांत्र टेनव्यविनायः - वर्षाः व्याः वर्षाञ्जाविश्विञ्चित्वः, वर्षा वा वस्त्रा ক্টিকসালকাছাণাধিতো৷ রক্তাদিতাবঃ, এবস্ কাহাকরণভূত-ভূতোণাধিতো৷ বিশেষাম্মবিলাভাবেন সমুখায় স্যাওখার বেলো ভূতেভা উবিতঃ, তানি ষ্ণা কাধ্যকরণবিষয়াকারপরিণতানি ভূতানি আন্ধনো বিশেষাধ্বিদ্যুহেভূভূ-তানি শাল্লাচার্ব্যোপদেশেন এশ্ববিদারা নদীসমূহকং প্রবিদাপিতানি বিনক্তি, निनाक्तन्त्रम्त्राणियः, (छत् विनवः म् वादत अव वित्नवाचिनाकाता विनक्षि ; बरवामकानककामिर इवन्याद द्वाठकप्रविकामि अधिविरमा विनक्षि. চ্নাদিবরপ্রেব প্রমার্থতো বাব্তিউতে, তহুং প্রজানখনমন্তমপারং বৃদ্ধং বাৰ্বভিষ্ঠতে। ও

ন তথ্য প্রেচ্য বিশেষসংজ্ঞান্তি ব্রবীষ অহমদি অমৃত্য ইত্যেবন্ধ, অরে মৈরেরি, নাভি বিলেমসংজ্ঞতি ব্রবীষ অহমদি অমৃত্য পুত্রং, নবেদং ক্ষেরং ধনং, সুখী ছংখীত্যেবমাদিলক্ষণা, অবিভাক্তভাক্তমাঃ; অবিভারাক্ত ব্রুবিদায়া নির্ধরতা নাশিতভাৎ কুতো বিশেষসংজ্ঞাসন্তবো ব্রক্ষবিদক্তভাক্তমাণ বর্গারাবস্থিতভাপি বিশেষসংজ্ঞা নোপপদাতে, কিমৃত কার্বাক্রণবিম্কাশা সক্ষতঃ—ইতি হ উবাচ উক্তবান্ কিল প্রধার্থনানং মৈত্রেইয়া ভার্যারে যাজবভাঃ । ১১৮ ॥ ১২ ॥

টীকা। স বৰা নৈজবৰিলা ইভাবে: নগজং বকু: বৃত্ত: ভাউছভি—ভহত্ৰভান-লিকা পূৰ্ব: নশুভব বজুাভাবে। এভিজাভেংৰ্বে পূৰ্বোজং কেছুমনুত নাথানিছিং * 492

स्मार पर्नेष्ठकि—क्ष्म्यशिक्ति। वैक्ट्रिश्वाविश्वाविश्व न स्वित्रश्निमिक्ति वर स्वित्र स्वित्र पर्वत प्रवित्र विश्व स्वयं क्ष्म्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं क्ष्म्य स्वयं स्वयं क्ष्म्य स्वयं स्व

वरवृक्तवरवरेकविकृतक्व मथकः। यक्षायंक महस्रागिवरवानिकश्चावर्गनाह्यं रेव नवः। देवर वर्ष्युकविकाद्यवः त्यापेर विववविक न्यान्याप्ति छा। प्रतिवर वक वाश्वामाः वर्ष्युक्तिकि मूर्कान अववः विनावावाणांच काषाः कवर्षात -- महर्त्वाःकारोः कामामाहिनान्याकः काठलक्षियात्वाच्य विकासक केतावः। विकासनारक्षात्वा बरवार में दिनाकार में के कुर का कु कुछ बद्दविकालकार - व्य किला कार्य ইकि । विवाधान: धनवार्थ: १ वक नृतिकश्वधार्यवक्ताविविद्ववराति । दम अत्मरेव-करका, क्षणह — श्रक्काटमन्त्र । क्षणानिव्यवस्थार — ज्ञाम स्ट हेर्न्ड । क्षण गारणकर बारक्षि - जाक्षात्व क्रेन्ड । व्यक्तिवानवादन ८५६० वनः वापाणः वर्गववात्वात्राह-अविराहांक । अवह रावारक अरव विकाशक धारनववाल किः अभिकास बार-ভশ্মিজিত। বংবং সাংগতি অংকাতি। ভূতবন্দাগগতি—ব্রিল্পাতি। মহবিদ্ধান্তে পারবাধিক: হেতি বিশেষবং কেমবামতাবিদ্যাহ—ক্রেটাকিকামিতি। व्याअरकानीनः पृत्रिकृत्रवानः विषयनाति वृह्दसञ्जाति कर्तातः स्वाहिति वृद्धानि वृद्धानि वृद्धानि वृद्धानि वृद्धानि **७९णत्रवार्यस्यः** । त वि वृक्तः सहित्युक्षानारविभित्रवारकः छ। त्वाकिकान् वश्रका अक गाववंत्रिकः विद्यप्यविद्यार्थः। >

विकीरमध्यामः उपूर्वः वाचनम्।

(संकृष्टका देखा। प्रांतिन वांतर वंशकनकानकवा रक्षार वक्षकवाहं करकारिक। वर्ष देखा वन्नकार विकार निर्माण विकार निर्माण विकार विक

ভৱেষি কৈবলোকি:। উভবেৰ বালাৰ্থং পৃষ্টৰভি—মান্ত্ৰীক্তি। বন্ধবিবাহৰ-বাৰভ বিশেষনভোজাৰ- কৈবৃত্তিকভাৱেৰ কৰছত—পত্নীস্নাৰ্জাক্তিক্তক্তৈ। সুৰুৱ-ভেডি বাৰং। দৰ্মভঃ কাৰ্যকঃগৰিস্কুভেডি নৰক:১১১৮৪১৮৪

ভाष्णाम् जाप्तः। हेक विवस पृद्धोव-मश्त्रहीच वरेटाटह-'म वर्षा' इंछापि। टेनक्वविना—टेनक्व वर्ष - निकुत विकाद ; अवादन निकु वर्ष वन चिंहिरु रहेताहः ; कावन, असम वा कवन रक्षा जलबरे वास्त्राविक ধর্ম : ক্রম্ম হেতৃই বলের নাম সিদ্ধ ; বাহা ঐ সিদ্ধর বিকার, বা সিদ্ধতে উৎপন্ন, छाहा रेमदर ; बिना वर्ष-बिन (निक), बार्ष छदिछ 'ब' क्रान्त बहेबाए । रेनकर-बिना वर्ष - वाश रेनकर, ठाशहे बिना । तहे रेनकर-विना प्रवानि बानव मर्या अभिध रहेता बानव नामहे विनीन रहेता वात : भाविव উछान-मःरवान वनछः विरमात त्व कक्षिनछा हरेता वास्क, चकात्रवेकुछ बनगरनार्न (व जाहात अभवन वा अवसीन, जाहाहे [रेनस्वनिराहत উপালানভুত] উদক্ষের বিলয় ; স্থতরাং সেই বল-বিলয়ের সঙ্গে সংঘট বে, रेमकविष्तात विनत रहेता वारक, अवारम "छेरकरवर चन्न विनीवरण" क्यांव जाहाई वाक कहा हहेएलह । यांज विष्ठयन लाक्छ अहे देमस्विकारक भूट्यंत नात भूषक् कतिता छेकात कतिएक नवर्ष रत ना ; कातन १ (व (रुष्ट्र, (व (व चश्न इंटें(ठ क्रे चन क्षरन कड़ा शंत्र—क्षरन कड़िया चांचावन করা বার, সেই জলে কেবল লবণাখালই পাওয়া বার, কিন্তু বিল্যভাব আরু (क्बिएक भावता शांत मा। अवारम ["अश्यात-हैव"] अहे 'हैव' मचकित (कामरे वर्ष मारे। >

অরে নৈজেরি, বেরপ গৃতাত প্রচণিত হইন, টিক এইরপই পরমান্তাথ্য বহৎ কৃত (নিভানিত পদার্থ)—তৃবি অবিভাগ্রভাবে বে বহুৎ ভূত হইতে বিজ্ঞির ও পরিজ্ঞির হইরা কেহেজিয়াকি উপাধিস্পর্ক বপতঃ বিভাভাব

(पृथक् राक्तिकार) आश्र हरेबाइ--वर्काहरण सम, बत्रन, जनमात्रा, निनामा अकृष्टि मरमात-वर्ष-पूक रहेताह ; जावि जबूरकत ररमबाख--जबूक ৰণিয়া আপনাকে নাৰ-ৰূপ-কাৰ্য্যাত্মক বনে করিতেছ ; বেছেজিয়াৰি উপাৰিসম্পৰ্ক-অনিত ভ্ৰয়াত্মক তোৰার গেই বিলাভাৰটি বলি অভয়, ভাষয়, चन्त्र, चनव, चनाव, निजानद ७ देनदर्गानवर अक्रानाचक বন্ধপ ব্যবধানরহিত এবং অবিভা-কনিত ত্রবরহিত নিভাসিত্র चरवामि नवबाबार्क करवनिक वत्र ;--कावारक क्षविहे वहेरन केक विनाकाविक चकांत्रत्व विजीत बहेता बात ; ज्यम व्यविषात् । भ्रम् (ज्यक विनद्वे बहेता बात, ख्यन-- **এই এक च्यारिटीय प्रदर कृ**ठ खब्यरच प्रसीर्थका दृहर विनेत्रा अवर षाकानांवि बहाकृत्वद कावन वानेबाध बहर, अवर कृष्ठ, छविष्ठर ७ वर्षमान वह कामाखात्रहे छाहात पश्चनहानि पार्छ ना, नर्समाहे निष्टवर बात्क, वह কারণেই ভূ গাড়ুর উত্তর নিষ্ঠাপ্রতার ('अ' প্রতার) হইরাছে। कुछनकृष्ठि भन्नवार्व वस्तावक ; [वृक्तिष्ठ हहेरव त्व,] छिनि वहरे वर्त्व, এবং পরবার্থ সংও বটে ; লাগতিক পদার্থগুলি বদিও পর ও নারাসমূখিত दिवानवारि गर्बाठ महन वहर रहेक, उदानि छात्रा क्वनहे भाववार्षिक मठा नरह ; अहेन्छहे अवारन 'महर' ७ 'कृष्ठ' नरक उत्राक विरन्धिक कहा रहेबारक । २

[সেই বহৎ ভৃতটি] জনত ; কারণ, দেশ গালাদি বারা তাহার জন্ত বা সীয়া নির্বারিত করা বার না ; জানত্তা ধর্মটি সময়বিশেনে আপেন্দিকও হইতে পারে ; এই জন্ত বিশেষ করিয়া বলিতেছেন,—'জপারন্ব', আর্থাৎ ওাহার জানত্তা আপেন্দিক দেবে, মাতাবিক। বিজ্ঞান আর্থ—বিশেষ জ্ঞান ; বিজ্ঞানখন আর্থ—বিজ্ঞানও বটে, ঘনও বটে ; 'ঘন' পথটি জন্যজাতীর পরার্থের সম্বন্ধপ্রতিবেশক ; ঘেষন—স্বর্ণখন (কেবলই পুরর্ণ , আরোধন (কেবলই লৌহ) ইত্যাদি। [বিজ্ঞানখন এব] এই 'এব' পথটার আর্থ জ্ঞান্বারণ—নিশ্চাই ইহার মধ্যে জপরজাতীর কোন পরার্থ বিজ্ঞান নাই। তাল কথা, এই পরমান্বা বদি নিশ্চাই এক জ্যিতীয় বথার্থ নির্দাল ও সংসারহংবে জনপ্রেট্ট হইবে, তাহা হইলে এই আ্যার অভ্যান্ডাবের ভারণ কি ? যাহার ফলে—জীবণণ 'আনি জ্ঞান্ড, মৃড, 'সুখী, মুখী এবং আনি জ্ঞান্তা ইত্যাদি জনেক প্রকার সংসার ধর্মে উৎপীত্তিত হইরা বাবে ? এই আশভার বলিতেছেন—"এতেডাঃ,ভৃত্যেডাঃ"—বজ্ঞ নিরাবিদ

ननिनन्त्र भवनाचात्र अहे (व. क्नीय स्म ब्रुव्स्य कात्र स्व. हेक्कि क विवदाकारत পরিগত নামরূপাত্মক বর্ণ, পরমার্থবিবেক-জ্ঞান বারা কার্য্য, कांत्रप ७ विवतासक (म मयक वर्ष्यत -मयुद्ध नही-नामात कांत्र क्रकानपन পরবাস্থাতে বিলীন করার কবা উক্ত হইরাছে, সত্য শক্ষরাচ্য সেই বহৎ कुछ हरेएछ देनबर्गिरलाब जाब नवृत्तिष्ठ हरेबा--वर्गार करनब नाहार्या स्वजन চল্লহুৰ্ব্যাদির প্ৰতিবিদ্ধ উবিত হয়, খলক (খানুতা) প্ৰভৃতি লোহিড-ত্ৰব্যের সহবোগে বেরুপ সভাবন্তত্র ক্ষটিকে লৌহিত্যাদি ভাব উপস্থিত হয়, তত্ৰণ হেছেজিয়াদি ভাবে পরিণত ভূতাত্মক উপাধির সহিত সম্ভনিবন্ধন जाजात्र वित्य वित्य विमाणाव छेनड्रिक बहेडा बाटक; जाजात्र वित्यव विराग वाक्रिरण्टा विनाणांव वाक्षित राष्ट्रकृष्ठ अवर राष्ट्र, हेक्सि ध বিষয়াকারে পরিণত সেই ভূতসমূহই আবার ববন শান্ত ও আচার্ব্যোপকেন-জনিত ব্রমবিভাপ্রভাবে সমুদ্রে নদীসমুহের ভার বিলাণিত (বিনাশিত) হর, তৰন সেই ভূতসমূহ বিনষ্ট হইবার দলে দলে কৰিত সেই আন্নারও সেই বিশেষ বিশেষ খিলাভাবটি বিনষ্ট হইরা বার। প্রতিবিশ্ব সমুত্তবের হেভুজুত बन, बनक (बान्छ) वहत बनाद (बनन बनादिन्छ हत द्वा ७ कहि-काणित প্রতিবিশ্বও বিনট্ট इटेबा बाद-তবন তাহার। কেবল চল্ল পর্বাাধি-ब्रांभरे चवश्राम करत, द्वानि छेशाविकृष्ठ कुछवार्तत विमन्न सरेल शत, क्ष्मिन दे विमाणांवक चनव चनात निर्चन क्षमानवनवद्वान चवडान कवित्रा बाटक । ७

শবে নৈত্রেরি, থানি বলিতেছি—দেই কৈবল্যাবহার বখন প্রেত হয়—
কার্য্যকরণাত্মক দেহণিও হইতে বিষ্ক্ত হয়, তখন তাহার আর বিশেষ
সংজ্ঞা আর্থাং 'আনি অর্ক, অর্কের পুত্র, আনার এই ক্ষেত্র ও বনসম্পদ্ধ,
আনি সুখী হংশী' ইত্যাদি প্রকার বিশেষ জ্ঞান থাকে না; কারণ,
একবার অবিদ্ধা হইতেই ঐ প্রকার বিশেষ বিজ্ঞান সমুহণম হইরা
গাকে; সেই অবিদ্ধাই বখন ব্রছবিদ্ধা গারা সমূলে বিশ্বন্ত হইরাছে, তখন
নিজের বভাংনিত হৈতভরণে অবহিত সেই বছবিদ্ ব্যক্তির বিশেষ সংজ্ঞা
সভাবেরও সন্তাবনা থাকে না; তখন কেহেজির-সম্ভ সন্তার আর কথা কি ?
বাজ্যবন্ত ধরি বীর ভার্য্যা বৈত্রেরীকে এইরূপ পরবার্য জ্ঞানের উপরেশ
দিরাছিলেন ৪১১৮৪২৪

मा (बाबाह देवरखयारेखव मा छभवानवृक्ष्य न প्राचा-

खोखि; न (रावांठ वाष्णवरद्धां न वा ष्यद्रहरू त्यारः खवीयानः वा षद्र हैनः विद्यानाव ॥১১৯॥১७॥

ज्यसम्मार्थः। मा (१वर श्राविष्ठां) देश्वती छेवाह ह (किन) छत्रवान् (भूकनीता छवान्) 'न श्राव्या गरकाछीछि' ज्या (विवतः) अव वा (वाव्) ज्यूक्ट (विश्वाहिछ्वान्)। [अवमूकः] मः वाक्षवद्याः छवाह ह—जरतः (१६ देशस्त्रि), ज्यूकः न देव (देनव) श्रावः (श्रावः वाक्षवः वाक्षवः) उवीधिः ज्यसः (१६ देशस्त्रि), हेमः (यक्षकः 'न (१९ छा मरकाछीछि' वाक्षाः विकानात्र (विश्वावः ज्ञाजून्) देव ज्ञारः (भर्ताशः (विश्वावः) ॥ १२ १०।

ক্ষ্যুক্তাকে। মৈত্রেয়া এইরূপ প্রবোধ প্রাপ্ত কইয়া যাজ্ঞক্ষ্যুকে বলিলেন—পৃন্ধনীয় আপনি বে. বলিয়াছেন—প্রেডান্ডাবের
পর বিশেব বিজ্ঞান থাকে না, এখানেই আমাকে বিমোহিত করিয়াছেন,
কর্মাহ প্রেডান্ডাবের পর যে, বিশেষ বিজ্ঞান কেন থাকে না, তাহা
আমি বৃক্তিভেছি না। ভত্তরে বাজ্ঞানতা বলিলেন— করে মৈত্রেযি,
আমি নিশ্চয়ই ভোমাকে মোহকর (প্রান্তিজ্ঞানক মিথাা) বাকা
বলিভেছি ন:; এ বিষয়টি বিশেবরূপে হালয়্পম করিবারও উপযুক্ত
বটে ৪১১৯৪১৩।

পা ক্সন্ত ভাষ্য ভা্ ।—এবং প্রতিবোধিতা সা হ কিল উবাচ উক্তবতী বৈত্রেয়াঁ—অত্রৈব এতলিরেবৈকলিন্ বন্ধনি একণি বিক্রমণর্ববন্ধনাচকাণেন ভগবতা বন বোহঃ কৃতঃ, তলাহ—অত্রেব যা তপবান্ প্লাবান্ অবৃষ্তং বোহং কৃতবান্। কবং তেন বিক্রমণর্ববন্ধকবিত্যচাতে পূর্নং বিজ্ঞানখন এবাতি প্রতিজ্ঞার, পূনন প্রেত্য সঙ্জাতীতি; কবং বিজ্ঞানখন এব সক্ষং বা ন প্রেত্যসংজ্ঞাতীতি । ন কৃষ্ণং শীতকারিরেবৈকো ভবতি, অতো বৃচ্চাহব্যন্ত । স হোবাচ বাজবন্ধাঃ— ন বৈ অরে বৈত্রেরি, অহং বোহং ক্রীবি, বোহনং বাকাং ন ব্রীবীতার্যঃ।

মন্থ কথং বিক্লম্বর্শবনবোচঃ—বিজ্ঞানখনং সংজ্ঞাতাবক ; নং নরেছনেক-বিন্ ব্যন্তিনি অতিহিত্য ; ব্যৈবেদং বিক্রম্বর্শবেন একং বন্ধ পরিসূহীতং ব্যান্ত্যা ; ন ভু নরোজন্—বরা ভূ ইদস্কন ;—বন্ধ অবিভাগ্রভূাপড়াপিতঃ কার্য্য- করণসম্বদ্ধান্দার বিদ্যালয়, তবিন্ বিদ্যার নাশিতে, ভারিবিন্ধা বা বিশেষসংখ্যা পরারাহিসক্তিনি অন্তত্মকর্মনসক্ষণা, সা কার্য্যকরণসক্ষাভোপারে প্রবিদ্যালয়ের কর্মানি কর্মানি প্রবিদ্যালয়ের কর্মানি কর্মানি প্রবিদ্যালয়ের কর্মানি ক্রানি কর্মানি ক্রানি কর্মানি ক্রানি কর্মানি ক্রামানি ক্রানি কর্মানি কর্মানি ক্রামানি কর্মানি কর্মানি কর্মানি কর্মানি ক্

টীকা। উক্তং শরমার্থনশন্তের বাক্তীকর্ত্ত লোহাতি—প্রস্থামিতি। তেল বাজনবন্দেরের বাবং। ইতি বহুৱা বিক্তমগুরুত্তি বেহুঃ। এবং ব্যমেন্তি কুরো বির্মেণ্ডারিক্তালভাহে—মুক্তাতি। বির্মেণ্ডারিক্তমগুরুত্ত আরুত্তি। অনুকৃত্তি বিষ্মেণ্ডার্থার নাম্বিতি পথতে—মুক্তিতি। বাহার বাক্তাং সমাব্যক্তি। করু ইতি। বোহার বাক্তাং প্রস্থানের বিশ্বমন্তি। করু করি করুত্তি বিশ্বমন্তি। করুত্তি ক্রাহ্ মুক্তাতি ক্রাহ্ মুক্তাতি বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি। বিশ্বমন্তি বিশ্বমন্ত্র বিশ্বমন্তি বিশ্

ক্তাব্দ্যালু বাদে । বৈত্রেরী এইরপে উপদেশ প্রাপ্ত হইরা বলি-লেন—এই বিবরেই অর্থাৎ একই প্রথম বিরুদ্ধ ধর্মের উপদেশ করিরা আনার বোহ বা এন সমুৎপাদন করিরাছেন; এই ক্যাই প্রকাশ করিরা বলিতেছেন বে, ভগবান্--প্রনীর আপনি এ বিবরেই আনাকে নোহিত করিরাছেন। ভিনি বে, কিরপে বিরুদ্ধ ধর্ম-সম্ম নির্মেশ করিরাছেন, ভাবা বলিতেছেন—প্রথমে প্রতিক্ষা করা হইরাছে বে, আছা নিশ্চরই विकानसम ; त्यार सावात बना बहेताह त्य, त्थानावात भन्न साव वित्यय मरका बात्क मा ; किन्दर्भ है वा विकानस्त, सावात कित्रत्भ त्थानस्त भन्न मा किन्दर्भ वा विकानस्त, सावात कित्रत्भ त्थानस्त भन्न मा किन्दर्भ वा विकानस्त, सावात क्ष्यान के स्वयं मा किन्दर्भ वा क्ष्यान के स्वयं के स

रेबाउरीत जानका अहे त्व. अकवाद 'विकासकर' जावाद 'मरकाणाव' वनात्र कृषि छ बाबात भवाद विक्रम धर्ब है निर्देश कतिएक १ [छहत्वत वाक्यका वनिरमत-- वावि अकहे वश्रक छक्त वर्षवत्र निर्द्धन कति नाहे : छुनिहे छावियनछः अक्ट रखरक छेक विक्रष वर्ष विनिद्देवरण श्रदन कवित्राष्ट् मां ; जानि किंद्र (मह्नभ क्या क्यान्ध वनि नारे ; जानि वनिग्राधि, जनिजा-अकारत काचात (व. काटक्कियावि-मक्काबीन विमाणाव (वाकिक) केनक्रिक हर, बाबजान होता (महे बिनाकार किर्ताहिक हहेरन भर. म्हाहिनाहि-प्रकारकामाधि । विद्यानक्वनिक नदोदावि-नवदायीन (क्ववर्ननाद्यक (नहे वित्व नः कां वित्व हरेबा यात ; कात्र, छथन छाहात कात्रेषेस्छ व्यविष्ठावि होन वर्तनान पारक ना : कार्बाहे श्रीणिविषानात क्रमावि-विनात्त (ब्रह्म क्रमांक क्यांकि क्षक्रिविक ও क्रमांनिक श्रामानि वर्णात विस्तान करेत्रा बारक, कक्षम : अक्रुक्रमास्क किंद्र अिवियमार्ग राज्ञम विचारात्र क्ष्म ७ चाक्छि।कि नवार्यंत यक्कभवानि चार्छ मा, छक्कभ वित्यव मरक्कारमारमध व्यवस्थाती तक्षवद्वभ विकानचरनत वद्वभठः विनाम दत्र ना ; बहेक्क छीहारक 'बिका विकानवन' वना बहेबारक। ताहे विकानवनहे नश कनरूत बाबा: সুভরাং কেৰোপালান ভূতগৰুছের বিনাশেও তাছার স্বরূপতঃ বিনাশ হয় না; কিছ অবিভানত বিলাভাবটারই কেবল বিনাশ বয়; কারণ, আৰু প্রতিতে चारक-विकादबातके (कार्यावक्षभातके) (क्यम वांकाश्य मात्र मात्र ; चारत देशताहि, शहबार्व १६ जेरे चांचा किंद्र चितानी ; चछवर वरे चनव चंशाह মহৎ ভুক্ত প্রবাদ্ধার বন্ধপ বেরপ বর্ণনা করিলান, তাহা বৃক্তি পারা বার; हेशाइ भरत्र विवादन-'व्यविमानी विनाहे विकालाः विकासम विराम वा विवास नाहें' हेकि 1 >>> 1 >0 1

হত্তে হি বৈভাষিৰ ভৰতি ভণিতৰ ইতৰং কিছতি,

তদিতর ইতরং পশুতি, তদিতর ইতরত্পুণোতি, তদিতর ইতরমতিবদতি, তদিতর ইতরং মসুতে, তদিতর ইতরং বিদ্যানাতি,
যত্র বা অভ সর্ব্বমান্ত্রেবান্ত্র্থ তথ কেন কং জিত্রেথ তথ কেন কং
পশ্রেথ তথ কেন কথ শৃণুরাথ তথ কেন কমভিবদেথ তথ
কেন কং মন্ত্রীত তথ কেন কং বিজ্ঞানীরাথ। কেনেদ্রুথ সর্ব্ধাং
বিজ্ঞানাতি তথ কেন বিজ্ঞানীরাথ বিজ্ঞাতাঃমরে কেন বিজ্ঞানীরাদিতি ৪১২০৪১১৪

ইতি বিতীয়াধ্যকত চতুৰ্বং ব্ৰাহ্মণমূ ১২৪৪৪

महासार्थः। वहकः—व (প্रভা नःसारोडि, ভङ्गगाविङ्गार-बर्धकामि । जित्र देवरवृत्ति, विकास विकास वार्षा (निकार) देवक्ष वेव ভৰতি (এক্ষিন অবহে ব্ৰহণি ভিত্তবিৰ ব্ৰহণ্ড প্ৰতীয়বানং ভৰতি), তৎ (छत) रेखतः रेखतः विविध (कर्तुकृष्ठः चन्नः कर्वकृष्ठम् चन्नः विविधीषार्यः) ; ভৎ (ভত্ৰ) ইতরঃ ইতরং পশ্রতি, তং ইতরঃ ইভরং পূণোতি ; ভং ইভরঃ টতরব শতিবদতি, তং ইতরঃ ইতরব বসুতে, তং ইতরঃ ইতরং বিজানাতি। . छमा (कम्मारभक्तः मार्का वावहातः अवर्ततः हेकि कावः]। [भक्तावातः] नज देर गर्नार (नामक्रभावासर अन्नर) चन्न । जनविषरः) चाचा अर चन्नर (আৰুবাভিব্ৰেকেণ সৰ্বোষ্ঠানঃ সম্পদ্তে), তং (ভত্ৰ বিভাবছাৱাং) (कन (कत्रातन) कर (विषयः) बिरायः (जात्वित्रश्रीकः कृष्ीाः) ? छर (कन कर भाकर १ छर (कम का मुनुबार १ छर (कन कम माछिवासर (क्षापार) १ छर क्या कर बंबीछ । छर कन कर विकासीपार (नर्वाचकरपाननाक) (क्यांकावार बाजावाविया।भारावावकाविर्विः সুভৱাৰুপণততে ইভি कावः]। चातः देवातात्रि, त्वन (टेक्काकन) वेवर (वृक्षवानर) नर्वर विका-नांडि (वित्यादन चवन्नक्ष्डि), (कन (कन्नतन) छर (विकासक्षक् चाचामर) विकामीबाद १ (ब्राकुर नक्ष्मार १) ; विकालांबर (नर्वविकामनाकिक्छर छर) (क्न विकानीपाद १ (म (क्नानीकार्यः) रेंकि । ১২० । ১৪ ।

অ্কান্সকাদে। বার নৈত্রেরি, বে অবস্থার বৈতবং—ভিরের ভার প্রতীয়দান হয়, সেই অবস্থারই অপরে অপরকে (গছ) আত্রাণ করে, একে অপরকে বর্ণন করে, অন্তে অন্তর্কে ক্রাবন করে, একে অপরকে অ অবাদন করে, অপরে অপরকে চিন্তা করে, অপরে অপরকে বিশেষরূপে কানে; অর্থাৎ সেই অবিদ্যাবস্থাতেই জেনসাপেক দর্শনাদি সমস্ত ব্যবহার নিম্পান হইয়া থাকে। পকাশুরে, সাধ্যকর যে অবস্থার সমস্তই (অগৎই) আত্মস্থারপ হইয়া যায়, আত্মাতিরিক্ত কোন বস্তাব সন্তা-কুর্তি হয় না, তথন কিসের ঘারা কাহাকে আত্মান করিবে? কিসের ঘারা কাহাকে দর্শন করিবে? কিসের ঘারা কাহাকে অবিধ্ করিবে? কিসের ঘারা কাহাকে বিশেষরূপে জানিরে? জীবগণ, যে বিজ্ঞানের সাহায্যে অপর সমস্ত বিষয় জানিয়া থাকে, তাহাকে আবাব কিসের ঘারা জানিবে? অরি নৈত্রেয়ি, বিঞ্জাতাকে আবার কিসের ঘারা জানিবে? অর্থাৎ সে সময় ভেনসাপেক সমস্ত ব্যবহার বিজ্ঞপ্ত হইয়া যায় ৪ ১২০ ৪ ৪ ৪

শাক্ষর ভাত্মান। কথং তহি প্রেতা সংজ্ঞা নাজীতাচাতে,—
শূপু— বর বনিরবিভাকরিতে কংগ্যকরণসভাতোপাধিজনিতে বিশেষাত্মনি
বিল্যান্তাবে, হি বনাস্ বৈত্তমিব পরমার্থতোহবৈতে রন্ধণি ধৈ চমিব ভিন্নবিব
বন্ধরমান্ত্রন উপলক্ষাতে। নমু বৈতেনোপমীরমানদাং বৈতত্ত পামার্থিকত্মমিতি ! ন,—"বাচারভাগং বিকারে। নামধেরম্" ইতিশ্রত্যপ্তরাদেকমেবাভিতীরমার্থেবেশং স্ক্রিভি চ । >

छ९ छछ यथाग्रेयक्षित, छ्याम्यर्ग्यक्षितः श्वाप्ताः विश्वकृष्ठ व्याप्ता व्याप्ताः विश्वकृष्ठ व्याप्ता व्याप्ताः व्याप्तिः व्याप्तिः विश्वक्षिः हेण्या याण हेण्यत् याण्या हेण्यत् याण्याः यथाम्यरं विश्वकिः (०) हेण्यः हेण्यति कावक-व्यक्तिंग्वरं, भक्तविक्षि व्याप्ताः विश्वति । यथा हिमलीकि व्याप्ताः विश्वाप्ताः विश्वतः हिमलीक्ष्याः व्याप्ताः विश्वति व्याप्ताः विश्वति हिमलीक्ष्यः व्याप्ताः विश्वति व्याप्ताः विश्वति हिमलीक्ष्यः । हेण्याः विश्वति व्याप्ताः विश्वति व्यापति व्यापति विश्वति व्यापति विश्वति व्यापति विश्वति व

⁽১) ভটিয়া 'অধিতর ইতরং প্রতি' অধিতর ইতরং বিজন্তি, ইংতাবং ঞ্চেংও। পাঠক্রমং, ভয়ানু-আধানশি ভবসুরুবাসুযোধি ধর্ততে ইতি জাতবাদ ।

रत प् तमनिक्षा मनिका नामम्भानिका, क्रतामनाक्रियरका मक्का-कारा । रत देव मंत्र तमनिका गर्मार नामक्रमाणि माम्सक्रम क्षामिनिक् मरेम्बर गश्चकर—रहेत्ववर्गादेश्वराक्र, कर क्रत क्षामिन कर माक्यार कर क्रियर १ क्या गरकर विकामीग्रार ।०

সর্মত্র হি কারকসাধ্যা ক্রিয়া; শতঃ কারকাতাবেংক্সপদ্ধিঃ ক্রিয়ায়াঃ; ক্রিয়াভাবে চ ক্যাভাবঃ; ভ্রমাথবিভায়াবের স্ত্যাং ক্রিয়াকারক্সন্যবহারো ন ব্রন্ধবিদ্য; আত্মাবের সর্ম্বন্ধ নাম্বন্ধতিরেকেশ কারকং ক্রিয়াক্সং বাজি। ন চানাম্বা সন্ সর্মনাম্বৈর ভরতি কন্তচিং; ভ্রমাথবিভরৈবানাম্বর্ণং পরিকল্পিএল; নতু পরমার্থভ আত্মবাভিরেকেগান্তি কিঞ্চিং; ভ্রমাং পরমার্থা-ক্রেক্পপ্রভারে ক্রিয়াকারক্সপ্রভারামুপশন্তিঃ; শতো বিরোধান্থ ক্রম্ববিদ্য ক্রিয়ালাং তৎসাধনানাঞ্চাভার্ত্বের নির্ভিঃ। 'কেন কথন্' ইতি ক্ষেপার্থং বচনন্ব, প্রকারান্তরামুপপন্তিদর্শনার্থন্ব; কেনচিগপি প্রকারেশ ক্রিয়াকরণাদিকারকাল্পপন্তেঃ। কেনচিং কঞ্চিং কঞ্চিং কর্যক্রিয় ক্রিয়েব্রেভার্থং।৪

বরাপ্যবিভাবস্থায়ার অন্তঃ অন্তঃ পশুতি, তত্রাপি বেনেছং সর্নাং বিজ্ঞানাতি, তং কেন বিজ্ঞানীয়াৎ ? বেন বিজ্ঞানাতি, তত্ত করণত বিজ্ঞেরে বিনির্জ্ঞান ; আতৃক্ত জেয়ে এব হি জিল্ঞাসা নাছনি। ন চামেরিবাছাছনো বিবয়ং, ন চাবিবরে আতৃক্রানম্পপততে ; তত্মাছ বেনেছং সর্নাং বিজ্ঞানাতি, তং বিজ্ঞাতারং কেন করণেন কো বাজ্ঞা বিজ্ঞানীয়াৎ। যদা তু পূনঃ পরবার্থ-বিবেকিনো ব্রহ্মবিদো বিজ্ঞাতৈব কেবলোহছয়ে। বর্ততে, তং বিজ্ঞাতায়য়য়ে কেন বিজ্ঞানীয়াছিতি ॥ ১২০ ॥ ১৪ ॥

रेजि विजीवाशायक क्षूर्यर-वाक्यकाव्य । २ । १ ।

ীকা। বাছৰো বিভাৰণৰ প্ৰাথাপিকং চেং, ভবি বিবেশবাকাৰ্ভবিভি প্ৰভে—ক্ষপ্ৰীয়িট্ট। অবিভাকত বিশেষবিজ্ঞানাত আছেন নিৰ্বেশ্বাকোশ পতি ভিন্তু ভৱাৰ লাশুনিন্তি। ব্যৱহাৰ ক্ষপ্ৰ বিভাগেৰে পতি ব্যাহ্ববাতে ক্ষপি বৈভবিষ বৈভব্পক্ত হৈ পূলিক্তি। ব্যৱহাৰ ক্ষপ্ৰ বিভাগেৰে পতি ব্যৱহাৰ ক্ষিত্ৰ ক

ৰৰ বা অভেডাদিবাকাভ ভাৎপৰ্বাবাহ—ঘত্ৰ ভিডি। **के**टकर्श्य वाकालकावि गाम्हे-यद्यां । करवरार्थर नांक्यपाठ-- चरे अर्थापाठ । नक्षः वर्षकानावी छ শেবঃ। ভং কেনেভাষি ব্যাকরোভি - জৎ জন্মেজি। কিংশবস্তাকেশাবং করাজ-পক্তি হীতি। বছৰিণেচণি কাৰ্ত্বায়া ক্লিয়াৰ ক্ৰিয়তাবিভাগকাৰ আন্ত:-আদিতি। সমাজাৰানিভিযানতা সমাধীৰ বাতুখিত কঠা। সমাধতে ন চেতি। कपर ठर्दि मर्कवासवाधिरतरके काश्रीकानिकाक--छन्द्रामिन्छ । एक नामकाविद्याकृत्राव क्तिकवार---छञ्चा९ अञ्चार्थिछ । कर्षरहारकारकाश्रीकवावित (नर: । वक्व-অভাৰাৰজ্ঞাননিবৃত্তিবার। ক্রিয়াদিপ্রভাবে নিবৃদ্ধেঃপি বিভাবি প্রায়েডাার-আত ইতি। कत्रन श्रवानरवादक वांगाक विक्रवावाधिक वांन्य। असू किःनरक श्रवार्थ अधीववाद क्षर क्रिकाणक्षराधनराधकार्थानदृष्टिविद्वर्था विवक्त क. ठवार क्रिट्साञ्छ। किर्**न+ण** व्यापन रक्ष्मार्वचनुकाः, ७६० रक्षमार्वः नहा निष्ट्रः मर्वाध्यकार्वाकाकाकाक्षमक्ष्यवार्यमार्वः तिकाकाकरमय क्रिकाणिमिनुकिर्विहरमा भूरककार्यः। >र्मस्यकाशाञ्चललीक्षरवर्गाक्षवर्शकः---(ক্ষভিসিত।

কৈবল্যবিদ্যালয়ের সংক্রাভাববহনবিত্যক্তা ভত্তৈব কিং পুনর্জাহণ বন্ধ বিজ্ঞাবদ্যালয়িশি সাজিশে জানবিষয়ম্বাল-মাসুন্তি। বেন কৃট্যবোধন বাজে নোডং নর্মং লানাছি, ছং সাজিশং কেন্ করণেন কো বা জাতা লানাছান্তিত্য কেতৃয়াল ব্যাকৃত্যি । বেন কৃট্যবোধন বাজে নোডং নর্মং লানাছি, ছড বিষয়ম্বয়শ্বীনবোপনীশ্বায় সাজিশি, প্রবৃত্তিবিভার্তা । আমুবোচসন্দ্রভাবদ্যাল প্রবেশকাশিছির লাল আকুত্বকৃতি । কিকালা বেনৈর জাছতে : আমুবোচসন্দ্রভারভার প্রবেশকাশিছির লাল আকুত্বকৃতি । কিকালা বেনৈর জাছতে : আমুবারভার বাজাবিধরাল সাজিল। কৃত্তি । ব্যাকৃত্যাল সাজিল লাভার ভালাল সাজিল ভালাল ভালাল ভালাল ভালাল ক্রাভিত্যাল ক্রাভিত্যা

हेकि बुरवाक्ष्याककावारीकाक्षाः विकीवाबादि हकूर्वः सामनव् । ।॥ ।

काम्यान्यूनाप्र।—छर (व, बृङ्ग्र शव चात गरका वारक व। वना व्हेरछह कि क्षकार, छाहा अवन कत,—राहकू वाहारण—चविकाकत्रिक-

विठीरबार्थावः-हणूर्यः खायानम् ।

দেহেজির স্কাভান্তক উপাধিকনিত বিশেষাকারে পরিচিত বে বিল্যভান-মুলার বৈতের জার—প্রকৃতপক্ষে এক এক অবিতীয় হইলেও বৈতেরই মুভ—আত্মা হইতে ভিন্ন বন্ধরাই মত প্রতীত হয়; এবানে প্রশ্ন হইতে পারে বে, 'বৈতানিব' বিলিয়া বন্দ বৈতের সলে ভূলিত করা হইতেছে, তন্দ বৈতপদার্থনিও সভ্যতা নিশ্চরই বীকৃত হইতেছে, অর্থাৎ বৈত বলিয়া কোন সভ্য পদার্থ না বাকিলে বন্দ ভালার সহিত উপমানোপ্রেরভাব করিত হইতে পারে না, তব্দ অবগ্রই রন্ধেতর পদার্থেরও অভিন্ন বীকার কর হইতেছ ? না, এরপ আলকা হইতে পারে না; কারণ, 'বিকার বা করু পদার্থনাত্রই বাত্যারহ নাম মাত্র' এবং 'ব্রন্ধ নিশ্চরই এক অবিতীর' ইত্যাদি প্রতিতে [বৈতের নিগান্থই অবধারিত হইরাছে]। ১

দেই অবস্থার—বেহেড়ু বৈতেরই নত হয়, সেই হেডুই, ফলে প্রতিক্ষিত চন্ত্রাদি-প্রতিবিন্ধের স্থার পরনাত্মা হইতে তিয়বৎ প্রতিপন্ন বিদ্যালালয় এই অপর আঘাণকর্বা প্রকৃত সত্য না হইলেও অপর—মাণেজ্রির দারা আগ্রের বিষয় (পছ) আঘাণ করিয়া পাকে। এবানে 'ইতরঃ' ও 'ইতরং' পদ চইটি কারকপ্রদর্শক, অর্থাৎ প্রথমান্ত পদটি কর্মকারকের নির্দেশকরূপে প্রযুক্ত হইয়াছে; এবং 'জিম্বতি' পদটি কিয়া ও ক্রিয়াফল-প্রকাশনার্থ প্রযুক্ত হইয়াছে; 'ছিনন্তি' পদটি ইহার দৃষ্টায় হল,—'ছিনন্তি' বলিলে বেষন কুঠারের বারংবার উল্লোচনপূর্কক নিপাতন ও ছেদনীয় রক্ষাদির দিবাতার সম্পাদন, এই উত্তরই (নিপাতন জিয়া ও দিবা করণ তৎকল) একই 'ছিনন্তি' ক্রিয়ার, ব্রাইয়া থাকে; কারণ, ছেদনের ফল ক্রিয়াতেই পর্যাবদিত হয় এবং ক্রিয়া ব্যাতিরেকে তাহার উপলব্ধিও হয় না। পরবর্ত্তী 'পশ্রতি' ও 'বিজ্ঞানাত্তি' প্রকৃতির সম্বন্ধেও এইয়প ব্যবস্থা। এ পর্যান্ত বাহা বলা হইল, তৎসমন্তই অবিভাবস্থা; [অতঃ পর বিভাবস্থার কথা বলা হইতেছে—] ২

পঞ্চারতে, বে অবস্থার ব্রথবিদ্যা-প্রভাবে অবিদ্যা বিনাশিত হইরা বার, সে অবস্থার আত্মাতিরিক্ত কোন বরুর অন্তির থাকে না। বে অবস্থার মুখ্রমান নামরুপাদি বন্ধনিচর এই ব্রথবিধের আত্মযুরূপে বিনাশিত হর অর্থাৎ বেশ্সবস্থার এইরুপে আত্মযুরূপই হইরা বার—আত্মাই হর, সে অবস্থার কে কোন সাধনের সাহাব্যে কোন আত্মের বিবর আত্মাণ করিবে? কোন প্রইব্য বিষয় দর্শন করিবে বা বিশেষস্থাপে ভানিবে? ক্রিয়া সর্বব্যেই कारकारा ; चल्चन कारका चलार क्रियां चलार हा, जनः क्रियां चलार क्रियांकरनार महार सह मा। ०

শতএব জিরা কারক ও কল ঘটিত বে সবস্থ ব্যবহার বিভবান আছে, তথসবস্থই অবিভা-সাংশক্ত-অবিভা থাকিলে থাকে, আর অবিভা না থাকিলে
থাকে না; স্বভরাং অঅবিষ্কের স্বস্থই আত্মন্ত্রপ ইইরা বার বলিরা তথ্ন সে
সবস্থ ব্যবহারেরও সন্থাবনা থাকে না; বস্তুতঃ তাহার নিকট আত্মাতিরিক্ত
কারক বা জিরাকলের অভিন্থই থাকে না। বিশেষতঃ বাহা অনাত্মা পদার্থ,
তাহা কথনই অভ্যের আত্মন্তরপ হইতে পারে না; অতএব বৃকিতে
হইবে বে, দৃত্রমান হৈতভাব কেবল অবিভা-কল্লিতমাত্র; প্রকৃতপক্ষে
আত্মন্তর ব্যবহার বৈত্রন নাই; কাজেই বথার্থ আইলক্তআন উপন্থিত হইলে পর জিরা কারক ও কল ব্যবহারও বিশ্বর হইরা বার।
অতএব বিরুদ্ধস্থাব বলিরাই ব্রুবিদের সম্বন্ধে জিরা ও জিরাসাধনের
অত্যর নির্ভি হইরা পড়ে। 'কেন কথন্ব' বাকাটি ক্ষেপার্থক অর্থাৎ কোন
প্রকারেই বে, কারকাদি ব্যবহার উপপন্ন হয় না, তাহা প্রকাশ করাই
ক্রম্বার উদ্দেশ্ব। কোন প্রকারেই জিরা কারকাদি উপপন্ন না হওরান্ন—
কোনও ব্যক্তি কোনও উপারে বা কোনও প্রকারে কোন বিবরই পারাণ
করিতে পারে না, এইরপ বাক্যার্থ নিম্পন্ন হইতেছে। ৪

আর বে, অবিভা-দশার অপরে অপরকে দর্শন করিয়া থাকে, সে
অবস্থারও লোকে বাহা বারা বিজ্ঞান বারা। এই সমস্ত বিষয় অবগত হর,
তাহাকে আবার কিনের বারা জানিবে
। অতিপ্রার এই বে, । বাহা বারা
জানা হর, তাহা হইতেছে —করণ, সেই করণাত্মক বিজ্ঞানটি জাতবা বিষয়ের
কর্তই নির্দিষ্ট, আর জাতার বে, জিজাসা (জানিবার ইচ্ছা), তাহাও বিজের
বিষয়েই হইরা থাকে—আত্মবিষয়ে হর না । অরি নিজে বেমন নিজের বিষর
হয় না, বিজ্ঞানও তেমনি নিজে নিজের বিষর বা বিজের হয় না ; অথচ বাহা
বাহার বিষয় নয়, তবিষয়ে কখনও তাহার জ্ঞান সমুৎপার হয় না ; জতএব
বাহা বারা এ সমস্ত বিষয় জানা বায়, সেই বিজ্ঞাতাকৈ আবার এত কে আর্থাৎ
অন্ত কোন্ বিজ্ঞাতা কিনের বায়া জানিবে । যে অবহার বথার্থ বিবেকজানসম্পার বেমবিজের নিকট অন্থিতীয় বিজ্ঞাতাই একমাত্র সতা বজ্ঞাণে প্রতিভাত হইতে থাকে, অরি বৈত্রেরি, (সে অবহার) সেই বিজ্ঞাতাকে কিনের
ভারা জানিবে । ৪ ১২০ ৪ ১৪ ৪

भवाष द्वाचारा ।

আজাক-জাকান। বং কেবলং কর্তনিরপেকসমূতভদাবনন্, তবজবানিতি নৈত্রেরিরাক্রপনার্কন্। তচ্চ আত্মজানং সর্কসন্ত্রাসাক্রিনিট্রন্থ; আত্মনি চ বিজ্ঞাতে সর্ক্রিমং বিজ্ঞাতং তবতি; আত্মা চ প্রিয়ং সর্ক্রাং, তনাদালা দ্রইব্যঃ; স চ প্রোতবাো নরবাো নিদিব্যাসিতবা ইতি চ ধর্ণন-প্রকারা উজ্ঞাং। তর প্রোতবা আচার্ব্যাগরাত্যান্থ; বরবাত্তর্কতঃ; তর চ তর্ক উজ্ঞা—"আন্মেবেদং সর্কর্শ ইতি প্রতিজ্ঞাতত্র;হেত্বচনন্—আন্মৈকসানাক্রকনির্ব্যাক্রবির্বাহ্য প্রদান ইত্যাশক্ষতে আন্মেকসানাক্রবির্বাহ্য প্রসান ক্রমণালাক্রবপ্রসারারঃ; তদাশকানির্ব্যার্থনেতব্রাক্রবারতাতে।

বসাৎ পরন্দরোপকার্বাপকারকভূতৰ ভবং সর্বাং পৃথিব্যাদি, বচ্চ লোকে পরন্দরোপকার্বাপকার্বভূত্ব, তদেককারণপূর্বাক্ষেরকসামান্তাভ্রক্ষেক প্রদায় চ দৃইষ্। তমাদিদমণি পৃথিব্যাদিদক্ষণ ভবং পরন্দরকার্বাকারণভাং তথাভূতং তবিতুমইতি। এব হর্ষোহিনিন্ ব্রাহ্মণে প্রকারতে; অথবা "আছৈবেদং সর্বাস্থিতি প্রতিজ্ঞানত মান্তোংপত্তি-ছিতি-লয়স্থং হেতৃমুক্তা, পুনরাগমপ্রধানেন মধুব্রাহ্মণেন প্রতিজ্ঞানতার্বিত্ত নিগমনং ক্রিয়তে। তথাহি নৈরান্তিকৈকজন্তম্—"হেমপদেশাং প্রতিজ্ঞারা: পুনর্বাচনং নিগমনন্ধ ইতি। অক্রির্যাখ্যাতম্ আ চুক্তিদৃষ্টান্তাং প্রোত্তব্যার্বিত্ত আগব্যাবিত্ত আগব্যাবিত্ত ক্রিপতিপ্রদর্শনেন, মধুব্রাহ্মণেন তু নিদিধ্যাসনবিধিক্ষান্ত ইতি। সর্বাধাণি তু বথা আগব্যাবার্তিত্ব, তর্কতন্তবৈর মন্তব্যান্ত্র ইতি। সর্বাধাণি তু বথা আগব্যাবার্তিতম্ব, তর্কতন্তবৈর মন্তব্যান্ত্র ইতি পৃথঙ্ নিদিধ্যাসনবিধিরনর্বক এব। তম্বাং পৃথক্প্রকরণবিতাপোহনর্বক ইত্যান্ত্রভূতিপ্রায়ঃ প্রবণমনননিদিধ্যাসনানানিতি সর্বাধাণি তু অধ্যান্তর্ত্তার্থা-ছিন্ত ব্রাহ্মণে উপসংব্রিতে।

নিকা। প্ৰোৱয়বাজণয়ে নগভং বড়ং বৃষ্ণ ভাউগভি—মহ কেবজামিতি। কৈবলাং বাচাই—ক্ৰম্মিন্তপেক্ষমিতি। তজাৰজানৰ্ভবিভি নবজঃ। তভো নিয়াভাজনং নিজমিতি চকারার্থ:। আনজানং নংডানিনাবেবেডি নিহন্তং বিশিন্ত — অক্সেতি। মছু মুক্ততো নৈয়াভাজনং নডাপি ভানিন্ বিজ্ঞোভয়নভবাৰত আহ— আন্দ্রানি চোক্তি। ব বা বাবে পড়ানিয়াবাৰ্কং সাম্ভাতি—আইন্দ্রা চোক্তি। তভ

कवः दश्वमिविवाद्यावृद्दिश्यः, सञ्चाद-यान्यार्गोद्रशिकः स्थाववाकृतः स्विव्यवदेशी मरकारकानकारवााम का बक्कृक व्यवदन को बक्का शृतिबदन कथा कृति कः coors aniferie-merrie i if: auffile (auf. gitte frond. aib'ifere (वाषवि — क्रम्यार्के क्रिके । वस्थार्थः पृष्ठेवति । शत्यार्थार्थः । ववाष्ट्रविद्धाः कारनपूर्वकारि मुक्ट : 'स्वबद्दककारनकः महन्त्र,शनकार्दाामकारककृष्णकार वर्धन-विकानुकर, दश्वविद्धः । । अ कि मन्तरं कतरं शब्दारं विवादिन कार्यान कार्यान कार्यान कार्यान এম জ্বীতি ৷ বেশুদিভিপদ্ধা পবিচর । বাজবারীর নচভিষ্কা অভাবাধবে বামার---श्रीकृष्णारकः करवार्याका एकक्रिकक विकास वृत्रक्रिका विवयन विकास काकिकश्वाक्षियात छक्षा श्रीकि । कर् सनकानाः बाक्तावक्ष सकावश्यकांक प्रदेशावियाकााश्वरकाहिक्विवृद्धीयायांत्रम्यस्यः ८लाख्या वैक्याक्रमस्य विक्रमनार्थम् । कुम् विवृद्देश्वाधावयः वश्वाकनार आक्रमणान सम्मीद्रमन सक्ष्मा वैद्याक्षमनन विक्रमनार्थवायम्बद्धम् । विविधानमः बाद्याकुः मृत्रवक्षममामनावः। अञ्चृपवि --क्रारंशारं लेकि। सन्तारं वित्वराच्यविद्यव्यक्तिक वावरः व्यवकाविद्यमानाः सब्देश अबुक्क कर्द्यांक्रका महार्थनका मननः व विविधायकातः । वया कर्वता मनः सवः, क्ष्यां क्षक कर्वत्रवास्तार जिल्डिकाकासमार्थ्यात्वन निविवासनिर्दे कर्मण विधानत्यकः বেবেন্তার্থঃ। এরাবাং বিধানশেকতে কনিভ্রার -ভ্রন্তার্থানেভ্রে। ইতি পরকীর্থাাধান-कबुक्कविक्ति इनश्च । जिक्कारकः भि अवनाविविधासूनभवार कथा भवकीशः धवानः धकावातः-বিভাগেভান্ত—জন্ম প্রাপি "ব্রক্তি। ভবিবাড়াপগ্রেগ্ণীডি বাবং।

আভাজ্য ভাজ্যাকুলাদে। বাহা কর্মের সাহাব্য ন' নইরা.
কেবল নিজেই মোক্ষ-সম্পাদনে সমর্থ, সেরপ সাধনবিশেষ নিরপণের নিমিন্ত
অতীত মৈরেরী-প্রান্ধপ আরক হইরাছে। সর্কসন্ন্যাসবিশিষ্ট আয়জ্ঞানই সেই
অভিমত যোক্ষসাধন; আয়াকে আনিলেই অপন সমন্ত বিষয় বিজ্ঞাত হইরা
হার,এবং আয়াই সর্কাপেকা সমনিক প্রিয়; এইজন্ত আয়াকে প্রত্যক্ষ করিবে।
বে যে উপারে আয়াকে ধর্শন করিতে হইবে, 'প্রোতবা' 'মন্তবা' 'নিলিধ্যাবিতরা' কথার তাহাও কথিত হইরাছে; তমধ্যে আচার্য্য ও প্রতিবাক্য হইতে
আল্লভন্ত প্রবণ করিবে, এবং তর্ক ছারা তছিবরে মনন চিন্তা) করিবে; তর্কের

A. 7.

উপাবেরতা সেধানেই উক্ত হইরাছে—প্রথমত 'এ সমন্তই আত্মন্তমণ' এইরাদ্ প্রতিজ্ঞা করিরা, নেই প্রতিজ্ঞাত বিষয় সমর্থনের মন্ত—একমাত্র আত্মা হইতেই উৎপত্তি, আত্মাতেই অবস্থিতি এবং আত্মাতেই প্রনয়' এই তিনটি হেডুর উপজাস করিরাছেন। এখন আপতা হইতেছে বে, সেই আত্ম-সামাজ্যর, আব্দ্বৈকাবিভিত্তর ও আব্দ্বৈক্প্রসময়র প্রণাত্তক হেডুত্রের ত সিত্ত হইতেছে না, অর্থাৎ একমাত্র আত্মা হইতেই বে, জগতের উৎপত্তি, আত্মাতেই বে, জগতের স্থিতি এবং আত্মাতেই বে, জগতের প্রনয় হইরা থাকে, এ বিষয়ে কোনই প্রমাণ নাই। এই আপতা অপনরনের নিমিত এই প্রমান বাছণ (পরিক্রের্য) আরম্ভ হইতেছে।

বেছেত পৰিব্যাদি সমগু জগৎই পরস্পর পরস্পরের উপকার্ব্যোপকারক-ভাবাপন্ন, অর্থাৎ পরস্পার পরস্পারের উপকারতানী; এবং এইব্রপে পরস্পার উপকার্ব্যোপকারকভাবাপর বল্পবাঞ্জে একট কারণ চটতে উৎপত্র. अकरे भाषात्रन धर्ममन्मत अवर अकरे हात्न विनीन हरेए दिया निवाह, तिहै (हरूहे-- **এहे श्विताक्ति मध्य क्रवर भवन्यत** भवन्यतिव छेभका:ब्राभ-कात्रकलावाणत रक्षत्रात्र (महेन्नभहे इहेवात (याभा: এहे विवस्ति अहे পঞ্ম ব্ৰাহ্মণে প্ৰতিপাদিত হইতেছে। অথবা ইহার অতিপ্ৰায় এই-क्रभ ;--- श्रथरम "बरेसर हेमः नर्सम्" धरे अधित तासर नर्साम्यान প্রতিজ্ঞা করিরা, তৎসমর্থনের ভব্ন আত্মা হইতে লগতের উৎপত্তি, আত্মাতে ব্রিতি ও লর-এই তিনটি হেতুর উল্লেখ করা হইরাছে; এখন **খা**বার আগৰপ্ৰধান (তথু শালালুগারী) এই বধুৱাছণ খালা দেই প্ৰতিজ্ঞাত न्यांच्छारवर्डे निनमन वा উপनश्हांत कता हहेरछह। निवाधिकन्य বলিয়াছেন—'হেতৃদ্ধলে বে, প্রতিজ্ঞাত বিষয়ের পুনঃ কথন, তাহার নাম— নিগমন'; [সুতরাং এই মধুব্রাহ্বণটিও প্রতিজ্ঞাত সর্বান্ত্রতাবের নিগমন-ज्ञानवर्ती]। ज्ञान जानार्थाभन वााचा कवित्राह्न (व, शृर्ताक इक्छि পৰ্বাৰ দৃৱাৰ-প্ৰদৰ্শক উপনিবদ্বাকাণ্ডলি শ্ৰোভবাৰ্থ- অৰ্থাৎ উক্ত वाका '(जाछवाः' वाकात छारभवा विवत निविद्वे बहेतारह ; बात वधु-ব্রাহ্মণের পূর্বপর্যায় বে, বৃক্তিপ্রয়র্শক বাকাদক্ষত, তাহা 'বছবা'—বাক্যের चर्व वा मनमञ्जकात अवर्णक ; चात्र अहे वधुदाचरन त्महे नृर्स-अधिकाछ विवास निविधानन विविध क्रेडिएक (३)। डेक नवक वास्करे और कथा

^{(&}gt;) ভাৎপথ্য - ভাজা: নির্মিটিকিংনেংর্থ চেডন: ছাণিভত বং ।

নাড়াইভেছে বে, শান্ত খানা বে বিষয় বেরণ অববারিত হয়, তর্ক খালা ভাষা সেইরণেই বদন করিতে হয়; আবারণ তর্কের সাহাব্যে খালা থেরণ অববারিত হয়, তর্কও আগবারধারিত সেই বিষয়ট টিক সেইরণেই নিছিয়াসন (খান) করিতে হয়; স্কুলাং নিছিয়াসনের অন্ত, আর পৃথক বিধানের আবন্তক হয় না; কাজেই পরপঞ্চান্ত পৃথক প্রকরণবিভাগও নিরর্কক হইরা পড়িতেছে; অতএব প্রবণ বদন ও নিষিধ্যাসন সকছে আমরা বেওপ অভিপ্রায় নির্দেশ করিয়াছি, ভাষাই সমীচীন। তবে একখা সভ্য বে, প্র্যোক্ত হুইটি অধ্যায়ে বে বিষয় অভিহিত হুইয়াছে, এই বধুরাশ্বণে ভাহারই উপসংহার করা হুইতেছে, (কিন্তু কোনও নুতন বিষয় সন্নিবেশিত হুইতেছে না।)

ইয়ং পৃথিবী সর্বেবাং ভূতানাং মধ্বতৈ পৃথিবৈ৷ সর্বাণি ভূতানি মধু, বশ্চায়মক্তাং পৃথিব্যাং তেজোময়েহয়তময়ঃ পুরুষে৷ বশ্চায়মধ্যাত্মত শারীরস্তেজোময়েহয়তময়ঃ পুরুষেহয়মেন দঃ, বোহর্মান্দেশময়তমিদং ত্রক্ষেদত সর্বয় ॥ ১২১॥ ১॥

স্কুলাথ:—ইয়ং (দৃর্বানা) প্রিবী দক্ষেবাং ভূতানাং : প্রাণিনাং ।
বধু (কার্য্য), [পৃথিবী হি প্রাণিকর্মবলাৎ সমুৎপন্না প্রাণিনামুপকারক্ষাৎ
মধুবৎ প্রিয়ন্তার্য বধু —বধু ইবেতার্থঃ]; তলা, সর্কাণি ভূতানি (প্রাণিনঃ)
আসৈ (অস্তাঃ) পৃথিবা (পৃথিবাাঃ) মধু (উপকার্যাতয়া মধু ইবেতার্থঃ); অস্তাং
পৃথিবাাং বঃ চ (বেছিলি) অয়ং (অসুভূয়মানঃ) তেলোবয়ঃ (চিয়াএঅয়পঃ)
অমৃতবয়ঃ অন্তবল্পতাবঃ) পুরুবঃ (কৃটয়ঃ), বঃ চ (বেছিলি) অয়ং
অধ্যাত্মং (বেছাতিবানী) শারীয়ঃ । শরীয়াধিটিতঃ) তেলোবয়ঃ অমৃতবয়ঃ
পুরুবঃ (জীবঃ), [স চ সর্কোবাং ভূতানাং মধু সর্কাণি চ ভূতানি

এ+ভানখনেভতি নিবিবাসমন্চাতে।"

অব্যৎ বাবা লাপ্ত কইতে প্ৰস্ত —বাকোর ভাংপ্রা-পর্যালোচন। বারা অব্থান্তি, এবং বাহা অবদেন—পাস্তাহকুল মুক্তিভর্কের নাবায়ো বিচারিত; প্রভল্গা নিঃসন্দিত, এবন বিবরে হে, ভিজের একভাষভাব (একারভা), ভারার নাম — নিবিধানিম। বান ও নিবিধানিম আদ্ স্বানার্থক-কম। बिहार वर्ष देहार्यः]; जान बन गा ('देशर गर्सर वनप्रयापा' देखि यः अधिकात्रः); 'त्रवा देवन् जगून्यः (यः देवस्त्रदेश केकन् जगूक्यगायनम्), देशर जन्म ('जन्म स्त्र जनानि' देशाज यः अधिकात्रम्), देशर गर्सर (यः 'गर्सर-विक्रित्रः कविं देखि आक्कर्) जन्म, (त्रिकार्यः) । ১२১ । ১ ।

অ্লাসুসাদে। এই পৃথিবী সমন্ত ভ্তের মধু, অর্থাৎ সর্বভ্তের কর্মোগার্চ্ছিত এই পৃথিবী [মধুকর-ভোগা মধুচক্রের স্থার] সর্বাদ্ধিত এই পৃথিবী [মধুকর-ভোগা মধুচক্রের স্থার] সর্বাদ্ধিত রে ভোগা বা মধুবৎ প্রির; তেমনি সর্বাভ্তের আবার এই পৃথিবীতে অধিন্তিত বে, এই চৈত্রসময় অমরণশীল কৃটক পুরুব, এবং এই বে, দেহাভিমানী শরীরাধিন্তিত তেলোমর অমৃতমর পুরুব [জীবাদ্ধা], ইহারাও সর্বাভ্তের মধু, এবং সর্বাভ্তত আবার ইহাদের মধু—পরস্পর উপকারক, ইনিই তাহা—বাহা এই আদ্ধা অর্থাৎ পূর্বাব্দিক্রাত আদ্ধা; ইহাই সেই সমৃত—বাহা মৈত্রেরীর নিক্ট অমৃত্তন নাধন বলিরা নির্দেশ করা হইরাছে; ইহাই সেই অমৃত—বাহা বিশ্বা বাবা বিশ্বা বিশ্বত হওরা বার বলিরা কথিত হইরাছে ৪১২১৪১৪

স্পাক্তয়-ভাল্যান। ইয়ং পৃথিবী প্রসিদ্ধা সর্কোং ভ্তানাং বধু—সর্কোণ ব্রমাদিকত্পর্যালানাং ভ্তানাং প্রাণিনাং বধু কার্যাং বন্ধিব মধু; বথা একো বন্ধপ্পোহনেকৈর্মুক্রৈনির্মন্তিতঃ, এবনিরং পৃথিবী সর্ক্রনর্মিন্তিতঃ, জবা সর্কাণি ভ্তানি পৃথিবৈয় পৃথিবয়া লক্তা বধু কার্যার্ ভিক্ল, বন্ধারং পুরুবাংকাং পৃথিবয়াং তেলোবরঃ চিন্নাত্রপ্রকাশবরঃ, অব্ভবরঃ অবরণধর্মা পুরুবঃ, বন্ধারবায়ারং পারীরঃ—পরীরে ভবঃ, পূর্কবং তেলোবরোংগৃতবরঃ পুরুবঃ, স চ নিলাভিনানী; স চ সর্কোবাং ভ্তানার্থকার-করণবেন মধু; সর্কাণি চ ভ্তানি লক্ত বধু, চ-শব্দসামর্ব্যাৎ। এববেভচ্চভূরং ভাববেকং সর্কাভ্তনার্য্র; সর্কাণি চ ভ্তাভক্ত কার্যার; প্রেচাংকিককারণ-পূর্কক্তা। >

ব্যাবেকসাৎ কারণাবেতৎ বাতব্, তবেবৈকং পরবার্থতো ক্রম, ইভর্থ কার্য্য বাচায়ন্তবং বিভারো নামধ্যেমাত্রব্—ইড্যেব মধুপর্ব্যায়াবাং সর্বেবার্যার্থ সজ্জোপতঃ। অর্থেব সঃ, বোংরং প্রতিজ্ঞাতঃ—ইবং সর্বং ব্যর্গায়ন্তি, ইবৰস্তৰ, বং বৈত্ৰেহৈয় অনৃত্যসাধনস্ক্ৰন্ আত্মবিজ্ঞানন্, ইবং ওৱস্তন্, ইবং ব্ৰত্ন-বং "ব্ৰদ্ধ তে ব্ৰহাৰি, জপদ্মিভাৰি" ইত্যথানাকে প্ৰকৃতন্, বৰ্ষবিদ্ধা চ বিভা ব্ৰদ্ধবিজ্যেচ্যতে; ইবং সৰ্কাৰ্, ৰাষ্ট্ৰদ্ধৰো বিজ্ঞানাৎ সৰ্কাং ভ্ৰতি ৷ ১২১ ৷ ১ ৷

शिका। अर नविश बाबनखाका वरकशनि गावदशकि - देशविकालिनाः पहुष्पर बिश्वय बिश्वति, कविदृर्गिक - मर्ट्याकि । व रक्षमबुक्तर बबुबहरवर, विश्व बश्वतका গাৰীখাৰ—ক্ষি চেড়ি। পুৰুষপত কেমবিবরবং বারবভি জ চেড়ি। ভড পৃথিবীৰস্বপুৰবাৰ—ল চ লক্ষেত্ৰামিডি। नदर्सनार छ कुकामार कर व्यक्ति मनुका र्गर्राक-कर्व्यानि (छान्छि । वराष्ट्रावन प्रवृत्ताः अक्षत्रक्षतः कृ वृत्त्रवणकाः क्षाविष्रः, क्रमं काकावाक कार-छ-महत्व्वाद्धि । এবং वर्गाहार्यम् वनः स्वृत्ति । পুरिनो वर्तानि कुकानि गापितः गुक्रकः नाशीवान्किक व्यक्तेवानकः विकासि स्नवः। व्यनुनवार्तः बार-क्टकंछि। चरकंछ पुरिवारिविकि वावर। प्रमाववृत्रकार्यातककार क्तिक्वार—प्रक टेकि। पर्काक नर्मः वयहुकारक। क्रेकः व स्थार नवन्नरवान का-(वीशकांत्रकृष्ठिविक्षावि । अवस्थान आद्यन मधुनवीत्वयु नर्श्वयु अक्ष्यान्। (क्ष कविकानिकाद -यन्योकिकि। न अकृष करियमात्रः हकूर्यात्क। तक हैकि व्याचना । देवनिष्ठि छञ्जेद्रक्तकाविक्षेत्रां वरदाः चानः नदावृत्तछ । क्रकृदेशविद्यानिकानकार्यः। कृष्णेतः ६ ७७ वक्ष्यकाः वर्गकि—याजित्यस्यान्ति। देवः मुक्किकाञ्च अक्रकानविषयिकास्त्र । नक्षः नक्षीखिनावनविकि वावर । ভবে म्लडेविक-धन्यांमिडि ॥३२३।३१

ভাল্যান্দু আদে। এই প্রনিদ্ধ পৃথিবী হইতেছে সমন্ত ভ্তের বধু,
আর্থাং ব্রদা হইতে আরম্ভ করিরা ভূপপর্যান্ত সমন্ত ভ্তের মধু—কার্যা
(কর্মান্তকল); বধু আর্থ—মধুর ভার; বেমন একটি মধুচক বহ মধুকর বারা
নির্বিত হইরা বাকে, তেমনি এই পৃথিবীও সমন্ত ভ্তের কর্মান্তল উৎপর
হইরাছে; কাজেই পৃথিবীকে সর্মভ্তের কার্যা বলিরা নির্দেশ করা
বাইতে পারে]। সেইরূপ সমন্ত ভূতবর্গত এই পৃথিবীর মধু আর্থাং কার্যা
বা উপলারক। অপিচ, এই পৃথিবীতে অধিটিত এই বে, তেলোময় ও
বিশ্বতমর পরীরাভিবাক্ত (পরীরাভিবানী) অব্যান্ত পূরুষ, নিম্নেহাভিয়ানী
সেই পূরুষ হইতেছে—সর্মভূতের উপলারক মধু। ক্রিটার্ডে ইংবে বে, সমন্ত ভূতবর্গত ইংবার মধু। এইরূপে পৃথিবী,
সর্মভূত্ব, পার্থিব পূরুষ ও শারীর পূরুষ এই চারিটি হইতেছে একই মধু

অর্থাৎ সর্বান্তর কার্যানরপ ; আবার সর্বান্ত্তও এই চতুইরের বরু বা কার্যানরপ ; কার্থেই এই চারিটি একই কারণ হইতে প্রান্ত্ত হইরাছে বুবিতে হইবে।

উক্ত চারিটি বন্ধ বে, একই কারণ হইতে উৎপন্ন হইরাছে, প্রকৃতপক্ষে সেই কারণীভূত এক বন্ধটি হইতেছেন ব্রন্ধ, তদ্ধির অপর কার্যনাত্রই বাক্যারন্ধ নাম বাত্র (কোন সত্য বন্ধ নহে); ইহাই হইতেছে বন্ধ-পর্যায়োক্ত সম্বন্ধ কার সংক্ষিপ্ত তাৎপর্যার্থ। এই কারণীভূত ব্রন্ধই হইতেছে সেই আল্পা, নাহার কথা "ইয়ং সর্বাং ব্যয়মালা" বাক্যে প্রতিজ্ঞাত হইরাছে; ইহাই অনুত, অর্থাৎ মৈত্রেরীর নিকট অনুতর্বাধন বনিরা, বে আল্পান অভিহিত হইরাছে, ইহাই সেই অনুতর্বাধন; ইহাই বন্ধ—এই অব্যাহের প্রথমেই 'বন্ধ তে ব্রবাণি' ও 'জপরিব্যামি' বনিরা বে ব্রন্ধের প্রস্কে করা হইরাছে, এবং বন্ধিয়ক বিল্পা 'ব্রন্ধবিল্পা' নামে অভিহিত হইরা থাকে, ইহাই সেই বেন্ধ; এবং ইহাই 'সর্বাং'—বিজ্ঞানস্বরূপ বে ব্রন্ধ হইতে 'সর্বাণ (সমন্ত বন্ধ) উৎপন্ন হইরা থাকে, ইহা হইতেছে সেই সর্বানর ৪২২১৪১ঃ

ইমা আপ: সবের্বাং ভূতানাং মধ্বাদামপাত সর্বাণি ভূতানি
মধ্ বশ্চারমাত্মপা, তেজােমরােহয়তমর: পুরুবাে বশ্চারমধ্যাত্মত
রৈতসত্তেজােমরােহয়তময়: পুরুবােহয়মেব দ বােহয়মাত্মেলমমৃতিমিলং এক্ষেণংও সর্বাম্ ॥১২২॥২॥

ज्यक्काव्या । ज्या देवाः चाणः (क्यांति) गर्त्वराः क्ञांवाः वध् (कार्याः—वध्यः (क्यांः), गर्कानि क्ञांति चागान् चणाः वध् (कार्यम्) ; यः ह ((वार्शि) जयः चाण् चज् [चिरिक्ठः], (क्यांवयः चन्नवयः भूक्यः, यः ह चयः चयाचाः देवजगः ((विजित्र चित्रक्यः) (क्यांवयः चन्नवयः भूक्यः, जयम् अयं गः । [गः कः १] यः चयः (भूर्त्वाकः) चाचा ; देवः (भूर्त्वाकः) चन्नकः (चन्नक्यांवनम्) ; देवः वच्च (भूर्त्वाकम्); देवः नर्कः (भूर्त्वाकः, व्यवार्थाः गर्विविज्ञर्यः) ॥ >२> ॥ २ ॥

অুলান্যুকাদে। এই জনসমূহ হইছেছে—সমত ভূতের মধু (কর্মজনিত কল); সমত ভূত লাবার এই ভূতসমূহের মধু; আর এই বে, জনাধিন্তিত ডেজোমর অমৃতমর পুরুষ, এবং এই বে, অধান্ধ (राहनपदी) (उट्यानह सहस्रह रेडडन (उज्ञाविकिंड) गूज्य, और गूज्यके छारा,—बाहा और साम्रा, वाहा और सहस्रमाधन, बाहा और उम्म, अवर बाहा और मूर्क विनिन्ना गूर्क डेड-हरेबाट्ड ॥>২২॥২॥

শ্ৰিক্স-ভাজ্যত। তথা খাণ্য-খণ্যাদ্ধ রেতান খণাং বিশেষতোহবস্থানৰ ১২২২২ঃ

টীকা। বৰা পৃথিৱী বৰুবেন ব্যাখ্যাতা, তুৰাপোচলি বাাৰোলা ইভাহি—ও্তপ্ৰতি বৈতন ইতি বিশেষণভাৰ্থবাহ—অন্যাজ্যমিতি। 'আলো জেভো তুলা নিলং প্ৰাধিনমু' ইতি বি ক্লভান্তব্যু ১১২২৮৪

ভাল্যা-পুৰাদে। কলস্থও সেইলপ পৰ্বাৎ পূৰ্বোক্ত পৃথিবীর ভার। কেহবরে ডক্তেডেই কলের বিশেবাধিষ্ঠান হইলা থাকে; [এই লগ্ন প্রধাস পুরুষকে 'বৈডস' বলা হইলাছে] ১২২১২।

শর্ষা: পর্বেষাং ভূতানাং মধ্বকায়ে: পর্বা। প ভূতানি
মধু, যশ্চায়মশ্মিনমৌ তেলোময়েহযুত্মর: পুরুষো যশ্চায়মধ্যাত্মঃ
বাদ্মরুত্তেলোমরোহযুত্মর: পুরুষোহয়মের সঃ, যোহরমাজ্মেদমন্তুতিমিদং ত্রন্দেন্দ্র সর্বা। ১২ পাত।

ज्ञाकार्यः चर पति गर्सनाः प्रानाः नध्, उना गर्सानि प्रानि पत्र पताः नध् ; यः व पत्र पतिन् पति [विविष्ठः] (व्यानतः पन्यतः पूक्तः, यः व पत्र पनापाः (स्वर्यको) (व्यानतः पन्यतः नावतः (विवि पित्रकृतः) भूकतः, चत्रम् अन गः। [गः कः ?] यः चतः (भूर्त्ताकः) पाषा, देवन् चन्वन्, देवः अव, देवः गर्सम् [गानाः अन्यत्विषः] ॥>२०००

শুক্রান্দ্রান্দ।—দেইরূপ এই অগ্নি হইডেছে সমস্ত ভ্তের মধু; ভ্তবর্গও আবার এই অগ্নির মধু; আর এই বে, উক্ত অগ্নিস্থিত তেলোমর অমৃত্যর পুরুষ এবং এই বে, বাধার তেলোমর অমৃত্যর অধ্যাত্ম পুরুষ, ইহাই ভাহা,—বাহা এই আত্মা, বাহা এই অমৃত, বাহা এই ক্রেল্ক; বাহা এই 'সর্মাণ বিদ্যা উক্ত হইয়াছে ১১২০০০। "

স্পাক্ষরভাষ্যক। তথা পথিঃ; বাচি পথে বিশেব্ভাং-ব্যানৰ চংগ্ৰহ



हिका। पृथिवानगृष हाकः जात्रवायिकिनिकि—स्ट्यक्ति। वाद्य देवास्तर्भः वाद-वास्त्रोकि। विविद्यान प्रवादण वादिनविकि विकास । १२०००।

ভাল্যা-পুলাদে। দানও পূর্বাবং [সর্বাহ্যর বধু ইত্যাদি] ১১২০০ লয়ং বারুঃ সর্বোগাং ভূতানাং মধ্বক্ত বারোঃ সর্বাণি ভূতানি মধ্ যশ্চারমন্মিন্ বারো ভেলোময়োহমূতময়ঃ পুরুষো বশ্চাদ্বন্দান্তমান্তম প্রাশ্তর প্রথাবাহে প্রথাবাহে প্রথাবাহে প্রথাবাহে বিশ্ব স্থান্তম বাহে স্থান্তম বা

স্কানাবা:। সাং বার্: সর্বোবাং ভ্তানাং বধু, সর্বাণি চ ভ্তানি
সঙ্গ বারো: মধু; বা চ সারং সন্মিন্ বারে [স্বিটিতঃ] তেলোবরঃ সন্তময়ঃ পুরুষঃ, তথা বা চ সারং স্থানিং তেলোবরঃ সন্তন্মরঃ প্রাণঃ পুরুষঃ,
সারম্ এব সাঃ; [কা সাঃ] বা সারং সালা, বং ইদং সন্তন্, বং ইদং সর্বাদ্
[পুর্বোক্তবিতার্থঃ] ১২৪৪৪৪

আৰু সাক্সক্রাদে ।—এই বার হইডেছে সমস্ত ভূডের মধু, এবং এই সমস্ত ভূডও আবার এই বার্র মধু; আর এই বে, বার্তে অধিন্তিত তেলামর অমৃত্যর পুরুষ এবং এই বে, অধ্যাত্ম তেলামর অমৃত্যর প্রাণ পুরুষ, ইহাই হইডেছে ভাহা, বাহা এই আত্মা, বাহা এই অমৃত্য-সাধন, বাহা এই ব্লক্ষ, এবং বাহা এই 'সর্কা' বলিরা অভিহিত হইরাছে ॥১২৪॥৪।

শাক্ষরভাক্ষা হা তথা বার্ট্ট , বধ্যমাং প্রাণো ভূতানাং শরীরার-ভকষেনোপকারাৎ বধ্যম্ , তদন্তর্গতানাং তেলোবরাদীনাং করণমেনোপকারাৎ বধ্যম্। তথাচোক্তম্ "তত্তৈ বাচঃ পৃথিবী শরীরং জ্যোতী ভ্রপবর-মলিঃ" ইতি ৪২২৪৪৪

টীকা। স্বান্তং ভাগ বাবে বোজাভ—ভত্পতি। 'বাব্ পাণে ছ্বা নানিকে প্রাধিনং' ইতি প্রভাৱসানিতা। —অপ্যা আমিতি। পূবিবাধীনাং ভবন্ধবিশাং দ্প্রাণানে করাকোনাকের সং মনুব্যিতি পর্তাং পরিব্যাধীনাং ভবন্ধবিশাং—ছুভানামিতি। পূবিবাধীনাং ভাগানং, ভেলোম্বাধীনাং ভ্রম্বনিভান স্প্রাধিকার-স্বাভিনাং—ভ্রম্বাভ্রমিতি । :২০০০ ।।

काम्यान्युकाम्ह । तार तार् अवर मधाम (तराममरी) आहर

পূৰ্মাৰৎ বধু। বাহুই প্ৰাণিগণের বেহারভের কারণ; এই বন্ধ উহা বধুরণে করিত হইরাছে; আর ভবন্ধত তেলোবরাদি ভাবসন্থত উপকারসিভির সহারতা করে; এই বন্ধ বন্ধনে করিত হইরাছে। অভন্তও এ কবা উজ্জাহে—'সেই বেবভার পৃথিবী শরীর এবং এই অধি হইভেছে ল্যোভিশ্বর রূপ' ইত্যাদি ১২৪৪৪৪

শর্মাদিত।: সর্বেষাং ভূতানাং মধ্বক্ষাদিত্যক্ত সর্বাণি ভূতানি
মধু বশ্চার্মান্মিলাদিতো তেলোমহোহ্যুতমর: পুরুষে। যশ্চায়মধ্যাশ্বং চাশ্বুষজেলোময়েহ্যুতমর: পুরুষোহয়মেব সং, যোহয়মাশ্বেদমন্ত্যিদং ত্রেশ্বেদ্থ সর্বায় ৪১২৫॥৫॥

अञ्चल्या । चहर चाहिलाः नर्स्वार क्लानाः वर्, नर्सानि ह क्लानि चन्न चाहिलान वर्; ज्या दा ह चहर चित्र चाहिला (ल्लामहा चम्ल-वहा भूक्या, दा ह चहर चयाचार (ल्लामहा चम्लमहा होक्या (हक्त्रविक्तिः) भूक्या, चहन् अद मः ; [मा का १] दा चहर चाहा, दर हेवन चम्लर, दर हेवर 'मर्स्व' (शास्क्रविलावं:) 1>२१८।

ক্লাব্যুবাদে। এই আদিতা হইডেচে সমস্ত ভূতের মধু, এবং এই ভূতকা হইডেচে এই আদিতোর মধু; আর এই বে, আদিতাধি নিত তেলামর অমৃতমর পুরুষ, এবং এই বে. দেহাধিন্তিত তেলোময় অমৃতমর চাকুষ পুরুষ, ইহাই হইডেচে তাহা, বাহা এই আছা, বাহা এই অমৃত, বাহা এই ব্লক্ষ, এবং বাহা এই 'সর্বব' বলিয়া অভিহিত ইইয়াছে ॥১২৫-ব।

क्षान्यान्यान्। त्रदेवन चानिका नाव नश्, अवर वाकून नूक्त स्रेटक्ट्न चनाच नश् ।>२०१०।

ইবা দিশঃ সর্বেবাং ভূতানাং মধু, আসাং দিশাং সর্বাণি ভূতানি মধু, ধশ্চারমান্ত দিকু তেলোমরোহয়তমরঃ পুরুবো বশ্চার-



विजीएकारशामा-नक्षमः बाचनम्।

মধ্যাত্মত প্রোত্তঃ প্রাতিশ্রুত করে করে বিশ্বর বিশ্

শ্বাসু বাদে। এই দিক্সমূহ হইডেচে সমস্ত ভূতের মধু,
এবং সমস্ত ভূতও লাবার এই দিক্সমূহের মধু; আর এই বে, নানাদিক্দিত তেলোমর অমৃতময় পুরুষ, এবং এই বে, অধ্যাদ্ধ প্রাতিশ্রুৎক
(শ্রবণসময়ে অভিব্যক্ত শ্রোত্র—শ্রবণোক্রয়াঞ্চিতা পুরুষ, ইহাই
তাহা, যাহা এই লাদ্ধা, যাহা এই অমৃত, যাহা এই ব্রহ্ম, যাহা এই
'সর্বব' বলিয়া পূর্বের উক্ত হইয়াছে ১২৬।।৩।

লা ক্সন্তাল্য ম। তথা দিনো বধু। দিনাং বছপি শ্রোত্রবগান্ধ, নৰপ্রতিপ্রবণবেলায়ার বিলেবতঃ সন্নিহিতো তবতি—ইত্যব্যান্ধর প্রাতি-ক্ষর প্রতিশ্রহকারাং প্রতিপ্রবণবেলায়াং তথা প্রাতিশ্রহকঃ ১২১৮১

্ট্ৰীকা। আৰিভাৰতং ভাৰং বিভূ নশাৰণতি—ভতুপ্ৰভি। 'বিণঃ বোৰং ভূবা কৰোঁ থাবিশন্' ইভি প্ৰডে: বোৰংৰৰ বিশাৰণাৰং ; তবাচাবাৰং বোৰ ইভোৰ বকৰো কৰং থাভিঞাংৰ ইভি বিশেষণ্ডিভাশভাহি—দ্বিশামিভি। ভ্ৰাণীভালিজৰ্ব ভূ-শবং ১২০॥ ০॥

ভাজ্যানুঝাদে। পূর্বাৎ বিক্সবৃহও বধু। ববিও প্রোত্তই বিক্সবৃহর অব্যালপরিণান হউক, তথাপি শক্ষরবাসকরে বিশেষক্রণে বিক্সারিশ্য ঘটে বলিয়া ভাহাকে 'প্রাভিশ্রুৎক' বিশেষণে বিশেষিত করা হইয়াছে; প্রভ্যেক শ্রবণ সকরে সমিধিত হর বলিয়া পুরুষকে 'প্রাভিশ্রুৎক' বলা হয় ১২৬।ধুঃ

শবং চন্দ্র: সর্বেধাং ভূতানাং মধ্যত চন্দ্রত সর্বাণি ভূতানি মধু, বশ্চারদ্বিতশ্চন্তে তেকোমরোহযুত্তময়ঃ পুরুষো বশ্চায়-

- बुरवात्रगादकाशनिवष् ४

মণ্যাত্মং মানসতেজামরোহমৃত্যর: পুরুবোহরবের নঃ, যোহর-মাজেদমমৃত্যিদং ত্রত্ত্বেদত সর্বাম্ ॥১২৭। ৭।

ज्यक्त कार्याः। चत्रः ठताः गर्सवाः क्ष्णानाः वर्, गर्सानि क्ष्णानि चक्र ठता वर्षः, वः ठ चत्रः चित्र ठता (खावातः चत्रुष्ठवतः पूक्रवः, वः ठ चत्रः चशाचाः (खावातः चत्रुष्ठवतः वानगः पूक्रवः, चत्रम् अव गः ; [गः कः १] वः चत्रः चाचाः, वर देवम् चत्रुष्ठम्, वर देवः तकः, वर देवः 'गर्सम्' [पूर्वमूक्ष-विद्यार्थः] ३>२१६१६

মুলান্যবাদে। এই চন্দ্র হইতেছে সমস্ত ভূতের মধু, সমস্ত ভূত আবার এই চন্দ্রের মধু; এই বে, চন্দ্রাধিন্তিত তেলোময় অমৃতময় পুরুষ, এবং এই বে, দেহসম্বন্ধী তেলোময় অমৃতমর মানস পুরুষ, ইহাই হইতেছে তাহা, যাহা এই আত্মা, যাহা এই অমৃত, বাহা এই ব্রহ্ম এবং বাহা এই 'সর্বন্ধ বলিয়া অভিহিত ইইয়াছে। ১২৭। ৭।

न्धाक्त : ভाव्याक्तः । তথা চক্র: वशाबार वानगः ॥>२१।१॥

টীকা। বিশ্ব ব্যবহিতঃ ভারং চন্দ্রে ধর্ণবভি—ভত্তপ্রভি। 'চন্দ্রবা মনো ভূবা এচনং শাবিশং' ইতি শ্রুতি বস্তুত্যাহ—অধ্যাক্ষিমিজি॥ १॥

ভाष्णानुष्यान् । इस अवर षशाश्च मानम प्रवर प्रवर मद् ॥>२१।११

ইয়ং বিদ্যুৎ দৰ্কেষাং ভূতানাং নধ্বকৈ বিদ্যুত: দৰ্কাণি ভূতানি নধু, ষশ্চায়নভাং বিদ্যুতি তেজোময়োহমূতময়ঃ পুরুষে। যশ্চায়নহ্যাত্মং তৈজ্বতেজাময়োহমূতময়ঃ পুরুষোহয়মেব সঃ, যোহয়নাজ্যেদমমূতনিদ্ধ ত্রক্ষেদ্ধ দৰ্কম্ ॥১২৮॥৮॥

ज्ञास्तार्थाः । देवर विद्यार नर्त्तवार क्ष्णानार वध्, नर्तानि । क्ष्णानि चटित्र (चल्लाः) विद्याणः वध् ; वः । चत्रर चल्लार विद्याणि (खल्लाववः चयुक्त-ववः पूक्त्यः, वः । चत्रर चवात्रावर (खल्लाववः दिक्ताः (देवहाणः) पूक्रवः, चत्रव् अव नः ; वः चत्रर चाचा, वर देवन् चयुक्त्व, वर देवर अवः, वर देवर 'नर्त्वव्' (भूक्त्व्क्रविद्यार्थः) ॥>२৮॥৮॥

আুলাল্যুত্রাদে। এই বিহাৎ হইডেছে সমস্ত ভূতের মধু, এবং সমস্ত ভূত হইডেছে এই বিহাতের মধু, আর এই বে,বিহাৎশ্বিড ডেজো- মর অমৃত্যায় পুরুষ, এবং এই বে, অধ্যাত্ম তেজামর অমৃত্যার তৈজস পুরুষ, ইহাই তান্ধ, বাহা এই আত্মা, বাহা এই অমৃত, বাহা এই ক্রম, এবং বাহা এই 'সর্বব' পদবাচা ॥১২৮॥৮॥

শ্বাজ্য-ভাষাম। তথা বিহাৎ। বহুতেলনি তবতৈজনোহ-

ীকা। চনাৰবিদ্বাভোষণি বধুবৰাৰ—ভ্ৰমণিত। অব্যাহ্য ভৈজন ইভাভাৰ্বনাচ— অলিক্টে ॥ ১০৮ ॥ ৮ ॥

ভাস্যানুবাদে। বিচাৎও পূর্ববং বধু। বণিজিবগত তেভে অভিবাক্ত তৈজন পূরুৰ হইতেছে অধ্যাৰ বা দেহসম্বন্ধী ১০২৮৮।

জয়ত স্তানির কুলার স্থানাং মধ্য স্তানাং মধ্য স্থানির স্বাণি ভূতানি মধ্, যশচায়মালান্ স্তানার তেজামরোহয় তময়ঃ পুরুষো যশচায়মালাল শাবাং সৌবরতেজামরোহয়তময়ঃ পুরুষোহয়মেব সং, যোহয়মাল্লেদময়তমিদং ত্রক্ষাদত সর্বাম্যাত্রনাময়

স্কুলাহাঁ। আন গুনরিরুঃ (বেখঃ) সর্কোষাং তৃতানাং বধু,
সর্কাণিচ তৃতানি আন্ত গুনরিরোঃ মধু; বং চ আরং অসিন্ গুনরিরো
তেলোবরং অনৃতবরং পুরুবং, বং চ আরং অধ্যান্ধং তেলোবরং অনৃতবয়ঃ
সৌবরং (খরে তবং—সৌবরঃ) শালং পুরুবং, আরম্ এব সং; [সং কঃ ৽]
বং আরং আল্লা, বং ইবন্ অনৃতব্, বং ইবং ব্রহ্ম, বং ইবং 'সর্কান্' (প্র্কোজং,
তলিতার্থঃ) ৪১২১৪১৪

আ লাকু আ দে। এই তান রিমু (মেষ) হইতেছে সমস্ত ভূতের মধু,
সমস্ত ভূত ভাবার এই তান রিমুর মধু; আর এই বে, তান রিমু বিভ ভেলোমত অমৃভমর (আধিদৈবিক) পুরুষ, এবং এই বে, ভেলোমর অমৃভমর অধ্যাত্ম সৌবর—শ্বনাভিবাক্ত শাক্ত পুরুষ, ইহাই ভাহা,
বাহা এই আত্মা, বাহা এই অমৃত, বাহা এই বেজা, এবং বাহা এই
'সর্বাণ প্রস্থায়া ৪২২৯।৯।

ল্পা প্রস্তাত কর্ম তথা ভনরিছুঃ। শব্দ ভবং শাখং স্থাস্থ বছলি, তথালি খরে বিশেষতো ভবতীতি সৌবরং স্থাস্থ ১২২১১। ীকা। পৰ্যজোগদি বিদ্যালয়িবং নর্মেবাং ভ্যালাং বৰু ভবজীভাবি—ভতুপ্রভি। অব্যান্ত্র বাদঃ নৌবর ইভাজার্থবাহ—শতুক্ত ভাতঃ ইন্ডি । বজুপ্রবাদ্ধা বহু ভব ইডি ব্যুংপদ্মা নাবঃ পুরুষ, ভবাপি বহু বিশেষতে। ভবজীভাবাদ্ধা নৌবরঃ পুরুষ ইভি বোলবা । ১২১ ৪ ২ ॥

ভাস্থ্যান্দু আদে। গুনরির বেষও দেইরপ। বলিও শ্লাবিটিভই
অধ্যাত্ম পুরুষ হউক, তথাপি বরেতে বিশেষভাবে অভিব্যক্ত হয় বলিয়া
অধ্যাত্ম পুরুষকে দৌবর বলা হইরাছে ১২২১১১

অরমাকাশ: সর্বেষাং ভূতানাং মধ্বক্তাকাশক্ত সর্বাণি ভূতানি
মধু, যশ্চারমক্তিরাকাশে তেজােমরােহয়তময়ঃ পুরুষাে যশ্চায়মধাাক্স ক্তাকাশক্তেজােমরােহয়তময়ঃ পুরুষােহয়মেব সঃ,
যােহয়মাক্সেনময়্তমিদং ব্রক্ষেদ্ সর্বম্ । ১০০॥১০॥

अस्तार्थः। असम् जाकानः नर्त्सवाः कृष्ठानाः सध्, नर्तानि ह कृष्ठानि जन्न जाकानन्त सध्, जला सः ह जसम् जिन् जाकान्त राज्यानाः अमृष्ठ-बद्धः भूक्ष्यः, यः ह जदः जवारा अनुष्यः कृषि रिहाम्बदः अनुष्ठवः जाकानः (जनवः) भूक्ष्यः, जदम् अव नः; [नः कः?] यः जदः जाजा, यर हेनम् जमृष्ठम्, यर हेन्। जन्न, यर हेन्। 'नर्त्सम्' (भूर्त्साक्षः, जिन्द्यर्थः) ॥२००॥२०॥

ক্লান্ত্রাদে। এই আকাশ হইতেছে সমস্ত ভূতের মধু, এবং সমস্ত ভূত আবার এই আকাশের মধু; আর এই বে, আকাশাধিন্তিভ তেলোমর অমৃতময় পূক্ষ, এবং এই বে, জদরাভিব্যক্ত তেলোমর অমৃতময় পূক্ষ, ইহাই ভাহা,—বাহা এই আছা, বাহা এই অমৃত, বাহা এই বৃদ্ধ এবং বাহা এই 'স্কা' বলিয়া কথিত হইরাছে ।।১৩০।।১০॥

স্পাক্তর-ভাস্থা তথাকাশঃ পথ্যাপং রভাকাশঃ ॥১০-॥১-॥ ট্রিকা। ভনরিপুরুং ভারধাকাশেংভিধিশভি—ভ্রুথন্তি॥১+।।

कान्यान्यान् । भागान् तिहेवन वर् ; हेराव भगाप रहेरणह

আভাল-ভাল্য ম। ৰাকাণালাঃ প্ৰিব্যানরে। ভ্তপনা দেবত। পণান্ত কাৰ্যকরনসন্যাতাত্মান উপকুর্বলো বধু তবলি প্রতি শরীরিণনিভাজ্য ; त्य एक अपूक्ताः नवीविकिः नवश्यामा पश्रासमानक्षीतः, क्रवक्याविकी-मवावकारक ॥>०-वं>-॥

আভাজ-ভাজ্যাকু আদে। পৃথিবী হইতে খাকাশ পর্যন্ত কুডসমূহ এবং তদবিষ্ঠাতা বেহে বিশ্বসমন্তিভূত বেবভাগণও প্রত্যেক বেহীর
উপকার সাধম করে বলিয়া বধু-সংজ্ঞায় অভিহিত হইয়াছে; কিন্তু বাহা
খারা প্রেরিত হইয়া ভাহার। দেহীর সহিত সম্ভ্রু লাভ করত বধুন্তপে
উপকার করিয়া থাকে, ভাহা বলা হর নাই—এখন বলিতে হইবে, এই জন্ত
পরবর্তী প্রতি খারত্ব হইতেছে।

শবং ধর্ম: দর্বেষাং ভূতানাং মধ্যক্ত ধর্মক্ত দর্বাণি ভূতানি
মধ্, ষশ্চারমিমিন্ ধর্মে তেলোময়োহমৃতময়ঃ পুরুষো বশ্চারমব্যাশ্বং ধার্মারেলোময়োহমৃতময়ঃ পুরুষোহয়মেব দঃ, যোহয়মাল্পেশমমৃতমিদং ত্রেশেদ্ দর্বাম্ ॥১৩১॥১১॥

স্কুলাবা:। খরং অর্ভ্রমানঃ) বর্ষঃ (পুণাং) সর্কোং ভ্তানাং
বধু, সর্কাণি ভ্তানি অন্ত বর্ষত বধু; বং চ অরব্ অবিবৃধর্ষে [অবিষ্ঠিতঃ]
তেলোমরঃ অনৃতমরঃ পুরুষং, বং চ অরব্ অধ্যাখং (কেহসভনী) তেলোমরঃ
অনৃতমরঃ ধার্মঃ (ধর্মাবিষ্ঠিতঃ) পুরুষং, অরব্ এব সং: [কং ণু] বং অরং
আয়া, [বং] ইদম্ অনৃতম্, [বং] ইদং ত্রফ, [বং] ইদং সর্কং (পুর্কোক্তম্
উত্যর্ষঃ) ৪২০২৪২১৪

মুলান্দু নাদে। ধাহার ফল প্রভাকগোচর হইরা থাকে.
সেই এই ধর্ম হইতেছে সমস্ত ভূতের মধু; সমস্ত ভূতও আবার এই
ধর্মের মধু; এই বে, উক্ত ধর্মাধিন্তিত ডেলোমর অমৃত্যার পুরুষ,
এবং এই বে, দেহসম্বন্ধী ডেলোমর অমৃত্যার ধার্ম—ধর্মাধিন্তাতা
পুরুষ, ইহাই ভাহা—বাহা এই আন্ধা, বাহা এই অমৃত এবং বাহা
এই 'সর্বাধ বিলয় উক্ত হইরাছে ৪১৩১৪১১৪

লণা প্রক্রান্তর আ । আরং বর্ণঃ। আরন্-ইত্যপ্রত্যকোহণি বর্ণঃ
কার্বোণ তৎপ্রবৃত্তেন প্রত্যকেশ ব্যপবিশ্বতে—আরং বর্ণ ইতি প্রত্যক্ষর ।
ধর্মক ব্যাখ্যাতঃ প্রতিকৃতিকৃত্যকা, ক্রান্নীনামণি নিম্নর ক্যতো বৈচিত্রাকৃৎ

পৃথিব্যাদীনাং পরিণাবহেত্বাৎ, প্রাণিভিরত্বীরবানরগভ; ভেন চ 'আরং ধর্মা' ইভি প্রভ্যক্ষের ব্যাপদের। সভ্য-ধর্মরোভ অভেনেন নির্দেশঃ ভূজা, নাল্লাচারকক্ষারোরিত ভূ ভেলেন ব্যাপদের এককে সভ্যাণি, ভূরাভূইভেলরপের কার্যারভক্ষাৎ। বস্তু অভূটোহপূর্বাব্যো ধর্ম্য: সাবাভবিলেবান্দ্রনা অভূটেন রূপের কার্যারভভ্যতে, সাবাভরপের পৃথিব্যাদীনাং প্রয়োভা ভ্রতি, বিলেব-রূপের ভূমান্দ্রই কার্যারভ্যতে, সাবাভরপ্রস্কাভত্ত। ভত্ত পৃথিব্যাদীনাং প্রয়োভারি বন্দার-রিন্ন্ ধর্মে ভেলোবরঃ, তথাব্যান্ধ্য কার্যাকরণস্কাভকর্তরি ধর্মে ভবঃ -- বার্মার ৪০০১৪০১৪

विका। पर्वाप्तावस मुख्यमूक देवापत्ति—खाकामाना देखि। अवि नही-क्षित मर्द्भवार नवीविनार व्याकाकविकि वावर। वर्षक नारेश्वकनवारक नरवाकवावधविकि বির্কেশানক্ষমান্ত্যান্ত ভারতি ভীতি । বছাপ বর্ষেচ এডাকোচমবিভি-বির্কেশানতঃ. क्यांनि नुविशावित्र्यकार्याक अकाक्यार एक कान्नकारकारबोनकाविक्यांनाव अकाक-वडीविश्वकृत वर्ष हेकि वागावरनामगडिविकार्यः। (काश्ता) वर्षः, वक अकाकरवन वाग-रम्बद्धार्-अर्माष्ट्रकेल्डिः शाशावत्तरम् श्रीक्षणम्बद्धः पर्वविकाशिकि स्परः। ভবি ভভ অভাক্ষায় চোগনালকবছবিত্যাপতা গৌণছবুবাছাত্যানবিরোধনভিমেত্যাল---क्कींडि। इक्रिय कार्रामिककश्यानः पृष्ठि—क्रमामीमाधिः। देवराष्ट्र-बाबाह्यः विश्वित्वाक्य-क्रवाक क्रेडिं। वयश्रेविद्याकावित्य त्वकृत्व-श्राध-व्यान-मीमाधिक । वर्षक बनात्कन नागावन (वर्षक्षत्रमाय- প्रार्गनिकितांक । रहनाव क्षेत्रवामाहारसन् वाकारणन् वार्षाण माणावानरकार्याक वावर । माण छाडीरश्रवहारत ८४० देव म वर्षः मक्ताः देवं कविकि मक्तावर्षद्वावद्वन्यकर्मार कद्वादक्ष्यमानः नवानव्यवन्तवन्त्रमञ्ज बार-बट्डान्ड। नगरम्बर मां कार्यस्थानाम - क्रुट्टान्ड। बर्देन करणन कार्यातककशः अक्टेशकि-अधिकि । नामानासमातककम्माध्यति-अर्थाना विरम्बाचना कार्वावककवा बार्नाक -शिट्टमट्य (%) वर्षक (६) (क्याबुटको, करताबीरंग अवस्थितक्षा वरम्बनावि वाकाविकावि—करळाछि। विवरीक्टा वन्त्राववाश्विकाणि अवुचविकारि-क्टरशक्ति । >>> ॥ >> ॥

खाळाडाकुचारः। 'बार' श्वः' रेणावि। 'बार' वर्ष-वारा खण्डाकरतात्वः; वर्ष वार खण्डाक ना दरेराक वर्षका खण्डाकरतात्व दरेशा बार्कः; अरे क्षक 'ब्बार' गर्म वर्ष्यत अण्डाकवर निर्धान क्या दरेशार्छ। अधि ७ वृष्टिनार्ध्व वर्ष्यत अक्ष्य वर्षिण दरेशार्छ। 'अरे व्यारे ब्यारिकाणित नित्रका, अवर शृषिवाणि क्षण्यवृर्द्य पश्चिक वर्षेत्रा विवा क्षार-टेब्डिस्बाक कार्यः; अवर आनिश्यकक्ष्य ब्यारिक दरेराके देशाय বন্ধপ অভিবাক্ত হইরা থাকে; এই জন্যও 'আর ধর্মাং' বনিরা প্রচালকথ ব্যবহার করা হইরাছে। ইতঃপূর্বে পারীর আচারাত্মক সভ্য ও ধর্মের অভেদ নির্দেশ করা হইরাছে; এথানে কিন্তু অভেদ সংঘও দৃই ও অদৃষ্টাত্মক কার্য্য-বিভাগাত্মারে সভ্য ও ধর্মের ভেদ নির্দেশ করা হইরাছে। বাহা অদৃষ্টাত্মক অপূর্বনামক ধর্ম, ভাষা অদৃষ্ট বা অপ্রভাক্ষভাবেই সামাভাকারে ও বিশেষাকারে কার্য্য সমুৎপাদন করিরা থাকে,—সামাভাকারে পৃথিব্যাদি পদার্থ নিচরের প্রেরক বা কার্য্যাত্মভালনকরে, আবার বিশেষভাবে অব্যাত্ম দেহেক্রির সমন্তিরও প্রবর্ত্তক হইরা থাকে; তক্মধ্যে পৃথিব্যাদি-প্রেরক ধর্মে ইয়া বেরূপ ভেলোমর ও অনুভ্যর, ভত্রপ অধ্যাত্ম দেহেক্রিরাদি-সংঘাতপ্রবর্ত্তক ধর্মেও [পূক্ষর ভেলোমর ও অনুভ্যর] ১০০ ৪ ১০ ৪

ইন্থ সভাথ সর্বেষাং ভূতানাং মধ্বক্ত সভাক্ত সর্বাণি ভূতানি মধু, যশ্চারমন্মিন্ সভো ভেলোমরোহমূভষরঃ পুরুষো যশ্চারমধ্যাত্মও সাভাতেলো বরোহমূভমরঃ পুরুষোহরদেব সঃ, যোহয়মান্দ্রেদমূভ্যিনং ভ্রেম্বেদ্থ সর্বান্। ১০২। ১২।

স্কুলাথ:। ইনং (আচারসকণং) সভাং সর্কোণ ভূতানাং বধু, তথা স্কাণি ভূতানি অন্ধ সভাক বধু (কার্য্য); যা চ আরং অবিন্ সভাে গ্রভার্থে অধিষ্ঠিতঃ, তেলােবরঃ অনুতবরঃ পুরুবং, বা চ আরং অধ্যাত্মং তেলােবরঃ অনুভবরঃ সাভাাঃ পুরুবং, অরষ্ এব সঃ; বা অরং আাত্মা, যা ইন্স্ অনুভব্ ধা ইন্সং এক, বা ইন্সং স্কৃত্ম্ হতার্থাঃ) এ ১০২ ৪ ১২ ৪

অ্লাব্যাদে। এই সদাচারাত্মক সতা হইতেছে সমস্ত ভূতের
মধু, আনার সমস্ত ভূত চইতেছে এই সভাের মধু; আর এই বে.
সঙাাথিতিত ভেজােমর অধ্যতমর পুরুষ. এবং এই বে, দেহসক্ষী
ডেজােমর অধ্যতমর অধ্যাত্মপুরুষ, ইহাই তাহা—হাহা এই আত্মা. বাহা
এই অকুড, বাহা এই ব্রক্ষ. বাহা এই 'সর্কা' বলিরা কবিড ৪১৩২৪১২৪

ল্পাক্ষ্য ক্রাম্ব্যান্ত। তথা দৃষ্টেনাছনীরবানেনাচারস্থণে সভ্যাব্যা ভবভি স এব ধর্মঃ, সোংগি বিপ্রকার এব সাবাভ-বিশেবাল্বরপেণ; সাবাভ-রূপঃ প্ৰিব্যাদিস্থবেতঃ, বিশেষরূপঃ কার্য্যকরণস্থাভস্ববেতঃ। তর প্ৰিব্যাদিস্থবেতে বর্ত্তবাদক্রিরারণে সত্যে, তথা ল্বাল্যং কার্যকরণস্থাত- নৰবেতে পভ্যে ভৰঃ—সাজাঃ, "সভ্যেন বাৰুৱাবাতি" ইতি প্ৰস্তা-স্বৰ্যাৎ ৪২০২৪২২

তীকা। ইবং সভাবিভানিব পর্যায়ে সভাবধাবিধে—ভঞা সূহবট্নেভি।
নেহবীভানি-পথে। বর্ষাধাবহনার্য:। বর্ষাধানি প্রকার্যার্কিনিরোপং বিভবতে—ভাষানাক্রানাইভিঃ। উভয়ে ন্যবেভনপথ্য ভক্ত ভাগবেলাক্সভার্য:। বন্দারবদ্বিদ্বিভানিবাবাভ বিবর্ষার —ভ্যান্তিঃ। সভা বন্দেভার্যি বাবাদিভি বেবাঃ। বন্দারধানিভিভাবিবাভাভ বিবর্ষার—ভ্যান্তিঃ। সভাভ পুরিবাাবে) ভার্যাক্সবন্দারে
ভ কারপরে প্রমাব্যার—ভ্যান্তিভান্তিঃ। ১২০।। ১২।

ভাষ্যান্দ্রবাদে। গাকপ্রতাদ সিদ্ধ সদাচারাছ্টান দারা সত্য নিশাঃ
, হয়, তাহাই ধর্মনদ্বাচা। সেই সতাসংক্ষক ধর্ম চুইপ্রকার—সামান্যাদ্দর
ত বিশেষক্ষক; তয়ধ্যে পৃথিব্যাদি ভূতপদার্থ সমবেত সত্য হইল সামান্ত ধর্ম
আর কার্য্য-করণতাবে পরিণত দেহ-সদদ্ধ সত্য হইল বিশেষ ধর্ম; তয়ধ্যে
পৃথিব্যাদি ভূতে সম্বন্ধ হইয়া বে সত্য ধর্ম অমুক্তিত হয়, তাহা হইতে এবং
বধ্যাদ্ম দেহজিয়-সম্বন্ধশে অমুক্তিত সতাধর্ম হইতে বাহা সগুত হয়, তাহাঃ
নাম সাত্য; কারণ, অন্য প্রতিতে আছে—'বাছু সত্যধর্ম-বোপেই প্রবাহিণ
হইয়া থাকে'য় ১০২য় ১২য়

ইনং মাসুষ্ সর্বেবাং গৃতানাং মধ্বক্ত মাসুষক্ত নর্বাণি ভূতানি মধু, যশ্চারমন্মিশাসুবে তেঞ্জোময়োহমুত্নয়ঃ পুরুষে যশ্চারমধ্যাত্মং মানুষক্তেঞাময়োহমুত্নয়ঃ পুরুষোহয়মেব সঃ বোহ্যমাজ্মেদমমৃত্যবিদং ত্রক্ষেদ্ধ সর্বাম্ ।১৩৩।।১৩।।

জ্বানা হি। টসং (অক্ত্রনানং) নাজ্বং (মক্রারালি জাতিভেসঃ
সর্বোধ জ্তানাং বধু, তথা সর্বাণি ভ্তানি অঞ্চ নাজ্বত বধু , বঃ
অরং অবিন্ বাজ্বে তেলোবরঃ অব্তবরঃ পুরুষঃ , বঃ চ অয়ং অধ্যাব
তেলোবরঃ অব্তবরঃ নাজ্বঃ (বরুবাাভবিটিতঃ) পুরুষঃ, অরব্ এব সঃ
[কঃ ?] বঃ অরং (পুর্বোজঃ) ॥ ১১০ ॥ ১৩ঃ

অনুসাক্ষাদে। এই লোকপ্রসিদ্ধ মনুষ্যাদি লাভিবিশে হইভেছে সমত তৃতের মধু, এবং সমত ভূত হইভেছে এই মনুষ্যাদি মধু; এই বে, মানুষনিষ্ঠ ভেলোমর অনুভমর পুরুষ, এবং এই থে লখ্যাদ্ধ ভেলোমর অনুভমর মানুষ পুরুষ, ইহাই ভাহা—বাহা এ बाबा, बाश এই बब्ध, बाश এই खब, बाश এই 'मर्बर' यक्कण बनिज्ञा डेक्क स्टेब्नाए, उन्नाष्ट्रक ह ১००॥ ১०॥

শাক্তর-ভালাজ। ধর্ণসভাভাং প্রক্তাংরং কার্করণ-সলাভবিশেষ:। স বেন লাভিবিশেষেশ সংস্ক্তোভবভি, স লাভিবিশেষো বালুবাদিঃ; তন বালুবাদিলাভিবিশিষ্টা এব সর্ব্ধে প্রাণিনিকারাঃ পরস্থরোপ-কার্ব্যোপকার কভাবেন বর্ত্তবানা দুজরে; অভো বালুবাদিলাভিরশি সর্ব্বেশং কৃতানাং বধু। তন বালুবাদিলাভিরশি বালাব্যাদ্বিকী চেক্যুভরণা নির্দেশ-ভাগ্ ভবভি ১০০০/০০

টীকা। ইবং বাধ্ববিভাজ বাধ্বপ্রধণ সক্ষাভাগদকণবিভাভিপ্রেভান—প্রম্প্রভাজানীতি। কথা প্রথমে লাভি: সর্কোণ কৃতানাং মনু ভবতি, ভলাং—ভত্তেতি। ভোগভূনি: সপ্রবর্ধ: বলায়বলিলিভানিবাকাব্যক বিবর্জেন বর্ণনিভ—ভত্তেতি। বাব্যবস্থাবিভি বাবং। ধর্ণাবিবিভাগের্থ:। বিবেট্: বপরীয়বিভা ভাতিরাধাারিকী পরীয়ারহাজিত। ভূ বাজেতি কেনঃ। বস্তুত্ত তল্প বোভরধান্যবিভাভিক্ষেতা বিবেশ্বভাগিত্যুক্তম্ব ৪ ১০০ ৪ ১০ :

ভাজ্যান্দ্ৰাদে। দেহেলিয়াদি সংবাতসম্পন্ন পুরুষ বর্ষ ও সত্য বারা পরিচালিত হইরা বাকে, বে লাভিবিশেবের সহিত তাহার সম্বন্ধ হইরা বাকে; সেই লাভিবিশেব হইতেছে—বস্থায়াদি। দেখিতে পাপনা বার—সম্বন্ধ প্রাণীই বস্থায়াদি-লাভিবিশেববিশিষ্ট হইরা পরস্পর পরস্পারের উপকার্ব্যোপকারকভাবে অবহান করিতেছে; অতএব বস্থায়াদি লাভিও সম্বন্ধ ভূতের মধ্। এই বস্থায়াদি লাভিও বাহ ও আধ্যান্ধিক তেনে চুই প্রকার; স্করাং উহাও উভর প্রকারে নির্দেশের বোপা; এই লক্ষ্পান্ধ করিয়াছেন। ১০০। ১০।

অন্তরাত্মা সর্কেবাং ভূতানাং মধ্বক্ষাত্মনঃ সর্কাণি ভূতানি
মধু, বশ্চান্তরশ্বিদ্ধান্ধনি তেলোমনোধ্যুতমন্তঃ পুরুষো বশ্চান্তমাত্মা
তেলোমনোধ্যুতমন্তঃ পুরুষোধ্যমেব সঃ, বোধ্যুমাজেকমন্ত্রিকং
ত্রজেকত সর্কাম্ ॥১৩৪।১৪৪

সাক্তাশা । খরং খাখা (বরুবাদাবিদাতিবিশিষ্টঃ কেছঃ) সর্বোধ ভূতানাং বধু, সর্বাণি চ ভূতানি খাস্ত খাখানঃ বধু; তথা বঃ চ খাছং খাখিন খাখানি (কেছে) [খাবিষ্টিভিঃ] তেখোৰরঃ খানুভবরঃ পুরুষঃ, বঃ চ খাছং স্বৰ্থে সত্যে ভৰঃ—সাভাঃ, "সভ্যেন বাৰুৱাবাভি" ইতি প্ৰভা-ভৱাৎ ৫১৩২৪১২

টীকা। ইবং সভাবিভানিত্ব পর্বাহে সভাসবার্থবাধ—ক্ষঞা সুহত্তহৈস্তি।
সেইপিভানি-পথা কর্মাবাহরপার্য। বহাছনি ক্ষাবহার্ত্তিবিহাপাং বিভক্তে—আমাস্যাক্ষাপ ইতে। উভয়ে স্বব্যেতপথাত ভয় ভালবেনাত্বভার্য। সভাহবন্ধিরিভাবিবাভাভ বিষয়াধ—ক্তহন্তি। সভা কক্তাাধি বাভাবিতি বেয়া খলাহববাবিতিভাবিবাভাভ বিষয়াধ—ক্তহাহ্যাক্তি । ১২০।। ১২।
ভারবাহে ক্ষাব্যাধ—ভত্তহ্যাক্তি । ১২০।। ১২।

काम्यान्यान् । नाकश्राक निष्ठ नशां ग्राह्मित वाता नशां निष्यत्त , दत्र, छादाने वर्षनकराणाः (नदे नहां नश्रक वर्ष इदेशकात — नावानाष्ट्रक व वित्तवाष्ट्रकः । अत्र शां श्रिकाणि कृष्णमार्थ नवर्षक नशां वदेश नावाण वर्षः, व्याद कार्यः क्ष्मित्राणि कृष्णमार्थ नवर्षः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वरः वर्षः वरः वरः वरः

ইঙং মাসুষ্ সর্কোষাং তৃতানাং মধ্যক মাসুষক্ত পর্কাণি ভূতানি মধু, বশ্চারদন্তিত্বাস্থাত্তবে তেজামরোছমুভদরঃ পুরুষো বশ্চারদধ্যক্তি নাপুষক্তেলোমরোছমুভদরঃ পুরুষোছর্মের সঃ, বোহরমান্তেদমমুভবিদং ত্রক্ষেক্ত সর্কাম্ ।১৩৩॥১৩॥

ज्ञाक्ताव्यिः। हेमः (जञ्जूष्वयादः) वाश्वयः , वश्ववादावि काणिएकतः) गर्त्यदार कृष्ठामाः वष्, उदा गर्तानि कृष्ठामि जञ्ज वाश्वयः वष्, दा ६ ज्ञार जन्म वाश्वय राज्याः ज्ञाक्यवः पूरुषः, दा ६ ज्ञाः जदााकः राज्यायाः ज्ञाक्यवः वाश्यः (वश्ववाकिविकः) पूरुषः, जन्नयः, जन्म , जन्म । [कः १] सः जाः (प्रतिकः) । ১১० । ১०१

অনুলান্দ্রাদে। এই লোকপ্রসিদ্ধ মন্ত্রাদি লাভিবিশেষ হইজেছে সমত ভ্তের মধু, এবং সমস্ত ভূত বইজেছে এই মন্ত্রাদির মধু; এই বে, মানুবনিষ্ঠ তেলোময় অনুভ্যম পুরুষ, এবং এই বে, লগান্দ্র ভেলোময় অনুভ্যম মানুষ পুরুষ, ইয়াই ভাষা—বাহা এই मामा, याश এই मञ्ज, याश এই तम, याश এই 'मर्क' यस्त्र यनिया उक्त स्टेसार्ट, असमूक s 5 ०० s ১० s

নশা আছু ক্ল-ভ্ৰাম্ব্য মৃ । বৰ্ষসভ্যাভ্যাং প্ৰবৃক্তো হয়ং কাৰ্যকরণ-সংখ্যভাষণেয় । স বেদ আভিবিশেষণ সংগুজো ভবভি, স আভিবিশেষো বাছবাহিঃ : তন্ত বাছবাহিলাভিবিশিষ্টা এব সর্ব্ধে প্রাণিনিভাষ্টাঃ পরশারোপ-কার্যোপকারকভাবেন বর্ষনানা দৃত্তরে ; অভ্যে বাছবাহিলাভিছপি সর্ব্বের্থাং কুভানাং বধু । তন্ত বাছবাহিলাভিছপি বাভাব্যান্তিকী চেত্যুভরবা নির্কেশ-ভাগ, ভবভি রুস্ত্রুস্ত্র

ভাজ্যাল আদে। বেছেরিরাদি সংগাতসভার পুরুষ ধর্ম ও সত্য গারা পরিচালিত হইরা থাকে, বে আতিবিশেষের সহিত তাহার সক্ষ হইরা থাকে; দেই আতিবিশেষ হইতেছে—বহুবারাদি। কেথিতে পাপরা বার—সমস্ত প্রাণীই বহুতাহি-মাতিবিশেষবিশিষ্ট হইরা পরত্পর পরতারের উপভার্য্যোপভারকভাবে অবহান ভরিতেছে; অভএব বহুবারাদি আতিও সমস্ত ভূতের বধু। এই বহুবারাদি ভাতিও বাহু ও আবাান্তিক তেকে ছুই প্রকার; স্কুতরাং উহাও উভর প্রকারে নির্দ্ধেশের বোগ্য; এই ক্ষ প্রতি উগর বাজাবাান্তিকভাব নির্দেশ করিরাছেন ৪ ২০০ ৪ ২০ ৪

অরমান্ত্রা সর্কেবাং ভ্তানাং মধ্বভান্তনঃ সর্কাণি ভ্তানি মধু, বশ্চারমন্ত্রিরান্তনি তেলোমবেছির্তমনঃ পুরুষো বশ্চারমান্ত্রা তেলোমবেছির্তমনঃ পুরুষোহরমের সঃ, বেছিরমান্তেরমন্তনিকং অন্তের্গত সর্কাম্ ॥১৩৪।১৪৪

ज्यक्रांबाः। चरः चाचा (तक्ष्याचाविकाविविविदेः (दरः) गर्जवाः कृषामार वर्, गर्जानि व कृषानि चक्र चाचनः वर्षः। क्या सः व चरः चित्र चाचनि ((करः) । चित्रिविद्ः] (करणावतः चन्ववदः गूक्तः, सः व चत्रः (क्यांनकः जन्ननाः जाता (जातमपरी) गूज्यः, जान अन मः (कः १) सः जाता जाताः गर देशन् जन्ननः १२ देशः अतः १२ देशः मर्गन् (केशार्थः (क्यांक्यार्थः)। २००१ : १० ।

च्यू आण्यू चारह । मनुषाशिक काकिनिकि अहे एक मनव्यक्रिक वर्ष, अस मगढ क्छ अहे वालाव ((वर्षक) मधु ; (महेन्द्रण, अहे (व, वालावक उद्यासन व्यक्तमन पूक्तम ; अस अहे (व. (इर्ष्णामध व्यक्तमन वाला—पूक्तम, हेना हहेएउएक उत्ता—वाला अहे वाला, वाला अहे व्यक्तम वाला अहे व्यक्तम वाला अहे वाला अहे

লাক্তর-ভালাক। বন্ধ কার্যকরণসভাতে। মান্ত্রাবিকাতিবিশিষ্টা, সোংবান্থা সন্ধোধ ভূজানাং মধু। নয়খং শারীরশ্বনে নিশিষ্টা
প্রিরীপর্যার এব গুন, পার্থিবাংশকৈর তার প্রধানে; ইই ভূ সর্বান্থা
প্রত্যান্ধিরিত্রাবিধ্যান্দিসক্রিশের সক্ষ্ণুত্রেরভাগন্তিশিষ্টা কার্যাক্রম্পক্ষাতা, সা 'অবমান্ধা' ইড়াচাতে। তাম্বান্ধিন আর্থিন তেলোমরোধ্যক্ষয়া পুরুবাংশ্রেরসা স্বান্ধির। নিশিক্ততে, একলেশেনা ভূ
প্রির্যান্ধিন নিশিষ্টা, শারাব্যান্ধিরশোলার্থান স্থান্ধিন্ত। বন্ধ
পরিনিষ্টো বিজ্ঞানমন্ত্রান্ধিরং দেহলিকস্ক্রাত আন্ধা, সা "বক্ষান্ধান্ধা"
ইড়াচাতে ১৯০৪১৪৪

ভাস্থ্যান্দ্রাদে । বসুদারাদি লাতিবিশিষ্ট এই বে, ছেছেন্তির-সংবাতাত্মক আরা, সেই এই আরা হইতেছে সমস্ত ভূতের বধু। ভাল, এই আরা ত পৃথিবীপর্যারেই 'শারীর' শব্দে উক্ত হইরাছে, [এবানে আযার ভাষার পৃথক্ উক্তি কেন ?] না—এ আগতি হইতে পারে না; কেন না, সেবানে শারীর শঙ্গে কেবল পার্থিবাংশই অভিহিত হইরাছে, আর क्षणा वित्तं वर्षविविद्धिक असः समक पृष्ठ क त्यवदा त्यक्ति तर्रद्धः विद्यापि न्यापि , अर्थे व्याप्ताः विविद्ध स्टेशाष्ट्रं, (किन्ध नहीर्द्धम व्याप्ति नर्द्धः)। अवारत त्यदे वरे तर्पाकाणी वाचारकरे त्याप्ताः व्याप्ताः विद्धाः व्याप्ताः विद्धाः व

স বা অনুষাক্ষা সংক্ষিবাং ভূতানামধিপতিঃ সংক্ষিবাং ভূতানাত রাজ্ঞা, তদ্বপা রখনাতে চ রখনেমে চারাঃ সংক্ষা সমর্শিতা গ্রহম্বাশ্বিদ্বাভ্যনি সক্ষাণি ভূতানি সংক্ষা দেবাঃ দক্ষে গোকাঃ সংক্ষি প্রাণাঃ সক্ষা এত আল্লানঃ সমর্শিতাঃ ৪১০১৪১৫৪

अक्षाक्याद्याः। तः (अनवद्याकः) अतः (कार्य-कर्यामादिविविद्येः) आधा तर्स्वाः कृषानाः अविभिन्धः (अविद्याः भागकः—अव्यादेश), त्रास्वाः कृषानाः द्याचा (अभवादिकवाक्य-अविद्याचे वाक्यित्ववय्); उद् (क्या) वर्षा (वर्षः) त्रवनाको व त्रवात्वाः (वर्षकः) व्याद्याव्यः) वर्षाः अवतः (वर्षाकः) त्रविविद्याः (वर्षाकः) त्रविविद्याः (वर्षाकः) त्रविविद्याः त्रविविद्याः त्रविविद्याः त्रविविद्याः । त्रविद्याः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्यः

শুকা-শুক্তাদে।—সেই এই নেছেক্সিরাদি-সম্ভ বিজ্ঞানময় আছাই
সমস্ত কৃতের অধিপতি (পরিচালক) এবং সমস্ত কৃতের রাজা।
এ বিবরে গৃতীয়ে এই বে, রংখন নাজিনছে, ও রখচজের নেমিডে
যেরূপ চক্রলগাকাসমূহ সন্ধিবেশিত থাকে, ঠিক ভক্রণ সমস্ত কৃত,
সমস্ত খেবজা, সমস্ত গোক, সমস্ত গ্রাণ এবং উক্ত সমস্ত আছা এই
আয়ানে সন্ধিনেশিক ভাছে এ ১০৫৪১৫ই

শাক্ষয়-ভাল্যাল্ । ব্যিয়ান্ত্রনি পরিণিটো বিজ্ঞানবয়েংছো পর্বায়ে প্রবৈশিক্তা, সোহরবান্ত্রা ভবিপ্রবিভাত্তকার্যকরণসভাতোপানি - বিশিষ্টে প্রবিভিন্ন পরবার্যান্ত্রনি প্রবেশিতে, স এবর্জ্ঞাহনরগ্রহার ক্ষমে প্রজ্ঞানবন্ত্রতা সর্বোয় ভ্রতানাবরবান্ত্রা সর্বৈত্রপান্তা, সর্বোয় ভ্রতানাবরিপতিঃ সর্বভ্রতানাং স্বতন্ত্রং, ন কুষারায়াভাবৎ; কিং গুর্ছি । সর্বোয়ং ভ্রতানাং রাজা, রাজ্যবিশেববর্ষপিতিবিভি—ভবিভি ক্লিয়াজোচিসক্রতিনাজিত্য রাজা, ন ব্যাপতিঃ; লভ্রে বিশিন্ত্রী অধিপতিরিভি। এবং সর্বান্ত্রান্ত্রী বিহান প্রক্রিণ স্তান্ত্রী ভর্মিণ ভরিভি।

পরিসমান্তঃ পায়ার্থঃ, বছর্বঃ প্রস্তাঃ; তরিয়েত্রিন্ সর্বান্তকুতে ব্রন্ধবিদি সর্বান্তনি সর্বান্তনি সর্বান্তনি সর্বান্তনি সর্বান্তনি সর্বান্তনি সর্বান্তনি সর্বান্তনি সর্বান্তনি দর্শান্তনি ভালার করে করি কর্মান্তনি করে কর্মান্তনি স্থানি প্রসাদিক পর্বান্তনি, সর্বে ক্রোম্বান্তনি, সর্বে ক্রোম্বান্তনি, সর্বে ক্রোম্বান্তনি, সর্বে ক্রোম্বান্তনা, সর্বে ক্রোম্বান্তনান ক্রম্ভন্তনি ক্রম্বান্তন্তনি ক্রম্বান্তনান ক্রম্ভন্তনি সর্বান্তনান ক্রম্ভনি সর্বান্তনান ক্রম্ভনির সর্বান্তন্তনান সর্বান্তনান ক্রম্ভনির সর্বান্তন্তনান সর্বান্তনান ক্রম্ভনির সর্বান্তন্তনান স্থানিত বৃত্তনি বিশ্বান্তনান সর্বান্তনান স্থানি স্থানি ক্রম্বান্তনান স্থানিক স

বহুক্তন্—ব্ৰথনিত্ বাৰ্ণেবঃ প্ৰতিপেক্ত কাং সমূত্ৰতনং প্ৰাণ্ডেতি, স এব স্বান্তভাবো বাৰ্যাতঃ। স এব বিষান্ ব্ৰথনিং স্কোপাৰিঃ স্কান্তা স্বান্ত ভৰতি; নিশ্ৰপাৰিনিত্ৰপাৰ্যোগনন্তবাংবাত্তঃ কংলঃ প্ৰজ্ঞানখনো-কোগ্ৰান্ত। চ্ৰুডোংডবোৰ্চলো নেতি নেতাপুলোংনপ্ৰিতোবংবিশেষণো ভৰতি।॥

ভবেভযর্থনভারত্তাকিকাঃ কেচিৎ পণ্ডিভস্কতান্চান্যবিদঃ পাপ্তার্থং বিরুদ্ধে বজনানা বিকরপ্রতাে বোহনপাবস্থাতি। ভবেভযর্থনৈতে বল্লা-বস্ত্রভাত—"অনেভবেদং ননলাে ভবীরঃ" "ভবেভতি ভরৈভতি" ইতি। ভবা ৮ ভৈতিনীয়কে—"ক্যাৎ পরং নাপ্তমতি কিকিৎ", "এভৎ নাম পার্যাতে " "অহময়বহমানহমান" ইত্যাদি। তথা চ হাবোগ্যে—"কক্ষ ক্রীকৃত্
রম্মাণ্য" "দ বদি পিতৃলোককান্য", "দর্মগন্ধ দর্মরস্য" "দর্মজ্য দর্মবিং"
ইত্যাদি। আধর্মণে চ—"হ্রাং দ হ্রে তহিহাতিকে চ।" কঠবরীবিদি—
"আগোরবীরান্ বহুতো মহীরান্", "কভং মধানাং বেবন্", "তত্তাবতোহজানত্যেতি তির্কং" ইতি চ। তথা দীতাত্ম—"আহং ক্রুব্রহং মজ্য।" "পিতাহমজ্
কণভঃ।" "নাদ্ধে কল্ডচিং পাপন্", "দরং দর্মেন্ ভূতেন্" "অবিভক্তং
বিভক্তেম্", "প্রদিক্ প্রভবিক্ চ" ইত্যেবমাভাগমার্থং বিক্রমেন প্রতিভাবং
মঞ্জমানাঃ ব্যক্তিসামর্ব্যাদর্শনির্দায় বিকর্বরা—অভ্যান্যা, নাভ্যান্যা, কর্তা,
আক্রা, বুক্লো বন্ধঃ, ক্রিকে। বিজ্ঞানমারং শৃত্তক—ইত্যেবং বিকর্বরতো ন
পারম্বিপক্ষ্যি অবিভান্তাঃ; বিক্রম্বর্মবর্ণিছাং দর্মক্র। তলাং তক্র ব এব
ক্রত্যাচার্য্যবর্শিত্যাপাত্রসাল্পারাভ্যবিত্তির নেতরে প্রতিকৌপ্রান্ত্রপাত্র ১০০২১২১

নিক্ষা। স বা অন্বয়প্তেভাজাৰ্থন — অভিনাজিতি। প্ৰিপিট পূৰ্বপূৰ্বাচেতস্থাবিটোনবোও প্ৰাচে বলাংবাজ্যুকে বিজ্ঞান্তন্ত্ৰ বিষয়ন্ত্ৰাৰ বিষয়ন্ত্ৰীজনা কৰেপিতঃ
ভেন প্ৰেণান্তনা ভাগন্তাই কৰে। বিভান আন্তন্ত্ৰপূৰ্ণ । উভনান পৰাৰ্থন্ত সৰ্বোধানিতানি
বাহেই উলিয়েজিডি। অবিজ্ঞা কৰু ভাগনিত্ৰশ্বনাৰ কৰেপি। নকেন বিশিষ্টে জীনে
ভণাত: সংক্ষাং ভুঙানান্তিপ্তিভিভি নক্ষঃ। নাবাহং প্ৰনামান কৰু বাচান্ত্ৰীলাল—
অংক্ষান্ত্ৰীজিতি। ভতিৰ বিশ্বতিভিভি নক্ষঃ। নাবাহং প্ৰনামান কৰু বাচান্ত্ৰীলাল—
অংক্ষান্ত্ৰীজিতি। ভতিৰ বিশ্বতিভিভি নিক্ষাণাল উভূতি। বাক্ষান্ত্ৰীলাল কিনিভানিতিভিভি বিশেষণালিতান্ত্ৰীলাল—আন্তন্ত্ৰীজিত। নাক্ষান্ত্ৰীলাল কৰিন
ভাবিশ্ভিভিভি বিশেষণালিতান্ত্ৰীলালতা — আন্তন্ত্ৰীজিত। নাক্ষান্ত্ৰীলালতা কৰিন
ভাবিশ্ভিভিভি বিশেষণালিতান্ত্ৰীলালতা বাক্ষান্ত্ৰীজিত। বাক্ষান্ত্ৰীজিত বিশেষণালিতানিত্ৰীজিত বিশেষণালিতানিত্ৰীজিত বিশেষণালিতানিত্ৰীজিত বিশেষণালিতানিত্ৰীজিত বিশেষণালিতানিত্ৰীজিত বিশেষণালিতানিত্ৰীজিত বিশেষণালিত বিশ্বতিভিভিত বিশ্বতিভিভিত বিশেষণালিত বিশ্বতিভিভিত বিশ্বতিভিভিত বিশেষণালিত কৰিন
ভাবিশ্ভিভিতি বিশ্বতিভিভিত বিশেষণালিত বিশ্বতিভিত বিশ্বতিভিভিত বিশ্বতিভিত কৰিবিভিত বিশ্বতিভিভিত বিশ্বতিভিত কৰিবিভিত বিশ্বতিভিত কৰিবিভিত কৰিবি

६०० विकारमधः एकोरहरेनकराकावनाः—बान् कुन्धिकः। करवन वात्ताकः क्षावर्धः—क्ष्मिक्षिः। देशस्त्रीत्राक्षरमाध्यक्षरमार्थः। वर्धावकावरं क्ष्मिकः —स्ट्यक्तिः वर्षावर् पृत्रीत्राकरः रक्षक्षरमाधिः जनगरिकाः नेपाधः विवान् त्रधाकर्गाकिः नवतः। वर्षः (वाकावज्ञात्रार्थः विद्याः त्रध्वापिकाः, व वात्ताव-विकारमाधाविकः।वर्षाः—कुण्याक्तिकः। नेपायिकतः प्रकारविकाः । वर्षाकनाः —वरुरः प्रधानिक वर्षाविकः।वर्षाक्षिकः। वर्षाविकाः वर्षाविकाः। व्यवकारिकेकिकिः। क्षविकानकारः—कुन्दं विकिः।

इक्ष्यमुद्दकाचाराव्यक्षप्रवासार्थः -- अस्तिमामा अ देखि । वस नामकादवा विवास्तिताः

অধিপতি নহে; নেইবক্ত বিলেশ করিয়া 'অবিগতি' বলিলেন। এই একার গর্জত্বত আত্ম-পৃত্তিসন্দর্মা (প্রকৃতিসন্দর) প্রকৃত্ত বিভাগ্ পুরুষ বৃত্তিসাত করিয়া বাকেন। >

ইতঃ পূর্বে বে, বলা হইয়াছে—'বছ্বাগণ ব্রহবিভাবাভাবে সর্বাহ্যভাব লাভ করিবার পূর্বে বনে করে বে, ব্রহই বা এবন কোন বন্ধ জানিয়া-ছিলেন, বাহা ভানিয়া ভিনি সর্বান্ধক হইয়াছেল' : সে কথার এইলে ব্যাখ্যা বা নিছাত্ব বর্ণিক হইয়াছে বে, প্রবহতঃ আচার্বা ও লাল্ল হইতে আজার সর্বান্ধভাব প্রবণ করিবা. পরে অন্থন্ন বৃদ্ধির সাহাব্যে বনন করিবা আর্থাৎ ক্রতার্বের বৃহতা সম্পাত্মন করিবা, ভাষার পর ব্যুব্রাহ্মনে বের্ল্লপ বিজ্ঞান-ব্রণানী প্রকৃতির হইয়াছে, ভরত্মনারে সাজাৎকার করিয়া—বৃত্তিতে হইবে বে, উক্তপ্রভাৱ ব্রহ্মনিছেল, ভরত্মনারে সাজাৎকার করিয়া—বৃত্তিতে হইবে বে, উক্তপ্রভাৱ ব্রহ্মনিছেল, এবং সর্বান্ধক হইয়াও অসর্বান্ধ হইয়াছিল; এই ব্রহ্মনিয়া বারা সেই অনিহ্যা অসনীত করিবা ব্রহ্মনিৎ পূক্ষর ব্যয়ে ব্রহ্মনার । বিহার বন্ধ হইয়াছেন ব্যর্থ (৩) ২

- বে উদ্দেশ-সিছির জনঃ এট পাছের (এই প্রাক্তনের) অবতারণা হইয়ছিল, তালার কথা এখানে পরিস্বাপ্ত হইল; এখন, সেই সর্বাপ্তকৃত প্রছবিৎ আত্মান্তে এট সময় জগৎ কিছপে প্রতিষ্ঠিত আছে, তাহা বলিতে হইবে। ভগ্রিবহে প্রথমতঃ একটি দৃষ্টাপ্ত প্রচলিত হইতেছে—বেমন রবচন্দ্রের নাজিবছে ও বধনেনির চন্দ্রের প্রাক্তাব্যের নাম নেনি,) উপত্রে সমর চন্দ্রশালাল সন্থিবেশিত থাকে, টক তেবনি পরবাপ্তভাষাপর এই প্রথমিৎ-আত্মান্তেও প্রভালি প্রথমিত সমস্থ ভূতনিবহ, অভিনাত্মতি সমস্থ হেবজা, ভূত্যাধি সমস্থ লোক, বাক্প্রভৃতি সমস্থ ইন্তিয় এবং অভ্যন্তব্যং প্রতিবৃদ্ধি (প্রভেত্তি পরস্থ করিছে (প্রভেত্তি পরীয়ব্যে) অভ্যানিই অভিনাত্মতা এই স্বস্থ
- (०) कारमधः वाद्या प्रशास्त्रदे उच्चप्यम् वदः मनीवनः, (यदम परिवाद महिष्ठ नयप्र प्रवाद वाद्या वान्याद उप्चपाद क वर्षीयक्यां कृषितः वाद-पृतिष्ठ नारव वा। वादन त्रवाद अध्यादम्य केश्व दरेत्वः, करअविषयः व्यक्तिः व्यवदिक दरेत्व वादः प्रविद्याः व्यवद्यः क्षणादः व्यक्तिःशाः क व्यवद्यापाद केश्वदे निवादः वादः क्षण्यः वाद्यापादः व्यवद्यः वाद्यापादः विवादः (ए, "अवदिकाराद्यायम्यादः मृत्यापा अध्यय नरः देशाति ।

णाणा-जिय कि, नम्बर् नम्छ क्ष्यरहे अहे जान्नार्छ जान्न्यकि इहिनार्छ।
हेळाशूर्स जान्न दि, बना हहेन्नार्छ—'नामस्य विव ज्ञूक्टर-जिन्नािहरणम दि,
जान्दि यह हहेन्नािहनाम, जान्दि एर्ग हहेन्नािहनाम', अवारम राहे नर्सामजान्दे गाणांक हहेन। [अवारम ब्रुगम हहेन दि,] ज्ञुक्क विचान नृज्ञान्दे
नर्सािशायिनच्या नर्साञ्चक क नर्सम्य हम, जिन्हि जान्दान नरसािशायिनच्या नर्साञ्चक क नर्सम्य हम, जिन्हि जान्दान नरसािशायिनच्या नर्साञ्चक क नर्सम्य हम, जिन्हि जान्दान मध्यन ज्ञुन ज्ञुन ज्ञुन व्याप्त व्याप्त विद्यायाय विद्याय विद्याय

कान कान करूपहे—कार्किक खबर (बहरकार किस्टरक नांकक्यना बाह्यता चालनाटक चनाबादन शिंकड बांगहा बटन कट्टन, अबल কোন ব্যক্তি ইয়ার প্রকৃত অর্থ বুরিতে না পারিয়া--আবিকত্ব নামার্থ বিকৃত इडेरलक बाज करिया नामा अकार करना व कामा अवन करल विवय वारवारक गठिल क्रेश बारकन । [अङ्ग्लभाष किंद्र] निरवार ल यह क्रेडिश আমাৰের অভিত্রেত অর্থেরই অভ্যোগন করিতেছে: ববা-'বিনি নিচ্ছিত্র হইরাও বনের অপেকা অধিক বেগবান,' 'তিনি সক্রিয়ও বটে, অক্রিয়ও वाहे' केलाहि । टेडिवरीय डेमिनबाम् अकेशमरे चाह्य--'ममामा अवक्षे वा चनकरे किहू नाहे.' 'अहे नाव भान कांत्र ठाइ' 'चावि चहा, चावि चहा, चावि बह्न' हेजाहि । शास्त्रारमा दनहेक्कन देवज्जादन कना बाद्ध-'जिनि शांतिरहाइन, क्रीका कविरहाधन अवर तथन कविरहाइन' 'हिम बन्नि निष्ठ-(माकांडिनावी इन', 'डिम् नक्षभदवुक ও नक्षंत्रन-मन्नव,' 'विमि मक्क **७** मक्रविर वर्षार मायानाकारत ७' विरम्याकारत मयत बारनन' हेलापि। वाधर्मालाश्रीनगरमञ्चार वारक भी त्रीन पृत्र सहेराठक पृत्त, बानात निक्रे सहेराठक बिकरहे बाह्यन' देखावि। कर्छार्शनियस्थ बाह्य--'जिन ५१ बार्शकांड অভিনয় অণু, আবার বহৎ অপেকাও বহতর' 'বত ও বভতাহীন সেট (बब्छाटक विशेष कि का कि का निरंठ भारत ?] 'ठिनि मिन्छन बहेबां बाबबान অন্ত সমস্তকে অভিক্রমণ করেন' ইতি। এইরূপ ভগবদৃদ্দীভাতেও বৈরূপোর क्वा चारह ; वरा-'वानिरे द्वीठ ७ वार्ड रक्वक्रन,' 'वानिरे अ वनरहत निका,' 'अष्ट् (भतरवयत) कारांत्रक भाग अर्ग करतम मा' 'नर्सकृरेक ग्रवाम' 'পরুলার পুৰপ ভাবাপর বস্তনিচরেও তিনি অবিভক্ত একরণ' 'ভিনিই निवृक्त नकनरक श्रीन कवित्रा शास्क्रम अवः समाहेवा शास्त्रमं, अवश्विष

ज्ञा क्रांक्य क्रांब्य क्र्या । পরিসবাধা বন্ধবিভাগ্রহবাসাবনভূতা, বাং বৈজেরী পূটপতী গুর্তারবৃ—"বাবের ভগবানস্ত্রসাবনং বেল. তাবে বে ক্রাহি" ইতি; তথা বন্ধবিভারাঃ বতার্বেরমাঝারিকা নানীতা। তথা নাঝারিকারাঃ সক্ষেপভাহর্বব্রকালমার্বাবেতো ব্য়ে তব্তঃ। এবং হি বন্ধ-বান্ধবাভায়াং বতর্বাবস্তর-সর্ব্যাধ্যাবিসাবনবং বন্ধবিভারাঃ প্রকটিক্তং রাজবার্সস্থানীতং ভব্তি—বর্বা নাবিতা উভন্ শার্মরং তারোহপ্রবৃত্তীতি, তথা। ১

অপি চ এবং বজা ব্ৰথবিভা---বা ইজরাজ-ছজিতা, সা ছুপ্রাপ্যা হেবৈরপি;
ব্যাহবিভায়িপি কেবভিবপ্তাবিজ্ঞভিতা বিভা বহতারাদেন প্রাপ্তাঃ

ভাষাত শিরশিহয়াখাং শিরঃ প্রতিসদ্ধার তাখিরিজেণ ছিরে পুনঃ বাশির এব প্রতিস্থার, তেন ভাষাত খশিরনৈবোক্তা খলেবরখনিতা প্রতা; ভাষাত্তঃ পরতরং কিকিৎ পুরুষার্থনাধনং ন তৃতং ন তাবি বা, কৃত এব বর্তনান বিভি নাতঃ পরা খতিরভি। ২

শৃপি চৈবং ভূরতে একবিছা—নর্মপুরুবার্থানাং কর্ম হি সাবস্থিতি লোকে প্রসিত্তব্য ভক্ত কর্ম বিভ্নাধ্যম, তেনাশাপি নাতি অনুভবক্ত। তবিছ-বন্ধুতবং কেবলুরাম্বভিদ্ধ। কর্ম-নিরপেক্স প্রাণ্যতে; বলাৎ কর্মপ্রকরণে বক্তুং প্রাঞ্জাপি সভী প্রবর্গ প্রকরণে কর্মপ্রকরণাম্বীর্য করণা বিরুদ্ধাৎ ক্রেলসম্যাসসহিতাভিহিতা অনুভবসাধনায়; তুলামাজ্য পরং পুরুষার্থসাধন-বৃদ্ধি। ৩

শশিচিবং শ্বভা ব্ৰহ্মবিভা,—'সর্কো হি লোকো ঘলারানঃ, "স বৈ নৈব রেমে, তথাছেকাকী ন রমতে" ইতি প্রতেঃ। বাজবংখ্যা লোকসাধারণা।পি সন্ আয়ুজ্ঞানবলাথ ভাষ্যাপুত্রবিভাগিসংসারেরতিং পরিভাগা প্রজানত্ত্ব আয়ু-রতিকভূব। শ্বপি চ এবং গুঁতা ব্রশ্বিভা,—যথাগ্ যাজবংখ্যান সংসার্থাণা-মুজিউতাপি ব্রিরাটর ভাষ্যারৈ শ্রীতার্থবেবাভিহিতা, প্রিবং ভাষ্যে এভাগ্র ইতি বিভাগ। ৪

চীকা। ত্ৰংকোৰিবাত্যাৰ্থং বিৰয়েশেকা বৃত্তঃ তাওঁবলি —প্ৰান্তিয়াই প্ৰতি কথবিকা পৰিবাৰা তেও তিব্ৰুত্বনাহে কোলতাৰ—এডজা ইন্ডি। ইবনিতি প্ৰবৰ্ণা প্ৰকাশবাদাবাহিতাং প্ৰান্ত্ৰপতি। আনীতেবং বৈ তথবিক্যাহিনা ভাতংগনৈতি পেবং। তবেকপৃথিভিত্যাকেভাংশকাৰা—জ্বন্ধা ইন্ডি। তবাং নহে গানিহেকো বছা। আৰক্ষ প্ৰায়েভাটিনশনা। ব্যৱাজগান্ধাং বভাবাবদীকা কথবিকালা ভতংগ কিং নিৰাকীংগাল্ডাৰ—একং ইন্ডি। তথা বৃত্তিবাৰককং দুইাজেন স্কুইবলি—অহুপ্ৰিক্তি।

ক্ষেত্র ক্ষে

बनावावरक वर्षाविष्वावाः प्रतिः वर्षविष्य-प्रतिः (१०१८ः व्यवपादाः व्यक्त्यावरक विद्याप्तिः व्यक्तिः व्यक्तिः व्यक्तिः विद्यक्तिः विद्याप्तिः व्यक्तिः व्यक्तिः विद्यक्तिः विद्यकितः विद्यक्तिः विद्यक्तिः विद्यक्तिः विद्यकितिः विद्यकितिः विद्यकितिः विद्यक

আ ভাল ভালা শুবাদে। বৈত্রেরী 'বারব বে চরবান্ বর্তর সাগনং বেল, তদের বে এবি' ইতালি বাকো বীর পতি বাজবভাকে খালা কিলাল করিবাছিলেন মৃতিলাতের উপারভূত সেই একবিয়ার প্রান্ধ এবানেই পরিস্থার হইল। এই একবিয়ার প্রশংসার্থই উক্ত আবাছিকাটির এবানে অবতারল করা কইবাছে। সেই আবাছিকাতে বে সময় তর বিশ্বততাবে বর্ণিত ভইরাছে, সংক্ষেপতঃ সেই ব্রহত-প্রকাশনার্থ পরবর্তী ছইটি বর প্রবৃত্ত হইরাছে; কারণ, তর্বা উলিত হইবায়ান্ত বেষন নৈশ ত্যোরাশি নিংশেষে অপনীত করে, তেমনি বংগক্ত মন্ত প্রান্ধ বাকা হারা (১) প্রশংশিত হওবার, কলিত প্রক্ষবিস্থাবে অমৃতর-সাবন্ধ ও স্থান্তর প্রান্ধি-কেন্ড মতার পরিক্ষাই ছইবে ১

শণিত তেতিতে বে, পথা তেবরতে ইন্দ্র, বে ব্রন্ধবিদ্যার বিশেষ প্রশংসা সংখিত তইতেতে বে, পথা তেবরতে ইন্দ্র, বে ব্রন্ধবিদ্যাকে গোপনে ব্রন্ধা কার্যাছিলেন, তাহা দেবগণেরও চুলিত , কন না, দেব-তিবক অধিনীকুষারও ইন্দ্রবিদ্যা এই ব্রন্ধবিদ্যা বিশেষ চেইছে লাভ করিছাছিলেন : অধিনীকুষার প্রশন্ত কিলাত) ব্রান্ধণেরই নগাড় আবর্জন করিছা বিরন্ধেনন করিছা, তাহাতে অথনির সংযোজিত করিছা বিধাছিলেন। [বনি সেই অথনুধে এই ব্রন্ধবিদ্যা উপদেশ করিতে প্রবৃদ্ধ ইলৈ পর,] ইন্দ্র আদিলা তাহার সেই অথনির কর্তন করিছা কেলিলেন; তবন অধিনীকুষার বনির নির্দ্ধক পুনা ধণাবধভাবে সংযোজিত করিছা ছিলেন; তাহার পর সেই প্রান্ধণ বিদ্যা সংগ্রান্ধত করিছা বিল্লেন; তাহার পর সেই প্রান্ধণ বিদ্যা স্থাবিদ্যা বিল্লেন; তাহারাও ব্যান্ধণ তাবে সই প্রন্ধবিদ্যা প্রন্ধবিদ্যা বিল্লেন; তাহারাও ব্যান্ধণ তাবে সই প্রন্ধবিদ্যা প্রন্ধ করিলেন—বহুপোলা উৎক্রেডর মৃক্তিন্যাবন আর

⁽⁾ छारणशं - वर्षे अण्डर अफरिका अण्डल पक्षण प्रकृत परिष्ठ अण्डलाखक, प्रार्थ लावनी इस्के २० ७ २० अण्ड वर्षेट्रक व्याप्तक । आधार रव विष्य वर्षिक क्या व्याप्तक छाजाव नवर्षय कृतवा धावनाक ; अहेळण व्याप्तकारणाक विषयवत्व आधानकाच वाद्य मध्येय वर्षा भावनाक ; अहेळण नवर्षय द्वारा क्याप्तक विषयक वर्षा वादक । छाज्ञ व्याप्तक वर्षा वादक व्याप्तक वर्षा वादक है प्रार्थिक वर्षा वादक है प्रार्थिक वर्षा वादक व्याप्तक वर्षा वादक वर व्याप वादक वर्षा वादक वर्षा वादक वर व्याप वादक वर व्याप वा

किहू हिन ना, दर्प ना अवः वर्षवास्य : ठाहात नष्टवरे मारे, रेहा भारतका भार भविक प्रक्रिक भारत १ २

পকাছরে, এই রপেও ব্রছবিদ্যা প্রশংসিত হইতেছে যে, কর্মই সর্কবিধ
পূর্বার্থের (ধর্ম, অর্থ, কাম ও বোজের) প্রাপ্তি-সাধন বলিয়া অগতে প্রসিদ্ধ ;
যেই ধর্ম হইতেছে বিভিনাধ্য ; অধত বিভ ধারা কর্মনও সেই অনুভৱনাতের
আনা নাই ; পভাছরে কর্মনিরপেক্ষ এক্যাত্র আছবিদ্যা (ব্রছবিদ্যা)
বারাই বর্ষোক্ত অনুভৱ ব) বৃক্তিলাত করিতে পারা বার । বিশেষতা বেছেড়
কর্মনির্থার ক্যান্ত বলিতে পারা বাইত, কিন্তু কর্মের সহিত
ব্রছবিদ্যা নিতান্ত বিক্তা : সেই জন্মই কর্মনির্ধান অভিক্রম করিয়া
অনুভৱ লাভের ভক্ত পূর্ক্তাবে ওছ স্ব্লাদের সহিত প্রছবিদ্যা নিরপন
করা হইবাছে: ইয়া হইভেও বুঝা বাইতেছে যে, প্রছবিদ্যা অপেক।
পূরুষার্থনিদ্যির আর উৎকর্ম উপার নাই । [ইয়াও প্রছবিদ্যা-প্রশংসার অপর

প্রকারখনেও প্রকৃষিত প্রকৃতিছে—অগতের লোকসান্তই থকার লগতে বিশ্বন করিছে লগতে প্রবৃত্তি হইবা থাকে; 'আদি পূরুষ কিছুতেই প্রীতি লাভ করিতে পারিলেন না.' 'সেইজ্ঞ এখনও লোকে একাকী রাত্ত অন্ধুতন করে না' এই প্রতিবাকাও এবিদঃর প্রধাণ । বাজন্যা, খনি সাবারণ সংসারী হইরাও একসার আদ্ধ-জানের প্রকাবে ভাগাপুরাধিষর সংসারের আসজি পরিভাগে করিরা, আদ্ধ-জানে তুর ও আদ্বর্যতি হইয়ছিলেন। ভারার পর এইপ্রবেও প্রথমিবার হতি করা হইল বে, বাজন্যা পরিস্কৃষা ভারার পূর্ব ত্রিসাধনের করু এই প্রথমিবার উপলেশ দিয়াভেন করিবা, তারার পূর্ব ত্রিসাধনের করু এই প্রথমিবার উপলেশ দিয়াভেন করারণ, তারার নিজের উল্লেভেই আছে — 'মৈনেরি, রূমি প্রিয় করা বলিতেই; এস, নিকটে উপলেশন কর' ইভি. [পোনে প্রিয়জনকে উল্লেখ করাই দিয়া বাকে; বাজন্যা নিজের প্রিয়ত্বা ভার্যাকে প্রথমিবালা করার বুলা বাইতেছে বে, এই প্রথমিবালা করা ভিত্ত আর পর্যপ্রমার্থ-নাবন; প্রভর্যা ইয়াও প্রথমিবালার প্রশাস্থান করার ভ্রায় বাব বিদ্বাহ প্রথমিবালার প্রথমিবালার করার ভিত্ত আর বিদ্বাহ প্রথমিবালার হার্যা বিদ্বাহ প্রথমিবালার প্রথমিবালার করার ভিত্ত আর বিদ্বাহ প্রথমিবালার প্রথমিবালার করার ভিত্ত আর বিদ্বাহ প্রথমিবালার প্রথমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার প্রথমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার প্রথমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার প্রথমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার প্রথমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার প্রথমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার প্রথমিবালার করার বিদ্বাহিন করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার করার বিদ্বাহিন করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার করার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবালার বিদ্বাহিন স্বর্থমিবাল

देशर देव चन्त्रम् वयाध्वावकारनाव्यकामुनाव । चरमखवृतिः

शश्चाद्यां र व्यावस्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

ज्ञास्त्राव्याः । इतानीः वर्षाक्रववृतिकाताः क्रजावित्रवावात्रिकाछिवीवर्ष्ठ "हेवर -देव" हेठि । ववाक् व्यावर्त्तनः (ठ्रहायकः विद्यः) छ०
पूर्व्साक्तः) हेवर देव (क्षत्रिक्तः) ववू , ववूनिकारः , व्यक्ति। क्षत्रिः । व्यक्ति।
ह्याव-मायकाछाः रववित्वन् छापः) छेवाः (क्रज्ञवान्) । विद्यः (व्यक्तः ।
छ० अछ० विर्याणस्यक्तनः कर्षः) भक्तम् (कानन्) व्यक्ताः । तृत्यतः (वनावः
द्याक्रक्ताः व्यक्तिः (नवाकः (नवाकः वित्तः) वारः वृत्यतः) तृत्यतः (वनावः
द्याक्रक्ताः व्यक्तिः , छेअर (क्रृतः छ० : वनावृत्तः वरः छवावाः
कर्षः छक्तः (द्यवः , वृत्तिः (वावित्ववनः न हेवः वाविकृत्याति (क्षत्रावः वरः छक्तः (वाविक्तः वरः हेवः वाविकृत्याति (क्षत्रावः वरः कर्षः (वाविक्तः वरः वर्षः) । [किरः क्षर्वाणवित्रातः ।
वर्षः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वर्षः वरः । वरः (वृत्राखाः)
वर्षः वर्ष्वविद्याः । (क्षावाः । वरः वरः वरः । वरः वरः हिष्ठः वर्षः । । ।

আ লাশ আ দ। এই মধুবিদা দখাই নামক আখনন প্রথি আখিনাকুমারবয়কে বলিয়াছিলেন; মল্লক্ষী অ'ব ডাহা জানিডে পারিয়া অখিনীকুমারবে বলিলেন,—হে নরাকার অখিনীকুমারবন্ধ, ডোমরা বে, লাজের জনা এইরূপ (ক্ষিব শিরশ্ভেষরূপ) নৃশংস কর্ম কবিয়াঃ; মেদ বেরূপ পর্জনাদি বারা বারিব্যাণ সূচনা করিয়া দেয়, ডাহাপ আমিও বলিয়া দিব বে, ব্যাত্ কবি অখিশির বারা ডোমা-বিশকে এই গোপনীয় মধুবিদা বলিয়াছেন ১০৬ ই ১৬ ৪

भ्या आ व्याचिक्तः क्षेत्रकारकः। वर्षत्रः वर्षावी व्याचारिक्कारवाहायः का पूत्रः मा व्याचारिकाः वेकुछारक--देशविक व्यवकरितिकेर वागरिविक, पूर्वा महिक्किकाकः। देव-वकः वर्षावीः । विक्रिणाचारिकानिवृक्तिः अकर्षावराधि-विक्रम गर्शाकः देव-गर्थम वार्षाद्विक वागरिविक। वर कर अवक्षाअक्यान गरिककः, म व्याविक्रकः वर्, अविवरः वर् देशासकाः विकिदेव---देशः गरिवो- गारिया। स्वरं कतं अक्तवास्टरः रहिकः--वश्रुः र वा बालावावर्याः वर्षं मात्र जाक्ववृत्राहः। >

তবেশরাঃ প্রিয়ং বাম তবেবৈনরায়েতনোপগছতি। সৃহোবাচ ইপ্রেণ বা উজাংখি—এতচেনতবৈ অভ্যন্তরাঃ, তত এব তে নিরন্ধিলাবিতি। তথাই বিভেষি; বহৈ বে স নিরো ন শিল্যাৎ, তবামুণনেতে ইতি। তথাই বিভেষি; বহৈ বে স নিরো ন শিল্যাৎ, তবামুণনেতে ইতি। তথাই বাজানুগাই বা তথাই প্রাক্তাবহু ইতি। কথা বা আন্তবে পুইতি; ববা নার্থনেত্রে, অব তে নিরন্ধিলা অভ্যান্ত্রাপনিবালাবঃ; অবাবল নির্মান্ত্রাপনি বাজান্ত্রা ততে প্রতিবালাবঃ; তেন নার্থকাসি। স ববা নার্থকাসি, অব তে তবিল্লঃ নিরন্ধেহতাত; অব তে বনির আন্তন্ত্রাত্ত ততে প্রতিবালাব ইতি। তবেতি তৌ হোপনিতে; তৌ বলোপনিতে, অবাল্য নিরন্ধিলাত্রাপনিবর্ত্তঃ; অবাল্য করিছিলাত্রাপনিবর্ত্তঃ; অবাল্য তিলিলা বিলিল্লের বাল্যাবন্বাচ অবাল্য তবিলঃ নিরন্ডিছের; অবাল্য বং নির আন্তন্ত্রাত্রালাব্রাক্রালাক্ত্রাত্রাক্রালিকিতিবিলা, সেই স্বতার্বা প্রস্নাত্র—ইকং বৈ তক্ষর্য করাজ্যান্ত্রাকর্নের প্রপ্রকানিকাল্যান্ত্রাচ। ২

তদেতভূষিঃ—তদেতৎ কর্ম ধ্বিং মন্ত্রং, পর্ম উপলত্যানঃ, অবোচত্ত্রুয়ান্।
করন্থ তদংস ইতি বাষ্থিণেন সম্বন্ধঃ। দংস ইতি কর্মণো নামধেরন্ধ; তচ্চ
দংসঃ কিংবিশিন্তন্ধ উপ্রং ক্রুরন্ধ; বাং ব্রুররাঃ; হে নরা নরাকারে।
অবিনোঁ। ওচ্চ কর্ম কিরিমিন্তন্ধ সন্ধে লাভার; লাভপুরো হি লোকেংপি
ক্রুরং কর্ম আচরতি, তবৈব এভাবুপলভোতে, যথা লোকে। তৎ আবিঃ
ক্রেলাপং ক্রোমি করোমি, বন্ধ রহিন ভবরাাং কুওন্। কিনিবেভাচাতে—
ভক্তত্ব পর্যান্তর, ন ইব, নকারক পরিপ্রান্থপচারঃ, উপনাবীয়ো বেলে, ন
প্রভিবেশ্বর্যি; বর্ণাবং ন— স্বাধিবৈতি বর্ষং; তক্তত্বিব রুষ্টিং—বর্ধা পর্যান্তরা
বৃষ্টিং প্রকাশরতি ক্রমির্ন্তি দিশবৈদ্য, তর্মধ্যং মুব্রোঃ ক্রুরং কর্ম আবিদ্বরোধি
ইতি সম্বন্ধ। ৩

नम् विस्ताः बछार्यो क्यांतरो यक्तो छाठाम् निवानहर्तो हि इर्यो १ देवर श्राच्छ ; बिछर्यदेवरा न निव्यानहर्त्तो । रचावीवृत्तमगाञ्ज्जूतः कृत्र कृत्रित्वाः पूरतामं श्राच ह दीत्रक देकि ; न हाक्य किविद्यारक अरबि बछार्यरको क्यांका । निव्यार अन्तरमार दि स्मोकिकाः नदक्षि ; क्या अन्तरमाञ्चना । निव्या লোকে অসিদা। পৰ্য নাৰাৰৰ্ষণঃ—ৰ ইতি অনৰ্যকো নিপান্তঃ; ৰং বৰ্ কল্যবাদ্বভাৰণকপুৰ, আৱৰ্ষণো বাং ব্ৰাভাৰণত উচ্চ নিৱসা এ বং ইক্ উবাচ—ৰং প্ৰোৰাচ বধু। উত্—ইতি অনৰ্যকো নিপাতঃ ৪২০৬৮৬৪

্রীক্রা—বাবাংহিকারঃ শুভার্বতঃ প্রভিশান্ত যুশ্তরযুদ্ধাকাকসাপূর্বকং ভাষরভার্যর বাকরেছি—ক্ষত্রেক্তাপৃথিকা দ সক্ষিত্র সভার্যর । পর্বার্থকা বাক্রিভারিক বাক্রিভারিক বাক্রিভারিক বাক্রিভারিক বাক্ষান্ত বাক্রিভারিক বাক

ক্ষে কাহবেনোবাহেডাপেডাবার—স্ক্রেন্সেরারিছি। এববোরবিনাভরর বিডাশাস্থানীন্তবান্তানাং প্রাথিতে। প্রাথানান্তবার্থানা কর্মনাং বর্মানিতেও প্রাথানার প্রাথানাং প্রাথানার প

বিভালতিবাল তথলাবিনানর ন পুলেরে কিং ভূ ব্রক্তারিশ্বন বিজ্ঞান্ত ।
তথা চাবাছিল। বিভালতার্থিতাপুত্রিত প্ততে—নাল্লিন্ত । আবাংবিকাল বিভালতার্থ-বিভালতিব পরিবর্গত —ইন্সা ইন্ডি । বোৰমান্ত্রনি ব হারত ইতি বসাক্তবাতিকালতার করেওা: অভিয়েখন বিভালতেবি বোলনা । বঙলি ব্যক্তবাতিকালবিনা ন ভূইবানি-পুরাপ্ট্রানিং ভাবেবভালের হৈব্তিকভালেনাহ—ন স্ক্রেডি । করং পুরবিশালাং পুরবালায়ে তিওিলাতে, তরাহ—নি-ন্যাইন্ডি । ব হি বিজ্ঞা বিজ্ঞান ভূ বিবেশ বেল্লিন্ডি ভালাবিভারি । ববা বিজ্ঞান ব বিজ্ঞানিত্রকার ভালাবিভারি ভালাবিভারি । ববা বিজ্ঞান ব বিজ্ঞানিত্রকার ভালাবিভারি ভালাবিভারি । ববা বিজ্ঞান ব বিজ্ঞানিত্রকার ভালাবিভারি ভালাবিভারি ।

क्वाविकारिकाक पूर्वाकेः वाचाक्षणाविकावाः स्वश्चित्वाकः कावृत्वास्त्रकः वाक्टहे-मध्यकः महिम्नकः । १९ क्काः स्वावाः वर् स्थावर्त्तः। पूरासावक विका (वावाः । वस्ताः) वर्षु वृत्रासाव्यक्षवाक्षण्यकाविक्रतावीक वयकः ॥ २००॥ २०॥

ভাজ্যাল্ বাদে। পূর্বেই বলিয়াছি বে, এই খাণ্যায়িকাটি
বধুবিদ্যার প্রশংসার্থ প্রস্তুত হইরাছে। সেই খাখ্যায়িকাটি কি, তাহা এবন
বলা হইতেছে—প্রতির 'ইদং' শক্ষটি খাব্যবহিত পূর্বোক্ত বিবরের নির্দেশ
করিতেছে; কারণ তাহাই বুছিছ; 'বৈ' শক্ষটি খারণার্থক; অর্থাৎ অন্তপ্রকরণাক্ত দূরবর্তী বে বিষয়টি খতম খাখ্যায়িকাম বলিত হইয়াছে,
এখানে 'বৈ' শব্দে তাহাই খারণ করাইরা কেওলা হইতেছে। প্রবর্গাপ্রকরণে বে বধু কেবল ফচিত্যাত্র হইয়াছে—শ্লেই কথায় অভিহিত ধর নাই,
খাব্যবহিত পূর্বোক্ত মধুরাজণে তাহাই 'ইরং পৃথিবী' ইত্যাথিবাক্তা
বিশাইরণে কবিত হইয়াছে। সেই প্রবর্গাপ্রকরণেই বা এই মধুবিদ্যা
বিজ্ঞাপিত হইরাছে কিঞ্পে, অর্থাৎ পরাত্র আধরণ থবি কি কারণে খবিনীকুষার্থরকে এই মধুরাজণ থবাৎ মধুবিদ্যা বলিয়াছিলেন, [ভাহা বলা
হইতেছে—]। >

এই বধুরাত্বণ অবিনীক্ষার্থনের বড়ই প্রির: দথাও আগর্কণ থবি ব্জারাণ প্রণানীতে তাহাদিগকে সেই বিদ্যা দান করিবার জন্য স্থীপে উপন্থিত হইলেন : [এবং তাহাদের প্রার্থনা গুনিরা] বলিলেন দেবরাজ ইল্ল আমাকে আদেশ করিরাছেন যে, আপনি যদি এই বিদ্যা অপর কাহাজেও প্রদান করেন, তাহা হইলে আমি নিক্রই আপনার শিরক্ষেদন করিব; সেই কারণে আমি তীত হইতেভি; তি ন যদি আমার শিরক্ষেদন না করেন, তাহা হইলে, আমি তোমানিগকে উপদেশ দিতে পারি, [এ কথা গুনিয়া] অবিনীক্ষার্থর বলিলেন—আমরা আপনাকে ইজের নিকট হইতে রক্ষা করিব; [ঝমি জিলাসা করিলেন,] কিরপে রক্ষা করিবেণ [গ্রাহারা বলিলেন,] আপনি বে সময় আমাদিগকে উপদেশ দিবেন, সে সময় আমরা আপনার এই মন্তক কর্ত্তন করিবা জন্যত্র রাধিরা দিব, এবং অব্যের মন্তক আনিয়া আপনার গললেশে লাগাইয়া দিব; আপনি সেই অব্যুবে আমাদিগকৈ উপদেশ করিবা। আপনি সেই মুবে যথন আমাদিগকে উপদেশ দিবেন, গুলম করিবা। আপনি সেই মুবে যথন আমাদিগকে উপদেশ দিবেন, গুলম নিজ্যেই ইল্ল আপনায় সেই মন্তক ছেলম করিবা। কেলিবেন; আম্বান্ত গ্রাহার গল আপনায় সেই মন্তক আনিয়া সংযোজিত

ভাররা দিব। [তিনি] তথাত্ব বলিরা ভাষাবিশকে উপবেশ বিভে প্রবৃত্ত হইলেন। ,তিনি নথন ভাষাবিশকে উপবেশ বিভে প্রযুক্ত হইলেন, তথন ভাষারা ইয়ার সক্তিটি ধ্যুদ্ধ করিয়া আছার রাখিরা বিলেন, এবং একটি লখনতাক আনিরা তাহাতে লাগাইরা বিলেন; কবি নেই আখনিরের গাহায়ে ভাষাবিশকে উপবেশ বিলেন। তিনি বথন আখনীকুধারম্বরকে উপবেশ বিভেছিলেন, নেই সমর ইল্ল ভাষার সভক ছেখন করিলেন; ভাষার পর অধিনীকুমারম্বর ভাষার নিভের সভক আনিরা লাগাইরা বিলেন ইতি।>

এট বধুবিদ্যার বতটুকু খংশ প্রবর্গা ক্রিরার খণ্ণ, কেবল ততটুকুই সেবানে কবিত ছটবাছে; কল্প খর্বাৎ আত্মজানাত্মক বধুর ক্রা কিছুই বলা হর নাট ৷ [বুলিতে চইবে বে.]সেবানে বে আব্যারিক প্রকর হইরাছে, এব'নে কেবল বধুবিদ্যার প্রবংসার্থ ই ভাহার উল্লেখ করিছা আনান হইতেছে বে, দধ্যত্ আবর্জন ববি এইরূপ প্রশালীতে এই বধুবিদ্যা অবিনাকুবার্থয়কে ধলিয়াছিলেন। ২

"ত্ৰেত্ৰ থবিঃ" াত্ৰ এত্ৰং অৰ্থ —উল্লিখিত কাৰ্যা; এবানে থৰি অৰ্থ মন্ত্ৰ; মন্ত্ৰন্তী থনি অধিনীকুষার্থন্তকৰ্তৃক অন্তন্তীত এই কৰ্ম ধৰ্ণন করত - অক্তব করিয়া বনিরাছিলেন। কি প্রকার গুণিংস' লখ্টি কর্মেন্ত সংক্ষা; এবং বাবহিত কর্মের সহিত ইহার সক্ষা। সেই 'দংস' কার্যাটি কি প্রকান্ত গুনা, উপ্ত—ক্ষুর অর্থাৎ অত্যন্ত হিংসান্তক; সেই কর্মেন্ত কি গু উক্তেপ্ত-লান্ত; লোকে লান্তের প্রত্যালার অতি গহিত ক্যাও করিয়া থাকে; ইহান্তের ছুই-অনকেও ঠিক সেই ত্রপই বেখিতেছি। যে নর অর্থাৎ বন্ধ্রান্ততি অধিনীকুষার্থর, তোমান্তের অনুন্তিত এই নুলংসকর্ম আমি প্রকাশ করিয়া লিতেছি; কার্যার নাান,—তোর্থরা প্রস্থাননে যে কার্য্যের অন্তন্তান করিয়াছ, যেন ব্যেমন গর্জনাদি হারা অধিজ্ঞাক রক্তির সংবাদ প্রকাশ করিয়া ক্যে, তেখনি আগব তোমান্তের সেই গোপনে অন্তন্তিত ক্ষুর কর্ম্যের কথা প্রকাশ করিয়া দিতেছি। প্রতির 'ন' প্রকৃতি 'ইব' ছানীয় (সান্ধ্যার্থক); যেনন 'অন্তা ন' বলিলে অন্তন্ত্রণা, ক্রমণ। এত

णान, विकास करि, धरे यह इरेडि जरिनीक्षारवत अन्तरमाप्तक रहेन किहार ? यहर निकार्यक यनिवारेण यहन रहेरणह ? मा,—अ जाशिक हरेरण शाहर मा; जावन, धरे इरेडि यह चणिषाक्षके यहि,—निकारायक महर ; (यारक् अवारम वना बहेबारक् रा. केव्न क्रम क्रिसाक रक्षायक केक्टरम अविक्र मार्थ : म्हन मार्थ : म्हन मार्थ : महि मार्थ : क्रम मार्थ : महि : महि मार्थ : महि :

ইদং বৈ তন্মধু দধাঙ্ঙাধন্ধ গৈছিলভাগ্ৰাচ। তদেভদ্বি: পশুরবোচং। নাথন্ধ গারাখিনে দধীচেছ্যাত্দির: প্রত্যৈরগতম্। স বাং মধু প্রবোচদৃভাবন্দান্ত্রং যদ্মাব্দি কক্ষ্যং বামিতি ৪১০০৪১৭৪

ज्ञानाथः। चित्रार्थ भूनवंश नवावत्रवृहारु--- देव हेनानि। स्वाड् वाधर्माः निम् क्वां] हेनः वधु [बाख्यानः] चित्रिधान् हेनाह। स्वाः । यदः) ठ० अठ० (चित्रीकृषात्रकः कर्षः) श्रवत् (हेश्यानः मन्) व्यादाह० (चित्रीकृषात्रकः कर्षः) श्रवत् (हेश्यानः मन्) व्यादाह० (चित्रीकृषात्रकः निमः)--- दः चित्रितः, [वृदाः] व्याद्मंगाः (व्यव्याद्मं विद्यादः व्यादः) व्यादः (व्यादः व्यादः) व्यादः (व्यादः व्यादः) व्यादः (व्यावादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः (व्यावादः) व्यादः (व्यावादः (व्यावादः) व्यादः) व्यादः (व्यावादः (व्यावादः) व्यादः (व्यादः) व्यादः (व

ক্লাকুবাদে।—গগঙ্ খাধৰণ কৰি এই মধ্বিতা লখিনীক্লাক্ষ্যকে বলিয়াছিলেন। শবং সম্ভৱশী কৰি অশিনীকৃষ্যকৈ ভথাবিধ
নৃশংস্ কৰ্ম ধৰ্মন করিয়া বলিয়াছিলেন—হে অধিনীকৃষ্যকেয়, ভোষয়া
আধর্ষণ ক্ষাত্ ক্ষিয় অভ অবলির সংবোজিত করিয়া দিয়াছ: হে
ক্মা (অধিনীকৃষ্যর), তিনি শীয় অধীকার প্রতিপালনের অধ্য,

ভোনরা অবোগ্য হইগেও ভোনাখিগকে গোগনীয় আবিভাগ্যকী মধু-বিখ্যা উপলেশ- বিয়াছেন। [ইবা আমি প্রকাশ করিয়া বিব] ৪ ১৩৭ ৪ ১৭ ৪

न्या व्यक्त का का व्यक्त । हेरः दे क्या है का वि नृत्यंतर व्यावस्थानं-नार्यम् । क्या व्यक्त व्यक्ताद्याचात्रिकायक्षम् वि च । व्यवस्थः व्यक्तं मान्य-च-व्यावस्थारका विकास-विकास विविद्याः व्यक्तं । क्षेत्र व्यक्ति व्यवस्थार--- । दे व्यक्तिविक्ति व्यक्ता व्यक्तम् । >

শবাৰ্ শবত বৰ্তং নিৱঃ, আন্ধণত নিৱনি ছিল্লে শবত নিৱনিছবা—বিপুশ-বভি কুলং কৰ্ম ক্যা শবাং নিৱো আন্ধাং প্ৰভি উন্নতং প্ৰতিবতো বুৰাষ্। স চ শাৰ্মনো বাং বুৰাভ্যাং ভন্মধু প্ৰবোচৎ, বং পূৰ্মং প্ৰতিভাভং—বন্ধ্যা-বীতি। স কিম্বনিষং শীবিতসন্দেহ্যাক্ত প্ৰবোচনিভ্যচাতে—গভাৱন্—বং পূৰ্মং প্ৰতিভাভং সভাং, ভং পরিপালনিভ্যিক্ট্ ; শীবিতাদপি হি সভা-ধৰ্মপরিপালনা গুক্তরেত্যেতভ নিজ্যেতং। ২

किर उन्तर् अरवाविष्ण्वाद्यात्र—वाह्नेष् ; वही व्यक्तिः, उन्न नवि—वज्ञन्न विविद्याः वहीरुवरः ; उद्यक्तिन्वानार्यः अवर्ताः क्ष्मं वहारुवरः ; उद्यक्तिन्वानार्यः अवर्ताः क्ष्मं वहारुवरः विकासः, उद वाह्नेः वस् । त्य वाह्नेः वस् ; (व व्याविधि शवन्नानाम् केन्वविद्याः व्यक्ताः वाह्निः वस् ; (व व्याविधि शवन्नानाम् केन्वविद्याः व्यक्ताः वाह्निः वस् व्यक्तिः वस् व्यक्तिः वस् व्यक्तिः । विष्णः वस् वस् वस्तिः वस् व्यक्तिः वस्तिः वस्तिः । विष्णः वस्तिः वस्तिः । वस्तिः वस्त

্রীক্ষা। সবাধার্থক কিবিভি প্রক্রমতে, করার—মন্ত্রাক্রেরান্ট: পুন্দার্থক মাধ্যক কাংপর্বাহার—ক্সম্প্রান্তি। বিশেষকৃতার কর্মকৃত্র আক্রেরান্টকন্তর বিদ্বাহার কর্মকৃত্রিকর বিদ্বাহার করামন্ত্রিকরি বিভাবঃ। বেকাপ্রকারিনান্তর্পুর্ব কর্মকৃত্রকৃতি পরিস্কার্থকর বিভাবত — ক্সমন্ত্রিকরিত। করার্যাক্রারাক্সকর্মক করাতি—ক্ষ্মীক্রিক্সকৃত্যিক্তি।১—২

- a se a ser a serial de la constanta

कियान्यान्। भूर्यात गांव चावक अवति वव-आर्थवार्य 'देशर देव कर वर्ष देकारि वांका केमिल्डे दरेरक्ट्र । भूर्यात मात्र चमक अवति बहुक भूर्यक्षिक चांचात्रिकावरे सञ्चनद्दम कतिरक्ट्र । चर्चारवरक चावक वि चारक्षम : अरेक्सा चांचर्यन कविरक स्थाव, नार्य विराधिक कहा दरेहारह । रह चित्रमी, अरे मरकाशमी महत्वदेश केकि । >

'ৰাব্য' অৰ্থ--নাবের নিজৰ অর্থাৎ অব্যবহাটী যক্তক; বে অবিনীকুয়ারবর, ভোনরা উভবে বে, গেই আজনের নিরন্ধেবনের পর অবের নির ছেবল করিয়া--এবংবিব এতিলার নুলংসকর্ম করিয়া সেই মধ্যঙ্গ অবিকে অর্থাবির সংবোজিত করিয়াছ; এবং ভিনিও বে, ভোরাছিপকে সেই পূর্বপ্রভিজ্ঞাত বধুবিদ্যা বলিয়াছেন। তিনি বে, এইরপ জীবন-সংশার ছণার উপন্থিত হাইয়াও ঐ বিদ্যা বলিলেন, ভাষার কারণ কি ? কারণ বলা হাইতেছে—'বভারন' অর্থাৎ পূর্বে বে, উপন্থেশ নিবার জন্ধ প্রভিজ্ঞাপূর্বক সন্ত্য করিয়াছিলেন, লেই অলীকৃত সভ্য পরিপালনের জন্য [বলিয়াছিলেন]। সভ্যবন্ধা করা বে, জীবনাপেলাও অধিক ওক্তর, এই ঘটানার ভাষাই হচিত ছইন ৪ ২

छिनि कान वश्त कथा विनाहित्तम , छावा विनाछित्तम—'वाह्नेन' देखि, वहा वर्ष व्यक्ति ; उरमण्डिंठ कर्य—वाह्ने। काम अक मबत वही व्यक्ति व्यक्ति विनादित्तम किताहित्तम, छावात तिहे दित्र विना मरवाबत्तम अक ध्वानी मात्रक कर्यन महि दव ; तिहे अवर्गाकर्यन व्यवक्रम व विकास, छावात्ते मात्र वाह्ने ,वश् ;—यक्त्रवित्र दित्र विना मरवाबावि-विवन्नक विकासक्रक व वाह्ने ,वश् ; जिति छावा विनाहित्तम]। व व्यवक्र वर्षार विवाद विवाद कर्या वर्षार विवाद क्रियं क्रयं क्रियं क्रयं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रिय

क्षेत्रः देव जन्नम् स्थाद् शावस्य गाथिकाश्चाहः। जन्नकृषिः राजस्याहर-पुत्रमहत्या विशवस्य गुत्रमहत्या स्थूमानः। भूका न

विकारमध्याका-नक्ष्यर व्यक्ति ।

भको एका भूतः भूत्रय वारिनांतिक। म या व्यवः भूत्रकः स्वीकः भूष् भूतिनाता त्मात्मम विकासाङ्ग्यः त्मात्मम विकास मरङ्ग्या ।> २-।> ।

व्यक्ताव्याः। भूनवित व्यक्तांद व्यक्तिवृत्ताः — केर दे व्यक्तं दे व्यक्तं दे व्यक्तं दे व्यक्तं विवाहः विव

অনুস্কাদে।—অথবন্ধত পণ্ড্ থবি অধিনীকুমারকে সেই মধুদিলা বলিলাছিলেন; মন্ত্রন্থী থবি ভাষা ধর্ণন করিরা বলিলাছিলেন।—সেই পুরুষ পরমেশর প্রথমে বিপ্রযুক্ত শরীরসমূহ নির্দ্ধান করিরাছিলেন; এবং চড়ুপ্রযুক্ত শরীরসমূহ রচনা করিরাছিলেন; ভিনিই আবার পক্ষী—লিজপরীরাশ্বক হইরা সমস্ত শরীরে প্রবেশ করিরাছিলেন। এই সেই পরমেশর বেক্ডেড়ু সমস্ত শরীরে এবং সমস্ত পুরে—কর্মপুণ্ডরীক্মধ্যে অবস্থান করেন: সেই হেড়ু 'পুরুষ' নামে (অভিহত) হন; কোন বস্তই ইহা খারা অনাজ্যানিত (অব্যাপ্ত) নাই; কোন বস্তই ইহা খারা অনাজ্যানিত (অব্যাপ্ত) নাই; কোন বস্তই ইহা খারা অনাজ্যানিত (অব্যাপ্ত) নাই; কোন বস্তই ইহা খারা অনাজ্যানিত বস্তাপ্তরে ব্যাহিম্মেইছা খারা পরিরাপ্ত এমন কোনও প্রথম্ব নাই, বাহা ভিত্তরেও বাহিম্মেইছা খারা পরিরাপ্ত নয় ৪ ১৬৮ ৪ ১৮ ৪

भाष्क्रकाकाकाका । देश देश कर विविधि वृत्तेवरः। केरणे (वी नक्षो अवर्गानवकाचाविरमाननस्वर्गाकोः) स्टबार अवर्गायचीर्वरवावसावरवावसे नावाविकाक्षाकार व्याकार अकानिकः । अविकार्यसाववाविक विकासकात्रम् । विकास अविकार विकास विका

प्रकारक—भूवः भूवानि नवीवानि—१७ देवनगाव्य-गाव्यनश्विवा—
न श्वान्त्रवाः, नायवाण ज्ञाव्यः गाव्यांगः व्याव्यः प्राचीन् (नाकान् पृदे।
काक व्यव्यान्—विभवः विभावभाष्यकानि व्यव्यावावानि शक्तिवानिः छवा
भूवः नवीवानि काक अपूर्णावः अपूर्णाव्यन्तिकानि शक्तिवानिः भूवः भूवः
खादः, व वेषवः गच्नी निववीवः ज्ञा भूवः नवीवानि भूकः ज्ञाविनविकाकार्यवाव्यः क्विः—म ना ज्ञावः भूकः मुक्तः मर्वाष्ट् भूदं मर्वविद्याः, भूविनवः भूवः
व्याव्यः क्विः भूविनवः मन् भूकः वेष्णाकारः। न कामाराम्यः—ज्ञावन्यः
विकान् ज्ञावाविक्यः, ज्ञान कामाव्यवः। कामाव्यः—ज्ञावन्यः
विकान् । वाव्यः स्वावः मर्वः वावः । कामावः मर्वः मर्वः मर्वः मर्वः मर्वः ।
व्यावः वावः मर्वः मर्वः । वावः मर्वः मर्वः मर्वः मर्वः मर्वः ।
व्यावः वावः मर्वः । वावः मर्वः मर्वः मर्वः मर्वः मर्वः ।
व्यावः वावः मर्वः ।
व्यावः वावः ।
व्यावः ।

নিক্রা। উভয়াভা: বজানাব্যভারপুন চতার্থবং বড়ং বৃথং ভারণি — উন্তেলনিক্রি। আবারিকাবিবেবপথারং বভাগং প্রিংরতি — অম্যোক্রিড়ে। ইন্তর্যাবর
নিক্রি। আবারিকাবিবেবপথারং বভাগং প্রিংরতি — অম্যোক্রিড়ে। ইন্তর্যাবর
নিক্রি ক্রিকাবিতে — অম্জেড়ি। বজাবার্যসভাবির। অং ক্রজ্বাং চ্রেড়ি।
বির্বার্যকর্ত্রণ প্রার্থিবাব্যর বোভাঙে, কিন্তু প্রকর্যবাধীর ক্রান্তর করেনাথ পূর্বাবিত
করিও। পরির্বার্যকর প্রার্থিব বর্ত্রাব্যাং পূরি পেড ইভি বৃথপভাগ পূরিপার নশ্ পূর্বে।
অবভীজুক্রা ক্রান্তরেণ পূর্বেং বৃথপানর — ক্রেরাজিকান করা ক্রান্তর্যাবর্ত্রণ করাব্যাব্রার্থিব ক্রান্তর্যাক্রিভাল করাব্যাব্রার্থিব ক্রান্তর্যাক্রিভাল করিত্রার করাব্যাব্রার্থিত করাব্যাব্রার্থিব ক্রান্তর্যাক্রিভাল করিত্রার করাব্যাব্রার্থিব ক্রান্তর্যার বির্বার্থিক।
নিক্রান্তর্যাক্রির্বার্থিক ক্রান্তর্যার বির্বার্থিক ক্রিক্রার্থিক বির্বার্থিক ক্রান্তর্যার ক্রান্তর্যার বির্বার্থিক ক্রান্তর্যার বির্বার্থিক ক্রান্তর্যার বির্বার্থিক ক্রান্তর্যার বির্বার্থিক ক্রান্তর্যার বির্বার্থিক ক্রান্তর্যার বির্বার্থিক ক্রান্তর্যার বাণ্ডর্যার বাণ্ডর ক্রান্তর্যার বাণ্ডর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর্যার বাণ্ডর ক্রান্তর ক্

कान्यान्यान् ।—"रेशर देव छर त्रव्" रेशावित वावा पूर्ववर ।
पूर्वाक यह रूरे व्यवनी कर्य मण्डिंड जावादिकात छेगमरवात्राचक ;
वर्षार व्यवस पूरे ज्यादि ज्यादिकाहरण विवास केल महत्तर व्यवनी क्यांस्कृष्ट विवास व्यक्तिक रहेशाय, व्यवस व्यवित्रा-व्यक्तिक ज्यादिकाहर व्यवस्था ।
प्राप्त व्यक्तिमा विवास प्रवर्णी द्रेष्टी महा व्यक्ति करिएड रहेर्द । वर्षेत्रमा कार्याद केल्डाम कर्षा रहेर्ड्ड ।

ইজ্ঞপূর্যে কৰিত হইয়াছে বে, আবর্ষণ ববি ভোষাধিণকে গোপনীয়

वपूर्विका। पनिवासमा । त्यारे वपूरे वा किलाकात, अवन कारा का

"पूरुपटक" रेकारि। अवारत 'पूरा' वर्ष परीयनपूर। नावा ररेए धरे प्रविवाक क्वारक पविवाकि क्वानी मनाविक दरेशाहर নেই পরবেশ্ব পরায়ত কাৎকে ব্যায়ত বা প্রকটিত করিতে প্রয়ুভ হইরা धारम कृथाकृषि माक्त्रवृष्ट कृष्टि कतिया, विशव प्रवृष्ट-विशवकृष्ट वक्ष्या ७ गक्नित्रीय मन्द धर्गः क्रक्निय-गक्नित्रीयमन्द निर्वान कविदाहिरमम्। (गरे गरावचारे गयो-निवनतीयवनी (>) रहेश शुक्रवद्धरा (बीवबरन) पून नेतीप्रमृद्ध क्षारम कवित्नम । अन्म 'नृक्ष चारिनर' क्यांड वर्ष क्षकि निर्वार क्षेत्रा विश्वतिक्ष्य-त्रहे वह वाचा नवक भूरत वर्षाय मयस रहार स्वत्रवादा व्यवद्याय करतन वनिता 'भूक्य' नरक चिक्ठि रहेश शास्त्र। हेश शता चनाव्य-चनाव्यक्ति स्नान वय माहे, अबर हेश बाडा कमरवृष्ठ कवीर हेशा बाहाड कछावट खिल्डे मड, अबन काम वह मारे ; कनकथा, वाहित । जहार हेरात बाता शविवाध मन, अञ्चल (कामक वह बनाल नाहे। वृज्ञिल इहेरव (व. त्नहे शहरवरवहे माव-क्रभाषक कार्याकवनकरम् ((कार्याक्षवाचिक्रामः) व्यवस्त ७ वाविस्त विस्ववकारव मर्वाहरु माह्म । "पुरुक्तक" हेलामि बड्डी मरस्मकः मामात्र अक्ष वा बोबलकावरे अलिनायन कविटलक । २०४ । २४।

ইন্ং বৈ তথাধু দথাঙ্ঙাধর্ষণোহখিত্যাধুবাত। তলেতদৃবিঃ পশুগবোতং। রূপং শুলিরপো বছুব তবক রূপং প্রতিচন্দণার। ইল্লো নারাভিঃ পুরুর্গস্কীরতে, বুঁজা হুজ হরবঃ শভা বশেতি। অবং বৈ হরবেঃইবং বৈ দশ চ সহস্রাণি বছুবি

^{(&}gt;) कारनवा—रकाकारक वर्षाव किन सकात—(>) द्रव, (१) एक, ० (०) कावन वर्षाव। काद्वा वाकाविक्षवाक वर्षाव कृत वर्षाव। वर्षाव, पत्, वृद्धि, वर्ष कर्षाक्षिक क वर्ष काद्वाद्विक और महत्वन वरद्वादक वर्षाव कृत्ववर्षाव। पत्र वर्षाद्वक व्यवक वाव—विक वर्षाव। विक्रवृत्वीकरे कीरवह माकार कावनावन। याह विक्रवर्षाव वर्षक वाव— कावनावाद।

ম চ, তবেওণ প্রমাপ্রশানপরবন্তরববাহ্মরার। এম স্বাস্ত্রিভাসুশাসনম্ ৪১৩১৪১৯৪

रेजि विकोद्धरवादि शक्यर खाद्मभ्य ॥२॥ ॥

् व्यक्तानार्थः ।- श्वाक् चावर्तवः देव देवर वश् चविद्याद्वातः । विदः (बहुर) चर अंकर (कर्च) गंडम् चरवांतर,-[नः गंतरवपंतर] सगर सगर (मर्बर एक)[पवित्राणा] अविज्ञणा (उक्कक्षक्षणा) वक्ष ; [कियर्वर नुबा क्या अधिकशक्यमन ; देखांद] पड (नदायबड्ड) वर (वेनाविका क्षिक्रम्भाव (त्नार्क क्ष्यागिवक्र-अक्डेविकृविकार्यः)। हेका (नवरवन्तर, 'हेक्निवरेवन्दर्वा' हेकाच क्रम्ब), मात्राकिः (मायक्रमक्र-विशाधियारेगः, यग्रवनक्रिकिसी) शुक्रक्षणः (त्रवृक्षणः) वेहरव (श्वारक---बाबीशास देखि बाबर ; मधु भड़मार्बस्थ बहुश्वभववामाखि कावः)। जना (बीयक्मावड्डिकमा भवत्ववस्त्र) नडा (नडानि) वन ४ दवसः विवहादवन-मांबनामि देखिनामि) हुकाः (निन्नजनवद्याः) [नवि] देखि । [पाज विकारक्षांच, वाकिरक्षांचा देखियांनार वननक्षर (वाबाव]। [शतरवर्षताय ब्द्रीनार (क्वबानका क्रविद्यार्थबार-'व्यव्' रेजापि ।] व्यतः (भरत्यवेतः) देव (अव) इंडब्रः (देखिन्नानि), जबर देव एन, जदलानि ह, श्रृति जनसानि छ ; [किर बहुमा, 'छ८ अछ८ तथ चशुर्मार (शूर्मार कांत्रवर वता नांचि, छ८ छवादिवन्), जनगद्गर (माखि जनद्राः উद्धितः किकिश वनाः छ० छवादिवन्), व्यवस्थर (व्यक्तस्थर), व्यवस्थ (विद्वारम्गन्, नर्वसः नर्वाय-कविकार्यः); कळ तका पार पाचा (बीवज्ञनः) नर्वाष्ट्रकृः (नर्वर वक অভ্ৰত্নতীতি স্বাহ্তিতঃ স্বাহতবিভাবঃ) ইতি অছুলাসনং (বেলভানা-मुनारान हेकार्यः) । २०० । २० ।

[देखि विकीशांशास्त्र शक्यताचनवाांशां । २ । **८** ।

অ্তাত্মতাদে।—পুনন্চ সেই কথাই বলিডেছেন—গণ্ড পুনিবলৈ কৰি এই নমুবিতা পৰিনীকুনারকে বলিয়াছিলেন। ব্যৱস্থা এবি ইয়া ধর্ণন করিয়া বলিলেন—প্রমেশ্বর প্রভাক বস্তার অপুরূপ ক্ষান্ত্রিকান; অনতে আপনার রূপপ্রকাশনার্থ জীবার নেই সময় রূপ প্রকৃতিত ভইবাতিল। ইয়া (প্রমেশ্বর) সায়া ধারা অর্থাৎ সায়ানয় নাম- রূপ-কবিত অভিযান থারা, অথবা বছবিধ মারাণক্তি-প্রভাবে বছরবেশ প্রতিভাত হইয়া থাকেন। পত ও বলসংখ্যক কর্বাহ ব্যক্তিভেগ্নে বছ-সংখ্যক ইন্সিয়সনূহও ই ছাতে সংবৃক্ত রহিয়াছে। [প্রাক্তি বিশ্লেই এ কথার অর্থ বলিভেছেন—] এই পরবেশ্বরই হরি অর্থাৎ ইন্সিয় এবং তিনিই বল সহত্র বছ ও অন্ত ; এই প্রশ্নের পূর্ব (কারণ) নাই, অপর বা ভিন্ন পদার্থত নাই, অন্তর নাই, এবং বাহিরও নাই ; এই প্রক্রই সর্বাস্থ্যবিভা আছা। ১০০১ ৪১৯ ৪

रेखि विजीवाशास्त्र शक्य खाष्मन । २ । ८ ।

न्या खड़ा छाज्या भा। देवर चलिकाति पूर्ववर । बगर बगर विक हरणा वक् व, बगर अधि बगर अधि अधिकरणा हगावतर वक्रवार्ध्यं, अधिकरणाश्च्रकरणा वा ; वाव्क्यश्चरणा नाकाणिकरको उरम्यश्चरण्या । अव वि शहरवरता नामकरण वाक्कीरणा बगर बगर अधिकरणा वक्ष्य । किवर्षर भूनः अधिकरमाणमनर उरक्ष्यात्रास्त । जन्याप्ता बगर अधिकरणा वक्ष्य । किवर्षर भूनः अधिकरमाणमनर उरक्ष्यात्रस्त । जन्याप्तता बगर अधिकरणा विकाशिकर क्षयः अध्यानवर्षात्र न वाकिरहरू, उना प्रवास्ता निक्रमाविकर क्षयः अकामवर्षात्राः न अधिवारहरू ; वना भूनः कार्या-कर्षाच्या मान-इरण वाक्रस्य जवकः, उनाच क्षरः अधिवारहरू । >

हेकः भरत्यकः वाराणिः श्रकाणिः, नायक्षण्यक्षक-विधाणियारेनकां न पू भरवार्थकः, भूकक्षभ वहवण वेद्यत् भवारक—अकक्षभ अव श्रकायम्यः मन् व्यविद्यक्षणाविदः। क्यार भूतः काद्यार पूका दव देव वाक्षिकः विवद्यक्षणावादः। वि वचाकक दर्यतः दक्षणिकिद्यापि, नका भकानि, वण् क, श्रामित्वक्षणायः भकानि वण व कविदः। क्याकिश्विद्यविद्यवाद्यार कर्वकाणनादेशक व पूकानि कानि, नायक्षणानादः, "भवाकि वानि चाक्षणः व्यवद्यः" देकि दि कार्वरकः। क्यारेक्षयःव विदयस्वदेभवीदरकः, व श्रकाम-वर्षत्रकारम्य चक्षरभवः। र

जनः करि चका गत्रायपताः, चाक दत्रत्र देखानः जारक केत्राय—चनः देन दत्रताः, चत्रः देन वण व गद्यापि पद्दिन वानवानि व, जानिरक्तवानकाः। किः बह्नाः, करवक्त् क्रयः—न चात्राः, चगुक्तः—नाक कात्रनः गुक्तः विकत्र देखि चन्न्त्नं नाजानवर कार्नार विकाद देवानगढन ; नाज काव्यवस्थारण विकाद देवानव्यम् ; क्या यदिवक्ष स विकाद देवानाव्य । किर. भूनकर निवस्यर व्या ? चडावाचा ; क्यारतो ? यः अवागाचा उद्ये आवाच यवा वावा विवाद नर्नाक्यः—नर्नाचना नर्नाक्यवविक नर्नाक्य्विक, अववस्थानवर नर्नाव्यक्यः, अव नर्नाव्यक्यानाम् नर्गाव्यक्यः ; अववस्थानवर । भविन्यक्यकः नाजार्थः । । ।

रेटि विठीताशास नक्ष-जावनकावन् । २ । ० ।

টীকা। থাটাবৰেৰ বাধাৰন্ত ব্যাভংগৰভাৱতি—ইক্ষিড়ি। এতিগৰক্ষে-শোলনিত:। বাং রুপ্যাবিকেং এতি প্রভিন্নপো রূপান্তং প্রতিবিধং ব্যুক্ষেড়িতং এতি-রূপো বৃদ্ধেন্তার বিবক্তিবিভি থোকা। অভ্যাপো বেড়াকং বিরুপোটি—আক্সু:লিড্রা-রিন্না। উত্বৰ্শক্তবালনং ক্ষেতি – ন ক্রীডি:। রূপান্তর্গতে ক্য ব্যং বার্ছি – ক্ষু প্রেইটিড়ি: প্রতিগাপ্নার শায়ান্যগাধিতেবেন তথ একাশ্পানেতার্থ: সংব্যাভিন্নেশেশ্যের চ ক্ষুট্টি—অন্ধি ক্রীজ্যান্যস্থা। ১

वाशिक्षः स्वाधिकि वश्यक्ष्मः नगणनार—प्राश्चाकिति । विशागिरक्ष्म् क्षात्राविकिति । वश्यक्षिकि वश्यक्षिकि वश्यक्षिकि । वश्यक्षिकि वश्यक्षिकि वश्यक्षिकि व्यक्षिकि व्यक्षिकि व्यक्षिकि व्यक्षिकि व्यक्षिकि व्यक्षिकि व्यक्षिकि व्यक्षिकि । वश्यक्षिकि । वश्यकि । वश्यक्षिकि । वश्यक्षिकि । वश्यकि । वश्यक्षिकि । वश्यक्षिकि । वश्यक्षिकि । व

पूरा होति नवस्थानिका नकरक-तक्ष कर्णी कि । सहिकाविवारकान वृति स्थित-स्वर्धाकि । क्योनिकाविकरणायन नविकश कानार नवस्य ३, श्रीक्षणात् रेकस्थितिकार्थः । देकियानरका रस्पृतार-त्यानिक्षण मरस्यकि वाकार्यक्षावानिक विकर सर्वत्य नेपर्यत्य कृषिकायाक्षण करणार वाकायकार्थः वाकरवाकि-विकर स्व इस्ति-कार्याक्ष्यो । न रक्यक्यायकारिकवार्यक्षस्य मनिक्शाणमास्यकः कि मनद्वत्यक्षावान

विजीदहारशांका नक्ष्यः सामनम्।

विकार-श्रम देश्वि । वरवाकारियपूक्तार्वतपरमार-श्रक्तविक्ति । वक्कावरपरिवास गवार परिवारि-शामिकामा श्रीट्राक्ति १३००१३०।

रेषि वृष्याक्षेत्रारणान्यिकस्थानिकामार विकासमारक नककर साकाम् स्टान्स

ভাজ্যাকুআদে ।—'ইবং বৈ তথা,' ইত্যাবির অর্থ পূর্ববং । 'রুপং রূপং প্রতিরূপো বছুব' কবার অর্থ—পূথক, পূথক, প্রত্যেক বছর অন্তরণ রূপ সম্পন্ন হইবাছিলেন। প্রতিরূপই বল, আর অন্তরপই বল, কলকথা, দিতা বাতার বেঙপ পরীরসংস্থান বাকে, তাহার সভান টক তবন্তরপই হইরা থাকে; 'কারণ, চকুলার প্রাণ্ট হইতে বিগবের উৎপত্তি হর না, কিংবা বিপম প্রাণ্ট ইত্তেও চকুলামের উৎপত্তি হর না; এইরপ সেই পরবেশরও নাম ও রূপ প্রকৃতিত করিতে বাইয়া বিভিন্ন পমার্থের অন্তর্মণ হইবাছিলেন। এবন ঠাহার এওপ প্রতিরূপ প্রান্তির উদ্দেশ্ত বলা হইতেছে—এই আছার বন্ধণ-ব্যাপন করাই ঐরপ প্রতিরূপপ্রান্তির উদ্দেশ্য; কারণ, করতে বন্ধি নাম ও রূপ প্রকাশিত বছ বিজ্ঞানম্যন রূপটি করতে পরিজ্ঞাত হইত না। পরত ধ্বনাই কার্য্য-করণভাবরূপে নাম ও রূপ প্রকৃতি হর, তবনই তাহার বন্ধপ জ্ঞানগোচর হইতে পারে। >

इयलाक्ष्यादकाशनिवयः।

अनेराण नारा नना वरेन, जावार नृता नारेरज्यं (त. नवरवर्त ७ वरिन नव-नाग्न रेजियन्त्र नवन्नय विजित्त ; अरे जान्या जनगरत्त्र निविण पणिरु-र्मिन-अरे नवर्त्त्र रे रिवि न रेजिय, अनर रेगरे रून, नज, नव्य, नव् ७ जन्म ; आनिन्तर्त्व जनस्य निवस्त केवरण नव्य जेक वरेन । जियम नि, अरे जनस्य जान्या, अपर जन्म-वेशाय नृत्त्वर्धी कात्रण विज्ञान ना वाकाय रेशा अन्त्र ; रेशाय जनस-जार्था विज्ञान नारे नित्ता रेशा जनम्ब ; रेशाय व्यवक्त —कार्या विज्ञान नारे नित्ता रेशा जनम्ब ; रेशाय व्यवक्त रेशाय व्यवक्त विज्ञा रेशाय व्यवक्त (कांत्र नार्थ नार्थ नार्थ रेशाय विश्वक्त रेशाय वरिष्ट् (कांत्र नशार्थ नार्थ नार्थ रेशाय वरिष्ट् (कांत्र नशार्थ ना वाकाय रेशा जनार्थ नार्था जरें।, त्याचा, नवा ; कियाजार्थ), विज्ञाका (जनस्वक्त कर्मा) अरं नर्माक्क नर्माक्त कर्माक्त नर्माक्त नर्माक्त वर्षाक्त नर्माक्त नर्माक नर्माक वर्ण वर्ष वर्ष वर्षाक्त नर्माक्त नर्माक्त नर्माक वर्ष वर्ष वर्षाक्त नर्माक वर्ष वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक न्त्र वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक न्त्र वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक न्त्र वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त नर्माक न्त्र वर्षाक्त नर्माक वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त नर्माक न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्षाक्त न्त्र वर्य वर्षाक्त न्त्र वर्य वर्य वर्षाक न्त्र वर्य वर्य वर्य वर्

हेकि विकीशशास्त्र भक्षम आकर्तन काकाश्रमाम १२३०।

मर्हर खास्त्रका

অধ কংশ: পোডিবান্তে। গোপবনাদ্গোপবনঃ পোডিবান্তাৎ শোডিবান্তে। গোপবনাদ্গোপবনঃ কোলিকাৎ কোলিকঃ কোন্তি-ভাৎ কোন্তিকঃ শান্তিল্যাৎ শান্তিল্যঃ কোলিকান্ত গোডবান্ত গোডবঃ ৪১৪-৪১৪

ज्यक्काव्यां। चर (चनवरः) सनः (चन्नेकाराहरूदेवज्ञ चार्कार्यक्रमः)[केत्रास्त]; कत्र क्षरवास चार्कारः, गुरुवास्य निकः, चरन-रूरित चरवः त्रवाननायस्य क्षत्रिक्षाः; कस्य गोनक्काः वानकनैविकानवः। अववृक्षत्रवाणि (वाराष् । >8-—>8२ ॥ >—०॥

অ সান্দ্রাদে। অভ্যান বংশ অর্থাৎ গত অধ্যানদরোক্ত বিজ্ঞো-পদেষ্টা আচার্ব্যগণের পারস্পর্কাক্তম কবিত হইতেছে—[ক্রডিতে আচা-র্ব্যের নাম পঞ্চনী বিভক্তি ধারা; আর শিব্যের নাম প্রথমা বিভক্তি ধারা নির্দিক হইরাছে]।

গৌপৰৰ নামক আচাৰ্ব্য হইতে শিকাপ্ৰাপ্ত শিৰোৰ নাম গৌপৰন, এইলপ গৌভিয়াব্য হইতে ক্পান্ত গৌভিয়াব্য, সৌপৰন হইতে ক্ষপন্ত গৌপৰন, কৌশিক হইতে কৌশিক, কৌজিল্য হইতে কৌজিল্য, শাভিল্য হইতে শাভিল্য, এবং কৌশিক ও সৌক্তম হইতে শিকাপ্ৰাপ্ত শিৰোৱ নাম গৌডন ৪১৪-৪১৪

न्ना ब्रह्मान्छान्यान्। वर्षणांनीर त्रविष्ठार्षक स्थूणांकक स्तर बकार्या त्रविष्ठाताः। यद्यकातः वाशात्रार्था वनार्यकः कत्र स्तरं देव स्तरः, वर्षा र्वपूर्वस्यः नर्यतः नर्यता हि किकाकः, क्ष्यतार त्रवृक्ति वृक्तवारकत्रतः स्त्यः वशास्त्रकृष्टेतकावार्यानवन्त्रता स्तरं देशावारकः। कत्र व्यवसायः विक्रः, नक्ष्याक वावार्याः। नवस्त्रके विवाहे, ज्ञावता दिवनावर्षारः, क्ष्यः भवन् भागांनाभवन्भवा नाजि । २९ भूनवर्षः, छविष्णाः पत्रस्, छरेप वाषाः। भवस्युत्व नवः ४ २४०---- २४०४२--- ०

देखि औरमानिक्छनवरम्बानावनिक्र नवनद्दरननविद्यावकारावीक अनक्षककनवरः इरलो वृद्दरावनाकवरको विकीरवाद्यावः

চীকা। বন্ধকাং সংক্ষেত্ৰভাজাং প্ৰতিপান্ধ বংশবান্ধনভাংশগান্ধ — অংশুকি। নহান্ধনভিত্নীক। বিশ্ববিদ্ধান্ধ বিশ্ববিদ্ধান্ধ কৰি না বহালাব্যবেশিক। প্ৰাৰ্থ-আৰ্থিক। বাহান্ধ পাৰীব্যান্তান্ধকাৰ সভাগাণ্যৰ, লগত প্ৰভাৱ-আইনিভিত্নিক। বাহান্ধনালৈ হিছে বংশব্যাৰ্থনাৰ—অনুভিত্নি। বংশবিদ্ধান্ধনাল ভালিকেলাব্যান্ধনালৈ কৰে বিশান্ধনিকালা ভালিকেলাব্যান্ধনালৈ কৰে বিশান্ধনিকালা কৰাৰ্যান্ধনালৈ কৰে বিশান্ধনিকাল কৰাৰ্যান্ধনালৈ কৰে বিশান্ধনিকাল কৰাৰ্যান্ধনালি কৰাৰ বিশান্ধনিকালা কৰাৰ্যান্ধনালি কৰাৰ বিশান্ধনিকালা কৰাৰ্যান্ধনিকালা কৰাৰ বিশান্ধনিকালা কৰাৰ্যান্ধনিকালা কৰাৰ বিশান্ধনিকালা কৰাৰ বিশ্ববিদ্ধানিকালা কৰাৰ বিশ্ববিদ্ধানিকাল

वैकि कृश्याक्तारकाणनिवस्थानीकाशाः विक्रीशानात्रक वर्षः आकाम । ।।।।

क्रान्यां न्यूनां ए । ইहां पर अवन त्यविद्यां अन्तरार्थ अवविद्यां अन्तरार्थ अवविद्यां अन्तरार्थ प्रवासन व्यव्यान व्यान व्यव्यान व्यान व्यव्यान व्यव

^{ं (}১) क्षेत्रवर्ता-वाशाव वर्ष वासीन वैकाशस्त्रांता विकास व्यागमा : वात वन वर्ष विकास व्योगीतिक तकार वाहरित स सामान वेकास वता ।

विकीरमध्याम् - वर्षः वायनम्।

উপরে লার আচার্যক্রম নাই। এবানে বাধাকে দ্রন্ধ বলা বইরাছে, বুর্নিতে বইবে, তিনি নিচ্চা বরজু; বেদবিভা তাহার নিভা প্রভিভাভ; নেই বরজু দ্রবের উভেতে নম্ভার ৪ ১৪০—১৪২ ৪ ১—০ ৪

ইভি বিভীয়াব্যায়ে বৰ্চ প্ৰাক্ষণের ভাষাস্থাক এথানা ইভি বৃহস্থারণাকোশনিবকে বিভীয়াব্যায়ের ভাষাস্থাক সমার্ভ ১২৪

আমিবেশ্যানামিবেশ্য: শান্তিশ্যান্তানিক্সান্তান্তানিক্সান্ত আনভিসান্তানানিন্দ্রান্ত আনভিস্নান্তানানিন্দ্রান্তো সোঁত্যান্ত্রো তম: কৈতবপ্রাচীনযোগ্যান্তান্ত কৈতবপ্রাচীনযোগ্যে পারাশর্যাৎ পারাশর্যো ভারবাজান্তারবাঙ্গে ভারবাজান্ত গোঁতবান্ত গোঁতবো ভারবাজান্তারবান্ত: পারাশর্যাৎ পারাশর্যে। বৈক্ষবাপারনারৈক্ষবা-পারন: কৌশিকারনে: কৌশিকারনি: ১১৪২১২৪

শ্বান্ত্রাদ্য। আগ্নিৰেশ্বনামক আচাৰ্য্য হইতে আগ্নিৰেশ্ব, শাবিদ্যা এ আনভিয়াত হইতে আনভিয়াত, আবার আনভিয়াত হইতে অপর আনভিয়াত, তৃতীয় আনভিয়াত হইতেও অপর আনভিয়াত, গৌতম হইতে গৌতম, কৈতৰ ও প্রাচীনবোগ্য হইতে কৈতৰ ও প্রাচীনবোগ্য, পারাশ্ব্য হইতে পারাশ্ব্য, ভারবান্ধ হইতে ভারবান্ধ, পুনশ্চ পারাশ্ব্য হইতে গোরাশ্ব্য, বৈক্ষবাপাত্বন হইতে কৈত্ববাদ্যান্ধ, কৌশিকারনি হইতে কৌশিকারনি খবি ব্রশ্ববিদ্যা লাভ করিয়া-ছিলেন ৪১৪১৪৪

রতকে লিকাদ্ রতকে লিক: পারাশর্যারণাৎ পারাশর্যারণঃ
পারাশর্যাৎপারাশর্যা কাতৃকণাজ্জাতৃকণ আওরারণাক্ত বাধাকাত্তরারণকৈবিশেকৈবিশিরে পজন্দনেরে পজন্দনিরা হরেরা হরির্জারবাজ্ঞান্তরাক্ত আতেরালার হয়ে বাকেবাজিকে ভিনাতির ভিনাতির আতিবাজিকে আতিবাজিক আতিবাজিক ভাগাং কাপাং কাপা

विवर्णी विकाधिक रिक्षे विकाधिक विकाधि

देखि विजीवांगारः वर्षः खाषान् ॥२।०॥
देखि द्रव्याद्रगरकाशनिवनि विजीस्तिश्वादः ।
खाषान्मस्यन कृष्ट्रविश्यादः गमासः ॥ ॥ ॥

অনুনানু বাদে। স্বত্যাদিক ধবি হইতে স্বত্যাদিক, পারাদর্যাদ্রণ ইইতে পারাদর্যায়ণ, পারাদর্যা হইতে পারাদর্যা, ভাতৃকর্ণ
হইতে ভাতৃকর্ণ, ভাতৃরায়ণ ও বাদ হইতে আহ্বরায়ণ, তৈবনি হইতে
তৈবনি, উপজ্জনি হইতে উপজ্জনি, আশ্বরি হইতে আহ্বরি, ভারদাল হইতে ভারভাল, আত্রের হইতে আত্রের, মান্টি হইতে মান্টি,
দৌতর হইতে গৌতর, পুরন্ত গৌতর হইতে গোতর, বাংশু হইতে
বাংশু, শাভিলা হইতে শাভিলা, কোশোর্যা কাণ্য হইতে কোশোর্যা
কাণ্য, কুমার হারিত হইতে কুমারহারিত, গালন হইতে বাংশনপাং
কাল্য, কৃষ্বির হারিত হইতে পুলি সৌতর, অবাশু আজ্বির হইতে
ক্রান্ত আজিরন, আতৃতি দাব্র হইতে আতৃতি দাব্র, বিশ্বরূপ দাব্র
হইতে বিশ্বরূপ দাব্র অধিকর হইতে অধিকর, স্বাভ্ আধ্বনিণ হইতে
ক্রান্ত আজিরন, আতৃতি দাব্র হইতে আতৃতি দাব্র, বিশ্বরূপ দাব্র
হিত্তে বিশ্বরূপ দাব্র, অধিকর হইতে অধিকরর, স্বাভ্ আধ্বনিণ হইতে

fedicalemen -ver areng

> देखि विकोशायात वर्ष वाचन-गाया १२१७। देखि इरवादनारकाननियस विकोशायात गायानवास १२६

> > 1 & WETE 1

क्रुटिबार्यातः।

ध्यमर जामनग्।

ज्याकाम काळाचा,। बनका र देशकर रेखानि राज्यकीशः काळ्यांब्राटाः। केननिव्धवानवाविकारकः वश्वारकः नवानार्थराश्चि निव्ध म न्वक्काः। वश्वारः विज्ञानवानाः। जानदाननशै रि जारेष-क्ष्यकाननाः अद्यक्ष नक्ष्यः कर्यक्रमण्डिविव वर्गीहकूष्। "(आकर्याः वस्ताः" रेकि राज्यः; ज्यारानवार्थरेकः नवीकान्वंकः निर्धातनाः राज्यकीशः काळ्युननिव्धवानवादकारकः।>

আব্যায়িক। তু বিজ্ঞানস্বতার্থা উপায়বিধিপরা বা। প্রসিংছা হাপারো বিষক্তিঃ বারের্চ চৃষ্টঃ—হানব্; হানেন হাপনবন্ধে প্রাণিনঃ; প্রভূতং হিরণাং গোসহস্রহানকেই উপনতাতে; তথায়তপরেণাপি পারেণ বিভ্যাপ্রাপার-হান-প্রহর্ণনার্থা আব্যায়িকারছা।

অপি চ, ভবিদ্যাসংবোগঃ তৈক সহ বাদকরণং বিদ্যাপ্রাপ্তারা ভার-বিদ্যারাং দৃষ্টঃ; ভচ্চাত্রিরগ্যারে প্রাবদ্যোন প্রদর্শনিক্রেরার ক্রান্তির প্রাবদ্যাপ্রাপ্তারিক।

টীকা। বৰ্কাতে বাইং ককাং চেতি বৰ্বাং বাাখা। ১২ . সম্বাঠি কারামানাং কারিকানীতে—কংশকা ইন্ডি। বহু পূর্ববিধানায়বংশ বাাখা। তবে কম বুক্তবাপি বকাতে করা ও পুনারকোনাং ব্যিকাংকৃতি, ভরাই—উপাপক্তাটিত। ভূলান্পপতিবাধানথং ব্যুক্তবাপতি চেরেকাহে—ইন্পুক্তাপ্তে ইন্ডি। বহু ব্যাপাবাধানায়বং অব্যান্ধ্যান্ত অব্যান্ধ্যান্ত ক্রিকালে ক্রিকালে ক্রিকালে ক্রিকালিত। ক্যাব্যান্ধ্যান্ত ক্রিকালিত ক্রিকাল

स्राक्षीका कावासकारण विविद्यावाधिका अधेवर्ड क्यार-व्याच्याधिका विक्रिः विकायकार प्राप्त अवस्थानाम पृष्टतः क्या । विकायर वशकायरप्रिकि विक्रिश विक्रियकार्थः। विकायस्य वामार्थानामकास्थायनम्बा नावाधिरका कार्यक्यार-केलारक्षिः। क्यर पूर्यमण्ड विकायस्यानामकः क्यार्-अविद्यां विवाद। 'वाहर नर्गह अविकेश' वेवादिकाचेषु विवाद स्थापक विवाद स्थापक विवाद विवाद

ইত কাব্যারিক। বিশ্বাপ্তার্থ গুলারপ্রবর্ণ বিশ্বরেক্তার্থ অনি চ্চেডি। করিব বেছে বর্ণে বিশ্বঃ বেশা কে করিপ্তারের বন নবকত বৈরের প্রপ্রবিদ্ধান্তারা বারকরণ ও বিশ্বাপ্তার্থ বিশ্বাপ্ত বিশ্বাপ্ত বিশ্বাপ্ত বিশ্বাপ্ত বিশ্বাপ্ত বিশ্বাপ্ত বিশ্বাপত বিশ্বাপত

व्या छान्न छान्यान्य सार्। चरुष्य 'कनकः र देवस्यः' रेखारि याक्यकोश काक (क्षेत्रक्ष) चात्रव रहेटल्ड । चरुष्य व्यापक विश्व क्षेत्रक्ष क्षेत्रकारित । व्यापक विश्व क्षेत्रकार व्यापक व्य

नावादिकात केलक—अवविषय विक वयन विवादात्व केमात अवर्थन-क्या । यान (व, विवादात्व अविक केवा केमात, देश (वाक्यादिक वर्ड), अवर वाज्यके वर्ड ; कावन, यान-अवादार आविषय विक्रण केया वादय । अवादमक अपूर्व विचादात्व कुर्य क मरस्यमरवाक (वाशाद्यक केया द्वादिक वाच्या वाहरकर ; क्रक्यर वृद्धिक वहेदर द्वा, विवादाक अधिनाव्यक कक्ष्म वाज्यावक वहेदनक विवादात्वय केमावक शाय-अवर्थनंत्व क्यूडे व्यादाव वाच्यादिकात व्यवद्यावना वहेदकर । विरादक विकादात्वय व्यवदे अफ-विजानातीत वर्गनाज, अरर जाशास्त्र मिश्र निवास निवास कर्मन कर्मा निवास विद्यान (महास) विजानार्ज्य छेनात्र विजास कर्मन कर्मन विद्यान (वर्ष वाचरनक) (महे जविज-मरागारन व गानशास वाक्यान वाक्यान विद्यान विद्यान कर्मन विद्यान वाक्यान व्यापन वाक्यान व्यापन व्यापन

উষ্ জনকে। হ বৈদেছো বছদক্ষিণেন যজেনেজে; তত্ত হ কুক্লপঞ্চালানাং আন্ধান অভিন্যেতা বভূবুং, তত্ত হ জনকত্ত বৈদেহত বিজিজনা বভূব—কঃ বিদেষাং আন্ধানামস্চানতম ইতি। সহ প্ৰাথ্যহত্ত্যবক্ষরোৰ দশ্দশ পাদা একৈক্জাঃ শৃক্ষরোৱাৰতা বভূবুঃ॥১৪০॥১॥

ज्ञास्त्रार्थः । [चछःभवः वृक्तिनविष्ठिमाश्रत्म चारेष्ठकः श्राष्ठिः भावविष्ठ्यितः वास्त्रकोवः काश्यविद्याद्याद्याद्याः । विष्यविद्याद्याद्याद्यात्र । विष्यविद्याद्याद्यात्र । विष्यविद्याद्यात्र । विष्यविद्यात्र । विष्यविद्यात्य । विष्यविद्यात्र । विष्यविद्यात्र । विष्यविद्यात्य । विष्यविद्यात्य

শ্টকঃ প্ৰেচনায়নং ছান্বিদাভান্তয়: সূত্ৰবাত্তি। কাৰ্য্য চ নিভয়োচটো নিজ্ঞে পূৰ্বেচ্ছুননিবিদ। "

वर्ष-प्रतिविश्वाद्यत्र वेनाव वाहेक्वे—(>) केंद्र, (२) नव, (०) वर्षावन, (०—०) अविव क्ष्यानिष्ठित, (०) व्रवस्थाति क (०) वाव । क्ष्याया क्ष्यत् विक्रं वर्षाविषि वृक्षि अस्तात्र क्ष्याया क्ष्यत् विक्रं वर्षाविषि वृक्षि अस्तात्र क्षया क्ष्यत् व्यवस्थात् । व्यवस्थात् विक्रं विक्र

⁽১) ক্তাৰ্থাৰ ভিন্ত ক্ষিত্ৰ-সংযোগ ও ভাব বে, সিভিলাভের প্ৰধান উপায়, আচাৰ।
ইপ্ৰকৃত্ত ভাবা শীকার ক্ষিতাহেন। ভিনি বলিয়াহেন—

एडीरब्रोक्शावः—अपन्य वाचनन् ।

वक्षः । [का ह] कह (यक्कक्षं) देवरवक्ष वनक्ष विविद्याना (विर्वरित्र काक्ष्मित्र) । वृक्ष्य-व्यार (केणिक्षितार) वाक्ष्मित्र (व्यक्षित्र) । वर्षात्र (व्यक्षित्र) । वर्षात्र वर्षा) का विष (काववारवस्त) व्यक्षात्र (व्यक्षित्र) [नर्र्वरित्र वर्षा वर्षा वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र] देवि । तर (व्यक्ष्य) वर्षार त्रव्यर (त्रव्यत्र वर्षावार त्रार) व्यक्ष्मद्वार (वार्षार वर्षात्र) । वर्षात्र वर्षात्र (वर्षात्र वर

অনুকাকুআনে ।—পুরাকালে বিদেহাধিপতি মহারাজ জনক 'বছদক্রিণ' যজের জনুজান করিয়াছিলেন; কেই বজ্ঞাক্তের কুরুদ্ধেরীর ও পঞ্চালদেরীয় আক্ষণগণ সমাগত হইয়াছিলেন। সেই বিদেহাধিপতি জনকের জ্বছরে বিশেষ জিল্পালার উদয় হইয়াছিল,—ভিনি জানিতে ইচ্চা করিয়াছিলেন যে, এই আন্দেপাণের মধ্যে সর্ব্ব শ্রেষ্ঠ বেছবিশ্ আন্দে কে পু ভিনি [এই উদ্দেশ্যে] সহস্র গাভী পৃথক করিয়া রাখিয়াছিলেন এবং প্রভাক গোর শৃক্তবন্তে দশ দশ পাদ স্থবর্দ বাঁবিয়া ছিলেন। এক পলের চারি ভাগের একভাগকে 'পাদ' বলা হইয়াছে ৪ ১৪৩ ৪ ১ ৪

भाक्क का का न्। कारण नाव र किन नवा है जाना वक्ष्व विराधानाम् ; छत छरा रेगर्स्यः। न ह वह्यक्रियन गर्कम—भाषास्य-विराधानाम् ; छत छरा रेगर्स्यः। न ह वह्यक्रियन गर्कम्यानाम् व्यक्षित् देरहाहार्छः,—र्ख्यारक भावत्यः। छत्र छण्डित् गर्क निर्माद्या वर्षनकाता वा स्थार राज्यानाम् भाजानाम् बाक्ष्याः—र्ज्यु वि विष्यार गाल्यार व्यक्तिक्यः,— मिन्न मन्छ रेगर्स्य व्यक्षान्छः, राज्य व्यक्ष व्यक्ति देखि विराधान मान्निक्यः विक्रिक्ताः वृक्ष्यः। क्ष्यः। इत्यक्ष्यः व्यक्ति देखि विराधानाम् अन्तिक्यः। मिन्नामा वृक्षः। क्ष्यः। क्ष्यः। क्ष्यः विराधानाम् वृक्षः। व्यक्तिक्याः

म र चनुष्ठानक्ष्मविषद्भारभव्यक्षिकामः मन् कषिकारवाभावार्थः भवाः मस्तरं व्यवस्थामम् चनक्रद्भावः त्यार्वस्थानः काववायामः ; क्रिरिविडोका भारत्रहु-

बक्का रेक्ट्राटारण---भगवक्षीमः भारः भ्रवर्तकः वन वन भारा बरेक्क्छाः भारताः मृत्याः भारता वक्षुः, भक्ष भक्ष भारा बरेक्क्विव् मृद्धः । ১৪० । ১॥

ভাল্যান্দুলাদে। পুরাকালে জনকনাবে বিষেহবিধের একজন সরাট্ ছিলেন; সেই বিষেহে সমূহত বলিরা ভাহাকে বৈষ্ণে বলা হইত। তিনি বহুছবিশ বজের অনুষ্ঠান করিরাছিলেন। 'বহুছবিশ' শন্ধটী অন্ত কোনও বেছলবিশ বজের অনুষ্ঠান করিরাছিলেন। 'বহুছবিশ' শন্ধটী অন্ত কোনও বেছলবিশ বলা বাইতে পারে; কারণ, ভাহাতেও ছবিশার বাহল্য রহিরাছে। সেই বজ্জানে, প্রসিদ্ধ বিষয়হল মুক্তাবেশীর ও পঞ্চান্দেশীর বহুতর রাজণ নিবন্তিত হইরা অথবা দর্শনার্থী হইরা স্বাগত হইরাছিলেন। সেই বজ্জানের বহুতর বিহানের স্বাগব সম্পর্শন করিরা, বজ্জানা বৈষ্ণের জনক বহারাজের বনে বিজ্ঞানা—বিশেবরূপে জানিতে ইছা হইরাছিল বে, ইহানের সধ্যে ক্রান্থী বা ব্রন্থবিক্তম কে? কর্মান বাহারা এবানে আসিরাছেন, ভাহারা সম্পূর্ণেই অনুচান—বেছব্যাখ্যানে সম্বর্ধ সন্ত্য, কিন্তু ইহানের মধ্যে অনুচানভ্যন—বিশ্বরূপ) কে? >

खिन चन्नानक्ष्य विवास विकास हरेश, कारा कानियात छेनपूक छेनार-वाद्य वोबनावस नदल क्षा कार्य देशिया शांविशास्त्रितन । नक्ष्यनि कि क्षकात, कारा बनिएकरहन—अरू अवकी त्यात नृज्यद्य स्थ स्थ नाम व्यव्ध बोरकाक नृष्य नीव नीव नाम सूचर्य देशि हिन। अरू नम सूचर्यत व्यक्ति क्षांविश्व अरू कांग्रस्त नाम या स्थ (२) १२००३ > १

⁽১) জাৰ্ব প্ৰাৰ্থ — কিব ভোষা: আই ব্ৰডি, চুই যাবাচ এক পল বচ ৡ
'প্ৰাংখ লৌকিকৈন বিনঃ নাইছাছিবিনাকক্ ।
'মোক-জিকাৰ প্ৰায়ৰ জোনিকৈ': প্ৰতিসক্ষৰ । "ইতি ।

10

ভান্ হোগাচ অ'আগা ভগনতো বো বো অভিছিঃ ল এতা গা উন্তলতানিতি। তে হ আআগা ন গন্তব্য হ যাজনহাঃ বনেব অআচারিপস্থাটেতাঃ সোম্যোগজ সামজন। ৩ ইভি, তা হোলাচলার, তে হ আআগাশ্চক্রপুঃ কবং নো অভিছিল ক্রনীভেতি। অব হ জনকক্ত বৈদেহক্ত হোতাখনো বন্ধুব, স হৈনং পপ্রজ্ঞ—বং সু বসু নো বাজনহা অভিছিলী ৩ ইভি, স হোগাচ নমো বয়ং অভিভান কুর্মো গোকামা এব বন্ধুও স্থ ইভি, তথ হ তত এব প্রকৃঃ গপ্তে ফোতাখলঃ ৪১৪৪৪২৪

व्यक्ताव्याः [बनकः अववश्यकः] छान् (महामरः खावनान्) छेवाह र (ঐভিবে)—छत्रवद्यः (दर भूकमीदाः । ताक्नाः, वः (बृधाकः वत्यः) वः त्रविकं: (ववविकवः), तः (त्रविकं:) अठाः (व्यवक्रवाः) नाः केववणाव् (वन्दर क्षणि (क्षत्रकु) हेलि। [बठ्द क्ष्या] ए (नगड़ाः) ताबनाः हम वहतुः [चाच्रमः त्रिकंठाः वाानविष्ट्रः न मत्ना वृद्धः) ; चव (एठगेष्-क्षणिणामनामस्वर् । बाक्षवद्याः अव वः (वीदः) त्रव्यव्यविष् (निस्त्) केवाह—हर त्यांवा गावजवः गायतवः नृत्यांकि वेकि गावजवाः, करमहर्वा-वष्), अछाः (बाः) छेरक (हानत-व्यवस्त्रहर आनात्रकार्यः) हेकि। [वाक्यरका दि वक्रकंपविचया अभिष्यः छव्चित्रान्त नावरवपविष् ; 'बहाबाख्यः সাম नैप्रता हेडि कार्यम माहण्ड वम्बिकार अवस्तितक ह दक्तवावर्गकका वर्षाः राक्षरदात्र रुपूर्वरविकः एरिस्टिविकि कारः]। [अववृक्तः नारक्षराः] छा: (शाः) डेवांक्कांत्र (डेरकानिक्वांत्)। [वाक्यवात्र अविदेश-वाानातम] एव बाक्नाः हुकून् (क्वाः वक्तः) र (किन)-क्वर नः (जनाकः गर्वा) [जन्न अव] उक्किः । रवर्षिकरवाश्यि) देखि अवीक (क्वाइर) हेकि। यन (यमस्तर) रेनरक्ट बनक्ट रहांका (बिक्) वर्षमाः (क्यांचाः कन्तिर खावनः) रकृत र (किन); नाः (वर्षमाः) अनर (बाक्यकार) नथाव (न्हेबान्) र (किन)—(र बाक्यका, इ (बारा) मः (व्यार्कर प्राता) कर रव् (निकार) खिकंड यनि १ देखि । [अवन्त्र] ना (बाक्यवर्की) देवात र-वार विकिश नवा कूर्या, [नवह] नतर (माकाबाः (रमवावर्षितः) अव पः (क्यांवः, मधु अविकाः देकि कायः)। द्याका व्यवनाः जवाः (वाक्यवाकः क्षिक्विशानमार) अवं कः (वाक्यवार) आहेतः (विकानिकृर) राज (वाक्य गुजरान्) र (किन) १२०० । २.४

্ অ,লান্ডাদে। বিদেয়ধিপতি বন্ধ সমাগত ভাষাণগণ্ড मर्चायनभृतिक विम्रिलन—(१ भृक्षनीय खोष्मवनव, चामनाराय प्रारा विनि नर्वा(भक्षां (आर्ष्ट (वष्विष्, जिनि এडे (भागम्ह निक्कबरन महेग्रा ষাউন। এই কথা ভনিয়া বৈই ব্রাহ্মণগণ হিলাসনাদিপকে ব্রাহ্মণো-खम बनिता পরিচর ছিতে] সাহসী इंडेरनम मा : चल:भत बाख्यका-নামক ক্লবি নিজের ব্রন্ধচারীকেই (শিখাকেই) বলিলেন—হে সোমা मामखार, जूमि এই গরুওলি লইয়া যাও; उन्नहारी সেই গরুওলি লইরা চলিলেন; [তখন] উপস্থিত আন্ধাণগণ ক্রাক্স হইলেন. [এবং বাক্তবড়াকে বলিলেন-) আমাদের মধ্যে তুমিই [আপনাকে] প্রকিষ্ঠ ৰলিয়া পরিচয় দিতেছ কিপ্রকারে ? অনস্তর, বিদেহপতি জনকের অখল-নামক একজন হোতা (ঋষিক্) ছিলেন : তিনি বাজ্ঞবদ্ধাকে ভিজ্ঞাসা क्त्रिलम—वाक्कव्या, जामारणत मर्था जूमिहे कि मर्त्वासम आजन ? ভিত্তৰে] বাজকা বলিলেন, আমৰা এতিত্বৈ নম্বার করি: चांमता क्वेरक्कि त्याकाम चर्चार त्यां-मारकत बक्तिनाची माउ। शास्त्रकार विकिन्न-सागक (भा-अश्तर प्रकृतके क्षान काश्रतिकरे প্রায় করিছে প্রবুদ্ধ হুইলেন। ১৪৪। ১।

न्नाकका-काकाका। ना ववनवक्षण वाक्ष्मान् छान् व छेवाछ—(व वाक्ष्मा क्षमकः वेणावज्ञा—यः वः त्राकः विकि:—नार्क वृतः वक्षानः, काक्ष्माः वृत्राकः वक्षा यः, तः वणा ना केवक्षणः क्ष्मणात् वृत्रः वाक्षिः। एक व वाक्ष्मा न वन्त्रः—(क व विदेशवर्का वाक्ष्माः वक्षिण्याक्षमः व्यक्षिण्याक्षमः व्यक्षिण्याक्षमः व्यक्षिण्याः त वस्तुः, व व्यवस्थाः नरव्षाः। व्यवस्थित्वक्ष्याः वाक्ष्मः व्यवस्थाः नाव्यक्षः व्यक्ष्मः व्यक्ष्मः नाव्यक्षः। व्यवस्थानित्रव्याः—वक्षाः नाः द त्यावः क्षेत्रव्यक्षः व्यक्षमः वात् व्यक्षः, व्यवस्थाः—भावविवरः वि मृत्याकः, व्यक्षमः विवयस्यः। का ना व क्षेत्रक्षमः क्षेत्रक्षानिक्षान् व्यक्षमान्त्रवाः। राज्यस्त्रत अधिकं-लग्नीकारनगण्या अधिका अधिकारकि एक ह कृत्रभूर कृष्णकः, वाणनाः । एकार क्रांशिक शाह्माक्रके—क्षर ना भागकः रार्टक्यशानागार विवर्षास्त्रीकि क्ष्मीर्व्छ । यथ र अपर कृष्णम् वाच्यम् क्षमक्ष प्रथानच रहाका विवर् भारता नाम रक्ष भागीर ; न अनर पाज्यकर —विकितिनोती प्राचायप्रधाक १६३—पाज्यकार शक्क शृहेनान्—क्ष्म् १ पर प्र पत्र त्या राज्यका विवर्षास्त्री ० कि—अ क्षिक्रमं नार्था। न रहानाक पाज्यकार—नमक्ष्मा नग्नर विकित्त, हेशानीर त्याकामाः त्या यहविछ । कर विविदेशिकार नग्नर कर कर अप विकित्नगणीकानार आहेर गर्थ करान्य त्या

্টীকা। বাছণা বেলাধানসপ্রায়বর্ণনিটা ইতি বানং। উৎকালজুকার্যন্ত । বছে। বাজনভাগ্রহুর্বেদনিত সভাগাল্যকারী সামবিদিং পুণোতি, বকু চালাজ্যং সাম বীয়তে, বিধেব চ বেলেম্বরুর্বেদিরে বিধেব ভালাক্যকারী সামবিদ্ধান্ত্রেরিদরে মুন্দের্বিদরে। ব্যান্তর্বাদ্ধান্ত্রেরিদরে মুন্দিরভাগ — আন্ত ইতি।

নিবিশ্বনিংগবশূর্ণ কং রাজধানাং সভাবিং কোন্ধান্তিং বর্ণচতি—আক্ষরক্রেন্তের করিছি। অধনপ্রথত প্রাক্তর বেশুং—লাত স্থানিক বিশ্বনিক । ব্যানিক প্রাক্তর বিশ্বনিক করিছি । ব্যানিক প্রাক্তর বিশ্বনিক কর্মান্ত স্থানিক বিশ্বনিক কর্মান্ত স্থানিক বিশ্বনিক করিছি প্রথম করিছে। বিশ্বনিক করিছি প্রথম করিছি প্রথম করিছি বিশ্বনিক করিছি প্রথম করিছি বিশ্বনিক করিছি বিশ্বনিক বিশ্য

खाळाग्यमुखाप्तः। यदावाव वनकः बहेवल लानवृद व्यवस्थः, विद्या गर्यायम पूर्वकः त्राहे वाक्यनगर् विद्या गर्यायम पूर्वकः त्राहे वाक्यनगर् विद्या गर्यायम पूर्वकः त्राहे वाक्यनगर् व्यापानाहरण्य वर्षा विनि वर्षिकः—माणनावा गरुराहे वाक्यन गर्याः व्यापानाहरः वर्षाः विनि गर्रवांक्य वर्षावृद् विनि बहे त्यायवृद् गरेवाः याद्रेमः, वर्षाः वर्ग्वाकृत्य (व्याप्त क्ष्यमः [ब्रक्ष्या किवाः] त्रहे वाक्यनग वर्षारवाण वर्षायम गर्याः वर्षायम क्ष्याः वर्षायम वर्षाः वर्षायम वर्षाः वर्षायम वर्षाः वर्षा

राध्यका प्रमूर्विक (১)। तिरै निश के त्यानवृर चाहार्रात वृशक्तिपूर्व बहेश (१४)। ১

বাজনভাষ ব্যক্তি-পণ অর্থাৎ ব্যক্তিতার ব্যায়রণ গোরাংশ ভারাই ভারার প্রক্তিতা প্রতিজ্ঞান্ত হইব ; এইবন্ত উপস্থিত ব্যায়ণবর্গ কৃত্ত ব্যক্তিকা। তাহাবের জোনোৎপত্তির ভারারীভূত অভিপ্রার বলিতেত্বেল—হে বাজনভা, প্রভ্যেক্তর্থান আনাবের বথ্যে 'আনি, হইভেছি ব্যক্তি' এ কথা ভূবি বলিতেত্ত্ কি প্রকারে ? বজনভা অনকের একজন হোজা—পবিক্ ছিলেন, তাহার নাম অথন ; তিনিও ব্রক্তিভিয়ানী ; বিশেষতা রাজার আপ্রিত বলিরাও তিনি সম্বাহিক গৃইতাসন্দার (বাচান) ; বাজনগন এইরণে জোনগর্মণ হইলে পর, তিনি বাজনভাতে বিজ্ঞানা করিলেন ; কি প্রকার ? হে বাজনভা, নিন্দর বন ভূমিই কি আনাবের বথ্যে প্রক্রিছ ? [প্রায়েতে বে, জিনাআম্বর্ক রুত বন প্রস্কৃত ইরাছে], বাজনভাকে তর্থ সানা করাই তাহার উল্পের। [তত্ত্বেরে] বাজনভা বলিনেন—আনরা ব্যক্তিকে নমভার করি ; এবন আনরা হইতেছি ক্ষেক পোকাম (পোপ্রার্থী) ; [তাই প্রন্ধণ বলিরাছি]। বাজনভা প্রস্কিণে ব্যক্তি-পন ব্যক্তির করাতেই প্রক্তিতা-প্রতিজ্ঞাকানী সেই বাজনভাকে ছেতা অবল প্রের করিতে ক্রমিন্তর হইলেন ১১৪৪।২।

বাজ্ঞবন্ধ্যেতি হোবাচ বলিদ্ধ্যকাং মৃত্যুনাপ্তথ্যকাং মৃত্যু-নাজিপনন্, কেন বজমানো মৃত্যোর প্রিমতিমুচ্যত ইতি। হোজিম্বলায়িনা বাচা, বাবৈ যজক হোতা তদেববং বাক্. গোহরময়িঃ স হোতা স মৃক্তিঃ সাতিমৃক্তিঃ ১১৪৫৪০।

ज्ञाक्ताव्य : । [एक बाजवरात्र चार्कित्वावानावित्रक्र नत्वावववाद— बाजवरणि]। (व बाजवरा देकि नत्वाववत् [ज्यनाः] केवात र—वर देवर (ज्ञाकृतवांतर) नर्वर (कर्मनावनर विकाषि) मृद्यां (क्लानवद्राक्त कर्मना)

^{(&}gt;) व्यादनार्या-वाक्षवया वर्षि विद्या वसूर्यविष्यास्य । विद्या वावास क्षेत्रात्र विकास विकास विद्या विद्या वसूर्यविष्यास्य । विद्या व्याद्यास्य क्षेत्रात्र विद्या विद्या व्याद्यास्य क्षेत्रात्र व्याद्यास्य व्याद्य व्याद्यास्य व्याद्य व्याद्यास्य व्याद्याद्य व्याद्यास्य व्याद्याद्यास्य व्याद्यास्य व्याद्यास्य व्याद्य

्रजीरशास्त्रामा -- व्यनगर सामान्य्।

শুলান্দ্রবাদে।—লগণ পুনন্দ সংখাধনপূর্বক বাজবদ্যকে জিল্লাসা করিলেন—[ক্ষা দেখি,] এই বে. বজ্ঞসাধন ঋষিত্ আয়ি প্রভৃতি সকলেই সকাম কর্ম্মপ মৃত্যুকর্তৃক প্রস্ত আছে. এবং সকলেই বে. মৃত্যুক বিশ্বত হইয়া রহিয়াছে; বল্পমান কোন উপারে সেই মৃত্যু-প্রাস হইতে মৃত্যুক্তি করিছে পারে ? [ভত্তুত্তে বাজ্ঞবদ্ধা বলিলেন—] ছোডা. ঋষিত্, অগ্নি ও বাত্ খারা; কারণ, বাত্ই যাজ্ঞর প্রকৃত হোডা; প্রসিদ্ধ বজ্ঞে বাহা বাত্, [অধিবৈদ্দালে] ভাহাই আরি, ভাহাই হোডা, ভাহাই মৃত্যু এবং ভাহাই অভিমৃত্যি আর্থাৎ অগ্নিজাব প্রাপ্তিরূপ কল সাধন । ১৪৫ । ০ ।

শাংক্তর-ভাষ্যাম। বাজবডোতি হোবাচ। তর ব্যুকাওে পাংক্তেন কর্মনা ধর্মনাবৃদ্ধিতেন ব্যবানত বৃত্যোরতারে। ব্যাধ্যাতঃ উন্নীধর্যকরণে সক্ষেপতঃ; ভত্তৈব প্রীক্ষাবিবরোগ্যন্—ইতি তব্যত্তর্শনবিশেবার্থেছিয়ং বিভার আর্থাতে। >

विवर नायनवाक्त् वक्ष कर्चनः विवनशानि मृश्या कर्चनवरम्य बाक्ष-विकानकर्गवरक्त वाधर गाधन् । न द्वन्तर गाधन्, विकाश क मृश्या विकाश कः । द्वन वर्णनकरम्य नायरम्य व्यवस्थानः म्रजानाधिक् विकाश मृश्याक्षणकर्मा मृश्याकः विकाश मृश्याक्षणकर्मा व्यवस्थितः । स्मृतीरम् वर्षाविक्य—दमाविक्शास्य—मृश्याक्षणकर्मस्यक्तिः । वाहन् वेक्षण् । द्वावस्थाकः वर्षाविक्षणः विरानवासः । वर्षाविक्षणः विरानवासः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः वर्षाविक्षणः । वर्षाविक्षणः ।

না অভিৰ্ভিয়—হৈব চ মৃত্তিঃ, না অভিৰ্ভিয়ভিম্ভিনাগৰবিভার্থঃ।
নাধনবাত পরিজ্ঞিল বা অধিবৈৰভারশেণাপরিজ্ঞিলাধিকপেণ গৃষ্টঃ, না
মৃত্তিঃ; বানৌ মৃত্তিরবিষ্ণত-গৃষ্টঃ, নৈৰ—অধ্যাসাবিভ্তপরিজ্ঞেবিবলাসমান্দান সৃত্যুব্ অভিক্রমা অধিবেৰভায়তারিভারত প্রান্তির্বা কলভূতা.
না অভিমৃত্তিরিভাচাতে; ততা অভিমৃত্তের্তিরের নাধনবিতি হবা না অভিমৃত্তিরিভাব। বজনানত হতিমৃত্তিরোধনালানাগাবিভাব ইত্যুবনীধর্মকরণে
ব্যাখ্যাতব; তত্ত সাবাজেন মৃত্যপ্রাণ্ডর্শিনাত্তা মৃত্যুপ্রাণ্ডাতিমৃতিত্ব
বাখ্যাতব; তত্ত সাবাজেন মৃত্যপ্রাণ্ডর্শনিবাত্তা মৃত্যপ্রাণ্ডাতিমৃতিত্ব
বাখ্যাতব, বজ্লুতা, বা উদ্বিধরাত্তান ব্যাখ্যাতা—মৃত্যুবভিজ্ঞাতো বীপাতইত্যাক্যা ৪ ১৪৫ ৪ ০

हिन्छ। एव अवनः वृत्तवाविष्वानानानिष्दः नारनाववि—वाक्यव्यकाणि।
क्रेमीकावनमात सवत्व वर्णानीवादिकारम् नविष्ठाद —क्ष्याकि। वप्कारं वृद्धित वाकारं वद्यमीवज्ञवन्तरः, अविद्यानवनानाता वृत्त्वात्रकारं नवृत्तिरंक कर्णा नरकन्तरं व्यक्ति विष्ठावृत्तिवनः वर्णानिवरं विष्ठावृत्तिवनः व्यक्तिवन्ति वर्णानिवरं विष्ठावृत्तिवनः वर्णानिवरं वर्णानिवर

पृषीद्रांप्यांग्रहे-धर्मनं सम्बन्ध् ।

নীপুৰ্ পুৰ্বৰ্ণক বৃদ্ধাৰ্থন।বাব হোত্ৰেজানাৰ্ভবিজ্যাপলান —এজহন্ত । বাজাই বাবৈ বজাভোগানিকেতি পেবা। বাগানিবেৰ বিশ্ববিদ্ধ পৃথাতি—ক্ষা পুনাৰিকি। বলনাবিদ্ধ প্ৰাণ্ডি—ক্ষা পুনাৰিকি। বলনাবিদ্ধ প্ৰাণ্ডি। বলনাবিদ্ধ কৰিবলাবে বালীক্ষা প্ৰাণ্ডি। বলনাবিদ্ধ বা বাগানিকে হোতাংক, ক্বাণি কৰা কৰোকেবলাবা। বৰ্ণন্ত্ৰেলাকা। বৰ্ণন্ত্ৰেলাকা।বিদ্ধিত। কলোকেবলাবা। বৰ্ণন্ত্ৰেলাকা।বিদ্ধিত। কলোকেবলাবা। বৰ্ণন্ত্ৰেলাকা।বিদ্ধিত। কলোকেবলাবানিকা কলোকাবানিকা কলাবানিকা কলোকাবানিকা কলোকাবানিকাবানিকা কলোকাবানিকাবানিকাবানিকাবানিকাবানিকাবানিকাবানিকাবানিকা কলোকাবানিকাবান

ख्याच्यान्त्र्यान्तः। जनम राज्यसारम गर्वारमण्डमः यनिरममः -विद्यानगरम् नार्कः कर्म यात्रा रा, राज्यारमः मृत्याकः राह्मः रहः स्था जानेक वश्वाद्यस्य देशीयक्षकः। गरक्षरम कृषिक स्टेशार्कः अवन जानाव कारावरे नतीका या विद्याकारम विकासकः जायकः स्टेशारकः अरेक्ड (गरे विकासगढरके चाडि किंदू वित्यव क्या त्रनिवाद विविध कार्यादरे विद्वालयक्षण और अकार चाडिक रहेरकाई। >

बरे करनेत (सरकत) विष्कृ ७ यदि श्राष्ट्र शाशा कि नायन वर्षार कर्यन्तानार कर्यात , करनेवर्क वर्णातिक क्यानिक व्याप्ट (क्यानिक क्यानिक व्याप्ट (क्यानिक क्यानिक नावन व्याप्ट व्याप्ट श्राप्ट व्याप्ट व्याप्ट क्यानिक व्याप्ट व्याप्ट क्यानिक क्यानिक

बाक्यका बनिरमन-'रबाजा बिका, बिना राठा' हेकि। अधन अवधार খ্যাখ্যা করিরা বলিডেছেন—দেই'হোডাকে,—বাহা বারা মুদ্রা অভিক্রম क्षिएक भारत वात ? छावा नमा वहेरछाइ-नाकृष्टे बरकात वक्षवारमा द्राष्टा ; वर्षाद 'रक्करे रक्काम' अहे अधिवाका दहेरत कामा वाह ता, रक-नक्काता ্ৰজনানের বাহা বাক্, ভাহাই অবিষক্ষে (অধ্যাপ্রবাবে) হোভা; কি क्षणंत ? मा---(नवारन वरक) रक्षणानन्यक्रिमी रव वाक्, छाराहे व्यक्ति टेक्चक वृत्ति विवाद क्षितिक ; अवदा 'व्यक्षका' विकाशना क्षकारन है विरायकार कुंगरिया (स्थां वरेशार्थ । 'अधिरे (बाधा' और अधि वरेए बामा वाह ंद, तिहे चंत्रिहे खड़क द्राका। वक्तनंदक दा, बहे व्यनिक नावनका-व्यनिक-बरका नावन रहेन द्याचा वरिन, बाह्न बनाब रहक नावन रहेन नाव. अहे केकावित रक्षमायनदे गविक्तित्र अन्तर मुक्तुकर्कुक गावि, वर्षाय कक्षामक ক্ষাভাবিক ক্লাসভিসৰ্বিত কৰ্মান্তৰ মৃত্যু ধারা প্রতিমূহতে বিভূতিভাবাপঃ — য় ক্ষত্তঃ এই বাক্যরণ সাংগটাতে অবিবৈশত অধিকণে কেবিতে विका जारारे रक्तांत्रर मुद्धान्य विकारमा नावन रहेवा वाटन। अवन ন্ত্ৰ কৰাই বুকাইয়া বনিকেছেন—ভাষাই যুক্তি, নেই হোড়বঙণ পৰিই क्षा प्रक्रि वर्गार वावित प्रक्रमिकामरे मुक्तिमारका राष्ट्र। मुक्तिक

कृष्णेरहारकात्रा व्यापना ।

হইবে, বল্লান বৰ্ণই উক্ত বজনাধন হুইটাকে অৱিন্তৰে দৰ্শন করে, জনাই বজাবনিত্ব আনজি এবং আধ্যাত্তিক ও আবিলৈবিক পরিজ্যিকাবলুন মৃত্যু হইকে বিম্কত হইরা বাকে। অভএব [বৃত্তিকে হইবে বে,] হোজাকে অৱিলগে বৰ্ণন করাই বলনাবের মৃক্তিনাকের উপার। ৩

তাহাই অভিযুক্তি—নাহা যুক্তি, তাহাই অভিযুক্তি অর্থাৎ অভিযুক্তিলাতের উপায়। অভিপ্রায় এই বে, পূর্ব্বোক্ত পরিছির সাধনভারের বে, অপরিছির অধিকৈত অনিরূপে বর্ণন বা চিন্তা, ভাহাই নাম যুক্তি, আর এই বে, অবিকৈত বর্ণনাম্বক যুক্তি, ভাহাই—আবা্যাম্বিক ও আবিভৌভিক পরিছেম্বুক্ত বিনয়াসক্তির পোচরীকৃত মৃত্যুক্তে অভিক্রম করিরা বে, তৎক্তমন্ত্রপ অবিকৈতাম্বক অভিতাবগ্রান্তি, তাহাই 'অভিযুক্তি' নামে অভিহিত্ত হইয়া থাকে। যুক্তিই সেই অভিযুক্তিলাতের প্রধান উপায়; এইজভ মুক্তিকেই অভিযুক্তি বলিয়া নির্দেশ করিরাছেন। উননীধ্যানহর্ণে কবিত হইয়াছে বে, বাক্ প্রস্তৃতি করণসমূহের বে, অভিপ্রকৃতি কেবভাম্বভাব, ভাহাই বলনানের অভিযুক্তি; পোবানে সাধারণভাবে ক্রেবল মুব্যপ্রাণমূইকেই মুক্তিশাবন বলা হইয়াছে, কিন্তু ভাগত কোন বিশেষ কথাই বলা হয় নাই; এবানে সেই অক্তে বিশেষ—নাক্ প্রভৃতিতে প্রাণমূক্তী বর্ণিত হইছেছে। ভাহার পর, উননীধ ব্রাহ্মণে "মুক্তুম্ব অভিক্রান্তো হীপাতে" ইত্যানি বাক্তে বে, বিজ্ঞাকন উরিবিত হইয়াছে, এবানে মৃত্যুপ্রান্তির অভিক্রমণরূপ অভিযুক্তিও সেই কনই বটে, ভাহা হইতে অভিরিক্ত নছে। ১৯০ ৪ ০ ৪

যাজবন্ধ্যতি হোবাচ, বদিদ্ সর্জনহোরাজাভাানাপ্ত সর্জনহোরাজাভানভিপদং, কেন বল্পানোহহোরাজনারাপ্তিনভিন্তত ইতাধার্ পিছিলা চকুবাহিত্যেন,
চকুর্বৈ বল্পভানর ভিন্তালিং চকুং নোহনাবাহিত্যঃ সেহস্থাতি সাভিনুদিং ৪১৪৬৪৪

व्यक्तावारे। [जनमः गुमानि नर्गनिनामस्यरकाः कामार जिल् मुक्तियासामूर गुम्बकि राज्यरकाकि]। राज्यरकाकि[नरवास्त्र] केनाक १—१६ केम्स मर्गर (कर्मनायमः) जरवात्रात्राक्ताकाः (विय-समिनीकाः) आक्रम, नर्गम् जरवात्रात्राकाः जिल्लाम् । स्वस्तायः (विर (विरम्बद्धनाः) गांतरमा) चरवावाजाताः चांकिर (चांजावनर) चणि (चांजावा) प्रहारक होंकि। [वांजावा चांव--] चवाई न्या कविका, हकूम चांतरहात [चांकि-वृद्धारक होंकि वांवर]। [कपर कविछार--) हकूर रेप (क्षण वांतरहात) वांतरहात । इपर कवृद्धार्थ [चांतरवरक] ना चारती चांतिकाः ना चवार्थ्यार, ना वृद्धिर, ना चिव्यक्तिर (चिव्यक्तिमायमिकार्यः) हात्रकाः ना चवार्थ्यारम् । चवाण न्याप्ति नारवावानम् वांकिकाः वांकिकाः वांकिकाः । चवाण न्याप्ति ना चवार्थ्यारम् वांकिकाः (चिवातार) चांता चवार्थ्यारम् वांकिकाः (चिवातार) चांता चवार्थ्यारम् अवस्थारम् वांकिकाः (चिवातार) चांता चवार्थ्याः अवस्थारम् वांकिकाः वांता विवायकाः अवस्थान वांकिकाः वांता वांता विवायकाः वांता विवायकाः वांता व

শাত্তক্ত-ভাল্যক। বাজবড়োতি হোবাচ। বাভাবিকালজানাসকপ্রমুক্তাৎ কর্মকশাৎ মৃত্যোরভিমৃত্তির্জাব্যাতা; ওপ্ত কর্মবাং সাসকপ্ত
মৃত্যোরাশ্রইত্তানাং ধর্শপূর্ণনাসাধিকর্মগাবানাং বাে পরিণাবহেত্য
কাল্য, তথাৎকালাৎ পুৰপতিমৃত্তির্জিব্যাতীন্তাতত, জিরামুটানবাতিরেকেণাণি প্রাসূত্র্ক জিরারাঃ সাধনবিপরিণামহেত্বেন ব্যাপারদর্শনাৎ
কাল্য; তথাৎ পুরক্,গালাভিমৃত্তির্জিব্যাতাত আহ—বিলং স্ক্রহোরাজাভাবার্য। >

छाहारे मृक्ति, बन्द जाहारे केंजिमृक्ति 1786181

স চ কালো বিৰুপঃ—বহোরাত্রাফিলফণঃ, ভিব্যাফিলফণক; ভত্ত আহো-রাত্রাফিলফণাৎ ভাবদভিবৃক্তিনাহ—আহোরাত্রাং হি সর্বং লারতে বর্ততে বিশ্বতি চ; ভবা বজসাবনক—বজস্ত বলবানস্ত চকুরখন্ত্র্যুক্ত; শিষ্টাভজ্জাণি পূর্বব্যেরানি। ২

व्ययानक व्यवसम् न्य नायनसम् अवासाविक्रक्षविद्यस् दिस् अविदेशस्त्रास्त्रा हुके २८, न बुक्तिः; तारसम्बद्धातिकाकारसम् हृद्धा बुक्तिः; देनर बुक्तियाकियुक्तितिक नृत्यस्यः; आविक्यासकारमानस्य दि नारदासारम नक्ष्यकः । ১८६। ३॥

क्रीक्षाम्बाक् न्यस्य वाकत्।

* जिन्हा । अवारप्रकारी वारपरावान-वाक्यहरकारिः (अवारपुरवानि । कार्वेद्यानकार-ज्ञेनेतृनेद्वानाजीकि। विकासकार विन्तिनाकः। नापनाकात्रिका कार्याः कर्व मृत्तुनिक्यूबनक्राकः क्रिशाः नापनाबाः विनारिनाक्रयक्रुकाव जारमा वृष्ट्राचरकोरकिक्षण्यस्य एकार्यः। व्यवस्य देवार्यः। व्यवस्य द्वार्थः। वीन स्मारेकन, एक क्योक्कारक मुक्ताविकानकार-- सुधानि।क i - क्योक्सनक्षेत्र णांतक बृष्टावर ब्रार्थावनकि-क्रियाकि । वृष्ट्युशाय निर्व क्रिक्यांच-क्रियां मिन्छ। वेषध्यस्य व्यवस्थितसः एकः गांगः विमक्ति । वाश्यानसंस्थाः व क्पृंदक्श र रेवविवान्त्रवय् । कामक रेवज्ञत्य मकाक्षकिकाविवत्रवाय-क्रद्रशक्ति । महान वाबाहावृंक्षाव निष्य काका विवृक्तिका।, कावन कर्वावकापका।र व्यद्यानाज्ञी-क्यांचिक्ति। क्यमायमः इ वया वाकारः बाहरः वर्षतः वर्षाः क्रिक नवकः। शनवानात कार्यार्थनार-यञ्चामदर्काछ । न बृष्टिकाण जारनवार्गनार-य अपनिराष्ट्र आफ्रिया । वरेण्याक्शर्यः क्याहि-(बार्थ्यय्त्रिकि । स्वाह-वीकारिकावरक्षि क्ववरशास्त्रक्षाः वृत्काविवृत्तिक वाव-आदिवृत्काकि। '(बारवडा नाजरवडा' वैज्ञाविकारणवानिर्का वर्षाका नारवाकारक कः। क्यां ह क्यांकृषि विद्वाणि म एक मक्षरक देकाँची । ३००। ० ।

ভাল্যান্দু আদে। খবন পুনত বাজবভাকে সংবাবনপূর্কক বনিলেন প্রতাবসিদ্ধ অজানাসজ্ঞি-সুব্বিত কর্মন্ত মৃত্যু হইতে অভিমৃত্তির কথা পূর্ক্লাভিতে ব্যাব্যাত হইয়াছে; কনাসজ্জিসববিত দেই কর্মনে মৃত্যুর আগ্রম্থতণ অর্থাৎ বাহাবিগকে অবল্যন করিয়া ধর্ম-পূর্ণনাস প্রভৃতি কর্মনিচয় আরম্ভ হইয়া বাকে, সেই সাধনসমূহ বাহা বারা বিপরিলভ বিকারপ্রত) হইয়া বাকে, সেই কান হইতেও পূর্ব্বোক্ত এই 'অভিমৃত্যু' পূর্ব্ধ বা বজ্জ বছ; কারণ, জিরাজ্জানের অভাবেও জিরামান্তরের পরিবানজনক কান-ব্যাপার প্রভাক হইয়া বাকে; অভগ্রহ কানাভিরিক্ত অভিমৃত্যুর অভিমৃত্য অভ্যান্ত অবল্যই বক্তব্য; সেই উল্লেখই প্রতিভেন্ন—বে কোন্তর্য অভ্যান্তরের বৃত্তি অবল্যই বক্তব্য; সেই উল্লেখই প্রতিভেন্ন—বে কোন্তর্য অভ্যান্তর বয়, ভংগনভাই অহ্যান্ত্র বারা আক্রান্ত । ১

केशर र कारम क्या यम रहेन. त्यहे काम जानाह हरेकार विकक्त अरु निवाहाजायक, जनह किशिजकृति यहन ; क्यारा अवस्य जाराहाजायक काम रहेरक मृथ्य जिल्लाक क्या प्रतिक्वरण —जाराहाज हरेरकरे मयक यस क्या वाक करन, इक्तियास हह, अरु कारमञ्जास रह ; अरेडान सामन्याहा सम्माराह हम्हायहम जाराह्मीक जाराहाज रहेरक वय, विक कि विवास आस नह। अधित जयनिक जाराबाह्मीक गाराहा मूर्यकर । द वस्तारमहरू (चाविका) ७ वस्तर् (विक्तिराय) और विविध मान्यत्व छेन्द चानाचिक ७ चानिरकोडिककात गांतकाभगूर्यक (न, चानिरमणकारम मृद्धि, कानार दक्षि चर्चाए चन्यत्र चानिकाद्याम वर्णम क्यार मृद्धि । भूर्यात कात्र अवारमध मृद्धिर चाकिक्षणमंत्राका रहेशा पारक ; कात्रन, (न स्वाक चाकिकाणि देवस्तकान आक रहे, कारात मन्दर्य चात्र चारात्वार्य-मन्द्र मुख्यमात्र सह मा ३५३०।३३

যাজবন্ধ্যতি হোবাচ—যদিদখনবাং পূর্বাপক্ষাপরপক্ষাভ্যা-নাপ্তত সর্বাং পূর্বাপকাপরপক্ষাভ্যায়ভিপরং, কেন বজমানঃ পূর্বাপকাপরপক্ষারাপ্তিমভিষ্চ্যত ইতি। উদ্যাত্তরিকা বার্ন। প্রাণেন; প্রাণে। বৈ বজক্ষোপ্যাতা, তদেঘাহরং প্রাণঃ স বার্ঃ স উদ্যাতা স স্তিঃ সাতিষ্তিঃ ১১৪৭৪১৪

সাক্ষকার্থা। [ইয়ানীং ভিগাদিনখনাৎ কালায়তিম্কিং বকুং বাজবভোতি সবোধনন্] উবাচ হ—বং ইয়ং (সুপ্রবানং) সর্নং (বল) পূর্ব-পঞ্চাত্যাং ভিল্ল-ক্ষপভাত্যাং) ব্যাধ্যং—সর্নং পূর্বপভাপর-পঞ্চাত্যান্ অভিপন্নং (কবলীকতব্) [তবতি ; তর পূচ্ছাবি—] বলবানঃ (বজবর্জা) কেন (উপারেন) পূর্বপভাপরপঞ্চাঃ আবিং (আক্রবং) অভিমূচ্যতে (অভীত্য মুজ্যে ভবতি) ইতি। বাজবত্য আহ—] উন্নাত্রা (সাববিষা) বিভাগ বাহুনা প্রাণেন (বিভ্-্যকর্ণনি নিমুক্তে উন্নাতরি বাহু-ভূতবাবসূত্যা অভিমূচ্যতে ইতি ভাবঃ।) বৈ (বতঃ) বজপ (বলবানত) প্রাণঃ উন্নাতা; তং (ভর) যা অয়ং প্রাণঃ, নঃ বাহুং, নঃ (প্রাণঃ) উন্সাতা, নঃ (প্রাণঃ মুক্তিঃ, না (প্রসিদ্ধা) অভিমূলিং [চ] ; ভিন্সাতরি অধ্যাত্ম-পরিজ্যেরং পরিভাল্য বা প্রাণাত্মক্তীঃ, বৈন কালায়ভিমুক্তিংব্দু-বিভাগেরঃ] ৪১৪৭৪৪৪

क्यां विश्व क्यां व्यापित व्यापित क्यां वर्षे व्यापित क्यां विश्व क्यां विश्व क्यां व्यापित क्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यां व्यापित क्यापित क्यां व्यापित क्य

कृजीरब्रोद्यां स्थानिक व्यापनम् ।



(বজ-করা) কি উপারে সেই শুলু-কুক্পকের আক্রমণ বইতে পরিক্রাণ পাইতে পারে ? - [বাজকরা বলিলেন—] বার্-প্রাণাশক অবর্থী থবিকের বারা [পরিক্রাণ পাইতে পারে]; কারণ, বজরুপী বজবানের প্রোণই বইজেহে উপসাতা; বাহা এই প্রাণ, তাবা বার্বরূপ, তাবার উপসাতা, তাবাই সুক্তি এবং তাবাই অতিসুক্তি ৪১৪-৪৫৪

भा श्रु झ- छा न्या था। देशनीर विधाविनक्याविवृक्तिकारकविवर नर्क्यरात्राज्ञात्रात्रविनिद्धेतात्राक्तिकाः क्या, न श्रीक्यवाद्यात्रात्रात्रविनिद्धेतात्राक्तिकाः क्या, न श्रीक्यवाद्यात्रविनार विद्यान्ति ।

क्षित्रवाद्यान्ति । विद्यान्ति । विद्यान्ति । विद्यान्ति । विद्यानिक श्रीक्षेत्रवाद्यान्ति ।

क्षित्रवाद्यान्ति । विद्याने विद्याने । विद्यानिक विद्यानि

্থাপি চ, বাহ্নিবিজ্ঞা হি বৃদ্ধিকরে চল্লবসঃ; তেন তিথাবিদ্যালয় কানস্ত কর্বাপ করেরি চা বাহুঃ; অতো বাহ্বপাপরঃ তিথাবিকালাবতীতো ভবতীজ্যপারতরং ভবতি; তেন প্রভাবরে চল্লভ্রেশণ কৃষ্টব্ জিবতির্জিত; ইং ভূ কাথানাং সাধনবরস্ত ভংকারণরপেণ বাধ্যক্ষনা কৃষ্টব্ জিবতির্জিতেভি ন প্রজ্যোবিব্রোধঃ । ১৪৭ । ৫ ।

िका । विवादक वार्यांगार—इन्हांनीचिकि । वार्यांगारेकर वार् विवादिक्का वार्यांकर्णगार वार्यांग्रेक्षा विवादिक्षणार वार्यांग्रेक्ष्य । वार्यांग्रेक्ष्य (विवादिक्षणार वार्यांग्रेक्षि । वार्यांग्रेक्षण वार्यांग नार्वेदि सरकातिकरवारावविद्यार्थः। वेवृत्तर्विद वाववृत्वाकारः व क्यायरवायाक-क्या वरदृष्टीकि 'वावृत्त्वविद्यार्थः। वेक्य कावृत्त्वविक्रणेयसकात्—व्यक्तिः। साह्य वृत्त्वाका क्यितिरको व्यवश्यक व्यवस्या वृत्तिहारतो। व्यवस्य विक्रायरक्षत्रकः एक्टरेकार्थः। श्रुव्याविरवृद्धक क्षिण्याद्य—(क्ष्ट्रशक्तिः। क्ष्णुं क्यारकवार्थः। वार्या-क्ष्यय्यवि काविकृत्ववृत्ति अञ्चरक क्षिण्यादः, क्ष्याय-क्ष्यक्र क्षेत्रिः। विकाश्यिकरवाय विक्रम्यद्वाकास्य नवस्यकः। क्ष्यार्थः। व्यवस्य व्यवस्थायकार्थः। वेक्षस्य आगरकार्थः। क्ष्याकस्य व्यवस्थायकार्थः।

ভালব্যা-মুন্নাদে। এবন ভিথাহিত্বপ কাল হইতে অভিমৃতি বলা হইতেছে—হর্ণাদের হইতেছেন—কূল্যবভার হিবারাত্রের কর্তা, কিন্তু প্রতিপদ্ প্রস্তুতি ভিধিসমূহের রাস-রতি সম্পাদন বারা চল্লা হইতেছেন—ভিধি-সমূহের কর্তা বা প্রবর্ত্তক করা বার, তেবনি চল্লভাব-প্রাপ্তি বেবন অহারাজাবিকার অভিজ্ঞম করা বার, তেবনি চল্লভাব-প্রাপ্তি বারাও ভক্লপদ্ধ প্রবিকার অভিজ্ঞম করিতে পারা বার। উন্পীধ-বাদ্ধে আনা পিরাছে বে, বল্লযানের বে, প্রাণবার্ত্ত, তারাই প্রকৃত উন্পাতা (সামবেলীর পরিক্); এবং সেখানে ইহাও অবধারিত হইরাছে বে, 'বল্লযান বাক্ ও প্রাণের সারাহোই উন্পীধ পান করিরাছিলেন এবং লগ হইতেছে এই প্রাণের পরীর, আর এই চল্ল হইতেছে তারার ল্যোভিশ্বর রূপ'; এইরণে করা বাইতেছে বে, প্রাণ, বারু ও চল্ল প্রকৃতপদ্ধে একই পলার্ব; স্কৃতরাং উপসংহারে চল্ল ও বারুর উরেব বাকাতেও বন্ধপত ক্যোক্ত পার্থকা বিনিত্তিহে না; এই অভিপ্রারেই প্রতি অবিলৈবতন্ত্রপ বার্বারা করার উপসংহার করিরাছেন।

আরও এক কথা—চল্লের বে, প্রান-রৃত্তি বইরা থাকে, বার্ই তাবার ব্ধা কারণ; অভএব বৃধা বাইতেছে বে, বার্ই তিথাদি-কালসম্পাদক চল্লেরও প্রস্তুতি বা কার্য ঘটাইরা থাকে; অভএথ বজনান বে, বার্তাব প্রাথ বহরা তিথাদিরণ কাল অভিক্রমণ করে, ইহা স্থানতই বটে। এই কার্যই, অভ প্রতিতে বে, চল্লেওণে বৃত্তিকে বৃত্তি ও অভিবৃত্তি বলা বইরাছে, আর কারপ্রতিতে বে, অবোরাল ও তিথাদি, এই উভরবিধ নাবনে অংকারপুর্ত্ত বার্ষণে বৃত্তিকে বৃত্তি ও অভিবৃত্তি বলা বইরাছে, ইথাতেও কোন রূপ বিরোধ ঘটাতেছে না ১৯৪৭৫৪

प्रकारकार्याम् -वायम् वायन्।

বাজনক্ষ্যতি হোবার—ব্যবিদ্যন্তরিক্ষনারক্ষণনিব, কেরাক্রেশ বল্পনার বর্গং লোক্ষাক্রমত ইতি। ক্রন্থপতিলা মনসা
চল্লেশ; মনো বৈ যক্তক্ত ক্রন্থা, ভাষাবিদ্যং মনঃ গোহসো
চল্লং স ক্রন্থা স মুক্তিং সাহতিমুক্তিরিভাতিযোক্ষাঃ। পর
সম্পদ্য—৪১৪৮৪৬

ज्ञान्तार्थः। [ज्ञानः श्रूमक राज्यदाणि मद्यादान्] जेवात द-वर्षः व्यविकार (जानानः) ज्ञानुकार (निवानकार) देव [वृत्रक]; [ज्ञानकार ज्ञान विकासक हें जानिकार]। क्य (क्या क्या ज्ञानकार ज्ञानकार कार्याक हें ज्ञानकार (क्या क्या कार्याक) ? है जि। [याज्यकाः ज्ञाव-] व्यवना किया यमना त्रव्य [ज्ञाक्यकाः]। यमः देव (() वृक्षक्ष (वृष्यमानक) वृष्या ; ज्य (ज्ञार) वर्ष हें हर यमः, मः (ज्य मनः) ज्ञानं () त्रात्मकार) त्रव्याः , मः वृक्षिः, वाः, ज्ञाकार हें ज्ञानं । ज्ञानं (व्यवस्थाः) ज्ञानं (व्यवस्थाः) ज्ञानं (व्यवस्थाः) व्यवस्थाः) [ज्ञानकार (व्यवस्थाः) । ज्ञानं (व्यवस्थाः) [ज्ञानकार) [ज्ञानकार) व्यवस्थाः) । ज्ञानं (व्यवस्थाः) [ज्ञानकार) व्यवस्थाः (व्यवस्थाः) [ज्ञानं कार्याकार) [जञानं कार्याकार) [ज्ञानं कार्याकार) [ज्ञान

ক্ষান্দ্রভাদে। অবল পুনশ্চ বাজবহাকে সংখ্যাবনপূর্বক বলিলেন—এই যে, অন্তরিক (আকাশমণ্ডল) নিরালঘনবং দেবা বাইতেছে, অর্থাৎ ইয়ার কোনও অবলঘন জানা বাইডেছে না; সেই অবিজ্ঞাত কোন অবলঘন জানে বজ্ঞমান বর্গলোক লাভ করিতে পারে? [ভত্তত্তরে বাজবন্ডা বলিলেন—] ক্ষিক্ বজ্ঞা ও সনোরূপী চন্দ্র ঘারা; কেন না, প্রকৃতপক্ষে মনই বজ্ঞের বজ্ঞা; বাহা এই মন, ভাহাই এই চন্দ্র, ভাহাই বজ্ঞা, ভাহাই মৃক্তি ও ভাহাই অভিমৃক্তি; এই সমস্কই অভিমৃক্তির প্রকারভেদ। অভংগর সম্পদ্পাসনার কথা বলা ভইডেছে—1>৪৮বলা

ল্পা ক্ষেত্ৰ আ আ আ । বৃজ্যাঃ কালাকতিবৃত্তিবাব্যাতা বলবাৰত লাক্তিবৃত্যবাদঃ কেলাবইতেন পরিজেববিদাং বৃত্যবতীতা কলং প্রায়োতি— অভিবৃত্যতে—ইত্যুত্ততে—বহিলং প্রনিভবতবিজ্যাকাণৰ জনাম্ববিদা নতন্ত্যি, ইব-শবাদভাবে ভ্রান্তবন্, ততু ন আয়ত ইত্যতিপ্রায়ঃ। বয় क्षणात्रवानवानवनाः, क्ष नर्सवाद्वा (करमिक गृक्षारक ; जक्षणा कर्मधारश्वन नंदवार ; रावावहरक्षम जाकरवन वक्षणाः कर्मकाः व्यक्तिः वक्षिणकवान जिल् कृष्टि, किः विविक्ति धार्थविषदः ; रक्षम जाकरवन वक्षणाः वर्तर (जाक्षणाक्षण-हेकि वर्षर (जाकर क्षणः धारधावि जविष्कृष्ठक हेकार्यः । अक्षणा विविधा वनमा हरस्रारमञ्जूकत्रकामः गूर्ववर । >

ভ্রাধ্যাত্বং বজ্ঞত বলমানত বহিনং প্রাসিতং মনঃ, নোহনোঁ চল্লঃ অধিবৈশব ; বনোহগাত্বব, চল্লবা অধিবৈশ্যনিতি হি প্রসিত্তব ; দ এব চল্লবা
লক্ষা বনিষ্, ভেন-অধিভূতং জ্ঞানং প্রারিজ্যিং ক্লপব অধ্যাত্বং চ ননসঃ,
এতন্ত্রম্ অপরিজ্ঞিনে চক্রবনো রপেণ পগুতি ; ভেন চল্লবনা ননসা
অবল্যনেন কর্মকাং বর্গং লোকং প্রায়োতি অভিমূচ্যত ইত্যতিপ্রায়ঃ।
ইতীভূপসংখারার্থং বচনব ; ইত্যেবভাকারা মৃত্যোরভিবোকাঃ ; সর্মানি হি
কর্মপঞ্জারাধি বজাকবিবরাণ্যবিশ্ববস্ত্রে উক্তানীতি করা উপসংখারঃ—
ইত্যভিবোকাঃ—এবভাকারা অভিবোকা ইত্যর্থঃ। ২

चर्य नृष्णका-चर्य चर्ना नृष्णक छहारतः। नृष्णयं नाम-क्निहिर नामास्त्रंने चित्रद्वाताचीनार कर्ष्मार कृत्वर्धार स्वयर्धार स्वयर्धार स्वयर्धार स्वयर्धात्र नृष्णाक्षमम्, नृष्णयं कृति वा नृष्णाक्षमम्, नृष्णयं कृति वा नृष्णाक्षमम्, नृष्णयं कृति स्वयं स्वय

हिन्छ। विषयविक्रणिकारि क्यावस मृत्याम् वृत्याम् — प्रत्यामिति ।
कांवावकारक्यादम विकारत त्यवताः देवन्य स्वयम्प्राद म्यम्बर्गतम्
वृद्धिः स्वरः व्यवत्यक्ति—वृद्धिः व्यवस्थादः । व्यवस्थादः व्यवस्थादः ।
क्याविक्रः स्वयम् — व्यवस्थिः । व्यवस्थादः । व्यवस्थादः । व्यवस्थादः ।
क्यावि — द्याद्धिः । व्यवस्थादः । व्यवस्थादः । व्यवस्थादः । वृद्धिः व्यवसः । वृद्धाः देव व्यवस्थादः ।
क्याविक्रः व्यवस्थादः । व्यवस्थादः अवस्थादः । व्यवस्थादः ।
क्याविक्रः वृद्धाः व्यवस्थादः । व्यवस्थादः । व्यवस्थादः ।
क्याविक्रः वृद्धाः । वृद्धाः । व्यवस्थादः । व्यवस्थादः । वृद्धाः ।

एगैरप्रार्थाप्तः—अनगर बायनम्।

পতিবিভাগৰাৰ—কৰ্মাণীতি। বাধাবাৰ্তভাত কৰাবাৰতিভাগেৰে বিব্যক্তি ইভাগ-একস্থাকাৰা ইক্তি। ২

व्यवन्त्वा वर्गनवात्कवक्वनानवर्गार्थः । ८०३ः नव्यवादाकि वृक्षकि - वृत्वक्राह्यकि । देवहबार-(क्रम्तिविक् । यहंतर क्ष्मरकाक्ष्यत्रशाविकर्त्वनाः कर्त्ववारिना नानारक-नाबीकार कर्पम विवक्तिकार्या मन्त्रक्तिः मन्त्रकारकः। व्यानकाविद्यासाविद्यार्थि-त्मनाष्ट्रवरावि यहा निर्वार्काक देकि शांकर मन्त्रविकार्यः । वरा कमरेखव त्यवरमाकारमञ्जून-वाविमामारक्षनाकाक्षकियु मन्नावका मन्नाविकावि-इक्काटकाकि। मन्नावकावाकाव-वावर्गविक-काटक्रीरक्रीटक्ट्रमिक्ति। वनक्रशांश्वर्षांतक वरविक त्वरः। विविधान मन्नवक्षेत्रास्त्रविकात वृक्ति वर्नीतक्षांत्रश्चित्राहिः मत्तिकाक्ष्यः । विद्वारत्यायीयानिकि निर्वारत वत्रे । व्यामकार व्याधावाकृत्रपृतिक वावर । जानादृष्टकाञ गानामनामन्त्रीकृतकाकि । म (यश्याः कार्यकृतियः मन्त्रपृष्ठीकृत्यकारक, विक त्रव्यविकारकृतिकार-व्यक्तिः। ब्रायन कर्पक्रवादारकार्यः। कर्पात्माय कमग्रीय न मणानव्यवस्था कामाः कर्पायकार्यः। न्याह-अञ्चरक्षितः विश्विताहरूपर्वकाराष्ट्रवेताविश्वन्यवदा क्यरप्रविदेशः व sincanting मत्यानकृत्रेनमञ्ज्यः, कर्यवादिकानावनि देवनिकानार Cकराविनकृतेनामक-वार प्रदेशाः अरवादमार्थवयाञ्चनकाः नन्त्रश्यति कमवक्रत्रदेशिकार्थः। र्यशाहिकमञ्च कथवतीक्या मन्त्रका बाहिविकानका नावबानागाहिकाक्रिककार---बाह्रीकि। छन छ०पाठेः वासावार्य अत्विक्त पूर्वान नवछः। ववावन्छ क्यवरत् वक्रत्य क्षित्रवार-क्रमानिकि । क्या श्वारशायीयाविकि वादर । वाक्यावीयार शक-प्रशासनावर्गातकाः वन्तरेषत वयमनवादावनि कि निराधि, क्यार्-जिल्लाच

শিমিন্তি। কৰ্মণানিবেভি দৃটাভাবেঁছিশি-পদা:। ভাষাং কলবাৰ ক্ষিভৱাৰ---আন্ত ইণ্ডি ৪ ১৪৮৪০ চ

ज्ञान्त्र वाप्तः वनवात्तर कानद्वत्ते गृश् दरेख त अकारत्र विवृद्धि दरेख भारतः ज्ञान क्षित्र दरेगः। तारे वनवान विवृद्धिः गांव नगरत कांव छभारतः वाजात शक्तिः नगीवविषयक गृश् विक्रम कतिता क्ष्म आंव दर वर्षाय विवृद्धिः दर, अवनः ता क्षा वर्णा दरेखादः— और ता, अनिव व्यविक—व्याकान वनात्रक वर्षाय निवानवात्तर कांव अकीव दरेखादः [व्यावकान रेव] अविद्ध 'रेव' वक्ष वाका पूर्वा वारेख्यः ता, निकारे रेवांवे अकी व्यवका ना वाजात व्यादः, किंव कांवा वांवा वारेख्यः ना; और त व्यविक्षांक वानवन, कांवारे अवारत नर्वनाय 'रक्षम' गर्वं विक्षानिक दरेवादः । यद्ध्य विक्षानकन-आंवित्र नकांवना वाद्यः गा, वर्षाय अवात कांवा अकी विक्षित्र व्यवका ना विद्या वंश्वर्षो क्यांव गरिक अववात कांवा नक्ष्मि वादक मा। अवारत अहेवा विक्ष दरेखाव হই বে, বৰবান, বে অবচ্চ বা আগ্ৰা বৰণ বিজ্ঞানে কৰ্মক প্ৰাঞ্চ হৈবা অভিযুক্ত হয়, নেই বভটা কি ।—নৱনান কোন আনদ্দ-বিজ্ঞানে বৰ্মকন নাজ্ঞান কৰে অৰ্থাৎ ক্ষরণে বৰ্মনোক লাভ কৰে—অভিযুক্ত হয়। 'প্ৰকাশ বিজ্ঞা বনসা চল্লেন' এই কথাওলিও অৰ্থ—পূৰ্বোক্ত 'উন্নালা কৰিলা' ইভাাকি কথাৰ অৰ্থন অনুন্তন ।>

শভাগের সম্পত্-ক্রিয়া সমূহ কবিত হইতেছে—সম্পত্ শর্ম—শবিক কল্লাভের উদ্ধেরে বন্ধ কল্মনক শন্নিহোত্রাদি কর্মসমূহকে তহপেকা উৎকট কর্মন্ত্রণ সম্পাহন করা, শব্দা ব্যাকেই কল্মণে তাবনা করা (১); [শতিপ্রায়

⁽১) ভাবপরা—কোন একটি সাধান্ত ধর্ম নইরা কুল্লকারক কর্মক বে, অধিক লবক বিষয়ালে অনুটান করা, ভাষার নাম সম্প্র। বেমন অভিযোগ্ধ একটী কর্ম, অধ্যমের একটা কর্ম; অভিযোগ্ধের কন অধ্য, আর অধ্যমেরে কন অধিক। অবচ উভারেই সাধান্ত কর্ম কর্ম; অভিযোগ্ধ কন অধ্য, আর অধ্যমেরে কন অধিক। অবচ ভাষার কন পাইতে ইক্ষা আছে, সেই লোক আপুনার অনুটানবোদা অভিযোগ্ধিক কর্মেরে বজ্ঞ মনে ক্ষিয়া ব্যাবিধি সম্পাদন ক্ষিরে, এবং ভাষার কন অধ্যমেরেই কন লাভ ক্ষিয়ে। ভাষার বিভাগ বাবান্য ভাবপ্রা এই বে, কর্মান্য আর্থি কন্ধিকে ভাষা কর্মকার্যক কিন্তা ক্ষিয়েন। বেমন অভিযোগ্ধান্ত কন জ্যোভিন্ত কর্ম, ব্যক্তর আর্থিকার্যক ক্ষিয়ের চিন্তা ক্ষিয়েন। ব্যবহান্যকার্যক কন জ্যোভিন্ত কর্ম, ব্যক্তর আর্থিকার ক্ষিয়ানে চিন্তা ক্ষিয়ের।

पृष्ठारमध्यामः अवन् वाचनन्।

এই বে,] বাহার। পূর্ব উভবে কলসায়ন—কর্মাহ্রানে প্রহুত হার। ভারাব্রেক্তি কোন একটা বৈশ্বনা বশক্ত অন্তর্গনে ব্যাখাত হইতে পারে; নেই কারলে অবিকৃত পূক্রম আবিভাগি (অনিহান্ত্রী) হইরা সভবরত বে কোন একটা কর্ম অবস্থান করিয়া বিজ্ঞাত কর্মকলের বব্যে, বে কর্মকল্টী পাইছে অভিনাবী হয়, অবস্থিত কর্ম হারা সেই কলই সম্পাদন করিয়া নাইছে পারেন; নচেৎ রাজ্যর, অথবেন, নরবেন ও সর্মবেন প্রস্থৃতি বে সমত কর্মে রাজ্যাদি বর্ণন্তরের অধিকার উক্ত আছে, ভারাব্রেও সেই সমত কর্মের অনুষ্ঠান করা অসভ্রন ইহা পরে। ভারাব্রের বিল ঐ সমত কম্প্রান্তির কোন উপারই না বাকে, তবে সে সম্বর্গের উল্লেব কেবল অব্যৱনার্থ অর্থাৎ পাঠাবাত্রেই পর্যাব্রিত হইতে পারে, (কোন কাজে আসিতে পারে না । অভনার বলিতে হইবে বে, সম্পদ্ধরণেই ভারাব্রের সেই সমত্ত কম্প্রান্তি হইয়া বাকে; স্বভরাং সম্পদেরও সক্ষরতা আছে; সক্ষরতা আছে বনিরাই এবন সম্পন্তর্গনের কর্মা আরম্ভ হইতেছে । ১৪৮ ৪ ৬ ৪

যাজ্ঞবক্ষোতি হোবাচ—কভিভিরব্যস্থার্থি কর্হোভান্থিন বজে করিয়তীতি। তিফ্ডিরিতি, কতনান্তান্তিত্র ইতি, পুরোহসুবাক্যা চ যাজা চ শক্তৈব তৃতীয়া, কিং ভাতির্বরতীতি, বংকিকেনং প্রাণস্থানিত ॥১৪৯॥৭॥

अञ्चलाक्षर्थः [जननः नाक्ष्यरद्याद्य न्यान्तर्भ] छैना ह—
जनः (हाठा (वर्षण्यिः वर्षिक्) जन्न जनित् (जन्न जन्म) नर्वान्तः । वर्ष्यक्षिः (किन्नः गरंवान्तः) वर्ष्यक्षः [कर्षः] किन्नष्ठि हेठि । [नाक्ष्यका जाहः—] जिल्लीक्षः (वर्ष्यदान) [किन्नपादि] हेठि । [ज्यंनाः श्रृतन्नाहः—] जाः (प्रमृत्याः) किन्नाः (विन्नान्ताः) हेणि । [न्याः (वर्षान्यका जाहः—] 'श्रृरताहृश्याकाा'क, 'नाक्या'क 'नक्यां अत्र कृष्योतः । [श्रृताः वर्षाः—] काचिः (केन्नान्त्रः क्ष्यः) कर्वाकः (वर्षान्यका जाहः—] काचिः (केन्नान्त्रः क्ष्यः) कर्वाकः (वर्षान्त्रः क्ष्यः) कर्वाकः (वर्षान्त्रः क्ष्यः) १ हिष्ठः । [केन्नः —] हेरः (कृष्यनानः) वर्षाकः वर्षान्त्रः (वर्षानिकाकः) हेष्ठि । । । ।

युक्तान्युक्तान्तः। जनम शूनण विकामा निव्हान्य-नाक्यकाः और रशेषा जाव और रहक रूपकान प्रस्ति शास सर्व स्विट्स ? राजनकः विनिध्नि—जिन्छी कर्मा वाता। [भूनण्ड क्षात्र इदेश—] त्नादे जिन्छी कर्मा कि कि ? [जेखत—] (>) 'भूरताश्च्याकाा,' (२) 'दाखा!' क कृतीत्र कर्म 'भणा'। [भूनः क्षात्र वहेन,] त्मादे जिन्छी कर्मत वाता त्मान क्षा करतन ? [जेखत—] এই वादा किंदू श्रानिकांड (की व क्षार), जादा कर्म करतन ॥>৪৯॥१॥

শা ক্রক্সজ্ঞান্তাত্ত। বাজবড়েতি হোবাচ পতিব্বীকরণার।
'ক্তিভির্বাভগ্ ডিহোঁডাবিন্ বজে'—ক্তিভিঃ ক্তিস্থ্যাভিঃ বগ্ভিঃ
বগ্লাভিভিঃ, পারং হোডা ববিক্, পবিন্ বজে করিভতি শারং বংসতি ?
মাহেডারঃ—তিক্তিঃ বগ্লাভিভিঃ—ইত্যুক্তবভং প্রত্যাহ ইতরঃ—ক্তনাভাজিল ইভি ? সংখ্যাবিবরোহরং প্রশ্নঃ, পূর্বত স্থ্যাবিবরঃ।

विका। मण्यामाञ्चर्तमाण वधराणात्वानमण-वाक्रवरणाक्षीकः। वडीकः मानाव सामग्रे-किकिकिकामिनाः। प्रतिकः प्रथम हेवि व्यारतासिकारकरः वर्षप्रि-वर्रावारक्षिः। स्थावितः मान महारणि प्रावित् वाविद्योगाणाक-स्थाविकि। यथा स्वित् प्रवाधिकारः। विस्तरकरार मर्यानपान्तप्रकिः। यकक मण्डिकनानिकार्थः। मस्यानावाधिकारित्यापिकि शास्त्। वात्वव्याकः स्वाकः वस्र विकास (१४०) । ।

क्काम्याम् व्यान्तः। याक्यरकात यरमाराजार्थ व्यक्त काशास्त नरवायत्त कृतियां विकाना कृतिस्तन—[यस स्वरित,] 'कृष्टिकः व्यय वक्त वर्णकः वृत्तिः व्यय वक्त वर्णकः वृत्तिः व्यव वर्णकः वृत्तिः वर्षाः वर्षाः

যাজবদ্কোতি হোবাচ কত্যরবভাধের রিমিন্ বল শাহতী-হোন্ততীতি, তিল্ল ইতি, কত্যান্তান্তিল ইতি ? বা হতা উজ্জ্যনিত, যা হতা অভিনেদন্তে, যা হতা অধিশেরতে; কিং তান্তির্জ্জনিতীতি, যা হতা উজ্জ্যনিত বেবলোক্ষেব তান্তির্জ্জনিত, বীহাত ইব হি বেবলোক্য, বা হতা অভিনেদন্তে পিতৃলোক্ষেব তান্তির্জ্জনিতাতীব হি পিতৃলোক্য, যা হতা অধিশেরতে বসুব্যলোক্ষেব তান্তি-র্জ্জনিতার ইব হি সমুদ্রলোক্য ৪১৫০৪৮।

जन्मजायाः [भूनक राजयरशिक मरवारशम्] जैराव द-जनर प्रश्नपूर्वः (स्व्रूर्णस्कः विष्कः) पण जायन् रांज कि (किंग्र्यम् रोज्याः) पाव्योः (स्वाणि हेणि । [राज्यशः जाय---] कियः [जाव्योः (सांगणि] हेणि । [भूनः क्षाः] काः (रह्काः) कियः (जाव्यः) केव्यनिः, राः क्षाः जिल्परः] साः (जाव्यः) क्षाः (जानिकाः मधाः) केव्यनिः, राः क्षाः जिल्परः | साः (जाव्यः) क्षाः (जाविकाः मधाः) केव्यनिः, राः क्षाः जिल्परः (जात्रे नवरः क्षांकि), राः क व्याः जविरायरकः (व्यवस्ताः वसः जिल्पे) । [भूनः क्षाः] क्षांकः (जाव्यक्तिः) विरं राषिः (जिर कार मधरकः) हेणि । [जर्जाकान्] साः क्षाः केव्यनिः, क्षांकः (जाव्यक्तिः) (स्वरंजाकन् अतः क्षांकः, वि (रुपार) (स्वरंजाकः विनाहक वेद हैं जब कानक नीविनायांका आहाक कानाक कारक राज काक)। यह कांक पाकित्यांका कांकि निक्रांका कर कांकि। रि (निनाद) निक्रांका (करविनी प्रताबक निर्वाकारोक गांविकि।) मानिय हैं कांकियांका कर्यक ; जक पंचनायांच निन्न क्रियंक हैंकि कांका) ; मान क्षांका करित्यांक, कांकि वस्त्रारंकांका क्षांका के क्षांक ; रि (प्रवाद) वस्त्रांका करा (प्रतिरंजाकारोक्या भारतांक हैंव) [मकारक ; जका कांक्र मान्तिय प्रस्थातांक-मन्त्रांका किश्रांक हैंकि कांका]। २४० । ৮॥

क्ष्मान्युकारः। क्षम भूमक मरवायमभूसंव बाळवदारः विद्याम कतिराम-अरे जमार् जार्गर मक्रियानिय जिन जान और गरक क्रामें चार्क पात्र (संय कतित्वन ? गांधक्या विगालन—क्रिकी पात्र । भूनवीत विकाम कतिलन—त्मर किमी बाहकि कि कि ? [वांकक्का ৰ্তিলেন—] বে সমত আহতি অপিত হইয়া প্ৰকৃতিত হয়, বে সমত আন্ততি অতীৰ বাস কৰে, জায় বে সমস্ত আহতি গলিত হইয়া ভূমণো সঞ্জিত হয়, [সেট ভিনটি আছতি ভাষা ছোম করিবেন]। [পুনর্বার গ্ৰেপ্স হইল,] বজ্বান নেই ডিনটা যারা কোন কোন লোক জয় করে ? [উত্তর--] বে সমস্ত আহতি উত্তল হয়, সে সমস্ত আহতি ছারা वर्गालाक वस करत ; कातन, वर्गालाक वकावकर रवन नीशियान বলিরা প্রতীত হয়; আর বে সমস্ত আছতি বিষ্ট শক্ষ করে, সে সমত আহতি ধারা শিক্লোক কর করে; কারণ, শিক্লোক-সম্পর্কিত ৰনানৰে বাজনাপ্ৰাপ্ত নাৰকি পুৰুষগণ বিকট শব্দ কৰিয়া থাকে; [क्रेस्ट्रबन महा अरेक्टन महमगढ मामुक वरिवाद]; जाव द मनव আছাতি ভুমাৰ্ড সক্তি হয়, সে সমত আহতি বারা বজনান সমুস্তলোক सब कतियां चोटक ; कावन, वबुख्यांक जावावनकः वजीवितांक व्यटनका (सम निवर्की बनिवार (बार एत : [अरेजन नागुण निवदन वसमान के वार्योक्ट महत्त्वानक गण्याक क्रिय] 1500 1 ৮ 1

व्यक्तिक-क्रांक्श व.। राज्यस्मिक स्थापकित पूर्वतः। क्वार-स्माक्ष्म व्यक्ति क्व व्यक्तिस्थिति व्यक्ति व्यक्तिकार्याः। क्रिय देखि । स्थापकि क्रिय देखि पूर्वतः। रेखन व्यक्तिना क्वारिकारिकारः। मा एका व्यक्तिमारक वकीय नेपर पूर्विक वारमाजारकाः, संबंधा व्यक्तिस्थाः व्यक्तिवारमा नमा पूरमः व्यक्तिमारक नक्तिमाणकाः। किर व्यक्तिमधिक व्यक्तिमस् निर्विकारिकारिकिकः किर व्यक्तिक।

বা আহতয়ে হতা উল্লেখিত উল্লেখ্য আহতয়ে নির্বিটার, প্রাথ নেবলাকার্থার উল্লেখ্য ; তেন নানাজেন বা বরা একা উল্লেখ্য আহতরে। নির্বালানার, তা এতাঃ—নাকালেবলোকত কর্মকনত ভানে বেলোকার্থার কলমের বরা নির্বাজ্যে—ইতোবং সম্পাদরতি। বা হতা অভিনেদকে আহতয়ার পিতৃলোক্তবের ভাতিল ইতি, মুংনিতনককর্মনাবাজেন ; পিতৃলোকনকভারার হি নবোজাং পুর্বাহ বৈষয়কেন বাভ্যমানানাং হা হভার করে, মুক্ত মুক্ত ইতি নকো ভবতি ; তথা অবহানাহতয়ঃ ; তেন পিতৃলোকনাবাজাৎ, পিতৃলোক এব বরা নির্বাজ্যে—ইতি সম্পাদরতি। বা হতা অধিবেরতে, বহুবালোক বের ভাতিল ইতি, ভ্রুপরিসহত্যাবাজাৎ ; অব ইব হি অব এব হি বছ্যা-লোকঃ উপরিভ্যান্ সাব্যান্ লোকানপেক্য, অবনা সংবাদননবলেক্য ; অভো নস্বালোক এব বরা নির্বাজ্যকে—ইতি সম্পাদরতি পর্যনোবাহতিনির্বাজন কালে ১২০০চার

िकां। श्रवाः गर्यापिरता विकास मर्यापिरता स्वास्त मर्यापिरता स्वास्त मर्यापिति । एव गावारकाम्बरण्यति । केवर्ष मिन्नान-एक्स-एम्बरण्यापिति । करा गाराचारकीमार मिक्रमारक मर स्वाक्त मोबकाक मार-भिक्रमारिकाकि । व्यवसानीयम्बर्धाकि — मिक्रमारिकाकि । व्यवसानीयम्बर्धाकि — मिक्रमारिकाकि । व्यवसानीयम्बर्धाकि — मिक्रमारिकाकि । व्यवसानीयम्बर्धाक्यम् , व्यक्ति । व्यवसानीयम्बर्धाक्यम् , व्यक्ति । व्यवसानीयम्बर्धाक्यम् , व्यक्ति । व्यवसानीयम्बर्धाक्यम् । व्यवस्त नामाकाक्ष्मिक्यम् । व्यवस्त नामाकाक्ष्मिक्यम् । व्यवस्त नामाकाक्ष्मिक्यस्य । व्यवस्त नामाकाक्ष्मिक्यस्य । व्यवस्त नामाकाक्ष्मिक्यस्य । व्यवस्त नामाकाक्ष्मिक्यस्य ।

कामान्त्रवादः। 'नाकरताव दानाव' व क्याव वर्ष पूर्ववरः।
'कवि वर्ष प्रव व्याप्तः पनित् रत्य दानावि देवि' [वरे नात्या विकासः।
क्षा दरेस (१,] वाष्ट्रि क्ष क्षमाः ! [केष्ठ वरेस--] क्षिम क्षमाः ;
[भूगः क्षम दरेस--] भूगरे किसी वाष्ट्रि कि कि । नाक्षमा विकास-पृष्ठ व नृतिश्वकृति वयाप्तः (१ नगण वाष्ट्रि व्यक्तिः वरित्यः वर्षमाः
क्षमानिक व्यः, वनः नारमाविक्याप्तः (१ नगण वाष्ट्रि व्यक्तिः वर्षमाः
दरेशां वकीय भय करतः, वाष्ट्र वृत्वकर्तः नावेशा विकासं करतः, [स्वरेष्ट्रियां वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षमाः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः

क्रमाम् ।

আইটি বারা কোন কর করে ? পর্বাৎ উচ্চ একারে সম্পাতিত নেই আইডি নর্য বারা কোন কল লাভ এবে ? [উত্তয় হইল—]

त नवर बाहरि बहित्र बर्निक हरेता अव्यक्ति रह : गणाविक तिहें चार्किनवर (यदन केवानगुक, जारांत क्ना (क्वनि केवान-रागरमाक (पर्वामाक्)। कन ७ चाहिकाच अहे क्षकांत्र केव्यमण-शर्मक नाना बाकांत प्रवचान परन कतिरव रत, जानांत गण्णांतिक रद, और गमक উল্লেখ আছডি, এই আহতিসমূহই সাকাৎ বেবলোকরণ আহতি-কন वक्रम, अवर अहे चाहकि मन्नांदर्गहे स्वरणायमायक वर्णकार चार्नाह नृत्वाविक दरेन ; रक्षमान अहेकरन कर्यनुत्वार निर्मार कवित्रा शास्त्रम । बांद (व नवब बांहिं बंदियांत नव कंडिया बांटक, क्रिनिंड (विकर्ड) লক্ষ্মলন্ত্ৰণ ধৰ্মের সাধ্য বাকার, সে সমত আহতি বারা নিক্ষাই পিডলোক বাহ করে। পিতৃলোকের সহিত ব্যক্তব্দের সকল আছে; সেই ব্যপুরীতে বাহারা প্রদ করে, ভাহারা ব্যরাজকর্ত্ত নিপীভিত হইরা 'আবরা— ब'रावय, शाक-शाक' वनिवा क्रिकात कविरक बारक : बारमावित जावकि-श्रीकृत क्षेत्रम् विकडे नम् कृतिहा शास्त्र : निकानात्कर महिक अहेहन नम-शांधा बाकात, बक्रवान बरन कतिराय रा, धरे चाहकि-मन्नांगरमरे चावार निकामांक सम कर्य-क्या नामाविक स्टेरकाइ ; स्थाम अटेसरम नामार-कर्य বিশাহ করিয়া বাকেন। আর বে সবত আছতি গলিয়া ভূবিগত হয়, নেই গৰভ আছভি যায়া বছবালোকই বন করিয়া বাকে; কারণ, ভূবির উপরে অবস্থিতি-বর্ণটা উভরেরই স্বাদ; কেন না, কর্ণপভা টুলারিত্ব অপরাপর 'লোক অপেকা বছতলোকটা বেব পথ্—বিশ্ববর্তী विवादे वत्न दत्र ; जनना निवनानिक वर्णक कूमनाक क्षेत्रन क्लीकि হয় ; পাতনৰ হুত ও মুভাবিষয় আহতি সন্দাহৰভালে,—'আমি এই আহতি নামা বহুতবোকই সম্পাধন করিছেছি'—এইমণে সম্পদ্ কর্ম করিয়া 11 M 1 34. 1 4 1.

बाधवरकाणि द्यांबाह, कणिवत्रवामा वाषा बचार विकारणा रावकाणिरजीशावजीरकाकरत्रणि, कण्या रेगरकणि, वन ' अरबजा-वाहर देव बरवाश्तका विरय राचा जनकरवय म रचन स्माकर व्यक्तकाव्यक्तः [व्यक्तः तृत्वति वाक्यरक्षि त्रवावाद्] विवाहव्यक्षाः वक्षः वक्षः (व्यक्ष्णितकार्त्तः) विवाहव्यक्षः (व्यक्षणिकः वक्षरः देवानाविकः त्रव्यकः (व्यक्षणिकः वक्षरः देवानाविकः (व्यक्षः) वेकिः (व्यक्षः) विवादः (व्यक्षः) वेकिः [व्यक्षः व्यक्षः (व्यक्षः) वेकिः [व्यक्षः वक्षः (व्यक्षः) वक्षः (व्यक्षः) वक्षः (व्यक्षः) वक्षः (व्यक्षः) वक्षः (व्यक्षः) वक्षः (व्यक्षः) विवादः (व्यक्षः) विवादः (व्यक्षः) (व्यक्षः (व्यक्षः) (व्यक्षः) (व्यक्षः (व्यक्षः) (व्यकः) (व्यक्षः) (व्यकः) (व्यक्षः) (व्यकः) (व्यक्षः) (व्यकः) (व्यक्षः) (व्यक्

मूलान्यारः। जनम श्रृनक राज्यस्यारः मरवायमपूर्यकः जिल्लामा कतिरान—वक्षा (अक्षम कविक्) जान रिवर्ण जास रिवर्ण जास रिवर्ण जास रिवर्ण जास रिवर्ण जामा विद्या जामान वारकः कामा रिवर्ण जामा अदे यस क्षमा कतिरण्यमः । [जनम जिल्लामा कित्रिणन—] अकी रावजा कामा। [जनम जिल्लामा कित्रिणन—] रावे अकी रावजा रिवर्ण विद्यामा विद्यामा विर्याणन—] रावे अकी रावजा रिवर्ण विद्यामा विद्यामा विद्याणमा विद्यामा विद्याणमा वार्म विद्याणमा वार्म व्याप वार्म वार्म व्याप वार्म वार

णीक्षा-क्रांच्या । राज्यस्तिः (राराहिः पूर्वरः। वश्य विष् वणा विष्या वणागति । विष्या वणागति । विष्या वणागति । विष्या (राणाशिः । विष्या (राणाशिः । राज्यस्ति । त्राणाशिः । त्राणाशिः । वणागिः ।

रवपका, क्या गर्मना दि त्यांपाशकि ज्ञान प्रकृत क्षेत्र प्रत्न प्रकित्वरायामको । देशनीया व्यक्तिपारमाञ्चल । व्यक्तिस स्वनं पानको । क्यांग्याकियोगितना रवपार, प्रात्न देव विकासका, "मार्स स्वनं परिवापर क्यकि" देकि व्यक्तिकार, त्यांग्यांनामाकायवर्षय न स्वनं त्यांगर प्रप्ति ।२४ अअ

क्षिति। विशेष वास्त्रीक्षण १ १० देशवासकाकि ॥ २०० ॥ १० ॥ १० व्यक्तिकार व्यक्तिक व्यक्तिक स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

पहास्त्रास्त्र्वास्। 'राज्यरहाडि हार्गाठ' क्यांत्र वर्ष-गृत्त्ररः। परिकृत्तः इक वर्षा गांवावण्डः हार्णात्र विक्रणात्म वीत्र वागतः केम्रत्यन-गृत्तंक राज्यका कृतिया वारकनः । यह वृद्धिः तथा यान क्रण्डिन त्यका पात्रा वाणात्र । अर्थ गृत्तं श्रातः वह्यहत्तत्र श्रातः वाणात्र श्रातः वाणात्र । अर्थाः कृति हेत्रार्थः । क्या ना, तथा त, अक्षीयात व्यक्षा पात्र । व्यक्षा कृतिया वारक्ष, हेत्र व्यक व्यवहत्त (व्यक्षाक्षः) वार्षः । व्यक व्यवहत्त (व्यक्षाक्षः) वार्षः । व्यक व्यवहत्त वार्षः । व्यक व्यवहत्त वार्षः । व्यक्ष वार्षः । व्यक्ष वार्षः । व्यक्ष वार्षः । व्यक्ष वार्षः वार्षः । व्यक्ष वार्षः वार्षः । वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः । वार्षः ।

बार्याण्या राज्यका राज्यम्—अकडि तरका वादा; वर्षार अवा वर्षिनांवादम् वामान केनारवनमपूर्वक गादा वादा तक तका करवन, त्यरे राज्योडी अक (व्यायक नरर)। [वृत्य अत—]त्यरे अकडी त्यरवा त्य १ [क्या—]वनरे—त्यरे त्यरवाडी दरेरव्यत यम ; कात्रन, व्याय क वाप्

সেই হতের বৃহটি বর্ব। করা বাবন সংকর বা নৌনক্রত বারা উন্তর্ভার এক একটিতে পরিভৃত করেন; অভিনার এই বে, চতুর বৃষ্ট মার্ল্য তেকে এইটা তোপ আয়ে, চতুর শীকাবারক তেলাকি কোন ব্য इन्हरूच मिहित्य मान, वांका मानावांच्या ने क्षेत्री (कांत्य (नांता) वांता या । त्यांत्य वन-मर्वाय वांता इन्हर्म तारे हरेत्री (कांत्य मिहित्य क्षेत्री) वांत्य । त्यांति वांत्रवांत्य नांव्य व वांता किंद्र (तांव केंत्री) इत्य त्या गांत नांवांत्य (तांव विश्वति कर्मन ।' नहें नांत्रा यांत्रवे नांत्रिय वांत्रव्य वांत्य वांत्रवां वांत्रव

বাজবন্ধ্যতি হোবাচ কভারনহোদগাভান্দিব বজে ভোজিখাঃ ভোডভীতি, তিল্ল ইভি, কভনাভাতিল্ল ইভি, পুরোহসুবাকাা চ বাজ্যা চ পত্তৈব ভূভীরা, কভনাভাঃ বা অধ্যান্ধনিভি, প্রাণ এব পুরোহসুবাকাহপানো বাজ্যা ব্যানঃ শভা, কিভাকিকরভীতি, পৃথিবী-লোকনেব পুরোহসুবাকারা করভাভরিক্লোকং বাজ্যল ভূয়লোকহলভারা; ভতো হ হোভাবল উপরবাব ৪১৫২৪১০৪

रेणि कृषीवांशायक श्राप्त वाष्म्राम् । अ ।

जनस्वाक्षिते। [जनसः भूतति राज्यस्याचि मस्यानात्) चेनाव दजतः केनांचा (मानस्यकः विष्कृ) जित्रम् वस्क कि (कित्रभूरशाकाः
स्वाद्धिताः (स्वाद्धितानाः वदः) स्वाद्धित (मोद्धितः) हेति। [स्वाद्धितः केनाः (विष्यस्थाकाः (वदः) हेति। [भूतः क्षायः—] काः (स्वद्धितः केनाः (विद्यानस्थाः) ? हेति। [साज्यकः जायः—] मूर्शस्य साम् नामा इ, सामा इ, समा कर कृतीता। [भूतः क्षायः—] चाः (स्वद्धाः वद्धाः वद्धाः क्षायः ? (विश्वक्षाः ?) साः (वदः) जनांचः (द्धारे क्षावः वदः) हेति
[जस्माकवंयः—] क्षायः (केदंशवनायवः) क्षायः (द्धारे व्यक्षितः (क्षायः वदः)। जाविः (क्षायः वदः)। क्षायः (कषः)। कषः (कषः (कषः)। कषः (कषः)। कषः (कषः)। कषः (कषः)। कषः (कषः)। कषः (कषः)। कषः (कषः

क्ष्मिक कि महिंदि कि क्ष्म महरू)। देखि आहः [क्ष्मिकः] प्रमानकाम पृथितियां क्ष्म क्ष्मिकः, राक्षाः च्यादिकः, प्रकाः इ.स्ट्राह्मिकः [क्ष्मिकिः (प्रकः]। क्ष्मः (व्यापारः) (राक्षः व्यापाः १ (क्षित्रः) क्रेमरवान (क्षाः विश्राकः प्रकृतिकार्षः)। २०१। २०।

ইতি ভৃতীয়াখারে প্রথম আত্মণ ব্যাখ্যা। ০। ১।

পাক্তম-ভাষ্য ক। বাজবড়াতি হোবাচেতি পূর্ববং। কতি ভোলিয়া ভোষাতীতি অনুস্থাতা। ভোলিয়া নাম ধন্ সামসন্থায় কতি-পরানাবৃচাব। ভোলিয়া বাশতা বা বাঃ কাল্য বচঃ, ডাঃ সর্বাঃ তিত্র ক্ষেত্যাহ; ভাল্য ব্যাধ্যাতাঃ—পূরোংশ্বাক্যা চ বাজ্যা চ শতৈব ভূতীরেতি। ভাল পূর্ববৃত্তব কংকিকেবং প্রাবৃত্তং সর্বাং অরতীতি; তং কেন সাবাজেনেতি ভালাকে।

क्रमाकारिय कर, ना वशापर धनकीिक ; क्षान अन न्द्रशस्त्रवाका, न-वनावाकार ; बनादमा वाका,जानकर्षार—बनादम रि क्षक रविदर्वका क्षमार, नावन क्षमानम् ; गामा नका, "बक्षानश्चनाम्य,वनकियारप्रकि" रेकि क्षमानकार । १ ।

किः व्यक्तिक्षिकि गांगावम् । व्य दिल्यनवर्षनागाव्यम्क-विद्यक्तिद्वः । अर्थनक्वाकावम् । त्याकनवर्षनागाव्यम् पृथिनीत्याकत्वयः श्वताश्यकामा वर्षकः । वर्षाकत्वाकः राजामा, मधानकतागावाकः । प्रात्मकः

क्रारमध्याक्रम-सम्बद्धाः अचन्।

नकता, वेर्षप्रभागाकाद । करका र क्यांपायक क्यांपिनाद जरमी ह्यांका क्यां रेनप्रधान—माहत्त्रहाराज्य रेकि १२०६४२०।

देखि अन्तर्वरतात्रगारक क्षीकीवाद्यादि अन्यता क्लकाव्य १००० ह

तिकां। प्रविश्विक्षािकृतीकशारकार्यः विकानग्रायक-रक्षािकां स्विक्षः। व्यक्षिः। व्यक्षिः।

हेकि पुरुवादनार वाणनिवद्धारात्रीकाशार कृतीवारायक अववववनशाकान् कार

ভাল্যা-বুলাদ্। 'বাজবংগতি হোবাচ' এই খংগের , পর্ব পূর্ববং। এই উল্পাত্তা কতওলি ভোত্তির পাঠ করিবেল ? সাবাকারে পরিণত কতকওলি বরস্বাহীর নাব ভোত্তির কন্। ভোত্তিরা পরবা বজা নাবে বে কোন এক আছে, সে স্বতকে তিন বলিরাই নির্কেশ করিভেছেন, এবং পূরোক্সবাক্যা, বাজ্যা ও ভৃতীর পতা—এই কবার সেই পর্বই বিরুদ্ধ করিয়াছেন।>

रेखान्त व्यविक नवर क्षित रहेशाह (१, 'अरे यांश किंद्र आनि-स्वन, (न नव्यव्यक वह करवन', अवर किंद्रन वर्षनारवा क्ष्म करवन, कांशक केक रहेशाह ; अवन व्यवाच वक्षनवर यांश किंद्र विराव वाहर, कांश अवर्गन क्षिरक्ष्म-[अप रहेन-] व्यवाचित्रपत अर्थापाई रहेगांव केन्यूक (नरे किंगी) वस् कि नि ? [केक्ष्म, बहेन-] आवरे नूरवारस्थाका। ; कांग्य, केक्ष्मप्रकरे, न-अक्षमी नवान । व्यवाच वरेरक्ष्म यांगा ; कांग्य, व्यवक्षा वर्ष केक्ष्मप्रकर्ण नवान ; (क्षम ना, यांग वर्ष-द्वाका केक्ष्मप्र वचा वंशन, त्नरे वंशनकार्गक्ते जनाववार् कांचा निर्वादिक दरः जाता जनाव वांचा द्यापीर जया व्यक्त दरः, जनश्य (प्रयम्नापन दनरे द्यार द्यानव करवनः क्वार केव्यत्करे जानवर्ग गर्यश्च नांचा शविवादः। यांन बरेरकद्यः नंत्राः कांचन, अकांक्टर जांदर—'व्यान क जनांद्या किंवा द्याक जांक्शि ग्रांननांद् वांचा करकर केवांचन कविंद्या पारक' ्रं >)। २

বৰ্ষান নে সম্ভ থকের খাঁরা কি কল লাভ করে, ভাষা ব্যাখ্যাভ হইরাছে; সেথানে সম্বন্ধত সাম্য প্রভৃতি যাহা কিছু অন্তক্ত মহিরাছে, এবন এবানে কেবল ভাষাই কলা কইডেছে; ইহা ছাড়া আর যাহা কিছু আছে, ভাষা পূর্বেই বর্ণিত কইরাছে। পূথিবী-লোকের সহিত সম্বন্ধত সাম্য থাকার পূর্বেহির্যাক্তা। যারা পৃথিবী লোকই বর করে, ব্যাবর্তিকরণ বর্ষান্য থাকার বাল্যা যারা অভন্তিক লোক এবং উর্ভ্র (সর্বোণরি ছিজিরূপ) ধর্বের সাম্য থাকার বন্যাভকের যারা ছালোক (মর্গলোক) কর করে। ভাষার পর—আগনার প্রয়োভর লাভের পর, সেই হোডা আর্থ্য বিশ্বত ক্ষমেন—এবাজি আবাহের প্রাজ্যের নহে বৃথিয়া নির্থ ক্ষমেন র ১০২ ৫ ১০ ৪

देकि इरवाजनारक कृषीवानारर अध्य आवरनत वानाम्बार १०१)।

^() व्यवनके—सारवन्तान्यविका बाद्य — वः वानान्यवास गरितः वः वानाः,"
सर्वतः वान व वनाव सङ्ग् त्य प्रवितः वर्गतः विभागः, वासंव नाम—सानः । देश रहेतः
पूर्वः वानेश्वरतः तदः वानप्रवित्व नवतः वानः व वनात्रकः वानाव वृत्तिः वातः । वस्तिः व्यवनावः विकानाः वातः व वनार्यः वानाः वन्तिः वर्षः व वस्तिः वर्षः । वस्तिः
स्वतित्व वर्षाः वैद्यानाः व वनावः । वस्तिः वातः वस्तुः वातः वर्षः वर्षाः वन्तिः वर्षः । वस्तिः

विचीत्रर जापनम्।

व्यास्थान्य । नाशाविनात्रकः विति वर । द्राणीः विविधिकां। वाणानात्र । नाशाविनात्रकः विति वर । द्राणीः विविधिकां। वाणानात्र । क्ष्मेण्यां । व वाणाविनाजानात्र नाशाविक्षिकः। वाणाविक्षेणां । क्ष्मेर पत्रिक्षिकाः। वाणाविक्षेणां विविधिकाः। वाणाविक्षेणां विविधिकाः। वाणाविक्षेणां विविधिकाः। विविधिकां। वि

वश्यािक्षण यह्मप्रकृष्ठ, कवािय वहािक्षशाकावितिर्वृक्ष अव वृक्षाह्मपाकाम् ; क्यात्वाकम्—"जनाहा हि वृक्षाः", "अव अव वृक्षाः" देवि वािकाइर प्रवाविक्षाहाः ; "अरका वृक्षाक्रशा" देवि हः क्षांच्यावाणस्या वि वृरकाहािक्षिक्षण्य देशाहारकः ; न ह कव अहािक्षार्थः वृक्षाह्मपो न काः "जरेषण्य वनता रहाोः पहीत्रर रक्षाकीक्षणयमादािकाः," "वक्षक अरुः, । कारकािक्षारम् वृद्धीक्षः" देवि, प्रकािक—"आर्था देव अरुः, तारमारमािक आर्थम्" देवि,—"वारेष अरुः, न नाहािक्षारम्य देवि हः। क्या आविकारम्य याच्याक्ष्याक्षिः ; श्विहािक्षर देविर-—वर्षय अविकाह्मप्र, करस्य निवृत्वि काश्यरं न क्युक्तीकः। २

কেটিবু সর্বাবের নিয়নিকারণং বছতে। পতঃ কালাং—পূর্ববাৎ পূর্ববাং স্বাবাং স্বাবাং স্বাবাং স্বাবাং স্বাবাং স্বাবাং বালিকারণ প্রতিপ্রভাৱ বালিকারণ বালিকারণ স্বাবাং স্বাবাং

नर्गराव्यसम् व्यवस्थानम्। तस् गरेर्यक्यः (यायः, "क्याः क नर्गराव्यः" देकि अरकः; वास्यः, क्यरकाक्ष्मिः, न पू "आवकार्या सम्बद्धः "नक्कार्या परक्षः" देकाविक्रकीनाः कार्यान् ; विष् दि व्यरकार्यस्यानाः आवश्यकीयस्य न वृत्यस्य ; वृत्यस्य । - क्यक्सरेयक्रिश्चास्तिस्य ; विष ह देवस्थितसः क्ष्म्याः कार्यारयः, मानाः अ चर्य जारर्याशि चन्निमाविक-भवार्ययज्ञायः मरमाद देखि हिर, वदा ह वर्णवर्तनार्य चारमारक मर्रकाशि जजहा क्षकाश्चल क्षकः, म, क्ष्रवागाह्मभाविकः ; चर्णवर्षायः देविकामार कर्मगार विज्ञामित्रज्ञामाम् चक्रजाञ्चनिमाविकरम् क्षर्याग्रमभाविः—म क्षेत्रज्ञस्, माञ्चनामम्, चक्रक्य हे म चानमः। छज्ञ रमस्म वार्काम क्षर्यक्र चे दिक्त हिर्मा क्षर्यक्रमात्रामा क्षरियर, जञ्ज, क्षरम् वार्कामनीञ्चनिक्षण्यकः; म देवकर्याका मञ्ज्ञार्यक्र क्षर्यक्रिमहिन्नायमम्बन्दमस्य मन्त्रार्कः द्रमाक्षिमहानारमात्रामार्विक क्षराक्षणाद्यासः। १

বৰপূচ্যতে—নত্ৰা অবিয়ৰ্বে দৃষ্টা ইভি; অয়বেৰ তু ভাৰদৰ্বঃ প্ৰবাণাপন্যঃ; মন্ত্ৰাঃ পুনঃ কিষ্মিশ্বৰে আহোমিদভামিশ্বৰে ইভি মৃণ্যবেতং। তথাদ্এহাভি-প্ৰবৰ্তনা মৃত্যুৰ্বন্ধঃ, তথালোকো বক্তব্য ইত্যত ইদ্যায়ত্যতে। ৬

ন চ কানীয়ে বিষয়স্থাবিবান্ধরানেংবহানষ্ট্রনরতীয়ং কৌশলন্।
বন্ধু সূত্যোরতির্চ্যত ইত্যুক্ । এহাতিএহাবৃচ্যেতে, তবর্ষসক্ষাৎ; সর্বোহরং
সাধ্যাসাধনলকণো বন্ধঃ, এহাতিএহাবিনির্দোকাৎ; নিগড়ে হি নির্জাতে
নিগড়িতক্ত যোক্ষার বন্ধঃ কর্তব্যো তবতি, তথাভাগর্ব্যেনারতঃ।

তীকা। বাধণভাষণভাষনাথারিকা কিববৈতি প্রধানং প্রভাক-আপ্রাথি-কৈছি। বাধনবা হি বিশ্বাক্ষর্বপান্ত প্রভাকী সভাতে নার্ভভাগ্রণ বিশ্বানাথানিত। বিশ্বানাথানিত বিশ্বান

অন্নারীনাং ববোভবৃত্যবাধিত্তাং বাজীকরোভি—আন শীক্তি। অধিনির্পত এবা ভিত্তজন্দীতি শেবঃ। তথাপি কবং হঞ্জ ববোভবৃত্যবাধিতভাব—তথা চেতি। তথাপি ক্ষানারীনাং বৃত্যবাধিং, ব হি ভত্ত প্রথমিতি, ততার—প্রক্র ইতি। বহবা ইতি জ্ঞান্ত্রন্থ। তথালি বিশ্বো বৃত্যোগতিত্তত ব তথাভিবিভাগিতাক—ক্ষান্ত্রাক্তি। সৌত্রে প্রে বৃত্যবাধিং প্রকারভাবেশ প্রকারতি—স্ব ভেক্তি। বর্ষি কার্যক্ষরাধান

190

विषयाविकाण देववास्य क्षेत्राति क्षेत्रं वैद्यक्तिविद्युदेविकाः नृत्यत्यकानिकादि—सम्प्रकृष्टि । वाषाद्यस्यक्ष्याद्यकः वद्यव्यक्षित्वद्यकः व दिव्याप्तर्कः किसात्राविकानिकादः -क्ष्रद्रश्रीकः। वर्षयक्षक मरमात्रवाक्षक वर्षयकः दर्भावः श्वर पृष्ट्यव्यद्यद्यकारः—सृत्विकानिकादः दिव्यापकः वर्षय वर्षयः कर्षे पद्यवद्यवि व्यवास्यतः, कर्षयः विविद्यक्षतः कार्ष्ययकः कर्षयमः देवव्यापकः श्वरं वव्यवद्यद्यकः।

প্ৰতমুক্তা বভাভরবাং—ক্ষেতি ক্রিক্তি। সর্বাবের কর্মেড নেব:। পর্বভারবাকো द्यशायक्रीनवृत्तिदर्शादनाव्यवादका कञ्चारिकावनिवृत्तिकारैनविकिकविविवर्शाक्यवायम् चार्धाविक अवृत्तिविदवादशं विदयदेशयु नाक्यादेश विवर्गनिक अवृत्तदेश विवर्णाद्य, कदेशवर नव्यदेशव कर्षकाक्त विश्वविद्यास्य व्याक्तन्यविद्यार्थः। वद् नाष्ट्रीयाः कर्षात्रा (स्टबाक्यवद्यार कार्याकवर्गमञ्जाहमाज्यकार्थकार्थकार्थकार्थकार्थकार्थः मञ्जाकार पूर्वमान् मृह्यक, कर सूर्वा নিবৃত্বিশ্বর্থং কর্মকাওভেডাপেলার-জ্ঞান্ত ক্রার্থাস্থিতি। বছীবন্তরবৃত্তর সাতি-नवः कार वाक्नेनकार नवः, क्वनि वात्रावादवारनकदवन वात्रकिवात्रा त्याक्रवकाविक्कूर न पू करेवर थानागरका गरर करक्कारगर्वार; क्रकाणि निवक्तिगरक्नकाकाराविकार्य:। क्विक्वार-रेज्य रेजि। वचार पूर्वर पूर्वर पविद्यालाक्यम्बर विविध्यान-चन्नत्रिक्षकात्रा मुकार्यस्य कन्नर अधिनद्यास्य म क्रू कक्षरमध्यासार्यस्य वाकार मुकार्यस्थास **क्यार देश्यमगर्गहर मर्त्वाश्यि क्यावित्या मृज्यक्यार ७७।ए**व(वनाम्महार । वानाशासार्वशासम (बाकार्वाश्विठेटक, हिब्बावर्कव्याखा देवककर पू वहटका बुरकाशिवकीका पश्याबद्धराप दिरहा पुरका करकि। क्या ह वक्ष्याकाराकृष वसीकृ ह नक्ष्वाञ्चलाशान् गरश या छन्दरमञ्ज्ञादिः ना बनारमञ्ज्ञि नची दोनी बृज्यिन्ता कृ पूर्वादेकरपणार्थः ।०

সর্ববেশ্বরুপ্রেকাবারেণারভিতং ন তৃ বৃংবারণাকত প্রভাবত বাংগ ইভি ব্যক্তি—
ক্রম্মেক্তিলিভি। নর্মেক্ষরকলো বোলো বৃহবারণাকার এবারাভিক্তাতে তংকরবস্তুক্তর্বার্থারণাক্ষিতি পততে - মৃত্রিভি। অসীকরোভি—আঢ়ুমিভি। অসীকরণে বিশ্বরভি—ক্তন্তর্তীভি। এতংসর্কৈক্ষরারণাকার্থা তবতাপীতি বোজনা।
করণ তর্তি নর্মনেত্র্যার্থারণাক্ষিত্রাত ভ্রার—মৃত্রিভি। ব্যক্তরা রীত্যা কর্মক্রতীয়াং বংগাতবোজার্থাৎ বইতে, তেন সর্ববেত্রেগংগ্রেক্তিং স্ক্রান্তানাং ন বোজার্বাতাবং সমর্বভতে—যদ্ধি ক্রিভি। ক্রয়ালানং ন বোজার্বভিত্তি

ব্যক্তিনাং বোজার্বভাবাৎ স্বর্গার্থতে—যদ্ধি ক্রীভি। ক্রয়ালাং ন বোজার্বভ্রেভি

ব্যক্তিবার্থার্থান্তর্বান্ত্রেভ্রতি চ বিধিনিবেশার্থনে), ভ্রোক্তেৎ ব্যক্তর্যাত্রা

ব্যক্তিব্রণ্ড, তার হ্রেভাবাৎ সংসার এব স্ব ভাবিভাবি—সদি ক্রেভিত্তি ।

ব

विविविद्यवद्यार्वितृष्ठियाता वृद्धार्थरपरि विद्यार्थिकामायष्ट्रविष्णाविद्धा यः कर्ष्यप्यार्थः, क्षणां प्रकार प्रक

বিশ্বাং চাৰিশ্বাং টেডাবেছা হয়: বৰ্জ্যপন্ন দৃষ্টা:, বৰ্জ্যক কৰ্মকাৰ্ক বিশ্ববিধানা ব্যাক্ষাৰ্থিক চাৰিশ্বাং বিধানীতি প্ৰত্য —হান্ত্ৰীতি : কৰ্মকাৰ্ডেকাৰা মোকাৰ্থ্যক ক্ষাণ্ডিক প্ৰিচ্ছাৰ্ড ক্ষাণ্ডিক ক্ষান্ত্ৰী ক্ষাণ্ডিক ক্ষাণ্ডিক

वंकविक्रमनवक्षमध्यक्षिकाःमकाव-जिल्ह्यारिन्धां का है। है।

वस्त्र वनकावर वसात कृष्टर वा व कर्गक किस्तृत्र ग्राह्मभावनिकि, कर्ग्यक्ति—म् ट्राल्डिः वर्ग व कार्यक्ष व मान्योदि विवद्यक्षण्डिट्यस्थारम्ब्यून्य पूर्वदेर, यदा कार्य-स्कृष्टेशः पाकार्यक्षं व सामार्थित क्षंत्र व कार्योदि । यदा क्षण्डित्य स्थाप्त व्याप्त वार्या सामार्थ्यक (वार्य पूक्ष्यव्यक्षण्डित) स्थाप्त—याद्वि । युरक्षश्वादिवक्षणः कृष्ट्यक्ष देकुक्षा वरमञ्जूत्र क्षण्यक्षण्डित्यस्थानः क्षण्यः मन्तः मान्याग्यस्थान्तः वच वेकार्यवाधिक्षाद्यः द्वाहर्यक क्षण्यवि व मृत्रुप्तवादि कार्यः मन्तः मान्याग्यस्थान्तः व वेकार्यवाधिक्षण्डः कृष्टि — सम्यक्षित्रस्थानिक्षण्डाक्ष्यक्षण्डात्यक्षिक्षः व्याप्ति क्षण्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्षः व्याप्ति प्रव्याव्यक्ष्यक्ष्यक्षः व्याप्ति व्याप्ति । व्याप्ति क्षण्यक्ष्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्ष्यक्षः विद्यान्यक्षः व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति विद्यान्यक्ष्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान्यक्षः विद्यान

আছে। সভাজানি লাপ। পাণারিকার দহিত প্রকৃত বিষয়েও বে, কিল্লপ সম্বন্ধ বা উপবাদিতা, তাহা প্রসিদ্ধই পাছে। ইতঃপূপে কাল ও কর্মন্দ সৃত্যু হইতে অতিমুক্তির করা বর্ণিত হইয়াছে; এখন প্রেপ্ত হইতেছে বে, এই সৃত্যু পদার্থটা কি, বাহা হইতে অতিমুক্তি বর্ণিত হইয়াছে ? হা, তাহা হইতেছে বভাবদিছ অজ্ঞানসর আদক্তির অবিকারভূতা এবং অর্থান্দ ও অবিভৃত বিষয় হাত্রা পরিজিয় এন ও অতিপ্রহান্দর সৃত্যু ; নেই পরিজ্ঞান্দর্শক সৃত্যু হইতে বে লোক অভিস্কু হয়, ভাহার অগি ধ चाविकाविषय सन रेक्टान्ट्र्स क्रितीयक्षप्रत्य वाशांक श्रेतास्, अवर चयांच क्रित्रं क्रित्

আর পূর্কে বে. অতির্জের বরণ নির্ফের করা হইরাছে, তাহাতেও
মৃত্যুরণী প্রহ ও অতিপ্রহ হইতে বিমৃক্তির করা অন্তক্তই রহিরাছে; দেব,
অক্তর উক্ত হইরাছে—আধিতা-মঙলাবিটিত পুরুবকে সক্ষা করিয়া বলিরাছেন
—'অপনারাই (তোজনেজাই) মৃত্যু' এবং 'একই মৃত্যু বতপ্রকার' ইত্যাহি
প্রতি বলিতেছে যে, সেই আধিত্যতাবাপর ব্যক্তি মৃত্যুর অবিকার
অতিক্রম করে। অবপ্র, একবাও বলা বাইতে পারে না বে, প্রহ ও অতিপ্রহ
মৃত্যুর বঙ্কপট নর; কারণ, পতি নিক্তে বলিরাছেন—'ভ্যালাক হইতেছে
এট মনের পরীর, এট আদিত্য ইইতেছে জ্যোতির্পর রূপ,' এবং
'মন একটা প্রহ, সে আবার কামরূপী অতিপ্রাহ বারা চালিত হর,' পরেও
ধলিবেন—'প্রাণ হইতেছে প্রহ, তাহা আবার অপানরূপ অতিপ্রহ বারা
পরিসূহীত'। অন্তর্জের বিতাপত্লেও আমরা এইরপই ব্যাব্যাকরিরাছি।
বিশেষতা বাহা প্রবৃত্তির কারণ, তাহা বে, কর্মনও নির্ভির কারণ হইতে পারে
না, আমরা উক্তমন্ত্রণে বিচারপূর্কক এ নীবাংসা করিরাছি।

ভাহাবের এ সমস্ত কথা নিভয়ই রহবারব্যক-সম্ভ নহে। কেন, সর্বা পথার্থের সহিত একং বা অভিয়তাৰ প্রান্তিই ত বোক ; কারণ, মাডি বলিজেছেন—ভিনি 'দেই ব্ৰছবিজ্ঞান প্ৰভাবে সর্জান্ধভাব প্রাপ্ত হাইলেন'
ইতি। ইা, ইহাও কডক সভা বটে—এছপও কছনা হাইভে পারে সভা,
কিছ ভা বলিরা, 'প্রামাভিলাবী ব্যক্তি বঞ্চ করিবে' 'প্রকাষনার বঞ্চ
করিবে' ইত্যাদি প্রতিরও বোজসাধকতা কয়না করা বাইভে পারে না।
এ সমরা প্রতিরও বলি অইছত-তত্ব প্রতিপাধনেই ভাংপর্বা হাইজে,
আর প্রাম, পত ও বর্গাদির প্রতিপাধনে উল্পেখনা বাক্তিত, তাহা হাইজে
এই সময় প্রতিবাক্যে কর্মাই প্রাম, পত ও বর্গ ফলের উল্লেখ বাক্তিত না;
অবচ, সময় প্রতিবাক্যেই কর্মফলের বিবিধ বৈচিত্রা দৃষ্ট হাইয়া বাকে।
পক্ষান্তরে কেবল অইছত-তত্ব প্রতিপাধন করাই বলি বেধ্যান্তর সময় কর্মের
এক্ষাত্র উদ্দেশ্ব হাইত, তাহা হাইলে ত কর্মফলাল্পক এই সংসারেরই জানিভাব
অসম্যর হাইত। ৩

বলি বল, আইবত-তব্যাবনে কর্মের তাৎপর্যা হইলেও, তাহার মতঃদিছা
মতাব হইতে সংসারের প্রাচ্চার হইলা থাকে; বেমন, কোন একটা রূপ
প্রকাশনের জন্য আলোক প্রজালিত হইলেও, তত্রতা অপরাপর সমন্ত বছাই
তাহা ছারা প্রকাশ পাইয়া থাকে, তদ্রপ; না—এরপ কথা হইতে পারে না:
কারণ, এবিবরে কোনও প্রবাণ নাই; জান-সহকারে অফুরিত বৈদিক
কর্মসমূহের আইবতহিছি মুখ্য উদ্দেশ্য হইলেও যে, অপর—সংসার জাহার
আঞ্বালিক কল্পরূপে নিশার হইতে পারে, এ বিবরে কোনও প্রমাণ নাই—
প্রধ্যতা প্রতাজ প্রমাণ নাই, ছিতীয়তা অন্যমানও হইতে পারে না; স্তরাং
আগম বা শক প্রমাণেরও সম্ভাবনা নাই। যদি বল, কুল্যাখনন ও
প্রমীপ প্রজালনের ন্যায়, জিয়াবিধারক একই বাক্যে উত্যই—যোক্ষ ও
স্থাদি ফল প্রমাণিত হইতে, পারে (১), না—এরপও হইতে পারে না;
কেন না, তাহা হইণে বাক্যের স্বাভাবিক রীতি রক্ষা পার না; কারণ,
একই বাক্যে প্রস্তি-সাধনতা (প্রবর্তকত) ও নিক্তি-সাধনতা, এই
উত্য ধর্ম কম্বনই প্রতীত হইতে পারে না; কুল্যানির্দাণ ও আলোক-

⁽১) ভাবপথা—ভূত্ৰ অপানগ্ৰকে 'কুলা' বলে, প্ৰাক্ষেত্ৰে অস্থিয়ার কৰা কুলা।
কলন ক্ষিলেত, ভদাবা বেনন প্ৰান্ধ পানাধি কাণ্য সম্পাধিত হয়, এবং সৃহ পোভার্থ—
ভালোক স্থাপন ক্ষিলেত বেনন ভদানা বন্ধন্দি ও প্ৰবন্ধনি উন্দেশ্য নিম্ন ইয়, ভেমনি
ক্ষেত্ৰিকৈ ক্ষিত্ৰি ক্ষিত্ৰ-ভন্ম বা মুক্তিন উন্দেশ্যে বিভিন্ন চইলেত ইন্ধানা অসমভঃ অন্ধাহি
সংসাহ ক্যু সম্পাধিত হুইতে গাহে।

আৰও বে বলা হইরাছে—এবিবরে বহতর যা কেবিতে পাওরা বার;
তোমার নে কথাটাও অপ্রাথাপিক; কেন না, নেই বছওলি কি তোমার
অভিষত অর্থেরই প্রকাশক না অভার্থের প্রকাশক, প্রথমে ভাহাই অভ্যন্তান
করা আবশাক; [স্বভরাং এরপ অপ্রাথাপিক কথার উপর নির্ভ্র করিরা
কোন সিভাত সংস্থাপন করিতে পারা বার না]। অভএব (স্বীকার করিতে
হাইবে বে,) রাহ ও অভিগ্রহরণী বৃত্যুই বছ; সেই বছন হাইতে বৃক্তির
উপার নির্দেশ করা একার আবশুক হাইরাছে, সেই অবশ্ব-কর্ত্রবা বিবরের
নির্দাণার্থ ট এই প্রকরণ আরম্ভ হাইতেছে। ধ

নিবর-সভিতে অর্থাৎ না ভাগরণ, না নিল্লা—এইরপ স্বার্থী অবস্থার
অবস্থান বেষন হতর, তেমনি অর্জন্তীর ন্যারে—বৈধিক কর্ম বভ্রেও কারণ
নয় বোক্ষেরও কারণ নর—এরপ স্থাবিস্থার অবস্থানের কৌলল আহর।
আনি না !(>) তবে বে, প্রথমে সুত্যু হইতে অভিস্কৃতির কর্মা বলিরা
পরে প্রহাতিপ্রহের কর্মা বলা হইরাছে, তাহা কেবল অর্থনম্পতিরক্ষার জন্য;
অতিপ্রায় এই বে, যত কিছু বছন আছে, তৎস্যক্তই প্রহাও অভিপ্রহা
পরিত্যাপ না করার ফল; অবচ নিগড় বা বছনরজ্বর তম্ব পরিজ্ঞাত
থাকিলেই নিগড়িতের বন্ধ ব্যক্তির) বছনছেখনে বন্ধ করা সন্তব হইতে পারে,
সেই উদ্পন্তেই এখন প্রহাতিপ্রহের কথা আরম্ভ ইইতেছে।

শ্ব হৈনং জারৎকারব শার্তভাগঃ পঞ্চছ যাজবন্ধোতি হোবাচ কতি এহা: কত্যতিগ্রহা ইভি, শক্তী গ্রহা

⁽১) ভাংপর্থা—বিশ্বত বনিষ্ঠান্তিন –বেংবাক্ত কর্মনানি দুল্প ব্যাক্ত কর্মনানি নাম বিশ্বত ব্যাহিন কর্মনানি দুল্প বােক ক্রিয়েই ক্রেন্থ নাম, কেবল বন্ধ বােকেন বর্ধার্থি অবস্থার ছিতির ক্রেন্থনান্ত, একবা বনিলে বােধ কি গুল্পতার আধানার বনিজেকেন—ইরা বর্গারেছে—'অর্জ্বন্তারি' ভার: বেনব একই লােকেন এক অর্জ্বন্ত অর্জ্বনান্ত, অপরার্থ একই লােক না বুলা, বা বুল, বাল্লানার্থি অবস্থার বর্জনান : ইরা বেনব নিজ্ঞান্ত অবস্থার, ক্রেন্তার্থি অবস্থার বালার অন্তর্ম, এইয়াপ অন্তর্মনানার্থীর অবস্থার বালার অন্তর্ম, এইয়াপ অন্তর্মনানার্থীর অব্যাহ্য বর্ষ।

শকীৰতিগ্ৰহা ইতি, যে তে২কৌ গ্ৰহা **শকী**ৰতিগ্ৰহা: কডৰে ভ ইতি ॥ ১৫৩ ॥ ১ ॥

ज्यस्तार्थः। अञ्चः भतः श्रशिक्षदमक्ष्मार मृत्जाविष्किः वस् यूनज्ञयत्य-चर्य (द्यापिता। जय (ज्यम-विद्यायानद्याः) कात्ररकात्यः
(क्षतः काक्ष्मरभीतः) चार्क्जातः (क्षण्ठणान्ताः, ज्ञाया वा विद्यः)
ज्ञार (वाक्ष्मवाः) भश्रकः (भृदेवान्) इ—; [मः] वाक्ष्मवाः
[मत्यावत्रम्] উवात्र द—श्रदाः कि (कित्ररम्थाकाः) । चित्रवाः [तृ]
कि । दिव्यविद्याः चार्द्यः चित्रवाः चर्त्वः चर्तः चर्त्वः चर्तः चर्तः चर्त्वः चर्तः चर्वः चर्तः चर्वः चर्तः चर्तः चर्यः चर्तः चर्तः चर्तः चर्यः चरः

মুলান্ধ্বাদে। সধল প্রশা চইতে বিরত চইলে পর, জরংকারেবংশীয় আর্বভাগনামক অভিক্ যাজ্যবদ্ধাকে সম্বোধনপূর্বাক বলিলেন—হে যাজ্যবদ্ধা, গ্রহ কতপ্রলি এবং অভিগ্রহট বা কতপ্রলি ! [যাজ্যবদ্ধা বলিলেন—] প্রহ আটটী, এবং অভিগ্রহও আটটী। [আর্বভাগ পুরুর্বার প্রশ্ন করিলেন—] সেই অটটী গ্রহ কি জি ! এবং সেই অটটী অভিগ্রহই বা কি কি ! ৪১৫২৪১॥

স্থাক্ষর-ভাক্ষাম। অধ হৈনম্—হ-শন ঐতিহার্থ:; অব অনধরং, অবলে উপরতে প্রকৃতং বাজ্বভাং করংকারু-গোত্রঃ আরংকারবঃ বততাপস্থাপতামার্থতাগঃ পপ্রক; বাজ্বভাঙি হোবাচেতি অভিম্বী-করণার। পূর্কবং প্রহঃ—কতি গ্রহাঃ কতাতিগ্রহাঃ। ইতি-শন্ধো বাক্য পরিস্বাধ্যর্থ:। ১

তত্র নিজ্ঞাতের বা প্রহাতিপ্রহের প্রপ্নঃ তাৎ, জনিজ্ঞাতের বা ?
বিদ্ধারা অতিপ্রহান্দ নিজ্ঞাতাঃ, তদা তদাততাপি ওণত স্থাারা
নিজ্ঞাতবাৎ কতি প্রহাঃ কতাতিপ্রহা ইতি স্থ্যাবিদরঃ প্রশ্নো নোপপছতে;
অব জনিজ্ঞাতাঃ, তদা স্থ্যের বিদ্ধপ্রয়—ইতি কে প্রহাঃ কে অতিপ্রহাঃ ইতি প্রইবাদ, ন তু কতি প্রহাঃ কতাতিপ্রহা ইতি প্রশ্নঃ। জণি
চ নিজ্ঞাতসামাজকের বিশেষবিজ্ঞানার প্রশ্নো ভবতি,—বথা কতবেছন
কঠাঃ, কতবেছন কালাপা ইতি; ন চান্ত প্রহাতিপ্রহা নাম পদাধাঃ

কেচন লোকে প্রসিদ্ধাঃ, বেন বিশেষার্থ্য প্রথম তাম। নমু চ 'অভিমৃচ্যতে' ইত্যক্তন, গ্রহগৃহীতত হি যোকঃ "না মৃক্তিঃ, নাতিমৃক্তিঃ" ইতি হি বিক্তন্তন্ ; তথাৎ প্রাণ্ডা প্রহা অতিপ্রহাক। ২

নম্ব ত্রাণি চনারে। প্রহা অতিপ্রহাক নিজাতাঃ—বাক্চকুঃপ্রাণমনাংসি, তর কতীতি প্রারো নোপপন্ততে, নিজাতনাং; ন,
অনবধারণার্থনাং; ন হি চতুইং তর বিবিক্ষিতন্ ; ইহ তু প্রহাতিপ্রহর্ণনে
আইন-গুণবিক্ষয়া কতীতি প্রার উপপন্তত এব ; তরাং "স মৃক্তিঃ,
সাতিমৃক্তিঃ" ইতি মৃক্তাতিমৃক্তী হিক্তে ; প্রহাতিপ্রহা অণি সিদ্ধাঃ।
অতঃ কতিসভ্যাকা প্রহাঃ, কতি বা অতিপ্রহা ইতি পৃক্তি। ইতর
আহ— অটো প্রহাঃ, আটাবতিপ্রহা ইতি। বে তেহটো প্রহা অতিহিতাঃ,
কত্রেতে নিয়বেন প্রহীতব্যা ইতি। ১৫০। ১৪

শ্ৰীকা। কৰি এহা ইভাষি: প্ৰথম স্থানিবছ্য প্ৰয়, কভাৰ চ ইতি বিভীৱ্য সংখাহিবছা, ইভাষ—পূৰ্কান্যান্তি। সম্প্ৰতি প্ৰভাকিশতি—ভ্ৰমুক্তান্তিন্দা। আছে প্ৰথমকিশা বিভীয়নাজিশতি—অপি ভেডিঃ বিশেষকভাজানেবিভিছনআৰ বিভাগি বিভাগি

ভবাশি ব্যৱহাৰস্থপন্নবিভাজের ত্রতে— তামু তত্রেতি । বাইৰ বঞ্চ হোকেরালা বিভি বাবং । বিজ্ঞানিবালিকৈ বিশ্বং । অভিযোজনাথকার প্রতিব্যৱহার বিশেষকৃত্বদাহাঃ সন্ধানিবিবল্পে এপন্নের্ বাবানিক বিশেষকৃত্বদাহাঃ সন্ধানিবিবল্পে অব্যোপনার্বভালাকোলাকোলাকোলাকার ক্রিলিক স্বাব্দি নাম্বালিকি স্বাব্দি নাম্বালিকি । ত্রেক লাইছার — মুক্রীতি । তার পূর্করাজ্বে বাবানিকি হাবং । ক্রিলাং অব্যান্ত্রাপনিকি ক্রিলিক ক্রিলিক লাকাং অব্যান্ত্রাপনিকি ক্রিলিক ক্রিলিক

ভাজ্যান্দ্রআদে। ক্রতির হ-শক্টা উতিহার্থক, পর্বাৎ প্রার্জ-ভোতক; পনতর—পরণ নির্ভ হইলে পর, পরৎকারুগোত্রীর পার্তভাগ —বভভাগের পুত্র সেই বাজবহা ববিকে প্রশ্ন করিবেন,—বাজবহার দৃষ্টি আকর্ষণের প্রভ প্রথবে ভারাকে সম্বোধন করা হইরাছে। পৃংশ্বর जाइ क्षत्र हरेग-कर कडी, अनः चडिक्टर कडी ! रेडि-नडी राजा-नवाबिएडक : >

এবন বিজ্ঞান্ত হইডেছে বে. এহ ও অভিএহসমূহ বিজ্ঞাত বাফিলেই छवियदा क्षप्त कहा मुख्य इत ? किश्या चिवकाल वाकित्महे मुख्य हत ? छवाया. तार ७ पछितार विव विकास बारक, छारा रहेरन तारास्त्रितारत - ११-- नारवारिक বিজ্ঞান্তই আছে: প্ৰভৱা: এপকে 'গ্ৰহ ও অভিগ্ৰহ কভণ্ডলি ?' এইরপ अरबावियहरू क्षत्र अक्ष रह ना : चाउ यक्षि श्रष्ट ७ चिठशह चविकार्णहे बांक, छाहा बहेरमध मराबाद (बाहांत मरबा। क्या हत, ताहे) अह ७ व्यक्ति-প্রছের অন্তপ সভাছেই প্রায় করা উচিত হয়, কিছু গ্রহ ও অতিগ্রাহের সংখ্যা नवृद्ध क्षेत्र कहा केठिक वह मा । वित्यवकः व विवत नावाक्राकारत कामा चारक, त्रहे विवरत्रहे कान किंकू विस्तृत कानिवात वक्ष क्षत्र हरेता वारक ; (बहन-'এबान कंत्रावाधाड़ी कठ बन, अवर अधान कनानाधाड़ी কত জন ?' আলোচা ছলে কিন্ত এছ ও অতিএছ নামে কোন পদাৰ্থ ৰগতে প্ৰসিদ্ধ নাই, বাহাতে তত্পত বিশেষ বৃত্তান্ত আনিবার বন্ধ প্ৰশ্ন হইতে পারে। কেন, 'অভিনৃচ্যতে' কথাতেইত ইহা বাজ করা হইলছে; কারণ, ৰে মৃত্যুৰায়া আক্ৰান্ত হয়, ভাহার পক্ষেই মৃত্তিকাভ সম্ভৰপর হয় ; এই সন্তই 'স মুক্তিঃ, সা অভিযুক্তিঃ' বাক্যে একখা ছুবার করিয়া বলা হইয়াছে ; অভএব बिनाए बहेरव (ब, केळागूर्बाहे शह ७ चांछशहरत कवा वना बहेगाह ; यूछतार कविवास क्षेत्र कता अनुकृत वहेरकाइ ना । २

ভাল কথা, সেবানেট ত বাক্, চক্ষ্ণ, প্রাণ ও মন, এই চারিচী গ্রহ ও
অতিপ্রহ বিজ্ঞাত হইয়াছে . স্থতরাং গ্রহাতিগ্রহের সংখ্যা নিল্ডিত থাকার
এবানে আবার সংখ্যাবিষয়ক প্রশ্ন করা সমত হইতে পারে না। না,---একথাও
হইতে পারে না; কারণ, সেখানে ইহার কোন সংখ্যা-বিশেব নির্ণীত হর
নাই; কেননা, চত্যুসংখ্যা নির্দেশ করা সেখানে প্রতির অভিপ্রেত ছিল না;
ভালেই এবানে প্রহ ও অভিপ্রহ নিয়ন্নছলে উহাদের অইব-সংখ্যা নির্দেশের
আবক্তক হইতেছে; এজত এবানে 'কভি?' বলিয়া সংখ্যাবিষয়ক প্রশ্ন
করা সুসম্বতই হইয়াছে। অভএব পূর্নে "স মৃক্তিঃ, সা অভিমৃক্তিঃ" বলিয়া
মৃক্তি ও অভিমৃক্তির ছুইবার নির্দেশ করার—কলে কলে প্রহ ও অভিপ্রহের
অভিস্থ সিদ্ধ হইয়াছে; কালেই এবানে সংখ্যাবিষয়ে প্রশ্ন করিভেছেন।
ভত্তরে বাজ্ঞবন্ধ্য বলিলেন—প্রহ ও অভিপ্রহ আইটা। [পুনঃ প্রশ্ন হইল—]

শেই বে আইটা এহ ও অভিএহ উক্ত হইয়াছে ; কোন কোনব্যকে নেই এছ ও অভিএহ বলিয়া নিশ্চিতরূপে এহণ করিতে ইইবে ? ১১৫৩৮ঃ

প্রাণে। বৈ এং: সেছপানেনাভিগ্রাহেণ সৃহীভোছপানেন হি গদ্ধান্ বিঅভি ॥ ১৫৪ ॥ ২ ॥

সন্ধানাথ: । [গ্রহাতিগ্রহাণাং শ্বরণনিদিধাররিবরা বাজবহ্য আছ—]
প্রাণঃ (প্রকরণাৎ প্রাণোহত্ত বাহ্সহিতঃ রাণো বছব্যঃ). বৈ (প্রসিছে)), প্রহঃ
(গৃত্বাতীতি প্রহঃ—ধারকঃ); সং (প্রাণঃ আপানেন (প্রকরণাৎ প্রছেন)
অতিগ্রাহেণ গৃহীতঃ (আপ্রিতঃ); হি (ব্যাৎ । সর্কো লোকঃ] অপানেন
(অপানসাহাব্যেন) প্রচান জিয়তি (রাণেন অস্কুতবতি) ১১৫৪১২৪

ক্ষা-সুক্রাদে। প্রাণ অর্থাং ত্রাণেন্দ্রির হইভেছে গ্রহ, ভাহা আবার অপান-পদবাচ্য গল্প ঘারা পরিগৃহীত; কারণ, অপান বায়ুর সাহাযোই প্রাণিগণ ত্রাণেন্দ্রির ঘারা গল্প গ্রহণ করিয়া থাকে। [এখানে অপান অর্থ—অপখাস, বাহা নাসরাভূ ঘারা দেহমধ্যে প্রবেশ করে] ১ ১৫৪১২৪

স্পাক্ষর ভাষ্যম। ত্রাহ—প্রাণো বৈ প্রহা—প্রাণ ইতি
ঘাণমূচাতে প্রকরণাৎ; বাহুসহিতঃ সঃ, অপানেনেতি প্রেনেত্যেতৎ; অপানসচিব্যাদপানো গছ উচাতে; অপানোপদ্ধতং হি গছং গ্রাণেন সর্বো লোকো
বিশ্বতি; ত্রেত্ছ্চাতে—অপানেন হি গছং ক্রিস্তাতীতি ৪২৪৪৪২৪

্টিকা। বিচীয়ে অধে পরিষয়েশ্বাপর্যত—ক্তপ্রাহ্ছতি। আনশবত মাধবিষয়ৰে প্রোক্তরন্থালালীনাং বহুতবং ংছুলাং—প্রক্রন্যানিতি। তত
নতেন গুরীতবন্তিবং বিনিন্ট—ন্যায়ুলাইড ইডি। বশানন্ত গ্রায়ের বছভাগানেনাবিনাভাবং বেডুলাং--অপান্নেড। তার্ম বেছতবাং—অপান্নোপ্রস্তুত্ব ইডি। বশ্বানোহ্রাপানন্তার্থ: উভেংখে বাদাং প্রিছি—ভল্লেডদিন্তি ১০০৪৪

ज्ञान्त्रान्त् । ज्ञ्जात राज्यका वितानन-वापरे अह ; अवास रेलिस्तत क्षणाय वाकात क्षाप-पत्म ज्ञापित्तस्त निर्देण करा रहेशाह । [बाह् महर्रवाल्ये ज्ञारा पदम्क रहेशा वार्क ; अहे क्षण वितान । त्मरे ज्ञापक जावात वाह्मप्रवित्त । ज्ञाम वांश ज्ञाप व्यव वांश ; ज्याम-वाह् वृक्ष क्षरत्व माहाया करत अहे विवित्त वृक्षरक ज्ञाम क्या ব্ৰীয়াছে; কেন্দ্ৰা, প্ৰাণিগণ প্ৰণান বাহু বাহা সমাজভ গৰাই আমাণ কৰিয়া থাকে; "প্ৰণানেন হি গছানু জিম্বভি" কৰাৰ উদ্ধুণ পৰ্বই ব্যক্ত কৰিছেছেন ৪১৫৪৪২৪

বাথৈ এহ: স নামাতিঝাহেণ গৃহীভো বাচা হি নামাভভিবদতি ৷ ১৫৫ ৷ ৩ ৷

স্কাৰণাথায়। বাক্ বৈ (প্ৰসিছে)) এবং, সং (ৰাগ্রপং এবং) [ব্ৰবিবৰেণ] নারা (শভাষ্কেন) অভিগ্ৰাহেণ গৃহীতঃ ব্ৰীকৃতঃ); হি (বৃতঃ) বাচা (বাণিজিয়েণ) নাষানি (শভান্) অভিবন্ধতি (বাহেরতি [লোকঃ] ১১৫৫০ন

স্লাসুকাদে বাগিন্দ্রি হইডেছে—এছ, ভাল স্ব বিষয়ীভূত নামরূপ অভিএছ দার: কবলিত হয়; কারণ, লোকে বাগিন্দ্রিরের সাহাব্যেই বিবিধ শব্দ উচ্চারণ করিয়া থাকে ১১৫৪॥৩॥

জিহা। বৈ আহ: স রসেনাতি আহেণ গৃহীতো, জিহার। হি রসান বিজানাতি । ১৫৬॥ ৪॥

স্কুলাথ:। জিলা বৈ (প্রসিছে) গ্রহং, সং (জিলারণ: প্রহং) রসেন (জিলাগ্রাজ-বাধুর্ব্যাজিনা) অভিগ্রাহেণ গৃহীত:; হি (সতঃ) [লোকঃ] জিলারা বসান্ (বধুরারাজিকান্) বিভানাতি (বিশেষেণ—প্রভাকতঃ অকুতবতি) ১১৫৬৪৪ঃ

ক্ষান্দ্রাদ্য। জিলা চইডে, এচ; ডাচা আবার রসরূপ অতিগ্রাহ আরা বলীকৃত ; কেননা, লোক জিলা আরাই মধুরায়াদি রস প্রভাকত: অমুভব করিয়া থাকে ১২৫৬৪৪

চকুৰৈ এহঃ স রূপেণাতিআহেণ গৃহীতশ্চকুষা হি রূপাণি পশ্চতি ॥ ১৫৭ ॥ ৫ ॥

্ সন্ধাৰণাৰ্থঃ। চক্ষুং বৈ (প্ৰসিদ্ধে) প্ৰবং, সং (চক্ষুদ্ধণঃ প্ৰবং)
মণেণ (বেডনীভাদিরণেণ) অভিপ্ৰাহেণ গৃহীভঃ; বি (বভঃ) [সোকঃ]
চকুষা (করণেন) রূপাণি (বেডনীভাদীনি) পশুভি ৪১৫৭৪৪

আ লাকু আছে। চন্দু হইডেছে—গ্রহ, নেই চন্দুরূপ গ্রহটী আবার খেড-শীতাদি রূপান্ধক অভিগ্রাহ বারা আরতীকৃত; কারণ, লোকে চন্দু বারাই বিবিধ রূপ নিরীক্তক করিয়া থাকে ১১৫৭৪৫৪

জোত্রং বৈ এছঃ দ শব্দেনাজিগ্রাহেণ গৃহাতঃ, শ্লোত্তেণ হি শব্দাৰ শুণোজি ।।১৫৮।।৬।।

স্কাৰণ থাঁ। শ্ৰোজং (প্ৰবংগলিকঃ) বৈ (প্ৰসিছে) প্ৰহঃ, সং নব্দেন অভিপ্ৰাহেশ সুধীতঃ ; হিঃ (বতঃ । [লোকঃ] শ্ৰোজেশ (করনেন শ্ৰুম (অনিরূপান বর্ণরূপাংশ্চ , সুণোতি ১১৪৮১৮)

ম লান্দুবাদে। প্রবেশস্তির হইতেছে—এহ, ভাহা নাবার শব্দ রূপী অভিএই হারা গৃহীত ; কারণ, লোকে প্রবেশস্তির হারাই নানাবিধ শব্দ প্রবণ করিয়া থাকে ১ ১৫৮ ৪ ৬ ৪

মনো বৈ গ্ৰহঃ, স কামেনাতিপ্ৰাহেশ গৃহীভো মনসা হি কামানু কাময়তে । ১৫৯ ॥ ৭ ॥

স্কলাথ:। বন: বৈ (প্রসিছে) গ্রহা, সাংকাষেন (সংক্রাম্বকেন অভিপ্রাহেণ গৃহীতঃ; হি (বতঃ) [লোকঃ] যনসা কাষান্ (প্রার্থনীয়ান্) কাষ্যতে (অভিনৰতি) ৪১৭১৪৭৪

স্কান্ত্রাদে। মন হইতেছে গ্রন্থ, তাহা কামরূপ অভিপ্রহ ছারা গৃহীত ; কেন না, লোকে মনের সাহাব্যেই প্রার্থনীয় বিষয় পাইতে অভিনাধ করে ॥ ১৫৯॥ ৭॥

হল্তো বৈ এহঃ, স কর্মণাতিপ্রাহেণ গৃহীতে। হল্তান্ডাও হি কর্ম করোতি । ১৬০ ।। ৮ ।।

জ্যক্তনাথাঁ। হজে (করে) বৈ (প্রসিছে) গ্রহা, সং (হজুরুণঃ প্রহা) কর্মনা (জিয়ারপেশ) অভিপ্রাহেশ গৃহীতঃ; হি (বজ্ঞা: [লোকঃ] হল্লাভাং (করণাভাং) কর্ম (জিয়াং) করেভি (সম্পাহরতি) ২১৫-১৮৪

ক্ষা, লাজু কাজি এই বারা কবলিড; করণ, লোকে হস্তব্যের না ক্রিয়াম্বক অভিএই বারা কবলিড; করণ, লোকে হস্তব্যের নাহাবোই ক্রিয়া সম্পায়ন করিয়া থাকে ই ১৬০ ই ৮ ই ছবৈ গ্রহঃ স স্পর্লেনভিগ্রাহেণ গৃহীত্ত্বচা হি স্পর্ণান্ বেদয়তে ইভ্যেতেহকৌ গ্রহা অঞ্চাবভিগ্রহাঃ ।। ১৬১ ॥ ৯।।

ক্ষাক্রনাথাটো ছক্ (ছবিজিয়ং) হৈ (প্রবিদ্ধে) প্রহা, সা (ছবাছকঃ এবং) ন্দর্শেন অভিপ্রাহেশ গৃহীতঃ; হি ৰডঃ)[লোকঃ] ছাচা (ছবিজিয়েশ) ন্দর্শান্ (শীতোক্ষাছিত্রপান্) বেবরতে (অস্তব্যতি ।; ইভি (ববোজাঃ) এতে অটো (অইবিষাঃ) গ্রহাং, অটো অভিপ্রহাঃ [চ ব্যাখ্যাতাঃ ইভি শেষঃ] ঃ ১৯১ ঃ ১ ঃ

ক্লান্তাদে। ভগিন্তির হইছেচে এই ভাই আবার শীভাকাদি স্পর্করণ অভিএই বারা গৃহীত; কেন না, লোকে সাধারণতঃ বগিন্তিরের সাহাযোট শীভোঞাদি স্পর্ণ অনুভব করিয়া থাকে ৪ ১৬১ ৪ ১ ৪

শাক্তর ভাক্যাম। বাথৈ গ্রহ:—বাচা হি অধ্যালপরিছিলনা আসকবিবলাশশলা অসভান্তাসভাবীভংসাদিবচনের বাাস্তরা গুরীতঃ লোকা অপজ্জঃ তেন বাক গ্রহঃ ; স নারা অভিগ্রাহেণ গুরীতঃ—স বাগাবাো গ্রহঃ, নারা বক্তব্যেন বিবরেশ অভিগ্রাহেণ—অভিগ্রাহেণতি দৈখাং ছাক্ষসম্ ; বক্তবাাখা হি বাক ; তেন বক্তবোনার্থেন ভাদর্থোন প্রযুক্তা বাক্ তেন বক্ষরতা ; তেন তৎকার্যাক্তরা নৈব ভেলা মোকা ; অতো নারাভিপ্রবেশ গৃহীতঃ বাসিভাচাতে ; বক্তবাাসজেন হি প্রবৃত্তা সর্কানব্র্যাক্তি । স্থানমন্ত্র । ইত্তিতে ভক্সর্বালা অভৌ প্রহাঃ শের্শপর্বালাশত এতেগ্রাবভিপ্রহা ইতি ৪১৪৫—১৬১৪—১

নিক্রাঃ বাচ্যে রাজ্ববৃশ্পাবছাত —আন্তা স্থাতি। আসকত বিষয় প্রভাবিষয়। প্রশাস্থ বিষয় প্রভাবিষয়। ওপিবার্থবনাত্তপতিনিক্রছাতি বিশেষপর্। অনতাং প্রশীক্তার বিধাবিষয়। ওপের অবৃষ্টারেরিরোল্ড বিশ্বীতঃ বা। আহিপ্রেরেটা বিশ্বীতঃ বা। আহিপ্রেরেটা বিশ্বীতঃ বা। আহিপ্রেরেটা বিশ্বীতঃ বা। আহিপ্রেরেটা বিশ্বীতঃ বাতি বাল্লারার পরায় বাল্লার কর্মার বাল্লার বাল্লারার বিশ্বীত বাল্লার বাল্লার বাল্লার কর্মার বিশ্বীত বাল্লার বাল

গভো যাব বনো রপং দক্ষা করি করি করি ইডাভিরভারণি নির্ময়ন্তি---ক্রাঞ্জি পর্য্যান্ত্রাস্থিতি ১২৫--- ২২২১০ বর্ষতার্থালয় ত

ভাष्णा-पूर्वात्र । याणविक बहुताशालात नवाति विषय स्टेटल्स रमशायिक्त वाशिक्षिरप्रत क्षर्योप ; त्रहे वाशिक्षित्र गर्मण चन्छा श्रवनीकाकत, ষিধ্যা বাকা) অনুত (প্রত্যক্ষ-বিকৃত্ব), অসতা (সতার অবোগ্য 🖰 ও নিন্দিতারি वाका शाबारन बाानुक नाकिया आनिमनाक सनवदन (विवाहिक , करव ; अरेक्क वानित्तित्र 'क्षर'-भम नाठा हत्र ; ठाहा चारात नाम ना नक्कन অভিগ্ৰহ যায়। গৃহীত, অৰ্থাৎ সেই বাণিক্সিয়নামক গ্ৰহটাও আবার নাম —वक्कवा-विवत्रव्रथ पठिश्रद वात्र। পतिशृशीक हरेता थारक ; देवकिक श्रादान বলিয়া 'অভিগ্ৰহ' ব্যাহ্য অকার হার্য (অভিগ্রাহ) হইয়াছে ; প্রকৃতপাক मंबंधी बहेरव 'बालिशंब'। वक्कवा विषय्रहे वानिक्षित्रव मुबा विषय : अहे वश्र-वस्त्रवा निवाद के कार्या के निवास कार्या कार्या के वस्त्रवा विषय बाबा बन्तेकुठ बना श्रेवारकः कानाना, नरभाक्षात्रम् ना कविदा वानिस्तित्वव কৰনই নিজার নাই; এই কারণেই বাগিলিছাকে নামন্ত্রণী অভিগ্রহ ছারা चाकाक वना इहेन; वक्रठः वक्रवा विषयः चानकि धाकार्कहे वानिक्षित्र त्नहे नम्य बक्कता विवय क्षकान कतिएठ श्रद्धक हत्र. धवा छाहात मरनहे नानाविव चनार्व विभिन्न रहा। भद्रवर्ती चन्नान क्षण्डित चर्वत धरे धर्मात । कविष्ठ बक्नवीय बाठेठी देखित्र 'अद'-नव राठा, बात न्नर्ननवीय बाठेठी विवत 'विश्वार'-भववाहा हेडि १२१६-२७२१०-२।

যাজ্ঞবক্ষ্যেতি ধোৰাচ বদিদও সৰ্কং মৃত্যোরকং কা বিৎ গা দেবত যক্ত। মৃত্যুরমমিতাগ্রিকৈ মৃত্যুঃ গোৎপামনমপ পুনমৃত্যুং জবতি ।। ১৬২ ।। ১০ ।।

ज्यक्क ल्यान्याः। [जाउँ छात्रः भूतन्त बाक बर्ग्या छ तर्था वस्तु] छ वाष्ठ व-वर हेगर (चूल रुप्यवक्षणं) वृष्ट्याः (वितालना) जहर (वितालक्षर). का चिर (विर-लवः काव क्षर्यावस्त,) ना एवका, वन्नााः (एवकाहाः) वृष्ट्याः [जिल] जहन् ? [नर्जर हि बाहमातः वस वृष्ट्या कवनीकृष्ठः वृज्यतः, नाः वृष्ट्याशी (क्मिहिर कवनीक्षित्रत्य नवा ? वृष्ट्याहिण वृष्ट्याहिण नाणि वा हेष्ठि क्षत्रार्थः]। [वाक्षयकाः क्षर्यकरणा विक्रमा कृष्ट्यह्याहः—] जिल्लाः देव (क्षितिष्य) । वृष्ट्यः (नर्जिन्यालकः), नाः (जिल्लाः वृष्ट्याः) जिल्लाः (क्षानानाम् जहर) (कक्षारः—जारणा हि जस्ताः वृष्ट्याहिण कावः) । [वा क्षर (विक्रिः) नः] पूना वृक्षाः वनवाति (वृक्षा पूनर्ग विवरः: ववृक्षः नकरः हेकालियः) । २७२ । २० ।

मुकान्त्रवादः। वार्वज्ञागं मत्यापनपृत्तकं पूनन्त विकामा করিলেন—ৰাজ্ঞবদ্ধা, উংপতিশীল সমস্ত পদার্থট মৃত্যুর বশীভূত . [জিজাসা করি,] এমন দেবতা কে আছে, মৃত্যুও বাহার ভক্ষণীয় হয়---व्यर्थार मृज्यात मृज्या प्रविद्या १ 📋 याकावका वितासन ---] व्यक्ति वहेर उर्द्य একটা প্রসিদ্ধ মৃত্যু (সর্ববস্তু-বিধ্বংসকারা), ভাছাও আবার জলের পদ -- अका-- विनाण रत, वर्षाय कन स्टेएर्ड मृज्ञती व्यक्तित मृज्ञ স্ক্রপ। যে লোক এই ভব জানে, সে লোক পুনমৃত্যি অয় করে, অর্থাৎ व्यमुख्य नास्त्र करते । १७२ ॥ १० ॥

न्नाकक-डाकाचाः देनमःहरूष् अहाडिश्राहम् बाह पून:-बाक्यब्याजि (बावाठ। विवयः शाक्रज्ञः भव्यः मृत्जात्रप्रम्-नव्यः बाब्राज বিপদ্ধতে চ প্রহাতিপ্রহলকণেন মৃত্যুনা গ্রন্থম্য, কা বিৎ কা সু স্থাৎ সা দেবতা, बन्धा (पवलांत्रा मृज्यत्रभावः एतवः "मृज्यर्तकाभरमध्नम्" हेति अल्लाखदार । অরম্ভিপ্রায়ঃ প্রষ্টু:--বলি মৃত্যোমৃত্যুং বঞ্চাতি, অনবস্থা ভাৎ; অধ ন বক্সতি, অস্বাদ্ প্রহাতিগ্রহদকণাৎ মত্যোগ্রেকো নোপপছতে; গ্রহাতিগ্রহ-মৃত্যুবিনাৰে হি যোক: স্থাৎ; স বলি মৃত্যোরপি মৃত্যু: স্থাৎ, ভবেৎ এহাতি-প্রহরক্ষণসা মৃত্যোবিনাশঃ ; অতো ছর্মচনং প্রশ্নং মধানঃ পৃচ্ছতি—কা বিৎ সা ছেবতেতি। অভি তাবং মৃতোম্ভা:। নহনবস্থা সাং—তস্যাপাঞ্জো मृङ्गादिष्ठि , न स्मयक्ता, न्यसमृष्ट्याम् वस्यवास्त्रभारतः । कनः पुनदवनमारङ— चि बृत्जाम् ज्ञाविजि १ मृहेशार,--विश्वावर नर्सना मृत्हे। मृज्ञाः, বিনাশকভাৎ সেহিভিচ্ছাতে; সোংগ্রিরপাষ্মশ্ ; গুহাণ তহি—ছভি ৰুত্যোৰ্ভাৱিতি; তেন দৰ্কাং প্ৰহাতিগ্ৰহজাতং ভক্ষাতে মৃত্যোৰ্ভাুনা; ভিনিন্ বন্ধনে নাশিতে মুহানা ভক্তিত সংসারাৎ মোক উপপল্লো ভবতি। वक्रमः हि अशंध्ि अर्गक्षम् मृक्षम् ; 'छत्राक (मान छेननहरू-हेर्छाछ० প্রসাধিতব্; অভো বছৰোক্ষার পুরুষপ্রয়াসঃ সফলো ভবভি; অভোহ-भक्षप्रि भूनवृष्ट्राय् । २७२ । २० ।

টিকা। অভীক্ষাদাহ বাচাই-মানিসেমিতি। परिष: বাচুতং অৰং বর্জং बुर्काक्तिविकि र्यासना । ७७ सम्बद्धः नाथ्यं म्- स्वयोद्योद्धः। वृर्कावव्यक्षश्रावादाः

क्रकावकः नश्याकावि—प्राक्ताविकः। वृत्वादः वृत्यादिक्या स्थतः क्रक्रवेवविक्रणनेकः প্রলেক্ষরত বাবভাব — আক্সমিন্তি। সংখ্যার প্রথাতি প্রচলকরে সুর্ভোট বোলো ভবিজ-वद वृद्धि प्रशास्त्रप्रशास मूलिकात वार-वर् कोकि क्रिकार-अट्टिक । न ५ वृद्धाव वृत्वानवद्यानांवकूकिवित काव: - व्यक्तवद्यानाः वृद्ध यमी डि। शबुरक्षिकाकारकार्यः। वश्व-नका निवनुद्रान्ति - व्यान्ति छ। व्यक्तिम् । वृष्कान् कृः রক্ষাধ্বসাকাইলারে। বিবলিক্ষতাপারে। বৃত্যুহতি চেবনবর'ব, নাতি চেব, করেক্সানভাগি াৰতে চৰ্কিবিভি পৰডে---সভিডিড । ভনাগ্ৰিপক: পৰিস্থ পৰিস্থাভি---সান্ধক্তেতি । ৰবোকত মুডোঃ ক্ষমবিৰোধিয়ায় তিকিখবছমিয়ার্থঃ। উতং পক্ষং অরহারা অবাশান্তক্ करवाकि—सम्बद्धांक । वृदेशः म्लदेशीव - जास्त्र म्हानाम्बद्धः । वृदेशकमनास्टद्धे--পৃহণপোত্ত। ৬৯ কাৰ্বাং কৰছ'ড—তেমেতি। ৰণ পুনৰুক্সং বছভীভাত শত-[बेकार करवाकि-छ।क्याक्रि:छ। डेक:वर वाकोकरताकि खक्कमर स्रोछि। अना-ৰিভং মুৰোৱেশি বৃত্যুৱন্তীতি গ্ৰহৰ্ণনৈৰেতি শেষ:। বাংকাশণন্তে কৰিচবাৰ আছে-ইন্ডি। পুরুষ মহাদ: পথারিপূর্বার রবণাবিঃ। ৩৭কনত জানত করং ধর্পত্র বাকা: (बाबक्कि-जान्त केन्द्रि । बाबर प्रकार १०००)

ভाष्णान्यानः अह व बाठशास्त्र करा परिनयात हरेल पह, चाउँछाभ भूतन्त भरवायतभूसंक वाक्षतदारक किलाम कतिरानन—"बर हेमः मनार मृत्छा: बह्द हे छा। इ. उदलियेन बहे बाहा किছू चाह्द. छरमम्बर्डे मृङ्ग्र वह (छका '. वर्षार मयत भवार्य हे बरव, वाराह छेक গ্ৰহ ও অতিগ্ৰহৰণ মৃত্যু ৰাৱা কবলিত হইয়া—বিপন্নও হয়—বিনইও হয়; এখন ভিজাসা করি, এখন কোনও খেবতা আছেন কি. এই বৃত্যুও বে দেৰতার অল্ল-তক্ষীয় হয় প 'মৃত্যু বাহার উপদেচন-- আলোপকরৰ ব্যশ্বনাদিবরূপ' এই প্রতিবাকো তাহার অভিত সমতে কি কং আতাস পাওয়া বার। প্ররক্তার অভিপ্রার এই বে, বাজবভা বদি বলেন—বৃত্যুরও বৃত্য बाह्य. ठाहा हहेरन 'अनवझा' :मान छेलड्डिंड हन्न, बाड विच वरनन-মৃত্যুর মৃত্যু নাই, তাহা হইলেও ৰখোক্ত এহাতিএহরপ মৃত্যু হইতে मुक्ति वा निकृष्ठि नाउ करा काहारा। পक्ति मश्चव इहेरठ भारत ना ; क्लूमा. পूर्व (र नर्कशानी शहाजिशहनायक मृठ्यत छेतार कता हरेबारह, দেই এহাতিগ্ৰহমণী মৃত্যুর বিনাশ হইলেই তাহা হইতে মৃক্তিলাভ হইতে পারে; যদি মৃত্যুরও মৃত্যু সম্ভব হয়, তবেই গ্রহাতিগ্রহক্ষী মৃত্যুরও বিনাুশ र्शंखरणत एष्, नारू नार्य ; कार्या व्यापनात अवही इक्छद यान कतिका আর্ত্তাণ বিজ্ঞান। করিগেন--"কাবিৎ না কেবতা" ইতি। ১

[राज्यका वनितनम है।,] मृहात्व वृङ्ग चार्छ। छान वर्षा, छारा बहेरन (व, 'ভাষারও অভ মৃত্যু', ভাষারও অভ মৃত্যু' এইরূপে অনবস্থা-বোদ ৰটে ়-- অৰ্থাৎ মৃত্যুচিন্ধার আর কোধা ও বিপ্ৰায় হইতে পারে না ; না, অনবছা (बांव परि ना ; कांबन ? (बार्ड्ड् नर्कनश्रहांबकक्रान क्विक हवन मृत्रुांब चांब व्यभन्न मृङ्ग् वाका मस्रव वन ना। व्याव्हा, विकामा कत्रि, मृङ्ग्रह ४ (व, मृङ्ग चाहि, देश कान अवानवान बाना वादेश्वह १ अठाक वर्नन दहेर्छहे (কানা ৰাইতেছে),—প্ৰত্যক্তঃ কেৰিতে পাওয়া বার, প্ৰথমতঃ ক্ষমি **ब्हेरफर्ड् नकरनद मृङ्ग**: कादन, षश्चिर्फ नकन वखहे छत्रीकृष्ठ ब्हेदा बाह्य ; त्निहे नर्कनश्हातक अधिक आवात अन बाता विमहे हहेना बारक ; कुछताः উক্ত অরি বইতেছে তলের অর-বিনার: [সুতরাং কলকে অরির মৃত্যুমরণ বলা বাইতে পারে;] এইরণে ধরিরা লও বে, মৃত্যুরও मृष्ट्रा चार्छ; चठ- व वृति ह इहेरव (य. (भहे अहां छ अहसी मृष्ट्रा-সমূহও অবার মৃত্যুর মৃত্যুকর্ক কবলিত হয়। মৃত্যুর মৃত্যুকর্ক সেই প্রছাতিপ্রহর্মী বন্ধন ছিন্ন হইলে পর, জীবেরও সংসার হইতে মৃজিলাত কর। मञ्चरणंत्र इत्र ; अव ७ व्यष्टि अवहे (य, व्याप्तत्र अधानक्य वद्यन, अवधा भूत्यहे कविष्ठ बहेबारकः। त्रहे अवाण्डिशब्द्रम नवन व्हेट्ड (य. किंद्राण निकृष्डि-नांक रहेरक भारत, जारा अमानिक रहेन; यक्यन रहन (ह्रमानत यक्र (ब. बीरवंद्र अबद्र, ठाहाद्र नामना अमर्निज हहेन : अवर्शवंप निकारनंद्र करन कीव पूनम् कृ। कर करत, वर्षाय वमुठक नाठ करत : पूनसात जात खाद्यादक मश्मादी बङ्गेट बग्न ना १७७२४० न

যাজবক্ষোতি হোবাচ যতায়ং পুরুষো ত্রিয়ত উদস্থাৎ প্রাণা: ক্রামস্তাহো নেতি, নেতি হোবাচ যাজবক্ষোহত্তৈব সমবনীয়স্তে উচ্ছ্যত।শায়ভ্যাশাতে। মৃত:
শেতে । ১৬০ । ১১ ।

স্কানাথ:। [পরমান্তর্শনেন বৃত্যোবৃত্যি ওকিতে সতি বিষ্ক্তং
পূক্ষমবিক্তা পৃছতি—যাজবড়োতি]। [আর্তগানঃ পুনদ্ধ] বাজবড়োতি
- স্ফ্রোবরন্ উবাচ হ—লরং (বহুকাং নৃক্তঃ) পুরুষং বত্র (ব্যিন্কালে) ব্রিরতে
(বেহুং পরিতাজতি , [তহা] প্রাণাঃ বাগাদয়ঃ প্রহাঃ) জ্বাৎ (বৃদ্ধাপূক্ষাৎ) উৎক্রায়ত্তি (উর্ছং গ্রুষ্থি) গ্রাহো (অণবা) ন [উৎক্রাহনি] গ্

हेकि: बाक्यबाः चार-म-(म छैरकायि) हेकि; [चिनि छू] चक्र (चित्र क्ष्य (मिन्छारः) चनायान गत्रवाचि) नवनीया (चित्रकाशः क्रकाः नव्यक्षि ; नः (छववदः गूक्यवदः छेक्ष्यक्षि (चौठा छवि), चाद्यायि (वाक्याय्ना गूर्ना छवि); [छठक] चाद्याछः (वाक्याय्ग्नः) मृठः (नम्) (नट्ठ (निल्डेः छिक्ठि) । ১৮০ । ১১ ।

মুলান্ত্রাদে। মার্স্তাগ পুনদ্ত ভিজ্ঞানা করিলেন—হে
যাক্সবদ্ধা, গ্রহাতিগ্রহবিমৃক্ত পুরুষ বধন মরে—দেহ ত্যাপ করে, ভধন
ভাষার প্রাণসমূহ (বাক্প্রভৃতি গ্রহণণ) এখান হইতে উর্জ্ঞামী হর ?
অথবা হয় না ? যাজ্ঞবদ্ধা বলিলেন—না, উর্জ্ঞামী হয় না ; পরস্তু
এখানেই ক্ষরাবীভূত পরমান্ত্রান্তেই বিলয়—অভিন্নভাব প্রাপ্ত হয় ; এই
দেহ তথন ক্ষীত হয়, বাফ বায় ঝায়া পরিপূর্ণ হয়, এবং বায়্পূর্ণ অবস্থায়
মরিয়া নিশ্চেন্টভাবে পড়িয়া পাকে য় ১৬০ ৮ ১১ য়

শাক্ষয়-ভাষ্য । পরেণ দুরুনা মৃত্যো তলিতে পরবাদ্ধনন বাংনো মৃক্তো বিঘান, সোহয়ং পুরুষং বর বনিন কালে রিয়তে, উৎ উর্জন, লখাবু কবিলো মিরমাণাৎ, প্রাণা বাগাদরেঃ প্রহাং নামাদরক অভিপ্রহা বাগনারপা অবস্থাং পপ্রযোজকাং কামবি উর্জং উৎক্রামবি, আহোবিয়েতি ? নেতি হোবাচ বাজবব্যঃ—ন উৎক্রামিরি; অত্রৈব অবিয়েব পরেণাদ্ধনা অবিভাগং পদ্ধবি বিচ্ছি কার্যাদি করণানি চ ব্যবানো পরব্দ্ধসতহে সমবনীয়ত্তে একীভাবেন সমবস্থাতে প্রনীয়ত্ত ইতার্থঃ—উর্লয় ইব সমৃত্রে। তথা চ প্রত্যন্ত্রহং কলাশন্দ্রবাচ্যানাং প্রাণানাং পরবিদ্রাদ্ধনি প্রনায় দর্শয়তি—"এবমেবান্ত পরিমাই বিমাং বোড়ল কলাং পুরুষায়ণাং পুরুষং প্রাণান্তং সক্ষ্বি" ইতি পরেণাদ্ধনা অবিভাগং সক্ষ্মীতি দর্শিত্রং। ন তহি মৃত্যং নহি, মৃত্যান্ত্রন্ বর্ষাৎ স উল্লেখ্যুক্তনতাং প্রতিপন্ততে, আল্লান্নতি বাহ্নে বাহ্না পূর্বাতে মৃত্যবং, আল্লান্ডা মৃতং লেতে নিল্টেইং। বছননালে মৃক্তান ন কচিন্ত্রমেনিতি বাক্যার্থঃ ১৯৬৩১১ঃ

िका। त्रवाग् वानकान पृत्यु हाः व्यक्तीकारः कतः विनवीकर्षः व्यवाद्यव्यान्तिकाः लहिल्लाकः। पर्वत् पृष्ट्वा नव्याद्यवर्गित्वः। त्रवादिव्यक्तकर्गाः व्यक्तव्याद्यः व्यवद्यत्य व्यवद्याव्यविष्टः। वानविष्टः व्यवद्याव्यवः व्यक्तिव्यव्यवः व्यक्तव्यवः व्यवद्याव्यवः वृष्टादः, अवतः व्यक्तिव्यव्यवः विक्तिवयः व्यवद्याव्यवः वृष्टादः, अवतः व्यक्तिव्यव्यवः विक्तिवयः। व्यवद्याव्यवः व्यक्तिव्यवः व्यवद्याव्यवः विक्तिवयः। विक्तिवयः व्यवद्याव्यवः विक्तिवयः। विक्तिवयः व्यवद्याव्यवः विक्तिवयः। विक्तिवयः व्यवद्याव्यवः। विक्तिवयः। विक्ति

ভাষ্যান্বান। পর্মায়দর্শনরপ অপর মৃত্যুকর্ক এছাতিগ্রহ-ক্লপী মৃত্যু ভক্ষিত হইলে পর, বে পুরুষ বিদ্যা বলে বিমৃক্ত হন, সেই এই পুरूष (व भ्रमात् (प्रद छा। १ कारता । भ्रमात वामनाकाल (प्रद्रमश्वरणी প্রাণ সমূহ—বাগাদি এছগণ ৬ নামপ্রভৃতি অতিগ্রহণণ এই আসমুমূত্য जन्मित्र भूक्य एडेएड निर्गेष्ठ इहेग्रा कि फिर्फ भ्रमन करत ? व्यवना भूमन करत ना? शंकवदा विल्लन--ना-डेक्-लाकविद भगन करत ना ; भत्रह अवालिके भव्रमाञ्चात महिल स्विकांग आश्च व्या.--विवान् भूक्रस्त (नव छ ইক্সির সমূহ – সমূদ্রোথিত তরজ সমূহ বেমন সমূদ্রে মিলিয়। যায়, তেমনি স্কারশীভূত পরব্রন্ধে বিশীন ১য়—এক—অভিন্নরপে অবস্থান করে . এপর क्षष्ठिक कना-नारम चिंहिर आन्त्रमृहित भन्न उत्क विनग्रानन कथा विमारत्य - 'द्विक अहें अने मही बाह्यात प्रक्रवालिक अहे (वाहनती कना (>) भूक्षवरक (भव्रवाद्यारक) श्राय हहेग्रा विनीन हत,' এपारन रवपान হইয়াছে বে. প্রাণ সমূহ প্রমান্তার সহিত অবিতাগ প্রাপ্ত হর: তাল क्या, छादा इहेल छ पुक्रवद बाद मुठ्रा इहेन मा ; ना-छादा नरह, अहे পুরুষ মৃত্ই বটে; কারণ, সেই মেহ তখন উজ্নতা প্রাপ্ত হয়--কীত इन्न, अवर ब्यामाछ दत्र वर्षाय क्यांनिविंठ छत्वात्र श्राप्त नाविद्यत नाह् वाता

⁽১) ভাংগধা—'বোড়প্দগ'—কলা অৰ্থ---ম'ল বা অবয়ৰ, একাৰণ একার বিধায়র সচিত জোলাফি একাৰণ ইল্লিড, বার আব, অপান, ব্যান, উলান, সমান---এই পক বায়ু, এই সন্মিক্ত বোড়বটী পদাৰ পুক্তবের ভোগোপধোনী বলিভা 'কলা'-প্রথবাচা হয়, ভাই পুরুষকেও 'বোড়প্সক' বলা হয়।

পরিপূর্ণ হয় ; সেই অবদ্বাতে মৃত হইছা শরন করে—নিশ্চেইভাবে পঞ্জি। গাকে। প্রভিন্ন তাৎপর্যার্থ এই বে, বছন-ফাংসের পর সেই বিধান্ পুরুবের আর অক্তর কোগাও গমন হর না, (এগানেই শেব হইছা বায়) ৪১৬০১১৪

যাজ্ঞবক্ষ্যেতি হোবাচ যত্ৰায়ং পুরুষে। ত্রিয়তে কিমেনং ন জহাতীতি, নামেত্যনন্তং বৈ নাধানন্তা বিশ্বে দেব। অনস্তমেৰ স তেন লোকং কয়তি ॥ ১৬৪ ॥ ১২ ॥

স্মতনাথ। [পার্তভাগঃ পুনন্চ ৰাজবড়োতি সংখাধরন্] উবাচ
হ—অয়ং (প্রহাতিপ্রহযুক্তঃ) পুরুষঃ বত্র (বনিন্কালে) ব্রিয়তে, [তয়া] এনং
(মৃতং পুরুষং) কিং (কিয়ামকং বস্তু) ন শহাতি ? (ন পরিতাজতি ? এনং
অধুবর্ততে ইতি ভাবঃ) ইতি । [বাজবড়া আহ—] নাম—ইতি (সংজ্ঞা
এব কেবলম্ব এনং ন জহাতীতার্থঃ । বৈ (বতঃ) নাম অনলং (আনল্ডাগুণবং.), বিশ্বে দেবাঃ [অপি] অনলাঃ (অসংখ্যেয়াঃ); সঃ , বিশ্বান্) তেন
(আনন্তাবিজ্ঞানে) অনলম্ব এব লোকং কর্মতি ঃ ১৬৪ ঃ ১২ ঃ

শূলা-পুলাদে। আর্থগা পুনশ্চ জিজ্ঞাসা করিলেন—বাজ্ঞবন্ধা, সেই গ্রহাতিগ্রহবিমৃক্ত পুরুষ মরিলে পর, কে ভাহাকে পরিভাগি করে না. অর্থাৎ কে ভাহার অমুগমন করে? [বাজ্ঞবন্ধা বলিলেন—] নাম— [ভাহাকে ভাগি করে না]; নামও অনন্ত, বিশ্বদেবগণও অনন্ত; বিনি এই আনস্তা দর্শন করেন, ভিনি সেই বিজ্ঞানবলে অনন্ত ফল লাভ করেন । ১৬৪ ॥ ১২॥

ন্ধান্তর-ভাত্সাম। মৃক্ত কিং প্রাণা এব সম্বনীর্বে ? জাহো থেং তংপ্রবোজকমণি সর্ক্র ; অধ প্রাণা এবং ন তৎপ্রবোজকং সর্ক্র ; প্রবোজকে বিভ্যানে পুনং প্রাণানাং প্রসঙ্গ। অধ সর্ক্রেব কামকর্মানি ; ততো বোক উপপদ্যতে—ইত্যেবমর্গ উদ্ভবঃ প্রশ্নঃ।

যাজবভাতি হোবাচ—হত্রায়ং পুরুষো দ্রিয়তে, কিবেনং ন কহাতীতি ?
আহ ইতরঃ—নাথেতি; সর্কাং সমবনীয়ত ইত্যর্কাঃ। নাৰবাত্রং ভূ ন
লীয়তে, আরুতিসক্ষাং; নিতাং হি নাম; অনকং বৈ নাম; নিতাখবেবানব্যাং নায়ঃ। তথানব্যাধিকতা অনকা বৈ বিখে কেবাঃ; অনকরেব
স'তেন লোকং কয়তি, তথাবানব্যাধিকতান্ বিখান্ কেবানাখ্যকেনোপেত্য
তেমানব্যাদর্শনেন অনক্ষেধ লোকং কয়তি ১৯৬৪১২ঃ

ভাল্যান্ত্রাদে। এখন প্রশ্ন হাইতেছে যে, মুক্ত পুরুষের কেবল প্রাণসমূহই কি এখানে বিদীন হয়। অথবা তংসম্পর্কিত সমস্তই ? বলি কেবল প্রাণসমূহই বিদীন হয়, তংসম্পর্কিত আর কিছু বিদীন না হয়, তাহা হইলে, যে কারণে প্রাণ সমাগম হইয়াছিল, তাহা বিভ্যান গাকায় পুনর্কারও প্রাণ-সম্বন্ধের সন্থাবনা গাকে গ আর যদি দেহ-প্রযোজক কাম কর্মাদি সমস্তই বিদীন হইয়া যায়, তাহা হইলেই প্রকৃতপক্ষে মৃজিলাভ সম্ভবপর হইতে পারে; এই উদ্দেশ্যেই পরবর্তী প্রপ্রের অবতারণা করা হইয়াছে। >

আর্ত্রিগ ভিজাপা করিলেন—যাজবঞা, এই পুরুষ যখন মৃত হয়, তখন কৈ ইহাকে ত্যাপ করে না ? যাজবল্পা বলিলেন—নাম (সংজ্ঞা ; আর্থাৎ অপর সমন্তই এখানে বিলীন হইয়া যায়, কেবল নামই একমান্ত বিশ্বীন হয় না ; কেন না, নামের সহিত সম্বন্ধ কেবল আক্রতির, দেহের নহে। নাম হইতেছে নিত্য এবং অনৱ ; নিতাহই নামের অনৱদ্ধ ; সেই আনৱা নামের অনিপতি বিশ্বদেশপথ অনম্ভ ; বিদান পুরুষ এইরূপ বিজ্ঞানে নিশ্চরই অনৱ ফল লাভ করেন,—নামের আনব্যাদিপতি বিশ্বদেশতাপনকে আল্লবন্ত্রপে অনিপত হইয়া সেই আনস্ভা বিজ্ঞানের বলে বিজ্ঞাতাও অনম্ভ কল্ট লাভ করিয়া পাকেন ঃ ১৬৪ ঃ ১২ ঃ

বাজবক্ষোতি হোবাচ যত্রাক্ত পুরুষক মৃতক্ষাগ্রিং বাপপ্যেতি বাতং প্রাণশ্চকুরানিতাং মনশ্চক্রং দিশঃ জোত্রং

क्जीरबार गाया-विजीवर वायनम् ।

পৃথিবীত শরীরমাকাশমাম্মেরবার্গোমানি বনস্পত্তীব্ কেশা অস্ লোহিতক রেডশ্চ নিধারতে, কারং তথা পুরুষো ভবতীত্যাহর সোম্য হত্তমার্ভভাগ। আবাষেকৈডক্ত বেদিয়াবো ন নাবেডৎ সঞ্জন ইতি।

তো হোৎক্রম্য মন্ত্রবাঞ্চক্রাতে তো হ বদ্চতু: কর্ম হৈব ভদ্চত্রথ যৎ প্রশাদদসতু: কর্ম হৈব ভৎপ্রশাদসতু: পুণ্যো হৈ পুণ্যেন কর্মণা ভবতি পাপ: পাপেনেতি, ভতো হ জারৎ-কারব আর্ডভাগ উপরবাম ॥ ১৬৫ ॥ ১৩ ॥

ইতি বৃহদারণ্যকোপনিষদি তৃতীয়াধ্যায়ে শ্বিতীয়ং ত্রাহ্মণম্ মঞা২৪

স্মান্তনাথ:। আর্তাগং পুনক স্থোবরন্ পৃক্তি—বাজবড়াতি।
বাজবড়া, বত্র (ব্যিন্ কালে) অন্ত (ব্ধোক্ত) বৃতত্ত পুরুষত বাক্ অধিষ্
অণ্যেতি (প্রায়োতি), প্রাণং বাতং (বাছং), চক্ষুং আছিতাং (স্ব্যুং),
বনং চপ্রং, প্রাত্রং দিশং শরীংং পৃথিবীং, আত্মা আকাশং, লোবানি
ওবধীঃ (তৃণসতাঃ), কেশাঃ বনস্পতীন্ (অপুস্ফল্লালিনঃ রুজান্)
[অপিবন্ধি], তথা, লোহিতং (রক্তং) চ রেতঃ (কক্রং) চ অপ্স্
(অলেন্) নিধীরতে (বিলীরতে), তহা অরং (বৃতঃ) পুরুষঃ ক (কুত্র)
তবতি (তিষ্ঠতি) গ ইতি।

बाक्यवडा चाह—] (व त्यावड चार्क्डाव, व्यक्त चावत (व्यक्त चार्वत) चावार (पर चहर ह) अब अठछ (अवछ) [छवर] त्यिवादा (चाडावर), तो (चावार) [चिन] अठर (अछित्) नक्तम (चमवहत्व हात्त हेछार्चर), म । [हेळूडा] (छो (वाक्यवडार्चडात्ती) छेरक्रमा (छवार हातार विवित्र्या) ववताक्रकारण (विहातिक्यरण) ; रछो व खेखिरण) वर छेहचूर (केळवरण), छर व , वर्च) वर्च अव छेहचूर ; वर अपनरमञ्जूर, कर्च व अव अपनरमञ्जूर ; तेव (वर्षर) भूरवाम कर्चवा भूवार (भूरवाचा) खबिल, वर्षर (वर्षर) भारतम (कर्चवा) भारत (भारतम) चावर चावर चार्चण छेनववाय (अवार विवरण वर्ष्ण्य) ॥ २०८ ॥ २०० ॥ २०

শ্ব লাকু আছে। আর্থান প্রশ্ব বিজ্ঞানা করিলেন—বাজ্ঞবদ্য, এই পুরুষ বরিলে পর, বখন ভাষার বাক্ অগ্নিকে, প্রাণ বাষ্কে, চক্ আদিত্যকে, মন চক্রকে, অবনেক্সির দিক্সমূহকে, লরার পৃথিবীকে, আছা আকাশকে, লোমসমূহ তৃণগভাপ্রস্কৃতিকে, কেলরালি বনম্পতিকে (বিনাপুশে কলদায়ক বৃক্তসমূহকে) প্রাপ্ত হয়, এবং রক্ক ও শুক্র কলে বিলীন হয়, তখন এই পুরুষ কোষায় গাকে পু

বাজ্ঞবন্ধা বলিলেন—হে সোমা আর্তভাগ, হস্তপ্রদান করে, অর্থাৎ তিনি আর্বভাগের হাত ধরিয়া বলিলেন বে, এই প্রশ্নের রহস্ত আমর। ফু'জনেই জানিব, এই জনবহুল সভাক্ষেত্রে নহে; [এই কথা বলিরা আর্বভাগের হস্তথারণ পূর্বক] ভাহারা ছু'জনে উন্তিরা মন্ত্রণা করিছে লাগিলেন।তাঁহারা যাহা বলিয়াছিলেন, ভাহাতে কর্ম্মের কথাই বলিরা হিলেন, তাঁহারা যাহা প্রশংসা করিয়াছিলেন, ভাহাতে কর্ম্মেরই প্রশংসা করিয়াছিলেন,—পুণা কর্ম্মদারা জীব পুণাান্না হয়, আর পাপ কর্ম্ম থাবা পাপী হয়। ইহার পর জারংকারব আন্তর্ভাগ প্রশ্ন হইতে নিবৃত্ত হইলেন ৪ ১৬৫ ৪ ১৩ ৪

हेळि जुडीयाशास्त्र विजीत जाकरनद गांचा नमास । २ ॥ ७॥

শাক্তর-ভাষ্য ম। এহাতিগ্রহরণং বছনমৃত্যং মৃত্যুরণমৃ; তত্ত চ মৃত্যোর্ম ত্যুসভাবাৎ বোক্ষণোপদ্মতে; স চ মোক্ষঃ গ্রহাতিগ্রহ্রপা-ণামিকৈর প্রদার, প্রদীপনির্বাণবং; বত্তদ্ গ্রহাতিগ্রহাবাং বছনং মৃত্যুরণমৃ, তত্ত্ব বং প্রবোজ্যমৃ, তংক্তরপনির্বারণার্শমিস্মারভাতে—বাজ্ঞব্বোভি হোবাচ। >

• শত্র কেচিত্ বর্ণরন্ধি,—গ্রহাতিগ্রহত সপ্রবোজকত বিনাশেংশি কিল ন মৃচ্যতে; নাবাবশিষ্টঃ অবিভয়া উবরত্বানীররা বালপ্রভবরা পরবালনঃ পরিন্ধিরাঃ ভোজ্যাত লগতো ব্যার্ডঃ উল্লিয়কাবকর্মা অন্তরালে ব্যবভিন্তিত; সত পরবালৈক্ষণশ্নেন বৈতদর্শনবপ্রেতব্যবিতি—অতঃ পরং পরবালন্দ্রবার্ক্রবান্—ইতি; এবনপ্রশান্যান্তরানাব্লাং পরিক্রোজির-গ্রহ্মক্ষং কুর্মন্তি। ২ ভার বভাগন—বিশীর্ণের্ করণের্ বিবেশক পরবাশ্বকশিনারবশ্রনরনিধিগ্যাসনানি কৃষ্ণিভি; সম্বনীভঞাপত হি নাম্বাঞাবশিইক্তেতি
ভৈক্তাতে; "মৃতঃ শেতে" ইতি হাক্তম্ ; ন মনোরবেনাপ্যেভ্রপসান্তির্থং
লভাতে। অথ নীব্রেবাবিভাষাতাবশিটো ভোলাদপারত ইতি পরিকরাতে,
তভু কিংনিবিভবিতি বক্তবাস্। সম্বনিভিত্ত বিভাগের নিবিভবিতি
বছাচোত, তৎ পূর্নবেদ নিরাক্তম্ ; কর্মসহিতেন বৈতিক্যাশ্বর্ণনেন
সম্পর্যো বিশান্ মৃতঃ সম্বনীতপ্রাণঃ অপদাশ্বরণ হিরণাপর্চমন্ত্রপং বা
প্রায়ুরাৎ, অসম্বনীতপ্রাণঃ ভোলাৎ শীব্রেব বা ব্যার্ভো; বিরক্তঃ প্রযাশ্বদর্শনাতির্থঃ তাৎ। ৩

ন চোভর্মেকপ্রবন্ধনিশান্তেন সাধনেন সত্যন্ত ; হিরণাসর্ভপ্রান্তিসাধনং চেৎ, ন ততো ব্যার্ভিসাধনন্ত ; পরমান্তাভিম্থীকরণত ভোজান্যার্ভেঃ সাধনং চেৎ, ন হিরণাসর্ভপ্রান্তিসাধনন্ত ; ন হি বন্সতিসাধনন্ত, তৎ নির্ভেরপি । অধ মুহা হিরণাসর্ভং প্রাণ্য ততঃ সমবনীতপ্রাণ্যে নামাবলিট্রঃ পরমান্তলনে অধিক্রিরতে, ততোহম্মান্তর্গং পরমান্তলানাগদেশোহনর্বকঃ তাৎ ; সর্কোবাং হি বন্ধবিভা পুরুষার্বান্তোপদিক্রতে—"তত্ বে বো দেবানান্ত্রী ইত্যান্তরা ক্রতা। তমান্তভ্রনিক্রী পারবাহ্দবেরং ক্রনা ; প্রকৃতত্ত্বর্ত্তিভানঃ। ৪

তত্র কেন প্রস্কৃত্য প্রহাতিগ্রহদক্ষণ বছনম্—ইত্যেতল্লিছিবাররিবরা আহ

—বত্র অন্ত পুরুষত অসমান্দর্শিনা শিরাপাণ্যাবিষ্যতো মৃতত্ব বাক্ অলিমপোতি,
বাতং প্রাণোৎপ্যতি, চক্ষুরাদিত্যমপোতি—ইতি সর্বাত্র সহবাতে; মনঃ চল্লং,
ছিলঃ প্রোত্রম্, প্রিবীং শরীরম্, আকাশমান্ধা ইতাত্র আন্মাবিষ্ঠানং হ্বম্মাকাশমৃচ্যতে; স আকাশমপোতি; ওববীরপিবলি লোমানি, বনস্পতীন্ অপিবলি
কেশাঃ; অন্স্ লোহিতং চ রেতক্ত নিবীরতে ইতি—পুনরামানিলক্ষ্ । সর্বাত্র
হি বাগাদিশকেন ক্ষেবতাঃ পরিগৃহক্তে; ন তু কর্ষণাক্ষের অপক্রামন্তি প্রাক্ত্ বোক্রাং। তত্র ক্ষেবতাতিরমধিন্ততানি করণানি ক্রম্বাত্রম্ব অপক্রামন্তি প্রাক্ত কর্ত্তা পুরুষঃ অন্যতন্ত্রঃ কিমান্রিতো তবতীতি পৃচ্ছাতে—কারং তথা পুরুষো ভবতীতি—কিমান্রিতভ্রম্ব। পুরুষো তবতীতি; বমান্রম্বান্রিতা পুনঃ
কার্য্যকরণস্প্রতন্ত্রশালক্ষে, বেন প্রহাতিপ্রহদক্ষণবদ্ধনং প্রযুদ্ধতে, ওং
ক্ষিত্রিভি প্রশ্নঃ। ৫

चार्ताहारक-चकानवनृष्टाकानकर्यरैयनविष्ठानवार्त्यकृति वाविष्ठिः विष्ठिक्षातिः चकः चरतकविश्रिक्षिक्षात्रवारः देवतं व्यवकारवतं वय- विर्वतः वस पद्मिर्गरक्षित्वनि, जारह त्यांश वस्त् जार्डकात (र) जारात्व अक्ष्म परगृदेष्ठ (विकितार वर क्षर्यक्षित्वार विद्यपतिकातः क्यार ? म त्यो जारहार अक्ष्म नवत्य समन्त्रातः मिर्द्यस् पकारक जक्ष अकाक्षर गविकायः विद्यानातः । ७

তৌ হেতাহি শ্রুতিবচনৰ। তৌ বাজহত্যাহঁতালোঁ একাজং পদা কি চক্রত্বিস্থাচাতে—তৌ হ উৎক্রমা সক্রনাদেশাং মন্ত্রাক্রমাতে; আহোঁ নৌকিক্রাহিশকাণানেকৈকং পরিগৃহ বিচারিতবতোঁ। তৌ হ বিচারি বহু উচত্য অপোহ পূর্নপঞ্চান সর্বানের—তজ্ঞু বু; কর্ম হৈবানারং পূন্য প্রাক্রবোপানানহেত্য তং তত্র উচত্ উজ্লবত্তো—ন কেবলম্ব; কালকর্মানেরেরেরজ্যাপগতের হেত্রু বং প্রশানগৈত্তা, কর্ম হৈব তং প্রশানগাল্য —বলাং নির্ভাৱিতবেতং কর্মপ্রক্রম প্রভাতিপ্রহাদিকার্যকরণোপানানং পূন্য পূন্য, তলাং পূণ্যো বৈ বাজবিহিতেন পূণ্যেন কর্মণা তবতি, ত্রিপরীতেন বিপরীতো ভবতি পাশঃ পাপেন—ইত্যেবং বাজবংকান প্রান্থে বিশ্বিতির্ ততোহেরকাপ্রকল্যানার্থ বাজবঙ্বান হ কারৎকারের আর্ত্রাগ উপরবান র ১০৫ র ২০ র

ইতি বৃহদারণোকোপনিবদি তৃতীয়াখায়ে দিতীয়ন্তাৰণভাৱৰ ১০২১

ট্রীক্রণ। বরাজেলাদেখাংশবাং বৃভাত্বান শূলকং ভবছতি—প্রক্রণি প্রক্রেকা হিছেপুনিরা। কিবেনবিভাগিলাকা অবাাবাবৃদ্ধা ব্রেলাদেখাংশবাং ভাকব। ইয়ানীং ভর্তুনপ্রকর্মনান্ত্রপথতি—অনুক্রতি। কিবেনবিভাগিবিত বাবং। নর্ জ্যানুষ্ঠানাকেংরাঃ নথবাজকরোন বিনেগি পুনে। বৃজিন ভেত্তি ও পর্যাবাধাৎ ভাবনো বলাবক্রমনান্ত্রালালাক-ন্যান্ত্রালিইট ইতি। ভিত্তেমবর্ষবর্ষালাক্রমান্ত্রালান্ত্রালালান্ত্রালান্ত্রালান্ত্রালালান্ত্রালান্ত্রালালান্ত্রালাল

্ হিলাগর্ভাবভাহনতো বা বিভাবিকারী? প্রবংহনি, মৃতত থাবতো বা বিভাবিকারে। বিবলিকথয়েতি পৃক্ষতি—ভত্ততিত । ভত্তাভ্যাতিপতি—বিন্দীর্থনিতি। পার্কেশং পুটরিষ্ঠু ভারামুক্তিমন্থবিতি—ভামন্ত্রনীতিভক্তি। নামনাত্রাধিকারিকারিকারিকারিকারিক

क्षारमञ्जाक कियार वाकार्।

মাধ্যমের সমৃক্তিতঃ কর্মোতরাব্য কিং ব ভাষত বাং—ম চ্চেন্তি। ইতরাব্যভাব্য সমর্বতে—মিম্নাগ্রেক্তিয়া দিনা। সমৃক্তিতঃ কর্ম বোতরাব্যিতার গৃহীতবাং—মুস্টাতি। বিরণাবর্তে বিভাবিকারীতি শক্ত বিভিশতি—আপ্রতি। ব্যক্তি—ক্তেত্ত ইতি। বস্থু বহাস্থভাবানামমাধিনিইনাবের রভবিজ্ঞোপবিভাবানা বোজং ক্সমৃতি, নামাক্ষিতাপভাহে—ভাতুক্ত হাম্মিতঃ। ব চ হমতেংশি বছারা রবণাবি করা বিজ্ঞোনগুলিবালাব্য চিলার্থনা মুন্তিনিত্রে কৃত্তিতি হত্তিত্ত প্রবাহিষ্টের বাহাস্থ। হামতেবভাস্থভাত্তি বিভাবানীক মনুন্তিপ্রস্কুল সংঘালবন্ধ ভাষাবিক্ত ভাষাবিক্তির ব্যবস্থোপনতেঃ। বহুতে। নির্মিণেরে চিলারে নাবিভাবিত্ত ব্যবস্থাতি তিভাতিপ্রেভা প্রশাস্থিতি নত্ত স্থাতি ক্রিকার প্রবাহানীক প্রতিভাবিত প্রক্রিকার প্রবাহানীক প্রতিভাবিত প্রক্রিকার প্রবাহানীক প্রতিভাবিত প্রক্রিকার প্রবাহানীক প্রক্রিকার প্রবাহানীক প্রক্রিকার প্রবাহানীক প্রক্রিকার প্রবাহানীক প্রক্রিকার প্রবাহানীক বিভাবিত প্রক্রিকার প্রবাহানীক প্রক্রিকার প্রবাহানীক বিভাবিত প্রক্রিকার প্রক্রিকার প্রবাহানীক বিভাবিত প্রক্রিকার প্রক্রিকার বিভাবিত প্রক্রিকার বিভাবিত প্রক্রিকার বিভাবিত বিভাবিত প্রক্রিকার বিভাবিত প্রক্রিকার বিভাবিত প্রক্রিকার বিভাবিত বিভাবিত প্রক্রিকার বিভাবিত বিভাবিত প্রক্রিকার বিভাবিত বিভাবিকার বিভাবিত বিভাবিকার ব

কর্তবা ক্ষতিবাগানে ব্রেছাকাব্দাপ্র্রক্ষরতার তি তা তা পুরুষ্থাকর বিষয় ক্ষতিবাগানে ব্রেছাকাব্দাপ্র ক্ষরণার তি তা তা পুরুষ্থাকর বাবাং নামবিভিন্ত ক্ষিত্র। নামবিভাগে নামবিভাগিত ক্ষতি। নামবিভাগিত ক্ষতি। ক্ষতিবাবে নিজান্তর্বাহ—নিত্রীয়ন্ত ক্ষতি। তা ক্ষতিবাবিবানে প্রয়োগণনারিকাপি পুনরাবাবন নামিবানে ক্ষতিবালিকার বাবানিকালে বাবানিকালে বাবানিকালে বাবানিকালে বাবানিকালে ক্ষতিবালিকালে ক্যতিবালিকালে ক্ষতিবালিকালে ক্য

আহরেড্যারিপরিবারমবভাররতি—অনুত্রান্তি। বানাংসকা বোকারতা ব্যোতির্বিবো বৈহিক। বেবডাকান্তীরা বিজ্ঞানখাহিমে। বাবাবিকান্তেতাবেকে বিশ্রতিসভার:। করন্তারেন প্রশাসকার্যকার পর্বান্তের বিচারেবেডি বাবং। করেডি ব্যান্তিং। ৫

वश् बहेर्ड बारना राखनकान्य आंधनरकांक वानिर रागमरकारक। क्या व रको रवकारि-नवसमूका कृत्रीरकात्माकारमध्य बार—रक्षी (ऋक्ष्मामरीकि। कर्ण्याकारक विचा विकासन्वस्थानिक संवर। य रक्षमार कर्ष कार्यमृक्षकुः, किस्न अस्तर कार्याचनु रस्प्रकृतन- বিভেন্ন ব্যবহৃত্য প্রবাদনার । অভঃ কর্মান্ত্রনাথ কর্মণঃ কার্যন্তং গ্রাহত, ব ভূ ভারানীয়ার-বেজুবং, ডেবাং কর্মবাম্পনিশক্তো ভাতভভার কর্মান্তর্থনাথ ক্ষমভারেদ্রশি কর্মানার্ভেইনর ক্রমভূমনক্যানিভাবে—মু ক্ষেত্রকামিডিঃ পূণ্যো বৈ পূণোবে ভার্নি বাংকট্ট — ব্যব্দানিভাই ক্রমভাবিভাগ ১০০ঃ ১০০

हैकि वृद्यावनारमाननिवद्यारात्रीकावाः कृषीवादनारव विकीववार्ककानवाकनन् १३१

জ্ঞান্দ্রান্ত। এই ও অতিগ্রহরণী সৃত্যরণ বছনের কথা ইতঃ
পূর্বে কবিত ইইরাছে, এবং সেই গ্রহাতিগ্রহরণ সৃত্যরও মৃত্যু সন্তব বশতঃ
বে, বোক্ষের সন্থাবনা ইইতে পারে, এ কবাও অতিহিত ইইরাছে। প্রারীপ
নির্কাণের কার গ্রহ ও অতিগ্রহরণী মৃত্যুর বে. এবানেই বিদর, তাহাই
পূর্বোক্ত বোক্ষ শতের অর্থ। সেই বে, গ্রহ ও অতিগ্রহসংক্ষক মৃত্যুস্তরণ
বছন, তাহার প্রবোক্ষক বা কাশবের প্রকৃত স্বর্ল নির্দারণার্থ শ্বাক্ষরতোতি
হোবাচ" ইত্যাহি শুতি আরম ইইতেছ।—>>

এখানে কেছ কেছ এরপও তাৎপর্য বর্ণনা করিয়া থাকেন যে, গ্রহাতিগ্রহ ও তৎপ্রবর্তক অবিদ্যা বিনষ্ট হইলেও পুরুষের মৃক্তিলাভ হয় না; পরস্ক তাহা ছারা কেবল উবরভূমি-ছানীর (কারমুন্তিকা স্থানবর্তী । পায়-সমূত্বত অবিদ্যা ছারা পরমান্ধা হইতে বিচ্ছিন্ন থাকিয়া এবং তোগ্য লগৎ হইতে পুথক হইরা ফারকর্মবিরহিততাবে মধ্যবর্তী অবস্থায় বর্তমান থাকে মাত্র। তাহার পর পরমান্ধার সহিত একরম্পনিরপ বিদ্যা ছারা তাহার হৈতদর্পন অপনয়ন করা আবস্তক, এইজন্ত অবশিষ্ট পরমান্ধ-দর্শনের উপদেশ করা আবস্তক হইয়াছে। এইরপ একটা অপবর্গনামক মধ্যাবন্ধা কর্মনা করিয়া পরবর্তী প্রস্কের সহিত এই অংশের সম্বন্ধ বা সম্বৃতি সংস্থাপন করিয়া থাকেন।—২

বে সমর পুরুবের সমৃত্ত করণবর্গ বিশীর্ণ হটরা যা থ কারণে বিলীম হটরা যার, সে সমর দেহবিহীন সেই পুরুবের যে, পরমান্ধবিষরে প্রবণ, মনন ও নিদিখাসন কিপ্রকারে হটতে পারে, একণার জবাব দেওরা ভাহাদের আবন্তক। তাহারাই বলিরা থাকেন যে, প্রাণ-বিনাশের পর পুরুব কেবল নাম মাত্রাবলিট হটরা (থাকে; যাং প্রতিও বলিরাছেন বে, 'মৃতাবহার দেহটী পড়িরা থাকে', [রুভ দেহে-জিরাফি সাধনসমূহের অভাবে বে, বিভাধিকার থাকিতে পারে], ইহা মনোরব ভারাও উপপাদন করিতে পারা যায় না। আর যদি এইর্মুপ ভারানা কর বে, সেই পুরুব জীবিভাবহারই নাম মাত্রাবলিট থাকে, এবং

(कारपंगरवांके नमक विका बहेरक विविद्य हह । [विकास करि,] कि काशर्त रह, जेवल वह, जावा रक्षांक वह । [विकास करित । यहि वह, जवन नमक देवक नमार्थंद महिक व्यापाद अकर ना विकास हरेशा मात्र, अहेकक जेवल व्यापा केंगिएंठ हह ; पूर्वंह अ क्याप केंग्र रहेशा बहेशा हरेशा [व्यवस्थि अवस्था केंग्र रहेशा बहेशा विवास हरें [व्यवस्था अवस्था व्याप्त व्याप्त विवास कर्मा व्याप्त विवास व्याप्त व्य

अवह अकरे शुक्रावत अकरे किहा बाता ति नावन निमाविक रह, तिरे गावन बाजा के इहे शकाब कन नाठ कड़ा क्वनहे नख्यपद हहेरछ शास ना । भक्रास्टर्ड, छेहा दक्षि हित्रगुभर्छ-भव्याधिद्रहे मादन हर्ड, छोहा हहेरन, छेहा क्यमहे ट्याननिवृद्धिकत देवतानामायन हहेट नात ना; यथि यम, क्षे जाश्मी रथम शुक्रमाक शतमाचात्र शिक्त गरेता रात्र, उपम कारकरे छेराक लाशनिवृध्वित्रक माथन विगार हहेरत ; जाग क्या, जाहा हहेरन क्यनहे উহাকে दिवनागर्ड-भवकाश्वित गांधन विगाठ भाव ना ; [कनना, हिवना-পর্ডপদ কথনই ভোগবিবর্জিত নছে]; বাহা গতি-সাধন, ভাছাই আবার পতিনিত্তিরও (ভিতিরও) সাধন বা উপায় হইতে পারে না। আর বদি वन, मुकात भन्न विज्ञामर्छ-भन्नथाथ वस, छाहात भन्न खान विनीन वस, जाबाद शब नावयाजावनिहे बाकिता शब्याच-विवतक काम नाटक **च**िकाती হইরা থাকে; তাহা হইলেও আমাদের মত লোকের বন্ধ পরমান্ধ-কান লাভের छेशरम कहा मन्पूर्व निवर्षक हरेहा शाक् ; चवठ 'स्वराजाशवत बाबा त्व (व वाकि शतमानकाम नाच कतिवाहिन' वेचाहि क्षेत्र कि वाकिनिर्सित्वाद नकरमञ्ज बक्र रे भवन भूक्तार्वश्रास्ति केरूट उपविचात केमरान विराह्म । चछवर वहे श्रकात नावार्य कहना कता नर्सनाविक्ष ७ चछार निक्रहे। चायवा अथन अधिव वंशार्य छार्श्यांत चक्रुमवर्ग अवस स्टेर । श

এহ ও অতিগ্রহ কাহার প্রেরণার প্রেরিত হইরা পুরুষের বছন ঘটার, ভাহা নির্ছারণ করিবার অতিগ্রাহে আর্ততাগ জিজাসা করিলেন—হত্ত-বত্তকাদি-সম্পন্ন অস্বাগ্রনী (আত্মজানরহিত) পুরুষ বে সবর মৃত্যুরুষে পভিত रह, छथन छाहाद वानिखित पश्चिए विनीम रह, खान बाहुए नीम यत्र, रुक्: वर्गारम्यत्क आश सत्र'; नर्बजरे 'बालाजि' (आश हत्र) कितात नवस चारकः मन हत्तः, अन्तरशिवतं शृक्तिविक्तिः, नशीतं शृक्तिरिक्तः, अवर चाचा-এখানে আত্মা-শব্দে আত্মার অভিব্যক্তি-স্থান ব্দরাকাশকে বুরাইতেছে; त्रहे क्रशाकान कृष्ठाकात्न, त्नावनवृद ७वर्षिट (छून नष्ठा अकृष्ठिए), क्मिन्रवृष्ट् वनम्भिक्तिवृह्ह [विनीन इद्ग, त्य नवक वृष्म गुण वाकित्वत्क कन क्षेत्रव करत, (महे ममल त्रक्षक वनम्मिक करह,] अवर (माहिक (त्रक्ष) क ওক জলে নিহিত (বুন্ধিত) হয়। এখানে 'নিধীয়তে' পথ-প্রারোপের **শভিপ্রার এই বে, পঞ্জারু নিহিত (গন্ধিত) বস্ত বেষন পুনরার গ্রহণ** कदा बाद, ट्यिन এই ७क-लानिटानि भनार्यंत्रध भूनक्यात हरेना बारक. ব্বাৎ পুনরার ভাহার সংসারে সমাগম সম্ভবপর হর। এবানে সর্বতেই বাগাদি-শব্দে তদভিমানী দেবতার লয় বুবিতে হইবে, কিন্তু সাক্ষাৎ সক্ষতে वाशापि हेल्लियबड़े नय वृक्षित हहेरव ना ; कावन, मुक्तिनार्छव शृस्त वाशापि इक्तिप्रमहर क्थनरे बाबारक हाज़िया ठलिया बाब ना। त्र ममत्र रक्वल निक निक विविधाओं स्वराकर्क পরিতাক हरेश है लियन्त्र रखहाठ आखर बाद अकर्षण वहेता गारक, धरा करी। शुक्रवत एक विमहे হওরার অস্বাধীন চইরা পড়ে; স্বিতরাং কোন কার্যা করিতে পারে ना]; এই चित्रशात श्रद्ध हरेन-"कायः छमा पूक्रता छवि"-पूक्र (আৰু) তথন কাহাকে আশ্রয় করিয়া থাকে, বে আশ্রয়ে আশ্রিত बाकिया (म भूनवात वादि खित्रानि शहन करत, दवर बाहात मक्रन छक्क शह छ অতিপ্রভান্ত বন্ধ সংঘট্ত হয়; সেই বছটা কি ? ইহা বইল আর্ভতাপের ## 1 E

এই প্রের উত্তরে বাঞ্চবকা বলিলেন—এ বিবরে বিশুর বততের আছে— বিভিন্ন বাদিসণ বভাব, বলুক্ষা (আক্ষিক সংঘটন), কাল, কর্ম, বৈব, বিশ্বানবাত্ত ও শুক্তকে কারণরূপে কর্মনা করিয়া থাকেন; (১) অভএব, এ বিবরে বহুতর বিরুদ্ধ সততের বিশ্বান থাকার, বন্ধ ক্যার নিয়বাস্থারে

ভাংপ্রা—লোকায়ত নাজিকান ক্ষাৰ ও বস্তুলাকায়ণবাৰী: ব্যোতিনিধ্বণ কালের ক্ষেত্রবাৰী, কর্মনীনাংসক্ষণ কর্মের কারণভাষারী; বিজ্ঞানবাৰী বৌত্তৰণ বৃত্তি-বিজ্ঞানকে কারণ বলেন, আর নাবামিক বৌত্তৰণ প্রকেই কারণ করিবা নির্কেশ ক্ষেত্র।

ভিষমির্ণর পর কথাকে 'জল্ল' কথা বলে।] এই বিষয়টা নির্ণর করা সন্তব্পর হয় না; আর্জ্রাপ, ভূমি বলি এ বিষয়ের প্রকৃত তর নির্ণর করিতে ইক্ষা কর, তাহা হলৈ হব প্রসারণ কর—(প্রথনা আমার হল প্রহণ কর), আমরা উক্তরেই তোমার জিলাসিত বিষয়ের বাহা সারত্ব, তাহা নিরূপণ করিব; কারণ ? বেছেছু আমালের এই বিজ্ঞের বিষয়টা সন্তনে—বহুজনসম্কীর্ণ স্থানে নিরূপণ করা সন্তব্পর নহে। অতএব বিচারের জন্ত চল, আমরা উত্তরে নিস্কৃত স্থানে প্রমন করি। ৬

'(ठो र' हेजापि क्या धनि अठिव छेलि। (नहे बाक्यवहा व चार्वजान নিভ্ত স্থানে বাইরা কি বলিরাছিলেন, তাহা কবিত হইতেছে—বে সমস্ত লোক লোকসিছ বিষয় সথ্য অবলয়নপূৰ্মক সিছায়-িশেব সংস্থাপন ক্রিয়াছেন, প্রথমে ভাষারা সেই সমস্ত মতের এক একটা ধরিরা মালোচনা कवित्राहित्तन: ठाशांत्र। चार्ताहनाद शत्र, चक्रांक वाश्मिर्वद बठवाश मुद्द बल्दान्त्रं भव बाहा विविद्याहितन अवीर मिहाब निक्रभन कविद्याहितन. छाडा अवन कर : डै:हाता वात्रवात (माहित्य-मश्वाचक मानादात হেতৃত্বত কর্মের কণাই বলিয়াছিলেন; কেবল বে. এক্রপ সিছাত্ত कतिबाहे कांच हहेबाहित्तन, ठाहा नरह; शब्द कांत, कर्च, देनव छ सेबाबद कादनका चौकादद भद्र, वाहाद अनःता कदिवाहितन, काहारक कार्चनुई अनश्मा कतिबाहित्तुन ; (कन ना, व्याहरू भूनः भूनः (ब, अश्वि-अहाक्षित्रत कार्या-कर्म अहर (नतीत्रधातमञ्जल मरमात्रमाछ), कर्चाकर छाहात প্রধান প্রবোজক হেতু বলিয়া অবধারণ করিয়াছিলেন; সেই হেতুই লোক শান্তবিহিত কর্ম দারা পুণা হয়, আর তদিপরীত পাপ কর্ম দারা পাপী হয়। बाक्षवद्या अहेन्नरण आसास्त्र अवान कडिरम भव बाद्य कार्वधान विश्वन (व, विठाद बाक्रवदारक भवाकित प्रवा, भागाएव भक्त अम्बर, ল্পন জিনি প্ৰশ্ন ছইতে বিবৃত ছইলেন। ১৬৫। ১৩।

> ইতি বৃহদারণ্যকোপনিবদের তৃতীয়াখারে বিতীয় আছণের ভাষাস্থবাদ সমাধ্য ৩ ৫ ২ ৪

ভূতীরং ব্রাহ্মণম্।

ভচ্চ পুণাপাপাথাং কর্ম "পুণো বৈ পুণোন কুর্মণা ভবতি পাপং পাপেন" ইতাবধারিতভাং এতৎকৃতঃ সংসারঃ। তরাপুণোন হাবরজন্মর বভাবহুংববদদের নরকতির্যাকপ্রেতাদির চ হংগরমুভবতি—পুনং পুনর্জারমানো মিরমাণত —ইতোতগ্ রাজবর্ম বিং সর্কালাকপ্রসিদ্ধর। বন্ধ শারীরঃ পুণো বৈ পুণোন কর্মণা ভবতি, ভবৈরাদরঃ ক্রিয়তে ইহ প্রভাঃ পুণামেব চ কর্ম সর্কাপুর্বার্থসাগনমিতি সর্কো প্রতিবালাং। মোকস্থাপি পুরুষার্থবাৎ ভৎসাধাতা প্রাপ্তা; বাবক্ষাবিং পুণোৎকর্মঃ তাবতাবং ফলোৎকর্মপ্রাপ্তিঃ; ভন্মাণভামেন পুণোৎকর্মঃ তাবতাবং ফলোৎকর্মপ্রাপ্তিঃ; ভন্মাণভামেন পুণোৎকর্মেণ ক্রিয়তীত্যাশক্ষা ভাং; সা নিবর্ত্তিভ্রা।। জ্ঞানসহিত্য চ প্রকৃত্তি কর্মণ এতাবতী গতিঃ, ব্যাক্তত-নামর্মণান্দামাংক ক্রিয়ালারক্ষণস্থতাব্যক্তিক কর্মণ এতাবতী গতিঃ, ব্যাক্তত-নামর্মণান্দামাংক ক্রিয়ালারক্ষণস্থতাব্যক্তিক কর্মণো ব্যাপারেছিছি; যত্র চ ব্যাপারঃ, স্প্রায় এবেতান্তার্থিক প্রকর্মনার ব্যান্ধনারক্রাত্তাতে। ২

নৰ কৈ কিছ্চাতে—বিভাসহিতং কৰা নিগতিসভি বিষদ্ধালিবং কাৰ্যান্তব্যান্তত ইতি; তন্ত্ৰ, অনান্তভাহাৎ যোকত; বন্ধনাশ এব হি যোকা, ন কাৰ্যভূতঃ; বন্ধনক অবিভেত্যবোচাম; অবিভাগান্ত ন কৰ্মণা নাম উপপভতে, দৃষ্টবিষদ্ধান্ত কৰ্মণামৰ্থাত,—উৎপভাত্তি-বিকাশ-সংখ্যান্তি কৰ্মণাম্পত্তি বিষদ্ধাঃ; উৎপাদন্তিত্ব প্ৰাপন্তিত্ব বিষদ্ধাঃ দ্বিদ্ধান্ত বিষদ্ধাঃ কৰ্মণাম্পত্তি, নাতো বাতিদ্ধিকবিষ্যোহতি কৰ্মণাম্পত্তি, গোকেহ

অপ্রসিদ্ধাৎ; ন চ বোক এবাং শহার্থানামক্তমঃ; ক্ষরিদ্ধানান্তব্যবহিত ইতাবোচান। ০

বাচ্ৰ্; তবতু কেবলজৈৰ কৰ্মণ এবংশতাৰত।: বিভাসংযুক্তত তু নিরতিস্কেট্রতি অন্তথা বভাবঃ; দৃষ্টং হি অন্তণক্তিনে নিজাভানারণি পদার্থানাং বিষ-দ্যাদীনাং বিভারম্পক্রাহিসংযুক্তানামন্তবিষয়ে সাম্বার্; তথা কর্মণো৽পান্তিত চেৎ; ন; প্রমাণাভাবাৎ,—তত্ত হি কর্মণ উক্ত-বিষয়ব্যতিরেকেণ বিষয়ন্তরে সাম্ব্যান্তিকে প্রমাণম্—ন প্রত্যক্ষং, নাল্যান্ম, নোপ্যানম্, নার্থাপ্তিঃ, ন শ্লোছন্তি। ৪

নম্থ ফলান্তরাভাবে চোদনান্তবামুপপণিঃ প্রমাণমিতি। ন দি নিত্যানাং কর্মনাং বিশ্বজিয়ায়েন ফলং করাতে; নাপি ক্রতং ফলবন্তি; চোভত্তে চ তানি; পারিশেক্তাৎ যোক্ষরেবাং ফলমিতি সম্যতে; অক্সবা হি পুরুষা ন প্রবর্ত্তেরন্। ধ

নহ বিশ্বজ্ঞিয়ায় এবারাতঃ, যোক্ষপ্ত ফলস্ত করিতরাং; যোকে চান্তবিন্ বা ফলেংকরিতে পুরুষা ন প্রবর্তেরন—ইতি যোক্ষঃ ফলং করাতে শুভার্যাপস্ত্যা, যথা বিশ্বজিতি। নতু এবং সতি কথম্চাতে, বিশ্বজিগ্রায়ের ন ভবতীতি; ফলং চ করাতে, বিশ্বজিগ্রায়েল ন ভবতীতি বিপ্রভিবিদ্ধন্দ্রতা যোক্ষঃ ফলমের ন ভবতীতি চেং: ন, প্রতিজ্ঞাহানাং; কর্ম্ম কার্যায়রং বিশ-দ্যাদিবদার্ভত ইতি হি প্রতিজ্ঞাতম্ব; স চেম্মোদ্ধঃ কর্মণঃ কার্যাং ফলমের ন ভবতি, সা প্রভিক্তা হীয়েত। কর্মকার্যাদে চ যোক্ষপ্ত বর্গাদিফলেতা। বিশেষো বক্তবাঃ। ৬

অধ 'কর্ম-কার্ব্যং ন তবতি, নিতানাং কর্মাণাং ফলং বোক্ষা' ইতান্তা বচনব্যক্ষাে কোংর্ব ইতি বক্তবাষ্। ন চ কার্যা-ফলনকভেষযাত্তেণ বিশেষঃ লক্ষ্যা কল্পনিতৃত্ব। অকলক বোক্ষাং নিতৈয়াক কর্মতিঃ ক্রিপ্তে,— নিত্যানাং কর্মণাং কলং ন কার্যানিতি চ—এবোহর্ষো বিপ্রতিবিদ্ধোহতি-বীয়তে—বথান্তিঃ শীত ইতি। ৭

বিজ্ঞান্যদিতি চেৎ—বৰা জানত কৰিছ ৰোজঃ জানেনাজিয়বাণোংপুচাতে, তৰং কৰ্মকাৰ্যদিতি চেং; ন; জজান-নিৰ্ভক্তাং জানত;
জ্জানবাধ্বাননিৰ্ভক্তাং জানত যোজো জানত কাৰ্যনিভাণচৰ্বাতে;
ন ডু কৰণা নিৰ্ভনিত্বামজানত; ন চাজানবাতিরেকেণ বোজত ব্যব-

বানাৰরং কর্মিছুং শ্কান্, নিভাছায়োক্ষণ্ঠ সাধক্ষমপাব্যভিৱেকাক্ত— বং কর্মণা নিবর্ত্তোভ। ৮

শক্তানৰেৰ নিবৰ্ত্তরতীতি চেং; ন, বিশক্ষণৰাং,—খনতিব্যক্তিরজ্ঞানষ্
শতিব্যক্তিনক্ষণেন জানেন বিরুধ্যতে; কর্ম তু নাজানেন বিরুধ্যতে; তেন জানবিশক্ষণং কর্ম। বিধি জানাতাবা, বিধি সংশ্রজানম্, বিধি বিশ্বীজ্ঞানং বা উচাতে শজানবিতি; সর্মং হি তঞ্জানেনৈৰ নিবর্ত্তোত, ন ভু কর্মণা, শক্তবেনাশি বিরোধাতাবাং। >

णवावृद्धेः कर्णवायकाननिवर्तकः कहाविति (६६ ; न, कारमाकान-निवृर्त्तः) भगावानावायवृद्धेनिवृत्तिकह्ननाक्ष्णभरकः ; वद्या व्यवधारक द्रोद्धेशाः कृषित्ररतः) भयावानावाय व्यविद्यावि-निष्ठाकत्रकार्यः। व्यवृद्धेः न कहार्द्वः कृषित्रवृत्तिः, एषम् व्यक्षानिवृत्तिः। भिष्ठाकत्रकार्यः। व्यवृद्धेः न कहार्द्वः कारम् विक्रष्ठक व्यव्यव्यविद्यायः । प्राविक्षः कारः कत्रकः, उर्द्यवः भारम्

কিকাজৰ, করো চ কলে নিত্যানাং কথানাং প্রতানায়, যথ কথান্ত-বিক্লবাতে—প্রবাধনকথানাং কার্যায়ের ন ভবতি,—কিং তথ কল্পাতায়, বাখান্ কথানা সামর্থায়ের ন ভৃত্তিয়া কথানা বিশ্বনায় প্রথম সামর্থায়ের ন ভৃত্তিয়া কিংবা বাখান্ ভৃত্তিং সামর্থায়ায় যতে কথানাং ক্লামবিক্লম্য, তথ কল্পাতায়িতি। পুক্রপ্রাপ্তিকানার প্রথম চেথ কথাকার কল্পাবিক্লমবির এব প্রতার্থাপন্তঃ ক্লামবাথ নিত্যো যোক্ষয় কলাং কল্পানিক্লমবির এব প্রতার্থাপন্তি ক্লামবাথিকার প্রথমবাধনাক্রানার্থাকার প্রথমবাধনির বিশ্বর বাজেতি। ১১

পারিবেরজারাং বোজ এব কয়য়িতবা ইতি চেং—সংক্ষাং হি কর্মণাং
সর্বাং কলম্ ; ন চাজং ইতিরকর্মকারাভিত্তকেও কলং কয়নাবোগায়াল্ল ;
পরিবির্ত্তক বোজঃ ; স চেইঃ বেছবিলাং কলম্ ; তথাং স এব কয়য়িতথ্য ইতি চেং ; ন, কর্মকারাজীনামানজ্যাং পারিবেরজারাজ্পপত্তঃ ; ন
হি পুরুবেক্ষাবিবয়াণাং কর্মকারামেতাবরং নাম কেনচিলস্ক্রজেনাবগুজন্,
তৎসাবনানাং বা, পুরুবেক্ষানাং বা অনিয়ভ্তত্তেশকালনিবিভয়াং পুরুবেক্ষাবিবয়সাবনানাক পুরুবেইকনপ্রস্কুলাং ; প্রতিপ্রাণি চ ইঞ্চাবৈভিত্তাং কলানাং
তৎসাবনানাং চানভাসিদ্ধিঃ ; তলানভ্যাক্ত অবভাবেক্তার্থং পুরুবৈক্তাণ্ড্র্য ।

বংক্ত এ সাবনাকলৈতাবারে কথং যোকত্ত পরিবেধসিভিত্তিত । ১২

কর্মকা-আভিপারিশেশ্ববিতি চেৎ—সতাশীক্ষাবিবরাণাং ভৎসাবনামাঞ্চানন্তা কর্মকাঞাভিত্য নাম সর্বেবাং তুঁলান্, নোকত অকর্মকারাৎ
পরিপিট্টা তাৎ ভবাৎ পরিপেবাৎ স এব বৃক্তা কর্মিচ্ছবিতি চেৎ; ন,
ভত্তাপি নিতাকর্মকারাভ্যাপগ্যে কর্মকলস্বান্ভাতীয়রোপপ্তেঃ পরিশেবাস্থপপজ্ঞিঃ। ভত্মাবন্ধবাপ্যাপপত্তে কীলা প্রভার্থাপ্তিঃ; উৎপত্তান্তিবিকার-সংখ্যালাবন্ধত্বমণি নিত্যানাং কক্ষণাং ক্লমুপপত্ত ইতি কীলা
প্রভার্থাপ্তিঃ। ১০

চতুৰ্বিজ্ঞতৰ এব বোক ইতি চেং; ন তাবহুংপান্ত, নিতারাং; অতএব অবিকাৰ্য্যা, অসংকাৰ্যান্ত অতএব অসাধনপ্রবান্তকভাক—সাধনান্তকং হি প্রবাং সংক্ষিপ্রতে, ধবা পাঞ্জালান্তি প্রোক্ষণাদিন) ন চ সংক্ষিপ্রবাণ্য সংকার-নিক্রিটো বা—ঘুপান্তিবং পারিবেলালাপাং স্তাং; নাপ্যাহিপি, আন্তর্ভাব-বান্তকভাক । ইতহৈঃ কক্ষতিকৈলকণাাং নিত্যানাং কল্পান্য, তংক্রেনাপি বিলক্ষণেন ভবিতবানিতি চেং; ন, কল্পগালকণ্যাং সগক্ষণং কল্পাং কলং ন ভবতি ইতরকল্ফলৈঃ পুনিবিত্তবৈলকণাাদিভি চেং; ন, কামবত্যানিতিঃ সমানদাং; বলা হি গুল্লাহাদ্যে নিবিত্তে কামবত্যানিতিঃ বলা ভিন্তে ক্ষেত্রতি, বল্পানিতি ইত্যেব্যাদে নিবিত্ত কামবত্যানিতিঃ বলা ভিন্তে ক্ষেত্রতাতি । বলাভিন্ত ইত্যেব্যাদে নিবিত্ত কামবত্যানিতিঃ বলা ভিন্তে ক্ষেত্রতাতি । বলাভিন্ত ইত্যেব্যাদে নিবিত্তকের কল্পন্ত নাম্বিক্র কলং কল্পানে। বলাভিন্তিক্যেন, ভীবনানিনিবিত্ত চ প্রবর্গাং, তলা নিত্যানা- বিশ্বাক্ষণ কল্পন্ত নিবিত্তিক্যেন, ভীবনানিনিবিত্ত চ প্রবর্গাং, তলা নিত্যানা-

আধোকত সংক্ষাং রপ্তপ্নসাধনতে, উণ্কাচন আগোকেন রুপং ন প্রান্থীতি উপ্কাচিচকুলে৷ বৈশক্লাচিত্রলোকচকুজিঃ ন সুসালিবিষয়কং প্রিকল্পাতে; বসালিবিষ্কে সাম্ব্যাত্তীয়াৎ পুসুর্যণি প্রা ম্বিষ্কে চুইং সাম্ব্যুস্, তারের কল্ডিভিশেন ক্র্যিতবাঃ ১০

यर शुनक्कम्, विश्व यद्ग-नकराषित्रः वृक्तविष्यः गाषिवर निष्ठानि कार्यासः स्वातकसः हेति, बातकाणाः विनिद्धेर कार्यम् ; जर हे हेशम्बिद्धानः ; निर्द्धित्राद्धः कर्नापाविष्यात्राद्धः विश्वविद्धानः (विविद्धानाधिः विद्यानाधिः विद

यश्च शक्कांब्युर्वमित्रितः यश्चतात्मः वाध्यावि-नवः—"नमः शक्कांब-यात्री" देखाज, नमः शब्दाव्याकी खन्छोडावः; व्यवतः कृडण्यंत्रखाः वाध्याक वाध्यमःखादावः निखानि कथानि करतिः "देशः स्वस्तमात्रः সংক্রিরভে" ইতি প্রত্যে; তথা "গার্ডের্রেরিং" ইত্যাবিপ্রকরণে কার্যকরণসংক্রার্থিং নিত্যানাং কর্মণীং ধর্মরিতি: সংয়তণ্ট ব , আছমানী তৈঃ
কর্মতিঃ সমং প্রত্তু: স্বর্ধো তরতি, তপ্ত ইর বা ক্ষার্যারে বা সমমান্ত্রকর্মনম্পন্ততে; স্বং পর্ম বারাক্যমন্ত্রিভাবোর্গাঃ আছমান্তিপ্রস্ক্রের্যা প্রস্ক্রান্ত ক্রামন্ত্রানাং নিত্যানাং কর্মণাং ক্রানাংপ্রিসাধনকপ্রকর্মনার্যা। ১৭

किकांबर,-

"जन्म विषयस्य भरता महानवास्यय हः। উत्तमार प्राविकीस्यठाः पश्चिमाहर्षनीयिनः"

ইতি চ দেবসাই ব্যিতিরেকেণ ভূতাপায়ং দর্শয়তি— "ভূতারূপোতি পক বৈ"; "ভূতারূত্যেতি" ই'ত পাঠং যে কৃষ্ণবি, তেযাং বেদবিষয়ে পরিভিন্নবৃদ্ধিয়াদ-দোষঃ। ১৮

ন চাৰ্যাদ্যম্—অধ্যায়ত ব্ৰহান্ত-কথাবিপাকাৰ্যত ওয়াভিৱিকান্তলানাৰ্যত চ কথাকাণোপনিষ্কাং 'ও্ল্যাৰ্গ্যদৰ্শনাথ', বিশ্বিভাকরণ প্রতিষিদ্ধকর্মণাক ভাবর-খ-শ্করাদিকসম্প্নাথ, বাস্থাপাদিপ্রেতমর্শনাচ্চ। ১৯

ন চ প্রতিশ্বতিবিহিত-প্রতিবিহ্ববাতিরেকেণ বিহিতানি বা প্রতিধিহ্বানি বা কর্মণি কেন্চিম্বণন্তঃ শকারে. যেযামকরণাদস্কানান্ত প্রতেশশুকরহাবরালীনি কর্মফলানি প্রতাকাম্মানাত্যামুপলভাৱে; ন চৈযামকর্মফলহং
কেন্চিদ্ভাপগমতে; তথাবিহিতাকরণ-প্রতিবিহ্বসেবানাং যথৈতে কম্মবিপাকাঃ প্রতিতিব্যক্ষাবরালয়ঃ, তথা উৎক্রটেম্পি প্রভাৱেণ কর্মবিপাকরং
বেলিতবাম্ । তথাং "সু আন্ধনো বপামুদ্ধিদং" "সোহরোদীং" ইত্যাদিবং নাভূতার্ববাদয়ম্ ২২ ত

তত্ত্বাপি অত্তাৰ্বনাদহং যা ত্লিতি চেং; 'দবছেবয়', ন চৈতাৰতা অক্ত কায়ক্ত বাবো তবতি, ন চাসংপক্ষো বা চ্ছতি। ন চ "প্ৰদা বিশক্ষঃ" ইণ্ঠ্যালীনাং কাষ্যকৰ্মকলয়ং শকাং বন্ধুন, তেবাং দেবসাই তায়াঃ ফল-জোক্তবাং। তথাং সাতিসন্ধীনাং নিত্যানাং সৰ্বনেধাৰনেধালীনাং চ প্ৰদ-ঘালীনি কলানি; বেবাং পুননিত্যানি নিবুভিসন্ধীনি আস্থান্ধয়াৰ্থানি, তেথাং কানোংপত্যানি তানি, "প্ৰান্ধীয়ং ক্ৰিয়তে তত্ত্বং ইভ্যাদি-শৱণাং; তেষাবালান্থপকালকভাং মোক্ষসাধনাক্ষপি কৰ্মাণি ভ্যৱীতি ন বিশ্বথান্ধ। যথা চায়্যৰ্থং, মঠে ক্ষমকাৰ্যান্ধিকাস্বাণ্ডে বঞ্চাষঃ। ২১ বভু বিষয়বাদিবদিয়ুক্তম্ ; তত্র প্রতাকার্যানবিবর্যাদিবরোধ্য ; বল্প আন্তর্গাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিবিদ্যাদিবরিক্ত প্রান্ধানে বিশ্বাদিবরিক্ত লিভিডে ক্লেক্ত নিভিডে বিশ্বাদিবরিক্ত প্রভাগনিক্ত ক্লেক্ত নিভিডে নিভিডে বিশিল্প বালপ্রভাগনিক্ত ক্লেক্ত ক্লেক্ত নিভিডে বিশ্বাদিকর ক্লেক্ত ক্লেক্ত ক্লেক্ত নিভিডেরিক্ত ক্লেক্ত ক্লেক্ত ক্লেক্ত নিভিডেরিক্ত ক্লেক্ত ক্লিক্ত ক্লেক্ত ক্লিক্ত ক্লেক্ত ক্লেক্

নিকা। ৰাজগণখনৰৰভাষা ৰুজা চাইনভি---অংশক্ত্যাদিনা। উল্নেৰ বজ মুমুখা নালীকরেণ্ড অন্যাদিন্তি। অনিকৈ মৃত্যুভিগাধাৰুজ্য আরেভি--স্তন্মা-দিভি: খনাবিভাগধাৰুক্তমগুল্লভি- মুক্তন্স চ্ছেতি। খনাকেলাতে নিশীকন্ত্ ভাগতে-স্তব্যক্তি। পূর্মরাধানখো এখা সংখ্যাবা: ভক্ত লাবগানিতবিভানেন স্বত্মঃ। মাসরলাং বুলানানাগাল বানি কার্যা দ্বানি বৈশ্বনিত বৈশ্বনিকলান। অন্যানানমুশা-ধানবিভ্যুক্তন্ত ভাগনিকলান মিতি স্বত্মঃ। বর্ণাপ্র ভাগাধান্তাং বভ্যোজার্কো গ্রাভাবদানা কর্মণা নোকভেতুরং কুট্ডভি - ত্রুজ্বায় চ্ছেত্রিঃ ভক্ত ভাবদানা বজ্ব-ক্ষেত্রৰ ক্ষেত্রিভি --স্তব্যক্তি।>

পুণাপাপহোক্রভয়েরপি সংসারক্ষরিশেবাৎ পুরাক্ষরৎ পাপক্ষরণাত্র বক্ষরক্ষর বিধান্তরিশাক্ষিত্র বিধান্তরিশাক্ষিত্র বিধান্তর বি

ভাৰৰকংৰ ভয়াপাৰো বাভি, ভত্ৰাহ—যত্ৰ ক্ৰেন্তি। স্থাকনত সৰ্বাচ সংগায়স্বৰেৰেভি মুক্তঃ নিবাভি, ভত্ৰাহ—ইন্ড্যাইডাইড। ব

বিভাগবিভয়ণি কর্ম সংসাহকলং বিজৈব সোজার্থেকি অপক ওছর্বাং বিভারের পূর্মাণক্ষান্তি—মান্ত্রিক্তি। বংগ কেবলং বিষেধ্যাবি মন্ত্রপন্তি কর্মাণ মন্ত্রপন্তি বিভাগন্তি হা বিভাগন্তি হা বিভাগন্তি হা বিজ্ঞান্ত কর্মান্ত কর্ম

উক্তং কৰ্মপাৰবাঁং পূপৰাক্ষলীকৰোতি আঢ়েমি তৈ। অলীকাৰৰেৰ ক্ষোৰাজি—
ক্ষেত্ৰতি তি এবং অভাগতোৎপালনাংগ সংঘটতা। লা গতি বিশ্বতিপঞ্জিতাত—
বিক্ষামন্ত্ৰতেতি অন্তৰ্গৰভাৱত তুৰিবিক্ষিণাক্ষপানেগণি বাবে সমৰ্বতি বাবং।
ইংপ্তাগে সমৰ্বত কৰণে বিক্লাসন্ত্ৰত তৰিলক্ষণে বাকে সমৰ্ব্যব্দীতাত কৃষ্ণিতমাহ- ফুটেং ক্ৰীভে। উক্ত ভৃহান্তৰপাৰ কৰ্মণাহশিকেৰ্লক সংসাৰক্ষণক বিক্লাসংবাধাৰ্
কৃষ্ণিকল্বৰণি ক্ষান্তন্ত্ৰতে। স্বাধ্যে—মেক্ড্যাক্ষ্যা। •

ষ্ঠালিছে। কর্মণ কর্মণ মুক্সাবন্ধে গ্রহাকাঞ্জনন্ত্রেণাবিষ্ণন্ত্রীতি বঙ্ঠে—
নাল্লিতি। নিজ্যের কর্মণ মেকাতিহিক্ত কর্ম জনজান্তাবান সভি ভর্নলভাষামহোধনায়
মোকক্ষারং বিনাস্পশন্তিকেও ভংগাবনতে মান্তিগ্রাং। নাল বিষ্ণিতা বজেতেন্ত্র
বানকর্মারাজ্যে নিজোগেল্যমানে, তার নিষোলানাপেক্ষারং শন কর্মা, তার নর্মান্ প্রভাবিনিয়্রার্মি ক্রিভাবিশ্বর স্থানি বিষোলালি নিষোলালি নিষোলালি নিষোলালি নিষোলালি নিমানানিকের সাহ না ক্রীতি। জীবন্ধুলাভি জীবনবিনিরের নিষোলাভ নাভার
বিভাবে কর্মানিকেরণমিত্রার্মি। নাল জীবনবিনিরেরির নিষোলাভ নাভার
বিভাবে কর্মানিকেরণমিত্রার্মি। নাল জীবনবিনিরেরির নিষোলাভ নিবোলাভ
ভারবা ভাকরণা পিল্লেন্ডার্মিলিভি । কর্মানানিকার্মিনারিরার্মিলভাবিষ্ণার্মি

अपूर्णका कितिवाकामांका विकाय कर क्यांक, कर विविधारित व वार्या-की कितिवाको स्थाय—अभ्रिकि । केक्ट्यर विद्रक्षि—(स्वारक द्विकि । कर-बिट्ड महोडि (स्वरः । क्षडावीणका वित्यः कडक स्वर्धक्षाक्षणगरकाकि वावर । विद-विकी वित्राम् (वारक करम क्यायात मिक क्षिक्याय—अर्थ्यक्षिकि । क्वविद्यूक्षण-मक्षणगिव्यय क्ष्डेवि—स्वद्यस् एक्कि । क्वक्यत्याः विष्वकारकार्याः विद्यक्ष्यक्षि । विश्ववृद्याः वश्वविद्यवाक्ष्याक्षणां क्वत्यय व करकेकि नक्ष्य-स्वर्थकारित्याः विश्ववृद्याः व्यक्षक्षयायः—(सिक्तः) व्यक्यावादिः व कर्षेवि—स्वर्धकार्याः क्ष्यंकार्याः व्यक्ष्यवादः । क्ष्यवाद्याः

পৃথ্যবেদ বাগেজং পরিবর্গাণকতে — জগুন্দানিক্তি ক্রেনিক্তি । তাবে পুটবতি — মহেনিক্তি । পৃথাবং বিবটবতি — দেকি । জানত বোক-বাববিভূতাজাননিবর্ত্তকান্ বোক্তেবাজিলবাণেহিশ তংকাধানিত বাগংগণতাগ্ ভবতা গর্থঃ। তাবে পুটবতি— আলাহুন্দাক্তি । গাওঁ জিলং নিরাচাই—ম জিক্তি । বং কর্মণা নিবর্ত্তোক্ত বাবধানাত ওং কর্মানিক কু প্রাথিতি সংব্যা বাবধানকালে কর্মণোহ্মানেশ্রেদিক ব্যাধানকালে ভারতি চেল্লেভাহ — নিক্তাজানিক্তি । প

নিতাকপানিবর্তা: বাবধানান্তবং বা তৃৎ জানবের ভরিবর্তাং ভবিবাতি, তথা চ বোক্ত কর্মনার্থান শভাস্পর্ভারত্বিতি শভতে – অঞ্চাস্ট্রেন্টে । কর্মণা জানাবিলক্ষণ-পারাজ্ঞাননিবর্তকপানভারবাধ—ম বিলক্ষণান্ত্রাদিন্তি। বৈলক্ষণানের অকটাতি— আম্ভিন্যান্তিনক্সিভি । ইতক জাননিবর্তাবেধাজানবিভাগে— ঘদীন্তি । অক্তবেদ নিত্যাধিনা বাজেন সমজেন বা জৌতের পার্কেন বেডার্থা। কর্মাজানহোরবিব্যোগে বেপর্থা। ১

অঞ্চাননিবর্ত্তকর কর্মণো নাগ্রহণ ডিয়েক নিডঃ, কিন্তৃইনের কল্পানিভি প্রত্তে—
আহ্বান্ডি। গৃঙ্ সভাগৃষ্টকলনা ন ভাগোভি পরিচরভি—ন্য ক্রোইনেইনাডি। উত্তর্গর্ড গৃষ্টান্তের বুভাগারোপগ্রত—আহ্বান্ডিনা। অনুটেভি জ্বেল:। অভ জ্ঞানাকজ্ঞান
ভাগিঃ, ভিত্ত কর্মসন্তিভাগিভাগভাগ —ক্রোইনেইনাডিঃ নতু কর্মচিয়বিকভবণি
হিরণাগর্ডাধিকানবাদি, তথা চ সর্জ্ঞিতঃ জানবজ্ঞানখানি ভবিষ্ঠি, বেজাং—হান্ত্বিশ্বন্তক্ষমিন্ডিঃ। ১০

নিজ্ঞানাং কৰ্মনাং সমূচিকানাৰস্থতি গ্ৰাং চ বছপদ্ভি বাবে কংকতিবক্তভাল-ক্তেই বালিট্টং নামনাং কলাবিকুতেন্ ইয়ানীং বংকলনামজীক্তাালি ব্যৱতি নাইক্ত্রেভিতি। কর্মনাং কাজি যোকে নামনীয়িভাউচ্জাবের কালাল কর্মতি কিংবজ্ঞ কাল্য ক্যাজী- अवैं। चरका वर्गीवकृष्ट विशेषकि —सहरका एक्कि। विरवधियकिवाकि --स्याफि।
वर्षियकिक प्रवर्षण्य —स्विव्यक्ति । लकाववाक --श्विष्ट (तर्गक्षः। मार्थाविष्यक्षः
विश्वविक्षि स्याप्ति । कर्षिक विश्वविक्षः । क्षेत्रिक्षः। क्षेत्रिक्षः कर्मविक्षः
वर्षियः। केश्वविक्षायक्षः । विश्वविक्षः विषयः। क्षेत्रविक्षः वर्षाः
वर्षाः कर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षः वर्षः

ষোক এব নিজ্ঞানাং কর্মনাণ খলাম্বন কর্মনিজনাঃ পারিশেবাস্তারাহিতি পদত্তে— পারিশেক্সান্তি। পারিশেয়াস্তার্থন নিশ্বরাটি জানোলিছি। দর্শন মর্থনিজ-পুরাবীতি বাবং। জনাপি যোক্ষাক্রনের নিজ্ঞান্ত্রিদার কিং ন জান্তরাহ—ম চেতি। ব্যাক্সান্তির্ভারকর্মকানিবেশ্যান্তরাহ—প্রাম্নানিশ্য ক্রেডি। ডক্ত ক্যার্থনে করা নিজ্ঞান্তরাহ—জ ক্রেডি। পতিশেষাভারম বং 'নগবহতি—ভুজ্মান্তিত। পারিশেয়া। ক্রিডা প্রস্তি—ম্মেডি।

প্রকারান্তরেশ পারিশেয়া পরতে—ক্রেন্সতি। তাবের পরাং বিশ্বরতি জান্ত্য-ক্রীক্তি। তরাচশি কবং বোকর্ত পরিশিষ্ট্রহা, তরার মোক্ষান্ত্রিতি। পরিশেষক্ষমার -ক্রন্মান্তিতি। পরিভাগ পরিশেষা ধূর্যার নেস্ক্রান্ত্রিনা। ন ধর্ণাপরিপরিশেষে পরাক্রার্থাপন্তিপরাকরণং প্রপ্রভাগ প্রক্রেরি ক্রন্যান্ত্রি। অন্তবাহপুলিশারিং প্রক্রিরি—উ২, সাস্ত্রীতি । ১০

নিভানিমুখপরাধিকনথেংশি নোকস্ত ভবদনথং নিধাঠীতি পথতে — চ্চতু প্রিডি। ভব বোকজোৎপালয়ং ধ্বয়তি — নৃ ডো এলিডি। উভয়নাভংগলে নিভাবপথানী। অনক্ষেণ্ডি বেষস্থানাল লাখনেডি। ভবে বাজিয়েক্ত্রপেন(ব) বিমুগোড়ি— লাখনাজ্যকাং জীভি। ইডক বোকজান্তিববাপনিভাত— নৃ চ্চেডি। বধা মুপ্তক্ষণাঠীতীক্ষণাভাজনাদিনা সংক্ষিত্রতে, ববা চাবনীয়ং সংভাবেব, নিশান্ততে ম তথ (वार्षा) विकासकाषातिक विवासकार्यः। वकाषत्रवस् । वृत्रविक-लास्तिर्वासानः विकासकार्यः।

ভাষের প্রশাক্ষরি—যাথা ক্রীভি। "বজাবিভাবেরবিদ্ রান্ নবং, করার কামবাজ পুরোভাবেরবিদ্ লাল: নির্মানেং ইভার নভানিতি বিবিবিভজা প্রনিভাবিদ্ধবোশবিজ্ঞা গুরুষাধানিবিজ্ঞপানবেনিবার আববার প্রেডাপনিবারিকা কামবার বিবীবকার পরভাগেরিবিজ্ঞার কামবারী বিবীবকার পরভাগেরিবার করাবারিকার কামবারী বিবীবকার পরভাগিকার করাবারিকার করাবারিকার করাবারিকার করাবারিকার বিবীবকার। বিবীবকার বিবীবকার করাবারিকার বিবীবকার বার্তিকার করাবারিকার বিবীবকার বার্তিকার বিবার বিব

নাই বিকং পূর্মবাবাস্থাবপূর্মক্ষাচটে—যথ পুন ইন্ডানিকা। ৩৭ ছবেডি
বাবৰ: তবেৰ বিবুণোভি—মির্কান্ডিজাণ্টেরান্ডি। বিভানাস্কা কর্ম বিশিষ্টকার্যাক্ষরিভার প্রপ্রকার প্রবাহিত ক্ষেত্র বিজ্ঞান্তি। তবাবিজ্ঞান্ত বেবছানিকা
লোকানিকার ক্ষেত্র বিবাহিত স্বাহিত বিশ্বাহানিকার বিশ্বাহানিক

म्याप्रयाचित्रया नि शक्तीकृशेषिविष्टा न कर्या ।

'সর্বাস্থ্যতের চারাবং সর্বাস্থ্যতার চারার। সম্প্রভারতারী বৈ সামালায্যবিক্ষতি ।'

हेका मुक्तवास्तर्भविषयः एक सङ्ग्रहायः वाः --शक्तिः । वांत्र तथः पक्ष्य एर्ट्र एका प्रदर्शस्त्रेतकोष्ट्रः पक्षः वरकीकाश्च शास्त्रात्वक्षः विविक्तः। वश्ची शेरः उत्तरः विद्या वर्त्वक्षविर्वयाक्षयांकी कर्तकः। त्र विद्याः क्ष्यकृतेतः पृष्यस्थकः। अक्षविर्वृतः इतिक व नकासीकार्यः। नामनंत्रवकाश्चनाकिनकक वकाक्ष्यवाद व्याव्य (व्यक्तिः। पूका वा नुविधिककायरमकाश्चनाकारका विदृष्टीकार्यः।

करवन अनुकारिक अनुद्वाद्धिः द्वताः करम्पातांत्व अन्यानाय — द्वानांदिकः करवन पृथिः अन्यानाय — द्वानांदिकः व्यवस्थिः व्यवस्थिः अन्यानाय — द्वानायः व्यवस्थिः विवस्थिः विवस्यः विवस्थिः विवस्यः विवस्थिः विवस्थिः विवस्थिः विवस्थिः विवस्थिः विवस्यः विवस्थिः विवस्यः विवस

'वश्यदेखक ब्रेडिक जाबीश क्रिकटक क्रमु: ।'

ৰীত প্ৰেচিনিন্দ্ৰ কৰা প্ৰবেষা স্থাতী ধংগছতে, ছত্ৰাৰ-জুচুক্তি। উংগ্ৰন্থ স্থাৰ আৰক্ষ ক্ষাৰ-জ্যুদ্ধিত। কৰা পূন: স্থাপজ্যানবভাৰেবাজিপৰ ইভাবেত। প্ৰেক্তি কাৰ্যনিক্তি কৰাই জ্বাৰ্ডা ক্ষাৰ্থা ক্ষাৰ্থা ক্ষাৰ্থা কৰিছে। কৰাই আৰক্ষানিক্তি কৰাই আৰক্ষানিক্তি। ইবিকৈ বাৰ্ডাকৰ্মা কৰিছে গুডুকুলানামিতি। ইবিকৈ বাৰ্ডাকৰ্মান কৰিছে গুডুকুলানামিতি। ইবিকৈ বাৰ্ডাকৰ্মান কৰিছে গুডুকুলানামিতি। বৰ্ষ ভূ বিশ্বাসমূক্ষ্মনি সংসাহক্ষমেৰ্ডি ভাবং।

ক্টান্তৰ হৈছন্ত্ৰহাৰ—ক্ষিত্ৰ ক্ষাত্ৰ বিদ্বান্ত কৰি বজাইববেকাৰ ন ক্ষেত্ৰসূত্ৰৰ কাৰণ, কিন্তুল্ঞত শ্বশপাসক্ষত্ৰ হাৰ্থ। তাৰেৰ দৰ্শ্বাক্ত ক্ৰেপ্তিল সাধিকী সৰ্বভ্ৰমন্ত্ৰানস্মৃত্তিভ ক্ৰিকান্ত্ৰাহিতি বাৰং। আন্ত্ৰ বিদ্যান্ত্ৰানস্মৃতিভ ক্ৰিকান্ত্ৰাহিতি বাৰং। আন্ত্ৰ বিদ্যান্ত্ৰানস্মৃতিভ ক্ৰিকান্ত্ৰাহিতি বাৰং।

্রের স্পা: সমুক্তিরিপ্রকারক কর্মণ্য। ত্রিবিব্রিবা: কর্মণ্যার: সার্ক্তেইকিক: a'

वैद्याननरहाशकिक क्यारार्वः । विक -

'श्रवृष्टः कर्ष म्'रमवा द्यवामारम्खि मात्रि खाम्।'

इति वर्षकत्वस्य विवस्तान्ते वर्षा आखित्वा स्वस्ति (इत्सन---

'तिवृक्षः त्रवयातक कृताकरणाठि एक देव ।'

ইভি ভূতেৰণায়বয়নাও শৈষ্ক্ষয়ত দৃশ্বিদনভেত্যাব - দেবলাখী তি।

'নিছুত্বং দেৰবানত ভূচাক্তণ্যে'ডে।)ভি পক বৈ।'

ইভি পাঠাৰ বৃক্তিনেৰ সমুজনামুঠানাবিশক্তিকেতি চেং, সেডাাব—ক্সুজানীতি। কান-মেৰ বৃক্তিকেতুরিতি প্রভিপাবকোপনিবিধিয়োধায়াক পাঠা সাবীধানিভার্য।

' নমু বিপ্রহণতী বেণটেতৰ লাভি, বিশ্বনী হি সা গেৰভা-লক্তাভালখনমূ, আভো এছা বিশ্বস্থা ইভ্যানেমর্থনাক্ষায় ভখনেন নিতাকর্মণাং মুক্তিশাখনখং নিয়ার্ভ্য শত্যমু অভ আছ — মুক্তেত্তি। আনার্থভ সম্প্রভায়খালীতাাদেহিতি পেখা। দ্বিক—

"অসুৰ্বশ্নিভিত কৰ' নিশিষ্ঠত চ স্থাওয়ন্।
আসঞ্জালে ক্ৰিয়াৰ্থের সভঃ পড় মনুক্ষতি ও
পাত্তীকলৈ কৰ্ম গোইবৰ্মতি স্থাণভভাগ মনঃ।
ব্যাহিকৈঃ প্ৰকাশকাং মান্ত্ৰিয়াৰ্থাকাভিত্য ও

षण्डमारकोताः स्थानकिश्वनकितात्। स्थानप्डमानाः स्थलः स्थानिश्वक्रकः।

देशाविशरेणाः व्यक्तिवाविक्रणमानाः व्यक्तार्वशायः वर्गात् । वर्गा क्षेत्र नाष्ट्रवार्वशायः क्षा वर्गाव्यायः वर्गावयः वर्यायः वर्गावयः वर्यायः वर्याय

নম্ম ভাষাধীনাং নৌভনাবিকৰ দগৰাভাষাঃ ভন্দানিক বচনানাং কুতাৰ্বাং দ্বাং ক্ষাবিদ্ধ কৰিবলৈ বচনানাং কুতাৰ্বাং দ্বাং ক্ষাবিদ্ধ কৰিবলৈ কাৰ্যকল নাম কিছিল। বিভাগত কাৰ্যকল নাম কিছিল। বিভাগত কাৰ্যকল বিভাগত কাৰ্যকল বিভাগত কাৰ্যকল বিভাগত কাৰ্যকল বিভাগত কাৰ্যকল কাৰ্যকল কাৰ্যকল বিভাগত কাৰ্যকল কাৰ্যকল

কৰ'বিশাক্সকৰণভাত্তাৰ্বাব্যাভাবে বৃষ্টাবেচণি ভৱ ভাতিতি পভতে—ক্তন্তাক্ৰীণ্ডি। অলীক্ষাভি—ক্তন্তজ্ঞিত। কৰ' এই বৈষম গৃষ্টাভানিভিন্ত আন—ম'
চেতি। বৈৰম গৃষ্টাভাতাৰবাত্তেও কৰ'বিশাকাব্যায়ত নাজুভাৰ্বাব্যতভাত ভাতত
বৈৰ বাবং, সাৰ্ব্যাষ্টাভাৰণি ভৰ্মিভেন্তিভাবং। নমু 'প্ৰচাণভিন্নাবনো বৃণামুখ্যিবং'
ইড্যানীমানজুভাৰ্বাব্যাভাবে কৰ্ম্বৰ্বায়াবিক্ষণং বৃষ্টিবাতে, ভ্ৰাহ,—মৃ চ্ছেন্তি।
ভ্ৰম্বইনাভাবি নামংশক্ষভিত্তিৰ ভৰ্জুভাৰ্বাব্যায় ভাত্যভাতিয়ােগাহিতাহাঁ। নমু
ভূম্বিশাক্সকৰণভাৰ্বাব্যাভাবিকলি ব্ৰহ্মিকান্ত আন্তন্তিবাহা আন্তন্ত্ৰাক্ষাক্ত ভূম্বিশাক্সকৰণভাৰ্বায়্যভাত্তা ক্ৰেব্ৰিজ্ঞানিং কান্তান্ত আন্তন্তি। ভেনাং কান্তানাং ক্ৰম্ব-পানিতি বাবং। দেবসাস্থভাত্তা ক্ৰেব্ৰিজ্ঞানিত সম্বান্ত্ৰিভাৰ্তাঃ উভ্যাং শৈলুভা ক্ৰম সংলেষ্য দেবানাবেতি সাইভান্ত ইভান্তেতি শেবং। নমু বিভানংকুলনাং নিভানিং ক্ৰম্বাং ক্ৰম ভ্ৰম্বিভিন্তাভাব্যান্ত্ৰাৰ আনোৎপভাৰ্যভান্তিতে, ভ্ৰমিক-ভূম্বাণিক্ষতি। ক্ৰম্বাং বৃক্তিক্ৰয়ভাব্যান্ত্ৰাৰ্থা সংভিন্যবীনাং বেৰ্ডাভাব্য ক্ষেণ্ড্ৰ-ভূম্বাণিক্ষতি। ক্ৰম্বাং বৃক্তিক্ৰয়ভাব্যজ্ঞান্ত্ৰাই। সংভিন্যবীনাং বেৰ্ডাভাব্য ক্ষেণ্ড্ৰ-ভূম্বাণিকি বাবং। ২০

নিভানি কৰ'নি লৌভানি আভানি চাতিকোত্রসংখোণাদ্বপ্রকৃতীনি নিছতিকাধীনি কলভিনাবিকিলানি প্রবেশ্যাপিশ্বলা নিছবাগানি। আছপ্রে ব্যাধিকাঃ। কর্মণা চিন্তপৃত্তিবারা আনোংপভার্থকৈ প্রবাধনাক-প্রশাস্ত্রীন্তি। কর্মণা ভর্মি কর্মণাং বোক-সাধুনতা কেছিলাচকতে, ভ্রাক-প্রেম্যামিতি। নাম্বর্তীনানিতি বাবং। কর্মণাং প্রকাশ্যার ঘোক্ষাবন্তঃ করা বিশ্বকৃত্তি, ভ্রাচ্চত্ত-শ্রহা ভ্রেডিঃ। অন্তর্বত্তিবিভিন্ত জীক-বিশ্বক্তি প্রবাধনাক্ষিকাশ্যাপ্রকৃত্তি প্রস্থাপ্রতিভালি আন্তর্ভিত জীক-বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি জীক-বিশ্বক্তি জীক-বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি লাখনিক বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি জাক-বিশ্বক্তি লাখনিক বিশ্বক্তি লাখনিক বিশ

নাবিষ্ণেত্ব এভাকাবিনিক্তরতা দুইাতে কার্বান্তকতে বিজ্ঞান নাবান্তনার ।
কর্মনা বিজ্ঞানংগুকত কার্বান্তনার কর্মকানার নাবান্তনার ব চ কর
নাবান্তর্বতি। ব চ বর্মজন্ত কর্মনার বিজ্ঞান্তনার কর্মকানার কর্মকানার কর্মনার কর্মনা

নমূ ভাবপাই: নাম পুৰুষভ্ত মনোধৰ প্ৰপাক্তেনৰৈ ক্লাতেইবাৰ্থইং, ভৰ্কি প্ৰতিপুক্তৰ মন্তবৈৰ ভাবপ্ৰভাগনাহকলাৰভাবৈৰ ক্ৰান্তব্য সানিভ্যাপতা নাই দিকিং নিগমবালুবেৰ নাম—ভজ্মাকিন্তোকিন্তা। ভাকৰিববপ্ৰয়া, ভৰাতা বাৰাৰ্থাং, প্ৰথম ভাবপেৰ্য়াং ভক্ত বৃদ্ধিবলিভ্যমাং, ভৰাত প্ৰকাশ পুৰুষাভিভাগনাহকৰালভ্যাৰ্থিক গ্ৰহাৰ্থা উপন্তৰ্থ পুৱাজেন লাইবভি—মু হীড়ি। বিচালাৰ্থ্যপান্ত ভি—ভজ্মাকিনিভা বিভাগ মুক্তাপি ক্ষান্ত্ৰা বিভাগ মুক্তাপিন্ত্ৰা বিভাগ মুক্তাপিন্তি বিভাগ মুক্তাপিন্তা বিভাগ মুক্তাপিন্ত বিভাগ মুক্তাপিন্তা বিক্তাপিন্তা বিভাগ মুক্তাপিন্তা ব

নাজনারন্তবেবং অভিপান্ত ভনক্ষরণি নাক্ষোতি — সাইথাতি। বাজন্বায় ভির্বীকরা ভূজা কর পূর্কনির্ভাগ করাং করাংবায়নতার ভিত্যববেরনাপ তথকাং ও বিজ্ঞা
করিছি— আগদেশনৈতি। করুক ইতি পূর্কো সংবজ্ঞ: এতোবৈ বিবাহায়—
জ্ঞানেতি। করবেরত ভিনা বিজ্ঞান সন্ধরণ কর্মকার পারিছি। কর্মকার পারিছি। কর্মকার পারিছি। কর্মকারের নান্যায়—জন্মকার নাম্যায় প্রান্তবিদ্যানাত প্রান্তবিদ্যানাত প্রান্তবিদ্যানাত বিশ্বাহার নাম্যায় বিশ্বাহার বিশ্

জামের স্বান্তরপাং বেবভাং অপক্ষিত্বিকং বাধন্যিতি বক্তু: পাত্যিকাং করে।তি--মুক্তুক্তিভি । আগামুক্তুবিবর্গোচন্দ্রগাল করং মুল্ডোগ্রকা: ভ্রাচ্চন ---অ্জ্যাক্ত্রাতি ।
ভবি মুক্তেগ্রিকার জ্বারণেভবা ভাবিভাবিভাহিংশ--স্মান্তি ক্তি । আগেব বারাব

नर क्रम्पनारकम् मनकेषः मानावि —काश्यक्त देखिः मनावत्यः वर्गति — मूह्यविक्रिः। क्य पापूरेव दर्शकरमञाति वाकाः अर्थाविक एक्टकि-सामुजिएकः। क्यादिन क्या अवयक्षकः सूर्वानीः अववर्षत्रादिकात्रकात्र - आक्रामिति । विवरानकेट्याक्रम अन-(पक्षि कियोक्षेत्र मृद्धाविष्णांक्यांक निष्यां नामक शिक्षा । स्थापन महिवाहे-ष्ठार व श्वविकानिकार-चान्ना द्वारकांप्रक्रि । देवतः वाहेश्वन्यकवरः नवहेश्वन्यः वरमरे पर्शापनः पद्यक्ति मथवः। इत्याद श्रामकः श्र-वेद्यति - यः पद्विति । विकासः দ্বাৰ: বাবেইছতি - লিক্সমিতি। 'ভাত তেব ধনা' ইতি অভিবন্ধতাত - অমু-(कांछ। ६७ मानवायास्यः स्प्रीत-धामा खंडामो छि। उरेक्स समाकश्वास-यां कार्यानाचि । पना परिविद्यारिक सामानः पतः क्वविति । अतः कृषिकारा-कर्गानवश्याधनगरकाश्वर्षः छ्रास्त्राहे । अव्ययन सम्बेशेक - क्रियुक्तीकि । नर्नकः गर्दिता यवनकाववामाक विकित रावर । वह किविकि मा वक्रवा, क्रकामूकाहावनि ৰক্ষাসংসাধাৰণে বাৰাকাজ্যাৰি লাল্ডাভাৰামত আহ - ভজ্ঞামিভি। ইয়াৰ্ ৰজাে নাৰিকাে नृत्मा (वकाश्ववानाक्षरमय वक्षणविमानणविद्यमार्वः कर्यक्रमवाविवस्मात्राहः ॥ १ विद्यानन देवबानावाचा बुक्तिककृतिकि कारः। बाधनदेवयः अबुक्तावनि विविधि कृत्याः पक्ष পূৰ্ব বিষ্ণ বিধান কৰা বিধান কৰা কৰে। বিভান কৰা বিধান কৰ ঃ বৰ্ণবেষ বা কিং ভাং, ওষায় —(ভান চে:ভি:। ইতি বভাতে ভূজাবিভি শেষা। **ক্ষে** भर**्या**स्थासम्बद्धकाषिकार्यः।

সাজ্যান্ত্রাল্য বাদে। মতংপর, মূল্যামক নালারনি নালের পুল) প্রর করিয়াছিলেন। বিতীয় ব্রাহ্মণে প্রহণ্ড মতিপ্রহান্ত্রক বহনের কথা বলা হইয়াছো; গ্রগতিপ্রহান্ত্রক বে বছন ও তৎপ্রবােদ্রক কম্ম হইতে মুক্ত হইয়া লাব মূক্তিনাত করিয়া থাকে, এবং বাহা বারা আবছ হইয়া সংলারী হইয়া থাকে, তাহাই প্রকৃত মৃত্যু বা মৃত্যুর নিধান; গেহেতু মৃত্যুরও মৃত্যু থাকা মুক্তিনিছ, সেই হেতু প্রেলিক্ত প্রহাতিপ্রহান্ত্রক মৃত্যু হইতেও লীবের বিমৃতিলাত সম্ভবপর হয়। মুক্ত পুরুষের অভাকেনাও লোকান্তরে গতি হয় না এবং প্রদীপ নির্কাণিত হইলে বেনন ভাহার নাম তিয় আর কিছু থাকে না, তেমনি মুক্ত পুরুষেরও অপর সমন্তই বিনই হরায়া যায়, কেবল নামমাত্র অবলিই থাকে, এ সমন্ত বিন্ত বিন্ত বাহ্মণেই অবণারিত হইয়া:ছ। অধিক য়, দেহেক্তিরানি সাধনসমূলয়ের নিজ নিজ কারণে বিলীন হওয়া সংসারী ও যোক্তামান (দেহপাতের পর বাহাবের মুক্তি হইয়ে, ভাহারা), উত্তরের পক্ষে স্থান হইলেও মৃক্ত পুরুষবিসকে ভাহা করিছে ক্রমণ্ড শ্রীর বারণ করিছে হর না; কিছ সংগানীবিসকে ভাহা করিছে

Wh.

वर्ष । विशेष स्वाप्ताय नेवीय बायन क्षेत्रक देश, कावा स्व क्ष्म काव विश्वर वरेरक नास्त्र मा, देशीक विकादन्त्रक त्यर बार्ल्ड अववार्षिक वर्षेत्रहरू, जेवर त्यरे कर्च क्ष्म वरेरन नव मानवाज अवनिट्ठे वांकात स्वर्रातिक वाचि-नर्जवर्त्यक वेरक्षांचक स्वाक निमात देश । ज क्यांक वायदानिक वरेगारक। >

मरनाव थरवरनत कावनेकुछ (महे करवंत मात्र हहेरछह--भूना ७ नान. कांद्रम, "मूरमा देव भूरगुन कर्ममा कर्बाठ, भांभः भारभन" এই अक्टिएंड क्षेत्रम वर्षरे व्यवशिष्ठ रहेशारक: (महे भूगामामाना कवारे बीरवर मरमात मब्दर्भाष्म कविता शास्त्र । उत्तरहा वित्वव और (व. बाहाबा नान कर्व करत. ठांबात: (मेर्ड भारभद्र फर्टन प्रांतत्रक्रमधा में (बर्ट्स अवना प्रधानश्च इश्बब्दन नाइकी. पत्र पत्नी ७ (अड्डामिट्ड बाहरवाद सम् । बदन इश्य स्थाप काँदेश पारक, दाक्यारंगेद सात्र वर्षार दाक्षणय रायम नर्वात्मादकत अविकाल, देशां क्रिक एवमि असंस्थादकत निकृष्टे अअविकित । बाबा नारबाक पूना कर्या. "पूर्ता। देव पूर्तान कर्यना अविष्ठ" अजिएक बाबाव क्षाना द्वारिकारक. यहर अधिक श्रीवरायके चामद क्षान्त कांद्राकाकन। আর সমস্ত জতি ও স্থৃতি দায় সমস্বরে ব্লিভেছেন যে, পুণাকর্মই পুরুষের नर्सविद चछीडे निषित्र छेलात : (बाक्छ नदन पूक्रवार्य-पूक्रवार अकाब चछीडे, उपन पुका बाहेएछएक (ब, छाहा ७ भूगा कर्या बाजाहे निष्क हहेबात (बाना : चळ्का. (व পরিমাণে পুলার উৎকর্ষ দিছ इहेर्दा, দেই পরিমাণেই তৎ-करनाव 4 फेरकर्य मन्मात बहेरत : हेवा वहेरठ कामका बहेरठ शास्त्र (व. बाक्कन पूर्वात हरेब डेब्क्व नावन बाताहे नाक कतिए हहेरव ; तहे चानका निवातन कहा चावद्यक स्टेट्टाइ ; [(अहे बढ़ वृवाहेट्ड स्टेट्स (४,] कर्च बठहे छेडबद्राल समृष्ठित इछेक ना (कन, स्विक कि, अनिम्ध्राल अवक्रिक हहेरान काहात कन कवनहे शतिकित देव अशतिकित हहेरक शाद मा: (कम मा, कर्ष % कर्षाकृत पून बनाएवत छनत् है नश्चरणत हत. किस माबद्भन-विवर्ष्क्रित এवः क्रिया कादक ७ कन्नावद्द्रित सम्बद्धिताक मिला वस विवास कार्यन कामल पविचान नाहे, प्रवीध कर्य पाना क्वमहे निछा क्म नाष्ठ कहा बात ना ; [बुक्टिक बहेट्द,] बाबाब छेनत कर्त्वत वाानाव वा कांदीकांत्रिका मस्त्र रह, कांदा मरमाह किह बाह किहूरे नहर । अहे मुद्दस रक्षमा विवन धार्मनार्थ और छुठीन जावन भावन स्रेएछह । २

কোৰ কোৰ লোক বে, পাৰত বলিৱা বাকেন-কৰাত্ৰয়াৰ মু करिता (विभागकारम): कामगररवारम अक्षेत्र कर्यक दिन क परिवाहिक वचव छात्र (>) छित्र एन नतूरनायन कतिया नाटक ; तम कवाक हहेटक शास मा : (म तम् द्यांच त्यांच केर्तात करो नात : तम ना. बोरवत श्रकान कवित रहनत्त्वरनरे त्याक, छादा कविन् कातन वार्श राजक भशार्व मरव : चाव बीरवत नवन त्य. चविका-कविट विका चनवात. अ कवा भाषता भाषते विनहादि । कर्ष दाश कवनत तहे भविषात विनान कका मध्यमन क्य ना, ना क्षेत्र भारत ना: विस्तवतः क्षांताकतिक केरलवाहि विकास कार्यन मामनी ना व्यक्तिकात (कार्यक मानका बाह. शिकता परिवासिर दिवन त्यांक कर्ष-गांवा वहेत्वहें शाद मा। किन मा. देश्भक्ति, शाशि, विकाद स मध्याद माधानरे कर्च वा क्रिवाद नक्ति शविक्रिय:---সাধারণতঃ কোন বিষয় উৎপাদন করিতে, এক বছর সহিত অপর বস্তুক neraliero ofico, animia caco moinica escentiale ofico (case विकाद बहे।हेट्छ) किर्या दश्चरिएन्एवर लावाननइन वा खनावान कडिएछ কলের ক্ষতা আছে; কিছ এতদতিবিক্ত কোন বিবরে কর্মের সাবর্থা नाहे. धवः छाहा (माकश्रीमध्य नाह , चालाहा बाक्शवार्ष छ छेक्क डिश्मिक श्रक्षेत्र व्यवर्गत नार : कारण, बाक व बीवर बाताविक वर्ष. क्षा (करत अम्रात चामाहित हरेग्रा चशावरः क्षतीत हर बात : करवा बाबना शर्काहै विनशाहि। ०

্বাদী এতদ্ভৱে বলিতেছেন] হা, তোষাত কৰা আংশিক সতা বটে; কিন্তু সর্প্রতোতাবে বীকার্যা নহে। কেননা, জান হহিত কর্ম্মেরই ঐক্তপ স্থভাব, কিন্তু জানসহকারে অমুটিত ক্লাকাজ্ঞারহিত নিয়াম কর্ম্মের স্থভাব অক্তপ্রকার; কেন না, বিষ্ধ হবি প্রস্তৃতি যে সম্ভূ পদার্থের সচরাচর

⁽⁾ जारणवा -'विष छ ववि अज्ञृतिक जातं कवात अक्तियात अहे:--विष व्यक्तिक जातं कवात अक्तियात अहे:--विष व्यक्तिक अविवि अज्ञृतिक जातं क्षिण्यात अहे:--विष व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक प्रतिवि व्यक्तिक व्यक्तिक

বেল্লপ শক্তি বা কাৰ্য্যকারিতা লোকপ্রসিদ্ধ আছে, লৈই সমস্ত ছবিবিবাদি পদার্থত বৰন বিভা, মন্ত্র ও শর্করাদি পদার্থাভরের সহিত সম্মিলিত
হয়, তথন ভাহাদেরই অভপ্রকার ক্রিয়াশক্তি দেখিতে পাওরা বায়; কর্নের
সম্বন্ধেও সেইপ্রকার হউক; না—একবা বলিতে পার না; কারণ, এ বিবরে
কোনও প্রমাণ নাই। উৎপত্তি প্রস্তৃতি বে চারিটী বিবরে কর্নের সামর্থা
প্রদর্শিত হইরাছে, ভদ্তিরিক্ত বিবরেও বে, ভাষার সামর্থা আছে, বা
বাক্তিকে পারে, তর্মিরে প্রত্যক্ষ, অভ্যান, উপ্যান, অর্থাপতি (১) অপব।
আগম—কোন প্রমাণই নাই। ৪

छान, विकास करि, विकास कार्य व्यक्षिण निकास कर्णात स्वि व्यक्ष कार्य कर्मा सारक, जादा स्टेश्स (स. जादांत विश्वास कराते निक्ष्म स्टेशा शहर हेशा कि ज विस्ता सामहे अवास मरह १ (एस. माहविद्यिण निकास विवित्त विविद्यित सार्यात कार्य (२) क्या कर्या माहेश्य शाहर भारत मा, जवर विविद्या कार्यात कराय केर्या कर्यात कर्या सारा निकास कराय केर्या क्या विवास

⁽६) बारनश्—दिराध कर्ष गांद्यवर्षे अकी क्या नाका मानका, विका कर्षव विश्वीय क्षित्य द्राक व्याका केंग्र द्यात्का विद्यान वाक्तिक गांद्य ता, म्याक "विविक्तिक ब्रह्मका अपे द्यांक विविद्य द्यान क्ष्मक केंग्रम द्याविद्य गांच्या मार् वार्वे वीवारमकान निष्याच कविवारम्य द्यान पर्नः काद मधीन् सावाविद्यापार द्यानक विविचाका क्या विद्यादय केंग्रम मार्गे, द्या नव्य प्रदान मानेद्यादय पर्न क्या कवाना कवा, कावन विविद्याका क्ष्मक क्ष्मक व्याप्त व्याप्त कवाना कवा, कावन विविद्याका विविद्या क्ष्मक व्याप्त क्ष्मका क्ष्ममा कवा, कावन विविद्याका व्याप्त क्ष्मका व्याप्त क्ष्ममा कवा, कावन विविद्याका व्याप्त क्ष्मका क्ष्ममा

রহিরাছে; স্বভরাং 'পরিশেষ' নির্মান্ত্র্যাতে (১) বুরা বার বে, বোকট দে স্বস্ত কর্মের (নিভাকর্মের) একষাত্র কলং ভাষা না হইলে—কোনরূদ কল না বাজিলে কোন পুরুষই সে সমস্ত কর্মে প্রবৃত্ত হইত না। ৫

ভাল কথা, তাহা হইলে ত নেই 'বিষজিৎ' ভারই লাসিরা পড়িল; বেহেছু ভোষাকেও নিজপার হইরা বোক্ষ-ফল কয়ন। করিতে হইতেছে; কেন না, 'ক্রতার্থাপতি' প্রমাণ বলে (০) বলি মোক্ষ কিবো তল্প্রমণ কোন ফল বিশেবের কয়ন। না করা যার, ভাহা হইলে 'বিষজিৎ' বজ্ঞের ভার নিতাকর্ষ্মেও লোকের প্রয়ন্তি হইতে পারে না; এইরণে বলি ফলবিলেন কয়না করিতেই হয়, ভবে আরু 'বিষজিৎ ভার' হইতেছে না বলিতেছ কিপ্রকারে ? অক্রত করেরও কয়না করা হইতেছে, আবার 'বিষজিৎ'যাগের বভও হইতেছে না, ইহা ত বিক্রম করা হইতেছে; বদি বল, বোক্ষ প্রস্কৃতপক্ষে কলাই নহে; না, সে করাও বলিতে পার না; কারণ, তাহা বলিলে তোমার পৃক্ষপ্রতিজ্ঞা রক্ষা পার না; প্রথমে তুমি প্রতিজ্ঞা করিয়াছ বে, বিষ ও দ্বিপ্রস্কৃতির তার করও বিভাসহযোগে অক্রটিত হইলে বভর এফপ্রকার ফল সমুৎপাদন করিয়া থাকে; এবন সেই যোক্ষ বলি কর্মের ফলই না হয়, তাহা হইলে নিশ্রেই তোমার পৃক্ষপ্রতিজ্ঞা ব্যাহত হইরা পড়ে। পক্ষান্তরে, বোক্ষকে কন্ধ-ফল বলিলেও, স্বর্গাভি ফল হইতে বোক্ষকলের বৈলক্ষণ্য কতন্ত্রক, তাহা নিক্ষেব করা আবক্ষ। ৬

ভূমি যে, বলিয়াছ—যোক্ষ নিতা কর্মের কল বটে, কিন্ত ভাষা কোন জিয়াকত নহে; ভোষার ও ক্যাটীর কর্ম কি, ভাষা বলিতে হইবে;

^{(&}gt;) कारणवा—'लिंडर्चव' विश्वती अहे सामाह: - वहकति विवर्धत साखिमकावता वा: क, क्यरवा सामृह मयककतिक सार्चि मकावना विविध देहेका व्याम दव, करण करण स्वतिक्रे विवक्षीक शास्ति, अहे तकदम सामित्क 'लेडिटचव' काल वा 'लाविटचवा' वरण व

⁽०) छारम्या--क्रकार्यामधिक वर्षामिक अर्थामिक अर्थामक अर्थामक

ক্ষেত্ৰ ক্ষিত্ৰ ও ক্ষম এই দ্বাৰ প্ৰতে হাৱা অৰ্থনত কোনও প্ৰতেহ ক্ষুত্ৰৰা ক্ষিত্ৰত পাৱা বাহ নাং, ক্ষেত্ৰ না, 'অহি ক্ষুত্ৰণ' এ কৰা বেছপ বিক্ৰছাৰ্য-প্ৰতিপাছক, বোক কোন কিয়ায় কন নয়, নিভা কৰাবার বোক নিশায় হয়, কৰাং বোক নিভাকৰ্যের কন বটে, কিছু নিভাকর্য হইতে ক্ষেত্ৰ না,—ইভ্যানি কৰাও ঠিক ভন্তপই বিক্ৰছাৰ্য-প্ৰতিপাছক হইতেতে ! ৩

विष वन, क्यांसित नाइ है हात छेल्लांत इहेरछ लारत— (वहस क्यांस हो हो वास्त छे १० छि ना इहेरण छ, त्यांकरक क्यांसित क्यां तेवा अहल क्यां हो है हात है हात लारत । ना— क्रियां विश्व हित त्यांकर क्यांसित । ना— क्यां विश्व है हात लारत । ना— क्यां विश्व है हात लारत क्यांसित क्यांसि

বন্ধি বল, কণ্ড কেবল অজ্ঞানেরই ধ্বংস সাধন করে যাত্র. (আর কিছু করে মা.); না, সে কথাও বলিতে পার না; কারণ, জান ও কণ্টের যথা যথেই বৈলক্ষণা রহিরাছে; ধেখ, অজান হইল আত্মগ্রমপের অনতিব্যক্তি, আর জ্ঞান হইল তাহার অতিব্যক্তি বা ফুটপ্রতীতি; স্মতরাং অনতিব্যক্তিরপ অজ্ঞানের সহিত অতিব্যক্তিরপ জানই বিরুদ্ধ হয়; কিন্তু কর্ম কথনও অজ্ঞানের বিরোধী নহে; কাজেই জান ও কর্ম একস্কপ নহে, পরত্ত সম্পূর্ণ ভিন্নপ্রকৃতি। পক্ষাগ্রের, অজ্ঞানকে বদি জ্ঞানের অতাব, সংশ্রজ্ঞান, কিংবা বিপরীতজ্ঞান (ত্রম) বলিয়া শীকার কর, সক্ষপ্রকারেই সেই অক্ষান কেবল জ্ঞান হারাই নিবর্ত্তনীয়; কিন্তু কর্ম্মধারা নহে; কারণ, যথোজ্ঞাকার অজ্ঞানের কোনটীর সঙ্গেই কর্মের বিরোধ নাই। ১

বলি বল, কর্মে থে, অক্সান-নিবৃত্তি করে, ইহা অক্সা দৃষ্ট না থাকিলেও, নিত্যকর্মের সেরপ শক্তি কল্পনা করিব; না, সেরপ কল্পনাও করিতে পার না; কারণ, জানধার। অজ্ঞাননিবৃত্তি বর্ধন লোকপ্রসিদ্ধ এবং অনুভবগ্যাও বটে, তথ্য অন্তম্ভূত নিবৃত্তি-সাধন কল্পনা করা সমূচিত হর সা। উদাহরণ— (यान 'बोरीन पारवर्षि' वह अधिरक शांक मूनन बहारतत निराम चारक : रमवारम रक्षम बारक्ष क्षित्रिकाण गृहेकन मरन, प्रम-श्रहारम बान बन्हे क्म क्याना क्या यह मा, (क्यानि धवात्मक ब्यानिवृत्तिक व्यव्हेकन वित्रा कहना कविष्ठ शांत मा । जान (व. ककारनत विरतादी, अ कवा बाबवा बरमक्वाव विवादि । बाद 'विद्याद्यकार्व (बामवात) (वर्वामक नाच वह' देशावि क्षांत वाकाामुमारत बाना वाद ति. ति मवत सान कर्त्वत निविष्ठ विक्रम सहर, (म मध्य स्थान वा छेमामना चाहा (एवरमाकसभ ' वर्गामा) कम खाखि हरेडा बारक । >-

चारु अक कथा, निजा कर्पत यमि कनकत्तमारे करिएठ वर, जारा हडेरम बाहा करकत महिल निकंद-मंबीर बाहा करने हता. ७९ वा कर्य ছট্তে উৎপন্ন না হয়, বে বিষয়ে কলিন্কালেও কলের উৎপায়ন সামর্থ্য পরি-मुद्दे बंग नाहे, छाहाहे कञ्चमा कडा डेडिट ? अथवा, व विवद्ध कर्त्वंड नावर्षा मुद्रे वहेबारक भवीर रव कम करचंड विक्रच नवः्तिहेदण कम कन्नना कवाहे উচিত ? বলা বাহলা বে, অবিক্রম ফল করনা করাই বৃক্তি সমত। কর্তাপু-ঠানে লোকের প্রবৃত্তি সমুৎপাদনের অন্ত যদি কর্ম্বের ফল কল্পনা করিতেই इप्र. छाहा इडेरलंश स्वाक किश्वा याक अठिवहक चलामनिवृक्तिक कहना করিতে পার না: কারণ, ভোষার অভিষত জতার্থাপতি প্রবাণটা কর্মের व्यविकृष क्रम क्रमा कवित्रा के विवर्ण (পवित्रमाथ) स्टेशा ह ; [मुख्यार जाबात बक्रुद्वारास कर्षविःतारी (याक्कन कन्नना करा बाहेर्ट भारत না। বিরণ, উলামের সহিত কর্মের কোনরূপ বিরোধ নাই, এবং উৎপর্লাদি विषय के कर्यंत्र नामवी প্রভাক্ষণিত, (यशास विषय गए)। >>

ৰদি বল, পারিশেয় নির্যাল্সারে যোক্তল করনা করিব ;—সমস্ত কর্ম इक्टेटिके मबल एन छेरभन्न क्वेटि भारतः व्यादा व मबल विवत अलाह কর্মের ফলব্রণে বাবদ্বিত আছে, নিতাকর্মের সময়েও সেই সমত কলই कञ्चमा कवा मण्ड एव मा; भाकरे अक्षांत चरनिष्ठे विशाह ; दन्तिन् লোক্ষাত্তেরই বোক্তল বিশেব প্রের; সুদ্রাং তাহাই নিভাকর্শের ফলব্লপে কল্পনা করিছে হইবে। না, ভাষা বলিতে পার না; কারণ, কর্ষের एन वष्म वाक्तिमठ छात्व चनव वा चनःवा, छवन छदनवाद लावित्ववादाव अध्याबाहे हहें(छ शांद्र ना। (१५, (४ (नांक मुनक नम्, अयन (कान त्नाक है विकित शुक्रस्वत कित कित हैका प्रवाही क्लाकरमान, व्यवस करमावन কর্মনন্ত্র কিংবা পুরুষণত বিভিন্নপ্রকার ইন্দার ইর্লাব। পরিষাণ অব-বারণ করিতে স্বর্থ হয় না; 'কেন না, বে স্বন্ধ বেশ কালাছিল্লপ নিবিত্ত অবলবদ করিছা কর্ম ও ভংকলের প্রবৃত্তি হইয়া বাকে, প্রবৃত্তর নে স্বৃত্তরের একটা ছিরতা নাই; ভাষার পর, বে বিষয়ে লোকের অভিন্তি বাকে, সেই বিষয়ে ও তৎসাবলোচেতে লোকের ইন্দা হইয়া বাকে; প্রত্যেক প্রাক্তিবিভিন্নপ্রকার রুচি অনুসারে ইন্দারও পার্বকা হইয়া বাকে; কালেই কল ও কলসাবলকর্মের আনত্তা সিদ্ধ হইতেছে; আনহা নিবন্ধনই ভাষার পরিষাণ বা সংখ্যা পুরুষ-পরিগণনার বিষয় হইতে পারে না; কল ও ভংসাধনেরই বলি পরিষাণ অবধারিত না হইল, তবে আর বোক্ষ-ধলে পারিশেন্ত সিদ্ধি হইবে কি প্রকারে দু: ১২

ষ্ঠি বল, কল্পকলের ব্যক্তিগত পরিমাণ নিল্ডিত না পাকিলেও তাহার জাতিসত পরিমাণ ধরিরা পারিবেল্প নিদ্ধেশ করিতে পারা যায়; অভিপ্রায় এই যে, ইচ্ছার বিষয় , কল্পকল ও তৎসাধন সমূহ অনস্ত হউলেও, সম্প্রেট কল্পকলর জাতিটা তুলা বা সমানভাবে আছে; [স্তরাং কল্পকল্পরণে সম্বন্ধ বিষয়ই পরিগণিত হইয়াছে,] একমার মোক্ষই অবলিও রাহ্য়াছে, কারণ, উহা অপর কোনও কল্পের ফলপ্রপে কল্পিত হয় নাই; অতএব অবলিও থাকার (পারিলেল্প নিয়মান্ত্রসারে) মোক্ষকেই নিতাকল্পের ফল্পরণে কল্পনা করা মুক্তিযুক্ত হউতেছে। না—তাহাকেও নিতাকল্পের ফল্পরণে কল্পনা করা মুক্তিযুক্ত হউতেছে। না—তাহাকেও নিতাকল্পের ফল্পরণে কল্পনা করা মুক্তিযুক্ত হউতেছে। না—তাহাকেও নিতাকল্পের মানলা রাক্ষা করিতে, তাহাও কল্পকলেরই স্লাতীর হওয়া উচিত; স্থতরাং এমতেও পারিলেল্প দিছ হর না। অতএব প্রকারান্তরেও যথন নিতাকল্পের সাফল্য রক্ষা করিতে, পারা বার, তথন তাহাতেই 'প্রতার্থাপতি' চরিতার্থতা লাভ করিবে, অর্থাৎ উৎপত্তি, প্রান্তি, বিকার ও সংস্কার, এই চতুর্বিধ ফলের ছে কোন একটা কল নিতা কর্পের সম্বন্ধেও সম্বন্ধর হইতে পারে; (১) স্কৃতরাং প্রতার্থাপত্তির ও সার্থকতা রক্ষা হইতেছে। ১৩

[্]বি) ভাবপর্বা – সাধারণতঃ কর্মের ? ক্রিয়ার : কল ভারিব্রকার—/ ১) উবপতি,
বি) প্রাক্তি (১) বিকার ও (২) সংক্ষার : ভস্মধ্যে অবিজ্ঞান প্রার্থকৈ জন্মন – উবপতি,
অচার প্রার্থের সভিত্ত সাধার সাধন কর — ব্যান্তি ; একরাশ বস্তুকে অভ্যন্ত্রশেশ শরিশ্র কর,
—বিকার ; আন বিজ্ঞান বস্তুর বোবাশন্তন বা ভবোবশান্তর নাম – সংক্ষর । ভাষাকার
বালভেলেন বে, নিজা কর্মক ববন ক্রিয়া, ভবন ভাষা ক্রমকের বে কল ক্রিবে, নিজ্ঞার নাল।
উবপত্তি, প্রান্তি, বিকার বা সংভার, ইয়ার ক্রোন একটা ক্রমবে ; ভ্রন্তরাং বিভাতির্মন্ত্রীয়ার লাজ্যের বিকলত। ক্রম্ভেরের না ; এবং ক্রমতার্থাপত্তি প্রমাণাঞ্চনারে বে, , ক্রেটা

क्कीरताश्यातः—क्कोतः वामनन्।

यवि यन, त्यांकरे केक प्रकृतिंव करनंद वक्षकर कन ; ना, छारा विनिष्ठ नाइ ना : (कनना, (बाक्स दवन निका, कदन छेदा केश्नाक स्टेटक नाट्य मा : अरेमकरे छेरा विकारी (विकार स्टेमार वाना) नार, अवर महर्माण बहेरण भारतमा: बाबा क्रियानावा प्रवा. छाबाबहे मरकाव बहेरण भारत-দেখন ঘঞ্জীর পাত্র ও বতাদি দ্রবা কলপ্রোক্রণাদির ছারা সংভারস্পর वय : वैवाज (जयन नाव : यक्षीय प्रभावित कांत्र मध्यार्थिक नाव : कार्र्वि त्वाकाक व्यवनिके त्याला कम विनवा तावन कविएक लावा बाव: ना-त्याक शालाक हरेटि लादि ना : काइन, छेरा बाबाद वर्णाविषक, ua: चित्राचक । विव तम, निठा कर्चश्रीम वचन चश्रागढ कर्च चाशका वित्रश्रहित, ७४म ठाहाँद करमे किसिंग देनम्मना गाँका महित्र महः मा---(म क्यां विनार भार मा : कार्य, कर्चर धर्च रचन मकन कर्चरहे भवान, उपन अभवाभव कर्चकरमव इमायछार कमरे वा रव ना किन १ विष वन, निठा कर्चक्रण निवित्त वा कावापव देवनक्रमा निवहन ठाहांद्र फानश देवनक्या कश्त्राहे कावा: बायबा वनि, ना-छाहा क्हेरछ शाद्व ना : कावन, 'कायवठी' कर्त्वव (वारतव) मान हेवाव वरवहे देवनक्ता वृहिबाद्ध,-- (वयन गृहकाशांपि निविक छेशकि हहेल शत, 'काववछी' নামত উষ্ট (বাগ) করিতে হর । বেষন—'বজপাত্র তালিলে ছোম করিবে', 'श्रम बहेरन फांठे पवितन) हाम कविरव' हेलानि, अहे बालीव निविधिक कार्यत जान विषय करहे वाक्यन क्यमा करत ना : एवर्सन निष्ठाकर्य-ওলিও বাৰজীবন বিহিত বলিয়া নৈমিত্তিক কর্ম্বের ভুলাক্লপ; স্থুতরাং अवादक कन (याक बहेर्ड भारत ना। 28

অপিচ, কোনপ্রকার তপ দেখিতে হইলে আলোকের আবস্তক হয়; আলোকই সকলের পক্ষে ত্রপ বর্ণনের সাধারণ উপায়: কিন্তু পেচক প্রভৃতি কতর্তীল প্রাণ্টী আছে, বাহারা আলোকের সাহায়ে ত্রপ বর্ণন করে না; কারণ পেচকালির চন্দু আর অপর প্রাণিগণের চন্দু একপ্রকার নয়,—উহাছের মধ্যে মধেই বৈলক্ষণ্য রহিরাছে; বৈলক্ষণ্য আছে বলিরাই ত্রপ প্রহণ করে না বলিরাই বে, পেচকালির চন্দু রসান্ধি গুণ প্রহণ করে, এত্রপ ত করনা করিতে পারা বার না; কারণ, রসাহি-প্রহণ বিবহে চন্দুর সামর্থ্য কোষাও কেবিতে পাঞ্জা দলীকর্মান্ধ আবন্ধক চইলান্ধির; ভাষাও চইল; প্রভাগে এই কাবে কভার্যপ্রভিত্ত বাহার করিব।

বার দাই; সতএব করনার সাহাব্যে বতদ্রই বাওরা বাউক না কেন, বাহার বে বিবরে সামর্থ্য বা কার্য্যকল্পিতা দৃষ্ট হইরাছে, ভাহার সেই বিবরেই কোনপ্রকার বিশেষ শক্তি করনা করিতে হইবে, (অভিনয় করনা করিলে চলিবে না)। ১৫

আরো বে, বনিরাছ—হবি ও বিব বেরপ বিভা, বন্ধ ও শর্করাদি সহবাবে অঞ্জেকার ফল প্রদান করে, ভরূপ নিভাবভাবে অঞ্জিত নিভা কন্ধ- ওলিও বভর ফল প্রদান করিবে। ভাল, বভর ফল প্রদান করে, করুক; উহা বিদি ইন্দিত ফল হর, তাহাতে কোন বিরোধ নাই; নিভাব কন্ম বিভা বা উপাসনা সহবোগে অঞ্জিত হইয়া বিশিষ্ট ফল জন্মাইলেও কোন ক্ষতি নাই; কারণ, শান্ধে দেববাজী (দেবভার উপাসক) ও আন্ধ্রয়াজী (আন্ধার উপাসক; এতহুভবের মধ্যে আন্ধ্রয়াজীর শ্রেছতা উক্ত আছে; ববা, গুলববাজী অপেক। আন্ধ্রাজী শ্রেছা, এবং 'বিভাগহকাবে বাহা কবে, ভাতাই উত্তর্গ ইত্যাদি। ১৬

তবে বহু বে, পরনায়ণনি বিষয়ে "সংপতন্ আয়নালী" এই বাকো
'আয়নালী' পালর প্রারোগ করিরাছেন, তাহার আর্থ—সর্ক্তুতে সমতা দর্শন
করিলে 'আয়নালী' হর: অগবা ভূতপূর্ণ পতি অনুসারে আর্থাৎ সাধকের পূর্বাবল্পা ধরিরা সইলেও এরপ আর্থ করা বাইতে পারা যার যে, বিনি আয়ওছির
অন্ত নিত্যকর্পের অন্তর্ভান করেন, (তিনি আয়নালী); কারণ, প্রতি বলিরাছেন
'এই নিতাকর্প ছারা আমার অন্ত সংস্কৃত বিলোবিত) হইতেছে', এবং অতিশাস্থাও 'গভাগান সংখ্যার ছারা' ইত্যান্তি প্রকরণে, লেছেজিরান্তি সংখ্যারের অন্তর্ভ নিত্যকর্পের উপযোগিতা প্রদর্শন করিতেছে। ঐরণে সংস্কৃত বা পরিলোবিত
হইয়া, বে আয়নালী সেই সমত্ত কর্পের কলেই সর্বার সমধর্শন করিতে সমর্থ
হন, উল্লোব ইছ ক্রেই হউক বা পর অন্তেই হউক, সর্বারিধ বৈবন্যবাজ্যিত
আম্বর্ধন সম্পন্ন ছইয়া বাকে; ইরণ সমদর্শন করিগেই বারাজা (বুঁকি)
লাক্তের অবিভারীন্তর। জ্যানসহযোগে অনুষ্কৃত নিত্যকর্প বে, আয়জানলাভের উপার বা সাবন, এই অতিপ্রার প্রকাশনার্থই ভূতপূর্ব গতি (বারা
সূর্বে হইয়া পিরাছে, সেই অবয়া) অববর্ধন করিয়াও 'আয়বার্লী' প্রের
প্রয়োগ হইয়া বাকে। ১৭

चानक अरू क्या,—'ननीरिन्त नित्रा शास्त्रन (त. तथा, विचलके), ५वं (रम), महान् (मदद-क्याकियानी दिवनागर्क) ७ चयाक (लक्कि चर्याद जर्मानी ?), देशवा नकरन नाषिक कर्णव छैरक्टे कर्न, 'बनर निवास कर्त्व नकक्छ आब दर्भ देशावि नाववाकाश्वी देखावि-द्ववश्वावि आबि ছাড়া পঞ্জুতে বিবিশ্রণকেও নিভাব কর্মের তল বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। 'ভূতানি অণোডি'র হলে, বাহারা 'ভূতানি অত্যেতি' পাঠ পরিকল্পা করিরা कर्म शरेट वृक्तिकन आधिव नवर्षन करवन ; वृषि:ठ वरेरन, व्यविवास তাবাদের বৃদ্ধি বড় আর ; সুতরাং তাবাদের আরবৃদ্ধি-প্রাস্ত আর্থ कत्रनाथ (शारावर विवत्रा आह नरह (छेराक्नीत)। जात अहे 'कुछानात्र' बाकाठी (व, व्यर्ववाय-निवर्षक वाका, छाहां बत्द ; काव्य, त्व व्यशास बहे वहमठी महिविहे चारह, त्मरे चशारत इरेंगे बाज विश्वतत छेतार चारह-এकी रहेराज्य कर्चकरमत त्यम गीया—उत्तमम श्रावि, बात बनवी চইতেছে কৰাবহিত আৰক্ষান; বৃত্তাং উক্ত চুইটা বিষয় বধাক্ষৰে কৰ্মকাও ও উপনিষয়ক্ত বিষয়ের সহিত তুলা এবং অবিক্লম্ভ। বিহিত কৰ্মের षक्षकान ना कतात, এवर निविद्य कर्षात त्रावा कतात्र शुक्त । প্ৰরাদি বোনিতে দেহধারণ করিতে হর. (১) এবং বারতোশী একপ্রকার প্রেতদেহও দেখিতে পাওয়া বার ; [সুতরাং ঐ সমস্ভ বাক্যকে 'অর্থবারু' बनिवा উপেকা कहिएल भावा बाद मा]। ১৮

বিশেষতঃ প্রতি ও স্থৃতি শাস্ত্রোক্ত বিভিত ও নিবিদ্ধ কর্ম ছাড়া শক্তপ্রকার বিছিত বা নিবিদ্ধ কর্ম কোধাও জানিতে পার। বার না, বে সকলের শক্রণে ও করণে প্রেত-শক্রাফিতাবপ্রাধিরণ কর্মকন প্রতাক্ষতঃ বা শক্ষানের সাহায়ে শক্তব করিতে পারা বার। শার উক্ত প্রেত শ্করাফি

⁽э) "বস্থান বিধিতঃ কর্ম নিজিতক স্থাচনত্ন। অসপ্তঃক্ষেত্রতার্যের নহঃ প্রকার বৃদ্ধান বিধিত কর্ম বিধিতি কর্ম (স্থাচিত) বা করিবে, নিজিত কর্ম (স্থাচিত) বা করিবে, নিজেত কর্ম (স্থাচান প্রকৃতি) করিবে এবং ইক্রিয়-সংখ্য না করিবে অংবাখানী করে। করিবে ভাগান করিবে করিবে করিবে তালানিকরে। করিবে ভাগানিকরে। বাহিকিঃ পৃক্ষি-বৃদ্ধান বাবনির্ভ্যাকিতান্ন। বনুক্ষব্রোট্টাবাং স্লোকরিবার বৃদ্ধানিকরে। চতাল-পুক্রালাক প্রকাম বোনির্ভ্যাকি।" অর্থাৎ ক্ষেত্র পানাবার-ক্ষিত্র লালা অন্যকর্ম হালা হাল্যম (বৃক্ষ পানাবারি কেছ) প্রাপ্ত হয়: বাহিক পাণানারা-ক্ষিত্রতার বার্মিকরে, প্রক্ষাকারী বাজি ক্ষ্ম, নুক্র, বর্জত, ব্যে, অল, ব্যেং মুখ, বৃক্তী, চাঙাল পুরুষ (বিক্টা আজি) আজি প্রাপ্ত হয়।

-

प्रावेद अधिकारे वह, बंचवां एक पोणाह करत मा । पंचाय केक (क्रांक, गणगणि ७ शावशांतिकांव एकम विश्वित कर्त्वर प्रकार के ब्रांकितिक कर्त पाछश्यत एक, केरके ज्ञाविमन-आविरक्क क्षेत्र क्ष्मम कर्त्वक विज्ञा बीकाह कहिएक हरेरत । जिर्दे काहराई 'विति पाणगाह वणा (क्षण्यत (क्ष्म) काळिया विज्ञाविरक्तम', जबर 'विति (ज्ञावन कहिलाविरक्तम' केलावि पाटकाह काल केक "क्ष्मानि परणांकि एक देव" हेलावि वाकारक व्यववर्त-वाही पर्ववाद विवरत माला याह सा । >>

विक वत्र. अवात्म विक चक्रवार्यवाक मा इत्र, काव कर्य-विशाकशक्रवात्रक क्यांक्षणित प्रकृष्ठार्थश्य (प्रमृष्ठाश्य) मा व्यक्त , जान कथा, - मा वह, मा रहेक ; खबू त्म क्याब छ जाब अज्ञ वृक्तित वाथा श्रेट भारत मा, किया चावारक व्यवस्थित भरकत्व (निकारकत्व) त्याम त्याम प्रवेश्व भारत मा। छोड़ाड शह. "तथा विचलका" हेडाानि वाटनाळ उदानिकार श्रासिटन कारा कर्त्यंत्र कन विवाध कन्नना कदिएक भारा बाद ना ; रकन ना, त्यवारम হৈৰকৃষ্টিই সেই কাষ্য কৰ্ষের ফল বলিরা অভিহিত হইরাছে: অভএব बिलक बहेरब (व. बाहाता नाकिनिक-कर्तकरनत पाकिनावी, काहारबत वामीक निका कर्न ७ नर्नावय-वाचावयापि कार्यत्र कम दर-तवावय श्राश्चि श्रव्यक्ति, चार बाहारा क्लाक्लिबरहिक-क्लिक कर নিভাকর্মপ্রচান করিয়া থাকেন, তাহাদের সেই সমন্ত নিভাকর্ম হইতে जन्मात्मद क्षेत्र इतः कादन, पठिनात्त्र चारक-'निजाकत्त्रंत चन्नकान ছারা শরীরকে ব্রয়োগন্তির বোগা করিয়া থাকেন' ইত্যাদি: সেই সমস্ত নিত্য কর্মণ পরম্পর। সহতে মৃক্তিশাতেরই সাহাব্য করিয়া থাকে; এই জন্ত त्म नमूक्त कर्पात्क 'मूक्ति-माधन' वनित्म कान विताध दत्र ना ; हेराहे (व. नाक्रमिकाब, ठाक) वर्ड चंत्राद्य जनत्कत्र चावादिक। क्रेनमस्य अवर्नन कविव । २०

্পার বে, বিৰ ও ববি প্রকৃতির দুটান্ত নিরাছ, তাবাও সপত বর '
নাই; কারণ, উহা প্রত্যক্ষিত্ব; সূতরাং সে বিবরে কোনও বিরোধ
বা বিসংবাদ নাই; কিন্তু বাহা একবাত্র শক্ষম বিষয়, সে বিবরে ভংপ্রতিপাদক শাই শক্ষ না থাকিলে, কেবল বিৰ ও দ্ব্যাদির ভ্লনার আলোকিক
সাম্ব্য করনা করিতে পারা বার না। বে বিবরে বিকল্প প্রধাণান্তর রহিরাছে,
সেক্লপ বিবরে কবনও প্রতির প্রামাণ্য করনা করা বার না; বেনন—

'वर्षि विका ७ तार वर्षाप" रेकापि। भणकरत, त्यमं वर्ष-वित्यत ক্ৰডিৰ ভাৎপৰ্ব্য শাইজ অবধায়িত হয়, সেৱল অৰ্থ প্ৰভাজানি-প্ৰবাণনিক্সৰ ৰদিয়া প্ৰতিভাষ্ট হইলেও, সে সমুদ্ধ প্ৰমাণকে প্ৰমাণাভাদ (বাহা আগাভডঃ क्षवान विनद्या वरत दय, किन्न वाक्षविक क्षवान वरह,) विनद्रा क्षद्रन कविरक बरेरव। रवन---वरणाण्यक (जानाकि शाकारक) वर्षि वनिदा गरन क्या रह, अवर चाकानरक छम ७ विमय विमय (वाद एवं; अहे থাতীয় বে, অঞ্জনের প্রভাক, ভাষা অসুভবাত্মক বইলেও ভবিবরে ধৰ্ম অপদাপর প্রমাণের সভাতা বা অবাক্তা দ্বিতর রহিরাছে, তবন **পূর্বোক্তপ্রকার অক্তর্নের প্রভাকটা নিশ্চরাত্মক চইলেও প্রবাণাত্তর বারা** আভানীয়ত অগ্ৰাৰীয়ত) হইয়া থাকে; অভএৰ বেৰের প্রাবাদ্য বধন चवाकिहाती - चवीकात कविवाद छेशात नाहे, छवन व वात्कात विवा ভাৎপৰ্ব্য নিশীত হয়, ভাষা দেইল্লপ বলিয়াই খাঁকার করিতে হইবে, সেখানে ৰাজুবের বৃত্তিকৌশল কাজে লাগে না। লোকের বৃত্তিকৌশল প্রভাবে पत्रर क्षकानवाम पर्रात क्षकान रायन गायक रह ना. क्ष्यिन लाकन्दिन कन्नमारकोनाम (बनवारकात्रक वर्षात्रत निष्ठ हत मा। वर्षाव कान कर्चरे (व, नाकार नवस्व साक्रमावन मरह, रेहा क्षराविक हरेन। चक्रवर कर्चकम (व. नश्मारवद अधिविक नरह, भवड मश्मारवदे अवर्गछ, छाहा এখৰ্ণন করিবার অন্তই এই পরবন্তী গ্রাহণ (পরিক্ষেণ) আরম্ভ হইতেছে ৷—

অব হৈনং ভুজালাছারনিঃ পপ্রচ্ছ বাজবদ্ধেতি হোবাচ।

মদ্রের চরকাঃ পর্যব্রেলাম, তে পতকলক কাপাকে গৃহানৈম;

তক্ষাদীক্ষ্ হিতা গন্ধকাগৃহীতা, তমপৃচ্ছাম—কোহদীতি, দোহ
ববীং ক্রধবাহহক্ষিরদ ইতি, তং বদা লোকানামস্তানপৃচ্ছামাধৈ
নমক্রম—ক পারিক্ষিতা অন্তর্বার্গতি ক পারিক্ষিতা অন্তর্বন,

স ত্বা পৃচ্ছামি বাজবন্ধা ক পারিক্ষিতা অন্তর্বার্গতি ॥১৬৬॥১॥ .

সাহারনার্থঃ। অব (আর্থভাগত বিরাষানত্তবন্), ভূল্যুঃ (তরাবকঃ)
লাহারনিঃ ৹(লহন্ত অপতান্ লাহা, ততাপভাং লাহারনিঃ) পঞ্জ
(প্রাইুং প্রবর্তে); [প্রবৃত্ত] হে বাজবভা ইতি [স্লোবরন্] উবাচ
(উল্লোন্) হ—[বরং কলাচিং] চরকাঃ (অব্যরনার্থং প্রভাচরনপরাঃ
সভঃ) ব্যেরু (মন্তাহেশে) পর্যপ্রকাষ (পর্যটনপরাঃ অভ্ন); তে (বরং)

कांबाक (किंगिशांकक) वक्कवाक (वक्कवाका वृक्कक) पृश्वत् (क्ववर) केंब (वक्कक); कक (शक्कवाक) इश्कि (क्का) विवर्ग) विवर्ग (क्वकर); कक (शक्कवाक) इश्कि (क्का) विवर्ग) विवर्ग । विवर्ग । विवर विवर्ण विवर किंद्राण किश्वकणक विवि) श्रेष्ठ । यह (क्वर पृष्ठे वक्कर) व्यवीद (केंक्याम्)—वाक्षित्र (क्विंद्राशांकारवाद । व्यवस्तार) व्यवीद (केंक्याम्)—वाक्षित्र (क्विंद्राशांकारवाद । व्यवस्तार) विवर । विवर । विवर्ण (विवर्ग । विवर । विवर । विवर्ण । विवर (क्विंद्राशांकार । विवर । विवर

স্কাকুবাদে। জারৎকারব মার্ডাগ প্রশ্ন চইতে বিরত হইলে পর, ল্ফপুত্র কুজা বাজ্ঞবন্ধাকে সম্বোধনপূর্বক জিজ্ঞাসা করিলেন। তিনি বলিলেন—হে বাজ্ঞবন্ধা, আমরা অধারনার্থ প্রশ্নচর্যা-প্রভাচরণ পরারণ হইরা মদ্রদেশে পর্যাটন করিয়াছিলাম: সেট সময়ে একদা কলিবংলীর পভক্রলামক গৃহত্বের গৃতে উপস্থিত হইয়াছিলাম; ভাষার একটা কনা৷ গল্পর্ব কর্তৃক আবিষ্টা ছিল: আমরা সেট গন্ধর্যকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলাম—তুমি কে? সে বলিল, অলিরা বংশে আমার জন্ম, নাম স্বধা। আমরা ভাষাকে বখন তুবনকোশের (প্রশ্নাণের) অবসান বা সীমা সম্বন্ধে প্রশ্ন করি. তখন ভাষাকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলাম যে, পারিক্ষিত্রগণ কোধার ছিল গ হে বাজ্ঞবন্ধা, ভোমাকেও জিজ্ঞাসা করিভেছি বে, সেই পারিক্ষিত্রগণ কোধার ছিল গ ছে বাজ্ঞবন্ধা, ভোমাকেও জিজ্ঞাসা করিভেছি বে, সেই পারিক্ষিত্রগণ কোধার ছিল গ ছিল ভাষার এই বে, প্রশ্নের বধার্থ উত্তর আমরা গন্ধর্বের নিকট হইতেই জানিয়াছি; স্কুজাং এ বিষয়ে ভূমি আমারিগকে জুল বুলাইয়া পার পাইবে না] ৪ ১৬৬। ১ ৪

্নলাক্সন-ভাজ্যক। প্ৰামন্ত্ৰৰ উপরতে পারংকারবে, ভুক্রিতি নাৰতঃ, সহস্তাপতাং সাহঃ, তম্পতাং সাহায়নিঃ পঞ্জ-বাজবহাতি হোৱাছ-আলাবুজুসববেৰদৰ্শনম্; সমষ্টবাইকলক স্বামেৰ্ড্যু "জান- সম্ভিতা বা কেবলভানন্দানিতা বা সর্কর্তনাং পদ্ধা কার্টা; কিন্তি ব্যাধিবেশভাং ন পরং পূরাপাপারাং ইভি হি প্রাধি; তেন হি স্থানি ব্যাদি প্রাধিবিদ্যাল প্রাধিবিদ্যাল কার্ডা নিজাভা অবর্ডা বিষয়া অববেশ-বাদ্যালভাঃ: "বৃভ্যুরভালা ভবভোভানাং বেবভানাবেকা ভবভি ইন্যুক্তব্য বৃভ্যুন্ত অপনায়ালভাগে। বৃদ্যালা সমন্তিঃ প্রথমতো বাহুঃ পুরাং সভাং হিরণাপর্তঃ; তক্ত ব্যাহুতো বিষয়:—বহাল্বং সর্কং বৈভৈক্তব্য, বঃ সর্ক্ষ্পভাররালা লিকব্র্তরুসঃ, বহালিভানি সর্ক্ষ্পভাররালা লিকব্র্তরুসঃ, বহালিভানি সর্ক্ষ্পভাররালা বিজ্ঞানানাং পরা গতিঃ পরং কর্ব। তক্ত কিয়ানু গোচরঃ, কিয়তী বাধিঃ সর্ক্রণ ওবিষধানীভূতা, সা বক্তবাা; তক্তাস্ক্রায়াং সর্ক্রণ সংসারো বন্ধনপাচর উক্তো তরতি। তক্ত চ সমন্তিবাই্যাল্বন্দ্রভারাং ক্রাধ্যানাবিদ্যালারিকার্ আল্পনা রভাং প্রক্রতে, তেন চ প্রতিবাহিত্তিং ব্যাবোহিত্তানীতি বন্ধতে। ২

যারেণ্—শত্রা নাম জনপদাং, তের চরকা জধ্যারনার্থং ব্রচ্চরপাৎ চরকাঃ জ্বার্থাবো বা. পর্যাব্রজাম পর্যাটিতবরঃ ; তে পতকলক্ত—তে বরং পর্যাট্রঃ পতকলক্ত নামতঃ কাপান্ত কপিপোত্রক গৃহান্ ঐম গতবরঃ ; তক্তাসীকু হিতা পত্রর্কার্থীতা—গর্ধাবেশ আরাক্তবেশ সারেন কেনচিয়াবিটা ; গর্ধাবা বা বিক্ষোহির অভিক দেবতা বিশিষ্টবিজ্ঞানরাদগসীরতে ; ন বি সর্বাত্রজ্ঞাং বিজ্ঞানমূপপভতে ৷ তং সর্বে বরং পরিবারিতাঃ সরঃ অপুদ্ধাম—কোংশীতি কর্মানি বিংনামা কিংসতরঃ ৷ সোক্তরীত্ গর্কাং—স্বাধা নামতঃ, আজিরসঃ গোত্রতঃ ৷ ,তং বলা বন্মিন কালে লোকানাম্ অস্তান্ পর্যাহসানানি অপুদ্ধাম অব এনং গর্কামক্রম—ভূবনকোশ-পরিমাণজানার প্রস্তুতের্ সর্বের্ আজানং রাম্মরার পূট্রন্তো বর্ম ; কর্ম্ব ? ক পারিজ্ঞিতা অভবন্নিতি ৷ স চ গর্কাং সর্কামক্রম পূট্রন্তো বর্ম ; কর্ম্ব ? ক পারিজ্ঞিতা অভবন্নিতি ৷ স চ গর্কাং সর্কামক্রম্য অরবীৎ ; তেন দিব্যেতোা বরা সরং জানম্ম, তৎ তব নাত্তি ; জতো নিগৃহীতোংসীতাভিপ্রায়ঃ ৷ সোহবং বিভাসম্পন্নো গ্রহাস্থানি, যা ঘাং পূদ্ধানি হাজবদ্ধা, কর্ম্ম, পূদ্ধানি—ক পারিজ্ঞিতা অভবন্ধিতি ঃ ১৬৬ ঃ ১ ঃ

ভাল্যান্দ্রাদ্। প্রতির 'শব' শর্থ—শনস্বর, শর্বাৎ পারৎকারব আর্থভাগ প্রশ্ন হইতে বিরত হইলে পর, ভূল্যান্যক লাল্যরনিলাক্তর পূল্য—লাল্, তাহার পূল্য—লাল্যনি বাজ্ঞবভাকে সংখাধনপূর্বাক প্রশ্ন করিয়াছিলেন। ইতঃপূর্ব্বে শর্বাবেধ বজের কথা বলা হইরাছে; শর্বাবেধ বজের কল বিবিধ—সমন্তি ও ব্যান্তি, শর্বাৎ শন্তুভানবিশেষে সমন্ত কলও হর, আবার শন্তুভানবিশেষে পূথক পূথক ফলও হয়। জান সহকারেই শন্তুভিত হউক, কিংবা কেবল জানন্যবাই সম্পাদিত হউক, শর্বাবেধ বজ্ল ইতৈছে সমন্ত কর্মের প্রেট কর্ম্ম; স্বতিশাস্থকারগণ বলিয়াছেন, 'প্রশহত্যার বেশী পাপ নাই, আর শন্ত্রায়েধ শপেক্ষা পূণ্য নাই'; লোকে শন্ত্রায়ে সমন্তি ও বান্তি ফল প্রাপ্ত হইয়া থাকে; ব্রন্ধান্তারগতি বে সমন্ত বিষয় প্রতীতিগোচর হয়, সে সমন্ত বিষয় হইতেছে শন্তাবেধর বান্তি ফল।>

্তিন্ত সমন্তি কলের কথা বলা হইতেছে। পুর্কেই কবিত হইরাছে বে, 'মৃত্যু ইহার আত্ম হর, তিনি এই সমূলর দেবতার অক্তম হন' ইত্যাদি। অননারালক্ষণ অর্থাৎ সংহারাত্মক মৃত্যুই সমন্তি-বৃদ্ধিপত প্রথমোৎপত্ম পুরুষ; বাহু, প্রোত্মা, পত্য ও হিরপাপর্চ প্রভৃতি তাহার নামান্তর; সমন্ত হৈতকপৎ বাহা হইতে অপুরুক্ বা বলাত্মক, বিনি সর্ক্তৃতের অর্বাত্মা, প্রাক্তেন সর্বাত্মত অব্র্ক রস অর্থাৎ, প্রত্ম পদার্থের সারত্ত্ত ও সর্ক্তৃতের সর্ব্ধপ্রকার কর্মনিচর বাহাতে আত্মিত, এবং শায়োক্ত কর্ম ও কর্মান-বিজ্ঞানের (উপান্ধার) বিনি চরম কল, মৃত্যান অপৎসমন্তি তাহারই ভোগ্য বিষয়। সেই সমন্তিভূত হিরণাপর্তের ভোগ্য বিষয়ের পরিমাণ ও সর্বাদিপ্র্যাণী বিভারই বাক্ত, এবন ভাহা বলা আবন্তম ; তাহা বলিলেই ফলে ফলে আব্রের বন্ধন-ব্যোত্ম সমন্ত পরমাণও উক্ত ইয়া বাইবে। সমন্তিও বারী ক্যান্ত্রক আত্মানিকার অলোক্ষিকতা আপনের অন্ত প্রক্রম নাইবে। সমন্তিও বারী ক্যান্ত্রক আত্মানিকার অবতারণা করিতেছেন; তিনি যদে করিভেছেন বে, এই ব্যরাহাই প্রতিবাদী বাক্ষবভার বৃদ্ধিন্তন সমুৎপাদন করিব। ২

নত্র একটা প্রনিদ্ধ দেশ; আনহা এক সহহ সেই বেশে অধ্যয়নার্থ 'চয়ক' হইরা অর্থাৎ ব্রন্ধচর্ব্য-ব্রতগরারণ হইরাই অধনা অধ্যয় ব্রিপ্রেণ (ব্রন্ধ্রেই-বিজ্বপে) পর্যাটন করিতেছিলান ; [সেই সময় আমরা] কলিবংশীর পতকলনামক সৃহছের বাড়ীতে উপস্থিত হইরাছিলান ; পতকলের একটা কলা গভর্নসূহীতা—গভর্ম অর্থ—বসুন্তেতর লীন, তৎকর্ত্বক আনিটা (আজান্তা) ছিল। এখানে গভর্মটার বালুশবিশিট্ট জানের পরিচর পাওরা বার, তাহাতে বুবা নাইতেছে বে, এখানে গভর্ম অর্থ—সৃহছের উপাক্ত অন্তিম্নী অন্তিন্ কিংবা দেবতাবিশেন ; তাহা না হইলে, সাধারণ একটা প্রাণিনাজের এরপ বিশেষ জান থাকা সন্তব হইতে পারে না। আমরা সকলে তাহাকে পরিবেইনপূর্মক বসিরা জিজাসা করিরাছিলান—তুমি কে?—তোমার নাম কি? এবং পরিচর কি? তিনি বলিলেন—আমার নাম স্থবা, অলিরার বংশে জন্ম। আমরা বখন তাহাকে ব্রন্ধান্তর অন্ত—শেষসীযা সম্বন্ধে প্রার্থ করি, তখন সেই সন্ধর্মকে জিজাসা করিরাছিলান। কি প্রকার ? না, পারিক্ষিত্যপ কোধার ছিল ?

প্রাক্তার অভিপ্রার এই বে, সেই গছকা আবাদিগকে সমস্ত কথা বলিয়াছিলেন; আবি এইরপ দিব্য পুরুষের নিকট হইছে জ্ঞান লাভ করিয়াছি; কিন্তু তুবি তাহা পার নাই; অভএব নিক্তরই তুবি পরাজিত হইবে। হে বাজবদ্ধা, গছর্জ হইতে লজোপদেশ ও বিভাসন্দার সেই আবি ভোবাকে জিল্পাসা করিতেছি—পারিক্ষিত্সণ কোগার ছিল, তাহা তুবি জান কি ? হে বাজবদ্ধা, আবি জিল্পাসা করিতেছি—বল কেবি, পারিক্ষিত্সণ কোগার ছিল । ১৮৮৪১৪

স হোবাচোবাচ বৈ সোহগচ্ছন বৈ তে ভাষত্তাখনেধযাজিনো
গক্ষপ্তীতি, ক শ্বনেধ্যাজিনো গচ্ছপ্তীতি ! ঘাত্তিহপতং বৈ
দেবরধায়্লাজ্যং লোকস্তথ সমস্তং পৃথিবী বিস্তাবৎ পর্যোতি,
ভাখনস্তং পৃথিবীং বিস্তাবৎ সমৃত্তঃ পর্যোতি, ভদ্যাবভা স্কুরস্ত
ধারা ধাবদা মন্দিকারাঃ পত্তম্, ভাষানস্তরেশাকাশন্তানিস্তঃ
ফ্পর্ণো ভূষা বারবে প্রায়হ্মৎ, ভান্ বারুরান্ধনি বিদ্যা ভত্তাগমদ্
ব্রীব্রেধ্যাজিনোহন্তবন্ধিভ্যেব্যিব বৈ স বার্ষেব প্রশশন্তম্

जनाबाहरूवर वाडिवार् प्रविद्या भूतव जार स्वाचित्र अवर स्वयः ज्ञां र कृष्णाणावानिक्रभवतात ॥३७१॥२॥

ইতি ভৃতীরাধ্যারত ভৃতীরং ত্রাহ্মণম্। ৩। ৩।

व्यक्तकाव्याः। मः (अवः पृद्धेः वाक्यवद्याः) छवात व---मः (पृष्ठः पृद्धेः नक्सी:) केवांड (केकवान् , देव ; । देव-पका चाडवार्यः), वाकवकाः चवडरमम कूम्राः नवर्त्तास्त्रः चाववजीठार्यः ;,—(छ । नाविक्रिकाः) ४८ (ठ.४) देव (अगिरको) वनव्यम् ; [क्तार| पत्र प्रात्म) वचरववशक्तिः (वचरवव-रक्कर्जातः) शक्कवि-रेकि। [कृष्: पुनराव-] व (का वाकव्या, भवरमध्याविनः क ्ष्र्ञः नम्हवि ! देखिः [वाक्षवदा भाद—] भदः (भवप्-(माठकः) (माकः देव (अतिरक्षे) वाजिःगठः (वयत्रवाङ्गानि (रवयण निवकः चाक्रिका गंजा बाबर बानर गतिष्क्रिक्टांठ, छर (ववतवाक्राव, उत्वय बाजिरनव्-अनिकर नर रम्बन्नवाङ्गानि, उर्श्विविष्ठः अत्रः (माक केठार्वः ; शृवितौ छर लाकर नवसर (नवसार : सि: (छक्टेककरनाम) भर्रगांठ (बारधारि) : मयुक्तः जावर जार পृथियौर मयवर विः (छष्टेषश्रामा) भार्ताछ । भारत्मकः)। [अधूमा (यम विवरतन अवस्यवाकिमः विश्वित्रश्रह्मः उत्तर-क्लामस्याः বিবরপরিমাণমূচ্যতে—] তং (কত্র) ক্ষুরস্ত থারা (প্রাক্তাগঃ) ধাবতী (वायर शतिवाना रुचा), मक्षिकाताः शतः (शक्षशतः) वा वायर, अक्टबन (७६ क्नानदार्व (ता) , ठावान । ठावर निवानः) चाकानः (विद्यार चि); [त्ठन इटल शाखान् भाविक्यान्] हेलाः (भवत्ववतः) सूभर्नः (भक्ते) क्वा वाद्यव व्यावर्क्यः , नखवान्) ; वाद्यः छान् (भवरवपदाभिठान्) चाचनि विदा (नश्हाना) ठळ चनवर, वज चवरववर्गाक्षमः च ठवन् (हिटाः), हेक्ट्रि-बन्ध् हेन नः (भवकः) वाद्यु अन धानारनः; छचार (भवकंधनरनमार (ब्राज्याः) बाह्य अव वाह्यः, वाह्यः नमहिः (वाहि-नमहिकनाचकः); रः जन्र (नरवाक धननम्मन्नावाचन) वाह्र) (वच (विकानां , नः (विवान्) भूतः वृक्तर व्यथवत्रि (शहर वृक्ता भूतः न विवर्ष हेकानिकः)। লাহায়নিঃ ততঃ (বাজ্ঞবদ্যান্তর্ত্তান্তর্ত্তবিশং পরং) উপর্বাধ (বির্যুচা बक्त)। 261 । र ।

खूमान्युवाम् । वाक्यस्य वनिहमन—त्मरे मवर्त हाराहिमस्य विज्ञाविद्यान-अन्यत्यय-वद्यकात्रिमन (वचाद्य भवन क्रत्यम् द्रावे नावि-ক্তিখণও সেইস্থানেই প্রন করেন। (ভূজা পুনর্বার জিজাসা করিলেন —] अधरमध्याकिश्वनदे ना रकाषांच श्रम करवन १ ि उप्रसार बास्तक्या विमान -] मूर्वाहरून अक्षित्र चौत्र बर्वन बाना त्व भविमान चान প্ৰমণ কৰেন, ভাষাৰ ব্যৱস্থিৰ পৰিমিত স্থান চইল এই লোক, ভাষাৰ বিশুণ পৰিমাণযুক্ত এট পুৰিবা আবাৰ সেট লোককে পরিবেউন করিয়া ৰছিয়াতে; সমুদ্ৰ জাবাৰ থিপুণ পৰিমাণে সেট পণিবাঁকে বেইন কৰিয়া ৰভিয়াছে , | এখন প্ৰশাপ পশুৰুৱের মধাগত ৰুদ্ধে ৰ পরিমাণ কথিত ০টডেডে] কুরের ধার: বা প্রায়ন্তাগ গেরুপ সূক্ষা, অথবা মক্ষিকার भाषा भाषा भाषा, अक्षां क्षां व्यापा प्रदेश कृष्टभाषा ভিন্ন আছে , পরমেশ্বর (ভিরণাগণ্ড) পক্ষিক্রপী চটরা সেখানে উপস্থিত পারিক্ষিত্রগণকে বায়ুর নিকট সমর্পণ করেন; বায়ু তাহাদিগকে আপনার টুপরে স্থাপন করিরা, অখ্যেধ-যাজিগণ বেধানে আছেন, সেধানে লইরা যান। তুমি মনে করিয়া দেখ, সেই পদ্ধর্ক এইরূপে বেন বারুরই প্রশংসা कतिवाहितन । अञ्चव वाबुहे वाष्ट्रि । नमष्टि कः कन ; दव वास्ति এইऋग তত্ত্ব অবগত চন, তিনি পুনমূ ত্যা জয় করেন. অর্থাৎ একবার মৃত্যুর পর बाद मर्दान ना-व्यवस्थ लाख करवन १७७०१२॥

न्ना श्रवा का का निर्माण का निर्

कर लाकर गरिक्शि गर्वाछि भूवियो : हार भूवियोर छटेवव मुबबर विश्वावक विश्वत्यम পরিবাবেদ সমুদ্রঃ পর্বোতি, বং খলোচবাচকতে পৌরানিকাঃ। ठड चर्छ-क्लानाहार्विवत्रलवियानकृतात्ठ, (यम विवादन वार्त्तन विवादिन विवादन नाम विक अवस्थिता । उत्त बावठी बावश्यविवाना कृतक नाहा अञ्चल रावचा मोरचन वृक्तः विकासाः भजन्, ठावान् ठावश्भविषानः, चत्रदेश बरवा **খণ্ড-কণালরোঃ, খাকাবঃ ছিন্তব্, তেনাকাবেনেতোতং; তান পারিখিতা-**नर्वत्यवाकिनः श्राक्षान् हेन्द्रः भद्रत्यवदः - वाश्यत्यव्यक्षिन्तितः, भूभर्वः -विषयः वर्णनमुक्तः-"उत्र आही विक नियः" हेलाविना, सूपर्वः पक्षी कृवा পক্শুভাভাৰক: কুপর্বে। কুড়া বারবে প্রায়ন্ত্রং--বৃত্তরালান্ত্যান্তনা পঠিভরেতি। তান পারিকিতান বাহুরান্থনি ধিরা ছাপবিরা বাল্কুতান করা, তত্ত छित्र चनवत् ; क १ यह शुर्व्स चिक्राताः शाविकिता चर्यववाबिताः-ভৰব্লিতি: এব্যাৰ বৈ-এব্যাৰৰ স পদ্ধ বাহুষেৰ প্ৰশ্ৰণস পারিক্ষিতানাং পতিষ্। সমাপ্তা আখ্যারিক। : তটির ডিং তু অর্থস্ আখ্যারিকাতোছপফ্তা বেন अधिकार्तरेनव चाठाडे व छात्र । व वाबादः इतिव्यवस्थानाः कृष्ठानायववासाः विक्रिक न अव. जनावशासा विक्रुजी श्रीयन कार्यन विविधा या महिः नाश्चिः, न वाहरदात : जना नवहिः काराना ग्रहासना वाहरदात । এवा वाहमासाना नवज्रिवाज्रिक्षभाषाकत्वात्माभक्षात्रि, व अवः त्वम, उत्र किः कमिञाह-चल भूतम् द्वार करित मुक्तः मुका भूतर्त प्रिवरत । उत्तर चाचुनः शहनिर्ववार ভুজালাভারনি: উপর্রাম : ১৬৭ : ২ :

ইতি বুহুৰাৱণ্যকোপনিশ্লি কৃতীয়াধ্যারস্ত কৃতীবরান্ধণতাস্ত্রম্ মঞ্জ

্ট্ৰীক্ৰা: অজ্ঞানাদিনিবাসং পৰিচনন্ত্ৰন্তন আ ক্ৰোজালৈচিত। প্ৰণাথে। প্ৰধান্তৰ জ্ঞানছেতি পেনঃ কিনুবাড়েভাপেজালোৱাৰ অজ্ঞানজেতি। প্ৰণোৱাৰ বাধিচালবৰ্ডা। বাবাৰ পত্না বিভ্ৰাবানেশে। বাজিপেছ্জনিভাগতিববালে: স চ চল্লবনিবাত্তন বেশেৰ সাকং পৃথিবীভাচাতে

ंबविकसाय(भाषातम्बद्धीयवयक्कास्तकः । मनम्बद्धमतिकेसमा कावकी भृषियी पृकाः

ইতি ব্রেরিক্যান—ক্রান্তিংশ সমিস্তার্থিকন। বনং লোক ইভাভার্থনান - জ্যাবা-লিভি। বন্ধ লোকখাবং বিষয়তে - মৃত্রেভি। ইকং লোকসন্তাবলিইভালোকন নান—প্রস্তাব্যানিন্তি। ক্রিভি মন্ত্রীক্ষানান নাচাই—লোক্ষমিস্ত্যান্ত্রিনা। ব্যবহ কর্মান্ত্রিছং ডং লোকমিভি পুনরুভি: ভন্ন পৌরাণিকনংগভিনান—মং হাসোক্ষমিটি। উভাবি— 'অভভাত সময়াত, সংনিবিটোচমুজোলান: । সময়াত্মনভোৱেন বাবায়ান: স্কুটিটা টভি ।

ভব্যবিভাগাবেঁতাৎপর্বাধার—ভত্তরতি । লোকানিপরিষাধে ব্যোভরীভা ছিতে স্থাতি বাবং। কপালবিষপ্রসাত্পন্কভাৎ কি: তংগরিষাবিচ্ছরেভাা-আর—্যেনুক্তি। বাবভারভূষিঃ সন্ত্রাবাং পরস্থানার বাবের্গরিত—্যোক্স্প্রাম্ম ইন্টি। সুপর্বপ্রস্থাতি জেনসান্ত্রাজ্ঞানিতা ভিজানরো অনুভিঃ নর্পরিত আজিলামুন্মিডিঃ উর্লেখ্য প্রস্থানিতি—
ক্রপর্পরিভি। ভূরেভাভার্যান প্রস্তুতি নম্প ভিটোন্নিভভার্যবিভয়বেবাজিলো
সুরীয়া স্বর্থন গ্রেড্, কিনিভি ভারার্থন প্রস্তুতি, করান—মুক্ত আলিন্তি আজক্রিডালাম্বর্থনিত বাবং। ক্রেভাভার্যবিভাগ্য ভিজান বিভাগরে প্রস্থানিতি
লেবঃ। আলারিভাগ্যালামিভাল্যা পরিভো ছবিডা ভারতে বেন, স্পরিভিং—ক্রমেরঃ
ভ্রাজিন্য পারিভিভাগ্যার বিভিল্পঃ পরিভো ছবিডা ভারতে বেন, স্পরিভিং—ক্রমেরঃ
ভ্রাজিন্য পারিভিভাগ্যার বিভিল্পঃ বার্যিতি সংবভঃ

ৰুনিবচনে বৰ্তমানে কৰমাণানিকাসমান্তিস্কান জমাত্ৰ প্ৰাকৃত । বাহুপ্ৰশংসারাং বেতুমান — মুস্যান্তিক্তি । কিং পুনৰ্ধধোক্তমানু চৰ্বজ্ঞানকলং, ওবান—এন্ত্ৰিছি । ১৬৭২৪ ইভি সুৰ্বাহ্যশানেব্ৰাহালীকায়াং তৃতীয়াগালক তৃতীয়াং ভুকুজাক্তম্ চুক্ত

ভাজ্যানুবাদে। এইরপ ভিজাসার পর বাজবর্য বলিলেন— (महे नक्स ठावाणिनाक अहेबन वनिवाहितन; देव-मक्की चत्रनार्यक, ভাছার করা অরণ করিরা থেব; সেই পারিক্ষিতগণ দেই স্থানে পিরাছিলেন; (काशाब ? चन्द्रमशराधिनन (स्वात्म शहेता नारकम ; अहेत्रन महर्क क्षप्त निनीछ हहेरन भत्र, जुङ्गा भूनक विकामा कतिरनन---वन, त्महे व्यवस्थवाणीया हेवा (काशांत्र शवन करतन १ अवस्य वरककाती मिरशंत शवना ज्ञान निवनरावत উদ্দেক্তে এখন ভূবন কোলের (ব্রন্ধান্তের পরিষাণ বলিতেছেন—'বাবিংশং' অর্থ-জিন, আর চুইটা অধিক -বজিন; 'বেবরবায়্যানি' অর্থ-বেধ অর্থ আছিতা, ভাষার রথ—দেবরণ, সেই ফেবরথের প্রাত্যহিক পভিতে ৰে পরিবাণ স্থান পরিব্যাপ্ত হয়, তাহার নাম-'বেবরবাহ্য'; তাহার ৰ্ত্তিশপ্তণ পরিবিত স্থানকে লক্ষ্য করিয়া 'মাজিংশতং কেবরধায়ুচানি' বলা হইরাছে; ঐ প্রকার পরিবাণবিশিষ্ট এই পৃথিবী লোকটী আবার 'লোকালোর' मामक नर्बाएक निवादिक हरेता विश्वाद ; हेरावरे याचा देवताक नदीव (वित्राष्ट्रियुक्टरबुद नदीत) निर्दाविहे चाह्य अवर देवावरे वट्या आणितन নিজ নিজ কর্মক উপভোগ করিয়া থাকে। বথোক্ত পরিবাণবিশিষ্ট এই शाकी 'लाक' मारा चांकरिक; छारात्र भग्नवंते श्राम 'चानाक' मारा কৰিত। উক্ত 'লোক' হামটাকে আবার তাহার হিন্তণ পরিবাণ বিশ্বতি- বিশিষ্ট এই পৃথিবী ধেষ্ট্ৰন কৰিয়। গ্ৰিয়াছে (১); পৃথিবীয় থিজণ পরিষাণ সমুদ্র আবার চতুর্ভিকে এই পৃথিবীকে পরিবেটিও করিয়। আছে; পৌরাণিকগণ এই সমুদ্রকে 'বনোয়ক' বলিয়া ব্যাখ্যা করিয়। বাকেন (২)।>

এখন খণ্ড-কণাল ঘরের মধাগত বিবর বা রছের পরিষাণ কথিত হইছেছে। ত ; অথবেধৰজ্ঞকারিগণ ঐ বিবরপথে বহির্গত হইরা অতীই হান অধিকার করিয়া থাকেন। জুরের ধারা বা প্রাক্তভাগের বতটুকু পরিষাণ, কিবো বিক্কার পক্ষ বেরপ অতিপর করে, উক্ত অওকপাল-বরের মধ্যে ঠিক সেই পরিষাণ আকাশ ছিল্ল অর্থাৎ কাক আছে, পারিজ্ঞিলন সেই ক্ষে ছিল্লপথে অথবেধৰজ্ঞকারিলিগের নিকট উপস্থিত হন; তাহার পর ইল্ল—পর্যেশ্বর (উত্তর ঐথবাসম্পন্ন হিরণাগর্জ, কিন্তু পরন্ত্রেম নহে),— বিনি পূর্ককালে অথবেধ যক্ষ করিয়াছেন এবং প্রথমেই "তক্ষ প্রাচী দিক্ শিরং" ইত্যাদি বাক্যে বাহার সম্বন্ধে বিজ্ঞান বা বিদ্যার উপদেশ রহিয়াছে, তিনিই স্থপর্ন হইয়া—পক্ষ ও পূক্ষর্ক্ত পক্ষিত্রপী হইয়া সেই পারিজ্ঞিলগতে কন্ম বাহ্র হল্পে সমর্পন করেন; এথানে বুকিতে হইবে বে, উক্ত পরমেশ্বরপদ্যবাচা হিয়পাগতে) মৃত্ত অর্থাৎ আকৃতিবিশিষ্ট; স্তরাং পুল; বুল বলিয়াই তাহারও সেখানে স্যক্ষাৎ সম্বন্ধে প্রবন্ধের অবিকার নাই; তিনি [এইকঞ্চই সন্ম বায়ুর

^{.)} চাংগ্রী ক্ষরাৰ গহালে বীর বর বারা একলিবে বে পরিষাণ রাল প্রিয়ন্ত্রণ ক্ষেত্র, জারার বাঁজন্ত্রণ আবিক রাল জীলার কির্ণে প্রকালমান বাংক, এবং চকুজিরপ্রের বজ্জী রাম আলোকিজ হয়, সেই সমগ্রইণ হালের নাম কইল 'পাগরী' পুরিবীর আলবন্ত্রী পর্যাজনীয় বে অংশ সোর কিরণে উদ্ধানিত হয় কারার নাম 'লোক', নার বে অংশ হয়াকিল্ল আলেই পালে না, কার বে অংশ হয়াকিল্ল আলেই পালেই না, সে আলোর নাম—'অলোক : এই পুরিবী উক্ত 'লোক নামক আলোর অলোকা ব্যালকার বৃত্তি বিশ্ব প্রালক্ষর প্রালকার বৃত্তি আলেই, সেবারে অক্সমন্তান করা আরক্ষর । এ সমগ্র বিশ্ব পুরারে বিশ্বক্তরারে বর্ণিত আলেই, সেবারে অক্সমন্তান করা আরক্ষর ।

⁽ २) ভাৎপুর্ব।—'অবোদ্দা পরের দ্বীকার রাইবা ।

⁽০) ভাবপৰ্য-ভলুকু এজা বে প্ৰথময় লও ২বো ক্ষণাত কৰেন, নেই লওটা এজার আহিতাৰ কালে মুই ভাবে বভিত হয়; ভাষার উপত্রের ভাবকে বলে উঠা ভটাব, আহ নিজ্ঞানতে বলে 'অবংকটার' (কটার অর্থ কয়); ঐ মুট ভাবের মধাবভা ছানকে 'জুবনকোপ' ও এজাও' একতি নাবে অভিনিত্ত করা হয়; ট মুট ভাবকে আয়ার ক্লিক-ক্লাল'ও বলা হয়;

নিকট সমর্পণ করেন।] বাছু সেই পারিক্ষিত্রপণ্ডে আপনার পরীরে সংস্থাপন করিয়া অর্থাৎ নিজেরই অন্তর্জন করিয়া সেবানে সইয়া বান; কোবার নইরী বান ? না, পূর্ববর্তী পারিক্ষিত—অববেববক্ষকারিগণ বেবানে গিরাছেন। [বাক্ষবত্য বলিলেন;] সেই গছর্ম এইরপেই পারিক্ষিত্যিশের অত্যাই স্থানপ্রান্তির স্থায়ভূত বাহুরই প্রশংসা করিয়াছিলেন। ২

আখ্যারিকা বা গল্পটি এইছানেই সমাপ্ত হইল; উক্ত আখ্যারিকার বাহা ভাৎপর্বার্থ, থবি তাহা আমাধিপকে আখ্যারিকার তাব পরিত্যাপ করিরা বলিরা হিতেছেন,—বেহেতু বার্ই ছাবরজক্ষান্ত্রক সমস্ত ভূতের অন্তরে আন্ত্রান্ত্রপ, এবং বাহিরেও তদ্রপ [ছিতিসাধন]; অতএব তপতে বে, অধ্যাত্ম, অবিকৈত ও অধিভূতরূপে নানানিধ বাই বা বিভিন্নতাব রহিরাছে, প্রকৃতপক্ষে তাহা বার্ই, (বার্ হইতে পৃথক নহে), এবং সমন্তিরূপে বে, কেবল সম্পাত্মা হিরণাপর্তভাব, তাহাও বার্ই (তহিরে নহে)। বে লোক এই বার্কে বংগাক্তপ্রকারে সমন্তি ও বাইরিপে জানে—প্রাপ্ত হর, তাহার কল কি হয়, বলিতেছেন—তিনি পুনর্মরণ কর করেন, অর্থাৎ একবার স্ত্রের পর আর তাহার স্ত্রা হয় না (মৃক্ত হন)। তৃত্যু লাহারনি আপনার প্রনের বর্ণার্থ উত্তর প্রসত ইইল দেখিরা প্রস্ত হইতে বিরত হইলেন ১৯৬৭৪২৪

ইতি তৃতীয়াধ্যায়ে তৃতীয় ব্রাহ্মণের ভাষ্যাস্থ্রায় ১০০০

प्रजुर्थः द्वाक्रभम्।

ত্যাভাস-ভাজান: বৰ বৈনৰ্বজনাজানণ পথাছ। পূণাপাপথাৰুজৈও হাতিওবৈদ্ হীতঃ পুন:পুনপ্ৰহাতিপ্ৰহান তাজন উপাদদং
সংসৱতীভাজন। পূণাস চ পর উৎকর্ষা বাাধাাতঃ বাাকতবিষয়ঃ সমষ্টব্যক্তিপ্ৰণ: বৈতৈক্যান্তপ্ৰাপ্তি:। বন্ধ গ্ৰহাতিপ্ৰবৈপ্ৰতি: সংসরতি, সঃ
অভি বা, নাভি ! অভিছে চ কিংলকণঃ—ইতি আত্মন এব বিবেকাবপ্রায়
উন্তপ্তান আব্রভাতে। তন্ধ চ নিক্রপাধিষত্রপন্ন জিরাকারকবিনিপ্রক্রনতাবন্ধ
অধিপ্রাদ্ ব্যোক্তাবন্ধনাত্বিম্চাতে সপ্রযোজকাং। আধ্যান্তিকাস্বভন্ন
প্রসিদ্ধঃ।

তীকা—রাজনাধনবভাবতি অথ্যেতি। কভাপুনক্তবর্ণ বভাগতাপার বৃত্তং বীত তি —পুনাতি। কৃত্বাপ্রভাবে নিওবর্ণস্থপতি —পুনাত ভেডি। নামর পালাং বাক্তং অপভিনাপতাজকং, তবিষয়ন্থকর্গং বিশিপ্ত—আফ্রীতি। কবং ব্যোক্তিব্যক্ত পুনাকর্জকরণ, তত্তাব—ভৈত্তেতি। সংগ্রহাসমহাজ্যক বিষয়ং বর্গতি—অভিনিত্ত। বাধাবিজানাবজ্ঞবাং চাজে বিষয়ং কিলেকবাে গেনামীনামর ভ্রৱত্তাে বিলকবাে বেলি বাবং ক্রেনা বিশ্বতাহ বাজনাবজ্ঞান —ইত্যা আম ইতি। বিষয়াবিশ্বত ক্রেনাব্যান্তিব্যাহ করেল প্রস্তাহিত্তা বিষয়ার ভ্রত্তাবজ্ঞান ব্যালান্তিব্যাহ করেল প্রস্তাহিত্তা হিত্তা বিজ্ঞানত ক্রেনাবজ্ঞান করেল প্রস্তাহিত্ত হা বিজ্ঞানত বাজনাবজ্ঞান ভ্রত্তাবজ্ঞান করেল প্রস্তাহিত্ত হা বিজ্ঞানত বাজনাবজ্ঞান করেল প্রস্তাহিত্ত হা বিজ্ঞানত বাজনাবজ্ঞান করেল প্রস্তাহিত্ত হা বিজ্ঞানত বালান্ত বাজনাবজ্ঞান করেল প্রস্তাহিত্ত হা বিজ্ঞানত বালান্ত বাজনাবজ্ঞান করেল প্রস্তাহিত্ত হা বিজ্ঞানত বালান্ত বাজনাবজ্ঞানিত হার্য বিজ্ঞানত বালান্ত বালান্তিবজ্ঞান বিজ্ঞানত বালান্ত ব

क्या क्रांक्य-क्रांक्या क्रिक्य । 'बठः भव क्रेक्य नावक ठाकावन (ठक्रमावक वित्त पूर्व) केक वाक्यकारक विकास। क्रिवाहिएनम' केक्यांकि। भूर्त्व कविठ बहेबाहि रव, भूना ७ भागवावा भविठानिठ अह 'उ बिद्धह वांवा वन्तेष्ठ बहेबा बीवनन वांवरवांव अह ७ बिठ्यह स्वृद्धार मंत्रवांव अह ७ बिठ्यह स्वृद्धार निर्मा कर्याद आत्र ७ वांवर भूना-कर्याद सर्वाश्वके कम निर्मान क्या बहेबाहि रव, वाक्यकावांनव सब्दे ७ वांवे क्षि व्यक्त क्यांवर स्वृद्धार व्यक्त क्यांवर क्यांवर व्यक्त वांवर क्यांवर क्यांवर क्यांवर व्यक्त वांवर व्यक्त वांवर क्यांवर व्यक्त वांवर वांवर व्यक्त वांवर व्यक्त वांवर वांवर व्यक्त वांवर वांवर व्यक्त वांवर वांव

উপদ্ধির কর এই উবর-প্রশ্ন আরম্ভ হই তেছে; কেন না, বতাবতঃ জিলা-কারকাদি-বিনির্দ্ধিন সংর্বাপাধিবিবর্জিত দেই আন্তর্ভর উপদ্ধি হইলে, পূর্বোক্ত প্রহাতিপ্রবর্জন বর্ধন ও তাহার প্রবর্জন কর্মাধিকার হইছে আনাগ্রাসেই জীবের বিষ্ক্তি হইতে পারে। আবাারিকার সহিত বিভার বে, কি প্রকার সম্ভ বা উপবোগিতা, তাহা প্রসিদ্ধই আছে, আর্থাৎ বিভারতি প্রকৃতি বে সমস্ভ উদ্ধের পূর্বে বর্ণিত হইরাছে, এই আবাারিকার উদ্ধেরও তাহাই—অক্তর্মণ নহে।

শব হৈনমুবন্ত কা কারণ: পপ্রচহ, যাজ্ঞবন্তেতি হোরাচ বং সাকাদপরোকাদ্ এক য শাক্ষা সর্বান্তরন্তং মে ব্যাচক্ষ্ ইতোষ ও শাক্ষা সর্বান্তরঃ, কতমে। যাজ্ঞবন্ধ্য সর্বান্তরে। যা: প্রাণেন প্রাণিতি স ও শাক্ষা সর্বান্তরে। যোহপানেনাপানীতি স ও শাক্ষা সর্বান্তরে। যো ব্যানেন ব্যানীতি স ও শাক্ষা সর্বান্তরে। য উদানেনোদানিতি স ও শাক্ষা সর্বান্তর এই ও শাক্ষা সর্বান্তরঃ ॥ ১৬৮ ॥ ১ ॥

স্মার লাথাঁ। যা বলু ববোজেন প্রহাতিপ্রহলকণেন মৃত্যুনা গৃহীতঃ
ভাৎ, স এব আত্মা অভি নাভি বা ইতি সংশব্দে, তরিরপণার অরমুবভপ্রবাঃ
—অব হৈনবিত্যাদিঃ।

वन (कृक्वानिवानानवतन्) उनकः (छवानकः) ठाक्वांतनः (ठक्क शूकः) वनः (नाक्वनाः) नाकः (गर्डनान् ; द नाक्वनाः, — हेण्डि [नाक्वावन्] उनाठ (उक्कवान् ; — न्यः नाकः विकादः नाक्वित् (व्यनावानः — व्यन् क्वावितः । विकादः नाक्वितः । विकादः नाक्वितः । विकादः नाकः व्यन् वाहितः । विकादः नाकः व्यन् वाहितः । विकादः वर्षतः । विकादः वर्षतः । वरः वर्षतः । वरः (वर्षामिविक्वामः) (ए । वर्षाव्यकः नाकः नाः नाक्वितः । वर्षाव्यकः । वर्षावः । । वर्षावः । व

हानवर्षिमा) जनामोछि (जनान-वानावर करवाछि, नश् (विकानववर) छ छव । नर्नाछवर जाजा ; यर कारम्म (यहवानिमा) वानोछि (यह-वानिमी रठहोर करवाछि), नश् (विकानाजा - एठ नर्नाछवर जाजा ; यर (विकानाज्य) উहारम्म (केईनामिमा छेरक्रमनवाइमा) छेहामिछि : छर-क्रमनवाना । इति । । । विकानववर) एठ नर्नाछवर जाजा, 'वयर एठ जाजा नर्नाछवर' हेछि (উर्फ्लाननश्चावर प्रयोगिष्ठ हेछि छावः।) ['जानामीछि' हेछि 'वानीछि' हेछि ह होर्ष-हाजनश्च । ১৬৮ । ১ ।

भूमानुदाप्त शहाि शहति मृशुक्त बाकास हरेया সংসারে আবদ্ধ থাকিবার উপযুক্ত কেহ আছে কি না, ভাষা निक्रभरभव क्रम्य "अथ रेबनम्" हेलापि अवि बादक इंडेरफर्ट मुक्ता कवि अन इक्ट विवाह हते। भारत हतालुक प्रेयमामक अवि वाक्कबरकात निक्रे अभ कतिरुगन । डिनि সংখাধনপুৰ্বক गास्कबद्धारक জিজাসা করিলেন—হে বাজ্ঞবন্ধা, যিনি সাক্ষাৎ প্রতাক্ষ টেডভায়ক একা, যিনি সর্ববান্তর সর্ববদেহের মভান্তরত্ব আস্থা, ভাগার সরূপ আমার নিকট वााशा कर । [वाक्षवका वनित्नन-] हैनिहै (छामाव मर्नवाकुत बाजा ; [डेवन्ड किस्रांगा कतिरत्नन--] (र यास्त्रवदा, त्रहेते त्व-- जाहात প্রকৃত স্বরূপ কি ? [ষাজ্ঞাকা বলিলেন--] বিনি (বৃদ্ধি-সান্দী বিঞ্চানাত্ম) প্রাণের ছারা প্রাণন করেন অর্থাৎ স্বাসপ্রসামি কার্য্য করেন, ডিনিট এই দেহেন্দ্রিয়-সমষ্টিভূত তোমার সর্বান্তর আত্মা; বিনি অপানবারুর সাহায্যে অপান-ব্যাপার নির্বাণ করিয়া থাকেন, ডিনিই (विकानाचार) दशमात्र मर्त्वाग्रुव भाषा ; विनि गानवाव् पाता (पर-ব্যাপী ব্যাপার করিয়া পাকেন, তিনিই চোমার সর্বান্তর আছা: विनि डेवानवाबु बाता डेवान - डे० क्रमनावि वाागाव कतिया बाटकन, किनिहे (कामात नर्वास्त माना: 4रे विकानामारे (कामात नर्वास्त नाया १३७०१३१

ংশা প্রক্রমান ক্রাম্প্রাক্ষর। পর ব এবং প্রকৃতং বাজবভাব উবজো বাব-তন্তক্রসাসভাং চাকারণঃ পরেম,—বব্ এম সাকাববাববিতং কেনচিব্র । পরোকাববোণন, ন প্রোক্তরমানিবং, কিং তং ? ব মান্ধা—মান্ধবনে প্রভাবী- খোচাতে, ভত্তাশ্বশক্ত প্রসিত্তবাৎ; সর্বভাত্তরঃ স্থান্তরঃ; বন্ধঃশক্তাণ্ডাং প্রসিত্ত আন্ধা ব্রন্থেতি, ভবান্ডানং যে বন্ধং ব্যাচকে তি—
বিস্পষ্টশ্ব—শৃক্ষে স্থান। ববা পাং কর্মতি, তবা আচক্ব—সোংরমিত্যেবং
ক্ষরতেত্ত্বারঃ। :

এবৰ্জঃ প্রত্যাহ বাজবড়ঃ—এব তে তব আছা দর্মান্তরঃ দর্মস্তাভাররঃ , দর্মবিশেবণোপসঞ্চনার্থং দর্মান্তরগ্রহণন্ । বং দক্ষাং আরাবহিতং
অপরোক্ষাং অগেণিং ব্রন্ধ রহস্তবন্ধ আছা দর্মক্ত দর্মকাভাররঃ এতৈওঁলৈঃ
দর্মজের্ব এবঃ । কোহসোঁ ভবাছা গ বোংলং কার্যকরণদলাভারের
দ বেনান্থনা আন্ধান্ দ এব ভবাছা—তব কার্যকরণদলাভারেতার্যঃ ।
তর পিওঃ, ভন্তাভাররে লিজান্থা করণদলাভার, তৃতীরো বল্চ দর্মিক্ষনানঃ
তেব কতবঃ বমান্থা দর্মান্তরগ্রা বিবন্ধিতঃ—ইত্যক্ত ইতর আহ—বঃ প্রাণেন
মুখনাদিকাদক্ষারিণা প্রাণিতি প্রাণচেট্টাং করোতি, বেন প্রাণঃ প্রন্থীরতইত্যর্থঃ ; দতে তব কার্যকরণদংঘাতত আন্থা বিজ্ঞাননরঃ ; দর্মানমন্তং ।
বঃ অপানেন অপানীতি, ব্যানেন ব্যানীতীতি ছান্দদং দৈর্ঘান্ । দর্মাঃ
কার্যকরণদল্যভারতগরঃ প্রাণনাদিচেট্টা দাক্ষম্বন্তেব বেন ক্রিরন্তে—ন হি
চেতনাবদন্যিটিতত্ত দাক্ষম্বন্ধের প্রাণনাদিচেট্টা বিভব্রে ; তমান্বিজ্ঞানবরেন
অধিটিতং বিদক্ষণেন দাক্ষম্বর্বং প্রাণনাদিচেট্টাং প্রতিপভ্তে ; তত্মাৎ
সোহন্তি কার্যকরণদল্যভিবিশক্ষণঃ বল্টেরতি ১১৬৮৯০ঃ

টীকা। ভূজানানিবিংনন্তব্যবন্ধার। সংবোধননতিম্বীকরণার্ব। মই হলব্দিত-বিভাকে ঘটাবিংধনারধানং গৌণবিভি পজ্যেত, ভরিষান্ত্রপর্যোভাহিত্যুক্তবৃ। মুখ্যবের স্টুর্নান্ত্রে ঘটপুর ঘটনা ভবা চ স্টুর্নান্ত্রাভানার ঘটোমপ্রোভনিভার। জ্যেমং এক বলো এক্ড্যানি ধনা গৌণং স্টুর্নাব্যিভালারার ঘটনারভাগে লাহ লাহিত্যুক্তি। জ্যেব্যাব্যান্ত্রা ভালেত্যানি বলা গৌণং স্টুর্নাব্যিক আছাবিভাইন্যানিক। আছাব্যাব্যান্ত্রা ক্রিক্সাব্যান্ত্রা বিশ্বান্ত্রাভি লাহিত্যালার বিশ্বান্ত্রাভি লাহিত্যুক্তি । স্বীনাম্ভাগে প্রভাগ্রেছ বিশ্বান্ত্রিভালি বিভাগ্যান্ত্রে লাহিত্যুক্তি। বিশ্বান্ত্রাভালি ক্রিক্সাভ্যানিক। বিভাগ্যান্ত্রে লাহিত্যালারভাগি। ভ্রের প্রায় বিশ্বান্তি ভালেত্র সংব্যান্তর্যান্ত্রিভালি ক্রিক্সাভালিত ভালিত্র ভালিত্যা ভ্রান্ত্রিভালিত ক্রিক্সাভালিত ভালিত্র ভালিত ভালিত ক্রিক্সাভালিত ভ্রান্ত্রালিত ভ্রান্ত্রিভালিত ভ্রান্ত্রীলিত ভ্রান্ত্রিভালিত ভ্রান্ত্র

বৰৰে গ্ৰাকাৰ্যবহৰকে। পৃথি ভংগ্ৰহণনাৰ্য প্ৰয়াজ্যবভাৰত এই পুক্ত ইন্ডি। সন্ধানত হ'ত বিশেষজ্ঞা প্ৰয়ভ বিশেষজ্ঞানাৰ্যবাহনাত্যৰ—পুষ্ঠ-বিশ্বস্থানাত্ত্য এই সন্ধানত গ্ৰহণকাৰ্য বিশ্বসাভি—যথ সাক্ষাক্তিও এই-নহামি প্ৰাপ্তাক্ষাহ—ক্ষোধ্যানিতি। সাধান্যবিধি বিশ্বসাভি—যোধ্যানিতি।

्यत्वाक गण्या क्षेत्रः। वर्षार्थः न्यहेशक महिल्कः। वर्षावस्यामा वर्षिः
वर्षि —ख्याद्वाद्वाद्वाद्याः। मश्राक्ष्यवाद्यः महिल्कः महिल्कः। प्रशिकः। वर्षायः। प्रशिकः। वर्षायः। व

ভাষ্যান্দুবাদে। খতংগর, এই উবছনামক চাক্রারণ—চক্র ব্যির পুরে পুরেজি বাজবহাকে কিজাসা করিরাছিলেন। যে ব্রন্ধ সাক্ষাৎ—কোন বন্ধ বারা বাবহিত নয়, এমন অপরোক্ষ অর্থাং প্রহার দুবা প্রতাজান্ধক, কিছ 'ল্রোক্রই ব্রন্ধ: মনই ব্রন্ধ' ই চাদিয়ানীর ব্রন্ধের কার ইহা গৌণ বা অমুবা ব্রন্ধ নহে। তাল, তাহা কি গুলা, তাহা আহা; আহা-লক্ষে এবানে প্রতাক্-আহা বুকাইতেছে; কারণ, আহা-শক্ষী ক্রন্ধে আর্থান প্রতাক্-আহা বুকাইতেছে; কারণ, আহা-শক্ষী ক্রন্ধে আর্থান গ্রন্ধি ক্রিলান বার্ন্ধি ক্রান্ধির অর্থ —সকলের অতাপ্রবন্ধ ; ক্লীবলিন্ধ বির্ণ্ধির বির্ণ্ধির বির্ণ্ধির ক্রেমি আহার ব্রন্ধ আমাকে ব্যাবা করিয়া অতিরিক্ত নহে); সেই সক্ষপ্রেরক আহার ব্রন্ধ আমাকে ব্যাবা করিয়া বন্ধ্ব—বেশ স্পষ্ট করিয়া—লক্ষে ধ্রিয়া বেমন গরু দেবার, তেমনি 'ইহাই সেই আহা' এইরণ করিয়া আমার নিকট বন্ধ। ১

এই কথার উত্তরে বাজবন্ধ্য বলিলেন—ইহাই তোমার জ্ঞাসিত সর্বাহ্বর

সকলের অত্যব্যর আত্মা; বাহা সাজাং সম্বন্ধ—ইন্দ্রিয়াদিরত ব্যবধান
রহিত্তাবে বুখ্য ব্রন্ধ—পর্কাপেকা ব্রহং ও সর্কান্তর —সকলের অত্যব্যর

অর্থাং উদ্দ সমস্ত বিশেষণ বিশিষ্ট আত্মা। এখানে 'সর্কান্তর' বিশেষণ্টী
অপরাপর আত্মন্তরেও সম্বন্ধ্রীপাক। তুমি বে আত্মার নির্দেশ করিলে, সেই
আত্মানী কে গুতোবার এই বে জেহেন্দ্রির সমন্তি, ইহা বে আত্মা বারা আত্মবান্
(চ্তুতনার্থান হইতেছে), তাহাই তোবার অর্থাং কেহেন্দ্রিরসমন্তির আত্মা।
প্রথমে পুল কেহণিও, তাহার অত্যন্তরে ইন্দ্রিরাদি-সমন্তিত্ত লিলাত্মা।
(সন্ত্রাক্ষেই, এবং বে আত্মার সক্ষে সন্তেম্ব হইতেছে
তৃতীর; এই তিন্তীর বধ্যে কোন্টীকে তুমি আমার সর্বান্তর আত্মা
বিলিয়া বুবাইতে ইত্মা করিতেছ গ উষ্ট এই কথা বলিলে পর, যাজ্যব্য
বলিয়ান্ত্রীয়তে ইত্মা করিতেছ গ উষ্ট এই কথা বলিলে পর, যাজ্যব্য
বলিলেন—বে আত্মা মুখ্য এ নাসিকা প্রকৃতি স্থানে সক্ষরণীল প্রাণের ব্যিয়া

क्षांत्र कडिरकाइ-क्षांत-क्षे। कडिरकाइ, वर्षार क्षेत्र वात शहाह हाता चकार्या (अक्टिक वहेटलाइ, कावाहे वहेटलाइ,-एराहत्तिव-मानालवव ह्याबाव विक्रानवर (कोवडनी : बास ; भद्रवहीं बढाड बरान्द्र वर्षत अठरमूद्रभ । विमि चनामवाह बाडा चनामवाना करिहा शास्त्र, अवर विमि बान वाह খারা ব্যানচেটা করিয়া থাকেন, (তাহাই তোষার অতিমত স্কান্তর আয়া); 'अभामीणि' 4 'वानीणि' भव छहेीत हव हेकात देवकिक निव्यासनात सीर्व ছইয়াছে। বৃক্তি হইবে যে, দাকুমর ব্রের কার দেহেলিয়াদি-গত প্রাণনাদি ्याम अयामामि) ममल (ठहे। बाहात माशाया निष्मत रहेता थाक,-माक-ब्रु (ब्रम्म (काम ६ हिल्मकर्डक व्यविष्ठित वा श्रीतानित ना बहेबा काम প্রভাব চেটা করিতে দমর্থ হর না, তেমনি প্রাণাদি করণবর্ণও মপর কোনও চেত্ৰের অধিষ্ঠান বাতিরেকে প্রাণনাদি ব্যাপার (বাসপ্রবাসাদি ক্রিয়া) मुन्नाम्न कदिए भारत ना ; वृक्षिष्ट इहेर्स्स (व. व्याट्टन-विशवन (राह्न) विकासम् कीवाचाकडंक अधिकिट इहेगावे अगानि कटनवर्ग कार्डनिचिठ बाबत कांच निक निक शाननामि वााभाव नांच कवित्व नमर्थ हत । चल्किव [বীকার করিতে হইবে যে.] দেহেজিয়াদি-বিলক্ষণ এমন একটা প্রার্থ ((ठठन चान्ना) निन्त्रवे चाहि, यादा चठावत शक्ति आपनापि कार्या निर्वाह क्रिडिडिश १ १६५ ॥ > ॥

স হোবাচোযন্ত ভারারণে। যথা বিজ্ঞাদদেশ গোরপাবশ্ব ইত্যেবমেবৈত্বপেদিন্ত: ভবতি যদেব সাক্ষাদপরোকার্ত্ম য আত্মা সর্ববাস্তরত: মে বাচকে,তোর ত আত্মা সর্ববাস্তর: কতমে। যাজ্ঞবন্ধ্য সর্ববাস্তর: ।

ন দৃক্টেরকীরং পশ্চেন শ্রুতেঃ শ্রোভারওপৃথুরাঃ ন মতের্মস্তারং মধীণা ন বিজ্ঞাতের্বিজ্ঞাতারং বিজ্ঞানীয়াঃ। এব ত আত্মা সর্বাস্তরোহতোহক্তগর্তম্, ততো হোবত-ভাক্রারণ উপররাম ॥১৬২॥ ॥

इंडि बृह्माद्रगादमाननिवाम इंडीमायादक हजूर्यः खाव्यगम् ॥०॥॥॥

স্ক্রেন্ত্র ইতাহণি বিশাইতরা আত্মস্তপঞ্চর্শনার বাজ্যবহার নিবোজরিভুষ্ উবল্বঃ প্রক্রমতে "স হোবাচ" ইত্যাদি। সঃ উবল্কঃ) काकांत्रपर केवात र-वयां [कन्दिर]- 'बार्गा (मीर, बार्गा बचर' देखि विकार (भारताक्का विकित्नक) : अवस्वर (वार्याक्रमवायविक्षित्रक अव) अष्ट (पशुक्तः तथ) रामविहेर (क्रेमविहेर) कर्राक, विभागता तथ अভिगारतिकुर अञ्चलम क्या वर आवमानि-छडोबाता भरताक्षणका अणि-नाविकर, रेनकर जारावसूक्षेकविकि कारा]; [मठा] रर . ue (निकार नाकार क्रमदाकार, क्रमदाकर) उक् रा कावा नवीववा, छर (कावानर रे त्व (बक्र) नाहक (क्वर), [यदि नक्कावि देखि कारः]। [अववृक्का राक्यका चार-] এवः (रकामांवः) (छ (छव) (शरहित्तव-मधुशाहाक्यकः) नकीखाः चाचाः [उरतः छवित्य-किकान्यः पुनशाह--] (व बाकवता. क्छवः नर्काबनः ? यून एखरण्ड-विकाल्नु बर्शा कः पत्रा नर्काबरता निव क्रिका १) [व्यवित्तवक वाचना वहासिवः देशका निर्वह व्यवकाठन शरताक-छोत्रव छः विकाशविकन् वाक्यवा भार-(र उवक्,] शृरहेः वृद्धिवृत्तवः अक्टोबर (च-अकारनेन क्राकानवसर) न भरका (वृष्टिविषदर न कुर्वााः, "(बर्रमण्ड कानएक मन्तर, हः (कनाइन कानकाव" देवानियः ; विवा सार्वः भवनकत्र-कानक (लाडांवर म लुबुब्राः । मर्छः यरनावृरकः) मवातर (शकानकः) म बद्दीशाः ; हता, विकारकः (वृद्धिवृत्तः) विकासावाः । अस्र हवि हानः) भ विकासीबाः (स अकान्द्रः, अकान्कान्द्रशाह्यवाभिष्ठार्वः 🗀 अमः । यदास्तः) नकाखतः, ८७ ७५ । काखाः, (यः वत्रा गृष्टेः) ; व्यटः वर्गासाम् वाचनः। वस्य (किशः वस्त) बाहिः (विमाननेनियादार्थः ; ठठः एवाणासनः अक्षार्य-निर्नदाद खेरकः ठाउनावृष्यः छेलद्रवाय (विद्रार्था वसूव हेलार्वः) ॥>००॥२॥

ফালানুবাদে। আন্তার সরপটা আরও বিশেষভাবে প্রকাশ করিবার জন্ম উবস্ত পুনশ্চ, যাদ্রবেষাকে জিল্লাসা করিভেছেন। উবস্থ নামক চাক্রারণ বলিলেন—গেমন কোন গোক [দূরবতী গো স্বথ প্রভৃতির পরিচর দিবার সময়] বলিয়া থাকে বে, এই রকম প্রাণীর নাম গো, আর এই রকম প্রাণীর নাম অথ; ভোমার প্রদন্ত আন্তাভন্তাপদেশও ঠিক ভক্রপই হইয়াছে; অর্থাৎ প্রভাকরৎ নির্দেশ করিত্রে বাইরা অবশেষে এইরূপ কতকগুলি কার্য্য বারা ভাষার পরিচর দেওরা ভোমার পক্ষে জাব্য কার্য্য বর নাই; অভএব] গাহা ঠিক সাক্ষাৎ অপরোক্ষ বাহা সর্বান্তার আন্তা, ভাষাই আমাক্ষে বিশেষ করিয়া বলী। ভিত্ততে বাজ্ঞবন্ধ্য বলিলেন— ইহাই—আমি বাহার কথা বলিয়াছি,
টিক ভাষাই ভোষার অভিত্তেত সর্বান্তর আছা; কিন্তু ভাহার সহতে
ইলার অধিক আর কিছু বলিতে পারা বায় না: অভএব দৃতির অর্থাৎ
চক্ষুরিন্দ্রিক আনের বিনি দ্রন্তী—প্রকাশক, ভাহাকে দেখিবে না
অর্থাৎ ভাষাকে দর্শন করিবার কক্ষ প্রহাস পাইবে না; অবলেন্দ্রিরক
আনের প্রকাশককে ভারণ করিবে না; মভির—মনোর্ত্তি সংশ্যাদির
প্রকাশককে মনের ঘারা প্রকাশ করিতে চেকী করিবে না, এবং
বিজ্ঞান্তির—কর্ত্ববাক্তবা-নির্দ্ধারক বৃত্তির্ত্তির বোজাকে বৃত্তি ঘারা
ভানিবে না; [গাহার কথা বলিলান,] ইহাই ভোষার জিজ্ঞাসিত
সর্বান্তর আত্মা; ভত্তির আর বা' কিছু, সমস্তই আর্ত্ত—ধ্বংসলীল। ইহার
পর উবস্ত চাক্রায়ণ প্রদ্ম ভইতে নির্ত্ত হইলেন ১৯৯৯২৪

ইতি ভূতীয়াধায়ে চতুৰ্প আক্ষণ ব্যাখা ১০৪৪৯

ল্পা ক্রেন্ডা ক্রান্থা স হোরাচ উবল্ডাক্রারণঃ—বর্ধা কলিদক্ষণা প্রতিজ্ঞায় পূর্কার, পুনবিপ্রতিপরো ব্রেরাদক্রণা—অসৌ পৌঃ,
অসারখঃ বন্দলতি ধারতীতি বা; পূর্কা প্রত্যক্ষণ দর্শরামীতি প্রতিজ্ঞার,
পন্চাৎ চলনাঘিলিকা বাপদিশতি—এব্যেব এতদ্ ব্রন্ধ প্রাণনাঘিলিকৈর্গদিলিও
তব্তি হয়া; কিং বহুনা, তাক্র্যু পো-তৃক্ষানিমিন্তং ব্যাহ্মন্, ব্যেব সাক্ষাদপ্রোক্ষাদ্ ব্রন্ধ, য আল্লা স্কার্ত্রঃ, তং যে ব্যাচক্ষ্তে। ইতর আহ—বর্ধা
মন্ত্রা প্রথমং প্রতিজ্ঞাতঃ—তব আল্লা এবংলক্ষণ ইতি, তাং প্রতিজ্ঞাবন্ধ্রতীএব; তৎ তবৈব, রধোক্তং মরা। ১

বং পুনক্ষন্—ভবাদ্ধানং বটাদিববিষয়ীকুক ইতি, তদশকারাং ন ক্রিবতে।
কথাং পুনতদশকানিত্যাহ—বন্ধ-বাভাবাাং; কিং পুনতবন্ধবাভাব্য । দৃষ্ট্যাদিস্তি বৃদ্ধ ইটা হাদ্ধা । দৃষ্টিরিতি বিবিধা ভবতি—দৌকিনী পারবার্তিনী
চেতি ; ভত্র দৌকিনী চন্দুঃসংবুজান্তঃকরণরভিঃ, সা ক্রিয়ত ইতি ভারতে
বিনপ্ততি চু; বা তু আদ্ধনো দৃষ্টিরগু ক্রপ্রকাশাদিবং, সা চ স্তব্ধুঃ বন্ধপদাং ন
ভারতে, ন বিনপ্ততি চ; সা ক্রিয়ণাগরোশাধিক্তরা সংস্টেব ইতি বাগদিন্ততে—
স্তেইতি ;—ভেদৰক্ত স্তরা দৃষ্টিবিতি চ। বাসে দৌকিনী দৃষ্টিকভূষারা
স্তিশোপরক্তা ভারবানৈব নিভারা শান্ধদৃট্যা সংস্টেব, তংগ্রতিক্ষারা—ভয়া

ব্যাহৈত্ব আহতে, তথা বিষয়তি চ; তেনোপচর্বাতে মন্ত্রী সহা পঞ্চাপি— পঞ্চতি, ন পঞ্চত চেতি; স্তু পুনা মন্ত্রীর", ক্লাচিমপাক্ষাত্ব। তথা চ বজাতি বর্তে—"ব্যায়তীর লেলায়তীর", "ন হি' প্রভূত্বিপ-হিলোপো বিভতে" ইতি চাং

ख्यिववर्षमाद—(नोकिका। वृद्धिः कर्षकृष्टाष्ठाः, क्षडे। तर-पक्षिष्ठाः निष्ठाः। वृद्धिः वर्षकृष्ठाः, ना क्राधानः वाधानः म भएतः। वार्त्रः। लोकिके। वृद्धिः कर्षकृष्ठाः, ना क्राधानवक्षः। क्राधानिका म आधानः म्याधानः वाधानः वाधानः व्याधानः क्राधानिः। ज्यार जः श्राधानः वृद्धिः । भएतः। क्षा क्राधाः (व्याधानः म भूषाः। ज्या मर्ज्याः (क्ष्यमाद्याः (क्ष्यमाद्याः म विद्यानीदाः। ज्या विकारकः (क्ष्यमाद्याः म विद्यानीदाः। अत्र वश्वनः वश्वादः। आजा देन्य प्रमृद्धिः क्षारः भवादितः। ।

"ন বৃটেইটারশ্বিতার অকরাণি অন্তথা বাচকতে কেচিং,—ন
বৃটেইটারং বৃটো কর্তারং বৃটিতেলমক্র। বৃটিমারশ্ব কর্তারং ন পরেরিতি।
বৃটেইটারং বৃটো কর্তারং বৃটিতেলমক্র। বৃটিমারশ্ব কর্তারং ন পরেরিতি।
বৃটেইটিত কর্মণি বর্নী। সা বৃটিং ক্রিমাণা ঘটবং কর্ম ভবতি। প্রটারবিতি ভ্রুব্রেন প্রই বৃটিকের্ব্রমাচটে; তেনাসে) বৃটেইটা বৃটো কর্তেতি
ব্যাখাত বামতিপ্রায়ঃ। তর বৃটেরিতি বর্তারেন বৃটিগ্রহণং নির্বেক্রিড়িত ঘোষং ন পরেরি, পরতাং বা পুনকক্রমসারং প্রমাদপাঠ ইতি বানাদরঃ।
কর্মং পুনরাধিকাম্ব গুলুবেনিব বৃত্তিক্রিক্রশ্ব সিম্বান্থ দুটোরিতি
নির্বেক্র্যার্ড ভ্রেমান পরেঃ ইত্যেতার্দেশ বক্তব্যম্ন। ব্যাৎ ধাতোঃ
পরঃ তৃচ্ ক্রমতে, তদ্বার্থকের্ডরি হি ওচ্ মর্যাতে, গ্রারং তেলারং বা
নরতি ইত্যেতার্নেশ্ব হি শব্দ প্রয়াক্তব্যঃ। ন চার্থবাদ্যেন হাতব্যং
সত্যাং পতে।; ন চ প্রমাদণাঠঃ, সর্মেন্য্রিবানাৎ; ত্র্যাখাব্যাত পামেব
বৃত্তিক্রেক্রাম্ন, নাধ্যেত্প্রমাদঃ। ৪

ষধা কু অন্যতিব্যাব্যাতৰ লোকিকনৃটের্নিবিচা নিতানৃটিবিশিও আন্থা প্রদর্শনিভবাঃ, তথা কর্কুকর্মবিশেষণায়েন নৃত্তীপকত বিঃপ্রায়োগ উপপততে, আন্তব্যকানির্দার ; "ন হি গ্রই নৃতিঃ" ইতি চ প্রকেশান্তরবান্যোন প্রক্রাক্যভোগপরা ভবতি ; তথাচ 'চল্ফুংনি পত্ততি, প্রোত্তনিবং প্রকর্ম' ইতি প্রভাবরেশৈক্ষাক্যভোগপরা। ভারাচ্চ—এব্যেব হি আন্তব্যো নিতাবনুপপততে বিক্রিয়াভাবে ; বিক্রিয়াষ্ট নিতাবিতি চ বিপ্রতিবিভাব। "বাছতীৰ বেলাবতীৰ," "ন হি এই সু হৈনিপরিলোপো বিভাতে" "এম নিজ্যো মহিমা প্রাথপঞ্জ" ইতি চ প্রত্যক্ষরাব্যক্তবা ন সক্ষয়ি। ১

नश् अहे। दिवाण वदा विकारण्यावाणीककतानाष्ट्रताश्विकार न भव्यदीणि; स. ववाश्वाद्यानिकनाकाण्याणिकारण्याम्; नावण्य-निर्देश्यवादीनि छानि; "न वृद्धे देशेतम्" देर्णावयाणोनाम् चकार्यामण्यार व-व्याक्षार्यभवस्यभवारणः. ज्याकनवरवाशास्त्रः वि विरायपाः भिद्रिष्ठाकः वृद्धेतिष्ठि । अत्र एष्ठ छव चाषा मर्देशकरेकः विरायरेनर्विनिहेः; चलः अञ्चादायन चक्रवार्थः—कार्याः वा नत्रोतः, कत्रनाष्ट्रकः वा विक्रवः; अञ्चादायन चक्रवार्थःनिर्देशः विरायक्षणाकाः वा विक्रवः

ইতি বৃহদায়ণ্যকোপনিৰ্দে ভৃতীয়াধ্যারে চতুর্বত্রাহ্বভান্তম । ০ । ৩ ।

ি ক্রা--গ্রন্থপ্রতিবচনবার্থনস্থলগথনাল্ডতে—জ ক্রোব্রাচ্চতি । বৃষ্টান্তবেৰ স্পর্টনিত ত্যাজানিক্রার বিষয়ে । এতাক্ষং বা দর্শনানীতি পূর্জাং অভিজ্ঞান্ত প্রভাগে বেলনান্ত বিষয়ে, বেলনান্ত ক্রিয়ের প্রায় বা বাবতি লোক্ষরে । ইতি চলনান্তিরিক্রয়ে গ্রাহি বাপদিশতি, এববের এক প্রভাল্য কর্ণনানীতি সংগ্রনান্ত্রাক্রয়ার প্রতিজ্ঞান্ত জ্ঞানিক্রয়ার প্রতিজ্ঞান্ত জ্ঞানিক্রয়ার প্রতিজ্ঞান্ত ক্রিয়ার প্রতিজ্ঞান্ত ক্রিয়ার প্রতিজ্ঞান্ত বিষয়ার প্রতিজ্ঞান্ত বিষয়ার প্রতিজ্ঞান্ত বিষয়ার প্রতিজ্ঞান্ত বিষয়ার প্রতিজ্ঞান্ত বিষয়ার প্রতিজ্ঞান্ত বিষয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার বিষয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার বিষয়ার বিষয়ার ক্রিয়ার বিষয়ার বিষয়ার ক্রিয়ার বিষয়ার বিষয

ভাংপাং বদন্নবাদ —ভাদেশকাত্রণ দিভি। শাস্তানা বস্তবালটাবিবভিননীকরণ: নাৰকাষ্টি বছাও -ক্ৰম্মা দৈক্তি। বছৰক্ষৰপুত্তা পৰিষ্কৃতি-আহেতিও বটা-দেরণি ডড়ি বরখালাবার। ভূবিহরীকবর্ণবিভি মধান: পছতে—,কাং পুনরিভিট। वृद्दीाचित्राक्षित्वः वश्ववाजावाः, उडन्ठाविवद्यवः, न देववः वश्ववाजावाः विशेषवत्रत्रीकृत्वत्रत्राह--क्रुक्ट्रोहिनों । वृद्देशिक नाकिताकित वृद्देशिक कर कि व काविकानकाव -क्रुटक्ट-बिक्ति। रवा धरीरना बोकिकबारवन धकारता न पश्चनानकर स्नानः अकानवर्ति, उपा ৰুষ্টিসাজী বৃটা৷ ব প্ৰকাজত ইভাৰ্ব:: গৃটেপ্ৰটেব নাজীতি সৌৰজা:; ভাৰ্থভাঃ---দুটিল্লিক্টাভি। দৌৰিকাং বাগ্ৰে—ভত্তেভি। পাৰবাৰ্বিকাং বৃষ্টং বাকৰোভি— या चिक्कि । व्यापा निकानुष्ठेयकावरकर कवर अरहेकाहिबागरवय निवाकि, कवाव-का क्रिक्यानरयोक । मानावृद्धिवनुष्टिनशः क्ट्रंश क्रिवायः वावामिकः निवा-वृत्रा वावद्विष्ठ देखार्थः। आस्टावा निकावृत्तियकाराय करा नक्षि व नक्षि क्रिक काशहिरका बावशह देखानकाह -यार्क्सिकि। वा वहांस्ववता क्रोकिकी वृद्धेः, वारमी करमाविक्यारविक मरववा । क्या ह वा करमाविक्यात करा बारिकरविक ज्ञावर । विविद्यानिवादित्व वान्तर्थन। ब्राव कि: म व्यक्तिवानवाद-म विकि: प्रदेव-ৰঙে। ব বিক্রিয়াবব্যবিভাগে বাধ্যাশেববছৰূলছভি – ভঞা ভেডি। ।

উত্তেংগে ন প্রেরিয়ারিক্সভিনবভাগ বাচরে—ক্সমিমিমিস্তান্ট্রেন্। ইউনেব অপকয়তি—মাধ্যালিক্তি। ন ুব্রেরিয়ারিবাদার্গনে বিশ্বরতি—ক্তম্মানিক্তি। ইক্সাম্ভরবাধ্যেতিবিশতি—ক্তর্থেক্তি। ইকং বছবাভাব্যবৃগনকেতা ভলিভবার— এম ইক্তি।

ন বৃটোরিয়ার বশক্ষ্ম ভড় অপকশক্ষাং—ম সূত্রীক্সিড়। কর্মকরাণারপ্রবা ব্যাবোভ্যাশতা ভনিইমকর্মবিনাং—সূত্রীক্সিড়। ইভিশক্ষে ব্যাহক ইভানেন সংব্যাতে। এবং ব্যাহ্র্কভারভিঞারবাং—সূত্রীক্সিড়িত। কর্মধি বন্ধীবেং ক্ট-ক্সিড়েলিক্সিড়। বন্ধীং ব্যাব্যার বিভারাং ব্যাচটো—দ্বানীক্সিডিয়া প্রবাধ বৃদ্ধা বাভার্মবাং—ভেত্তমন্তি।

উজাং পরকীরবাধাাং ঘূর্বন্ধি—ভ্রমুন্তি। বৃষ্টকন্ধ বিষক্ষারাং জ্ঞারেধন বর্থনিক্ষার বিষ্ণিক্ষিত্র । করা পূনবাবাক্ষারো ব্যাক্তং বেলং ন পঞ্চিত, এরাধ পাশ্যান্তাং ক্রেক্তি। করাইনবর্ধকাং প্রাঞ্জনাক্ষাক্ষারা সম্বর্ধন্তে —ক্ষাপ্রমিন্ত্রাপ্রিন্ধিনা । বিষ্ণাবাধান —ভ্রম্যুন্তি। করা বেল্লান্ত্রনার্থন —আন্মান্তিতি। কিলা বার্থং । করা প্রভারার্থন ভ্রাক্তেন প্রেন্ধিন্ধান পূর্বন্ধিনার স্থানিক্রির প্রায়ন্ত্রাপ্রধন্তর ভর্তানিক্রির স্থানিক্রির স্থানিক্রির ক্রেন্থিনিক্রির বিশ্বন্ধান্ত্রাপ্রদান ক্রেন্থিনিক্রির বিশ্বন্ধান্ত্রাপ্রদান ক্রেন্থিনিক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রায়িক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রায়িক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রায়িক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রায়িক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রায়িক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রায়িক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রায়িক্তির বার্থন করাক্ষাপ্রায়িক্তির বার্থন করাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রাম্নিক্রিন্তি । বার্থনাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থন করাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রিক্রির বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্র করাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রির বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রিক্র বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রিক্র বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রিক্র বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্রিক্র বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্র বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্র বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্র বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্র বার্থনার করাক্ষাপ্রাম্নিক্র বার্যামিক্র বার্য

কবং পুনর্ভবভারণি দুবেবিজ্ঞপাধানর্পণভ্জে, ভতাধ—হাথা জিজি। নাধানিকরাপনাত্পরিভিতিবংশ সাইবাঃ। কর্ করিবেবনাথেন সাক্ষিণভাসনাপিতথেরভি
বাবং। ভৎসনপ্রিভি ক্রোপমুলাডে, ভতাধ—আ্তেড্রাজি। দুইগাধিসাক্ষাথা ন
ভবিবঃ ইভি ডংকজপ্রিভারার্থ সাক্ষানিস্বর্গনিভার্থ: আলা নিভাবৃত্তীবভাগে। ন
দুজারা দুইেবিবঃ ইভােম ভের বৃথ্টেরিভাগ্রেবাকার্যার্থখন নবীভাগ্রিনাথলৈকবাকার:
নিবাভি, ভারাব্যবাক্তার্বহরের বৃত্তিরিভাগ্রেবাকারভার্যাধ—ম ক্রীজি। আলা কৃষ্টব্ কৃষ্টিরভান্ত ভালব লাজভিং সংবাবলতি—ভ্রন্থা ভেলিছে। ভক্ত কৃষ্টবৃত্তীয়ে বেছপ্রধান—
ক্রান্তান্তিভান্তি। ভবের প্রারং বিশ্বরভি—গ্রন্তান্তিভাবিভানিক্রিনার্যান্তিভিত্তি। ইভালাবনো নাজি বিজিয়াব্যবিভানি—প্রান্তিভানিক।
ক্রিন্তান্তিভান্তিভান্তিভান্তিভান্ত। বিশ্বে ব্যবহানিক।
ক্রিন্তান্তিভান্তিভান্তিভান্তিভান্ত। বিশ্বে ব্যবহানিক।
ক্রিন্তান্তিভান্তিভান্তিভান্ত। বিশ্বরুগনিক।

व्यक्तिस्वर्शन क्रण्यकानाञ्चनवानीि नवरव—मिक्किः। व द्वार विस्तारय वृद्धेर वृद्धेराविकक् व्यक्तरण व्यक्ति क्षितिक वार्त्यः व्यक्तिस्वर्थाक्ष्यकान्यकान्यनानारः वार्त्य वायानाकान्यविक गविवविक-स्वक्तांत्रित्याः। व वृद्धिकाविकिंगं किंदि क्षश्चानिकं व वार्त्य व्यवनानीकानकार-म स्वृद्धकिक्तिः। वर्ष्यावर्थाः वृद्धाविकक्तिः। বংগালেনগোঁ দুট্টাবিদাকী। মটু শবক দাকিবিবলৰে দিছে দুটোৱাত দাকাদ্যবৰ্ণা-ভবৰ্ষব্যোপপতিবিভূপেন্ত্ৰেলি —জন্মাটানিজি । পুৰুষ্কা বিবাস্থ্য বপক্ষুপ্ৰাজ্যান-বৰ্ম বাব্যা ন্বিভ্ৰাত — গ্ৰেম ইডি । অভ্যাত্ত্বিভিন্তিব্যাহৰ্ণান্ত্ৰব্যাহ -গ্ৰেম্বাস্থ্যতি ৪২০১৪৪

हेकि नृश्वाश्वादकार्यावयक्षात्रक्षेत्राचार कृषीवायादः इकृषीन्यक्रवास्त्रम् । ०००।

ভ্যাহ্যা-মুন্সাদে। "স হোবাচ উৰ্জ্বণাক্রারণঃ" ইত্যাদি। বেষন কোন লোক গণনে অক্তরণ প্রতিক্রা করিয়া, শেবে করিয়ালে সুবোগ না দেখিয়া অপ্রকার উপদেশ দিয়া থাকে, অর্থাৎ বেষন গোও অথকে প্রত্যাক্র প্রদর্শন করাইন বলিয়া প্রতিক্রার পর, উপদেশকালে গমনালি কার্ব্য হারা সুকাইয়া থাকে বে, বায়া চলিয়া বেড়ায়, তায়া গোন আর বায়া নেটায়ায়া, তায়া অথ: তুমি বে, প্রাণনাদি কার্ব্য হারা আর্ম্বরণ রক্ষের উপদেশ দিতেছ, তায়াও ঠিক তক্রপই ইইয়াছে; অবিক কথার প্রয়োজন নাই, তুমি গো-প্রহণের লোতে বে, ছল বা প্রতারণার আপ্রয় প্রহণ করিয়াছ, তায়া পরিত্যাগ কর, এবং বায়া কেবল সাকাৎ প্রত্যাক্ষর বন্ধপ ব্রহ্ম, গায়া সর্কান্তর আত্মা, তায়াই আমার নিকট বাায়াকর। বাজবর্ম বলিলেন—আমি প্রথমে তোমার নিকট বােয়াকর। বাজবর্ম বলিলেন—আমি প্রথমে তোমার নিকট বেরণ লক্ষণান্থিত তোমার আত্মার বরণ সম্বছে প্রতিক্রা করিয়াছি, এখনও আমি সেই প্রতিক্রারই অক্তর্যান্ত বা অক্সরণ করিতেছি; আমি আত্মার বর্মণ ব্রহণ বর্মিলাছি, হায়া ঠিক সেইজপ্র বটে; (ভায়ার কিছুমান্র বাতিক্রম করা হয় নাই) > !

ভাষার পর, সেই আত্মাকে বে, ঘটালি বাল পদার্থের কার প্রত্যক্ষবিবরীভূত করিয়া লিতে বলিয়াছ, অসন্তব বলিয়াই তাহা করা হইতেছে না।
ধবি বল, অসন্তব কেন ৷ [আবরা বলি,] বন্ধ-বভাবই তাহার কারণ
তাল, সেই বন্ধনভাবটা কিরুপ ৷ [সেই প্রভাব হইতেছে—] দৃষ্ট প্রভৃতির
প্রত্ত্ব, কারণ, আত্মা হইতেছে—দৃষ্টির প্রত্তী—প্রকাশক। দৃষ্টি দুট
রক্ষ আছে—এক দৌকিক দৃষ্টি, অপর পারবার্থিক দৃষ্টি; ডঅব্যা
লৌকিক দৃষ্টি হইতেছে—চন্দ্রর সহিত সম্ভন্ত্রাপ্ত অন্তঃকরণের বৃদ্ধি বা
পরিধানবিশেষ; ভাষা উৎপন্ন হয়, উৎপন্ন হয় বলিয়াই বিনষ্টও হয়;
ভিত্তী আন্তর্ম উক্ষয় ও প্রভালানির ভাষ বাহা আত্মার দৃষ্টি (পারবার্থিক

वृष्टि), छात्रा ब्रहेश्वरे-अवश्यक्षत्रवृष्टि-अवश्यक आयाश्वरे प्रमण वा पाकारिक वर्ष ; मुख्यार छावा बरक्क जा, बरक्क मा, (मिका :। तमे निका দৃষ্টিই উৎপত্তিশীল বৃদ্ধি ও তথ ভিত্ৰণ উণাধির সহিত সর্বিলিভের ভাষ व्हेबा-'खरे।' नात्व चिविक व्हेबा बादक, अवर 'खरे।' ७ 'वृत्ते'--अवेशन क्ष्मरायशास्त्र नाक कविया थारक : आव क्रकृतिक्षित्र चात्र। एक-वियत्राकार व चाकातिक त्व त्योकिक वृष्टै - क्या नवत्वहे अहे निहा चाचवरित नहिट (वन मरल्डेरे रह वर्षार वाक्षविक मक्क मा वाकित्मक (वन मरबह वांगहारे वाठीत रत, कार। तारे निका चाचर्मिकरे व्यक्तियाता ना व्यक्तिय मात ; ठावा त्मरे चाचचारामहकारहरे बच भाव कविता बारक. अबर मदाह चावाह विनक्षेत्र वहेवा वाष्ट्र अवेक्षण वृक्षित्रक क्या-वहनमः व्यवे वृत्रकहे, निका क्षकान प्रदेश (बाबा) मंत्रेष्ट्र) प्रनीमील क्षत्रेष्ट्रात मन्या प्रनीम कार्य स प्रनीम करत ना :-- अहमार थेनहातिक (वादा महा नाइ-- चारवानित, (महमार) वावशास्त्रत विवतीकृष्ठ रहेता चाटक ; वाखविकशास मुद्देशत वृष्टि कवनल विवृष्ट दब मा, वा स्ट्रेट शाद मा । देवात वर्ड खशादित करे क्यारे विज्ञानम-'बाबा (यन बानके करिएकाइ, (यम क्रियांके करिएकाइ', अवर 'क्रहेरत मंडि क्षमत विज्ञ हरू ना' है कि।

ন্ধন এই বিষয়টাই পরিস্টি করিয়া বলিতেছেন—কণা ;ত (দুপ্ত)
লৌকিক দৃষ্টির বিনি এই।, অর্থাৎ বিনি আয় নিতা দৃষ্টি ব প্রকাশ খারা
এ লৌকিক দৃষ্টিকে প্রকাশিত করেন, ভাছাকে (দৃষ্টির প্রস্তাকে) ধর্ণন
করিবে না ; অভিপ্রায় এই বে, এই দর্শনের কণ্মসক্ষণ বে লৌকিক
দৃষ্টি । বৃদ্ধিরন্তি), তাকা কোনও রূপবিশেশ খারা। উপরক্তিত হইয়া
(তহাকারে আকারিত হইয়া) সেই সেই বিষয়কে প্রকাশিত করিয়া
পাকে বটে, কিন্তু আন্থাকে 'বর্ধাৎ নিকেরই এই। বা প্রকাশক প্রভাক্আন্থাকে ব্যাপিতে পারে না (প্রকাশ করিতে পারে না) ; অভন্মব দৃষ্টির
দ্রন্থী সেই প্রতাক্-আন্থাকে দর্শন করিবে না । এইরূপ বিনি প্রতির প্রোভা—
প্রবণেজির্ক কানের প্রকাশক, ভাছাকে প্রবণ করিবে না ; এইরূপ
বাভির—টিৎপ্রতিভানরহিত সম্যোর্ভির প্রকাশক্ষক সমন করিবে না ,
আর্থাৎ গুড মনোর্ভিয়ারা প্রকাশ করিবে না ; এইরূপ বিজ্ঞাভির—কেবলই
নিক্রান্থিকা বৃত্তিরভির প্রকাশক্ষক গানিবে না ; কারণ, এইরূপই ।
বভ্যাতাৰ ; বিভাবের বিক্লছে কর্থনই কার্যা হইছে পারে না ।

क्रमार विकास बचार कोवासारक प्रवादि गठ। जात क्रांक्स क्रम्ब क्टिए भाग गांद मा।0 ×

(कह (कह "म हार्डेड्डोडन" अहे बारकात अक्रक्षकात नवार्व गावा कविशा बाटकन ; छात्रांता बरमम-'वृद्धित प्रदेश वर्गम कविरत मा' कर्य-विश्व काम अकार आहर ना करिया- ७४ वृष्टित कर्तारक वर्णन कडिरव না। ভাছাদের অভিপ্রার এই বে 'দুট্রে' পাদে বে বর্ম, ভাছা কর্ম-विकित , मुख्या बहेकि बमार्यंत्र सात्र के पृष्टित वयन क्रियान वय. त्वनके कर्षणकण वत्र : बात 'महोत्वन' **क**रे छठ्ळाछात्राच गरण प्रहेरत महैकर्ष्य श्राकान कविराठाक ; मुख्या: औ मही पर्य-मृद्धित कर्ता बाबाकर्कक में वृष्टि-कार्वा मन्नात हत); ठाशायन क वार्षात 'वृष्टेर' करे वीविश्वकास भन्याता इतित निर्दर्भ कता (व. नितर्वक हरेता भएड़, अ स्माय ভাৰাৱা খেৰিতে পাৰ না; অথবা ছেৰিতে পাইলেও, ইবা পুনক্তক বা অসাং श्रामाधिक शार्र बात करिया उदिवास चामत करा चारत्रक बात करत ना। जान, अवादन चाविका लांच वह कि अकारत ? है।, व वह कृ कु अहाबाद महोत्व' প्राप्त वस्त महिकर्जुव शावत शिताहा. तथन आवात वर्षाव 'मृहदे:.' প্রে প্রক কর্ম নির্দেশ করা নিশ্ররট নির্বক চটতেছে: এ পক্তে কেবল 'महेत्व' बाब वजाहे डेविट हिल । वक वानदान अवाली वहेटटाइ अहे (ब, ्व शाकुत भव कुछ श्रठाय दव. (भड़े शाकुत भावा शक्ष वर्ष, कुछ श्रठाहर (महे व्यर्वतृष्टे कर्तारक वृकात (>) ; अहे अब 'भवातर (छतातर वा नव्यि' (भवन कर्ताहक वा उपकर्ताहक नहेशा वाहेरलह), अहेन्नभहे श्राम बहेश शास्त्र, किन्न मबीखरतत महारामा ना शांकित्म, 'शास्त्र मबात्रम, ভিলে: ভেলাবং' এইরপ প্ররোগ কথনই করিতে নাই। তাহার পর. সাৰ্থকতা শ্ৰুণৰ উপায় বিভ্যান থাকিতে 'অৰ্থবাচ' বলিয়া উপোঞ্চা

^{&#}x27;s) क्रिन्या--'भम्' बाख्य केवत कृत्यकार कांबरण बरवाय रह-पदा : यम् बाख्य वार्य- नवत , प्रकार: এह पृष्ठ धकःव प्रयास क्लीट्रको पृष्ठाहेकः पाटकः पुष्ठ धाराः भवनकद्वीरक नुवारेका त्रव बाजिवारे बाव मुबक्कात्व मध्यक्षम कर्षव निर्देश कत्र আবস্তুক হয় না , আবক্তক হয় না বলিয়াই কেচক 'বৰ্ষম্যা প্ৰা' বলে না ৷ আলোচাস্থলেক इह शहारहरे यथन वृत्तिकतीएक नृचार, प्रथम बात 'कुरहे:प्रहेशन:' विनवात बावकाम १६ ना, solte gamim (ein er :

क्डां क्षवरे डेंड्ड रह ना ; बाद आवादिक गाउं गरिकद्वन। कहां 6 मण्ड रह मा ; कार्त्त, अ विवद झाराह्या मिन्यायाप द्रिविद्ध शांख्या यात्र मा । **भरक्ष विवास रहेरव (व, हेश (क्वम वाया)) गरवहरे वृद्धि-रशेकाला**व পরিচায়ক, কিন্তু অধ্যেত্তবর্ণের প্রানামের কল নতে। ।

- 'शक्ताबार, बाबता, बाबाइल एक वर्ष बनिवादि-त्योकिक वर्ष हरेरठ पृथक कतिहा निठा अकानप्रकार बाबार प्रकृत अकानरमद चारवक्छ। श्रदर्गन कतिशाहिः, त्मरेकण खांचा। चौकात कतित्मके कन्त-विर्वश्वकाल ७ क्षंविरवश्वकाल पृष्टि गरकत कृतात आहान छेल्ला व्हेर७ भारत ; कात्रन, क्रेक्स क्षांत्रारन चाचनक्स निक्रमन महक हहेरछ भारत । বিশেষতঃ অক্সঞ্চকরণে পঞ্জিত 'নহি এই বৃট্টো' ইত্যাদি বাক্যের দহিত এই क्षित्रिकार बनाहारमहे अक्राकाछा करा बाहेर्छ भारतः। छाहा यमि हत्र. छाद 'हक्कू नदृष पर्नम कतिराखाक्', 'अहे लावानिक्षेत्र लाठ बहेन' हेजानि দ্বানান্ত্ৰীয় জতির সন্থিতও ইছার একবাকাতা (স্থানাৰ্থকতা সঙ্গত হয়। বিশেষতঃ এতদকুৰুল বৃক্তিও আছে—বংগাক্ত ব্যাখ্যাকুলাং आश्चान अविक्रिया निष्क बडेरमहे डाबान निर्हाद छेल्ला बढेरड लार . इक्टे अम्पूर्वत (द. विक्रियावद छ निटाइ, देशा विक्रय कर) अधिकत्र जन्मकीय दारभाक्षणांदा---'यन याजि कर्डन, क्ल्मनेट कर्डन', 'म्ब्रेड क्षक्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र ना', 'बाक्षरण्ड । ब्रक्षनिष्ट्र हेट। निहा परिय । विकृष्टि।' केळाडि क्विधिनय स्थाक्त वर्ष भवार वर्ष ना। ४

लान कथा, आहा पणि 'तकावविद्यान- अविक्रियते हम, ठाका हहेला ठ 'हरे।, (जाडा, बढा, विकाठा' हेडाफि क्याश्वनित वर्ष-प्रकृष्टि वर ना : ना. (म कथा बना पात ना : कात्रम, छेक्क वाकाश्वीन (कवन (नाक-श्रीमध वा वाविष्ठातिक बारकात अकुबाम बाज ; किन्दु श्रवार्थ उद्दिश्चितक नरह । 'न नुरहेईडीहरू' हेडामि वारकात अबधानात अर्थ हरेएंड शास मा विलाहे. दुवा बाहेरला द. चामडा स्वत्न चर्च मिर्फन करिहाहि, ठाहाह के मकन वाट्यात वर्षार्थ अर्थ। अठवर अळान वर्षणाहे भव-<u> १५ (हे: वित्नवनी भदिछा। कदिशास्त्र । केळळकात नर्वावर</u> विरामनविभिष्ठे जेडोरे छात्रात जाचा; गरबाक विरामनमान करे जाजात जिल्ला गरा किह-कार्गाचक पूरा नतीत या कत्रन्त्रहितन ज्ञिनतीय. छरम्बक्के चार्क-मारमीम ; अक्वाज वहे चाचाहे (क्वम

খনাকু--অধিনাৰী--কৃষ্টমু (১)। ইবার পর উনত্ত চাফারণ বিরুত কুইলেন ১১৬১৪৭৪ •

ইতি তৃতীধাধানে চতুৰ বাজনের ভাষাালুবাদ ঃলেবঃ

১) নাৰপ্ৰা—কৃষ্টপ্ত অৰ্থ—বাছা ক্ষমণ্ড কোনছপে বিকৃত্ব হয় না, দৰ্মানা একজনে বিশ্বানান বাংক। "কৃষ্টবৰ নিৰ্মিকান্তৰ স্থিত কৃষ্টিত কৈছিল," (প্ৰকল্পী)। কৃষ্ট অৰ্থ, পৰ্যান্তপূক্ষ অধীন কৰিকান্তপ্ৰ বাংগৰ উপত্ব লোক। পিটিলা কিনিক এক্সত করে, ভাষ্য।

भन्नार जामानम्।

জ্ঞান্ডাক্সাক্সাক্ষ্য। বছনং সপ্রবোজনযুক্তন্ব, বন্দ বছা, ভক্তাশি অন্তিবন্দিন্তন্, বাভিনিক্তনং চ। ভক্তেগানীং বছ-যোজসংগনং সময়াসমাক্ষ্যানং বক্তবানিভি ক্রোলপ্রায় আরম্ভাতে

िरका । अध्यनप्रश्याः मार्थाकः वक् बक्षवशिक न्याद्वस्यापितः । इर्वश्याधार्थः मार्थिणविक्तस्याप्तिः केष्यप्रशासक्याध्यनकार्यः मृद्धविक्ताकि । वेद्याप्ति विकासिक विकासिक । विकासि

का लाका का का का कि वहेंगाह, जनः भागात विभिन्द नहम न नहामत्र (वहुकुत करवर कवा केस वहेंगाह, जनः भागात विभिन्द वस, लागान व्यक्ति । एवाजितिस्वत निकांतिक विदेशाह : जनम (भड़े नह व्यक्तात नवमान नवस्तिवृक्तित पेभाव हुन भट्टाम न व्यक्तिसान कथा नामनात कन उठ कहान अद्यक्ति करवामताव्यक व्यक्ति वहें १९१६

অধ হৈনং ক্লোল: কৌগাতকেয়: পথ্যছ যাজ-বজ্যতি হোৰাচ যদেব সাক্ষাদপরোক্ষাবুক্স য আছা স্কান্তরন্তঃ মে বাচক্ষেত্ত্বে ত আছা সক্ষান্তর:।

কতমে। যাঠ্ঠবক্ষ্য দ্র্বাস্তরে। যোহশনায়া-পিপাদে শোবং মোহং জরাং মৃত্যুমত্যেতি।

এতং বৈ তমান্ত্রানং বিদিয়া প্রান্ধণা: পুরৈষণারাশ্চ
বিত্তিষণারাশ্চ লোকৈষণারাশ্চ ব্যুপ্যায়াথ ভিক্ষাচধ্যং চরস্তি; যা
ছেব পুরুদ্রেষণা সা বিত্তৈষণা যা বিত্তিষণা সা লোকৈষণোডে
ছেতে এষণে এক ভবতঃ। তন্মাদ্রিন্দ্রিণ: পাণ্ডিতাং নির্বিদ্
বাল্যেন ভিক্তাসেং। বাল্যাং চ পাণ্ডিতাং চ নির্বিদ্যাধ মুনিরমৌনং চ মৌনং চ নির্বিদ্যাধ ব্রাহ্মণ: ; স ব্রাহ্মণ: কেন স্থাদ্র্যেন

हेि वृद्याद्रगादकार्यानविष् कृष्ठीद्रायायक शक्यः खाळ्यम् ॥ अ०॥

ক্ষাকাথ। তথা উৰ্থবিৱাষান্ত্রম্) কলোগ (তরাষ্ঠা। কৌৰীতক্ষা (কুৰীতক্ষাপতাং পুষান্) এনং (বাজনহাং পপ্রজ্ব হা । সং উনাচ হ—হে বাজনহা, যং এন সাক্ষাং (অব্যবহানেন অপরোকাং (অপরোকাং—প্রতাক্ষৈতক্তা) প্রস্ক, বং স্কার্ত্তা আছা, তং আছানং (ব (ষ্কাং বাচক্ বিশ্বীকৃত্য এটি । ইতি । বিজনহা আহা—) এবং (বজামাণঃ) তে । তব (অতিষ্ঠা) স্কার্ত্তাং আছা । [ক্ষোপ আহ—) হে বাজনহা, (হ্লুকাঃ স্কার্ত্তাং (আহা) কতনং (গেছেকিরালিন মধ্যে কং সংগ) ! [বাজনহা আহ—] বং অশানারা-পিপানে (অশিকৃষিক্ষা অপনারা, পাতৃষিক্ষা পিপানা—ক্ষ্যা-চুকে ইত্যবং), পোকং, ব্যাহং, জরাং, মৃত্যুদ্ অত্যতি (অতিকাষ্ঠি, বং পিপানালিভিঃ ন স্ক্যাতে, সুইত্যবং । ইতি ।

রাজণা: রন্ধনির্চাঃ পুরুবাঃ) এতং (বংগাক্রং) তং প্রসিদ্ধং লান্তানার বিলিছা লান্তাচাগাভান্য লবিপনা) পুরৈবণারাঃ (প্রকাবনারাঃ) চ. বিকেশণারাঃ (পা-হিরণান্তিশনারাঃ) চ. লোকৈশণারাঃ (পর্গাহিলোক-লাভেজারাঃ) চ রাখার (বিশেষণ বিরজ্য, তাঃ তাক্ত্য) লথ (জনজরং) ভিলাচর্বাং (ভিলারাঃ চর্বাং চরবং মর, তং ভিলাচর্বাং সায়াসং৷ চরত্তি (স্বয়াসন্মন্ত্রে ইতার্থঃ) ৷ বা হি পুরৈবণা (পুরুকাবনা), সা এব বিতৈবণা, বা চ] বিভৈগণা, সা [এব] লোকৈশণা,—এতে (বংগাক্ত-সাধা-সাধনভূতে) উত্তে এব এবণে তথতঃ [তর্র পুরু-বিভয়োঃ গাঁখনমন্ত্র, লোকক্ত চ সাধ্যক্তিগালারঃ]; তথাৎ (এবণানাং সাধ্য-সাধনাত্মকর্যৎ, ততএব চ ক্ষিত্মাৎ হেতোঃ, রাজ্যং পাতিতাং আত্মবিজ্ঞান্য, নির্মিত্ম (নিংশেশে বিলিছা—আত্মবিজ্ঞানং স্বাণ্য) বাল্যেন (বাল্ডাবেন—নির্বিজ্ঞানার্ক্রাহিল্ডাবেন, জ্ঞান-বলাবল্যনেন বা) ভিটাসেৎ (ছাত্মিজ্ঞাং—এবণাত্ররপরিত্যাপেন আত্মবিজ্ঞানখনের সমাপ্রয়েছিত্যর্থঃ); বালাং চ পাতিতাং চ নির্মিত্ম (নিংশেবেণ বিলিছা) লখ (জনজ্বঃ) মুনিঃ (মননন্ধীলঃ—জনাত্মপ্রত্যার-পরিহাবেণ ভাল্যপ্রত্যারতৎপরঃ [ভবেৎ]; লখ অবৌনং চ যৌনং চ নির্মিত্ম ব্রাহ্ণার

(ব্রথনিষ্ঠা) তাং। সাং বাজনাং কেন (কীন্থনেনাচারেণ উপদক্ষিতঃ) তাং । বন (বন কেনালি আচারেণ জ্ঞানন্দিতঃ) তাং, তেন কীন্থা এব (ববোজপ্রকারঃ বাজনাঃ) এব [তাং, বেন কেনালি আচারেণ বর্তনানতালি
তত্ত বাজনাং ন হীরতে, ইত্যাচারে অনাধরে। দর্শিতরতেত্যাশরঃ]।
অতঃ (অবাং বাজন্যাবস্থানাং । অতং , অবিভাবিবরঃ বন্ধ) আর্তং
(বিনালি)। ততঃ কহোলঃ কৌবীতকেরঃ উপরয়াম (প্রারং বির্তো
বন্ধ) হ ৪ ১ ৭ - ৪ ১ ৪

মৃত্যান্দ্রাদে। অভংগর ক্রাভকপুত্র করোল ক্ষি যাজ্ঞবদ্ধাকে সম্বোধনপূর্বক জিজ্ঞাস। করিলেন করোল বলিলেন —; গ গাজ্ঞবদ্ধা, বালা সাক্ষাং অপরোক ব্রন্ধ. এবং বালা দেলালি অপেকাও আদ্যান্তরীণ সাক্ষা, ভালার ক্ষমপ আমার নিকট বর্ণনা কর : [গাজ্ঞবদ্ধা গলিলেন —] গেছেন্দ্রিয়াদি-সমন্ট্রান্তিমানা ভামার ইলাই সর্বনাস্তর আত্মা। [কহোল বলিলেন—] বাজ্ঞবদ্ধা, সেই সর্ববাস্তর আত্মা। কোনটা গ বাজ্ঞবদ্ধা বলিলেন—] বাহা ক্ষ্মা, পিপাসা, শোক, মোল, জনা ও মৃত্যু অভিক্রম করে, অর্থাৎ বালা ক্ষ্মা পিপাসাদি রহিত, [ভালাই সর্ববাস্তর আত্মা]।

ব্রাহ্মণগণ এই আত্মাকেই অবগত চইয়া পুরিষণা, বিত্রেবণা ও লোকৈবণা হইতে ব্যুপিত চইয়া অর্থাৎ পুদ্র বিভাদি বিষয়ে কামন। পরিত্যাগ করিয়া ভিক্ষাচর্য্য সের্যাস) অবলম্বন করিয়া থাকেন। প্রকৃত পক্ষে, কিন্তু বাহা পুরিষণা, তালাই বিক্রৈবণা এবং বালা বিক্রৈবণা, তালাই লোকৈবণা,—একটা সাধন, অপরটা ফল, এই সাধ্য-সাধনাত্মক ভেদে চুইটাই এবণা, অভিরিক্ত নতে।

সেই হেতু এখনও জন্মনিষ্ঠ ব্যক্তি পাণ্ডিতা (লাক্ষত । সমাক্-রূপে অবগত চইরা বাল্যে বালকের ক্যার নিরভিমান সরলতাদি অভাব অথবা জ্ঞান-বল অবলম্বনে অবস্থান করিবে; ভাষার পর, বালা ও পাঞ্চিতা সমাপ্ত করিয়া মূনি—সননশীল হইবে; শেবে 'অমৌন ও নৌন উভয়ই পরিসমাপ্ত করিয়া অক্ষেত্তে ভন্মর হইবে। সেই আম্মণ কিয়াপ আচার অবলম্বন করিবেন ? বেরূপ আচারই অবলম্বন করুন, ডিনি ঐক্লপই থাকেন, অর্থাৎ এবণাবিনিশুক্ত অন্ধবর্ত্তাই প্রভিষ্ঠিত থাকেন। * [বেক্লপ আত্মতত্ত্বের কথা বলা হইল,] এতনতি-নিক্ত সমস্তই আর্ড-বিনাশশীল; তাহার পর কৃষীভব্তের পুত্র কহোল নিক্ত হইলেন । ১৭০ । ১ ।

कृ**ीय अशास्त्र शक्य बाजन नाथा। । ७ । ৫** ।

भ्याक्ष आन्याक्ष्य । यथ र अनः करहारमा नामछः कृतीछक्कामछाः कोरोछरकाः পঞ्च ; राज्यरदाछि द्यायाद्यि भूक्षरः, यस्य माकार-भरताक्षात् तयः, य व्याक्षा मर्कादतः, छः त्य गाहरकृष्ठि, यः विक्रिता यक्षनाः श्रमुद्धारकः। योज्ञयक्ष व्याद-अवः (छ छवान्।। >

্ কিমুৰত-কৰোলাত্যাং এক শাস্তা পৃষ্টঃ ? কিং বা তিরাবাস্থানো তুলালকণাবিতি ? তিরাবিতি বৃক্তম্, প্রার্রারপুনকুক্তবোপপত্তা। বদি তেক আয়া উবত্তকহোলপ্রার্রার্কিবক্ষিতঃ, একেনৈব প্রশ্নেনাধি-পতত্বাৎ তাহ্বরো হিতীয়ং প্রশ্নেদ্বক্ষক তাৎ; নচার্ধবাদরপ্রং বাক্যক; তথাতিরাবেতাবাস্থানো ক্ষেত্রভ-পর্যাম্বাখ্যাবিতি কেচিয়াচক্ষতে। ২

তম্ন, তবেতি প্রতিজ্ঞানাৎ, 'এব ত আত্মা' ইতি বি প্রতিবচনে প্রতিজ্ঞাতব্।
ন হৈ কল কার্যাকরণস্ক্রাতক থাবাত্মানার্পপছেতে; একো হি কার্যাকরণস্ক্রাত একেনাত্মনা আত্মবান্; ন চোৰত্মাক্তঃ কংগাক্সাক্রো আতিতো ভিন্ন
আত্মা ভবতি; বরোরসৌগ্রাত্মসর্কাররয়াত্মপপডেঃ। বভেকবসৌগং ব্রহ্ম
ঘরোঃ, ইতরেণ অবক্রং সৌণেন ভবিতব্যব্; তথা আত্মহং সর্কাররহং চ,
বিরুদ্ধবাৎ পঢ়ার্থানাব্য; বভেকং সর্কাররং ব্রহ্ম আত্মা মৃথ্যঃ, ইতরেণাসর্কাররেণানাত্মনা অমুবোনাবক্রং ভবিতব্যব্; তত্মাদেককৈর ছিঃপ্রবণং
বিশেষবিব্যার। ৩

ষত্ পূর্বোক্তেন সমানং বিতারে প্রমান্তর উক্তব্ ভাবনারং প্রতিত্ব বাল্লবাহঃ, —তত্তৈবাহক্তঃ কন্চিবিশেষো বক্তবা ইভি। কঃ পূনরুসে বিশেষঃ—ইভি : উচ্যতে—পূর্ববিন্ প্রের—শন্তি বাভিরিক্ত আশ্বা, বভারং প্রবোশকো বন্ধ উক্ত ইভি, বিতারে ভূ তত্তৈবাশ্বনোংশনারাখিসং-সায়বর্শাভীত্তম বিশেষ উচ্যতে, ববিশেষপরিজ্ঞানাৎ সন্ত্যাসসন্ভিভাৎ পূর্বোকাশ্বনাধিরুচাতে। ভ্যাৎ প্রম্প্রভিষ্চনর্য়োঃ "এব ভ আশ্বা" ইত্যেব-মন্তর্যাভাগার্থিক। ৩ নম্ম কথনেককৈবাদ্ধনোংশনারাশ্বতীতবং বছদক্ষেতি বিরুদ্ধধর্মন সমবারিদ্ধমিতি ? ন, পরিস্কৃত্যাদ্ধ ; নামরূপবিকার-কার্যান্ধরণকরণক্ষণসক্ষাতোন্ধাবিভেদস্পর্কলনিতজ্ঞান্ধিমাত্রং হি সংসারিদ্ধমিত্যসকুদবোচান, বিরুদ্ধ-ক্ষেতিব্যাখ্যানপ্রসঙ্গেন চ ; বথা রক্ষ্ম-শুক্তিকা-গগনাদরঃ সর্প-রক্ষত-মলিনা তবন্ধি পরাখ্যারোপিতধর্মবিশিষ্টাঃ, স্বতঃ কেবলা এব রক্ষ্ম্পুক্তিকাগগনাদরঃ ; ন চৈবং বিরুদ্ধর্মসমবারিদ্ধে পদার্থানাং কন্সন বিরোধঃ। ৫

নাৰরপোপাথান্তিবে "একবেবান্বিতীরন্," "নেহ নানান্তি কিঞ্কন" ইতি প্রভাৱে বিরুদ্ধেররিতি চেৎ; ন, সলিলফেনদৃষ্টান্তেন পরিষ্ঠভাৎ দুদাদিদৃষ্টান্তেন । বদা তু পরমার্বদৃষ্ট্যা পরমান্তবাৎ প্রত্যন্তসারিতিরক্তানে নিরুপারাণে নাম-রূপে মুদাদিবিকারবং বস্বন্ধরে তত্ততো ন ভঃ—সলিলকেনতাদিবিকারবদেব, তদা তদপেক্ষরা "একবেবান্তিবীরন্" "নেহ নানান্তি কিঞ্চন" ইত্যাদিপরমার্বদর্শনগোচরত্বং প্রতিপদ্ধতে; বদা তু বাভাবিক্যাবিদ্ধরা ব্রহ্মস্করণং রক্ষ্তৃত্তিকাগপনস্বরূপবদেব স্বেন রূপেণ বর্ত্তমানং কেনচিদস্ট্রভাবমপি সং নামরূপক্রতকার্য্যকরণোপাধিত্যো বিনেকেন নাবধার্যতে নামরূপোপাধিদৃষ্টিরেব চ তবতি স্বাভাবিকী, তদা-সর্কোহয়ং বস্বরান্তিক্বাবহারঃ। ৬

অন্তি চারং ভেদকতো বিধ্যাব্যবহারঃ, বেষাং ব্রহ্মতবাদক্তবেন বস্তু বিশ্বতে, বেষাং চ নাজি; পরমার্থনাদিভিত্ত প্রত্যন্ত্রগারেণ নির্পামাণে বস্তুনি—কিং তন্ততাহন্তি বস্তু, কিং বা নাজীতি, ব্রহ্মক্ষেবাহিতীয়ং সর্ধান্ত্যবহারণক্তমিতি নির্ধার্থতে, তেন ন কশ্চিহিরোধঃ। ন হি পরমার্থাবধারণ-নির্চারাং বস্তুব্যক্তিরং প্রতিপভাষতে, "এক্ষেবাহিতীয়ম্ অনন্তরম্বাহ্নম্শ ইতি প্রতঃ, ন চ নামরূপব্যবহারকালে তু অবিবেকিনাং ক্রিয়াকারকফলাদিন্দ্রেবহারে। নাজীতি প্রতিবিধ্যতে; তন্মাণ্ জ্ঞানাজ্ঞানে অপেক্যু সর্ধঃ সংব্যবহারঃ শাস্ত্রীয়ো লৌকিকশ্চ; অতো ন কাচন বিরোধাশকা। সর্ধান্ত্রাম্বপাপরিহার্যঃ পরমার্থসব্যবহারক্তো ব্যবহারঃ। ৭

তত্ত্ব পরমার্থাক্মসম্প্রমণেক্য প্রশ্ন পুনঃ—কত্যো বাজ্ঞবন্ধ্য সর্বান্তর ইতি।
প্রভাহে ইতরঃ—বঃ অপনারা-পিপাসে, অপিতৃমিক্ষা অপনারা, পাতৃমিক্ষা
পিপাসা, ডে অপনারাপিপাসে বোহত্যেতীতি বক্ষ্যমাণেন সক্ষঃ। অবি-বেভিভিত্তসমলবহিব পর্বান্থ স্বান্ত্যমান্ত্র তল্পনারাভিত, পরমার্থতত্তাভ্যামসংস্টমভাবতাৎ; তথা মুদ্রেশনারা-পিপাসাদিমত্ত কর প্রায়ান্দ্র ৰণি—কুৰিতোহহং পিপাসিতোহহবিতি, তে অত্যেত্যেব, পরবার্যভন্তা-ভ্যানসংস্কৃত্তিঅভাষয়াং; "ন লিপাতে লোকভাবেন বাহঃ" ইতি প্রতঃ, অবিবল্লোকার্যারোপিতভঃবেনেতার্বঃ। প্রাণৈকর্মনাৎ স্বাসকরণং অপনায়া-পিপাসরোঃ। ৮

শোকৰ, মোহৰ, শোক ইতি কামঃ; ইইং বন্ধ উদিন্ত চিন্তরতো বদরমণৰ, তৎ তৃঞ্চাভিভূতক কামবীজৰ; তেন হি কামো দীপাতে। মোহর বিপরীত-প্রতার-প্রতবোহবিবেকে। প্রমঃ, স চাবিক্তা সর্কতানর্বক্ত প্রস্ববীজৰ; ভিন্ন-কার্যাছাৎ তয়োঃ শোক-মোহরোরসমাসকরণৰ; তৌ মনোহধিকরণে, তথা শরীরাধিকরণে) জলাং মৃত্যুং চাত্যেতি। জলেতি কার্যাকরণসভ্যাত-বিপরিণামো বালপলিতাদিলিকঃ। মৃত্যুরিতি তদিজ্ঞেদঃ বিপরিণামাবসানঃ, তৌ জরামৃত্যু শরীরাধিকরণাবত্যেতি। ১

এতে অশনায়ালয়ঃ প্রাণ-মনঃ-শরীরাধিকরণাঃ প্রাণির অনবরতং বর্ত্তবানাঃ অহোরান্রাদিবৎ সমৃদ্রোর্শ্বিচ্চ প্রাণির সংসার ইত্যচাতে। বোংসে মৃষ্টে-দ্র ইত্যাদিলকণঃ সাক্ষাৎ অব্যবহিতঃ, অপরোক্ষাৎ অসৌণঃ সর্বান্তর আত্মা ব্রশাদিত্তপর্যারানাং তৃতানাম্ অশনায়াপিপাসাদিতিঃ সংসারধর্শ্বঃ সদা ন ল্পুতে—আকাশ ইব বনাদিবলৈঃ; তম্ এতং বৈ আত্মানং সংতবং বিদিয়া জাত্মা—অরমহমন্দ্র পরং ব্রহ্ম সদা সর্বসংসারবিনিক্ জং নিত্যতৃপ্রমিতি, ব্রাহ্মণানামেবাধিকারো ব্যুপানে, অতো ব্রাহ্মণ-গ্রহণ্ ; ব্যুপার বৈপরীত্যেনাখানং কৃষা; কৃত ইত্যাহ—পুত্রেরণায়াঃ—পুত্রার্থা এবণা পুত্রেরণা—পুত্রেণ ইমং লোকং অরেরমিতি লোকজরসাধনং পুত্রং প্রতীক্ষা এবণা—দারসংগ্রহং, দারসংগ্রহমক্তর্বত্যর্থঃ। বিজৈবণারাদ্য—কর্মসাধনক্ত প্রাদ্যক্রপাদানম্—অনেন কর্ম্ম কৃষা পিতৃলোকং জেব্যামীতি, বিভাসংবৃক্তেন বা দেবলোকম্ কেবলরা বা হিরণ্যগভবিদ্ধরা দৈবেন বিজেন দেবলোকম্ । ১০

দৈবাদিভাদ্ ব্যুখানবেব নাজীতি কেচিৎ; ৰখাৎ তৰ্বনে হি কিন বুখোনষিতি। তদসং, 'এতাবান্ বৈ কানঃ' ইতি গঠিতখাদ্ এৰণামধ্যে দৈবস্ত বিজন্ম। ভিরণাগর্ভাদিদেভাবিবরৈব বিজা বিভমিত্যুচ্যতে, দেবলোকহেত্যাৎ। ম হি নিরুপাধিকপ্রজ্ঞানখনবিবরা বন্ধবিভা দেবলোকপ্রাপ্তিহেত্ঃ, "তলাভং পর্বমন্তবং" "আত্মা ছেবাং স ভবতি" ইতি ক্রন্ডঃ; তদ্বনেন হি ব্যুখানন্দ, "এতং বৈ ভমাত্মানং বিদিদা" ইতি বিশেষবচনাৎ। তথাৎ ক্রিভাোং- (भारक्काः जमान्यानकक्षाविमाध्यकः क्षमानिव्यव्यक्षाः वृत्र्यात्र—क्षमा कायः "क्षकान्यदेव कावः" हेकि क्षर्त्वते क्षक्षितिव्यव्यक्षितिव्यक्ष्यानिक्षाविमाध्यक्ष कृष्णानक्ष्यकार्यः >>

সন্ধা হি সাধনেক্ছা কলেকৈব ; অতো বাচাই ক্রতিঃ এইকব এবণেতি .

কর্ব ? বা ক্ষেব পুরেবনা, সা বিভৈবনা, মৃইকন্সাধনমভ্যাভাব ; বা বিভিবনা সা নোকৈবনা : ক্যাইবি সা ; সন্ধা ক্যাইএবৃক্ত এব ছি সর্বাং সাধনভ্যাভত , অত একৈবৈবনা : বা নোকৈবনা, সা সাধনবভাবেন সম্পাদ্ধিত্ব ম শক্তাত—ইতি সাধা-সাধনভাবেন উতে হি ব্যাহেত এবনে এব তবতঃ ; তথাত্ব প্রমাধনক সর্বাং দেবপিতৃমাত্মব
নামিত্রং বজোণবীতাত্মি—তেন হি দৈবং পিত্রাং মাত্মবক্ষ কর্ম ক্রিয়তে, "নিবীতং মহুব্যাগার্শ ইত্যাত্মিপ্রতাঃ । তথাৎ পূর্বে প্রাহ্মণা প্রমাধনক কর্ম ক্রিয়তে, ভিকাচর্বাং কর্মেশবনভাক্ষ কর্মেশিবনভাক্ষ কর্মেশিবনভাক্ষ কর্মাধনভাক্ষ কর্মাধনভাক্ষ কর্মাধনভাক্ষ কর্মাধনভাক্ষ বিভাগে । তথাৎ পূর্বে প্রাহ্মণা প্রমাধনভাক্ষ কর্মাধনভাক্ষ কর্মাধনভাক্ষ কর্মাধনভাক্ষ বিভাগে । তথাৎ পূর্বে প্রাহ্মণা প্রমাধনভাক্ষ বিভাগে চরবি —তাক্ষ্যা থার্ডিং লিক্ষং কেবলাশ্রমমার্শরণানাং জীবনসাধনং পারিব্রাজ্যবাঞ্জন্ম : "নিঘান্ লিক্ষবর্জিতঃ" "তথাত্মলিক্রো ধর্মজ্যে ব্যক্তলিক্রোহালাবাঞ্জন্ম : "নিঘান্ লিক্ষবর্জিতঃ" "তথাত্মলিক্রো ধর্মজ্যে ব্যক্তলিক্রোহালাবাঞ্জনেতঃ " সলিবান্ ক্রান্ম বির্বাহা বির্বাহা স্ব্রোহালাব্রিহা" ইত্যাত্মিক্রাহ্ন "সলিবান্ কেশান্ নিক্তা বিস্কল্য সজোপ্রীত্ম" ইতি চ ২২

নশ্ন 'ব্যুপ্তায় ভিক্কাচর্চাং চরত্তি' ইভি বর্ত্তমানাপদেশাদ্ অর্থবাদাহয়ম্ ; ন বিধায়কঃ প্রভারঃ কশ্চিৎ শর্পত — লিঙ্লোট্ডব্যানামগুডমোহপি ; ভন্মাদর্থ-বাদমাত্তেশ প্রভিন্নতিবিহিতানাং বজ্ঞোপবীতাদীনাং সাধনানাং ন শক্যতে পরিত্যাগঃ কার্ত্তিস্বৃত্ত্ ; •"বজ্ঞোবীত্যেবাধীয়ীত বাদ্ধেদ্ বঞ্চত বা।" পারিত্রাক্ষ্যে তাবদধ্যয়নং বিহিত্ত্ "বেদসন্ত্যসনাৎ শ্রেক্তন্ত্রাহেদং ন সংস্ক্রেন্থ" ইভি ; "বাধ্যার এবোৎক্লামানো বাচন্ন" ইভি চ আপত্তমঃ ;

> "ব্ৰহ্মোঞ্চং বেদনিকা চ কেটিসাক্ষাং সুক্তৰং। গহিতায়ান্তরোক্ষ্যিঃ স্থবাপানসমানি বট্ট"

ইতি বেদপরিত্যাপে দোবশ্রবণাৎ "উপাসনে ওরণাং র্ছানামতিখীনাং হোবে অপ্যকর্মণি ভোজন আচমনে বাধ্যারে চ বক্ষোপবীতী স্থাৎ" ইতি পরিব্রাককধর্মের চ ওরপাসনস্বাধ্যারতোজনাচমনাদীনাং কর্মণাং শ্রুতিস্কৃতির এব বাবামৰ, ন ছ নৰ্বাহন্তবন্ধ কৰ্মনান্ত্ৰক জন্মৰ। তথাত অক্তৰ্বক জন্মৰ। তথাত অক্তৰ্বক জন্মৰ। তথাত অক্তৰ্বক জন্মৰ নিহিতাক্ষণ-প্ৰতিবিভাচন্দনিবিভা কথা তাই। তথাৰ মুক্তাশনীক্ষাকি-বিজ-প্ৰিভাগেন্থৰপ্ৰশাৰে। ন, 'ব্ৰোশনীক বেলান্ত নৰ্বাহ ভক্তিৰ বজিল ইতি ক্ৰেছে। ১৯

শবিদ্য বাদ্যানপর বাং সর্মন্তা উপনিবহু:—আত্মা দ্রইব্যঃ প্রোচব্যো বর্ষর ইতি হি প্রস্তুত্ব ; স চাজৈর সাক্ষাদপরোক্ষাং সর্মান্তর: অননারাহ্যি-সংসারধর্ম বর্জিতঃ—ইত্যেবং বিজের ইতি তাবং প্রসিদ্ধন্ । সর্মা হীরমুপনিবং এবংপরেতি বিধারর শেবরং তাবরান্তি, অতো নার্থবাদ্য, আত্মানক্ত কর্তব্যাহাং । আত্মা চ অননারাহ্যির্থবান্ ন ভবতীতি সাধন-ফলবিলক্ষণো আত্যাঃ ; অতো ব্যতিরেকেণ আত্মনো আনন্থ অবিদ্যা—"অক্সোংসাবক্ষোত্তহমন্ত্রীতি, ন স বেদ" "মৃত্যোঃ স মৃত্যাধার্যাতি, ব ইহ নানের পগুতি" "একবৈবাস্তুত্তব্যকেক-মেবাছিতীয়ন্থ "তর্মসি" ইত্যাদিপ্রতিত্যঃ । ক্রিরাফলং সাধনঞ্চ অননারাদি-সংসারধন্যাতীতাদান্ত্রনঃ অক্রদবিদ্যাবিষরন্—"বত্র হি বৈত্যির ভবতি""অক্টো-ংসাবক্ষোত্রত্বান্তর বিদ্যাশ কর্মবিদ্যাবিষর বিশ্বর হি বৈত্যান ভবতি" ইত্যাদিবাক্যান্ত্রাঃ । ১৫

ন চ বিশ্বাবিশ্বে একস্থ পুরুষত্ব সহ তবতং, বিরোধাৎ—তমঃপ্রকাশাবিব; তমাদায়বিদঃ অবিদ্যাবিবয়েছিবিকারো ন দ্রন্তব্যঃ ক্রিয়া-কারক-ফলতেদরপঃ, "মুত্যোঃ স মৃত্যুমাপ্রোতি" ইত্যাদিনিন্দিতয়াৎ। সর্কক্রিয়াসাধনকলানাঞ্চ অবিশ্বাবাং তদিপরীতায়বিশ্বয়া হাতব্যমেনেইয়াৎ, বজ্ঞোপবীতাদি-সাধনানাঞ্চ তদিরয়াৎ। তমাদসাধনকলমভাবাদায়নঃ অন্ধবিষয়া বিলম্পনা এবণা উত্ত হেতে সাধন-ফলে এবণে এব তবতঃ, বজ্ঞোপবীতাদেশুৎসাধাকর্মণাঞ্চ সাধনয়াৎ, "উত্তে হেতে এবণে এব" ইতি হেতুবচনেনাবধারদাং। বজ্ঞোপবীতাদিসাধনাৎ তৎসাধ্যেত্যক কর্ম্মত্যঃ অবিশ্বাবিষয়মাৎ এবণা-রূপদাচ্চ কিন্নাস্বিদ্যাধনাৎ তৎসাধ্যেত্যক কর্ম্মত্যঃ অবিশ্বাবিষয়মাৎ এবণা-রূপদাচ্চ কিন্নাস্বিদ্যাধনাৎ বৃশ্বোনং বিধিৎসিত্যের। ১৬

নমু উপনিষদ আত্মজানপরতাৎ ব্যুখানশ্রতিঃ তৎস্বত্যর্থা, ন বিধিঃ ; ন ্য বিধিৎসিতবিজ্ঞানেন সমানকভূগশ্রবণাৎ। নহি অকর্তব্যেন কর্ত্তব্যন্ত স্থানকর্ত্কত্বন বেলে কলাচিয়লি প্রবণং সম্ভবতি; কর্তব্যানাবের হি অভিবর-হোর-ভক্ষাণাং বথা প্রস্তান্ত্য-অভিবৃত্য হয় ভক্ষরীতি, তবদ আরক্ষা-নৈবণা-বৃংখান-ভিক্ষাচর্ব্যাণাং কর্তব্যানাবের স্থানকর্ভকরপ্রবর্ণং ভবেৎ। ১৭

অবিভাবিষরত্বাদেশণাভাচ অর্থপ্রাপ্ত আত্মভানবিধেরের ব্যালেশবীতাদিপরিত্যাগঃ, ন তু বিধাতব্য ইতি চেৎ; ন; স্বভরাষাত্মভানবিধিনৈর বিহিতন্ত
সমানকর্ত্বভাবণেন দার্ঢেগাপপতিঃ, তথা ভিক্ষাচর্যান্ত চ। বং পুনকক্তব্—বর্তমানাপদেশাদর্থবাদমা এমিভি; ন; উচ্ছর-মূপাদিবিধিস্মানভাদদোষঃ। ১৮

'ব্যথার ভিক্ষাচ্যাং চরন্ধি' ইত্যানেন পারিব্রাঞ্যাং বিধীরতে; পারি ব্রাঞ্চাশ্রমে চ বজ্ঞোপবীতাদিসাধনানি বিহিতানি লিক্ষ্ণ শুতিভিঃ ক্বতিভিন্ধ; অভন্তজ্জন্তিরা অক্তমাদ্ ব্যথানম্ এগণাড়েংপীতি চেং; ন, বিজ্ঞানসমানকড়কাং পারিব্রাঞ্চাদেরণাব্যথানককণং পারিব্রাঞ্চান্তরোপপত্তঃ। দল্লি তৎ এবণাত্তো; ব্যথানককণং পারিব্রাঞ্চান্ত, তৎ আন্মঞ্জানাক্রম্, আন্মঞ্জানবির্যোধ্যবাপরিত্যাগর্মপত্তাং, অবিক্যাবিষয়ন্ত এবণায়াঃ; তদ্ব্যতিরেকেণ্ চ অক্তি আশ্রমরূপণ পারিব্রাভ্যাং ব্রহ্মলোকাদি-ফলপ্রাপ্তিপাধনম্, যভিষয়ং ব্যঞ্জাপবীতাদিসাধনবিধানং লিক্সবিধানক। ন চ এবণাত্রপসাধনোপাদানক্ত আশ্রমধন্মমাত্রেশ পারিব্রাভ্যান্তরবিষয়ে সভ্বতি সতি, সক্ষোপনিবছিহিতক্ত আল্বন্তানক্ত বাধনং বৃক্তম্; বজ্ঞোপবীতাভবিক্তাবিষয়েবণাত্রপ-সাধনোপাদিৎ-সায়াং চ অবপ্তম্ অসাধন-ফলরপন্ত অশ্নায়াদিসংসারধন্মবর্জিতক্ত 'অহং ব্রহ্মান্নি' ইতি বিজ্ঞানং বাধ্যতে; ন চ তথাধনং যুক্তম্, সর্কোপনিবদাং তদ্বপিরহাৎ। >>

'ভিকাচর্যাং চরত্তি' ইত্যেবণাং গ্রাহয়ন্তী প্রতিঃ স্বয়মেব বাধত ইতি চেৎ;—অধাপি সাদেবণাভ্যা ব্যুখানং বিধার পুনরেবলৈকদেশং ভিকাচর্যাং গ্রাহয়ন্তী তৎসম্বন্ধকপি গ্রাহয়ন্তীতি চেৎ; ন, ভিকাচর্যান্তাপ্রবোদকদাৎ— হবোজরকালভক্ষণবৎ; শেবপ্রতিপত্তিকর্মবাদ্ অপ্রযোদকং হি তৎ; অসংকারক্ষাচ্চ—ভক্ষণং পুরুষসংকারকম্পি ক্যাৎ, নভু ভিকাচর্যাষ্ ; নিম্নাদ্রক্তাপি ব্রন্ধবিদাংনিষ্টবাৎ।

নির্মাণৃষ্টস্থানিষ্টকে কিং তিক্ষাচর্ব্যোগতি চেং ন, অন্তলাধনাদ্ব্যথানস্থ বিহিত্যাং। তথাপি কিং তেনেতি চেং—বদি স্থাং, বাঢ়ম্, অস্থ্যপদম্যতে হি তং । ২০ বানি পারিত্রাভোহতিহিতানি বচনানি—"বজোপনীত্যেবাধীরীত' ইত্যাদীনি, তানি অবিৰৎপারিত্রাভাষাত্রবিষয়ানীতি পরিল্লতানি; ইতর্বা আত্মভানবাৰঃ স্থাদিতি হাজন্।

"নিরাশিবননারস্তং নির্নিকার্যস্তৃতিম্। অকীবং কীণকর্মাণং তং কেবা ব্রাহ্মণং বিছ্:।"
ইতি সর্কাকর্মাভাবং দর্শয়তি স্থতির্কিত্বঃ, "বিদ্যালিস্বিবর্জিতঃ'' "ভ্যাদদিলো ধর্মজঃ'' ইতি চ। ভ্যাৎপরস্থংসপারিব্রাজ্ঞানেব ব্যুখানদক্ষণং প্রতিপদ্মেভ আত্মবিৎ সর্কাকর্মাননপরিভ্যাপরপ্রিতি । ২>

বলাৎ পূর্ব্ধে ব্রাহ্মণা এত্যান্মানষ্ অসাধন-ফললভাবং বিদিয়া সর্ক্ষমাৎ সাধনশ্বপ্রণালকণাদ্ ব্যুপায় ভিক্ষাচর্ব্যং চরন্তি ল—দৃষ্টাদৃষ্টার্থং কর্ম তৎসাধনং চ হিন্তা, ভলাৎ অন্তর্য্যেপি ব্রাহ্মণঃ ব্রহ্মবিৎ পাভিত্যং পভিত্তাবম্—এতদাম্ববিজ্ঞানং পাভিত্যম্, তং নিবিশ্ব নিঃশেবং বিদিয়া—আন্ধ্রন্তানং নিরবণেবং ক্ষেত্যর্থঃ—আচার্ব্যত আগমতক, এবণাত্যো ব্যুপায়— এবণা-ব্যুপানাবসানমেব হি তৎ পাভিত্যম্, এবণা-তিরন্ধারোম্ভবলাৎ এবণা-বিক্রন্তাৎ; এবণাশ্ব অতিরক্ষতা ন হি আন্মবিব্যুক্ত পাভিত্যন্তোম্ভবঃ—ইত্যামুজ্ঞানেনৈব বিহিত্তমেবণাব্যুপানম্, আন্মজ্ঞানসমানকর্তৃক-ক্রাপ্রত্যান্থাদানলিক্ষ্মত্যা দৃটীকৃত্য । ২২

তন্মদেষণাভ্যো ব্যুপায় জ্ঞানবল্ভাবেন বালোন তিছাঁদেং ছাত্ৰিকেং। সাধনকলাশ্ৰয়ং হি বলষ্ ইতরেষাষ্ অনাম্ববিদাষ্, তৰলং হিবা বিধান্ অসাধনকলস্বরূপান্ধবিজ্ঞানমেব বলং—তভাবমেব কেবলমাশ্রমেং; তদাশ্রমেণ ছি করণানি এবগাবিদয়ে এনং ক্ষা ন স্থাপরিত্যুৎসহত্তে; জ্ঞান-বলহীনং লি মৃঢ়ং দৃষ্টাদৃষ্টবিষয়ায়ামেষণায়ামেব এনং করণানি নিষোজ্মন্তি: বলং নাম আশ্ববিজ্ঞয় অলেববিষয়দৃষ্টিতির্ভরণম্: অভত্তভাবেন বাল্যেন তিছাঁদেং; তথা "আশ্বনা বিন্দতে বীর্যুষ্ট ইতি শ্রতান্তরাৎ "নায়মান্ধা বলহীনেন লভাঃ" ইতি চ। ২০

বাল্যঞ্চ পাণ্ডিত্যঞ্চ নির্বিষ্ণ নিংশেবং ক্রমা, অধ মননাৎ মুনির্বোগী তবতি; এতাবদ্ধি আদ্ধণেন কর্ম্ববান্, বহুত সর্বানাত্মপ্রত্যয়তিরকারঃ; এতৎ কুমা কুতক্রত্যে। বোগী তবতি। অমৌনক আত্মজানানাত্মপ্রত্যয়তিরকারে) পাণ্ডিত্যবাল্যক্রকে নিঃশেবং কুমা—মৌনং নাম অনাত্মপ্রত্যয়তিরক্রপত্র পর্ব্যবদানং ফলন্, তক্ত নির্বিত্ব, অধ আত্মণঃ কুতক্রত্যো তবতি—এত্মব সর্ববিত্তি প্রত্যয়

डेनबाइ(छ। म डाचनः इठइठाः, चट्टा डाचनः;

তক্ত রাজণাং প্রাথন; লত আহ—স রাজনং কেন° তাৎ—কেন চরণেন তবেং ? বেন তাং—বেন চরণেন তবেং, তেন জ্বলুল এবায়ন্—বেন ফেনচিং চরণেন তাং, তেন জ্বলুল এব উক্তনক্ষণ এব রাজণা ভবতি; বেন ক্লেচিচ্চরণেনেতি ভতার্বন্—বেরং রাজণাবিদ্বা, সেরং ভ্রতে, ন ভূ চরণেহনাদ্রঃ। ২৪

শতঃ এতবাং ব্রাশ্বণাবিদ্যানাদ্ শশনারাশ্বতীতাশ্বরপাং নিতাত্থাদ্ শক্তবিভাবিবরবেশণাকশং বশ্বরৰ শার্ত্তং বিদাশি—শান্তিপ রগৃহীতং বশ্ববারাবরীচ্যাদকসবন্ শদারম্, শান্তিবৈকঃ কেবলো নিতামৃক্ত ইতি। ততো হ কৰোলঃ কৌশীতকের উপরবাম ॥ ১৭০॥ ১॥

हैि इहरादगारकाशनिविष ज्ञौदाधात्र अभ्य-दाव्याज्ञ ॥ अध्य .

টীকা। ৰাশণত্ৰাৰ্থ সক্তিং বসুংখ্যাত—বক্ষম্মিতি চতুৰ্বাক্ষণৰ্থং সন্ধিপতি—অংশত উভ্তৰাধ্বতংশগণতাত —তহন্তি। উৰ্ভানন্ত্ৰীয়ধ-বন্ধাং পূৰ্ব্যান্ত্ৰীক এণাৰ্থ সংখাবিত্যানিতাৰ্থঃ। বন্ধাংসিকান ৰাজ্য নাজ ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক এণাৰ্থ মং ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক এণাৰ্থা মং ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক এণাৰ্থাই মং ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক এণাৰ্থাই মং ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক এণাৰ্থাই ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক এণাৰ্থাই ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক ক্ষিত্তি ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰী কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক ক্ষিত্তিক ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক ক্ষেত্ৰিক ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক ক্ষেত্ৰীক ক্ষিত্তি কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক ক্ষিত্তি কিন্তু কিন্তু বাহ্যাত্ৰীক ক্ষিত্তি কিন্তু কি

শ্বরোহবারহবিশের মর্গনার্থং প্রার্থাত - ক্রমুশ্রর স্থাত। তত্ত পূর্বপঞ্চ সূথাতি - ভিন্নাবিক্তীতি। উত্তর্গর বাতিবেলবার: বর্ণাটি -- মদি স্টীত্যাদিনা। অবৈকং বাক্যং বর্ণার, ভতার্থবালে বিতারং বাক্যং বেতার--ন চ্ছেতি। বরো-বিকারেজনানকণকে স্থাতিবাল -- ক্রম্যাক্তি । তত্তাল্প: বাক্যং ক্রেজনার্থিকরোতি, বিতারং প্রবাদানবিভাতিকেতার -- ক্রেড্রেক্তিত । ২

রাজনবরেনার্থনয়ং বিবৈক্তিবভি ভত্ প্রপঞ্জবানং প্রভাহ—তল্পেন্ত। প্রবপ্রতিবচনরোরেকরপ্রার্থিতেলাগুলীভাক দুপপানরতি — প্রমান্ত ইন্তি। ভবা৹পার্থনের
কাহমুপপভিত্তরাহ—ম চেতি। তাদবোপপানরতি—প্রক্রো ক্রীতি। কাবকরপদং
বাভজেনালারভেন্যবালার—ম চেতি। আভিতঃ বভারভা৹বহানিতোকারারক্রবানিভার্থ:। ইতক্ষ ন ভরভেন্য ইত্যাহ—ফ্রেয়ারিতি। ভবের ক্ট্রভি—থদীতি।
বার্যের্বারে রঞ্জেকঃ ব্রন্তার্গান, ভবেভরের পৌননারগ্য ভবিভরাং, তবা আর্থানি বজেকভেইং, তবেভরজানার্থানীভি কৃতঃ জানিভি চেভরাহ—বিক্র-জজ্ঞানিতি।
উজ্জোপণাননপূর্বাকং বিংশ্রবেভাভিনারনার - থদীত্যানিমা। অনেকর্থানান্তেবার্যভঃ পরিভিত্রভ ব্রন্তনভ্রমানার্যান্তক্ষের বৃধাং প্রভারভূত্বং রজেভার্থ:। বনি
ক্রীবেররভেনাভারাব্র্যার্যার্থনিভালভর্তি পুরক্ষিকভানিভালভাল—ভক্ষ্যান্তি। ৩

वरि म अव बिरमारका वर्गावकरका त्यन प्रकृष्टिवर्गरकोकानकार-विद्वादिकः